पारा नं- 01 से 15
पेज नं- 001 से 496

कन्ज़ुल ईमान फ़ी
तर्जुमातिल कुरान
कुरान मजीद
कन्ज़ुल
ईमान
आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा ख़ान साहब बरेलवी
तफसीर ख़ज़ाइनुल इरफान
सदरुल अफाज़िल,
मौलाना मुहम्मद नईमुद्दीन
मुरादाबादी
इस्लामिक पब्लिशर
देहली

कुरान मजीद

कन्जुल ईमान फ़ी तर्जुमातिल कुरान

मुतर्जिमः मुजद्दिदे दीन व मिल्लत आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा ख़ान साहब बरेलवी

तफसीर ख़ज़ाइनुल इरफान

सदरुल अफाज़िल हज़रत मौलाना सय्यद मुहम्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी अलैहिर्रहमा

Published By
Islamic Publisher
447, Matia Mahal Jama Masjid, Delhi-110006
Contact: 011-23284316,23284582

हर्फ़े चन्द

कुरान फ़हमी यानी कुरान की आयतों की तिलावत करना और उसके मफ़हूम से वाक़िफ़ होना उस वक़्त मुमकिन हो सकता है जब हम अरबी ज़बान जानते हों क्योंकि कुरान अरबी ज़बान में नाज़िल किया गया लेकिन हमारे लिए मसला यह है कि हम अरबी जानते नहीं। किसी हद तक तिलावते कुरान तो कर लेते हैं लेकिन अगर कोई पूछे कि जो पढ़ा उसका मतलब भी समझा? तो जवाब नहीं में होगा। तो इस मसले के हल के लिए कुरान मजीद की ज़बाने अरबी को उर्दू के क़ालिब में ढाला गया ताकि हम जो ज़बान समझते और बोलते हैं उसी में कम अज़ कम उसका मतलब जान लें। कुछ सदियों तक यही चलता रहा और हम कुरान फ़हमी की शुद बुद उर्दू ज़बान के ज़रिये हासिल करते रहे। उर्दू में कई तर्जमे और तफ़ासीर व हवाशी लिखे जाते रहे। यह तमाम काविशें उलमाए कराम ने अवामुन्नास की ज़रूरत के पेशे नज़र किए और ब–फ़ज़्लि इलाही इसमें उन्होंने पूरी मेहनत व लगन के साथ कामियाबी हासिल की। अब दौरे हाज़िरा इस बात का मुतक़ाज़ी है कि उन्हीं तर्जमों और तफ़ासीर व हवाशी को जो उर्दू में लिखे गए थे उन्हे हिन्दी रस्मुल ख़त में तहरीर कर दिया जाए क्योंकि मुसलमानों की अकसरियत ख़ास कर नौजवान नस्ल उर्दू से ना–बलद होती जा रही है और हिन्दी ज़बान की तरफ़ मायल है बल्कि यह कहना ज़्यादा मुनासिब मालूम होता है कि हमारी नौजवान नस्ल से उर्दू बिल्कुल ख़त्म हो गई है। लिहाज़ा ज़रूरत के पेशे नज़र हिन्दी रस्मुल ख़त का सहारा लिया जा रहा है ताकि कुरान मजीद सिर्फ़ जुज़दान में बन्द नुस्ख़ए तबर्रुक बन कर न रह जाए।

यहां पर एक मसले की वज़ाहत ज़रूरी है। कुरान के मफ़हूम व मतालिब जो कि उर्दू में बयान किए गए हैं उन्हें हिन्दी रस्मुल ख़त में तबदील करना ग़लत नहीं बल्कि मुसतहसन है क्योंकि हिन्दी जानने वाले मुसलमान जिनकी तादाद में रोज़ ब–रोज़ इज़ाफ़ा ही होता जा रहा है कुरान के मफ़हूम व मतालिब को पढ़ कर समझने और ग़ौर व फ़िक्र करने के क़ाबिल हो जायें और उनकी इल्मी तिश्नगी को सैराबी हासिल हो सके। लेकिन मत्ने कुरान यानी अरबी ज़बान में जो कुरान नाज़िल किया गया उसके हर्फ़ों का मुतबादिल हिन्दी ज़बान के हर्फ़ों में लाना दुशवार है। मसलन अरबी ज़बान के हुरूफ़ सीन, से, स्वाद के लिए हिन्दी ज़बान में सिर्फ़ 'स' हर्फ़ के अलावा दूसरा कोई हर्फ़ मौजूद नहीं तो फिर कैसे पता चले कि फ़लां लफ़्ज़ में हर्फ़ सीन है, से है या स्वाद है?इसी तरह ज़े, ज़ाल, ज़ो या ज़ाद, काफ़ और क़ाफ़ वग़ैरह की पहचान हिन्दी रस्मुल ख़त में मुमकिन नहीं। इसके अलावा और भी कई दुशवारियां हैं मसलन बड़ी मद, छोटी मद, खड़ा ज़बर के फ़र्क़ को ज़ाहिर करना हिन्दी ज़बान के लिए मुमकिन नहीं है वग़ैरह वग़ैरह। किसी भी ज़बान की ख़ूबसूरती और उसके मफ़हूम की अदाएगी उसके सही तलफ़्फ़ुज़ की अदाएगी पर मुन्हसिर है। सलाम को अगर हम शलाम कहें तो क्या सलाम का वाक़ई जो मक़सद है वह पूरा होगा?नहीं! और ज़बान की ख़ूबसूरती में जो दाग़ लगा वह अलग। इसी तरह कुरान मजीद जो कलामुल्लाह है इसे लफ़्ज़ों के क़ालिब में ढाल कर हमारी आसानी के लिए, हमारी सीरत निगारी के लिए हमें अता किया गया ताकि हम इससे बरकतें भी हासिल करें और ख़ुदाई अहकाम को इनफ़ेरादी और इज्तिमाई दोनों ही तौर पर नाफ़िज़ करके ख़ुद को बन्दगी के ज़ेवर से आरास्ता करें। अल्लाह हमारी मदद फ़रमाए। आमीन!!

यह तो रहीं दुशवारियां कि अरबी ज़बान को हू ब–हू उसी अंदाज़ में जो कि अरबी की शान है हिन्दी में मुंतक़िल नहीं किया जा सकता। यह बात अपनी जगह मुसल्लम है। इसमें शक की कोई गुंजाईश नहीं। तो क्या अल्लाह के उन बन्दों के लिए जो बेचारे किसी वजह से अरबी और उर्दू से नावाक़िफ़ रह गए और ख़ुदा की शान यह कि अब ऐसे अल्लाह के बन्दे अकसरियत में हैं जो सिर्फ़ हिन्दी ही जानते हैं, तो क्या वह कुरान की तिलावत की सआदत से महरूम रहें?इसके मफ़हूम व मतालिब को समझने से क़ासिर रहें?क्या करें कि मुआशरा ही ऐसा हो गया जहां अरबी–उर्दू की तालीम नापैद हो गई। इस मसले को हल करने के लिए दो तरीक़े समझ में आते हैं। पहला ये कि उन अल्लाह के बन्दों को मजबूर किया जाए कि भैय्या अरबी उर्दू सीखो वरना कुरान फ़हमी और तिलावते कुरान की सआदत से महरूम रहो। अब अगर वह बेचारा हिम्मत करे भी तो ज़बान फ़हमी में उम्र बीत जाए। और दुनिया से रवानगी का वक़्त आ पहुंचे और फिर कितने लोग ऐसी हिम्मत करेंगे, हिम्मत हार कर बा–दिले नाख़्वास्ता अपनी इस मुक़द्दस ख़्वाहिश से दस्तबरदार होने में ही आफ़ियत जानेंगे। दूसरा तरीक़ा ये समझ में आता है कि हिन्दी ज़बान जानने वाले मुसलमानों के लिए कुरान मजीद के अलफ़ाज़ को हिन्दी रस्मुल ख़त में ही लिख दिया जाए ताकि उनकी ज़बान कुछ तो कलामे इलाही का मज़ा चखे। अलबत्ता कुरान के उन हुरूफ़ का मुतबादिल हिन्दी ज़बान में तलाश किया जा सकता है जो उसमें मौजूद नहीं या हिन्दी ज़बान के हुरूफ़ में कुछ तहरीफ़ करके

अरबी ज़बान के उन हुरूफ़ का मुतबादिल क़रार दिया जा सकता है। इससे हुरूफ़ की कमी की ज़रूरत पूरी हो जाती है लेकिन इसके बाद दूसरा मसला खड़ा हो जाता है कि उन हुरूफ़ की सही अदाएगी किस तरह हो जिनमें तहरीफ़ की गई है क्योंकि कोई भी ज़बान अपने हुरूफ़ के तलफ़्फ़ुज़ को जानती और पहचानती है उससे बाहर की आवाज़ या तलफ़्फ़ुज़ को वह अदा करने से क़ासिर होती है। यह डगर तो है कठिन मगर पैहम जद्दो जहद से क्या नहीं हो जाता। रज़ाए इलाही की ख़ातिर उठाया गया क़दम कामियाबी ही की तरफ़ जाता है ब–शर्तकि अल्लाह की ख़ुशनूदी ही मक़सूद हो। कुरान मजीद पढ़िये आप ही के लिए यह नुस्ख़ा तैयार किया गया है। अलबत्ता एक बात का ख़्याल रखिए कि शुरू में किसी हाफ़िज़ या क़ारी के सामने पढ़िये ताकि आप जहां कहीं तलफ़्फ़ुज़ की अदाएगी में ग़लती करें तो वह आपको दरूस्त करता जाए। इस तरह आप कुरान पाक की सहीह तिलावत कर सकेंगे।

यह तो हुई मत्ने कुरान की बात कि आप तिलावते कुरान किस तरह करेंगे उसका हल कुछ हद तक निकालने की कोशिश की गई है। अब आइए तर्जमे के ताल्लुक़ से भी कुछ गुफ़्तुगू कर ली जाए। कुरान करीम के कई तर्जमे मुतरजमीन ने हर दौर में ज़रूरत के पेशे नज़र किए उनमें मौजूदा दौर में मुजद्दिदे दीन व मिल्लत आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा क़ादरी बरैलवी अलैहिर्रहमा का तर्जमा कंज़ुल ईमान आला तरीन तर्जमा है। सलासत व रवानी और मेयारे फ़साहत की मिसाल है। इश्क़ व मुहब्बत के जज़्बे से मुज़य्यन ये तर्जमा तक़रीबन एक सदी से मुसलमानों के दिल को मुनव्वर किए हुए है। इसी लिए आला हज़रत के इस तर्जमे को भी हू बहू वैसा ही रखा गया है सिर्फ़ रस्मुल ख़त में तब्दीली की गई है। इसी तरह सदरूल अफ़ाज़िल हज़रत मौलाना सय्यद नईमुद्दीन मुरादाबादी अलैहिर्रहमा ने जो इस तर्जमे पर हाशिया तहरीर फ़रमाया है उसे भी जूं का तूं रखा गया है, यहां तक कि फ़ायदा नम्बर वग़ैरह में भी कोई तब्दीली नहीं की गई है। जो नम्बर उर्दू के नुस्ख़े में है वही नम्बर इस नुस्ख़े में भी है और ऐसा इसलिए किया गया ताकि अगर किसी को उर्दू और हिन्दी के नुस्ख़े के मुवाज़ने की ज़रूरत पड़ जाए या कोई बात हिन्दी में समझ न आए तो उर्दू वाले नुस्ख़े को देख कर अपनी तसहीह की जा सके और तलाश करने में भी ज़्यादा मशक़्क़त न उठानी पड़े।

ज़ैल में जो चार्ट दिया गया है उसे ख़ूब अच्छी तरह ज़ेहन नशीन कर लें ताकि जब कुरान पाक की तिलावत करें तो अरबी हुरूफ़ की आवाज़ के लिए हिन्दी के कौन से हर्फ़ का इस्तेमाल किया गया है, आपको याद रहे और तिलावत सही हो!!

अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त हमें और आपको गुनाहों के इरतकाब से महफ़ूज़ रखे और सही तौर पर तिलावत का इल्म बख़्शे। आमीन!!

दुआ गो – हामिद रज़ा

ث	से स	ت	ते त	ب	बे ब	ا	अलिफ़ अ
د	दाल द	خ	ख़े ख़	ح	हे ह	ج	जीम ज
س	सीन स	ز	ज़े ज़	ر	रे र	ذ	ज़ाल ज़
ط	तो त़	ض	ज़ाद ज़	ص	साद स़	ش	शीन श
ف	फ़े फ़	غ	ग़ैन ग़	ع	अ़ैन अ़	ظ	जो ज
م	मीम म	ل	लाम ल	ک	काफ़ क	ق	क़ाफ़ क़
ء	हम्ज़ा अ्	ه	हे ह	و	वाव व	ن	नून न
		ة	गोल ते त	ی	या य		

سُوْرَةُ الْفَاتِحَةِ مَكِّيَّةٌ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ۙ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۙ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ؕ اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَاِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ ؕ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ ۙ صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۙ۬ غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ ۠

सूरह फ़ातिहा

(मक्की है इसमें सात आयतें और एक रुकूअ़ है)

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम

अल्हम्दु लिल्लाहि रब्बिल–आ–लमीन(1)अर्रह्मानिर्रहीम(2)मालिकि यौमिद्दीन(3)इय्या–क नअ़बुदु व इय्या–क नस्तअ़ीन(4)इह्दि नस्–सिरातल मुस्–तक़ीम(5)सिरातल्लज़ी–न अनअ़म्–त अ़लैहिम्(6)ग़ैरिल्–मग़्ज़ूबि अ़लैहिम् व लज़्ज़ाल्लीन(7)

अल्लाह के नाम से शुरू जो बहुत मेहरबान रहमत वाला।

सब ख़ूबियां अल्लाह को जो मालिक सारे जहान वालों का। (1) बहुत मेहरबान रहमत वाला।(2) रोज़े जज़ा का मालिक।(3) हम तुझी को पूजें और तुझी से मदद चाहें।(4) हम को सीधा रास्ता चला।(5) रास्ता उनका जिन पर तूने एहसान किया।(6) न उनका जिन पर ग़ज़ब हुआ और न बहके हुओं का।(7) (रुकूअ़ 7)

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम° नह्–मदुहू व नुसल्ली अ़ला ह़बीबिहिल् करीम

सूरह फ़ातिहा के अस्माः इस सूरह के मुतअ़द्दिद नाम हैं। फ़ातिहा, फ़ातिहतुल किताब, उम्मुल कुरआन, सूरतुल कन्ज़, काफ़िया, वाफ़िया, शाफ़िया, शिफ़ा, सबअ़ मसानी, नूर, रुक़ैया, सूरतुल हम्द, सूरतुद्दुआ, तालीमुल मसला, सूरतुल मुनाजात, सूरतुल तफ़्वीज़, सूरतुस्सवाल, उम्मुल किताब, फ़ातिहतुल कुरआन, सूरतुस्सलात। इस सूरत में सात आयतें, सत्ताइस कलिमे, एक सौ चालीस हर्फ़ हैं, कोई आयत नासिख़ या मन्सूख़ नहीं। **शाने नुज़ूलः** यह सूरत मक्का मुकर्रमा या मदीना मुनव्वरा या दोनों में नाज़िल हुई। अ़म्र बिन शरजील से मंक़ूल है कि नबीए करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने हज़रत ख़दीजा रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हा से फ़रमाया मैं एक निदा सुना करता हूं जिस में इक़रा कहा जाता है, वरक़ा बिन नोफ़िल को ख़बर दी गई, अ़र्ज़ किया जब यह निदा आये आप ब–इत्मीनान सुनें उसके बाद हज़रत जिब्रील ने हाज़िरे ख़िदमत होकर अर्ज़ किया, फ़रमाईये *बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम अल्हम्दु लिल्लाहि रब्बिल् आ–लमीन,* इस से मालूम होता है कि नुज़ूल में यह पहली सूरत है मगर दूसरी रिवायात से मालूम होता है कि पहले सूरह इक़रा नाज़िल हुई। इस सूरत में तालीमन बन्दों की ज़बान में कलाम फ़रमाया गया है। अहकामे **मसलाः** नमाज़ में इस सूरत का पढ़ना वाजिब है। इमाम व मुनफ़रिद के लिए तो हक़ीक़तन अपनी ज़बान से और मुक़्तदी के लिए ब–क़िराअते हुक्मिया यानी इमाम की ज़बान से। सही हदीस में है क़िरा–अ़तुल् इमामि लहू क़िरा–अ़तुन् इमाम का पढ़ना ही मुक़्तदी का पढ़ना है, कुरआन पाक में मुक़तदी को ख़ामोश रहने और इमाम की क़िराअत सुनने का हुक्म दिया है इज़ा *कुरिअल् कुरआनु फ़स्तमिअ़ू लहू व अन्सितू*। मुस्लिम शरीफ़ की हदीस है *इज़ा क़रा–अ फ़–अन्सितू,* जब इमाम क़िराअत करे तुम ख़ामोश रहो और बहुत अहादीस में यही मज़मून है। **मसलाः** नमाज़े जनाज़ा में दुआ याद न हो तो सूरह फ़ातिहा ब–नियत दुआ पढ़ना जाएज़ है ब–नियत क़िराअत जाएज़ नहीं (आलमगीरी)। **सूरह फ़ातिहा के फ़ज़ायलः** अहादीस में इस सूरत की बहुत सी फ़ज़ीलतें वारिद हैं, हुज़ूर ने फ़रमाया तौरेत व इन्जील व ज़ुबूर में इस की मिस्ल सूरत न नाज़िल हुई (तिर्मिज़ी)। एक फ़रिश्ता ने आसमान से नाज़िल होकर हुज़ूर पर सलाम अ़र्ज़ किया और दो ऐसे नूरों की बिशारत दी जो हुज़ूर से पहले किसी नबी को अता न हुए एक सूरह फ़ातिहा, दूसरे सूरह बक़रह की आख़िरी आयतें (मुस्लिम शरीफ़)। सूरह फ़ातिहा हर मरज़ के लिए शिफ़ा है (दारमी)। सूरह फ़ातिहा सौ मर्तबा पढ़कर जो दुआ मांगे अल्लाह तआ़ला क़बूल फ़रमाता है (दारमी)। **इस्तिआ़ज़ए मसलाः** तिलावत से पहले *अऊज़ुबिल्लाहि मिनश्शैतानिर्रजीम* पढ़ना सुन्नत है (ख़ाज़िन) लेकिन शागिर्द उस्ताद से पढ़ता हो तो उसके लिए सुन्नत नहीं (शामी)। **मसलाः** नमाज़ में इमाम व मुनफ़रिद के लिए सुब्हा–न से फ़ारिग़ होकर आहिस्ता *अऊज़ुबिल्लाहि मिनश्शैतानिर्रजीम* पढ़ना सुन्नत है (शामी)। **तस्मिया मसलाः** *बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम* कुरआन पाक की आयत है, मगर सूरह फ़ातिहा या और किसी सूरह का जुज़्व नहीं, इसी लिए नमाज़ में जेहर के साथ न पढ़ी जाये, बुख़ारी व मुस्लिम में मरवी है कि हुज़ूरे अक़दस

सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम और हज़रत सिद्दीक़ व फ़ारूक़ रज़ियल्लाहु अन्हुमा नमाज़ *अल्हम्दु लिल्लाहि रब्बिल आ-लमीन* से शुरू फ़रमाते थे। **मसलाः** तरावीह में जो ख़त्म किया जाता है उसमें कहीं एक मर्तबा बिस्मिल्लाह जेहर के साथ ज़रूर पढ़ी जाये ताकि एक आयत बाक़ी न रह जाये। **मसलाः** कुरआन पाक की हर सूरत बिस्मिल्लाह से शुरू की जाये, सिवाए सूरह बरअ्आत के। **मसलाः** सूरह नम्ल में आयते सजदा के बाद जो बिस्मिल्लाह आई है वह मुस्तक़िल आयत नहीं बल्कि जुज़्वे आयत है, बिला ख़िलाफ़ इस आयत के साथ ज़रूर पढ़ी जायेगी नमाज़े जेहरी में जेहरन, सिर्री में सिर्रन। **मसलाः** हर मुबाह काम बिस्मिल्लाह से शुरू करना मुस्तहब है, नाजायज़ काम पर बिस्मिल्लाह पढ़ना ममनूअ् है। **सूरह फ़ातिहा के मज़ामीनः** इस सूरत में अल्लाह तआ़ला की हम्द व सना रुबूबियत रहमत, मालिकियत, इस्तेहक़ाक़े इबादत, तौफ़ीक़े ख़ैर, बन्दों की हिदायत, तवज्जुह इलल्लाह, इख़्तेसासे इबादत, इस्तेआ़नत तलबे रुश्द, आदाबे दुआ़ सालिहीन के हाल से मुवाफ़क़त, गुमराहों से इज्तेनाब व नफ़रत, दुनिया की ज़िन्दगानी का ख़ात्मा, जज़ा और रोज़े जज़ा का मुसर्रह व मुफ़स्सल बयान है और जुमला मसायल का इजमालन। **हम्द, मसलाः** हर काम की इब्तेदा में तस्मिया की तरह हम्दे इलाही बजा लाना चाहिए। **मसलाः** कभी हम्द वाजिब होती है, जैसे ख़ुतबए जुमा में कभी मुस्तहब जैसे ख़ुतबए निकाह व दुआ़ व हर अमरे ज़ीशान में और हर खाने पीने के बाद कभी सुन्नते मुअक्किदा जैसे छींक आने के बाद (तहतावी)। *रब्बुल् आ-लमीन* में तमाम कायनात के हादिस मुमकिन मुहताज होने और अल्लाह तआ़ला के वाजिब क़दीम अज़ली अबदी हय्य क़य्यूम क़ादिर अ़लीम होने की तरफ़ इशारा है जिनको रब्बुल आ़लमीन मुस्तल्ज़िम है। दो लफ़्ज़ों में इल्मे इलाहियात के अहम मबाहिस तय हो गए। *मालिकि यौमिद्दीन* मिल्क के ज़ुहूरे ताम का बयान और यह दलील है कि अल्लाह के सिवा कोई मुस्तहिक़े इबादत नहीं क्योंकि सब उसके ममलूक हैं और ममलूक मुस्तहिक़े इबादत नहीं हो सकता इसी से मालूम हुआ कि दुनिया दारुल अ़मल है और उसके लिए एक आख़िर है। जहान के सिलसिला को अज़ली व क़दीम कहना बातिल है। इख़्तेतामे दुनिया के बाद एक जज़ा का दिन है उससे तनासुख़ बातिल हो गया। *इय्या-क नअ्बुदु* ज़िक्रे ज़ात व सिफ़ात के बाद यह फ़रमाना इशारा करता है कि एतेक़ाद अ़मल पर मुक़द्दम है और इबादत की मक़बूलियत अ़क़ीदे की सेहत पर मौक़ूफ़ है। **मसलाः** *नअ्बुदु* के सेग़ए जमा से अदा ब-जमाअ़त भी मुस्तफ़ाद होती है और यह भी कि अ़वाम की इबादतें महबूबों और मक़बूलों की इबादतों के साथ दर्जए क़बूल पाती हैं। **मसलाः** इसमें रद्दे शिर्क भी है कि अल्लाह तआ़ला के सिवा इबादत किसी के लिए नहीं हो सकती। *व इय्या-क नस्तअ़ीन* में यह तालीम फ़रमाई कि इस्तेआ़नत ख़्वाह ब-वास्ता हो या बे वास्ता हर तरह अल्लाह तआ़ला के साथ ख़ास है हक़ीक़ी मुस्तआ़न वही है बाक़ी आलात व ख़ुद्दाम व अहबाब वग़ैरह सब औ़ने इलाही के मज़हर हैं बन्दे को चाहिए कि इस पर नज़र रखे और हर चीज़ में दस्ते क़ुदरत को कारकुन देखे इससे यह समझना कि औलिया व अम्बिया से मदद चाहना शिर्क है अक़ीदए बातिला है क्योंकि मुक़र्रबाने हक़ की इमदाद इमदादे इलाही है, इस्तेआ़नत बिलग़ैर नहीं। अगर इस आयत के वह माना होते जो वहाबिया ने समझे तो कुरआन पाक में *अअ़ीनूनी बि-क़ुव्वतिन्* और *इस्तअ़ीनू बिस्-सब्रि वस्सलात* क्यों वारिद होता और अहादीस में अहलुल्लाह से इस्तेआ़नत की तालीम क्यों दी जाती। *इह्दिनस्-सिरातल् मुस्तक़ीम* मअ्रेफ़ते ज़ात व सिफ़ात के बाद इबादत उसके बाद दुआ़ तालीम फ़रमाई इससे यह मसला मालूम हुआ कि बन्दे को इबादत के बाद मशग़ूले दुआ़ होना चाहिए। हदीस शरीफ़ में भी नमाज़ के बाद दुआ की तालीम फ़रमाई गई (अल-तिबरानी फ़िल कबीर वल बैहक़ी फ़िस्सुनन)। सिराते मुस्तक़ीम से मुराद इस्लाम या क़ुरआन या ख़ुल्क़े नबीए करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम या हुज़ूर के आल व अस्हाब हैं, इससे साबित होता है कि सिराते मुस्तक़ीम तरीक़े अहले सुन्नत है जो अहले बैत व अस्हाब और सुन्नत व कुरआन व सवादे आज़म सब को मानते हैं। *सिरातल्लज़ी-न अन्अम्-त अ़लैहिम्* जुमलए ऊला की तफ़सीर है कि सिराते मुस्तक़ीम से तरीक़े मुस्लिमीन मुराद है इससे बहुत से मसाइल हल होते हैं कि जिन उमूर पर बुज़ुर्गाने दीन का अ़मल रहा हो वह सिराते मुस्तक़ीम में दाख़िल है *ग़ैरिल मग़ज़ूबि अ़लैहिम् व लज़्ज़ाल्लीन* इसमें हिदायत है कि मसलए तालिबे हक़ को दुश्मनाने ख़ुदा से इज्तेनाब और उनके राह व रस्म वज़अ् व अतवार से परहेज़ लाज़िम है। तिर्मिज़ी की रिवायत है कि *मग़ज़ूबि अ़लैहिम्* से यहूद और ज़ाल्लीन से नसारा मुराद हैं। **मसलाः** ज़ाद और ज़ा में मबाहिसे ज़ाती है, बाज़ सिफ़ात का इश्तेराक उन्हें मुत्तहिद नहीं कर सकता लिहाज़ा *ग़ैरिल् मग़ज़ूबि* ज़ा पढ़ना अगर ब-क़स्द हो तो तहरीफ़े कुरआन व कुफ़्र है वरना नाजायज़। **मसलाः** जो शख़्स ज़ाद की जगह ज़ो पढ़े उसकी इमामत जायज़ नहीं (मुहीते बुरहानी) आमीन, इसके मानी हैं ऐसा ही कर या क़बूल फ़रमा। **मसलाः** यह कलिमए .कुरआन नहीं। **मसलाः** सूरह फ़ातिहा के ख़त्म पर आमीन कहना सुन्नत है नमाज़ के अन्दर भी और नमाज़ के बाहर भी। **मसलाः** हज़रत इमामे आज़म का मज़हब यह है कि नमाज़ में आमीन इख़्फ़ा के साथ यानी आहिस्ता कही जाये, तमाम अहादीस पर नज़र और तनक़ीद से यही नतीजा निकलता है कि जेहर की रिवायतों में सिर्फ़ वाएल की रिवायत सही है इसमें मद्द बिहा का लफ़्ज़ है, जिस की दलालत जेहर पर क़तई नहीं जैसा जेहर का एहतेमाल है, वैसा ही बल्कि इससे क़वी मद्द हमज़ा का एहतेमाल है इसलिए यह रिवायत जेहर के लिए हुज्जत नहीं हो सकती दूसरी रिवायतें जिन में जेहर व रफ़अ् के अलफ़ाज़ हैं उनकी असनाद में कलाम है अलावा बरीं वह रिवायत बिलमाना हैं और फ़हमे रावी हदीस नहीं, लिहाज़ा आमीन का आहिस्ता ही पढ़ना सही-तर है।

سُوْرَةُ الْبَقَرَةِ مَدَنِيَّةٌ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

الٓمّٓ ۚ ذٰلِكَ الْكِتٰبُ لَا رَيْبَ ۛ فِيْهِ ۛ هُدًى لِّلْمُتَّقِيْنَ ۙ الَّذِيْنَ يُؤْمِنُوْنَ بِالْغَيْبِ وَيُقِيْمُوْنَ الصَّلٰوةَ وَمِمَّا رَزَقْنٰهُمْ يُنْفِقُوْنَ ۙ وَالَّذِيْنَ يُؤْمِنُوْنَ بِمَآ اُنْزِلَ اِلَيْكَ وَمَآ اُنْزِلَ مِنْ قَبْلِكَ ۚ وَبِالْاٰخِرَةِ هُمْ يُوْقِنُوْنَ ۙ

सूरह बक़रह

(मदनी है इस सूरह में 286 आयतें और 40 रुकूअ़ हैं)

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम

अलिफ़्-लाम्-मीम्(1)ज़ालिकल् किताबु ला रै-ब फ़ीहि हुदल्-लिल मुत्तक़ीन(2)अल्लज़ी-न युअ्मिनू-न बिल्ग़ैबि व युक़ीमूनस्सला-त व मिम्मा रज़क़्ना हुम् युनफ़िक़ून(3)वल्लज़ी-न युअ्मिनू-न बिमा उन्ज़ि-ल इलै-क व मा उन्ज़ि-ल मिन् क़ब्लि-क व बिल् आख़ि-रति हुम् यूक़िनून(4)

अल्लाह के नाम से शुरू जो बहुत मेहरबान रहमत वाला। (फ़ा1)

अलिफ़्-लाम्-मीम् (1) (फ़ा2) वह बुलन्द रुतबा किताब (क़ुरआन) कोई शक की जगह नहीं (फ़ा3) इसमें हिदायत है डर वालों को (2) (फ़ा4) वह जो बे देखे ईमान लायें (फ़ा5) और नमाज़ क़ाएम रखें (फ़ा6) और हमारी दी हुई रोज़ी में से हमारी राह में उठायें (3) (फ़ा7) और वह कि ईमान लायें उस पर जो ऐ महबूब तुम्हारी तरफ़ उतरा और जो तुम से पहले उतरा (फ़ा8) और आख़िरत पर यक़ीन रखें।(4) (फ़ा9)

(फ़ा1) यह सूरत मदनी है हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा ने फ़रमाया मदीना तय्यबा में सबसे पहले यही सूरत नाज़िल हुई सिवाए आयत *वत्तक़ू यौमन् तुरजऊन* के कि हज्जे *विदाअ़* में ब-मक़ाम मक्का मुकर्रमा नाज़िल हुई (ख़ाज़िन)। इस सूरत में दो सौ छियासी आयतें चालीस रुकूअ़ छः हज़ार एक सौ इकीस कलमे पचीस हज़ार पांच सौ हर्फ़ हैं (ख़ाज़िन)। पहले क़ुरआन पाक में सूरतों के नाम लिखे जाते थे यह तरीक़ा हज्जाज ने निकाला इब्ने अ़रबी का क़ौल है कि सूरह बक़र में हज़ार अम्र हज़ार नही हज़ार हुक्म हज़ार ख़बरें हैं उसके अख़ज़ में बरकत तर्क में हसरत है अहले बातिल जादूगर इसकी इस्तेताअ़त नहीं रखते जिस घर में यह सूरत पढ़ी जाए तीन दिन तक सरकश शैतान उसमें दाख़िल नहीं होता। मुस्लिम शरीफ़ की हदीस में है कि शैतान उस घर से भागता है जिसमें यह सूरत पढ़ी जाए (जुमल) बैहक़ी व सईद बिन मन्सूर ने हज़रत मुग़ीरह से रिवायत की कि जो शख़्स सोते वक़्त सूरह बक़रह की दस आयतें पढ़ेगा क़ुरआन शरीफ़ को न भूलेगा, वह आयतें यह हैं: चार आयतें अव्वल की और आयतल कुर्सी और दो उसके बाद की और तीन आख़िर सूरत की। **मसलाः** तिबरानी व बैहक़ी ने हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा से रिवायत की कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया मय्यत को दफ़्न करके क़ब्र के सिरहाने सूरह बक़र के अव्वल की आयतें और पाँव की तरफ़ आख़िर की आयतें पढ़ो। **शाने नुज़ूलः** अल्लाह तआ़ला ने अपने हबीब सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से एक ऐसी किताब नाज़िल फ़रमाने का वादा फ़रमाया था जो न पानी से धोकर मिटाई जा सके न पुरानी हो जब क़ुरआने पाक नाज़िल हुआ तो फ़रमाया ज़ालिकल् किताबु कि वह किताबे मौऊद यह है। एक क़ौल यह है कि अल्लाह तआ़ला ने बनी इसराईल से एक किताब नाज़िल फ़रमाने और बनी इस्माईल में से एक रसूल भेजने का वादा फ़रमाया था, जब हुज़ूर ने मदीना तय्यबा को हिजरत फ़रमाई जहां यहूद ब-कसरत थे तो अलिफ़् लाम् मीम् ज़ालिकल् किताबु नाज़िल फ़रमा कर इस वादे के पूरे होने की ख़बर दी (ख़ाज़िन)। (फ़ा2) अलिफ़ लाम मीम सूरतों के अव्वल जो हुरूफ़े मुक़त्तआ़ः आते हैं उनकी निस्बत क़ौले राजेह यही है कि वह असरारे इलाही और मुतशाबेहात से हैं उनकी मुराद अल्लाह और रसूल जानें हम उसके हक़ होने पर ईमान लाते हैं। (फ़ा3) इस लिए कि शक उसमें होता है जिस पर दलील न हो, क़ुरआन पाक ऐसी वाज़ेह और क़वी दलीलें रखता है जो आक़िल मुन्सिफ़ को उसके किताबे इलाही और हक़ होने के यक़ीन पर मजबूर करती हैं तो यह किताब किसी तरह क़ाबिले शक नहीं जिस तरह अन्धे के इंकार से आफ़ताब का वुजूद मुश्तबहा नहीं होता ऐसे ही मुआ़निद सियाह दिल के शक व इंकार से यह किताब मश्कूक नहीं हो सकती। (फ़ा4) *हुदल् लिल् मुत्तक़ी-न* अगर्चे क़ुरआने करीम की हिदायत हर नाज़िर के लिए आ़म है मोमिन हो या काफ़िर जैसा कि दूसरी आयत में फ़रमाया *हुदल् लिन्नासि* लेकिन चूंकि इन्तेफ़ाअ़ उससे अह्ले तक़्वा को होता है इसलिए *हुदल् लिल्-मुत्तक़ीन* इरशाद हुआ जैसे कहते हैं बारिश सबज़ा के लिए है यानी मुन्तफ़ेअ़ उससे सबज़ा होता है, अगर्चे बरसती कल्लर और ज़मीन बे-गयाह पर भी है। तक़्वा के कई मानी आते हैं नफ़्स को ख़ौफ़ की चीज़ से बचाना और उर्फ़े शरअ़ में ममनूआ़त छोड़कर नफ़्स को गुनाह से बचाना। हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा ने फ़रमाया मुत्तक़ी वह है जो शिर्क व कबायर व फ़वाहिश से बचे, बाज़ों ने कहा मुत्तक़ी वह है जो अपने आप को दूसरों से बेहतर न समझे बाज़ का क़ौल है तक़्वा हराम चीज़ों का तर्क और फ़रायज़ का अदा करना है, बाज़ के नज़दीक मअ़सियत पर इसरार और ताअ़त पर गुरूर का तर्क तक़्वा है बाज़ ने कहा तक़्वा यह है

कि तेरा मौला तुझे वहां न पाये जहां उसने मना फ़रमाया। एक क़ौल यह है कि तक़्वा हुज़ूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम और सहाबा रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम की पैरवी का नाम है (ख़ाज़िन) यह तमाम मानी बाहम मुनासबत रखते हैं और मआल के ऐतबार से उनमें कुछ मुख़ालफ़त नहीं। तक़्वा के मरातिब बहुत हैं अवाम का तक़्वा ईमान लाकर कुफ़्र से बचना मुतवस्सेतीन का अवामिर व नवाही की इताअत ख़्वास का हर ऐसी चीज़ को छोड़ना जो अल्लाह तआला से ग़ाफ़िल करे (जुमल)। हज़रत मुतरजिम क़ुद्दस सिर्रुहू ने फ़रमाया तक़्वा सात क़िस्म का है (1) कुफ़्र से बचना यह बि-फ़ज़्लेही तआला हर मुसलमान को हासिल है (2) बद मज़हबी से बचना यह हर सुन्नी को नसीब है (3) हर कबीरा से बचना (4) सग़ायर से भी बचना (5) शुबहात से एहतेराज़ (6) शहवात से बचना (7) ग़ैर की तरफ़ इल्तेफ़ात से बचना। यह अख़स्सुल ख़वास का मन्सब है और क़ुरआने अज़ीम सातों मर्तबों का हादी है। (फ़ा5) *अल्लज़ी-न युअमिनू-न बिल्ग़ैबि* यहां से *मुफ़्लिहू-न* तक आयतें मोमिनीन बा इख़्लास के हक़ में हैं जो ज़ाहिरन व बातिनन ईमानदार हैं उसके बाद दो आयतें खुले काफ़िरों के हक़ में हैं जो ज़ाहिरन व बातिनन काफ़िर हैं उसके बाद *व मि-नन्नासि* से तेरह आयतें मुनाफ़िक़ीन के हक़ में हैं जो बातिन में काफ़िर हैं और अपने आपको मुसलमान ज़ाहिर करते हैं (जुमल)। ग़ैब मस्दर या इस्मे फ़ायल के मानी में है इस तक़दीर पर ग़ैब वह है जो हवास व अक़्ल से बदीही तौर पर मालूम न हो सके इसकी दो क़िस्में हैं एक वह जिस पर कोई दलील न हो, यह इल्मे ग़ैबे ज़ाती है और यही मुराद है आयत *इन्-दहू मफ़ातिहुल् ग़ैबि ला यअ्-लमुहा इल्लाहू* में और उन तमाम आयात में जिन में इल्मे ग़ैब की ग़ैरे ख़ुदा से नफ़ी की गई है इस क़िस्म का इल्मे ग़ैब यानी ज़ाती जिस पर कोई दलील न हो अल्लाह तआला के साथ ख़ास है। ग़ैब की दूसरी क़िस्म वह है जिस पर दलील हो जैसे सानेअे आलम और उसके सिफ़ात और नबुव्वात (अम्बिया की नबुव्वत) और उनके मुतअल्लिक़ात अहकाम व शराअे व रोज़े आख़िर और उसके अहवाल बअ्स, नशर, हिसाब, जज़ा वग़ैरह का इल्म जिस पर दलीलें क़ायम हैं और जो तालीमे इलाही से हासिल होता है। यहां यही मुराद है, इस दूसरे क़िस्म के ग़ुयूब जो ईमान से इलाक़ा रखते हैं उनका इल्म व यक़ीन हर मोमिन को हासिल है अगर न हो आदमी मोमिन न हो सके और अल्लाह तआला अपने मुक़र्रब बन्दों अम्बिया व औलिया पर जो ग़ुयूब के दरवाज़े खोलता है वह इसी क़िस्म का ग़ैब है, या ग़ैब माना मस्दरी में रखा जाये और ग़ैब का सिला मोमिन बेह क़रार दिया जाये या बा को मुतलब्बिसीन महज़ूफ़ के मुतअल्लिक़ करके हाल क़रार दिया जाये। पहली सूरत में आयत के मानी यह होंगे जो बे देखे ईमान लायें जैसा हज़रते मुतरजिम क़ुद्दस सिर्रुहू ने तर्जमा किया है, दूसरी सूरत में मानी यह होंगे जो मोमिनीन के पसे ग़ैबत ईमान लायें यानी उनका ईमान मुनाफ़िक़ों की तरह मोमिनीन के दिखाने के लिए न हो बल्कि वह मुख़लिस हों ग़ायब हाज़िर हर हाल में मोमिन रहें। ग़ैब की तफ़सीर में एक क़ौल यह भी है कि ग़ैब से क़ल्ब यानी दिल मुराद है इस सूरत में मानी यह होंगे कि वह दिल से ईमान लायें (जुमल)। **ईमानः** जिन चीज़ों की निस्बत हिदायत व यक़ीन से मालूम है कि यह दीने मुहम्मदी से हैं उन सब को मानने और दिल से तस्दीक़ और ज़बान से इक़रार करने का नाम ईमाने सही है। अमल ईमान में दाख़िल नहीं इसी लिए *युअमिनू-न बिल्ग़ैबि* के बाद *युक़ीमू-नस्सला-त* फ़रमाया। (फ़ा6) नमाज़ के क़ायम रखने से यह मुराद है कि उस पर मदावमत करते हैं और ठीक वक़्तों पर पाबन्दी के साथ उसके अरकान पूरे पूरे अदा करते और फ़रायज़ सुनन मुस्तहब्बात की हिफ़ाज़त करते हैं किसी में ख़लल नहीं आने देते मुफ़सिदात व मकरूहात से उसको बचाते हैं और उसके हुक़ूक़ अच्छी तरह अदा करते हैं। नमाज़ के हुक़ूक़ दो तरह के हैं एक ज़ाहिरी वह तो यही हैं जो ज़िक्र हुए दूसरे बातिनी वह ख़ुशूअ् और हुज़ूर यानी दिल को फ़ारिग़ करके हमा तन बारगाहे हक़ में मुतवज्जेह हो जाना और अर्ज़ व नियाज़ व मनाजात में महवियत पाना। (फ़ा7) राहे ख़ुदा में ख़र्च करने से या ज़कात मुराद है, जैसा दूसरी जगह फ़रमाया *युक़ीमू-नस्-सला-त व यूअ् तूनज़्-ज़का-त* या मुतलक़ इन्फ़ाक़ ख़्वाह फ़र्ज़ व वाजिब हो जैसे ज़काते नज़र अपना और अपने अहल का नफ़क़ा वग़ैरह ख़्वाह मुस्तहब जैसे सदक़ाते नाफ़िला अमवात का ईसाले सवाब। **मसलाः** ग्यारहवीं, फ़ातिहा, तीजा, चालीसवां वग़ैरह भी इसमें दाख़िल हैं कि वह सब सदक़ाते नाफ़िला हैं और .क़ुरआन पाक व कलिमा शरीफ़ का पढ़ना नेकी के साथ और नेकी मिलाकर अज्र व सवाब बढ़ाता है। **मसलाः** *मिम्मा* में *मिन् तब्ओज़िया* इस तरफ़ इशारा करता है कि इन्फ़ाक़ में इसराफ़ ममनूअ् है यानी इन्फ़ाक़ ख़्वाह अपने नफ़्स पर हो या अपने अहल पर या किसी और पर एतदाल के साथ हो इसराफ़ न होने पाए *रज़क़ना हुम* की तक़दीम और रिज़्क़ को अपनी तरफ़ निस्बत फ़रमा कर ज़ाहिर फ़रमाया कि माल तुम्हारा पैदा किया हुआ नहीं हमारा अता फ़रमाया हुआ है उसको अगर हमारे हुक्म से हमारी राह में ख़र्च न करो तो तुम निहायत ही बख़ील हो और यह बुख़्ल निहायत ही क़बीह। (फ़ा8) इस आयत में अहले किताब वह मोमिनीन मुराद हैं जो अपनी किताब और तमाम पिछली आसमानी किताबों और अम्बिया अलैहिमुस्सलाम की वहियों पर भी ईमान लाए और क़ुरआन पाक पर भी और *मा उन्ज़ि ल इलै क* से तमाम क़ुरआन पाक और पूरी शरीअत मुराद है(जुमल) **मसलाः** जिस तरह क़ुरआन पाक पर ईमान लाना हर मुकल्लफ़ पर फ़र्ज़ है उसी तरह कुतुबे साबिक़ा पर ईमान लाना भी ज़रूरी है जो अल्लाह तआला ने हुज़ूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम से क़बल अम्बिया अलैहिमुस्सलाम पर नाज़िल फ़रमाईं अलबत्ता उनके जो अहकाम हमारी शरीअत में मन्सूख़ हो गए उन पर अमल दुरुस्त नहीं, मगर ईमान ज़रूरी है, मसलन पिछली शरीअतों में बैतुल मुक़द्दस क़िबला था उस पर ईमान लाना तो हमारे लिए ज़रूरी है मगर अमल यानी नमाज़ में बैतुल मक़दिस की तरफ़ मुंह करना जायज़ नहीं मन्सूख़ हो चुका। **मसलाः** क़ुरआने करीम से पहले जो कुछ अल्लाह तआला की तरफ़ से उसके अम्बिया पर नाज़िल हुआ उन सब पर इजमालन ईमान लाना फ़र्ज़े ऐन है और क़ुरआन शरीफ़ पर तफ़सीलन फ़र्ज़े किफ़ाया है लिहाज़ा अवाम पर इसकी तफ़सीलात के इल्म की तहसील फ़र्ज़ नहीं जबकि उलमा मौजूद हों, जिन्होंने इसकी तहसीले इल्म में पूरी जेहद सर्फ़ की हो। (फ़ा9) यानी दारे आख़िरत और जो कुछ इसमें है जज़ा व हिसाब वग़ैरह सब पर ऐसा यक़ीन व इत्मीनान रखते हैं कि ज़रा शक व शुबहा नहीं इसमें अहले किताब वग़ैरह कुफ़्फ़ार पर तअरीज़ है जिनके एतेक़ाद आख़िरत के मुतअल्लिक़ फ़ासिद हैं।

أُولَٰئِكَ عَلَىٰ هُدًى مِّن رَّبِّهِمْ ۖ وَأُولَٰئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُونَ ﴿٥﴾ إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا سَوَاءٌ عَلَيْهِمْ أَأَنذَرْتَهُمْ أَمْ لَمْ تُنذِرْهُمْ لَا يُؤْمِنُونَ ﴿٦﴾ خَتَمَ اللَّهُ عَلَىٰ قُلُوبِهِمْ وَعَلَىٰ سَمْعِهِمْ ۖ وَعَلَىٰ أَبْصَارِهِمْ غِشَاوَةٌ ۖ وَلَهُمْ عَذَابٌ عَظِيمٌ ﴿٧﴾ وَمِنَ النَّاسِ مَن يَقُولُ آمَنَّا بِاللَّهِ وَبِالْيَوْمِ الْآخِرِ وَمَا هُم بِمُؤْمِنِينَ ﴿٨﴾ يُخَادِعُونَ اللَّهَ وَالَّذِينَ آمَنُوا وَمَا يَخْدَعُونَ إِلَّا أَنفُسَهُمْ وَمَا يَشْعُرُونَ ﴿٩﴾ فِي قُلُوبِهِم مَّرَضٌ فَزَادَهُمُ اللَّهُ مَرَضًا ۖ وَلَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ بِمَا كَانُوا يَكْذِبُونَ ﴿١٠﴾ وَإِذَا قِيلَ لَهُمْ لَا تُفْسِدُوا فِي الْأَرْضِ قَالُوا إِنَّمَا نَحْنُ مُصْلِحُونَ ﴿١١﴾ أَلَا إِنَّهُمْ هُمُ الْمُفْسِدُونَ وَلَٰكِن لَّا يَشْعُرُونَ ﴿١٢﴾ وَإِذَا قِيلَ لَهُمْ آمِنُوا كَمَا آمَنَ النَّاسُ قَالُوا أَنُؤْمِنُ كَمَا آمَنَ السُّفَهَاءُ ۗ أَلَا إِنَّهُمْ هُمُ السُّفَهَاءُ وَلَٰكِن لَّا يَعْلَمُونَ ﴿١٣﴾

उलाइ-क अ़ला हुदम्-मिर्रब्बिहिम् व उलाइ-क हुमुल्-मुफ़्लिहून(5)इन्नल्लज़ी-न क-फ़रू सवाउन् अ़लैहिम् अ-अन्ज़र्-तहुम् अम् लम् तुन्ज़िर्हुम् ला युअमिनून(6)ख़-त-मल्लाहु अ़ला कुलूबिहिम् व अ़ला सम्अ़िहिम् व अ़ला अब्सारिहिम् ग़िशा-वतुंव् व लहुम् अ़ज़ाबुन् अ़ज़ीम(7)व मिनन्नासि मंय्यकूलु आमन्ना बिल्लाहि व बिल्यौमिल्-आख़िरि व मा हुम् बिमुअ्मिनीन (8)युख़ादिऊ-नल्ला-ह वल्लज़ी-न आमनू व मा यख़्दऊ-न इल्ला अन्फु-सहुम् व मा यश्ऊरून(9)फ़ी कुलूबिहिम् म-रजुन् फ़ज़ा-द हुमुल्लाहु म-र-ज़न् व लहुम् अ़ज़ाबुन् अलीमुम् बिमा कानू यक्ज़िबून(10)व इज़ा क़ी-ल लहुम् ला तुफ़्सिदू फ़िल्अर्ज़ि क़ालू इन्नमा नह्नु मुस्लिहून(11)अला इन्नहुम् हुमुल्-मुफ़्सिदू-न व ला किल्ला यश्अुरून(12)व इज़ा क़ी-ल लहुम् आमिनू कमा आ-म-नन्नासु क़ालू अनूअ्मिनु कमा आ-म-नस्सु-फ़हाउ अला इन्नहुम् हुमुस्सु-फ़हाउ व लाकिल्ला यअ्-लमून(13)

वही लोग अपने रब की तरफ़ से हिदायत पर हैं और वही मुराद को पहुंचने वाले। (5) बेशक वह जिन की क़िस्मत में कुफ़्र है (फ़ा10) उन्हें बराबर है, चाहे तुम उन्हें डराओ या न डराओ वह ईमान लाने के नहीं।(6)अल्लाह ने उनके दिलों पर और कानों पर मुहर कर दी और उनकी आंखों पर घटा टोप है (फ़ा11) और उनके लिए बड़ा अ़ज़ाब। (7) (रुकूअ्-1) और कुछ लोग कहते हैं (फ़ा12) कि हम अल्लाह और पिछले दिन पर ईमान लाये और वह ईमान वाले नहीं। (8) फ़रेब दिया चाहते हैं अल्लाह और ईमान वालों को (फ़ा13) और हक़ीक़त में फ़रेब नहीं देते मगर अपनी जानों को और उन्हें शुऊ़र नहीं।(9) उनके दिलों में बीमारी है (फ़ा14) तो अल्लाह ने उनकी बीमारी और बढ़ाई और उनके लिए दर्दनाक अ़ज़ाब है, बदला उनके झूठ का। (10) (फ़ा15) और जो उनसे कहा जाए ज़मीन में फ़साद न करो (फ़ा16) तो कहते हैं हम तो संवारने वाले हैं (11)सुनता है! वही फ़सादी हैं मगर उन्हें शुऊ़र नहीं(12) और जब उन से कहा जाये ईमान लाओ जैसे और लोग ईमान लाये हैं (फ़ा17) तो कहें क्या हम अहमक़ों की तरह ईमान ले आयें (फ़ा18) सुनता है! वही अहमक़ हैं मगर जानते नहीं।(13) (फ़ा19)

(फ़ा10) औलिया के बाद अअ़्दा का ज़िक्र फ़रमाना हिकमते हिदायत है कि उस मुक़ाबला से हर एक को अपने किरदार की हक़ीक़त और उसके नतायज पर नज़र हो जाये। **शाने नुज़ूलः** यह आयत अबू जहल अबू लहब वग़ैरह कुफ़्फ़ार के हक़ में नाज़िल हुई जो इल्मे इलाही में ईमान से महरूम हैं इसी लिए उनके हक़ में अल्लाह तआ़ला की मुख़ालफ़त से डराना न डराना दोनों बराबर हैं उन्हें नफ़ा न होगा मगर हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की सई बेकार नहीं क्योंकि मन्सबे रिसालते आ़म्मा का फ़र्ज़ रहनुमाई व इक़ामते हुज्जत व तबलीग़ अला वजहिल कमाल है। **मसलाः** अगर क़ौम पन्द पेज़ीर न हो तब भी हादी को हिदायत का सवाब मिलेगा। इस आयत में हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की तस्कीने ख़ातिर है कि कुफ़्फ़ार के ईमान न लाने से आप मग़मूम न हों आपकी सईए तबलीग़ कामिल है इसका अज्र मिलेगा महरूम तो यह बद-नसीब हैं जिन्होंने आपकी इताअ़त न की, कुफ़्र के माना अल्लाह तआ़ला के वजूद या उसकी वहदानियत या किसी नबी की नबुव्वत या ज़रूरियाते दीन से किसी अम्र का इंकार या कोई ऐसा फ़ेअ़्ल जो इन्दश्शरअ़् इंकार की दलील हो, कुफ़्र है। (फ़ा11) खुलासा मतलब यह है कि कुफ़्फ़ार ज़लालत व गुमराही में ऐसे डूबे हुए हैं कि हक़ के देखने सुनने समझने से इस तरह महरूम हो गए जैसे किसी के दिल और कानों पर मुहर लगी हो और आंखों पर पर्दा पड़ा हो। **मसलाः** इस आयत से मालूम हुआ कि बन्दों के अफ़आ़ल भी तहते कुदरते इलाही हैं। (फ़ा12) इससे मालूम हुआ कि हिदायत की राहें उनके लिए अव्वल ही से बन्द न थीं कि जाए उज़्र होती बल्कि उनके कुफ़्र व एनाद

और सरकशी व बेदीनी और मुख़ालफ़ते हक़ व अ़दावते अम्बिया अ़लैहिमुस्सलाम का यह अंजाम है जैसे कोई शख़्स तबीब की मुख़ालफ़त करे और ज़हरे क़ातिल खाले और उसके लिए दवा से इन्तेफ़ाअ़ की सूरत न रहे तो ख़ुद वही मुस्तहिक़े मलामत है। (फ़ा13) शाने नुज़ूलः यहां से तेरह आयतें मुनाफ़िक़ीन की शान में नाज़िल हुई जो बातिन में काफ़िर थे और अपने आपको मुसलमान ज़ाहिर करते थे, अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया *मा हुम् बिमुअ्मिनीन* वह ईमान वाले नहीं यानी कलिमा पढ़ना इस्लाम का मुद्दई होना नमाज़ रोज़ा अदा करना मोमिन होने के लिए काफ़ी नहीं, जब तक दिल में तस्दीक़ न हो **मसलाः** इस से मालूम हुआ कि जितने फ़िरक़े ईमान का दावा करते हैं और कुफ़्र का एतेक़ाद रखते हैं सब का यही हुक्म है कि काफ़िर ख़ारिज अज़ इस्लाम हैं शरअ़ में ऐसों को मुनाफ़िक़ कहते हैं उनका ज़रर खुले काफ़िरों से ज़्यादा है *मिनन्नास* फ़रमाने में लतीफ़ रम्ज़ यह है कि यह गरोह बेहतर सिफ़ात व इंसानी कमालात से ऐसा आ़री है कि उसका ज़िक्र किसी वस्फ़ व ख़ूबी के साथ नहीं किया जाता, यूं कहा जाता है कि वह भी आदमी हैं, **मसलाः** इससे मालूम हुआ कि किसी को बशर कहने में उसके फ़ज़ाइल व कमालात के इन्कार का पहलू निकलता है इस लिए कुरआन पाक में जा बजा अम्बियाए किराम के बशर कहने वालों को काफ़िर फ़रमाया गया और दर हक़ीक़त अम्बिया की शान में ऐसा लफ़्ज़ अदब से दूर और कुफ़्फ़ार का दस्तूर है। बाज़ मुफ़स्सिरीन ने फ़रमाया *मिनन्नासि* सामेईन को तअ़ज्जुब दिलाने के लिए फ़रमाया गया कि ऐसे फ़रेबी मक्कार और ऐसे अहमक़ भी आदमियों में हैं। (फ़ा14) अल्लाह तआ़ला इस से पाक है कि उसको कोई धोका दे सके वह असरार व मख़फ़ियात का जानने वाला है मुराद यह है कि मुनाफ़िक़ अपने गुमान में ख़ुदा को फ़रेब देना चाहते हैं या यह कि ख़ुदा को फ़रेब देना यही है कि रसूल अ़लैहिस्सलाम को धोका देना चाहें क्योंकि वह उसके ख़लीफ़ा हैं और अल्लाह तआ़ला ने अपने हबीब को असरार का इल्म अ़ता फ़रमाया है, वह उन मुनाफ़िक़ीन के छुपे कुफ़्र पर मुत्तलअ़ हैं और मुसलमान उनके इत्तलाअ़ देने से बा-ख़बर तो उन बे-दीनों का फ़रेब न ख़ुदा पर चले न रसूल पर न मोमिनीन पर बल्कि हक़ीक़त में वह अपनी जानों को फ़रेब दे रहे हैं। **मसलाः** इस आयत से मालूम हुआ कि तक़य्या बड़ा ऐब है जिस मज़हब की बिना तक़य्या पर हो वह बातिल है तक़य्या वाले का हाल क़ाबिले एतेमाद नहीं होता। तौबा नाक़ाबिले इत्मीनान होती है इस लिए उलमा ने फ़रमाया *ला तुक़्-बलु तौ-बतुज़्ज़िन्दीक़ि* (फ़ा15) बद अ़क़ीदगी को क़ल्बी मरज़ फ़रमाया गया इससे मालूम हुआ कि बद अ़क़ीदगी रूहानी ज़िन्दगी के लिए तबाहकुन है। **मसलाः** इस आयत से साबित हुआ कि झूठ हराम है इस पर अ़ज़ाबे अलीम मुरत्तब होता है। (फ़ा16) **मसलाः** कुफ़्फ़ार से मेल जोल उनकी ख़ातिर दीन में मुदाहनत और अहले बातिल के साथ तमल्लुक़ व चापलोसी और उनकी ख़ुशी के लिए सुलहे कुल बन जाना और इज़हारे हक़ से बाज़ रहना शाने मुनाफ़िक़ और हराम है, इसी को मुनाफ़िक़ीन का फ़साद फ़रमाया गया आजकल बहुत लोगों ने यह शेवा कर लिया है कि जिस जलसा में गए वैसे ही हो गए, इस्लाम में इसकी मुमानअ़त है ज़ाहिर व बातिन का यकसां न होना बड़ा ऐब है। (फ़ा17) यहां *अन्नासु* से या सहाबा किराम मुराद हैं या मोमिनीन क्योंकि ख़ुदा शनासी फ़रमांबरदारी व आ़क़िबत अन्देशी की बदौलत वही इंसान कहलाने के मुस्तहिक़ हैं। **मसलाः** *आमिनू कमा आ-म-न* से साबित हुआ कि सालिहीन का इत्तेबाअ़ महमूद व मतलूब है। **मसलाः** यह भी साबित हुआ कि मज़हबे अहले सुन्नत हक़ है क्योंकि इसमें सालिहीन का इत्तेबाअ़ है, **मसलाः** बाक़ी तमाम फ़िरक़े सालिहीन से मुनहरिफ़ हैं लिहाज़ा गुमराह हैं, **मसलाः** बाज़ उलमा ने इस आयत को ज़िन्दीक़ की तौबा क़बूल होने की दलील क़रार दिया है। (बैज़ावी) ज़िन्दीक़ वह है जो नबुव्वत का मुक़िर हो शआ़इरे इस्लाम का इज़्हार करे और बातिन में ऐसे अ़क़ीदे रखे जो बिल-इत्तेफ़ाक़ कुफ़्र हों यह भी मुनाफ़िक़ों में दाख़िल है। (फ़ा18) इससे मालूम हुआ कि सालिहीन को बुरा कहना अहले बातिल का क़दीम तरीक़ा है। आजकल के बातिल फ़िरक़े भी पिछले बु.जुर्गों को बुरा कहते हैं रवाफ़िज़ ख़ुलफ़ाए राशिदीन और बहुत सहाबा को ख़वारिज, हज़रत अ़ली मुर्तज़ा रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु और उनके रुफ़क़ा को ग़ैर मुक़ल्लिद अइम्मए मुजतहिदीन बिलख़ुसूस इमामे आज़म रहमतुल्लाह तआ़ला अ़लैह को वहाबिया ब-कसरत औलिया व मक़बूलाने बारगाह को मिरज़ाई अम्बियाए साबिक़ीन तक को .क़ुरआनी (चकड़ाली) सहाबा व मुहद्दिसीन को नेचरी तमाम अकाबिरे दीन को बुरा कहते और ज़बाने तअ़न दराज़ करते हैं इस आयत से मालूम हुआ कि यह सब गुमराही में हैं इस में दीनदार आलिमों के लिए तसल्ली है कि वह गुमराहों की बद ज़बानियों से बहुत रंजीदा न हों समझ लें कि यह अहले बातिल का क़दीम दस्तूर है (मदारिक) (फ़ा19) मुनाफ़िक़ीन की यह बद-ज़बानी मुसलमानों के सामने न थी, उनसे तो वह यही कहते थे कि हम ब-इख़्लास मोमिन हैं। जैसा कि अगली आयत में है *इज़ा ल-क़ुल्लज़ी-न आ-मनू क़ालू आमन्ना* यह तबर्रा बाज़ियां अपनी ख़ास मजलिसों में करते थे अल्लाह तआ़ला ने उनका पर्दा फ़ाश कर दिया (ख़ाज़िन) इसी तरह आजकल के गुमराह फ़िरक़े मुसलमानों से अपने ख़्यालाते फ़ासिदा को छुपाते हैं मगर अल्लहा तआ़ला उनकी किताबों और तहरीरों से उनके राज़ फ़ाश कर देता है, इस आयत से मुसलमानों को ख़बरदार किया जाता है कि बे दीनों की फ़रेबकारियों से होशियार रहें धोखा न खायें।

وَإِذَا لَقُوا الَّذِينَ آمَنُوا قَالُوا آمَنَّا ۚ وَإِذَا خَلَوْا إِلَىٰ شَيَاطِينِهِمْ قَالُوا إِنَّا مَعَكُمْ إِنَّمَا نَحْنُ مُسْتَهْزِئُونَ ﴿١٤﴾ اللَّهُ يَسْتَهْزِئُ بِهِمْ وَيَمُدُّهُمْ فِي طُغْيَانِهِمْ يَعْمَهُونَ ﴿١٥﴾
أُولَٰئِكَ الَّذِينَ اشْتَرَوُا الضَّلَالَةَ بِالْهُدَىٰ فَمَا رَبِحَتْ تِجَارَتُهُمْ وَمَا كَانُوا مُهْتَدِينَ ﴿١٦﴾ مَثَلُهُمْ كَمَثَلِ الَّذِي اسْتَوْقَدَ نَارًا فَلَمَّا أَضَاءَتْ
مَا حَوْلَهُ ذَهَبَ اللَّهُ بِنُورِهِمْ وَتَرَكَهُمْ فِي ظُلُمَاتٍ لَا يُبْصِرُونَ ﴿١٧﴾ صُمٌّ بُكْمٌ عُمْيٌ فَهُمْ لَا يَرْجِعُونَ ﴿١٨﴾ أَوْ كَصَيِّبٍ مِنَ السَّمَاءِ فِيهِ ظُلُمَاتٌ
وَرَعْدٌ وَبَرْقٌ ۚ يَجْعَلُونَ أَصَابِعَهُمْ فِي آذَانِهِمْ مِنَ الصَّوَاعِقِ حَذَرَ الْمَوْتِ ۚ وَاللَّهُ مُحِيطٌ بِالْكَافِرِينَ ﴿١٩﴾ يَكَادُ الْبَرْقُ يَخْطَفُ أَبْصَارَهُمْ ۖ كُلَّمَا
أَضَاءَ لَهُمْ مَشَوْا فِيهِ وَإِذَا أَظْلَمَ عَلَيْهِمْ قَامُوا ۚ وَلَوْ شَاءَ اللَّهُ لَذَهَبَ بِسَمْعِهِمْ وَأَبْصَارِهِمْ ۚ إِنَّ اللَّهَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ﴿٢٠﴾

व इज़ा लक़ुल्लज़ी–न आ–मनू क़ालू आमन्ना व इजा ख़लौ इला शयातीनिहिम् क़ालू इन्ना म–अकुम् इन्नमा नह्नु मुस्तह्–ज़िऊन(14)अल्लाहु यस्तहज़िउ बिहिम् व यमुद्दुहुम् फ़ी तुग़्यानिहिम् यअ्–महून (15)उलाइ–कल्–लज़ी–नश्–त–र वुज़्–ज़ला–ल–त बिल्हुदा फ़मा–र बिहत् तिजा–रतुहुम् व मा कानू मुह्तदीन(16)म–सलुहुम् क–म–सलिल्–लज़िस्तौ क़–द नारन् फ़–लम्मा अज़ाअत् मा हौ–लहू ज–ह–बल्लाहु बिनूरिहिम् व त–र–कहुम् फ़ी ज़ुलुमातिल्–ला युब्सिरून(17)सुम्मुम्–बुक्मुन् उम्युन् फ़हुम् ला यर्जिऊ़न(18)औ क–सय्यिबिम् मि–नस्समाइ फ़ीहि ज़ुलुमातुंव्–व रअ्दुंव्–व बर्कुन् यजअलू–न असाबि–अहुम् फ़ी आज़ानिहिम् मिनस्सवाअिक़ि ह–ज़रल्मौति वल्लाहु मुहीतुम्–बिल्काफ़िरीन(19) यकादुल्बर्क़ु यख़्तफ़ु अब्सा–रहुम् कुल्लमा अज़ा–अ लहुम् मशौ फ़ीहि व इज़ा अज़्–ल–म अलैहिम् क़ामू व लौ शा–अल्लाहु ल–ज़–ह–ब बि–सम्अिहिम् व अब्सारिहिम् इन्नल्ला–ह अला कुल्लि शैइन् क़दीर(20)

और जब ईमान वालों से मिलें तो कहें हम ईमान लाये और जब अपने शैतानों के पास अकेले हों (फ़ा20) तो कहें हम तुम्हारे साथ हैं, हम तो यूंही हंसी करते हैं।(14) (फ़ा21) अल्लाह उन से इस्तिहज़ा फ़रमाता है (फ़ा22) (जैसा उसकी शान के लाएक़ है) और उन्हें ढील देता है कि अपनी सरकशी में भटकते रहें।(15) यह वह लोग हैं जिन्होंने हिदायत के बदले गुमराही ख़रीदी (फ़ा23) तो उनका सौदा कुछ नफ़ा न लाया और वह सौदे की राह जानते ही न थे।(16)(फ़ा24) उनकी कहावत उस की तरह है जिसने आग रौशन की तो जब उस से आस पास सब जगमगा उठा अल्लाह उनका नूर ले गया और उन्हें अंधेरियों में छोड़ दिया कि कुछ नहीं सूझता।(17) (फ़ा25) बहरे गूंगे अन्धे तो वह फिर आने वाले नहीं(18)या जैसे आसमान से उतरता पानी कि उस में अंधेरियां हैं और गरज और चमक (फ़ा26) अपने कानों में उंगलियां ठूंस रहे हैं, कड़क के सबब, मौत के डर से(फ़ा27) और अल्लाह काफ़िरों को, घेरे हुए है।(19)(फ़ा28) बिजली यूं मालूम होती है कि उनकी निगाहें उचक ले जाएगी (फ़ा29) जब कुछ चमक हुई उसमें चलने लगे (फ़ा30) और जब अंधेरा हुआ खड़े रह गए और अल्लाह चाहता तो उनके कान और आंखें ले जाता (फ़ा31) बेशक अल्लाह सब कुछ कर सकता है।(20) (फ़ा32) (रुकूअ़ 2)

(फ़ा20) यहां शयातीन से कुफ़्फ़ार के वह सरदार मुराद हैं जो इग़्वा में मसरूफ़ रहते हैं (ख़ाज़िन व बैज़ावी) यह मुनाफ़िक़ जब उनसे मिलते हैं तो कहते हैं हम तुम्हारे साथ हैं और मुसलमानों से मिलना महज़ बराहे फ़रेब व इस्तेहज़ा इस लिए है कि उनके राज़ मालूम हों और उनमें फ़साद अंगेजी के मवाक़ेअ़ मिलें (ख़ाज़िन) (फ़ा21) यानी इज़हारे ईमान तमस्ख़ुर के तौर पर किया यह इस्लाम का इंकार हुआ, **मसलाः** अम्बिया अ़लैहिमुस्सलाम और दीन के साथ इस्तेहज़ा व तमस्ख़ुर कुफ़्र है। **शाने नुज़ूलः** यह आयत अ़ब्दुल्लाह बिन उबय वग़ैरह मुनाफ़िक़ीन के हक़ में नाज़िल हुई, एक रोज़ उन्होंने सहाबए किराम की एक जमाअ़त को आते देखा तो इब्ने उबय ने अपने यारों से कहा देखो तो मैं उन्हें कैसा बनाता हूं जब वह हज़रात क़रीब पहुंचे तो इब्ने उबय ने पहले हज़रत सिद्दीक़े अकबर रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु का दस्ते मुबारक अपने हाथ में लेकर आप की तारीफ़ की फिर उसी तरह हज़रत उमर और हज़रत अली की तारीफ़ की (रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हुम) हज़रत अली मुर्तज़ा रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु ने फ़रमाया ऐ इब्ने उबय ख़ुदा से डर निफ़ाक़ से बाज़ आ क्योंकि मुनाफ़िक़ीन बद-तरीन ख़ल्क़ हैं इस पर वह कहने लगा कि यह बातें निफ़ाक़ से नहीं की गईं, ब-ख़ुदा हम आपकी तरह मोमिने सादिक़ हैं जब यह हज़रात तशरीफ़ ले गए तो आप अपने यारों में अपनी चालबाज़ी पर फ़ख़्र करने लगा। इस पर यह आयत नाज़िल हुई कि मुनाफ़िक़ीन मोमिनीन से मिलते वक़्त इज़हारे ईमान व इख़्लास करते हैं और उनसे अलाहिदा होकर अपनी ख़ास मजलिसों में उनकी हंसी उड़ाते और इस्तेहज़ा करते हैं (अख़रजु हुसस्अ़लबी वलवाहिदी वज़अफ़्हु, इब्ने हजर वस्सुयूती फ़ी लुबाबिन्-नुक़ूल). **मसलाः** इस से मालूम हुआ कि सहाबा किराम व पेशवायाने दीन का तमस्ख़ुर

उड़ाना कुफ़्र है। (फ़ा22) अल्लाह तआ़ला इस्तेहज़ा और तमाम नक़ायस व उयूब से मुनज़्ज़ा व पाक है यहां जज़ाए इस्तेहज़ा को इस्तेहज़ा फ़रमाया गया ताकि ख़ूब दिलनशीं हो जाये कि यह सज़ा उस नाकर्दनी फ़ेअ़्ल की है ऐसे मौक़ा पर जज़ा को इसी फ़ेअ़्ल से तअ़्बीर करना आईने फ़साहत है जैसे *जज़ाउ सय्यिअतिन् सय्यि-अतुन्* में कमाले हुस्ने बयान यह है कि इस जुमला को जुमलए साबिक़ा पर मअ़्तूफ़ न फ़रमाया, क्योंकि वहां इस्तेहज़ा हक़ीक़ी माना में था (फ़ा23) हिदायत के बदले गुमराही ख़रीदना यानी बजाए ईमान के कुफ़्र इख़्तियार करना निहायत ख़सारा और टोटे की बात है। **शाने नुज़ूलः** यह आयत या उन लोगों के हक़ में नाज़िल हुई जो ईमान लाने के बाद काफ़िर हो गए या यहूद के हक़ में जो पहले से तो हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम पर ईमान रखते थे मगर जब हुज़ूर की तशरीफ़ आवरी हुई तो मुन्किर हो गए या तमाम कुफ़्फ़ार के हक़ में कि अल्लाह तआ़ला ने उन्हें फ़ितरते सलीमा अ़ता फ़रमाई हक़ के दलाइल वाज़ेह किये हिदायत की राहें खोलीं, लेकिन उन्होंने अ़क़्ल व इंसाफ़ से काम न लिया और गुमराही इख़्तियार की। **मसलाः** इस आयत से बैअ़े तआ़ती का जवाज़ साबित हुआ यानी ख़रीद व फ़रोख़्त के अलफ़ाज़ कहे बग़ैर महज़ रज़ामन्दी से एक चीज़ के बदले दूसरी चीज़ लेना जायज़ है। (फ़ा24) क्योंकि अगर तिजारत का तरीक़ा जानते तो असल पूंजी (हिदायत) न खो बैठते। (फ़ा25) यह उनकी मिसाल है जिन्हें अल्लाह तआ़ला ने कुछ हिदायत दी या उस पर क़ुदरत बख़्शी, फिर उन्होंने उसको ज़ाया कर दिया और अबदी दौलत को हासिल न किया, उन का माल हसरत व अफ़सोस और हैरत व ख़ौफ़ है इसमें वह मुनाफ़िक़ भी दाख़िल हैं जिन्होंने इज़हारे ईमान किया और दिल में कुफ़्र रख कर इक़रार की रौशनी को ज़ाया कर दिया और वह भी जो मोमिन होने के बाद मुरतद हो गए, और वह भी जिन्हें फ़ितरते सलीमा अता हुई और दलायल की रौशनी ने हक़ को वाज़ेह किया मगर उन्होंने उससे फ़ायदा न उठाया और गुमराही इख़्तियार की और जब हक़ सुनने मानने कहने राहे हक़ देखने से महरूम हुए तो कान ज़बान आंख सब बेकार हैं। (फ़ा26) हिदायत के बदले गुमराही ख़रीदने वालों की यह दूसरी तम्सील है कि जैसे बारिश ज़मीन की हयात का सबब होती है और उसके साथ ख़ौफ़नाक तारीकियां और मुहीब गरज और चमक होती है, इसी तरह क़ुरआन व इस्लाम क़ुलूब की हयात का सबब हैं और ज़िक्रे कुफ़्र व शिर्क व निफ़ाक़ ज़ुलमत के मुशाबेह जैसे तारीकी रहरौ को मंज़िल तक पहुंचने से मानेअ़् होती है ऐसे ही कुफ़्र व निफ़ाक़ राहयाबी से मानेअ़् हैं और वईदात गरज के और हुजजे बैय्यना चमक के मुशाबेह हैं। **शाने नुज़ूलः** मुनाफ़िक़ों में से दो आदमी हुज़ूर सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम के पास से मुशरिकीन की तरफ़ भागे, राह में यही बारिश आई जिस का आयत में ज़िक्र है उसमें शिद्दत की गरज, कड़क और चमक थी, जब गरज होती तो कानों में उंगलियां ठूंस लेते कि कहीं यह कानों को फाड़ कर मार न डाले, जब चमक होती चलने लगते जब अंधेरी होती अन्धे रह जाते, आपस में कहने लगे, ख़ुदा ख़ैर से सुबह करे तो हु.ज़ूर की ख़िदमत में हाज़िर होकर अपने हाथ हु.ज़ूर सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम के दस्ते अक़दस में दें, चुनांचे उन्होंने ऐसा ही किया और इस्लाम पर साबित क़दम रहे, उनके हाल को अल्लाह तआ़ला ने मुनाफ़िक़ीन के लिए मसल (कहावत) बनाया जो मजलिस शरीफ़ में हाज़िर होते तो कानों में उंगलियां ठूंस लेते कि कहीं हु.ज़ूर का कलाम उन में असर न कर जाये, जिससे मर ही जायें और जब उनके माल व औलाद ज़्यादा होते और .फ़ुतूह व ग़नीमत मिलती तो बिजली की चमक वालों की तरह चलते और कहते कि अब तो दीने मुहम्मदी सच्चा है और जब माल व औलाद हलाक होते और कोई बला आती तो बारिश की अंधेरियों में ठिठक रहने वालों की तरह कहते कि यह मुसीबतें इसी दीन की वजह से हैं और इस्लाम से पलट जाते (लुबाबुन्नुक़ूल,लिस्सुयूती) (फ़ा27) जैसे अंधेरी रात में काली घटा छाई हो और बिजली की गरज व चमक जंगल में मुसाफ़िरों को हैरान करती हो और वह कड़क की वहशतनाक आवाज़ से ब-अन्देशए हलाक कानों में उंगलियां ठूंसता हो, ऐसे ही कुफ़्फ़ार क़ुरआन पाक के सुनने से कान बन्द करते हैं और उन्हें यह अन्देशा होता है कि कहीं उसके दिलनशीन मज़ामीन इस्लाम व ईमान की तरफ़ मायल करके बाप दादा का कुफ़्री दीन तर्क न करा दें जो उनके नज़दीक मौत के बराबर है। (फ़ा28) लिहाज़ा यह गुरेज़ उन्हें कुछ फ़ायदा नहीं दे सकती क्यों कि वह कानों में उंगलियां ठूंस कर क़हरे इलाही से ख़लास नहीं पा सकते। (फ़ा29) जैसे बिजली की चमक, मालूम होता है कि बीनाई को ज़ाइल कर देगी ऐसे ही दलाइले बाहिरा के अनवार उनकी बसर व बसीरत को ख़ीरह करते हैं। (फ़ा30) जिस तरह अंधेरी रात और अब्र व बारिश की तारीकियों में मुसाफ़िर मुतहय्यर होता है, जब बिजली चमकती है तो कुछ चल लेता है जब अंधेरा होता है तो खड़ा रह जाता है, इसी तरह इस्लाम के ग़लबा और मोअ़्जेज़ात की रौशनी और आराम के वक़्त मुनाफ़िक़ इस्लाम की तरफ़ राग़िब होते हैं और जब कोई मशक़्क़त पेश आती है तो कुफ़्र की तारीकी में खड़े रह जाते हैं और इस्लाम से हटने लगते हैं, इसी मज़मून को दूसरी आयत में इस तरह इरशाद फ़रमाया *इज़ा दुअ़ू इ-लल्लाहि व रसूलिही लि-यह्कु-म बै-नहुम् इज़ा फ़रीक़ुम् मिन्हुम् मुअ़्रिज़ू-न व इंय्यकुल-लहुमुल् हक़्क़ु यातू इलैहि मुज़्अ़िनीन* (ख़ाज़िन सादी वग़ैरह) (फ़ा31) यानी अगरचे मुनाफ़िक़ीन का तर्ज़े अ़मल इसका मुक़तज़ी था, मगर अल्लाह तआ़ला ने उनके समअ़् व बसर को बातिल न किया। **मसलाः** इससे मालूम हुआ कि अस्बाब की तासीर मशीयते इलाहिया के साथ मशरूत है कि बग़ैर मशीयत तन्हा अस्बाब कुछ नहीं कर सकते, **मसलाः** यह भी मालूम हुआ कि मशीयत अस्बाव की मुहताज नहीं, वह बे सबब जो चाहे कर सकता है। (फ़ा32) शय उसी को कहते हैं जिसे अल्लाह चाहे और जो तहते मशीयत आ सके तमाम मुमकिनात शय में दाख़िल हैं इस लिए वह तहते क़ुदरत हैं और जो मुमकिन नहीं वाजिब या मुम्तनेअ़् है उससे क़ुदरत व इरादा मुतअ़ल्लिक़ नहीं होता जैसे अल्लाह तआ़ला की ज़ात व सिफ़ात वाजिब हैं इस लिए मक़दूर नहीं। **मसलाः** बारी तआ़ला के लिए झूट और तमाम उयूब मुहाल हैं, इसी लिए क़ुदरत को उनसे कुछ वास्ता नहीं।

يَاَيُّهَا النَّاسُ اعْبُدُوْا رَبَّكُمُ الَّذِىْ خَلَقَكُمْ وَالَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِكُمْ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُوْنَ ۝٢١ الَّذِىْ جَعَلَ لَكُمُ الْاَرْضَ فِرَاشًا وَّالسَّمَآءَ بِنَآءً ۪ وَّاَنْزَلَ مِنَ السَّمَآءِ مَآءً فَاَخْرَجَ بِهٖ مِنَ الثَّمَرٰتِ رِزْقًا لَّكُمْ ۚ فَلَا تَجْعَلُوْا لِلّٰهِ اَنْدَادًا وَّاَنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ۝٢٢ وَاِنْ كُنْتُمْ فِىْ رَيْبٍ مِّمَّا نَزَّلْنَا عَلٰى عَبْدِنَا فَاْتُوْا بِسُوْرَةٍ مِّنْ مِّثْلِهٖ ۪ وَادْعُوْا شُهَدَآءَكُمْ مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ۝٢٣ فَاِنْ لَّمْ تَفْعَلُوْا وَلَنْ تَفْعَلُوْا فَاتَّقُوا النَّارَ الَّتِىْ وَقُوْدُهَا النَّاسُ وَالْحِجَارَةُ ۚ اُعِدَّتْ لِلْكٰفِرِيْنَ ۝٢٤ وَبَشِّرِ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ اَنَّ لَهُمْ جَنّٰتٍ تَجْرِىْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ ۭ كُلَّمَا رُزِقُوْا مِنْهَا مِنْ ثَمَرَةٍ رِّزْقًا ۙ قَالُوْا هٰذَا الَّذِىْ رُزِقْنَا مِنْ قَبْلُ ۙ وَاُتُوْا بِهٖ مُتَشَابِهًا ۭ وَلَهُمْ فِيْهَآ اَزْوَاجٌ مُّطَهَّرَةٌ ۙ وَّهُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ۝٢٥

या अय्युहन्नासुअ्-बुदू रब्बकुमुल्लज़ी ख़-ल-क़कुम् वल्लज़ी-न मिन् क़ब्लिकुम् ल-अ़ल्लकुम् तत्तकून(21)अ़ल्लज़ी ज-अ़-ल लकु मुल्अर्-ज़ फ़िराशंव्-वस्समा-अ बिनाअंव्-व अन्ज़-ल मिनस्समा-इ माअन् फ़-अख़्-र-ज बिही मिनस्-स-मराति रिज़्-क़ल्-लकुम् फ़ला तज्-अ़लू लिल्लाहि अन्दादंव्-व अन्तुम् तअ्-लमून(22)व इन् कुन्तुम् फ़ी रैबिम् मिम्मा नज़्ज़ल्ना अ़ला अ़ब्दिना फ़अ्तू बिसू-रतिम् मिम् मिस्लिही वदऊ़ शु-हदा-अकुम् मिन् दूनिल्लाहि इन् कुन्तुम् सादिक़ीन (23)फ़-इल्लम् तफ़्-अ़लू व लन् तफ़्-अ़लू फ़त्तक़ुन् नारल्-लती व क़ूदुहन्नासु वल्हिजा-रतु उअ़िद्दत् लिल्-काफ़िरीन(24)व बश्-शिरिल्-लज़ी-न आ-मनू व अ़मिलुस्सालिहाति अन्-न लहुम् जन्नातिन् तजरी मिन् तह्तिहल् अन्हारु कुल्लमा रुज़िक़ू मिन्हा मिन् स-म-रतिर्-रिज़्क़न् क़ालू हाज़ल्-लज़ी रुज़िक़्ना मिन् क़ब्लु व उतू बिही मु-तशाबिहन् व लहुम् फ़ीहा अज़्वाजुम् मु-तह्ह-रतुंव्-व हुम् फ़ीहा ख़ालिदून(25)

ऐ लोगो! (फ़ा33) अपने रब को पूजो जिसने तुम्हें और तुम से अगलों को पैदा किया, यह उम्मीद करते हुए कि तुम्हें परहेज़गारी मिले।(21)(फ़ा34) और जिसने तुम्हारे लिए ज़मीन को बिछौना और आसमान को इमारत बनाया और आसमान से पानी उतारा (फ़ा35) तो उस से कुछ फल निकाले तुम्हारे खाने को तो अल्लाह के लिए जान बूझकर बराबर वाले न ठहराओ।(22)(फ़ा36) और अगर तुम्हें कुछ शक हो उस में जो हम ने अपने इन ख़ास बन्दे (फ़ा37) पर उतारा तो इस जैसी एक सूरत तो ले आओ (फ़ा38) और अल्लाह के सिवा, अपने सब हिमायतियों को बुलालो, अगर तुम सच्चे हो। (23) फिर अगर न ला सको और हम फ़रमाए देते हैं कि हरगिज़ न ला सकोगे तो डरो उस आग से, जिसका ईंधन आदमी और पत्थर हैं (फ़ा39) तैयार रखी है काफ़िरों के लिए। (24)(फ़ा40) और ख़ुशख़बरी दे, उन्हें जो ईमान लाये और अच्छे काम किए, कि उनके लिए बाग़ हैं, जिनके नीचे नहरें रवाँ (फ़ा41) जब उन्हें उन बाग़ों से कोई फल खाने को दिया जाएगा, सूरत देखकर कहेंगे, यह तो वही रिज़्क़ है जो हमें पहले मिला था (फ़ा42) और वह सूरत में मिलता जुलता उन्हें दिया गया और उनके लिए उन बाग़ों में सुथरी बीबियां हैं(फ़ा43) और वह उन में हमेशा रहेंगे।(25)(फ़ा44)

(फ़ा33) अव्वल सूरत में कुछ बताया गया कि यह किताब मुत्तक़ीन की हिदायत के लिए नाज़िल हुई, फिर मुत्तक़ीन के औसाफ़ का ज़िक्र फ़रमाया उसके बाद उससे मुनहरिफ़ होने वाले फ़िरक़ों का और उनके अहवाल का ज़िक्र फ़रमाया कि सआ़दतमन्द इन्सान हिदायत व तक़वा की तरफ़ राग़िब हो और नाफ़रमानी व बग़ावत से बचे, अब तरीक़े तहसीले तक़वा तालीम फ़रमाया जाता है *या अय्युहन्नासु* का ख़िताब अक्सर अहले मक्का को और *या अय्युहल्लज़ी-न आमनू* का अह्ले मदीना को होता है मगर यहां यह ख़िताब मोमिन काफ़िर सब को आम है इसमें इशारा है कि इंसानी शराफ़त इसी में है कि आदमी तक़वा हासिल करे और मसरूफ़े इबादत रहे, इबादत वह ग़ायत ताज़ीम है जो बन्दा अपनी अ़ब्दियत और मअ़बूद की उलूहियत के एतेक़ाद व एतेराफ़ के साथ बजा लाये, यहां इबादत आ़म है, अपने तमाम अनवाअ़ व अक़साम व उसूल व फ़ुरूअ़ को शामिल है। मसलाः कुफ़्फ़ार इबादत के मामूर हैं जिस तरह बे वुज़ू होना नमाज़ के फ़र्ज़ होने का मानेअ़ नहीं, इसी तरह काफ़िर होना वजूबे इबादत को मना नहीं करता और जैसे बे वुज़ू शख़्स पर नमाज़ की फ़र्ज़ियत रफ़ए हदस लाज़िम करती है ऐसे ही काफ़िर पर वजूबे इबादत से तर्के कुफ़्र लाज़िम आता है।(फ़ा34) इससे मालूम हुआ कि इबादत का फ़ाइदा आ़बिद ही को मिलता है, अल्लाह तआ़ला इससे पाक है कि उसको इबादत या और किसी चीज़ से नफ़ा हासिल हो।(फ़ा35) पहली आयत में (बक़िया सफ़हा 36 पर)

إِنَّ اللَّهَ لَا يَسْتَحْيِ أَنْ يَضْرِبَ مَثَلًا مَا بَعُوضَةً فَمَا فَوْقَهَا ۚ فَأَمَّا الَّذِينَ آمَنُوا فَيَعْلَمُونَ أَنَّهُ الْحَقُّ مِنْ رَبِّهِمْ ۖ وَأَمَّا الَّذِينَ كَفَرُوا فَيَقُولُونَ مَاذَا
أَرَادَ اللَّهُ بِهَٰذَا مَثَلًا ۘ يُضِلُّ بِهِ كَثِيرًا وَيَهْدِي بِهِ كَثِيرًا ۚ وَمَا يُضِلُّ بِهِ إِلَّا الْفَاسِقِينَ ﴿٢٦﴾ الَّذِينَ يَنْقُضُونَ عَهْدَ اللَّهِ مِنْ بَعْدِ مِيثَاقِهِ
وَيَقْطَعُونَ مَا أَمَرَ اللَّهُ بِهِ أَنْ يُوصَلَ وَيُفْسِدُونَ فِي الْأَرْضِ ۚ أُولَٰئِكَ هُمُ الْخَاسِرُونَ ﴿٢٧﴾ كَيْفَ تَكْفُرُونَ بِاللَّهِ وَكُنْتُمْ أَمْوَاتًا فَأَحْيَاكُمْ ۖ ثُمَّ
يُمِيتُكُمْ ثُمَّ يُحْيِيكُمْ ثُمَّ إِلَيْهِ تُرْجَعُونَ ﴿٢٨﴾ هُوَ الَّذِي خَلَقَ لَكُمْ مَا فِي الْأَرْضِ جَمِيعًا ثُمَّ اسْتَوَىٰ إِلَى السَّمَاءِ فَسَوَّاهُنَّ سَبْعَ سَمَاوَاتٍ ۚ وَهُوَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ ﴿٢٩﴾
وَإِذْ قَالَ رَبُّكَ لِلْمَلَائِكَةِ إِنِّي جَاعِلٌ فِي الْأَرْضِ خَلِيفَةً ۖ قَالُوا أَتَجْعَلُ فِيهَا مَنْ يُفْسِدُ فِيهَا وَيَسْفِكُ الدِّمَاءَ وَنَحْنُ نُسَبِّحُ بِحَمْدِكَ وَنُقَدِّسُ لَكَ ۖ قَالَ إِنِّي أَعْلَمُ مَا لَا تَعْلَمُونَ ﴿٣٠﴾

इन्नल्ला–ह ला यस्तह्यी अंय्यज़्रि–ब म–स–लम्मा बऊ–ज़–तन् फमा फौ–क़हा फ–अम्मल्लज़ी–न आ–मनू फ–यअ्–लमू–न अन्नहुल् हक़्क़ु मिर्रब्बिहिम् व अम्मल्लज़ी–न क–फ़रू फ–यक़ूलू–न माज़ा अरादल्लाहु बिहाज़ा म–सलन् युज़िल्लु बिही कसीरंव्–व यह्दी बिही कसीरन् व मा युज़िल्लु बिही इल्लल्फ़ासिक़ीन(26)अल्लज़ी–न यन्क़ुज़ू–न अ़ह्दल्लाहि मिम्बअ़्दि मीसाक़िही व यक़्तअू–न मा अ–म–रल्लाहु बिही अंय्यू–स–ल व युफ़्सिदू–न फ़िल्अर्ज़ि उलाइ–क हुमुल्–ख़ासिरून(27) कै–फ़ तक्फ़ुरू–न बिल्लाहि व कुन्तुम् अम्वातन् फ अह्याकुम् सुम्–म युमीतुकुम् सुम्–म युह्यीकुम् सुम्–म इलैहि तुर्–जअून(28)हुवल्लज़ी ख़–ल–क़ लकुम् मा फ़िल्अर्ज़ि जमीअ़न् सुम्मस्तवा–इलस्समाइ फ़–सव्वाहुन्–न सब्–अ़ समावातिन् व हु–व बिकुल्लि शैइन् अ़लीम(29)व इज़् क़ा–ल रब्बु–क लिल्मलाइ–कति इन्नी जाअ़िलुन् फ़िल्अर्ज़ि ख़ली–फ़–तन् क़ालू अ–तजअ़लु फ़ीहा मंय्युफ़्सिदु फ़ीहा व यस्फ़िकुद्दिमा–अ व नह्नु नुसब्बिहु बि–हम्दि–क व नुक़द्दिसु ल–क क़ा–ल इन्नी अअ्–लमु मा ला तअ्–लमून(30)

बेशक अल्लाह इस से हया नहीं फ़रमाता कि मिसाल समझाने को कैसी ही चीज़ का ज़िक्र फ़रमाए मच्छर हो या उस से बढ़कर (फ़ा45) तो वह जो ईमान लाये वह तो जानते हैं कि यह उनके रब की तरफ़ से हक़ है (फ़ा46) रहे काफ़िर, वह कहते हैं ऐसी कहावत में अल्लाह का क्या मक़सूद है, अल्लाह बहुतेरों को इस से गुमराह करता है (फ़ा47) और बहुतेरों को हिदायत फ़रमाता है और इससे उन्हें गुमराह करता है जो बे हुक्म हैं।(26) (फ़ा48) वह जो अल्लाह के अ़हद को तोड़ देते हैं (फ़ा49) पक्का होने के बाद, और काटते हैं उस चीज़ को जिसके जोड़ने का खुदा ने हुक्म दिया और ज़मीन में फ़साद फैलाते हैं (फ़ा50 अ) वही नुक़्सान में हैं।(27) भला तुम क्यों कर खुदा के मुन्किर होगे, हालांकि तुम मुर्दा थे उसने तुम्हें जिलाया फिर तुम्हें मारेगा फिर तुम्हें जिलाएगा फिर उसी की तरफ़ पलट कर जाओगे।(28)(फ़ा50 ब) वही है जिसने तुम्हारे लिए बनाया जो कुछ ज़मीन में है। (फ़ा51) फिर आसमान की तरफ़ इस्तिवा (क़स्द) फ़रमाया तो ठीक सात आसमान बनाए और वह सब कुछ जानता है।(29)(फ़ा52)(रुकूअ़ 3) और याद करो जब तुम्हारे रब ने फ़रिश्तों से फ़रमाया, मैं ज़मीन में अपना नाइब बनाने वाला हूं (फ़ा53) बोले क्या ऐसे को नायब करेगा जो उसमें फ़साद फैलाए और ख़ूं रेज़ियां करे(फ़ा54) और हम तुझे सराहते हुए, तेरी तस्बीह करते और तेरी पाकी बोलते हैं फ़रमाया मुझे मालूम है जो तुम नहीं जानते।(30)(फ़ा55)

(फ़ा45) शाने नु.जूलः जब अल्लाह तआ़ला ने आयत *म–सलुहुम् क–म–सलिल्–लज़िस्तौ–क़द* और आयत *औ क–सय्यिबिम्* में मुनाफ़िक़ों की दो मिसालें बयान फ़रमाईं तो मुनाफ़िक़ों ने यह ऐतराज़ किया कि अल्लाह तआ़ला इससे बालातर है कि ऐसी मिसालें बयान फ़रमाये इसके रद में यह अ।यत नाज़िल हुई (फ़ा46)चूंकि मिसालों का बयान मुक़्तज़ाए हिकमत और मज़मून को दिल नशीन करने वाला होता है और फुसहाए अ़रब का दस्तूर है इस लिए इस पर ऐतराज़ ग़लत व बेजा है और बयाने अम्सिला हक़ है। (फ़ा47)*युज़िल्लु बिही* कुफ़्फ़ार के उस मक़ूला का जवाब है कि अल्लाह तआ़ला का इस मसल से क्या मक़सूद है और *अम्मल्–लज़ी–न आ–मनू* और *अम्मल्–लज़ी–न क–फ़रू* जो दो जुमले ऊपर इरशाद हुए उनकी तफ़सीर है कि इस मसल से बहुतों को गुमराह करता है जिनकी अक़्लों पर जुहल ने ग़लबा किया है और जिनकी आ़दत मकाबिरा व एनाद है और जो अमरे हक़ और खुली हिकमत के इंकार व मुख़ालफ़त के ख़ूगर हैं और बावजूद कि यह मसल निहायत ही बर महल है फिर भी इंकार करते हैं और उससे अल्लाह

तआला बहुतों को हिदायत फ़रमाता है जो ग़ौर व तहक़ीक़ के आदी हैं और इंसाफ़ के ख़िलाफ़ बात नहीं कहते वह जानते हैं कि हिकमत यही है कि अ़ज़ीमुल-मर्तबा चीज़ की तम्सील किसी क़दर वाली चीज़ से और हक़ीर चीज़ की अदना शय से दी जाए जैसा कि ऊपर की आयत में हक़ की नूर से और बातिल की .ज़ुलमत से तम्सील दी गई। (फ़ा48) शरअ़ में फ़ासिक़ उस नाफ़रमान को कहते हैं जो कबीरा का मुर्तकिब हो, फ़िस्क़ के तीन दर्जे हैं एक तग़ाबी वह यह कि आदमी इत्तेफ़ाक़िया किसी गुनाहे कबीरा का मुर्तकिब हुआ और उसको बुरा ही जानता रहा, दूसरा इन्हेमाक कि कबीरा का आदी हो गया और उससे बचने की परवाह न रही, तीसरा जुहूद कि हराम को अच्छा जान कर इरतेकाब करे इस दर्जा वाला ईमान से महरूम हो जाता है। पहले दो दर्जों में जब तक अकबरे कबाइर (शिर्क व कुफ़्र) का इरतेकाब न करे उस पर मोमिन का इतलाक़ होता है। यहां फ़ासिक़ीन से वही नाफ़रमान मुराद हैं जो ईमान से ख़ारिज हो गए। क़ुरआने करीम में कुफ़्फ़ार पर भी फ़ासिक़ का इतलाक़ हुआ है *इन्-नल् मुनाफ़िक़ी-न हुमुल्-फ़ासिक़.न* बाज़ मुफ़स्सिरीन ने यहां फ़ासिक़ से काफ़िर मुराद लिये बाज़ ने मुनाफ़िक़ बाज़ ने यहूद। (फ़ा49) इससे वह अहद मुराद है जो अल्लाह तआला ने क़ुतुबे साबिक़ा में हुज़ूर सय्यदे आलम सल्लल्लाहु तआला अ़लैहि वसल्लम पर ईमान लाने की निस्बत फ़रमाया एक क़ौल यह है कि अ़हद तीन हैं। पहला अ़हद वह जो अल्लाह तआला ने तमाम औलादे आदम से लिया कि उसकी रुबूबियत का इक़रार करें उसका बयान इस आयत में है *व इज़् अ-ख़-ज़ रब्बु-क मिम्-बनी आ-द-म* दूसरा अहद अम्बिया के साथ मख़्सूस है कि रिसालत की तबलीग़ फ़रमायें और दीन की इक़ामत करें इसका बयान आयत व *इज़् अ-ख़ज़्ना मि-नन्-नबीई-न मीसा-क़हुम्* में है। तीसरा अ़हद उलमा के साथ ख़ास है कि हक़ को न छुपायें इसका बयान *व इज़् अ-ख़-ज़ल्लाहु मीसा-क़ल्लज़ी-न ऊतुल् किता-ब* में है। (फ़ा50 अ) रिश्ता व क़राबत के तअ़ल्लुक़ात मुसलमानों की दोस्ती व मुहब्बत तमाम अम्बिया का मानना क़ुतुबे इलाही की तस्दीक़ हक़ पर जमा होना यह वह चीज़ें हैं जिनके मिलाने का हुक्म फ़रमाया गया इनमें क़तअ़ करना बाज़ को बाज़ से नाहक़ जुदा करना तफ़रक़ों की बिना डालना ममनूअ़ फ़रमाया गया। (फ़ा50 ब) दलाइले तौहीद व नबुव्वत और जज़ाए कुफ़्र व ईमान के बाद अल्लाह तआला ने अपनी आ़म व ख़ास निअ़मतों का और आसारे क़ुदरत व अ़जाइब व हिकमत का ज़िक्र फ़रमाया और क़बाहते कुफ़्र दिलनशीन करने के लिए कुफ़्फ़ार को ख़िताब फ़रमाया कि तुम किस तरह ख़ुदा के मुन्किर होते हो बावजूद कि तुम्हारा अपना हाल उस पर ईमान लाने का मुक़्तज़ी है कि तुम मुर्दा थे मुर्दा से जिस्मे बेजान मुराद है। हमारे उर्फ़ में भी बोलते हैं ज़मीन मुर्दा हो गई अरबी में भी मौत इस माना में आई खुद क़ुरआने पाक में इरशाद हुआ *युह़यिल् अर्-ज़ बअ़्-द मौतिहा* तो मतलब यह है कि तुम बेजान जिस्म थे उन्सुर की सूरत में फिर ग़िज़ा की शक्ल में फिर अख़्लात की शान में फिर नुत्फ़ा की हालत में उसने तुमको जान दी ज़िन्दा फ़रमाया फिर उम्र की मेआ़द पूरी होने पर तुम्हें मौत देगा फिर तुम्हें ज़िन्दा करेगा इस से या क़ब्र की ज़िन्दगी मुराद है जो सवाल के लिए होगी या हश्र की फिर तुम हिसाब व जज़ा के लिए उस की तरफ़ लौटाये जाओगे अपने इस हाल को जान कर तुम्हारा कुफ़्र करना निहायत अ़जीब है। एक क़ौल मुफ़स्सिरीन का यह भी है कि *कै-फ़ तक्.फ़ुरू-न* का ख़िताब मोमिनीन से है और मतलब यह है कि तुम किस तरह काफ़िर हो सकते हो दर-आँ-हालांकि तुम जहल की मौत से मुर्दा थे अल्लाह तआ़ला ने तुम्हें इल्म व ईमान की ज़िन्दगी अ़ता फ़रमाई इसके बाद तुम्हारे लिए वही मौत है जो उम्र गुज़रने के बाद सब को आया करती है उसके बाद वह तुम्हें हक़ीक़ी दाइमी हयात अ़ता फ़रमाएगा फिर तुम उसकी तरफ़ लौटाए जाओगे और वह तुम्हें ऐसा सवाब देगा जो न किसी आंख ने देखा न किसी कान ने सुना न किसी दिल पर उसका ख़तरा गुज़रा। (फ़ा51) यानी कानें, सबज़े, जानवर, दरिया, पहाड़ जो कुछ ज़मीन में है सब अल्लाह तआ़ला ने तुम्हारे दीनी व दुनियवी नफ़ा के लिए बनाए दीनी नफ़ा इस तरह कि ज़मीन के अ़जाइबात देखकर तुम्हें अल्लाह तआ़ला की हिकमत व क़ुदरत की मअ़रेफ़त हो और दुनियवी मुनाफ़ा यह कि खाओ पियो आराम करो अपने कामों में लाओ तो इन निअ़मतों के बावजूद तुम किस तरह कुफ़्र करोगे। मसलाः करख़ी व अबू बकर राज़ी वग़ैरह ने *ख़-ल-क़ लकुम्* को क़ाबिले इन्तेफ़ाअ़ अशिया के मुबाहुल अस्ल होने की दलील क़रार दिया है। (फ़ा52) यानी यह ख़िलक़त व ईजाद अल्लाह तआ़ला के आ़लम जमीअ़ अशिया होने की दलील है क्योंकि ऐसी पुर हिकमत मख़लूक़ का पैदा करना बग़ैर इल्मे मुहीत के मुमकिन व मुतसव्विर नहीं मरने के बाद ज़िन्दा होना काफ़िर मुहाल जानते थे इन आयतों में उनके बुतलान पर क़वी बुरहान क़ाइम फ़रमा दी कि जब अल्लाह तआ़ला क़ादिर है अ़लीम है और अब्दान के माद्दे जमा व हयात की सलाहियत भी रखते हैं तो मौत के बाद हयात कैसे मुहाल हो सकती है पैदाइशे आसमान व ज़मीन के बाद अल्लाह तआ़ला ने आसमान में फ़रिश्तों को और ज़मीन में जिन्नात को सुकूनत दी जिन्नात ने फ़साद अंगेज़ी की तो मलाइका की एक जमाअ़त भेजी जिसने उन्हें पहाड़ों और जज़ीरों में निकाल भगाया(फ़ा53) ख़लीफ़ा अहकाम व अवामिर के इजरा व दीगर तसर्रुफ़ात में असल का नाइब होता है यहां ख़लीफ़ा से हज़रत आदम अ़लैहिस्सलाम मुराद हैं अगरचे और तमाम अम्बिया भी अल्लाह तआ़ला के ख़लीफ़ा हैं हज़रत दाऊद अ़लैहिस्सलाम के हक़ में फ़रमाया *या दाऊदु इन्ना ज-अ़ल्ना-क ख़ली-फ़तन् फ़िल्-अर्ज़ि* फ़रिश्तों को ख़िलाफ़ते आदम की ख़बर इस लिए दी गई कि वह उनके ख़लीफ़ा बनाए जाने की हिकमत दरयाफ़्त करके मालूम कर लें और उन पर ख़लीफ़ा की अ़ज़मत व शान ज़ाहिर हो कि उनको पैदाइश से क़ब्ल ही ख़लीफ़ा का लक़ब अता हुआ और आसमान वालों को उनकी पैदाइश की बशारत दी गई। मसलाः इस में बन्दों को तालीम है कि वह काम से पहले मशवरा किया करें और अल्लाह तआ़ला इससे पाक है कि उसको मशवरा की हाजत हो। (फ़ा54) मलाइका का मक़सद ऐतराज़ या हज़रत आदम पर तअ़न नहीं बल्कि हिकमते ख़िलाफ़त दरयाफ़्त करना है और इन्सानों की तरफ़ फ़साद अंगेज़ी की निस्बत करना इसका इल्म या उन्हें अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से दिया गया हो या लौहे महफ़ूज़ से हासिल हुआ हो या ख़ुद उन्होंने जिन्नात पर क़ियास किया हो। (फ़ा55) यानी मेरी हिकमतें तुम पर ज़ाहिर नहीं बात यह है कि इंसानों में अम्बिया भी होंगे औलिया भी उलमा भी और वह इल्मी व अ़मली दोनों फ़ज़ीलतों के जामेअ़ होंगे।

وَعَلَّمَ اٰدَمَ الْاَسْمَآءَ كُلَّهَا ثُمَّ عَرَضَهُمْ عَلَى الْمَلٰٓئِكَةِ فَقَالَ اَنْۢبِـُٔوْنِیْ بِاَسْمَآءِ هٰٓؤُلَآءِ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِیْنَ ۝ قَالُوْا سُبْحٰنَكَ لَا عِلْمَ لَنَآ اِلَّا مَا عَلَّمْتَنَا

اِنَّكَ اَنْتَ الْعَلِیْمُ الْحَكِیْمُ ۝ قَالَ یٰۤاٰدَمُ اَنْۢبِئْهُمْ بِاَسْمَآئِهِمْ فَلَمَّاۤ اَنْۢبَاَهُمْ بِاَسْمَآئِهِمْ قَالَ اَلَمْ اَقُلْ لَّكُمْ اِنِّیْۤ اَعْلَمُ غَیْبَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ

وَاَعْلَمُ مَا تُبْدُوْنَ وَمَا كُنْتُمْ تَكْتُمُوْنَ ۝ وَاِذْ قُلْنَا لِلْمَلٰٓئِكَةِ اسْجُدُوْا لِاٰدَمَ فَسَجَدُوْۤا اِلَّاۤ اِبْلِیْسَ اَبٰى وَاسْتَكْبَرَ وَكَانَ مِنَ الْكٰفِرِیْنَ ۝ وَقُلْنَا یٰۤاٰدَمُ اسْكُنْ

اَنْتَ وَزَوْجُكَ الْجَنَّةَ وَكُلَا مِنْهَا رَغَدًا حَیْثُ شِئْتُمَا وَلَا تَقْرَبَا هٰذِهِ الشَّجَرَةَ فَتَكُوْنَا مِنَ الظّٰلِمِیْنَ ۝ فَاَزَلَّهُمَا الشَّیْطٰنُ عَنْهَا فَاَخْرَجَهُمَا

مِمَّا كَانَا فِیْهِ وَقُلْنَا اهْبِطُوْا بَعْضُكُمْ لِبَعْضٍ عَدُوٌّ وَلَكُمْ فِی الْاَرْضِ مُسْتَقَرٌّ وَّمَتَاعٌ اِلٰى حِیْنٍ ۝

व अ़ल्-ल-म आ-द-मल् अस्मा-अ कुल्लहा सुम्-म अ़-र-ज़हुम् अ़लल्मलाइ-कति फ़क़ा-ल अम्बिऊनी बि-अस्माइ हाउलाइ इन् कुन्तुम् सादिक़ीन(31)क़ालू सुब्हा-न-क ला इल्-म लना इल्ला मा अ़ल्लम्तना इन्न-क अन्तल्-अ़लीमुल् हकीम(32)क़ा-ल या आ-दमु अम्बिअ्-हुम् बिअस्मा-इहिम् फ़-लम्मा अम्ब-अहुम् बि-अस्माइहिम् क़ा-ल अ-लम् अक़ुल्-लकुम् इन्नी अअ्-लमु ग़ै-बस्समावाति वल्अर्ज़ि व अअ्-लमु मा तुब्दू-न व मा कुन्तुम् तक्तुमून(33)व इज़् क़ुल्ना लिल्मलाइ-कतिस्जुदू लिआ-द-म फ़-स-जदू इल्ला इब्लीस अबा वस्तक्-ब-र व का-न मि-नल्का-फ़िरीन(34)व क़ुल्ना या आ-दमुस्कुन् अन्-त व ज़ौजुकल्जन्न-त व कुला मिन्हा र-ग़-दन् हैसु शिअ्तुमा व ला तक़्रबा हाज़िहिश्-श-ज-र-त फ़-तकूना मिनज़्ज़ालि-मीन(35) फ़-अ-ज़ल्लहुमश् शैतानु अ़न्हा फ़-अख़्र-जहुमा मिम्मा काना फ़ीहि व क़ुल्-नह्बितू बअ्-ज़ुकुम् लि-बअ्ज़िन् अ़दुव्वुन् व लकुम् फ़िल्अर्ज़ि मुस्त-क़र्रुंव्-व मताउन् इला हीन(36)

और अल्लाह तआ़ला ने आदम को तमाम अश्या के नाम सिखाये (फ़ा56) फिर सब अश्या मलाइका पर पेश करके फ़रमाया सच्चे हो तो इनके नाम तो बताओ।(31) (फ़ा57) बोले पाकी है तुझे हमें कुछ इल्म नहीं मगर जितना तूने हमें सिखाया बेशक तू ही इल्म व हिक्मत वाला है।(32)(फ़ा58) फ़रमाया ऐ आदम बता दे इन्हें सब अश्या के नाम, जब आदम ने उन्हें सब के नाम बता दिये (फ़ा59) फ़रमाया मैं न कहता था कि मैं जानता हूं आसमानों और ज़मीन की सब छुपी चीज़ें और मैं जानता हूं जो कुछ तुम ज़ाहिर करते और जो कुछ तुम छुपाते हो।(33)(फ़ा60) और याद करो जब हम ने फ़रिश्तों को हुक्म दिया कि आदम को सजदा करो तो सबने सजदा किया सिवाए इब्लीस के मुन्किर हुआ और ग़ुरूर किया और काफ़िर हो गया।(34) (फ़ा61) और हमने फ़रमाया ऐ आदम तू और तेरी बीबी इस जन्नत में रहो और खाओ इस में से बे रोक टोक जहां तुम्हारा जी चाहे मगर इस पेड़ के पास न जाना (फ़ा62) कि हद से बढ़ने वालों में हो जाओगे।(35)(फ़ा63) तो शैतान ने जन्नत से उन्हें लग़ज़िश दी और जहां रहते थे वहां से उन्हें अलग कर दिया (फ़ा64) और हमने फ़रमाया नीचे उतरो (फ़ा65) आपस में एक तुम्हारा दूसरे का दुश्मन और तुम्हें एक वक़्त तक ज़मीन में ठहरना और बरतना है।(36)(फ़ा66)

(फ़ा56) अल्लाह तआ़ला ने हज़रत आदम अ़लैहिस्सलाम पर तमाम अशिया व जुमला मुसम्मियात पेश फ़रमा कर आपको उनके अस्मा व सिफ़ात व अफ़आ़ल व ख़वास व उसूले उलूम व सनाआ़त सब का इल्म बतरीक़े इलहाम अ़ता फ़रमाया (फ़ा57) यानी अगर तुम अपने इस ख़्याल में सच्चे हो कि मैं कोई मख़्लूक़ तुम से ज़्यादा आलिम पैदा न करूंगा और ख़िलाफ़त के तुम ही मुस्तहिक़ हो तो उन चीज़ों के नाम बताओ क्योंकि ख़लीफ़ा का काम तसर्रुफ़ व तदबीर और अ़द्ल व इंसाफ़ है और यह बग़ैर उसके मुमकिन नहीं कि ख़लीफ़ा को उन तमाम चीज़ों का इल्म हो जिन पर उसको मुतसर्रिफ़ फ़रमाया गया और जिनका उस को फ़ैसला करना है। **मसलाः** अल्लाह तआ़ला ने हज़रत आदम अ़लैहिस्सलाम के मलाइका पर अफ़ज़ल होने का सबब इल्म ज़ाहिर फ़रमाया इससे साबित हुआ कि इल्म अस्मा ख़लवतों और तन्हाईयों की इबादत से अफ़ज़ल है। **मसलाः** इस आयत से यह भी साबित हुआ कि अम्बिया अ़लैहिमुस्सलाम मलाइका से अफ़ज़ल हैं। (फ़ा58) इसमें मलाइका की तरफ़ से अपने इज्ज़ व क़ुसूर का एतेराफ़ और इस अम्र का इज़्हार है कि उनका सवाल इस्तिफ़सारन था न कि एतेराज़न और अब उन्हें इन्सान की फ़ज़ीलत और उसकी पैदाइश की हिकमत मालूम हो गई जिसको वह पहले न जानते थे। (फ़ा59) यानी हज़रत आदम अ़लैहिस्सलाम ने हर चीज़ का नाम और उसकी पैदाइश की हिकमत बता दी। (फ़ा60) मलायका ने जो बात ज़ाहिर की थी वह

यह थी कि इन्सान फ़साद अंगेज़ी व ख़ूँ रेज़ी करेगा और जो बात छुपाई थी वह यह थी कि मुस्तहिक़े ख़िलाफ़त वह ख़ुद हैं और अल्लाह तआ़ला उनसे अफ़ज़ल व अअ़लम कोई मख़्लूक़ पैदा न फ़रमाएगा। **मसलाः** इस आयत से इन्सान की शराफ़त और इल्म की फ़ज़ीलत साबित होती है और यह भी कि अल्लाह तआ़ला की तरफ़ तालीम की निस्बत करना सही है अगरचे उसको मुअ़ल्लिम न कहा जाएगा क्योंकि मुअ़ल्लिम पेशा-वर तालीम देने वाले को कहते हैं। **मसलाः** इससे यह भी मालूम हुआ कि जुमला लुग़ात और कुल ज़बानें अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से हैं। **मसलाः** यह भी साबित हुआ कि मलाइका के उलूम व कमालात में ज़्यादती होती है। (फ़ा61) अल्लाह तआ़ला ने हज़रत आदम अ़लैहिस्सलाम को तमाम मौजूदात का नमूना और आ़लमे रूहानी व जिस्मानी का मजमूआ़ बनाया और मलाइका के लिए हुसूले कमालात का वसीला किया तो उन्हें हुक्म फ़रमाया कि हज़रत आदम को सजदा करें क्योंकि इसमें शुक्रगुज़ारी और हज़रत आदम अ़लैहिस्सलाम की फ़ज़ीलत के एतेराफ़ और अपने मक़ूला की मअ़ज़रत की शान पाई जाती है बाज़ मुफ़स्सिरीन का क़ौल है कि अल्लाह तआ़ला ने हज़रत आदम अ़लैहिस्सलाम को पैदा करने से पहले ही मलाइका को सजदा का हुक्म दिया था उनकी सनद यह आयत है *फ़इज़ा सव्-वैतुहू व न-फ़ख़्तु फ़ीहि मिंर्-रूही फ़-क़ऊ लहू साजिदीन* (बैज़ावी) सजदा का हुक्म तमाम मलाइका को दिया गया था यही असह़ है।(ख़ाज़िन) **मसलाः** सजदा दो तरह का होता है, एक सजदए इबादत, जो बक़स्दे परस्तिश किया जाता है दूसरा सजदए तहिय्यत जिस से मस्जूद की ताज़ीम मन्.ज़ूर होती है न कि इबादत। **मसलाः** सजदए इबादत अल्लाह तआ़ला के लिए ख़ास है किसी और के लिए नहीं हो सकता न किसी शरीअ़त में कभी जाइज़ हुआ यहां जो मुफ़स्सिरीन सजदए इबादत मुराद लेते हैं वह फ़रमाते हैं कि सजदा ख़ास अल्लाह तआ़ला के लिए था और हज़रत आदम अ़लैहिस्सलाम क़िबला बनाये गए थे तो वह मस्जूद इलैह थे न कि मस्जूद-लहू मगर यह क़ौल ज़ईफ़ है क्योंकि इस सजदा से हज़रत आदम अ़ला नबिय्यिना व अ़लैहिस्सलातु वस्सलाम का फ़ज़्ल व शरफ़ ज़ाहिर फ़रमाना मक़सूद था और मस्जूद इलैह का साजिद से अफ़ज़ल होना कुछ ज़रूरी नहीं जैसा कि कअ़बा मुअ़ज़्ज़मा हुज़ूर सय्यदे अम्बिया सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम का क़िबला व मस्जूद इलैह है, बावजूदकि हुज़ूर उससे अफ़ज़ल हैं दूसरा क़ौल यह है कि यहां सजदए इबादत न था सजदए तहिय्यत था और ख़ास हज़रत आदम अ़लैहिस्सलाम के लिए था ज़मीन पर पेशानी रख कर था न कि सिर्फ़ झुकना यही क़ौल सही है और इसी पर जम्हूर हैं (मदारिक) **मसलाः** सजदए तहिय्यत पहली शरीअ़तों में जाइज़ था हमारी शरीअ़त में मन्सूख़ किया गया अब किसी के लिए जाइज़ नहीं है क्योंकि जब हज़रत सलमान रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु ने हु.ज़ूरे अक़दस सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम को सजदा करने का इरादा किया तो हुज़ूर ने फ़रमाया कि मख़्लूक़ को न चाहिए कि अल्लाह तआ़ला के सिवा किसी को सजदा करे (मदारिक) मलाइका में सबसे पहले सजदा करने वाले हज़रत जिब्रील हैं फिर मीकाईल फिर इसराफ़ील फिर इज़राईल फिर और मलाइकए मुक़र्रबीन यह सजदा जुमा के रोज़ वक़्ते ज़वाल से अ़स्र तक किया गया। एक क़ौल यह भी है कि मलाइका मुक़र्रबीन सौ बरस और एक क़ौल में पांच सौ बरस सजदा में रहे, शैतान ने सजदा न किया और बराहे तकब्बुर यह एतेक़ाद करता रहा कि वह हज़रत आदम से अफ़ज़ल है उसके लिए सजदा का हुक्म मआ़ज़ल्लाह तआ़ला ख़िलाफ़े हिकमत है इस एतेक़ादे बातिल से वह काफ़िर हो गया। **मसलाः** आयत में दलालत है कि हज़रत आदम अ़लैहिस्सलाम फ़रिश्तों से अफ़ज़ल हैं कि उन से उन्हें सजदा कराया गया। **मसलाः** तकब्बुर निहायत क़बीह है इससे कभी मुतकब्बिर की नौबत कुफ़्र तक पहुंचती है (बैज़ावी व जुमल) (फ़ा62) इस से गन्दुम या अंगूर वग़ैरह मुराद है (जलालैन) (फ़ा63) ज़ुल्म के माना हैं किसी शय को बे महल वज़अ़ करना यह ममनूअ़ है और अम्बिया मअ़सूम हैं उनसे गुनाह सरज़द नहीं होता यहां ज़ुल्म ख़िलाफ़े औला के माना में है। **मसलाः** अम्बिया अ़लैहिमुस्सलाम को ज़ालिम कहना इहानत व कुफ़्र है जो कहे वह काफ़िर हो जाएगा अल्लाह तआ़ला मालिक व मौला है जो चाहे फ़रमाए इसमें उनकी इज़्ज़त है दूसरे की क्या मजाल कि ख़िलाफ़े अदब कलिमा ज़बान पर लाये और ख़िताबे हज़रते हक़ को अपनी जुरअत के लिए सनद बनाये हमें ताज़ीम व तौक़ीर और अदब व ताअ़त का हुक्म फ़रमाया हम पर यही लाज़िम है। (फ़ा64) शैतान ने किसी तरह हज़रत आदम व हव्वा (अ़लैहिमस्सलाम) के पास पहुंच कर कहा कि मैं तुम्हें शज्रे ख़ुल्द बता दूं हज़रत आदम अ़लैहिस्सलाम ने इंकार फ़रमाया उसने क़सम खाई कि मैं तुम्हारा ख़ैर-ख़्वाह हूं उन्हें ख़्याल हुआ कि अल्लाह पाक की झूटी क़सम कौन खा सकता है बईं ख़्याल हज़रत हव्वा ने उसमें से कुछ खाया फिर हज़रत आदम को दिया उन्होंने भी तनावुल किया हज़रत आदम को ख़्याल हुआ कि *ला-तक़्-रबा* की नही तन्ज़ीही है तहरीमी नहीं क्योंकि अगर वह तहरीमी समझते तो हरगिज़ ऐसा न करते कि अम्बिया मअ़सूम होते हैं यहां हज़रत आदम अ़लैहिस्सलाम से इज्तेहाद में ख़ता हुई और ख़ताए इज्तेहादी मअ़सियत नहीं होती (फ़ा65) हज़रत आदम व हव्वा और उनकी .ज़ुर्रियत को जो उनके सुल्ब में थी जन्नत से ज़मीन पर जाने का हुक्म हुआ हज़रत आदम ज़मीने हिन्द में सरअन्दीप के पहाड़ों पर और हज़रत हव्वा जद्दे में उतारे गए (ख़ाज़िन) हज़रत आदम अ़लैहिस्सलाम की बरकत से ज़मीन के अश्जार में पाकीज़ा ख़ुश्बू पैदा हुई (रूहुल बयान) (फ़ा66) इससे इख़्तितामे उम्र यानी मौत का वक़्त मुराद है और हज़रत आदम अ़लैहिस्सलाम के लिए बशारत है कि वह दुनिया में सिर्फ़ इतनी मुद्दत के लिए हैं उसके बाद फिर उन्हें जन्नत की तरफ़ रुजूअ़ फ़रमाना है और आपकी औलाद के लिए मआ़द पर दलालत है कि दुनिया की ज़िन्दगी मुअ़य्यन वक़्त तक है उम्र तमाम होने के बाद उन्हें आख़िरत की तरफ़ रुजूअ़ करना है।

فَتَلَقّٰٓى اٰدَمُ مِنْ رَّبِّهٖ كَلِمٰتٍ فَتَابَ عَلَيْهِ ۭ اِنَّهٗ هُوَ التَّوَّابُ الرَّحِيْمُ ۝ قُلْنَا اهْبِطُوْا مِنْهَا جَمِيْعًا ۚ فَاِمَّا يَاْتِيَنَّكُمْ مِّنِّىْ هُدًى فَمَنْ تَبِعَ هُدَاىَ فَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ ۝ وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَكَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَآ اُولٰۗىِٕكَ اَصْحٰبُ النَّارِ ۚ هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ۝ يٰبَنِىْٓ اِسْرَاۗءِيْلَ اذْكُرُوْا نِعْمَتِىَ الَّتِىْٓ اَنْعَمْتُ عَلَيْكُمْ وَاَوْفُوْا بِعَهْدِىْٓ اُوْفِ بِعَهْدِكُمْ ۚ وَاِيَّاىَ فَارْهَبُوْنِ ۝ وَاٰمِنُوْا بِمَآ اَنْزَلْتُ مُصَدِّقًا لِّمَا مَعَكُمْ وَلَا تَكُوْنُوْٓا اَوَّلَ كَافِرٍۢ بِهٖ ۠ وَلَا تَشْتَرُوْا بِاٰيٰتِىْ ثَمَنًا قَلِيْلًا ۡ وَّاِيَّاىَ فَاتَّقُوْنِ ۝ وَلَا تَلْبِسُوا الْحَقَّ بِالْبَاطِلِ وَتَكْتُمُوا الْحَقَّ وَاَنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ۝ وَاَقِيْمُوا الصَّلٰوةَ وَاٰتُوا الزَّكٰوةَ وَارْكَعُوْا مَعَ الرّٰكِعِيْنَ ۝ اَتَاْمُرُوْنَ النَّاسَ بِالْبِرِّ وَتَنْسَوْنَ اَنْفُسَكُمْ وَاَنْتُمْ تَتْلُوْنَ الْكِتٰبَ ۭ اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ ۝

फ़–त–लक़्क़ा आ–दमु मिर्रब्बिही कलिमातिन् फ़ता–ब अ़लैहि इन्नहू हुवत्तव्वाबुर् रहीम(37) कुल्–नहबितू मिन्हा जमीअ़न् फ़इम्मा यअ़तियन्नकुम् मिन्नी हुदन् फ़–मन् तबि–अ़ हुदा–य फ़ला ख़ौफ़ुन् अ़लैहिम् व ला हुम् यह्ज़नून(38)वल्लज़ी–न क–फ़रू व कज़्ज़बू बि–आयातिना उलाइ–क अस्हा–बुन्नारि हुम् फ़ीहा ख़ालिदून(39)या बनी इस्राई–लज़्कुरू निअ़्–मति–यल्लती अन्अ़म्तु अ़लैकुम् व औफ़ू बि–अ़ह्दी ऊफ़ि बि–अ़ह्दिकुम व इय्या–य फ़र्–हबून(40)व आमिनू बिमा अन्ज़ल्तु मु– स़द्दिक़ल्लिमा म–अ़कुम् व ला तकूनू अव्व–ल काफ़िरिम्–बिही व ला तश्तरू बि–आयाती स–मनन् क़लीलंव्–व इय्या–य फ़त्तक़ून(41)व ला तल्बिसुल् हक़्–क़ बिल्बातिलि व तक्तुमुल्हक़्–क़ व अन्तुम् तअ़्–लमून(42)व अक़ीमुस्सला–त व आतुज़्ज़का–त वर कअू म–अर्राकिअ़ीन(43)अ–तअ़्मुरू–नन्ना–स बिल्बिर्रि व तन्सौ–न अन्फ़ु–सकुम् व अन्तुम् तत्लूनल्–किताब अ–फ़ला तअ़्क़िलून(44)

फिर सीख लिए आदम ने अपने रब से कुछ कलिमे तो अल्लाह ने उसकी तौबा क़बूल की (फ़ा67) बेशक वही है बहुत तौबा क़बूल करने वाला मेहरबान।(37) हमने फ़रमाया तुम सब जन्नत से उतर जाओ फिर अगर तुम्हारे पास मेरी तरफ़ से कोई हिदायत आये तो जो मेरी हिदायत का पैरौ हुआ उसे न कोई अन्देशा न कुछ ग़म।(38) (फ़ा68) और वह जो कुफ़्र करें और मेरी आयतें झुठलायेंगे वह दोज़ख़ वाले हैं उनको हमेशा उसमें रहना। (रुकूअ़ 4)(39) ऐ याक़ूब की औलाद (फ़ा69) याद करो मेरा वह एहसान जो मैंने तुम पर किया (फ़ा70) और मेरा अ़हद पूरा करो मैं तुम्हारा अ़हद पूरा करूंगा (फ़ा71) और ख़ास मेरा ही डर रखो।(40)(फ़ा72) और ईमान लाओ उस पर जो मैंने उतारा उसकी तस्दीक़ करता हुआ जो तुम्हारे साथ है और सबसे पहले उसके मुन्किर न बनो (फ़ा73) और मेरी आयतों के बदले थोड़े दाम न लो (फ़ा74) और मुझी से डरो।(41) और हक़ से बातिल को न मिलाओ और दीदा व दानिस्ता हक़ न छुपाओ।(42) और नमाज़ क़ाइम रखो और ज़कात दो और रुकूअ़ करने वालों के साथ रुकूअ़ करो।(43)(फ़ा75) क्या लोगों को भलाई का हुक्म देते हो और अपनी जानों को भूलते हो हालांकि तुम किताब पढ़ते हो तो क्या तुम्हें अ़क़्ल नहीं।(44)(फ़ा76)

(फ़ा67) आदम अ़लैहिस्सलाम ने ज़मीन पर आने के बाद तीन सौ बरस तक ह़या से आसमान की तरफ़ सर न उठाया अगरचे हज़रत दाऊद अ़लैहिस्सलाम कसीरुलबुका थे आप के आंसू तमाम ज़मीन वालों के आंसूओं से ज़्यादा हैं मगर हज़रत आदम अ़लैहिस्सलाम इस क़दर रोये कि आप के आंसू हज़रत दाऊद अ़लैहिस्सलाम और तमाम अहले ज़मीन के आंसूओं के मजमूआ़ से बढ़ गए (ख़ाज़िन) तिबरानी व हाकिम व अबू नुऐम व बैहक़ी ने हज़रत अली मुर्तज़ा रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से मरफ़ूअ़न रिवायत की कि जब हज़रत आदम अ़लैहिस्सलाम पर एताब हुआ तो आप फ़िक्रे तौबा में हैरान थे उस परेशानी के आ़लम में याद आया कि वक़्ते पैदाइश मैंने सर उठा कर देखा था कि अ़र्श पर लिखा है ला इला–ह इल्लल्लाहु मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह मैं समझा था कि बारगाहे इलाही में वह रुतबा किसी को मुयस्सर नहीं जो हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम को हासिल है कि अल्लाह तआ़ला ने उनका नाम अपने नामे अक़्दस के साथ अ़र्श पर मकतूब फ़रमाया लिहाज़ा आपने अपनी दुआ़ में *रब्बना ज़–लम्ना अलआयत* के साथ यह अ़र्ज़ किया *अस्–अलु–क बि–ह़क़्क़ि मुह़म्मदिन् अन् तग़्फ़ि–रली* इब्ने मुन्ज़िर की रिवायत में यह कलिमे हैं *अल्लाहुम्–म इन्नी अस्–अलु–क बिजाहि मुह़म्मदिन् अ़ब्दु–क व करा–मतुहू अ़लै–क अन् तग़्फ़ि–रली ख़ती–अती* यानी या रब मैं तुझ से तेरे बन्दए ख़ास मुहम्मद मुसतफ़ा सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम के जाह व मर्तबत

के तुफ़ैल में और उस करामत के सदक़ा में जो उन्हें तेरे दरबार में हासिल है मग़फ़िरत चाहता हूं यह दुआ करनी थी कि हक़ तआला ने उनकी मग़फ़िरत फ़रमाई **मसलाः** इस रिवायत से साबित है कि मक़बूलाने बारगाह के वसीला से दुआ बहक़्क़े फ़लां और बजाहे फ़लां कह कर मांगना जायज़ और हज़रत आदम अलैहिस्सलाम की सुन्नत है **मसलाः** अल्लाह तआला पर किसी का हक़ वाजिब नहीं होता लेकिन वह अपने मक़बूलों को अपने फ़ज़्ल व करम से हक़ देता है इसी तफ़ज़्ज़ुलीए हक़ के वसीले से दुआ की जाती है सही अहादीस से यह हक़ साबित है जैसे वारिद हुआ *मन् आ-म-न बिल्लाहि व रसूलिही व अक़ा-मस्सला-तः व सा-म र-मज़ा-न का-न हक़्क़न् अलल्लाहि अंय्युद् ख़ि-लहुल् जन्न-तः* हज़रत आदम अलैहिस्सलाम की तौबा दसवीं मुहर्रम को क़बूल हुई जन्नत से इख़राज के वक़्त और नेअ़मतों के साथ अ़रबी ज़बान भी आप से सल्ब कर ली गई थी बजाए इसके ज़बाने मुबारक पर सुरयानी जारी कर दी गई थी क़बूले तौबा के बाद फिर ज़बाने अरबी अता हुई (फ़तहुल अ़ज़ीज़) **मसलाः** तौबा की अस्ल रुजूअ़ इलल्लाह है इसके तीन रुक्न हैं एक एतेराफ़े जुर्म दूसरे नदामत तीसरे अ़ज़्मे तर्क अगर गुनाह क़ाबिले तलाफ़ी हो तो उसकी तलाफ़ी भी लाज़िम है मसलन तारिके सलात की तौबा के लिए पिछली नमाज़ों की क़ज़ा पढ़ना भी ज़रूरी है तौबा के बाद हज़रत जिब्रील ने ज़मीन के तमाम जानवरों में हज़रत आदम अलैहिस्सलाम की ख़िलाफ़त का एलान किया और सब पर उनकी फ़रमांबरदारी लाज़िम होने का हुक्म सुनाया सब ने क़बूले इताअ़त का इज़्हार किया (फ़तहुल अ़ज़ीज़) (फ़ा68) यह मोमिनीन सालिहीन के लिए बशारत है कि न उन्हें फ़ज़अ़े अकबर के वक़्त ख़ौफ़ हो न आख़िरत में ग़म वह बे ग़म जन्नत में दाख़िल होंगे। (फ़ा69) इसराईल ब-माना अ़ब्दुल्लाह इबरी ज़बान का लफ़्ज़ है यह हज़रत याक़ूब अलैहिस्सलाम का लक़ब है (मदारिक) कलबी मुफ़स्सिर ने कहा अल्लाह तआला ने *या अय्युहन्नासुअ़्-बुदू* फ़रमा कर पहले तमाम इन्सानों को उमूमन दावत दी फिर *इज़् क़ा-ल रब्बु-क* फ़रमा कर उनके मब्दअ़ का ज़िक्र किया उसके बाद ख़ुसूसियत के साथ बनी इसराईल को दावत दी यह लोग यहूदी हैं और यहां से सयकूल तक उनसे कलाम जारी है कभी बमुलाताफ़त इनाम याद दिला कर दावत की जाती है कभी ख़ौफ़ दिलाया जाता है कभी हुज्जत क़ाइम की जाती है कभी उनकी बद-अ़मली पर तौबीख़ होती है कभी गुज़श्ता उक़ूबात का ज़िक्र किया जाता है (फ़ा70) यह एहसान कि तुम्हारे आबा को फ़िरऔ़न से नजात दिलाई दरिया को फाड़ा अब्र को साइबान बनाया उनके इलावा और एहसानात जो आगे आते हैं उन सब को याद करो और याद करना यह है कि अल्लाह तआला की इताअ़त व बन्दगी करके शुक्र बजा लाओ क्योंकि किसी निअ़मत का शुक्र न करना ही उसका भुलाना है (फ़ा71) यानी तुम ईमान व ताअ़त बजा लाकर मेरा अ़हद पूरा करो मैं जज़ा व सवाब देकर तुम्हारा अ़हद पूरा करूंगा इस अहद का बयान आयत *व ल-क़द् अ-ख़-ज़ल्लाहु मीसा-क़ बनी इस्राअ़ी-ल* में है। (फ़ा72) **मसलाः** इस आयत में शुक्रे निअ़मत व वफ़ाए अ़हद के वाजिब होने का बयान है और यह भी कि मोमिन को चाहिए कि अल्लाह के सिवा किसी से न डरे (फ़ा73) यानी क़ुरआन पाक और तौरेत व इन्जील पर जो तुम्हारे साथ हैं ईमान लाओ और अहले किताब में पहले काफ़िर न बनो कि जो तुम्हारे इत्तेबाअ़ में कुफ़्र इख़्तियार करे उसका वबाल भी तुम पर हो (फ़ा74) इन आयात से तौरेत व इन्जील की वह आयात मुराद हैं जिन में हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की नअ़त व सिफ़त है मक़सद यह है कि हुज़ूर की नअ़त दौलते दुनिया के लिए मत छुपाओ कि मताअ़े दुनिया समने क़लील और निअ़मते आख़िरत के मुक़ाबिल बे हक़ीक़त है। **शाने नुज़ूलः** यह आयत कअ़ब बिन अशरफ़ और दूसरे रुअसा व उलमाए यहूद के हक़ में नाज़िल हुई जो अपनी क़ौम के जाहिलों और कमीनों से टके वसूल कर लेते और उन पर सालाने मुक़र्रर करते थे और उन्होंने फलों और नक़्द मालों में अपने हक़ मुअ़य्यन कर लिये थे उन्हें अन्देशा हुआ कि तौरेत में जो हुज़ूर सय्यदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की नअ़त व सिफ़त है अगर उसको ज़ाहिर करें तो क़ौम हुज़ूर पर ईमान ले आएगी और उनकी कुछ पुरसिश न रहेगी यह तमाम मुनाफ़ेअ़ जाते रहेंगे इस लिए उन्होंने अपनी किताबों में तग़ईर की और हुज़ूर की नअ़त को बदल डाला जब उनसे लोग दरयाफ़्त करते कि तौरेत में हुज़ूर के क्या औसाफ़ मज़कूर हैं तो वह छुपा लेते और हरगिज़ न बताते इस पर यह आयत नाज़िल हुई (ख़ाज़िन वग़ैरह) (फ़ा75) इस आयत में नमाज़ व ज़कात की फ़र्ज़ियत का बयान है और इस तरफ़ भी इशारा है कि नमाज़ों को उनके हुक़ूक़ की रिआ़यत और अरकान की हिफ़ाज़त के साथ अदा करो **मसलाः** जमाअ़त की तरग़ीब भी है हदीस शरीफ़ में है जमाअ़त के साथ नमाज़ पढ़ना तन्हा पढ़ने से सत्ताईस दर्जा ज़्यादा फ़ज़ीलत रखता है (फ़ा76) **शाने नूज़ूलः** उलमाए यहूद से उनके मुसलमान रिश्तादारों ने दीने इस्लाम की निस्बत दरयाफ़्त किया तो उन्होंने कहा तुम इस दीन पर क़ायम रहो हुज़ूर सय्यदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम का दीन हक़ और कलाम सच्चा है इस पर यह आयत नाज़िल हुई एक क़ौल यह है कि आयत उन यहूदियों के हक़ में नाज़िल हुई जिन्होंने मुशरिकीने अ़रब को हुज़ूर के मबऊस होने की ख़बर दी थी और हुज़ूर के इत्तेबाअ़ करने की हिदायत की थी फिर जब हुज़ूर मबऊस हुए तो यह हिदायत करने वाले हसद से खुद काफ़िर हो गए इस पर उन्हें तौबीख़ की गई (ख़ाज़िन व मदारिक)

وَاسْتَعِيْنُوْا بِالصَّبْرِ وَالصَّلٰوةِ ؕ وَاِنَّهَا لَكَبِيْرَةٌ اِلَّا عَلَى الْخٰشِعِيْنَ ۝ الَّذِيْنَ يَظُنُّوْنَ اَنَّهُمْ مُّلٰقُوْا رَبِّهِمْ وَاَنَّهُمْ اِلَيْهِ رٰجِعُوْنَ ۝ يٰبَنِيْۤ اِسْرَآءِيْلَ اذْكُرُوْا نِعْمَتِيَ الَّتِيْۤ اَنْعَمْتُ
عَلَيْكُمْ وَاَنِّيْ فَضَّلْتُكُمْ عَلَى الْعٰلَمِيْنَ ۝ وَاتَّقُوْا يَوْمًا لَّا تَجْزِيْ نَفْسٌ عَنْ نَّفْسٍ شَيْـًٔا وَّلَا يُقْبَلُ مِنْهَا شَفَاعَةٌ وَّلَا يُؤْخَذُ مِنْهَا عَدْلٌ وَّلَا هُمْ يُنْصَرُوْنَ ۝
وَاِذْ نَجَّيْنٰكُمْ مِّنْ اٰلِ فِرْعَوْنَ يَسُوْمُوْنَكُمْ سُوْٓءَ الْعَذَابِ يُذَبِّحُوْنَ اَبْنَآءَكُمْ وَيَسْتَحْيُوْنَ نِسَآءَكُمْ ؕ وَفِيْ ذٰلِكُمْ بَلَآءٌ مِّنْ رَّبِّكُمْ عَظِيْمٌ ۝
وَاِذْ فَرَقْنَا بِكُمُ الْبَحْرَ فَاَنْجَيْنٰكُمْ وَاَغْرَقْنَآ اٰلَ فِرْعَوْنَ وَاَنْتُمْ تَنْظُرُوْنَ ۝ وَاِذْ وٰعَدْنَا مُوْسٰۤى اَرْبَعِيْنَ لَيْلَةً ثُمَّ اتَّخَذْتُمُ الْعِجْلَ مِنْ بَعْدِهٖ
وَاَنْتُمْ ظٰلِمُوْنَ ۝ ثُمَّ عَفَوْنَا عَنْكُمْ مِّنْ بَعْدِ ذٰلِكَ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ ۝ وَاِذْ اٰتَيْنَا مُوْسَى الْكِتٰبَ وَالْفُرْقَانَ لَعَلَّكُمْ تَهْتَدُوْنَ ۝

वस्तअ़ीनू बिस्सब्रि वस्सलाति व इन्नहा ल–कबी–रतुन् इल्ला अ़लल् ख़ाशिअ़ीन(45)अल्लज़ी–न यज़ुन्नू–न अन्नहुम् मुलाकू रब्बिहिम् व अन्नहुम् इलैहि राजिऊ़न(46)या बनी इस्राई–लज़्कुरू निअ़्–मतियल्लती अन्अ़म्तु अ़लैकुम् व अन्नी फ़ज़्ज़ल्तुकुम् अ़–लल्आ–लमीन(47)वत्तक़ू यौमल्ला तज्ज़ी नफ़्सुन् अ़न् नफ़्सिन् शैअंव्–व ला युक़्बलु मिन्हा शफ़ा–अ़तुंव्–व ला युअ्–ख़ज़ु मिन्हा अ़द्लुंव्–व ला हुम् युन्सरून(48)व इज़् नज्जैनाकुम् मिन् आलि फ़िर्औ़–न यसूमू–नकुम् सूअल्–अ़ज़ाबि यु–ज़ब्बिहू़न अब्ना–अकुम् व यस्तह़्यू–न निसा–अकुम व फ़ी ज़ालिकुम् बलाउम् –मिर्रब्बिकुम् अ़ज़ीम(49)व इज़् फ़–रक़्ना बि–कुमुल्बह़्–र फ़–अन्जैना–कुम् व अग़्रक़्ना आ–ल फ़िर्औ़–न व अन्तुम् तन्ज़ुरून(50)व इज़् वा–अ़द्ना मूसा अर्बई़–न लै–ल–तन् सुम्मत्तख़ज़्तुमुल् अ़िज्–ल मिम्ब–अ़्दिही व अन्तुम् ज़ालिमून(51)सुम्–म अ़फ़ौना अ़न्कुम् मिम्बअ़्दि ज़ालि–क लअ़ल्लकुम् तश्कुरून(52)व इज़् आतैना मूसल्किता–ब वल्फ़ुर्क़ा–न लअ़ल्लकुम् तह्तदून(53)

और सब्र और नमाज़ से मदद चाहो और बेशक नमाज़ ज़रूर भारी है मगर उन पर जो दिल से मेरी तरफ़ झुकते हैं।(45)(फ़ा77) जिन्हें यक़ीन है कि उन्हें अपने रब से मिलना है और उसी की तरफ़ फिरना।(46) (फ़ा78) (रुकूअ़ 5) ऐ औलादे याक़ूब याद करो मेरा वह एहसान जो मैं ने तुम पर किया और यह कि इस सारे ज़माने पर तुम्हें बड़ाई दी(47)(फ़ा79) और डरो उस दिन से जिस दिन कोई जान दूसरे का बदला न हो सकेगी (फ़ा80) और न काफ़िर के लिए कोई सिफ़ारिश मानी जाए और न कुछ लेकर उसकी जान छोड़ी जाए और न उनकी मदद हो।(48)(फ़ा81) और याद करो जब हमने तुमको फ़िरऔन वालों से नजात बख़्शी (फ़ा82) कि तुम पर बुरा अ़ज़ाब करते थे (फ़ा83) तुम्हारे बेटों को ज़िबह करते और तुम्हारी बेटियों को ज़िन्दा रखते (फ़ा84) और उसमें तुम्हारे रब की तरफ़ से बड़ी बला थी या बड़ा इनाम(49)(फ़ा85) और जब हमने तुम्हारे लिए दरिया फाड़ दिया तो तुम्हें बचा लिया और फ़िरऔन वालों को तुम्हारी आंखों के सामने डुबो दिया।(50) (फ़ा86) और जब हम ने मूसा से चालीस रात का वादा फ़रमाया फिर उसके पीछे तुमने बछड़े की पूजा शुरू कर दी और तुम ज़ालिम थे।(51) (फ़ा87) फिर उसके बाद हमने तुम्हें माफ़ी दी (फ़ा88) कि कहीं तुम एहसान मानो(52)(फ़ा89) और जब हमने मूसा को किताब अ़ता की और हक़ व बातिल में तमीज़ कर देना कि कहीं तुम राह पर आओ।(53)

(फ़ा77)यानी अपनी हाजतों में सब्र और नमाज़ से मदद चाहो सुब्हानल्लाह क्या पाकीज़ा तालीम है सब्र मुसीबतों का अख़्लाक़ी मुक़ाबला है इन्सान अ़द्ल व अ़ज़्म हक़ परस्ती पर बग़ैर इसके क़ायम नहीं रह सकता सब्र की तीन क़िस्में हैं (1) शिद्दत व मुसीबत पर नफ़्स को रोकना (2) ताअ़त व इबादत की मशक़्क़तों में मुस्तक़िल रहना (3) मअ़सियत की तरफ़ माइल होने से तबीअ़त को बाज़ रखना। बाज़ मुफ़स्सिरीन ने यहां सब्र से रोज़ा मुराद लिया है वह भी सब्र का एक फ़र्द है इस आयत में मुसीबत के वक़्त नमाज़ के साथ इस्तेआ़नत की तालीम भी फ़रमाई क्योंकि वह इबादत बदनिया व नफ़्सानिया की जामेअ़ है और इसमें क़ुर्बे इलाही हासिल होता है हु.ज़ूर सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम अहम उमूर के पेश आने पर मश.ग़ूले नमाज़ हो जाते थे इस आयत में यह भी बताया गया कि मोमिनीन सादिक़ीन के सिवा औरों पर नमाज़ गिरां है। (फ़ा78) इस में बशारत है कि आख़िरत में मोमिनीन को दीदारे इलाही की निअ़मत मिलेगी (फ़ा79) *अल्‌आलमीन* का इस्तिग़राक़ हक़ीक़ी नहीं मुराद यह है कि मैंने तुम्हारे आबा को उनके ज़माना वालों पर फ़ज़ीलत दी या फ़ज़्ल जुज़ई मुराद है जो और किसी उम्मत की फ़ज़ीलत का नाफ़ी नहीं हो सकता इसी लिए उम्मते मुहम्मदिया के हक़ में इरशाद हुआ *कुन्तुम् ख़ै–र उम्मतिन्* (रूहुलबयान जुमल वग़ैरह)

(फ़ा80) वह रोज़े क़ियामत है आयत में नफ़्स दो मर्तबा आया है पहले से नफ़्से मोमिन दूसरे से नफ़्से काफ़िर मुराद है (मदारिक) (फ़ा81) यहां से रुकूअ् के आख़िर तक दस निअ्मतों का बयान है जो उन बनी इसराईल के आबा को मिलीं। (फ़ा82) क़ौमे क़िब्त अ़मालीक़ से जो मिस्र का बादशाह हुआ उसको फ़िरऔ़न कहते हैं हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम के ज़माने के फ़िरऔ़न का नाम वलीद बिन मुसइब बिन रय्यान है यहां उसी का ज़िक्र है उसकी उम्र चार सौ बरस से ज़्यादा हुई आले फ़िरऔ़न से उसके मुत्तबेईन मुराद हैं (जुमल वग़ैरह) (फ़ा83) अ़ज़ाब सब बुरे होते हैं *सूअल् अ़ज़ाबि* वह कहलाएगा जो और अ़ज़ाबों से शदीद हो इस लिए हज़रते मुतर्जिम .क़ुद्दस सिर्रुहू ने (बुरा अ़ज़ाब) तर्जमा किया (कमा फ़िलजलालैन वग़ैरह) फ़िरऔ़न ने बनी इसराईल पर निहायत बेदर्दी से मेहनत व मशक़्क़त के दुशवार काम लाज़िम किये थे पत्थरों की चटानें काट कर ढोते ढोते उनकी कमरें गर्दनें ज़ख़्मी हो गई थीं ग़रीबों पर टैक्स मुक़र्रर किये थे जो ग़ुरूबे आफ़ताब से क़ब्ल बजब्र वसूल किये जाते थे जो नादार किसी दिन टैक्स अदा न कर सका उसके हाथ गर्दन के साथ मिलाकर बांध दिये जाते थे और महीना भर तक उसी मुसीबत में रखा जाता था और तरह तरह की बे रहमाना सख़्तियां थीं (ख़ाज़िन वग़ैरह) (फ़ा84) फ़िरऔ़न ने ख़्वाब देखा कि बैतुल मक़दिस की तरफ़ से आग आई उसने मिस्र को घेर कर तमाम क़िब्तियों को जला डाला बनी इसराईल को कुछ ज़रर न पहुंचाया इससे उसको बहुत वहशत हुई काहिनों ने तअ्बीर दी कि बनी इसराईल में एक लड़का पैदा होगा जो तेरे हलाक और ज़वाले सल्तनत का बाइस होगा यह सुनकर फ़िरऔ़न ने हुक्म दिया कि बनी इसराईल में जो लड़का पैदा हो क़त्ल कर दिया जाये दाईयां तफ़्तीश के लिए मुक़र्रर हुईं बारह हज़ार व ब-रिवायते सत्तर हज़ार लड़के क़त्ल कर डाले गए और नब्बे हज़ार हमल गिरा दिये गए और मशीयते इलाही से उस क़ौम के बूढ़े जल्द जल्द मरने लगे क़ौमे क़िब्त के रुअसा ने घबरा कर फ़िरऔ़न से शिकायत की कि बनी इसराईल में मौत की गर्म बाज़ारी है इस पर उनके बच्चे भी क़त्ल किये जाते हैं तो हमें ख़िदमतगार कहां से मुयस्सर आयेंगे फ़िरऔ़न ने हुक्म दिया कि एक साल बच्चे क़त्ल किये जायें और एक साल छोड़े जायें तो जो साल छोड़ने का था उसमें हज़रत हारून पैदा हुए और क़त्ल के साल हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम की विलादत हुई (फ़ा85) बला इम्तेहान व आज़माईश को कहते हैं आज़माईश निअ्मत से भी होती है और शिद्दत व मेहनत से भी, निअ्मत से बन्दा की शुक्र गुज़ारी और मेहनत से उसके सब्र का हाल ज़ाहिर होता है अगर *ज़ालिकुम्* का इशारा फ़िरऔ़न के मज़ालिम की तरफ़ हो तो बला से मेहनत व मुसीबत मुराद होगी और अगर उन मज़ालिम से नजात देने की तरफ़ हो तो निअ्मत (फ़ा86) यह दूसरी निअ्मत का बयान है जो बनी इसराईल पर फ़रमाई कि उन्हें फ़िरऔ़नियों के ज़ुल्म व सितम से नजात दी और फ़िरऔ़न को मअ़ उसकी क़ौम के उनके सामने ग़र्क़ किया यहां आले फ़िरऔ़न से फ़िरऔ़न मअ़ अपनी क़ौम के मुराद है जैसे कि *कर्रमना बनी आ-द-म* में हज़रत आदम व औलादे आदम दोनों दाख़िल हैं (जुमल) मुख़्तसर वाक़िआ़ यह है कि हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलातु वस्सलाम बहुक्मे इलाही शब में बनी इसराईल को मिस्र से लेकर रवाना हुए सुबह को फ़िरऔ़न उनकी जुस्तजू में लश्करे गिराँ लेकर चला और उन्हें दरिया के कनारे जा पाया बनी इसराईल ने लश्करे फ़िरऔ़न देखकर हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम से फ़रियाद की आपने बहुक्मे इलाही दरिया में अपना अ़सा (लाठी) मारा उसकी बरकत से ऐने दरिया में बारह ख़ुश्क रस्ते पैदा हो गए पानी दीवारों की तरह खड़ा हो गया उन आबी दीवारों में जाली की मिस्ल रौशनदान बन गए बनी इसराईल की हर जमाअ़त उन रस्तों में एक दूसरे को देखती और बाहम बातें करती गुज़र गई फ़िरऔ़न दरियाई रस्ते देखकर उन में चल पड़ा जब उसका तमाम लश्कर दरिया के अन्दर आ गया तो दरिया हालते असली पर आया और तमाम फ़िरऔ़नी उस में ग़र्क़ हो गए दरिया का अ़र्ज़ चार फ़रसंग था यह वाक़िआ़ बहरे क़ुलज़ुम का है जो बहरे फ़ारस के कनारे पर है या बहरे मावराए मिस्र का जिसको असाफ़ कहते हैं बनी इसराईल लबे दरिया फ़िरऔ़नियों के ग़र्क़ का मन्ज़र देख रहे थे यह ग़र्क़ मुहर्रम की दसवीं तारीख़ हुआ हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम ने उस दिन शुक्र का रोज़ा रखा सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि के ज़माना तक भी यहूद उस दिन का रोज़ा रखते थे हु.जूर ने भी उस दिन का रोज़ा रखा और फ़रमाया कि हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम की फ़तह की ख़ुशी मनाने और उसकी शुक्र गुज़ारी करने के हम यहूद से ज़्यादा हक़दार हैं। मसलाः इससे मालूम हुआ कि आ़शूरा का रोज़ा सुन्नत है। मसलाः यह भी मालूम हुआ कि अम्बिया पर जो इनामे इलाही हो उसकी यादगार क़ाइम करना और शुक्र बजा लाना मसनून है। मसलाः यह भी मालूम हुआ कि ऐसे उमूर में दिन का तअ़य्युन सुन्नते रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम है। मसलाः यह भी मालूम हुआ कि अम्बिया की यादगार अगर कुफ़्फ़ार भी क़ाइम करते हों जब भी उसको छोड़ा न जायेगा (फ़ा87) फ़िरऔ़न और फ़िरऔ़नियों के हलाक के बाद जब हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम बनी इसराईल को लेकर मिस्र की तरफ़ लौटे और उनकी दरख़्वास्त पर अल्लाह तआ़ला ने अ़ताए तौरेत का वादा फ़रमाया और उसके लिए मीक़ात मुअ़य्यन किया जिसकी मुद्दत मअ़ इज़ाफ़ा एक माह दस रोज़ थी महीना ज़ुलक़अ़्दा और दस दिन ज़ुलहिज्जा के हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम क़ौम में अपने भाई हारून अ़लैहिस्सलाम को अपना ख़लीफ़ा व जा-नशीन बना कर तौरेत हासिल करने के लिए कोहे तूर पर तशरीफ़ ले गए चालीस शब वहां ठहरे इस अ़र्सा में किसी से बात न की, अल्लाह तआ़ला ने ज़बरजदी अल्वाह में तौरेत आप पर नाज़िल फ़रमाई यहां सामरी ने सोने का जवाहरात से मुरस्सअ़ बछड़ा बना कर क़ौम से कहा कि यह तुम्हारा मअ्बूद है वह लोग एक माह हज़रत का इन्तेज़ार करके सामरी के बहकाने से बछड़ा पूजने लगे सिवाए हज़रत हारून अ़लैहिस्सलाम और आपके बारह हज़ार हमराहियों के तमाम बनी इसराईल ने गऊ साला को पूजा (ख़ाज़िन) (फ़ा88) अ़फ़्व की कैफ़ियत यह है कि हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि तौबा की सूरत यह है कि जिन्होंने बछड़े की परस्तिश नहीं की है वह परस्तिश करने वालों को क़त्ल करें और मुजरिम ब-रज़ा व तस्लीम सुकून के साथ क़त्ल हो जायें वह इस पर राज़ी हो गए, सुबह से शाम तक सत्तर हज़ार क़त्ल हो गए तब हज़रत मूसा व हारून **(बक़िया सफ़हा 36 पर)**

وَاِذْ قَالَ مُوْسٰى لِقَوْمِهٖ يٰقَوْمِ اِنَّكُمْ ظَلَمْتُمْ اَنْفُسَكُمْ بِاتِّخَاذِكُمُ الْعِجْلَ فَتُوْبُوْٓا اِلٰى بَارِئِكُمْ فَاقْتُلُوْٓا اَنْفُسَكُمْ ؕ ذٰلِكُمْ خَيْرٌ لَّكُمْ عِنْدَ بَارِئِكُمْ ؕ
فَتَابَ عَلَيْكُمْ ؕ اِنَّهٗ هُوَ التَّوَّابُ الرَّحِيْمُ ﴿۵۴﴾ وَاِذْ قُلْتُمْ يٰمُوْسٰى لَنْ نُّؤْمِنَ لَكَ حَتّٰى نَرَى اللّٰهَ جَهْرَةً فَاَخَذَتْكُمُ الصّٰعِقَةُ وَاَنْتُمْ تَنْظُرُوْنَ ﴿۵۵﴾
ثُمَّ بَعَثْنٰكُمْ مِّنْۢ بَعْدِ مَوْتِكُمْ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ ﴿۵۶﴾ وَظَلَّلْنَا عَلَيْكُمُ الْغَمَامَ وَاَنْزَلْنَا عَلَيْكُمُ الْمَنَّ وَالسَّلْوٰى ؕ كُلُوْا مِنْ طَيِّبٰتِ مَا رَزَقْنٰكُمْ ؕ وَمَا
ظَلَمُوْنَا وَلٰكِنْ كَانُوْٓا اَنْفُسَهُمْ يَظْلِمُوْنَ ﴿۵۷﴾ وَاِذْ قُلْنَا ادْخُلُوْا هٰذِهِ الْقَرْيَةَ فَكُلُوْا مِنْهَا حَيْثُ شِئْتُمْ رَغَدًا وَّادْخُلُوا الْبَابَ سُجَّدًا وَّقُوْلُوْا حِطَّةٌ
نَّغْفِرْ لَكُمْ خَطٰيٰكُمْ ؕ وَسَنَزِيْدُ الْمُحْسِنِيْنَ ﴿۵۸﴾ فَبَدَّلَ الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا قَوْلًا غَيْرَ الَّذِيْ قِيْلَ لَهُمْ فَاَنْزَلْنَا عَلَى الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا رِجْزًا مِّنَ السَّمَآءِ بِمَا كَانُوْا يَفْسُقُوْنَ ﴿۵۹﴾

व इज़् क़ा–ल मूसा लिक़ौमिही या क़ौमि इन्नकुम् ज़–लम्तुम् अन्फु–सकुम् बित्तिख़ा– ज़िकुमुल्–इज्–ल फ़तूबू इला बारिइकुम् फ़क़्तुलू अन्फु–सकुम् ज़ालिकुम् ख़ैरुल्लकुम् अिन्–द बारिइकुम् फ़ता–ब अ़लैकुम् इन्नहू हुवत्–तव्वाबुर्रहीम(54)व इज़् क़ुल्तुम् या मूसा लन् नुअ्मि–न ल–क हत्ता न–रल्ला–ह जहरतन् फ़–अ ख़–ज़त्–कुमुस्–साअि–क़तु व अन्तुम् तन्ज़ुरून (55)सुम्–म ब–अ़स्ना–कुम् मिम्बअ्दि मौतिकुम् ल–अ़ल्लकुम् तश्कुरून(56)व ज़ल्लल्ना अ़लैकुमुल्ग़मा–म व अन्ज़ल्ना अ़लैकुमुल्मन्–न वस्सल्वा कुलू मिन् तय्यिबाति मा र–ज़क़्नाकुम् व मा ज़–लमूना व लाकिन् कानू अन्फु–सहुम् यज़्लि–मून(57)व इज़् क़ुल्नद् ख़ुलू हाज़िहिल्क़र्य– त फ़कुलू मिन्हा हैसु शिअ्तुम् र–ग़–दंव्–वद्ख़ुलुल्बा–ब सुज्जदंव्–व क़ू लू हित्ततुन् नग़्फ़िर् लकुम् ख़तायाकुम् व स–नज़ीदुल् मुह्सिनीन(58)फ़–बद्–द लल्लज़ी–न ज़–लमू क़ौलन् ग़ै–रल्लज़ी क़ी–ल लहुम् फ़–अन्ज़ल्ना अ़लल्लज़ी –न ज़–लमू रिज़्ज़म् मिन–स्समाइ बिमा कानू यफ़्सुक़ून(59)

और जब मूसा ने अपनी क़ौम से कहा ऐ मेरी क़ौम तुम ने बछड़ा बनाकर अपनी जानों पर ज़ुल्म किया तो अपने पैदा करने वाले की तरफ़ रुजूअ् लाओ तो आपस में एक दूसरे को क़त्ल करो (फ़ा90) यह तुम्हारे पैदा करने वाले के नज़दीक तुम्हारे लिए बेहतर है तो उसने तुम्हारी तौबा क़बूल की बेशक वही है बहुत तौबा क़बूल करने वाला मेहरबान।(54)(फ़ा91) और जब तुमने कहा ऐ मूसा हम हरगिज़ तुम्हारा यक़ीन न लायेंगे जब तक ऐलानिया ख़ुदा को न देख लें तो तुम्हें कड़क ने आ लिया और तुम देख रहे थे।(55) फिर मरे पीछे हमने तुम्हें ज़िन्दा किया कि कहीं तुम एहसान मानो।(56) और हमने अब्र को तुम्हारा साइबान किया (फ़ा92) और तुम पर मन्न और सलवा उतारा खाओ हमारी दी हुई सुथरी चीज़ें (फ़ा93) और उन्होंने कुछ हमारा न बिगाड़ा हां अपनी ही जानों का बिगाड़ करते थे। (57) और जब हम ने फ़रमाया इस बस्ती में जाओ (फ़ा94) फिर इसमें जहां चाहो बे रोक टोक खाओ और दरवाज़ा में सजदा करते दाख़िल हो (फ़ा95) और कहो हमारे गुनाह माफ़ हों हम तुम्हारी ख़तायें बख़्श देंगे और क़रीब है कि नेकी वालों को और ज़्यादा दें। (58) (फ़ा96) तो ज़ालिमों ने और बात बदल दी जो फ़रमाई गई थी उसके सिवा (फ़ा97) तो हमने आसमान से उन पर अ़ज़ाब उतारा (फ़ा98) बदला उनकी बे हुक्मी का।(59)

(फ़ा90) यह क़त्ल उनके लिए कफ़्फ़ारा था। (फ़ा91) जब बनी इसराईल ने तौबा की और कफ़्फ़ारा में अपनी जानें दे दीं तो अल्लाह तआ़ला ने हुक्म फ़रमाया कि हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम उन्हें गऊ साला परस्ती की उज़्र ख़्वाही के लिए हाज़िर लायें हज़रत उनमें से सत्तर आदमी मुन्तख़ब करके तूर पर ले गए वहां वह कहने लगे ऐ मूसा हम आपका यक़ीन न करेंगे जब तक ख़ुदा को एलानिया न देख लें उस पर आसमान से एक हौलनाक आवाज़ आई जिस की हैबत से वह मर गए हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम ने बतज़र्रुअ् अर्ज़ की कि मैं बनी इसराईल को क्या जवाब दूंगा इस पर अल्लाह तआ़ला ने उनहें यके बाद दीगरे ज़िन्दा फ़रमा दिया **मसलाः** इस से शाने अम्बिया मालूम होती है कि हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम से *लन् नूअ्मि–न ल–क* कहने की शामत में बनी इसराईल हलाक किये गए हु.ज़ूर सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के अ़हद वालों को आगाह किया जाता है कि अम्बिया की जनाब में तर्के अदब ग़ज़बे इलाही का बाइस होता है उससे डरते रहें **मसलाः** यह भी मालूम हुआ कि अल्लाह तआ़ला अपने मक़बूलाने बारगाह की दुआ़ से मुर्दे ज़िन्दा फ़रमाता है। (फ़ा92) जब हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम फ़ारिग़ होकर लश्करे बनी इसराईल में पहुंचे और आपने उन्हें हुक्मे इलाही सुनाया कि मुल्के शाम हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम और उनकी औलाद का मदफ़न है उसी में बैतुल मक़दिस है उस को अ़मालिक़ा से आज़ाद कराने के लिए जिहाद करो और मिस्र छोड़ कर

वहीं वतन बनाओ मिस्र का छोड़ना बनी इसराईल पर निहायत शाक़ था अव्वल तो उन्होंने इसमें पसो पेश किया और जब बजब्र व इक्राह हज़रत मूसा व हज़रत हारून अ़लैहिमस्सलाम की रकाबे सआ़दत में रवाना हुए तो राह में जो कोई सख़्ती व दुशवारी पेश आती हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम से शिकायतें करते जब उस सहरा में पहुंचे जहां न सब्ज़ा था न साया न ग़ल्ला हमराह था वहां धूप की गर्मी और भूख की शिकायत की अल्लाह तआ़ला ने बदुआ़ए हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम अब्रे सफ़ेद को उनका सायाबान बनाया जो रात दिन उनके साथ चलता शब को उनके लिए नूरी सुतून उतरता जिस की रौशनी में काम करते उनके कपड़े मैले और पुराने न होते नाखुन और बाल न बढ़ते उस सफ़र में जो लड़का पैदा होता उसका लिबास उसके साथ पैदा होता जितना वह बढ़ता लिबास भी बढ़ता (फ़ा93) मन तुरन्जबीन की तरह एक शीरीं चीज़ थी रोज़ाना सुबहे सादिक़ से तुलूए़ आफ़ताब तक हर शख़्स के लिए एक साअ़ की क़दर आसमान से नाज़िल होती लोग उसको चादरों में लेकर दिन भर खाते रहते सलवा एक छोटा परिन्द होता है उसको हवा लाती यह शिकार करके खाते दोनों चीज़ें शम्बा (सनीचर) को तो मुतलक़ न आतीं बाक़ी हर रोज़ पहुंचतीं जुमा को और दिनों से दूनी आतीं हुक्म यह था कि जुमा को शम्बा के लिए भी हसबे ज़रूरत जमा कर लो मगर एक दिन से ज़्यादा का जमा न करो बनी इसराईल ने इन निअ़मतों की नाशुक्री की ज़ख़ीरे जमा किये वह सड़ गए और उनकी आमद बन्द कर दी गई यह उन्होंने अपना ही नक़सान किया कि दुनिया में निअ़मत से महरूम और आख़िरत में सज़ावार अ़ज़ाब के हुए (फ़ा94) उस बस्ती से बैतुल मक़्दिस मुराद है या अरीहा जो बैतुल मक़्दिस के क़रीब है जिस में अ़मालिक़ा आबाद थे और उसको ख़ाली कर गए वहां ग़ल्ले मेवे ब-कसरत थे (फ़ा95) यह दरवाज़ा उनके लिए ब-मन्ज़िला कअ़बा के था कि उसमें दाख़िल होना और उसकी तरफ़ सजदा करना सबबे कफ़्फ़ारा ज़ुनूब क़रार दिया गया (फ़ा96) मसलाः इस आयत से मालूम हुआ कि ज़बान से इस्तिग़फ़ार करना और बदनी इबादत सजदा वग़ैरह बजा लाना तौबा का मुतम्मिम है। मसलाः यह भी मालूम हुआ कि मशहूर गुनाह की तौबा बएलान होनी चाहिए। मसलाः यह भी मालूम हुआ कि मक़ामाते मुतबर्रका जो रहमते इलाही के मौरिद हों वहां तौबा करना और ताअ़त बजा लाना समराते नेक और सुरअ़ते क़बूल का सबब होता है (फ़तहुल अ़ज़ीज़) इसी लिए सालिहीन का दस्तूर रहा है कि अम्बिया व औलिया के मवालिद व मज़ारात पर हाज़िर होकर इस्तिग़फ़ार व ताअ़त बजा लाते हैं उर्स व ज़ियारत में भी यह फ़ाइदा मुतसव्वर है (फ़ा97) बुख़ारी व मुस्लिम की हदीस में है कि बनी इसराईल को हुक्म हुआ था कि दरवाज़ा में सजदा करते हुए दाख़िल हों और ज़बान से (*हित्तुन्*) कलिमए तौबा व इस्तिग़फ़ार कहते जायें, उन्होंने दोनों हुक्मों की मुख़ालफ़त की दाख़िल तो हुए सुरीनों के बल घिसटते और बजाए कलिमए तौबा के तमस्ख़ुर से *हब्बतुन् फ़ी शअ़्-रतिन्* कहा जिसके माना हैं (बाल में दाना) (फ़ा98) यह अ़ज़ाबे ताऊन था जिससे एक साअ़त में चौबीस हज़ार हलाक हो गए। मसलाः सिहाह की हदीस में है कि ताऊन पिछली उम्मतों के अ़ज़ाब का बक़िया है जब तुम्हारे शहर में वाक़ेअ़ हो वहां से न भागो दूसरे शहर में हो तो वहां न जाओ। मसलाः सही हदीस में है कि जो लोग मक़ामे वबा में रज़ाए इलाही पर साबिर रहें अगर वह वबा से महफ़ूज़ रहें जब भी उन्हें शहादत का सवाब मिलेगा।

(बक़िया सफ़हा 20 का) भी नाजाइज़ है। (फ़ा103) (एक खाने) से (एक क़िस्म का खाना) मुराद है (फ़ा104) जब वह इस पर भी न माने तो हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम ने बारगाहे इलाही में दुआ़ की इरशाद हुआ *इह्बितू* (फ़ा105) मिस्र अ़रबी में शहर को भी कहते हैं कोई शहर हो और ख़ास शहर यानी मिस्र मूसा अ़लैहिस्सलाम का नाम भी है यहां दोनों में से हर एक मुराद हो सकता है बाज़ का ख़्याल है कि यहां ख़ास शहरे मिस्र मुराद नहीं हो सकता क्योंकि उसके लिए यह लफ़्ज़ ग़ैर मुन्सरिफ़ होकर मुस्तअ़मल होता है और उस पर तनवीन नहीं आती जैसा कि दूसरी आयत में वारिद है *अलै-स ली मुल्कु मिस्-र* और *उद्ख़ुलू मिस्-र* मगर यह ख़्याल सही नहीं क्योंकि सुकूने औसत की वजह से लफ़्ज़े हिन्द की तरह इसको मुन्सरिफ़ पढ़ना दुरुस्त है नह्व में इसकी तसरीह मौजूद है इलावा बरीं हसन वग़ैरह की क़िराअत में मिस्र बिला तनवीन आया है और बाज़ मसाहिफ़ हज़रत उसमान और मुसहफ़े उबय रज़ियल्लाहु अ़न्हुम में भी ऐसा ही है इसी लिए हज़रते मुतर्जिम .क़ुद्दस सिर्रुहू ने तर्जमा में दोनों एहतेमालों को अख़ज़ फ़रमाया है और शहरे मुअ़य्यन के एहतेमाल को मुक़द्दम किया। (फ़ा106) यानी साग, ककड़ी वग़ैरह गो इन चीज़ों की तलब गुनाह न थी लेकिन मन्न व सलवा जैसी निअ़मते बे मेहनत छोड़ कर उनकी तरफ़ माइल होना पस्त ख़्याली है हमेशा उन लोगों का मैलान तबअ़ पस्ती ही की तरफ़ रहा और हज़रत मूसा व हारून वग़ैरह जलीलुल क़द्र बुलन्द हिम्मत अम्बिया (अ़लैहिमुस्सलाम) के बाद बनी इसराईल की लईमी व कम हौसलगी का पूरा ज़ुहूर हुआ और तसल्लुते जालूत व हादसए बख़्ते नसर के बाद तो वह बहुत ही ज़लील व ख़्वार हो गए उसका बयान *ज़ुरि-बत् अ़लैहिमुज़्-ज़िल्ल-तः* में है। (फ़ा107) यहूद की ज़िल्लत तो यह कि दुनिया में कहीं नाम को उनकी सल्तनत नहीं और नादारी यह कि माल मौजूद होते हुए भी हिर्स से मुहताज ही रहते हैं (फ़ा108) अम्बिया व सुलहा की बदौलत जो रुतबे उन्हें हासिल हुए थे उन से महरूम हो गए इस ग़ज़ब का बाइस सिर्फ़ यही नहीं कि उन्होंने आसमानी ग़िज़ाओं के बदले अरज़ी पैदावार की ख़्वाहिश की या उसी तरह की और ख़तायें जो ज़मानए हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम में सादिर हुईं बल्कि अ़हदे नबुव्वत से दूर होने और ज़मानए दराज़ गुज़रने से उनकी इस्तेदादें बातिल हुई और निहायत क़बीह अफ़आ़ल और अ़ज़ीम जुर्म उन से सरज़द हुए यह उनकी उस ज़िल्लत व ख़्वारी के बाइस हुए (फ़ा109) जैसा कि उन्होंने हज़रत ज़करिया व यहया व शअ़्या अ़लैहिमुस्सलाम को शहीद किया और यह क़त्ल ऐसे नाहक़ थे जिनकी वजह ख़ुद यह क़ातिल भी नहीं बता सकते (फ़ा110) शाने नु.ज़ूलः इब्ने जुरैर व इब्ने उबय हातिम ने सुद्दी से रिवायत की कि यह आयत सलमान फ़ारसी रज़ियल्लाहु अ़न्हु के अस्हाब के हक़ में नाज़िल हुई (लुबाबुन्नुक़ूल)

وَاِذِ اسْتَسْقٰى مُوْسٰى لِقَوْمِهٖ فَقُلْنَا اضْرِبْ بِّعَصَاكَ الْحَجَرَ ؕ فَانْفَجَرَتْ مِنْهُ اثْنَتَا عَشْرَةَ عَيْنًا ؕ قَدْ عَلِمَ كُلُّ اُنَاسٍ مَّشْرَبَهُمْ ؕ كُلُوْا وَاشْرَبُوْا مِنْ
رِّزْقِ اللّٰهِ وَلَا تَعْثَوْا فِى الْاَرْضِ مُفْسِدِيْنَ ۝۶۰ وَاِذْ قُلْتُمْ يٰمُوْسٰى لَنْ نَّصْبِرَ عَلٰى طَعَامٍ وَّاحِدٍ فَادْعُ لَنَا رَبَّكَ يُخْرِجْ لَنَا مِمَّا تُنْۢبِتُ الْاَرْضُ مِنْۢ بَقْلِهَا
وَقِثَّآئِهَا وَفُوْمِهَا وَعَدَسِهَا وَبَصَلِهَا ؕ قَالَ اَتَسْتَبْدِلُوْنَ الَّذِىْ هُوَ اَدْنٰى بِالَّذِىْ هُوَ خَيْرٌ ؕ اِهْبِطُوْا مِصْرًا فَاِنَّ لَكُمْ مَّا سَاَلْتُمْ ؕ وَضُرِبَتْ
عَلَيْهِمُ الذِّلَّةُ وَالْمَسْكَنَةُ ۗ وَبَآءُوْ بِغَضَبٍ مِّنَ اللّٰهِ ؕ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ كَانُوْا يَكْفُرُوْنَ بِاٰيٰتِ اللّٰهِ وَيَقْتُلُوْنَ النَّبِيّٖنَ بِغَيْرِ الْحَقِّ ؕ ذٰلِكَ بِمَا عَصَوْا وَّكَانُوْا يَعْتَدُوْنَ ۝۶۱
اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَالَّذِيْنَ هَادُوْا وَالنَّصٰرٰى وَالصّٰبِــِٕيْنَ مَنْ اٰمَنَ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ وَعَمِلَ صَالِحًا فَلَهُمْ اَجْرُهُمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ ۚ وَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ ۝۶۲

व इज़िस्तस्क़ा मूसा लि–क़ौमिही फ़–क़ुल्नज़्रिब् बि–अ़साकल् ह़–जर फ़न्फ़–ज–रत् मिन् हुस्–नता अ़श्–र–त अ़ैनन् क़द् अ़लि–म कुल्लु उनासिम् मश्र–बहुम् कुलू वश्–रबू मिर्–रिज़्क़िल्लाहि व ला तअ़्सौ फ़िल्अर्ज़ि मुफ़्सिदीन(60)व इज़् क़ुल्तुम् या मूसा लन् नस्बि–र अ़ला तआमिंव्वाहिदिन् फ़द्अु लना रब्ब–क युख़्रिज् लना मिम्मा तुम्बितुल् अर्–जु मिम्बक़्लिहा व क़िस्सा–इहा व फ़ूमिहा व अ़–दसिहा व ब–सलिहा क़ा–ल अ–तस्तब्दि–लूनल्लज़ी हु–व अद्ना बिल्लज़ी हु–व ख़ैरुन् इह्बितू मिस्रन् फ़–इन्–न लकुम् मा स–अल्तुम् व ज़ुरिबत् अ़लैहिमुज़्ज़िल्लतु वल्मस्क–नतु व बाऊ बि–ग़–ज़बिम् मिनल्लाहि ज़ालि–क बि–अन्नहुम् कानू यक्फ़ुरू–न बि आयातिल्लाहि व यक़्तुलू–नन्नबिय्यी–न बिग़ैरिल्–ह़क़्क़ि ज़ालि–क बिमा अ़सव्–व कानू यअ़्–तदून(61) इन्नल्लज़ी–न आ–मनू वल्लज़ी–न हादू वन्नसारा वस्साबिई–न मन् आम–न बिल्लाहि वल्यौमिल्–आख़िरि व अ़मि–ल सालिहन् फ़–लहुम् अज्रुहुम् अ़िन्–द रब्बिहिम् व ला ख़ौफ़ुन् अ़लैहिम् व ला हुम् यह़्–ज़नून(62)

और जब मूसा ने अपनी क़ौम के लिए पानी मांगा तो हमने फ़रमाया इस पत्थर पर अपना अ़सा मारो फ़ौरन उसमें से बारह चश्मे बह निकले (फ़ा99) हर गरोह ने अपना घाट पहचान लिया खाओ और पियो खुदा का दिया (फ़ा100) और ज़मीन में फ़साद उठाते न फिरो।(60) (फ़ा101) और जब तुमने कहा ऐ मूसा (फ़ा102) हम से तो एक खाने पर (फ़ा103) हरगिज़ सब्र न होगा तो आप अपने रब से दुआ कीजिये कि ज़मीन की उगाई हुई चीज़ें हमारे लिए निकाले कुछ साग और ककड़ी और गेहूं और मसूर और पियाज़ फ़रमाया क्या अदना चीज़ को बेहतर के बदले मांगते हो (फ़ा104) अच्छा मिस्र (फ़ा105) या किसी शहर में उतरो वहां तुम्हें मिलेगा जो तुमने मांगा (फ़ा106) और उनपर मुक़र्रर कर दी गई ख़्वारी और नादारी (फ़ा107) और खुदा के ग़ज़ब में लौटे (फ़ा108) यह बदला था उसका कि वह अल्लाह की आयतों का इंकार करते और अम्बिया को नाहक़ शहीद करते (फ़ा109) यह बदला था उनकी नाफ़रमानियों और हद से बढ़ने का।(61)(रुकूअ़ 7) बेशक ईमान वाले नीज़ यहूदियों और नसरानियों और सितारा परस्तों में से वह कि सच्चे दिल से अल्लाह और पिछले दीन पर ईमान लायें और नेक काम करें उनका सवाब उनके रब के पास है और न उन्हें कुछ अन्देशा हो और न कुछ ग़म(62) (फ़ा110)

(फ़ा99) जब बनी इसराईल ने सफ़र में पानी न पाया शिद्दते प्यास की शिकायत की तो हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम को हुक्म हुआ कि अपना अ़सा पत्थर पर मारो आप के पास एक मुरब्बअ़ पत्थर था जब पानी की ज़रूरत होती आप उस पर अ़सा मारते उससे बारह चश्मे जारी हो जाते और सब सैराब होते यह बड़ा मोअ़्जेज़ा है लेकिन सय्यदे अम्बिया सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के अंगुश्ते मुबारक से चश्मे जारी फ़रमा कर जमाअ़ते कसीरा को सैराब फ़रमाना इससे बहुत आज़म व आला है क्यों कि उ़ज़्वे इन्सानी से चश्मे जारी होना पत्थर की निस्बत ज़्यादा अअ़्जब है (ख़ाज़िन व मदारिक) (फ़ा100) यानी आसमानी तआम मन्न व सलवा खाओ और उस पत्थर के चश्मों का पानी पियो जो तुम्हें फ़ज़्ले इलाही से बे मेहनत मुयस्सर है (फ़ा101) नेअ़्मतों के ज़िक्र के बाद बनी इसराईल की ना-लियाक़ती दूं हिम्मती और नाफ़रमानी के चन्द वाक़िआत बयान फ़रमाये जाते हैं (फ़ा102) बनी इसराईल की यह अदा भी निहायत बे-अदबाना थी कि पैग़म्बरे उलुल-अ़ज़्म को नाम लेकर पुकारा या नबीयल्लाह या रसूलल्लाह या और कोई ताज़ीम का कलिमा न कहा (फ़तहुल अ़ज़ीज़) जब अम्बिया का ख़ाली नाम लेना बे-अदबी है तो उनको बशर और एलची कहना किस तरह गुस्ताख़ी न होगा ग़रज़ अम्बिया के ज़िक्र में बे ताज़ीमी का शाइबा **(बक़िया सफ़हा 19 पर)**

وَإِذْ أَخَذْنَا مِيثَاقَكُمْ وَرَفَعْنَا فَوْقَكُمُ الطُّورَ خُذُوا مَا آتَيْنَاكُمْ بِقُوَّةٍ وَاذْكُرُوا مَا فِيهِ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُونَ ۞ ثُمَّ تَوَلَّيْتُمْ مِنْ بَعْدِ ذَٰلِكَ

فَلَوْلَا فَضْلُ اللَّهِ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَتُهُ لَكُنْتُمْ مِنَ الْخَاسِرِينَ ۞ وَلَقَدْ عَلِمْتُمُ الَّذِينَ اعْتَدَوْا مِنْكُمْ فِي السَّبْتِ فَقُلْنَا لَهُمْ كُونُوا قِرَدَةً خَاسِئِينَ ۞

فَجَعَلْنَاهَا نَكَالًا لِمَا بَيْنَ يَدَيْهَا وَمَا خَلْفَهَا وَمَوْعِظَةً لِلْمُتَّقِينَ ۞ وَإِذْ قَالَ مُوسَىٰ لِقَوْمِهِ إِنَّ اللَّهَ يَأْمُرُكُمْ أَنْ تَذْبَحُوا بَقَرَةً ۖ قَالُوا

أَتَتَّخِذُنَا هُزُوًا ۖ قَالَ أَعُوذُ بِاللَّهِ أَنْ أَكُونَ مِنَ الْجَاهِلِينَ ۞ قَالُوا ادْعُ لَنَا رَبَّكَ يُبَيِّنْ لَنَا مَا هِيَ ۚ قَالَ إِنَّهُ يَقُولُ إِنَّهَا بَقَرَةٌ لَا فَارِضٌ

وَلَا بِكْرٌ عَوَانٌ بَيْنَ ذَٰلِكَ ۖ فَافْعَلُوا مَا تُؤْمَرُونَ ۞

व इज़् अ–ख़ज़्ना मीसा–ककुम् व र–फ़अ्ना फ़ौ–क़–कुमुत्तूर ख़ुज़ू मा आतैनाकुम् बिक़ुव्वतिंव् वज़्कुरू मा फ़ीहि लअ़ल्लकुम् तत्तकून(63)सुम्–म तवल्लैतुम् मिम्बअ़्दि ज़ालि–क फ़–लौला फ़ज़्लुल्लाहि अ़लैकुम् व रह्मतुहू लकुन्तुम् मिनल् ख़ासिरीन(64)व ल–क़द अ़लिम्तु–मुल्– लज़ीनअ़् –तदौ मिन्कुम् फ़िस्सब्ति फ़कुल्ना लहुम् कूनू क़ि–र–द–तन् ख़ासिईन(65)फ़–ज–अ़ल्नाहा नकालल् लिमा बै–न यदैहा व मा ख़ल्फ़हा व मौअ़ि–ज़–तल्–लिल्–मुत्तक़ीन(66)व इज़् क़ा–ल मूसा लि–क़ौमिही इन्नल्ला–ह यअ्मुरुकुम् अन् तज़्बहू ब–क़्–रतन् क़ालू अ–तत्तख़िज़ुना हुज़ुवन् क़ा–ल अऊज़ु बिल्लाहि अन् अकू–न मिनल्जाहिलीन(67)क़ालुदअ़ु लना रब्ब–क यु–बय्यिल्लना मा हि–य क़ा–ल इन्नहू यक़ूलु इन्नहा ब–क़्–रतुल्ला फ़ारिज़ुंव्–व ला बिक्रुन् अ़वानुम् बै–न ज़ालि–क फ़फ़्अ़लू मा तुअ्मरून(68)

और जब हम ने तुम से अ़हद लिया (फ़ा111) और तुम पर तूर को ऊँचा किया (फ़ा112) लो जो कुछ हम तुम को देते हैं ज़ोर से (फ़ा113) और उसके मज़मून याद करो इस उम्मीद पर कि तुम्हें परहेज़गारी मिले।(63) फिर उसके बाद तुम फिर गए तो अगर अल्लाह का फ़ज़्ल और उसकी रहमत तुम पर न होती तो तुम टोटे वालों में हो जाते।(64)(फ़ा114) और बेशक ज़रूर तुम्हें मालूम है तुम में के वह जिन्होंने हफ़्ता में सरकशी की (फ़ा115) तो हमने उनसे फ़रमाया कि हो जाओ बन्दर धुतकारे हुए।(65) तो हमने उस बस्ती का यह वाक़िआ़ उसके आगे और पीछे वालों के लिए इब्रत कर दिया और परहेज़गारों के लिए नसीहत।(66) और जब मूसा ने अपनी क़ौम से फ़रमाया ख़ुदा तुम्हें हुक्म देता है कि एक गाय ज़िबह करो (फ़ा116) बोले कि आप हमें मस्ख़रा बनाते हैं (फ़ा117) फ़रमाया ख़ुदा की पनाह कि मैं जाहिलों से हूं।(67)(फ़ा118) बोले अपने रब से दुआ़ कीजिये कि वह हमें बता दे गाय कैसी कहा वह फ़रमाता है कि वह एक गाय है न बूढ़ी और न ऊसर बल्कि इन दोनों के बीच में, तो करो जिसका तुम्हें हुक्म होता है।(68)

(फ़ा111) कि तुम तौरेत मानोगे और उस पर अमल करोगे फिर तुमने उसके अहकाम को शाक़ व गिरां जानकर क़बूल से इंकार कर दिया या बावजूदकि तुमने खुद बइलहाह हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम से ऐसी आसमानी किताब की इस्तेदआ़ की थी जिसमें क़वानीने शरीअ़त व आईने इबादत मुफ़स्सल मज़कूर हों और हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम ने तुम से बार बार उसके क़बूल करने और उस पर अमल करने का अ़हद लिया था जब वह किताब अ़ता हुई तुमने उसके क़बूल करने से इंकार कर दिया और अहद पूरा न किया (फ़ा112) बनी इसराईल की अहद शिकनी के बाद हज़रत जिब्रील ने बहुक्मे इलाही तूर पहाड़ को उठा कर उनके सरों पर क़द्रे क़ामत फ़ासला पर मुअ़ल्लक़ कर दिया और हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम ने फ़रमाया या तो तुम अ़हद क़बूल करो वरना पहाड़ तुम पर गिरा दिया जाएगा और तुम कुचल डाले जाओगे इसमें सूरतन वफ़ाए अ़हद पर इकराह था और दर हक़ीक़त पहाड़ का सरों पर मुअ़ल्लक़ कर देना आयते इलाही और क़ुदरते हक़ की बुरहाने क़वी है इससे दिलों को इत्मीनान हासिल होता है कि बेशक यह रसूल मज़हरे क़ुदरते इलाही हैं यह इत्मीनान उनको मानने और अ़हद पूरा करने का असल सबब है (फ़ा113) यानी ब–कोशिशे तमाम (फ़ा114) यहां फ़ज़्ल व रहमत से या तौफ़ीक़े तौबा मुराद है या ताख़ीरे अ़ज़ाब (मदारिक वग़ैरह) एक क़ौल यह है कि फ़ज़्ले इलाही व रहमते हक़ से हुज़ूर सरवरे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की ज़ाते पाक मुराद है माना यह हैं कि अगर तुम्हें ख़ातिमुल मुरसलीन सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के वजूद की दौलत न मिलती और आपकी हिदायत नसीब न होती तो तुम्हारा अंजाम हलाक व ख़सरान होता (फ़ा115) शहरे ईला में बनी इसराईल आबाद थे उन्हें हुक्म था कि शम्बा का दिन इबादत के लिए ख़ास कर दें उस रोज़ शिकार न करें और दुनियावी मशाग़िल तर्क करदें उनके **(बक़िया सफ़हा 37 पर)**

قَالُوا ادْعُ لَنَا رَبَّكَ يُبَيِّن لَّنَا مَا لَوْنُهَا ۚ قَالَ إِنَّهُ يَقُولُ إِنَّهَا بَقَرَةٌ صَفْرَاءُ فَاقِعٌ لَّوْنُهَا تَسُرُّ النَّاظِرِينَ ﴿٦٩﴾ قَالُوا ادْعُ لَنَا رَبَّكَ يُبَيِّن لَّنَا
مَا هِيَ إِنَّ الْبَقَرَ تَشَابَهَ عَلَيْنَا وَإِنَّا إِن شَاءَ اللَّهُ لَمُهْتَدُونَ ﴿٧٠﴾ قَالَ إِنَّهُ يَقُولُ إِنَّهَا بَقَرَةٌ لَّا ذَلُولٌ تُثِيرُ الْأَرْضَ وَلَا تَسْقِي الْحَرْثَ
مُسَلَّمَةٌ لَّا شِيَةَ فِيهَا ۚ قَالُوا الْآنَ جِئْتَ بِالْحَقِّ ۚ فَذَبَحُوهَا وَمَا كَادُوا يَفْعَلُونَ ﴿٧١﴾ وَإِذْ قَتَلْتُمْ نَفْسًا فَادَّارَأْتُمْ فِيهَا ۖ وَاللَّهُ مُخْرِجٌ مَّا كُنتُمْ تَكْتُمُونَ ﴿٧٢﴾
فَقُلْنَا اضْرِبُوهُ بِبَعْضِهَا ۚ كَذَٰلِكَ يُحْيِي اللَّهُ الْمَوْتَىٰ وَيُرِيكُمْ آيَاتِهِ لَعَلَّكُمْ تَعْقِلُونَ ﴿٧٣﴾ ثُمَّ قَسَتْ قُلُوبُكُم مِّن بَعْدِ ذَٰلِكَ فَهِيَ
كَالْحِجَارَةِ أَوْ أَشَدُّ قَسْوَةً ۚ وَإِنَّ مِنَ الْحِجَارَةِ لَمَا يَتَفَجَّرُ مِنْهُ الْأَنْهَارُ ۚ وَإِنَّ مِنْهَا لَمَا يَشَّقَّقُ فَيَخْرُجُ مِنْهُ الْمَاءُ ۚ وَإِنَّ مِنْهَا لَمَا يَهْبِطُ مِنْ خَشْيَةِ اللَّهِ ۗ وَمَا اللَّهُ بِغَافِلٍ عَمَّا تَعْمَلُونَ ﴿٧٤﴾

क़ालुदअु लना रब्ब–क युबय्यिल्लना मालौनुहा क़ा–ल इन्नहूयक़ूलु इन्नहा ब–क़–रतुन् स़फ़राउ फ़ाक़ि उल्लौनुहा तसुर्रुन् नाज़िरीन(69)क़ालुदअु लना रब्ब–क युबय्यिल्–लना मा हि–य इन्नल्–ब–क़–र तशा–ब–ह अ़लैना व इन्ना इन्शा–अल्लाहु ल–मुह्तदून(70)क़ा–ल इन्नहू यक़ूलु इन्नहा ब–क़–रतुल्ला ज़लूलुन् तुसीरुल् अर्–ज़ व ला तस्क़िल्हर्स़ मुसल्ल–मतुल् लाशि–य–त फ़ीहा क़ालुल्आ–न जिअ्–त बिल्हक़्क़ि फ़–ज़–बहूहा व मा कादू यफ़्–अ़लून(71)व इज़् क़–तल्तुम् नफ़्सन् फ़द्दारअ्तुम् फ़ीहा वल्लाहु मुख़्रिजुम्–मा कुन्तुम् तक्तुमून(72)फ़–क़ुल्नज़्रिबूहु बि–बअ़्ज़िहा कज़ालि–क युह़्–यल्लाहु–ल्मौता ग़ व युरीकुम् आयातिही ल–अ़ल्लकुम् तअ़्–क़िलून (73)सुम्–म क़–सत् क़ुलूबुकुम् मिम्बअ़्दि ज़ालि–क फ़हि–य कल्हि़जा–रति औ अ–शद्दु क़स्वतन् व इन्–न मिनल्हि़जा–रति लमा य–त–फ़ज्जरु मिन्हुल् अन्हारु व इन्–न मिन्हा लमा यश्शक़्–क़क़ु फ़–यख़्रुजु मिन्हुल्माउ व इन्–न मिन्हा लमा यहिबतु मिन् ख़श्यतिल्लाहि व मल्लाहु बि–ग़ाफ़िलिन् अ़म्मा तअ़्–मलून(74)

बोले अपने रब से दुआ़ कीजिये हमें बता दे उसका रंग क्या है, कहा वह फ़रमाता है वह एक पीली गाय है जिसकी रंगत डहडहाती देखने वालों को ख़ुशी देती।(69) बोले अपने रब से दुआ कीजिये कि हमारे लिए साफ़ बयान करे वह गाय कैसी है बेशक गायों में हम को शुबहा पड़ गया और अल्लाह चाहे तो हम राह पा जायेंगे।(70) (फ़ा119) कहा वह फ़रमाता है कि वह एक गाय है जिससे ख़िदमत नहीं ली जाती कि ज़मीन जोते और न खेती को पानी दे बे ऐब है जिस में कोई दाग़ नहीं बोले अब आप ठीक बात लाये(फ़ा120)तो उसे ज़िबह किया और ज़िबह करते मालूम न होते थे।(71) (फ़ा121) (रुकूअ़ 8) और जब तुम ने एक ख़ून किया तो एक दूसरे पर उसकी तोहमत डालने लगे और अल्लाह को ज़ाहिर करना जो तुम छुपाते थे।(72) तो हमने फ़रमाया उस मक़तूल को उस गाय का एक टुकड़ा मारो (फ़ा122) अल्लाह यूं ही मुर्दे जिलाएगा और तुम्हें अपनी निशानियां दिखाता है कि कहीं तुम्हें अ़क़्ल हो।(73) (फ़ा123) फिर उसके बाद तुम्हारे दिल सख़्त हो गए (फ़ा124) तो वह पत्थरों की मिस्ल हैं बल्कि उन से भी ज़्यादा कर्रे और पत्थरों में तो कुछ वह हैं जिनसे नदियां बह निकलती हैं और कुछ वह हैं जो फट जाते हैं तो उनसे पानी निकलता है और कुछ वह हैं जो अल्लाह के डर से गिर पड़ते हैं (फ़ा125) और अल्लाह तुम्हारे कोतकों से बे ख़बर नहीं(74)

(फ़ा119) हुज़ूर सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया अगर वह इन्शाअल्लाह न कहते तो कभी वह गाय न पाते मसलाः हर नेक काम में इंशाअल्लाह कहना मुस्तहब व बाइसे बरकत है (फ़ा120) यानी अब तशफ़्फ़ी हुई और पूरी शान व सिफ़त मालूम हुई फिर उन्होंने गाय की तलाश शुरू की उन अतराफ़ में ऐसी सिर्फ़ एक गाय थी उसका हाल यह है कि बनी इसराईल में एक सालेह शख़्स थे उनका एक सग़ीरुस्-सिन बच्चा था और उनके पास सिवाए एक गाय के बच्चे के कुछ न रहा था उन्होंने उसकी गर्दन पर मुहर लगा कर अल्लाह के नाम पर छोड़ दिया और बारगाहे हक़ में अर्ज़ किया या रब मैं इस बछिया को इस फ़रज़न्द के लिए तेरे पास वदीअ़त रखता हूं जब यह फ़रज़न्द बड़ा हो यह उसके काम आये उनका तो इन्तेक़ाल हो गया बछिया जंगल में बहिफ़्ज़े इलाही परवरिश पाती रही यह लड़का बड़ा हुआ और बफ़ज़्लेही सालेह व मुत्तक़ी हुआ मां का फ़रमांबरदार था एक रोज़ उसकी वालिदा ने कहा ऐ नूरे नज़र तेरे बाप ने तेरे लिए फ़लां जंगल में ख़ुदा के नाम एक बछिया छोड़ दी है वह अब जवान हो गई उसको जंगल से ला और अल्लाह से दुआ़ कर कि वह तुझे अ़ता फ़रमाये लड़के ने गाय को जंगल में देखा और वालिदा की बताई हुई अ़लामतें उसमें पाईं और उसको अल्लाह की क़सम देकर **(बक़िया सफ़हा 38 पर)**

اَفَتَطْمَعُوْنَ اَنْ یُّؤْمِنُوْا لَكُمْ وَ قَدْ كَانَ فَرِیْقٌ مِّنْهُمْ یَسْمَعُوْنَ كَلٰمَ اللّٰهِ ثُمَّ یُحَرِّفُوْنَهٗ مِنْۢ بَعْدِ مَا عَقَلُوْهُ وَ هُمْ یَعْلَمُوْنَ ﴿۷۵﴾ وَ اِذَا لَقُوا الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا قَالُوْۤا اٰمَنَّا ۚۖ وَ اِذَا خَلَا بَعْضُهُمْ اِلٰى بَعْضٍ قَالُوْۤا اَتُحَدِّثُوْنَهُمْ بِمَا فَتَحَ اللّٰهُ عَلَیْكُمْ لِیُحَآجُّوْكُمْ بِهٖ عِنْدَ رَبِّكُمْ ؕ اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ ﴿۷۶﴾ اَوَ لَا یَعْلَمُوْنَ اَنَّ اللّٰهَ یَعْلَمُ مَا یُسِرُّوْنَ وَ مَا یُعْلِنُوْنَ ﴿۷۷﴾ وَ مِنْهُمْ اُمِّیُّوْنَ لَا یَعْلَمُوْنَ الْكِتٰبَ اِلَّاۤ اَمَانِیَّ وَ اِنْ هُمْ اِلَّا یَظُنُّوْنَ ﴿۷۸﴾ فَوَیْلٌ لِّلَّذِیْنَ یَكْتُبُوْنَ الْكِتٰبَ بِاَیْدِیْهِمْ ۗ ثُمَّ یَقُوْلُوْنَ هٰذَا مِنْ عِنْدِ اللّٰهِ لِیَشْتَرُوْا بِهٖ ثَمَنًا قَلِیْلًا ؕ فَوَیْلٌ لَّهُمْ مِّمَّا كَتَبَتْ اَیْدِیْهِمْ وَ وَیْلٌ لَّهُمْ مِّمَّا یَكْسِبُوْنَ ﴿۷۹﴾ وَ قَالُوْا لَنْ تَمَسَّنَا النَّارُ اِلَّاۤ اَیَّامًا مَّعْدُوْدَةً ؕ قُلْ اَتَّخَذْتُمْ عِنْدَ اللّٰهِ عَهْدًا فَلَنْ یُّخْلِفَ اللّٰهُ عَهْدَهٗۤ اَمْ تَقُوْلُوْنَ عَلَى اللّٰهِ مَا لَا تَعْلَمُوْنَ ﴿۸۰﴾

अ–फ़–तत्मऊ–न अंय्युअ्मिनू लकुम् व क़द् का–न फ़रीक़ुम् मिन्हुम् यस्मऊ–न कलामल्लाहि सुम्–म यु–हर्रिफ़ू–नहू मिम्बअ्दि मा अ–क़लूहु व हुम् यअ्–लमून(75)व इज़ा लक़ुल्लज़ी–न आ–मनू क़ालू आमन्ना व इज़ा ख़ला बअ्–जुहुम् इला बअ्ज़िन् क़ालू अतु–हद्दिसू–नहुम् बिमा फ़–त–हल्लाहु अ़लैकुम् लियुहाज्जू–कुम् बिही अ़िन्–द रब्बिकुम् अ–फ़ला तअ्क़िलून(76)अ–व ला यअ्–लमू–न अन्नल्ला–ह यअ्–लमु मा युसिर्रू–न व मा युअ्लिनून(77)व मिन्हुम् उम्मिय्यू–न ला यअ्–लमू–नल्किता–ब इल्ला अमानिय्–य व इन् हुम् इल्ला यज़ुन्नून(78)फ़वैलुल्–लिल्लज़ी–न यक्तुबूनल् किता–ब बिऐदीहिम् सुम्–म यक़ूलू–न हाज़ा मिन् अ़िन्दिल्लाहि लि–यश्तरू बिही स–म–नन् क़लीलन् फ़वैलुल्–लहुम् मिम्मा क–त–बत् ऐदीहिम् व वैलुल्लहुम् मिम्मा यक्सिबून(79)व क़ालू लन् त–मस्– स–नन्नारु इल्ला अय्यामम्–मअ्दू–दतन् क़ुल् अत्तख़ज़्तुम् अ़िन्दल्लाहि अ़ह्दन् फ़–लंय्युख़्लिफ़ल्लाहु अ़ह्दहू अम् तक़ूलू–न अ–लल्लाहि मा ला तअ्–लमून(80)

तो ऐ मुसलमानो! क्या तुम्हें यह तमअ़ है कि यह यहूदी तुम्हारा यक़ीन लायेंगे और उन में का तो एक गरोह वह था कि अल्लाह का कलाम सुनते फिर समझने के बाद उसे दानिस्ता बदल देते।(75) (फ़ा126) और जब मुसलमानों से मिलें तो कहें हम ईमान लाये (फ़ा127) और जब आपस में अकेले हों तो कहें वह इल्म जो अल्लाह ने तुम पर खोला मुसलमानों से बयान किये देते हो कि इससे तुम्हारे रब के यहां तुम्हीं पर हुज्जत लायें क्या तुम्हें अ़क्ल नहीं।(76) क्या नहीं जानते कि अल्लाह जानता है जो कुछ वह छुपाते हैं और जो कुछ ज़ाहिर करते हैं(77) और उन में कुछ अनपढ़ हैं कि जो किताब (फ़ा128) को नहीं जानते मगर ज़बानी पढ़ लेना (फ़ा129) या कुछ अपनी मन घड़त और वह निरे गुमान में हैं(78) तो ख़राबी है उनके लिए जो किताब अपने हाथ से लिखें फिर कह दें यह ख़ुदा के पास से है कि उसके एवज़ थोड़े दाम हासिल करें (फ़ा130) तो ख़राबी है उनके लिए उनके हाथों के लिखे से और ख़राबी उनके लिए उस कमाई से(79) और बोले हमें तो आग न छूएगी मगर गिनती के दिन (फ़ा131) तुम फ़रमा दो क्या ख़ुदा से तुम ने कोई अ़हद ले रखा है जब तो अल्लाह हरगिज़ अपना अ़हद ख़िलाफ़ न करेगा (फ़ा132) या ख़ुदा पर वह बात कहते हो जिसका तुम्हें इल्म नहीं।(80)

(फ़ा126) जैसे उन्होंने तौरेत में तहरीफ़ की और सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम की नअ़त बदल डाली (फ़ा127) शाने नुज़ूलः यह आयत उन यहूदियों की शान में नाज़िल हुई जो सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के ज़माना में थे इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा ने फ़रमाया यहूदी मुनाफ़िक़ जब सहाबाए किराम से मिलते तो कहते कि जिस पर तुम ईमान लाये उस पर हम भी ईमान लाये तुम हक़ पर हो और तुम्हारे आक़ा मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम सच्चे हैं उनका क़ौल हक़ है हम उनकी नअ़त व सिफ़त अपनी किताब तौरेत में पाते हैं उन लोगों पर रुअसाए यहूद (यहूदियों के सरदार) मलामत करते थे इसका बयान *व इज़ा ख़ला बअ्ज़ुहुम्* में है (ख़ाज़िन) फ़ायदाः इससे मालूम हुआ कि हक़ पोशी और सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के औसाफ़ का छुपाना और कमालात का इंकार करना यहूद का तरीक़ा है आजकल के बहुत से गुमराहों की यही आदत है। (फ़ा128) किताब से तौरेत मुराद है (फ़ा129) अमानी उमनिया की जमा है और इसके माना ज़बानी पढ़ने के हैं हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा से मरवी है कि आयत के माना यह हैं कि किताब को नहीं जानते मगर सिर्फ़ ज़बानी पढ़ लेना बग़ैर माना समझे (ख़ाज़िन) बाज़े मुफ़स्सिरीन ने यह माना भी बयान किये हैं कि अमानी से वह झूटी गढ़ी हुई बातें मुराद हैं जो यहूदियों ने अपने उलमा से सुन कर बे तहक़ीक़ मान ली थीं (फ़ा130) (बक़िया सफ़हा 36 पर)

بَلٰى مَنْ كَسَبَ سَيِّئَةً وَّاَحَاطَتْ بِهٖ خَطِيْٓئَتُهٗ فَاُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ النَّارِ ۚ هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ﴿۸۱﴾ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ اُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ الْجَنَّةِ ۚ
هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ﴿۸۲﴾ وَاِذْ اَخَذْنَا مِيْثَاقَ بَنِىْٓ اِسْرَآءِيْلَ لَا تَعْبُدُوْنَ اِلَّا اللّٰهَ ۣ وَبِالْوَالِدَيْنِ اِحْسَانًا وَّذِى الْقُرْبٰى وَالْيَتٰمٰى وَالْمَسٰكِيْنِ وَقُوْلُوْا
لِلنَّاسِ حُسْنًا وَّاَقِيْمُوا الصَّلٰوةَ وَاٰتُوا الزَّكٰوةَ ۭ ثُمَّ تَوَلَّيْتُمْ اِلَّا قَلِيْلًا مِّنْكُمْ وَاَنْتُمْ مُّعْرِضُوْنَ ﴿۸۳﴾ وَاِذْ اَخَذْنَا مِيْثَاقَكُمْ لَا تَسْفِكُوْنَ
دِمَآءَكُمْ وَلَا تُخْرِجُوْنَ اَنْفُسَكُمْ مِّنْ دِيَارِكُمْ ثُمَّ اَقْرَرْتُمْ وَاَنْتُمْ تَشْهَدُوْنَ ﴿۸۴﴾ ثُمَّ اَنْتُمْ هٰٓؤُلَآءِ تَقْتُلُوْنَ اَنْفُسَكُمْ وَتُخْرِجُوْنَ فَرِيْقًا مِّنْكُمْ مِّنْ
دِيَارِهِمْ ۡ تَظٰهَرُوْنَ عَلَيْهِمْ بِالْاِثْمِ وَالْعُدْوَانِ ۭ وَاِنْ يَّاْتُوْكُمْ اُسٰرٰى تُفٰدُوْهُمْ وَهُوَ مُحَرَّمٌ عَلَيْكُمْ اِخْرَاجُهُمْ ۭ اَفَتُؤْمِنُوْنَ بِبَعْضِ الْكِتٰبِ

बला मन् क–स–ब सय्यि–अ–तंव्–व अहातत् बिही ख़ती–अतुहू फ़–उलाइ–क असहा–बुन्नारि हुम् फ़ीहा ख़ालिदून(81)वल्लज़ी–न आ–मनू व अमि–लुस्सालिहाति उलाइ–क अस्हाबुल् जन्नति हुम् फ़ीहा ख़ालिदून(82)व इज् अ–ख़ज़्ना मीसा–क़ बनी इस्राई–ल ला तअ़बुदू–न इल्लल्ला–ह व बिल्वालिदैनि इह्–सानंव्–व ज़िल्कुर्बा वल्–यतामा वल्मसाकीनि व कूलू लिन्नासि हुस्–नंव्–व अक़ीमुस्सला–त व आतुज़्ज़का–त सुम्–म त–वल्लैतुम् इल्ला क़लीलम्–मिन्कुम् व अन्तुम् मुअ़रिजून(83)व इज् अ–ख़ज़्ना मीसा–क़कुम् ला तस्फ़िकू–न दिमा–अकुम् व ला तुख़्रिजू–न अन्फ़ु–सकुम् मिन् दियारिकुम् सुम्–म अक़्रर्तुम् व अन्तुम् तशहदून(84)सुम्–म अन्तुम् हा–उलाइ तक़्तुलू–न अन्फ़ु–सकुम् व तुख़्रिजू–न फ़रीक़म् मिन्कुम् मिन् दियारिहिम् तज़ा–हरू–न अ़लैहिम् बिल्इस्मि वल्अुदवानि व इंय्य–अतूकुम् उसारा तुफ़ादूहुम् व हु–व मुहर्रमुन् अ़लैकुम् इख़्राजुहुम् अ–फ़तुअ्–मिनू–न बि–बअ़्ज़िल्–किताबि

हां क्यों नहीं जो गुनाह कमाए और उसकी ख़ता उसे घेर ले (फ़ा133) वह दोज़ख़ वालों में है उन्हें हमेशा उसमें रहना।(81)और जो ईमान लाये और अच्छे काम किये वह जन्नत वाले हैं उन्हें हमेशा उस में रहना।(82)(रुकूअ़ 9) और जब हमने बनी इसराईल से अ़हद लिया कि अल्लाह के सिवा किसी को न पूजो और मां बाप के साथ भलाई करो (फ़ा134) और रिश्तेदारों और यतीमों और मिस्कीनों से और लोगों से अच्छी बात कहो (फ़ा135) और नमाज़ क़ाइम रखो और ज़कात दो फिर तुम फिर गए (फ़ा136) मगर तुम में के थोड़े (फ़ा137) और तुम रुगरदां हो।(83) (फ़ा138) और जब हमने तुमसे अ़हद लिया कि अपनों का ख़ून न करना और अपनों को अपनी बस्तियों से न निकालना फिर तुमने उसका इक़रार किया और तुम गवाह हो(84) फिर यह जो तुम हो अपनों को क़त्ल करने लगे और अपने में से एक गरोह को उनके वतन से निकालते हो उन पर मदद देते हो (उनके मुख़ालिफ़ को) गुनाह और ज़्यादती में और अगर वह क़ैदी होकर तुम्हारे पास आयें तो बदला देकर छुड़ा लेते हो और उनका निकालना तुम पर हराम है (फ़ा139) तो क्या ख़ुदा के कुछ हुक्मों पर ईमान लाते।

(फ़ा133) इस आयत में गुनाह से शिर्क व कुफ़्र मुराद है और इहाता करने से यह मुराद है कि नजात की तमाम राहें बन्द हो जायें और कुफ़्र व शिर्क ही पर उसको मौत आए क्योंकि मोमिन ख़्वाह कैसा भी गुनाहगार हो गुनाहों से घिरा नहीं होता इस लिए कि ईमान जो आज़मे ताअ़त है वह उसके साथ है। (फ़ा134) अल्लाह तआ़ला ने अपनी इबादत का हुक्म फ़रमाने के बाद वालिदैन के साथ भलाई करने का हुक्म दिया इससे मालूम होता है कि वालिदैन की ख़िदमत बहुत ज़रूरी है वालिदैन के साथ भलाई के यह माना हैं कि ऐसी कोई बात न कहे और ऐसा कोई काम न करे जिस से उन्हें ईज़ा हो और अपने बदन व माल से उनकी ख़िदमत में दरेग़ न करे जब उन्हें ज़रूरत हो उनके पास हाज़िर रहे। **मसलाः** अगर वालिदैन अपनी ख़िदमत के लिए नवाफ़िल छोड़ने का हुक्म दें तो छोड़ दे उनकी ख़िदमत नफ़्ल से मुक़द्दम है **मसलाः** वाजिबात, वालिदैन के हुक्म से तर्क नहीं किये जा सकते वालिदैन के साथ एहसान के तरीक़े जो अहादीस से साबित हैं यह हैं कि तहे दिल से उनके साथ मुहब्बत रखे रफ़्तार व गुफ़्तार में नशिस्त व बरख़्वास्त में अदब लाज़िम जाने उनकी शान में ताज़ीम के लफ़्ज़ कहे उन को राज़ी करने की सई करता रहे अपने नफ़ीस माल को उन से न बचाए उनके मरने के बाद उनकी वसीयतें जारी करे उनके लिए फ़ातिहा सदक़ात तिलावते क़ुरआन से ईसाले सवाब करे अल्लाह तआ़ला से उनकी मग़फ़ेरत की दुआ करे हफ़्तावार उनकी क़ब्र की ज़ियारत करे (फ़तहुल अज़ीज़) वालिदैन के साथ भलाई करने में यह भी दाख़िल है कि अगर वह गुनाहों के आ़दी हों या किसी बद मज़हबी में गिरिफ़्तार हों तो उनको ब–नर्मी इस्लाह व तक़वा और अ़क़ीदए हक़्क़ा की तरफ़ लाने की कोशिश **(बक़िया सफ़्हा 39 पर)**

وَتَكْفُرُوْنَ بِبَعْضٍ ۚ فَمَا جَزَآءُ مَنْ يَّفْعَلُ ذٰلِكَ مِنْكُمْ اِلَّا خِزْيٌ فِى الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۚ وَيَوْمَ الْقِيٰمَةِ يُرَدُّوْنَ اِلٰٓى اَشَدِّ الْعَذَابِ ؕ
وَمَا اللّٰهُ بِغَافِلٍ عَمَّا تَعْمَلُوْنَ ﴿۸۵﴾ اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ اشْتَرَوُا الْحَيٰوةَ الدُّنْيَا بِالْاٰخِرَةِ ۫ فَلَا يُخَفَّفُ عَنْهُمُ الْعَذَابُ وَلَا هُمْ يُنْصَرُوْنَ ﴿۸۶﴾
وَلَقَدْ اٰتَيْنَا مُوْسَى الْكِتٰبَ وَقَفَّيْنَا مِنْۢ بَعْدِهٖ بِالرُّسُلِ ۫ وَاٰتَيْنَا عِيْسَى ابْنَ مَرْيَمَ الْبَيِّنٰتِ وَاَيَّدْنٰهُ بِرُوْحِ الْقُدُسِ ؕ اَفَكُلَّمَا جَآءَكُمْ
رَسُوْلٌۢ بِمَا لَا تَهْوٰٓى اَنْفُسُكُمُ اسْتَكْبَرْتُمْ ۚ فَفَرِيْقًا كَذَّبْتُمْ ۫ وَفَرِيْقًا تَقْتُلُوْنَ ﴿۸۷﴾ وَقَالُوْا قُلُوْبُنَا غُلْفٌ ؕ بَلْ لَّعَنَهُمُ اللّٰهُ بِكُفْرِهِمْ فَقَلِيْلًا
مَّا يُؤْمِنُوْنَ ﴿۸۸﴾ وَلَمَّا جَآءَهُمْ كِتٰبٌ مِّنْ عِنْدِ اللّٰهِ مُصَدِّقٌ لِّمَا مَعَهُمْ ۙ وَكَانُوْا مِنْ قَبْلُ يَسْتَفْتِحُوْنَ عَلَى الَّذِيْنَ كَفَرُوْا ۚ فَلَمَّا جَآءَهُمْ مَّا عَرَفُوْا

व तक्फ़ुरू–न बि–बअ्ज़िन् फ़मा जज़ाउ मंय्यफ़्–अलु ज़ालि–क मिन्कुम् इल्ला ख़िज़्युन् फ़िल् हृया–तिद्–दुन्या व यौमल्क़िया–मति यु–रद्दू–न इला अशद्दिल् अज़ाबि व मल्लाहु बिग़ाफ़िलिन् अ़म्मा तअ्–मलून(85)उलाइ–कल् लज़ीनश् त–र–वुल्हयातद्दुन्या बिल्–आख़ि–रति फ़ला युख़फ़्फ़फ़ु अ़न्हुमुल्–अ़ज़ाबु व ला हुम् युन्स़रून(86)व ल–क़द् आतैना मूसल्किता–ब व क़फ़्फ़ैना मिम्बअ्दिही बिर्रुसुलि व आतैना ईसब्–न मर्यमल्–बय्यिनाति व अय्यद्नाहु बिरूहि़ल्–क़ुदुसि अ–फ़कुल्–लमा जा–अकुम् रसूलुम् बिमा ला तह्वा अन्फ़ुसुकुमुस्–तक्बर्तुम् फ़–फ़रीक़न् कज़्ज़ब्तुम् व फ़रीक़न् तक़्तुलून(87)व क़ालू .क़ुलूबुना ग़ुल्फ़ुन् बल्–ल–अ–नहु–मुल्लाहु बिकुफ़्रिहिम् फ़–क़लीलम् मायुअ्मिनून(88)व लम्मा जा–अहुम् किताबुम् मिन् अ़िन्दिल्लाहि मुस़द्दिक़ुल्लिमा म–अ़हुम् व कानू मिन् क़ब्लु यस्त–फ़्तिहू–न अ़लल्लज़ी–न क–फ़रू फ़–लम्मा जा–अहुम् मा अ़–रफ़ू

और कुछ से इंकार करते हो तो जो तुम में ऐसा करे उसका बदला क्या है मगर यह कि दुनिया में रुसवा हो (फ़ा140) और क़ियामत में सख़्त तर अ़ज़ाब की तरफ़ फेरे जायेंगे और अल्लाह तुम्हारे कोतकों से बेख़बर नहीं।(85)(फ़ा141) यह हैं वह लोग जिन्होंने आख़िरत के बदले दुनिया की ज़िन्दगी मोल ली तो न उनपर से अ़ज़ाब हल्का हो और न उनकी मदद की जाये(86) (रुकूअ़ 10) और बेशक हमने मूसा को किताब अ़ता की (फ़ा142) और उसके बाद पै दर पै रसूल भेजे (फ़ा143) और हम ने ईसा बिन मरयम को खुली निशानियां अ़ता फ़रमाईं (फ़ा144) और पाक रूह़ से (फ़ा145) उसकी मदद की (फ़ा146) तो क्या जब तुम्हारे पास कोई रसूल वह लेकर आये जो तुम्हारे नफ़्स की ख़्वाहिश नहीं तकब्बुर करते हो तो उन में एक गरोह को तुम झुठलाते हो और एक गरोह को शहीद करते हो।(87) (फ़ा147) और यहूदी बोले हमारे दिलों पर पर्दे पड़े हैं (फ़ा148) बल्कि अल्लाह ने उन पर लानत की उनके कुफ़्र के सबब तो उनमें थोड़े ईमान लाते हैं।(88) (फ़ा149) और जब उनके पास अल्लाह की वह किताब (क़ुरआन) आई जो इनके साथ वाली किताब (तौरेत) की तस्दीक़ फ़रमाती है (फ़ा150) और उससे पहले वह इसी नबी के वसीले से काफ़िरों पर फ़तह मांगते थे (फ़ा151) तो जब तशरीफ़ लाया उनके पास वह जाना पहचाना

(फ़ा140) दुनिया में तो यह रुसवाई हुई कि बनी क़ुरैज़ा सन् 3 हिजरी में मारे गए एक रोज़ में उनके सात सौ आदमी क़त्ल किये गए थे और बनी नुज़ैर उससे पहले ही जिला वतन कर दिये गए हलीफ़ों की ख़ातिर अ़हदे इलाही की मुख़ालफ़त का यह वबाल था। मसलाः इससे मालूम हुआ कि किसी की तरफ़दारी में दीन की मुख़ालफ़त करना इलावा उख़रवी अ़ज़ाब के दुनिया में भी ज़िल्लत व रुसवाई का बाइस होता है(फ़ा141) इसमें जैसी नाफ़रमानों के लिए वईदे शदीद है कि अल्लाह तआ़ला तुम्हारे अफ़आ़ल से बे ख़बर नहीं है तुम्हारी नाफ़रमानियों पर अ़ज़ाबे शदीद फ़रमाएगा ऐसे ही इस आयत में मोमिनीन व सालेहीन के लिए मुज़दा है कि उन्हें आमाले हसना की बेहतरीन जज़ा मिलेगी (तफ़सीरे कबीर) (फ़ा142) इस किताब से तौरेत मुराद है जिसमें अल्लाह तआ़ला के तमाम अ़हद मज़कूर थे सबसे अहम अ़हद यह थे कि हर ज़माना के पैग़म्बरों की इताअ़त करना उन पर ईमान लाना और उनकी ताज़ीम व तौक़ीर करना (फ़ा143) हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम के ज़माना से हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम तक मुतवातिर अम्बिया आते रहे उनकी तादाद चार हज़ार बयान की गई है यह सब हज़रात शरीअ़ते मूसवी के मुहाफ़िज़ और उसके अहकाम जारी करने वाले थे चूंकि ख़ातिमुल अम्बिया के बाद नबुव्वत किसी को नहीं मिल सकती इस लिए शरीअ़ते मुहम्मदिया की हिफ़ाज़त व इशाअ़त की ख़िदमत रब्बानी उलमा और मुजद्देदीने मिल्लत को अ़ता हुई (फ़ा144) इन निशानियों से हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम के मोअ्जेज़ात मुराद हैं जैसे मुर्दे को ज़िन्दा करना अंधे और बर्स वाले को अच्छा (बक़िया सफ़हा 37 पर)

كَفَرُوْا بِهٖ ۫ فَلَعْنَةُ اللّٰهِ عَلَى الْكٰفِرِيْنَ ﴿۸۹﴾ بِئْسَمَا اشْتَرَوْا بِهٖۤ اَنْفُسَهُمْ اَنْ يَّكْفُرُوْا بِمَاۤ اَنْزَلَ اللّٰهُ بَغْيًا اَنْ يُّنَزِّلَ اللّٰهُ مِنْ فَضْلِهٖ عَلٰى
مَنْ يَّشَآءُ مِنْ عِبَادِهٖ ۚ فَبَآءُوْ بِغَضَبٍ عَلٰى غَضَبٍ ؕ وَلِلْكٰفِرِيْنَ عَذَابٌ مُّهِيْنٌ ﴿۹۰﴾ وَاِذَا قِيْلَ لَهُمْ اٰمِنُوْا بِمَاۤ اَنْزَلَ اللّٰهُ قَالُوْا نُؤْمِنُ بِمَاۤ
اُنْزِلَ عَلَيْنَا وَيَكْفُرُوْنَ بِمَا وَرَآءَهٗ ۗ وَهُوَ الْحَقُّ مُصَدِّقًا لِّمَا مَعَهُمْ ؕ قُلْ فَلِمَ تَقْتُلُوْنَ اَنْۢبِيَآءَ اللّٰهِ مِنْ قَبْلُ اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ﴿۹۱﴾
وَلَقَدْ جَآءَكُمْ مُّوْسٰى بِالْبَيِّنٰتِ ثُمَّ اتَّخَذْتُمُ الْعِجْلَ مِنْ بَعْدِهٖ وَاَنْتُمْ ظٰلِمُوْنَ ﴿۹۲﴾ وَاِذْ اَخَذْنَا مِيْثَاقَكُمْ وَرَفَعْنَا فَوْقَكُمُ الطُّوْرَ ؕ
خُذُوْا مَاۤ اٰتَيْنٰكُمْ بِقُوَّةٍ وَّاسْمَعُوْا ؕ قَالُوْا سَمِعْنَا وَعَصَيْنَا ۗ وَاُشْرِبُوْا فِيْ قُلُوْبِهِمُ الْعِجْلَ بِكُفْرِهِمْ ؕ قُلْ بِئْسَمَا يَاْمُرُكُمْ بِهٖۤ اِيْمَانُكُمْ اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ﴿۹۳﴾

क–फ़रू बिही फ़–लअ्–नतुल्लाहि अ–लल् काफ़िरीन(89)बिअ्–स–मश्तरौ बिही अन्फु–सहुम् अंय्यक्फुरू बिमा अन्ज़लल्लाहु बग़्यन् अंय्युनज़्ज़िलल्लाहु मिन् फ़ज़्लिही अ़ला मंय्यशाउ मिन् अ़िबादिही फ़–बाऊ बि–ग़–ज़बिन् अ़ला ग़–ज़बिन् व लिल्काफ़िरी–न अ़ज़ाबुम्–मुहीन(90)व इज़ा क़ी–ल लहुम् आमिनू बिमा अन्ज़लल्लाहु क़ालू नुअमिनु बिमा उन्ज़ि–ल अ़लैना व यक्फुरू–न बिमा वरा–अहू व हुवल्हक़्क़ु मुसद्दिक़–ल्लिमा म–अ़हुम् क़ुल् फ़लि–म तक़्तुलू–न अम्बिया अल्लाहि मिन् क़ब्लु इन् कुन्तुम् मुअमिनीन(91)व ल–क़द् जा–अकुम् मूसा बिल्–बय्यिनाति सुम्मत्–तख़ज़्तुमुल् अ़िज्–ल मिम्बअ्दिही व अन्तुम् ज़ालिमून(92)व इज़् अ–ख़ज़्ना मीसा–क़कुम् व र–फ़अ्ना फ़ौ–क़कुमुत्तू–र ख़ुज़ू मा आतैनाकुम् बिक़ुव्वतिंव्वस्मअू क़ालू समिअ्ना व अ़सैना व उश्रिबू फ़ी क़ुलूबिहिमुल्–अ़िज्–ल बिकुफ़्रिहिम् क़ुल् बिअ्–समा यअ्मुरुकुम् बिही ईमानुकुम् इन् कुन्तुम् मुअमिनीन(93)

उससे मुन्किर हो बैठे (फ़ा152) तो अल्लाह की लानत मुन्किरों पर।(89) किस बुरे मोलों उन्होंने अपनी जानों को ख़रीदा कि अल्लाह के उतारे से मुन्किर हों (फ़ा153) इसकी जलन से कि अल्लाह अपने फ़ज़्ल से अपने जिस बन्दे पर चाहे वही उतारे (फ़ा154) तो ग़ज़ब पर ग़ज़ब के सज़ावार हुए (फ़ा155) और काफ़िरों के लिए ज़िल्लत का अ़ज़ाब है(90) (फ़ा156) और जब उन से कहा जाये कि अल्लाह के उतारे पर ईमान लाओ (फ़ा157) तो कहते हैं वह जो हम पर उतरा उस पर ईमान लाते हैं (फ़ा158) और बाक़ी से मुन्किर होते हैं हालांकि वह हक़ है उनके पास वाले की तस्दीक़ फ़रमाता हुआ (फ़ा159) तुम फ़रमाओ कि फिर अगले अम्बिया को क्यों शहीद किया अगर तुम्हें अपनी किताब पर ईमान था।(91)(फ़ा160) और बेशक तुम्हारे पास मूसा खुली निशानियां लेकर तशरीफ़ लाया फिर तुम ने उसके बाद (फ़ा161) बछड़े को मअ़बूद बना लिया और तुम ज़ालिम थे।(92) (फ़ा162) और याद करो जब हम ने तुम से पैमान लिया (फ़ा163) और कोहे तूर को तुम्हारे सरों पर बुलन्द किया लो जो हम तुम्हें देते हैं ज़ोर से और सुनो बोले हम ने सुना और न माना और उनके दिलों में बछड़ा रच रहा था उनके कुफ़्र के सबब तुम फ़रमा दो क्या बुरा हुक्म देता है तुम को तुम्हारा ईमान अगर ईमान रखते हो।(93) (फ़ा164)

(फ़ा152) यह इंकार एनाद व हसद और हुब्बे रियासत की वजह से था। (फ़ा153) यानी आदमी को अपनी जान की ख़लासी के लिए वही करना चाहिए जिस से रिहाई की उम्मीद हो यहूद ने यह बुरा सौदा किया कि अल्लाह के नबी और उसकी किताब के मुन्किर हो गए (फ़ा154) यहूद की ख़्वाहिश थी कि ख़त्मे नबुव्वत का मन्सब बनी इसराईल में से किसी को मिलता जब देखा कि वह महरूम रहे बनी इसमाईल नवाज़े गए तो हसद से मुन्किर हो गए मसलाः इससे मालूम हुआ कि हसद हराम और महरूमियों का बाइस है (फ़ा155) यानी अनवाअ़ व अक़साम के ग़ज़ब के सज़ावार हुए (फ़ा156) इस से मालूम हुआ कि ज़िल्लत व इहानत वाला अ़ज़ाब कुफ़्फ़ार के साथ ख़ास है मोमिनीन को गुनाहों की वजह से अ़ज़ाब हुआ भी तो ज़िल्लत व इहानत के साथ न होगा अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया *व लिल्लाहिल् इज़्ज़तु व लि-रसूलिही व लिल्-मुअमिनीन* (फ़ा157) इससे क़ुरआन पाक और तमाम वह किताबें और सहाइफ़ मुराद हैं जो अल्लाह तआ़ला ने नाज़िल फ़रमाए यानी सब पर ईमान लाओ (फ़ा158) इससे उनकी मुराद तौरेत है (फ़ा159) यानी तौरेत पर ईमान लाने का दावा ग़लत है चूंकि क़ुरआन पाक जो तौरेत का मसद्दिक़ है इसका इंकार तौरेत का इंकार हो गया (फ़ा160) इसमें भी उनकी तकज़ीब है कि अगर तौरेत पर ईमान रखते तो अम्बिया अ़लैहिमुस्सलाम को हरगिज़ शहीद न करते। (फ़ा161) यानी हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम के तूर पर तशरीफ़ ले जाने के बाद (फ़ा162) इसमें भी उनकी तकज़ीब है कि शरीअ़ते मूसवी के मानने का दावा झूठा है अगर तुम मानते तो हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम के अ़सा और यदे बैज़ा वग़ैरह खुली निशानियों के देखने के बाद गऊ साला परस्ती न करते (फ़ा163) तौरेत के अहकाम पर अ़मल करने का (फ़ा164) इसमें भी उनके दावाए ईमान की तकज़ीब है।

قُلْ إِنْ كَانَتْ لَكُمُ الدَّارُ الْآخِرَةُ عِنْدَ اللَّهِ خَالِصَةً مِنْ دُونِ النَّاسِ فَتَمَنَّوُا الْمَوْتَ إِنْ كُنْتُمْ صَادِقِينَ ﴿٩٤﴾ وَلَنْ يَتَمَنَّوْهُ أَبَدًا بِمَا قَدَّمَتْ أَيْدِيهِمْ

وَاللَّهُ عَلِيمٌ بِالظَّالِمِينَ ﴿٩٥﴾ وَلَتَجِدَنَّهُمْ أَحْرَصَ النَّاسِ عَلَىٰ حَيَاةٍ وَمِنَ الَّذِينَ أَشْرَكُوا يَوَدُّ أَحَدُهُمْ لَوْ يُعَمَّرُ أَلْفَ سَنَةٍ وَمَا هُوَ

بِمُزَحْزِحِهِ مِنَ الْعَذَابِ أَنْ يُعَمَّرَ وَاللَّهُ بَصِيرٌ بِمَا يَعْمَلُونَ ﴿٩٦﴾ قُلْ مَنْ كَانَ عَدُوًّا لِجِبْرِيلَ فَإِنَّهُ نَزَّلَهُ عَلَىٰ قَلْبِكَ بِإِذْنِ اللَّهِ

مُصَدِّقًا لِمَا بَيْنَ يَدَيْهِ وَهُدًى وَبُشْرَىٰ لِلْمُؤْمِنِينَ ﴿٩٧﴾ مَنْ كَانَ عَدُوًّا لِلَّهِ وَمَلَائِكَتِهِ وَرُسُلِهِ وَجِبْرِيلَ وَمِيكَالَ فَإِنَّ اللَّهَ عَدُوٌّ لِلْكَافِرِينَ ﴿٩٨﴾

وَلَقَدْ أَنْزَلْنَا إِلَيْكَ آيَاتٍ بَيِّنَاتٍ وَمَا يَكْفُرُ بِهَا إِلَّا الْفَاسِقُونَ ﴿٩٩﴾ أَوَكُلَّمَا عَاهَدُوا عَهْدًا نَبَذَهُ فَرِيقٌ مِنْهُمْ بَلْ أَكْثَرُهُمْ لَا يُؤْمِنُونَ ﴿١٠٠﴾

कुल् इन् कानत् ल–कुमुद्दारुल् आख़ि–रतु अिन्दल्लाहि ख़ालि–स़–तम् मिन् दूनिन्नासि फ़–त–मन्नवुल्–मौ–त इन् कुन्तुम्स़ादिक़ीन(94)व लंय्य–त–मन्नौहु अ–ब–दम् बिमा क़द्–द–मत् ऐदीहिम् वल्लाहु अ़लीमुम् बिज़्–ज़ालिमीन(95)व ल–तजिदन्नहुम् अह़्र–स़न्नासि अ़ला ह़यातिन व मिनल्लज़ी–न अश्रकू य–वद्दु अ–ह़दुहुम् लौ युअ़म्मरु अल्–फ़ स–नतिन् व मा हु–व बिमुज़ह़्ज़िह़िही मिनल् अ़ज़ाबि अंय्यु–अम्मर वल्लाहु बस़ीरुम् बिमा यअ़्–मलून(96)क़ुल् मन् का–न अ़दुव्वल्–लिजिब्री–ल फ़–इन्नहु नज़्ज़–लहू अ़ला क़ल्बि–क बि–इज़्निल्लाहि मुस़द्–दिक़ल् लिमा बै–न यदैहि व हुदंव्–व बुश्रा लिल्–मुअ्मिनीन(97)मन् का–न अ़दुव्वल्–लिल्लाहि व मलाइ–कतिही व रुसुलिही व जिब्री–ल व मीका–ल फ़–इन्नल्ला–ह अ़दुव्वुल्–लिल्काफ़िरीन(98)व ल–क़द् अन्ज़ल्ना इलै–क आयातिम् बय्यिनातिन् व मा यक्फ़ुरु बिहा इल्लल्फ़ासिक़ून(99)अ–व कुल्लमा अ़ा–हदू अ़ह्दन् न–ब–ज़हू फ़रीक़ुम्–मिन्हुम् बल् अक्स़रुहुम् ला युअ्मिनून(100)

तुम फ़रमाओ अगर पिछला घर अल्लाह के नज़दीक ख़ालिस तुम्हारे लिए हो न औरों के लिए तो भला मौत की आरज़ू तो करो अगर सच्चे हो।(94) (फ़ा165) और हरगिज़ कभी इसकी आरज़ू न करेंगे (फ़ा166) उन बद आमालियों के सबब जो आगे कर चुके (फ़ा167) और अल्लाह ख़ूब जानता है ज़ालिमों को।(95)और बेशक तुम ज़रूर उन्हें पाओगे कि सब लोगों से ज़्यादा जीने की हवस रखते हैं और मुशरिकों से एक को तमन्ना है कि कहीं हज़ार बरस जिये (फ़ा168) और वह उसे अ़ज़ाब से दूर न करेगा इतनी उम्र दिया जाना और अल्लाह उनके कोतक देख रहा है।(96) (रुकूअ़ 11) तुम फ़रमा दो जो कोई जिब्रील का दुश्मन हो (फ़ा169) तो उसने तो तुम्हारे दिल पर अल्लाह के हुक्म से यह क़ुरआन उतारा अगली किताबों की तस्दीक़ फ़रमाता और हिदायत व बशारत मुसलमानों को। (97) (फ़ा170) जो कोई दुश्मन हो अल्लाह और उसके फ़रिश्तों और उसके रसूलों और जिब्रील और मीकाईल का तो अल्लाह दुश्मन है काफ़िरों का।(98) (फ़ा171) और बेशक हमने तुम्हारी तरफ़ रौशन आयतें उतारीं (फ़ा172) और उनके मुन्किर न होंगे मगर फ़ासिक़ लोग।(99) और क्या जब कभी कोई अ़हद करते हैं उनमें का एक फ़रीक़ उसे फेंक देता है बल्कि उनमें बहुतेरों को ईमान नहीं।(100) (फ़ा173)

(फ़ा165) यहूद के बातिल दआ़वा में से एक यह दावा था कि जन्नत ख़ास उन्हीं के लिए है इसका रद फ़रमाया जाता है कि अगर तुम्हारे ज़ोअ़्म में जन्नत तुम्हारे लिए ख़ास है और आख़िरत की तरफ़ से तुम्हें इत्मीनान है आमाल की हाजत नहीं तो जन्नती निअ़्मतों के मुक़ाबला में दुनियवी मसाइब क्यों बरदाश्त करते हो मौत की तमन्ना करो कि तुम्हारे दावा की बिना पर तुम्हारे लिए बाइसे राहत है अगर तुमने मौत की तमन्ना न की तो यह तुम्हारे किज़्ब की दलील होगी हदीस शरीफ़ में है कि अगर वह मौत की तमन्ना करते तो सब हलाक हो जाते और रूए ज़मीन पर कोई यहूदी बाक़ी न रहता (फ़ा166) यह ग़ैब की ख़बर और मोअ़्जेज़ा है कि यहूद बावजूद निहायत ज़िद और शिद्दते मुख़ालफ़त के भी तमन्नाए मौत का लफ़्ज़ ज़बान पर न ला सके (फ़ा167) जैसे नबीए आख़िरुज़्ज़मां और क़ुरआन के साथ कुफ़्र और तौरेत की तहरीफ़ वग़ैरह। मसलाः मौत की मुहब्बत और लिक़ाए परवरदिगार का शौक़ अल्लाह के मक़बूल बन्दों का तरीक़ा है हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अ़न्हु हर नमाज़ के बाद दुआ फ़रमाते *अल्लाहुम्मर् ज़ुक़्नी शहा–द–तन् फ़ी सबीलि–क व वफ़ातन् बि–ब–लदि रसूलि–क* या रब मुझे अपनी राह में शहादत और अपने रसूल के शहर में वफ़ात नसीब फ़रमा बिलउमूम तमाम सहाबए किबार और बिलख़ुसूस शोहदाए बदर व उहद व अस्हाबे बैअ़ते रिज़्वान मौत फ़ी सबीलिल्लाह की मुहब्बत रखते थे हज़रत सअ़्द बिन अबी वक़्क़ास रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने लश्करे कुफ़्फ़ार के सरदार रुस्तम बिन फ़र्रुख़ ज़ाद के पास जो ख़त भेजा उसमें तहरीर फ़रमाया **(बक़िया सफ़हा 39 पर)**

وَلَمَّا جَآءَهُمْ رَسُوْلٌ مِّنْ عِنْدِ اللّٰهِ مُصَدِّقٌ لِّمَا مَعَهُمْ نَبَذَ فَرِيْقٌ مِّنَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ ۙ كِتٰبَ اللّٰهِ وَرَآءَ ظُهُوْرِهِمْ كَاَنَّهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿۱۰۱﴾
وَاتَّبَعُوْا مَا تَتْلُوا الشَّيٰطِيْنُ عَلٰى مُلْكِ سُلَيْمٰنَ ۚ وَمَا كَفَرَ سُلَيْمٰنُ وَلٰكِنَّ الشَّيٰطِيْنَ كَفَرُوْا يُعَلِّمُوْنَ النَّاسَ السِّحْرَ ۚ وَمَآ اُنْزِلَ عَلَى الْمَلَكَيْنِ
بِبَابِلَ هَارُوْتَ وَمَارُوْتَ ۚ وَمَا يُعَلِّمٰنِ مِنْ اَحَدٍ حَتّٰى يَقُوْلَآ اِنَّمَا نَحْنُ فِتْنَةٌ فَلَا تَكْفُرْ ۚ فَيَتَعَلَّمُوْنَ مِنْهُمَا مَا يُفَرِّقُوْنَ بِهٖ بَيْنَ الْمَرْءِ وَزَوْجِهٖ ۚ
وَمَا هُمْ بِضَآرِّيْنَ بِهٖ مِنْ اَحَدٍ اِلَّا بِاِذْنِ اللّٰهِ ۚ وَيَتَعَلَّمُوْنَ مَا يَضُرُّهُمْ وَلَا يَنْفَعُهُمْ ۚ وَلَقَدْ عَلِمُوْا لَمَنِ اشْتَرٰىهُ مَا لَهٗ فِى الْاٰخِرَةِ مِنْ
خَلَاقٍ ۚ وَلَبِئْسَ مَا شَرَوْا بِهٖٓ اَنْفُسَهُمْ ۚ لَوْ كَانُوْا يَعْلَمُوْنَ ﴿۱۰۲﴾ وَلَوْ اَنَّهُمْ اٰمَنُوْا وَاتَّقَوْا لَمَثُوْبَةٌ مِّنْ عِنْدِ اللّٰهِ خَيْرٌ ۚ لَوْ كَانُوْا يَعْلَمُوْنَ ﴿۱۰۳﴾

व लम्मा जा–अहुम् रसूलुम् मिन् अ़िन्दिल्लाहि मुसद्दिकुल्लिमा म–अ़हुम् न–ब–ज़ फ़रीकुम्–मिनल्लज़ी–न ऊतुल्–किता–ब किताबल्लाहि व रा–अ जुहूरिहिम् क–अन्नहुम् ला यअ्–लमून(101)वत्त–बअू मा तत्लु–श्शयातीनु अ़ला मुल्कि सुलैमा–न व मा क–फ़–र सुलैमानु व लाकिन्न–श्शयाती–न क–फ़रू युअ़ल्लिमू–न्नासस्–सिह्र व मा उन्ज़ि–ल अ़लल्–म–लकैनि बिबाबि–ल हारू–त व मारूत व मा युअ़ल्लिमानि मिन् अ–हदिन् हत्ता यकूला इन्नमा नह्नु फ़ित्नतुन् फ़ला तक्फ़ुर् फ़–य–त–अ़ल्लमू–न मिन्हुमा मा यु–फ़र्रिकू–न बिही बैनल्–मरइ व ज़ौजिही व मा हुम् बिज़ार्री–न बिही मिन्अ–हदिन् इल्ला बि–इज़्निल्लाहि व य–त–अ़ल्लमू–न मा यजुर्रुहुम् व ला यन्फ़अुहुम् व ल–क़द् अ़लिमू ल–मनिश्तराहु मा लहू फ़िल्आख़ि–रति मिन् ख़लाक़िन् व लबिअ्–स मा शरौ बिही अन्फ़ु–सहुम् लौ कानू यअ्–लमून(102)व लौ अन्नहुम् आमनू वत्तक़ौ ल–मसू–बतुम् मिन् अ़िन्दिल्लाहि ख़ैरुन् लौ कानू यअ्–लमून(103)

और जब उनके पास तशरीफ़ लाया अल्लाह के यहां से एक रसूल (फ़ा174) उनकी किताबों की तस्दीक़ फ़रमाता (फ़ा175) तो किताब वालों से एक गरोह ने अल्लाह की किताब अपने पीठ पीछे फेंक दी (फ़ा176) गोया वह कुछ इल्म ही नहीं रखते। (101) (फ़ा177) और उसके पैरौ हुए जो शैतान पढ़ा करते थे सल्तनते सुलैमान के ज़माना में (फ़ा178)और सुलैमान ने कुफ़्र न किया (फ़ा179) हां शैतान काफ़िर हुए (फ़ा180) लोगों को जादू सिखाते हैं और वह (जादू) जो बाबिल में दो फ़रिश्तों हारूत व मारूत पर उतरा और वह दोनों किसी को कुछ न सिखाते जब तक यह न कह लेते कि हम तो निरी आज़माईश हैं तू अपना ईमान न खो (फ़ा181) तो उन से सीखते वह जिस से जुदाई डालें मर्द और उसकी औ़रत में और उससे ज़रर नहीं पहुंचा सकते किसी को मगर ख़ुदा के हुक्म से (फ़ा182) और वह सीखते हैं जो उन्हें नक़्सान देगा नफ़ा न देगा और बेशक ज़रूर उन्हें मालूम है कि जिसने यह सौदा लिया आख़िरत में उसका कुछ हिस्सा नहीं और बेशक क्या बुरी चीज़ है वह जिसके बदले उन्होंने अपनी जानें बेचीं किसी तरह उन्हें इल्म होता।(102)(फ़ा183)और अगर वह ईमान लाते (फ़ा184) और परहेज़गारी करते तो अल्लाह के यहां का सवाब बहुत अच्छा है किसी तरह उन्हें इल्म होता।(103)(रुकूअ़ 12)

(फ़ा174) यानी सय्यदे आ़लम मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम (फ़ा175) सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम तौरेत व ज़बूर वग़ैरह की तस्दीक़ फ़रमाते थे और ख़ुद उन किताबों में भी हु.जूर की तशरीफ़ आवरी की बशारत और आपके औसाफ़ व अहवाल का बयान था इस लिए हुज़ूर की तशरीफ़ आवरी और आप का वजूदे मुबारक ही उन किताबों की तस्दीक़ है तो हाल उसका मुक़तज़ी था कि हुज़ूर की आमद पर अहले किताब का ईमान अपनी किताबों के साथ और ज़्यादा पुख़्ता होता मगर इसके बरअ़क्स उन्होंने अपनी किताबों के साथ भी कुफ़्र किया सुद्दी का क़ौल है कि जब हु.जूर की तशरीफ़ आवरी हुई तो यहूद ने तौरेत से मुक़ाबला करके तौरेत व .कुरआन को मुताबिक़ पाया तो तौरेत को भी छोड़ दिया (फ़ा176) यानी इस किताब की तरफ़ बे-इल्तेफ़ाती की सुफ़ियान इब्ने अ़ैनिया का क़ौल है कि यहूद ने तौरेत को हरीर व दीबा के रेशमी गिलाफ़ों में ज़र व सीम के साथ मुतल्ला व मुज़य्यन करके रख लिया और उसके अहकाम को न माना (फ़ा177) इन आयात से मालूम होता है कि यहूद के चार फ़िरक़े थे एक तौरेत पर ईमान लाया और उसने उसके हुक़ूक़ को भी अदा किया यह मोमिनीन अहले किताब हैं उनकी तादाद थोड़ी है और *अक्सरुहुम* से उनका पता चलता है दूसरा फ़िरक़ा जिसने बिल-एलान तौरते के अ़हद तोड़े उसके हुदूद से बाहर हुए, सरकशी इख़्तियार की *न-ब-ज़हू फ़रीक़ुम् मिन्हुम्* में इनका बयान है। तीसरा फ़िरक़ा वह जिसने अ़हद शिकनी का एलान तो न किया लेकिन अपनी जिहालत से अ़हद शिकनी करते रहे **(बक़िया सफ़हा 38 पर)**

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَقُوْلُوْا رَاعِنَا وَقُوْلُوا انْظُرْنَا وَاسْمَعُوْا ؕ وَلِلْكٰفِرِيْنَ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿۱۰۴﴾ مَا يَوَدُّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ

وَلَا الْمُشْرِكِيْنَ اَنْ يُّنَزَّلَ عَلَيْكُمْ مِّنْ خَيْرٍ مِّنْ رَّبِّكُمْ ؕ وَاللّٰهُ يَخْتَصُّ بِرَحْمَتِهٖ مَنْ يَّشَآءُ ؕ وَاللّٰهُ ذُو الْفَضْلِ الْعَظِيْمِ ﴿۱۰۵﴾ مَا نَنْسَخْ مِنْ اٰيَةٍ

اَوْ نُنْسِهَا نَاْتِ بِخَيْرٍ مِّنْهَآ اَوْ مِثْلِهَا ؕ اَلَمْ تَعْلَمْ اَنَّ اللّٰهَ عَلٰى كُلِّ شَیْءٍ قَدِيْرٌ ﴿۱۰۶﴾ اَلَمْ تَعْلَمْ اَنَّ اللّٰهَ لَهٗ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ

وَمَا لَكُمْ مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ مِنْ وَّلِیٍّ وَّلَا نَصِيْرٍ ﴿۱۰۷﴾ اَمْ تُرِيْدُوْنَ اَنْ تَسْـَٔلُوْا رَسُوْلَكُمْ كَمَا سُئِلَ مُوْسٰى مِنْ قَبْلُ ؕ وَمَنْ يَّتَبَدَّلِ الْكُفْرَ بِالْاِيْمَانِ

فَقَدْ ضَلَّ سَوَآءَ السَّبِيْلِ ﴿۱۰۸﴾ وَدَّ كَثِيْرٌ مِّنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ لَوْ يَرُدُّوْنَكُمْ مِّنْۢ بَعْدِ اِيْمَانِكُمْ كُفَّارًا ۚۖ حَسَدًا مِّنْ عِنْدِ اَنْفُسِهِمْ مِّنْۢ بَعْدِ مَا تَبَيَّنَ

या अय्यु–हल्लज़ी–न आ–मनू ला तक़ूलू राअ़िना व कूलुन्ज़ुरना वस्मअू व लिल्काफ़िरी–न अ़ज़ाबुन् अलीम(104)मा य–वद्दुल्–लज़ी–न क–फ़रू मिन् अहलिल् किताबि व लल्मुश्रिकी–न अंय्यु–नज़्ज़–ल अ़लैकुम् मिन् ख़ैरिम्–मिर्रब्बिकुम् वल्लाहु यख़्तस्सु बि–रह्मतिही मंय्यशाउ वल्लाहु जुल्फ़ज़्लिल्–अ़ज़ीम(105)मा नन्सख़् मिन् आ–यतिन् औ नुन्सिहा नअ्ति बिख़ैरिम् मिन्हा औ मिस्लिहा अ–लम् तअ्–लम् अन्न–ल्लाह अ़ला कुल्लि शैइन् क़दीर(106)अ–लम् तअ्–लम् अन्न–ल्ला–ह लहू मुल्कुस्समावाति वल्अर्ज़ि व मा लकुम् मिन् दूनिल्लाहि मिंव्वलिय्यिंव्–व ला नसीर(107)अम् तुरीदू–न अन् तस्अलू रसू–लकुम् कमा सुइ–ल मूसा मिन् क़ब्लु व मंय्य–त–बद्–द लिल्कुफ़्–र बिल्ईमानि फ़–क़द् ज़ल्–ल सवा–अस्सबील(108)वद्–द कसीरुम् मिन् अह्लि–ल्किताबि लौ यरुद्दू–नकुम् मिम्बअ़्दि ईमानिकुम् कुफ़्फ़ारन् ह़–स–दम् मिन् अ़िन्दि अन्फ़ुसिहिम् मिम्बअ़्दि मा त–बय्य–न

ऐ ईमान वालो (फ़ा185) राइना न कहो और यूं अ़र्ज़ करो कि हुज़ूर हम पर नज़र रखें और पहले ही से बग़ौर सुनो (फ़ा186) और काफ़िरों के लिए दर्दनाक अ़ज़ाब है।(104) (फ़ा187) वह जो काफ़िर हैं किताबी या मुशरिक (फ़ा188) वह नहीं चाहते कि तुम पर कोई भलाई उतरे तुम्हारे रब के पास से (फ़ा189) और अल्लाह अपनी रहमत से ख़ास करता है जिसे चाहे और अल्लाह बड़े फ़ज़्ल वाला है।(105) जब कोई आयत हम मन्सूख़ फ़रमायें या भुला दें (फ़ा190) तो उससे बेहतर या उस जैसी ले आयेंगे क्या तुझे ख़बर नहीं कि अल्लाह सब कुछ कर सकता है।(106) क्या तुझे ख़बर नहीं कि अल्लाह ही के लिए है आसमानों और ज़मीन की बादशाही और अल्लाह के सिवा तुम्हारा न कोई हिमायती न मददगार।(107) क्या यह चाहते हो कि अपने रसूल से वैसा सवाल करो जो मूसा से पहले हुआ था (फ़ा191) और जो ईमान के बदले कुफ़्र ले (फ़ा192) वह ठीक रास्ता बहक गया।(108) बहुत किताबियों ने चाहा (फ़ा193) काश तुम्हें ईमान के बाद कुफ़्र की तरफ़ फेर दें अपने दिलों की जलन से (फ़ा194) बाद इसके कि हक़ उन पर ख़ूब

(फ़ा185) **शाने नुज़ूलः** जब हुज़ूरे अक़दस सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम सहाबा को कुछ तालीम व तल्क़ीन फ़रमाते तो वह कभी कभी दर्मियान में अ़र्ज़ किया करते राअ़िना या रसूलल्लाहि इस के यह माना थे कि या रसूलल्लाह हमारे हाल की रिआ़यत फ़रमाईये यानी कलामे अक़दस को अच्छी तरह समझ लेने का मौक़ा दीजिये यहूद की लुग़त में यह कलिमा सूए अदब के माना रखता था उन्होंने इस नीयत से कहना शुरू किया हज़रत सअ़्द बिन मआ़ज़ यहूद की इस्तिलाह से वाक़िफ़ थे आपने एक रोज़ यह कलिमा उनकी ज़बान से सुनकर फ़रमाया ऐ दुश्मनाने ख़ुदा तुम पर अल्लाह की लानत अगर मैंने अब किसी की ज़बान से यह कलिमा सुना उसकी गर्दन मार दूंगा यहूद ने कहा हम पर तो आप बरहम होते हैं मुसलमान भी तो यही कहते हैं इस पर आप रन्जीदा होकर ख़िदमते अक़दस में हाज़िर हुए ही थे कि यह आयत नाज़िल हुई जिसमें राअ़िना कहने की मुमानअ़त फ़रमा दी गई और इस माना का दूसरा लफ़्ज़ *उन्ज़ुरना* कहने का हुक्म हुआ **मसलाः** इस से मालूम हुआ कि अम्बिया की ताज़ीम व तौक़ीर और उनकी जनाब में कलिमाते अदब अ़र्ज़ करना फ़र्ज़ है और जिस कलिमा में तर्के अदब का शाइबा भी हो वह ज़बान पर लाना ममनूअ़ (फ़ा186) और हमा तन गोश हो जाओ ताकि यह अ़र्ज़ करने की ज़रूरत ही न रहे कि हुज़ूर तवज्जोह फ़रमायें क्योंकि दरबारे नबुव्वत का यही अदब है। **मसलाः** दरबारे अम्बिया में आदमी को अदब के आला मरातिब का लिहाज़ लाज़िम है। (फ़ा187) **मसलाः** *लिल्–काफ़िरी–न* में इशारा है कि अम्बिया अ़लैहिमुस्सलाम की जनाब में बे अदबी कुफ़्र है (फ़ा188) **शाने नु.ज़ूलः** यहूद की एक जमाअ़त मुसलमानों से दोस्ती व ख़ैर ख़्वाही का इज़हार करती थी उनकी (बक़िया सफ़हा 40 पर)

لَهُمُ الْحَقُّ ۚ فَاعْفُوْا وَ اصْفَحُوْا حَتّٰى يَاْتِيَ اللّٰهُ بِاَمْرِهٖ ۗ اِنَّ اللّٰهَ عَلٰى كُلِّ شَیْءٍ قَدِيْرٌ ﴿۱۰۹﴾ وَاَقِيْمُوا الصَّلٰوةَ وَاٰتُوا الزَّكٰوةَ ۗ وَمَا تُقَدِّمُوْا لِاَنْفُسِكُمْ مِّنْ خَيْرٍ تَجِدُوْهُ عِنْدَ اللّٰهِ ۗ اِنَّ اللّٰهَ بِمَا تَعْمَلُوْنَ بَصِيْرٌ ﴿۱۱۰﴾ وَقَالُوْا لَنْ يَّدْخُلَ الْجَنَّةَ اِلَّا مَنْ كَانَ هُوْدًا اَوْ نَصٰرٰى ۗ تِلْكَ اَمَانِيُّهُمْ ۗ قُلْ هَاتُوْا بُرْهَانَكُمْ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿۱۱۱﴾ بَلٰى ۚ مَنْ اَسْلَمَ وَجْهَهٗ لِلّٰهِ وَهُوَ مُحْسِنٌ فَلَهٗۤ اَجْرُهٗ عِنْدَ رَبِّهٖ ۪ وَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ ﴿۱۱۲﴾ وَقَالَتِ الْيَهُوْدُ لَيْسَتِ النَّصٰرٰى عَلٰى شَیْءٍ ۪ وَّقَالَتِ النَّصٰرٰى لَيْسَتِ الْيَهُوْدُ عَلٰى شَیْءٍ ۙ وَّهُمْ يَتْلُوْنَ الْكِتٰبَ ۗ كَذٰلِكَ قَالَ الَّذِيْنَ لَا يَعْلَمُوْنَ مِثْلَ قَوْلِهِمْ ۚ فَاللّٰهُ يَحْكُمُ بَيْنَهُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ فِيْمَا كَانُوْا فِيْهِ يَخْتَلِفُوْنَ ﴿۱۱۳﴾ وَمَنْ اَظْلَمُ مِمَّنْ مَّنَعَ مَسٰجِدَ اللّٰهِ اَنْ يُّذْكَرَ فِيْهَا

लहुमुल्–ह़क़्क़ु फ़अ़्फ़ू. वस्फ़हू ह़त्ता यअ्ति–यल्लाहु बि–अम्रिही इन्नल्ला–ह अ़ला कुल्लि शैइन् क़दीर(109)व अक़ीमुस्सला–त व आतुज़्ज़का–त व मा तुक़द्दिमू लि–अन्फुसिकुम् मिन् ख़ैरिन् तजिदूहु अि़न्दल्लाहि इन्नल्ला–ह बिमा तअ़्–मलू–न बसीर(110)व क़ालू लंय्यद्ख़ुलल्जन्न–त इल्ला मन् का–न हूदन् औ नसारा तिल्–क अमानिय्युहुम् क़ुल् हातू बुरहा–नकुम् इन् कुन्तुम् सादिक़ीन(111)बला मन् अस्–ल–म वज्–हहू लिल्लाहि व हु–व मुह़सिनुन् फ़–लहू अज्रुहू अि़न्–द रब्बिही व ला ख़ौफ़ुन् अ़लैहिम् व ला हुम् यह़्ज़नून(112)व क़ा–लतिल्यहूदु लै– सतिन्नसारा अ़ला शैइंव् व क़ा–लतिन्–नसारा लै–सतिल्–यहूदु अ़ला शैइंव्–व हुम् यत्लू–नल्किताब कज़ालि–क क़ा–लल्लज़ी–न ला यअ़्–लमू–न मिस्–ल क़ौलिहिम् फ़ल्लाहु यह़्कुमु बै–नहुम् यौमल्क़िया–मति फ़ीमा कानू फ़ीहि यख़्तलिफ़ून(113)व मन् अज़्लमु मिम्मम्–म–न–अ़ मसाजिदल्लाहि अंय्युज़्–क–र फ़ी–हस्मुहू

ज़ाहिर हो चुका है तो तुम छोड़ो और दरगुज़र करो यहां तक कि अल्लाह अपना हुक्म लाये बेशक अल्लाह हर चीज़ पर क़ादिर है।(109) और नमाज़ क़ाइम रखो और ज़कात दो (फ़ा195) और अपनी जानों के लिए जो भलाई आगे भेजोगे उसे अल्लाह के यहां पाओगे बेशक अल्लाह तुम्हारे काम देख रहा है।(110) और अहले किताब बोले हरगिज़ जन्नत में न जाएगा मगर वह जो यहूदी या नसरानी हो(फ़ा196) यह उनकी ख़्याल बन्दियां हैं तुम फ़रमाओ लाओ अपनी दलील(फ़ा197)अगर सच्चे हो।(111) हां क्यों नहीं जिसने अपना मुंह झुकाया अल्लाह के लिए और वह नेकोकार है(फ़ा198) तो उसका नेग उसके रब के पास है और उन्हें न कुछ अन्देशा हो और न कुछ ग़म।(112)(फ़ा199) (रुकूअ़ 13) और यहूदी बोले नसरानी कुछ नहीं और नसरानी बोले यहूदी कुछ नहीं (फ़ा200) हालांकि वह किताब पढ़ते हैं(फ़ा201) इसी तरह जाहिलों ने उनकी सी बात कही (फ़ा202) तो अल्लाह क़ियामत के दिन इनमें फ़ैसला कर देगा जिस बात में झगड़ रहे हैं।(113) और उससे बढ़ कर ज़ालिम कौन (फ़ा203) जो अल्लाह की मस्जिदों को रोके उनमें नामे ख़ुदा

(फ़ा195) मोमिनीन को यहूद से दर गुज़र का हुक्म देने के बाद उन्हें अपने इस्लाहे नफ़्स की तरफ़ मुतवज्जेह फ़रमाता है। (फ़ा196) यानी यहूद कहते हैं कि जन्नत में सिर्फ़ यहूदी दाख़िल होंगे और नसरानी कहते हैं कि फ़क़त नसरानी और यह मुसलमानों को दीन से मुनहरिफ़ करने के लिए कहते हैं जैसे नस्ख़ वग़ैरह के लचर शुबहात उन्होंने इस उम्मीद पर पेश किये थे कि मुसलमानों को अपने दीन में कुछ तरद्दुद हो जाये इसी तरह उनको जन्नत से मायूस करके इस्लाम से फेरने की कोशिश करते हैं चुनांचे आख़िरे पारा में उनका यह मक़ूला मज़कूर है *व क़ालू कूनू हूदन् औ नसारा तह्–तदू* अल्लाह तआ़ला उनके इस ख़्याले बातिल का रद फ़रमाता है (फ़ा197) मसलाः इस आयत से मालूम हुआ कि नफ़ी के मुद्दई को भी दलील लाना ज़रूर है बग़ैर इसके दावा बातिल व ना मस्मूअ़ होगा। (फ़ा198) ख़्वाह वह किसी ज़माना किसी नस्ल किसी क़ौम का हो (फ़ा199) इस में इशारा है कि यहूद व नसारा का यह दावा कि जन्नत के फ़क़त वही मालिक हैं बिल्कुल ग़लत है क्योंकि दुख़ूले जन्नत मुरत्तब है अ़क़ीदए सहीहा व अ़मले सालेह पर और यह उन्हें मुयस्सर नहीं (फ़ा200) शाने नुज़ूलः नजरान के नसारा का वफ़्द सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की ख़िदमत में आया तो उलमाए यहूद आये और दोनो में मुनाज़रा शुरू हो गया आवाज़ें बुलन्द हुईं शोर मचा यहूद ने कहा कि नसारा का दीन कुछ नहीं और हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम और इन्जील शरीफ़ का इंकार किया इसी तरह नसारा ने यहूद से कहा कि तुम्हारा दीन कुछ नहीं और तौरेत शरीफ़ व हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम का इंकार किया इस बाब में यह आयत नाज़िल हुई (फ़ा201) यानी बावजूद इल्म के उन्होंने ऐसी जाहिलाना गुफ़्तगू की हालांकि **(बक़िया सफ़हा 41 पर)**

اسۡمُهٗ وَسَعٰى فِىۡ خَرَابِهَا ؕ اُولٰٓئِكَ مَا كَانَ لَهُمۡ اَنۡ يَّدۡخُلُوۡهَآ اِلَّا خَآئِفِيۡنَ ؕ لَهُمۡ فِى الدُّنۡيَا خِزۡىٌ وَّلَهُمۡ فِى الۡاٰخِرَةِ عَذَابٌ عَظِيۡمٌ ﴿۱۱۴﴾
وَلِلّٰهِ الۡمَشۡرِقُ وَالۡمَغۡرِبُ ۚ فَاَيۡنَمَا تُوَلُّوۡا فَثَمَّ وَجۡهُ اللّٰهِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ وَاسِعٌ عَلِيۡمٌ ﴿۱۱۵﴾ وَقَالُوا اتَّخَذَ اللّٰهُ وَلَدًا ۙ سُبۡحٰنَهٗ ؕ بَلۡ لَّهٗ مَا
فِى السَّمٰوٰتِ وَالۡاَرۡضِ ؕ كُلٌّ لَّهٗ قٰنِتُوۡنَ ﴿۱۱۶﴾ بَدِيۡعُ السَّمٰوٰتِ وَالۡاَرۡضِ ؕ وَاِذَا قَضٰٓى اَمۡرًا فَاِنَّمَا يَقُوۡلُ لَهٗ كُنۡ فَيَكُوۡنُ ﴿۱۱۷﴾ وَقَالَ
الَّذِيۡنَ لَا يَعۡلَمُوۡنَ لَوۡلَا يُكَلِّمُنَا اللّٰهُ اَوۡ تَاۡتِيۡنَآ اٰيَةٌ ؕ كَذٰلِكَ قَالَ الَّذِيۡنَ مِنۡ قَبۡلِهِمۡ مِّثۡلَ قَوۡلِهِمۡ ؕ تَشَابَهَتۡ قُلُوۡبُهُمۡ ؕ قَدۡ بَيَّنَّا الۡاٰيٰتِ
لِقَوۡمٍ يُّوۡقِنُوۡنَ ﴿۱۱۸﴾ اِنَّآ اَرۡسَلۡنٰكَ بِالۡحَقِّ بَشِيۡرًا وَّنَذِيۡرًا ۙ وَّلَا تُسۡـَٔلُ عَنۡ اَصۡحٰبِ الۡجَحِيۡمِ ﴿۱۱۹﴾ وَلَنۡ تَرۡضٰى عَنۡكَ الۡيَهُوۡدُ وَلَا النَّصٰرٰى

व सआ फ़ी ख़राबिहा उलाइ–क मा का–न लहुम् अंय्यद ख़ुलूहा इल्ला ख़ाइफ़ीन लहुम् फ़िद्दुन्या ख़िज़्युंव् व लहुम् फ़िल्आख़ि–रति अज़ाबुन् अज़ीम(114)व लिल्लाहिल् मश्रिकु वल्मग्रिबु फ़–ऐ–नमा तुवल्लू फ़–सम्–म वज्हुल्लाहि इन्नल्ला–ह वासिउन् अलीम(115)व क़ालुत्–त–ख़–ज़ल्लाहु व–लदन् सुब्हा–नहू बल्लहू मा फ़िस्–समावाति वल्अर्ज़ि कुल्लुल्लहू क़ानितून (116)बदीउस्समा–वाति वल्अर्ज़ि व इज़ा क़ज़ा अम्रन् फ़इन्नमा यक़ूलु लहू कुन् फ़–यकून (117)व क़ालल्लज़ी–न ला यअ्–लमू–न लौ ला युकल्लिमुनल्लाहु औ तअ्तीना आ–यतुन् कज़ालि–क क़ालल्लज़ी–न मिन् क़ब्लिहिम् मिस्–ल क़ौलिहिम् तशा–ब–हत् क़ुलूबुहुम् क़द बय्यन्नल्–आयाति लिक़ौमिंय्यूक़िनून(118)इन्ना अर्सल्ना–क बिल्हक़्क़ि बशीरंव्–व नज़ीरंव्–व ला तुस्अलु अन् अस्हाबिल्जहीम(119)व लन् तर्ज़ा अन्कल् यहूदु व लन्नसारा

लिए जाने से (फ़ा204) और उनकी वीरानी में कोशिश करे (फ़ा205) उनको न पहुंचता था कि मस्जिदों में जायें मगर डरते हुए उनके लिए दुनिया में रुसवाई है (फ़ा206) और उनके लिए आख़िरत में बड़ा अज़ाब।(114)(फ़ा207) और पूरब पच्छिम सब अल्लाह ही का है तो तुम जिधर मुंह करो उधर वजहुल्लाह (ख़ुदा की रहमत तुम्हारी तरफ़ मुतवज्जह) है। बेशक अल्लाह वुसअत वाला इल्म वाला है।(115) और बोले ख़ुदा ने अपने लिए औलाद रखी पाकी है उसे (फ़ा208) बल्कि उसी की मिल्क है जो कुछ आसमानों और ज़मीन में है (फ़ा209) सब उसके हुज़ूर गर्दन डाले हैं।(116) नया पैदा करने वाला आसमानों और ज़मीन का (फ़ा210) और जब किसी बात का हुक्म फ़रमाए तो उससे यही फ़रमाता है कि हो जा वह फ़ौरन हो जाती है।(117) (फ़ा211) और जाहिल बोले (फ़ा212) अल्लाह हम से क्यों नहीं कलाम करता (फ़ा213) या हमें कोई निशानी मिले (फ़ा214) इनसे अगलों ने भी ऐसी ही कही इनकी सी बात इनके उन के दिल एक से हैं (फ़ा215) बेशक हम ने निशानियां खोल दीं यक़ीन वालों के लिए।(118) (फ़ा216) बेशक हमने तुम्हें हक़ के साथ भेजा ख़ुशख़बरी देता और डर सुनाता और तुम से दोज़ख़ वालों का सवाल न होगा।(119) (फ़ा217) और हरगिज़ तुमसे यहूद और नसारा

(फ़ा206) दुनिया में उन्हें यह रुसवाई पहुंची कि क़त्ल किये गए गिरिफ़्तार हुए जिला वतन किये गये ख़िलाफ़ते फ़ारूक़ी व उस्मानी में मुल्के शाम उनके क़ब्ज़ा से निकल गया बैतुल मक़दिस से ज़िल्लत के साथ निकाले गए (फ़ा207) **शाने नुज़ूलः** सहाबए किराम रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ एक अंधेरी रात में सफ़र में थे जेहते क़िबला मालूम न हो सकी हर एक शख़्स ने जिस तरफ़ उसका दिल जमा नमाज़ पढ़ी सुबह को सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में हाल अर्ज़ किया तो यह अयात नाज़िल हुई **मसलाः** इस से मालूम हुआ कि जेहतें क़िबला मालूम न हो सके तो जिस तरफ़ दिल जमे कि यह क़िबला है उसी तरफ़ मुंह करके नमाज़ पढ़े इस आयत के शाने नुज़ूल में दूसरा क़ौल यह है कि यह उस मुसाफ़िर के हक़ में नाज़िल हुई जो सवारी पर नफ़्ल अदा करे उसकी सवारी जिस तरफ़ मुतवज्जेह हो जाये उस तरफ़ उसकी नमाज़ दुरुस्त है बुख़ारी व मुस्लिम की अहादीस से यह साबित है। एक क़ौल यह है कि जब तहवीले क़िबला का हुक्म दिया गया तो यहूद ने मुसलमानों पर तअ्ना ज़नी की उनके रद में यह आयत नाज़िल हुई बताया गया कि मशरिक़ मग़रिब सब अल्लाह का है जिस तरफ़ चाहे क़िबला मुअय्यन फ़रमाए किसी को एतेराज़ का क्या हक़ (ख़ाज़िन) एक क़ौल यह है कि यह आयत दुआ के हक़ में वारिद हुई हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से दरियाफ़्त किया गया कि किस तरफ़ मुंह करके दुआ की जाये उसके जवाब में यह आयत नाज़िल हुई एक क़ौल यह है कि यह आयत हक़ से गुरेज़ व फ़रार में है और *ऐ–नमा तु–वल्लू* का ख़िताब उन लोगों को है जो ज़िक्रे इलाही से रोकते और मस्जिदों की वीरानी में सई करते हैं वह दुनिया की रुसवाई **(बक़िया सफ़हा 41 पर)**

حَتّٰى تَتَّبِعَ مِلَّتَهُمْ ؕ قُلْ اِنَّ هُدَى اللّٰهِ هُوَ الْهُدٰى ؕ وَلَئِنِ اتَّبَعْتَ اَهْوَآءَهُمْ بَعْدَ الَّذِىْ جَآءَكَ مِنَ الْعِلْمِ ۙ مَا لَكَ مِنَ اللّٰهِ مِنْ
وَّلِىٍّ وَّلَا نَصِيْرٍ ﴿۱۲۰﴾ اَلَّذِيْنَ اٰتَيْنٰهُمُ الْكِتٰبَ يَتْلُوْنَهٗ حَقَّ تِلَاوَتِهٖ ؕ اُولٰٓئِكَ يُؤْمِنُوْنَ بِهٖ ؕ وَمَنْ يَّكْفُرْ بِهٖ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْخٰسِرُوْنَ ﴿۱۲۱﴾
يٰبَنِىْٓ اِسْرَآءِيْلَ اذْكُرُوْا نِعْمَتِىَ الَّتِىْٓ اَنْعَمْتُ عَلَيْكُمْ وَاَنِّىْ فَضَّلْتُكُمْ عَلَى الْعٰلَمِيْنَ ﴿۱۲۲﴾ وَاتَّقُوْا يَوْمًا لَّا تَجْزِىْ نَفْسٌ عَنْ نَّفْسٍ شَيْئًا وَّلَا
يُقْبَلُ مِنْهَا عَدْلٌ وَّلَا تَنْفَعُهَا شَفَاعَةٌ وَّلَا هُمْ يُنْصَرُوْنَ ﴿۱۲۳﴾ وَاِذِ ابْتَلٰٓى اِبْرٰهٖمَ رَبُّهٗ بِكَلِمٰتٍ فَاَتَمَّهُنَّ ؕ قَالَ اِنِّىْ جَاعِلُكَ لِلنَّاسِ
اِمَامًا ؕ قَالَ وَمِنْ ذُرِّيَّتِىْ ؕ قَالَ لَا يَنَالُ عَهْدِى الظّٰلِمِيْنَ ﴿۱۲۴﴾ وَاِذْ جَعَلْنَا الْبَيْتَ مَثَابَةً لِّلنَّاسِ وَاَمْنًا ؕ وَاتَّخِذُوْا مِنْ مَّقَامِ اِبْرٰهٖمَ مُصَلًّى ؕ

हत्ता तत्तबि–अ मिल्ल–तहुम् कुल् इन्–न हुदल्लाहि हुवल्हुदा व ल–इनित्तबअ्–त अह्वा–अहुम् बअ्–दल्लज़ी जा–अ–क मिन–ल्अिल्मि मा ल–क मिनल्लाहि मिंव्वलिय्यिंव्–व ला नसीर(120) अल्लज़ी–न आतैना–हुमुल्किता–ब यत्लू–नहू हक़्–क़ तिला–वतिही उलाइ–क युअ्मिनू–न बिही व मंय्यक्फुर् बिही फ़उलाइ–क हुमुल्ख़ासिरून(121)या बनी इस्राइ–लज़्कुरू निअ्–मति–यल्लती अन्–अम्तु अलैकुम् व अन्नी फ़ज़्ज़ल्तुकुम् अ–लल्–आ–लमीन(122)वत्तक़ू यौमल्ला तज्ज़ी नफ़्सुन् अन् नफ़्सिन् शैअंव्–व ला युक़्बलु मिन्हा अद्लुंव्–व ला तन्फ़अुहा शफ़ा–अतुंव्–व ला हुम् युन्सरून(123)व इज़िब्तला इब्राही–म रब्बुहू बि–कलिमातिन् फ़–अ–तम्महुन्–न क़ा–ल इन्नी जाअिलु–क लिन्नासि इमामन् क़ा–ल व मिन् ज़ुर्रिय्यती क़ा–ल ला यनालु अह्दिज़्ज़ालिमीन(124)व इज़् जअल्नल्बै–त मसा–ब–तल् लिन्नासि व अम्नन् वत्तख़िज़ू मिम्–मक़ामि इब्राही–म मुसल्लन्

राज़ी न होंगे जब तक तुम उनके दीन की पैरवी न करो (फ़ा218) तुम फ़रमा दो कि अल्लाह ही की हिदायत, हिदायत है (फ़ा219) और (ऐ सुनने वाले कसे बाशद) अगर तू उनकी ख़्वाहिशों का पैरौ हुआ बाद इसके कि तुझे इल्म आ चुका तो अल्लाह से तेरा कोई बचाने वाला न होगा और न मददगार।(120) (फ़ा220) जिन्हें हम ने किताब दी है वह जैसी चाहिये उसकी तिलावत करते हैं वही उस पर ईमान रखते हैं और जो उसके मुन्किर हों तो वही ज़ियांकार हैं।(121)(फ़ा221)(रुकूअ् 14) ऐ औलादे याकूब याद करो मेरा एहसान जो मैंने तुम पर किया और वह जो मैंने उस ज़माने के सब लोगों पर तुम्हें बड़ाई दी।(122) और डरो उस दिन से कि कोई जान दूसरे का बदला न होगी और न उसको कुछ लेकर छोड़ें और न काफ़िर को कोई सिफ़ारिश नफ़ा दे(फ़ा222) और न उनकी मदद हो।(123) और जब(फ़ा223) इब्राहीम को उसके रब ने कुछ बातों से आज़माया (फ़ा224) तो उसने वह पूरी कर दिखाईं(फ़ा225) फ़रमाया मैं तुम्हें लोगों का पेशवा बनाने वाला हूं, अ़र्ज़ की और मेरी औलाद से फ़रमाया मेरा अ़हद ज़ालिमों को नहीं पहुंचता।(124) (फ़ा226) और याद करो जब हम ने इस घर को(फ़ा227) लोगों के लिए मरजअ् और अमान बनाया(फ़ा228) और इब्राहीम के खड़े होने की जगह को नमाज़ का मक़ाम बनाओ (फ़ा229)

(फ़ा218) और यह नामुमकिन क्यों कि वह बातिल पर हैं (फ़ा219) वही क़ाबिले इत्तेबाअ् है और उसके सिवा हर एक राहे बातिल व ज़लालत (फ़ा220) यह ख़िताब उम्मते मुहम्मदिया को है कि जब तुम ने जान लिया कि सय्यदे अम्बिया सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम तुम्हारे पास हक़ व हिदायत लाये तो तुम हरगिज़ कुफ़्फ़ार की ख़्वाहिशों का इत्तेबाअ् न करना अगर ऐसा किया तो तुम्हें कोई अ़ज़ाबे इलाही से बचाने वाला नहीं (ख़ाज़िन)। (फ़ा221) शाने नुज़ूलः हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा ने फ़रमाया यह आयत अहले सफ़ीना के बाब में नाज़िल हुई जो जाफ़र बिन अबी तालिब के साथ हाज़िरे बारगाहे रिसालत हुए थे उनकी तादाद चालीस थी बत्तीस अहले हबशा और आठ शामी राहिब उन में बुहैरा राहिब भी थे माना यह हैं कि दर हक़ीक़त तौरेत शरीफ़ पर ईमान लाने वाले वही हैं जो उसकी तिलावत का हक़ अदा करते हैं और बग़ैर तहरीफ़ व तब्दील पढ़ते हैं और उसके माना समझते और मानते हैं और उसमें हुज़ूर सय्यदे कायनात मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की नअ्त व सिफ़त देख कर हुज़ूर पर ईमान लाते हैं और जो हुज़ूर के मुनकिर होते हैं वह तौरेत शरीफ़ पर ईमान नहीं रखते (फ़ा222) इसमें यहूद का रद है जो कहते थे हमारे बाप दादा बुज़ुर्ग गुज़रे हैं हमें शफ़ाअ़त करके छुड़ा लेंगे उन्हें मायूस किया जाता है कि शफ़ाअ़त काफ़िर के लिए नहीं (फ़ा223) हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम की विलादत सरज़मीने अहवाज़ में ब-मक़ामे सूस हुई फिर आपके वालिद आपको बाबिल मुल्के नमरूद में ले आये यहूद व नसारा व मुशरिकीने अ़रब सब आप के फ़ज़्ल व शरफ़ के मोअ़्तरिफ़ और आपकी नस्ल में होने पर फ़ख़्र करते हैं अल्लाह तआ़ला ने आपके वह हालात बयान फ़रमाये **(बकिया सफ़हा 42 पर)**

وَعَهِدْنَآ إِلَىٰٓ إِبْرَٰهِـۧمَ وَإِسْمَـٰعِيلَ أَن طَهِّرَا بَيْتِىَ لِلطَّآئِفِينَ وَٱلْعَـٰكِفِينَ وَٱلرُّكَّعِ ٱلسُّجُودِ ﴿١٢٥﴾ وَإِذْ قَالَ إِبْرَٰهِـۧمُ رَبِّ ٱجْعَلْ هَـٰذَا بَلَدًا ءَامِنًا وَٱرْزُقْ أَهْلَهُۥ مِنَ ٱلثَّمَرَٰتِ مَنْ ءَامَنَ مِنْهُم بِٱللَّهِ وَٱلْيَوْمِ ٱلْـَٔاخِرِ ۖ قَالَ وَمَن كَفَرَ فَأُمَتِّعُهُۥ قَلِيلًا ثُمَّ أَضْطَرُّهُۥٓ إِلَىٰ عَذَابِ ٱلنَّارِ ۖ وَبِئْسَ ٱلْمَصِيرُ ﴿١٢٦﴾ وَإِذْ يَرْفَعُ إِبْرَٰهِـۧمُ ٱلْقَوَاعِدَ مِنَ ٱلْبَيْتِ وَإِسْمَـٰعِيلُ رَبَّنَا تَقَبَّلْ مِنَّآ ۖ إِنَّكَ أَنتَ ٱلسَّمِيعُ ٱلْعَلِيمُ ﴿١٢٧﴾ رَبَّنَا وَٱجْعَلْنَا مُسْلِمَيْنِ لَكَ وَمِن ذُرِّيَّتِنَآ أُمَّةً مُّسْلِمَةً لَّكَ وَأَرِنَا مَنَاسِكَنَا وَتُبْ عَلَيْنَآ ۖ إِنَّكَ أَنتَ ٱلتَّوَّابُ ٱلرَّحِيمُ ﴿١٢٨﴾ رَبَّنَا وَٱبْعَثْ فِيهِمْ رَسُولًا مِّنْهُمْ يَتْلُوا۟ عَلَيْهِمْ ءَايَـٰتِكَ وَيُعَلِّمُهُمُ ٱلْكِتَـٰبَ وَٱلْحِكْمَةَ وَيُزَكِّيهِمْ ۚ إِنَّكَ أَنتَ ٱلْعَزِيزُ ٱلْحَكِيمُ ﴿١٢٩﴾ وَمَن يَرْغَبُ عَن مِّلَّةِ إِبْرَٰهِـۧمَ إِلَّا

व अ़हिद्ना इला इब्राही–म व इस्माअ़ी–ल अन् तहिह–र बैति–य लित्ताइफ़ी–न वल्आकिफ़ी–न वर्रुक्कअ़िस्सुजूद(125)व इज़् क़ा–ल इब्राहीमु रब्बिज्अ़ल् हाज़ा ब–ल–दन् आमि–नंव्वर्जुक़् अह–लहू मिनस्स–मराति मन् आ–म–न मिन्हुम् बिल्लाहि वल्यौमिल् आख़िरि क़ा–ल व मन् क–फ़–र फ़उ–मत्तिअुहू क़लीलन् सुम्–म अज़्तर्रुहू इला अ़ज़ाबिन्नारि व बिअ्सल्मसीर(126)व इज़् यर्फ़अु इब्राहीमुल्–क़वाअ़ि–द मिनल्बैति व इस्माअ़ीलु रब्बना त–क़ब्बल् मिन्ना इन्न–क अन्तस्समीअुल् अ़लीम(127)रब्बना वज्अ़ल्ना मुस्लिमैनि ल–क व मिन् ज़ुर्रिय्यतिना उम्मतम् मुस्लि–म–तल्–ल–क व अरिना मनासि–कना व तुब् अ़लैना इन्न–क अन्तत्तव्वाबुर्रहीम(128)रब्बना वब्अ़स् फ़ीहिम् रसूलम् मिन्हुम् यत्लू अ़लैहिम् आयाति–क व युअ़ल्लिमुहुमुल्किता–ब वल्हिक्म–त व युज़क्कीहिम् इन्न–क अन्तल्–अ़ज़ीज़ुल्–हकीम(129)व मंय्यर्–ग़बु अ़म्–मिल्लति इब्राही–म इल्ला

और हमने ताकीद फ़रमाई इब्राहीम व इस्माईल को कि मेरा घर ख़ूब सुथरा करो तवाफ़ वालों और एतिकाफ़ वालों और रुकूअ़ व सुजूद वालों के लिए।(125) और जब अ़र्ज़ की इब्राहीम ने कि ऐ रब मेरे इस शहर को अमान वाला कर दे और इसके रहने वालों को तरह तरह के फलों से रोज़ी दे जो उनमें से अल्लाह और पिछले दिन पर ईमान लायें (फ़ा230) फ़रमाया और जो काफ़िर हुआ थोड़ा बरतने को उसे भी दूंगा फिर उसे अ़ज़ाबे दोज़ख़ की तरफ़ मजबूर करूंगा और वह बहुत बुरी जगह है पलटने की।(126) और जब उठाता था इब्राहीम उस घर की नीवें और इस्माईल यह कहते हुए कि ऐ रब हमारे हम से क़बूल फ़रमा (फ़ा231) बेशक तू ही है सुनता जानता।(127) ऐ रब हमारे और कर हमें तेरे हुज़ूर गर्दन रखने वाले (फ़ा232) और हमारी औलाद में से एक उम्मत तेरी फ़रमांबरदार और हमें हमारी इबादत के क़ाइदे बता और हम पर अपनी रहमत के साथ रुजूअ़ फ़रमा (फ़ा233) बेशक तू ही है बहुत तौबा कबूल करने वाला मेहरबान।(128) ऐ रब हमारे और भेज उनमें (फ़ा234) एक रसूल उन्हीं में से कि उन पर तेरी आयतें तिलावत फ़रमाए और उन्हें तेरी किताब (फ़ा235) और पुख़्ता इल्म सिखाये (फ़ा236) और उन्हें ख़ूब सुथरा फ़रमा दे (फ़ा237) बेशक तू ही है ग़ालिब हिकमत वाला।(129) (रुकूअ़ 15) और इब्राहीम के दीन से कौन मुंह फेरे (फ़ा238) सिवा उसके

(फ़ा230) चूंकि इमामत के बाब में *ला यनालु अ़ह्दिज़्–ज़ालिमीन* इरशाद हो चुका था इस लिए हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम ने इस दुआ़ में मोमिनीन को ख़ास फ़रमाया और यही शाने अदब थी अल्लाह तआ़ला ने करम किया दुआ़ क़बूल फ़रमाई और इरशाद फ़रमाया कि रिज़्क़ सब को दिया जाएगा मोमिन को भी काफ़िर को भी लेकिन काफ़िर का रिज़्क़ थोड़ा है यानी सिर्फ़ दुनियवी ज़िन्दगी में वह बहरामन्द हो सकता है (फ़ा231) पहली मर्तबा कअ़बए मुअ़ज़्ज़मा की बुनियाद हज़रत आदम अ़लैहिस्सलाम ने रखी और बाद तूफ़ाने नूह फिर हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम ने उसी बुनियाद पर तामीर फ़रमाई यह तामीरे ख़ास आपके दस्ते मुबारक से हुई इसके लिए पत्थर उठा कर लाने की ख़िदमत व सआ़दत हज़रत इस्माईल अ़लैहिस्सलाम को मुयस्सर हुई दोनों हज़रात ने उस वक़्त यह दुआ़ की कि या रब हमारी यह ताअ़त व ख़िदमत क़बूल फ़रमा (फ़ा232) वह हज़रात अल्लाह तआ़ला के मुतीअ़ व मुख़लिस बन्दे थे फिर भी यह दुआ़ इस लिए है कि ताअ़त व इख़्लास में और ज़्यादा कमाल की तलब रखते हैं ज़ौक़े ताअ़त सैर नहीं होता सुबहानल्लाह 'फ़िक्रे हर कस बक़द्रे हिम्मते ऊस्त' (फ़ा233) हज़रत इब्राहीम व इस्माईल अ़लैहिमस्सलाम मअ़सूम हैं आपकी तरफ़ से तो यह तवाज़ोअ़ है और अल्लाह वालों के लिए तालीम है मसलाः कि यह मक़ाम क़बूले दुआ़ का है और यहां दुआ़ व तौबा सुन्नते इब्राहीमी है (फ़ा234) यानी हज़रत इब्राहीम व हज़रत इस्माईल की ज़ुर्रियत में यह दुआ़ सय्यदे अम्बिया सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के लिए थी यानी कअ़बा मुअ़ज़्ज़मा की तामीर (बक़िया सफ़हा 42 पर)

مَنْ سَفِهَ نَفْسَهٗ ؕ وَ لَقَدِ اصْطَفَیْنٰهُ فِی الدُّنْیَا ۚ وَ اِنَّهٗ فِی الْاٰخِرَةِ لَمِنَ الصّٰلِحِیْنَ ﴿۱۳۰﴾ اِذْ قَالَ لَهٗ رَبُّهٗۤ اَسْلِمْ ۙ قَالَ اَسْلَمْتُ لِرَبِّ الْعٰلَمِیْنَ ﴿۱۳۱﴾
وَ وَصّٰی بِهَاۤ اِبْرٰهٖمُ بَنِیْهِ وَ یَعْقُوْبُ ؕ یٰبَنِیَّ اِنَّ اللّٰهَ اصْطَفٰی لَكُمُ الدِّیْنَ فَلَا تَمُوْتُنَّ اِلَّا وَ اَنْتُمْ مُّسْلِمُوْنَ ﴿۱۳۲﴾ اَمْ كُنْتُمْ شُهَدَآءَ اِذْ حَضَرَ
یَعْقُوْبَ الْمَوْتُ ۙ اِذْ قَالَ لِبَنِیْهِ مَا تَعْبُدُوْنَ مِنْۢ بَعْدِیْ ؕ قَالُوْا نَعْبُدُ اِلٰهَكَ وَ اِلٰهَ اٰبَآىِٕكَ اِبْرٰهٖمَ وَ اِسْمٰعِیْلَ وَ اِسْحٰقَ اِلٰهًا وَّاحِدًا ۚۖ وَّ نَحْنُ لَهٗ مُسْلِمُوْنَ ﴿۱۳۳﴾
تِلْكَ اُمَّةٌ قَدْ خَلَتْ ۚ لَهَا مَا كَسَبَتْ وَ لَكُمْ مَّا كَسَبْتُمْ ۚ وَ لَا تُسْـَٔلُوْنَ عَمَّا كَانُوْا یَعْمَلُوْنَ ﴿۱۳۴﴾ وَ قَالُوْا كُوْنُوْا هُوْدًا اَوْ نَصٰرٰی تَهْتَدُوْا ؕ قُلْ بَلْ
مِلَّةَ اِبْرٰهٖمَ حَنِیْفًا ؕ وَ مَا كَانَ مِنَ الْمُشْرِكِیْنَ ﴿۱۳۵﴾ قُوْلُوْۤا اٰمَنَّا بِاللّٰهِ وَ مَاۤ اُنْزِلَ اِلَیْنَا وَ مَاۤ اُنْزِلَ اِلٰۤی اِبْرٰهٖمَ وَ اِسْمٰعِیْلَ وَ اِسْحٰقَ وَ

मन् सफ़ि–ह नफ़्सहू व ल–क़दिस्–तफ़ैनाहु फ़िद्दुन्या व इन्नहू फ़िल्आख़ि–रति लमि–नस्सालिहीन(130) इज़् क़ा–ल लहू रब्बुहू अस्लिम् क़ा–ल अस्लम्तु लि–रब्बिल् आ–लमीन(131)व वस्सा बिहा इब्राहीमु बनीहि व यअ़कूबु या बनिय्य इन्नल्ला–हस्तफ़ा लकुमुद्दी–न फ़ला तमूतुन्–न इल्ला व अन्तुम् मुस्लिमून(132)अम् कुन्तुम् शु–हदा–अ इज़् ह–ज़–र यअ़कूबल्मौतु इज़् क़ा–ल लि–बनीहि मा तअ़बुदू–न मिम्बअ़्दी क़ालू नअ़बुदु इला–ह–क व इला–ह आबाइ–क इब्राही–म व इस्माओ़–ल व इस्हा–क़ इलाहंव्–वाहिदंव् व नह्नु लहू मुस्लिमून(133)तिल्–क उम्मतुन् क़द् ख़–लत् लहा मा क–स–बत् व लकुम् मा क–सब्तुम् व ला तुस्अलू–न अ़म्मा कानू यअ़् –मलून(134)व क़ालू कूनू हूदन् औ नसारा तह्–तदू क़ुल् बल् मिल्ल–त इब्राही–म हनीफ़न् व मा का–न मिनल्– मुश्रिकीन(135)क़ूलू आमन्ना बिल्लाहि व मा उन्ज़ि–ल इलैना व मा उन्ज़ि –ल इला इब्राही–म व इस्माओ़–ल व इस्हा–क़ व

जो दिल का अहमक़ है और बेशक ज़रूर हमने दुनिया में उसे चुन लिया (फ़ा239) और बेशक वह आख़िरत में हमारे ख़ास क़ुर्ब की क़ाबिलियत वालों में है।(130) (फ़ा240) जब कि उससे उसके रब ने फ़रमाया गर्दन रख अ़र्ज़ की मैंने गर्दन रखी उसके लिए जो रब है सारे जहान का।(131) और उसी दीन की वसीयत की इब्राहीम ने अपने बेटों को और याक़ूब ने कि ऐ मेरे बेटो! बेशक अल्लाह ने यह दीन तुम्हारे लिए चुन लिया तो न मरना मगर मुसलमान।(132) बल्कि तुम में के ख़ुद मौजूद थे (फ़ा241) जब याक़ूब को मौत आई जबकि उसने अपने बेटों से फ़रमाया मेरे बाद किस की पूजा करोगे बोलें हम पूजेंगे उसे जो ख़ुदा है आपका और आपके वालिदों इब्राहीम व इस्माईल (फ़ा242) व इस्हाक़ का एक ख़ुदा और हम उसके हुज़ूर गर्दन रखे हैं।(133) यह (फ़ा243) एक उम्मत है कि गुज़र चुकी (फ़ा244) उनके लिए है जो उन्होंने कमाया और तुम्हारे लिए है जो तुम कमाओ और उनके कामों की तुम से पुरसिश न होगी।(134) और किताबी बोले (फ़ा245) यहूदी या नसरानी हो जाओ राह पाओगे तुम फ़रमाओ बल्कि हम तो इब्राहीम का दीन लेते हैं जो हर बातिल से जुदा थे और मुशरिकों से न थे,।(135) (फ़ा246) यूं कहो कि हम ईमान लाये अल्लाह पर और उस पर जो हमारी तरफ़ उतरा और जो उतारा गया इब्राहीम व इस्माईल व इसहाक़ व

(फ़ा239) रिसालत व ख़ुल्लत के साथ रसूल व ख़लील बनाया (फ़ा240) जिनके लिए बुलन्द दर्जे हैं तो जब हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम करामते दारैन के जामेअ़ हैं तो उनकी तरीक़त व मिल्लत से फिरने वाला ज़रूर नादान व अहमक़ है।(फ़ा241) **शाने नुज़ूलः** यह आयत यहूद के हक़ में नाज़िल हुई,उन्होंने कहा था कि हज़रत याक़ूब अ़लैहिस्सलाम ने अपनी वफ़ात के रोज़ अपनी औलाद को यहूदी रहने की वसीयत की थी अल्लाह तआ़ला ने उनके इस बोहतान के रद में यह आयत नाज़िल फ़रमाई (ख़ाज़िन) माना यह हैं कि ऐ बनी इसराईल तुम्हारे पहले लोग हज़रत याक़ूब अ़लैहिस्सलाम के आख़िर वक़्त उनके पास मौजूद थे जिस वक़्त उन्होंने अपने बेटों को बुला कर उनसे इस्लाम व तौहीद का इक़रार लिया था और यह इक़रार लिया था जो आयत में मज़कूर है (फ़ा242) हज़रत इस्माईल अ़लैहिस्सलाम को हज़रत याक़ूब अ़लैहिस्सलाम के आबा में दाख़िल करना तो इस लिए है कि आप उनके चचा हैं और चचा बमन्ज़िलए बाप के होता है जैसा कि हदीस शरीफ़ में है और आपका नाम हज़रत इस्हाक़ अ़लैहिस्सलाम से पहले ज़िक्र फ़रमाना दो वजह से है एक तो यह कि आप हज़रत इस्हाक़ अ़लैहिस्सलाम से चौदा साल बड़े हैं दूसरे इस लिए कि आप सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के जद हैं (फ़ा243) यानी हज़रत इब्राहीम व याक़ूब अ़लैहिमस्सलाम और उनकी मुसलमान औलाद (फ़ा244) ऐ यहूद तुम उन पर बोहतान **(बकिया सफ़हा 40 पर)**

يَعْقُوبَ وَالْأَسْبَاطِ وَمَآ أُوتِيَ مُوسٰى وَعِيسٰى وَمَآ أُوتِيَ النَّبِيُّوْنَ مِنْ رَّبِّهِمْ ۚ لَا نُفَرِّقُ بَيْنَ أَحَدٍ مِّنْهُمْ ۖ وَنَحْنُ لَهٗ مُسْلِمُوْنَ ۝ فَإِنْ

اٰمَنُوْا بِمِثْلِ مَآ اٰمَنْتُمْ بِهٖ فَقَدِ اهْتَدَوْا ۚ وَإِنْ تَوَلَّوْا فَإِنَّمَا هُمْ فِيْ شِقَاقٍ ۚ فَسَيَكْفِيْكَهُمُ اللّٰهُ ۚ وَهُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ۝ صِبْغَةَ اللّٰهِ ۚ وَمَنْ

أَحْسَنُ مِنَ اللّٰهِ صِبْغَةً ۫ وَّنَحْنُ لَهٗ عٰبِدُوْنَ ۝ قُلْ أَتُحَآجُّوْنَنَا فِي اللّٰهِ وَهُوَ رَبُّنَا وَرَبُّكُمْ ۚ وَلَنَآ أَعْمَالُنَا وَلَكُمْ أَعْمَالُكُمْ ۚ وَنَحْنُ لَهٗ مُخْلِصُوْنَ ۝

أَمْ تَقُوْلُوْنَ إِنَّ إِبْرٰهٖمَ وَإِسْمٰعِيْلَ وَإِسْحٰقَ وَيَعْقُوْبَ وَالْأَسْبَاطَ كَانُوْا هُوْدًا أَوْ نَصٰرٰى ۗ قُلْ ءَأَنْتُمْ أَعْلَمُ أَمِ اللّٰهُ ۗ وَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنْ

كَتَمَ شَهَادَةً عِنْدَهٗ مِنَ اللّٰهِ ۗ وَمَا اللّٰهُ بِغَافِلٍ عَمَّا تَعْمَلُوْنَ ۝ تِلْكَ أُمَّةٌ قَدْ خَلَتْ ۚ لَهَا مَا كَسَبَتْ وَلَكُمْ مَّا كَسَبْتُمْ ۚ وَلَا تُسْـَٔلُوْنَ عَمَّا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ۝

यअ्कू–ब वल् अस्बाति व मा ऊति–य मूसा व ओसा व मा ऊति–यन्नबिय्यू–न मिर्रब्बिहिम् ला नुफ़र्रिकु बै–न अ–ह़दिम् मिन्हुम् व नह़्नु लहू मुस्लिमून(136)फ़इन् आ–मनू बिमिस्लि मा आमन्तुम् बिही फ़–क़दिह्तदौ व इन् तवल्लौ फ़–इन्नमा हुम् फ़ी शिक़ाक़िन् फ़–स–यक्फ़ी–क–हुमुल्लाहु व हुवस्समीअुल् अ़लीम(137)सिब्ग़तल्लाहि व मन् अह़्सनु मिनल्लाहि सिब्ग़तंव्–व नह़्नु लहू आ़बिदून(138)कुल् अतुहाज्जू–नना फ़िल्लाहि व हु–व रब्बुना व रब्बुकुम् व लना अअ्–मालुना व लकुम् अअ्मालुकुम् व नह़्नु लहू मुख़्लिसून(139)अम् तकू़लू–न इन्–न इब्राही–म व इस्माओ़–ल व इस्हा–क़ व यअ्कू–ब वल्अस्बा–त कानू हूदन् औ नसारा कुल् अ–अन्तुम् अअ्लमु अमिल्लाहु व मन् अज्–लमु मिम्मन् क–त–म शहा–द–तन् अ़िन्दहू मिनल्लाहि व मल्लाहु बिग़ाफ़िलिन् अ़म्मा तअ्–मलून(140)तिल्–क उम्मतुन् क़द् ख़–लत् लहा मा क–स–बत् व लकुम् मा क–सब्तुम् व ला तुस्अलू–न अ़म्मा कानू यअ्–मलून(141)

याक़ूब और उनकी औलाद पर और जो अ़ता किये गए मूसा व ईसा और जो अ़ता किये गए बाक़ी अम्बिया अपने रब के पास से हम उनमें किसी पर ईमान में फ़र्क़ नहीं करते और हम अल्लाह के हुज़ूर गरदन रखे हैं।(136) फिर अगर वह भी यूं ही ईमान लाये जैसा तुम लाये जब तो वह हिदायत पा गए और अगर मुंह फेरें तो वह निरी ज़िद में हैं (फ़ा247) तो ऐ महबूब अ़न्क़रीब अल्लाह उनकी तरफ़ से तुम्हें किफ़ायत करेगा और वही है सुनता जानता।(137)(फ़ा248) हमने अल्लाह की रैनी (रंगाई) ली (फ़ा249) और अल्लाह से बेहतर किस की रैनी?(रंगाई) और हम उसी को पूजते हैं।(138)तुम फ़रमाओ क्या अल्लाह के बारे में झगड़ते हो (फ़ा250) हालांकि वह हमारा भी मालिक है और तुम्हारा भी (फ़ा251) और हमारी करनी हमारे साथ और तुम्हारी करनी तुम्हारे साथ और हम निरे उसी के हैं।(139)(फ़ा252) बल्कि तुम तो यूं कहते हो कि इब्राहीम व इस्माईल व इसहाक़ व याक़ूब और उनके बेटे यहूदी या नसरानी थे तुम फ़रमाओ क्या तुम्हें इल्म ज़्यादा है या अल्लाह को (फ़ा253) और उससे बढ़कर ज़ालिम कौन जिसके पास अल्लाह की तरफ़ की गवाही हो और वह उसे छुपाये (फ़ा254) और ख़ुदा तुम्हारे कोतकों से बेख़बर नहीं।(140) वह एक गरोह है कि गुज़र गया उनके लिए उनकी कमाई और तुम्हारे लिए तुम्हारी कमाई और उनके कामों की तुम से पुरसिश न होगी।(141)

(फ़ा247)और उन में तलबे हक़ का शाइबा भी नहीं (फ़ा248) यह अल्लाह की तरफ़ से ज़िम्मा है कि वह अपने हबीब सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को ग़लबा अ़ता फ़रमाएगा और इसमें ग़ैब की ख़बर है कि आईन्दा हासिल होने वाली फ़तह व ज़फ़र का पहले से इज़हार फ़रमाया इसमें नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम का मोअ्जेज़ा है कि अल्लाह तआ़ला का यह ज़िम्मा पूरा हुआ और यह ग़ैबी ख़बर सादिक़ होकर रही कुफ़्फ़ार के हसद व एनाद और उनके मकाइद से हुज़ूर को ज़रर न पहुंचा हुज़ूर की फ़तह हुई बनी क़ुरैज़ा क़त्ल हुए बनी नुज़ैर जिला वतन किये गए यहूद व नसारा पर जिज़्या मुक़र्रर हुआ। (फ़ा249) यानी जिस तरह रंग कपड़े के ज़ाहिर व बातिन में नुफ़ूज़ करता है उस तरह दीने इलाही के एतेक़ादाते हक़्क़ा हमारे रग व पै में समा गए हमारा ज़ाहिर व बातिन क़ल्ब व क़ालिब उसके रंग में रंग गया हमारा रंग ज़ाहिरी रंग नहीं जो कुछ फ़ायदा न दे बल्कि यह नुफ़ूस को पाक करता है ज़ाहिर में उसके आसार औज़ाअ् व अफ़आ़ल से नुमूदार होते हैं नसारा जब अपने दीन में किसी को दाख़िल करते या उनके यहां कोई बच्चा पैदा होता तो पानी में ज़र्द रंग डाल कर उसमें उस शख़्स या बच्चा को ग़ोता देते और कहते कि अब यह सच्चा नसरानी हुआ उसका इस आयत में रद फ़रमाया कि यह ज़ाहिरी रंग किसी काम का नहीं (फ़ा250) शाने नुज़ूलः यहूद ने मुसलमानों से कहा हम पहली किताब वाले हैं हमारा क़िबला पुराना है हमारा **(बक़िया सफ़हा 41 पर)**

(बक़िया सफ़हा 9 का) निअ़मते ईजाद का बयान फ़रमाया, कि तुम्हें और तुम्हारे आबा को मअ़दूम से मौजूद किया और दूसरी आयत में अस्बाबे मईशत व आसाईश व आब व ग़िज़ा का बयान फ़रमा कर ज़ाहिर कर दिया कि वही वलीए नेअ़मत है तो ग़ैर की परस्तिश महज़ बातिल है। (फ़ा36) तौहीदे इलाही के बाद हुज़ूर सय्यदे अम्बिया सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम की नबुव्वत और क़ुरआने करीम के किताबे इलाही व मुअ़जिज़ होने की वह क़ाहिर दलील बयान फ़रमाई जाती है जो तालिबे सादिक़ को इत्मीनान बख़्शे और मुन्किरों को आ़जिज़ कर दे, (फ़ा37) बन्दए ख़ास से हुज़ूर पुरनूर सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम मुराद हैं। (फ़ा38) यानी ऐसी सूरत बनाकर लाओ जो फ़साहत व बलाग़त और हुस्ने नज़्म व तर्तीब और ग़ैब की ख़बरें देने में क़ुरआन पाक की मिस्ल हो। (फ़ा39) पत्थर से वह बुत मुराद हैं जिन्हें कुफ़्फ़ार पूजते हैं और उनकी मुहब्बत में क़ुरआने पाक और रसूले करीम सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम का एनादन इंकार करते हैं। (फ़ा40) **मसलाः** इससे मालूम हुआ कि दोज़ख़ पैदा हो चुकी है। **मसलाः** यह भी इशारा है कि मोमिनीन के लिए बि-करमेही तआ़ला ख़ुलूदे नार यानी हमेशा जहन्नम में रहना नहीं। (फ़ा41) सुन्नते इलाही है कि किताब में तरहीब के साथ तरग़ीब ज़िक्र फ़रमाता है, इसी लिए कुफ़्फ़ार और उनके आमाल व अ़ज़ाब के ज़िक्र के बाद मोमिनीन और उनके आमाल का ज़िक्र फ़रमाया और उन्हें जन्नत की बशारत दी। *सालिहातुन्* यानी नेकियां वह अ़मल हैं जो शरअ़न अच्छे हों उनमें फ़रायज़ व नवाफ़िल सब दाख़िल हैं (जलालैन) **मसलाः** अ़मले सालेह का ईमान पर अ़तफ़ दलील है इसकी कि अ़मल जुज़्वे ईमान नहीं **मसलाः** यह बशारत मोमिनीन सालिहीन के लिए बिला क़ैद है और गुनहगारों को जो बशारत दी गई है वह मुक़य्यद ब-मशीयते इलाही है कि चाहे अज़ राहे करम माफ़ फ़रमाये चाहे गुनाहों की सज़ा देकर जन्नत अ़ता करे। (मदारिक) (फ़ा42) जन्नत के फल बाहम मुशाबेह होंगे और ज़ायक़े उनके जुदा जुदा इस लिए जन्नती कहेंगे कि यही फल तो हमें पहले मिल चुका है मगर खाने से नई लज़्ज़त पायेंगे तो उनका लुत्फ़ बहुत ज़्यादा हो जाएगा। (फ़ा43) जन्नती बीबियां ख़्वाह हूरें हों या और सब ज़नाने अ़वारिज़ और तमाम नापाकियों और गन्दगियों से मुबर्रा होंगी न जिस्म पर मैल होगा न बौल व बराज़ इसके साथ ही वह बद मिज़ाजी व बद ख़ुल्क़ी से भी पाक होंगी (मदारिक व ख़ाज़िन) (फ़ा44) यानी अहले जन्नत न कभी फ़ना होंगे न जन्नत से निकाले जायेंगे। **मसलाः** इससे मालूम हुआ कि जन्नत व अहले जन्नत के लिए फ़ना नहीं।

(बक़िया सफ़हा 17 का) अ़लैहिमस्सलाम बतज़र्रुअ़ व ज़ारी बारगाहे हक़ की तरफ़ मुल्तजी हुए 'वही' आई कि जो क़त्ल हो चुके शहीद हुए बाक़ी मग़फ़ूर फ़रमाए गए उनमें के क़ातिल व मक़तूल सब जन्नती हैं **मसलाः** शिर्क से मुसलमान मुरतद हो जाता है **मसलाः** मुरतद की सज़ा क़त्ल है क्योंकि अल्लाह तआ़ला से बग़ावत क़त्ल व ख़ूंरेज़ी से सख़्त तर जुर्म है, **फ़ाइदाः** गऊ साला बना कर पूजने में बनी इसराईल के कई जुर्म थे एक तस्वीर साज़ी जो हराम है दूसरे हज़रत हारून अ़लैहिस्सलाम की ना-फ़रमानी तीसरे गऊ साला पूज कर मुशरिक हो जाना यह ज़ुल्म आले फ़िरऔ़न के मज़ालिम से भी ज़्यादा शदीद हैं क्योंकि यह अफ़आ़ल उन से बादे ईमान सरज़द हुए इस लिए मुस्तहिक़ तो इसके थे कि अ़ज़ाबे इलाही उनहें मोहलत न दे और फ़िलफ़ौर हलाकत से कुफ़्र पर उनका ख़ात्मा हो जाये लेकिन हज़रत मूसा व हारून अ़लैहिमस्सलाम की बदौलत उन्हें तौबा का मौक़ा दिया गया यह अल्लाह तआ़ला का बड़ा फ़ज़्ल है (फ़ा89) इस में इशारा है कि बनी इसराईल की इस्तेअ़दाद फ़िरऔ़नियों की तरह बातिल न हुई थी और उनकी नस्ल से सालिहीन पैदा होने वाले थे चुनांचे उनमें हज़ारहा नबी व सालेह पैदा हुए।

(बक़िया सफ़हा 23 का) शाने नुज़ूलः जब सय्यदे अम्बिया सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम मदीना तय्यबा तशरीफ़ फ़रमा हुए तो उलमाए तौरेत व रुअसाए यहूद को क़वी अन्देशा हो गया कि उनकी रोज़ी जाती रहेगी और सरदारी मिट जाएगी क्योंकि तौरेत में हुज़ूर का हुलिया और औसाफ़ मज़कूर हैं जब लोग हुज़ूर को उसके मुताबिक़ पायेंगे फ़ौरन ईमान ले आयेंगे और अपने उलमा व रुअसा को छोड़ देंगे इस अन्देशा से उन्होंने तौरेत में तहरीफ़ व तग़ईर कर डाली और हुलिया शरीफ़ बदल दिया। मसलन तौरेत में आप के औसाफ़ यह लिखे थे कि आप ख़ूबरू हैं बाल ख़ूबसूरत आंखें सुरमगीं क़द मियाना है उसको मिटा कर उन्होंने यह बनाया कि वह बहुत दराज़ क़ामत हैं आंखें कंजी नीली बाल उलझे हैं यही अवाम को सुनाते यही किताबे इलाही का मज़मून बताते और समझते कि लोग हुज़ूर को इसके ख़िलाफ़ पायेंगे तो आप पर ईमान न लायेंगे हमारे गरवीदा रहेंगे और हमारी कमाई में फ़र्क़ न आएगा।(फ़ा131) **शाने नुज़ूलः** हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हु से मरवी है कि यहूद कहते थे कि वह दोज़ख़ में हरगिज़ दाख़िल न होंगे मगर सिर्फ़ इतनी मुद्दत के लिए जितने अर्से उनके आबा व अजदाद ने गऊ साला पूजा था और वह चालीस रोज़ हैं उसके बाद वह अ़ज़ाब से छूट जायेंगे इस पर यह आयते करीमा नाज़िल हुई (फ़ा132)क्योंकि किज़्ब बड़ा ऐब है और ऐब अल्लाह तआ़ला पर मुहाल लिहाज़ा उसका किज़्ब तो मुमकिन नहीं लेकिन जब अल्लाह तआ़ला ने तुम से सिर्फ़ चालीस रोज़ के अ़ज़ाब के बाद छोड़ देने का वादा ही नहीं फ़रमाया तो तुम्हारा क़ौल बातिल हुआ।

(बक़िया सफ़्हा 21 का) एक गरोह ने यह चाल की कि जुमा को दरिया के कनारे कनारे बहुत से गढे खोदते और शम्बा की सुबह को दरिया से उन गढ़ों तक नालियां बनाते जिनके ज़रीआ़ पानी के साथ आकर मछलियां गढ़ों में क़ैद हो जातीं यकशम्बा को उन्हें निकालते और कहते कि हम मछली को पानी से शम्बा के रोज़ नहीं निकालते चालीस या सत्तर साल तक यही अमल रहा जब हज़रत दाऊद अ़लैहिस्सलाम की नबुव्वत का अ़हद आया आपने उन्हें इससे मना किया और फ़रमाया क़ैद करना ही शिकार है जो शम्बा को करते हो उससे बाज़ आओ वरना अ़ज़ाब में गिरिफ़्तार किये जाओगे वह बाज़ न आये आपने दुआ़ फ़रमाई अल्लाह तआ़ला ने उन्हें बन्दरों की शक्ल में मस्ख़ कर दिया अ़क्ल व हवास तो उनके बाक़ी रहे मगर क़ुव्वते गोयाई ज़ाइल हो गई बदनों से बदबू निकलने लगी अपने इस हाल पर रोते रोते तीन रोज़ में सब हलाक हो गए उनकी नस्ल बाक़ी न रही यह सत्तर हज़ार के क़रीब थे बनी इसराईल का दूसरा गरोह जो बारह हज़ार के क़रीब था उन्हें इस अ़मल से मना करता रहा जब यह न माने तो उन्होंने उनके और अपने महलों के दर्मियान दीवार बनाकर अलाहेदगी कर ली उन सब ने नजात पाई बनी इसराईल का तीसरा गरोह साकित रहा उसके हक़ में हज़रत इब्ने अ़ब्बास के सामने अकरमा ने कहा कि वह मग़फ़ूर हैं क्योंकि अम्र बिलमअ़रूफ़ फ़र्ज़े कफ़ाया है बाज़ का अदा करना कुल का हुक्म रखता है उनके सुकूत की वजह यह थी कि यह उनके पन्द पेज़ीर होने से मायूस थे अकरमा की यह तक़रीर हज़रत इब्ने अ़ब्बास को बहुत पसन्द आई और आपने सुरूर से उठकर उन से मुआ़नक़ा किया और उनकी पेशानी को बोसा दिया (फ़तहुल अ़ज़ीज़)। **मसलाः** इससे मालूम हुआ कि सुरूर का मुआ़नक़ा सुन्नते सहाबा है उसके लिए सफ़र से आना और ग़ैबत के बाद मिलना शर्त नहीं (फ़ा116) बनी इसराईल में आ़मील नामी एक मालदार था उसके चचाज़ाद भाई ने ब-तमअ़े विरासत उसको क़त्ल करके दूसरी बस्ती के दरवाज़े पर डाल दिया और ख़ुद सुबह को उसके ख़ून का मुद्दई बना, वहां के लोगों ने हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम से दरख़्वास्त की कि आप दुआ़ फ़रमायें कि अल्लाह तआ़ला हक़ीक़ते हाल ज़ाहिर फ़रमाये इस पर हुक्म सादिर हुआ कि एक गाय ज़िबह करके उसका कोई हिस्सा मक़तूल के मारें वह ज़िन्दा होकर क़ातिल को बता देगा (फ़ा117) क्योंकि मक़तूल का हाल मालूम होने और गाय के ज़िबह में कोई मुनासबत मालूम नहीं होती (फ़ा118) ऐसा जवाब जो सवाल से रब्त न रखे जाहिलों का काम है या यह माना हैं कि मुहाकमा के मौक़ा पर इस्तेहज़ा जाहिलों का काम है अम्बिया की शान उससे बरतर है अलक़िस्सा जब ही बनी इसराईल ने समझ लिया कि गाय का ज़िबह करना लाज़िम है तो उन्होंने आप से उसके औसाफ़ दरियाफ़्त किए हदीस शरीफ़ में है कि अगर बनी इसराईल बहस न निकालते तो जो गाय ज़िबह कर देते काफ़ी हो जाती।

(बक़िया सफ़्हा 25 का) करना परिन्द पैदा करना ग़ैब की ख़बर देना वग़ैरह (फ़ा145) रूहे क़ुद्स से हज़रत जिब्रील अ़लैहिस्सलाम मुराद हैं कि रूहानी हैं वही लाते हैं जिस से क़ुलूब की हयात है वह हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम के साथ रहने पर मामूर थे आप ३३ साल की उम्र शरीफ़ में आसमान पर उठा लिये गए उस वक़्त तक हज़रत जिब्रील सफ़र व हज़र में कभी आप से जुदा न हुए ताईदे रूहुल .क़ुद्स हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम की जलील फ़ज़ीलत है सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम के सदक़ा में हु.ज़ूर के बाज़ उम्मतियों को भी ताईदे रुहुल क़ुद्स मुयस्सर हुई सही बुख़ारी वग़ैरह में है कि हज़रत हस्सान रज़ियल्लाहु अ़न्हु के लिए मिम्बर बिछाया जाता वह नअ़त शरीफ़ पढ़ते हुज़ूर उनके लिए फ़रमाते *अल्लाहुम्-म अय्यिदहु बिरूहिल्-. क़ुदुसि* (फ़ा146) फिर भी ऐ यहूद तुम्हारी सरकशी में फ़र्क़ न आया (फ़ा147) यहूद पैग़म्बरों के अहकाम अपनी ख़्वाहिशों के ख़िलाफ़ पाकर उन्हें झुठलाते और मौक़ा पाते तो क़त्ल कर डालते थे जैसे कि उन्होंने हज़रत शअ़या व ज़करिया और बहुत अम्बिया को शहीद किया सय्यदे अम्बिया सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के भी दरपै रहे कभी आप पर जादू किया कभी ज़हर दिया तरह तरह के फ़रेब ब-इरादए क़त्ल किये (फ़ा148) यहूद ने यह इस्तेहज़ाअन कहा था उनकी मुराद यह थी कि हु.ज़ूर की हिदायत को उनके दिलों तक राह नहीं है अल्लाह तआ़ला ने इसका रद फ़रमाया कि बे दीन झूठे हैं क़ुलूब अल्लाह तआ़ला ने फ़ितरत पर पैदा फ़रमाये उन में क़बूले हक़ की लियाक़त रखी उनके कुफ़्र की शामत है कि उन्होंने सय्यदे अम्बिया सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की नबुव्वत का एतेराफ़ करने के बाद इंकार किया अल्लाह तआ़ला ने उन पर लानत फ़रमाई उसका असर है कि क़बूले हक़ की निअ़मत से महरूम हो गए (फ़ा149) यही मज़मून दूसरी जगह इरशाद हुआ *बल् त-ब-अ़ल्लाहु अ़लैहा बि-कुफ़्रिहिम् फ़ला युअ्मिनू-न इल्ला क़लीला* (फ़ा150) सय्यदे अम्बिया सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की नबुव्वत और हुज़ूर के औसाफ़ के बयान में (कबीर व ख़ाज़िन) (फ़ा151) **शाने नु.ज़ूलः** सय्यदे अम्बिया सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की बेअ़सत और क़ुरआने करीम के नु.ज़ूल से क़ब्ल यहूद अपने हाजात के लिए हुज़ूर के नामे पाक के वसीला से दुआ़ करते और कामयाब होते थे और इस तरह दुआ़ किया करते थे *अल्लाहुम्-मफ़्तह् अ़लैना वन्सुरना बिन्-नबीय्यिल्-उम्मीयि* या रब हमें नबीए उम्मी के सदक़े में फ़तह व नुसरत अता फ़रमा **मसलाः** इससे मालूम हुआ कि मक़बूलाने हक़ के वसीला से दुआ़ क़बूल होती है यह भी मालूम हुआ कि हु.ज़ूर से क़ब्ल जहान में हु.ज़ूर की तशरीफ़ आवरी का शोहरा था उस वक़्त भी हुज़ूर के वसीला से ख़ल्क़ की हाजत रवाई होती थी।

(बक़िया सफ़हा 22 का) बुलाया वह हाज़िर हुई जवान उसको वालिदा की ख़िदमत में लाया वालिदा ने बाज़ार में लेजा कर तीन दीनार पर फ़रोख़्त करने का हुक्म दिया और यह शर्त की कि सौदा होने पर फिर उसकी इजाज़त हासिल की जाये उस ज़माना में गाय की क़ीमत उन अतराफ़ में तीन दीनार ही थी जवान जब उस गाय को बाज़ार में लाया तो एक फ़रिश्ता ख़रीदार की सूरत में आया और उसने गाय की क़ीमत छः दीनार लगा दी मगर इस शर्त से कि जवान वालिदा की इजाज़त का पाबन्द न हो जवान ने यह मन्ज़ूर न किया और वालिदा से तमाम क़िस्सा कहा उसकी वालिदा ने छः दीनार क़ीमत मंज़ूर करने की तो इजाज़त दी मगर बैअ़ (बेचने) में फिर दोबारा अपनी मर्ज़ी दरियाफ़्त करने की शर्त की जावान फिर बाज़ार में आया इस मर्तबा फ़रिश्ता ने बारह दीनार क़ीमत लगाई और कहा कि वालिदा की इजाज़त पर मौक़ूफ़ न रखो जवान ने न माना और वालिदा को इत्तलाअ़ दी वह साहबे फ़रासत समझ गई कि यह ख़रीदार नहीं कोई फ़रिश्ता है जो आज़माईश के लिए आता है बेटे से कहा कि अबकी मर्तबा उस ख़रीदार से यह कहना कि आप हमें इस गाय के फ़रोख़्त करने का हुक्म देते हैं या नहीं लड़के ने यही कहा फ़रिश्ता ने जवाब दिया कि अभी इसको रोके रहो जब बनी इसराईल ख़रीदने आयें तो इसकी क़ीमत यह मुक़र्रर करना कि इसकी खाल में सोना भर दिया जाये जवान गाय को घर लाया और जब बनी इसराईल जुस्तजू करते हुए उसके मकान पर पहुंचे तो यही क़ीमत तय की और हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलातु वस्सलाम की ज़मानत पर वह गाय बनी इसराईल के सपुर्द की। **मसायलः** इस वाक़िआ से कई मसले मालूम हुए (1) जो अपने अ़याल को अल्लाह के सपुर्द करे अल्लाह तआ़ला उसकी ऐसी उम्दा परवरिश फ़रमाता है (2) जो अपना माल अल्लाह के भरोसा पर उसकी अमानत में दे अल्लाह उसमें बरकत देता है। **मसलाः** (3) वालिदैन की फ़रमांबरदारी अल्लाह तआ़ला को पसन्द है (4) ग़ैबी फ़ैज़ क़ुरबानी व ख़ैरात करने से हासिल होता है (5) राहे ख़ुदा में नफ़ीस माल देना चाहिए (6) गाय की क़ुरबानी अफ़ज़ल है (फ़ा121) बनी इसराईल के मुसलसल सवालात और अपनी रुसवाई के अन्देशा और गाय की गिरानीए क़ीमत से यह ज़ाहिर होता था कि वह ज़िबह का क़स्द नहीं रखते मगर जब उनके सवालात शाफ़ी जवाबों से ख़त्म कर दिये गए तो उन्हें ज़िबह करना ही पड़ा (फ़ा122) बनी इसराईल ने गाय ज़िबह करके उसके किसी उज़्व से मुर्दा को मारा वह बहुक्मे इलाही ज़िन्दा हुआ उसके हल्क़ से ख़ून के फ़व्वारे जारी थे उसने अपने चचाज़ाद भाई को बताया कि उसने मुझ को क़त्ल किया अब उसको भी इक़रार करना पड़ा और हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम ने उस पर क़िसास का हुक्म फ़रमाया उसके बाद शरअ़ का हुक्म हुआ कि **मसलाः** क़ातिल मक़तूल की मीरास से महरूम रहेगा। **मसलाः** लेकिन अगर आ़दिल ने बाग़ी को क़त्ल किया या किसी हमला आवर से जान बचाने के लिए मुदाफ़अ़त की उसमें वह क़त्ल हो गया तो मक़तूल की मीरास से महरूम न होगा (फ़ा123) और तुम समझो कि बेशक अल्लाह तआ़ला मुर्दे ज़िन्दा करने पर क़ादिर है और रोज़े जज़ा मुर्दों को ज़िन्दा करना और हिसाब लेना हक़ है। (फ़ा124) और ऐसे बड़े निशानहाए क़ुदरत से तुम ने इबरत हासिल न की (फ़ा125) बईं हमा तुम्हारे दिल असर पेज़ीर नहीं पत्थरों में भी अल्लाह ने इदराक व शुऊर दिया है उन्हें ख़ौफ़े इलाही होता है वह तस्बीह करते हैं *इम्-मिन् शैइन् इल्ला यु-सब्बिहु बि-हम्दिही* मुस्लिम शरीफ़ में हज़रत जाबिर रज़ियल्लाहु अ़न्हु से मरवी है कि सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया मैं उस पत्थर को पहचानता हूं जो बेअ़सत से पहले मुझे सलाम किया करता था तिर्मिज़ी में हज़रत अ़ली रज़ियल्लाहु अ़न्हु से मरवी है मैं सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के साथ अतराफ़े मक्का में गया जो दरख़्त या पहाड़ सामने आता था *अस्सलामु अ़लै-क या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम* अर्ज़ करता था।

(बक़िया सफ़हा 28 का) उनका ज़िक्र *बल् अक्-सरुहुम् ला युअ्मिनून* में है चौथे फ़िरक़े ने ज़ाहिरी तौर पर तो अहद माने और बातिन में बग़ावत व एनाद से मुख़ालफ़त करते रहे यह तसन्नुअ़ से जाहिल बनते थे *क-अन्नहुम् ला यअ्-लमून* में उन पर दलालत है। (फ़ा178) **शाने नुज़ूलः** हज़रत सुलैमान अ़लैहिस्सलाम के ज़माना में बनी इसराईल जादू सीखने में मशग़ूल हुए तो आपने उनको इससे रोका और उनकी किताबें लेकर अपनी कुर्सी के नीचे दफ़न कर दीं हज़रत सुलैमान अ़लैहिस्सलाम की वफ़ात के बाद शयातीन ने वह किताबें निकलवा कर लोगों से कहा कि सुलैमान अ़लैहिस्सलाम इसी के ज़ोर से सल्तनत करते थे बनी इसराईल के सुलहा व उलमा ने तो उसका इंकार किया लेकिन उनके जुहहाल जादू को हज़रत सुलैमान अ़लैहिस्सलाम का इल्म बता कर उसके सीखने पर टूट पड़े अम्बिया की किताबें छोड़ दीं और हज़रत सुलैमान अ़लैहिस्सलाम पर मलामत शुरू की। सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के ज़माना तक उसी हाल पर रहे अल्लाह तआ़ला ने हुज़ूर पर हज़रत सुलैमान अ़लैहिस्सलाम की बरअत में यह आयत नाज़िल फ़रमाई (फ़ा179) क्योंकि वह नबी हैं और अम्बिया कुफ़्र से क़तअ़न मअ़सूम होते हैं उनकी तरफ़ सेह्र की निस्बत बातिल व ग़लत है क्यों कि सेह्र का कुफ़्रियात से ख़ाली होना नादिर है (फ़ा180) जिन्होंने हज़रत सुलैमान अ़लैहिस्सलाम पर जादूगरी की झूठी तोहमत लगाई (फ़ा181) यानी जादू सीख कर और उस पर अ़मल व एतेक़ाद करके और उसको मुबाह जान कर काफ़िर न बन यह जादू फ़रमांबरदार व नाफ़रमान के दर्मियान इम्तियाज़ व आज़माईश के लिए नाज़िल हुआ जो उसको सीख कर उस पर अ़मल करे काफ़िर हो जाएगा बशर्तेकि उस जादू में मनाफ़ीए ईमान कलिमात व अफ़आ़ल हों और जो उससे बचे न सीखे या सीखे और उस पर अ़मल न करे और उसके कुफ़्रियात का मोअ़्तक़िद न हो वह मोमिन रहेगा यही इमाम अबू मन्सूर मातुरीदी का क़ौल है। **मसलाः** जो सेह्र कुफ़्र है उसका आ़मिल अगर मर्द हो क़त्ल कर दिया जायेगा। **मसलाः** जो सेह्र कुफ़्र नहीं मगर उससे जानें हलाक की जाती हैं उसका आ़मिल क़ुत्ताअ़े तरीक़ के हुक्म में है मर्द हो या औरत। **मसलाः** जादूगर की तौबा क़बूल है (मदारिक) (फ़ा182) **मसलाः** इस से मालूम हुआ मुअस्सिरे हक़ीक़ी अल्लाह तआ़ला है और तासीर अस्बाबे तहते मशिय्यत है (फ़ा183) अपने अंजामे-कार व शिद्दते अ़ज़ाब का (फ़ा184) हज़रत सय्यदे कायनात सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम और क़ुरआन पाक पर।

(**बक़िया सफ़हा 24 का**) करता रहे (ख़ाज़िन) (फ़ा135) अच्छी बात से मुराद नेकियों की तरग़ीब और बदियों से रोकना है हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा ने फ़रमाया कि माना यह हैं कि सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की शान में हक़ और सच बात कहो अगर कोई दरियाफ़्त करे तो हुजूर के कमालात व औसाफ़ सच्चाई के साथ बयान कर दो आपकी ख़ूबियां न छुपाओ (फ़ा136) अहद के बाद (फ़ा137) जो ईमान ले आये मिस्ले हज़रत अब्दुल्लाह बिन सलाम और उनके अस्हाब के उन्होंने तो अहद पूरा किया (फ़ा138) और तुम्हारी क़ौम की आदत ही एराज़ करना और अहद से फिर जाना है। (फ़ा139) **शाने नुज़ूलः** तौरेत में बनी इसराईल से अहद लिया गया था कि वह आपस में एक दूसरे को क़त्ल न करें वतन से न निकालें और जो बनी इसराईल किसी की क़ैद में हो उस को माल देकर छुड़ा लें इस अहद पर उन्होंने इक़रार भी किया अपने नफ़्स पर शाहिद भी हुए लेकिन क़ाइम न रहे और उससे फिर गए सूरते वाक़िआ यह है कि नवाहे मदीना में यहूद के दो फ़िरक़े बनी क़ुरैज़ा और बनी नुज़ैर सुकूनत रखते थे और मदीना शरीफ़ में दो फ़िरक़े औस व ख़ज़रज रहते थे बनी क़ुरैज़ा औस के हलीफ़ थे और बनी नुज़ैर ख़ज़रज के यानी हर एक क़बीला ने अपने हलीफ़ के साथ क़स्मा क़स्मी की थी कि अगर हम में से किसी पर कोई हमला आवर हो तो दूसरा उसकी मदद करेगा औस और ख़ज़रज बाहम जंग करते थे बनी क़ुरैज़ा औस की और बनी नुज़ैर ख़ज़रज की मदद के लिए आते थे और हलीफ़ के साथ होकर आपस में एक दूसरे पर तलवार चलाते थे बनी क़ुरैज़ा बनी नुज़ैर को और वह बनी क़ुरैज़ा को क़त्ल करते थे और उनके घर वीरान कर देते थे उन्हें उनके मसाकिन से निकाल देते थे लेकिन जब उनकी क़ौम के लोगों को उनके हलीफ़ क़ैद करते थे तो वह उनको माल देकर छुड़ा लेते थे मसलन अगर बनी नुज़ैर का कोई शख़्स औस के हाथ में गिरिफ़्तार होता तो बनी क़ुरैज़ा औस को माली मुआवज़ा देकर उसको छुड़ा लेते बावजूदकि अगर वही शख़्स लड़ाई के वक़्त उनके मौक़ा पर आ जाता तो उसके क़त्ल में हरगिज़ दरेग़ न करते इस फ़ेअ्ल पर मलामत की जाती है कि जब तुमने अपनों की ख़ूंरेज़ी न करने उनको बस्तियों से न निकालने उनके असीरों को छुड़ाने का अहद किया था तो उसके क्या माना कि क़त्ल व इख़राज में तो दर गुज़र न करो और गिरिफ़्तार हो जायें तो छुड़ाते फिरो अहद में से कुछ मानना और कुछ न मानना क्या माना रखता है जब तुम क़त्ल व इख़राज से बाज़ न रहे तो तुम ने अहद शिकनी की और हराम के मुरतकिब हुए और उसको हलाल जान कर काफ़िर हो गए। **मसलाः** इस आयत से मालूम हुआ कि ज़ुल्म व हराम पर इमदाद करना भी हराम है। **मसलाः** यह भी मालूम हुआ कि हरामे क़तई को हलाल जानना कुफ़्र है। **मसलाः** यह भी मालूम हुआ कि किताबे इलाही के एक हुक्म का न मानना भी सारी किताब का न मानना और कुफ़्र है। **फ़ायदाः** इस में यह तम्बीह भी है कि जब अहकामे इलाही में से बाज़ का मानना बाज़ का न मानना कुफ़्र हुआ तो यहूद का हज़रत सय्यदे अम्बिया सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का इंकार करने के साथ हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम की नबुव्वत को मानना कुफ़्र से नहीं बचा सकता।

(**बक़िया सफ़हा 27 का**) था *इन्-न मई-या क़ौमन् युहिब्बूनल् मौ-त कमा युहिब्बुल् अ-आजिमुल् ख़म्-र* यानी मेरे साथ ऐसी क़ौम है जो मौत को इतना महबूब रखती है जितना अजमी शराब को, इसमें लतीफ़ इशारा था कि शराब की नाक़िस मस्ती को मुहब्बते दुनिया के दीवाने पसन्द करते हैं और अहलुल्लाह मौत को महबूबे हक़ीक़ी के विसाल का ज़रिया समझकर महबूब जानते हैं फ़िलजुमला अहले ईमान आख़िरत की रग़बत रखते हैं और अगर तूले हयात की तमन्ना भी करें तो वह इसलिए होती है कि नेकियां करने के लिए कुछ और अर्सा मिल जाए जिससे आख़िरत के लिए ज़ख़ीरए सआदत ज़्यादा कर सकें अगर गुज़श्ता अय्याम में गुनाह हुए हैं तो उन से तौबा व इस्तिग़फ़ार कर लें **मसलाः** सेहाह की हदीस में है कोई दुनियवी मुसीबत से परेशान होकर मौत की तमन्ना न करे और दर हक़ीक़त हवादिसे दुनिया से तंग आकर मौत की दुआ करना सब्र व रज़ा व तस्लीम व तवक्कुल के ख़िलाफ़ व नाजाइज़ है (फ़ा168) मुशरिकीन का एक गरोह मजूसी है आपस में तहिय्यत व सलाम के मौक़ा पर कहते हैं *ज़िह हज़ार साल* यानी हज़ार बरस जियो मतलब यह है कि मजूसी मुशरिक हज़ार बरस जीने की तमन्ना रखते हैं यहूदी उन से भी बढ़ गए कि उन्हें हिर्से ज़िन्दगानी सबसे ज़्यादा है (फ़ा169) **शाने नुज़ूलः** यहूद के आलिम अब्दुल्लाह बिन सूरिया ने हुज़ूर सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से कहा आपके पास आसमान से कौन फ़रिश्ता आता है फ़रमाया जिब्रील, इब्ने सूरिया ने कहा वह हमारा दुश्मन है अज़ाबे शिद्दत और ख़स्फ़ उतारता है कई मर्तबा हम से अदावत कर चुका है अगर आपके पास मीकाईल आते तो हम आप पर ईमान ले आते (फ़ा170) तो यहूद की अदावत जिब्रील के साथ बे-माना है बल्कि अगर उन्हें इन्साफ़ होता तो वह जिब्रीले अमीन से मुहब्बत करते और उनके शुक्र गुज़ार होते कि वह ऐसी किताब लाये जिससे उनकी किताबों की तस्दीक़ होती है और *बुश्रा लिलमुअ्मिनी-न* फ़रमाने में यहूद का रद है कि अब तो जिब्रील हिदायत व बशारत ला रहे हैं फिर भी तुम अदावत से बाज़ नहीं आते (फ़ा171) इससे मालूम हुआ कि अम्बिया व मलाइका की अदावत कुफ़्र और ग़ज़बे इलाही का सबब है और महबूबाने हक़ से दुश्मनी ख़ुदा से दुश्मनी करना है। (फ़ा172) **शाने नुज़ूलः** यह आयत इब्ने सूरिया यहूदी के जवाब में नाज़िल हुई जिसने हुज़ूर सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से कहा था कि ऐ मुहम्मद आप हमारे पास कोई ऐसी चीज़ न लाये जिसे हम पहचानते और न आप पर कोई वाज़ेह आयत नाज़िल हुई जिसका हम इत्तेबाअ् करते। (फ़ा173) **शाने नुज़ूलः** यह आयत मालिक बिन सैफ़ यहूदी के जवाब में नाज़िल हुई जब हुज़ूर सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने यहूद को अल्लाह तआला के वह अहद याद दिलाये जो हुज़ूर पर ईमान लाने के मुतअ़ल्लिक़ किये थे तो इब्ने सैफ़ ने अहद ही का इंकार कर दिया।

(बक़िया सफ़हा 29 का) तकज़ीब में यह आयत नाज़िल हुई मुसलमानों को बताया गया कि कुफ़्फ़ार ख़ैर ख़्वाही के दावे में झूठे हैं (जुमल) (फ़ा189) यानी कुफ़्फ़ार अहले किताब और मुशरिकीन दोनों मुसलमानों से बुग़्ज़ रखते हैं और इस रन्ज में हैं कि उनके नबी मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को नबुव्वत व वह्री अ़ता हुई और मुसलमानों को यह नेअ़मते उज़मा मिली (ख़ाज़िन वग़ैरह) (फ़ा190) शाने नु.ज़ूलः क़ुरआने करीम ने शराअ़े साबिक़ा व कुतुबे क़दीमा को मन्सूख़ फ़रमाया तो कुफ़्फ़ार को बहुत तवह्हुश हुआ और उन्होंने उस पर तअ़न किये इस पर यह आयते करीमा नाज़िल हुई और बताया गया कि मन्सूख़ भी अल्लाह की तरफ़ से है और नासिख़ भी दोनों ऐने हिकमत हैं और नासिख़ कभी मन्सूख़ से ज़्यादा सहल व अनफ़अ़ होता है क़ुदरते इलाही पर यक़ीन रखने वाले को इसमें जाए तरद्दुद नहीं कायनात में मुशाहदा किया जाता है कि अल्लाह तआ़ला दिन से रात को गरमा से सरमा को जवानी से बचपन को बीमारी से तन्दुरुस्ती को बहार से ख़िज़ां को मन्सूख़ फ़रमाता है यह तमाम नस्ख़ व तब्दील उसकी क़ुदरत के दलाइल हैं तो एक आयत और एक हुक्म के मन्सूख़ होने में क्या तअ़ज्जुब। नस्ख़ दर हक़ीक़त हुक्मे साबिक़ की मुद्दत का बयान होता है कि वह हुक्म उस मुद्दत के लिए था और ऐने हिकमत था कुफ़्फ़ार की नाफ़हमी कि नस्ख़ पर एतेराज़ करते हैं और अहले किताब का एतेराज़ उनके मुअ़्तक़दात के लिहाज़ से भी ग़लत है उन्हें हज़रत आदम अ़लैहिस्सलाम की शरीअ़त के अहकाम की मन्सूख़ियत तस्लीम करना पड़ेगी यह मानना ही पड़ेगा कि शम्बा (सनीचर) के रोज़ दुनियवी काम उनसे पहले हराम न थे उन पर हराम हुए यह भी इक़रार नागुज़ीर होगा कि तौरेत में हज़रत नूह अ़लैहिस्सलाम की उम्मत के लिए तमाम चौपाए हलाल होना बयान किया गया और हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम पर बहुत से हराम कर दिये गए इन उमूर के होते हुए नस्ख़ का इंकार किस तरह मुमकिन है। **मसलाः** जिस तरह आयत दूसरी आयत से मन्सूख़ होती है उसी तरह हदीसे मुतवातिर से भी होती है। **मसलाः** नस्ख़ कभी सिर्फ़ तिलावत का होता है कभी सिर्फ़ हुक्म का, कभी तिलावत व हुक्म दोनों का। बैहक़ी ने अबू उमामा से रिवायत की कि एक अंसारी सहाबी शब को तहज्जुद के लिए उठे और सूरह फ़ातिहा के बाद जो सूरत हमेशा पढ़ा करते थे उसको पढ़ना चाहा लेकिन वह बिल्कुल याद न आई और सिवाए बिस्मिल्लाह के कुछ न पढ़ सके सुबह को दूसरे अस्हाब से इसका ज़िक्र किया उन हज़रात ने फ़रमाया हमारा भी यही हाल है वह सूरत हमें भी याद थी और अब हमारे हाफ़िज़ा में भी न रही सब ने सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की ख़िदमत में वाक़िआ़ अ़र्ज़ किया हु.ज़ूर अकरम ने फ़रमाया आज शब वह सूरत उठा ली गई उसके हुक्म व तिलावत दोनों मन्सूख़ हुए जिन काग़ज़ों पर वह लिखी गई थी उन पर नक़्श तक बाक़ी न रहे। (फ़ा191) **शाने नुज़ूलः** यहूद ने कहा ऐ मुहम्मद (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) हमारे पास आप ऐसी किताब लाईये जो आसमान से एकबारगी नाज़िल हो उनके हक़ में यह आयत नाज़िल हुई (फ़ा192) यानी जो आयतें नाज़िल हो चुकी हैं उनके क़बूल करने में बेजा बहस करें और दूसरी आयतें तलब करें **मसलाः** इस से मालूम हुआ कि जिस सवाल में मुफ़सिदा हो वह बुज़ुर्गों के सामने पेश करना जाइज़ नहीं और सबसे बड़ा मुफ़सिदा यह कि उससे नाफ़रमानी ज़ाहिर होती हो (फ़ा193) **शाने नु.ज़ूलः** जंगे उहद के बाद यहूद की जमाअ़त ने हज़रत हुज़ैफ़ा बिन यमान और अ़म्मार बिन यासिर रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा से कहा कि अगर तुम हक़ पर होते तो तुम्हें शिकस्त न होती तुम हमारे दीन की तरफ़ वापस आ जाओ हज़रत अ़म्मार ने फ़रमाया तुम्हारे नज़दीक अहद शिकनी कैसी है उन्होंने कहा निहायत बुरी आप ने फ़रमाया मैंने अहद किया है कि ज़िन्दगी के आख़िर लम्हा तक सय्यदे आ़लम मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से न फिरूंगा और कुफ़्र न इख़्तियार करूंगा और हज़रत हुज़ैफ़ा ने फ़रमाया मैं राज़ी हुआ अल्लाह के रब होने मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के रसूल होने इस्लाम के दीन होने क़ुरआन के ईमान होने कअ़बा के क़िबला होने मोमिनीन के भाई होने से फिर यह दोनों साहब हु.ज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुए और आपको वाक़िआ़ की ख़बर दी हु.ज़ूर ने फ़रमाया तुम ने बेहतर किया और फ़लाह पाई इस पर यह आयत नाज़िल हुई (फ़ा194) इस्लाम की हक़्क़ानियत जानने के बाद यहूद का मुसलमानों के कुफ़्र व इरतेदाद की तमन्ना करना और यह चाहना कि वह ईमान से महरूम हो जायें हसदन था हसद बड़ा ही ऐब है। **मसलाः** हदीस शरीफ़ में है सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया हसद से बचो वह नेकियों को इस तरह खाता है जैसे आग खुश्क लकड़ी को। **मसलाः** हसद हराम है **मसलाः** अगर कोई शख़्स अपने माल व दौलत या असर व वजाहत से गुमराही व बे दीनी फैलाता हो तो उसके फ़ित्ना से महफ़ूज़ रहने के लिए उसके ज़वाले नेअ़मत की तमन्ना हसद में दाख़िल नहीं और हराम भी नहीं।

(बक़िया सफ़हा 34 का) मत उठाओ (फ़ा245) **शाने नुज़ूलः** हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा ने फ़रमाया कि यह आयत रुअसाए यहूद और नजरान के नसरानियों के जवाब में नाज़िल हुई यहूदियों ने तो मुसलमानों से यह कहा था कि हज़रत मूसा तमाम अम्बिया में सबसे अफ़ज़ल हैं और तौरेत तमाम किताबों से अफ़ज़ल है और यहूदी दीन तमाम अदियान से आला है इसके साथ उन्होंने हज़रत सय्यदे कायनात मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम और इन्जील शरीफ़ व क़ुरआन शरीफ़ के साथ कुफ़्र करके मुसलमानों से कहा था कि यहूदी बन जाओ इसी तरह नसरानियों ने भी अपने ही दीन को हक़ बता कर मुसलमानों से नसरानी होने को कहा था इस पर यह आयत नाज़िल हुई (फ़ा246) इस में यहूद व नसारा वग़ैरह पर तअ़रीज़ है कि तुम मुशरिक हो इस लिए मिल्लते इब्राहीम पर होने का दावा जो तुम करते हो वह बातिल है इसके बाद मुसलमानों को ख़िताब फ़रमाया जाता है कि वह उन यहूद व नसारा से यह कह दें *क़ूलू आमन्ना अल्आयत*।

(बक़िया सफ़हा 30 का) इन्जील शरीफ़ जिसको नसारा मानते हैं उस में तौरेत शरीफ़ व हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम की नबुव्वत की तस्दीक़ है इसी तरह तौरेत जिसको यहूद मानते हैं इसमें हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम की नबुव्वत और उन तमाम अहकाम की तस्दीक़ है जो आप को अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से अ़ता हुए (फ़ा202) उलमाए अहले किताब की तरह उन जाहिलों ने जो न इल्म रखते थे न किताब जैसे कि बुत परस्त आतिश परस्त वग़ैरह उन्होंने हर एक दीन वाले की तकज़ीब शुरू की और कहा कि वह कुछ नहीं उन्हीं जाहिलों में से मुशरिकीने अ़रब भी हैं जिन्होंने नबीए करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम और आपके दीन की शान में ऐसे ही कलिमात कहे (फ़ा203) **शाने नुज़ूलः** यह आयत बैतुल मक़दिस की बेहुर्मती के मुतअ़ल्लिक़ नाज़िल हुई जिस का मुख़्तसर वाक़िआ़ यह है कि रूम के नसरानियों ने बनी इसराईल पर फ़ौज कशी की उनके मर्दाने कार-आज़मा को क़त्ल किया ज़ुर्रियत को क़ैद किया तौरेत शरीफ़ को जलाया बैतुल मक़दिस को वीरान किया उसमें नजासतें डालीं, ख़िन्ज़ीर ज़िबह किये मआ़ज़ल्लाह बैतुल मक़दिस ख़िलाफ़ते फ़ारूक़ी तक उसी वीरानी में रहा आपके अ़हदे मुबारक में मुसलमानों ने उस को बिना (तामीर) किया एक क़ौल यह भी है कि यह आयत मुशरिकीने मक्का के हक़ में नाज़िल हुई जिन्होंने इब्तेदाए इस्लाम में हुज़ूर सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम और आपके अस्हाब को कअ़्बा में नमाज़ पढ़ने से रोका था और जंगे हुदैबिया के वक़्त उस में नमाज़ व हज से मना किया था (फ़ा204) ज़िक्र, नमाज़, ख़ुतबा, तस्बीह, वअ़ज़, नअ़त शरीफ़ सब को शामिल है और ज़िक्रुल्लाह को मना करना हर जगह बुरा है ख़ास कर मस्जिदों में जो इसी काम के लिए बनाई जाती हैं। **मसलाः** जो शख़्स मस्जिद को ज़िक्र व नमाज़ से मुअ़त्तल कर दे वह मस्जिद का वीरान करने वाला और बहुत ज़ालिम है (फ़ा205) **मसलाः** मस्जिद की वीरानी जैसे ज़िक्र व नमाज़ के रोकने से होती है ऐसे ही उसकी इमारत के नक़सान पहुंचाने और बेहुर्मती करने से भी।

(बक़िया सफ़हा 30 का) और अ़ज़ाबे आख़िरत से कहीं भाग नहीं सकते क्योंकि मशरिक़ व मग़रिब सब अल्लाह का है जहां भागेंगे वह गिरिफ़्त फ़रमाएगा इस तक़दीर पर *वजहुल्लाह* के माना ख़ुदा का क़ुर्ब व हुज़ूर है (फ़तह) एक क़ौल यह भी है कि माना यह हैं कि अगर कुफ़्फ़ार ख़ानए कअ़्बा में नमाज़ से मना करें तो तुम्हारे लिए तमाम ज़मीन मस्जिद बना दी गई है, जहां से चाहो क़िबला की तरफ़ मुंह करके नमाज़ पढ़ो (फ़ा208) **शाने नुज़ूलः** यहूद ने हज़रत उज़ैर अ़लैहिस्सलाम को और नसारा ने हज़रत मसीह को ख़ुदा का बेटा कहा मुशरिकीने अ़रब ने फ़रिश्तों को ख़ुदा की बेटियां बताया उनके रद में यह आयत नाज़िल हुई फ़रमाया *सुबहानहू* वह पाक है इससे कि उसके औलाद हो उसकी तरफ़ औलाद की निस्बत करना उसको ऐब लगाना और बे अदबी है हदीस में है कि अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है इब्ने आदम ने मुझे गाली दी मेरे लिए औलाद बताई मैं औलाद और बीवी से पाक हूं (फ़ा209) और ममलूक होना औलाद होने के मनाफ़ी है जब तमाम जहान उसका ममलूक है तो कोई औलाद कैसे हो सकता है **मसलाः** अगर कोई अपनी औलाद का मालिक हो जाये वह उसी वक़्त आज़ाद हो जाएगी (फ़ा210) जिसने बग़ैर किसी मिसाले साबिक़ के अशिया को अ़दम से वजूद अ़ता फ़रमाया (फ़ा211) यानी कायनात उसके इरादा फ़रमाते ही वजूद में आ जाती है (फ़ा212) यानी अहले किताब या मुशरिकीन (फ़ा213) यानी बे वास्ता ख़ुद क्यों नहीं फ़रमाता जैसा कि मलाइका व अम्बिया से कलाम फ़रमाता है यह उनका कमाले तकब्बुर और निहायत सरकशी थी उन्होंने अपने आप को अम्बिया व मलायका के बरारब समझा **शाने नुज़ूलः** राफ़ेअ़ बिन ख़ुज़ैमा ने हु.ज़ूरे अक़दस सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से कहा अगर आप अल्लाह के रसूल हैं तो अल्लाह से फ़रमाईये वह हम से कलाम करे हम ख़ुद सुनें इस पर यह आयत नाज़िल हुई (फ़ा214) यह उन आयात का एनादन इंकार है जो अल्लाह तआ़ला ने अ़ता फ़रमाईं (फ़ा215) कोरी व नाबीनाई और कुफ़्र व क़सावत में, इसमें नबीए करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की तस्कीने ख़ातिर फ़रमाई गई कि आप उनकी सरकशी और मुआ़निदाना इंकार से रंजीदा न हों पिछले कुफ़्फ़ार भी अम्बिया के साथ ऐसा ही करते थे (फ़ा216) यानी आयाते क़ुरआनी व मोअ़्जेज़ात बाहिरात, इन्साफ़ वाले को सय्यदे आ़लम मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की नबुव्वत का यक़ीन दिलाने के लिए काफ़ी हैं मगर जो तालिबे यक़ीन न हो वह दलाइल से फ़ायदा नहीं उठा सकता (फ़ा217) कि वह क्यों ईमान न लाए इस लिए कि आपने अपना फ़र्ज़े तबलीग़ पूरे तौर पर अदा फ़रमा दिया।

(बक़िया सफ़हा 35 का) दीन क़दीम है अम्बिया हम में से हुए हैं अगर सय्यदे आ़लम मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम नबी होते तो हम में से ही होते इस पर यह आयते करीमा नाज़िल हुई (फ़ा251) उसे इख़्तियार है कि अपने बन्दों में से जिसे चाहे नबी बनाए अ़रब में से हो या दूसरों में से (फ़ा252) किसी दूसरे को अल्लाह के साथ शरीक नहीं करते और इबादत व ताअ़त ख़ालिस उसी के लिए करते हैं तो हम मुस्तहिक़े इकराम हैं (फ़ा253) इस का क़तई जवाब यही है कि अल्लाह ही अअ़्लम है तो जब उसने फ़रमाया *मा का-न इब्राहीमु यहूदिय्यंव् व ला नस्रानिय्या* तो तुम्हारा यह क़ौल बातिल हुआ (फ़ा254) यह यहूद का हाल है जिन्होंने अल्लाह तआ़ला की शहादतें छुपाईं जो तौरेत शरीफ़ में मज़कूर थीं कि मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम उसके नबी हैं और उनके यह नअ़ूत व सिफ़ात हैं और हज़रत इब्राहीम मुसलमान हैं और दीने मक़बूल इस्लाम है न यहूदियत व नसरानियत।

(बक़िया सफ़हा 32 का) जिन से सब पर इस्लाम का क़बूल करना लाज़िम हो जाता है क्योंकि जो चीज़ें अल्लाह तआ़ला ने आप पर वाजिब कीं वह इस्लाम के ख़साइस में से हैं (फ़ा224) ख़ुदाई आज़माईश यह है कि बन्दे पर कोई पाबन्दी लाज़िम फ़रमा कर दूसरों पर उसके खरे खोटे होने का इज़हार कर दे (फ़ा225) जो बातें अल्लाह तआ़ला ने हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम पर आज़माईश के लिए वाजिब की थीं उनमें मुफ़स्सिरीन के चन्द क़ौल हैं क़तादा का क़ौल है कि वह मनासिके हज हैं, मुजाहिद रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने कहा इससे वह दस चीज़ें मुराद हैं जो अगली आयात में मज़कूर हैं हज़रत इब्ने अ़ब्बास का एक क़ौल यह है कि वह दस चीज़ें यह हैं: (1) मूछें कतरवाना (2) कुल्ली करना (3) नाक में सफ़ाई के लिए पानी इस्तेमाल करना (4) मिस्वाक करना (5) सर में मांग निकालना (6) नाख़ुन तरशवाना (7) बग़ल के बाल दूर करना (8) मूए ज़ेरे नाफ़ की सफ़ाई (9) ख़तना (10) पानी से इस्तिन्जा करना। यह सब चीज़ें हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम पर वाजिब थीं और हम पर इनमें से बाज़ वाजिब हैं बाज़ सुन्नत (फ़ा226) **मसला:** यानी आपकी औलाद में जो ज़ालिम (काफ़िर) हैं वह इमामत का मन्सब न पायेंगे **मसला:** इस से मालूम हुआ कि काफ़िर मुसलमानों का पेशवा नहीं हो सकता और मुसलमानों को उसका इत्तेबाअ़ जाइज़ नहीं (फ़ा227) बैत से कअ़बा शरीफ़ मुराद है और इसमें तमाम हरम शरीफ़ दाख़िल है (फ़ा228) अमन बनाने से यह मुराद है कि हरमे कअ़बा में क़त्ल व ग़ारत हराम है या यह कि वहां शिकार तक को अमन है यहां तक कि हरम शरीफ़ में शेर भेड़िये भी शिकार का पीछा नहीं करते छोड़ कर लौट जाते हैं एक क़ौल यह है कि मोमिन उसमें दाख़िल होकर अ़ज़ाब से मामून हो जाता है हरम को हरम इस लिए कहा जाता है कि उसमें क़त्ल ज़ुल्म शिकार हराम व ममनूअ़ है (अहमदी) अगर कोई मुजरिम भी दाख़िल हो जाये तो वहां उस से तअ़र्रुज़ न किया जाएगा (मदारिक)(फ़ा229) मक़ामे इब्राहीम वह पत्थर है जिस पर खड़े होकर हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम ने कअ़बा मुअ़ज़्ज़मा की बिना फ़रमाई और उसमें आपके क़दमे मुबारक का निशान था उसको नमाज़ का मक़ाम बनाने का अम्र इस्तेहबाब के लिए है एक क़ौल यह भी है कि उस नमाज़ से तवाफ़ की दो रकअ़तें मुराद हैं (अहमदी वग़ैरह)

(बक़िया सफ़हा 33 का) की अ़ज़ीम ख़िदमत बजा लाने और तौबा व इस्तिग़फ़ार करने के बाद हज़रत इब्राहीम व इस्माईल ने यह दुआ़ की कि या रब अपने महबूब नबीए आख़िरुज़्ज़मां सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को हमारी नस्ल में ज़ाहिर फ़रमा और यह शरफ़ हमें इनायत कर यह दुआ़ क़बूल हुई और उन दोनों साहिबों की नस्ल में हु.ज़ूर के सिवा कोई नबी नहीं हुआ औलादे हज़रत इब्राहीम में बाक़ी अम्बिया हज़रत इस्हाक़ की नस्ल से हैं **मसला:** सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने अपना मीलाद शरीफ़ ख़ुद बयान फ़रमाया इमामे बग़वी ने एक हदीस रिवायत की कि हुज़ूर ने फ़रमाया मैं अल्लाह तआ़ला के नज़दीक ख़ातमुन्नबीईन लिखा हुआ था बहालेकि हज़रत आदम अ़लैहिस्सलाम के पुतला का ख़मीर हो रहा था मैं तुम्हें अपने इब्तेदाए हाल की ख़बर दूं मैं दुआ़ए इब्राहीम हूं बशारते ईसा हूं अपनी वालिदा की उस ख़्वाब की तअ़बीर हूं जो उन्होंने मेरी विलादत के वक़्त देखी और उनके लिए एक नूरे सातेअ़ ज़ाहिर हुआ जिस से मुल्के शाम के ऐवान व क़ुसूर उन के लिए रौशन हो गए इस हदीस में दुआ़ए इब्राहीम से यही दुआ़ मुराद है जो इस आयत में मज़कूर हैं अल्लाह तआ़ला ने यह दुआ़ क़बूल फ़रमाई और आख़िर ज़माना में हु.ज़ूर सय्यदे अम्बिया मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को मबऊस फ़रमाया *अल्हम्दु लिल्लाह अ़ला एह्सानिही* (जुमल व ख़ाज़िन) (फ़ा235) इस किताब से क़ुरआने पाक और इसकी तालीम से इसके हक़ायक़ व मआ़नी का सिखाना मुराद है (फ़ा236) हिकमत के माना में बहुत अक़वाल हैं बाज़ के नज़दीक हिकमत से फ़िक़ह मुराद है क़तादा का क़ौल है कि हिकमत सुन्नत का नाम है बाज़ कहते हैं कि हिकमत इल्मे अहकाम को कहते हैं ख़ुलासा यह कि हिकमत इल्मे असरार है (फ़ा237) सुथरा करने के यह माना हैं कि लौहे नु.फ़ूस व अरवाह को कुदूरात से पाक करके हिजाब उठावें और आईनए इस्तेअ़दाद की जिला फ़रमा कर उन्हें इस क़ाबिल करदें कि उनमें हक़ायक़ की जलवागरी हो सके (फ़ा238) **शाने नु.ज़ूल:** उलमाए यहूद में से हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन सलाम ने इस्लाम लाने के बाद अपने दो भतीजों मुहाजिर व सलमा को इस्लाम की दावत दी और उनसे फ़रमाया कि तुमको मालूम है कि अल्लाह तआ़ला ने तौरेत में फ़रमाया है कि मैं औलादे इस्माईल से एक नबी पैदा करूंगा जिनका नाम अहमद होगा जो उन पर ईमान लाएगा राहयाब होगा जो उन पर ईमान न लाएगा मलऊन है यह सुनकर सलमा रज़ियल्लाहु अ़न्हु ईमान ले आये और मुहाजिर ने इस्लाम से इंकार कर दिया इस पर अल्लाह तआ़ला ने यह आयत नाज़िल फ़रमा कर ज़ाहिर कर दिया कि जब हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम ने ख़ुद इस रसूले मुअ़ज़्ज़म के मबऊस होने की दुआ़ फ़रमाई तो जो उनके दीन से फिरे वह हज़रत इब्राहीम के दीन से फिरा इसमें यहूद व नसारा व मुशरिकीने अ़रब पर तअ़रीज़ है जो अपने आपको इफ़्तेख़ारन हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम की तरफ़ मन्सूब करते थे जब उनके दीन से फिर गए तो शराफ़त कहां रही।

سَيَقُولُ السُّفَهَآءُ مِنَ النَّاسِ مَا وَلّٰهُمْ عَنْ قِبْلَتِهِمُ الَّتِیْ كَانُوْا عَلَيْهَا ؕ قُلْ لِّلّٰهِ الْمَشْرِقُ وَالْمَغْرِبُ ؕ يَهْدِیْ مَنْ يَّشَآءُ
اِلٰی صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ۝ وَكَذٰلِكَ جَعَلْنٰكُمْ اُمَّةً وَّسَطًا لِّتَكُوْنُوْا شُهَدَآءَ عَلَی النَّاسِ وَيَكُوْنَ الرَّسُوْلُ عَلَيْكُمْ شَهِيْدًا ؕ وَمَا
جَعَلْنَا الْقِبْلَةَ الَّتِیْ كُنْتَ عَلَيْهَآ اِلَّا لِنَعْلَمَ مَنْ يَّتَّبِعُ الرَّسُوْلَ مِمَّنْ يَّنْقَلِبُ عَلٰی عَقِبَيْهِ ؕ وَاِنْ كَانَتْ لَكَبِيْرَةً اِلَّا عَلَی الَّذِيْنَ
هَدَی اللّٰهُ ؕ وَمَا كَانَ اللّٰهُ لِيُضِيْعَ اِيْمَانَكُمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ بِالنَّاسِ لَرَءُوْفٌ رَّحِيْمٌ ۝ قَدْ نَرٰی تَقَلُّبَ وَجْهِكَ فِی السَّمَآءِ ۚ فَلَنُوَلِّيَنَّكَ قِبْلَةً تَرْضٰهَا ۪
فَوَلِّ وَجْهَكَ شَطْرَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ ؕ وَحَيْثُ مَا كُنْتُمْ فَوَلُّوْا وُجُوْهَكُمْ شَطْرَهٗ ؕ وَاِنَّ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ لَيَعْلَمُوْنَ اَنَّهُ الْحَقُّ مِنْ

स–यक़ूलुस्सु फ़हा–उ मिनन्नासि मा वल्लाहुम् अ़न् क़िब्लतिहिमुल्लती कानू अ़लैहा कुल् लिल्लाहिल् मश्रिक़ु वल्मग़्रिबु यह्दी मंय्यशाउ इला सिरातिम् मुस्तक़ीम(142)व कज़ालि–क ज–अ़ल्नाकुम् उम्मतंव् व–स–तल्लि–तकूनू शु–हदा–अ अ़लन्नासि व यकूनर्रसूलु अ़लैकुम् शहीदन् व मा जअ़ल्नल् क़िब्–ल–तल्लती कुन्–त अ़लैहा इल्ला लि–नअ्–ल–म मंय्यत्तबिउर्रसू–ल मिम्मंय्यन्–क़लिबु अ़ला अ़क़िबैहि व इन् कानत् ल–कबी–रतन् इल्ला अ़लल्लज़ी–न हदल्लाहु व मा कानल्लाहु लियुज़ी–अ ईमा–नकुम् इन्नल्ला–ह बिन्नासि ल–रऊफ़ुर्रहीम(143)क़द्–नरा तक़ल्लु–ब वज्हि–क फ़िस्समा–इ फ़–ल–नुवल्– लियन्न–क क़िब्लतन् तर्ज़ाहा फ़–वल्लि वज्ह–क शत्रल्–मस्जिदिल्–ह़रामि व हैसु मा कुन्तुम् फ़ वल्लू वुजू–हकुम् शत्रहू व इन्न–ल्लज़ी–न ऊतुल्किता–ब ल–यअ़्लमू–न अन्नहुल्–ह़क़्क़ु

अब कहेंगे (फ़ा255) बेवक़ूफ़ लोग, किसने फेर दिया मुसलमानों को, उनके उस क़िब्ला से, जिस पर थे (फ़ा256)तुम फ़रमा दो कि पूरब पच्छिम सब अल्लाह ही का है (फ़ा257) जिसे चाहे सीधी राह चलाता है।(142)और बात यूंही है कि हम ने तुम्हें किया सब उम्मतों में अफ़ज़ल कि तुम लोगों पर गवाह हो (फ़ा258)और यह रसूल तुम्हारे निगहबान व गवाह (फ़ा259)और ऐ महबूब तुम पहले जिस क़िब्ला पर थे हमने वह इसी लिए मुक़र्रर किया था कि देखें कौन रसूल की पैरवी करता है और कौन उलटे पांव फिर जाता है(फ़ा260) और बेशक यह भारी थी मगर उन पर, जिन्हें अल्लाह ने हिदायत की और अल्लाह की शान नहीं कि तुम्हारा ईमान अकारत करे (फ़ा261) बेशक अल्लाह आदमियों पर बहुत मेहरबान, मेहर वाला है।(143) हम देख रहे हैं बार बार तुम्हारा आसमान की तरफ़ मुंह करना (फ़ा262) तो ज़रूर हम तुम्हें फेर देंगे उस क़िब्ला की तरफ़ जिसमें तुम्हारी ख़ुशी है अभी अपना मुंह फेर दो मस्जिदे ह़राम की तरफ़ और ऐ मुसलमानो तुम जहां कहीं हो अपना मुंह उसी की तरफ़ करो(फ़ा263) और वह जिन्हें किताब मिली है ज़रूर जानते हैं कि यह उनके रब की तरफ़ से हक़ है (फ़ा264)

(फ़ा255) **शाने नुज़ूल:** यह आयत यहूद के हक़ में नाज़िल हुई जब बजाए बैतुल मक़दिस के कअ़बा मुअ़ज़्ज़मा को क़िबला बनाया गया उस पर उन्होंने तअ़न किये क्यों कि यह उन्हें नागवार था और वह नस्ख़ के क़ाइल न थे एक क़ौल पर यह आयत मुश्रिकीने मक्का के और एक क़ौल पर मुनाफ़िक़ीन के हक़ में नाज़िल हुई और यह भी हो सकता है कि इससे कुफ़्फ़ार के यह सब गरोह मुराद हों क्योंकि तअ़न व तशनीअ़ में सब शरीक थे और कुफ़्फ़ार के तअ़न करने से क़ब्ल क़ुरआन पाक में उसकी ख़बर दे देना ग़ैबी ख़बरों में से है तअ़न करने वालों को बेवक़ूफ़ इस लिए कहा गया कि वह निहायत वाज़ेह बात पर मोअ़्तरिज़ हुए बावजूद कि अम्बियाए साबिक़ीन ने नबीए आख़िरुज़्ज़मां के ख़साइस में आपका लक़ब ज़ुलक़िब्लतैन ज़िक्र फ़रमाया और तहवीले क़िब्ला उसकी दलील है कि यह वही नबी हैं जिनकी पहले अम्बिया ख़बर देते आए ऐसे रौशन निशान से फ़ायदा न उठाना और मोअ़्तरिज़ होना कमाले हिमाक़त है (फ़ा256) क़िब्ला उस जिहत को कहते हैं जिसकी तरफ़ आदमी नमाज़ में मुंह करता है यहां क़िब्ला से बैतुल मक़दिस मुराद है (फ़ा257) उसे इख़्तियार है जिसे चाहे क़िब्ला बनाये किसी को क्या जाए एतेराज़ बन्दे का काम फ़रमांबरदारी है (फ़ा258) दुनिया व आख़िरत में **मसला:** दुनिया में तो यह कि मुसलमान की शहादत मोमिन काफ़िर सब के हक़ में शरअ़न मोअ़्तबर है और काफ़िर की शहादत मुसलमान पर मोअ़्तबर नहीं **मसला:** इससे यह भी मालूम हुआ कि इस उम्मत का इजमाअ़ हुज्जत लाज़िमुल क़बूल है **मसला:** अमवात के हक़ में भी इस उम्मत की शहादत मोअ़्तबर है रहमत व अ़ज़ाब के फ़रिश्ते उसके मुताबिक़ अ़मल करते हैं सिहाह़ की हदीस में है कि सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के सामने एक जनाज़ा गुज़रा सहाबा ने उसकी तारीफ़ की हुज़ूर ने फ़रमाया वाजिब हुई फिर दूसरा जनाज़ा गुज़रा सहाबा **(बक़िया सफ़्हा 70 पर)**

رَّبِّهِمْ ۗ وَمَا اللّٰهُ بِغَافِلٍ عَمَّا يَعْمَلُوْنَ ۝ وَلَئِنْ اَتَيْتَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ بِكُلِّ اٰيَةٍ مَّا تَبِعُوْا قِبْلَتَكَ ۚ وَمَآ اَنْتَ بِتَابِعٍ قِبْلَتَهُمْ ۚ وَمَا بَعْضُهُمْ
بِتَابِعٍ قِبْلَةَ بَعْضٍ ۗ وَلَئِنِ اتَّبَعْتَ اَهْوَآءَهُمْ مِّنْۢ بَعْدِ مَا جَآءَكَ مِنَ الْعِلْمِ ۙ اِنَّكَ اِذًا لَّمِنَ الظّٰلِمِيْنَ ۝ اَلَّذِيْنَ اٰتَيْنٰهُمُ الْكِتٰبَ يَعْرِفُوْنَهٗ
كَمَا يَعْرِفُوْنَ اَبْنَآءَهُمْ ۗ وَاِنَّ فَرِيْقًا مِّنْهُمْ لَيَكْتُمُوْنَ الْحَقَّ وَهُمْ يَعْلَمُوْنَ ۝ اَلْحَقُّ مِنْ رَّبِّكَ فَلَا تَكُوْنَنَّ مِنَ الْمُمْتَرِيْنَ ۝
وَلِكُلٍّ وِّجْهَةٌ هُوَ مُوَلِّيْهَا فَاسْتَبِقُوا الْخَيْرٰتِ ۗ اَيْنَ مَا تَكُوْنُوْا يَاْتِ بِكُمُ اللّٰهُ جَمِيْعًا ۗ اِنَّ اللّٰهَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ۝ وَمِنْ حَيْثُ خَرَجْتَ
فَوَلِّ وَجْهَكَ شَطْرَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ ۗ وَاِنَّهٗ لَلْحَقُّ مِنْ رَّبِّكَ ۗ وَمَا اللّٰهُ بِغَافِلٍ عَمَّا تَعْمَلُوْنَ ۝ وَمِنْ حَيْثُ خَرَجْتَ فَوَلِّ وَجْهَكَ شَطْرَ

मिर्रब्बिहिम् व मल्लाहु बिग़ाफ़िलिन् अ़म्मा यअ़्मलून(144)व लइन् अतैतल्लज़ी–न ऊतुल्– किता–ब बिकुल्लि आयतिम्मा तबिअू. क़िब्ल–त क व मा अन्–त बिता–बिअ़िन् क़िब्ल–तहुम् व मा बअ़्जुहुम् बिताबिअ़िन् क़िब्ल–त बअ़्ज़िन् व लइनित्तबअ़्–त अह्वा–अ हुम् मिम्बअ़्दि मा जा–अ–क मिन–ल्अ़िल्मि इन्–क इज़ल्–ल मिनज़् ज़ालिमीन(145)अल्लज़ी–न आतैना हुमुल्किता–ब यअ़्रिफ़ू–नहू कमा यअ़्रिफ़ू–न अब्ना–अहुम् व इन्–न फ़रीक़म्–मिन्हुम् ल–यक्तुमूनल्–हक़्–क़ व हुम् यअ़्–लमून(146)अल्हक़्क़ु मिर्रब्बि–क फ़ला तकूनन्–न मिनल्–मुम्तरीन(147)व लिकुल्लिंव् विज्हतुन् हु–व मुवल्लीहा फ़स्तबिक़ुल्–ख़ैराति ऐ–न मा तकूनू यअ़्ति बिकुमुल्लाहु ज़मीअ़न् इन्नल्ला–ह अ़ला कुल्लि शैइन् क़दीर(148)व मिन् हैसु ख़–रज्–त फ़ वल्लि वज्ह–क शत्रल् मस्जिदिल् ह़रामि व इन्नहु लल्ह़क़्क़ु मिर्रब्बि–क व मल्लाहु बिग़ाफ़िलिन् अ़म्मा तअ़्–मलून(149)व मिन् हैसु ख़–रज्–त फ़ वल्लि वज्–ह–क शत्रल्

और अल्लाह उनके कोतकों (बुरे कामों) से बे ख़बर नहीं। (144) और अगर तुम उन किताबियों के पास हर निशानी लेकर आओ वह तुम्हारे क़िब्ला की पैरवी न करेंगे (फ़ा265) और न तुम उनके क़िब्ला की पैरवी करो (फ़ा266) और वह आपस में भी एक दूसरे के क़िब्ला के ताबेअ़् नहीं(फ़ा267) और (ऐ सुनने वाले कसे बाशद) अगर तू उनकी ख़्वाहिशों पर चला बाद इसके कि तुझे इल्म मिल चुका तो उस वक़्त तू ज़रूर सितमगार होगा।(145) जिन्हें हमने किताब अ़ता फ़रमाई (फ़ा268) वह उस नबी को ऐसा पहचानते हैं जैसे आदमी अपने बेटों को पहचानता है (फ़ा269) और बेशक उन में एक गरोह जान बूझ कर हक़ छुपाते हैं।(146) (फ़ा270) (ऐ सुनने वाले) यह हक़ है तेरे रब की तरफ़ से (या हक़ वही है जो तेरे रब की तरफ़ से हो) (147) तो ख़बरदार तू शक न करना। (रुकूअ़् 1) और हर एक के लिए तवज्जोह की एक सम्त है कि वह उसी की तरफ़ मुंह करता है तो यह चाहो कि नेकियों में औरों से आगे निकल जायें तुम कहीं हो अल्लाह तुम सब को इकट्ठा ले आएगा (फ़ा271) बेशक अल्लाह जो चाहे करे।(148) और जहां से आओ(फ़ा272) अपना मुंह मस्जिदे ह़राम की तरफ़ करो और वह ज़रूर तुम्हारे रब की तरफ़ से हक़ है और अल्लाह तुम्हारे कामों से ग़ाफ़िल नहीं।(149) और ऐ महबूब तुम जहां से आओ अपना मुंह

(फ़ा265) क्यों कि निशानी उसको नाफ़ेअ़् हो सकती है जो किसी शुबहा की वजह से मुन्किर हो यह तो हसद व एनाद से इंकार करते हैं उन्हें इससे क्या नफ़ा होगा। (फ़ा266) माना यह हैं कि यह क़िबला मन्सूख़ न होगा तो अब अहले किताब को यह तमअ़्. न रखना चाहिए कि आप उन में से किसी के क़िब्ला की तरफ़ रुख़ करेंगे। (फ़ा267) हर एक का क़िब्ला जुदा है यहूद तो सख़रए बैतुल मक़दिस को अपना क़िब्ला क़रार देते हैं और नसारा बैतुल मक़दिस के उस मकाने शर्क़ी को जहां नफ़ख़े रूह हज़रत मसीह वाक़ेअ़् हुआ (फ़तह) (फ़ा268) यानी उलमाए यहूद व नसारा (फ़ा269) मतलब यह है कि कुतुबे साबिक़ा में नबीए आख़िरुज़्ज़मां हुज़ूर सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के औसाफ़ ऐसे वाज़ेह और साफ़ बयान किये गए हैं जिन से उलमाए अहले किताब को हुज़ूर के ख़ातिमुल अम्बिया होने में कुछ शक व शुबहा बाक़ी नहीं रह सकता और वह हुज़ूर के उस मन्सबे आ़ली को अतम यक़ीन के साथ जानते हैं अहबार यहूद में से अ़ब्दुल्लाह बिन सलाम मुशर्रफ़ ब-इस्लाम हुए तो हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने उनसे दरियाफ़्त किया कि आयत *यअ़्रिफ़ू-नहू* में जो मअ़्रेफ़त बयान की गई है उसकी क्या शान है उन्होंने फ़रमाया कि ऐ उमर मैंने हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को देखा तो बे इश्तेबाह पहचान लिया और मेरा हुज़ूर को पहचानना अपने बेटों के पहचानने से बदर्जहा ज़्यादा अतम व अकमल है हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने फ़रमाया यह **(बक़िया सफ़हा 70 पर)**

الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ ۚ وَحَيْثُ مَا كُنْتُمْ فَوَلُّوا وُجُوهَكُمْ شَطْرَهُ لِئَلَّا يَكُونَ لِلنَّاسِ عَلَيْكُمْ حُجَّةٌ إِلَّا الَّذِينَ ظَلَمُوا مِنْهُمْ فَلَا تَخْشَوْهُمْ
وَاخْشَوْنِي وَلِأُتِمَّ نِعْمَتِي عَلَيْكُمْ وَلَعَلَّكُمْ تَهْتَدُونَ ﴿١٥٠﴾ كَمَا أَرْسَلْنَا فِيكُمْ رَسُولًا مِنْكُمْ يَتْلُو عَلَيْكُمْ آيَاتِنَا وَيُزَكِّيكُمْ وَيُعَلِّمُكُمُ
الْكِتَابَ وَالْحِكْمَةَ وَيُعَلِّمُكُمْ مَا لَمْ تَكُونُوا تَعْلَمُونَ ﴿١٥١﴾ فَاذْكُرُونِي أَذْكُرْكُمْ وَاشْكُرُوا لِي وَلَا تَكْفُرُونِ ﴿١٥٢﴾ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اسْتَعِينُوا
بِالصَّبْرِ وَالصَّلَاةِ ۚ إِنَّ اللَّهَ مَعَ الصَّابِرِينَ ﴿١٥٣﴾ وَلَا تَقُولُوا لِمَنْ يُقْتَلُ فِي سَبِيلِ اللَّهِ أَمْوَاتٌ ۚ بَلْ أَحْيَاءٌ وَلَٰكِنْ لَا تَشْعُرُونَ ﴿١٥٤﴾ وَلَنَبْلُوَنَّكُمْ
بِشَيْءٍ مِنَ الْخَوْفِ وَالْجُوعِ وَنَقْصٍ مِنَ الْأَمْوَالِ وَالْأَنْفُسِ وَالثَّمَرَاتِ ۗ وَبَشِّرِ الصَّابِرِينَ ﴿١٥٥﴾ الَّذِينَ إِذَا أَصَابَتْهُمْ مُصِيبَةٌ قَالُوا إِنَّا لِلَّهِ وَ

मस्जिदिल् ह़रामि व हैसु मा कुन्तुम् फ़ वल्लू वुजू–हकुम् शत्–रहू लि–अल्ला यकू–न लिन्नासि अ़लैकुम् हुज्जतुन् इल्लल्लज़ी–न ज़–लमू मिन्हुम् फ़ला तख़्शौहुम् वख़्शौनी व लि उतिम्–म निअ्–मती अ़लैकुम् व ल–अ़ल्लकुम् तह्तदून(150)कमा अर्सल्ना फ़ीकुम् रसूलम्–मिन्कुम् यत्लू अ़लैकुम् आयातिना व युज़क्कीकुम् व युअ़ल्लिमुकुमुल् किता–ब वल्हिक्म–त व युअ़–ल्लिमुकुम् मालम् तकूनू तअ़्लमून(151)फ़ज़्कुरूनी अज़्कुर्कुम् वश्कुरूली व ला तक्फ़ुरून(152)या अय्युहल्लज़ी–न आ–मनुस् तअ़ीनू बिस्सब्रि वस्सलाति इन्नल्ला–ह म–अ़स्साबिरीन(153)व ला तक़ूलू लिमंय्युक़्तलु फ़ी सबीलिल्लाहि अम्वातुन् बल् अह्याउंव्–व लाकिल्ला तश्अ़ुरून(154)व ल–नब्लुवन्नकुम् बि शैइम्–मिनल्ख़ौफ़ि वल्जूअ़ि व नक़्सिम्मिनल्–अम्वालि वल्–अन्फ़ुसि वस्स–मराति व बश्–शिरिस्साबिरीन(155)अल्लज़ी–न इज़ा अस़ाबत्–हुम् मुसीबतुन् क़ालू इन्ना लिल्लाहि व

मस्जिदे ह़राम की तरफ़ करो और ऐ मुसलमानों तुम जहां कहीं हो अपना मुंह उसी की तरफ़ करो कि लोगों को तुम पर कोई हुज्जत न रहे(फ़ा273) मगर जो उनमें ना इन्साफ़ी करें(फ़ा274) तो उन से न डरो और मुझ से डरो और यह इस लिए है कि मैं अपनी निअ़्मत तुम पर पूरी करूं और किसी तरह तुम हिदायत पाओ।(150) जैसा हमने तुम में भेजा एक रसूल तुम में से (फ़ा275) कि तुम पर हमारी आयतें तिलावत फ़रमाता है और तुम्हें पाक करता(फ़ा276) और किताब और पुख़्ता इल्म सिखाता है (फ़ा277) और तुम्हें वह तालीम फ़रमाता है जिसका तुम्हें इल्म न था।(151)तो मेरी याद करो मैं तुम्हारा चरचा करूंगा(फ़ा278) और मेरा हक़ मानो और मेरी नाशुक्री न करो। (152) (रुकूअ़.2) ऐ ईमान वालो सब्र और नमाज़ से मदद चाहो (फ़ा279) बेशक अल्लाह साबिरों के साथ है। (153) और जो ख़ुदा की राह में मारे जायें उन्हें मुर्दा न कहो(फ़ा280) बल्कि वह ज़िन्दा हैं, हाँ तुम्हें ख़बर नहीं (154) (फ़ा281) और ज़रूर हम तुम्हें आज़मायेंगे कुछ डर और भूक से (फ़ा282) और कुछ मालों और जानों और फलों की कमी से (फ़ा283) और ख़ुशख़बरी सुना उन सब्र वालों को (155) कि जब उन पर कोई मुसीबत पड़े तो कहें हम अल्लाह के माल हैं और

(फ़ा273) और कुफ़्फ़ार को यह तअ़्न करने का मौक़ा न मिले कि उन्होंने क़ुरैश की मुख़ालफ़त में हज़रत इब्राहीम व इस्माईल अ़लैहिमस्सलाम का क़िब्ला भी छोड़ दिया बावजूदकि नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम उनकी औलाद में हैं और उनकी अ़ज़मत व बुज़ुर्गी मानते भी हैं (फ़ा274) और बराहे एनाद बेजा एतेराज़ करें (फ़ा275) यानी सय्यदे आ़लम मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम (फ़ा276) नजासत शिर्क व जुनूब से (फ़ा277) हिकमत से मुफ़स्सिरीन ने फ़िक़ह मुराद ली है (फ़ा278) ज़िक्र तीन तरह का होता है (१) लिसानी (२) क़लबी (३) बिलजवारेह। ज़िक्रे लिसानी तस्बीह तक़दीस सना वग़ैरह बयान करना है ख़ुतबा तौबा इस्तिग़्फ़ार दुआ़ वग़ैरह इसमें दाख़िल हैं। ज़िक्रे क़लबी अल्लाह तआ़ला की निअ़्मतों का याद करना उसकी अ़ज़मत व किब्रियाई और उसके दलाइले क़ुदरत में ग़ौर करना उलमा का इस्तिम्बाते मसाइल में ग़ौर करना भी इसी में दाख़िल है। ज़िक्रे बिलजवारेह, यह है कि आज़ा ताअ़ते इलाही में मशग़ूल हों जैसे हज के लिए सफ़र करना यह ज़िक्र बिलजवारेह में दाख़िल है नमाज़ तीनों क़िस्म के ज़िक्र पर मुश्तमिल है तस्बीह व तकबीर सना व क़िराअत तो ज़िक्रे लिसानी है और ख़ुशूअ़ व ख़ुज़ूअ़ इख़्लास ज़िक्रे क़लबी और क़ियाम रुकूअ़ व सुजूद वग़ैरह का ज़िक्र बिलजवारेह है इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा ने फ़रमाया अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है तुम ताअ़त बजा लाकर मुझे याद करो मैं तुम्हें अपनी इमदाद के साथ याद करूंगा सहीहैन की हदीस में है कि अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है कि अगर बन्दा मुझे तन्हाई में याद करता है तो मैं भी उसको ऐसे ही याद फ़रमाता हूं और अगर वह मुझे जमाअ़त में याद करता है तो मैं उसको उससे बेहतर जमाअ़त में याद करता **(बक़िया सफ़हा 71 पर)**

إِنَّآ إِلَيْهِ رٰجِعُوْنَ ﴿١٥٦﴾ أُولٰٓئِكَ عَلَيْهِمْ صَلَوٰتٌ مِّنْ رَّبِّهِمْ وَ رَحْمَةٌ ۗ وَأُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُهْتَدُوْنَ ﴿١٥٧﴾ إِنَّ الصَّفَا وَالْمَرْوَةَ مِنْ شَعَآئِرِ اللّٰهِ ۚ فَمَنْ
حَجَّ الْبَيْتَ أَوِ اعْتَمَرَ فَلَا جُنَاحَ عَلَيْهِ أَنْ يَّطَّوَّفَ بِهِمَا ۚ وَمَنْ تَطَوَّعَ خَيْرًا ۙ فَإِنَّ اللّٰهَ شَاكِرٌ عَلِيْمٌ ﴿١٥٨﴾ إِنَّ الَّذِيْنَ يَكْتُمُوْنَ مَآ أَنْزَلْنَا مِنَ
الْبَيِّنٰتِ وَالْهُدٰى مِنْ بَعْدِ مَا بَيَّنّٰهُ لِلنَّاسِ فِي الْكِتٰبِ ۙ أُولٰٓئِكَ يَلْعَنُهُمُ اللّٰهُ وَ يَلْعَنُهُمُ اللّٰعِنُوْنَ ﴿١٥٩﴾ إِلَّا الَّذِيْنَ تَابُوْا وَ أَصْلَحُوْا وَبَيَّنُوْا
فَأُولٰٓئِكَ أَتُوْبُ عَلَيْهِمْ ۚ وَأَنَا التَّوَّابُ الرَّحِيْمُ ﴿١٦٠﴾ إِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَمَاتُوْا وَهُمْ كُفَّارٌ أُولٰٓئِكَ عَلَيْهِمْ لَعْنَةُ اللّٰهِ وَالْمَلٰٓئِكَةِ وَ النَّاسِ
أَجْمَعِيْنَ ﴿١٦١﴾ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ۚ لَا يُخَفَّفُ عَنْهُمُ الْعَذَابُ وَلَا هُمْ يُنْظَرُوْنَ ﴿١٦٢﴾ وَ إِلٰهُكُمْ إِلٰهٌ وَّاحِدٌ ۚ لَآ إِلٰهَ إِلَّا هُوَ الرَّحْمٰنُ الرَّحِيْمُ ﴿١٦٣﴾

इन्ना इलैहि राजिअून(156)उलाइ–क अ़लैहिम् स़–लवातुम् मिर्रब्बिहिम् व रह़्मतुन् व उलाइ–क हुमुल्मुह्–तदून(157)इन्नस्स़फ़ा वल्मर्–व–त मिन् शआ–इरिल्लाहि फ़–मन् ह़ज्जल्बै–त अविअ़्–त–म–र फ़ला जुना–ह़ अ़लैहि अंय्–त्तव्–व–फ़ बिहिमा व मन्त–तव्–व–अ़ ख़ैरन् फ़–इन्नल्ला–ह शाकिरुन् अ़लीम(158)इन्न–ल्लज़ी–न यक्तुमू–न मा अन्ज़ल्ना मिनल्बय्यिनाति वल्हुदा मिम्बअ़्दि मा बय्यन्नाहु लिन्नासि फ़िल्किताबि उलाइ–क यल्अ़नुहुमुल्लाहु व यल्अ़ नुहुमुल्लाअ़िनून (159)इल्ल–ल्लज़ी–न ताबू व अस़्लहू व बय्यनू फ़ उलाइ–क अतूबु अ़लैहिम् व अनत्तव्वाबुर्रह़ीम(160) इन्न–ल्लज़ी–न क–फ़रू व मातू व हुम् कुफ़्फ़ारुन् उलाइ–क अ़लैहिम् लअ़्–नतुल्लाहि वल्मलाइ–कति वन्नासि अज्मअ़ीन(161)ख़ालिदी–न फ़ीहा ला युख़फ़्फ़.फ़ु अ़न्हुमुल् अ़ज़ाबु व ला हुम् युन्ज़रून(162)व इलाहुकुम् इलाहुंव्वाहिदुन् ला इला–ह इल्ला हुवर्रह़्मानुर्रह़ीम(163)

हमको उसी की तरफ़ फिरना(156) (फ़ा284) यह लोग हैं जिन पर उनके रब की दुरूदें हैं और रहमत और यही लोग राह पर हैं।(157) बेशक सफ़ा और मरवह (फ़ा285) अल्लाह के निशानों से हैं(फ़ा286) तो जो उस घर का हज या उमरा करे उस पर कुछ गुनाह नहीं कि उन दोनों के फेरे करे (फ़ा287) और जो कोई भली बात अपनी तरफ़ से करे तो अल्लाह नेकी का सिला देने वाला ख़बरदार है।(158) बेशक वह जो हमारी उतारी हुई रौशन बातों और हिदायत को छुपाते हैं(फ़ा288) बाद इसके कि लोगों के लिए हम उसे किताब में वाज़ेह फ़रमा चुके उन पर अल्लाह की लानत है और लानत करने वालों की लानत।(159) (फ़ा289) मगर वह जो तौबा करें और संवारें और ज़ाहिर कर दें तो मैं उन की तौबा क़बूल फ़रमाऊंगा और मैं ही हूं बड़ा तौबा क़बूल फ़रमाने वाला मेहरबान।(160) बेशक वह जिन्होंने कुफ़्र किया और काफ़िर ही मरे उन पर लानत है अल्लाह और फ़रिश्तों और आदमियों सब की।(161)(फ़ा290)हमेशा रहेंगे उसमें न उन पर से अ़ज़ाब हलका हो और न उन्हें मुहलत दी जाये।(162) और तुम्हारा मअ़्बूद एक मअ़्बूद है (फ़ा291) उस के सिवा कोई मअ़्बूद नहीं मगर वही बड़ी रहमत वाला मेहरबान।(163) (रुकूअ़् 3)

(फ़ा285) सफ़ा व मरवह मक्का मुकर्रमा के दो पहाड़ हैं जो कअ़्बा मुअज़्ज़मा के मुक़ाबिल जानिबे शर्क़ वाक़ेअ़् हैं मरवह शिमाल की तरफ़ माइल और सफ़ा जुनूब की तरफ़, जबल अबी क़ुबैस के दामन में है हज़रत हाजरा और हज़रत इस्माईल अ़लैहिस्सलाम ने इन दोनों पहाड़ों के क़रीब उस मक़ाम पर जहां चाहे ज़मज़म है बहुक्मे इलाही सुकूनत इख़्तियार फ़रमाई उस वक़्त यह मक़ाम संगलाख़ बयाबान था न यहां सब्ज़ा था न पानी न ख़ुर्द व नोश का कोई सामान, रज़ाए इलाही के लिए उन मक़बूल बन्दों ने सब्र किया हज़रत इस्माईल अ़लैहिस्सलाम बहुत ख़ुर्द साल थे तिश्नगी से जब उनकी जां बलबी की हालत हुई तो हज़रत हाजरा बेताब होकर कोहे सफ़ा पर तशरीफ़ ले गईं वहां भी पानी न पाया तो उतर कर नशेब के मैदान में दौड़ती हुई मरवह तक पहुंचीं इस तरह सात मर्तबा गर्दिश हुई और अल्लाह तआ़ला ने *इन्नल्ला–ह मअ़स्साबिरीन* का जलवा इस तरह ज़ाहिर फ़रमाया कि ग़ैब से एक चश्मा ज़मज़म नुमूदार किया और उनके सब्र व इख़्लास की बरकत से उनके इत्तेबाअ़् में इन दोनों पहाड़ों के दर्मियान दौड़ने वालों को मक़बूले बारगाह किया और उन दोनों को महल्ले इजाबते दुआ़ बनाया (फ़ा286) शआइरिल्लाह से दीन के अअ़्लाम यानी निशानियां मुराद हैं ख़्वाह वह मकानात हों जैसे कअ़्बा, अ़रफ़ात, मुज़्दलफ़ा, जिमारे सलासा, सफ़ा, मरवह, मिना, मसाजिद या अज़्मिना जैसे रमज़ान अशहरे हराम ईदे फ़ित्र व अज़हा जुमा, अय्यामे तशरीक़ या दूसरे अ़लामात जैसे अज़ाने इक़ामत नमाज़ बा–जमाअ़त नमाज़े जुमा, नमाज़े ईदैन ख़तना यह सब शआइरे दीन हैं। (फ़ा287) शाने नुज़ूलः ज़मानए जाहिलियत में सफ़ा व मरवह पर दो बुत रखे थे सफ़ा पर जो बुत था उसका नाम असाफ़ और जो **(बक़िया सफ़हा 71 पर)**

اِنَّ فِیْ خَلْقِ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَاخْتِلَافِ الَّیْلِ وَالنَّهَارِ وَالْفُلْكِ الَّتِیْ تَجْرِیْ فِی الْبَحْرِ بِمَا یَنْفَعُ النَّاسَ وَمَاۤ اَنْزَلَ اللّٰهُ مِنَ السَّمَآءِ مِنْ مَّآءٍ فَاَحْیَا بِهِ الْاَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا وَبَثَّ فِیْهَا مِنْ كُلِّ دَآبَّةٍ ۪ وَّتَصْرِیْفِ الرِّیٰحِ وَالسَّحَابِ الْمُسَخَّرِ بَیْنَ السَّمَآءِ وَالْاَرْضِ لَاٰیٰتٍ لِّقَوْمٍ یَّعْقِلُوْنَ ۝ وَمِنَ النَّاسِ مَنْ یَّتَّخِذُ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ اَنْدَادًا یُّحِبُّوْنَهُمْ كَحُبِّ اللّٰهِ ؕ وَالَّذِیْنَ اٰمَنُوْۤا اَشَدُّ حُبًّا لِّلّٰهِ ؕ وَلَوْ یَرَى الَّذِیْنَ ظَلَمُوْۤا اِذْ یَرَوْنَ الْعَذَابَ ۙ اَنَّ الْقُوَّةَ لِلّٰهِ جَمِیْعًا ۙ وَّاَنَّ اللّٰهَ شَدِیْدُ الْعَذَابِ ۝ اِذْ تَبَرَّاَ الَّذِیْنَ اتُّبِعُوْا مِنَ الَّذِیْنَ اتَّبَعُوْا وَرَاَوُا الْعَذَابَ وَتَقَطَّعَتْ بِهِمُ الْاَسْبَابُ ۝ وَقَالَ الَّذِیْنَ اتَّبَعُوْا لَوْ اَنَّ لَنَا كَرَّةً فَنَتَبَرَّاَ مِنْهُمْ كَمَا تَبَرَّءُوْا مِنَّا ؕ كَذٰلِكَ یُرِیْهِمُ اللّٰهُ اَعْمَالَهُمْ حَسَرٰتٍ

इन्–न फ़ी ख़ल्क़िस्समावाति वल्अर्ज़ि वख़्तिलाफ़िल्लैलि वन्नहारि वल्फ़ुल्किल्लती तज्री फ़ि ल्बह्रि बिमा यन्फ़अुन्ना–स व मा अन्ज़लल्लाहु मि–नस्समा–इ मिम्मा–इन् फ़–अह्या बिहिल्अर्–ज़ बअ्–द मौतिहा व बस्–स फ़ीहा मिन् कुल्लि दाब्बतिंव् व तस्री–फ़िर्रियाहि वस्सहाबिल् मुसख़्ख़रि बैनस्समाइ वल्अर्ज़ि ल–आयातिल्–लिक़ौमिंय्यअ्क़िलून(164)व मिनन्नासि मंय्यत्तख़िज़ु मिन् दूनिल्लाहि अन्दादंय्–युहिब्बू–नहुम् क–हुब्बिल्लाहि वल्लज़ी–न आमनू अशद्दु हुब्बल्लिल्लाहि व लौ य–रल्लज़ी–न ज़–लमू इज़् यरौनल् अज़ा–ब अन्नल्क़ुव्–व–त लिल्लाहि जमीअंव् व अन्नल्ला–ह शदीदुल्–अज़ाब(165)इज़् तबर्रअल्ल–ज़ीनत्तुबिअू मिनल्लज़ीनत्त–बअू व र–अवुल्अज़ा–ब व तक़–त्तअ़त् बिहिमुल्अस्बाब(166)व क़ालल्लज़ीनत्तबअू लौ अन्–न लना कर्रतन् फ़–न–तबर्र अमिन्हुम् कमा तबर्रअू मिन्ना कज़ालि–क युरीहिमुल्लाहु अअ्–मा–लहुम् ह–सरातिन्

बेशक आसमानों (फ़ा292) और ज़मीन की पैदाइश और रात व दिन का बदलते आना और कश्ती कि दरिया में लोगों के फ़ाइदे लेकर चलती है और वह जो अल्लाह ने आसमान से पानी उतार कर मुर्दा ज़मीन को उस से जिला दिया और ज़मीन में हर क़िस्म के जानवर फैलाए और हवाओं की गर्दिश और वह बादल कि आसमान व ज़मीन के बीच में हुक्म का बांधा है इन सब में अक़्लमन्दों के लिए ज़रूर निशानियां हैं। (164) और कुछ लोग अल्लाह के सिवा और मअ़बूद बना लेते हैं कि उन्हें अल्लाह की तरह महबूब रखते हैं, और ईमान वालों को अल्लाह के बराबर किसी की मुहब्बत नहीं और कैसी हो अगर देखें ज़ालिम वह वक़्त जब कि अ़ज़ाब उन की आंखों के सामने आएगा इस लिए कि सारा ज़ोर ख़ुदा को है, और इस लिए कि अल्लाह का अ़ज़ाब बहुत सख़्त है।(165)जब बेज़ार होंगे पेशवा अपने पैरुओं से (फ़ा293) और देखेंगे अ़ज़ाब और कट जायेंगी उन सब की डोरें।(166) (फ़ा294) और कहेंगे पैरौ काश हमें लौट कर जाना होता (दुनिया में) तो हम उनसे तोड़ देते जैसे उन्होंने हम से तोड़ दी यूंही अल्लाह उन्हें दिखाएगा उनके काम उन पर हसरतें होकर (फ़ा295)

(फ़ा292) कअ़बए मुअ़ज़्ज़मा के गिर्द मुशरिकीन के तीन सौ साठ बुत थे जिन्हें वह मअ़बूद एतेक़ाद करते थे उन्हें यह सुनकर बड़ी हैरत हुई कि मअ़बूद सिर्फ़ एक ही है उसके सिवा कोई मअ़बूद नहीं इस लिए उन्होंने हुज़ूर सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से ऐसी आयत तलब की जिस से वहदानियत पर इस्तिदलाल सही हो इस पर यह आयत नाज़िल हुई और उन्हें यह बताया गया कि आसमान और उसकी बुलन्दी और उसका बग़ैर सुतून और इलाक़ा के क़ायम रहना और जो कुछ उसमें नज़र आता है आफ़ताब महताब सितारे वग़ैरह यह तमाम और ज़मीन और उसकी दराज़ी और पानी पर मफ़रूश होना और पहाड़ दरिया चश्मे मुआ़विन जवाहर दरख़्त सब्ज़ा फल और शब व रोज़ का आना जाना घटना बढ़ना कश्तियां और उनका मुसख़्ख़र होना बावजूद बहुत से वज़न और बोझ के रूए आब पर रहना और आदमियों का उनमें सवार होकर दरिया के अ़जाइब देखना और तिजारतों में उनसे बारबरदारी का काम लेना और बारिश और उससे ख़ुश्क व मुर्दा हो जाने के बाद ज़मीन का सर सब्ज़ व शादाब करना और ताज़ा ज़िन्दगी अता फ़रमाना और ज़मीन को अनवाअ़ व अक़साम के जानवरों से भर देना जिन में बेशुमार अ़जाइब हिकमत वदीअ़त हैं इसी तरह हवाओं की गर्दिश और उनके ख़्वांस और हवा के अ़जाइबात और अब्र और उसका इतने कसीर पानी के साथ आसमान व ज़मीन के दर्मियान मुअ़ल्लक़ रहना यह आठ अनवाअ़ हैं जो हज़रत क़ादिरे मुख़्तार के इल्म व हिकमत और उसकी वहदानियत पर बुरहाने क़वी हैं और उनकी दलादत वहदानियत पर बेशुमार वुजूह से है इजमाली बयान यह है कि यह सब उमूरे मुमकिना हैं और उनका वजूद बहुत से मुख़्तलिफ़ तरीक़ों से मुमकिन था मगर वह मख़्सूस शान से वजूद में आये यह दलालत करता है कि ज़रूर उनके लिए मूजिद है क़ादिर व हकीम जो ब–मुक़्तज़ाए हिकमत व मशीयत जैसा चाहता है बनाता है किसी को दख़ल व एतेराज़ की मजाल नहीं वह मअ़बूद बिलयक़ीन वाहिद व **(बक़िया सफ़हा 72 पर)**

عَلَيْهِمْ ۚ وَمَا هُمْ بِخٰرِجِيْنَ مِنَ النَّارِ ﴿۱۶۷﴾ يٰٓاَيُّهَا النَّاسُ كُلُوْا مِمَّا فِى الْاَرْضِ حَلٰلًا طَيِّبًا ۖ وَّلَا تَتَّبِعُوْا خُطُوٰتِ الشَّيْطٰنِ ؕ اِنَّهٗ لَكُمْ عَدُوٌّ مُّبِيْنٌ ﴿۱۶۸﴾

اِنَّمَا يَاْمُرُكُمْ بِالسُّوْٓءِ وَالْفَحْشَآءِ وَاَنْ تَقُوْلُوْا عَلَى اللّٰهِ مَا لَا تَعْلَمُوْنَ ﴿۱۶۹﴾ وَاِذَا قِيْلَ لَهُمُ اتَّبِعُوْا مَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ قَالُوْا بَلْ نَتَّبِعُ مَآ

اَلْفَيْنَا عَلَيْهِ اٰبَآءَنَا ؕ اَوَلَوْ كَانَ اٰبَآؤُهُمْ لَا يَعْقِلُوْنَ شَيْـًٔا وَّلَا يَهْتَدُوْنَ ﴿۱۷۰﴾ وَمَثَلُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا كَمَثَلِ الَّذِىْ يَنْعِقُ بِمَا لَا يَسْمَعُ

اِلَّا دُعَآءً وَّنِدَآءً ؕ صُمٌّۢ بُكْمٌ عُمْىٌ فَهُمْ لَا يَعْقِلُوْنَ ﴿۱۷۱﴾ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا كُلُوْا مِنْ طَيِّبٰتِ مَا رَزَقْنٰكُمْ وَاشْكُرُوْا لِلّٰهِ اِنْ

كُنْتُمْ اِيَّاهُ تَعْبُدُوْنَ ﴿۱۷۲﴾ اِنَّمَا حَرَّمَ عَلَيْكُمُ الْمَيْتَةَ وَالدَّمَ وَلَحْمَ الْخِنْزِيْرِ وَمَآ اُهِلَّ بِهٖ لِغَيْرِ اللّٰهِ ۚ فَمَنِ اضْطُرَّ غَيْرَ بَاغٍ وَّلَا عَادٍ فَلَآ اِثْمَ

अ़लैहिम् व मा हुम् बि–ख़ारिज़ी–न मिनन्नार(167)या अय्युहन्नासु कुलू मिम्मा फ़िल्अर्ज़ि हलालन् तय्यिबंव् व ला तत्तबिअू ख़ुतुवातिश्शैतानि इन्नहू लकुम् अ़दुव्वुम्मुबीन(168)इन्नमा यअ्–मुरुकुम् बिस्सू–इ वल्फ़ह्शा–इ व अन् तकूलू अ़लल्लाहि मा ला तअ्–लमून(169)व इज़ा की–ल लहुमुत्तबिअू मा अन्ज़लल्लाहु क़ालू बल् नत्तबिअु मा अल्फ़ैना अ़लैहि आबा–अना अ–व–लौ का–न आबा–उहुम् ला यअ्क़िलू–न शैअंव्–व ला यह्तदून(170)व म–सलुल्लज़ी–न क–फ़रू क–म–सलिल्लज़ी यन्अ़िकु बिमा ला यस्मअु इल्ला दुआ–अंव्–व निदा–अन् सुम्मुम् बुक्मुन् अुम्युन् फ़हुम् ला यअ्क़िलून (171)या अय्युहल्लज़ी–न आ–मनू कुलू मिन् तय्यिबाति मा र–ज़क़्नाकुम् वश्कुरू लिल्लाहि इन् कुन्तुम् इय्याहु तअ्बुदून(172)इन्नमा हर्र–म अ़लैकुमुल्मै–त–त वद्–द–म व लह्मल्–ख़िन्ज़ीरि व मा उहिल्–ल बिही लिग़ैरिल्लाहि फ़–म–निज़्तुर्–र ग़ै–र बाग़िंव्–व ला आ़दिन् फ़ला इस्–म

और वह दोज़ख़ से निकलने वाले नहीं। (रुकूअ् 4)(167) ऐ लोगो खाओ जो कुछ ज़मीन में (फ़ा296) हलाल पाकीज़ा है और शैतान के क़दम पर क़मद न रखो बेशक वह तुम्हारा खुला दुश्मन है।(168) वह तो तुम्हें यही हुक्म देगा बदी और बेहयाई का और यह कि अल्लाह पर वह बात जोड़ो जिसकी तुम्हें ख़बर नहीं।(169)और जब उनसे कहा जाये अल्लाह के उतारे पर चलो (फ़ा297) तो कहें बल्कि हम तो उस पर चलेंगे जिस पर अपने बाप दादा को पाया क्या अगरचे उनके बाप दादा न कुछ अ़क़्ल रखते हों न हिदायत।(170) (फ़ा298) और काफ़िरों की कहावत उस की सी है जो पुकारे ऐसे को कि ख़ाली चीख़ पुकार के सिवा कुछ न सुने (फ़ा299) बहरे, गूंगे, अन्धे, तो उन्हें समझ नहीं। (171) (फ़ा300) ऐ ईमान वालो खाओ हमारी दी हुई सुथरी चीज़ें और अल्लाह का एहसान मानो अगर तुम उसी को पूजते हो।(172) (फ़ा301) उसने यही तुम पर हराम किये हैं मुर्दार (फ़ा302) और ख़ून (फ़ा303) और सूअर का गोश्त (फ़ा304) और वह जानवर जो ग़ैरे ख़ुदा का नाम लेकर ज़िबह किया गया (फ़ा305) तो जो नाचार हो (फ़ा306) न यूं कि ख़्वाहिश से खाए और न यूं कि ज़रूरत से

(फ़ा296) यह आयत उन अश्ख़ास के हक़ में नाज़िल हुई जिन्होंने बिजार वग़ैरह को हराम क़रार दिया था। इससे मालूम हुआ कि अल्लाह तआ़ला की हलाल फ़रमाई हुई चीज़ों को हराम क़रार देना उसकी रज़्ज़ाक़ियत से बग़ावत है मुस्लिम शरीफ़ की हदीस में है अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है जो माल मैं अपने बन्दों को अ़ता फ़रमाता हूं वह उनके लिए हलाल है और इसी में है कि मैंने अपने बन्दों को बातिल से बे तअ़ल्लुक़ पैदा किया फिर उनके पास शयातीन आये और उन्होंने दीन से बहकाया और जो मैंने उनके लिए हलाल किया था उसको हराम ठहराया एक और हदीस में है हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा ने फ़रमाया मैंने यह आयत सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के सामने तिलावत की तो हज़रत सअ्द बिन अबी वक़ास ने खड़े होकर अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह! दुआ़ फ़रमाइये कि अल्लाह तआ़ला मुझे मुस्तजाबुद्दावात कर दे हुज़ूर ने फ़रमाया ऐ सअ्द अपनी ख़ुराक पाक करो मुस्तजाबुद्दावात हो जाओगे उस ज़ाते पाक की क़सम जिसके दस्ते क़ुदरत में मुहम्मद (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) की जान है आदमी अपने पेट में हराम का लुक़मा डालता है तो चालीस रोज़ तक क़बूलियत से महरूमी रहती है (तफ़सीरे इब्ने कसीर) (फ़ा297) तौहीद व क़ुरआन पर ईमान लाओ और पाक चीज़ों को हलाल जानो जिन्हें अल्लाह ने हलाल किया। (फ़ा298) जब बाप दादा दीन के उमूर को न समझते हों और राहे रास्त पर न हों तो उनकी पैरवी करना हिमाक़त व गुमराही है (फ़ा299) यानी जिस तरह चौपाए चराने वाले की सिर्फ़ आवाज़ ही सुनते हैं कलाम के माना नहीं समझते यही हाल उन कुफ़्फ़ार का है कि रसूले करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की सदाए मुबारक को सुनते हैं लेकिन उसके माना दिल नशीन करके इरशादे फ़ैज़े बुनियाद से फ़ाइदा नहीं उठाते। (फ़ा300) यह इस लिए कि वह हक़ बात सुनकर मुन्तफ़अ् न हुए कलामे हक़ उनकी ज़बान पर जारी न हुआ नसीहतों से उन्होंने फ़ाइदा न उठाया (फ़ा301) मसलाः इस आयत से **(बक़िया सफ़हा 72 पर)**

عَلَيْهِ ۚ اِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿۱۷۳﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ يَكْتُمُوْنَ مَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ مِنَ الْكِتٰبِ وَيَشْتَرُوْنَ بِهٖ ثَمَنًا قَلِيْلًا ۙ اُولٰٓئِكَ مَا يَاْكُلُوْنَ فِیْ بُطُوْنِهِمْ
اِلَّا النَّارَ وَلَا يُكَلِّمُهُمُ اللّٰهُ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ وَلَا يُزَكِّيْهِمْ ۚ وَلَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿۱۷۴﴾ اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ اشْتَرَوُا الضَّلٰلَةَ بِالْهُدٰى وَالْعَذَابَ بِالْمَغْفِرَةِ ۚ
فَمَآ اَصْبَرَهُمْ عَلَى النَّارِ ﴿۱۷۵﴾ ذٰلِكَ بِاَنَّ اللّٰهَ نَزَّلَ الْكِتٰبَ بِالْحَقِّ ۗ وَاِنَّ الَّذِيْنَ اخْتَلَفُوْا فِی الْكِتٰبِ لَفِیْ شِقَاقٍۭ بَعِيْدٍ ﴿۱۷۶﴾ لَيْسَ الْبِرَّ اَنْ تُوَلُّوْا
وُجُوْهَكُمْ قِبَلَ الْمَشْرِقِ وَالْمَغْرِبِ وَلٰكِنَّ الْبِرَّ مَنْ اٰمَنَ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ وَالْمَلٰٓئِكَةِ وَالْكِتٰبِ وَالنَّبِيّٖنَ ۚ وَاٰتَى الْمَالَ عَلٰى
حُبِّهٖ ذَوِی الْقُرْبٰى وَالْيَتٰمٰى وَالْمَسٰكِيْنَ وَابْنَ السَّبِيْلِ ۙ وَالسَّآئِلِيْنَ وَفِی الرِّقَابِ ۚ وَاَقَامَ الصَّلٰوةَ وَاٰتَى الزَّكٰوةَ ۚ وَالْمُوْفُوْنَ بِعَهْدِهِمْ اِذَا عٰهَدُوْا ۚ

अ़लैहि इन्नल्ला–ह ग़फूरुर्रहीम(173)इन्नल्लज़ी–न यक्तुमू–न मा अन्ज़लल्लाहु मिनल्–किताबि व यश्तरू–न बिही स–म–नन् क़लीलन् उलाइ–क मा यअ्कुलू–न फ़ी बुतूनिहिम् इल्लन्ना–र व ला युकल्–लिमुहुमुल्लाहु यौमल्–क़िया–मति व ला युज़क्कीहिम् व लहुम् अ़ज़ाबुन् अलीम(174)उलाइ–कल् लज़ीनश्त–र–वुज़्ज़ला–ल–त बिल्हुदा वल्अ़ज़ा–ब बिल्मग़्फ़ि–रति फ़मा अस्ब–र हुम् अ़लन्नार (175)ज़ालि–क बिअन्नल्ला–ह नज़्–ज़–लल्किता–ब बिल्–हक़्क़ि व इन्नल्–लज़ी–नख़्त–लफ़ू फ़िल् किताबि लफ़ी शिक़ाक़िम् बअ़ीद(176)लैसल्बिर्–र अन् तुवल्लू वुजू–हकुम् क़ि–ब– ललमश्रिक़ि वल्मग़्रिबि व लाकिन्नल्बिर्–र मन् आ–म–न बिल्लाहि वल्यौमिल् आख़िरि वल्मलाइ– कति वल्किताबि वन्नबिय्यी–न व आतल्मा–ल अ़ला हुब्बिही ज़विल्क़ुर्बा वल्यतामा वल्मसाकी–न वब्नस्सबीलि वस्सा–इली–न व फ़िर्रिक़ाबि व अक़ा–मस्सला–त व आतज़्ज़का–त वल्मूफू–न बि–अ़हदिहिम् इज़ा आ़–हदू

आगे बढ़े तो उस पर गुनाह नहीं बेशक अल्लाह बख़्शने वाला मेहरबान है।(173) वह जो छुपाते हैं (फ़ा307) अल्लाह की उतारी किताब और उसके बदले ज़लील क़ीमत ले लेते हैं (फ़ा308) वह अपने पेट में आग ही भरते हैं (फ़ा309) और अल्लाह क़ियामत के दिन उन से बात न करेगा और न उन्हें सुथरा करे, और उनके लिए दर्दनाक अ़ज़ाब है।(174) वह लोग हैं जिन्होंने हिदायत के बदले गुमराही मोल ली और बख़्शिश के बदले अ़ज़ाब तो किस दर्जा उन्हें आग की सहार (बरदाश्त) है।(175) यह इस लिए कि अल्लाह ने किताब हक़ के साथ उतारी और बेशक जो लोग किताब में इख़्तिलाफ़ डालने लगे (फ़ा310) वह ज़रूर परले सिरे के झगड़ालू हैं।(176) (रुकूअ़ 5) कुछ असल नेकी यह नहीं कि मुंह मशरिक़ या मग़रिब की तरफ़ करो (फ़ा311) हां असल नेकी यह कि ईमान लाये अल्लाह और क़ियामत और फ़रिश्तों और किताब और पैग़म्बरों पर (फ़ा312) और अल्लाह की मुहब्बत में अपना अ़ज़ीज़ माल दे रिश्तेदारों और यतीमों और मिस्कीनों और राहगीर और सायलों को और गर्दनें छुड़ाने में (फ़ा313) और नमाज़ क़ायम रखे और ज़कात दे और अपना क़ौल पूरा करने वाले जब अ़हद करें

(फ़ा307) **शाने नुज़ूलः** यहूद के उलमा व रुअसा जो उम्मीद रखते थे कि नबीए आख़िरुज़्ज़मां सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम उनमें से मबऊस होंगे जब उन्होंने देखा कि सय्यदे आ़लम मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम दूसरी क़ौम में से मबऊस फ़रमाए गए तो उन्हें यह अन्देशा हुआ कि लोग तौरेत व इन्जील में हुज़ूर के औसाफ़ देख कर आपकी फ़रमांबरदारी की तरफ़ झुक पड़ेंगे और उनके नज़राने हदिये तोहफ़े तहायफ़ सब बन्द हो जायेंगे हुकूमत जाती रहेगी इस ख़्याल से उन्हें हसद पैदा हुआ और तौरेत व इन्जील में जो हुज़ूर की नअ़्त व सिफ़त और आपके वक़्ते नबुव्वत का बयान था उन्होंने उसको छुपाया इस पर यह आयते करीमा नाज़िल हुई। **मसलाः** छुपाना यह भी है कि किताब के मज़मून पर किसी को मुत्तलअ़ न होने दिया जाये न वह किसी को पढ़ कर सुनाया जाये न दिखाया जाये और यह भी छुपाना है कि ग़लत तावीलें करके माना बदलने की कोशिश की जाये और किताब के असल माना पर पर्दा डाला जाये (फ़ा308) यानी दुनिया के हक़ीर नफ़ा के लिए इख़्फ़ाए हक़ करते हैं। (फ़ा309) क्यों कि यह रिशवतें और यह माल हराम जो हक़ पोशी के एवज़ उन्होंने लिया है। उन्हें आतिशे जहन्नम में पहुंचाएगा (फ़ा310) **शाने नुज़ूलः** यह आयत यहूद के हक़ में नाज़िल हुई कि उन्होंने तौरेत में इख़्तिलाफ़ किया बाज़ ने उसको हक़ कहा बाज़ ने बातिल बाज़ ने ग़लत तावीलें कीं बाज़ ने तहरीफ़ें। एक क़ौल यह है कि यह आयत मुशरिकीन के हक़ में नाज़िल हुई इस सूरत में किताब से कुरआन मुराद है और उनका इख़्तिलाफ़ यह है कि बाज़ उनमें से इसको शेअ़्र कहते थे बाज़ सहर बाज़ कहानत। (फ़ा311) **शाने नुज़ूलः** यह आयत यहूद व नसारा के हक़ में नाज़िल हुई क्योंकि यहूद ने बैतुल मक़दिस के मशरिक़ को और नसारा ने उसके मग़रिब को क़िब्ला बना रखा था और हर फ़रीक़ का गुमान था कि सिर्फ़ इस क़िब्ला ही की तरफ़ मुंह करना काफ़ी है इस आयत में उनका रद फ़रमा दिया गया कि बैतुल मक़दिस (बक़िया सफ़हा 73 पर)

وَالصّٰبِرِيْنَ فِى الْبَاْسَآءِ وَالضَّرَّآءِ وَحِيْنَ الْبَاْسِ ؕ اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ صَدَقُوْا ؕ وَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُتَّقُوْنَ ﴿١٧٧﴾ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا كُتِبَ عَلَيْكُمُ
الْقِصَاصُ فِى الْقَتْلٰى ؕ اَلْحُرُّ بِالْحُرِّ وَالْعَبْدُ بِالْعَبْدِ وَالْاُنْثٰى بِالْاُنْثٰى ؕ فَمَنْ عُفِىَ لَهٗ مِنْ اَخِيْهِ شَىْءٌ فَاتِّبَاعٌ ۢ بِالْمَعْرُوْفِ وَاَدَآءٌ
اِلَيْهِ بِاِحْسَانٍ ؕ ذٰلِكَ تَخْفِيْفٌ مِّنْ رَّبِّكُمْ وَرَحْمَةٌ ؕ فَمَنِ اعْتَدٰى بَعْدَ ذٰلِكَ فَلَهٗ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿١٧٨﴾ وَلَكُمْ فِى الْقِصَاصِ حَيٰوةٌ
يّٰٓاُولِى الْاَلْبَابِ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُوْنَ ﴿١٧٩﴾ كُتِبَ عَلَيْكُمْ اِذَا حَضَرَ اَحَدَكُمُ الْمَوْتُ اِنْ تَرَكَ خَيْرَا ۖۚ اِلْوَصِيَّةُ لِلْوَالِدَيْنِ وَالْاَقْرَبِيْنَ بِالْمَعْرُوْفِ ۚ
حَقًّا عَلَى الْمُتَّقِيْنَ ﴿١٨٠﴾ فَمَنْ ۢ بَدَّلَهٗ بَعْدَ مَا سَمِعَهٗ فَاِنَّمَآ اِثْمُهٗ عَلَى الَّذِيْنَ يُبَدِّلُوْنَهٗ ؕ اِنَّ اللّٰهَ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ﴿١٨١﴾

वस़्साबिरी–न फ़िल् बअ्सा–इ वज़्ज़र्रा–इ व ह़ीनल्बअ्सि उलाइ–कल्लज़ी–न स–दक़ू व उलाइ–क हुमुल्मुत्तक़ू–न(177)या अय्युहल्लज़ी–न आमनू कुति–ब अ़लैकुमुल् क़िस़ासु फ़िल्क़त्ला अल्हुर्रु बिल्हुर्रि वल्–अ़ब्दु बिल्अ़ब्दि वल्उन्सा बिल्उन्सा फ़–मन्अुफ़ि–य लहू मिन् अख़ीहि शैउन् फ़त्तिबाउम् –बिल्मअ्रूफ़ि व अदाउन् इलैहि बि इह़्सानिन् ज़ालि–क तख़्फ़ीफ़ुम्–मिर्रब्बिकुम् व रह़्म–तुन् फ़–मनिअ्–तदा बअ्–द ज़ालि–क फ़–लहू अ़ज़ाबुन् अलीम(178)व लकुम् फ़िल्–क़िस़ासि ह़यातुंय्या उलिल्–अल्बाबि ल–अ़ल्लकुम् तत्तक़ून(179)कुति–ब अ़लैकुम् इज़ा ह़–ज़–र अ–ह़–दकुमुल्मौतु इन् त–र–क ख़ै–र निल् व स़िय्यतु लिल–वालिदैनि वल्–अक़्रबी–न बिल्मअ्रूफ़ि ह़क़्क़न् अ़लल्मु–त्तक़ी–न(180)फ़–मम्बद्–द–लहू बअ्–द मा समि–अ़हू फ़–इन्नमा इस्मुहू अ़लल्लज़ी–न युबद्दिलू–नहू इन्नल्ला–ह समीअुन् अ़लीम(181)

और सब्र वाले मुसीबत और सख़्ती में और जिहाद के वक़्त यही हैं जिन्होंने अपनी बात सच्ची की और यही परहेज़गार हैं। (177) ऐ ईमान वालो तुम पर फ़र्ज़ है (फ़ा314) कि जो नाहक़ मारे जायें उनके ख़ून का बदला लो (फ़ा315) आज़ाद के बदले आज़ाद और गुलाम के बदले गुलाम और औ़रत के बदले औ़रत (फ़ा316) तो जिस के लिए उसके भाई की तरफ़ से कुछ माफ़ी हुई (फ़ा317) तो भलाई से तक़ाज़ा हो और अच्छी तरह अदा यह तुम्हारे रब की तरफ़ से तुम्हारा बोझ हलका करना है और तुम पर रहमत तो इसके बाद जो ज़्यादती करे (फ़ा318) उसके लिए दर्दनाक अ़ज़ाब है।(178) और ख़ून का बदला लेने में तुम्हारी ज़िन्दगी है ऐ अ़क़्लमन्दो (फ़ा319) कि तुम कहीं बचो।(179) तुम पर फ़र्ज़ हुआ कि जब तुम में किसी को मौत आए अगर कुछ माल छोड़े तो वसीयत कर जाए अपने मां बाप और क़रीब के रिश्तेदारों के लिए मुवाफ़िक़े दस्तूर(फ़ा320) यह वाजिब है परहेज़गारों पर।(180) तो जो वसीयत को सुन सुनाकर बदल दे (फ़ा321) उसका गुनाह उन्हीं बदलने वालों पर है (फ़ा322) बेशक अल्लाह सुनता जानता है।(181)

(फ़ा314) शाने नुज़ूलः यह आयत औस व ख़ज़रज के बारे में नाज़िल हुई उनमें से एक क़बीला दूसरे से क़ुव्वते तादाद माल व शरफ़ में ज़्यादा था उसने क़सम खाई थी कि वह अपने गुलाम के बदले दूसरे क़बीला के आज़ाद को और औ़रत के बदले मर्द को और एक के बदले दो को क़त्ल करेगा ज़मानए जाहिलियत में लोग इस क़िस्म की तअ़द्दी के आदी थे अ़हदे इस्लाम में यह मुआ़मला हुज़ूर सय्यदे अम्बिया सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की ख़िदमत में पेश हुआ तो यह आयत नाज़िल हुई और अ़द्ल व मुसावात का हुक्म दिया गया और इस पर वह लोग राज़ी हुए क़ुरआने करीम में क़िसास का मसला कई आयतों में बयान हुआ है इस आयत में क़िसास व अ़फ़्व दोनों के मसला हैं और अल्लाह तआ़ला के इस एहसान का बयान है कि उसने अपने बन्दों को क़िसास व अ़फ़्व में मुख़्तार किया चाहें क़िसास लें या अ़फ़्व करें आयत के अव्वल में क़िसास के वुजूब का बयान है **(फ़ा315)** इससे हर क़ातिल बिलअ़म्द पर क़िसास का वुजूब साबित होता है ख़्वाह उसने आज़ाद को क़त्ल किया हो या गुलाम को मुसलमान को या काफ़िर को मर्द को या औ़रत को क्योंकि *क़त्ला* जो क़तील की जमा है वह सब को शामिल है हां जिस को दलीले शरई ख़ास करे वह मख़्सूस हो जाएगा। (अहकामुल क़ुरआन) **(फ़ा316)** इस आयत में बताया गया जो क़त्ल करेगा वही क़त्ल किया जाएगा ख़्वाह आज़ाद हो या गुलाम मर्द हो या औ़रत और अहले जाहिलियत का यह तरीक़ा ज़ुल्म है जो उनमें रायज था कि आज़ादों में लड़ाई होती तो वह एक के बदले दो को क़त्ल करते गुलामों में होती तो बजाए गुलाम के आज़ाद को मारते औ़रतों में होती तो औ़रत के बदले मर्द को क़त्ल करते और महज़ क़ातिल के क़त्ल पर इक्तेफ़ा न करते इसको मना फ़रमाया गया। **(फ़ा317)** माना यह हैं कि जिस क़ातिल को वलीए मक़तूल कुछ माफ़ करें और उसके ज़िम्मा माल लाज़िम किया जाए उस पर औलियाए मक़तूल तक़ाज़ा करने में नेक रविश इख़्तियार करें और क़ातिल ख़ूं बहा ख़ुश मुआ़मलगी के साथ अदा करे इसमें सुलह बर माल का बयान है (तफ़सीर अहमदी) **मसलाः** वलीए मक़तूल को इख़्तियार है कि ख़्वाह **(बक़िया सफ़हा 73 पर)**

فَمَنْ خَافَ مِنْ مُّوْصٍ جَنَفًا اَوْ اِثْمًا فَاَصْلَحَ بَيْنَهُمْ فَلَآ اِثْمَ عَلَيْهِ ۭ اِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۝ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ

اٰمَنُوْا كُتِبَ عَلَيْكُمُ الصِّيَامُ كَمَا كُتِبَ عَلَى الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِكُمْ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُوْنَ ۝ اَيَّامًا مَّعْدُوْدٰتٍ ۭ فَمَنْ كَانَ مِنْكُمْ

مَّرِيْضًا اَوْ عَلٰى سَفَرٍ فَعِدَّةٌ مِّنْ اَيَّامٍ اُخَرَ ۭ وَعَلَى الَّذِيْنَ يُطِيْقُوْنَهٗ فِدْيَةٌ طَعَامُ مِسْكِيْنٍ ۭ فَمَنْ تَطَوَّعَ خَيْرًا فَهُوَ خَيْرٌ لَّهٗ ۭ

وَاَنْ تَصُوْمُوْا خَيْرٌ لَّكُمْ اِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ۝ شَهْرُ رَمَضَانَ الَّذِيْٓ اُنْزِلَ فِيْهِ الْقُرْاٰنُ هُدًى لِّلنَّاسِ وَبَيِّنٰتٍ

مِّنَ الْهُدٰى وَالْفُرْقَانِ ۚ فَمَنْ شَهِدَ مِنْكُمُ الشَّهْرَ فَلْيَصُمْهُ ۭ وَمَنْ كَانَ مَرِيْضًا اَوْ عَلٰى سَفَرٍ فَعِدَّةٌ مِّنْ اَيَّامٍ اُخَرَ ۭ يُرِيْدُ اللّٰهُ

फ़–मन् ख़ा–फ़ मिम्मूसिन् ज–न–फ़न् औ इस्मन् फ़–अस्ल–ह बै–नहुम् फ़ला इस्–म अ़लैहि इन्नल्ला–ह ग़फ़ूरुर्रहीम(182)या अय्युहल्लज़ी–न आमनू कुति–ब अ़लैकुमुस्सियामु कमा कुति–ब अ़लल्लज़ी–न मिन् क़ब्लिकुम् ल–अ़ल्लकुम् तत्तक़ून(183)अय्या मम्–मअ़्दूदातिन् फ़–मन् का–न मिन्कुम् मरीज़न् औ अ़ला स–फ़रिन् फ़–अ़िद्दतुम् मिन् अय्यामिन् उ–ख़र व अ़–लल्लज़ी–न युतीक़ू–नहू फ़िद्‌यतुन् तआ़मु मिस्कीनिन् फ़ मन् त–तव्व–अ़ ख़ैरन् फ़हु–व ख़ैरुल्लहू व अन् तसूमू ख़ैरुल्लकुम् इन् कुन्तुम् तअ़्–लमून(184)शहरु र–मज़ानल्लज़ी उन्ज़ि–ल फ़ीहिल्क़ुरआनु हुदल्लिन्नासि व बय्यिनातिम्–मिनल्हुदा वल्फ़ुरक़ानि फ़–मन् शहि–द मिन्कुमुश्शह्–र फ़ल्–यसुम्हु व मन् का–न मरीज़न् औ अ़ला स–फ़रिन् फ़अ़िद्–दतुम् मिन् अय्यामिन् उ–ख़र युरीदुल्लाहु

फिर जिसे अन्देशा हुआ कि वसीयत करने वाले ने कुछ बे-इन्साफ़ी या गुनाह किया तो उसने उन में सुलह करा दी उसपर कुछ गुनाह नहीं (फ़ा323) बेशक अल्लाह बख़्शने वाला मेहरबान है।(182) (रुकूअ़ 6) ऐ ईमान वालो (फ़ा324) तुम पर रोज़े फ़र्ज़ किए गए जैसे अगलों पर फ़र्ज़ हुए थे कि कहीं तुम्हें परहेज़गारी मिले।(183) (फ़ा325) गिनती के दिन हैं (फ़ा326) तो तुम में जो कोई बीमार या सफ़र में हो (फ़ा327) तो उतने रोज़े और दिनों में और जिन्हें इस की ताक़त न हो वह बदला दें एक मिस्कीन का खाना (फ़ा328) फिर जो अपनी तरफ़ से नेकी ज़्यादा करे (फ़ा329) तो वह उसके लिए बेहतर है और रोज़ा रखना तुम्हारे लिए ज़्यादा भला है अगर तुम जानो।(184) (फ़ा330) रमज़ान का महीना जिसमें क़ुरआन उतरा (फ़ा331) लोगों के लिए हिदायत और रहनुमाई और फ़ैसले की रौशन बातें तो तुम में जो कोई यह महीना पाए ज़रूर इसके रोज़े रखे और जो बीमार या सफ़र में हो तो इतने रोज़े और दिनों में, अल्लाह तुम पर

(फ़ा323) माना यह हैं कि वारिस या वसी या इमाम या क़ाज़ी जिसको भी मूसी की तरफ़ से नाइन्साफ़ी या नाहक़ कार्रवाई का अन्देशा हो वह अगर मूसा-लहू या वारिसों में शरअ़ के मुवाफ़िक़ सुलह करा दे तो गुनहगार नहीं क्योंकि उसने हक़ की हिमायत के लिए बातिल को बदला एक क़ौल यह भी है कि मुराद वह शख़्स है जो वक़्ते वसीयत देखे कि मूसी हक़ से तजावुज़ करता और ख़िलाफ़े शरअ़. तरीक़ा इख़्तियार करता है तो उसको रोक दे और हक़ व इन्साफ़ का हुक्म करे। (फ़ा324) इस आयत में रोज़ों की फ़र्ज़ियत का बयान है रोज़ा शरअ़ में इसका नाम है कि मुसलमान ख़्वाह मर्द हो या हैज़ व निफ़ास से ख़ाली औ़रत सुबहे सादिक़ से ग़ुरूबे आफ़ताब तक ब-नीयते इबादत ख़ुर्द व नोश व मुजामेअ़त तर्क करे (आलमगीरी वग़ैरह) रमज़ान के रोज़े १० शअ़बान सन् २ हिजरी को फ़र्ज़ किये गए (दुर्रे मुख़्तार व ख़ाज़िन) इस आयत से साबित होता है कि रोज़े इबादते क़दीमा हैं ज़मानए आदम अ़लैहिस्सलाम से तमाम शरीअ़तों में फ़र्ज़ होते चले आये अगरचे अय्याम व अहकाम मुख़्तलिफ़ थे मगर असल रोज़े सब उम्मतों पर लाज़िम रहे। (फ़ा325) और तुम गुनाहों से बचो क्योंकि यह कसरे नफ़्स का सबब और मुत्तक़ीन का शेआ़र है। (फ़ा326) यानी सिर्फ़ रमज़ान का एक महीना (फ़ा327) सफ़र से वह मुराद है जिसकी मुसाफ़त तीन दिन से कम न हो इस आयत में अल्लाह तआ़ला ने मरीज़ व मुसाफ़िर को रुख़सत दी कि अगर उसको रमज़ाने मुबारक में रोज़ा रखने से मरज़ की ज़्यादती या हलाक का अन्देशा हो या सफ़र में शिद्दत व तकलीफ़ का तो वह मरज़ व सफ़र के अय्याम में इफ़्तार करे और बजाए इसके अय्यामे मनूहीया के सिवा और दिनों में उसकी क़ज़ा करे। अय्यामे मनूहीया पांच दिन हैं जिनमें रोज़ा रखना जायज़ नहीं। दोनों ईदैन और ज़िलहिज्जा की ग्यारहवीं, बारहवीं और तेरहवीं तारीख़ें। मसलाः मरीज़ को महज़ वहम पर रोज़े का इफ़्तार जायज़ नहीं जब तक दलील या तजर्बा या ग़ैर ज़ाहिरुल फ़िस्क़ तबीब की ख़बर से उसका ग़लबए ज़न हासिल न हो कि रोज़ा मरज़ के तूल या ज़्यादती का सबब होगा। मसलाः जो बिलफ़ेअ़्ल बीमार न हो लेकिन मुसलमान तबीब यह कहे कि वह रोज़ा रखने से बीमार हो जाएगा वह भी मरीज़ के हुक्म में है। मसलाः हामिला या दूध पिलाने वाली औ़रत को अगर रोज़ा रखने से अपनी या बच्चे की जान का या उसके बीमार हो जाने का अन्देशा हो तो उसको भी इफ़्तार (बक़िया सफ़हा 73 पर)

بِكُمُ الْيُسْرَ وَلَا يُرِيْدُ بِكُمُ الْعُسْرَ وَلِتُكْمِلُوا الْعِدَّةَ وَلِتُكَبِّرُوا اللّٰهَ عَلٰى مَا هَدٰىكُمْ وَلَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ ﴿۱۸۵﴾

وَاِذَا سَاَلَكَ عِبَادِیْ عَنِّیْ فَاِنِّیْ قَرِیْبٌ اُجِیْبُ دَعْوَةَ الدَّاعِ اِذَا دَعَانِ فَلْیَسْتَجِیْبُوْا لِیْ وَلْیُؤْمِنُوْا بِیْ لَعَلَّهُمْ یَرْشُدُوْنَ ﴿۱۸۶﴾

اُحِلَّ لَكُمْ لَیْلَةَ الصِّیَامِ الرَّفَثُ اِلٰى نِسَآىٕكُمْ هُنَّ لِبَاسٌ لَّكُمْ وَاَنْتُمْ لِبَاسٌ لَّهُنَّ عَلِمَ اللّٰهُ اَنَّكُمْ كُنْتُمْ

تَخْتَانُوْنَ اَنْفُسَكُمْ فَتَابَ عَلَیْكُمْ وَعَفَا عَنْكُمْ فَالْـٰٔنَ بَاشِرُوْهُنَّ وَابْتَغُوْا مَا كَتَبَ اللّٰهُ لَكُمْ وَكُلُوْا وَاشْرَبُوْا

حَتّٰى یَتَبَیَّنَ لَكُمُ الْخَیْطُ الْاَبْیَضُ مِنَ الْخَیْطِ الْاَسْوَدِ مِنَ الْفَجْرِ ثُمَّ اَتِمُّوا الصِّیَامَ اِلَى الَّیْلِ وَلَا تُبَاشِرُوْهُنَّ وَاَنْتُمْ عٰكِفُوْنَ فِی

बिकुमुल् युस्–र व ला युरीदु बिकुमुल अुस–र व लितुक्मिलुल् अ़िद्द–त व लितु–कब्बिरुल्ला–ह अ़ला मा हदाकुम् व ल–अ़ल्लकुम् तश्कुरून(185)व इज़ा स–अ–ल–क अ़िबादी अ़न्नी फ़इन्नी क़रीबुन् उजीबु दअ्–व–तद्–दाअ़ि इज़ा दअ़ानि फ़ल्यस्तजीबू–ली वल्–युअ्मिनू बी लअ़ल्लहुम् यरशुदून(186)उहिल्–ल लकुम् लै–ल–तस्–सियामिर्र–फ़सु इला निसाइ–कुम् हुन्–न लिबासुल्लकुम् व अन्तुम् लिबासुल्लहुन्–न अ़लि–मल्लाहु अन्नकुम् कुन्तुम् तख़्तानू–न अन्फु–सकुम् फ़ता–ब अ़लैकुम् व अ़फ़ा अ़न्कुम् फ़ल्–आ–न बाशिरू हुन्–न वब्तग़ू मा क–त–बल्लाहु लकुम् व कुलू वश्रबू ह़त्ता य–त–बय्य–न लकुमुल्–ख़ैतुल्–अब्–यजु मिनल्ख़ैतिल्–अस्वदि मिनल् फ़ज्रि सुम्–म अति–म्मुस्सिया–म इलल्लैलि व ला तुबा–शिरू–हुन्–न व अन्तुम् आ़किफ़ू–न

आसानी चाहता है और तुम पर दुश्वारी नहीं चाहता और इस लिए कि तुम गिनती पूरी करो (फ़ा332) और अल्लाह की बड़ाई बोलो इस पर कि उसने तुम्हें हिदायत की और कहीं तुम हक़ गुज़ार हो।(185) और ऐ महबूब जब तुमसे मेरे बन्दे मुझे पूछें तो मैं नज़दीक हूं (फ़ा333) दुआ़ क़बूल करता हूं पुकारने वाले की जब मुझे पुकारे (फ़ा334) तो उन्हें चाहिये मेरा हुक्म मानें और मुझ पर ईमान लायें कि कहीं राह पायें।(186) रोज़ों की रातों में अपनी औ़रतों के पास जाना तुम्हारे लिए हलाल हुआ (फ़ा335) वह तुम्हारी लिबास हैं और तुम उनके लिबास, अल्लाह ने जाना कि तुम अपनी जानों को ख़ियानत में डालते थे तो उसने तुम्हारी तौबा क़बूल की और तुम्हें माफ़ फ़रमाया (फ़ा336) तो अब उनसे सोहबत करो (फ़ा337) और तलब करो जो अल्लाह ने तुम्हारे नसीब में लिखा हो (फ़ा338) और खाओ और पियो (फ़ा339) यहां तक कि तुम्हारे लिए ज़ाहिर हो जाए सफ़ेदी का डोरा, सियाही के डोरे से पौ फट कर (फ़ा340) फिर रात आने तक रोज़े पूरे करो (फ़ा341) और औ़रतों को हाथ न लगाओ जब तुम मस्जिदों में

(फ़ा332) हदीस में है हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि महीना उन्तीस दिन का भी होता है तो चांद देखकर रोज़े शुरू करो और चांद देख कर इफ़्तार करो अगर 29 रमज़ान को चांद की रूयत न हो तो तीस दिन की गिनती पूरी करो (फ़ा333) इसमें तालिबाने हक़ की तलबे मौला का बयान है जिन्होंने इश्क़े इलाही पर अपने हवाइज को क़ुरबान कर दिया वह उसी के तलबगार हैं उन्हें क़ुर्ब व विसाल के मुज़दा से शादकाम फ़रमाया शाने नुज़ूलः एक जमाअ़ते सहाबा ने जज़्बए इश्क़े इलाही में सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से दरियाफ़्त किया कि हमारा रब कहां है इस पर नवेदे क़ुर्ब से सरफ़राज़ करके बताया गया कि अल्लाह तआ़ला मकान से पाक है जो चीज़ किसी से मकानी क़ुर्ब रखती हो वह उसके दूर वाले से ज़रूर बोअ़्द रखती है और अल्लाह तआ़ला सब बन्दों से क़रीब है मकानी की यह शान नहीं मनाज़िले क़ुर्ब में रसाई बन्दा को अपनी ग़फ़लत दूर करने से मुयस्सर आती है- 'दोस्त नज़दीक तर अज़ मन बमन अस्त ÷ वीं अ़जब तर कि मन अज़ रूए दूरम' (फ़ा334) दुआ़ अर्ज़े हाजत है और इजाबत यह है कि परवरदिगार अपने बन्दे की दुआ़ पर *लब्बै-क अ़ब्दी* फ़रमाता है मुराद अ़ता फ़रमाना दूसरी चीज़ है वह भी कभी उसके करम से फ़िलफ़ौर होती है कभी ब-मुक़्तज़ाए हिकमत किसी ताख़ीर से कभी बन्दे की हाजत दुनिया में रवा फ़रमाई जाती है कभी आख़िरत में कभी बन्दे का नफ़ा दूसरी चीज़ में होता है वह अ़ता की जाती है कभी बन्दा महबूब होता है उसकी हाजत रवाई में इस लिए देर की जाती है कि वह अ़र्सा तक दुआ़ में मशग़ूल रहे कभी दुआ़ करने वाले में सिद्क़ व इख़्लास वग़ैरह शरायत क़बूल नहीं होते इसी लिए अल्लाह के नेक और मक़बूल बन्दों से दुआ़ कराई जाती है। मसलाः नाजायज़ अमूर की दुआ़ करना जायज़ नहीं दुआ़ के आदाब में से है कि हुज़ूरे क़ल्ब के साथ क़बूल का यक़ीन रखते हुए दुआ़ करे और शिकायत न करे कि मेरी दुआ़ क़बूल न हुई। तिर्मिज़ी की हदीस में है कि नमाज़ के बाद हम्द व सना और दुरूद शरीफ़ पढ़े फिर दुआ़ करे। (फ़ा335) शाने नुज़ूलः शराअ़े साबिक़ा में इफ़्तार **(बक़िया सफ़हा 74 पर)**

الْمَسٰجِدِ ؕ تِلْكَ حُدُوْدُ اللّٰهِ فَلَا تَقْرَبُوْهَا ؕ كَذٰلِكَ يُبَيِّنُ اللّٰهُ اٰيٰتِهٖ لِلنَّاسِ لَعَلَّهُمْ يَتَّقُوْنَ ﴿١٨٧﴾ وَلَا تَاْكُلُوْٓا اَمْوَالَكُمْ بَيْنَكُمْ بِالْبَاطِلِ وَتُدْلُوْا
بِهَآ اِلَى الْحُكَّامِ لِتَاْكُلُوْا فَرِيْقًا مِّنْ اَمْوَالِ النَّاسِ بِالْاِثْمِ وَاَنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ﴿١٨٨﴾ يَسْـَٔلُوْنَكَ عَنِ الْاَهِلَّةِ ؕ قُلْ هِيَ مَوَاقِيْتُ لِلنَّاسِ
وَالْحَجِّ ؕ وَلَيْسَ الْبِرُّ بِاَنْ تَاْتُوا الْبُيُوْتَ مِنْ ظُهُوْرِهَا وَلٰكِنَّ الْبِرَّ مَنِ اتَّقٰى ۚ وَاْتُوا الْبُيُوْتَ مِنْ اَبْوَابِهَا ۪ وَاتَّقُوا اللّٰهَ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ ﴿١٨٩﴾
وَقَاتِلُوْا فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ الَّذِيْنَ يُقَاتِلُوْنَكُمْ وَلَا تَعْتَدُوْا ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَا يُحِبُّ الْمُعْتَدِيْنَ ﴿١٩٠﴾ وَاقْتُلُوْهُمْ حَيْثُ ثَقِفْتُمُوْهُمْ وَاَخْرِجُوْهُمْ مِّنْ حَيْثُ
اَخْرَجُوْكُمْ وَالْفِتْنَةُ اَشَدُّ مِنَ الْقَتْلِ ۚ وَلَا تُقٰتِلُوْهُمْ عِنْدَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ حَتّٰى يُقٰتِلُوْكُمْ فِيْهِ ۚ فَاِنْ قٰتَلُوْكُمْ فَاقْتُلُوْهُمْ ؕ كَذٰلِكَ جَزَآءُ

फ़िल्मसाजिदि तिल्—क हुदूदुल्लाहि फ़्—ला तक़्रबूहा कज़ालि—क युब—य्यिनुल्लाहु आयातिही लिन्नासि ल—अ़ल्लहुम् यत्तकून(187)व ला तअ्कुलू अम्वा—लकुम् बै—नकुम् बिल्बातिलि व तुद्लू बिहा इललहुक्कामि लि—तअ्कुलू फ़रीकम्—मिन् अम्वालिन्नासि बिल्—इस्मि व अन्तुम् तअ्—लमून (188) यस्अलून—क अ़निल्—अहिल्लति कुल् हि—य मवाकीतु लिन्नासि वल्हज्जि व लैसल्बिर्रु बि अन् तअ्तुल्—बुयू—त मिन् जुहू रिहा व ला किन्नल्बिर्—र मनित्तका वअ्तुल्बुयू—त मिन् अब्वाबिहा वत्तकुल्ला—ह ल—अ़ल्लकुम् तुफ़्लिहून(189)व क़ातिलू फ़ी सबीलिल्लाहिल्—लज़ी—न युक़ातिलू—नकुम् व ला तअ्—तदू इन्नल्ला—ह ला युहिब्बुल्—मुअ्तदीन(190)वक़्तुलूहुम् हैसु सकिफ़्तुमू हुम् व अख़्रिजू हुम् मिन् हैसु अख़्—रजूकुम् वल्फ़ित्नतु अशद्दु मिनल्क़त्लि व ला तुक़ातिलू हुम् अ़िन्दल मस्जि—दिल् ह़रामि ह़त्ता युक़ातिलूकुम् फ़ीहि फ़्—इन् क़ा—तलूकुम् फ़क़्तुलूहुम् कज़ालि—क जज़ाउल

एतिकाफ़ से हो (फ़ा342) यह अल्लाह की हदें हैं उनके पास न जाओ अल्लाह यूं ही बयान करता है लोगों से अपनी आयतें कि कहीं उन्हें परहेज़गारी मिले।(187) और आपस में एक दूसरे का माल नाहक़ न खाओ और न हाकिमों के पास उन का मुक़द्दमा इस लिए पहुंचाओ कि लोगों का कुछ माल नाजायज़ तौर पर खालो (फ़ा343) जान बूझ कर।(188) (रुकूअ़ 7) तुमसे नए चांद को पूछते हैं(फ़ा344) तुम फ़रमा दो वह वक़्त की अ़लामतें हैं लोगों और हज के लिए (फ़ा345) और यह कुछ भलाई नहीं कि(फ़ा346) घरों में पछीत (पिछली दीवार) तोड़ कर आओ, हां भलाई तो परहेज़गारी है और घरों में दरवाज़ों से आओ (फ़ा347) और अल्लाह से डरते रहो इस उम्मीद पर कि फ़लाह पाओ।(189)और अल्लाह की राह में लड़ो (फ़ा348) उनसे जो तुमसे लड़ते हैं (फ़ा349) और हद से न बढ़ो (फ़ा350) अल्लाह पसन्द नहीं रखता हद से बढ़ने वालों को।(190) और काफ़िरों को जहां पाओ मारो (फ़ा351) और उन्हें निकाल दो (फ़ा352) जहां से उन्होंने तुम्हें निकाला था (फ़ा353) और उनका फ़साद तो क़त्ल से भी सख़्त है (फ़ा354) और मस्जिदे ह़राम के पास उन से न लड़ो जब तक वह तुम से वहां न लड़ें (फ़ा355) और अगर तुम से लड़ें तो उन्हें क़त्ल करो (फ़ा356) काफ़िरों की

(फ़ा342) इस में बयान है कि रमज़ान की रातों में रोज़ादार के लिए जिमाअ़ हलाल है जबकि वह मोअ़्तकिफ़ न हो। **मसलाः** एतिकाफ़ में औ़रतों से कुर्बत और बोस व किनार हराम है। **मसलाः** मर्दों के एतिकाफ़ के लिए मस्जिद ज़रूरी है। **मसलाः** मोअ़्तकिफ़ को मस्जिद में खाना पीना सोना जायज़ है। **मसलाः** औ़रतों का एतिकाफ़ उनके घरों में जायज़ है। **मसलाः** एतिकाफ़ हर ऐसी मस्जिद में जायज़ है जिसमें जमाअ़त क़ायम हो। **मसलाः** एतिकाफ़ में रोज़ा शर्त है। (फ़ा343) इस आयत में बातिल तौर पर किसी का माल खाना हराम फ़रमाया गया ख़्वाह लूट कर या छीन कर या चोरी से या जूए से या हराम तमाशों या हराम कामों या हराम चीज़ों के बदले या रिश्वत या झूठी गवाही या चुग़लख़ोरी से यह सब ममनूअ़ व हराम है। **मसलाः** इस से मालूम हुआ कि नाजायज़ फ़ायदा के लिए किसी पर मुक़द्दमा बनाना और उसको हुक्काम तक ले जाना नाजायज़ व हराम है इसी तरह अपने फ़ायदा की ग़रज़ से दूसरे को ज़रर पहुंचाने के लिए हुक्काम पर असर डालना रिश्वतें देना हराम है जो हुक्काम-रस लोग हैं वह इस आयत के हुक्म को पेशे नज़र रखें हदीस शरीफ़ में मुसलमानों के ज़रर पहुंचाने वाले पर लानत आई है। (फ़ा344) **शाने नुज़ूलः** यह आयत हज़रत मआ़ज़ बिन जबल और सअ़्लबा बिन ग़नम अंसारी के जवाब में नाज़िल हुई इन दोनों ने दरियाफ़्त किया कि या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम चांद का क्या हाल है इब्तेदा में बहुत बारीक निकलता है फिर रोज़ बरोज़ बढ़ता है यहां तक कि पूरा रौशन हो जाता है फिर घटने लगता है और यहां तक घटता है कि पहले की तरह बारीक हो जाता है एक हाल पर नहीं रहता इस सवाल से मक़सद चांद के घटने बढ़ने की हिकमतें दरियाफ़्त करना था बाज़ मुफ़स्सिरीन का ख़्याल है कि सवाल का मक़सूद चांद के इख़्तिलाफ़ात का सबब दरियाफ़्त करना **(बक़िया सफ़हा 74 पर)**

الْكٰفِرِيْنَ ﴿۱۹۱﴾ فَاِنِ انْتَهَوْا فَاِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿۱۹۲﴾ وَقٰتِلُوْهُمْ حَتّٰى لَا تَكُوْنَ فِتْنَةٌ وَّيَكُوْنَ الدِّيْنُ لِلّٰهِ ؕ فَاِنِ انْتَهَوْا فَلَا عُدْوَانَ اِلَّا عَلَى
الظّٰلِمِيْنَ ﴿۱۹۳﴾ اَلشَّهْرُ الْحَرَامُ بِالشَّهْرِ الْحَرَامِ وَالْحُرُمٰتُ قِصَاصٌ ؕ فَمَنِ اعْتَدٰى عَلَيْكُمْ فَاعْتَدُوْا عَلَيْهِ بِمِثْلِ مَا اعْتَدٰى عَلَيْكُمْ
وَاتَّقُوا اللّٰهَ وَاعْلَمُوْۤا اَنَّ اللّٰهَ مَعَ الْمُتَّقِيْنَ ﴿۱۹۴﴾ وَاَنْفِقُوْا فِیْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَلَا تُلْقُوْا بِاَيْدِيْكُمْ اِلَى التَّهْلُكَةِ ۛۚ وَاَحْسِنُوْا ۛۚ اِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ الْمُحْسِنِيْنَ ﴿۱۹۵﴾
وَاَتِمُّوا الْحَجَّ وَالْعُمْرَةَ لِلّٰهِ ؕ فَاِنْ اُحْصِرْتُمْ فَمَا اسْتَيْسَرَ مِنَ الْهَدْیِ ۚ وَلَا تَحْلِقُوْا رُءُوْسَكُمْ حَتّٰى يَبْلُغَ الْهَدْیُ مَحِلَّهٗ ؕ فَمَنْ كَانَ
مِنْكُمْ مَّرِيْضًا اَوْ بِهٖۤ اَذًى مِّنْ رَّاْسِهٖ فَفِدْيَةٌ مِّنْ صِيَامٍ اَوْ صَدَقَةٍ اَوْ نُسُكٍ ۚ فَاِذَاۤ اَمِنْتُمْ ٚ فَمَنْ تَمَتَّعَ بِالْعُمْرَةِ اِلَى الْحَجِّ فَمَا اسْتَيْسَرَ

काफ़िरीन(191)फ़–इनिन्तहौ फ़ इन्नल्ला–ह ग़फ़ूरुर्रहीम(192)व क़ातिलूहुम् हत्ता ला तकू–न फ़ित्नतुंव्–व यकूनद्दीनु लिल्लाहि फ़–इनिन्तहौ फ़ला अुद्वा–न इल्ला अ़लज़्ज़ा–लिमीन(193)अश्श– हरुल्– ह़रामु बिश्शह्‌रिल्–ह़रामि वल्ह़ुरुमातु क़िसासुन् फ़–मनिअ़तदा अ़लैकुम् फ़अ्–तदू अ़लैहि बिमिस्लि मअ़्तदा अ़लैकुम् वत्तकुल्ला–ह वअ़्लमू अन्नल्ला–ह म–अ़ल्मुत्तक़ीन(194)व अन्फ़िक़ू फ़ी सबीलिल्लाहि व ला तुल्क़ू बि ऐदीकुम् इलत्तह्लु–कति व अह़्सिनू इन्नल्ला–ह युह़िब्बुल् मुह़्सिनीन (195)व अतिम्मुलह़ज्–ज वल्अुम्र–त लिल्लाहि फ़–इन् उह़्सिर्तुम् फ़–मस्तै–स–र मिनलह़द्यि व ला तह़्लिक़ू रुऊ–सकुम् हत्ता यब्लुग़–ल्हद्यु मह़िल्लहू फ़–मन् का–न मिन्कुम् मरीज़न् औ बिही अज़म्–मिर्रासिही फ़फ़िद्‌यतुम्–मिन् सियामिन् औ स़–द–क़तिन् औ नुसुकिन् फ़–इज़ा अमिन्तुम् फ़–मन् तमत्त–अ़ बिल्उम्‌रति इलल्ह़ज्जि फ़–मस्तै–स–र

यही सज़ा है।(191) फिर अगर वह बाज़ रहें (फ़ा357) तो बेशक अल्लाह बख़्शने वाला मेहरबान है।(192) और उन से लड़ो यहां तक कि कोई फ़ितना न रहे और एक अल्लाह की पूजा हो फिर अगर वह बाज़ आयें (फ़ा358) तो ज़्यादती नहीं मगर ज़ालिमों पर।(193) माहे ह़राम के बदले माहे ह़राम और अदब के बदले अदब है (फ़ा359) जो तुम पर ज़्यादती करे उस पर ज़्यादती करो उतनी ही जितनी उसने की और अल्लाह से डरते रहो और जान रखो कि अल्लाह डर वालों के साथ है।(194) और अल्लाह की राह में ख़र्च करो (फ़ा360) और अपने हाथों हलाकत में न पड़ो (फ़ा361) और भलाई वाले हो जाओ बेशक भलाई वाले अल्लाह के महबूब हैं।(195) और हज और उ़मरा अल्लाह के लिए पूरा करो (फ़ा362) फिर अगर तुम रोके जाओ (फ़ा363) तो क़ुरबानी भेजो जो मुयस्सर आये (फ़ा364) और अपने सर न मुंडाओ जब तक क़ुरबानी अपने ठिकाने न पहुंच जाये (फ़ा365) फिर जो तुम में बीमार हो या उसके सर में कुछ तकलीफ़ है (फ़ा366) तो बदला दे रोज़े (फ़ा367) या ख़ैरात (फ़ा368) या क़ुरबानी फिर जब तुम इत्मीनान से हो तो जो हज से उ़मरा मिलाने का फ़ायदा उठाए (फ़ा369) उस पर क़ुरबानी है जैसी

(फ़ा357) क़त्ल व शिर्क से (फ़ा358) कुफ़्र व बातिल परस्ती से (फ़ा359) जब गुज़श्ता साल ज़ीक़ादा सन् 6 हिजरी में मुशरिकीने अ़रब ने माहे हराम की हुरमत व अदब का लिहाज़ न रखा और तुम्हें अदाए उमरा से रोका तो यह बेहुरमती उन से वाक़ेअ़ हुई और उसके बदले बतौफ़ीक़े इलाही सन् 7 हिजरी के ज़ीक़ादा में तुम्हें मौक़ा मिला कि तुम उमरए क़ज़ा को अदा करो (फ़ा360) इससे तमाम दीनी उमूर में ताअ़त व रज़ाए इलाही के लिए ख़र्च करना मुराद है ख़्वाह जिहाद हो या और नेकियां। (फ़ा361) राहे ख़ुदा में इन्फ़ाक़ का तर्क भी सबबे हलाक है और इसराफ़े बेजा भी और इस तरह और चीज़ भी जो ख़तरा व हलाक का बायस हो उन सब से बाज़ रहने का हुक्म है हत्ता कि बे हथियार मैदाने जंग में जाना या ज़हर खाना या किसी तरह ख़ुद कशी करना। मसलाः उलमा ने इससे यह मसला भी अख़ज़ किया है कि जिस शहर में ताऊन हो वहां न जायें अगरचे वहां के लोगों को वहां से भागना ममनूअ़ है। (फ़ा362) और इन दोनों को उनके फ़रायज़ व शरायत के साथ ख़ास अल्लाह के लिए बे सुस्ती व नक़साने कामिल करो हज नाम है एहराम बांध कर नवीं ज़िलहिज्जा को अ़रफ़ात में ठहरने और कअ़बा मुअ़ज़्ज़मा के तवाफ़ का इसके लिए ख़ास वक़्त मुक़र्रर है जिसमें यह अफ़आ़ल किये जायें तो हज है। मसलाः हज बक़ौले राजेह सन् ६ हिजरी में फ़र्ज़ हुआ इसकी फ़र्ज़ियत क़तई है हज के फ़रायज़ यह हैं एहराम अ़रफ़ा में वुक़ूफ़ तवाफ़े ज़ियारते हज के वाजिबात मुज़्दलफ़ा में वुक़ूफ़ सफ़ा व मरवह के दर्मियान सई रमी जिमार और आफ़ाक़ी के लिए तवाफ़ रुजूअ़ और हलक या तक़सीर उमरा के रुक्न तवाफ़ व सई हैं और इसकी शर्त एहराम व हलक़ है हज व उमरा के चार तरीक़े हैं (1) अफ़राद बिलहज वह यह है कि हज के महीनों में या उनसे क़ब्ल मीक़ात से या इससे पहले हज का एहराम बांधे और दिल से उसकी नीयत करे ख़्वाह ज़बान से तलबीया के वक़्त उसका नाम ले या न ले (2) अफ़राद बिलउमरा वह यह है कि मीक़ात से **(बक़िया सफ़हा 75 पर)**

مِنَ الْهَدْيِ ۚ فَمَنْ لَّمْ يَجِدْ فَصِيَامُ ثَلٰثَةِ اَيَّامٍ فِي الْحَجِّ وَسَبْعَةٍ اِذَا رَجَعْتُمْ ۗ تِلْكَ عَشَرَةٌ كَامِلَةٌ ۗ ذٰلِكَ لِمَنْ لَّمْ يَكُنْ اَهْلُهٗ حَاضِرِي الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ ۚ وَاتَّقُوا اللّٰهَ وَاعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ شَدِيْدُ الْعِقَابِ ﴿١٩٦﴾ اَلْحَجُّ اَشْهُرٌ مَّعْلُوْمٰتٌ ۚ فَمَنْ فَرَضَ فِيْهِنَّ الْحَجَّ فَلَا رَفَثَ وَلَا فُسُوْقَ وَلَا جِدَالَ فِي الْحَجِّ ۗ وَمَا تَفْعَلُوْا مِنْ خَيْرٍ يَّعْلَمْهُ اللّٰهُ ۗ وَتَزَوَّدُوْا فَاِنَّ خَيْرَ الزَّادِ التَّقْوٰى ۚ وَاتَّقُوْنِ يٰٓاُولِي الْاَلْبَابِ ﴿١٩٧﴾ لَيْسَ عَلَيْكُمْ جُنَاحٌ اَنْ تَبْتَغُوْا فَضْلًا مِّنْ رَّبِّكُمْ ۗ فَاِذَآ اَفَضْتُمْ مِّنْ عَرَفٰتٍ فَاذْكُرُوا اللّٰهَ عِنْدَ الْمَشْعَرِ الْحَرَامِ ۖ وَاذْكُرُوْهُ كَمَا هَدٰىكُمْ ۚ وَاِنْ كُنْتُمْ مِّنْ قَبْلِهٖ لَمِنَ الضَّآلِّيْنَ ﴿١٩٨﴾ ثُمَّ اَفِيْضُوْا مِنْ حَيْثُ اَفَاضَ النَّاسُ وَاسْتَغْفِرُوا اللّٰهَ ۗ اِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿١٩٩﴾ فَاِذَا قَضَيْتُمْ مَّنَاسِكَكُمْ

मिनल्हद्यि फ़-मल्लम् यजिद् फ़-सियामु सला-सति अय्यामिन् फ़िल्हज्जि व सब्अतिन् इज़ा र-जअ्तुम् तिल्-क अ-श-रतुन् कामि-लतुन् ज़ालि-क लिमल्लम् यकुन् अह्लुहू हाज़िरिल्-मस्जिदिल्-हरामि वत्तकुल्ला-ह वअ्-लमू अन्नल्ला-ह शदीदुल् अिक़ाब(196)अल्हज्जु अश्हुरुम्-मअ्लूमातुन् फ़-मन् फ़-र-ज़ फ़ीहिन्नल्हज्-ज फ़ला र-फ़-स वला फ़ुसू-क़ वला जिदा-ल फ़िल्हज्जि व मा तफ़्अलू मिन् ख़ैरिय्यअ्लम् हुल्लाहु व तज़व्वदू फ़इन्-न ख़ैरज़्ज़ादित्तक़्वा वत्तकूनि या उलिल्-अल्बाब(197)लै-स अ़लैकुम् जुनाहुन् अन् तब्तग़ू फ़ज़्लम्-मिर्रब्बिकुम् फ़-इज़ा अफ़ज़्तुम् मिन् अ़-रफ़ातिन् फ़ज़्कु-रुल्ला-ह अिन्दल् मश्अ़रिल् हरामि वज़्कुरूहु कमा हदाकुम् व इन् कुन्तुम् मिन् क़ब्लिही ल-मिनज़्ज़ाल्लीन(198)सुम्-म अफ़ीज़ू मिन् हैसु अफ़ाज़न्नासु वस्तग़्फ़िरुल्ला-ह इन्नल्ला-ह ग़फ़ूरुर्रहीम(199)फ़इज़ा क़ज़ैतुम् मनासि-ककुम्

मुयस्सर आये (फ़ा370) फिर जिसे मक़दूर न हो तो तीन रोज़े हज के दिनों में रखे (फ़ा371) और सात जब अपने घर पलट कर जाओ यह पूरे दस हुए यह हुक्म उस के लिए है जो मक्का का रहने वाला न हो (फ़ा372) और अल्लाह से डरते रहो और जान रखो कि अल्लाह का अ़ज़ाब सख़्त है।(196) (रुकूअ् 8) हज के कई महीने हैं जाने हुए (फ़ा373) तो जो उन में हज की नीयत करे (फ़ा374) तो न औ़रतों के सामने सोहबत का तज़किरा हो न कोई गुनाह न किसी से झगड़ा (फ़ा375) हज के वक़्त तक और तुम जो भलाई करो अल्लाह उसे जानता है (फ़ा376) और तोशा साथ लो कि सब से बेहतर तोशा परहेज़गारी है (फ़ा377) और मुझ से डरते रहो ऐ अ़क़्ल वालो।(197) (फ़ा378) तुम पर कुछ गुनाह नहीं (फ़ा379) कि अपने रब का फ़ज़्ल तलाश करो तो जब अ़रफ़ात से पलटो (फ़ा380) तो अल्लाह की याद करो (फ़ा381) मशअ़रे ह़राम के पास (फ़ा382) और उसका ज़िक्र करो जैसे उसने तुम्हें हिदायत फ़रमाई और बेशक इससे पहले तुम बहके हुए थे।(198) (फ़ा383) फिर बात यह है कि ऐ क़ुरैशियो तुम भी वहीं से पलटो जहां से लोग पलटते हैं (फ़ा384) और अल्लाह से माफ़ी मांगो बेशक अल्लाह बख़्शने वाला मेहरबान है।(199) फिर जब अपने हज के काम पूरे कर चुको (फ़ा385)

(फ़ा371) यानी यकुम शव्वाल से नवीं ज़िलहिज्जा तक एहराम बांधने के बाद उस दर्मियान में जब चाहे रख ले ख़्वाह एक साथ या मुतफ़र्रिक़ करके बेहतर यह है कि ७-८-६ ज़िलहिज्जा को रखे (फ़ा372) मसलाः अहले मक्का के लिए न तमत्तोअ़ है न क़िरान और हुदूदे मवाक़ीत के अन्दर के रहने वाले अहले मक्का में दाख़िल हैं मवाक़ीत पांच हैं ज़ुलहुलीफ़ा, ज़ाते इर्क़, जहफ़ा, क़रन, यलमूलम ज़ुलहुलीफ़ा अहले मदीना के लिए, ज़ाते इर्क़ अहले इराक़ के लिए, जहफ़ा अहले शाम के लिए, क़र्न अहले नज्द के लिए, यलमूलम अहले यमन के लिए। (फ़ा373) शव्वाल ज़ीक़ादा और दस तारीख़ें ज़िलहिज्जा की हज के अफ़आ़ल इन्हीं अय्याम में दुरुस्त हैं मसलाः अगर किसी ने इन अय्याम से पहले हज का एहराम बांधा तो जायज़ है लेकिन ब-कराहत। (फ़ा374) यानी हज को अपने ऊपर लाज़िम व वाजिब करे एहराम बांध कर या तलबीया कह कर या हदी चला कर उस पर यह चीज़ें लाज़िम हैं जिनका आगे ज़िक्र फ़रमाया जाता है। (फ़ा375) रफ़्स जिमाअ़ या औ़रतों के सामने ज़िक्रे जिमाअ़ या कलामे फ़ुहश करना है निकाह इसमें दाख़िल नहीं मसलाः मुहरिम या मुहरिमा का निकाह जायज़ है मुजामअ़त जायज़ नहीं फ़ुसूक़ से मआ़सी व सय्येआत और जिदाल से झगड़ा मुराद है ख़्वाह वह अपने रफ़ीक़ों या ख़ादिमों के साथ हो या ग़ैरों के साथ। (फ़ा376) बदियों की मुमानअ़त के बाद नेकियों की तरग़ीब फ़रमाई कि बजाए फ़िस्क़ के तक़वा और बजाए जिदाल के अख़्लाक़े हमीदा इख़्तियार करो। (फ़ा377) शाने नुज़ूलः बाज़ यमनी हज के लिए बे सामानी के साथ रवाना होते थे और अपने आपको मुतवक्किल कहते थे और मक्का मुकर्रमा पहुंच कर सवाल शुरू करते और कभी ग़सब व ख़ियानत के मुरतकिब **(बक़िया सफ़हा 75 पर)**

فَاذْكُرُوا اللّٰهَ كَذِكْرِكُمْ اٰبَآءَكُمْ اَوْ اَشَدَّ ذِكْرًا ۭ فَمِنَ النَّاسِ مَنْ يَّقُوْلُ رَبَّنَآ اٰتِنَا فِي الدُّنْيَا وَمَا لَهٗ فِي الْاٰخِرَةِ مِنْ خَلَاقٍ ۝ وَمِنْهُمْ مَّنْ يَّقُوْلُ رَبَّنَآ اٰتِنَا فِي الدُّنْيَا حَسَنَةً وَّفِي الْاٰخِرَةِ حَسَنَةً وَّقِنَا عَذَابَ النَّارِ ۝ اُولٰۗىِٕكَ لَهُمْ نَصِيْبٌ مِّمَّا كَسَبُوْا ۭ وَاللّٰهُ سَرِيْعُ الْحِسَابِ ۝ وَاذْكُرُوا اللّٰهَ فِيْٓ اَيَّامٍ مَّعْدُوْدٰتٍ ۭ فَمَنْ تَعَجَّلَ فِيْ يَوْمَيْنِ فَلَآ اِثْمَ عَلَيْهِ ۚ وَمَنْ تَاَخَّرَ فَلَآ اِثْمَ عَلَيْهِ ۙ لِمَنِ اتَّقٰى ۭ وَاتَّقُوا اللّٰهَ وَاعْلَمُوْٓا اَنَّكُمْ اِلَيْهِ تُحْشَرُوْنَ ۝ وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يُّعْجِبُكَ قَوْلُهٗ فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَيُشْهِدُ اللّٰهَ عَلٰي مَا فِيْ قَلْبِهٖ ۙ وَھُوَ اَلَدُّ الْخِصَامِ ۝ وَاِذَا تَوَلّٰى سَعٰى فِي الْاَرْضِ لِيُفْسِدَ فِيْهَا وَيُهْلِكَ الْحَرْثَ وَالنَّسْلَ ۭ وَاللّٰهُ لَا يُحِبُّ الْفَسَادَ ۝ وَاِذَا قِيْلَ لَهُ اتَّقِ اللّٰهَ اَخَذَتْهُ الْعِزَّةُ

फ़्ज़्कुरुल्ला–ह क–ज़िक्रिकुम् आबा–अकुम् औ अशद्–द ज़िक्रन् फ़–मिनन्नासि मंय्यकूलु रब्बना आतिना फ़िद्दुन्या व मा लहू फ़िल्–आख़ि–रति मिन् ख़लाक़(200)व मिन्हुम् मंय्यकूलु रब्बना आतिना फ़िद्दुन्या ह–स–न–तंव् व फ़िल्–आख़ि–रति ह–स–न–तंव्–व क़िना अज़ाबन्नार(201) उलाइ–क लहुम् नसीबुम्मिम्मा क–सबू वल्लाहु सरीउल्–हिसाब(202)वज़्कुरुल्ला–ह फ़ी अय्यामिम् मअ़्–दूदातिन् फ़–मन् त–अ़्ज्ज–ल फ़ी यौमैनि फ़ला इस्–म अ़लैहि व मन् त–अख़्ख़–र फ़ला इस्–म अ़लैहि लि–मनित्तक़ा वत्त–कुल्ला–ह वअ़्–लमू अन्नकुम् इलैहि तुह्शरून(203)व मिनन्नासि मंय्युअ़्जिबु –क क़ौलुहू फ़िल्–हयातिद्दुन्या व युश्हिदुल्ला–ह अ़ला मा फ़ी क़ल्बिही व हु–व अलद्दुल्–ख़िसाम (204)व इज़ा तवल्ला सआ़ फ़िल्अर्ज़ि लियुफ़्सि–द फ़ीहा व युह्लिकल्–हर्–स वन्नस्–ल वल्लाहु ला युहिब्बुल्–फ़साद(205)व इज़ा क़ी–ल लहुत्तक़िल्ला–ह अ–ख़–ज़त्हुल्–अ़िज़्ज़तु

तो अल्लाह का ज़िक्र करो जैसे अपने बाप दादा का ज़िक्र करते थे(फ़ा386) बल्कि उससे ज़्यादा और कोई आदमी यूं कहता है कि ऐ रब हमारे हमें दुनिया में दे और आख़िरत में उसका कुछ हिस्सा नहीं।(200) और कोई यूं कहता है कि ऐ रब हमारे हमें दुनिया में भलाई दे और हमें आख़िरत में भलाई दे और हमें अ़ज़ाबे दोज़ख़ से बचा।(201) (फ़ा387) ऐसों को उनकी कमाई से भाग (ख़ुश नसीबी) है (फ़ा388) और अल्लाह जल्द हिसाब करने वाला है।(202) (फ़ा389) और अल्लाह की याद करो गिने हुए दिनों में (फ़ा390) तो जो जल्दी करके दो दिन में चला जाए उस पर कुछ गुनाह नहीं और जो रह जाए तो उस पर गुनाह नहीं परहेज़गार के लिए (फ़ा391) और अल्लाह से डरते रहो और जान रखो कि तुम्हें उसी की तरफ़ उठना है।(203) और बाज़ आदमी वह है कि दुनिया की ज़िन्दगी में उसकी बात तुझे भली लगे (फ़ा392) और अपने दिल की बात पर अल्लाह को गवाह लाए और वह सब से बड़ा झगड़ालू है।(204) और जब पीठ फेरे तो ज़मीन में फ़साद डालता फिरे और खेती और जानें तबाह करे और अल्लाह फ़साद से राज़ी नहीं।(205) और जब उससे कहा जाए कि अल्लाह से डरो तो उसे और ज़िद चढ़े।

(फ़ा386) ज़मानए जाहिलियत में अ़रब हज के बाद कअ़्बा के क़रीब अपने बाप दादा के फ़ज़ायल बयान किया करते थे इस्लाम में बताया गया कि यह शोहरत व ख़ुद नुमाई की बेकार बातें हैं बजाए उसके ज़ौक़ व शौक़ के साथ ज़िक्रे इलाही करो मसलाः इस आयत से ज़िक्रे जह्र व ज़िक्रे जमाअ़त साबित होता है। (फ़ा387) दुआ़ करने वालों की दो क़िस्में बयान फ़रमाई एक वह काफ़िर जिनकी दुआ़ में सिर्फ़ तलबे दुनिया होती थी आख़िरत पर उनका एतेक़ाद न था उनके हक़ में इरशाद हुआ कि आख़िरत में उनका कुछ हिस्सा नहीं दूसरे वह ईमानदार जो दुनिया व आख़िरत दोनों की बेहतरी की दुआ़ करते हैं। **मसलाः** मोमिन दुनिया की बेहतरी जो तलब करता है वह भी अमूरे जायज़ और दीन की ताईद व तक़वियत के लिए इस लिए उसकी यह दुआ़ भी उमूरे दीन से है। (फ़ा388) मसलाः इस आयत से साबित हुआ कि दुआ़ कस्ब व आमाल में दाख़िल है। हदीस शरीफ़ में है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम अक्सर यही दुआ़ फ़रमाते थे *अल्लाहुम्म आतिना फ़िद् दुन्या ह-स-नतंव् व फ़िल् आख़ि-रति ह-स-नतंव् व क़िना अ़ज़ाबन्नार* (फ़ा389) अ़न्क़रीब क़ियामत क़ायम करके बन्दों का हिसाब फ़रमाएगा तो चाहिये कि बन्दे ज़िक्र व दुआ़ व ताअ़त में जल्दी करें (मदारिक व ख़ाज़िन) (फ़ा390) इन दिनों से अय्यामे तशरीक़ और ज़िक्रुल्लाह से नमाज़ों के बाद और रमीए जिमार के वक़्त तकबीर कहना मुराद है। (फ़ा391) बाज़ मुफ़स्सिरीन का क़ौल है कि ज़मानए जाहिलियत में लोग दो फ़रीक़ थे बाज़ जल्दी करने वालों को गुनहगार बताते थे बाज़ रह जाने वाले को क़ुरआन पाक ने बयान फ़रमा दिया कि इन दोनों में कोई गुनहगार नहीं। (फ़ा392) शाने नुज़ूलः यह और इससे अगली आयत अख़नस बिन शरीक़ **(बक़िया सफ़हा 69 पर)**

بِالْاِثْمِ فَحَسْبُهٗ جَهَنَّمُ ؕ وَلَبِئْسَ الْمِهَادُ ۝۲۰۶ وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يَّشْرِيْ نَفْسَهُ ابْتِغَآءَ مَرْضَاتِ اللّٰهِ ؕ وَاللّٰهُ رَءُوْفٌۢ بِالْعِبَادِ ۝۲۰۷ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا ادْخُلُوْا
فِي السِّلْمِ كَآفَّةً ۪ وَّلَا تَتَّبِعُوْا خُطُوٰتِ الشَّيْطٰنِ ؕ اِنَّهٗ لَكُمْ عَدُوٌّ مُّبِيْنٌ ۝۲۰۸ فَاِنْ زَلَلْتُمْ مِّنْۢ بَعْدِ مَا جَآءَتْكُمُ الْبَيِّنٰتُ فَاعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ عَزِيْزٌ حَكِيْمٌ ۝۲۰۹
هَلْ يَنْظُرُوْنَ اِلَّآ اَنْ يَّاْتِيَهُمُ اللّٰهُ فِيْ ظُلَلٍ مِّنَ الْغَمَامِ وَالْمَلٰٓئِكَةُ وَقُضِيَ الْاَمْرُ ؕ وَاِلَى اللّٰهِ تُرْجَعُ الْاُمُوْرُ ۝۲۱۰ سَلْ بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ
كَمْ اٰتَيْنٰهُمْ مِّنْ اٰيَةٍۢ بَيِّنَةٍ ؕ وَمَنْ يُّبَدِّلْ نِعْمَةَ اللّٰهِ مِنْۢ بَعْدِ مَا جَآءَتْهُ فَاِنَّ اللّٰهَ شَدِيْدُ الْعِقَابِ ۝۲۱۱ زُيِّنَ لِلَّذِيْنَ كَفَرُوا الْحَيٰوةُ
الدُّنْيَا وَيَسْخَرُوْنَ مِنَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا ۘ وَالَّذِيْنَ اتَّقَوْا فَوْقَهُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ؕ وَاللّٰهُ يَرْزُقُ مَنْ يَّشَآءُ بِغَيْرِ حِسَابٍ ۝۲۱۲

बिल्इस्मि फ़–हस्बुहू जहन्नमु व लबिअ्सल्मिहाद(206)व मिनन्–नासि मंय्यश्री नफ़्स–हुब्तिग़ा–अ मर्ज़ातिल्लाहि वल्लाहु रऊफुम् बिल्अिबाद(207)या अय्युहल्लज़ी–न आ–मनुद्खुलू फ़िस्सिल्मि काफ़्फ़तंव् व ला तत्तबिऊ खुतुवातिश्–शैतानि इन्नहू लकुम् अ़दुव्वुम्–मुबीन(208)फ़–इन् ज़–लल्तुम् मिम्–बअ्दि मा जाअत्कुमुल्–बय्यिनातु फ़अ्–लमू अन्नल्ला–ह अ़ज़ीजुन् ह़कीम(209)हल् यन्ज़ुरू–न इल्ला अंय्यअ्ति–यहुमुल्लाहु फ़ी ज़ु–ललिम् मिनल् ग़मामि वल्मलाइ–कतु व क़ुज़ियल् अम्रु व इलल्लाहि तुर्जअुल्–उमूर(210)सल् बनी इस्राई–ल कम् आतैनाहुम् मिन् आ–यतिम् बय्यि–नतिन् व मंय्युबद्दिल् निअ्–म–तल्लाहि मिम्–बअ्दि मा जा–अत्हु फ़–इन्नल्ला–ह शदीदुल् अ़िक़ाब (211)ज़ुय्यि–न लिल्लज़ी–न क–फ़रुल्–ह़यातुद्दुन्या व यस्ख़रू–न मिनल्लज़ी–न आमनू वल्लज़ी–नत्तक़ौ फ़ौ–क़हुम् यौमल्क़िया– मति वल्लाहु यर्ज़ुक़ु मंय्यशाउ बिग़ैरि ह़िसाब(212)

गुनाह की (फ़ा393) ऐसे को दोज़ख़ काफ़ी है और वह ज़रूर बहुत बुरा बिछौना है।(206) और कोई आदमी अपनी जान बेचता है (फ़ा394) अल्लाह की मर्ज़ी चाहने में और अल्लाह बन्दों पर मेहरबान है।(207)ऐ ईमान वालो इस्लाम में पूरे दाख़िल हो (फ़ा395) और शैतान के क़दमों पर न चलो (फ़ा396) बेशक वह तुम्हारा खुला दुश्मन है। (208)और अगर इसके बाद भी बिचलो कि तुम्हारे पास रौशन हुक्म आ चुके (फ़ा397) तो जान लो कि अल्लाह ज़बरदस्त हिकमत वाला है।(209) काहे के इन्तेज़ार में हैं (फ़ा398) मगर यही कि अल्लाह का अ़ज़ाब आए छाए हुए बादलों में और फ़रिश्ते उतरें (फ़ा399) और काम हो चुके और सब कामों की रुजूअ़ अल्लाह ही की तरफ़ है।(210) (रुकूअ़ 9) बनी इसराईल से पूछो हमने कितनी रौशन निशानियां उन्हें दीं (फ़ा400) और जो अल्लाह की आई हुई निअ़मत को बदल दे (फ़ा401) तो बेशक अल्लाह का अ़ज़ाब सख़्त है।(211) काफ़िरों की निगाह में दुनिया की ज़िन्दगी आरास्ता की गई (फ़ा402) और मुसलमानों से हंसते हैं (फ़ा403) और डर वाले उन से-ऊपर होंगे क़ियामत के दिन (फ़ा404) और ख़ुदा जिसे चाहे बे गिनती दे।(212)

(फ़ा393) गुनाह से ज़ुल्म व सरकशी और नसीहत की तरफ़ इल्तेफ़ात न करना मुराद है (ख़ाज़िन) (फ़ा394) शाने नुज़ूलः हज़रत सोहैब इब्ने सनान रूमी मक्का मुअ़ज़्ज़मा से हिजरत करके हुज़ूर सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की ख़िदमत में मदीना तय्यबा की तरफ़ रवाना हुए मुशरिकीने क़ुरैश की एक जमाअ़त ने आपका तआ़क़ुब किया तो आप सवारी से उतरे और तरकश से तीर निकाल कर फ़रमाने लगे कि ऐ क़ुरैश तुम में से कोई मेरे पास नहीं आ सकता जब तक कि मैं तीर मारते मारते तमाम तरकश ख़ाली न कर दूं और फिर जब तक तलवार मेरे हाथ में रहे उस से मारूं उस वक़्त तक तुम्हारी जमाअ़त का खेत हो जाएगा अगर तुम मेरा माल चाहो जो मक्का मुकर्रमा में मदफ़ून है तो मैं तुम्हें उसका पता बता दूं तुम मुझ से तअ़र्रुज़ न करो वह इस पर राज़ी हो गए और आपने अपने तमाम माल का पता बता दिया जब हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुए तो यह आयत नाज़िल हुई हुज़ूर ने तिलावत फ़रमाई और इरशाद फ़रमाया कि तुम्हारी यह जां-फ़रोशी बड़ी नाफ़ेअ़ तिजारत है। (फ़ा395) शाने नुज़ूलः अहले किताब में से अ़ब्दुल्लाह बिन सलाम और उनके अस्हाब हुज़ूर सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम पर ईमान लाने के बाद शरीअ़ते मूसवी के बाज़ अहकाम पर क़ायम रहे शम्बा (सनीचर) की ताज़ीम करते उस रोज़ शिकार से इज्तेनाब लाज़िम जानते और ऊंट के दूध और गोश्त से परहेज़ करते और यह ख़्याल करते कि यह चीज़ें इस्लाम में तो मुबाह हैं इनका करना ज़रूरी नहीं और तौरेत में उनसे इज्तेनाब लाज़िम किया गया है तो उनके तर्क करने में इस्लाम की मुख़ालफ़त भी नहीं है और शरीअ़ते मूसवी पर अ़मल भी होता है इस पर यह आयत नाज़िल हुई और इरशाद फ़रमाया गया कि इस्लाम के अहकाम का पूरा इत्तेबाअ़ करो यानी तौरेत के अहकाम मन्सूख़ हो गए अब उन से तमस्सुक न करो (ख़ाज़िन) (फ़ा396) इसके विसाविस व शुबहात में न आओ। (फ़ा397) और बावजूद वाज़ेह दलीलों के इस्लाम **(बक़िया सफ़हा 72 पर)**

كَانَ النَّاسُ أُمَّةً وَاحِدَةً فَبَعَثَ اللَّهُ النَّبِيِّينَ مُبَشِّرِينَ وَمُنْذِرِينَ وَأَنْزَلَ مَعَهُمُ الْكِتَابَ بِالْحَقِّ لِيَحْكُمَ بَيْنَ النَّاسِ فِيمَا اخْتَلَفُوا فِيهِ
وَمَا اخْتَلَفَ فِيهِ إِلَّا الَّذِينَ أُوتُوهُ مِنْ بَعْدِ مَا جَاءَتْهُمُ الْبَيِّنَاتُ بَغْيًا بَيْنَهُمْ فَهَدَى اللَّهُ الَّذِينَ آمَنُوا لِمَا اخْتَلَفُوا فِيهِ مِنَ الْحَقِّ بِإِذْنِهِ
وَاللَّهُ يَهْدِي مَنْ يَشَاءُ إِلَىٰ صِرَاطٍ مُسْتَقِيمٍ (٢١٣) أَمْ حَسِبْتُمْ أَنْ تَدْخُلُوا الْجَنَّةَ وَلَمَّا يَأْتِكُمْ مَثَلُ الَّذِينَ خَلَوْا مِنْ قَبْلِكُمْ مَسَّتْهُمُ
الْبَأْسَاءُ وَالضَّرَّاءُ وَزُلْزِلُوا حَتَّىٰ يَقُولَ الرَّسُولُ وَالَّذِينَ آمَنُوا مَعَهُ مَتَىٰ نَصْرُ اللَّهِ أَلَا إِنَّ نَصْرَ اللَّهِ قَرِيبٌ (٢١٤) يَسْأَلُونَكَ مَاذَا يُنْفِقُونَ
قُلْ مَا أَنْفَقْتُمْ مِنْ خَيْرٍ فَلِلْوَالِدَيْنِ وَالْأَقْرَبِينَ وَالْيَتَامَىٰ وَالْمَسَاكِينِ وَابْنِ السَّبِيلِ وَمَا تَفْعَلُوا مِنْ خَيْرٍ فَإِنَّ اللَّهَ بِهِ عَلِيمٌ (٢١٥)

कानन्नासु उम्मतंव्वाहि-द-तन् फ़-ब-अ़सल्लाहुन्नबिय्यी-न मुबश्शिरी-न व मुन्ज़िरी-न व अन्ज़-ल म-अ़हुमुल्-किता-ब बिल्हक़्क़ि लि-यह्कु-म बैनन्नासि फ़ी-मख़्-त-लफ़ू फ़ीहि व मख़्ता-ल-फ़ फ़ीहि इल्लल्लज़ी-न ऊतूहु मिम्बअ़्दि मा जाअत्हुमुल्-बय्यिनातु बग़्यम्-बै-नहुम् फ़-ह-दल्लाहुल्लज़ी-न आ-मनू लिमख़्त-लफ़ू फ़ीहि मिनल्-हक़्क़ि बिइज़्निही वल्लाहु यह्दी मंय्यशा-उ इला सिरातिम्-मुस्तक़ीम(213)अम् हसिब्तुम् अन् तद्-खुलुल्-जन्न-त व लम्मा यअ्तिकुम् म-सलुल्लज़ी-न ख़लौ मिन् क़ब्लिकुम् मस्सत्हुमुल्बअ्साउ वज़्ज़र्राउ व ज़ुल्ज़िलू हत्ता यकूलर्रसूलु वल्लज़ी-न आ-मनू म-अ़हू मता नस्रुल्लाहि अला इन्-न नस्रल्लाहि क़रीब(214)यस्अलू-न-क माज़ा युन्फ़िकू़न क़ुल् मा अन्फ़क़्तुम् मिन् ख़ैरिन् फ़लिल्-वालिदैनि वल्-अक़्रबी-न वल्-यतामा वल्मसाकीनि वब्निस्सबीलि व मा तफ़्अ़लू मिन् ख़ैरिन् फ़-इन्नल्ला-ह बिही अ़लीम(215)

लोग एक दीन पर थे (फ़ा405) फिर अल्लाह ने अम्बिया भेजे ख़ुश ख़बरी देते (फ़ा406) और डर सुनाते (फ़ा407) और उनके साथ सच्ची किताब उतारी (फ़ा408) कि वह लोगों में उनके इख़्तिलाफ़ों का फ़ैसला कर दे, और किताब में इख़्तिलाफ़ उन्हीं ने डाला जिनको दी गई थी (फ़ा409) बाद इसके कि उनके पास रौशन हुक्म आ चुके (फ़ा410) आपस की शरकशी से तो अल्लाह ने ईमान वालों को वह हक़ बात सुझा दी जिस में झगड़ रहे थे अपने हुक्म से, और अल्लाह जिसे चाहे सीधी राह दिखाए। (213) क्या इस गुमान में हो कि जन्नत में चले जाओगे और अभी तुम पर अगलों की सी रूदाद (हालत) न आई (फ़ा411) पहुंची उन्हें सख़्ती और शिद्दत और हिला हिला डाले गए यहां तक कि कह उठा रसूल (फ़ा412) और उसके साथ के ईमान वाले कब आएगी अल्लाह की मदद (फ़ा413) सुन लो बेशक अल्लाह की मदद क़रीब है।(214) तुम से पूछते हैं (फ़ा414) क्या ख़र्च करें तुम फ़रमाओ जो कुछ माल नेकी में ख़र्च करोतो वह मां बाप और क़रीब के रिश्तेदारों और यतीमों और मुहताजों और राहगीर के लिए है और जो भलाई करो (फ़ा415) बेशक अल्लाह उसे जानता है।(215)(फ़ा416)

(फ़ा405) हज़रत आदम अ़लैहिस्सलाम के ज़माना से अ़ह्दे नूह तक सब लोग एक दीन और एक शरीअ़त पर थे फिर उन में इख़्तिलाफ़ हुआ तो अल्लाह तआ़ला ने हज़रत नूह अ़लैहिस्सलाम को मबऊस फ़रमाया यह बेअ़्सत में पहले रसूल हैं (ख़ाज़िन) (फ़ा406) ईमानदारों और फ़रमांबरदारों को सवाब की (मदारिक व ख़ाज़िन) (फ़ा407) काफ़िरों और नाफ़रमानों को अ़ज़ाब का (ख़ाज़िन) (फ़ा408) जैसा कि हज़रत आदम व शीस व इदरीस पर सहाइफ़ और हज़रत मूसा पर तौरेत, हज़रत दाऊद पर ज़ुबूर, हज़रत ईसा पर इन्जील और ख़ातमुल अम्बिया मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम पर क़ुरआने हकीम। (फ़ा409) यह इख़्तिलाफ़ तब्दील व तहरीफ़ और ईमान व कुफ़्र के साथ था जैसा कि यहूद व नसारा से वाक़ेअ़् हुआ। (ख़ाज़िन) (फ़ा410) यानी यह इख़्तिलाफ़ नादानी से न था बल्कि (फ़ा411) और जैसी सख़्तियां उन पर गुज़र चुकीं अभी तक तुम्हें पेश न आईं। शाने नुज़ूलः यह आयत ग़ज़वए अहज़ाब के मुतअ़ल्लिक़ नाज़िल हुई जहां मुसलमानों को सर्दी और भूक वग़ैरह की सख़्त तकलीफ़ें पहुंची थीं इस में उन्हें सब्र की तलक़ीन फ़रमाई गई और बताया गया कि राहे ख़ुदा में तकालीफ़ बरदाश्त करना क़दीम से ख़ासाने ख़ुदा का मामूल रहा है अभी तो तुम्हें पहलों की सी तकलीफ़ें पहुंची भी नहीं हैं। बुख़ारी शरीफ़ में हज़रत ख़ुबाब बिन अरत रज़ियल्लाहु अ़न्हु से मरवी है कि हुज़ूर सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम सायए कअ़्बा में अपनी चादर मुबारक से तकिया किये हुए तशरीफ़ फ़रमा थे हम ने हुज़ूर से अ़र्ज़ की हुज़ूर हमारे लिए क्यों दुआ़ नहीं फ़रमाते हमारी क्यों मदद नहीं करते फ़रमाया तुम से पहले लोग गिरिफ़्तार किये जाते थे ज़मीन में गढ़ा खोद कर उस में दबाए जाते थे आरे से चीर कर दो टुकड़े कर डाले जाते थे और लोहे की कंघियों से उनके गोश्त नोचे जाते थे और उनमें की कोई मुसीबत उन्हें उनके दीन से रोक न सकती थी। (फ़ा413) यानी शिद्दत इस निहायत को पहुंच गई कि उन उम्मतों के रसूल और उनके फ़रमांबरदार मोमिन भी तलबे मदद में जल्दी करने लगे **(बक़िया सफ़हा 76 पर)**

كُتِبَ عَلَيْكُمُ الْقِتَالُ وَهُوَ كُرْهٌ لَّكُمْ ۚ وَعَسَىٰ أَن تَكْرَهُوا شَيْئًا وَهُوَ خَيْرٌ لَّكُمْ ۖ وَعَسَىٰ أَن تُحِبُّوا شَيْئًا وَهُوَ شَرٌّ لَّكُمْ ۗ وَاللَّهُ يَعْلَمُ وَأَنتُمْ لَا تَعْلَمُونَ ﴿٢١٦﴾ يَسْأَلُونَكَ عَنِ الشَّهْرِ الْحَرَامِ قِتَالٍ فِيهِ ۖ قُلْ قِتَالٌ فِيهِ كَبِيرٌ ۖ وَصَدٌّ عَن سَبِيلِ اللَّهِ وَكُفْرٌ بِهِ وَالْمَسْجِدِ الْحَرَامِ وَإِخْرَاجُ أَهْلِهِ مِنْهُ أَكْبَرُ عِندَ اللَّهِ ۚ وَالْفِتْنَةُ أَكْبَرُ مِنَ الْقَتْلِ ۗ وَلَا يَزَالُونَ يُقَاتِلُونَكُمْ حَتَّىٰ يَرُدُّوكُمْ عَن دِينِكُمْ إِنِ اسْتَطَاعُوا ۚ وَمَن يَرْتَدِدْ مِنكُمْ عَن دِينِهِ فَيَمُتْ وَهُوَ كَافِرٌ فَأُولَٰئِكَ حَبِطَتْ أَعْمَالُهُمْ فِي الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ ۖ وَأُولَٰئِكَ أَصْحَابُ النَّارِ ۖ هُمْ فِيهَا خَالِدُونَ ﴿٢١٧﴾ إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَالَّذِينَ هَاجَرُوا وَجَاهَدُوا فِي سَبِيلِ اللَّهِ أُولَٰئِكَ يَرْجُونَ رَحْمَتَ اللَّهِ ۚ وَاللَّهُ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ﴿٢١٨﴾ يَسْأَلُونَكَ عَنِ الْخَمْرِ وَالْمَيْسِرِ ۖ قُلْ

कुति–ब अ़लैकुमुल्–क़ितालु व हु–व कुर्हुल्लकुम् व अ़सा अन् तक्रहू शैअंव्–व हु–व ख़ैरुल्लकुम् व अ़सा अन् तुहिब्बू शैअंव्–व हु–व शर्रुल्लकुम् वल्लाहु यअ्–लमु व अन्तुम् ला तअ्–लमून(216) यस्–अलून–क अ़निश्शहरिल् ह़रामि क़ितालिन् फ़ीहि कुल् क़ितालुन् फ़ीहि कबीरुन् व सद्दुन् अ़न् सबी–लिल्लाहि व कुफ़्रुम् बिही वल्मस्जिदिल्–ह़रामि व इख़्राजु अह़्लिही मिन्हु अक्बरु अ़िन्दल्लाहि वल्–फ़ित्नतु अक्बरु मिनल्–क़त्लि व ला यज़ालू–न युक़ातिलू–नकुम् ह़त्ता यरुद्दूकुम् अ़न् दीनिकुम् इनिस्तताअू. व मंय्यर्–तदिद् मिन्कुम् अ़न् दीनिही फ़–यमुत् व हु–व काफ़िरुन् फ़उलाइ–क ह़बितत् अअ्–मालुहुम् फ़िद्दुन्या वल्–आख़िरति व उलाइ–क अस्ह़ाबुन्नारि हुम् फ़ीहा ख़ालिदून(217) इन्नल्लज़ी–न आमनू वल्लज़ी–न हा–जरू व जा–हदू फ़ी सबी–लिल्लाहि उलाइ–क यर्जू–न रह़्म–तल्लाहि वल्लाहु ग़फ़ू रुर्रह़ीम(218)यस्अलू–न–क अ़निल्–ख़म्रि वल्मैसिरि कुल्

तुम पर फ़र्ज़ हुआ ख़ुदा की राह में लड़ना और वह तुम्हें नागवार है (फ़ा417) और क़रीब है कि कोई बात तुम्हें बुरी लगे और वह तुम्हारे हक़ में बेहतर हो और क़रीब है कि कोई बात तुम्हें पसन्द आए और वह तुम्हारे हक़ में बुरी हो और अल्लाह जानता है और तुम नहीं जानते। (फ़ा४१८) (216) (रुकूअ्. 10) तुम से पूछते हैं माहे ह़राम में लड़ने का हुक्म (फ़ा418) तुम फ़रमाओ इस में लड़ना बड़ा गुनाह है (फ़ा419) और अल्लाह की राह से रोकना और उस पर ईमान न लाना और मस्जिदे ह़राम से रोकना और उसके बसने वालों को निकाल देना (फ़ा420) अल्लाह के नज़दीक यह गुनाह उससे भी बड़े हैं और उनका फ़साद (फ़ा421) क़त्ल से सख़्त तर है (फ़ा422) और हमेशा तुम से लड़ते रहेंगे यहां तक कि तुम्हें तुम्हारे दीन से फेर दें अगर बन पड़े (फ़ा423) और तुम में जो कोई अपने दीन से फिरे, फिर काफ़िर होकर मरे तो उन लोगों का किया अकारत गया दुनिया में और आख़िरत में (फ़ा424) और वह दोज़ख़ वाले हैं उन्हें उसमें हमेशा रहना।(217) वह जो ईमान लाए और वह जिन्होंने अल्लाह के लिए अपने घर बार छोड़े और अल्लाह की राह में लड़े वह रहमते इलाही के उम्मीदवार हैं और अल्लाह बख़्शने वाला मेहरबान है।(218)(फ़ा425)तुमसे शराब और जुए का हुक्म पूछते हैं तुम फ़रमा दो

(फ़ा417) मसलाः जिहाद फ़र्ज़ है जब उसके शरायत पाए जायें अगर काफ़िर मुसलमानों के मुल्क पर चढ़ाई करें तो जिहाद फ़र्ज़े ऐन होता है वरना फ़र्ज़े कफ़ाया (फ़ा418) कि तुम्हारे हक़ में क्या बेहतर है तो तुम पर लाज़िम है हुक्मे इलाही की इताअ़त करो और उस को बेहतर समझो चाहे वह तुम्हारे नफ़्स पर गिरां हो। (फ़ा419) शाने नुज़ूलः सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने अ़ब्दुल्लाह बिन जह़श की सरकर्दगी में मुजाहिदीन की एक जमाअ़त रवाना फ़रमाई थी उसने मुशरिकीन से क़िताल किया उनका ख़्याल था कि वह रोज़ जमादियुल उख़रा का आख़िर दिन है मगर दर हक़ीक़त चांद २६ को हो गया था और वह रजब की पहली तारीख़ थी इस पर कुफ़्फ़ार ने मुसलमानों को आ़र दिलाई कि तुमने माहे हराम में जंग की और हुज़ूर से उसके मुतअ़ल्लिक़ सवाल होने लगे इस पर यह आयत नाज़िल हुई। (फ़ा420) मगर सहाबा से यह गुनाह वाक़ेअ़ न हुआ क्यों कि इन्हें चांद होने की ख़बर ही न थी उनके नज़दीक वह दिन माहे हराम रजब का न था। मसलाः माह-हाए हराम में जंग की हुरमत का हुक्म आयत *उक़्तुलुल मुशरिकी-न हैसु वजद् तुमूहुम्* से मन्सूख़ हो गया। (फ़ा421) जो मुशरिकीन से वाक़ेअ़. हुआ कि उन्होंने हुज़ूर सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम और आपके असहाब को साले हुदैबिया कअ़बा मुअ़ज़्ज़मा से रोका और आपके ज़मानए क़ियाम मक्का मुअ़ज़्ज़मा में आपको और आपके असहाब को इतनी ईज़ायें दीं कि वहां से हिजरत करना पड़ी। (फ़ा422) यानी मुशरिकीन का कि वह शिर्क करते हैं और सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम और मोमिनीन को मस्जिदे हराम से रोकते और तरह तरह की ईज़ायें देते हैं। (फ़ा423) क्यों कि क़त्ल तो बाज़ हालात में मुबाह होता है और कुफ़्र किसी हाल में मुबाह नहीं और यहां तारीख़ का मश्कूक होना उज़्र माक़ूल है और कुफ़्फ़ार के **(बक़िया सफ़हा 76 पर)**

فِيهِمَآ اِثْمٌ كَبِيْرٌ وَّ مَنَافِعُ لِلنَّاسِ ز وَاِثْمُهُمَآ اَكْبَرُ مِنْ نَّفْعِهِمَا ط وَيَسْـَٔلُوْنَكَ مَاذَا يُنْفِقُوْنَ ط قُلِ الْعَفْوَ ط كَذٰلِكَ يُبَيِّنُ اللّٰهُ لَكُمُ الْاٰيٰتِ لَعَلَّكُمْ

تَتَفَكَّرُوْنَ ﴿۲۱۹﴾ فِى الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ ط وَيَسْـَٔلُوْنَكَ عَنِ الْيَتٰمٰى ط قُلْ اِصْلَاحٌ لَّهُمْ خَيْرٌ ط وَاِنْ تُخَالِطُوْهُمْ فَاِخْوَانُكُمْ ط وَاللّٰهُ يَعْلَمُ الْمُفْسِدَ مِنَ الْمُصْلِحِ ط

وَلَوْ شَآءَ اللّٰهُ لَاَعْنَتَكُمْ ط اِنَّ اللّٰهَ عَزِيْزٌ حَكِيْمٌ ﴿۲۲۰﴾ وَلَا تَنْكِحُوا الْمُشْرِكٰتِ حَتّٰى يُؤْمِنَّ ط وَلَاَمَةٌ مُّؤْمِنَةٌ خَيْرٌ مِّنْ مُّشْرِكَةٍ وَّلَوْ اَعْجَبَتْكُمْ ج

وَلَا تُنْكِحُوا الْمُشْرِكِيْنَ حَتّٰى يُؤْمِنُوْا ط وَلَعَبْدٌ مُّؤْمِنٌ خَيْرٌ مِّنْ مُّشْرِكٍ وَّلَوْ اَعْجَبَكُمْ ط اُولٰٓئِكَ يَدْعُوْنَ اِلَى النَّارِ ج وَاللّٰهُ يَدْعُوْٓا اِلَى

الْجَنَّةِ وَالْمَغْفِرَةِ بِاِذْنِهٖ ج وَيُبَيِّنُ اٰيٰتِهٖ لِلنَّاسِ لَعَلَّهُمْ يَتَذَكَّرُوْنَ ﴿۲۲۱﴾ وَيَسْـَٔلُوْنَكَ عَنِ الْمَحِيْضِ ط قُلْ هُوَ اَذًى فَاعْتَزِلُوا النِّسَآءَ

फ़ीहिमा इस्मुन् कबीरुंव्–व मनाफ़िउ लिन्नासि व इस्मुहुमा अक्बरु मिन् नफ़्अिहिमा व यस्अलून–क मा ज़ा युन्फ़िकू–न कुलिल् अफ़्व कज़ालि–क युबय्यि–नुल्लाहु लकुमुल् आयाति ल–अ़ल्लकुम् त–त–फ़क्करून(219)फ़िद्दुन्या वल्–आख़ि–रति व यस्–अलून–क अ़निल्–यतामा कुल् इस्लाहुल् लहुम् ख़ैरुन् व इन् तुख़ालितूहुम् फ़–इख़्वानुकुम् वल्लाहु यअ्–लमुलमुफ़्सि–द मिनल्–मुस्लिहि व लौ शा–अल्लाहु ल–अअ्–न–तकुम् इन्नल्ला–ह अ़ज़ीज़ुन् हकीम(220)वला तन्किहुल् मुश्रिकाति हत्ता युअमिन् –न व ल–अ–म–तुम् मुअमि–नतुन् ख़ैरुम्–मिम् मुश्रि–कतिंव् व लौ अअ्–ज–बत्कुम् व ला तुन्किहुल् मुश्रिकी–न हत्ता युअ्मिनू व ल–अब्दुम्–मुअमिनुन् ख़ैरुम्–मिम्–मुश्रिकिंव् व लौ अअ्–ज–बकुम् उलाइ–क यद्अू–न इलन्नारि वल्लाहु यद्अू इलल्–जन्नति वल्मग़्फ़ि–रति बि इज़्निही व युबय्यिनु आयातिही लिन्नासि ल–अ़ल्लहुम् य–त–ज़क्करून(221)व यस्अलून–क अ़निल्महीज़ि कुल् हु–व अ–ज़न् फ़अ्–तज़ि–लुन्निसा–अ

कि इन दोनों में बड़ा गुनाह है और लोगों के कुछ दुनियवी नफ़ा भी और उनका गुनाह उनके नफ़ा से बड़ा है (फ़ा426) और तुमसे पूछते हैं क्या ख़र्च करें (फ़ा427) तुम फ़रमाओ जो फ़ाज़िल बचे (फ़ा428) इसी तरह अल्लाह तुम से आयतें बयान फ़रमाता है कि कहीं तुम(219) दुनिया और आख़िरत के काम सोच कर करो (फ़ा429) और तुम से यतीमों का मसला पूछते हैं (फ़ा430) तुम फ़रमाओ उनका भला करना बेहतर है और अगर अपना उनका ख़र्च मिला लो तो वह तुम्हारे भाई हैं और ख़ुदा ख़ूब जानता है बिगाड़ने वाले को संवारने वाले से और अल्लाह चाहता तो तुम्हें मशक़्क़त में डालता बेशक अल्लाह ज़बरदस्त हिकमत वाला है।(220) और शिर्क वाली औ़रतों से निकाह न करो जब तक मुसलमान न हो जायें (फ़ा431) और बेशक मुसलमान लौंडी मुशरिका से अच्छी (फ़ा432) अगरचे वह तुम्हें भाती हो और मुशरिकों के निकाह में न दो जब तक वह ईमान न लायें (फ़ा433) और बेशक मुसलमान ग़ुलाम मुशरिक से अच्छा अगरचे वह तुम्हें भाता हो वह दोज़ख़ की तरफ़ बुलाते हैं (फ़ा434) और अल्लाह जन्नत और बख़्शिश की तरफ़ बुलाता है अपने हुक्म से और अपनी आयतें लोगों के लिए बयान करता है कि कहीं वह नसीहत मानें।(221) (रुकूअ्. 11) और तुम से पूछते हैं हैज़ का हुक्म (फ़ा435) तुम फ़रमाओ वह नापाकी है, तो औ़रतों से अलग रहो।

(फ़ा426) हज़रत अ़ली मुर्तज़ा रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने फ़रमाया कि अगर शराब का एक क़तरा कुंएं में गिर जाए फिर उस जगह मिनारा बनाया जाए तो मैं उस पर अज़ान न कहूं और अगर दरिया में शराब का क़तरा पड़े फिर दरिया ख़ुश्क हो और वहां घास पैदा हो उसमें अपने जानवरों को न चराऊं। सुबहानल्लाह गुनाह से किस क़दर नफ़रत है *रज़क़नल्लाहु तआ़ला इत्तबा–अ़हुम्* शराब सन् ३ हिजरी में ग़ज़वए अहज़ाब से चन्द रोज़ बाद हराम की गई इससे क़ब्ल यह बताया गया था कि जूए और शराब का गुनाह उनके नफ़ा से ज़्यादा है नफ़ा तो यही है कि शराब से कुछ सुरूर पैदा होता है या उसकी ख़रीद व फ़रोख़्त से तिजारती फ़ायदा होता है और जूए में कभी मुफ़्त का माल हाथ आता है और गुनाहों और मुफ़सिदों का क्या शुमार अ़क़्ल का ज़वाल ग़ैरत व हम्मियत का ज़वाल इबादात से महरूमी लोगों से अ़दावतें सब की नज़र में ख़्वार होना दौलत व माल की इज़ाअ़त। एक रिवायत में है कि जिब्रीले अमीन ने हुज़ूर पुरनूर सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के हुज़ूर में अ़र्ज़ किया कि अल्लाह तआ़ला को जअ़्फ़र तय्यार की चार ख़सलतें पसन्द हैं हुज़ूर ने हज़रत जअ़्फ़र रज़ियल्लाहु अ़न्हु से दरियाफ़्त फ़रमाया उन्होंने अ़र्ज़ किया कि एक तो यह है कि मैंने शराब कभी नहीं पी, यानी हुक्मे हुरमत से पहले भी और उसकी वजह यह थी कि मैं जानता था कि इससे अ़क़्ल ज़ायल होती है और मैं चाहता था कि अ़क़्ल और भी तेज़ हो दूसरी **(बक़िया सफ़हा 77 पर)**

فِي الْمَحِيضِ ۖ وَلَا تَقْرَبُوهُنَّ حَتَّىٰ يَطْهُرْنَ ۖ فَإِذَا تَطَهَّرْنَ فَأْتُوهُنَّ مِنْ حَيْثُ أَمَرَكُمُ اللَّهُ ۚ إِنَّ اللَّهَ يُحِبُّ التَّوَّابِينَ وَيُحِبُّ الْمُتَطَهِّرِينَ ۝
نِسَاؤُكُمْ حَرْثٌ لَكُمْ فَأْتُوا حَرْثَكُمْ أَنَّىٰ شِئْتُمْ ۖ وَقَدِّمُوا لِأَنْفُسِكُمْ ۚ وَاتَّقُوا اللَّهَ وَاعْلَمُوا أَنَّكُمْ مُلَاقُوهُ ۗ وَبَشِّرِ الْمُؤْمِنِينَ ۝
وَلَا تَجْعَلُوا اللَّهَ عُرْضَةً لِأَيْمَانِكُمْ أَنْ تَبَرُّوا وَتَتَّقُوا وَتُصْلِحُوا بَيْنَ النَّاسِ ۗ وَاللَّهُ سَمِيعٌ عَلِيمٌ ۝ لَا يُؤَاخِذُكُمُ اللَّهُ بِاللَّغْوِ فِي
أَيْمَانِكُمْ وَلَٰكِنْ يُؤَاخِذُكُمْ بِمَا كَسَبَتْ قُلُوبُكُمْ ۗ وَاللَّهُ غَفُورٌ حَلِيمٌ ۝ لِلَّذِينَ يُؤْلُونَ مِنْ نِسَائِهِمْ تَرَبُّصُ أَرْبَعَةِ أَشْهُرٍ ۖ فَإِنْ فَاءُوا
فَإِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَحِيمٌ ۝ وَإِنْ عَزَمُوا الطَّلَاقَ فَإِنَّ اللَّهَ سَمِيعٌ عَلِيمٌ ۝ وَالْمُطَلَّقَاتُ يَتَرَبَّصْنَ بِأَنْفُسِهِنَّ ثَلَاثَةَ قُرُوءٍ ۚ وَلَا يَحِلُّ

फ़िल्–महीज़ि व ला तक़्रबूहुन्–न ह़त्ता यत्हुर्–न फ़–इज़ा त–तह्–हर्–न फ़अ्तूहुन्–न मिन् ह़ैसु अ–म–रकुमुल्लाहु इन्नल्ला–ह युह़िब्बुत्तव्वाबी–न व युह़िब्बुल्–मु–त–तह्हिरीन(222)निसाउकुम् ह़र्सुल्लकुम् फ़अ्तू ह़र्–सकुम् अन्ना शिअ्तुम् व क़द्दिमू लि–अन्फ़ु–सिकुम् वत्तक़ुल्ला–ह वअ्लमू अन्नकुम्–मुलाक़ूहु व बश्शिरिल्–मुअ्मिनीन(223)व ला तज्अ़लुल्ला–ह अुर्ज़तल्लि–ऐमा–निकुम् अन् तबर्रू व तत्तक़ू व तुस्लिहू बैनन्नासि वल्लाहु समीअुन् अ़लीम(224)ला यु–आख़िज़ुकु–मुल्लाहु बिल्लग़्वि फ़ी ऐमानिकुम् व लाकिंय्युआख़िज़ुकुम् बिमा क–स–बत् क़ुलूबुकुम् वल्लाहु ग़फ़ूरुन् ह़लीम(225)लिल्लज़ी–न यूअ्लू–न मिन्निसाइहिम् तरब्बुसु अर्ब–अ़ति अश्हुरिन् फ़–इन् फ़ा–ऊ फ़–इन्नल्ला–ह ग़फ़ूरुर्रहीम(226)व इन् अ़–ज़–मूत्तला–क़ फ़–इन्नल्ला–ह समीअुन् अ़लीम (227)वल्मुतल्ल–क़ातु य–त–रब्बस्–न बि–अन्फ़ु–सिहिन्–न सला–स–त क़ुरू–इन् व ला यहिल्लु

हैज़ के दिनों और उनसे नज़दीकी न करो जब तक पाक न हो लें फिर जब पाक हो जायें तो उनके पास जाओ जहां से तुम्हें अल्लाह ने हुक्म दिया बेशक अल्लाह पसन्द रखता है बहुत तौबा करने वालों को और पसन्द रखता है सुथरों को।(222) तुम्हारी औ़रतें तुम्हारे लिए खेतियां हैं तो आओ अपनी खेतियों में जिस तरह चाहो (फ़ा436) और अपने भले का काम पहले करो (फ़ा437) और अल्लाह से डरते रहो और जान रखो कि तुम्हें उससे मिलना है और ऐ महबूब बशारत दो ईमान वालों को (223)और अल्लाह को अपनी क़समों का निशाना न बना लो (फ़ा438) कि एहसान और परहेज़गारी और लोगों में सुलह करने की क़सम कर लो और अल्लाह सुनता जानता है।(224) अल्लाह तुम्हें नहीं पकड़ता उन क़समों में जो बे इरादा ज़बान से निकल जाए हां उस पर गिरिफ़्त फ़रमाता है जो काम तुम्हारे दिलों ने किए (फ़ा439) और अल्लाह बख़्शने वाला, हिल्म वाला है।(225) वह जो क़सम खा बैठते हैं अपनी औ़रतों के पास जाने की उन्हें चार महीने की मुहलत है पस अगर इस मुद्दत में फिर आए तो अल्लाह बख़्शने वाला मेहरबान है।(226) और अगर छोड़ देने का इरादा पक्का कर लिया तो अल्लाह सुनता जानता है।(227) (फ़ा440) और तलाक़ वालियां अपनी जानों को रोके रहें तीन हैज़ तक (फ़ा441) और उन्हें हलाल

(फ़ा436) यानी औ़रतों की क़ुरबत से नस्ल का क़स्द करो न क़ज़ाए शह्वत का (फ़ा437) यानी आ़माले सालिह़ा या जिमाअ़ से क़ब्ल बिस्मिल्लाह पढ़ना। (फ़ा438) हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन रवाहा ने अपने बहनोई नोअ़्मान बिन बशीर के घर जाने और उनसे कलाम करने और उनके ख़ुसूम के साथ उनकी सुलह कराने से क़सम खा ली थी जब उसके मुतअ़ल्लिक़ उन से कहा जाता था तो कह देते थे कि मैं क़सम खा चुका हूं इस लिए यह काम कर ही नहीं सकता इस बाब में यह आयत नाज़िल हुई और नेक काम करने से क़सम खा लेने की मुमानअ़त फ़रमाई गई। मसलाः अगर कोई शख़्स नेकी से बाज़ रहने की क़सम खा ले तो उसको चाहिये कि क़सम को पूरा न करे बल्कि वह नेक काम करे और क़सम का कफ़्फ़ारा दे मुस्लिम शरीफ़ की हदीस में है रसूले अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया जिस शख़्स ने किसी अम्र पर क़सम खा ली फिर मालूम हुआ कि ख़ैर और बेहतरी उसके ख़िलाफ़ में है तो चाहिये कि उस अम्रे ख़ैर को करे और क़सम का कफ़्फ़ारा दे मसलाः बाज़ मुफ़स्सिरीन ने यह भी कहा है कि इस आयत से ब–कसरत क़सम खाने की मुमानअ़त साबित होती है। (फ़ा439) मसलाः क़सम तीन तरह की होती है लग़्व, ग़मूस, मुन्अ़क़िदा, लग़्व यह है कि किसी गुज़रे हुए अम्र पर अपने ख़्याल में सही जानकर क़सम खाए और दर हक़ीक़त वह उसके ख़िलाफ़ हो यह माफ़ है और इस पर कफ़्फ़ारा नहीं, ग़मूस यह है कि किसी गुज़रे हुए अम्र पर दानिस्ता झूठी क़सम खाए इसमें गुनहगार होगा, मुन्अ़क़िदा यह है कि किसी आईन्दा अम्र पर क़स्द करके क़सम खाए इस क़सम को अगर तोड़े तो गुनहगार भी है और कफ़्फ़ारा भी लाज़िम। (फ़ा440) शाने नुज़ूलः ज़मानए जाहिलियत में लोगों का यह मामूल था कि अपनी औ़रतों से माल तलब करते अगर वह देने से इंकार करतीं तो एक साल दो **(बक़िया सफ़हा 76 पर)**

لَهُنَّ اَنْ يَّكْتُمْنَ مَا خَلَقَ اللّٰهُ فِيْٓ اَرْحَامِهِنَّ اِنْ كُنَّ يُؤْمِنَّ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ ؕ وَبُعُوْلَتُهُنَّ اَحَقُّ بِرَدِّهِنَّ فِيْ ذٰلِكَ اِنْ اَرَادُوْٓا
اِصْلَاحًا ؕ وَلَهُنَّ مِثْلُ الَّذِيْ عَلَيْهِنَّ بِالْمَعْرُوْفِ ۪ وَلِلرِّجَالِ عَلَيْهِنَّ دَرَجَةٌ ؕ وَاللّٰهُ عَزِيْزٌ حَكِيْمٌ ۝ اَلطَّلَاقُ مَرَّتٰنِ ۪ فَاِمْسَاكٌۢ بِمَعْرُوْفٍ
اَوْ تَسْرِيْحٌۢ بِاِحْسَانٍ ؕ وَلَا يَحِلُّ لَكُمْ اَنْ تَاْخُذُوْا مِمَّآ اٰتَيْتُمُوْهُنَّ شَيْـًٔا اِلَّآ اَنْ يَّخَافَآ اَلَّا يُقِيْمَا حُدُوْدَ اللّٰهِ ؕ فَاِنْ خِفْتُمْ اَلَّا يُقِيْمَا
حُدُوْدَ اللّٰهِ ۙ فَلَا جُنَاحَ عَلَيْهِمَا فِيْمَا افْتَدَتْ بِهٖ ؕ تِلْكَ حُدُوْدُ اللّٰهِ فَلَا تَعْتَدُوْهَا ۚ وَمَنْ يَّتَعَدَّ حُدُوْدَ اللّٰهِ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الظّٰلِمُوْنَ ۝
فَاِنْ طَلَّقَهَا فَلَا تَحِلُّ لَهٗ مِنْۢ بَعْدُ حَتّٰى تَنْكِحَ زَوْجًا غَيْرَهٗ ؕ فَاِنْ طَلَّقَهَا فَلَا جُنَاحَ عَلَيْهِمَآ اَنْ يَّتَرَاجَعَآ اِنْ ظَنَّآ اَنْ يُّقِيْمَا حُدُوْدَ اللّٰهِ ؕ وَتِلْكَ

लहुन्–न अंय्यक्तुम्–न मा ख़–ल–क़ल्लाहु फ़ी अर्हा–मिहिन्–न इन्कुन्–न युअ्मिन्–न बिल्लाहि वल्यौमिल्–आख़िरि व बुअू–लतुहुन्–न अहक़्क़ु बि–रद्दिहिन्–न फ़ी ज़ालि–क इन् अरादू इस्लाहन् व लहुन्–न मिस्लुल्ल–ज़ी अ़लैहिन्–न बिल्मअ्–रूफ़ि व लिर्रिजालि अ़लैहिन्–न द–र–जतुन् वल्लाहु अ़ज़ीज़ुन हकीम(228)अत्तलाक़ु मर्रतानि फ़–इम्साकुम् बिमअ्–रूफ़िन् औ तस्रीहुम् बि–इह्सानिन् व ला यहिल्लु लकुम् अन् तअ्ख़ुज़ू मिम्मा आतैतुमूहुन्–न शैअन् इल्ला अंय्यख़ाफ़ा अल्ला युक़ीमा हुदूदल्लाहि फ़–इन् ख़िफ़्तुम् अल्ला युक़ीमा हुदूदल्लाहि फ़ला जुना–ह अ़लैहिमा फ़ी–मफ़्तदत् बिही तिल्क हुदूदुल्लाहि फ़ला तअ्–तदूहा व मंय्य–त–अ़द्–द हुदूदल्लाहि फ़–उलाइ–क हुमुज़्ज़ालिमून(229) फ़–इन् तल्ल–क़हा फ़ला तहिल्लु लहू मिम्बअ्दु हत्ता तन्कि–ह ज़ौजन् ग़ै–रहू फ़इन् तल्ल–क़हा फ़ला जुना–ह अ़लैहिमा अंय्य–तरा–जआ इन् ज़न्ना अंय्युक़ीमा हुदूदल्लाहि व तिल्क

नहीं कि छुपायें वह जो अल्लाह ने उनके पेट में पैदा किया (फ़ा442) अगर अल्लाह और क़ियामत पर ईमान रखती हैं (फ़ा443) और उनके शौहरों को उस मुद्दत के अन्दर उनके फेर लेने का हक़ पहुंचता है अगर मिलाप चाहें (फ़ा444) और औ़रतों का भी हक़ ऐसा ही है जैसा उन पर है शरअ़. के मुवाफ़िक़ (फ़ा445) और मर्दों को उन पर फ़ज़ीलत है और अल्लाह ग़ालिब हिकमत वाला है।(228) (रुकूअ़ १२) यह तलाक़ (फ़ा446) दो बार तक है फिर भलाई के साथ रोक लेना है (फ़ा447) या नेकोई के साथ छोड़ देना है (फ़ा448) और तुम्हें रवा नहीं कि जो कुछ औ़रतों को दिया (फ़ा449) उसमें से कुछ वापस लो (फ़ा450) मगर जब दोनों को अन्देशा हो कि अल्लाह की हदें क़ायम न करेंगे (फ़ा451) फिर अगर तुम्हें ख़ौफ़ हो कि वह दोनों ठीक उन्ही हदों पर न रहेंगे तो उन पर कुछ गुनाह नहीं इसमें जो बदला देकर औरत छुट्टी ले (फ़ा452) यह अल्लाह की हदें हैं इनसे आगे न बढ़ो और जो अल्लाह की हदों से आगे बढ़े तो वही लोग ज़ालिम हैं।(229) फिर अगर तीसरी तलाक़ उसे दी तो अब वह औ़रत उसे हलाल न होगी जब तक दूसरे ख़ाविन्द के पास न रहे (फ़ा453) फिर वह दूसरा अगर उसे तलाक़ दे दे तो उन दोनों पर गुनाह नहीं कि फिर आपस में मिल जायें (फ़ा454) अगर समझते हों कि अल्लाह की हदें निबाहेंगे और यह अल्लाह की हदें हैं जिन्हें बयान

(फ़ा442) वह हमल हो या ख़ूने हैज़ क्योंकि उसके छुपाने से रजअ़त और वलद में जो शौहर का हक़ है वह ज़ाया होगा। (फ़ा443) यानी यही मुक़्तज़ाए ईमानदारी है (फ़ा444) यानी तलाक़े रजई में इद्दत के अन्दर शौहर औ़रत से रुजूअ़ कर सकता है ख़्वाह औ़रत राज़ी हो या न हो लेकिन अगर शौहर को मिलाप मन्ज़ूर हो तो ऐसा करे ज़रर रसानी का क़स्द न करे जैसा कि अहले जाहिलियत औ़रत को परेशान करने के लिए करते थे (फ़ा445) यानी जिस तरह औ़रतों पर शौहरों के हुक़ूक़ की अदा वाजिब है उसी तरह शौहरों पर औ़रतों के हुक़ूक़ की रिआ़यत लाज़िम है। (फ़ा446) यानी तलाक़े रजई। **शाने नुज़ूलः** एक औ़रत ने सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर होकर अ़र्ज़ किया कि उसके शौहर ने कहा है कि वह उसको तलाक़ देता और रजअ़त करता रहेगा हर मर्तबा जब तलाक़ की इद्दत गुज़रने के क़रीब होगी रजअ़त कर लेगा फिर तलाक़ दे देगा इसी तरह उम्र भर उसको क़ैद रखेगा इस पर यह आयत नाज़िल हुई और इरशाद फ़रमा दिया कि तलाक़े रजई दो बार तक है उसके बाद फिर तलाक़ देने पर रजअ़त का हक़ नहीं। (फ़ा447) रजअ़त करके (फ़ा448) इस तरह कि रजअ़त न करे और इद्दत गुज़र कर औ़रत बायना हो जाए। (फ़ा449) यानी महर। (फ़ा450) तलाक़ देते वक़्त (फ़ा451) जो हुक़ूक़ ज़ौजैन के मुतअ़ल्लिक़ हैं (फ़ा452) यानी तलाक़ हासिल करे **शाने नुज़ूलः** यह आयते जमीला बिन्ते अ़ब्दुल्लाह के बाब में नाज़िल हुई यह जमीला साबित बिन क़ैस इब्ने शमास के निकाह में थीं और शौहर से कमाले नफ़रत रखती थीं रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के हुज़ूर में अपने शौहर की शिकायत लाईं और किसी तरह उनके पास रहने पर **(बक़िया सफ़हा 77 पर)**

حُدُوْدُ اللّٰهِ يُبَيِّنُهَا لِقَوْمٍ يَّعْلَمُوْنَ ۝ وَاِذَا طَلَّقْتُمُ النِّسَآءَ فَبَلَغْنَ اَجَلَهُنَّ فَاَمْسِكُوْهُنَّ بِمَعْرُوْفٍ اَوْ سَرِّحُوْهُنَّ بِمَعْرُوْفٍ ۪ وَّلَا تُمْسِكُوْهُنَّ ضِرَارًا لِّتَعْتَدُوْا ۚ وَمَنْ يَّفْعَلْ ذٰلِكَ فَقَدْ ظَلَمَ نَفْسَهٗ ۭ وَلَا تَتَّخِذُوْٓا اٰيٰتِ اللّٰهِ هُزُوًا ۡ وَّاذْكُرُوْا نِعْمَتَ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ وَمَآ اَنْزَلَ عَلَيْكُمْ مِّنَ الْكِتٰبِ وَالْحِكْمَةِ يَعِظُكُمْ بِهٖ ۭ وَاتَّقُوا اللّٰهَ وَاعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمٌ ۝ وَاِذَا طَلَّقْتُمُ النِّسَآءَ فَبَلَغْنَ اَجَلَهُنَّ فَلَا تَعْضُلُوْهُنَّ اَنْ يَّنْكِحْنَ اَزْوَاجَهُنَّ اِذَا تَرَاضَوْا بَيْنَهُمْ بِالْمَعْرُوْفِ ۭ ذٰلِكَ يُوْعَظُ بِهٖ مَنْ كَانَ مِنْكُمْ يُؤْمِنُ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ ۭ ذٰلِكُمْ اَزْكٰى لَكُمْ وَاَطْهَرُ ۭ وَاللّٰهُ يَعْلَمُ وَاَنْتُمْ لَا تَعْلَمُوْنَ ۝ وَالْوَالِدٰتُ يُرْضِعْنَ اَوْلَادَهُنَّ حَوْلَيْنِ كَامِلَيْنِ لِمَنْ

हुदूदुल्लाहि युबय्यिनुहा लिक़ौमिंय्यअ्–लमून(230)व इज़ा तल्लक़्तुमुन्निसा–अ फ़–बलग्–न अ–ज–लहुन्–न फ़–अम्सिकू हुन्–न बिमअ्रूफ़िन् औ सर्रिहू हुन्–न बिमअ्–रूफ़िन् व ला तुम्सिकू हुन्–न ज़िरारल्–लि–तअ्–तदू व मंय्यफ़्अल् ज़ालि–क फ़–क़द् ज–ल–म नफ़्सहू व ला तत्तख़िज़ू आयातिल्लाहि हुज़ुवन् वज़्कुरू निअ्–म–तल्लाहि अ़लैकुम् व मा अन्–ज़–ल अ़लैकुम् मिनल्–किताबि वल्हिक्मति य–अ़िज़ुकुम् बिही वत्तक़ुल्ला–ह वअ्लमू अन्नल्ला–ह बिकुल्लि शैइन् अ़लीम(231)व इज़ा तल्लक़्तुमुन्निसा –अ फ़–बलग्–न अ–ज–लहुन्–न फ़ला तअ्ज़ुलू हुन्–न अंय्यन्किह्–न अज़्वा–ज–हुन्–न इज़ा तराज़ौ बै–नहुम् बिल्मअ्–रूफ़ि ज़ालि–क यू–अ़ज़ु बिही मन् का–न मिन्कुम् युअ्मिनु बिल्लाहि वल्यौमिल्–आख़िरि ज़ालिकुम् अज़्का लकुम् व अत्हरु वल्लाहु यअ्–लमु व अन्तुम् ला तअ्–लमून (232)वल्वालिदातु युर्ज़िअ्–न औला–द हुन्–न हौलैनि कामिलैनि लि–मन्

करता है, दानिशमन्दों के लिए।(230) और जब तुम औ़रतों को तलाक़ दो और उनकी मीआ़द आ लगे (फ़ा455) तो उस वक़्त तक या भलाई के साथ रोक लो (फ़ा456) या नेकोई के साथ छोड़ दो (फ़ा457) और उन्हें ज़रर देने के लिए रोकना न हो कि हद से बढ़ो और जो ऐसा करे वह अपना ही नक़्सान करता है (फ़ा458) और अल्लाह की आयतों को ठट्ठा न बना लो (फ़ा459) और याद करो अल्लाह का एहसान जो तुम पर है (फ़ा460) और वह जो तुम पर किताब और हिकमत (फ़ा461) उतारी तुम्हें नसीहत देने को और अल्लाह से डरते रहो और जान रखो कि अल्लाह सब कुछ जानता है।(231) (फ़ा462) (रुकूअ़ 13) और जब तुम औ़रतों को तलाक़ दो और उनकी मीआ़द पूरी हो जाए (फ़ा463) तो ऐ औ़रतों के वालियो! उन्हें न रोको इससे कि अपने शौहरों से निकाह कर लें (फ़ा464) जब कि आपस में मुवाफ़िक़े शरअ़ रज़ामन्द हो जायें (फ़ा465) यह नसीहत उसे दी जाती है जो तुम में से अल्लाह और क़ियामत पर ईमान रखता हो यह तुम्हारे लिए ज़्यादा सुथरा और पाकीज़ा है और अल्लाह जानता है और तुम नहीं जानते।(232) और मायें दूध पिलायें अपने बच्चों को (फ़ा466) पूरे दो बरस उसके लिए जो दूध

(फ़ा455) यानी इद्दत तमाम होने के क़रीब हो शाने नुज़ूलः यह आयत साबित बिन यसार अंसारी के हक़ में नाज़िल हुई उन्होंने अपनी औ़रत को तलाक़ दी थी और जब इद्दत क़रीबे ख़त्म होती थी रजअ़त कर लिया करते थे ताकि औ़रत क़ैद में पड़ी रहे (फ़ा456) यानी निबाहने और अच्छा मुआ़मला करने की नीयत से रजअ़त करो (फ़ा457) और इद्दत गुज़र जाने दो ताकि बादे इद्दत वह आज़ाद हो जायें (फ़ा458) कि हुक्मे इलाही की मुख़ालफ़त करके गुनहगार होता है। (फ़ा459) कि उनकी परवाह न करो और उनके ख़िलाफ़ अ़मल करो। (फ़ा460) कि तुम्हें मुसलमान किया और सय्यदे अम्बिया सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम का उम्मती बनाया। (फ़ा461) किताब से क़ुरआन और हिकमत से अहकामे क़ुरआन व सुन्नते रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम मुराद है। (फ़ा462) उससे कुछ मख़्फ़ी नहीं (फ़ा463) यानी उनकी इद्दत गुज़र चुके। (फ़ा464) जिनको उन्होंने अपने निकाह के लिए तजवीज़ किया हो ख़्वाह वह नये हों या यही तलाक़ देने वाले या उनसे पहले जो तलाक़ दे चुके थे। (फ़ा465) अपने कुफ़ू में महरे मिस्ल पर क्योंकि इसके ख़िलाफ़ की सूरत में औलिया एतेराज़ व तअ़र्रुज़ का हक़ रखते हैं। शाने नुज़ूलः मअ़्क़ल बिन यसार मुज़नयी की बहन का निकाह आ़सिम बिन अ़दी के साथ हुआ था उन्होंने तलाक़ दी और इद्दत गुज़रने के बाद फिर आ़सिम ने दरख़्वास्त की तो मअ़्क़ल बिन यसार मानेअ़ हुए उनके हक़ में यह आयत नाज़िल हुई। (बुख़ारी शरीफ़) (फ़ा466) बयाने तलाक़ के बाद यह सवाल तबअ़न सामने आता है कि अगर तलाक़ वाली औ़रत की गोद में शीर-ख़्वार बच्चा हो तो इस जुदाई के बाद उसकी परवरिश का क्या तरीक़ा होगा इस लिए यह क़रीने हिकमत है कि बच्चा की परवरिश के मुतअ़ल्लिक़ मां बाप पर जो अहकाम हैं वह इस मौक़ा पर बयान फ़रमा दिये जायें लिहाज़ा यहां उन मसायल का (बक़िया सफ़हा 69 पर)

أَرَادَ أَنْ يُتِمَّ الرَّضَاعَةَ ۚ وَعَلَى الْمَوْلُودِ لَهُ رِزْقُهُنَّ وَكِسْوَتُهُنَّ بِالْمَعْرُوفِ ۚ لَا تُكَلَّفُ نَفْسٌ إِلَّا وُسْعَهَا ۚ لَا تُضَارَّ وَالِدَةٌ بِوَلَدِهَا وَلَا

مَوْلُودٌ لَهُ بِوَلَدِهِ ۚ وَعَلَى الْوَارِثِ مِثْلُ ذَٰلِكَ ۗ فَإِنْ أَرَادَا فِصَالًا عَنْ تَرَاضٍ مِنْهُمَا وَتَشَاوُرٍ فَلَا جُنَاحَ عَلَيْهِمَا ۗ وَإِنْ أَرَدْتُمْ أَنْ

تَسْتَرْضِعُوا أَوْلَادَكُمْ فَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ إِذَا سَلَّمْتُمْ مَا آتَيْتُمْ بِالْمَعْرُوفِ ۗ وَاتَّقُوا اللَّهَ وَاعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ بِمَا تَعْمَلُونَ بَصِيرٌ ﴿٢٣٣﴾

وَالَّذِينَ يُتَوَفَّوْنَ مِنْكُمْ وَيَذَرُونَ أَزْوَاجًا يَتَرَبَّصْنَ بِأَنْفُسِهِنَّ أَرْبَعَةَ أَشْهُرٍ وَعَشْرًا ۖ فَإِذَا بَلَغْنَ أَجَلَهُنَّ فَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ

فِيمَا فَعَلْنَ فِي أَنْفُسِهِنَّ بِالْمَعْرُوفِ ۗ وَاللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ خَبِيرٌ ﴿٢٣٤﴾ وَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ فِيمَا عَرَّضْتُمْ بِهِ مِنْ خِطْبَةِ النِّسَاءِ أَوْ أَكْنَنْتُمْ

अरा–द अंय्युतिम् मर्रज़ा–अ़–त व अ़–लल्मौलूदि लहू रिज़्क़ुहुन्–न व किस्वतुहुन्–न बिल्मअ़्–रूफ़ि ला तुकल्लफु नफ़्सुन् इल्ला वुस्अ़हा ला तुज़ार्–र वालि–दतुम् बि–व–लदिहा वला मौलूदुल्लहू बि–व–लदिही व अ़–लल्–वारिसि मिस्लु ज़ालि–क फ़–इन् अरा–द फ़िसालन् अ़न् तराज़िम्–मिन्हुमा व तशावुरिन् फ़ला जुना–ह् अ़लैहिमा व इन् अरत्तुम् अन् तस्तर्ज़िअू औला–दकुम् फ़ला जुना–ह् अ़लैकुम् इज़ा सल्लम्तुम् मा आतैतुम् बिल्मअ़्रूफ़ि वत्तकुल्ला–ह वअ़्लमू अन्नल्ला–ह बिमा तअ़्मलू–न बसीर(233)वल्लज़ी–न यु–त–वफ़्फ़ौ–न मिन्कुम् व य–ज़रू–न अज़्वाजंय्य–त–रब्बस्–न बिअन्फ़ु–सिहिन्–न अर्ब–अ़–त अश्हुरिंव्–व अ़श्रन् फ़–इज़ा ब–लग्–न अ–ज–लहुन्–न फ़ला जुना–ह् अ़लैकुम् फ़ीमा फ़–अ़ल्न फ़ी अन्फ़ुसिहिन्–न बिल्मअ़्रूफ़ि वल्लाहु बिमा तअ़्–मलू–न ख़बीर(234)वला जुना–ह् अ़लैकुम् फ़ीमा अ़र्रज़्तुम् बिही मिन् ख़ित्बतिन्निसाइ औ अक्नन्तुम्

की मुद्दत पूरी करनी चाहे (फ़ा467) और जिसका बच्चा है (फ़ा468) उस पर औ़रतों का खाना और पहनना है हस्बे दस्तूर (फ़ा469) किसी जान पर बोझ न रखा जाएगा मगर उसके मक़दूर भर, मां को ज़रर न दिया जाए उसके बच्चा से (फ़ा470) और न औलाद वाले को उसकी औलाद से (फ़ा471) या मां ज़रर न दे अपने बच्चा को और न औलाद वाला अपनी औलाद को (फ़ा472) और जो बाप का क़ाइम मक़ाम है उस पर भी ऐसा ही वाजिब है फिर अगर मां बाप दोनों आपस की रज़ा और मशवरे से दूध छुड़ाना चाहें तो उन पर गुनाह नहीं और अगर तुम चाहो कि दाइयों से अपने बच्चों को दूध पिलवाओ तो भी तुम पर मुज़ायक़ा नहीं जब कि जो देना ठहरा था भलाई के साथ उन्हें अदा कर दो और अल्लाह से डरते रहो और जान रखो कि अल्लाह तुम्हारे काम देख रहा है।(233)और तुम में जो मरें और बीबियां छोड़ें वह चार महीने दस दिन अपने आप को रोके रहें (फ़ा473) तो जब उनकी इद्दत पूरी हा जाए तो ऐ वालियो तुम पर मुआख़ज़ा नहीं उस काम में जो औ़रतें अपने मुआ़मले में मुवाफ़िक़े शरअ़् करें और अल्लाह को तुम्हारे कामों की ख़बर है।(234) और तुम पर गुनाह नहीं इस बात में जो पर्दा रख कर तुम औ़रतों के निकाह का प्याम दो या अपने दिल में

(फ़ा467) यानी इस मुद्दत का पूरा करना लाज़िम नहीं अगर बच्चा को ज़रूरत न रहे और दूध छुड़ाने में उसके लिए ख़तरा न हो तो इससे कम मुद्दत में भी छुड़ाना जायज़ है (तफ़सीर अहमदी ख़ाज़िन वग़ैरह) (फ़ा468) यानी वालिद- इस अन्दाज़े बयान से मालूम हुआ कि नसब बाप की तरफ़ रुजूअ़् करता है। (फ़ा469) मसलाः बच्चा की परवरिश और उसको दूध पिलवाना बाप के ज़िम्मा वाजिब है इसके लिए वह दूध पिलाने वाली मुक़र्रर करे लेकिन अगर मां अपनी रग़बत से बच्चा को दूध पिलाए तो मुस्तहब है मसलाः शौहर अपनी ज़ौजा पर बच्चा के दूध पिलाने के लिए जब्र नहीं कर सकता और न औ़रत शौहर से बच्चा के दूध पिलाने की उजरत तलब कर सकती है जब तक कि उसके निकाह या इद्दत में रहे **मसलाः** अगर किसी शख़्स ने अपनी ज़ौजा को तलाक़ दी और इद्दत गुज़र चुकी तो वह उससे बच्चा के दूध पिलाने की उजरत ले सकती है **मसलाः** अगर बाप ने किसी औ़रत को अपने बच्चा के दूध पिलाने पर ब-उजरत मुक़र्रर किया और उसकी मां उसी उजरत पर या बे मुआ़वज़ा दूध पिलाने पर राज़ी हुई तो मां ही दूध पिलाने की ज़्यादा मुस्तहिक़ है और अगर मां ने ज़्यादा उजरत तलब की तो बाप को उससे दूध पिलवाने पर मजबूर न किया जाएगा (तफ़सीर अहमदी व मदारिक) *अलमअ़्रूफ़* से मुराद यह है कि हस्बे हैसियत हो बग़ैर तंगी और फ़ुज़ूल ख़र्ची के (फ़ा470) यानी उसको उसके ख़िलाफ़े मर्ज़ी दूध पिलाने पर मजबूर न किया जाए (फ़ा471) ज़्यादा उजरत तलब करके (फ़ा472) मां का बच्चा को ज़रर देना यह है कि उसको वक़्त पर दूध न दे और उसकी निगरानी न रखे या अपने साथ मानूस कर लेने के बाद छोड़ दे और बाप का बच्चा को ज़रर देना यह है कि मानूस बच्चा को मां से छीन ले या मां के हक़ में कोताही करे जिस से बच्चा को नक़सान पहुंचे। (फ़ा473) हामिला की इद्दत **(बक़िया सफ़हा 76 पर)**

فِيْٓ اَنْفُسِكُمْ ۭ عَلِمَ اللّٰهُ اَنَّكُمْ سَتَذْكُرُوْنَهُنَّ وَلٰكِنْ لَّا تُوَاعِدُوْهُنَّ سِرًّا اِلَّآ اَنْ تَقُوْلُوْا قَوْلًا مَّعْرُوْفًا ڛ وَلَا تَعْزِمُوْا عُقْدَةَ النِّكَاحِ حَتّٰى يَبْلُغَ

الْكِتٰبُ اَجَلَهٗ ۭ وَاعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ يَعْلَمُ مَا فِيْٓ اَنْفُسِكُمْ فَاحْذَرُوْهُ ۚ وَاعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ حَلِيْمٌ ﴿٢٣٥﴾ لَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ اِنْ طَلَّقْتُمُ النِّسَاۗءَ مَا لَمْ

تَمَسُّوْھُنَّ اَوْ تَفْرِضُوْا لَھُنَّ فَرِيْضَةً ښ وَّمَتِّعُوْھُنَّ ۚ عَلَي الْمُوْسِعِ قَدَرُهٗ وَعَلَي الْمُقْتِرِ قَدَرُهٗ ۚ مَتَاعًۢا بِالْمَعْرُوْفِ ۚ حَقًّا عَلَي الْمُحْسِنِيْنَ ﴿٢٣٦﴾

وَاِنْ طَلَّقْتُمُوْھُنَّ مِنْ قَبْلِ اَنْ تَمَسُّوْھُنَّ وَقَدْ فَرَضْتُمْ لَھُنَّ فَرِيْضَةً فَنِصْفُ مَا فَرَضْتُمْ اِلَّآ اَنْ يَّعْفُوْنَ اَوْ يَعْفُوَا الَّذِيْ بِيَدِهٖ

عُقْدَةُ النِّكَاحِ ۭ وَاَنْ تَعْفُوْٓا اَقْرَبُ لِلتَّقْوٰى ۭ وَلَا تَنْسَوُا الْفَضْلَ بَيْنَكُمْ ۭ اِنَّ اللّٰهَ بِمَا تَعْمَلُوْنَ بَصِيْرٌ ﴿٢٣٧﴾ حٰفِظُوْا عَلَي الصَّلَوٰتِ

फ़ी अन्फ़ुसिकुम् अ़लिमल्लाहु अन्नकुम् स-तज़्कुरू-नहुन्-न व लाकिल्ला तुवाअ़िदूहुन्-न सिर्रन् इल्ला अन् तक़ूलू क़ौलम् मअ़्-रूफ़न् व ला तअ़्ज़िमू अ़ुक़्दतन्-निकाहि ह़त्ता यब्लुग़ल् किताबु अ-ज-लहू वअ़्-लमू अन्नल्ला-ह यअ़्लमु मा फ़ी अन्फ़ुसिकुम् फ़ह्-ज़रूहु वअ़्लमू अन्नल्ला-ह ग़फ़ूरुन् ह़लीम(235)ला जुना-ह अ़लैकुम् इन् तल्लक़्तुमुन्निसा-अ मालम् तमस्सूहुन्-न औ तफ़्रिज़ू लहुन्-न फ़री-ज़-तंव व मत्तिअ़ू-हुन्-न अ़-ललमूसिअ़ि क़-द-रुहू व अ़लल्मुक़्तिरि क़-द-रुहू मता-अ़म्-बिल्मअ़्-रूफ़ि ह़क़्क़न् अ़लल्-मुह़्सिनीन(236)व इन् तल्लक़्तुमूहुन्-न मिन् क़ब्लि अन् तमस्सूहुन्-न व क़द फ़-रज़्तुम् लहुन्-न फ़री-ज़-तन् फ़-निस्फ़ु मा फ़रज़्तुम् इल्ला अंय्यअ़्फ़ू-न औ यअ़्-फ़ुवल्लज़ी बियदिही अ़ुक़्दतु-न्निकाह़ि व अन् तअ़्फ़ू अक़्रबु लित्तक़्वा व ला तन्सवुल्फ़ज़्-ल बै-नकुम् इन्नल्ला-ह बिमा तअ़्-मलू-न बसीर(237)हाफ़िज़ू अ़लस्स-लवाति

छुपा रखो (फ़ा474) अल्लाह जानता है कि अब तुम उनकी याद करोगे (फ़ा475) हां उनसे ख़ुफ़िया वादा न कर रखो मगर यह कि इतनी ही बात कहो जो शरअ़् में मअ़्रूफ़ है और निकाह की गिरह पक्की न करो जब तक लिखा हुआ हुक्म अपनी मीआ़द को न पहुंच ले (फ़ा476) और जान लो कि अल्लाह तुम्हारे दिल की जानता है तो उससे डरो और जान लो कि अल्लाह बख़्शने वाला हिल्म वाला है।(235) (रुकूअ़् 14) तुम पर कुछ मुतालबा नहीं (फ़ा477) अगर तुम औ़रतों को तलाक़ दो जब तक तुमने उनको हाथ न लगाया हो या कोई महर मुक़र्रर कर लिया हो (फ़ा478) और उनको कुछ बरतने को दो (फ़ा479) मक़दूर वाले पर उसके लाइक़ और तंगदस्त पर उसके लायक़ हस्बे दस्तूर कुछ बरतने की चीज़ यह वाजिब है भलाई वालों पर।(236) (फ़ा480) और अगर तुमने औ़रतों को बे छूए तलाक़ दे दी और उनके लिए कुछ महर मुक़र्रर कर चुके थे तो जितना ठहरा था उसका आधा वाजिब है मगर यह कि औ़रतें कुछ छोड़ दें (फ़ा481) या वह ज़्यादा दे (फ़ा482) जिसके हाथ में निकाह की गिरह है (फ़ा483) और ऐ मर्दो तुम्हारा ज़्यादा देना परहेज़गारी से नज़दीकतर है और आपस में एक दूसरे पर एहसान को भुला न दो बेशक अल्लाह तुम्हारे काम देख रहा है।(237) (फ़ा484)निगहबानी करो सब नमाज़ों (फ़ा485)

(फ़ा474) यानी इद्दत में निकाह और निकाह का खुला हुआ प्याम तो ममनूअ़् है लेकिन पर्दा के साथ ख़्वाहिशे निकाह का इज़्हार गुनाह नहीं मसलन यह कहे कि तुम बहुत नेक औ़रत हो या अपना इरादा दिल ही में रखे और ज़बान से किसी तरह न कहे।(फ़ा475) और तुम्हारे दिलों में ख़्वाहिश होगी इसी लिए तुम्हारे वासते तअ़्रीज़ मुबाह की गई। (फ़ा476) यानी इद्दत गुज़र चुके (फ़ा477) महर का (फ़ा478) शाने नुज़ूलः यह आयत एक अंसारी के बाब में नाज़िल हुई जिन्होंने क़बीला बनी हनीफ़ा की एक औ़रत से निकाह किया और कोई महर मुअ़य्यन न किया फिर हाथ लगाने से पहले तलाक़ दे दी मसलाः इस से मालूम हुआ कि जिस औ़रत का महर मुक़र्रर न किया हो अगर उसको हाथ लगाने से पहले तलाक़ दी तो महर लाज़िम नहीं हाथ लगाने से मुजामअ़त मुराद है और ख़लवते सहीहा इसी के हुक्म में है यह भी मालूम हुआ कि बे ज़िक्रे महर भी निकाह दुरुस्त है मगर इस सूरत में बादे निकाह महर मुअ़य्यन करना होगा अगर न किया तो बादे दुख़ूल महरे मिस्ल लाज़िम हो जाएगा। (फ़ा479) तीन कपड़ों का एक जोड़ा (फ़ा480) जिस औ़रत का महर मुक़र्रर न किया हो और उसको क़ब्ले दुख़ूल तलाक़ दी हो उसको तो जोड़ा देना वाजिब है और इसके सिवा हर मुतल्लक़ा के लिए मुस्तहब है। (मदारिक) (फ़ा481) अपने उस निस्फ़ में से (फ़ा482) निस्फ़ से जो इस सूरत में वाजिब है। (फ़ा483) यानी शौहर। (फ़ा484) इसमें हुस्ने सुलूक व मकारिमे अख़्लाक़ की तरग़ीब है। (फ़ा485) यानी पंजगाना फ़र्ज़ नमाज़ों को उनके औक़ात पर अरकान व शरायत के साथ अदा करते रहो इसमें पाँचों नमाज़ों की फ़र्ज़ियत का बयान है और औलाद व अज़्वाज के मसायल व अहकाम के दर्मियान में नमाज़ का ज़िक्र फ़रमाना इस नतीजा पर पहुंचाता है कि उनको अदाए नमाज़ से ग़ाफ़िल न होने दो और नमाज़ की पाबन्दी से क़ल्ब की इस्लाह होती है जिसके बग़ैर मुआ़मलात का दुरुस्त होना मुतसव्वर नहीं।

وَالصَّلٰوةِ الْوُسْطٰى ۗ وَقُوْمُوْا لِلّٰهِ قٰنِتِيْنَ ﴿٢٣٨﴾ فَاِنْ خِفْتُمْ فَرِجَالًا اَوْ رُكْبَانًا ۚ فَاِذَآ اَمِنْتُمْ فَاذْكُرُوا اللّٰهَ كَمَا عَلَّمَكُمْ مَّا لَمْ تَكُوْنُوْا تَعْلَمُوْنَ ﴿٢٣٩﴾

وَالَّذِيْنَ يُتَوَفَّوْنَ مِنْكُمْ وَيَذَرُوْنَ اَزْوَاجًا ۚ وَّصِيَّةً لِّاَزْوَاجِهِمْ مَّتَاعًا اِلَى الْحَوْلِ غَيْرَ اِخْرَاجٍ ۚ فَاِنْ خَرَجْنَ فَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ فِيْ مَا

فَعَلْنَ فِيْٓ اَنْفُسِهِنَّ مِنْ مَّعْرُوْفٍ ۭ وَاللّٰهُ عَزِيْزٌ حَكِيْمٌ ﴿٢٤٠﴾ وَلِلْمُطَلَّقٰتِ مَتَاعٌۢ بِالْمَعْرُوْفِ ۭ حَقًّا عَلَى الْمُتَّقِيْنَ ﴿٢٤١﴾ كَذٰلِكَ يُبَيِّنُ اللّٰهُ لَكُمْ اٰيٰتِهٖ

لَعَلَّكُمْ تَعْقِلُوْنَ ﴿٢٤٢﴾ اَلَمْ تَرَ اِلَى الَّذِيْنَ خَرَجُوْا مِنْ دِيَارِهِمْ وَهُمْ اُلُوْفٌ حَذَرَ الْمَوْتِ ۠ فَقَالَ لَهُمُ اللّٰهُ مُوْتُوْا ۣ ثُمَّ اَحْيَاهُمْ ۭ

اِنَّ اللّٰهَ لَذُوْ فَضْلٍ عَلَى النَّاسِ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَشْكُرُوْنَ ﴿٢٤٣﴾ وَقَاتِلُوْا فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَاعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ﴿٢٤٤﴾

वस्सलातिल्–वुस्ता व कूमू लिल्लाहि कानितीन(238)फ़–इन् ख़िफ़्तुम् फ़रिजालन् औ रुक्बानन् फ़इज़ा अमिन्तुम् फ़ज़्कु–रुल्ला–ह कमा अ़ल्ल–मकुम्–मालम् तकूनू तअ़्–लमून(239) वल्लज़ी–न यु–त–वफ़्फ़ौ–न मिन्कुम् व य–ज़रू–न अज़्वाजंव् व सिय्यतल्–लि अज़्वाजिहिम् मताअ़न् इलल्हौलि ग़ै–र इख़्राजिन् फ़इन् ख़–रज्–न फ़ला जुना–ह अ़लैकुम् फ़ीमा फ़–अ़ल्न फ़ी अन्फुसिहिन्–न मिम्मअ़्रूफ़िन् वल्लाहु अ़ज़ीज़ुन् हकीम(240)व लिल्मुतल्लकाति मताअुम् बिल्मअ़्रूफ़ि हक्कन् अ़लल्मुत्तक़ीन(241)कज़ालि–क युबय्यिनुल्लाहु लकुम् आयातिही ल–अ़ल्लकुम् तअ़्किलून(242) अ–लम् त–र इलल्लज़ी–न ख़–रजू मिन् दियारिहिम् व हुम् उलूफ़ुन् ह–ज–रल्मौति फ़क़ा–ल लहुमुल्लाहु मूतू सुम्–म अह्याहुम् इन्नल्ला–ह लज़ू फ़ज़्लिन् अ़लन्नासि व लाकिन्–न अक्सरन्नासि ला यश्कुरून(243)व क़ातिलू फ़ी सबीलिल्लाहि वअ़्लमू अन्नल्ला–ह समीअुन् अ़लीम(244)

और बीच की नमाज़ की (फ़ा486) और खड़े हो अल्लाह के हुज़ूर अदब से(238) (फ़ा487) फिर अगर ख़ौफ़ में हो तो पियादा या सवार जैसे बन पड़े फिर जब इत्मीनान से हो तो अल्लाह की याद करो जैसा उसने सिखाया जो तुम न जानते थे।(239) और जो तुम में मरें और बीबियां छोड़ जायें वह अपनी औरतों के लिए वसीयत कर जायें (फ़ा488) साल भर तक नान व नफ़क़ा देने की बे निकाले (फ़ा489) फिर अगर वह ख़ुद निकल जायें तो तुम पर उसका मुआख़ज़ा नहीं जो उन्होंने अपने मुआ़मले में मुनासिब तौर पर किया और अल्लाह ग़ालिब हिकमत वाला है।(240) और तलाक़ वालियों के लिए भी मुनासिब तौर पर नान व नफ़क़ा है यह वाजिब है परहेज़गारों पर।(241) अल्लाह यूंही बयान करता है तुम्हारे लिए अपनी आयतें कि कहीं तुम्हें समझ हो।(242) (रुकूअ़ 15) ऐ महबूब क्या तुमने न देखा था उन्हें जो अपने घरों से निकले और वह हज़ारों थे मौत के डर से तो अल्लाह ने उनसे फ़रमाया मर जाओ फिर उन्हें ज़िन्दा फ़रमा दिया बेशक अल्लाह लोगों पर फ़ज़्ल करने वाला है मगर अक्सर लोग ना-शुकरे हैं।(243) (फ़ा490) और लड़ो अल्लाह की राह में (फ़ा491) और जान लो कि अल्लाह सुनता जानता है।(244)

(फ़ा486) हज़रत इमाम अबू हनीफ़ा और जम्हूर सहाबा रज़ियल्लाहु अ़न्हुम का मज़हब यह है कि इससे नमाज़े अ़स्र मुराद है और अहादीस भी इस पर दलालत करती हैं। (फ़ा487) इससे नमाज़ के अन्दर क़ियाम का फ़र्ज़ होना साबित हुआ। (फ़ा488) अपने अक़ारिब को (फ़ा489) इब्तेदाए इस्लाम में बेवा की इद्दत एक साल की थी और एक साल कामिल वह शौहर के यहां रह कर नान व नफ़क़ा पाने की मुस्तहिक़ होती थी फिर एक साल की इद्दत तो *य-त-रब्-बस्-न बि-अन्फुसिहिन्-न अर्-ब-अ़-तः अशहुरिंव् व अ़श्रा* से मन्सूख़ हुई जिसमें बेवा की इद्दत चार माह दस दिन मुक़र्रर फ़रमाई गई और साल भर का नफ़क़ा आयते मीरास से मन्सूख़ हुआ जिसमें औरत का हिस्सा शौहर के तर्का से मुक़र्रर किया गया लिहाज़ा अब उस वसीयत का हुक्म बाक़ी न रहा हिकमत इसकी यह है कि अ़रब के लोग अपने मूरिस की बेवा का निकलना या ग़ैर से निकाह करना बिल्कुल गवारा ही न करते थे और इसको आ़र समझते थे इस लिए अगर एक दम चार माह दस रोज़ की इद्दत मुक़र्रर की जाती तो यह उन पर बहुत शाक़ होती लिहाज़ा ब-तदरीज उन्हें राह पर लाया गया। (फ़ा490) बनी इसराईल की एक जमाअ़त थी जिस के बिलाद में ताऊन हुआ तो वह मौत के डर से अपनी बस्तियां छोड़ भागे और जंगल में जा पड़े ब-हुक्मे इलाही सब वहीं मर गए कुछ अ़र्सा के बाद हज़रत हिज़क़ील अ़लैहिस्सलाम के दुआ़ से उन्हें अल्लाह तआ़ला ने ज़िन्दा फ़रमाया और वह मुद्दतों ज़िन्दा रहे इस वाक़िआ़ से मालूम होता है कि आदमी मौत के डर से भाग कर जान नहीं बचा सकता तो भागना बेकार है जो मौत मुक़द्दर है वह ज़रूर पहुंचेगी बन्दे को चाहिये कि रज़ाए इलाही पर राज़ी रहे मुजाहिदीन को भी समझना चाहिये कि जिहाद से बैठ रहना मौत को दफ़अ़ नहीं कर सकता लिहाज़ा दिल मज़बूत रखना चाहिये (फ़ा491) और मौत से न भागो जैसा बनी इसराईल भागे थे क्योंकि मौत से भागना काम नहीं आता।

مَنْ ذَا الَّذِي يُقْرِضُ اللَّهَ قَرْضًا حَسَنًا فَيُضٰعِفَهُ لَهُ أَضْعَافًا كَثِيرَةً ۚ وَاللَّهُ يَقْبِضُ وَيَبْسُطُ ۖ وَإِلَيْهِ تُرْجَعُونَ ﴿٢٤٥﴾ أَلَمْ تَرَ إِلَى الْمَلَإِ
مِنْ بَنِي إِسْرَاءِيلَ مِنْ بَعْدِ مُوسَىٰ ۘ إِذْ قَالُوا لِنَبِيٍّ لَهُمُ ابْعَثْ لَنَا مَلِكًا نُقَاتِلْ فِي سَبِيلِ اللَّهِ ۖ قَالَ هَلْ عَسَيْتُمْ إِنْ كُتِبَ
عَلَيْكُمُ الْقِتَالُ أَلَّا تُقَاتِلُوا ۖ قَالُوا وَمَا لَنَا أَلَّا نُقَاتِلَ فِي سَبِيلِ اللَّهِ وَقَدْ أُخْرِجْنَا مِنْ دِيَارِنَا وَأَبْنَائِنَا ۖ فَلَمَّا كُتِبَ عَلَيْهِمُ الْقِتَالُ تَوَلَّوْا
إِلَّا قَلِيلًا مِنْهُمْ ۗ وَاللَّهُ عَلِيمٌ بِالظَّالِمِينَ ﴿٢٤٦﴾ وَقَالَ لَهُمْ نَبِيُّهُمْ إِنَّ اللَّهَ قَدْ بَعَثَ لَكُمْ طَالُوتَ مَلِكًا ۚ قَالُوا أَنَّىٰ يَكُونُ لَهُ الْمُلْكُ عَلَيْنَا وَنَحْنُ
أَحَقُّ بِالْمُلْكِ مِنْهُ وَلَمْ يُؤْتَ سَعَةً مِنَ الْمَالِ ۚ قَالَ إِنَّ اللَّهَ اصْطَفَاهُ عَلَيْكُمْ وَزَادَهُ بَسْطَةً فِي الْعِلْمِ وَالْجِسْمِ ۖ وَاللَّهُ يُؤْتِي

मन् ज़ल्लज़ी युक़्रिज़ुल्ला–ह क़र्ज़न् ह्–स–नन् फ़युज़ाअ़ि–फ़हू लहू अज़्आफ़न् कसीर–तन् वल्लाहु यक़्बिज़ु व यब्सुतु व इलैहि तुर्जअू न(245)अ–लम् त–र इलल्म–लइ मिम्बनी इस्राई–ल मिम्बअ्दि मूसा इज् क़ालू लि–नबिय्यिल्–लहु मुब् अ़स् लना मलिकन्नुक़ातिल् फ़ी सबीलिल्लाहि क़ा–ल हल् अ़सैतुम इन् कुति–ब अ़लैकुमुल्–क़ितालु अल्ला तुक़ातिलू क़ालू व मा लना अल्ला नुक़ाति–ल फ़ी सबी–लिल्लाहि व क़द् उख़्रिज्ना मिन् दियारिना व अब्नाइना फ़–लम्मा कुति–ब अ़लैहिमुल् क़ितालु तवल्लौ इल्ला क़ली–लम् मिन्हुम् वल्लाहु अ़लीमुम्–बिज़्ज़ालिमीन(246)व क़ा–ल लहुम् नबिय्युहुम् इन्नल्ला–ह क़द् ब–अ़–स लकुम् तालू–त मलिकन् क़ालू अन्ना यकूनु लहुल्मुल्कु अ़लैना व नह्नु अह़क़्क़ु बिल्मुल्कि मिन्हु व लम् युअ्–त स–अ़–तम्–मिनल्मालि क़ा–ल इन्नल्लाहस्तफ़ाहु अ़लैकुम् व ज़ा–दहू बस्त–तन् फ़िल्इल्मि वल्जिस्मि वल्लाहु युअ्ती

है कोई जो अल्लाह को क़र्ज़े हसन दे(फ़ा492)तो अल्लाह उसके लिए बहुत गुना बढ़ा दे, और अल्लाह तंगी और कशाइश करता है(फ़ा493)और तुम्हें उसी की तरफ़ फिर जाना।(245)ऐ महबूब क्या तुमने न देखा बनी इसराईल के एक गरोह को जो मूसा के बाद हुआ (फ़ा494)जब अपने एक पैग़म्बर से बोले हमारे लिए खड़ा कर दो एक बादशाह कि हम ख़ुदा की राह में लड़ें, नबी ने फ़रमाया क्या तुम्हारे अन्दाज़ ऐसे हैं कि तुम पर जिहाद फ़र्ज़ किया जाए तो फिर न करो बोले हमें क्या हुआ कि हम अल्लाह की राह में न लड़ें हालांकि हम निकाले गए हैं अपने वतन और अपनी औलाद से(फ़ा495)तो फिर जब उन पर जिहाद फ़र्ज़ किया गया मुंह फेर गए मगर उनमें के थोड़े(फ़ा496)और अल्लाह ख़ूब जानता है ज़ालिमों को।(246)और उनसे उनके नबी ने फ़रमाया बेशक अल्लाह ने तालूत को तुम्हारा बादशाह बनाकर भेजा है(फ़ा497)बोले उसे हम पर बादशाही क्यों कर होगी(फ़ा498) और हम उससे ज़्यादा सल्तनत के मुस्तहिक़ हैं और उसे माल में भी वुसअ़त नहीं दी गई(फ़ा499)फ़रमाया उसे अल्लाह ने तुम पर चुन लिया(फ़ा500)और उसे इल्म और जिस्म में कुशादगी ज़्यादा दी(फ़ा501)और अल्लाह अपना

(फ़ा492) यानी राहे ख़ुदा में इख़्लास के साथ ख़र्च करे राहे ख़ुदा में ख़र्च करने को क़र्ज़ से तअ़बीर फ़रमाया यह कमाले लुत्फ़ व करम है बन्दा उसका बनाया हुआ और बन्दे का माल उसका अ़ता फ़रमाया हुआ हक़ीक़ी मालिक वह और बन्दा उसकी अ़ता से मजाज़ी मिल्क रखता है मगर क़र्ज़ से तअ़बीर फ़रमाने में यह दिल नशीन करना मन्ज़ूर है कि जिस तरह क़र्ज़ देने वाला इत्मीनान रखता है कि उसका माल ज़ाया नहीं हुआ वह उसकी वापसी का मुस्तहिक़ है ऐसा ही राहे ख़ुदा में ख़र्च करने वाले को इत्मीनान रखना चाहिये कि वह इस इन्फ़ाक़ की जज़ा बिल-यक़ीन पाएगा और बहुत ज़्यादा पाएगा (फ़ा493) जिसके लिए चाहे रोज़ी तंग करे जिस के लिए चाहे वसीअ़ फ़रमाए तंगी व फ़राख़ी उसके क़ब्ज़ा में है और वह अपनी राह में ख़र्च करने वाले से वुसअ़त का वादा करता है। (फ़ा494) हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम के बाद जब बनी इसराईल की हालत ख़राब हुई और उन्होंने अ़हदे इलाही को फ़रामोश किया बुत परस्ती में मुबतला हुए सरकशी और बद अफ़आ़ली इन्तेहा को पहुंची उन पर क़ौमे जालूत मुसल्लत हुई जिसको अ़मालक़ा कहते हैं क्योंकि जालूत अ़मलीक़ बिन आ़द की औलाद से एक निहायत जाबिर बादशाह था उसकी क़ौम के लोग मिस्र व फ़िलस्तीन के दर्मियान बहरे रूम के साहिल पर रहते थे उन्होंने बनी इसराईल के शहर छीन लिये आदमी गिरिफ़्तार किये तरह तरह की सख़्तियां कीं उस ज़माना में कोई नबी क़ौमे बनी इसराईल में मौजूद न थे ख़ानदाने नबुव्वत से सिर्फ़ एक बीबी बाक़ी रही थीं जो हामिला थीं उनके फ़रज़न्द तवल्लुद हुए उनका नाम शमवील रखा जब वह बड़े हुए तो उन्हें इल्मे तौरेत हासिल करने के लिए बैतुल मक़्दिस में एक कबीरुस्सिन आ़लिम के सुपुर्द किया वह आपके साथ कमाले शफ़क़त करते और आप को फ़रज़न्द कहते जब आप सिन्ने बुलूग़ को पहुंचे तो एक शब आप उस आ़लिम के क़रीब आराम फ़रमा रहे थे कि (बक़िया सफ़हा 78 पर)

مُلْكَهٗ مَنْ يَّشَآءُ ؕ وَاللّٰهُ وَاسِعٌ عَلِيْمٌ ﴿۲۴۷﴾ وَقَالَ لَهُمْ نَبِيُّهُمْ اِنَّ اٰيَةَ مُلْكِهٖٓ اَنْ يَّاْتِيَكُمُ التَّابُوْتُ فِيْهِ سَكِيْنَةٌ مِّنْ رَّبِّكُمْ وَبَقِيَّةٌ
مِّمَّا تَرَكَ اٰلُ مُوْسٰى وَاٰلُ هٰرُوْنَ تَحْمِلُهُ الْمَلٰٓئِكَةُ ؕ اِنَّ فِیْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً لَّكُمْ اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ﴿۲۴۸﴾ فَلَمَّا فَصَلَ طَالُوْتُ بِالْجُنُوْدِ ۙ
قَالَ اِنَّ اللّٰهَ مُبْتَلِيْكُمْ بِنَهَرٍ ۚ فَمَنْ شَرِبَ مِنْهُ فَلَيْسَ مِنِّىْ ۚ وَمَنْ لَّمْ يَطْعَمْهُ فَاِنَّهٗ مِنِّىْٓ اِلَّا مَنِ اغْتَرَفَ غُرْفَةًۢ بِيَدِهٖ ۚ فَشَرِبُوْا
مِنْهُ اِلَّا قَلِيْلًا مِّنْهُمْ ؕ فَلَمَّا جَاوَزَهٗ هُوَ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مَعَهٗ ۙ قَالُوْا لَا طَاقَةَ لَنَا الْيَوْمَ بِجَالُوْتَ وَجُنُوْدِهٖ ؕ قَالَ الَّذِيْنَ يَظُنُّوْنَ
اَنَّهُمْ مُّلٰقُوا اللّٰهِ ۙ كَمْ مِّنْ فِئَةٍ قَلِيْلَةٍ غَلَبَتْ فِئَةً كَثِيْرَةًۢ بِاِذْنِ اللّٰهِ ؕ وَاللّٰهُ مَعَ الصّٰبِرِيْنَ ﴿۲۴۹﴾ وَلَمَّا بَرَزُوْا لِجَالُوْتَ وَجُنُوْدِهٖ قَالُوْا

मुल्कहू मंय्यशाउ वल्लाहु वासिअुन् अ़लीम(247)व का़–ल लहुम् नबिय्युहुम् इन्–न आय–त मुल्किही अंय्यअ्तिय–कुमुत्–ताबूतु फ़ीहि सकी–नतुम्–मिर्रब्बिकुम् व बकि़य्यतुम् मिम्मा त–र–क आलु मूसा व आलु हारू–न तह्मिलुहुल् मलाइ–कतु इन्–न फ़ी ज़ालि–क ल–आयतल्लकुम् इन् कुन्तुम् मुअ्मिनीन(248)फ़–लम्मा फ़–स–ल तालूतु बिल्जुनूदि का़–ल इन्नल्ला–ह मुब्तलीकुम् बि–न–हरिन् फ़–मन् शरि –ब मिन्हु फ़लै–स मिन्नी व मल्लम् यत्–अम्हु फ़–इन्नहू मिन्नी इल्ला मनिग्त–र–फ़ गुर्–फ़तम् बि–यदिही फ़–शरिबू मिन्हु इल्ला क़लीलम्–मिन्हुम् फ़–लम्मा जा–व–ज़हू हु–व वल्लज़ी–न आमनू म–अ़हु का़लू ला ता–क़–त लनल्यौ–म बिजालू–त व जुनूदिही क़ालल्लज़ी–न यजुन्नू–न अन्नहुम् मुलाकुल्लाहि कम् मिन् फ़ि–अतिन् क़ली–लतिन् ग़–ल–बत् फ़ि–अतन् कसी–रतम् बिइज़्निल्लाहि वल्लाहु म–अ़स्सा–बिरीन(249)व लम्मा ब–रज़ू लिजालू–त व जुनूदिही का़लू

मुल्क जिसे चाहे दे (फ़ा502) और अल्लाह वुस्अ़त वाला इल्म वाला है।(247) (फ़ा503) और उनसे उनके नबी ने फ़रमाया उसकी बादशाही की निशानी यह है कि आए तुम्हारे पास ताबूत (फ़ा504) जिसमें तुम्हारे रब की तरफ़ से दिलों का चैन है और कुछ बची हुई चीज़ें हैं मोअ़ज़्ज़ज़ मूसा और मोअ़ज़्ज़ज़ हारून के तरका की, उठाते लायेंगे उसे फ़रिश्ते बेशक उसमें बड़ी निशानी है तुम्हारे लिए अगर ईमान रखते हो(248)(रुकूअ्. 16) फिर जब तालूत लश्करों को लेकर शहर से जुदा हुआ (फ़ा505) बोला बेशक अल्लाह तुम्हें एक नहर से आज़माने वाला है तो जो उसका पानी पिये वह मेरा नहीं और जो न पिये वह मेरा है मगर वह जो एक चुल्लू अपने हाथ से ले ले (फ़ा506) तो सबने उससे पिया मगर थोड़ों ने (फ़ा507) फिर जब तालूत और उसके साथ के मुसलमान नहर के पार गए बोले हम में आज ताक़त नहीं जालूत और उसके लश्करों की, बोले वह जिन्हें अल्लाह से मिलने का यक़ीन था कि बारहा कम जमाअ़त ग़ालिब आई है ज़्यादा गरोह पर अल्लाह के हुक्म से और अल्लाह साबिरों के साथ है।(249) (फ़ा508) फिर जब सामने आये जालूत और उसके लश्करों के अ़र्ज़ की

(फ़ा502) इस में विरासत को कुछ दख़ल नहीं (फ़ा503) जिसे चाहे ग़नी कर दे और वुसअ़ते माल अ़ता फ़रमा दे इसके बाद बनी इसराईल ने हज़रत शमवील अ़लैहिस्सलाम से अ़र्ज़ किया कि अगर अल्लाह तआ़ला ने इन्हें सल्तनत के लिए मुक़र्रर फ़रमाया है तो उसकी निशानी क्या है (ख़ाज़िन व मदारिक) (फ़ा504) यह ताबूत शमशाद की लकड़ी का एक ज़र-अन्दोज़ सन्दूक़ था जिस का तूल तीन हाथ का और अ़र्ज़ दो हाथ का था उसको अल्लाह तआ़ला ने हज़रत आदम अ़लैहिस्सलाम पर नाज़िल फ़रमाया था उसमें तमाम अम्बिया अ़लैहिमुस्सलातु वस्सलाम की तस्वीरें थीं उनके मसाकिन व मकानात की तस्वीरें थीं और आख़िर में हुजूर सय्यदे अम्बिया सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की और हुज़ूर की दौलत सराए अक़दस की तस्वीर एक याक़ूते सुर्ख़ में थी कि हुजूर बहालते नमाज़ कि़याम में है और गिर्द आपके आपके असहाब। हज़रत आदम अ़लैहिस्सलाम ने उन तमाम तस्वीरों को देखा यह सन्दूक़ विरासतन मुन्तक़िल होता हुआ हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम तक पहुंचा आप उसमें तौरेत भी रखते थे और अपना मख़्सूस सामान भी चुनान्चे उस ताबूत में अलवाहे तौरेत के टुकड़े भी थे और हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलातु वस्सलाम का अ़सा और आपके कपड़े और आपकी नअ़्लैन शरीफ़ैन और हज़रत हारून अ़लैहिस्सलाम का अमामा और उनकी अ़सा और थोड़ा-सा मन् जो बनी इसराईल पर नाज़िल होता था। हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम जंग के मौक़ों पर उस सन्दूक़ को आगे रखते थे इससे बनी इसराईल के दिलों को तस्कीन रहती थी आपके बाद यह ताबूत बनी इसराईल में मुतवारिस होता चला आया जब उन्हें कोई मुश्किल दर पेश होती वह उस ताबूत को सामने रख कर दुआयें करते और कामयाब होते दुश्मनों के मुक़ाबला में उसकी बरकत से फ़तह पाते जब बनी इसराईल की हालत ख़राब हुई और उनकी बद अ़मली बहुत बढ़ गई और अल्लाह तआ़ला ने उन पर अ़मालक़ा को मुसल्लत किया तो वह उनसे ताबूत छीन कर ले गए और उसको नजिस **(बक़िया सफ़हा 78 पर)**

رَبَّنَآ اَفۡرِغۡ عَلَيۡنَا صَبۡرًا وَّثَبِّتۡ اَقۡدَامَنَا وَانۡصُرۡنَا عَلَى الۡقَوۡمِ الۡكٰفِرِيۡنَ ﴿۲۵۰﴾ فَهَزَمُوۡهُمۡ بِاِذۡنِ اللّٰهِ ۙ وَقَتَلَ دَاوٗدُ جَالُوۡتَ وَاٰتٰىهُ اللّٰهُ الۡمُلۡكَ وَالۡحِكۡمَةَ وَعَلَّمَهٗ مِمَّا يَشَآءُ ؕ وَلَوۡلَا دَفۡعُ اللّٰهِ النَّاسَ بَعۡضَهُمۡ بِبَعۡضٍ ۙ لَّفَسَدَتِ الۡاَرۡضُ وَلٰكِنَّ اللّٰهَ ذُوۡ فَضۡلٍ عَلَى الۡعٰلَمِيۡنَ ﴿۲۵۱﴾ تِلۡكَ اٰيٰتُ اللّٰهِ نَتۡلُوۡهَا عَلَيۡكَ بِالۡحَقِّ ؕ وَاِنَّكَ لَمِنَ الۡمُرۡسَلِيۡنَ ﴿۲۵۲﴾

रब्बना अफ़्रिग़् अ़लैना सब्रंव्–व सब्बित् अक़्दा–मना वन्सुर्ना अ़–लल्क़ौमिल् काफ़िरीन(250) फ़–ह–ज़मूहुम् बिइज़्निल्लाहि व क़–त–ल दावूदु जालू–त व आता–हुल्लाहुल् मुल्–क वल्हिक्म–त व अ़ल्ल–महू मिम्मा यशाउ व लौ ला दफ़्अुल्ला–हिन्ना–स बअ़्–ज़हुम् बि–बअ़्ज़िल्–ल–फ़–स–दतिल् अर्ज़ु व लाकिन्–नल्ला–ह ज़ू फ़ज़्लिन् अ़लल्–आ़–लमीन(251) तिल्–क आयातुल्लाहि नत्लू हा अ़लै–क बिल्–हक़्क़ि व इन्न–क लमिनल्–मुर्सलीन(252)

ऐ रब हमारे हम पर सब्र उंडेल दे और हमारे पांव जमे रख और काफ़िर लोगों पर हमारी मदद कर।(250) तो उन्होंने उनको भगा दिया अल्लाह के हुक्म से और क़त्ल किया दाऊद ने जालूत को (फ़ा509) और अल्लाह ने उसे सल्तनत और हिकमत (फ़ा510) अ़ता फ़रमाई और उसे जो चाहा सिखाया (फ़ा511) और अगर अल्लाह लोगों में बाज़ से बाज़ को दफ़अ़् न करे (फ़ा512) तो ज़रूर ज़मीन तबाह हो जाए मगर अल्लाह सारे जहान पर फ़ज़्ल करने वाला है।(251) यह अल्लाह की आयतें हैं कि हम ऐ महबूब तुम पर ठीक ठीक पढ़ते हैं और तुम बेशक रसूलों में हो।(252) (फ़ा513)

(फ़ा509) हज़रत दाऊद अ़लैहिस्सलाम के वालिद ईशा तालूत के लश्कर में थे और उनके साथ उनके तमाम फ़रज़न्द भी। हज़रत दाऊद अ़लैहिस्सलाम उन सब में छोटे थे बीमार थे रंग ज़र्द था बकरियां चराते थे, जब जालूत ने बनी इसराईल से मुक़ाबला तलब किया वह उसकी क़ुव्वते जसामत देख कर घबराए क्योंकि वह बड़ा जाबिर क़वी शहज़ोर अज़ीमुलजुस्सा क़द आवर था तालूत ने अपने लश्कर में एलान किया कि जो शख़्स जालूत को क़त्ल करे मैं अपनी बेटी उसके निकाह में दूंगा और निस्फ़ मुल्क उसको दूंगा मगर किसी ने उसका जवाब न दिया तो तालूत ने अपने नबी हज़रत शमवील अ़लैहिस्सलाम से अ़र्ज़ किया कि बारगाहे इलाही में दुआ़ करें आपने दुआ़ की तो बताया गया कि हज़रत दाऊद अ़लैहिस्सलाम जालूत को क़त्ल करेंगे तालूत ने आप से अ़र्ज़ किया कि अगर आप जालूत को क़त्ल करें तो मैं अपनी लड़की आपके निकाह में दूं और निस्फ़ मुल्क पेश करूं आपने कबूल फ़रमाया और जालूत की तरफ़ रवाना हो गए सफ़े क़िताल क़ायम हुई और हज़रत दाऊद अ़लैहिस्सलाम दस्ते मुबारक में फ़लाख़न लेकर मुक़ाबिल हुए जालूत के दिल में आपको देख कर दहशत पैदा हुई मगर उसने बातें बहुत मुतकब्बिराना कीं और आपको अपनी क़ुव्वत से मरऊब करना चाहा आपने फ़लाख़न में पत्थर रख कर मारा वह उसकी पेशानी को तोड़ कर पीछे से निकल गया और जालूत मर कर गिर गया हज़रत दाऊद अ़लैहिस्सलाम ने उसको लाकर तालूत के सामने डाल दिया तमाम बनी इसराईल ख़ुश हुए और तालूत ने हज़रत दाऊद अ़लैहिस्सलाम को हस्बे वादा निस्फ़ मुल्क दिया और अपनी बेटी का आपके साथ निकाह कर दिया एक मुद्दत के बाद तालूत ने वफ़ात पाई तमाम मुल्क पर हज़रत दाऊद अ़लैहिस्सलाम की सल्तनत हुई (जुमल वग़ैरह) (फ़ा510) हिकमत से नबुव्वत मुराद है (फ़ा511) जैसे कि ज़िरह बनाना और जानवरों का कलाम समझना (फ़ा512) यानी अल्लाह तआ़ला नेकों के सदक़ा में दूसरों की बलायें भी दफ़अ़् फ़रमाता है हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अ़न्हु से मरवी है कि रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि अल्लाह तआ़ला एक सालेह मुसलमान की बरकत से उसके पड़ोस के सौ घर वालों की बला दफ़अ़् फ़रमाता है सुबहानल्लाह नेकों का क़ुर्ब भी फ़ायदा पहुंचाता है। (ख़ाज़िन) (फ़ा513) यह हज़रात जिनका ज़िक्र मा सबक़ में और ख़ास आयत *इन्–न–क लमिनल् मुरसलीन* में फ़रमाया गया।

(बक़िया सफ़हा 56 का) मुनाफ़िक़ के हक़ में नाज़िल हुई जो हुज़ूर सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर होकर बहुत लजाजत से मीठी मीठी बातें करता था और अपने इस्लाम और आपकी मुहब्बत का दावा करता और उस पर क़स्में खाता और दर पर्दा फ़साद अंगेज़ी में मसरूफ़ रहता था मुसलमानों के मवेशी को उसने हलाक किया और उनकी खेती को आग लगा दी।

(बक़िया सफ़हा 63 का) बयान हुआ **मसलाः** मां ख़्वाह मुतल्लक़ा हो या न हो उस पर अपने बच्चा को दूध पिलाना वाजिब है बशर्तेकि बाप को उजरत पर दूध पिलवाने की क़ुदरत व इस्तेताअ़त न हो या कोई दूध पिलाने वाली मुयस्सर न आए या बच्चा मां के सिवा और किसी का दूध कबूल न करे अगर यह बातें न हों यानी बच्चा की परवरिश ख़ास मां के दूध पर मौक़िफ़ न हो तो मां पर दूध पिलाना वाजिब नहीं मुस्तहब है (तफ़सीर अहमदी व जुमल वग़ैरह)

(बक़िया सफ़हा 43 का) ने उसकी बुराई की हुज़ूर ने फ़रमाया वाजिब हुई हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने दरियाफ़्त किया कि हुज़ूर क्या चीज़ वाजिब हुई फ़रमाया पहले जनाज़ा की तुम ने तारीफ़ की उसके लिए जन्नत वाजिब हुई दूसरे की तुम ने बुराई बयान की उसके लिए दोज़ख़ वाजिब हुई तुम ज़मीन में अल्लाह के शोहदा (गवाह) हो फिर हुज़ूर ने यह आयत तिलावत फ़रमाई **मसलाः** यह तमाम शहादतें सुलहाए उम्मत और अहले सिद्क़ के साथ ख़ास हैं और उनके मोअ़तबर होने के लिए ज़बान की निगहदाश्त शर्त है जो लोग ज़बान की इहतियात नहीं करते और बेजा ख़िलाफ़े शरअ़ कलिमात उनकी ज़बान से निकलते हैं और नाहक़ लानत करते हैं सिहाह की हदीस में है कि रोज़े क़ियामत न वह शाफ़ेअ़ होंगे न शाहिद इस उम्मत की एक शहादत यह भी है कि आख़िरत में जब तमाम अव्वलीन व आख़िरीन जमा होंगे और कुफ़्फ़ार से फ़रमाया जाएगा क्या तुम्हारे पास मेरी तरफ़ से डराने और अहकाम पहुंचाने वाले नहीं आये तो वह इंकार करेंगे और कहेंगे कोई नहीं आया हज़राते अम्बिया से दरियाफ़्त फ़रमाया जाएगा वह अ़र्ज़ करेंगे कि यह झूठे हैं हमने इन्हें तबलीग़ की इस पर उनसे इक़ामतन लिल्हुज्जत दलील तलब की जाएगी वह अ़र्ज़ करेंगे कि उम्मते मुहम्मदिया हमारी शाहिद है यह उम्मत पैग़म्बरों की शहादत देगी कि इन हज़रात ने तबलीग़ फ़रमाई इस पर गुज़श्ता उम्मत के कुफ़्फ़ार कहेंगे उन्हें क्या मालूम यह हम से बाद हुए थे दरियाफ़्त फ़रमाया जाएगा तुम कैसे जानते हो यह अ़र्ज़ करेंगे या रब तूने हमारी तरफ़ अपने रसूल मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को भेजा कुरआन पाक नाज़िल फ़रमाया उनके ज़रिया से हम क़तई व यक़ीनी तौर पर जानते हैं कि हज़राते अम्बिया ने फ़र्ज़ तबलीग़ अ़ला वजहिल कमाल अदा किया फिर सय्यदे अम्बिया सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से आपकी उम्मत की निस्बत दरियाफ़्त फ़रमाया जाएगा हुज़ूर उनकी तस्दीक़ फ़रमायेंगे **मसलाः** इससे मालूम हुआ कि अशियाए मअ़रूफ़ा में शहादत तसामुअ़ के साथ भी मोअ़तबर है यानी जिन चीज़ों का इल्म यक़ीनी सुनने से हासिल हो उस पर भी शहादत दी जा सकती है (फ़ा259) उम्मत को तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की इत्तेलाअ़ के ज़रिया से अहवाले उमम व तबलीग़े अम्बिया का इल्म क़तई व यक़ीनी हासिल है और रसूले करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ब-करमे इलाही नूरे नबुव्वत से हर शख़्स के हाल और उसकी हक़ीक़ते ईमान और आमाले नेक व बद और इख़्लास व निफ़ाक़ सब पर मुत्तलअ़ हैं। **मसलाः** इसी लिए हुज़ूर की शहादत दुनिया में बहुक्मे शरअ़ उम्मत के हक़ में मक़बूल है यही वजह है कि हुज़ूर ने अपने ज़माना के हाज़िरीन के मुतअ़ल्लिक़ जो कुछ फ़रमाया मसलन सहाबा व अज़वाज व अहले बैत के फ़ज़ाइल व मनाक़िब या ग़ाएबों और बाद वालों के लिए मिस्ल हज़रत उवैस व इमाम महदी वग़ैरह के इस पर एतेक़ाद वाजिब है। **मसलाः** हर नबी को उनकी उम्मत के आमाल पर मुत्तलअ़ किया जाता है ताकि रोज़े क़ियामत शहादत दे सकें चूंकि हमारे नबीए करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की शहादत आ़म होगी इस लिए हुज़ूर तमाम उम्मतों के अहवाल पर मुत्तलअ़ हैं, **फ़ायदाः** यहां शहीद ब-मानी मुत्तलअ़ भी हो सकता है क्योंकि शहादत का लफ़्ज़ इल्म व इत्तेलाअ़ के माना में भी आया है *क़ालल्लाहु तआ़ला वल्लाहु अ़ला कुल्लि शैइन शहीद* (फ़ा260) सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम पहले कअ़बा की तरफ़ नमाज़ पढ़ते थे बाद हिजरत बैतुल मक़दिस की तरफ़ नमाज़ पढ़ने का हुक्म हुआ सतरह महीने के क़रीब उस तरफ़ नमाज़ पढ़ी फिर कअ़बा शरीफ़ की तरफ़ मुंह करने का हुक्म हुआ। इस तहवील की एक यह हिकमत इरशाद हुई कि इससे मोमिन व काफ़िर में फ़र्क़ व इम्तियाज़ हो जाएगा चुनान्चे ऐसा ही हुआ (फ़ा261) **शाने नुज़ूलः** बैतुल मक़दिस की तरफ़ नमाज़ पढ़ने के ज़माना में जिन सहाबा ने वफ़ात पाई उन के रिश्तेदारों ने तहवीले क़िब्ला के बाद उनकी नमाज़ों का हुक्म दरियाफ़्त किया इस पर यह आयते करीमा नाज़िल हुई और इत्मीनान दिलाया गया कि उनकी नमाज़ें ज़ाया नहीं उन पर सवाब मिलेगा **फ़ाइदाः** नमाज़ को ईमान से तअ़बीर फ़रमाया गया क्योंकि उसकी अदा और ब-जमाअ़त पढ़ना दलीले ईमान है (फ़ा262) **शाने नुज़ूलः** सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को कअ़बा का क़िब्ला बनाया जाना पसन्दे ख़ातिर था और हुज़ूर इस उम्मीद में आसमान की तरफ़ नज़र फ़रमाते थे उस पर यह आयत नाज़िल हुई। आप नमाज़ ही में कअ़बा की तरफ़ फिर गए मुसलमानों ने भी आपके साथ उसी तरफ़ रुख़ किया। **मसलाः** इससे मालूम हुआ कि अल्लाह तआ़ला को आपकी रज़ा मन्ज़ूर है और आप ही की ख़ातिर कअ़बा को क़िब्ला बनाया गया। (फ़ा263) इससे साबित हुआ कि नमाज़ में रू ब-क़िब्ला होना फ़र्ज़ है (फ़ा264) क्योंकि उनकी किताबों में हुज़ूर के औसाफ़ के सिलसिला में यह भी मज़कूर था कि आप बैतुल मक़दिस से कअ़बा की तरफ़ फिरेंगे और उनके अम्बिया ने बशारतों के साथ हुज़ूर का यह निशान बताया था कि आप बैतुल मक़दिस और कअ़बा दोनों क़िब्लों की तरफ़ नमाज़ पढ़ेंगे।

(बक़िया सफ़हा 44 का) कैसे, उन्होंने कहा मैं गवाही देता हूं कि हुज़ूर अल्लाह की तरफ़ से उसके भेजे रसूल हैं उनके औसाफ़ अल्लाह तआ़ला ने हमारी किताब तौरेत में बयान फ़रमाए हैं बेटे की तरफ़ से ऐसा यक़ीन किस तरह हो औरतों का हाल ऐसा क़तई किस तरह मालूम हो सकता है हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने उनका सर चूम लिया। **मसलाः** इससे मालूम हुआ कि ग़ैर महल शह्वत में दीनी मुहब्बत से पेशानी चूमना जायज़ है। (फ़ा270) यानी तौरेत व इन्जील में जो हुज़ूर की नअ़त व सिफ़त है उलमाए अहले किताब का एक गरोह उसको हसदन व एनादन दीदा व दानिस्ता छुपाता है। **मसलाः** हक़ का छुपाना मअ़सियत व गुनाह है। (फ़ा271) रोज़े क़ियामत सबको जमा फ़रमाएगा और आमाल की जज़ा देगा। (फ़ा272) यानी ख़्वाह किसी शहर से सफ़र के लिए निकलो नमाज़ में अपना मुंह मस्जिदे हराम (कअ़बा) की तरफ़ करो।

(बक़िया सफ़हा 45 का) हूं क़ुरआन व हदीस में ज़िक्र के बहुत फ़ज़ायल वारिद हैं और यह हर तरह के ज़िक्र को शामिल हैं ज़िक्र बिलजहर को भी और बिल इख़्फ़ा को भी (फ़ा279) हदीस शरीफ़ में है कि सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को जब कोई सख़्त मुहिम पेश आती नमाज़ में मशग़ूल हो जाते और नमाज़ से मदद चाहने में नमाज़े इस्तिस्क़ा व सलाते हाजत दाख़िल है। (फ़ा280) **शाने नुज़ूल:** यह आयत शोहदाए बदर के हक़ में नाज़िल हुई लोग शोहदा के हक़ में कहते थे कि फ़लां का इन्तेक़ाल हो गया वह दुनियवी आसाईश से महरूम हो गया उनके हक़ में यह आयत नाज़िल हुई (फ़ा281) मौत के बाद ही अल्लाह तआ़ला शोहदा को हयात अ़ता फ़रमाता है उनकी अरवाह पर रिज़्क़ पेश किये जाते हैं उन्हें राहतें दी जाती हैं उनके अ़मल जारी रहते हैं अजूर व सवाब बढ़ता रहता है हदीस शरीफ़ में है कि शोहदा की रूहें सब्ज़ परिन्दों के क़ालिब में जन्नत की सैर करती और वहां के मेवे और निअ़्मतें खाती हैं। मसला: अल्लाह तआ़ला के फ़रमांबरदार बन्दों को क़ब्र में जन्नती निअ़्मतें मिलती हैं शहीद वह मुसलमान मुकल्लफ़ ज़ाहिर है जो तेज़ हथियार से ज़ुल्मन मारा गया हो और उसके क़त्ल से माल भी वाजिब न हुआ हो या मअ़्रकए जंग में मुर्दा या ज़ख़्मी पाया गया और उसने कुछ आसाईश न पाई उस पर दुनिया में यह अहकाम हैं कि न उसको ग़ुस्ल दिया जाये न कफ़न अपने कपड़ों में ही रखा जाये उसी तरह उस पर नमाज़ पढ़ी जाये उसी हालत में दफ़न किया जाये आख़िरत में शहीद का बड़ा रुतबा है बाज़ शोहदा वह हैं कि उन पर दुनिया के यह अहकाम तो जारी नहीं होते लेकिन आख़िरत में उनके लिए शहादत का दर्जा है जैसे डूब कर या जल कर या दीवार के नीचे दब कर मरने वाला, तलबे इल्म, सफ़रे हज ग़र्ज़े राहे ख़ुदा में मरने वाला और निफ़ास में मरने वाली औ़रत और पेट के मरज़ और ताऊ़न और ज़ातुलजनब और सिल में और जुमा के रोज़ मरने वाले वग़ैरह (फ़ा282) आज़माईश से फ़रमांबरदार व नाफ़रमान के हाल का ज़ाहिर करना मुराद है। (फ़ा283) इमाम शाफ़ेई अ़लैहिर्रहमा ने इस आयत की तफ़सीर में फ़रमाया कि ख़ौफ़ से अल्लाह का डर भूख से रमज़ान के रोज़े मालों की कमी से ज़कात व सदक़ात देना जानों की क़मी से अमराज़ के ज़रिया मौतें होना फलों की कमी से औलाद की मौत मुराद है इस लिए कि औलाद दिल का फल होती है, हदीस शरीफ़ में है सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया जब किसी बन्दे का बच्चा मरता है अल्लाह तआ़ला मलाइका से फ़रमाता है: तुम ने मेरे बन्दे के बच्चे की रूह क़ब्ज़ की वह अ़र्ज़ करते हैं कि हां या रब फिर फ़रमाता है तुम ने उसके दिल का फल ले लिया अ़र्ज़ करते हैं हां या रब फ़रमाता है इस पर मेरे बन्दे ने क्या कहा, अ़र्ज़ करते हैं उसने तेरी हम्द की और *इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन* पढ़ा फ़रमाता है उसके लिए जन्नत में मकान बनाओ और उसका नाम बैतुलहम्द रखो। हिकमत मुसीबत के पेश आने से क़ब्ल ख़बर देने में कई हिकमतें हैं एक तो यह कि उससे आदमी को वक़्ते मुसीबत सब्र आसान हो जाता है एक यह कि जब काफ़िर देखें कि मुसलमान बला व मुसीबत के वक़्त साबिर व शाकिर और इस्तिक़लाल के साथ अपने दीन पर क़ाइम रहता है तो उन्हें दीन की ख़ूबी मालूम हो और उसकी तरफ़ रग़बत हो। एक यह कि आने वाली मुसीबत की क़ब्ल वुक़ू. अ़. इत्तेलाअ़ ग़ैबी ख़बर और नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम का मोअ़जज़ा है एक हिकमत यह कि मुनाफ़िक़ीन के क़दम इब्तेला की ख़बर से उखड़ जायें और मोमिन व मुनाफ़िक़ में इम्तियाज़ हो जाये (फ़ा284) हदीस शरीफ़ में है कि वक़्त मुसीबत के *इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन* पढ़ना रहमते इलाही का सबब होता है यह भी हदीस में है कि मोमिन की तकलीफ़ को अल्लाह तआ़ला कफ़्फ़ारए गुनाह बनाता है।

(बक़िया सफ़हा 46 का) मरवह पर था उसका नाम नाइला था कुफ़्फ़ार जब सफ़ा व मरवह के दर्मियान सई करते तो उन बुतों पर ताज़ीमन हाथ फेरते अ़हदे इस्लाम में बुत तो तोड़े गए लेकिन चूंकि कुफ़्फ़ार यहां मुशरिकाना फ़ेअ़्ल करते थे इस लिए मुसलमानों को सफ़ा व मरवह के दर्मियान सई करना गिरां हुआ कि इसमें कुफ़्फ़ार के मुशरिकाना फ़ेअ़्ल के साथ कुछ मुशाबेहत है इस आयत में उनका इत्मीनान फ़रमा दिया गया कि चूंकि तुम्हारी नीयत ख़ालिस इबादते इलाही की है तुम्हें अन्देशए मुशाबेहत नहीं और जिस तरह कअ़्बा के अन्दर ज़मानए जाहिलियत में कुफ़्फ़ार ने बुत रखे थे अब अ़हदे इस्लाम में बुत उठा दिये गए और कअ़्बा शरीफ़ का तवाफ़ दुरुस्त रहा और वह शआइरे दीन में से रहा इसी तरह कुफ़्फ़ार की बुत परस्ती से सफ़ा व मरवह के शआइरे दीन होने में कुछ फ़र्क़ नहीं आया। **मसला:** सई (यानी सफ़ा व मरवह के दर्मियान दौड़ना) वाजिब है हदीस से साबित है सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने इस पर मुदावमत फ़रमाई है इसके तर्क से दम देना यानी कुरबानी वाजिब होती है। **मसला:** सफ़ा व मरवह के दर्मियान सई हज व उमरा दोनों में लाज़िम है फ़र्क़ यह है कि हज के अन्दर अ़रफ़ात में जाना और वहां से तवाफ़े कअ़्बा के लिए आना शर्त है और उमरा के लिए अ़रफ़ात में जाना शर्त नहीं। **मसला:** उमरा करने वाला अगर बैरूने मक्का से आये उसको बराहे रास्त मक्का मुकर्रमा में आकर तवाफ़ करना चाहिए और अगर मक्का का साकिन हो तो उसको चाहिए कि हरम से बाहर जाये वहां से तवाफ़े कअ़्बा के लिए एहराम बांध कर आये हज व उमरा में एक फ़र्क़ यह भी है कि हज साल में एक ही मर्तबा हो सकता है क्योंकि अ़रफ़ात में अ़रफ़ा के दिन यानी नवीं ज़िलहिज्जा को जाना जो हज में शर्त है साल में एक ही मर्तबा मुमकिन है और उमरा हर दिन हो सकता है इसके लिए कोई वक़्त मुअ़य्यन नहीं। (फ़ा288) यह आयत उन उलमाए यहूद की शान में नाज़िल हुई जो सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की नअ़्त शरीफ़ और आयते रजम और तौरेत के दूसरे अहकाम को छुपाया करते थे **मसला:** उलूमे दीन का इज़्हार फ़र्ज़ है (फ़ा289) लानत करने वालों से मलाइका व मोमिनीन मुराद हैं एक क़ौल यह है कि अल्लाह के तमाम बन्दे मुराद हैं (फ़ा290) मोमिन तो काफ़िरों पर लानत करेंगे ही काफ़िर भी रोज़े क़ियामत बाहम एक दूसरे पर लानत करेंगे **मसला:** इस आयत में उन पर लानत फ़रमाई गई जो कुफ़्र पर मरे इससे मालूम हुआ कि जिस की मौत कुफ़्र पर मालूम हो उस पर लानत करनी जाइज़ है **मसला:** गुनहगार मुसलमान पर बित्तअ़य्युन लानत करना जाइज़ नहीं लेकिन अ़ललइतलाक़ जाइज़ है जैसा कि हदीस शरीफ़ में चोर और सूद ख़ोर वग़ैरह पर लानत आई है (फ़ा291) **शाने नुज़ूल:** कुफ़्फ़ार ने सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से कहा आप अपने रब की शान व सिफ़त बयान फ़रमाईये इस पर यह आयत नाज़िल हुई और उन्हें बता दिया गया कि मअ़्बूद सिर्फ़ एक है न वह मुतजज़्ज़ी होता है न मुन्क़सिम न उसके लिए मिस्ल न नज़ीर, उलूहियत व रुबूबीयत में कोई उसका शरीक नहीं वह यकता है अपने अफ़्आ़ल में मसनूआ़त को तनहा उसी ने बनाया वह अपनी ज़ात में अकेला है कोई उसका क़सीम नहीं अपने सिफ़ात में यगाना है कोई उसका शबीह नहीं। अबू दाऊद व तिर्मिज़ी की हदीस में है कि अल्लाह तआ़ला का इस्मे आज़म इन दो आयतों में है एक यही आयत व *इलाहुकुम्* दूसरी *अलिफ़् लाम् मीम् अल्लाहु लाइला-ह इल्ला हुव अलआयत*

(बक़िया सफ़हा 47 का) यकता है क्योंकि अगर उसके साथ कोई दूसरा मअ़बूद भी फ़र्ज़ किया जाये तो उसको भी इस मक़दूरात पर क़ादिर मानना पड़ेगा अब दो हाल से ख़ाली नहीं या तो ईजाद व तासीर में दोनों मुत्तफ़िकुल इरादा होंगे या न होंगे अगर हों तो एक ही शय के वजूद में दो मुअस्सिरों का तासीर करना लाज़िम आएगा और यह मुहाल है क्योंकि यह मुस्तल्ज़िम है मअ़लूल के दोनों से मुस्तग़नी होने को और दोनों की तरफ़ मुफ़्तक़िर होने को क्योंकि इल्लत जब मुस्तक़िला हो तो मअ़लूल सिर्फ़ उसी की तरफ़ मोहताज होता है दूसरे की तरफ़ मोहताज नहीं होता और दोनों को इल्लते मुस्तक़िला फ़र्ज़ किया गया है तो लाज़िम आएगा कि मअ़लूल दोनों में से हर एक की तरफ़ मोहताज हो और हर एक से ग़नी हो तो नक़ीज़ैन मुज्तमअ़ हो गईं और यह मुहाल है और अगर यह फ़र्ज़ करो कि तासीर उन में से एक की है तो तरजीह बिला मुरज्जह लाज़िम आएगी और दूसरे का इज्ज़ लाज़िम आएगा जो इलाह होने के मुनाफ़ी है और अगर यह फ़र्ज़ करो कि दोनों के इरादे मुख़्तलिफ़ होते हैं तो तमानोअ़ व ततारुद लाज़िम आएगा कि एक किसी शय के वजूद का इरादा करे और दूसरा उसी हाल में उसके अ़दम का तो वह शय एक ही हाल में मौजूद व मअ़दूम दोनों होगी या दोनों न होगी यह दोनों तक़दीरें बातिल हैं तो ज़रूर है कि या मौजूदगी होगी या मअ़दूम एक ही बात होगी अगर मौजूद हुई तो अ़दम का चाहने वाला आ़जिज़ हुआ इलाह न रहा और अगर मअ़दूम हुई तो वुजूद का इरादा करने वाला मजबूर रहा इलाह न रहा लिहाज़ा साबित हो गया कि इलाह एक ही हो सकता है और यह तमाम अनवाअ़ बे निहायत वुजूह से उसकी तौहीद पर दलालत करते हैं (फ़ा293) यह रोज़े क़ियामत का बयान है जब मुशरिकीन और उनके पेशवा जिन्होंने उन्हें कुफ़्र की तरग़ीब दी थी एक जगह जमा होंगे और अ़ज़ाब नाज़िल होता हुआ देख कर एक दूसरे से बेज़ार हो जायेंगे (फ़ा294) यानी वह तमाम तअ़ल्लुक़ात जो दुनिया में उनके माबैन थे ख़्वाह दोस्तियां हों या रिश्तेदारियां या बाहमी मुवाफ़क़त के अ़हद (फ़ा295) यानी अल्लाह तआ़ला उनके बुरे आमाल उनके सामने करेगा तो उन्हें निहायत हसरत होगी कि उन्होंने यह काम क्यों किये थे, एक क़ौल यह है कि जन्नत के मक़ामात दिखा कर उन से कहा जाएगा कि अगर तुम अल्लाह तआ़ला की फ़रमांबरदारी करते तो यह तुम्हारे लिए थे फिर वह मसाकिन व मनाज़िल मोमिनीन को दिये जायेंगे इस पर उन्हें हसरत व नदामत होगी।

(बक़िया सफ़हा 48 का) मालूम हुआ कि अल्लाह तआ़ला की निअ़मतों पर शुक्र वाजिब है। (फ़ा302) जो हलाल जानवर बग़ैर ज़िबह किये मर जाये या उसको तरीक़े शरअ़ के ख़िलाफ़ मारा गया हो मसलन गला घोंट कर या लाठी पत्थर ढेले ग़ुल्ले गोली से मार कर हलाक किया गया हो या वह गिर कर मर गया हो या किसी जानवर ने सींग से मारा हो या किसी दरिन्दे ने हलाक किया हो उसको मुर्दार कहते हैं और उसी के हुक्म में दाख़िल है ज़िन्दा जानवर का वह उज़्व जो काट लिया गया हो **मसलाः** मुर्दार जानवर का खाना हराम है मगर उसका पका हुआ चमड़ा काम में लाना और उसके बाल सींग हड्डी पट्ठे सुम से फ़ाइदा उठाना जाइज़ है (तफ़सीर अहमदी) (फ़ा303) **मसलाः** ख़ून हर जानवर का हराम है अगर बहने वाला हो दूसरी आयत में फरमाया *अव् दमम् मस्फ़ूहन्* (फ़ा304) **मसलाः** ख़िन्ज़ीर (सूअर) नजिसुल-ऐन है उसका गोश्त पोस्त बाल नाख़ुन वग़ैरह तमाम अजज़ा नजिस व हराम हैं किसी को काम में लाना जायज़ नहीं चूंकि ऊपर से खाने का बयान हो रहा है इस लिए यहां गोश्त के ज़िक्र पर इक्तेफ़ा फ़रमाया गया (फ़ा305) **मसलाः** जिस जानवर पर वक़्ते ज़िबह ग़ैरे ख़ुदा का नाम लिया जाये ख़्वाह तन्हा या ख़ुदा के नाम के साथ अ़त्फ़ से मिला कर वह हराम है। **मसलाः** और अगर नामे ख़ुदा के साथ ग़ैर का नाम बग़ैर अ़त्फ़ मिलाया तो मकरूह है। **मसलाः** अगर ज़िबह फ़क़त अल्लाह के नाम पर किया और उससे क़ब्ल या बाद ग़ैर का नाम लिया मसलन यह कहा कि अ़क़ीक़ा का बकरा वलीमा का दुम्बा या जिसकी तरफ़ से वह ज़बीहा है उसी का नाम लिया या जिन औलिया के लिए ईसाले सवाब मन्ज़ूर है उनका नाम लिया तो यह जाइज़ है इसमें कुछ हर्ज नहीं (तफ़सीर अहमदी) (फ़ा306) मुज़तर वह है जो हराम चीज़ के खाने पर मजबूर हो और उसको न खाने से ख़ौफ़े जान हो ख़्वाह तो शिद्दत की भूक या नादारी की वजह से जान पर बन जाये और कोई हलाल चीज़ हाथ न आए या कोई शख़्स हराम के खाने पर जब्र करता हो और उससे जान का अन्देशा हो ऐसी हालत में जान बचाने के लिए हराम चीज़ का क़द्रे ज़रूरत यानी इतना खा लेना जायज़ है कि ख़ौफ़े हलाकत न रहे।

(बक़िया सफ़हा 57 का) की राह के ख़िलाफ़ रविश इख़्तियार करो। (फ़ा398) मिल्लते इस्लाम के छोड़ने और शैतान की फ़रमांबरदारी करने वाले। (फ़ा399) जो अ़ज़ाब पर मामूर हैं। (फ़ा400) कि उनके अम्बिया के मोअ़जेज़ात को उनके सिद्क़े नबुव्वत की दलील बनाया उनके इरशाद और उनकी किताबों को दीने इस्लाम की हक़्क़ानियत का शाहिद किया। (फ़ा401) अल्लाह की निअ़मत से आयाते इलाहिया मुराद हैं जो सबबे रुश्द व हिदायत हैं और उनकी बदौलत गुमराही से नजात हासिल होती है उन्हीं में से वह आयात हैं जिन में सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की नअ़त व सिफ़त और हुज़ूर की नबुव्वत व रिसालत का बयान है यहूद व नसारा की तहरीफ़ें उस निअ़मत की तब्दील है (फ़ा402) वह उसी की क़दर करते और उसी पर मरते हैं (फ़ा404) और सामाने दुनियवी से उनकी बे रग़बती देख कर उनकी तहक़ीर करते हैं जैसा कि हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊद और अ़म्मार बिन यासिर और सोहैब व बिलाल रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हुम को देख कर कुफ़्फ़ार तमस्ख़ुर करते थे और दौलते दुनिया के ग़ुरूर में अपने आप को ऊंचा समझते थे। (फ़ा404) यानी ईमानदार रोज़े क़ियामत जन्नाते आलिया में होंगे और मग़रूर कुफ़्फ़ार जहन्नम में ज़लील व ख़्वार।

(बक़िया सफ़हा 49 का) का क़िब्ला होना मन्सूख़ हो गया। (मदारिक) मुफ़स्सिरीन का एक क़ौल यह भी है कि यह ख़िताब अहले किताब और मोमिनीन सब को आ़म है और माना यह हैं कि सिर्फ़ रू ब-क़िब्ला होना असल नेकी नहीं जब तक अ़क़ायद दुरुस्त न हों और दिल इख़्लास के साथ रब्बे क़िब्ला की तरफ़ मुतवज्जह न हो। (फ़ा312) इस आयत में नेकी के छः तरीक़े इरशाद फ़रमाए (1) ईमान लाना (2) माल देना (3) नमाज़ क़ायम करना (4) ज़कात देना (5) अ़हद पूरा करना (6) सब्र करना। ईमान की तफ़सील यह है कि एक तो अल्लाह तआ़ला पर ईमान लाए कि वह *हय्य व क़य्यूम अ़लीम हकीम, समीअ़ बसीर ग़नी क़दीर अज़ली अबदी वाहिद लाशरीक लहू* है। दूसरे क़ियामत पर ईमान लाए कि वह हक़ है उसमें बन्दों का हिसाब होगा आमाल की जज़ा दी जाएगी मक़बूलाने हक़ शफ़ाअ़त करेंगे सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम सआ़दतमन्दों को हौज़े कौसर पर सैराब फ़रमायेंगे पुल सिरात पर गुज़र होगा और उस रोज़ के तमाम अहवाल जो क़ुरआन में आए या सय्यदे अम्बिया ने बयान फ़रमाए सब हक़ हैं। तीसरे फ़रिश्तों पर ईमान लाए कि वह अल्लाह की मख़्लूक़ और फ़रमांबरदार बन्दे हैं न मर्द हैं न औ़रत उनकी तादाद अल्लाह जानता है चार उनमें से बहुत मुक़र्रब हैं जिबरील, मीकाईल, इसराफ़ील, इज़राईल अ़लैहिमुस्सलाम। चौथे कुतुबे इलाहिया पर ईमान लाना कि जो किताब अल्लाह तआ़ला ने नाज़िल फ़रमाई हक़ है उनमें चार बड़ी किताबें हैं (1) तौरेत जो हज़रत मूसा पर (2) इन्जील जो हज़रत ईसा पर (3) ज़ुबूर जो हज़रत दाऊद पर (4) क़ुरआन मजीद हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम पर नाज़िल हुईं और पचास सहीफ़े हज़रत शीस पर तीस हज़रत इदरीस पर दस हज़रत आदम पर दस हज़रत इब्राहीम पर नाज़िल हुए अ़लैहिमुस्सलातु वस्सलाम। पांचवें तमाम अम्बिया पर ईमान लाना कि वह सब अल्लाह के भेजे हुए हैं और मअ़सूम यानी गुनाहों से पाक हैं उनकी सही तादाद अल्लाह जानता है उनमें से तीन सौ तेरह रसूल हैं नबीय्यीन बसेग़ए जमा मुज़क्कर सालिम ज़िक्र फ़रमाना इशारा करता है कि अम्बिया मर्द होते हैं कोई औ़रत कभी नबी नहीं हुई जैसा कि *व मा अरसल्ना मिन् क़ब्लि-क इल्ला रिजालन् अलआयत* से साबित है। ईमाने मुजमल यह *आमन्तु बिल्लाहि व बि-जमीअ़े माजा-अ बिहिन्नबीय्यु* (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) यानी मैं अल्लाह पर ईमान लाया और उन तमाम उमूर पर जो सय्यदे अम्बिया सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम अल्लाह के पास से लाए (तफ़सीर अहमदी) (फ़ा313) ईमान के बाद आमाल का और इस सिलसिले में माल देने का बयान फ़रमाया उसके छः मसरफ़ ज़िक्र किये गर्दनें छुड़ाने से ग़ुलामों का आज़ाद करना मुराद है यह सब मुस्तहब तौर पर माल देने का बयान था। **मसलाः** इस आयत से मालूम होता है कि सदक़ा देना ब-हालते तन्दुरुस्ती ज़्यादा अजूर रखता है ब-निस्बत इसके कि मरते वक़्त ज़िन्दगी से मायूस होकर दे (कज़ा फ़ी हदीस अ़न अबी हुरैरा) मसलाः हदीस शरीफ़ में है कि रिश्तादार को सदक़ा देने में दो सवाब हैं एक सदक़ा का एक सिलए रहम का (निसाई शरीफ़)

(बक़िया सफ़हा 50 का) क़ातिल को बे एवज़ माफ़ करे या माल पर सुलह कर ले अगर वह इस पर राज़ी न हो और क़िसास चाहे तो क़िसास ही फ़र्ज़ रहेगा (जुमल) **मसलाः** अगर मक़तूल के तमाम औलिया क़िसास माफ़ कर दें तो क़ातिल पर कुछ लाज़िम नहीं रहता। **मसलाः** अगर माल पर सुलह करें तो क़िसास साक़ित हो जाता है और माल वाजिब होता है (तफ़सीर अहमदी) **मसलाः** वलीए मक़तूल को क़ातिल का भाई फ़रमाने में दलालत है इस पर कि क़त्ल गरचे बड़ा गुनाह है मगर उससे अख़ूवते ईमानी क़तअ़ नहीं होती इसमें ख़्वारिज का इब्ताल है जो मुरतकिबे कबीरा को काफ़िर कहते हैं (फ़ा318) यानी बदस्तूर जाहिलियत ग़ैर क़ातिल को क़त्ल करे या दियत क़बूल करने और माफ़ करने के बाद क़त्ल करे (फ़ा319) क्योंकि क़िसास मुक़र्रर होने से लोग क़त्ल से बाज़ रहेंगे और जानें बचेंगी (फ़ा320) यानी मुवाफ़िक़ दस्तूरे शरीअ़त के अ़द्ल करे और एक तिहाई माल से ज़्यादा की वसीयत न करे और मोहताजों पर मालदारों को तरजीह न दे **मसलाः** इब्तेदाए इस्लाम में यह वसीयत फ़र्ज़ थी जब मीरास के अहकाम नाज़िल हुए मन्सूख़ की गई अब ग़ैरे वारिस के लिए तिहाई से कम में वसीयत करना मुस्तहब है बशर्ते कि वारिस मोहताज न हों या तरका मिलने पर मोहताज न रहें वरना तरका वसीयत से अफ़ज़ल है (तफ़सीर अहमदी) (फ़ा321) ख़्वाह वसी हो या वली या शाहिद और वह तब्दील किताबत में करे या तक़सीम में या अदाए शहादत में अगर वह वसीयत मुवाफ़िक़े शरअ़ है तो बदलने वाला गुनहगार है। (फ़ा322) और दूसरे ख़्वाह वह मूसी हों या मूसा-लहू बरी हैं।

(बक़िया सफ़हा 51 का) जायज़ है। **मसलाः** जिस मुसाफ़िर ने तुलूअ़े फ़ज्र से क़ब्ल सफ़र शुरू किया उसको तो रोज़े का इफ़्तार जायज़ है लेकिन जिस ने बाद तुलूअ़ सफ़र किया उसको उस दिन का इफ़्तार जायज़ नहीं। (फ़ा328) **मसलाः** जिस बूढ़े मर्द या औ़रत को पीराना साली के ज़ोअ़फ़ से रोज़ा रखने की क़ुदरत न रहे और आईन्दा क़ुव्वत हासिल होने की उम्मीद भी न हो उसको शैख़े फ़ानी कहते हैं उसके लिए जायज़ है कि इफ़्तार करे और हर रोज़े के बदले निस्फ़ साअ़ यानी एक सौ पचहत्तर रुपया और एक अठन्नी भर गेहूं या गेहूं का आटा या इससे दूने जौ या उसकी क़ीमत बतौरे फ़िदिया दे। **मसलाः** अगर फ़िदिया देने के बाद रोज़ा रखने की क़ुव्वत आ गई तो रोज़ा वाजिब होगा। **मसलाः** अगर शैख़े फ़ानी नादार हो और फ़िदिया देने की क़ुदरत न रखे तो अल्लाह तआ़ला से इस्तिग़फ़ार करे और अपने अ़फ़्वे तक़सीर की दुआ करता रहे (फ़ा329) यानी फ़िदिया की मिक़दार से ज़्यादा दे (फ़ा330) इस से मालूम हुआ कि अगरचे मुसाफ़िर व मरीज़ को इफ़्तार की इजाज़त है लेकिन ज़्यादा बेहतर व अफ़ज़ल रोज़ा रखना ही है (फ़ा331) इसके माना में मुफ़स्सिरीन के चन्द अक़वाल हैं- (1) यह कि रमज़ान वह है जिसकी शान व शराफ़त में क़ुरआन पाक नाज़िल हुआ (2) यह कि क़ुरआने करीम में नुज़ूल की इब्तेदा रमज़ान में हुई (3) यह कि क़ुरआने करीम बेतमामेही रमज़ान मुबारक की शबे क़द्र में लौहे महफ़ूज़ से आसमाने दुनिया की तरफ़ उतारा गया और बैतुल इज़्ज़त में रहा यह उसी आसमान पर एक मक़ाम है यहां से वक़्तन फ़वक़्तन् हस्बे इक़्तेज़ाए हिकमत जितना जितना मन्ज़ूरे इलाही हुआ जिबरीले अमीन लाते रहे यह नुज़ूल तेईस साल के अ़र्सा में पूरा हुआ।

(बक़िया सफ़हा 52 का) के बाद खाना पीना मुजामअ़त करना नमाज़े इशा तक हलाल था बाद नमाज़े इशा यह सब चीज़ें शब में भी हराम हो जाती थीं यह हुक्म ज़मानए अक़्दस तक बाक़ी था बाज़ सहाबा से रमज़ान की रातों में बादे इशा मुबाशरत वुक़ूअ़ में आई उनमें हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अ़न्हु भी थे इस पर वह हज़रात नादिम हुए और दरगाहे रिसालत में अ़र्ज़े हाल किया अल्लाह तआ़ला ने माफ़ फ़रमाया और यह आयत नाज़िल हुई और बयान कर दिया गया कि आईन्दा के लिए रमज़ान की रातों में मग़रिब से सुबहे सादिक़ तक मुजामअ़त करना हलाल किया गया। (फ़ा336) इस ख़ियानत से वह मुजामअ़त मुराद है जो क़ब्ले इबाहत रमज़ान की रातों में मुसलमानों से सरज़द हुई थी उसकी माफ़ी का बयान फ़रमा कर उनकी तस्कीन फ़रमा दी गई (फ़ा337) यह अम्रे इबाहत के लिए है कि अब वह मुमानअ़त उठा दी गई और लयाली रमज़ान में मुबाशरत मुबाह कर दी गई (फ़ा338) इस में हिदायत है कि मुबाशरत नस्ल व औलाद हासिल करने की नीयत से होनी चाहिये जिससे मुसलमान बढ़ें और दीन क़वी हो मुफ़स्सिरीन का एक क़ौल यह भी है कि माना यह हैं कि मुबाशरत मुवाफ़िक़ हुक्मे शरअ़ हो जिस महल में जिस तरीक़ा से मुबाह फ़रमाई उससे तजावुज़ न हो (तफ़सीर अहमदी) एक क़ौल यह भी है कि जो अल्लाह ने लिखा उसको तलब करने के माना हैं रमज़ान की रातों में कसरते इबादत और बेदार रह कर शबे क़द्र की जुस्तजू करना (फ़ा339) यह आयत सरमआ़ बिन क़ैस के हक़ में नाज़िल हुई आप मेहनती आदमी थे एक दिन बहालते रोज़ा दिन भर अपनी ज़मीन में काम करके शाम को घर आए बीवी से खाना मांगा वह पकाने में मसरूफ़ हुईं यह थके थे आंख लग गई जब खाना तैयार करके उन्हें बेदार किया उन्होंने खाने से इंकार कर दिया क्यों कि उस ज़माना में सो जाने के बाद रोज़ादार पर खाना पीना ममनूअ़ हो जाता था और उसी हालत में दूसरा रोज़ा रख लिया ज़ोअ़्फ़ इन्तेहा को पहुंच गया था दोपहर को ग़शी आ गई उनके हक़ में यह आयत नाज़िल हुई और रमज़ान की रातों में इनके सबब से खाना पीना मुबाह फ़रमाया गया जैसे कि हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अ़न्हु की इनाबत व रुजूअ़ के बाइस क़ुर्बत हलाल हुई (फ़ा340) रात को सियाह डोरे से और सुबहे सादिक़ को सफ़ेद डोरे से तश्बीह दी गई माना यह हैं कि तुम्हारे लिए खाना पीना रमज़ान की रातों में मग़रिब से सुबहे सादिक़ तक मुबाह फ़रमाया गया (तफ़सीर अहमदी) **मसलाः** सुबहे सादिक़ तक इजाज़त देने में इशारा है कि जनाबत रोज़े के मुनाफ़ी नहीं जिस शख़्स को बहालते जनाबत सुबह हुई वह ग़ुस्ल कर ले उसका रोज़ा जायज़ है (तफ़सीर अहमदी) **मसलाः** इसी से उलमा ने यह मसला निकाला कि रमज़ान के रोज़े की नीयत दिन में जायज़ है (फ़ा341) इससे रोज़े की आख़िर हद मालूम होती है और यह मसला साबित होता है कि बहालते रोज़ा ख़ुर्द व नोश व मुजामअ़त में से हर एक के इरतेकाब से कफ़्फ़ारा लाज़िम हो जाता है (मदारिक) **मसलाः** उलमा ने इस आयत को सौमे विसाल यानी तह के रोज़े के ममनूअ़ होने की दलील क़रार दिया है।

(बक़िया सफ़हा 53 का) था। (फ़ा345) चांद के घटने बढ़ने के फ़वायद बयान फ़रमाए कि वह वक़्त की अ़लामतें हैं और आदमियों के हज़ारहा दीनी व दुनियावी काम इससे मुतअ़ल्लिक़ हैं ज़राअ़त तिजारत लेन देन के मुआ़मलात रोज़े और ईद के औक़ात औ़रतों की इद्दतें हैज़ के अय्याम, हमल और दूध पिलाने की मुद्दतें और दूध छुड़ाने के वक़्त और हज के औक़ात इससे मालूम होते हैं क्योंकि अव्वल में जब चांद बारीक होता है तो देखने वाला जान लेता है कि यह इब्तेदाई तारीख़ें हैं और जब चांद पूरा रौशन होता है तो मालूम हो जाता है कि यह महीने की दर्मियानी तारीख़ है और जब चांद छुप जाता है तो मालूम होता है कि महीना ख़त्म पर है इसी तरह उनके माबैन अय्याम में चांद की हालतें दलालत किया करती हैं फिर महीनों से साल का हिसाब होता है यह वह क़ुदरती जन्त्री है जो आसमान के सफ़्हा पर हमेशा खुली रहती है और हर मुल्क और हर ज़बान के लोग पढ़े भी और बे पढ़े भी सब उससे अपना हिसाब मालूम कर लेते हैं। (फ़ा346) **शाने नुज़ूलः** ज़मानए जाहिलियत में लोगों की यह आ़दत थी कि जब वह हज के लिए एहराम बांधते तो किसी मक़ान में उसके दरवाज़े से दाख़िल न होते अगर ज़रूरत होती तो पछीत तोड़ कर आते और इसको नेकी जानते इस पर यह आयत नाज़िल हुई (फ़ा347) ख़्वाह हालते एहराम हो या ग़ैर एहराम (फ़ा348) सन् 6 हिजरी में हुदैबिया का वाक़िआ़ पेश आया उस साल सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम मदीना तय्यबा से बक़स्दे उमरा मक्का मुकर्रमा रवाना हुए मुशरिकीन ने हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को मक्का मुकर्रमा में दाख़िल होने से रोका और इस पर सुलह हुई कि आप साले आईन्दा तशरीफ़ लायें तो आपके लिए तीन रोज़ मक्का मुकर्रमा ख़ाली कर दिया जाएगा चुनान्चे अगले साल सन् ७ हिजरी में हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम उमरए क़ज़ा के लिए तशरीफ़ लाए अब हुज़ूर के साथ एक हज़ार चार सौ की जमाअ़त थी मुसलमानों को यह अन्देशा हुआ कि कुफ़्फ़ार वफ़ाए अ़हद न करेंगे और हरमे मक्का में शहरे हराम यानी माहे ज़ीक़ादा में जंग करेंगे और मुसलमान बहालते एहराम हैं इस हालत में जंग करना गिरां है क्योंकि ज़मानए जाहिलियत से इब्तेदाए इस्लाम तक न हरम में जंग जायज़ थी न माहे हराम में न हालते एहराम में तो उन्हें तरद्दुद हुआ कि इस वक़्त जंग की इजाज़त मिलती है या नहीं इस पर यह आयत नाज़िल हुई। (फ़ा349) इसके माना या तो यह हैं कि जो कुफ़्फ़ार तुम से लड़ें या जंग की इब्तेदा करें तुम उनसे दीन की हिमायत और एज़ाज़ के लिए लड़ो यह हुक्म इब्तेदाए इस्लाम में था फिर मन्सूख़ किया गया और कुफ़्फ़ार से क़िताल करना वाजिब हुआ ख़्वाह वह इब्तेदा करें या न करें या यह माना हैं कि जो तुम से लड़ने का इरादा रखते हैं यह बात सारे ही कुफ़्फ़ार में है क्योंकि वह सब दीन के मुख़ालिफ़ और मुसलमानों के दुश्मन हैं ख़्वाह उन्होंने किसी वजह से जंग न की हो लेकिन मौक़ा पाने पर चूकने वाले नहीं यह माना भी हो सकते हैं कि जो काफ़िर मैदान में तुम्हारे मुक़ाबिल आयें और तुम से लड़ने वाले हों उनसे लड़ो इस सूरत मे ज़ईफ़ बूढ़े बच्चे मजनून अपाहिज अंधे बीमार औ़रतें वग़ैरह जो जंग की क़ुदरत नहीं रखते इस हुक्म में दाख़िल न होंगे उनको क़त्ल करना जायज़ नहीं (फ़ा350) जो जंग के क़ाबिल नहीं उनसे न लड़ो या जिन से तुम ने अ़हद किया हो या बग़ैर दावत के जंग न करो क्योंकि तरीक़ए शरअ़ यह है कि पहले कुफ़्फ़ार को इस्लाम की दावत दी जाए अगर इंकार करें तो जिज़या तलब किया जाए उससे भी मुन्किर हों तब जंग की जाए इस माना पर आयत का हुक्म बाक़ी है मन्सूख़ नहीं (तफ़सीर अहमदी) (फ़ा351) ख़्वाह हरम हो या ग़ैरे हरम (फ़ा352) मक्कए मुकर्रमा से (फ़ा353) साले गुज़श्ता चुनान्चे रोज़े फ़तहे मक्का जिन लोगों ने इस्लाम कबूल न किया उनके साथ यही किया गया (फ़ा354) फसाद से शिर्क मुराद है या मुसलमानों को मक्का मुकर्रमा में दाख़िल होने से रोकना। (फ़ा355) क्योंकि यह हुरमत हरम के ख़िलाफ़ है (फ़ा356) कि उन्होंने हरम शरीफ़ की बेहुरमती की।

(बक़िया सफ़हा 54 का) या उससे पहले अशहुरे हज में या उनसे क़ब्ल उमरा का एहराम बांधे और दिल से उसका क़स्द करे ख़्वाह वक़्ते तलबीया ज़बान से उसका ज़िक्र करे या न करे और उसके लिए अशहुरे हज में या उससे क़ब्ल तवाफ़ करे ख़्वाह उस साल में हज करे या न करे मगर हज व उमरा के दर्मियान इलमाम सही करे इस तरह कि अपने अहल की तरफ़ हलाल होकर वापस हो (3) क़िरान यह है कि हज व उमरा दोनों को एक एहराम में जमा करे वह एहराम मीक़ात से बांधा हो या उससे पहले अशहुरे हज में या उससे क़ब्ल अव्वल से हज व उमरा दोनों की नीयत हो ख़्वाह वक़्ते तलबीया ज़बान से दोनों का ज़िक्र करे या न करे पहले उमरा के अफ़आल अदा करे फिर हज के (4) तमत्तोअ़ यह है कि मीक़ात से या उससे पहले अशहुरे हज में या उससे क़ब्ल उमरा का एहराम बांधे और अशहुरे हज में उमरा करे या अक्सर तवाफ़ उसके अशहुरे हज में हों और हलाल होकर हज के लिए एहराम बांधे और उसी साल हज करे और हज व उमरा के दर्मियान अपने अहल के साथ इलमाम सही न करे (मिस्कीन व फ़तह) **मसला:** इस आयत से उलमा ने क़िरान साबित किया है (फ़ा363) हज या उमरा से बाद शुरू करने और घर से निकलने और मुहरिम हो जाने के यानी तुम्हें कोई मानेअ़ अदाए हज या उमरा से पेश आए ख़्वाह वह दुश्मन का ख़ौफ़ हो या मरज़ वग़ैरह ऐसी हालत में तुम एहराम से बाहर आ जाओ (फ़ा364) ऊंट या गाय या बकरी और यह क़ुरबानी भेजना वाजिब है। (फ़ा365) यानी हरम में जहां उसके ज़िबह का हुक्म है। **मसला:** यह क़ुरबानी बैरूने हरम नहीं हो सकती। (फ़ा366) जिससे वह सर मुंडाने के लिए मजबूर हो और सर मुंडा ले (फ़ा367) तीन दिन के (फ़ा368) छः मिस्कीनों का खाना हर मिस्कीन के लिए पौने दो सेर गेहूं (फ़ा369) यानी तमत्तोअ. करे (फ़ा370) यह क़ुरबानी तमत्तोअ. की है हज के शुक्र में वाजिब हुई ख़्वाह तमत्तोअ़ करने वाला फ़क़ीर हो। ईद अज़्हा की क़ुरबानी नहीं जो फ़क़ीर व मुसाफ़िर पर वाज़िब नहीं होती।

(बक़िया सफ़हा 55 का) होते उनके हक़ में यह आयत नाज़िल हुई और हुक्म हुआ कि तोशा लेकर चलो औरों पर बार न डालो सवाल न करो कि बेहतर तोशा परहेज़गारी है एक क़ौल यह है कि तक़वा का तोशा साथ लो जिस तरह दुनियवी सफ़र के लिए तोशा ज़रूरी है ऐसे ही सफ़रे आख़िरत के लिए परहेज़गारी का तोशा लाज़िम है (फ़ा378) यानी अ़क़्ल का मुक़्तज़ा ख़ौफ़े इलाही है जो अल्लाह से न डरे वह बे अ़क़्लों की तरह है (फ़ा379) **शाने नुज़ूल:** बाज़ मुसलमानों ने ख़्याल किया कि राहे हज में जिसने तिजारत की या ऊंट किराया पर चलाए उसका हज ही क्या इस पर यह आयत नाज़िल हुई **मसला:** जब तक तिजारत से अफ़आले हज की अदा में फ़र्क़ न आए उस वक़्त तक तिजारत मुबाह है। (फ़ा380) अ़रफ़ात एक मक़ाम का नाम है जो मौक़िफ़ है ज़हाक का क़ौल है कि हज़रत आदम और हव्वा जुदाई के बाद ९ ज़िलहिज्जा को अ़रफ़ात के मक़ाम पर जमा हुए और दोनों में तआरुफ़ हुआ इस लिए उस दिन का नाम अ़रफ़ा और मक़ाम का नाम अ़रफ़ात हुआ एक क़ौल यह है कि चूंकि उस रोज़ बन्दे अपने गुनाहों का ऐतराफ़ करते हैं इस लिए उस दिन का नाम अ़रफ़ा है। **मसला:** अ़रफ़ात में वुक़ूफ़ फ़र्ज़ है क्योंकि इफ़ाज़ा बिला वुक़ूफ़ मुतसव्विर नहीं (फ़ा381) तलबीया व तहलील व तकबीर व सना व दुआ के साथ या नमाज़े मग़रिब व इशा के साथ (फ़ा382) मशअ़रे हराम जबले क़ुज़ह है जिस पर इमाम वुक़ूफ़ करता है **मसला:** वादीए मुहस्सर के सिवा तमाम मुज़्दलफ़ा मौक़िफ़ है इसमें वुक़ूफ़ वाजिब है बे उज़्र तर्क करने से दम लाज़िम आता है और मशअ़रे हराम के पास वुक़ूफ़ अफ़ज़ल है। (फ़ा383) तरीक़े ज़िक्र व इबादत कुछ न जानते थे। (फ़ा384) क़ुरैश मुज़्दलफ़ा में ठहरे रहते थे और सब लोगों के साथ अ़रफ़ात में वुक़ूफ़ न करते जब लोग अ़रफ़ात से पलटते तो यह मुज़्दलफ़ा से पलटते और उसमें अपनी बड़ाई समझते इस आयत में उन्हें हुक्म दिया गया कि सब के साथ अ़रफ़ात में वुक़ूफ़ करें और एक साथ पलटें यही हज़रत इब्राहीम व इस्माईल अ़लैहिमस्सलाम की सुन्नत है। (फ़ा385) तरीक़े हज का मुख़्तसर बयान यह है कि हाजी 8 ज़िलहिज्जा की सुबह को मक्का मुकर्रमा से मिना की तरफ़ रवाना हो वहां अ़रफ़ा यानी ९ ज़िलहिज्जा की फ़ज्र तक ठहरे उसी रोज़ मिना से अ़रफ़ात आए बाद ज़वाल इमाम दो ख़ुतबे पढ़े यहां हाजी ज़ुहर व अ़स्र की नमाज़ इमाम के साथ ज़ुहर के वक़्त में जमा करके पढ़े इन दोनों नमाज़ों के लिए अज़ान एक होगी और तकबीरें दो और दोनों नमाज़ों के दर्मियान सुन्नते ज़ुहर के सिवा कोई नफ़्ल न पढ़ा जाए इस जमा के लिए इमामे आज़म ज़रूरी है अगर इमामे आज़म न हो या गुमराह बद मज़हब हो तो हर एक नमाज़ अ़लाहिदा अपने अपने वक़्त में पढ़ी जाए और अ़रफ़ात में ग़ुरूब तक ठहरे फिर मुज़्दलफ़ा की तरफ़ लौटे और जबले क़ुज़ह के क़रीब उतरे मुज़्दलफ़ा में मग़रिब व इशा की नमाज़ें जमा करके इशा के वक़्त पढ़े और फ़ज्र की नमाज़ ख़ूब अव्वल वक़्त अंधेरे में पढ़े वादीए मुहस्सर के सिवा तमाम मुज़्दलफ़ा और बतने अ़रफ़ा के सिवा तमाम अ़रफ़ात मौक़िफ़ है जब सुबह ख़ूब रौशन हो तो रोज़े नह़्र यानी १० ज़िलहिज्जा को मिना की तरफ़ आए और बतने वादी से जमरए उक़बा की ७ मर्तबा रमी करे फिर अगर चाहे क़ुरबानी करे फिर बाल मुंडाए या कतराए फिर अय्यामे नह़्र में से किसी दिन तवाफ़े ज़ियारत करे फिर मिना आकर तीन रोज़ इक़ामत करे और ग्यारहवीं के ज़वाल के बाद तीनों जमरों की रमी करे उस जमरा से शुरू करे जो मस्जिद के क़रीब है फिर जो उसके बाद है फिर जमरए उक़बा हर एक की सात सात मर्तबा फिर अगले रोज़ ऐसा ही करे फिर अगले रोज़ ऐसा ही फिर मक्का मुकर्रमा की तरफ़ चला आए (तफ़सील कुतुबे फ़िक़ह में मज़कूर है)

(बक़िया सफ़हा 58 का) बावजूदकि रसूल बड़े साबिर होते हैं और उनके असहाब भी लेकिन बावजूद उन इन्तेहाई मुसीबतों के वह लोग अपने दीन पर क़ायम रहे और कोई मुसीबत व बला उनके हाल को मुतग़य्यर न कर सकी (फ़ा413) इसके जवाब में उन्हें तसल्ली दी गई और यह इरशाद हुआ (फ़ा414) **शाने नुज़ूलः** यह आयत अम्र बिन जमूह के जवाब में नाज़िल हुई जो बूढ़े शख़्स थे और बड़े मालदार थे उन्होंने हुज़ूर सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से सवाल किया था कि क्या ख़र्च करें और किस पर ख़र्च करें इस आयत में उन्हें बता दिया गया कि जिस क़िस्म का और जिस क़दर माले क़लील या कसीर ख़र्च करो उसमें सवाब है और मसारिफ़ उसके यह हैं। मसलाः आयत में सद्क़ए नाफ़िला का बयान है मां बाप को ज़कात और सदक़ाते वाजिबा देना जायज़ नहीं (जुमल वग़ैरह) (फ़ा415) यह हर नेकी को आम है इन्फ़ाक़ हो या और कुछ और बाक़ी मसारिफ़ भी उसमें आ गए (फ़ा416) उसकी जज़ा अता फ़रमाएगा।

(बक़िया सफ़हा 59 का) कुफ़्र के लिए तो कोई उज़्र ही नहीं। (फ़ा424) इसमें ख़बर दी गई कि कुफ़्फ़ार मुसलमानों से हमेशा अदावत रखेंगे कभी उसके ख़िलाफ़ न होगा और जहां तक उन से मुमकिन होगा वह मुसलमानों को दीन से मुनहरिफ़ करने की सई करते रहेंगे *इनिस्तताऊ* से मुस्तफ़ाद होता है कि बेकरमेही तआला वह अपनी इस मुराद में नाकाम रहेंगे। (फ़ा425) **मसलाः** इस आयत से मालूम हुआ कि इरतेदाद से तमाम अमल बातिल हो जाते हैं आख़िरत में तो इस तरह कि उन पर कोई अज्र व सवाब नहीं और दुनिया में इस तरह कि शरीअत मुरतद के क़त्ल का हुक्म देती है उसकी औरत उस पर हलाल नहीं रहती वह अपने अक़ारिब का वरसा पाने का मुस्तहिक़ नहीं रहता उसका माल मअ़सूम नहीं रहता उसकी मदह व सना व इमदाद जायज़ नहीं। (रूहुल बयान वग़ैरह) (फ़ा425 अलीफ़) **शाने नुज़ूलः** अब्दुल्लाह बिन जहश की सरकर्दगी में जो मुजाहिदीन भेजे गए थे उनकी निस्बत बाज़ लोगों ने कहा कि चूंकि उन्हें ख़बर न थी कि यह दिन रजब का है इस लिए उस रोज़ क़िताल करना गुनाह तो न हुआ लेकिन उसका कुछ सवाब भी न मिलेगा इस पर यह आयत नाज़िल हुई और बताया गया कि उनका यह अमले जेहाद मक़बूल है और उस पर उन्हें उम्मीदवारे रहमते इलाही रहना चाहिये और यह उम्मीद क़तअन पूरी होगी (ख़ाज़िन) मसलाः *यरजू-न* से ज़ाहिर हुआ कि अमल से अज्र वाजिब नहीं होता बल्कि सवाबे दुनिया महज़ फ़ज़्ले इलाही है।

(बक़िया सफ़हा 61 का) साल तीन साल या इससे ज़्यादा अर्सा उनके पास न जाने और सोहबत तर्क करने की क़सम खा लेते थे और उन्हें परेशानी में छोड़ देते थे न वह बेवा ही थीं कि कहीं अपना ठिकाना कर लेतीं न शौहरदार कि शौहर से आराम पातीं इस्लाम ने इस ज़ुल्म को मिटाया और ऐसी क़सम खाने वालों के लिए चार महीने की मुद्दत मुअय्यन फ़रमा दी कि अगर औरत से चार महीने या उससे ज़ायद अर्सा के लिए या ग़ैर मुअय्यन मुद्दत के लिए तर्के सोहबत की क़सम खा ले जिसको ईला कहते हैं तो उसके लिए चार माह इन्तेज़ार की मोहलत है इस अर्सा में ख़ूब सोच समझ ले कि औरत को छोड़ना उसके लिए बेहतर है या रखना अगर रखना बेहतर समझे और इस मुद्दत के अन्दर रुजूअ़ करे तो निकाह बाक़ी रहेगा और क़सम का कफ़्फ़ारा लाज़िम होगा और अगर इस मुद्दत में रुजूअ़ न किया और क़सम न तोड़ी तो औरत निकाह से बाहर हो गई और उस पर तलाक़े बाइन वाक़ेअ़ हो गई मसलाः अगर मर्द सोहबत पर क़ादिर हो तो रुजूअ़ सोहबत ही से होगा और अगर किसी वजह से क़ुदरत न हो तो बाद क़ुदरत सोहबत का वादा रुजूअ़ है (तफ़सीर अहमदी) (फ़ा441) इस आयत में मुतल्लक़ा औरतों की इद्दत का बयान है जिन औरतों को उनके शौहरों ने तलाक़ दी अगर वह शौहर के पास न गई थीं और उनसे ख़लवते सहीहा न हुई थी जब तो उन पर तलाक़ की इद्दत ही नहीं है जैसा कि आयत *मा लकुम् अलैहिन्-न मिन् इद्दतिन्* में इरशाद है और जिन औरतों को ख़ुर्द साली या किब्र सिनी की वजह से हैज़ न आता हो या जो हामिला हो उनकी इद्दत का बयान सूरए तलाक़ में आएगा बाक़ी जो आज़ाद औरतें हैं यहां उनकी इद्दत व तलाक़ का बयान है कि उनकी इद्दत तीन हैज़ है।

(बक़िया सफ़हा 64 का) तो वज़अ़े हमल है जैसा कि सूरए तलाक़ में मज़कूर है यहां ग़ैर हामिला का बयान है जिसका शौहर मर जाए उसकी इद्दत चार माह दस रोज़ है इस मुद्दत में न वह निकाह करे न अपना मस्कन छोड़े न बे उज़्र तेल लगाए न ख़ुश्बू लगाए न सिंगार करे न रंगीन और रेशमी कपड़े पहने न मेंहदी लगाए न जदीद निकाह की बात चीत खुल कर करे और जो तलाक़े बाइन की इद्दत में हो उसका भी यही हुक्म है अलबत्ता जो औरत तलाक़े रजई की इद्दत में हो उसको ज़ीनत और सिंगार करना मुस्तहब है।

(बक़िया सफ़हा 60 का) ख़सलत यह है कि ज़मानए जाहिलियत में भी मैंने कभी बुत की पूजा नहीं की, क्योंकि मैं जानता था कि यह पत्थर है न नफ़ा दे सके न ज़रर तीसरी ख़सलत यह है कि कभी मैं ज़िना में मुबतला न हुआ कि इसको बेग़ैरती समझता था चौथी ख़सलत यह कि मैंने कभी झूट नहीं बोला क्योंकि मैं इसको कमीनापन ख़्याल करता था मसलाः शतरन्ज ताश वग़ैरह हार जीत के खेल और जिन पर बाज़ी लगाई जाए सब जूए में दाख़िल और हराम हैं (रूहुल बयान) (फ़ा427) **शाने नुजूलः** सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मुसलमानों को सदक़ा देने की रग़बत दिलाई तो आपसे दरियाफ़्त किया गया कि मिक़दार इरशाद फ़रमायें कितना माल राहे ख़ुदा में दिया जाए इस पर यह आयत नाज़िल हुई (ख़ाज़िन) (फ़ा428) यानी जितना तुम्हारी हाजत से ज़ायद हो। इब्तेदाए इस्लाम में हाजत से ज़ायद माल का ख़र्च करना फ़र्ज़ था सहाबा किराम अपने माल में से अपनी ज़रूरत की क़दर लेकर बाक़ी सब राहे ख़ुदा में तसद्दुक़ कर देते थे यह हुक्म आयते ज़कात से मन्सूख़ हो गया। (फ़ा429) कि जितना तुम्हारी दुनियवी ज़रूरत के लिए काफ़ी हो वह लेकर बाक़ी सब अपने नफ़ए आख़िरत के लिए ख़ैरात कर दो (ख़ाज़िन) (फ़ा430) कि उनके अमवाल को अपने माल से मिलाने का क्या हुक्म है **शाने नुजूलः** आयत *इन्नल्लज़ी-न या कुलू-न अम्वालल् यतामा ज़ुल्मन्* के नुजूल के बाद लोगों ने यतीमों के माल जुदा कर दिये और उनका खाना पीना अलाहिदा कर दिया इसमें यह सूरतें भी पेश आईं कि जो खाना यतीम के लिए पकाया और उस में से कुछ बच रहा वह ख़राब हो गया और किसी के काम न आया इसमें यतीमों का नक़सान हुआ यह सूरतें देखकर हज़रत अब्दुल्लाह बिन रवाहा ने हुज़ूर सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से अर्ज़ किया कि अगर यतीम के माल की हिफ़ाज़त की नज़र से उसका खाना उसके औलिया अपने खाने के साथ मिला लें तो उसका क्या हुक्म है इस पर यह आयत नाज़िल हुई और यतीमों के फ़ायदे के लिए मिलाने की इजाज़त दी गई (फ़ा431) **शाने नुजूलः** हज़रत मुरसद ग़नवी एक बहादुर शख़्स थे सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उन्हें मक्का मुकर्रमा रवाना फ़रमाया ताकि वहां से तदबीर के साथ मुसलमानों को निकाल लायें वहां अनाक़ नामी एक मुशरिका औरत थी जो ज़मानए जाहिलियत में उनके साथ मुहब्बत रखती थी हसीन और मालदार थी जब उसको उनकी आमद की ख़बर हुई तो वह आपके पास आई और तालिबे विसाल हुई आपने बख़ौफ़े इलाही उससे एअ्राज़ किया और फ़रमाया कि इस्लाम इसकी इजाज़त नहीं देता तब उसने निकाह की दरख़्वास्त की आपने फ़रमाया कि यह भी रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की इजाज़त पर मौक़ूफ़ है अपने काम से फ़ारिग़ होकर जब आप ख़िदमते अक़दस में हाज़िर हुए तो हाल अर्ज़ करके निकाह की बाबत दरियाफ़्त किया इस पर यह आयत नाज़िल हुई (तफ़सीर अहमदी) बाज़ उलमा ने फ़रमाया जो कोई नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ कुफ़्र करे वह मुशरिक है ख़्वाह अल्लाह को वाहिद ही कहता हो और तौहीद का मुद्दई हो (ख़ाज़िन) (फ़ा431) **शाने नुजूलः** एक रोज़ हज़रत अब्दुल्लाह बिन रवाहा ने किसी ख़ता पर अपनी बांदी के तमांचा मारा फिर ख़िदमते अक़दस में हाज़िर होकर उसका ज़िक्र किया सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उसका हाल दरियाफ़्त किया अर्ज़ किया कि वह अल्लाह तआला की वहदानियत और हुज़ूर की रिसालत की गवाही देती है रमज़ान के रोज़े रखती है ख़ूब वुज़ू करती और नमाज़ पढ़ती है हुज़ूर ने फ़रमाया वह मोमिना है आपने अर्ज़ किया तो उसकी क़सम जिसने आपको सच्चा नबी बनाकर मबऊस फ़रमाया मैं उसको आज़ाद करके उसके साथ निकाह करूंगा और आपने ऐसा ही किया इस पर लोगों ने तअ्ना ज़नी की कि तुमने एक सियाह फ़ाम बांदी के साथ निकाह किया बावजूदकि फ़लां मुशरिका हुर्रा औरत तुम्हारे लिए हाज़िर है वह हसीन भी है मालदार भी है इस पर नाज़िल हुआ *व ल-अ-मतुम् मुअ्मि-नतुन्* यानी मुसलमान बांदी मुशरिका से बेहतर है ख़्वाह वह मुशरिका आज़ाद हो और हुस्न व माल की वजह से अच्छी मालूम होती हो (फ़ा433) यह औरत के औलिया को ख़िताब है। मसलाः मुसलमान औरत का निकाह मुशरिक व काफ़िर के साथ बातिल व हराम है। (फ़ा434) तो उनसे इज्तेनाब ज़रूरी और उनके साथ दोस्ती व क़राबत ना-रवा। (फ़ा435) **शाने नुजूलः** अरब के लोग यहूद व मजूस की तरह हायज़ा औरतों से कमाले नफ़रत करते थे साथ खाना पीना एक मकान में रहना गवारा न था बल्कि शिद्दत यहां तक पहुंच गई थी कि उनकी तरफ़ देखना और उनसे कलाम करना भी हराम समझते थे और नसारा उसके बर-अक्स हैज़ के अय्याम में औरतों के साथ बड़ी मुहब्बत से मशग़ूल होते थे और इख़्तेलात में बहुत मुबालग़ा करते थे मुसलमानों ने हुज़ूर से हैज़ का हुक्म दरियाफ़्त किया इस पर यह आयत नाज़िल हुई और इफ़रात व तफ़रीत की राहें छोड़ कर एतेदाल की तालीम फ़रमाई गई और बता दिया गया कि हालते हैज़ में औरतों से मुजामअ़त ममनूअ़ है।

(बक़िया सफ़हा 62 का) राज़ी न हुईं तब साबित ने कहा कि मैं ने उनको एक बाग़ दिया है अगर यह मेरे पास रहना गवारा नहीं करतीं और मुझ से अलाहिदगी चाहती हैं तो वह बाग़ मुझे वापस करें मैं इनको आज़ाद कर दूं जमीला ने इसको मन्जूर किया साबित ने बाग़ ले लिया और तलाक़ दे दी इस तरह की तलाक़ को ख़ुलअ़ कहते हैं **मसलाः** ख़ुलअ़ तलाक़े बाइन होता है **मसलाः** ख़ुलअ़ में लफ़्ज़े ख़ुलअ़ का ज़िक्र ज़रूरी है **मसलाः** अगर जुदाई की तलबगार औरत हो तो ख़ुलअ़ में मिक़दारे महर से ज़ायद लेना मकरूह है और अगर औरत की तरफ़ से नुशूज़ न हो मर्द ही अलाहिदगी चाहे तो मर्द को तलाक़ के एवज़ माल लेना मुतलक़न मकरूह है। (फ़ा453) **मसलाः** तीन तलाक़ों के बाद औरत शौहर पर बहुरमते मुग़ल्लेज़ा हराम हो जाती है अब न उससे रुजूअ़ हो सकता है न दोबारा निकाह जब तक कि हलाला न हो यानी बादे इद्दत दूसरे से निकाह करे और वह बादे सोहबत तलाक़ दे फिर इद्दत गुज़रे (फ़ा454) दोबारा निकाह कर लें।

(बक़िया सफ़हा 67 का) हज़रत जिबरील अ़लैहिस्सलाम ने उसी आ़लिम की आवाज़ में या शमवील कह कर पुकारा आप आ़लिम के पास गए और फ़रमाया कि आपने मुझे पुकारा है आ़लिम ने बईं ख़्याल कि इंकार करने से कहीं आप डर न जायें यह कह दिया कि फ़रज़न्द तुम सो जाओ फिर दोबारा हज़रत जिबरील ने उसी तरह पुकारा और हज़रत शमवील अ़लैहिस्सलाम आ़लिम के पास गए आ़लिम ने कहा कि ऐ फ़रज़न्द अब अगर मैं तुम्हें फिर पुकारूं तो तुम जवाब न देना तीसरी मर्तबा में हज़रत जिबरील अ़लैहिस्सलाम ज़ाहिर हो गए और उन्होंने बशारत दी कि अल्लाह तआ़ला ने आपको नबुव्वत का मन्सब अ़ता फ़रमाया, आप अपनी क़ौम की तरफ़ जाइये और अपने रब के अहकाम पहुंचाइये जब आप क़ौम की तरफ़ तशरीफ़ लाए उन्होंने तकज़ीब की और कहा कि आप इतनी जल्दी नबी बन गए अच्छा अगर आप नबी हैं तो हमारे लिए एक बादशाह क़ायम कीजिये (ख़ाज़िन वग़ैरह) (फ़ा495) कि क़ौमे जालूत ने हमारी क़ौम के लोगों को उनके वतन से निकाला उनकी औलाद को क़त्ल व ग़ारत किया चार सौ चालीस शाही ख़ानदान के फ़रज़न्दों को गिरिफ़्तार किया जब हालत यहां तक पहुंच चुकी तो अब हमें जिहाद से क्या चीज़ मानेअ़ हो सकती है तब नबीयुल्लाह की दुआ़ से अल्लाह तआ़ला ने उनकी दरख़्वास्त क़बूल फ़रमाई और उनके लिए एक बादशाह मुक़र्रर किया और जिहाद फ़र्ज़ फ़रमाया। (ख़ाज़िन) (फ़ा496) जिनकी तादाद अहले बदर के बराबर तीन सौ तेरह थी। (फ़ा497) तालूत बुनियामीन बिन हज़रत याक़ूब अ़लैहिस्सलाम की औलाद से हैं आपका नाम तूले क़ामत की वजह से तालूत है हज़रत शमवील अ़लैहिस्सलाम को अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से एक अ़सा मिला था और बताया गया था कि जो शख़्स तुम्हारी क़ौम का बादशाह होगा उस का क़द इस अ़सा के बराबर होगा आपने उस अ़सा से तालूत का क़द नाप कर फ़रमाया कि मैं तुमको बहुक्मे इलाही बनी इसराईल का बादशाह मुक़र्रर करता हूं और बनी इसराईल से फ़रमाया कि अल्लाह तआ़ला ने तालूत को तुम्हारा बादशाह बना कर भेजा है (ख़ाज़िन व जुमल) (फ़ा498) बनी इसराईल के सरदारों ने अपने नबी हज़रत शमवील अ़लैहिस्सलाम से कहा कि नबुव्वत तो लावा बिन याक़ूब अ़लैस्सिलाम की औलाद में चली आती है और सल्तनत यहूद बिन याक़ूब की औलाद में और तालूत उन दोनों ख़ानदानों में से नहीं हैं तो बादशाह कैसे हो सकते हैं (फ़ा499) वह ग़रीब शख़्स हैं बादशाह को साहबे माल होना चाहिये (फ़ा500) यानी सल्तनत वरसा नहीं कि किसी नस्ल व ख़ानदान के साथ ख़ास हो यह महज़ फ़ज़्ले इलाही पर है। इस में शीआ़ का रद है जिनका एतेक़ाद यह है कि इमामत विरासत है। (फ़ा501) यानी नस्ल व दौलत पर सल्तनत का इस्तेहक़ाक़ नहीं इल्म व क़ुव्वत सल्तनत के लिए बड़ी मुईन हैं और तालूत उस ज़माना में तमाम बनी इसराईल से ज़्यादा इल्म रखते थे और सब से जसीम और तवाना थे।

(बक़िया सफ़हा 68 का) और गन्दे मक़ामात में रखा और उसकी बे हुरमती की और इन गुस्ताख़ियों की वजह से वह तरह तरह के अमराज़ व मसायब में मुबतला हुए उनकी पांच बस्तियां हलाक हुईं और उन्हें यक़ीन हुआ कि ताबूत की इहानत उनकी बरबादी का बायस है तो उन्होंने ताबूत एक बैल गाड़ी पर रख कर बैलों को छोड़ दिया और फ़रिश्ते उसको बनी इसराईल के सामने तालूत के पास लाए और उस ताबूत का आना बनी इसराईल के लिए तालूत की बादशाही की निशानी क़रार दिया गया था बनी इसराईल यह देख कर उसकी बादशाही के मुक़िर हुए और बे दरंग जिहाद के लिए आमादा हो गए क्योंकि ताबूत पाकर उन्हें अपनी फ़तह का यक़ीन हो गया तालूत ने बनी इसराईल में से सत्तर हज़ार जवान मुन्तख़ब किये जिनमें हज़रत दाऊद अ़लैहिस्सलाम भी थे (जलालैन व जुमल व ख़ाज़िन व मदारिक वग़ैरह) **फ़ायदाः** इससे मालूम हुआ कि बुज़ुर्गों के तबर्रुकात का एज़ाज़ व एहतेराम लाज़िम है उनकी बरकत से दुआयें क़बूल होती और हाजतें रवा होती हैं और तबर्रुकात की बेहुरमती गुमराहों का तरीक़ा और बरबादी का सबब है। **फ़ायदाः** ताबूत में अम्बिया की जो तस्वीरें थीं वह किसी आदमी की बनाई हुई न थीं अल्लाह की तरफ़ से आई थीं। (फ़ा505) यानी बैतुल मक़दिस से दुश्मन की तरफ़ रवाना हुआ वह वक़्त निहायत शिद्दत की गर्मी का था लश्करियों ने तालूत से इसकी शिकायत की और पानी के तलबगार हुए। (फ़ा506) यह इम्तेहान मुक़र्रर फ़रमाया गया था कि शिद्दते तिश्नगी के वक़्त जो इताअ़ते हुक्म पर मुस्तक़िल रहा वह आईन्दा भी मुस्तक़िल रहेगा और सख़्तियों का मुक़ाबला कर सकेगा और जो इस वक़्त अपनी ख़्वाहिश से मग़लूब हो और नाफ़रमानी करे वह आईन्दा सख़्तियों को क्या बरदाश्त करेगा। (फ़ा507) जिनकी तादाद तीन सौ तेरह थी उन्होंने सब्र किया और एक चुल्लू उनके और उनके जानवरों के लिए काफ़ी हो गया और उनके क़ल्ब व ईमान को क़ुव्वत हुई और नहर से सलामत गुज़र गए और जिन्होंने ख़ूब पिया था उनके होंट सियाह हो गए तिश्नगी और बढ़ गई और हिम्मत हार गए (फ़ा508) उनकी मदद फ़रमाता है और उसी की मदद काम आती है।

تِلْكَ الرُّسُلُ فَضَّلْنَا بَعْضَهُمْ عَلٰى بَعْضٍ ۘ مِنْهُمْ مَّنْ كَلَّمَ اللّٰهُ وَرَفَعَ بَعْضَهُمْ دَرَجٰتٍ ؕ وَاٰتَيْنَا عِيْسَى ابْنَ مَرْيَمَ الْبَيِّنٰتِ وَاَيَّدْنٰهُ
بِرُوْحِ الْقُدُسِ ؕ وَلَوْ شَآءَ اللّٰهُ مَا اقْتَتَلَ الَّذِيْنَ مِنْ ۢ بَعْدِهِمْ مِّنْ ۢ بَعْدِ مَا جَآءَتْهُمُ الْبَيِّنٰتُ وَلٰكِنِ اخْتَلَفُوْا فَمِنْهُمْ مَّنْ اٰمَنَ وَمِنْهُمْ مَّنْ كَفَرَ ؕ
وَلَوْ شَآءَ اللّٰهُ مَا اقْتَتَلُوْا ۟ وَلٰكِنَّ اللّٰهَ يَفْعَلُ مَا يُرِيْدُ ۝ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اَنْفِقُوْا مِمَّا رَزَقْنٰكُمْ مِّنْ قَبْلِ اَنْ يَّاْتِىَ يَوْمٌ لَّا بَيْعٌ فِيْهِ وَلَا خُلَّةٌ وَّلَا شَفَاعَةٌ ؕ
وَالْكٰفِرُوْنَ هُمُ الظّٰلِمُوْنَ ۝ اَللّٰهُ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۚ اَلْحَىُّ الْقَيُّوْمُ ۚ لَا تَاْخُذُهٗ سِنَةٌ وَّلَا نَوْمٌ ؕ لَهٗ مَا فِى السَّمٰوٰتِ وَمَا فِى الْاَرْضِ ؕ مَنْ ذَا الَّذِىْ يَشْفَعُ
عِنْدَهٗٓ اِلَّا بِاِذْنِهٖ ؕ يَعْلَمُ مَا بَيْنَ اَيْدِيْهِمْ وَمَا خَلْفَهُمْ ۚ وَلَا يُحِيْطُوْنَ بِشَىْءٍ مِّنْ عِلْمِهٖٓ اِلَّا بِمَا شَآءَ ۚ وَسِعَ كُرْسِيُّهُ السَّمٰوٰتِ

तिल्करुसुलु फ़ज़्ज़ल्ना बअ्–ज़हुम् अ़ला बअ्ज़िन् मिन्हुम् मन् कल्–ल–मल्लाहु व र–फ़–अ़ बअ्–ज़हुम् द–रजातिन् व आतैना ई़सब्–न मर्यमल्–बय्यिनाति व अय्यद्नाहु बि रूहिल्–क़ुदुसि व लौ शा–अल्लाहु मक़्त–त–लल्लज़ी–न मिम्बअ्दि–हिम् मिम्बअ्दि मा जा–अत्–हुमुल्–बय्यिनातु व लाकिनिख़्त–लफ़ू फ़–मिन्हुम् मन् आ–म–न व मिन्हुम् मन् क–फ़र व लौ शा–अल्लाहु मक़्त–तलू व लाकिन्नल्ला–ह यफ़्अ़लु मा युरीद(253)या अय्युहल्लज़ी–न आ–मनू अन्फ़िक़ू मिम्मा र–ज़क़्ना–कुम् मिन् क़ब्लि अंय्यअ्ति–य यौमुल्–ला बैअुन् फ़ीहि व ला ख़ुल्लतुंव्–वला शफ़ा–अ़तुन् वल्काफ़िरू–न हुमुज़्ज़ालिमून(254)अल्लाहु ला इला–ह इल्ला हु–व अल्हय्युल् क़य्यूमु ला तअ्ख़ुज़ुहू सि–नतुंव्–व ला नौमुन् लहू मा फ़िस्समावाति व मा फ़िल्अर्ज़ि मन् ज़ल्लज़ी यश्फ़अु अ़िन्दहू इल्ला बि–इज़्निही यअ्–लमु मा बै–न ऐदीहिम् व मा ख़ल्फ़हुम् व ला युहीतू–न बिशैइम् मिन् अ़िल्मिही इल्ला बिमा शा–अ वसि–अ़ कुर्सिय्यु–हुस्–समावाति

यह रसूल हैं कि हमने उनमें एक को दूसरे पर अफ़ज़ल किया (फ़ा514) उनमें किसी से अल्लाह ने कलाम फ़रमाया (फ़ा515) और कोई वह है जिसे सब पर दर्जो बुलन्द किया (फ़ा516) और हमने मरयम के बेटे ईसा को खुली निशानियाँ दीं (फ़ा517) और पाकीज़ा रूह से उसकी मदद की(फ़ा518) और अल्लाह चाहता तो उनके बाद वाले आपस में न लड़ते बाद इसके कि उनके पास खुली निशानियां आ चुकीं (फ़ा519) लेकिन वह तो मुख़्तलिफ़ हो गए उनमें कोई ईमान पर रहा और कोई काफ़िर हो गया(फ़ा520) और अल्लाह चाहता तो वह न लड़ते मगर अल्लाह जो चाहे करे।(253) (रुकूअ़ 1) (फ़ा521) ऐ ईमान वालो अल्लाह की राह में हमारे दिये में से ख़र्च करो वह दिन आने से पहले जिसमें न ख़रीद फ़रोख़्त है न काफ़िरों के लिए दोस्ती न शफ़ाअ़त और काफ़िर ख़ुद ही ज़ालिम हैं।(254)(फ़ा522) अल्लाह है जिसके सिवा कोई मअ़बूद नहीं(फ़ा523) वह आप ज़िन्दा और औरों का क़ाइम रखने वाला।(फ़ा524) उसे न ऊँघ आए न नींद। (फ़ा525) उसी का है जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ ज़मीन में (फ़ा526) वह कौन है जो उसके यहां सिफ़ारिश करे बे उसके हुक्म के (फ़ा527) जानता है जो कुछ उनके आगे है और जो कुछ उनके पीछे (फ़ा528) और वह नहीं पाते उसके इल्म में से मगर जितना वह चाहे (फ़ा529) उसकी कुर्सी में समाए हुए हैं आसमान

(फ़ा514) इस से मालूम हुआ कि अम्बिया अ़लैहिमुस्सलाम के मरातिब जुदागाना हैं बाज़ हज़रात से बाज़ अफ़ज़ल हैं अगरचे नबुव्वत में कोई तफ़रक़ा नहीं वस्फ़े नबुव्वत में सब शरीक यक-दिगर हैं मगर ख़साइस व कमालात में दर्जे मुतफ़ावित हैं यही आयत का मज़मून है और इसी पर तमाम उम्मत का इजमाअ़ है (ख़ाज़िन व मदारिक) (फ़ा515) यानी बे वास्ता जैसे कि हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम को तूर पर कलाम से मुशर्रफ़ फ़रमाया और सय्यदे अम्बिया सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को मेअ़राज में। (जुमल) (फ़ा516) वह हुज़ूर पुरनूर सय्यदे अम्बिया मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम हैं कि आपको ब-दरजाते कसीरा तमाम अम्बिया अ़लैहिमुस्सलाम पर अफ़ज़ल किया इस पर तमाम उम्मत का इजमाअ़ है और ब-कसरत अहादीस से साबित है आयत में हुज़ूर की इस रिफ़अ़ते मर्तबत का बयान फ़रमाया गया और नामे मुबारक की तसरीह न की गई इससे भी हुज़ूर अक़दस अ़लैहिस्सलातु वस्सलाम के उलूए शान का इज़्हार मक़सूद है कि ज़ाते वाला की यह शान है कि जब तमाम अम्बिया पर फ़ज़ीलत का बयान किया जाए तो सिवाए ज़ाते अक़दस के यह वस्फ़ किसी पर सादिक़ ही न आए और कोई इश्तेबाह राह न पा सके। हुज़ूर अ़लैहिस्सलातु वस्सलाम के वह ख़साइस व कमालात जिन में आप तमाम अम्बिया पर फ़ायक़ व अफ़ज़ल हैं और आपका कोई शरीक नहीं बेशुमार हैं कि क़ुरआने करीम में यह इरशाद हुआ, दर्जो बुलन्द किया **(बक़िया सफ़हा 104 पर)**

وَالْاَرْضَ ۚ وَلَا يَـُٔوْدُهٗ حِفْظُهُمَا ۚ وَهُوَ الْعَلِيُّ الْعَظِيْمُ ﴿٢٥٥﴾ لَآ اِكْرَاهَ فِي الدِّيْنِ ۙ قَدْ تَّبَيَّنَ الرُّشْدُ مِنَ الْغَيِّ ۚ فَمَنْ يَّكْفُرْ بِالطَّاغُوْتِ وَيُؤْمِنْۢ بِاللّٰهِ فَقَدِ اسْتَمْسَكَ بِالْعُرْوَةِ الْوُثْقٰى ۗ لَا انْفِصَامَ لَهَا ۗ وَاللّٰهُ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ﴿٢٥٦﴾ اَللّٰهُ وَلِيُّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا ۙ يُخْرِجُهُمْ مِّنَ الظُّلُمٰتِ اِلَى النُّوْرِ ۗ وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اَوْلِيٰٓــُٔهُمُ الطَّاغُوْتُ ۙ يُخْرِجُوْنَهُمْ مِّنَ النُّوْرِ اِلَى الظُّلُمٰتِ ۗ اُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ النَّارِ ۚ هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ﴿٢٥٧﴾ اَلَمْ تَرَ اِلَى الَّذِيْ حَآجَّ اِبْرٰهٖمَ فِيْ رَبِّهٖٓ اَنْ اٰتٰىهُ اللّٰهُ الْمُلْكَ ۘ اِذْ قَالَ اِبْرٰهٖمُ رَبِّيَ الَّذِيْ يُحْيٖ وَيُمِيْتُ ۙ قَالَ اَنَا اُحْيٖ وَاُمِيْتُ ۗ قَالَ اِبْرٰهٖمُ فَاِنَّ اللّٰهَ يَاْتِيْ بِالشَّمْسِ مِنَ الْمَشْرِقِ فَاْتِ بِهَا مِنَ الْمَغْرِبِ فَبُهِتَ الَّذِيْ كَفَرَ ۗ وَاللّٰهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الظّٰلِمِيْنَ ﴿٢٥٨﴾

वल्अर्ज़ व ला यऊदुहू हिफ़्ज़ुहुमा व हुवल् अ़लिय्युल्–अ़ज़ीम(255)ला इक्रा–ह फ़िद्दीनि क़त्तबय्य–नर्रुश्दु मिन–ल्ग़य्यि फ़–मंय्यक्फ़ुर् बित्ताग़ूति व युअ्मिम्–बिल्लाहि फ़–क़दिस्तम्–स–क बिल्–उ़र्–वतिल्–वुस्क़ा लन्फ़िसा–म लहा वल्लाहु समीअ़ुन् अ़लीम(256)अल्लाहु वलिय्युल्लज़ी–न आ–मनू युख़्रिजुहुम् मिनज़्ज़ुलुमाति इलन्नूरि वल्लज़ी–न क–फ़रू औलिया–उ हुमुत्ताग़ूतु युख़्रिजू–नहुम् मिनन्नूरि इलज़्ज़ुलुमाति उलाइ–क अस्हा–बुन्नारि हुम् फ़ीहा ख़ालिदून(257)अ–लम् त–र इलल्लज़ी हाज्–ज इब्राही–म फ़ी रब्बिही अन् आता–हुल्लाहुल्–मुल्क इज् क़ा–ल इब्राहीमु रब्बियल्लज़ी युह्यी व युमीतु क़ा–ल अना उह्यी व उमीतु क़ा–ल इब्राहीमु फ़इन्नल्ला–ह यअ्ती बिश्शम्सि मिनल्मश्रिक़ि फ़अ्ति बिहा मिनल्–मग़्रिबि फ़बुहितल्लज़ी क–फ़र वल्लाहु ला यह्दिल्–क़ौमज़्ज़ालिमीन(258)

और ज़मीन (फ़ा530) और उसे भारी नहीं उनकी निगहबानी और वही है बुलन्द बड़ाई वाला।(255)(फ़ा531) कुछ ज़बरदस्ती नहीं (फ़ा532) दीन में, बेशक ख़ूब जुदा हो गई है नेक राह गुमराही से, तो जो शैतान को न माने और अल्लाह पर ईमान लाए (फ़ा533) उसने बड़ी महकम गिरह थामी जिसे कभी खुलना नहीं और अल्लाह सुनता जानता है।(256) अल्लाह वाली है मुसलमानों का, उन्हें अंधेरियों से (फ़ा534) नूर की तरफ़ निकालता है और काफ़िरों के हिमायती शैतान हैं, वह उन्हें नूर से अंधेरियों की तरफ़ निकालते हैं, यही लोग दोज़ख़ वाले हैं इन्हें हमेशा उसमें रहना। (257)(रुकूअ़ 2) ऐ महबूब क्या तुमने न देखा था उसे जो इब्राहीम से झगड़ा उसके रब के बारे में, इस पर (फ़ा535) कि अल्लाह ने उसे बादशाही दी(फ़ा536) जबकि इब्राहीम ने कहा कि मेरा रब वह है कि जिलाता और मारता है(फ़ा537) बोला मैं जिलाता और मारता हूं (फ़ा538) इब्राहीम ने फ़रमाया तो अल्लाह सूरज को लाता है पूरब से तू उसको पच्छिम से ले आ (फ़ा539) तो होश उड़ गए काफ़िर के और अल्लाह राह नहीं दिखाता ज़ालिमों को।(258)

(फ़ा530) इस में उसकी अ़ज़मते शान का इज़हार है और कुर्सी से या इल्म व क़ुदरत मुराद है या अ़र्श या वह जो अ़र्श के नीचे और सातों आसमानों के ऊपर है और मुमकिन है कि यह वही हो जो फ़लकुल बुरूज के नाम से मशहूर है। (फ़ा531)इस आयत में इलाहियात के आला मसायल का बयान है और इससे साबित है कि अल्लाह तआ़ला मौजूद है, इलाहियत में वाहिद है हयात के साथ मुत्तसिफ़ है वाजिबुल वुजूद अपने मा-सिवा का मूजिद है तहय्युज़ व हुलूल से मुनज़्ज़ा और तग़य्युर और फ़ुतूर से मुबर्रा है न किसी को उससे मुशाबहत न अ़वारिज़े मख़्लूक़ को उस तक रसाई, मुल्क व मलकूत का मालिक उसूल व फ़ुरूअ़ का मुब्देअ़ क़वी गिरिफ़्त वाला जिस के हुज़ूर सिवाए माज़ून के कोई शफ़ाअ़त के लिए लब न हिला सके तमाम अशिया का जानने वाला जली का भी और ख़फ़ी का भी कुल्ली का भी और जुज़ई का भी वासेउल मिल्क वल क़ुदरते इदराक व वहम व फ़हम से बरतर व बाला। (फ़ा532) सिफ़ाते इलाहिया के बाद *ला-इक्रा-ह फ़िद्दीन* फ़रमाने में यह इशआ़र है कि अब आ़क़िल के लिए क़बूले हक़ में तअम्मुल की कोई वजह बाक़ी न रही (फ़ा533) इसमें इशारा है कि काफ़िर के लिए अव्वल अपने कुफ़्र से तौबा व बेज़ारी ज़रूर है उसके बाद ईमान लाना सही होता है। (फ़ा534) कुफ़्र व ज़लालत की ईमान व हिदायत की रौशनी और (फ़ा535) ग़ुरूर व तकब्बुर पर (फ़ा536) और तमाम ज़मीन की सल्तनत अ़ता फ़रमाई इस पर उसने बजाए शुक्र व ताअ़त के तकब्बुर व तजब्बुर किया और रुबूबियत का दावा करने लगा उसका नाम नमरूद बिन कनआ़न था सबसे पहले सर पर ताज रखने वाला यही है जब हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम ने उसको ख़ुदा परस्ती की दावत दी ख़्वाह आग में डाले जाने से क़ब्ल या उसके बाद तो वह कहने लगा कि तुम्हारा रब कौन है जिसकी तरफ़ तुम हमें बुलाते हो (फ़ा537) यानी अजसाम में मौत व हयात पैदा करता है एक ख़ुदा ना-शनास के लिए यह बेहतरीन हिदायत थी और उसमें बताया गया था कि ख़ुद तेरी ज़िन्दगी उसके वुजूद की शाहिद है कि तू एक बेजान नुतफ़ा था जिसने उसको इंसानी सूरत दी और हयात **(बक़िया सफ़हा 103 पर)**

اَوْ كَالَّذِىْ مَرَّ عَلٰى قَرْيَةٍ وَّهِىَ خَاوِيَةٌ عَلٰى عُرُوْشِهَا ۚ قَالَ اَنّٰى يُحْىٖ هٰذِهِ اللّٰهُ بَعْدَ مَوْتِهَا ۚ فَاَمَاتَهُ اللّٰهُ مِائَةَ عَامٍ ثُمَّ بَعَثَهٗ ؕ قَالَ كَمْ لَبِثْتَ ؕ
قَالَ لَبِثْتُ يَوْمًا اَوْ بَعْضَ يَوْمٍ ؕ قَالَ بَلْ لَّبِثْتَ مِائَةَ عَامٍ فَانْظُرْ اِلٰى طَعَامِكَ وَشَرَابِكَ لَمْ يَتَسَنَّهْ ۚ وَانْظُرْ اِلٰى حِمَارِكَ وَلِنَجْعَلَكَ اٰيَةً
لِّلنَّاسِ وَانْظُرْ اِلَى الْعِظَامِ كَيْفَ نُنْشِزُهَا ثُمَّ نَكْسُوْهَا لَحْمًا ؕ فَلَمَّا تَبَيَّنَ لَهٗ ۙ قَالَ اَعْلَمُ اَنَّ اللّٰهَ عَلٰى كُلِّ شَىْءٍ قَدِيْرٌ ۝ وَاِذْ قَالَ
اِبْرٰهٖمُ رَبِّ اَرِنِىْ كَيْفَ تُحْىِ الْمَوْتٰى ؕ قَالَ اَوَلَمْ تُؤْمِنْ ؕ قَالَ بَلٰى وَلٰكِنْ لِّيَطْمَئِنَّ قَلْبِىْ ؕ قَالَ فَخُذْ اَرْبَعَةً مِّنَ الطَّيْرِ فَصُرْهُنَّ اِلَيْكَ
ثُمَّ اجْعَلْ عَلٰى كُلِّ جَبَلٍ مِّنْهُنَّ جُزْءًا ثُمَّ ادْعُهُنَّ يَاْتِيْنَكَ سَعْيًا ؕ وَاعْلَمْ اَنَّ اللّٰهَ عَزِيْزٌ حَكِيْمٌ ۝ مَثَلُ الَّذِيْنَ يُنْفِقُوْنَ

औ कल्लज़ी मर्-र अ़ला क़र्-यतिंव्-व हि-य ख़ावि-यतुन् अ़ला अुरूशिहा क़ा-ल अन्ना युह्यी हाज़िहिल्लाहु बअ्-द मौतिहा फ़-अमा-तहुल्लाहु मि-अ-त आ़मिन् सुम्-म ब-अ़-सहू क़ा-ल कम् लबिस्-त क़ा-ल लबिस्तु यौमन् औ बअ्-ज यौमि न् क़ा-ल बल्लबिस्-त मि-अ-त आ़मिन् फ़न्ज़ुर् इला तआ़मि-क व शराबि-क लम् य-त-सन्नह वन्ज़ुर् इला ह़िमारि-क व लि-नज्अ़-ल-क आ-य- तल्लिन्नासि वन्ज़ुर् इलल्अ़िज़ामि कै-फ़ नुन्शिजुहा सुम्-म नक्सूहा लह़्मन् फ़ लम्मा तबय्य-न लहू क़ा-ल अअ्-लमु अन्नल्ला-ह अ़ला कुल्लि शैइन् क़दीर(259)व इज़् क़ा-ल इब्राहीमु रब्बि अरिनी कै-फ़ तुह़्यिल्मौता क़ा-ल अ-व-लम् तुअ्मिन् क़ा-ल बला व लाकिल्लियत् मइन्-न क़ल्बी क़ा-ल फ़ख़ुज़् अर्-ब-अ-तम् मिनत्तैरि फ़सुर्हुन्-न इलै-क सुम्मज्अ़ल् अ़ला कुल्लि ज-बलिम् मिन्हुन्-न जुज़्अन् सुम्मदअुहुन्-न यअ्ती-न-क सअ्यन् वअ्-लम् अन्नल्ला-ह अ़ज़ीज़ुन् ह़कीम(260)म-सलुल्लज़ी-न युन्फ़िक़ू-न

या उसकी तरह जो गुज़रा एक बस्ती पर (फ़ा540) और वह ढई पड़ी थी अपनी छतों पर (फ़ा541) बोला इसे क्योंकर जिलाएगा अल्लाह इसकी मौत के बाद, तो अल्लाह ने उसे मुर्दा रखा सौ बरस फिर ज़िन्दा कर दिया फ़रमाया तू यहां कितना ठहरा अ़र्ज़ की दिन भर ठहरा हूंगा या कुछ कम, फ़रमाया नहीं बल्कि तुझे सौ बरस गुज़र गए और अपने खाने और पानी को देख कि अब तक बू न लाया और अपने गधे को देख कि जिसकी हड्डियां तक सलामत न रहीं और यह इस लिए कि तुझे हम लोगों के वास्ते निशानी करें और इन हड्डियों को देख क्योंकर हम इन्हें उठान देते फिर इन्हें गोश्त पहनाते हैं जब यह मुआमला उस पर ज़ाहिर हो गया बोला मैं ख़ूब जानता हूं कि अल्लाह सब कुछ कर सकता है(259) और जब अ़र्ज़ की इब्राहीम ने (फ़ा542) ऐ रब मेरे मुझे दिखा दे तू क्यों कर मुर्दे जिलाएगा। फ़रमाया क्या तुझे यक़ीन नहीं (फ़ा543) अ़र्ज़ की यक़ीन क्यों नहीं मगर यह चाहता हूं कि मेरे दिल को क़रार आ जाए। (फ़ा544) फ़रमाया तो अच्छा चार परिन्दे लेकर अपने साथ हिला ले (फ़ा545) फिर उनका एक-एक टुकड़ा हर पहाड़ पर रख दे फिर उन्हें बुला वह तेरे पास चले आयेंगे पांव से दौड़ते (फ़ा546) और जान रख कि अल्लाह ग़ालिब हिकमत वाला है।(260) (रुकूअ़ 3) उनकी कहावत जो अपने माल अल्लाह की राह में ख़र्च

(फ़ा540) बक़ौल अक्सर यह वाक़िआ़ हज़रत उज़ैर अ़लैहिस्सलाम का है और बस्ती से बैतुल मक़्दिस मुराद है, जब बुख़्ते नसर बादशाह ने बैतुल मक़्दिस को वीरान किया और बनी इसराईल को क़त्ल किया गिरिफ़्तार किया तबाह कर डाला फिर हज़रत उज़ैर अ़लैहिस्सलाम वहां से गुज़रे आपके साथ एक बर्तन खजूर और एक प्याला अंगूर का रस था और आप एक दराज़ गोश पर सवार थे तमाम बस्ती में फिरे किसी शख़्स को वहां न पाया बस्ती की इमारतों को मुनहदिम देखा तो आपने बराहे तअ़ज्जुब कहा *अन्ना युह्यी हाज़िहिल्लाहु बअ्-द मौतिहा* और आपने अपनी सवारी के हिमार को वहां बांध दिया और आपने आराम फ़रमाया उसी हालत में आपकी रूह क़ब्ज़ कर ली गई और गधा भी मर गया यह सुबह के वक़्त का वाक़िआ़ है इससे सत्तर बरस बाद अल्लाह तआ़ला ने शाहाने फ़ारस में से एक बादशाह को मुसल्लत किया और वह अपनी फ़ौजें लेकर बैतुल मक़्दिस पहुंचा और उसको पहले से भी बेहतर तरीक़ा पर आबाद किया और बनी इसराईल में से जो लोग बाक़ी रहे थे अल्लाह तआ़ला उन्हें फिर यहां लाया और वह बैतुल मक़्दिस और उसके नवाह में आबाद हुए और उनकी तादाद बढ़ती रही उस ज़माना में अल्लाह तआ़ला ने हज़रत उज़ैर अ़लैहिस्सलाम को दुनिया की आंखों से पोशीदा रखा और कोई आपको न देख सका जब आपकी वफ़ात को सौ बरस गुज़र गए तो अल्लाह तआ़ला ने आपको ज़िन्दा किया पहले आंखों में जान आई अभी तक तमाम जिस्म मुर्दा था वह आपके देखते देखते ज़िन्दा किया गया यह वाक़िआ़ शाम के वक़्त गुरूबे आफ़ताब के क़रीब हुआ अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया तुम यहां कितने दिन ठहरे आपने अन्दाज़ा से अ़र्ज़ किया कि एक दिन या कुछ कम आपका ख़्याल यह हुआ कि यह उसी दिन की शाम है जिसकी सुबह को सोए थे फ़रमाया बल्कि तुम सौ बरस ठहरे अपने खाने और पानी यानी खजूर और अंगूर के **(बक़िया सफ़हा 105 पर)**

أَمْوَالَهُمْ فِي سَبِيلِ اللَّهِ كَمَثَلِ حَبَّةٍ أَنْبَتَتْ سَبْعَ سَنَابِلَ فِي كُلِّ سُنْبُلَةٍ مِائَةُ حَبَّةٍ ۗ وَاللَّهُ يُضَاعِفُ لِمَنْ يَشَاءُ ۗ وَاللَّهُ وَاسِعٌ عَلِيمٌ ﴿٢٦١﴾
الَّذِينَ يُنْفِقُونَ أَمْوَالَهُمْ فِي سَبِيلِ اللَّهِ ثُمَّ لَا يُتْبِعُونَ مَا أَنْفَقُوا مَنًّا وَلَا أَذًى ۙ لَهُمْ أَجْرُهُمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ ۚ وَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُونَ ﴿٢٦٢﴾
قَوْلٌ مَعْرُوفٌ وَمَغْفِرَةٌ خَيْرٌ مِنْ صَدَقَةٍ يَتْبَعُهَا أَذًى ۗ وَاللَّهُ غَنِيٌّ حَلِيمٌ ﴿٢٦٣﴾ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تُبْطِلُوا صَدَقَاتِكُمْ بِالْمَنِّ
وَالْأَذَىٰ كَالَّذِي يُنْفِقُ مَالَهُ رِئَاءَ النَّاسِ وَلَا يُؤْمِنُ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ ۖ فَمَثَلُهُ كَمَثَلِ صَفْوَانٍ عَلَيْهِ تُرَابٌ فَأَصَابَهُ وَابِلٌ فَتَرَكَهُ
صَلْدًا ۖ لَا يَقْدِرُونَ عَلَىٰ شَيْءٍ مِمَّا كَسَبُوا ۗ وَاللَّهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الْكَافِرِينَ ﴿٢٦٤﴾ وَمَثَلُ الَّذِينَ يُنْفِقُونَ أَمْوَالَهُمُ ابْتِغَاءَ مَرْضَاتِ

अम्वा–लहुम् फ़ी सबीलिल्लाहि क–म–स़लि ह़ब्बतिन् अम्ब–सब्–अ़ सनाबि–ल फ़ी कुल्लि सुम्बु–लतिम्मि–अतु ह़ब्बतिन् वल्लाहु युज़ाअ़िफ़ु लिमंय्यशा–उ वल्लाहु वासिअ़ुन् अ़लीम(261) अल्लज़ी–न युन्फ़िक़ू–न अम्वा–लहुम् फ़ी सबीलिल्लाहि सुम्–म ला युत्बिअ़ू–न मा अन्फ़क़ू मन्नंव्वला अ–ज़ल्– लहुम् अज्रुहुम् अ़िन्–द रब्बिहिम् व ला ख़ौफ़ुन् अ़लैहिम् व ला हुम् यह़्ज़नून(262)क़ौलुम्मअ़ रूफ़ुंव्–व मग़्फ़ि–रतुन् ख़ैरुम् मिन् स–द–क़तिंय्यत्–बअ़ुहा अज़न् वल्लाहु ग़निय्युन् ह़लीम(263)या अय्युहल्लज़ी–न आ–मनू ला तुब्तिलू स–द–क़ातिकुम् बिल्मन्नि वल्अज़ा कल्लज़ी युन्फ़िक़ुमा–लहू रिआ–अन्नासि व ला युअमिनु बिल्लाहि वल्यौमिल् आख़िरि फ़–म–सलुहू क–म–स़लि स़फ़्वानिन् अ़लैहि तुराबुन् फ़–असा–बहू वाबिलुन् फ़–त–र–कहू सल्दन् ला यक़्दिरू–न अ़ला शैइम् मिम्मा क–सबू वल्लाहु ला यह्दिल् क़ौमल्काफ़िरीन (264)व म–सलुल्–लज़ी–न युन्फ़िक़ू–न अम्वा–लहुमुब्तिग़ा–अ मरज़ातिल्लाहि

करते हैं (फ़ा547) उस दाना की तरह जिसने उगाईं सात बालें (फ़ा548) हर बाल में सौ दाने (फ़ा549) और अल्लाह इससे भी ज़्यादा बढ़ाए जिसके लिए चाहे और अल्लाह वुसअ़त वाला इल्म वाला है।(261) वह जो अपने माल अल्लाह की राह में ख़र्च करते हैं (फ़ा550) फिर दिये पीछे न एहसान रखें न तकलीफ़ दें (फ़ा551) उनका नेग उनके रब के पास है और उन्हें न कुछ अन्देशा हो न कुछ ग़म। (262)अच्छी बात कहना और दरगुज़र करना (फ़ा552) उस ख़ैरात से बेहतर है जिसके बाद सताना हो (फ़ा553) और अल्लाह बे परवाह हिल्म वाला है।(263) ऐ ईमान वालो अपने सदक़े बातिल न कर दो एहसान रख कर और ईज़ा देकर (फ़ा554) उसकी तरह जो अपना माल लोगों के दिखावे के लिए ख़र्च करे और अल्लाह और क़ियामत पर ईमान न लाए तो उसकी कहावत ऐसी है जैसे एक चट्टान कि उस पर मिट्टी है अब उस पर ज़ोर का पानी पड़ा जिसने उसे निरा पत्थर कर छोड़ा। (फ़ा555) अपनी कमाई से किसी चीज़ पर क़ाबू न पायेंगे और अल्लाह काफ़िरों को राह नहीं देता।(264) और उनकी कहावत जो अपने माल अल्लाह की रज़ा चाहने में ख़र्च करते हैं

(फ़ा547) ख़्वाह ख़र्च करना वाजिब हो या नफ़्ल तमाम अबवाबे ख़ैर को आ़म है ख़्वाह किसी तालिबे इल्म को किताब ख़रीद कर दी जाए या कोई शिफ़ा ख़ाना बना दिया जाए या अमवात के ईसाले सवाब के लिए तीजा दसवीं बीसवीं चालीसवीं के तरीक़ा पर मसाकीन को खाना खिलाया जाए (फ़ा548) उगाने वाला हक़ीक़त में अल्लाह ही है दाना की तरफ़ उसकी निस्बत मजाज़ी है **मसलाः** इससे मालूम हुआ कि असनादे मजाज़ी जायज़ है जबकि असनाद करने वाला ग़ैरे ख़ुदा को मुस्तक़िल फ़ित्तसर्रुफ़ एतेक़ाद न करता हो इसी लिए यह कहना जायज़ है कि यह दवा नाफ़ेअ़ है, यह मुज़िर है, यह दर्द की दाफ़ेअ़ है। मां बाप ने पाला आ़लिम ने गुमराही से बचाया बुज़ुर्गों ने हाजत रवाई की वग़ैरह सब में असनादे मजाज़ी हैं और मुसलमान के एतेक़ाद में फ़ायले हक़ीक़ी सिर्फ़ अल्लाह तआ़ला है बाक़ी सब वसायल। (फ़ा549) तो एक दाना के सात सौ दाने हो गए इसी तरह राहे ख़ुदा में ख़र्च करने से सात सौ गुना अज्र हो जाता है (फ़ा550) **शाने नुज़ूलः** यह आयत हज़रत उस्मान ग़नी व हज़रत अ़ब्दुर्रहमान बिन औ़फ़ रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा के हक़ में नाज़िल हुई हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु ने ग़ज़वए तबूक के मौक़ा पर लश्करे इस्लाम के लिए एक हज़ार ऊंट मअ़ सामान पेश किये और अ़ब्दुर्रहमान बिन औ़फ़ रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने चार हज़ार दिरहम सदक़ा के बारगाहे रिसालत में हाज़िर किये और अ़र्ज़ किया कि मेरे पास कुल आठ हज़ार दिरहम थे निस्फ़ मैंने अपने और अपने अहल व अ़याल के लिए रख लिये और निस्फ़ राहे ख़ुदा में हाज़िर हैं सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया जो तुमने दिये और जो तुमने रखे अल्लाह तआ़ला दोनों में बरकत फ़रमाए (फ़ा551) एहसान रखना तो यह कि देने के बाद दूसरों के सामने इज़्हार करें कि हम ने तेरे साथ ऐसे-ऐसे सुलूक किये और **(बक़िया सफ़हा 105 पर)**

اللهِ وَتَثْبِيتًا مِّنْ اَنْفُسِهِمْ كَمَثَلِ جَنَّةٍ بِرَبْوَةٍ اَصَابَهَا وَابِلٌ فَاٰتَتْ اُكُلَهَا ضِعْفَيْنِ ۚ فَاِنْ لَّمْ يُصِبْهَا وَابِلٌ فَطَلٌّ ؕ وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ بَصِيْرٌ ﴿۲۶۵﴾
اَيَوَدُّ اَحَدُكُمْ اَنْ تَكُوْنَ لَهٗ جَنَّةٌ مِّنْ نَّخِيْلٍ وَّ اَعْنَابٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ ۙ لَهٗ فِيْهَا مِنْ كُلِّ الثَّمَرٰتِ ۙ وَاَصَابَهُ الْكِبَرُ وَلَهٗ ذُرِّيَّةٌ
ضُعَفَآءُ ۖۚ فَاَصَابَهَآ اِعْصَارٌ فِيْهِ نَارٌ فَاحْتَرَقَتْ ؕ كَذٰلِكَ يُبَيِّنُ اللّٰهُ لَكُمُ الْاٰيٰتِ لَعَلَّكُمْ تَتَفَكَّرُوْنَ ﴿۲۶۶﴾ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اَنْفِقُوْا مِنْ طَيِّبٰتِ مَا كَسَبْتُمْ
وَمِمَّاۤ اَخْرَجْنَا لَكُمْ مِّنَ الْاَرْضِ ۪ وَلَا تَيَمَّمُوا الْخَبِيْثَ مِنْهُ تُنْفِقُوْنَ وَلَسْتُمْ بِاٰخِذِيْهِ اِلَّاۤ اَنْ تُغْمِضُوْا فِيْهِ ؕ وَاعْلَمُوْۤا اَنَّ اللّٰهَ غَنِيٌّ حَمِيْدٌ ﴿۲۶۷﴾
اَلشَّيْطٰنُ يَعِدُكُمُ الْفَقْرَ وَيَاْمُرُكُمْ بِالْفَحْشَآءِ ۚ وَاللّٰهُ يَعِدُكُمْ مَّغْفِرَةً مِّنْهُ وَفَضْلًا ؕ وَاللّٰهُ وَاسِعٌ عَلِيْمٌ ﴿۲۶۸﴾ يُّؤْتِي الْحِكْمَةَ مَنْ يَّشَآءُ ۚ وَمَنْ

व तस्बीतम्–मिन् अन्फुसिहिम् क–म–सलि जन्नतिम् बि–रब्वतिन् असा–बहा वाबिलुन् फ–आतत् उकु–लहा ज़िअ.फ़ैनि फ–इल्लम् युसिब्हा वाबिलुन् फ–तल्लुन् वल्लाहु बिमा तअ.मलू–न बसीर (265)अ–य–वद्दु अ–हदुकुम् अन् तकू–न लहू जन्नतुम् मिन्–नख़ीलिंव्–व अअ्–नाबिन् तज्री मिन् तह्तिहल्–अन्हारु लहू फ़ीहा मिन् कुल्लिस्स–मराति व असा–बहुल्कि–ब–रु व लहू ज़ुर्रिय्यतुन् ज़ु–अफ़ाउ फ–असा–बहा इअ्–सारुन् फ़ीहि नारुन् फ़ह्त–र–कत् कज़ालि–क युबय्यिनुल्लाहु लकुमुल् आयाति ल–अल्लकुम् त–त–फ़क्करून(266)या अय्युहल्लज़ी–न आमनू अन्फ़िकू मिन् तय्यिबाति मा क–सब्तुम् व मिम्मा अख़्रज्ना लकुम् मिनल् अर्ज़ि व ला त–यम्ममुल्ख़बी–स मिन्हु तुन्फ़िकू–न व लस्तुम् बि–आख़िज़ीहि इल्ला अन् तुग़्मिज़ू फ़ीहि वअ्–लमू अन्नल्ला–ह ग़निय्युन् हमीद (267)अश्शैतानु यअिदुकुमुल्–फ़क्–र व यअ्मुरुकुम् बिल्फ़ह्शा–इ वल्लाहु यअिदुकुम् मग़्फ़ि–र–तम्मिन्हु व फ़ज़्लन् वल्लाहु वासिअुन् अलीम(268) युअ्तिल्हिक्म–त मंय्यशा–उ व मंय्यूअ्तल्–

और अपने दिल जमाने को (फ़ा556) उस बाग़ की सी है जो भूड़ (रेगिस्तान) पर हो उस पर ज़ोर का पानी पड़ा तो दूने मेवे लाया। फिर अगर ज़ोर का मेंह उसे न पहुंचे तो ओस काफ़ी है (फ़ा557) और अल्लाह तुम्हारे काम देख रहा है।(265)(फ़ा558) क्या तुम में कोई उसे पसन्द रखेगा (फ़ा559) कि उसके पास एक बाग़ हो खजूरों और अंगूरों का (फ़ा560) जिसके नीचे नदियाँ बहतीं उसके लिए उसमें हर क़िस्म के फलों से है (फ़ा561) और उसे बुढ़ापा आया (फ़ा562) और उसके नातवाँ बच्चे हैं (फ़ा563) तो आया उस पर एक बगोला जिसमें आग थी तो जल गया (फ़ा564) ऐसा ही बयान करता है अल्लाह तुम से अपनी आयतें कि कहीं तुम ध्यान लगाओ।(266) (फ़ा565) (रुकूअ़ 4)ऐ ईमान वालो अपनी पाक कमाईयों में से कुछ दो (फ़ा566) और उसमें से जो हमने तुम्हारे लिए ज़मीन से निकाला (फ़ा567) और ख़ास नाक़िस का इरादा न करो कि दो तो उस में से (फ़ा568) और तुम्हें मिले तो न लोगे जब तक उसमें चश्म-पोशी न करो और जान रखो कि अल्लाह बे परवाह सराहा गया है।(267) शैतान तुम्हें अन्देशा दिलाता है (फ़ा569) मोहताजी का और हुक्म देता है बे हयाई का (फ़ा570) और अल्लाह तुम से वादा फ़रमाता है बख़्शिश और फ़ज़्ल का (फ़ा571) और अल्लाह वुसअ़त वाला इल्म वाला है।(268) अल्लाह हिकमत देता है (फ़ा572) जिसे चाहे और जिसे

(फ़ा556) राहे ख़ुदा में ख़र्च करने पर (फ़ा557) यह मोमिन मुख़लिस के आमाल की एक मिसाल है कि जिस तरह बुलन्द ख़ित्ता की बेहतरीन ज़मीन का बाग़ हर हाल में ख़ूब फलता है ख़्वाह बारिश कम हो या ज़्यादा ऐसे ही बा इख़्लास मोमिन का सदक़ा और इन्फ़ाक़ ख़्वाह कम हो या ज़्यादा हो अल्लाह तआला उसको बढ़ाता है। (फ़ा558) और तुम्हारी नीयत और इख़्लास को जानता है। (फ़ा559) यानी कोई पसन्द न करेगा क्योंकि यह बात किसी आ़क़िल के गवारा करने के क़ाबिल नहीं है (फ़ा560) अगरचे उस बाग़ में भी क़िस्म क़िस्म के दरख़्त हों मगर खजूर और अंगूर का ज़िक्र इस लिए किया कि यह नफ़ीस मेवे हैं (फ़ा561) यानी वह बाग़ फ़रहत अंगेज़ व दिलकुशा भी है और नाफ़ेअ़ और उम्दा जायदाद भी। (फ़ा562) जो हाजत का वक़्त होता है और आदमी कस्ब व मआ़श के क़ाबिल नहीं रहता (फ़ा563) जो कमाने के क़ाबिल नहीं और उनकी परवरिश की हाजत है ग़रज़ वक़्त निहायत शिद्दते हाजत का है और दारो मदार सिर्फ़ बाग़ पर और बाग़ भी निहायत उम्दा है। (फ़ा564) वह बाग़ तो उस वक़्त उसके रंज व ग़म और हसरत व यास की क्या इन्तेहा है यही हाल उसका है जिसने आमाले हसना तो किये हों मगर रज़ाए इलाही के लिए नहीं बल्कि रिया की ग़रज़ से और इस गुमान में हो कि मेरे पास नेकियों का ज़ख़ीरा है मगर जब शिद्दते हाजत का वक़्त यानी क़ियामत का दिन आए तो अल्लाह तआला उन आमाल को ना-मक़बूल कर दे उस वक़्त उसको कितना रंज और कितनी हसरत होगी एक रोज़ हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने सहाबए किराम से फ़रमाया कि आपके इल्म में यह आयत किस (बक़िया सफ़हा 104 पर)

يُؤْتَ الْحِكْمَةَ فَقَدْ اُوْتِيَ خَيْرًا كَثِيْرًا ؕ وَمَا يَذَّكَّرُ اِلَّاۤ اُولُوا الْاَلْبَابِ ﴿٢٦٩﴾ وَمَاۤ اَنْفَقْتُمْ مِّنْ نَّفَقَةٍ اَوْ نَذَرْتُمْ مِّنْ نَّذْرٍ فَاِنَّ اللّٰهَ

يَعْلَمُهٗ ؕ وَمَا لِلظّٰلِمِيْنَ مِنْ اَنْصَارٍ ﴿٢٧٠﴾ اِنْ تُبْدُوا الصَّدَقٰتِ فَنِعِمَّا هِيَ ۚ وَاِنْ تُخْفُوْهَا وَتُؤْتُوْهَا الْفُقَرَآءَ فَهُوَ خَيْرٌ لَّكُمْ ؕ وَيُكَفِّرُ عَنْكُمْ مِّنْ

سَيِّاٰتِكُمْ ؕ وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرٌ ﴿٢٧١﴾ لَيْسَ عَلَيْكَ هُدٰىهُمْ وَلٰكِنَّ اللّٰهَ يَهْدِيْ مَنْ يَّشَآءُ ؕ وَمَا تُنْفِقُوْا مِنْ خَيْرٍ فَلِاَنْفُسِكُمْ ؕ وَمَا تُنْفِقُوْنَ

اِلَّا ابْتِغَآءَ وَجْهِ اللّٰهِ ؕ وَمَا تُنْفِقُوْا مِنْ خَيْرٍ يُّوَفَّ اِلَيْكُمْ وَاَنْتُمْ لَا تُظْلَمُوْنَ ﴿٢٧٢﴾ لِلْفُقَرَآءِ الَّذِيْنَ اُحْصِرُوْا فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ لَا يَسْتَطِيْعُوْنَ

ضَرْبًا فِي الْاَرْضِ ؗ يَحْسَبُهُمُ الْجَاهِلُ اَغْنِيَآءَ مِنَ التَّعَفُّفِ ۚ تَعْرِفُهُمْ بِسِيْمٰهُمْ ۚ لَا يَسْـَٔلُوْنَ النَّاسَ اِلْحَافًا ؕ وَمَا تُنْفِقُوْا مِنْ خَيْرٍ فَاِنَّ اللّٰهَ بِهٖ عَلِيْمٌ ﴿٢٧٣﴾

हिक्म–त फ़–क़द् ऊति–य ख़ैरन् कसीरन् व मा यज़्–ज़क्करु इल्ला उलुल्–अल्बाब(269)व मा अन्फ़क़्तुम् मिन् न–फ़–क़तिन् औ न–ज़र्तुम् मिन्–नज़्रिन् फ़–इन्नल्ला–ह यअ्–लमुहू व मा लिज़्ज़ालिमी–न मिन् अन्सार(270)इन् तुब्दुस्स–द–क़ाति फनिअि़म्मा हि–य व इन् तुख़्फ़ूहा व तूअ्तूहल्फ़ु–क़रा–अ फ़हु–व ख़ैरुल्लकुम् व युकफ़्फ़िरु अ़न्कुम् मिन् सय्यिआतिकुम् वल्लाहु बिमा तअ़्मलू–न ख़बीर(271)लै–स अ़लै–क हुदाहुम् व लाकिन्नल्ला–ह यह्दी मंय्यशाउ व मा तुन्फ़िक़ू मिन् ख़ैरिन् फ़लि अन्फ़ुसिकुम् व मा तुन्फ़िक़ू–न इल्लब्तिग़ा–अ वज्हिल्लाहि व मा तुन्फ़िक़ू मिन् ख़ैरिंय्युवफ़्–फ़ इलैकुम् व अन्तुम् ला तुज़्लमून(272)लिल्फ़ु–क़रा–इल्लज़ी–न उह्सिरू फ़ी सबी–लिल्लाहि ला यस्–ततीअू–न जर्बन् फ़िल्अर्ज़ि यह्सबुहुमुल् जाहिलु अग़्निया–अ मिनत्तअ़फ़्फ़ुफ़ि तअ्–रिफ़ुहुम् बिसीमाहुम् ला यस्–अलूनन्ना–स इल्हाफ़न् व मा तुन्फ़िक़ू मिन् ख़ैरिन् फ़–इन्नल्ला–ह बिही अ़लीम(273)

हिकमत मिली उसे बहुत भलाई मिली और नसीहत नहीं मानते मगर अ़क़्ल वाले।(269) और तुम जो ख़र्च करो (फ़ा573) या मन्नत मानो (फ़ा574) अल्लाह को उसकी ख़बर है (फ़ा575) और ज़ालिमों का कोई मददगार नहीं। (270) अगर ख़ैरात एलानिया दो तो वह क्या ही अच्छी बात है और अगर छुपा कर फ़क़ीरों को दो यह तुम्हारे लिए सबसे बेहतर है(फ़ा576) और उसमें तुम्हारे कुछ गुनाह घटेंगे और अल्लाह को तुम्हारे कामों की ख़बर है।(271)उन्हें राह देना तुम्हारे ज़िम्मा लाज़िम नहीं (फ़ा577) हां अल्लाह राह देता है जिसे चाहता है और तुम जो अच्छी चीज़ दो तो तुम्हारा ही भला है (फ़ा578) और तुम्हें ख़र्च करना मुनासिब नहीं मगर अल्लाह की मर्ज़ी चाहने के लिए और जो माल दो तुम्हें पूरा मिलेगा और नक़्सान न दिये जाओगे।(272) उन फ़क़ीरों के लिए जो राहे खुदा में रोके गए (फ़ा579) ज़मीन में चल नहीं सकते (फ़ा580) नादान उन्हें तवंगर समझे बचने के सबब (फ़ा581) तू उन्हें उनकी सूरत से पहचान लेगा(फ़ा582) लोगों से सवाल नहीं करते कि गिड़–गिड़ाना पड़े और तुम जो ख़ैरात करो अल्लाह उसे जानता है।(273) (रुकूअ़ 5)

(फ़ा573) नेकी में ख़्वाह बदी में (फ़ा574) ताअ़त की या गुनाह की नज़र उर्फ़ में हदिया और पेशकश को कहते हैं और शरअ़ में नज़रे इबादत और क़ुरबते मक़्सूदा है इसी लिए अगर किसी ने गुनाह करने की नज़र की तो वह सही नहीं हुई नज़र ख़ास अल्लाह तआ़ला के लिए होती है और यह जायज़ है कि अल्लाह के लिए नज़र करे और किसी वली के आस्ताना के फ़ुक़रा को नज़र के सरफ़ का महल मुक़र्रर करे मसलन किसी ने यह कहा या रब मैंने नज़र मानी कि अगर तू मेरा फ़लां मक़सद पूरा कर दे कि फ़लां बीमार को तन्दुरुस्त कर दे तो मैं फ़लां वली के आस्ताना के फ़ुक़रा को खाना खिलाऊं या वहां के ख़ुद्दाम को रुपया पैसा दूं या उनकी मस्जिद के लिए तेल या बोरिया हाज़िर करूं तो यह नज़र जायज़ है (रद्दुल मुहतार) (फ़ा575) वह तुम्हें उसका बदला देगा। (फ़ा576) सदक़ा ख़्वाह फ़र्ज़ हो या नफ़्ल जब इख़्लास से अल्लाह के लिए दिया जाए और रिया से पाक हो तो ख़्वाह ज़ाहिर करके दें या छुपा कर दोनों बेहतर हैं **मसलाः** लेकिन सदक़ा फ़र्ज़ का ज़ाहिर करके देना अफ़ज़ल है और नफ़्ल का छुपा कर। **मसलाः** और अगर नफ़्ल सदक़ा देने वाला दूसरों को ख़ैरात की तरग़ीब देने के लिए ज़ाहिर करके दे तो यह इज़्हार भी अफ़ज़ल है (मदारिक) (फ़ा577) आप बशीर व नज़ीर व दाई बनाकर भेजे गए हैं आपका फ़र्ज़ दावत पर तमाम हो जाता है इससे ज़्यादा जहद आप पर लाज़िम नहीं। **शाने नुज़ूलः** क़ब्ले इस्लाम मुसलमानों की यहूद से रिश्तादारियां थीं इस वजह से वह उनके साथ सुलूक किया करते थे मुसलमान होने के बाद उन्हें यहूद के साथ सुलूक करना नागवार होने लगा और उन्होंने इस लिए हाथ रोकना चाहा कि उनके इस तर्ज़े अ़मल से यहूद इस्लाम की तरफ़ माइल हों इस पर यह आयत नाज़िल हुई (फ़ा578) तो दूसरों पर इसका एहसान न जताओ (फ़ा579) यानी सदक़ाते मज़कूरा जो आयत *व मा तुन्फ़िक़ू मिन् ख़ैर* में ज़िक्र हुए उनका बेहतरीन मसरफ़ वह फ़ुक़रा हैं जिन्होंने अपने नुफ़ूस को जेहाद व ताअ़ते इलाही पर रोका। **शाने नुज़ूलः** यह **(बक़िया सफ़हा 104 पर)**

الَّذِيْنَ يُنْفِقُوْنَ اَمْوَالَهُمْ بِالَّيْلِ وَالنَّهَارِ سِرًّا وَّعَلَانِيَةً فَلَهُمْ اَجْرُهُمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ وَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ ۝ اَلَّذِيْنَ يَاْكُلُوْنَ الرِّبٰوا لَا يَقُوْمُوْنَ اِلَّا كَمَا يَقُوْمُ الَّذِيْ يَتَخَبَّطُهُ الشَّيْطٰنُ مِنَ الْمَسِّ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ قَالُوْٓا اِنَّمَا الْبَيْعُ مِثْلُ الرِّبٰوا وَاَحَلَّ اللّٰهُ الْبَيْعَ وَحَرَّمَ الرِّبٰوا فَمَنْ جَآءَهٗ مَوْعِظَةٌ مِّنْ رَّبِّهٖ فَانْتَهٰى فَلَهٗ مَا سَلَفَ وَاَمْرُهٗٓ اِلَى اللّٰهِ وَمَنْ عَادَ فَاُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ النَّارِ هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ۝ يَمْحَقُ اللّٰهُ الرِّبٰوا وَيُرْبِي الصَّدَقٰتِ وَاللّٰهُ لَا يُحِبُّ كُلَّ كَفَّارٍ اَثِيْمٍ ۝ اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ وَاَقَامُوا الصَّلٰوةَ وَاٰتَوُا الزَّكٰوةَ لَهُمْ اَجْرُهُمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ وَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ ۝ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اتَّقُوا اللّٰهَ وَذَرُوْا مَا بَقِيَ مِنَ الرِّبٰوٓا اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ۝ فَاِنْ لَّمْ تَفْعَلُوْا فَاْذَنُوْا بِحَرْبٍ مِّنَ

अल्लज़ी–न युन्फ़िकू–न अम्वा–लहुम् बिल्लैलि वन्नहारि सिर्रंव्–व अ़लानि–य–तन् फ़–लहुम् अज्रुहुम् अ़िन्–द रब्बिहिम् वला ख़ौफ़ुन अ़लैहिम् व ला हुम् यह्ज़नून(274)अल्लज़ी–न यअ्कुलूनर्रिबा ला यकू़मू–न इल्ला कमा यकू़मुल्लज़ी य–त–ख़ब्बतुहुश् शैतानु मिनल्मस्सि ज़ालि–क बि–अन्नहुम् क़ालू इन्नमल्बैउ मिस्लुर्रिबा व अहल्लल्लाहुल्बै–अ़ व हर्रमर्रिबा फ़–मन् जा–अहू मौअ़ि–ज़तुम्–मिर्–रब्बिही फ़न्तहा फ़–लहू मा स–लफ़ व अम्रुहू इलल्लाहि व मन् आ–द फ़–उलाइ–क अस्हाबुन्नारि हुम् फ़ीहा ख़ालिदून(275)यम्हक़ुल्लाहुर्रिबा व युर्बिस्स–दक़ाति वल्लाहु ला युहिब्बु कुल्–ल कफ़्फ़ारिन् असीम(276)इन्नल्लज़ी–न आ–मनू व अ़मिलुस्सालिहाति व अक़ामुस्सला–त आ–तवुज़्ज़का–त लहुम् अज्रुहुम् अ़िन्–द रब्बिहिम् व ला ख़ौफ़ुन् अ़लैहिम् व ला हुम् यह्ज़नून(277)या अय्युहल्लज़ी–न आ–मनुत्तकुल्ला–ह व–ज़रू मा बक़ि–य मिनर्रिबा इन् कुन्तुम् मुअ्मिनीन(278)फ़–इल्लम् तफ़्–अ़लू फ़अ्–ज़नू बि–हर्बिम्–मिनल्लाहि

वह जो अपने माल ख़ैरात करते हैं रात में और दिन में छुपे और ज़ाहिर। (फ़ा583) उनके लिए उनका नेग है उनके रब के पास उनको न कुछ अन्देशा हो न कुछ ग़म।(274) वह जो सूद खाते हैं (फ़ा584) क़ियामत के दिन न खड़े होंगे, मगर जैसे खड़ा होता है वह जिसे आसेब ने छूकर मख़्बूत बना दिया हो (फ़ा585) यह इस लिए कि उन्होंने कहा बैअ़ भी तो सूद ही के मानिन्द है और अल्लाह ने हलाल किया बैअ़ और हराम किया सूद, तो जिसे उसके रब के पास से नसीहत आई और वह बाज़ रहा तो उसे हलाल है जो पहले ले चुका (फ़ा586) और उसका काम ख़ुदा के सुपुर्द है (फ़ा587) और जो अब ऐसी हरकत करेगा तो वह दोज़ख़ी है वह उसमें मुद्दतों रहेंगे।(275) (फ़ा588) अल्लाह हलाक करता है सूद को (फ़ा589) और बढ़ाता है ख़ैरात को (फ़ा590) और अल्लाह को पसन्द नहीं आता कोई ना-शुक्रा बड़ा गुनहगार।(276) बेशक वह जो ईमान लाए और अच्छे काम किये और नमाज़ क़ाइम की और ज़कात दी उनका नेग उनके रब के पास है, और न उन्हें कुछ अन्देशा हो न कुछ ग़म।(277) ऐ ईमान वालो अल्लाह से डरो और छोड़ दो जो बाक़ी रह गया है सूद, अगर मुसलमान हो।(278) (फ़ा591) फिर अगर ऐसा न करो तो यक़ीन कर लो अल्लाह

(फ़ा583) यानी राहे ख़ुदा में ख़र्च करने का निहायत शौक़ रखते हैं और हर हाल में ख़र्च करते रहते हैं **शाने नुज़ूलः** यह आयत हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अ़न्हु के हक़ में नाज़िल हुई जबकि आपने राहे ख़ुदा में चालीस हज़ार दीनार ख़र्च किये थे दस हज़ार रात में और दस हज़ार दिन में और दस हज़ार पोशीदा और दस हज़ार ज़ाहिर। एक क़ौल यह है कि यह आयत हज़रत अ़ली मुर्तज़ा कर्रमल्लाहु तआ़ला वजहहू के हक़ में नाज़िल हुई जब कि आपके पास फ़क़त चार दिरहम थे और कुछ न था और आपने उन चारों को ख़ैरात कर दिया। एक रात में एक दिन में एक को पोशीदा एक को ज़ाहिर। **फ़ायदाः** आयते करीमा में नफ़क़ए लैल को नफ़क़ए नहार पर और नफ़क़ए सिर्र को नफ़क़ए एलानिया पर मुक़द्दम फ़रमाया गया इसमें इशारा है कि छुपा कर देना ज़ाहिर करके देने से अफ़ज़ल है। (फ़ा584) इस आयत में सूद की हुरमत और सूद ख़्वारों की शामत का बयान है सूद को हराम फ़रमाने में बहुत हिकमतें हैं बाज़ उन में से यह हैं कि सूद में जो ज़्यादती ली जाती है वह मुआवज़ा मालिया में एक मिक़दार माल का बग़ैर बदल व एवज़ के लेना है यह सरीह ना इंसाफ़ी है दोम सूद का रिवाज तिजारतों को ख़राब करता है कि सूद ख़्वार को बे मेहनत माल का हासिल होना तिजारत की मशक़्क़तों और ख़तरों से कहीं ज़्यादा आसान मालूम होता है और तिजारतों की कमी इंसानी मुआ़शरत को ज़रर पहुंचाती है। सोम सूद के रिवाज से बाहमी मवद्दत के सुलूक को नुक़सान पहुंचता है कि जब आदमी सूद का आ़दी हुआ तो वह किसी को क़र्ज़े हसन से इमदाद **(बक़िया सफ़हा 106 पर)**

اللهِ وَرَسُولِهٖ ۚ وَاِنْ تُبْتُمْ فَلَكُمْ رُءُوْسُ اَمْوَالِكُمْ ۚ لَا تَظْلِمُوْنَ وَلَا تُظْلَمُوْنَ ۞ وَاِنْ كَانَ ذُوْ عُسْرَةٍ فَنَظِرَةٌ اِلٰى مَيْسَرَةٍ ۚ وَاَنْ تَصَدَّقُوْا خَيْرٌ
لَّكُمْ اِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ۞ وَاتَّقُوْا يَوْمًا تُرْجَعُوْنَ فِيْهِ اِلَى اللّٰهِ ۗ ثُمَّ تُوَفّٰى كُلُّ نَفْسٍ مَّا كَسَبَتْ وَهُمْ لَا يُظْلَمُوْنَ ۞ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اِذَا
تَدَايَنْتُمْ بِدَيْنٍ اِلٰۤى اَجَلٍ مُّسَمًّى فَاكْتُبُوْهُ ۗ وَلْيَكْتُبْ بَّيْنَكُمْ كَاتِبٌۢ بِالْعَدْلِ ۪ وَلَا يَاْبَ كَاتِبٌ اَنْ يَّكْتُبَ كَمَا عَلَّمَهُ اللّٰهُ فَلْيَكْتُبْ ۚ وَلْيُمْلِلِ
الَّذِيْ عَلَيْهِ الْحَقُّ وَلْيَتَّقِ اللّٰهَ رَبَّهٗ وَلَا يَبْخَسْ مِنْهُ شَيْـًٔا ؕ فَاِنْ كَانَ الَّذِيْ عَلَيْهِ الْحَقُّ سَفِيْهًا اَوْ ضَعِيْفًا اَوْ لَا يَسْتَطِيْعُ اَنْ يُّمِلَّ هُوَ فَلْيُمْلِلْ
وَلِيُّهٗ بِالْعَدْلِ ؕ وَاسْتَشْهِدُوْا شَهِيْدَيْنِ مِنْ رِّجَالِكُمْ ۚ فَاِنْ لَّمْ يَكُوْنَا رَجُلَيْنِ فَرَجُلٌ وَّامْرَاَتٰنِ مِمَّنْ تَرْضَوْنَ مِنَ الشُّهَدَآءِ اَنْ تَضِلَّ اِحْدٰىهُمَا

व रसूलिही व इन् तुब्तुम् फ़–लकुम् रुऊसु अम्वालिकुम् ला तज़्लिमू–न व लातुज़्–लमून(279)व इन् का–न ज़ू अुस्रतिन् फ़–नज़ि–रतुन् इला मै–स–रतिन् व अन् त–सद्दकू ख़ैरुल्–लकुम् इन् कुन्तुम् तअ़्–लमून(280)वत्तकू यौमन् तुर्जअू–न फ़ीहि इलल्लाहि सुम्–म तुवफ़्फ़ा कुल्लु नफ़्सिम् –मा क–स–बत् व हुम् ला युज़्–लमून(281)या अय्युहल्लज़ी–न आ–मनू इज़ा तदा–यन्तुम् बिदैनिन् इला अ–जलिम्–मुसम्मन् फ़क्तुबूहु वल्यक्तुब् बै–नकुम् कातिबुम् बिल्अ़द्लि व ला यअ्–ब कातिबुन् अंय्यक्तु–ब कमा अ़ल्ल–महुल्लाहु फ़ल्यक्तुब् वल्युम्लि–लिल्लज़ी अ़लैहिल्–हक़्कु वल्यत्तकिल्ला–ह रब्बहू व ला यब्ख़स् मिन्हु शैअन् फ़–इन् कानल्लज़ी लैहिल्हक़्कु सफ़ीहन् औ ज़ईफ़न् औ ला यस्ततीअु अंय्युमिल्–ल हुव फ़ल्युमलिल् वलिय्युहू बिल्अ़द्लि वस्तश्हिदू शहीदैनि मिर्रिजालिकुम फ़–इल्लम् यकूना रजुलैनि फ़–रजुलुंव्वम्–र अतानि मिम्मन् तरज़ौ–न मिनश्शु–हदाइ अन् तज़िल्–ल इह्दाहुमा

और अल्लाह के रसूल से लड़ाई का (फ़ा592) और अगर तुम तौबा करो तो अपना अस्ल माल लेलो न तुम किसी को नक़सान पहुंचाओ (फ़ा593) न तुम्हें नुक़्सान हो।(279) (फ़ा594) और अगर क़र्ज़दार तंगी वाला है तो उसे मोहलत दो आसानी तक, और क़र्ज़ उस पर बिल्कुल छोड़ देना तुम्हारे लिए और भला है अगर जानो।(280) (फ़ा595) और डरो उस दिन से जिस में अल्लाह की तरफ़ फिरोगे और हर जान को उसकी कमाई पूरी भर दी जाएगी और उनपर ज़ुल्म न होगा।(281) (फ़ा596) (रुकूअ 6) ऐ ईमान वालो जब तुम एक मुक़र्रर मुद्दत तक किसी दैन का लेन देन करो (फ़ा597) तो उसे लिख लो (फ़ा598) और चाहिये कि तुम्हारे दर्मियान कोई लिखने वाला ठीक-ठीक लिखे (फ़ा599) और लिखने वाला लिखने से इन्कार न करे जैसा कि उसे अल्लाह ने सिखाया है (फ़ा600) तो उसे लिख देना चाहिये और जिस पर हक़ आता है वह लिखाता जाए और अल्लाह से डरे जो उसका रब है और हक़ में से कुछ रख न छोड़े, फिर जिस पर हक़ आता है अगर बे अ़क़्ल या नातवाँ हो या लिखा न सके (फ़ा601) तो उसका वली इन्साफ़ से लिखाए और दो गवाह कर लो अपने मर्दों में से (फ़ा602) फिर अगर दो मर्द न हों (फ़ा603) तो एक मर्द और दो औरतें ऐसे गवाह जिनको पसन्द करो (फ़ा604) कि कहीं उनमें एक औरत भूले

(फ़ा592) यह वईद व तहदीद में मुबालग़ा व तश्दीद है किस की मजाल कि अल्लाह और उसके रसूल से लड़ाई का तसव्वुर भी करे चुनांचे उन असहाब ने अपने सूदी मुतालबा छोड़े और यह अ़र्ज़ किया कि अल्लाह और उसके रसूल से लड़ाई की हमें क्या ताब और तायब हुए। (फ़ा593) ज़्यादा लेकर (फ़ा594) रासुलमाल घटा कर (फ़ा595) क़र्ज़दार अगर तंगदस्त या नादार हो तो उसको मोहलत देना या क़र्ज़ का जुज़्व या कुल माफ़ कर देना सबबे अज्रे अ़ज़ीम है। मुस्लिम शरीफ़ की हदीस है सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया जिसने तंगदस्त को मोहलत दी या उसका क़र्ज़ा माफ़ किया अल्लाह तआ़ला उसको अपना सायए रहमत अ़ता फ़रमएगा जिस रोज़ उसके साया के सिवा कोई साया न होगा। (फ़ा596) यानी न उनकी नेकियां घटाई जायें न बदियां बढ़ाई जायें हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से मरवी है कि यह सब से आख़िर आयत है जो हुज़ूर पर नाज़िल हुई इसके बाद हुज़ूरे अक़दस सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम इक्कीस रोज़ दुनिया में तशरीफ़ फ़रमा रहे और एक क़ौल में नौ शब और एक में सात लेकिन शोअ़बी ने हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हु से यह रिवायत की है कि सब से आख़िर आयत *रिबा* नाज़िल हुई।(फ़ा597) ख़्वाह वह दैन मबीअ़ हो या समन हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने फ़रमाया कि इससे बैअ़ सलम मुराद है बैअ़े सलम यह है कि किसी चीज़ को पेशगी क़ीमत लेकर फ़रोख़्त किया जाए और मबीअ़ मुशतरी को सुपुर्द करने के लिए एक मुद्दत मुअ़य्यन कर ली जाए उस बैअ़ के जवाज़ के लिए जिन्स, नौअ़, सिफ़त, मिक़दार, मुद्दत और मकाने अदा और मिक़दारे रासुलमाल इन चीज़ों का मालूम होना शर्त है। (फ़ा598) यह लिखना मुस्तहब है फ़ायदा इसका यह है कि भूल चूक और मदयून के इंकार का अन्देशा नहीं रहता (फ़ा599) अपनी **(बक़िया सफ़हा 106 पर)**

فَتُذَكِّرَ اِحْدٰىهُمَا الْاُخْرٰى ؕ وَلَا يَاْبَ الشُّهَدَآءُ اِذَا مَا دُعُوْا ؕ وَلَا تَسْئَمُوْٓا اَنْ تَكْتُبُوْهُ صَغِيْرًا اَوْ كَبِيْرًا اِلٰٓى اَجَلِهٖ ؕ ذٰلِكُمْ اَقْسَطُ عِنْدَ اللّٰهِ وَاَقْوَمُ لِلشَّهَادَةِ
وَاَدْنٰٓى اَلَّا تَرْتَابُوْٓا اِلَّآ اَنْ تَكُوْنَ تِجَارَةً حَاضِرَةً تُدِيْرُوْنَهَا بَيْنَكُمْ فَلَيْسَ عَلَيْكُمْ جُنَاحٌ اَلَّا تَكْتُبُوْهَا ؕ وَاَشْهِدُوْٓا اِذَا تَبَايَعْتُمْ
وَلَا يُضَآرَّ كَاتِبٌ وَّلَا شَهِيْدٌ ؕ وَاِنْ تَفْعَلُوْا فَاِنَّهٗ فُسُوْقٌۢ بِكُمْ ؕ وَاتَّقُوا اللّٰهَ ؕ وَيُعَلِّمُكُمُ اللّٰهُ ؕ وَاللّٰهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمٌ ۝٢٨٢ وَاِنْ كُنْتُمْ عَلٰى سَفَرٍ
وَّلَمْ تَجِدُوْا كَاتِبًا فَرِهٰنٌ مَّقْبُوْضَةٌ ؕ فَاِنْ اَمِنَ بَعْضُكُمْ بَعْضًا فَلْيُؤَدِّ الَّذِي اؤْتُمِنَ اَمَانَتَهٗ وَلْيَتَّقِ اللّٰهَ رَبَّهٗ ؕ وَلَا تَكْتُمُوا الشَّهَادَةَ ؕ وَمَنْ يَّكْتُمْهَا
فَاِنَّهٗٓ اٰثِمٌ قَلْبُهٗ ؕ وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ عَلِيْمٌ ۝٢٨٣ لِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ؕ وَاِنْ تُبْدُوْا مَا فِيْٓ اَنْفُسِكُمْ اَوْ تُخْفُوْهُ يُحَاسِبْكُمْ بِهِ اللّٰهُ ؕ

फ़–तुज़क्कि–र इह्दाहु–मल्उख़्रा व ला यअ्बश्शु–हदाउ इज़ा मा दुऊ व ला तस्अमू अन् तक्तुबूहु सग़ीरन् औ कबीरन् इला अ–जलिही ज़ालिकुम् अक़्सतु अिन्दल्लाहि व अक़्–वमु लिश्शहा–दति व अदना अल्ला तर्ताबू इल्ला अन् तकू–न तिजा–रतन् हाज़ि–र–तन् तुदीरू–नहा बै–नकुम् फ़–लै–स अ़लैकुम् जुनाहुन् अल्ला तक्तुबूहा व अश्हिदू इज़ा तबायअ़्–तुम् वला युज़ार्–र कातिबुंव्–व ला शहीदुन् व इन् तफ़्–अ़लू फ़–इन्नहू फ़ुसूकुम् बिकुम् वत्तकुल्ला–ह व युअ़ल्लि–मुकुमुल्लाहु वल्लाहु बिकुल्लि शैइन् अ़लीम(282)व इन् कुन्तुम् अ़ला स–फ़रिंव्–वलम् तजिदू कातिबन् फ़रिहानुम् –मक़्बू–ज़तुन् फ़–इन् अमि–न बअ़्–ज़ुकुम् बअ़्–ज़न्फ़ल्यु अद–दिल्लज़ि अ्तुमि–न अमा–न–तहू वल्यत्त–क़िल्ला–ह रब्बहू व ला तक्तुमुश्–शहाद–त व मंय्यक्तुम्हा फ़–इन्नहू आसिमुन् क़ल्बुहू वल्लाहु बिमा तअ़्–मलू–न अ़लीम(283)लिल्लाहि मा फ़िस्समावाति व मा फ़िल्अर्ज़ि व इन् तुब्दू मा फ़ी अन्फ़ुसिकुम् औ तुख़्फ़ूहु युहा–सिब्कुम् बिहिल्लाहु

तो उस एक को दूसरी याद दिलावे और गवाह जब बुलाए जायें तो आने से इन्कार न करें (फ़ा605) और उसे भारी न जानो कि दैन छोटा हो या बड़ा उसकी मीआ़द तक लिखत कर लो यह अल्लाह के नज़दीक ज़्यादा इन्साफ़ की बात है। इसमें गवाही ख़ूब ठीक रहेगी और यह उससे क़रीब है कि तुम्हें शुबहा न पड़े मगर यह कि कोई सरे-दस्त का सौदा दस्त ब-दस्त हो तो उसके न लिखने का तुम पर गुनाह नहीं (फ़ा606) और जब ख़रीद व फ़रोख़्त करो तो गवाह कर लो (फ़ा607) और न किसी लिखने वाले को ज़रर दिया जाए न गवाह को (या न लिखने वाला ज़रर दे न गवाह) (फ़ा608) और जो तुम ऐसा करो तो यह तुम्हारा फ़िस्क़ होगा और अल्लाह से डरो और अल्लाह तुम्हें सिखाता है और अल्लाह सब कुछ जानता है।(282) और अगर तुम सफ़र में हो (फ़ा609) और लिखने वाला न पाओ (फ़ा610) तो गिरो हो क़ब्ज़ा में दिया हुआ (फ़ा611) और अगर तुम में एक को दूसरे पर इत्मीनान हो तो वह जिसे उस ने अमीन समझा था (फ़ा612) अपनी अमानत अदा करदे (फ़ा613) और अल्लाह से डरे जो उसका रब है और गवाही न छुपाओ (फ़ा614) और जो गवाही छुपाएगा तो अन्दर से उसका दिल गुनहगार है (फ़ा615) और अल्लाह तुम्हारे कामों को जानता है।(283) (रुकूअ-7) अल्लाह ही का है जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ ज़मीन में है और अगर तुम ज़ाहिर करो जो कुछ (फ़ा616) तुम्हारे जी में है या छुपाओ अल्लाह तुमसे उसका हिसाब लेगा (फ़ा617)

(फ़ा605) मसलाः इस आयत से मालूम हुआ कि अदाए शहादत फ़र्ज़ है जब मुद्दई गवाहों को तलब करे तो उन्हें गवाही का छुपाना जायज़ नहीं यह हुक्म हुदूद के सिवा और उमूर में है लेकिन हुदूद में गवाह को इज़्हार व इख़्फ़ा का इख़्तियार है बल्कि इख़्फ़ा अफ़ज़ल है। हदीस शरीफ़ में है सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया जो मुसलमान की पर्दा पोशी करे अल्लाह तबारक व तआ़ला दुनिया व आख़िरत में उसकी सत्तारी करेगा लेकिन चोरी में माल लेने की शहादत देना वाजिब है ताकि जिस का माल चोरी गया उसका हक़ तल्फ़ न हो गवाह इतनी एहतियात कर सकता है कि चोरी का लफ़्ज़ न कहे गवाही में यह कहने पर इक्तेफ़ा करे कि यह माल फ़लां शख़्स ने लिया (फ़ा606) चूंकि इस सूरत में लेन देन होकर मुआ़मला ख़त्म हो गया और कोई अन्देशा बाक़ी न रहा नीज़ ऐसी तिजारत और ख़रीद व फ़रोख़्त ब-कसरत जारी रहती है इसमें किताबत व अशहाद की पाबन्दी शाक़ व गिरां होगी। (फ़ा607) यह मुस्तहब है क्योंकि इस में एहतियात है (फ़ा608) *युज़ार्रु* में दो एहतेमाल हैं मजहूल व मअ़रूफ़ होने के, किराअते इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा अव्वल की और किराअ़ते उमर रज़ियल्लाहु अ़न्हु सानी की मुअय्यिद है पहली तक़दीर पर माना यह हैं कि अहले मुआ़मला कातिबों और गवाहों को **(बक़िया सफ़्हा 107 पर)**

فَيَغْفِرُ لِمَنْ يَّشَآءُ وَيُعَذِّبُ مَنْ يَّشَآءُ ؕ وَاللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَىْءٍ قَدِيْرٌ ﴿۲۸۴﴾ اٰمَنَ الرَّسُوْلُ بِمَآ اُنْزِلَ اِلَيْهِ مِنْ رَّبِّهٖ وَالْمُؤْمِنُوْنَ ؕ كُلٌّ اٰمَنَ بِاللّٰهِ وَمَلٰٓئِكَتِهٖ وَكُتُبِهٖ وَرُسُلِهٖ ۟ لَا نُفَرِّقُ بَيْنَ اَحَدٍ مِّنْ رُّسُلِهٖ ۟ وَقَالُوْا سَمِعْنَا وَاَطَعْنَا ۫ غُفْرَانَكَ رَبَّنَا وَاِلَيْكَ الْمَصِيْرُ ﴿۲۸۵﴾ لَا يُكَلِّفُ اللّٰهُ نَفْسًا اِلَّا وُسْعَهَا ؕ لَهَا مَا كَسَبَتْ وَعَلَيْهَا مَا اكْتَسَبَتْ ؕ رَبَّنَا لَا تُؤَاخِذْنَآ اِنْ نَّسِيْنَآ اَوْ اَخْطَاْنَا ۚ رَبَّنَا وَلَا تَحْمِلْ عَلَيْنَآ اِصْرًا كَمَا حَمَلْتَهٗ عَلَى الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِنَا ۚ رَبَّنَا وَلَا تُحَمِّلْنَا مَا لَا طَاقَةَ لَنَا بِهٖ ۚ وَاعْفُ عَنَّا ٝ وَاغْفِرْ لَنَا ٝ وَارْحَمْنَا ٝ اَنْتَ مَوْلٰىنَا فَانْصُرْنَا عَلَى الْقَوْمِ الْكٰفِرِيْنَ ﴿۲۸۶﴾

फ़–यग़्फ़िरु लिमंय्यशाउ व युअ़ज़्ज़िबु मंय्यशाउ वल्लाहु अ़ला कुल्लि शैइन् क़दीर(284)आम–नर्रुसूलु बिमा उन्ज़ि–ल इलैहि मिर्रब्बिही वल्मु–अ्मिनून कुल्लुन् आ–म–न बिल्लाहि व मलाइ–कतिही व कुतुबिही व रुसुलिही ला नुफ़र्रिक़ु बै–न अ–हदिम्–मिर्रुसुलिही व क़ालू समिअ्–ना व अ–तअ्ना ग़ुफ़्रा–न–क रब्बना व इलैकल्मसीर(285)ला युकल्लिफ़ुल्लाहु नफ़्सन् इल्ला वुस्अ़हा लहा मा क–स–बत् व अ़लैहा मक्त–स–बत् रब्बना ला तुआख़िज़्ना इन्नसीना औ अख़्तअ्ना रब्बना व ला तह्मिल् अ़लैना इस्रन् कमा हमल्तहू अ़–लल्लज़ी–न मिन् क़ब्लिना रब्बना व ला तुहम्मिल्ना मा ला ता–क़–त लना बिही वअ्–फ़ु अ़न्ना वग़्फ़िर्–लना वर्हम्ना अन्–त मौलाना फ़न्सुर्ना अ़लल्क़ौमिल्–काफ़िरीन(286)

तो जिसे चाहेगा बख़्शेगा (फ़ा618) और जिसे चाहेगा सज़ा देगा (फ़ा619) और अल्लाह हर चीज़ पर क़ादिर है।(284) रसूल ईमान लाया उस पर जो उसके रब के पास से उस पर उतरा और ईमान वाले सबने माना। (फ़ा620) अल्लाह और उसके फ़रिश्तों और उसकी किताबों और उसके रसूलों को (फ़ा621) यह कहते हुए कि हम उसके किसी रसूल पर ईमान लाने में फ़र्क़ नहीं करते (फ़ा622) और अ़र्ज़ की कि हमने सुना और माना (फ़ा623) तेरी माफ़ी हो ऐ रब हमारे और तेरी ही तरफ़ फिरना है।(285) अल्लाह किसी जान पर बोझ नहीं डालता मगर उसकी ताक़त भर उसका फ़ाइदा है जो अच्छा कमाया और उसका नुक़्सान है जो बुराई कमाई (फ़ा624) ऐ रब हमारे हमें न पकड़ अगर हम भूलें (फ़ा625) या चूकें, ऐ रब हमारे और हम पर भारी बोझ न रख जैसा तूने हमसे अगलों पर रखा था। ऐ रब हमारे और हम पर वह बोझ न डाल जिस की हमें सहार (बरदाश्त) न हो और हमें माफ़ फ़रमा दे और बख़्श दे, और हम पर मेहर कर तू हमारा मौला है तू काफ़िरों पर हमें मदद दे।(286)(रुकूअ़ 7)

(फ़ा618) अपने फ़ज़्ल से अहले ईमान को (फ़ा619) अपने अ़द्ल से। (फ़ा620) ज़ुजाज ने कहा कि जब अल्लाह तआ़ला ने इस सूरत में नमाज़, ज़कात, रोज़े, हज की फ़र्ज़ियत और तलाक़ ईला हैज़ व जेहाद के अहकाम और अम्बिया के वाक़िआ़त बयान फ़रमाए तो सूरत के आख़िर में यह ज़िक्र फ़रमाया कि नबीए करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम और मोमिनीन ने इस तमाम की तस्दीक़ फ़रमाई और क़ुरआन और उसके जुमला शराएअ़. व अहकाम के मुनज़्ज़ल मिनल्लाह होने की तस्दीक़ की (फ़ा621) यह उसूल व ज़रूरियाते ईमान के चार मर्तबे हैं (1) अल्लाह पर ईमान लाना यह इस तरह कि एतेक़ाद व तस्दीक़ करे कि अल्लाह वाहिद अहद है उसका कोई शरीक व नज़ीर नहीं उसके तमाम असमाए हसना व सिफ़ाते उलिया पर ईमान लाए और यक़ीन करे और माने कि वह अ़लीम और हर शय पर क़दीर है और उसके इल्म व क़ुदरत से कोई चीज़ बाहर नहीं (2) मलायका पर ईमान लाना यह इस तरह पर है कि यक़ीन करे और माने कि वह मौजूद हैं मासूम हैं पाक हैं अल्लाह के और उसके रसूलों के दर्मियान अहकाम व प्याम के वसाइत हैं (3) अल्लाह की किताबों पर ईमान लाना इस तरह कि जो किताबें अल्लाह तआ़ला ने नाज़िल फ़रमाईं और अपने रसूलों के पास बतरीक़े वही भेजीं बे शक व शुबहा सब हक़ व सिद्क़ और अल्लाह की तरफ़ से हैं और क़ुरआने करीम तग़ईर तब्दील तहरीफ़ से महफ़ूज़ है और मोहकम और मुतशाबह पर मुश्तमिल है (4) रसूलों पर ईमान लाना इस तरह पर कि ईमान लाए कि वह अल्लाह के रसूल हैं जिन्हें उसने अपने बन्दों की तरफ़ भेजा उसकी वही के अमीन हैं गुनाहों से पाक मासूम हैं सारी ख़ल्क़ से अफ़ज़ल हैं उनमें बाज़ हज़रात बाज़ से अफ़ज़ल हैं (फ़ा622) जैसा कि यहूद व नसारा ने किया कि बाज़ पर ईमान लाए बाज़ का इंकार किया। (फ़ा623) तेरे हुक्म व इरशाद को (फ़ा624) यानी हर जान को अ़मले नेक का अज्र व सवाब और अ़मले बद का अ़ज़ाब व एक़ाब होगा उसके बाद अल्लाह तआ़ला ने अपने मोमिन बन्दों को तरीक़े दुआ की तल्क़ीन फ़रमाई कि वह इस तरह अपने परवरदिगार से अ़र्ज़ करें (फ़ा625) और सह्व से तेरे किसी हुक्म की तामील में क़ासिर रहें।

سُوْرَةُ اٰلِ عِمْرٰنَ مَدَنِیَّةٌ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

الٓمّٓ ۝ اللّٰهُ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ الْحَیُّ الْقَیُّوْمُ ۝ نَزَّلَ عَلَیْكَ الْكِتٰبَ بِالْحَقِّ مُصَدِّقًا لِّمَا بَیْنَ یَدَیْهِ وَاَنْزَلَ التَّوْرٰىةَ وَالْاِنْجِیْلَ ۝ مِنْ قَبْلُ هُدًى
لِّلنَّاسِ وَاَنْزَلَ الْفُرْقَانَ ۝ اِنَّ الَّذِیْنَ كَفَرُوْا بِاٰیٰتِ اللّٰهِ لَهُمْ عَذَابٌ شَدِیْدٌ ؕ وَاللّٰهُ عَزِیْزٌ ذُو انْتِقَامٍ ۝ اِنَّ اللّٰهَ لَا یَخْفٰى عَلَیْهِ شَیْءٌ فِی الْاَرْضِ وَلَا فِی
السَّمَآءِ ۝ هُوَ الَّذِیْ یُصَوِّرُكُمْ فِی الْاَرْحَامِ كَیْفَ یَشَآءُ ؕ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ الْعَزِیْزُ الْحَكِیْمُ ۝ هُوَ الَّذِیْٓ اَنْزَلَ عَلَیْكَ الْكِتٰبَ مِنْهُ اٰیٰتٌ مُّحْكَمٰتٌ
هُنَّ اُمُّ الْكِتٰبِ وَاُخَرُ مُتَشٰبِهٰتٌ ؕ فَاَمَّا الَّذِیْنَ فِیْ قُلُوْبِهِمْ زَیْغٌ فَیَتَّبِعُوْنَ مَا تَشَابَهَ مِنْهُ ابْتِغَآءَ الْفِتْنَةِ وَابْتِغَآءَ تَاْوِیْلِهٖ ۚ وَمَا یَعْلَمُ تَاْوِیْلَهٗٓ اِلَّا
اللّٰهُ ۘ وَالرّٰسِخُوْنَ فِی الْعِلْمِ یَقُوْلُوْنَ اٰمَنَّا بِهٖ ۙ كُلٌّ مِّنْ عِنْدِ رَبِّنَا ۚ وَمَا یَذَّكَّرُ اِلَّآ اُولُوا الْاَلْبَابِ ۝ رَبَّنَا لَا تُزِغْ قُلُوْبَنَا بَعْدَ اِذْ هَدَیْتَنَا وَهَبْ

सूरतु आलि इम्रान

(मदनी है इस सूरह में 200 आयतें और 20 रुकूअ़ हैं)

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम

अलिफ़्–लाम्–मीम्(1)अल्लाहु ला इला–ह इल्ला हु–वल्–हय्युल्क़य्यूम(2)नज़्ज़–ल अ़लैकल्किता–ब बिल्हक़्क़ि मुसद्दि–क़ल्लिमा बै–न यदैहि व अन्ज़लत्तौरा–त वल्–इन्जील(3) मिन् क़ब्लु हुदल्लिन्नासि व अन्ज़–लल्–फ़ुर्क़ान इन्नल्लज़ी–न क–फ़रू बिआयातिल्लाहि लहुम् अ़ज़ाबुन् शदीदुन् वल्लाहु अ़ज़ीज़ुन् ज़ुन्तिक़ाम(4)इन्नल्ला–ह ला यख़्फ़ा अ़लैहि शैउन् फ़िल्अर्ज़ि व ला फ़िस्समा–ई(5)हुवल्लज़ी युसव्विरुकुम् फ़िल्अर्हामि कै–फ़ यशाउ ला इला–ह इल्ला हुवल्–अ़ज़ीज़ुल हकीम(6)हुवल्लजी अन्ज़– ल अ़लैकल्किता–ब मिन्हु आयातुम्–मुह्कमातुन् हुन्–न उम्मुल्–किताबि व उ–ख़रु मु–तशाबिहातुन् फ़–अम्मल्लज़ी–न फ़ी क़ुलूबिहिम् ज़ैग़ुन् फ़यत्तबिऊ–न मा तशा–ब–ह मिन्हुब्तिग़ा–अल्–फ़ित्नति वब्तिग़ा–अ तावी–लिही व मा यअ़्लमु तावी–लहू इल्लल्लाहु वर्रासिख़ू–न फ़िल्–अ़िल्मि यक़ूलू–न आमन्ना बिही कुल्लुम्मिन् अ़िन्दि रब्बिना व मा यज़्ज़क्करु इल्ला उलुल् अल्बाब(7)रब्बना ला तुज़िग़् क़ुलू–बना बअ़्–द इज़् हदै–तना व हब्

अल्लाह के नाम से शुरू जो निहायत मेहरबान रहम वाला।(फ़ा1)

अलिफ़ लाम् मीम्(1) अल्लाह है जिसके सिवा किसी की पूजा नहीं (फ़ा2) आप ज़िन्दा औरों का क़ायम रखने वाला।(2) उसने तुम पर यह सच्ची किताब उतारी अगली किताबों की तस्दीक़ फ़रमाती और उसने इससे पहले तौरेत और इन्जील उतारी।(3)लोगों को राह दिखाती और फ़ैसला उतारा बेशक वह जो अल्लाह की आयतों से मुन्किर हुए(फ़ा3) उनके लिए सख़्त अ़ज़ाब है, और अल्लाह ग़ालिब बदला लेने वाला है।(4)अल्लाह पर कुछ छुपा नहीं ज़मीन में न आसमान में।(5)वही है कि तुम्हारी तस्वीर बनाता है माओं के पेट में जैसी चाहे(फ़ा4) उसके सिवा किसी की इबादत नहीं इज़्ज़त वाला हिकमत वाला।(6) (फ़ा5) वही है जिसने तुम पर यह किताब उतारी इसकी कुछ आयतें साफ़ माना रखती हैं (फ़ा6) वह किताब की अस्ल हैं (फ़ा7) और दूसरी वह हैं जिनके माना में इश्तेबाह है(फ़ा8) वह जिनके दिलों में कजी है (फ़ा9) वह इश्तेबाह वाली के पीछे पड़ते हैं (फ़ा10) गुमराही चाहने (फ़ा11) और उसका पहलू ढूंढने को (फ़ा12) और उसका ठीक पहलू अल्लाह ही को मालूम है (फ़ा13) और पुख़्ता इल्म वाले (फ़ा14) कहते हैं हम उसपर ईमान लाए (फ़ा15) सब हमारे रब के पास से है (फ़ा16) और नसीहत नहीं मानते मगर अ़क़्ल वाले।(7)(फ़ा17) ऐ रब हमारे दिल टेढ़े न कर बाद इसके कि तूने हमें हिदायत दी।

(फ़ा1) सूरह आले इमरान मदीना तय्यबा में नाज़िल हुई इसमें दो सौ आयतें तीन हज़ार चार सौ अस्सी कलिमे चौदह हज़ार पांच सौ बीस हुरूफ़ हैं। (फ़ा2) शाने नुज़ूलः मुफ़स्सिरीन ने फ़रमाया कि यह आयत वफ़्दे नजरान के हक़ में नाज़िल हुई जो साठ सवारों पर मुश्तमिल था उसमें चौदह सरदार थे और तीन उस क़ौम के बड़े अकाबिर व मुक़्तदा **(बक़िया सफ़हा 108 पर)**

لَنَا مِنْ لَّدُنْكَ رَحْمَةً ۚ إِنَّكَ أَنْتَ الْوَهَّابُ ۝ رَبَّنَا إِنَّكَ جَامِعُ النَّاسِ لِيَوْمٍ لَّا رَيْبَ فِيهِ ۚ إِنَّ اللّٰهَ لَا يُخْلِفُ الْمِيعَادَ ۝ إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا
لَنْ تُغْنِيَ عَنْهُمْ أَمْوَالُهُمْ وَلَا أَوْلَادُهُمْ مِّنَ اللّٰهِ شَيْئًا ۖ وَأُولٰئِكَ هُمْ وَقُودُ النَّارِ ۝ كَدَأْبِ آلِ فِرْعَوْنَ ۙ وَالَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ ۚ كَذَّبُوا بِآيَاتِنَا
فَأَخَذَهُمُ اللّٰهُ بِذُنُوبِهِمْ ۗ وَاللّٰهُ شَدِيدُ الْعِقَابِ ۝ قُلْ لِّلَّذِينَ كَفَرُوا سَتُغْلَبُونَ وَتُحْشَرُونَ إِلَىٰ جَهَنَّمَ ۚ وَبِئْسَ الْمِهَادُ ۝ قَدْ كَانَ لَكُمْ آيَةٌ
فِي فِئَتَيْنِ الْتَقَتَا ۖ فِئَةٌ تُقَاتِلُ فِي سَبِيلِ اللّٰهِ وَأُخْرَىٰ كَافِرَةٌ يَرَوْنَهُمْ مِّثْلَيْهِمْ رَأْيَ الْعَيْنِ ۚ وَاللّٰهُ يُؤَيِّدُ بِنَصْرِهِ مَنْ يَشَاءُ ۗ إِنَّ فِي ذٰلِكَ لَعِبْرَةً
لِّأُولِي الْأَبْصَارِ ۝ زُيِّنَ لِلنَّاسِ حُبُّ الشَّهَوَاتِ مِنَ النِّسَاءِ وَالْبَنِينَ وَالْقَنَاطِيرِ الْمُقَنْطَرَةِ مِنَ الذَّهَبِ وَالْفِضَّةِ وَالْخَيْلِ الْمُسَوَّمَةِ وَ

लना मिल्लदुन्–क रह़्मतन् इन्न–क अन्तल्वह्हाब(8)रब्बना इन्न–क जामिउन्नासि लियौमिल्ला रै–ब फ़ीहि इन्नल्ला–ह ला युख़लिफ़ुल मीआद(9)इन्न–ल्लज़ी–न क–फ़रू लन् तुग़्नि–य अ़न्हुम् अम्वालुहुम् व ला औलादुहुम् मिनल्लाहि शैअन् व उलाइ–क हुम् वक़ूदुन्नार(10) क–दअ्बि आलि फ़िर्औ़न वल्लज़ी–न मिन् क़ब्लिहिम् कज़्ज़बू बिआयातिना फ़–अ–ख़– जहुमु–ल्लाहु ब–ज़ुनूबिहिम् वल्लाहु शदीदुल्–इ़क़ाब(11)क़ुल् लिल्लजी–न क–फ़रू सतुग़्–लबू–न व तुह़्शरू–न इला जहन्न–म व बिअ्–सल्मिहाद(12)क़द् का–न लकुम् आ–यतुन् फ़ी फ़ि–अतैनिल्–त–क़ता फ़ि–अतुन् तुक़ातिलु फ़ी सबीलिल्लाहि व उख़्रा काफ़ि–रतुंय्यरौ–नहुम् मिस्लैहिम् रअ्यल्–अ़ैनि वल्लाहु यु–अय्यिदु बि–नस्रिही मंय्यशाउ इन्–न फ़ी ज़ालि–क लअ़िब्–रतल्लि–उलिल्–अब्सार(13)ज़ुय्यि–न लिन्नासि हुब्बुश्–श–हवाति मिनन्निसा–इ वल्बनी–न वल्क़ना–तीरिल्– मुक़न्त–रति मिनज़्ज़–हबि वल्फ़िज़्ज़ति वल्–ख़ैलिल्–मुसव्वमति वल्

और हमें अपने पास से रहमत अ़ता कर बेशक तू है बड़ा देने वाला।(8) ऐ रब हमारे बेशक तू सब लोगों को जमा करने वाला है (फ़ा18) उस दिन के लिए जिसमें कोई शुबहा नहीं (फ़ा19) बेशक अल्लाह का वादा नहीं बदलता।(9)(फ़ा20) (रुकूअ़- 9) बेशक वह जो काफ़िर हुए (फ़ा21) उनके माल और उनकी औलाद अल्लाह से उन्हें कुछ न बचा सकेंगे और वही दोज़ख़ के ईंधन हैं।(10) जैसे फ़िरऔ़न वालों और उनसे अगलों का तरीक़ा उन्होंने हमारी आयतें झुटलाईं तो अल्लाह ने उनके गुनाहों पर उनको पकड़ा और अल्लाह का अ़ज़ाब सख़्त।(11) फ़रमा दो काफ़िरों से कोई दम जाता है कि तुम मग़लूब होगे और दोज़ख़ की तरफ़ हांके जाओगे (फ़ा22) और वह बहुत ही बुरा बिछौना।(12) बेशक तुम्हारे लिए निशानी थी (फ़ा23) दो गरोहों में जो आपस में भिड़ पड़े। (फ़ा24) एक जत्था अल्लाह की राह में लड़ता (फ़ा25) और दूसरा काफ़िर (फ़ा26) कि उन्हें आँखों देखा अपने से दूना समझें और अल्लाह अपनी मदद से ज़ोर देता है जिसे चाहता है (फ़ा27) बेशक इसमें अ़क़्लमन्दों के लिए ज़रूर देख कर सीखना है।(13) लोगों के लिए आरास्ता की गई उन ख़्वाहिशों की मुहब्बत (फ़ा28) औ़रतें और बेटे और तले ऊपर सोने चांदी के ढेर और निशान किये हुए घोड़े और

(फ़ा18) हिसाब या जज़ा के वास्ते (फ़ा19) वह रोज़े क़ियामत है। (फ़ा20) तो जिसके दिल में कजी हो वह हलाक होगा और जो तेरे मन्नत व एहसान से हिदायत पाए वह सईद होगा नजात पाएगा। मसला इस आयत से मालूम हुआ कि किज़्ब मनाफ़ीए उलूहियत है लिहाज़ा हज़रत क़ुद्दूस क़दीर का किज़्ब मुहाल और उसकी तरफ़ उसकी निस्बत सख़्त बे अदबी (मदारिक व अबू मसऊद वग़ैरह) (फ़ा21) रसूले अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से मुनहरिफ़ होकर। (फ़ा22) शाने नुज़ूलः हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा से मरवी है कि जब बदर में कुफ़्फ़ार को रसूले अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम शिकस्त देकर मदीना तय्यबा वापस हुए तो हुज़ूर ने यहूद को जमा करके फ़रमाया कि तुम अल्लाह से डरो और इससे पहले इस्लाम लाओ कि तुम पर ऐसी मुसीबत नाज़िल हो जैसी बदर में क़ुरैश पर हुई तुम जान चुके हो मैं नबीए मुरसल हूं तुम अपनी किताब में यह लिखा पाते हो इस पर उन्होंने कहा कि क़ुरैश तो फ़ुनूने हरब से ना-आश्ना हैं अगर हम से मुक़ाबला हुआ तो आपको मालूम हो जाएगा कि लड़ने वाले ऐसे होते हैं इस पर यह आयते करीमा नाज़िल हुई और उन्हें ख़बर दी गई कि वह मग़लूब होंगे और क़त्ल किये जायेंगे गिरिफ़्तार किये जायेंगे उन पर जिज़्या मुक़र्रर होगा चुनान्चे ऐसा ही हुआ कि नबीए करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने एक रोज़ में छः सौ की तादाद को क़त्ल फ़रमाया और बहुतों को गिरिफ़्तार किया और अहले ख़ैबर पर जिज़्या मुक़र्रर फ़रमाया। (फ़ा23) इसके मुख़ातिब यहूद हैं और बाज़ के नज़दीक तमाम कुफ़्फ़ार और बाज़ के नज़दीक मोमिनीन (जुमल) (फ़ा24) जंगे बदर में (फ़ा25) यानी नबीए करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम और आप के असहाब (बक़िया सफ़हा 104 पर)

الْأَنْعَامِ وَالْحَرْثِ ۗ ذَٰلِكَ مَتَاعُ الْحَيَاةِ الدُّنْيَا ۖ وَاللَّهُ عِنْدَهُ حُسْنُ الْمَآبِ ﴿١٤﴾ قُلْ أَؤُنَبِّئُكُمْ بِخَيْرٍ مِنْ ذَٰلِكُمْ ۚ لِلَّذِينَ اتَّقَوْا عِنْدَ رَبِّهِمْ
جَنَّاتٌ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا وَأَزْوَاجٌ مُطَهَّرَةٌ وَرِضْوَانٌ مِنَ اللَّهِ ۗ وَاللَّهُ بَصِيرٌ بِالْعِبَادِ ﴿١٥﴾ الَّذِينَ يَقُولُونَ رَبَّنَا إِنَّنَا آمَنَّا
فَاغْفِرْ لَنَا ذُنُوبَنَا وَقِنَا عَذَابَ النَّارِ ﴿١٦﴾ الصَّابِرِينَ وَالصَّادِقِينَ وَالْقَانِتِينَ وَالْمُنْفِقِينَ وَالْمُسْتَغْفِرِينَ بِالْأَسْحَارِ ﴿١٧﴾ شَهِدَ اللَّهُ أَنَّهُ لَا إِلَٰهَ إِلَّا هُوَ وَ
الْمَلَائِكَةُ وَأُولُو الْعِلْمِ قَائِمًا بِالْقِسْطِ ۚ لَا إِلَٰهَ إِلَّا هُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ﴿١٨﴾ إِنَّ الدِّينَ عِنْدَ اللَّهِ الْإِسْلَامُ ۗ وَمَا اخْتَلَفَ الَّذِينَ أُوتُوا الْكِتَابَ إِلَّا مِنْ بَعْدِ
مَا جَاءَهُمُ الْعِلْمُ بَغْيًا بَيْنَهُمْ ۗ وَمَنْ يَكْفُرْ بِآيَاتِ اللَّهِ فَإِنَّ اللَّهَ سَرِيعُ الْحِسَابِ ﴿١٩﴾ فَإِنْ حَاجُّوكَ فَقُلْ أَسْلَمْتُ وَجْهِيَ لِلَّهِ وَمَنِ اتَّبَعَنِ ۗ

अन्आमि वल्हर्सि ज़ालि–क मताअुल्–ह़यातिद्दुन्या वल्लाहु अ़िन्दहू हुस्नुल्–मआब(14)कुल् अ–उनब्बिउकुम् बि–ख़ैरिम्मिन् ज़ालिकुम् लिल्लज़ी–नत्तक़ौ अ़िन्–द रब्बिहिम् जन्नातुन् तजरी मिन् तह़्तिहल्–अन्हारु ख़ालिदी–न फ़ीहा व अज़्वाजुम्–मुतह्ह–रतुंव् व रिज़्वानुम् मिनल्लाहि वल्लाहु बसीरुम् बिल्अ़िबाद(15)अल्लज़ी–न यक़ूलू–न रब्बना इन्नना आमन्ना फ़ग़्फ़िर्–लना ज़ुनू–बना व क़िना अ़ज़ाबन्नार(16)अस्साबिरी–न वस्सादिक़ी–न वल्क़ानिती–न वल्मुन्फ़िक़ी–न वल्मुस्तग़्फ़िरी–न बिल्अस्ह़ार(17)शहिदल्लाहु अन्नहू ला इला–ह इल्ला हुव वल्मलाइ–कतु व उलुल्अ़िल्मि क़ाइ–मम्–बिल–क़िस्ति ला इला–ह इल्ला हुवल्–अ़ज़ीज़ुल् ह़कीम(18)इन्नद्दी–न अ़िन्दल्लाहिल्–इस्लामु व मख़्त–ल–फ़ल्लज़ी–न ऊतुल्किता–ब इल्ला मिम्बअ़्दि मा जा–अ हुमुल्अ़िल्मु बग़्यम् बै–नहुम् व मंय्यक्फ़ुर् बिआयातिल्लाहि फ़–इन्नल्ला–ह सरीअ़ुल्–ह़िसाब(19) फ़–इन् ह़ाज्जू–क फ़–क़ुल् अस्लम्तु वज्हि–य लिल्लाहि व मनित्त–ब–अ़नि

चौपाए और खेती यह जीती दुनिया की पूंजी है (फ़ा29) और अल्लाह है जिसके पास अच्छा ठिकाना।(14) (फ़ा30) तुम फ़रमाओ क्या मैं तुम्हें इससे (फ़ा31) बेहतर चीज़ बता दूं परहेज़गारों के लिए उनके रब के पास जन्नतें हैं जिनके नीचे नहरें रवां हमेशा उनमें रहेंगे और सुथरी बीबियां (फ़ा32) और अल्लाह की ख़ुशनूदी (फ़ा33) और अल्लाह बन्दों को देखता है।(15) (फ़ा34) वह जो कहते हैं ऐ रब हमारे हम ईमान लाए तू हमारे गुनाह माफ़ कर और हमें दोज़ख़ के अ़ज़ाब से बचा ले।(16) सब्र वाले (फ़ा35) और सच्चे (फ़ा36) और अदब वाले और राहे ख़ुदा में ख़रचने वाले और पिछले पहर से माफ़ी मांगने वाले।(17) (फ़ा37)अल्लाह ने गवाही दी कि उसके सिवा कोई मअ़्बूद नहीं (फ़ा38) और फ़रिश्तों ने और आ़लिमों ने (फ़ा39) इन्साफ़ से क़ाइम होकर उसके सिवा किसी की इबादत नहीं इज़्ज़त वाला हिकमत वाला।(18) बेशक अल्लाह के यहां इस्लाम ही दीन है (फ़ा40) और फूट में न पड़े किताबी (फ़ा41) मगर बाद इसके कि उन्हें इल्म आ चुका (फ़ा42) अपने दिलों की जलन से (फ़ा43) और जो अल्लाह की आयतों का मुन्किर हो तो बेशक अल्लाह जल्द हिसाब लेने वाला है।(19) फिर ऐ महबूब अगर वह तुमसे हुज्जत करें तो फ़रमा दो मैं अपना मुंह अल्लाह के हुज़ूर झुकाए हूं

(फ़ा29) इससे कुछ अ़र्सा नफ़ा पहुंचता है फिर फ़ना हो जाती है इंसान को चाहिये कि मताअ़े दुनिया को ऐसे काम में ख़र्च करे जिसमें उसकी आ़क़िबत की दुरुस्ती और सआ़दते आख़िरत हो। (फ़ा30) जन्नत तो चाहिये कि उसकी रग़बत की जाए और दुनियाए नापाएदार की फ़ानी मरग़ूबात से दिल न लगाया जाए। (फ़ा31) मताअ़े दुनिया से। (फ़ा32) जो ज़नाना अ़वारिज़ और हर ना–पसन्द व क़ाबिले नफ़रत चीज़ से पाक। (फ़ा33) और यह सब से आला नेअ़्मत है। (फ़ा34) और उनके आमाल व अहवाल जानता और उनकी जज़ा देता है। (फ़ा35) जो ताअ़तों और मुसीबतों पर सब्र करें और गुनाहों से बाज़ रहें। (फ़ा36) जिनके क़ौल और इरादे और नीयतें सब सच्ची हों। (फ़ा37) इसमें आख़िर शब में नमाज़ पढ़ने वाले भी दाख़िल हैं और वक़्ते सहर के दुआ़ व इस्तिग़फ़ार करने वाले भी यह वक़्ते ख़लवत व इजाबते दुआ़ का है। हज़रत लुक़मान अ़लैहिस्सलाम ने अपने फ़रज़न्द से फ़रमाया मुर्ग़ से कम न रहना कि वह तो सहर से निदा करे और तुम सोते रहो। (फ़ा38) शाने नुज़ूलः अहबारे शाम में से दो शख़्स सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुए जब उन्होंने मदीना तय्यबा देखा तो एक दूसरे से कहने लगा कि नबीए आख़िरुज़्ज़मां के शहर की यही सिफ़त है, जो इस शहर में पाई जाती है जब आस्तानए अक़दस पर हाज़िर हुए तो उन्होंने हुज़ूर के शक्ल व शमाइल तौरेत के मुताबिक़ देख कर हुज़ूर को पहचान लिया और अ़र्ज़ किया आप मुहम्मद हैं हुज़ूर ने फ़रमाया हां फिर अ़र्ज़ किया कि आप अहमद हैं (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) फ़रमाया हां अ़र्ज़ किया हम एक सवाल करते हैं अगर आपने ठीक जवाब दे दिया तो हम आप पर ईमान ले आयेंगे फ़रमाया सवाल **(बक़िया सफ़हा 106 पर)**

وَقُلْ لِّلَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ وَالْاُمِّيّٖنَ ءَاَسْلَمْتُمْ ؕ فَاِنْ اَسْلَمُوْا فَقَدِ اهْتَدَوْا ۚ وَاِنْ تَوَلَّوْا فَاِنَّمَا عَلَيْكَ الْبَلٰغُ ؕ وَاللّٰهُ بَصِيْرٌۢ بِالْعِبَادِ ﴿۲۰﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ يَكْفُرُوْنَ بِاٰيٰتِ اللّٰهِ وَيَقْتُلُوْنَ النَّبِيّٖنَ بِغَيْرِ حَقٍّ ۙ وَّيَقْتُلُوْنَ الَّذِيْنَ يَاْمُرُوْنَ بِالْقِسْطِ مِنَ النَّاسِ ۙ فَبَشِّرْهُمْ بِعَذَابٍ اَلِيْمٍ ﴿۲۱﴾ اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ حَبِطَتْ اَعْمَالُهُمْ فِى الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ ؗ وَمَا لَهُمْ مِّنْ نّٰصِرِيْنَ ﴿۲۲﴾ اَلَمْ تَرَ اِلَى الَّذِيْنَ اُوْتُوْا نَصِيْبًا مِّنَ الْكِتٰبِ يُدْعَوْنَ اِلٰى كِتٰبِ اللّٰهِ لِيَحْكُمَ بَيْنَهُمْ ثُمَّ يَتَوَلّٰى فَرِيْقٌ مِّنْهُمْ وَهُمْ مُّعْرِضُوْنَ ﴿۲۳﴾ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ قَالُوْا لَنْ تَمَسَّنَا النَّارُ اِلَّآ اَيَّامًا مَّعْدُوْدٰتٍ ۪ وَغَرَّهُمْ فِىْ دِيْنِهِمْ مَّا كَانُوْا يَفْتَرُوْنَ ﴿۲۴﴾ فَكَيْفَ اِذَا جَمَعْنٰهُمْ لِيَوْمٍ لَّا رَيْبَ فِيْهِ ۟ وَوُفِّيَتْ كُلُّ نَفْسٍ مَّا كَسَبَتْ وَهُمْ لَا يُظْلَمُوْنَ ﴿۲۵﴾ قُلِ اللّٰهُمَّ مٰلِكَ الْمُلْكِ تُؤْتِى الْمُلْكَ

व कुल् लिल्लज़ी–न ऊतुल्किता–ब वल्–उम्मीय्यी–न अ–अस्लम्तुम् फ़–इन् अस्लमू फ़–क़दिह्तदौ व इन् तवल्लौ फ़–इन्नमा अ़लैकल् बलागु वल्लाहु बसीरुम् बिल्अिबाद(20)इन्नल्लज़ी–न यक्फ़ुरू–न बिआयातिल्लाहि व यक़्तुलूनन्नबिय्यी–न बिग़ैरि ह़क़्क़िंव्–व यक़्तुलूनल्लज़ी–न यअ्मुरू–न बिल्क़िस्ति मिनन्नासि फ़–बश्शिर्हुम् बि–अ़ज़ाबिन् अलीम(21)उलाइ–कल्लज़ी–न ह़बितत् अअ्–मालुहुम् फ़िद्दुन्या वल्–आख़िरति व मा लहुम् मिन्–नासिरीन(22)अ–लम् त–र इलल्लज़ी–न ऊतू नसीबम् मिनल्किताबि युद्औ–न इला किताबिल्लाहि लि–यह्कु–म बै–नहुम् सुम्–म य–त–वल्ला फ़रीक़ुम्–मिन्हुम् व हुम् मुअ्–रिजू़न(23)ज़ालि–क बि–अन्नहुम् क़ालू लन् त–मस्स–न्नारु इल्ला अय्यामम् मअ्दूदातिन् व ग़र्रहुम् फ़ी दीनिहिम् मा कानू यफ़्तरून(24) फ़कै–फ़ इजा ज– मअ्–नाहुम् लियौमिल्–लारै–ब फ़ीहि व वुफ़्फ़ियत् कुल्लु नफ़्सिम्मा क–स–बत् व हुम् ला युज्लमून(25)कुलिल्लाहुम्–म मालिकल्मुल्कि तुअ्तिल्मुल्–क

और जो मेरे पैरौ हुए (फ़ा44) और किताबियों और अनपढ़ों से फ़रमाओ (फ़ा45) क्या तुमने गर्दन रखी (फ़ा46) पस अगर वह गर्दन रखें जब तो राह पा गए और अगर मुंह फेरें तो तुम पर तो यही हुक्म पहुंचा देना है (फ़ा47) और अल्लाह बन्दों को देख रहा है।(20) (रुकूअ़ 10) वह जो अल्लाह की आयतों से मुन्किर होते और पैग़म्बरों को नाहक़ शहीद करते (फ़ा48) और इन्साफ़ का हुक्म करने वालों को क़त्ल करते हैं उन्हें ख़ुशख़बरी दो दर्दनाक अ़ज़ाब की।(21) यह हैं वह जिनके अमल अकारत गए दुनिया व आख़िरत में (फ़ा49) और उनका कोई मददगार नहीं।(22) (फ़ा50)क्या तुमने उन्हें न देखा जिन्हें किताब का एक हिस्सा मिला (फ़ा51) किताबुल्लाह की तरफ़ बुलाए जाते हैं कि वह उनका फ़ैसला करे फिर उनमें का एक गरोह उससे रूगरदां होकर फिर जाता है।(23) (फ़ा52) यह जुरअत (फ़ा53) उन्हें इस लिए हुई कि वह कहते हैं हरगिज़ हमें आग न छूएगी मगर गिनती के दिनों (फ़ा54) और उनके दीन में उन्हें फ़रेब दिया उस झूट ने जो बांधते थे।(24) (फ़ा55) तो कैसी होगी जब हम उन्हें इकट्ठा करेंगे उस दिन के लिए जिसमें शक नहीं (फ़ा56) और हर जान को उसकी कमाई पूरी भर दी जाएगी और उन पर ज़ुल्म न होगा।(25) यूं अ़र्ज़ कर ऐ अल्लाह मुल्क के मालिक तू जिसे चाहे सल्तनत दे

(फ़ा44) यानी मैं और मेरे मुत्तबेईन हमा तन अल्लाह तआ़ला के फ़रमांबरदार और मुतीअ़ हैं हमारा दीन दीने तौहीद है जिसकी सेहत तुम्हें ख़ुद अपनी किताबों से भी साबित हो चुकी है तो इसमें तुम्हारा हम से झगड़ा करना बिल्कुल बातिल है। (फ़ा45) जितने काफ़िर ग़ैर किताबी हैं वह उम्मीईन में दाख़िल हैं उन्हीं में से अ़रब के मुशरिकीन भी हैं। (फ़ा46) और दीने इस्लाम के हुज़ूर सरे नियाज़ ख़म किया या बावजूद बराहीने मुबय्येना क़ायम होने के तुम अभी तक अपने कुफ़्र पर हो यह दावते इस्लाम का एक पैराया है और इस तरह उन्हें दीने हक़ की तरफ़ बुलाया जाता है। (फ़ा47) वह तुम ने पूरा कर ही दिया इससे उन्होंने नफ़ा न उठाया तो नक़सान में वह रहे इसमें हुज़ूर सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की तस्कीने ख़ातिर है कि आप उनके ईमान न लाने से रंजीदा न हों। (फ़ा48) जैसा कि बनी इसराईल ने सुबह को एक साअ़त के अन्दर तैंतालीस नबियों को क़त्ल किया फिर जब उन में से एक सौ बारह आ़बिदों ने उठ कर उन्हें नेकियों का हुक्म दिया और बदियों से मना किया तो उसी रोज़ शाम को उन्हें भी क़त्ल कर दिया इस आयत में सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के ज़माना के यहूद को तौबीख़ है क्योंकि वह अपने आबा व अजदाद के ऐसे बद-तरीन फ़ेअ़ल से राज़ी हैं। (फ़ा49) मसलाः इस आयत से मालूम हुआ कि अम्बिया की जनाब में बे-अदबी कुफ़्र है और यह भी कि कुफ़्र से तमाम आमाल अकारत हो जाते हैं (फ़ा50) कि उन्हें अ़ज़ाबे इलाही से बचाए (फ़ा51) यानी यहूद को कि उन्हें तौरेत शरीफ़ के उलूम व अहकाम सिखाए गए थे जिन **(बकिया सफ़हा 107 पर)**

مَنْ تَشَآءُ وَتَنْزِعُ الْمُلْكَ مِمَّنْ تَشَآءُ ۖ وَتُعِزُّ مَنْ تَشَآءُ وَتُذِلُّ مَنْ تَشَآءُ ۖ بِيَدِكَ الْخَيْرُ ۖ إِنَّكَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ۝ تُولِجُ اللَّيْلَ فِي النَّهَارِ وَتُولِجُ النَّهَارَ فِي اللَّيْلِ ۖ وَتُخْرِجُ الْحَيَّ مِنَ الْمَيِّتِ وَتُخْرِجُ الْمَيِّتَ مِنَ الْحَيِّ ۖ وَتَرْزُقُ مَنْ تَشَآءُ بِغَيْرِ حِسَابٍ ۝ لَا يَتَّخِذِ الْمُؤْمِنُونَ الْكٰفِرِينَ أَوْلِيَآءَ مِنْ دُونِ الْمُؤْمِنِينَ ۖ وَمَنْ يَفْعَلْ ذٰلِكَ فَلَيْسَ مِنَ اللّٰهِ فِي شَيْءٍ إِلَّآ أَنْ تَتَّقُوا مِنْهُمْ تُقٰىةً ۗ وَيُحَذِّرُكُمُ اللّٰهُ نَفْسَهُ ۗ وَإِلَى اللّٰهِ الْمَصِيرُ ۝ قُلْ إِنْ تُخْفُوا مَا فِي صُدُورِكُمْ أَوْ تُبْدُوهُ يَعْلَمْهُ اللّٰهُ ۗ وَيَعْلَمُ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ ۗ وَاللّٰهُ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ۝ يَوْمَ تَجِدُ كُلُّ نَفْسٍ مَّا عَمِلَتْ مِنْ خَيْرٍ مُّحْضَرًا ۖ وَمَا عَمِلَتْ مِنْ سُوٓءٍ ۚ تَوَدُّ لَوْ أَنَّ بَيْنَهَا وَبَيْنَهُۥٓ أَمَدًۢا بَعِيدًا ۗ وَيُحَذِّرُكُمُ اللّٰهُ نَفْسَهُ ۗ وَاللّٰهُ رَءُوفٌۢ بِالْعِبَادِ ۝

मन् तशाउ व तन्ज़िअुल्मुल्–क मिम्मन् तशाउ व तुअ़िज्ज़ु मन् तशाउ व तुजिल्लु मन् तशाउ बि–यदिकल्ख़ैरु इन्न–क अ़ला कुल्लि शैइन् क़दीर(26)तूलिजुल्लै–ल फ़िन्नहारि व तूलिजुन्नहा–र फ़िल्लैलि व तुख़्रिजुल्–हय्–य मिनल्मय्यिति व तुख़्रिजुल्–मय्यि–त मिनल्हय्यि व तर्ज़ुक़ु मन् तशाउ बिग़ैरि हिसाब(27)ला यत्तख़िज़िल्–मुअ्मिनूनल्–काफ़िरी–न औलिया–अ मिन्दूनिल्–मुअ्मिनीन व मंय्यफ़्अ़ल् ज़ालि–क फ़लै–स मिनल्लाहि फ़ी शैइन् इल्ला अन् तत्तक़ू मिन्हुम् तुक़ातन् व यु–हज़्ज़िरुकुमुल्लाहु नफ़्सहू व इलल्लाहिल्मसीर(28)क़ुल् इन् तुख़्फ़ू मा फ़ी सुदूरिकुम् औ तुब्दूहु यअ़्–लम्हुल्लाहु व यअ़्–लमु मा फ़िस्समावाति व मा फ़िल्–अर्ज़ि वल्लाहु अ़ला कुल्लि शैइन् क़दीर(29)यौ–म तजिदु कुल्लु नफ़्सिम्–मा अ़मिलत् मिन् ख़ैरिम्–मुह्ज़रंव् व मा अ़मिलत् मिन् सूइन् त–वद्दु लौ अन्–न बै–नहा व बै–नहू अ–म–दम् बअ़ीदन् व यु–हज़्ज़ि–रुकुमुल्लाहु नफ़्सहू वल्लाहु रऊफ़ुम्–बिल्अ़िबाद(30)

और जिससे चाहे सल्तनत छीन ले और जिसे चाहे इज़्ज़त दे और जिसे चाहे ज़िल्लत दे सारी भलाई तेरे ही हाथ है बेशक तू सब कुछ कर सकता है।(26) (फ़ा57) तू दिन का हिस्सा रात में डाले और रात का हिस्सा दिन में डाले (फ़ा58) और मुर्दा से ज़िन्दा निकाले और ज़िन्दा से मुर्दा निकाले (फ़ा59) और जिसे चाहे बे गिनती दे।(27) मुसलमान काफ़िरों को अपना दोस्त न बना लें मुसलमानों के सिवा (फ़ा60) और जो ऐसा करेगा उसे अल्लाह से कुछ इलाक़ा न रहा मगर यह कि तुम उनसे कुछ डरो (फ़ा61) और अल्लाह तुम्हें अपने ग़ज़ब से डराता है और अल्लाह ही की तरफ़ फिरना है। (28) तुम फ़रमा दो कि अगर तुम अपने जी की बात छुपाओ या ज़ाहिर करो अल्लाह को सब मालूम है, और जानता है जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ ज़मीन में है और हर चीज़ पर अल्लाह का क़ाबू है।(29) जिस दिन हर जान ने जो भला काम किया हाज़िर पाएगी (फ़ा62) और जो बुरा काम किया उम्मीद करेगी काश मुझमें और इसमें दूर का फ़ासिला होता (फ़ा63) और अल्लाह तुम्हें अपने अ़ज़ाब से डराता है और अल्लाह बन्दों पर मेहरबान है।(30)(रुकूअ़ 11)

(फ़ा57) शाने नु.ज़ूलः फ़तहे मक्का के वक़्त सय्यदे अम्बिया सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने अपनी उम्मत को मुल्के फ़ारस व रूम की सल्तनत का वादा दिया तो यहूद व मुनाफ़िक़ीन ने उसको बहुत बईद समझा और कहने लगे कहां मुहम्मद मुस्तफ़ा (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) और कहां फ़ारस व रूम के मुल्क, वह बड़े ज़बरदस्त और निहायत महफ़ूज़ हैं इस पर यह आयते करीमा नाज़िल हुई और आख़िरकार हुज़ूर का वह वादा पूरा होकर रहा। (फ़ा58) यानी कभी रात को बढ़ाए दिन को घटाए और कभी दिन को बढ़ा कर रात को घटाए यह तेरी क़ुदरत है तो फ़ारस व रूम से मुल्क लेकर गुलामाने मुस्तफ़ा (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) को अ़ता करना उसकी क़ुदरत से क्या बईद है। (फ़ा59) ज़िन्दे से मुर्दे का निकालना इस तरह है जैसे कि ज़िन्दा इंसान को नुत्फ़ए बेजान से और परिन्द के ज़िन्दा बच्चे को बे रूह अन्डे से और ज़िन्दा दिल मोमिन को मुर्दा दिल काफ़िर से और ज़िन्दा से मुर्दा निकालना इस तरह जैसे कि ज़िन्दा इंसान से नुत्फ़ए बेजान और ज़िन्दा परिन्द से बेजान अन्डा और ज़िन्दा दिल ईमानदार से मुर्दा दिल काफ़िर। (फ़ा60) शाने नुज़ूलः हज़रत उ़बादा इब्ने सामत ने जंगे अहज़ाब के दिन सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से अ़र्ज़ किया कि मेरे साथ पांच सौ यहूदी हैं जो मेरे हलीफ़ हैं मेरी राय है कि मैं दुश्मन के मुक़ाबिल उनसे मदद हासिल करूं इस पर यह आयते करीमा नाज़िल हुई और काफ़िरों को दोस्त और मददगार बनाने की मुमानअ़त फ़रमाई गई। (फ़ा61) कुफ़्फ़ार से दोस्ती व मुहब्बत ममनूअ़ व हराम है उन्हें राज़दार बनाना उन से मवालात करना नाजायज़ है अगर जान या माल का ख़ौफ़ हो तो ऐसे वक़्त सिर्फ़ ज़ाहिरी बरताव जायज़ है। (फ़ा62) यानी रोज़े क़ियामत हर नफ़्स को आमाल की जज़ा मिलेगी और उसमें कुछ कमी व कोताही न होगी। (फ़ा63) यानी मैंने यह बुरा काम न किया होता।

قُلْ إِنْ كُنْتُمْ تُحِبُّونَ اللّٰهَ فَاتَّبِعُونِي يُحْبِبْكُمُ اللّٰهُ وَيَغْفِرْ لَكُمْ ذُنُوبَكُمْ ۗ وَاللّٰهُ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ﴿٣١﴾ قُلْ أَطِيعُوا اللّٰهَ وَالرَّسُولَ ۖ فَإِنْ
تَوَلَّوْا فَإِنَّ اللّٰهَ لَا يُحِبُّ الْكَافِرِينَ ﴿٣٢﴾ إِنَّ اللّٰهَ اصْطَفَىٰ آدَمَ وَنُوحًا وَآلَ إِبْرَاهِيمَ وَآلَ عِمْرَانَ عَلَى الْعَالَمِينَ ﴿٣٣﴾ ذُرِّيَّةً بَعْضُهَا مِنْ بَعْضٍ ۗ
وَاللّٰهُ سَمِيعٌ عَلِيمٌ ﴿٣٤﴾ إِذْ قَالَتِ امْرَأَتُ عِمْرَانَ رَبِّ إِنِّي نَذَرْتُ لَكَ مَا فِي بَطْنِي مُحَرَّرًا فَتَقَبَّلْ مِنِّي ۖ إِنَّكَ أَنْتَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ ﴿٣٥﴾
فَلَمَّا وَضَعَتْهَا قَالَتْ رَبِّ إِنِّي وَضَعْتُهَا أُنْثَىٰ وَاللّٰهُ أَعْلَمُ بِمَا وَضَعَتْ وَلَيْسَ الذَّكَرُ كَالْأُنْثَىٰ ۖ وَإِنِّي سَمَّيْتُهَا مَرْيَمَ وَإِنِّي أُعِيذُهَا بِكَ
وَذُرِّيَّتَهَا مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ ﴿٣٦﴾ فَتَقَبَّلَهَا رَبُّهَا بِقَبُولٍ حَسَنٍ وَأَنْبَتَهَا نَبَاتًا حَسَنًا وَكَفَّلَهَا زَكَرِيَّا ۖ كُلَّمَا دَخَلَ عَلَيْهَا زَكَرِيَّا

कुल् इन् कुन्तुम् तुहिब्बूनल्ला–ह फ़त्तबिऊनी युह्बिब्कुमुल्लाहु व यग़्फ़िर्–लकुम् ज़ुनू–बकुम् वल्लाहु ग़फ़ूरुर्रहीम(31)कुल् अतीउल्ला–ह वर्रसू–ल फ़–इन् तवल्लौ फ़–इन्नल्ला–ह ला युहिब्बुल्–काफ़िरीन(32)इन्नल्लाहस्–तफ़ा आ–द–म व नूहंव्–व आ–ल इब्राही–म व आ–ल अिम्रा–न अ़–लल्आ़–लमीन(33)ज़ुर्रिय्यतम् बअ़्–ज़ुहा मिम्बअ़्–ज़िन् वल्लाहु समीअुन् अ़लीम(34)इज़् क़ा–लतिम्–र–अतु अिम्रा–न रब्बि इन्नी नज़र्तु ल–क मा फ़ी बत़्नी मुहर्ररन् फ़–त–क़ब्बल् मिन्नी इन्न–क अन्तस्–समीअुल्–अ़लीम(35)फ़–लम्मा व–ज़–अ़त्हा क़ालत् रब्बि इन्नी वज़अ़्–तुहा उन्सा वल्लाहु अअ़्–लमु बिमा व–ज़–अ़त् व लैसज्–ज़–करु कल्उन्सा व इन्नी सम्मैतुहा मर्य–म व इन्नी उअ़ीज़ुहा बि–क व ज़ुर्रिय्य–तहा मिनश्शैतानिर्रजीम(36) फ़–त–क़ब्ब–लहा रब्बुहा बि–क़बूलिन् ह़–सनिंव्–व अम्ब–तहा नबातन् ह़–स–नंव्–व कफ़्फ़–लहा ज़करिय्या कुल्लमा द–ख़–ल अ़लैहा ज़–करिय्यल्

ऐ महबूब तुम फ़रमा दो कि लोगो अगर तुम अल्लाह को दोस्त रखते हो तो मेरे फ़रमांबरदार हो जाओ अल्लाह तुम्हें दोस्त रखेगा (फ़ा64) और तुम्हारे गुनाह बख़्श देगा और अल्लाह बख़्शने वाला मेहरबान है।(31) तुम फ़रमा दो कि हुक्म मानो अल्लाह और रसूल का (फ़ा65) फिर अगर वह मुंह फेरें तो अल्लाह को ख़ुश नहीं आते काफ़िर।(32)बेशक अल्लाह ने चुन लिया आदम और नूह़ और इब्राहीम की आल और इमरान की आल को सारे जहान से।(33) (फ़ा66) यह एक नस्ल है एक दूसरे से (फ़ा67) और अल्लाह सुनता जानता है।(34) जब इमरान की बीबी ने अ़र्ज़ की (फ़ा68) ऐ रब मेरे मैं तेरे लिए मन्नत मानती हूं जो मेरे पेट में है कि ख़ालिस तेरी ही ख़िदमत में रहे (फ़ा69) तो तू मुझसे क़बूल कर ले। बेशक तू ही है सुनता जानता।(35) फिर जब उसे जना, बोली ऐ रब मेरे यह तो मैंने लड़की जनी (फ़ा70) और अल्लाह को ख़ूब मालूम है जो कुछ वह जनी और वह लड़का जो उसने मांगा इस लड़की सा नहीं (फ़ा71) और मैंने उसका नाम मरयम रखा (फ़ा72) और मैं उसे और उसकी औलाद को तेरी पनाह में देती हूं रांदे हुए शैतान से।(36) तो उसे उसके रब ने अच्छी तरह क़बूल किया (फ़ा73) और उसे अच्छा परवान चढ़ाया (फ़ा74) और उसे ज़करिया की निगहबानी में दिया जब ज़करिया उसके पास उसकी नमाज़ पढ़ने की जगह जाते

(फ़ा64) इस आयत से मालूम हुआ कि अल्लाह की मुहब्बत का दावा जब ही सच्चा हो सकता है जब आदमी सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम का मुत्तबेअ़ हो और हुज़ूर की इताअ़त इख़्तियार करे। शाने नुज़ूलः हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा से मरवी है कि रसूले करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम क़ुरैश के पास ठहरे जिन्होंने ख़ानए कअ़बा में बुत नसब किये थे और उन्हें सजा सजा कर उनको सजदा कर रहे थे हुज़ूर ने फ़रमाया ऐ गरोहे क़ुरैश ख़ुदा की क़सम तुम अपने आबा हज़रत इब्राहीम और हज़रत इस्माईल के दीन के ख़िलाफ़ हो गए क़ुरैश ने कहा कि हम इन बुतों को अल्लाह की मुहब्बत में पूजते हैं ताकि यह हमें अल्लाह से क़रीब करें इस पर यह आयते करीमा नाज़िल हुई और बताया गया कि मुहब्बते इलाही का दावा सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के इत्तेबाअ़ व फ़रमांबरदारी के बग़ैर क़ाबिले क़बूल नहीं जो इस दावे का सुबूत देना चाहे हुज़ूर की ग़ुलामी करे और हुज़ूर ने बुत परस्ती को मना फ़रमाया तो बुत परस्ती करने वाला हुज़ूर का ना-फ़रमान और मुहब्बते इलाही के दावा में झूठा है। (फ़ा65) यही अल्लाह की मुहब्बत की निशानी है और अल्लाह तआ़ला की इताअ़त बग़ैर इताअ़ते रसूल नहीं हो सकती बुख़ारी व मुस्लिम की हदीस में है जिसने मेरी ना-फ़रमानी की उसने अल्लाह की ना-फ़रमानी की। (फ़ा66) यहूद ने कहा था कि हम हज़रत इब्राहीम व इस्हाक़ व याक़ूब अ़लैहिमुस्सलातु वस्सलाम की औलाद से हैं और उन्हीं के दीन पर हैं इस पर यह आयते करीमा नाज़िल हुई और बता दिया गया कि **(बक़िया सफ़हा 109 पर)**

الْمِحْرَابَ ۙ وَجَدَ عِنْدَهَا رِزْقًا ۚ قَالَ يٰمَرْيَمُ اَنّٰى لَكِ هٰذَا ۚ قَالَتْ هُوَ مِنْ عِنْدِ اللّٰهِ ۚ اِنَّ اللّٰهَ يَرْزُقُ مَنْ يَّشَآءُ بِغَيْرِ حِسَابٍ ﴿37﴾ هُنَالِكَ دَعَا زَكَرِيَّا

رَبَّهٗ ۚ قَالَ رَبِّ هَبْ لِيْ مِنْ لَّدُنْكَ ذُرِّيَّةً طَيِّبَةً ۚ اِنَّكَ سَمِيْعُ الدُّعَآءِ ﴿38﴾ فَنَادَتْهُ الْمَلٰٓئِكَةُ وَهُوَ قَآئِمٌ يُّصَلِّيْ فِي الْمِحْرَابِ ۙ اَنَّ اللّٰهَ يُبَشِّرُكَ

بِيَحْيٰى مُصَدِّقًا ۢ بِكَلِمَةٍ مِّنَ اللّٰهِ وَسَيِّدًا وَّحَصُوْرًا وَّنَبِيًّا مِّنَ الصّٰلِحِيْنَ ﴿39﴾ قَالَ رَبِّ اَنّٰى يَكُوْنُ لِيْ غُلٰمٌ وَّقَدْ بَلَغَنِيَ الْكِبَرُ وَامْرَاَتِيْ عَاقِرٌ ۚ

قَالَ كَذٰلِكَ اللّٰهُ يَفْعَلُ مَا يَشَآءُ ﴿40﴾ قَالَ رَبِّ اجْعَلْ لِّيْٓ اٰيَةً ۚ قَالَ اٰيَتُكَ اَلَّا تُكَلِّمَ النَّاسَ ثَلٰثَةَ اَيَّامٍ اِلَّا رَمْزًا ۚ وَاذْكُرْ رَّبَّكَ كَثِيْرًا وَّ

سَبِّحْ بِالْعَشِيِّ وَالْاِبْكَارِ ﴿41﴾ وَاِذْ قَالَتِ الْمَلٰٓئِكَةُ يٰمَرْيَمُ اِنَّ اللّٰهَ اصْطَفٰىكِ وَطَهَّرَكِ وَاصْطَفٰىكِ عَلٰى نِسَآءِ الْعٰلَمِيْنَ ﴿42﴾ يٰمَرْيَمُ اقْنُتِيْ لِرَبِّكِ

मिह्रा–ब व–ज–द अिन्दहा रिज़्क़न् क़ा–ल या मर्–यमु अन्ना लकि हाज़ा क़ालत् हुव मिन् अिन्दिल्लाहि इन्नल्ला–ह यर्ज़ुक़ु मंय्यशाउ बिग़ैरि हिसाब(37)हुनालि–क दआ ज़करिय्या रब्बहू क़ा–ल रब्बि हब्ली मिल्लदुन्–क ज़ुर्रिय्यतन् तय्यि–ब–तन् इन्न–क समीअुद्दुआ–इ(38) फ़नादत्हुल् –मलाइ–कतु व हुव क़ाइमुंय्युसल्ली फ़िल्–मिह्राबि अन्नल्ला–ह युबश्शिरु–क बियह्या मुसद्दिक़म् –बिल्कलि–मतिम् मिनल्लाहि व सय्यिदंव् व हसूरंव्–व नबिय्यम्–मिनस्सालिहीन(39)क़ा–ल रब्बि अन्ना यकूनु ली ग़ुलामुंव् व क़द् ब–ल–ग़नियल्कि–बरु वम्र–अती आक़िरुन् क़ा–ल कज़ालि–कल्लाहु यफ़्अलु मा यशाउ(40)क़ा–ल रब्बिज्अल्–ली आय–तन् क़ा–ल आयतु–क अल्ला तुकल्लिमन्ना–स सला–स–त अय्यामिन् इल्ला रम्ज़न् वज़्कुर्–रब्ब–क कसीरंव्–व सब्बिह् बिल्अशिय्यि वल्इब्कार(41)व इज़् क़ा–लतिल्–मलाइ–कतु या मर्–यमु इन्नल्लाहस्तफ़ाकि व तह्ह–रकि वस्तफ़ाकि अला निसाइल् आ–लमीन(42)या मर्यमुक़्नुती लि–रब्बिकि

उसके पास नया रिज़्क़ पाते (फ़ा75) कहा ऐ मरयम यह तेरे पास कहां से आया बोलीं वह अल्लाह के पास से है बेशक अल्लाह जिसे चाहे बे गिनती दे।(37) (फ़ा76) यहां (फ़ा77) पुकारा ज़करिया अपने रब को, बोला ऐ रब मेरे मुझे अपने पास से दे सुथरी औलाद बेशक तू ही है दुआ सुनने वाला।(38) तो फ़रिश्तों ने उसे आवाज़ दी और वह अपनी नमाज़ की जगह खड़ा नमाज़ पढ़ रहा था। (फ़ा78) बेशक अल्लाह आपको मुज़दा देता है यह्या का जो अल्लाह की तरफ़ के एक कलिमा की (फ़ा79) तस्दीक़ करेगा और सरदार (फ़ा80) और हमेशा के लिए औरतों से बचने वाला और नबी हमारे ख़ासों में से।(39) (फ़ा81) बोला ऐ मेरे रब, मेरे लड़का कहां से होगा मुझे तो पहुंच गया बुढ़ापा (फ़ा82) और मेरी औरत बांझ। (फ़ा83) फ़रमाया अल्लाह यूं ही करता है जो चाहे।(40) (फ़ा84) अर्ज़ की ऐ मेरे रब मेरे लिए कोई निशानी कर दे।(फ़ा85) फ़रमाया तेरी निशानी यह है कि तीन दिन तू लोगों से बात न करे मगर इशारे से और अपने रब की बहुत याद कर (फ़ा86) और कुछ दिन रहे और तड़के उसकी पाकी बोल।(41)(रुकूअ 12) और जब फ़रिश्तों ने कहा ऐ मरयम बेशक अल्लाह ने तुझे चुन लिया (फ़ा87) और ख़ूब सुथरा किया (फ़ा88) और आज सारे जहां की औरतों से तुझे पसन्द किया।(42) (फ़ा89) ऐ मरयम अपने रब के हुज़ूर अदब से खड़ी हो(फ़ा90)

(फ़ा75) बे फ़सल मेवे जो जन्नत से उतरते और हज़रत मरयम ने किसी औरत का दूध न पिया। (फ़ा76) हज़रत मरयम ने सिग़्र सिनी में कलाम किया जबकि वह पालने में परवरिश पा रही थीं जैसा कि उनके फ़रज़न्द हज़रत ईसा अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने इसी हाल में कलाम फ़रमाया। मसलाः यह आयत करामाते औलिया के सुबूत की दलील है कि अल्लाह तआला उनके हाथों पर ख़वारिक़ ज़ाहिर फ़रमाता है हज़रत ज़करिया ने जब यह देखा तो फ़रमाया जो ज़ाते पाक मरयम को बे वक़्त बे फ़सल और बग़ैर सबब के मेवा अता फ़रमाने पर क़ादिर है वह बेशक इस पर क़ादिर है कि मेरी बांझ बीबी को नई तन्दुरुस्ती दे और मुझे इस बुढ़ापे की उम्र में उम्मीद मुन्क़तअ हो जाने के बाद फ़रज़नद अता करे बईं ख़्याल आपने दुआ की जिसका अगली आयत में बयान है। (फ़ा77) यानी मेहराबे बैतुल मक़्दिस में दरवाज़े बन्द करके दुआ की। (फ़ा78) हज़रत ज़करिया अलैहिस्सलाम आलिमे कबीर थे। क़ुरबानियां बारगाहे इलाही में आप ही पेश किया करते थे और मस्जिद शरीफ़ में बग़ैर आपके इज़्न के कोई दाख़िल नहीं हो सकता था जिस वक़्त मेहराब में आप नमाज़ में मशग़ूल थे और बाहर आदमी दुख़ूल की इजाज़त का इन्तेज़ार कर रहे थे दरवाज़ा बन्द था अचानक आपने एक सफ़ेद पोश जवान देखा वह हज़रत जिबरील थे उन्होंने आपको फ़रज़न्द की बशारत दी जो *अन्नल्ला–ह युबश्शिरु–क* में बयान फ़रमाई गई। (फ़ा79) कलिमा से मुराद हज़रत ईसा इब्ने मरयम हैं कि उन्हें **(बक़िया सफ़हा 109 पर)**

وَاسْجُدِیْ وَارْکَعِیْ مَعَ الرّٰکِعِیْنَ ۝ ذٰلِکَ مِنْ اَنْۢبَآءِ الْغَیْبِ نُوْحِیْهِ اِلَیْکَ ؕ وَمَا کُنْتَ لَدَیْهِمْ اِذْ یُلْقُوْنَ اَقْلَامَهُمْ اَیُّهُمْ یَکْفُلُ مَرْیَمَ ۪ وَمَا
کُنْتَ لَدَیْهِمْ اِذْ یَخْتَصِمُوْنَ ۝ اِذْ قَالَتِ الْمَلٰٓئِکَةُ یٰمَرْیَمُ اِنَّ اللّٰهَ یُبَشِّرُکِ بِکَلِمَةٍ مِّنْهُ ۖۗ اسْمُهُ الْمَسِیْحُ عِیْسَی ابْنُ مَرْیَمَ وَجِیْهًا فِی
الدُّنْیَا وَالْاٰخِرَةِ وَمِنَ الْمُقَرَّبِیْنَ ۝ وَیُکَلِّمُ النَّاسَ فِی الْمَهْدِ وَکَهْلًا وَّمِنَ الصّٰلِحِیْنَ ۝ قَالَتْ رَبِّ اَنّٰی یَکُوْنُ لِیْ وَلَدٌ وَّلَمْ یَمْسَسْنِیْ بَشَرٌ ؕ
قَالَ کَذٰلِکِ اللّٰهُ یَخْلُقُ مَا یَشَآءُ ؕ اِذَا قَضٰٓی اَمْرًا فَاِنَّمَا یَقُوْلُ لَهٗ کُنْ فَیَکُوْنُ ۝ وَیُعَلِّمُهُ الْکِتٰبَ وَالْحِکْمَةَ وَالتَّوْرٰىةَ وَالْاِنْجِیْلَ ۝
وَرَسُوْلًا اِلٰی بَنِیْٓ اِسْرَآءِیْلَ ۬ۙ اَنِّیْ قَدْ جِئْتُکُمْ بِاٰیَةٍ مِّنْ رَّبِّکُمْ ۙ اَنِّیْ اَخْلُقُ لَکُمْ مِّنَ الطِّیْنِ کَهَیْـَٔةِ الطَّیْرِ فَاَنْفُخُ فِیْهِ فَیَکُوْنُ

वस्जुदी वर्–कअी मअर्राकिअीन(43)ज़ालि–क मिन् अम्बाइल्ग़ैबि नूहीहि इलै–क व मा कुन्–त लदैहिम् इज़् युल्कू–न अक़्ला–महुम् अय्युहुम् यक्फुलु मर्यम व मा कुन्–त लदैहिम् इज़् यख़्तसिमून (44)इज़् क़ा–लतिल्–मलाइ–कतु या मर्–यमु इन्नल्ला–ह युबश्शिरुकि बि–कलि–मतिम्–मिन्हुस्–मुहुल्–मसीहु अ़ीसब्नु मर्य–म वजीहन् फ़िद्दुन्या वल्आख़ि–रति व मिनल्–मुक़र्रबीन (45)व युक–ल्लिमुन्ना–स फ़िल्मह्दि व कह्लंव्–व मिनस्सालिहीन(46)क़ालत् रब्बि अन्ना यकूनु ली व–लदुंव्–व लम् यम्सस्नी ब–शरुन् क़ा–ल कज़ालि–किल्लाहु यख़्लुक़ु मा यशाउ इज़ा क़ज़ा अम्रन् फ़–इन्नमा यकूलु लहू कुन् फ़–यकून(47)व युअ़ल्लिमुहुल् किता–ब वल्हिक्म–त वत्तौरा–त वल्इन्जी–ल(48)व रसूलन् इला बनी इस्राई–ल अन्नी क़द् जिअ्तुकुम् बि–आयतिम् मिर्रब्बिकुम् अन्नी अख़्लुकु लकुम् मिनत्तीनि क–हैअतित्तैरि फ़–अन्फुख़ु फ़ीहि फ़–यकूनु

और उसके लिए सजदा कर और रुकूअ़ वालों के साथ रुकूअ़ कर।(43) यह ग़ैब की ख़बरें हैं कि हम ख़ुफ़िया तौर पर तुम्हें बताते हैं (फ़ा91) और तुम उनके पास न थे जब वह अपने क़लमों से कुरआ़ डालते थे कि मरयम किस की परवरिश में रहें और तुम उनके पास न थे जब वह झगड़ रहे थे।(44) (फ़ा92) और याद करो जब फ़रिश्तों ने मरयम से कहा ऐ मरयम अल्लाह तुझे बशारत देता है अपने पास से एक कलिमा की (फ़ा93) जिसका नाम है मसीह ईसा मरयम का बेटा रू-दार होगा (फ़ा94) दुनिया और आख़िरत में और कुर्ब वाला।(45) (फ़ा95) और लोगों से बात करेगा पालने में (फ़ा96) और पक्की उम्र में (फ़ा97) और ख़ासों में होगा।(46) बोली ऐ मेरे रब मेरे बच्चा कहां से होगा मुझे तो किसी शख़्स ने हाथ न लगाया। (फ़ा98) फ़रमाया अल्लाह यूं ही पैदा करता है जो चाहे जब किसी काम का हुक्म फ़रमाए तो उससे यही कहता है कि हो जा वह फ़ौरन हो जाता है।(47) और अल्लाह उसे सिखाएगा किताब और हिकमत और तौरेत और इन्जील।(48)और रसूल होगा बनी इसराईल की तरफ़ यह फ़रमाता हुआ कि मैं तुम्हारे पास एक निशानी लाया हूं (फ़ा99) तुम्हारे रब की तरफ़ से कि मैं तुम्हारे लिए मिट्टी से परिन्द की सी मूरत बनाता हूं और फिर उसमें फूंक मारता हूं तो वह फ़ौरन

(फ़ा91) इस आयत से मालूम हुआ कि अल्लाह तआ़ला ने अपने हबीब सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को ग़ैब के उलूम अ़ता फ़रमाए (फ़ा92) बावजूद इसके आपका उन वाक़िआ़त की इत्तेलाअ़ देना दलीले क़वी है इसकी कि आप को ग़ैबी उलूम अ़ता फ़रमाए गए। (फ़ा93) यानी एक फ़रज़न्द की (फ़ा94) साहिबे जाह व मन्ज़िलत। (फ़ा95) बारगाहे इलाही में (फ़ा96) बात करने की उम्र से क़ब्ल (फ़ा97) आसमान से नुज़ूल के बाद इस आयत से साबित होता है कि हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम आसमान से ज़मीन की तरफ़ उतरेंगे जैसा कि अहादीस में वारिद हुआ है और दज्जाल को क़त्ल करेंगे (फ़ा98) और दस्तूर यह है कि बच्चा औ़रत व मर्द के इख़्तिलात से होता है तो मुझे बच्चा किस तरह अ़ता होगा निकाह से या यूं ही बग़ैर मर्द के (फ़ा99) जो मेरे दावाए नबुव्वत के सिद्क़ की दलील है।

طَیْرًۢا بِاِذْنِ اللّٰهِ ۚ وَ اُبْرِئُ الْاَكْمَهَ وَ الْاَبْرَصَ وَ اُحْیِ الْمَوْتٰى بِاِذْنِ اللّٰهِ ۚ وَ اُنَبِّئُكُمْ بِمَا تَاْكُلُوْنَ وَ مَا تَدَّخِرُوْنَ ۙ فِیْ بُیُوْتِكُمْ ؕ اِنَّ فِیْ ذٰلِكَ

لَاٰیَةً لَّكُمْ اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِیْنَ ﴿۴۹﴾ وَ مُصَدِّقًا لِّمَا بَیْنَ یَدَیَّ مِنَ التَّوْرٰىةِ وَ لِاُحِلَّ لَكُمْ بَعْضَ الَّذِیْ حُرِّمَ عَلَیْكُمْ وَ جِئْتُكُمْ بِاٰیَةٍ

مِّنْ رَّبِّكُمْ ۫ فَاتَّقُوا اللّٰهَ وَ اَطِیْعُوْنِ ﴿۵۰﴾ اِنَّ اللّٰهَ رَبِّیْ وَ رَبُّكُمْ فَاعْبُدُوْهُ ؕ هٰذَا صِرَاطٌ مُّسْتَقِیْمٌ ﴿۵۱﴾ فَلَمَّاۤ اَحَسَّ عِیْسٰى مِنْهُمُ الْكُفْرَ قَالَ

مَنْ اَنْصَارِیْۤ اِلَى اللّٰهِ ؕ قَالَ الْحَوَارِیُّوْنَ نَحْنُ اَنْصَارُ اللّٰهِ ۚ اٰمَنَّا بِاللّٰهِ ۚ وَ اشْهَدْ بِاَنَّا مُسْلِمُوْنَ ﴿۵۲﴾ رَبَّنَاۤ اٰمَنَّا بِمَاۤ اَنْزَلْتَ وَ اتَّبَعْنَا الرَّسُوْلَ فَاكْتُبْنَا

مَعَ الشّٰهِدِیْنَ ﴿۵۳﴾ وَ مَكَرُوْا وَ مَكَرَ اللّٰهُ ؕ وَ اللّٰهُ خَیْرُ الْمٰكِرِیْنَ ﴿۵۴﴾ اِذْ قَالَ اللّٰهُ یٰعِیْسٰۤى اِنِّیْ مُتَوَفِّیْكَ وَ رَافِعُكَ اِلَیَّ وَ مُطَهِّرُكَ مِنَ الَّذِیْنَ كَفَرُوْا

तैरम् बि–इज़्निल्लाहि व उब्रिउल्–अक्म–ह वल्–अब्–र–स व उह्यिल्मौता बिइज़् निल्लाहि व उनब्बिउकुम् बिमा तअ्कुलू–न व मा तद्–दख़िरू–न फ़ी बुयूतिकुम् इन्–न फ़ी ज़ालि–क ल–आ–यतल्लकुम् इन् कुन्तुम् मुअ्मिनीन(49)व मुसद्दि–क़ल्लिमा बै–न य–दय्–य मिनत्तौराति व लि उहिल्–ल लकुम् बअ्–ज़ल्लज़ी हुर्रि–म अ़लैकुम् व जिअ्तुकुम् बि–आ–यतिम् मिर्रब्बिकुम् फ़त्तकुल्ला–ह व अतीऊन(50)इन्नल्ला–ह रब्बी व रब्बुकुम् फ़अ्–बुदूहु हाज़ा सिरातुम्–मुस्तक़ीम (51)फ़–लम्मा अ–ह़स्–स ईसा मिन्हुमुल्कुफ़्–र क़ा–ल मन् अन्सारी इलल्लाहि क़ालल्–ह़वारिय्यू–न नह़्नु अन्सारुल्लाहि आमन्ना बिल्लाहि वश्हद् बि अन्ना मुस्लिमून(52)रब्बना आमन्ना बिमा अन्ज़ल्–त वत्तबअ्नर्रसू–ल फ़क्तुब्ना म–अ़श्शाहिदीन(53)व म–करू व म–क–रल्लाहु वल्लाहु ख़ैरुल्मा–किरीन(54)इज़् क़ालल्लाहु या ईसा इन्नी मु–त–वफ़्फ़ी–क व राफ़िअु–क इलय्–य व मुतह्हिरु–क मिनल्लज़ी–न क–फ़रू

परिन्द हो जाती है अल्लाह के हुक्म से (फ़ा100) और मैं शिफ़ा देता हूं मादरज़ाद अन्धे और सफ़ेद दाग़ वाले को (फ़ा101) और मैं मुर्दे जिलाता हूं अल्लाह के हुक्म से (फ़ा102) और तुम्हें बताता हूं जो तुम खाते और जो अपने घरों में जमा कर रखते हो (फ़ा103) बेशक इन बातों में तुम्हारे लिए बड़ी निशानी है अगर तुम ईमान रखते हो।(49) और तस्दीक़ करता आया हूं अपने से पहली किताब तौरेत की और इस लिए कि हलाल करूं तुम्हारे लिए कुछ वह चीज़ें जो तुम पर हराम थीं (फ़ा104) और मैं तुम्हारे पास तुम्हारे रब की तरफ़ से निशानी लाया हूं तो अल्लाह से डरो और मेरा हुक्म मानो।(50) बेशक मेरा तुम्हारा सब का रब अल्लाह है तो उसी को पूजो (फ़ा105) यह है सीधा रास्ता।(51) फिर जब ईसा ने उनसे कुफ़्र पाया (फ़ा106) बोला कौन मेरे मददगार होते हैं अल्लाह की तरफ़, ह़वारियों ने कहा (फ़ा107) हम दीने ख़ुदा के मददगार हैं हम अल्लाह पर ईमान लाए और आप गवाह हो जायें कि हम मुसलमान हैं।(52) (फ़ा108) ऐ रब हमारे, हम उस पर ईमान लाए जो तूने उतारा और रसूल के ताबेअ़ हुए तो हमें हक़ पर गवाही देने वालों में लिख ले।(53) और काफ़िरों ने मक्र किया (फ़ा109)और अल्लाह ने उनके हलाक की ख़ुफ़िया तदबीर फ़रमाई और अल्लाह सब से बेहतर छुपी तदबीर वाला है।(54) (फ़ा110) (रुकूअ़ 13) याद करो जब अल्लाह ने फ़रमाया ऐ ईसा मैं तुझे पूरी उम्र तक पहुंचाऊँगा (फ़ा111) और तुझे अपनी तरफ़ उठा लूंगा (फ़ा112) और तुझे काफ़िरों से पाक कर दूंगा

(फ़ा100) जब हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलातु वस्सलाम ने नबुव्वत का दावा किया और मोअ़जेज़ात दिखाए तो लोगों ने दरख़्वास्त की कि आप एक चमगादड़ पैदा करें आपने मिट्टी से चमगादड़ की सूरत बनाई फिर उसमें फूंक मारी तो वह उड़ने लगी चमगादड़ की खुसूसियत यह है कि वह उड़ने वाले जानवरों में बहुत अकमल और अ़जीब तर है और क़ुदरत पर दलालत करने में औरों से अबलग़ क्योंकि वह बग़ैर परों के तो उड़ती है और दांत रखती है और हंसती है और उसकी मादा के छाती होती है और बच्चा जनती है बावजूदेकि उड़ने वाले जानवरों में यह बातें नहीं हैं (फ़ा101) जिसका बर्स आ़म हो गया हो और अतिब्बा उसके इलाज से आ़जिज़ हों चूंकि हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलातु वस्सलाम के ज़माना में तिब इन्तेहाए उरूज पर थी और उसके माहिरीन अमरे इलाज में यदे-तूला रखते थे इस लिए उनको इसी क़िस्म के मोअ़जज़े दिखाए गए ताकि मालूम हो कि तिब के तरीक़ा से जिसका इलाज मुमकिन नहीं है उसको तन्दुरुस्त कर देना यक़ीनन मोअ़जेज़ा और नबी के सिद्क़े नबुव्वत की दलील है। वहब का क़ौल है कि अक्सर हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम के पास एक एक दिन में पचास पचास हज़ार मरीज़ों का इज्तेमाअ़ हो जाता **(बक़िया सफ़हा 110 पर)**

وَجَاعِلُ الَّذِينَ اتَّبَعُوكَ فَوْقَ الَّذِينَ كَفَرُوا إِلَىٰ يَوْمِ الْقِيَامَةِ ۖ ثُمَّ إِلَيَّ مَرْجِعُكُمْ فَأَحْكُمُ بَيْنَكُمْ فِيمَا كُنتُمْ فِيهِ تَخْتَلِفُونَ ۝ فَأَمَّا الَّذِينَ كَفَرُوا فَأُعَذِّبُهُمْ عَذَابًا شَدِيدًا فِي الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ وَمَا لَهُم مِّن نَّاصِرِينَ ۝ وَأَمَّا الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ فَيُوَفِّيهِمْ أُجُورَهُمْ ۗ وَاللَّهُ لَا يُحِبُّ الظَّالِمِينَ ۝ ذَٰلِكَ نَتْلُوهُ عَلَيْكَ مِنَ الْآيَاتِ وَالذِّكْرِ الْحَكِيمِ ۝ إِنَّ مَثَلَ عِيسَىٰ عِندَ اللَّهِ كَمَثَلِ آدَمَ ۖ خَلَقَهُ مِن تُرَابٍ ثُمَّ قَالَ لَهُ كُن فَيَكُونُ ۝ الْحَقُّ مِن رَّبِّكَ فَلَا تَكُن مِّنَ الْمُمْتَرِينَ ۝ فَمَنْ حَاجَّكَ فِيهِ مِن بَعْدِ مَا جَاءَكَ مِنَ الْعِلْمِ فَقُلْ تَعَالَوْا نَدْعُ أَبْنَاءَنَا وَأَبْنَاءَكُمْ وَنِسَاءَنَا وَنِسَاءَكُمْ وَأَنفُسَنَا وَأَنفُسَكُمْ ثُمَّ نَبْتَهِلْ فَنَجْعَل لَّعْنَتَ اللَّهِ عَلَى الْكَاذِبِينَ ۝ إِنَّ هَٰذَا لَهُوَ الْقَصَصُ الْحَقُّ ۚ وَمَا مِنْ إِلَٰهٍ إِلَّا

जाअ़िलुल्–लज़ीनत्–त–बअू–क फौक़ल्लज़ी–न क–फ़रू इला यौमिल्क़िया–मति सुम्–म इलय्–य मर्जिअुकुम् फ़–अह्कुमु बै–नकुम् फ़ीमा कुन्तुम् फ़ीहि तख़्तलिफ़ू न(55)फ़–अम्मल्लज़ी–न क–फ़रू फ़–उअ़ज़्ज़िबुहुम् अ़ज़ाबन् शदीदन् फ़िद्दुन्या वल्आख़ि–रति व मा लहुम् मिन्नासिरीन(56) व अम्मल्लज़ी–न आ–मनू व अ़मिलुस्सालिहाति फ़युवफ़्फ़ीहिम् उजू–रहुम् वल्लाहु ला युहिब्बुज़्ज़ा –लिमीन(57)ज़ालि–क नत्लूहु अ़लै–कमिनल् आयाति वज़्ज़िक्‌रिल्–हकीम(58)इन्–न म–स–ल ईसा अ़िन्दल्लाहि क–म–सलि आ–द–म ख़–ल–क़हू मिन् तुराबिन् सुम्–म क़ा–ल लहू कुन् फ़–यकून(59)अल्हक़्क़ु मिर्रब्बि–क फ़ला तकुम् मिनल्–मुम्तरीन(60)फ़–मन् हाज्ज–क फ़ीहि मिम्बअ्–दि मा जा–अ–क मिनल्अ़िल्मि फ़कुल् तआ़लौ नद्अु अब्ना–अना व अब्ना–अकुम् व निसा–अना व निसा–अकुम् व अन्फु–सना व अन्फु–सकुम् सुम्–म नब्तहिल् फ़–नज्अ़ल् लअ्–न–तल्लाहि अ़–लल्काज़िबीन(61)इन्–न हाज़ा ल–हुवल् क़–ससुल्–हक़्क़ु व मा मिन् इलाहिन् इल्लल्लाहु

और तेरे पैरौओं को (फ़ा113) क़ियामत तक तेरे मुन्किरों पर (फ़ा114) ग़लबा दूंगा फिर तुम सब मेरी तरफ़ पलट कर आओगे तो मैं तुम में फ़ैसला फ़रमा दूंगा जिस बात में झगड़ते हो।(55)तो वह जो काफ़िर हुए मैं उन्हें दुनिया व आख़िरत में सख़्त अ़ज़ाब करूंगा और उनका कोई मददगार न होगा।(56) और वह जो ईमान लाए और अच्छे काम किये अल्लाह उनका नेग उन्हें भरपूर देगा और ज़ालिम अल्लाह को नहीं भाते।(57)यह हम तुम पर पढ़ते हैं कुछ आयतें और हिकमत वाली नसीहत। (58) ईसा की कहावत अल्लाह के नज़दीक आदम की तरह है (फ़ा115) उसे मिट्टी से बनाया फिर फ़रमाया हो जा वह फ़ौरन हो जाता है।(59) ऐ सुनने वाले यह तेरे रब की तरफ़ से हक़ है तो शक वालों में न होना।(60) फिर ऐ महबूब जो तुमसे ईसा के बारे में हुज्जत करें बाद इसके कि तुम्हें इल्म आ चुका तो उनसे फ़रमा दो आओ हम बुलायें अपने बेटे और तुम्हारे बेटे और अपनी औ़रतें और तुम्हारी औ़रतें और अपनी जानें और तुम्हारी जानें फिर मुबाहला करें तो झूटों पर अल्लाह की लानत डालें।(61) (फ़ा116) यही बेशक सच्चा बयान है (फ़ा117) और अल्लाह के सिवा कोई मअ़्बूद नहीं (फ़ा118)

(फ़ा113) यानी मुसलमानों को जो आपकी नबुव्वत की तस्दीक़ करने वाले हैं (फ़ा114) जो यहूद हैं। (फ़ा115) शाने नुज़ूलः नसाराए नजरान का एक वफ़्द सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की ख़िदमत में आया और वह लोग हुज़ूर से कहने लगे आप गुमान करते हैं कि ईसा अल्लाह के बन्दे हैं फ़रमाया हां उसके बन्दे और उसके रसूल और उसके कलिमे जो कुंवारी बतूल अ़ज़रा की तरफ़ अल्क़ा किये गए नसारा यह सुन कर बहुत गुस्सा में आए और कहने लगे या मुहम्मद क्या तुमने कभी बे बाप का इंसान देखा है इससे उनका मतलब यह था कि वह ख़ुदा के बेटे हैं (मआज़ल्लाह) इस पर यह आयत नाज़िल हुई और यह बताया गया कि हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम सिर्फ़ बग़ैर बाप ही के हुए और हज़रत आदम अ़लैहिस्सलाम तो मां और बाप दोनों के बग़ैर मिट्टी से पैदा किये गए तो जब उन्हें अल्लाह का मख़्लूक़ और बन्दा मानते हो तो हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम को अल्लाह का मख़लूक़ व बन्दा मानने में क्या तअ़ज्जुब है। (फ़ा116) जब रसूले करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने नसाराए नजरान को यह आयत पढ़कर सुनाई और मुबाहला की दावत दी तो कहने लगे कि हम ग़ौर और मशवरा कर लें कल आपको जवाब देंगे जब वह जमा हुए तो उन्होंने अपने सबसे बड़े आ़लिम और साहबे राए शख़्स आ़क़िब से कहा कि ऐ अ़ब्दुल मसीह आपकी क्या राए है उसने कहा कि ऐ जमाअ़ते नसारा तुम पहचान चुके कि मुहम्मद नबीए मुरसल तो ज़रूर हैं अगर तुम ने उनसे मुबाहला किया तो सब हलाक हो जाओगे अब अगर नसरानियत पर क़ायम रहना चाहते हो तो उन्हें छोड़ो और घर को लौट चलो यह मशवरा होने के बाद वह रसूले करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की ख़िदमत में (बक़िया सफ़हा 106 पर)

اللّٰہَ ۚ وَاِنَّ اللّٰہَ لَھُوَ الْعَزِیْزُ الْحَکِیْمُ ﴿۶۲﴾ فَاِنْ تَوَلَّوْا فَاِنَّ اللّٰہَ عَلِیْمٌۢ بِالْمُفْسِدِیْنَ ﴿۶۳﴾ قُلْ یٰۤاَھْلَ الْکِتٰبِ تَعَالَوْا اِلٰی کَلِمَۃٍ سَوَآءٍۢ بَیْنَنَا وَبَیْنَکُمْ
اَلَّا نَعْبُدَ اِلَّا اللّٰہَ وَلَا نُشْرِکَ بِہٖ شَیْـًٔا وَّلَا یَتَّخِذَ بَعْضُنَا بَعْضًا اَرْبَابًا مِّنْ دُوْنِ اللّٰہِ ؕ فَاِنْ تَوَلَّوْا فَقُوْلُوا اشْھَدُوْا بِاَنَّا مُسْلِمُوْنَ ﴿۶۴﴾ یٰۤاَھْلَ الْکِتٰبِ
لِمَ تُحَآجُّوْنَ فِیْۤ اِبْرٰھِیْمَ وَمَاۤ اُنْزِلَتِ التَّوْرٰىۃُ وَالْاِنْجِیْلُ اِلَّا مِنْۢ بَعْدِہٖ ؕ اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ ﴿۶۵﴾ ھٰۤاَنْتُمْ ھٰۤؤُلَآءِ حَاجَجْتُمْ فِیْمَا لَکُمْ بِہٖ عِلْمٌ فَلِمَ
تُحَآجُّوْنَ فِیْمَا لَیْسَ لَکُمْ بِہٖ عِلْمٌ ؕ وَاللّٰہُ یَعْلَمُ وَاَنْتُمْ لَا تَعْلَمُوْنَ ﴿۶۶﴾ مَا کَانَ اِبْرٰھِیْمُ یَھُوْدِیًّا وَّلَا نَصْرَانِیًّا وَّلٰکِنْ کَانَ حَنِیْفًا مُّسْلِمًا ؕ وَمَا
کَانَ مِنَ الْمُشْرِکِیْنَ ﴿۶۷﴾ اِنَّ اَوْلَی النَّاسِ بِاِبْرٰھِیْمَ لَلَّذِیْنَ اتَّبَعُوْہُ وَھٰذَا النَّبِیُّ وَالَّذِیْنَ اٰمَنُوْا ؕ وَاللّٰہُ وَلِیُّ الْمُؤْمِنِیْنَ ﴿۶۸﴾ وَدَّتْ طَّآئِفَۃٌ مِّنْ

व इन्नल्ला–ह ल–हुवल् अ़ज़ीज़ुल् ह़कीम(62)फ़–इन् तवल्लौ फ़–इन्नल्ला–ह अ़लीमुम् बिल्मुफ़्–सिदीन(63)कुल् या अह्लल्किताबि तआ़लौ इला कलि–मतिन् सवाइम् बै–नना व बै–नकुम् अल्ला नअ़्बु–द इल्लल्ला–ह व ला नुश्रि–क बिही शैअंव्–व ला यत्तख़ि–ज़ बअ़्–ज़ुना बअ़्–जन् अर्बाबम्–मिन् दूनिल्लाहि फ़–इन् तवल्लौ फ़कूलुश्–हदू बिअन्ना मुस्लिमून(64)या अह्लल्किताबि लि–म तुहा–ज्जू–न फ़ी इब्राही–म व मा उन्ज़ि–लतित्तौरातु वल्इन्जीलु इल्ला मिम्बअ़्दिही अ–फ़ला तअ़्क़िलून(65)हा अन्तुम् हाउला–इ ह़ाजज्तुम् फ़ीमा लकुम् बिही अ़िल्मुन् फ़लि–म तुहाज्जू–न फ़ीमा लै–स लकुम् बिही अ़िल्मुन् वल्लाहु यअ़्–लमु व अन्तुम् ला तअ़्–लमून(66)मा का–न इब्राहीमु यहूदिय्यंव्–व ला नस्रानिय्यंव्–व लाकिन् का–न ह़नीफ़म्–मुस्लिमन् व मा का–न मिनल्–मुश्रिकीन(67)इन्–न औलन्नासि बि–इब्राही–म लल्ल–ज़ीनत्–त–बअ़ूहु व हाज़न्नबिय्यु वल्लज़ी–न आ–मनू वल्लाहु वलिय्युल्मुअ्मिनीन(68)वद्दत्–ताइ–फ़तुम्–मिन्

और बेशक अल्लाह ही ग़ालिब है हिकमत वाला।(62) फिर अगर वह मुंह फेरें तो अल्लाह फ़सादियों को जानता है। (63) (रुकूअ़ १४) तुम फ़रमाओ ऐ किताबियो ऐसे कलिमा की तरफ़ आओ जो हम में, तुम में यकसां है (फ़ा119) यह कि इबादत न करें मगर ख़ुदा की और उसका शरीक किसी को न करें (फ़ा120) और हम में कोई एक दूसरे को रब न बना ले अल्लाह के सिवा (फ़ा121) फिर अगर वह न मानें तो कह दो तुम गवाह रहो कि हम मुसलमान हैं।(64) ऐ किताब वालो इब्राहीम के बारे में क्यों झगड़ते हो तौरेत व इन्जील तो न उतरी मगर उनके बाद तो क्या तुम्हें अ़क्ल नहीं।(65) (फ़ा122) सुनते हो यह जो तुम हो (फ़ा123) उसमें झगड़े जिसका तुम्हें इल्म था (फ़ा124) तो उस में (फ़ा125) मुझसे क्यों झगड़ते हो जिसका तुम्हें इल्म ही नहीं और अल्लाह जानता है और तुम नहीं जानते।(66) (फ़ा126) इब्राहीम न यहूदी थे और न नसरानी बल्कि हर बातिल से जुदा मुसलमान थे और मुश्रिकों से न थे।(67) (फ़ा127) बेशक सब लोगों से इब्राहीम के ज़्यादा हक़दार वह थे जो उनके पैरू हुए (फ़ा128) और यह नबी (फ़ा129) और ईमान वाले (फ़ा130) और ईमान वालों का वाली अल्लाह है।(68) किताबियों का एक गरोह

(फ़ा119) और कुरआन और तौरेत और इन्जील इसमें मुख़्तलिफ़ नहीं। (फ़ा120) न हज़रत ईसा को न हज़रत उज़ैर को न और किसी को। (फ़ा121) जैसा कि यहूद व नसारा ने अहबार व रहबान को बनाया कि उन्हें सज्दे करते और उनकी इबादतें करते (जुमल)। (फ़ा122) **शाने नुज़ूलः** नजरान के नसारा और यहूद के अहबार में मुबाहसा हुआ यहूदियों का दावा था कि हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम यहूदी थे और नसरानियों का यह दावा था कि आप नसरानी थे यह नेज़ाअ़ बहुत बढ़ा तो फ़रीक़ैन ने सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को हकम माना और आप से फ़ैसला चाहा इस पर यह आयते करीमा नाज़िल हुई और उलमाए तौरेत व इन्जील पर उनका कमाले जहल ज़ाहिर कर दिया गया कि उनमें से हर एक का दावा उनके कमाले जहल की दलील है यहूदियत व नसरानियत तौरेत व इन्जील के नुज़ूल के बाद पैदा हुईं और हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलातु वस्सलाम का ज़माना जिन पर तौरेत नाज़िल हुई हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम से सदहा बरस बाद है और हज़रत ईसा जिन पर इन्जील नाज़िल हुई उनका ज़माना हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलातु वस्सलाम के बाद दो हज़ार बरस के क़रीब हुआ है और तौरेत व इन्जील किसी में आपको यहूदी या नसरानी नहीं फ़रमाया गया बावजूद इसके आपकी निस्बत यह दावा जहल व हिमाक़त की इन्तेहा है। (फ़ा123) ऐ अहले किताब तुम (फ़ा124) और तुम्हारी किताबों में इसकी ख़बर दी गई थी यानी नबीए आख़िरुज़्ज़माँ सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के ज़ुहूर और आपकी नअ़त व सिफ़त की जब यह सब कुछ जान पहचान कर भी तुम हुज़ूर पर ईमान न लाए और तुम ने उसमें झगड़ा किया। (फ़ा125) यानी हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम को यहूदी या नसरानी कहते हैं। (फ़ा126) हक़ीक़ते हाल यह है कि (फ़ा127) तो न किसी यहूदी या नसरानी का अपने आप को दीन में हज़रत **(बक़िया सफ़हा 109 पर)**

أَهْلِ الْكِتٰبِ لَوْ يُضِلُّوْنَكُمْ ۚ وَمَا يُضِلُّوْنَ إِلَّآ أَنْفُسَهُمْ وَمَا يَشْعُرُوْنَ ۝ يٰٓأَهْلَ الْكِتٰبِ لِمَ تَكْفُرُوْنَ بِاٰيٰتِ اللّٰهِ وَأَنْتُمْ تَشْهَدُوْنَ ۝ يٰٓأَهْلَ الْكِتٰبِ لِمَ تَلْبِسُوْنَ الْحَقَّ بِالْبَاطِلِ وَتَكْتُمُوْنَ الْحَقَّ وَأَنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ۝ وَقَالَتْ طَّآئِفَةٌ مِّنْ أَهْلِ الْكِتٰبِ اٰمِنُوْا بِالَّذِيْٓ أُنْزِلَ عَلَى الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَجْهَ النَّهَارِ وَاكْفُرُوْٓا اٰخِرَهٗ لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُوْنَ ۝ وَلَا تُؤْمِنُوْٓا إِلَّا لِمَنْ تَبِعَ دِيْنَكُمْ ۗ قُلْ إِنَّ الْهُدٰى هُدَى اللّٰهِ ۙ أَنْ يُّؤْتٰٓى أَحَدٌ مِّثْلَ مَآ أُوْتِيْتُمْ أَوْ يُحَآجُّوْكُمْ عِنْدَ رَبِّكُمْ ۗ قُلْ إِنَّ الْفَضْلَ بِيَدِ اللّٰهِ ۚ يُؤْتِيْهِ مَنْ يَّشَآءُ ۗ وَاللّٰهُ وَاسِعٌ عَلِيْمٌ ۝ يَّخْتَصُّ بِرَحْمَتِهٖ مَنْ يَّشَآءُ ۗ وَاللّٰهُ ذُو الْفَضْلِ الْعَظِيْمِ ۝ وَمِنْ أَهْلِ الْكِتٰبِ مَنْ إِنْ تَأْمَنْهُ بِقِنْطَارٍ يُّؤَدِّهٖٓ إِلَيْكَ ۚ وَمِنْهُمْ مَّنْ إِنْ تَأْمَنْهُ بِدِيْنَارٍ لَّا يُؤَدِّهٖٓ إِلَيْكَ إِلَّا مَا دُمْتَ عَلَيْهِ قَآئِمًا ۗ ذٰلِكَ بِأَنَّهُمْ قَالُوْا لَيْسَ عَلَيْنَا فِي

अह्लिल्किताबि लौ युज़िल्लू–नकुम् व मा युज़िल्लू–न इल्ला अन्फु–सहुम् व मा यश्अुरून(69) या अह्लल्किताबि लि–म तक्फुरू–न बि–आया–तिल्लाहि व अन्तुम् तश्–हदून(70)या अह्लल्किताबि लि–म तल्बिसू–नल्हक्–क बिल्बातिलि व तक्तुमू–नल्हक्–क व अन्तुम् तअ्–लमून(71)व क़ालत्–ताइ–फ़तुम् मिन् अह्लिल्किताबि आमिनू बिल्लज़ी उन्ज़ि–ल अ–लल्लजी–न आ–मनू वज्हन्नहारि वक्फुरू आख़ि–रहू ल–अ़ल्लहुम् यर्जिअू न(72)व ला तुअ्मिनू इल्ला लिमन् तबि–अ़ दी–नकुम् कुल् इन्नल्हुदा हुदल्लाहि अंय्युअ्ता अ–ह़दुम् मिस्–ल मा ऊतीतुम् औ युहाज्जूकुम् अ़िन्–द रब्बिकुम् कुल् इन्नल्फ़ज़्–ल बि–यदिल्लाहि युअ्तीहि मंय्यशाउ वल्लाहु वासिअुन् अ़लीम(73) यख़्तस्सु बि रह्मतिही मंय्यशाउ वल्लाहु जुल्फ़ज़्लिल्–अ़ज़ीम(74)व मिन् अह्लिल्किताबि मन् इन् तअ्मन्हु बिक़िन्तारिंय्युअद्दिही इलै–क व मिन्हुम् मन् इन् तअ्मन्हु बिदीनारिल्ला युअद्दिही इलै–क इल्ला मा दुम्–त अ़लैहि क़ाइमन् ज़ालि–क बि–अन्नहुम् क़ालू लै–स अ़लैना फ़िल्

दिल से चाहता है कि किसी तरह तुम्हें गुमराह कर दें और वह अपने ही आप को गुमराह करते हैं और उन्हें शुऊर नहीं।(69) (फ़ा131) ऐ किताबियो अल्लाह की आयतों से क्यों कुफ़्र करते हो हालांकि तुम ख़ुद गवाह हो।(70) (फ़ा132) ऐ किताबियो हक़ में बातिल क्यों मिलाते हो (फ़ा133) और ह़क़ क्यों छुपाते हो हालांकि तुम्हें ख़बर है।(71) (रुकूअ़15) और किताबियों का एक गरोह बोला (फ़ा134) वह जो ईमान वालों पर उतरा (फ़ा135) सुबह को उस पर ईमान लाओ और शाम को मुन्किर हो जाओ शायद वह फिर जायें।(72) (फ़ा136) और यक़ीन न लाओ मगर उसका जो तुम्हारे दीन का पैरू है तुम फ़रमा दो कि अल्लाह ही की हिदायत, हिदायत है (फ़ा137) (यक़ीन काहे का न लाओ) इसका कि किसी को मिले (फ़ा138) जैसा तुम्हें मिला या कोई तुम पर हुज्जत ला सके तुम्हारे रब के पास (फ़ा139) तुम फ़रमा दो कि फ़ज़्ल तो अल्लाह ही के हाथ है जिसे चाहे दे और अल्लाह वुसअ़त वाला इल्म वाला है।(73) अपनी रहमत से (फ़ा140) ख़ास करता है जिसे चाहे (फ़ा141) और अल्लाह बड़े फ़ज़्ल वाला है।(74) और किताबियों में कोई वह है कि अगर तू उसके पास एक ढेर अमानत रखे तो वह तुझे अदा कर देगा (फ़ा142) और उनमें कोई वह है कि अगर एक अशरफ़ी उसके पास अमानत रखे तो वह तुझे फेर कर न देगा मगर जब तक तू उसके सर पर खड़ा रहे (फ़ा143) यह इस लिए कि वह कहते हैं कि अनपढ़ों (फ़ा144) के मुआमला में

(फ़ा131) **शाने नुज़ूलः** यह आयत हज़रत मआ़ज़ बिन जबल व हुज़ैफ़ा बिन यमान और अ़म्मार बिन यासिर के हक़ में नाज़िल हुई जिनको यहूद अपने दीन में दाख़िल करने की कोशिश करते और यहूदियत की दावत देते थे उसमें बताया गया कि यह उनकी हवसे ख़ाम है वह उनको गुमराह न कर सकेंगे। (फ़ा132) और तुम्हारी किताबों में सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की नअ़्त व सिफ़त मौजूद है और तुम जानते हो कि वह नबीए बरहक़ हैं और उनका दीन सच्चा दीन। (फ़ा133) अपनी किताबों में तहरीफ़ व तब्दील करके। (फ़ा134) और उन्होंने बाहम मशवरा करके यह मक्र सोचा। (फ़ा135) यानी कुरआन शरीफ़ (फ़ा136) **शाने नुज़ूलः** यहूद इस्लाम की मुख़ालफ़त में रात दिन नए नए मक्र किया करते थे ख़ैबर के उलमाए यहूद के बारह शख़्सों ने बाहमी मशवरा से एक यह मक्र सोचा कि उनकी एक जमाअ़त सुबह को इस्लाम ले आए और शाम को मुरतद हो जाए और लोगों से कहे कि हमने अपनी किताबों मे जो देखा तो साबित हुआ कि मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम वह नबीए मौऊद नहीं हैं जिनकी हमारी किताबों में ख़बर है ताकि इस हरकत से मुसलमानों को दीन में शुबहा पैदा हो लेकिन अल्लाह तआ़ला ने यह आयत नाज़िल फ़रमा कर उनका यह राज़ फ़ाश कर दिया और उनका यह मक्र न **(बक़िया सफ़हा 111 पर)**

الْاُمِّیّٖنَ سَبِیْلٌ ۚ وَ یَقُوْلُوْنَ عَلَی اللّٰهِ الْكَذِبَ وَ هُمْ یَعْلَمُوْنَ ﴿۷۵﴾ بَلٰی مَنْ اَوْفٰی بِعَهْدِهٖ وَ اتَّقٰی فَاِنَّ اللّٰهَ یُحِبُّ الْمُتَّقِیْنَ ﴿۷۶﴾ اِنَّ الَّذِیْنَ یَشْتَرُوْنَ بِعَهْدِ اللّٰهِ
وَ اَیْمَانِهِمْ ثَمَنًا قَلِیْلًا اُولٰٓىِٕكَ لَا خَلَاقَ لَهُمْ فِی الْاٰخِرَةِ وَ لَا یُكَلِّمُهُمُ اللّٰهُ وَ لَا یَنْظُرُ اِلَیْهِمْ یَوْمَ الْقِیٰمَةِ وَ لَا یُزَكِّیْهِمْ ۪ وَ لَهُمْ عَذَابٌ اَلِیْمٌ ﴿۷۷﴾
وَ اِنَّ مِنْهُمْ لَفَرِیْقًا یَّلْوٗنَ اَلْسِنَتَهُمْ بِالْكِتٰبِ لِتَحْسَبُوْهُ مِنَ الْكِتٰبِ وَ مَا هُوَ مِنَ الْكِتٰبِ ۚ وَ یَقُوْلُوْنَ هُوَ مِنْ عِنْدِ اللّٰهِ وَ مَا هُوَ مِنْ عِنْدِ اللّٰهِ ۚ وَ یَقُوْلُوْنَ عَلَی اللّٰهِ
الْكَذِبَ وَ هُمْ یَعْلَمُوْنَ ﴿۷۸﴾ مَا كَانَ لِبَشَرٍ اَنْ یُّؤْتِیَهُ اللّٰهُ الْكِتٰبَ وَ الْحُكْمَ وَ النُّبُوَّةَ ثُمَّ یَقُوْلَ لِلنَّاسِ كُوْنُوْا عِبَادًا لِّیْ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ وَ لٰكِنْ كُوْنُوْا رَبّٰنِیّٖنَ
بِمَا كُنْتُمْ تُعَلِّمُوْنَ الْكِتٰبَ وَ بِمَا كُنْتُمْ تَدْرُسُوْنَ ﴿۷۹﴾ وَ لَا یَاْمُرَكُمْ اَنْ تَتَّخِذُوا الْمَلٰٓىِٕكَةَ وَ النَّبِیّٖنَ اَرْبَابًا ؕ اَیَاْمُرُكُمْ بِالْكُفْرِ بَعْدَ اِذْ اَنْتُمْ مُّسْلِمُوْنَ ﴿۸۰﴾

उम्मिय्यी–न सबीलुन् व यकूलू–न अ़–लल्लाहिल्–कज़ि–ब व हुम्यअ़्–लमून(75)बला मन् औफ़ा बि–अ़ह्दिही वत्तक़ा फ़–इन्नल्ला–ह युहिब्बुल्–मुत्तक़ीन(76)इन्नल्लज़ी–न यश्तरू–न बि अ़ह्दिल्लाहि व ऐमानिहिम् स–म–नन् क़लीलन् उलाइ–क ला ख़ला–क़ लहुम् फ़िल्आख़ि–रति व ला युकल्लिमुहुमुल्लाहु व ला यन्ज़ुरु इलैहिम् यौमल्क़िया–मति व ला युज़क्कीहिम् व लहुम् अ़ज़ाबुन् अलीम(77)व इन्–न मिन्हुम् ल–फ़रीक़य्यल्वू–न अल्सि–न–तहुम् बिल्किताबि लि–तह्सबूहु मिनल्किताबि व मा हुव मिनल्किताबि व यक़ूलू–न हुव मिन् अ़िन्दिल्लाहि व मा हुव मिन् अ़िन्दिल्लाहि व यक़ूलू–न अ़लल्ला–हिल्कज़ि–ब व हुम् यअ़्–लमून(78)मा का–न लि–ब–शरिन् अंय्युअ्ति–यहुल्लाहुल् किता–ब वल्हुक्–म वन्नुबुव्व–त सुम्–म यक़ू–ल लिन्नासि कूनू अ़िबादल्ली मिन् दूनिल्लाहि व लाकिन् कूनू रब्बानिय्यी–न बिमा कुन्तुम् तुअ़ल्लिमू–नलकिता–ब व बिमा कुन्तुम् तदरुसून(79)व ला यअ्मु–रकुम् अन् तत्तख़िज़ुल्मलाइ–क–त वन्नबिय्यी–न अर्बाबन् अ–यअ्मुरुकुम् बिल्कुफ़्रि बअ़्–द इज् अन्तुम् मुस्लिमून(80)

हम पर कोई मुआख़ज़ा नहीं और अल्लाह पर जान बूझ कर झूट बांधते हैं।(75) (फ़ा145) हां क्यों नहीं जिसने अपना अ़हद पूरा किया और परहेज़गारी की और बेशक परहेज़गार अल्लाह को ख़ुश आते हैं।(76) वह जो अल्लाह के अ़हद और अपनी क़समों के बदले ज़लील दाम लेते हैं (फ़ा146)आख़िरत में उनका कुछ हिस्सा नहीं और अल्लाह न उनसे बात करे न उनकी तरफ़ नज़र फ़रमाए क़ियामत के दिन और न उन्हें पाक करे और उनके लिए दर्दनाक अ़ज़ाब है।(77) (फ़ा147) और उनमें कुछ वह हैं जो ज़बान फेर कर किताब में मेल करते हैं कि तुम समझो यह भी किताब में है और वह किताब में नहीं और वह कहते हैं यह अल्लाह के पास से है और वह अल्लाह के पास से नहीं और अल्लाह पर दीदा व दानिस्ता झूट बांधते हैं।(78) (फ़ा148) किसी आदमी का यह हक़ नहीं कि अल्लाह उसे किताब और हुक्म व पैग़म्बरी दे (फ़ा149) फिर वह लोगों से कहे कि अल्लाह को छोड़ कर मेरे बन्दे हो जाओ (फ़ा150) हां यह कहेगा कि अल्लाह वाले (फ़ा151)हो जाओ इस सबब से कि तुम किताब सिखाते हो और इससे कि तुम दर्स करते हो।(79)(फ़ा152) और न तुम्हें यह हुक्म देगा (फ़ा153) कि फ़रिश्तों और पैग़म्बरों को ख़ुदा ठहरा लो, क्या तुम्हें कुफ़्र का हुक्म देगा बाद इसके कि तुम मुसलमान हो लिए।(80) (फ़ा154) (रुकूअ़ 16)

(फ़ा145) कि उसने अपनी किताबों में दूसरे दीन वालों के माल हज़म कर जाने का हुक्म दिया है बावजूदेकि वह ख़ूब जानते हैं कि उनकी किताबों में कोई ऐसा हुक्म नहीं। (फ़ा146) शाने नुज़ूलः यह आयत यहूद के अहबार और उनके रोअसा अबू राफ़ेअ़ व कनाना बिन अबिल-हक़ीक़ और कअ़ब बिन अशरफ़ वहुई बिन अख़्तब के हक़ में नाज़िल हुई जिन्होंने अल्लाह तआ़ला का वह अ़हद छुपाया था जो सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम पर ईमान लाने के मुतअ़ल्लिक़ उनसे तौरेत में लिया गया। उन्होंने उसको बदल दिया और बजाए उसके अपने हाथों से कुछ का कुछ लिख दिया और झूठी क़सम खाई कि यह अल्लाह की तरफ़ से है और यह सब कुछ उन्होंने अपनी जमाअ़त के जाहिलों से रिश्वतें और ज़र हासिल करने के लिए किया। (फ़ा147) मुस्लिम शरीफ़ की हदीस में है सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया तीन लोग ऐसे हैं कि रोज़े क़ियामत अल्लाह तआ़ला न उनसे कलाम फ़रमाए और न उनकी तरफ़ नज़रे रहमत करे न उन्हें गुनाहों से पाक करे और उन्हें दर्दनाक अ़ज़ाब है उसके बाद सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने इस आयत को तीन मर्तबा पढ़ा हज़रत अबूज़र रावी ने कहा कि वह लोग टोटे और नक़सान में रहे, या रसूलल्लाह वह कौन लोग हैं हुज़ूर ने फ़रमाया एज़ार को टख़नों से नीचे लटकाने वाला और एहसान जताने वाला और अपने तिजारती माल को झूठी क़सम से रिवाज देने वाला। **(बक़िया सफ़हा 111 पर)**

وَاِذْ اَخَذَ اللّٰهُ مِيْثَاقَ النَّبِيّٖنَ لَمَآ اٰتَيْتُكُمْ مِّنْ كِتٰبٍ وَّحِكْمَةٍ ثُمَّ جَآءَكُمْ رَسُوْلٌ مُّصَدِّقٌ لِّمَا مَعَكُمْ لَتُؤْمِنُنَّ بِهٖ وَلَتَنْصُرُنَّهٗ ؕ
قَالَ ءَاَقْرَرْتُمْ وَاَخَذْتُمْ عَلٰى ذٰلِكُمْ اِصْرِىْ ؕ قَالُوْٓا اَقْرَرْنَا ؕ قَالَ فَاشْهَدُوْا وَاَنَا مَعَكُمْ مِّنَ الشّٰهِدِيْنَ ۞ فَمَنْ تَوَلّٰى بَعْدَ ذٰلِكَ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْفٰسِقُوْنَ ۞
اَفَغَيْرَ دِيْنِ اللّٰهِ يَبْغُوْنَ وَلَهٗٓ اَسْلَمَ مَنْ فِى السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ طَوْعًا وَّكَرْهًا وَّاِلَيْهِ يُرْجَعُوْنَ ۞ قُلْ اٰمَنَّا بِاللّٰهِ وَمَآ اُنْزِلَ عَلَيْنَا وَمَآ اُنْزِلَ
عَلٰٓى اِبْرٰهِيْمَ وَاِسْمٰعِيْلَ وَاِسْحٰقَ وَيَعْقُوْبَ وَالْاَسْبَاطِ وَمَآ اُوْتِىَ مُوْسٰى وَعِيْسٰى وَالنَّبِيُّوْنَ مِنْ رَّبِّهِمْ ۪ لَا نُفَرِّقُ بَيْنَ اَحَدٍ مِّنْهُمْ ۫ وَنَحْنُ
لَهٗ مُسْلِمُوْنَ ۞ وَمَنْ يَّبْتَغِ غَيْرَ الْاِسْلَامِ دِيْنًا فَلَنْ يُّقْبَلَ مِنْهُ ۚ وَهُوَ فِى الْاٰخِرَةِ مِنَ الْخٰسِرِيْنَ ۞ كَيْفَ يَهْدِى اللّٰهُ قَوْمًا كَفَرُوْا بَعْدَ اِيْمَانِهِمْ

व इज़् अ–ख़ ज़ल्लाहु मीसाक़न्नबिय्यी–न लमा आतैतुकुम् मिन् किताबिंव्–व हिक्मतिन् सुम्–म जा–अकुम् रसूलुम्–मुसद्दिक़ुल्लिमा म–अ़कुम् ल–तुअमिनुन्–न बिही व ल तन्सुरुन्नहू क़ा–ल अ–अक़्रर्तुम् व अ–ख़ज़्तुम् अ़ला ज़ालिकुम् इसरी क़ालू अक़्रर्ना क़ा–ल फ़श्–हदू व अना म–अ़कुम् मिनश्–शाहिदीन(81)फ़–मन् तवल्ला बअ्–द ज़ालि–क फ़–उलाइ–क हुमुल्–फ़ासिक़ून (82)अ–फ़–गै़–र दीनिल्लाहि यब्गू–न व लहू अस्ल–म मन् फ़िस्समावाति वल्अर्ज़ि तौअ़ंव्–व करहंव्–व इलैहि युर्जऊन(83)क़ुल् आमन्ना बिल्लाहि व मा उन्ज़ि–ल अ़लैना व मा उन्ज़ि–ल अ़ला इब्राही–म व इस्माअ़ी–ल व इस्हा–क़ व यअ़्क़ू–ब वल्अस्बाति व मा ऊति–य मूसा व अ़ीसा वन्नबिय्यू–न मिर्रब्बिहम् ला नुफ़र्रिक़ु बै–न अ–हदिम्–मिन्हुम् व नह्नु लहू मुस्लिमून(84) व मंय्यब्तग़ि ग़ैरल्–इस्लामि दीनन् फ़–लंय्युक़्ब–ल मिन्हु व हुव फ़िल्आख़ि–रति मिन–ल्ख़ासिरीन(85)कै–फ़ यह्दिल्लाहु क़ौमन् क–फ़रू बअ्–द ईमानिहिम

और याद करो जब अल्लाह ने पैग़म्बरों से उनका अ़हद लिया (फ़ा155) जो मैं तुमको किताब और हिकमत दूं फिर तशरीफ़ लाए तुम्हारे पास वह रसूल (फ़ा156) कि तुम्हारी किताबों की तस्दीक़ फ़रमाए (फ़ा157) तो तुम ज़रूर ज़रूर उस पर ईमान लाना और ज़रूर ज़रूर उसकी मदद करना। फ़रमाया क्यों तुमने इक़रार किया और उस पर मेरा भारी ज़िम्मा लिया सबने अ़र्ज़ की हमने इक़रार किया, फ़रमाया तो एक दूसरे पर गवाह हो जाओ और मैं आप तुम्हारे साथ गवाहों में हूं।(81) तो जो कोई इस (फ़ा158) के बाद फिरे (फ़ा159)तो वही लोग फ़ासिक़ हैं।(82)(फ़ा160) तो क्या अल्लाह के दीन के सिवा और दीन चाहते हैं (फ़ा161) और उसी के हुज़ूर गर्दन रखे हैं जो कोई आसमानों और ज़मीन में हैं(फ़ा162) ख़ुशी से (फ़ा163)और मजबूरी से(फ़ा164) और उसी की तरफ़ फिरेंगे।(83)यूं कहो कि हम ईमान लाए अल्लाह पर और उस पर जो हमारी तरफ़ उतरा और जो उतरा इब्राहीम और इस्माईल और इसहाक़ और याक़ूब और उनके बेटों पर और जो कुछ मिला मूसा और ईसा और अम्बिया को उनके रब से, हम उनमें किसी पर ईमान में फ़र्क़ नहीं करते (फ़ा165) और हम उसी के हुज़ूर गर्दन झुकाए हैं।(84)और जो इस्लाम के सिवा कोई दीन चाहेगा वह हरगिज़ उससे क़बूल न किया जाएगा, और वह आख़िरत में ज़ियांकारों से है।(85) क्योंकर अल्लाह ऐसी क़ौम की हिदायत चाहे जो ईमान लाकर काफ़िर हो गए (फ़ा166)

(फ़ा155) हज़रत अ़ली मुर्तज़ा ने फ़रमाया कि अल्लाह तआ़ला ने हज़रत आदम और उनके बाद जिस किसी को नबुव्वत अ़ता फ़रमाई उन से सय्यदे अम्बिया मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की निस्बत अ़हद लिया और उन अम्बिया ने अपनी क़ौमों से अ़हद लिया कि अगर उनकी हयात में सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम मबऊस हों तो आप पर ईमान लायें। और आपकी नुसरत करें इससे साबित हुआ कि हुज़ूर तमाम अम्बिया में सबसे अफ़ज़ल हैं। (फ़ा156) यानी सय्यदे आ़लम मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम (फ़ा157) इस तरह कि उनके सिफ़ात व अहवाल उसके मुताबिक़ हों जो कुतुबे अम्बिया में बयान फ़रमाए गए हैं।(फ़ा158) अ़हद (फ़ा159) और आने वाले नबी मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम पर ईमान लाने से एअ़्राज़ करे (फ़ा160) ख़ारिज अज़ ईमान (फ़ा161)बाद अ़हद लिये जाने के और दलायल वाज़ेह होने के बावजूद।(फ़ा162) मलायका और इंसान व जिन्नात।(फ़ा163) दलायल में नज़र करके और इंसाफ़ इख़्तियार करके और यह इताअ़त उनको फ़ायदा देती और नफ़ा पहुंचाती है। (फ़ा164) किसी ख़ौफ़ से या अ़ज़ाब के देख लेने से जैसा कि काफ़िर इन्दलमौत वक़्ते यास ईमान लाता है यह ईमान उसको क़ियामत में नफ़ा न देगा (फ़ा165) जैसा कि यहूद व नसारा ने किया कि **(बक़िया सफ़्हा 111 पर)**

وَشَهِدُوْٓا اَنَّ الرَّسُوْلَ حَقٌّ وَّجَآءَهُمُ الْبَيِّنٰتُ ؕ وَاللّٰهُ لَا يَهْدِى الْقَوْمَ الظّٰلِمِيْنَ ﴿۸۶﴾ اُولٰٓئِكَ جَزَآؤُهُمْ اَنَّ عَلَيْهِمْ لَعْنَةَ اللّٰهِ وَالْمَلٰٓئِكَةِ

وَالنَّاسِ اَجْمَعِيْنَ ﴿۸۷﴾ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ۚ لَا يُخَفَّفُ عَنْهُمُ الْعَذَابُ وَلَا هُمْ يُنْظَرُوْنَ ﴿۸۸﴾ اِلَّا الَّذِيْنَ تَابُوْا مِنْۢ بَعْدِ ذٰلِكَ وَاَصْلَحُوْا ۟ فَاِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿۸۹﴾

اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا بَعْدَ اِيْمَانِهِمْ ثُمَّ ازْدَادُوْا كُفْرًا لَّنْ تُقْبَلَ تَوْبَتُهُمْ ۚ وَاُولٰٓئِكَ هُمُ الضَّآلُّوْنَ ﴿۹۰﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَمَاتُوْا وَهُمْ كُفَّارٌ فَلَنْ يُّقْبَلَ مِنْ

اَحَدِهِمْ مِّلْءُ الْاَرْضِ ذَهَبًا وَّلَوِ افْتَدٰى بِهٖ ؕ اُولٰٓئِكَ لَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ وَّمَا لَهُمْ مِّنْ نّٰصِرِيْنَ ﴿۹۱﴾

व शहिदू अन्नर्रसू–ल हक़्क़ुंव्–व जा–अ हुमुल्बय्यिनातु वल्लाहु ला यह्दिल्क़ौमज़्–ज़ालिमीन(86) उलाइ–क जज़ाउहुम् अन्–न अ़लैहिम् लअ़्न–तल्लाहि वल्मलाइ–कति वन्नासि अज्मअ़ीन(87) ख़ालिदी–न फ़ीहा ला युख़फ़्–फ़फ़ु अ़न्हुमुल्–अ़ज़ाबु व ला हुम् युन्जरून(88)इल्लल्लज़ी–न ताबू मिम्बअ़्दि ज़ालि–क व अस्लहू फ़इन्नल्ला–ह ग़फ़ूरुर्रहीम(89)इन्नल्–लज़ी–न क–फ़रू बअ़्–द ईमानिहिम् सुम्मज़्दादू कुफ़्रल्लन् तुक़्ब–ल तौ–बतुहुम् व उलाइ–क हुमुज़्ज़ाल्लून(90) इन्नल्लज़ी–न क–फ़रू व मातू व हुम् कुफ़्फ़ारुन् फ़–लंय्युक़्ब–ल मिन् अ–हदिहिम्–मिल्–उल्अर्ज़ि ज़–ह–बंव् व लविफ़्तदा बिही उलाइ–क लहुम् अ़ज़ाबुन् अलीमुंव्–व मा लहुम् मिन्नासिरीन(91)

और गवाही दे चुके थे कि रसूल (फ़ा167)सच्चा है और उन्हें खुली निशानियां आ चुकी थीं(फ़ा168)और अल्लाह ज़ालिमों को हिदायत नहीं करता।(86) उनका बदला यह है कि उन पर लानत है अल्लाह और फ़रिश्तों और आदमियों की सब की।(87) हमेशा उसमें रहें न उन पर से अ़ज़ाब हल्का हो और न उन्हें मोहलत दी जाए।(89) मगर जिन्होंने उसके बाद तौबा की (फ़ा169) और आपा संभाला तो ज़रूर अल्लाह बख़्शने वाला मेहरबान है।(८९)बेशक वह जो ईमान लाकर काफ़िर हुए फिर और कुफ़्र में बढ़े (फ़ा170) उनकी तौबा हरगिज़ क़बूल न होगी (फ़ा171) और वही हैं बहके हुए।(90) वह जो काफ़िर हुए और काफ़िर ही मरे उन में किसी से ज़मीन भर सोना हरगिज़ क़बूल न किया जाएगा अगरचे अपनी ख़लासी को दे उनके लिए दर्दनाक अ़ज़ाब है और उनका कोई यार नहीं।(91)(रुकूअ़ 17)

(फ़ा167)यानी सय्यदे अम्बिया मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम (फ़ा168) और वह रौशन मोअ़्जेज़ात देख चुके थे। (फ़ा169) और कुफ़्र से बाज़ आए। **शाने नुज़ूलः** हारिस इब्ने सुवैद अंसारी को कुफ़्फ़ार के साथ जो मिलने के बाद नदामत हुई तो उन्होंने अपनी क़ौम के पास पयाम भेजा कि रसूले करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से दरियाफ़्त करें कि क्या मेरी तौबा क़बूल हो सकती है उनके हक़ में यह आयत नाज़िल हुई तब वह मदीना मुनव्वरा में तायब होकर हाज़िर हुए और सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने उनकी तौबा क़बूल फ़रमाई। (फ़ा170) **शाने नुज़ूलः** यह आयत यहूद के हक़ में नाज़िल हुई जिन्होंने हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम पर ईमान लाने के बाद हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम और इन्जील के साथ कुफ़्र किया फिर कुफ़्र में और बढ़े और सय्यदे अम्बिया मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम और कुरआन के साथ कुफ़्र किया और एक क़ौल यह है कि यह आयत यहूद व नसारा के हक़ में नाज़िल हुई जो सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की बेअ़्सत से क़ब्ल तो अपनी किताबों में आप की नअ़्त व सिफ़त देख कर आप पर ईमान रखते थे और आपके ज़ुहूर के बाद काफ़िर हो गए और फिर कुफ़्र में और शदीद हो गए (फ़ा171) इस हाल में या वक़्ते मौत या अगर वह कुफ़्र पर मरे।

(बक़िया सफ़हा 80 का) अ़ता फ़रमाई वह रब है और ज़िन्दगी के बाद फिर ज़िन्दा अजसाम को जो मौत देता है वह परवरदिगार है उसकी क़ुदरत की शहादत ख़ुद तेरी अपनी मौत व हयात में मौजूद है उसके वुजूद से बे-ख़बर रहना कमाले जहालत व सफ़ाहत और इन्तेहाई बद-नसीबी है यह दलील ऐसी ज़बरदस्त थी कि इसका जवाब नमरूद से बन न पड़ा और इस ख़्याल से कि मजमा के सामने उसको ला-जवाब और शर्मिन्दा होना पड़ता है उसने कज बहसी इख़्तियार की। (फ़ा538) नमरूद ने दो शख़्सों को बुलाया उनमें से एक को क़त्ल किया एक को छोड़ दिया और कहने लगा कि मैं भी जिलाता मारता हूं यानी किसी को गिरिफ़्तार करके छोड़ देना उसको जिलाना है यह उसकी निहायत अहमक़ाना बात थी कहां क़त्ल करना और छोड़ना और कहां मौत व हयात पैदा करना क़त्ल किए हुए शख़्स को ज़िन्दा करने से आ़जिज़ रहना और बजाए इसके ज़िन्दा के छोड़ने को जिलाना कहना ही उसकी ज़िल्लत के लिए काफ़ी था उक़ला पर इसी से ज़ाहिर हो गया कि जो हुज्जत हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम ने क़ाइम फ़रमाई वह क़ातेअ़् है और उसका जवाब मुमकिन नहीं लेकिन चूंकि नमरूद के जवाब में शाने दावा पैदा हो गई तो हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम ने उस पर मुनाज़राना गिरिफ़्त फ़रमाई कि मौत व हयात का पैदा करना तो तेरे मक़दूर में नहीं ऐ रुबूबियत के झूटे मुद्दई तू इससे सहल काम ही कर दिखा जो एक मुतहर्रिक जिस्म की हरकत का बदलना है। (फ़ा539) यह भी न कर सके तो रुबूबियत का दावा किस मुंह से करता है। **मसलाः** इस आयत से इल्मे कलाम में मुनाज़रा करने का सुबूत होता है।

(बक़िया सफ़हा 79 का) उन दर्जों की कोई शुमार क़ुरआने करीम में ज़िक्र नहीं फ़रमाई तो अब कौन हद लगा सकता है, इन बेशुमार ख़साइस में से बाज़ का इजमाली व मुख़्तसर बयान यह है कि आपकी रिसालत आ़म्मा है तमाम कायनात आपकी उम्मत है अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया *व मा अर्सल्ना-क इल्ला काफ़्-फ़ तंल्-लिन्नासि बशीरंव् व नज़ीरा* दूसरी आयत में फ़रमाया *लि-यकू-न लिल्आ़-लमी-न नज़ीरा* मुस्लिम शरीफ़ की हदीस में इरशाद हुआ *उर्सिल्तु इलल् ख़लाइक़ि काफ़्-फ़-तन्* और आप पर नबुव्वत ख़त्म की गई क़ुरआन पाक में आपको ख़ातमन्नबीईन फ़रमाया। हदीस शरीफ़ में इरशाद हुआ *ख़ुतिि-म बियन् नबिय्यू-न* आयाते बैय्यिनात व मोअ़्जेज़ाते बाहिरात में आपको तमाम अम्बिया पर अफ़ज़ल फ़रमाया गया आपकी उम्मत को तमाम उम्मतों पर अफ़ज़ल किया गया शफ़ाअ़ते कुबरा आपको मरहमत हुई क़ुर्बे ख़ास मेअ़्राज आपको मिला इल्मी व अ़मली कमालात में आपको सबसे आला किया और इसके अलावा बे इन्तेहा ख़साइस आपको अ़ता हुए (मदारिक, जुमल, ख़ाज़िन, बैज़ावी वग़ैरह) (फ़ा517) जैसे मुर्दे को ज़िन्दा करना बीमारों को तन्दुरुस्त करना मिट्टी से परिन्द बनाना ग़ैब की ख़बरें देना वग़ैरह (फ़ा518) यानी जिबरील अ़लैहिस्सलाम से जो हमेशा आपके साथ रहते थे। (फ़ा519) यानी अम्बिया के मोअ़्जेज़ात (फ़ा520) यानी अम्बियाए साबिक़ीन की उम्मतें भी ईमान व कुफ़्र में मुख़्तलिफ़ रहीं यह न हुआ कि तमाम उम्मत मुतीअ़् हो जाती (फ़ा521) उसके मिल्क में उसकी मशीयत के ख़िलाफ़ कुछ नहीं हो सकता और यही ख़ुदा की शान है (फ़ा522) कि उन्होंने ज़िन्दगानीए दुनिया में रोज़े हाजत यानी क़ियामत के लिए कुछ न किया। (फ़ा523) इसमें अल्लाह तआ़ला की उलूहियत और उसकी तौहीद का बयान है इस आयत को आयतुल कुर्सी कहते हैं अहादीस में इसकी बहुत फ़ज़ीलतें वारिद हैं। (फ़ा524) यानी वाजिबुल वुजूद और आ़लम का ईजाद करने और तदबीर फ़रमाने वाला (फ़ा525) क्योंकि यह नक़्स है और वह नक़्स व ऐब से पाक है (फ़ा526) इस में उसकी मालिकियत और निफ़ाज़े अमूर व तसर्रुफ़ का बयान है और निहायत लतीफ़ पैराया में रद्दे शिर्क है कि जब सारा जहान उसकी मिल्क है तो शरीक कौन हो सकता है मुशरिकीन या तो कवाकिब को पूजते हैं जो आसमानों में हैं या दरियाओं पहाड़ों पत्थरों दरख़्तों जानवरों आग वग़ैरह को जो ज़मीन में हैं। जब आसमान व ज़मीन की हर चीज़ अल्लाह की मिल्क है तो यह कैसे पूजने के क़ाबिल हो सकते हैं। (फ़ा527) इसमें मुशरिकीन का रद है जिन का गुमान था कि बुत शफ़ाअ़त करेंगे उन्हें बता दिया गया कि कुफ़्फ़ार के लिए शफ़ाअ़त नहीं अल्लाह के हुज़ूर माज़ूनीन के सिवा कोई शफ़ाअ़त नहीं कर सकता और इज़्न वाले अम्बिया व मलायका व मोमिनीन हैं। (फ़ा528) यानी मा क़ब्ल व मा बाद या उमूरे दुनिया व आख़िरत। (फ़ा529) और जिनको वह मुत्तलअ़् फ़रमाए वह अम्बिया व रुसुल हैं जिनको ग़ैब पर मुत्तलअ़् फ़रमाना उनकी नबुव्वत की दलील है दूसरी आयत में इरशाद फ़रमाया *ला युज़्हिरु अ़ला ग़ैबिहि अ-हदन् इल्ला मनिर्-तज़ा मिर्रसूलिन* (ख़ाज़िन)

(बक़िया सफ़हा 83 का) बाब में नाज़िल हुई हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा ने फ़रमाया कि यह मिसाल है एक दौलतमन्द शख़्स के लिए जो नेक अ़मल करता हो फिर शैतान के इग़वा से गुमराह होकर अपनी तमाम नेकियों को ज़ाया कर दे (मदारिक व ख़ाज़िन) (फ़ा565) और समझो कि दुनिया फ़ानी और आ़क़िबत आनी है। (फ़ा566) **मसलाः** इससे कस्ब की इबाहत और अमवाले तिजारत में ज़कात साबित होती है (ख़ाज़िन व मदारिक) यह भी हो सकता है कि आयत सदक़ए नाफ़िला व फ़र्ज़िया दोनों को आ़म हो (तफ़सीर अहमदी) (फ़ा567) ख़्वाह वह ग़ल्ले हों या फल या मआ़दिन वग़ैरह (फ़ा568) **शाने नुज़ूलः** बाज़ लोग ख़राब माल सदक़ा में देते थे उनके हक़ में यह आयत नाज़िल हुई। **मसलाः** मुसद्दिक़ यानी सदक़ा वसूल करने वाले को चाहिये कि वह मुतवस्सित माल ले न बिल्कुल ख़राब न सबसे आला (फ़ा569) कि अगर ख़र्च करोगे सदक़ा दोगे तो नादार हो जाओगे (फ़ा570) यानी बुख़्ल का और ज़कात व सदक़ा न देने का इस आयत में यह लतीफ़ा है कि शैतान किसी तरह बुख़्ल की ख़ूबी ज़ेहन नशीन नहीं कर सकता इस लिए वह यही करता है कि ख़र्च करने से नादारी का अन्देशा दिला कर रोके आजकल जो लोग ख़ैरात को रोकने पर मुसिर हैं वह भी इसी हीला से काम लेते हैं (फ़ा571) सदक़ा देने पर और ख़र्च करने पर (फ़ा572) हिकमत से या क़ुरआन व हदीस व फ़िक़ह का इल्म मुराद है या तक़वा या नबुव्वत (मदारिक व ख़ाज़िन)।

(बक़िया सफ़हा 84 का) आयत अहले सुफ़्फ़ा के हक़ में नाज़िल हुई उन हज़रात की तादाद चार सौ के क़रीब थी यह हिजरत करके मदीना तय्यबा हाज़िर हुए थे न यहां उनका मकान था न क़बीला कुम्बा न उन हज़रात ने शादी की थी उनके तमाम औक़ात इबादत में सर्फ़ होते थे रात में क़ुरआने करीम सीखना दिन में जेहाद के काम में रहना आयत में उनके बाज़ औसाफ़ का बयान है (फ़ा580) क्यों कि उन्हें दीनी कामों से इतनी फ़ुरसत नहीं कि वह चल फिर कर कस्बे मआ़श कर सकें (फ़ा581) यानी चूंकि वह किसी से सवाल नहीं करते इस लिए नावाक़िफ़ लोग उन्हें मालदार ख़्याल करते हैं (फ़ा582) कि मिज़ाज में तवाज़ोअ़् व इन्केसार है चेहरों पर ज़ोअ़्फ़ के आसार हैं भूक से रंग ज़र्द पड़ गए हैं।

(बक़िया सफ़हा 90 का) उनकी कुल तादाद तीन सौ तेरह थी सत्तर मुहाजिर और दो सौ छत्तीस अंसार मुहाजिरीन के साहबे रायत हज़रत अ़ली मुर्तज़ा थे और अंसार के हज़रत सअ़द बिन उ़बादा रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा उस कुल लश्कर में दो घोड़े सत्तर ऊँट और छः ज़िरह आठ तलवारें थीं और इस वाक़िआ़ में चौदह सहाबा शहीद हुए छः मुहाजिर और आठ अंसार (फ़ा26) कुफ़्फ़ार की तादाद नौ सौ पचास थी उनका सरदार उतबा बिन रबीआ़ था और उनके पास सौ घोड़े थे और सात सौ ऊँट और ब-कसरत ज़िरह और हथियार थे। (जुमल) (फ़ा27) ख़्वाह उसकी तादाद क़लील ही हो और सरो सामान की कितनी ही कमी हो (फ़ा28) ताकि शह्वत परस्तों और ख़ुदा परस्तों के दर्मियान फ़र्क़ व इम्तियाज़ ज़ाहिर हो जैसा कि दूसरी आयत में इरशाद फ़रमाया *इन्ना जअ़ल्ना मा अ़लल् अर्ज़ि ज़ी-नतल्-लहा लि-नब्लु वहुम् अय्युहुम् अह्-सनु अ़-मला*

(बक़िया सफ़हा 81 का) रस को देखिये कि वैसा ही है उसमें बू तक न आई और अपने गधे को देखिये देखा तो वह मर गया था गल गया था आज़ा बिखर गए थे हड्डियां सफ़ेद चमक रही थीं आपकी निगाह के सामने उसके आज़ा जमा हुए आज़ा अपने अपने मवाक़ेअ़ पर आए हड्डियों पर गोश्त चढ़ा गोश्त पर खाल आई बाल निकले फिर उसमें रूह फूंकी वह उठ खड़ा हुआ और आवाज़ करने लगा आपने अल्लाह तआ़ला की क़ुदरत का मुशाहदा किया और फ़रमाया मैं ख़ूब जानता हूं कि अल्लाह तआ़ला हर शय पर क़ादिर है। फिर आप अपनी उस सवारी पर सवार होकर अपने मुहल्ला में तशरीफ़ लाए सरे अक़्दस और रेशे मुबारक के बाल सफ़ेद थे उम्र वही चालीस साल की थी कोई आपको न पहचानता था अन्दाज़े से अपने मकान पर पहुंचे एक ज़ईफ़ बुढ़िया मिली जिसके पांव रह गए थे वह नाबीना हो गई थी वह आपके घर की बांदी थी और उसने आपको देखा था आपने उससे दरियाफ़्त फ़रमाया कि यह उज़ैर का मकान है उसने कहा हां, और उज़ैर कहां, उन्हें मफ़क़ूद हुए सौ बरस गुज़र गए यह कह कर ख़ूब रोई आपने फ़रमाया मैं उज़ैर हूं उसने कहा सुबहानल्लाह यह कैसे हो सकता है आपने फ़रमाया, अल्लाह तआ़ला ने मुझे सौ बरस मुर्दा रखा फिर ज़िन्दा किया उसने कहा हज़रत उज़ैर मुस्तजाबुद्दावात थे जो दुआ़ करते क़बूल होती आप दुआ़ कीजिये कि मैं बीना हो जाऊं ताकि मैं अपनी आंखों से आपको देखूं आपने दुआ़ फ़रमाई वह बीना हुई आपने उसका हाथ पकड़ कर फ़रमाया उठ ख़ुदा के हुक्म से यह फ़रमाते ही उसके मारे हुए पांव दुरुस्त हो गए उसने आपको देखकर पहचाना और कहा मैं गवाही देती हूं कि आप बेशक हज़रत उज़ैर हैं वह आपको बनी इसराईल के मुहल्ले में ले गई वहां एक मजलिस में आपके फ़रज़न्द थे जिनकी उम्र एक सौ अट्ठारह साल की हो चुकी थी आपके पोते भी थे जो बूढ़े हो चुके थे बुढ़िया ने मजलिस में पुकारा कि यह हज़रत उज़ैर तशरीफ़ ले आए अहले मजलिस ने इसको झुठलाया उसने कहा मुझे देखो आपकी दुआ़ से मेरी यह हालत हो गई लोग उठे और आपके पास आए आपके फ़रज़न्द ने कहा कि मेरे वालिद साहब के शानों के दर्मियान सियाह बालों का एक हिलाल था जिस्मे मुबारक खोल कर देखा गया तो वह मौजूद था उस ज़माना में तौरेत का कोई नुस्ख़ा न रहा था कोई उसका जानने वाला मौजूद न था आपने तमाम तौरेत हिफ़्ज़ पढ़ दी एक शख़्स ने कहा कि मुझे अपने वालिद से मालूम हुआ कि बुख़्ते नसर की सितम अंगेज़ियों के बाद गिरिफ़्तारी के ज़माना में मेरे दादा ने तौरेत एक जगह दफ़न कर दी थी उसका पता मुझे मालूम है उस पता पर जुस्तजू करके तौरेत का वह मदफ़ून नुस्ख़ा निकाला गया और हज़रत उज़ैर अ़लैहिस्सलाम ने अपनी याद से जो तौरेत लिखाई थी उससे मुक़ाबला किया गया तो एक हरफ़ का फ़र्क़ न था (जुमल) (फ़ा541) कि पहले छतें गिरीं फिर उन पर दीवारें आ पड़ीं। (फ़ा542) मुफ़स्सिरीन ने लिखा है कि समुन्दर के किनारे एक आदमी मरा पड़ा था जुवार भाटे में समुन्दर का पानी चढ़ता उतरता रहता है जब पानी चढ़ता तो मछलियां उस लाश को खातीं जब उतर जाता तो जंगल के दरिन्दे खाते जब दरिन्दे जाते तो परिन्द खाते हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम ने यह मुलाहज़ा फ़रमाया तो आपको शौक़ हुआ कि आप मुलाहज़ा फ़रमायें कि मुर्दे किस तरह ज़िन्दा किये जायेंगे आपने बारगाहे इलाही में अर्ज़ किया या रब मुझे यक़ीन है कि तू मुर्दों को ज़िन्दा फ़रमाएगा और उनके अजज़ा दरियाई जानवरों और दरिन्दों के पेट और परिन्दों के पोटों से जमा फ़रमाएगा लेकिन मैं यह अ़जीब मन्ज़र देखने की आरज़ू रखता हूं। मुफ़स्सिरीन का एक क़ौल यह भी है कि जब अल्लाह तआ़ला ने हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम को अपना ख़लील किया मलकुलमौत हज़रत रब्बुल इज़्ज़त से इज़्न लेकर आपको यह बशारत सुनाने आए आपने बशारत सुनकर अल्लाह की हम्द की और मलकुलमौत से फ़रमाया कि उस ख़ुल्लत की अ़लामत क्या है उन्होंने अ़र्ज़ किया यह कि अल्लाह तआ़ला आपकी दुआ़ क़बूल फ़रमाए और आपके सवाल पर मुर्दे ज़िन्दा करे तब आप ने यह दुआ़ की (ख़ाज़िन) (फ़ा543) अल्लाह तआ़ला आ़लिमे ग़ैब व शहादत है उसको हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम के कमाले ईमान व यक़ीन का इल्म है बावजूद इसके यह सवाल फ़रमाना कि क्या तुझे यक़ीन नहीं इस लिए है कि सामेईन को सवाल का मक़सद मालूम हो जाए और वह जान लें कि यह सवाल किसी शक व शुबहा की बिना पर न था (बैज़ावी व जुमल वग़ैरह) (फ़ा544) और इन्तेज़ार की बेचैनी रफ़अ़ हो हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने फ़रमाया माना यह हैं कि इस अ़लामत से मेरे दिल को तस्कीन हो जाए कि तू ने मुझे अपना ख़लील बनाया।(फ़ा545) ताकि अच्छी तरह शिनाख़्त हो जाए (फ़ा546) हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम ने चार परिन्द लिये मोर, मुर्ग़, कबूतर, कव्वा, उन्हें बहुक्मे इलाही ज़िबह किया उनके पर उखाड़े और क़ीमा करके उनके अजज़ा बाहम ख़लत कर दिये और उस मजमूआ़ के कई हिस्सा किये एक-एक हिस्सा एक-एक पहाड़ पर रखा और सर सबके अपने पास महफ़ूज़ रखे फिर फ़रमाया चले आओ हुक्मे इलाही से यह फ़रमाते ही वह अजज़ा उड़े और हर-हर जानवर के अजज़ा अ़लाहिदा अ़लाहिदा होकर अपनी तरतीब से जमा हुए और परिन्दों की शक्लें बन कर अपने पांव से दौड़ते हाज़िर हुए और अपने अपने सरों से मिल कर बेऐनेही पहले की तरह मुकम्मल होकर उड़ गए सुबहानल्लाह।

(बक़िया सफ़हा 82 का) उसको मुकद्दर करें और तकलीफ़ देना यह कि उसको आ़र दिलायें कि तू नादार था मुफ़लिस था मजबूर था निकम्मा था हमने तेरी ख़बर गीरी की या और तरह दबाव दें यह ममनूअ़ फ़रमाया गया (फ़ा552) यानी अगर सायल को कुछ न दिया जाए तो उससे अच्छी बात कहना और ख़ुश ख़ुल्क़ी के साथ जवाब देना जो उसको नागवार न गुज़रे और अगर वह सवाल में इसरार करे या ज़बान दराज़ी करे तो उससे दरगुज़र करना। (फ़ा553) आ़र दिला कर या एहसान जता कर या और कोई तकलीफ़ पहुंचा कर (फ़ा554) यानी जिस तरह मुनाफ़िक़ को रज़ाए इलाही मक़सूद नहीं होती वह अपना माल रिया कारी के लिए ख़र्च करके ज़ाया कर देता है इस तरह तुम एहसान जता कर और ईज़ा देकर अपने सदक़ात का अज्र ज़ाया न करो (फ़ा555) यह मुनाफ़िक़ रियाकार के अ़मल की मिसाल है कि जिस तरह पत्थर पर मिट्टी नज़र आती है लेकिन बारिश से वह सब दूर हो जाती है ख़ाली पत्थर रह जाता है यही हाल मुनाफ़िक़ के अ़मल का है कि देखने वालों को मालूम होता है कि अ़मल है और रोज़े क़ियामत वह तमाम अ़मल बातिल होंगे क्योंकि रज़ाए इलाही के लिए न थे।

(बक़िया सफ़हा 85 का) पहुंचाना गवारा नहीं करता, चहारुम सूद से इंसान की तबीअ़त में दरिन्दों से ज़्यादा बे रहमी पैदा होती है और सूद ख़्वार अपने मदयून की तबाही व बरबादी का ख़्वाहिशमन्द रहता है इसके अलावा भी सूद में और बड़े बड़े नक़सान हैं और शरीअ़त की मुमानअ़त ऐने हिकमत है मुसिलम शरीफ़ की हदीस में है कि रसूले करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने सूद ख़्वार और उसके कारपर्दाज़ और सूदी दस्तावेज़ के कातिब और उसके गवाहों पर लानत की और फ़रमाया वह सब गुनाह में बराबर हैं (फ़ा585) माना यह हैं कि जिस तरह आसेब-ज़दा सीधा खड़ा नहीं हो सकता गिरता पड़ता चलता है क़ियामत के रोज़ सूद ख़्वार का ऐसा ही हाल होगा कि सूद से उसका पेट बहुत भारी और बोझल हो जाएगा और वह उसके बोझ से गिर गिर पड़ेगा। सईद बिन जुबैर रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु ने फ़रमाया कि यह अ़लामत उस सूद ख़्वार की है जो सूद को हलाल जाने (फ़ा586) यानी हुरमत नाज़िल होने से क़ब्ल जो लिया उस पर मुवाख़ज़ा नहीं (फ़ा587) जो चाहे अमर फ़रमाए जो चाहे ममनूअ़ व हराम करे बन्दे पर उसकी इताअ़त लाज़िम है। (फ़ा588) **मसलाः** जो सूद को हलाल जाने वह काफ़िर है हमेशा जहन्नम में रहेगा क्योंकि हर एक हरामे क़तई का हलाल जानने वाला काफ़िर है। (फ़ा589) और उसको बरकत से महरूम करता है हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु ने फ़रमाया कि अल्लाह तआ़ला उस से न सदक़ा क़बूल करे न हज न जेहाद न सिला। (फ़ा590) उसको ज़्यादा करता है और उसमें बरकत फ़रमाता है दुनिया में और आख़िरत में उसका अज्र व सवाब बढ़ाता है। (फ़ा591) **शाने नुज़ूलः** यह आयत उन असहाब के हक़ में नाज़िल हुई जो सूद की हुरमत नाज़िल होने से क़ब्ल सूदी लेन देन करते थे और उनकी गिरां क़दर सूदी रक़्में दूसरों के ज़िम्मा बाक़ी थीं उसमें हुक्म दिया गया कि सूद की हुरमत नाज़िल होने के बाद साबिक़ के मुतालबा भी वाजिबुत्तर्क हैं और पहला मुक़र्रर किया हुआ सूद भी अब लेना जायज़ नहीं।

(बक़िया सफ़हा 86 का) तरफ़ से कोई कमी बेशी न करे न फ़रीक़ैन में से किसी की रू रिआ़यत (फ़ा600) हासिले माना यह कि कोई कातिब लिखने से मना न करे जैसा कि अल्लाह तआ़ला ने उसको वसीक़ा नवेसी का इल्म दिया बे तग़ईर व तब्दील दियानत व अमानत के साथ लिखे यह किताबत एक क़ौल पर फ़र्ज़े कफ़ाया है और एक क़ौल पर फ़र्ज़े ऐन बशर्ते फ़राग़ कातिब जिस सूरत में इसके सिवा और न पाया जाए और एक क़ौल पर मुस्तहब क्योंकि इसमें मुसलमान की हाजत बर आरी और निअ़मते इल्म का शुक्र है और एक क़ौल यह है कि पहले यह किताबत फ़र्ज़ थी फिर *ला युज़ार्रु कातिबुन्* से मन्सूख़ हुई (फ़ा601) यानी अगर मदयून मजनून व नाक़िसुल अ़क़्ल या बच्चा या शैख़े फ़ानी हो या गूंगा होने या ज़बान न जानने की वजह से अपने मुद्दआ़ का बयान न कर सकता हो। (फ़ा602) गवाह के लिए हुर्रियत व बुलूग़ मअ़ इस्लाम शर्त है कुफ़्फ़ार की गवाही सिर्फ़ कुफ़्फ़ार पर मक़बूल है (फ़ा603) **मसलाः** तन्हा औरतों की शहादत जायज़ नहीं ख़्वाह वह चार क्यों न हों मगर जिन उमूर पर मर्द मुत्तलअ़ नहीं हो सकते जैसे कि बच्चा जनना बाकिरा होना और नेसाई उयूब उसमें एक औरत की शहादत भी मक़बूल है। **मसलाः** हुदूद व क़सास में औरतों की शहादत बिल्कुल मोअ़तबर नहीं सिर्फ़ मर्दों की शहादत ज़रूरी है इसके सिवा और मुआ़मलात में एक मर्द और दो औरतों की शहादत भी मक़बूल है। (मदारिक व अहमदी) (फ़ा604) जिनका आ़दिल होना तुम्हें मालूम हो और जिनके सालेह होने पर तुम एतेमाद रखते हो।

(बक़िया सफ़हा 91 का) करो उन्होंने अ़र्ज़ किया कि किताबुल्लाह में सबसे बड़ी शहादत कौन-सी है इस पर यह आयते करीमा नाज़िल हुई और इसको सुन कर वह दोनों हिबर मुसलमान हो गए हज़रत सईद बिन जुबैर रज़ियल्लाहु अ़न्हु से मरवी है कि कअ़बए मुअ़ज़्ज़मा में तीन सौ साठ बुत थे जब मदीना तय्यबा में यह आयत नाज़िल हुई तो कअ़बा के अन्दर वह सब सज्दा में गिर गए। (फ़ा39) यानी अम्बिया व औलिया ने (फ़ा40) इसके सिवा कोई और दीन मक़बूल नहीं यहूद व नसारा वग़ैरह कुफ़्फ़ार जो अपने दीन को अफ़ज़ल व मक़बूल कहते हैं इस आयत में उनके दावा को बातिल कर दिया। (फ़ा41) यह आयत यहूद व नसारा के हक़ में वारिद हुई जिन्होंने इस्लाम को छोड़ा और उन्होंने सय्यदे अम्बिया मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की नबुव्वत में इख़्तिलाफ़ किया। (फ़ा42) वह अपनी किताबों में सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की नअ़त व सिफ़त देख चुके और उन्होंने पहचान लिया कि यही वह नबी हैं जिनकी कुतुबे इलाहिया में ख़बरें दी गई हैं। (फ़ा43) यानी उनके इख़्तिलाफ़ का सबब उनका हसद और मुनाफ़ए दुनियविया की तमअ़ है।

(बक़िया सफ़हा 98 का) हाज़िर हुए तो उन्होंने देखा कि हुज़ूर की गोद में तो इमाम हुसैन हैं और दस्ते मुबारक में हसन का हाथ और फ़ातिमा और अ़ली हुज़ूर के पीछे हैं (रज़ियल्लाहु अ़न्हुम) और हुज़ूर उन सब से फ़रमा रहे हैं कि जब मैं दुआ़ करूं तो तुम सब आमीन कहना नजरान के सबसे बड़े नसरानी आ़लिम (पादरी) ने जब उन हज़रात को देखा तो कहने लगा ऐ जमाअ़ते नसारा मैं ऐसे चेहरे देख रहा हूं कि अगर यह लोग अल्लाह से पहाड़ को हटा देने की दुआ़ करें तो अल्लाह तआ़ला पहाड़ को जगह से हटा दे इनसे मुबाहला न करना हलाक हो जाओगे और क़ियामत तक रूए ज़मीन पर कोई नसरानी बाक़ी न रहेगा यह सुन कर नसारा ने हुज़ूर की ख़िदमत में अ़र्ज़ किया कि मुबाहला की तो हमारी राय नहीं है आख़िरकार उन्होंने जिज़या देना मन्ज़ूर किया मगर मुबाहला के लिए तैयार न हुए। सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि उस की क़सम जिसके दस्ते क़ुदरत में मेरी जान है नजरान वालों पर अ़ज़ाब क़रीब आ ही चुका था अगर वह मुबाहला करते तो बन्दरों और सूअरों की सूरत में मस्ख़ कर दिये जाते और जंगल आग से भड़क उठता और नजरान और वहां के रहने वाले परिन्द तक नेस्त व नाबूद हो जाते और एक साल के अ़र्सा में तमाम नसारा हलाक हो जाते। (फ़ा117) कि हज़रत ईसा अल्लाह के बन्दे और उसके रसूल हैं और उनका वह हाल है जो ऊपर मज़कूर हो चुका। (फ़ा118) इसमें नसारा का भी रद है और तमाम मुशरिकीन का भी।

(बक़िया सफ़हा 87 का) ज़रर न पहुंचायें इस तरह कि वह अगर अपनी ज़रूरतों में मशगूल हों तो उन्हें मजबूर करें और उनके काम छुड़ायें या हक़्क़े किताबत न दें या गवाह को सफ़रे ख़र्च न दें अगर वह दूसरे शहर से आया हो दूसरी तक़दीर पर माना यह हैं कि कातिब व शाहिद अहले मुआमला को ज़रर न पहुंचायें इस तरह कि बावजूद फ़ुरसत व फ़राग़त के न आयें या किताबत में तहरीफ़ व तब्दील ज़्यादती व कमी करें। (फ़ा609) और क़र्ज़ की ज़रूरत पेश आए। (फ़ा610) और वसीक़ा व दस्तावेज़ की तहरीर का मौक़ा न मिले तो इत्मीनान के लिए (फ़ा611) यानी कोई चीज़ दाइन के क़ब्ज़ा में गिरवी के तौर पर दे दो। **मसलाः** यह मुस्तहब है और हालते सफ़र में रेहन आयत से साबित हुआ और ग़ैरे सफ़र की हालत में हदीस से साबित है चुनांचे रसूले करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने मदीना तय्यबा में अपनी ज़िरह मुबारक यहूदी के पास गिरो रख कर बीस साअ् जौ लिये। **मसलाः** इस आयत से रेहन का जवाज़ और क़ब्ज़ा का शर्त होना साबित होता है। (फ़ा612) यानी मदयून जिस को दाइन ने अमीन समझा था। (फ़ा613) इस अमानत से दैन मुराद है। (फ़ा614) क्योंकि इस में साहबे हक़ के हक़ का इबताल है यह ख़िताब गवाहों को है कि वह जब शहादत की इक़ामत व अदा के लिए तलब किये जायें तो हक़ को न छुपायें और एक क़ौल यह है कि यह ख़िताब मदयूनों को है कि वह अपने नफ़्स पर शहादत देने में तअम्मुल न करें। (फ़ा615) हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा से एक हदीस मरवी है कि कबीरा गुनाहों में सबसे बड़ा गुनाह अल्लाह के साथ शरीक करना और झूटी गवाही देना और गवाही को छुपाना है। (फ़ा616) बदी (फ़ा617) इंसान के दिल में दो तरह के ख़्यालात आते हैं एक बतौरे वसवसा के उन से दिल का ख़ाली करना इंसान की मक़दरत में नहीं लेकिन वह उनको बुरा जानता है और अ़मल में लाने का इरादा नहीं करता उनको हदीसे नफ़्स और वसवसा कहते हैं इस पर मुवाख़ज़ा नहीं बुख़ारी व मुस्लिम की हदीस है सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि मेरी उम्मत के दिलों में जो वसवसे गुज़रते हैं अल्लाह तआ़ला उनसे तजावुज़ फ़रमाता है जब तक कि वह उन्हें अ़मल में न लायें या उनके साथ कलाम न करें यह वसवसे इस आयत में दाख़िल नहीं दूसरे वह ख़्यालात जिनको इंसान अपने दिल में जगह देता है और उनको अ़मल में लाने का क़स्द व इरादा करता है उन पर मुवाख़ज़ा होगा और उन्हीं का बयान इस आयत में है। **मसलाः** कुफ़्र का अ़ज़्म करना कुफ़्र है और गुनाह का अ़ज़्म करके अगर आदमी इस पर साबित रहे और इसका क़स्द व इरादा रखे लेकिन उस गुनाह को अ़मल में लाने के असबाब उसको बहम न पहुंचें और मजबूरन वह उसको कर न सके तो जम्हूर के नज़दीक उस से मुवाख़ज़ा किया जाएगा शैख़ अबू मन्सूर मातुरीदी और शम्सुल अइम्मा हलवाई इसी तरफ़ गए हैं और उनकी दलील आयत *इन्नल्लज़ी-न युहिब्बू-न अन् तुशीअ़ल् फ़ाहि-श-तः* और हदीसे हज़रत आ़इशा है जिसका मज़मून यह है कि बन्दा जिस गुनाह का क़स्द करता है अगर वह अ़मल में न आए जब भी उस पर एक़ाब किया जाता है। **मसलाः** अगर बन्दे ने किसी गुनाह का इरादा किया फिर उस पर नादिम हुआ इस्तिग़फ़ार किया तो अल्लाह उसको माफ़ फ़रमाएगा।

(बक़िया सफ़हा 92 का) में सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के औसाफ़ व अहवाल और दीने इस्लाम की हक़्क़ानियत का बयान है इससे लाज़िम आता था कि जब हुज़ूर तशरीफ़ फ़रमा हों और उन्हें क़ुरआने करीम की तरफ़ दावत दें तो वह हुज़ूर पर और क़ुरआन शरीफ़ पर ईमान लायें और उसके अहकाम की तामील करें लेकिन उनमें से बहुतों ने ऐसा नहीं किया इस तक़दीर पर आयत में *मिनल् किताबि* से तौरेत और *किताबुल्लाह* से क़ुरआन शरीफ़ मुराद है। (फ़ा52) **शाने नुज़ूलः** इस आयत के शाने नुज़ूल में हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा से एक रिवायत यह आई है कि एक मर्तबा सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम बैतुल मिदरास में तशरीफ़ ले गए और वहां यहूद को इस्लाम की दावत दी नुऐम इब्ने अ़मर और हारिस इब्ने ज़ैद ने कहा कि ऐ मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम आप किस दीन पर हैं फ़रमाया, मिल्लते इब्राहीमी पर वह कहने लगे हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम तो यहूदी थे सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया तौरेत लाओ अभी हमारे तुम्हारे दर्मियान फ़ैसला हो जाएगा इस पर न जमे और मुन्किर हो गए इस पर यह आयते शरीफ़ा नाज़िल हुई इस तक़दीर पर आयत में *किताबुल्लाह* से तौरेत मुराद है। इन्हीं हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा से एक रिवायत यह भी मरवी है कि यहूदे ख़ैबर में से एक मर्द ने एक औ़रत के साथ ज़िना किया था और तौरेत में ऐसे गुनाह की सज़ा पत्थर मार मार कर हलाक कर देना है इस पर यह आयते शरीफ़ा नाज़िल हुई इस तक़दीर पर आयत में *किताबुल्लाह* से तौरेत मुराद है। इन्हीं हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा से एक रिवायत यह भी मरवी है कि यहूदे ख़ैबर में से एक मर्द ने एक औ़रत के साथ ज़िना किया था और तौरेत में ऐसे गुनाह की सज़ा पत्थर मार मार कर हलाक कर देना है लेकिन चूंकि यह लोग यहूदियों में ऊंचे ख़ानदान के थे इस लिए उन्होंने उनका संगसार करना गवारा न किया और इस मुआमला को बईं उम्मीद सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के पास लाए कि शायद आप संगसार करने का हुक्म न दें मगर हुज़ूर ने उन दोनों के संगसार करने का हुक्म दिया इस पर यहूद तैश में आए और कहने लगे कि इस गुनाह की यह सज़ा नहीं आपने ज़ुल्म किया हुज़ूर ने फ़रमाया फ़ैसला तौरेत पर रखो कहने लगे यह इंसाफ़ की बात है तौरेत मंगाई गई और अ़ब्दुल्लाह बिन सूरिया यहूद के बड़े आ़लिम ने उसको पढ़ा उसमें आयते रजम आई जिसमें संगसार करने का हुक्म था अ़ब्दुल्लाह ने उस पर हाथ रख लिया और उसको छोड़ गया हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन सलाम ने उसका हाथ हटा कर आयत पढ़ दी यहूदी ज़लील हुए और वह यहूदी मर्द व औ़रत जिन्होंने ज़िना किया था हुज़ूर के हुक्म से संगसार किये गए इस पर यह आयत नाज़िल हुई (फ़ा53) किताबे इलाही से रू-गरदानी करने की। (फ़ा54) यानी चालीस दिन या एक हफ़्ता फिर कुछ ग़म नहीं (फ़ा55) और उनका यह क़ौल था कि हम अल्लाह के बेटे और उसके प्यारे हैं वह हमें गुनाहों पर अ़ज़ाब न करेगा मगर बहुत थोड़ी मुद्दत (फ़ा56) और वह रोज़े क़ियामत है।

(बक़िया सफ़हा 89 का) एक आ़क़िब जिसका नाम अ़ब्दुलमसीह था यह शख़्स अमीरे क़ौम था और बग़ैर उसकी राए के नसारा कोई काम न करते थे दूसरा सय्यद जिस का नाम ऐहम था यह शख़्स अपनी क़ौम का मोअ़्तमदे आज़म और मालियात का अफ़सरे आला था ख़ुर्दो नोश और रसदों के तमाम इन्तेज़ामात उसी के हुक्म से होते थे तीसरा अबू हारिसा इब्ने अ़लक़मा था यह शख़्स नसारा के तमाम उलमा और पादरियों का पेशवाए आज़म था सलातीने रूम उसके इल्म और उसकी दीनी अ़ज़मत के लिहाज़ से उसका इकराम व अदब करते थे यह तमाम लोग ऊमदा और क़ीमती पोशाकें पहन कर बड़ी शान व शिकोह से हुज़ूर सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से मुनाज़रा करने के क़स्द से आए और मस्जिदे अक़दस में दाख़िल हुए हुज़ूरे अक़दस अ़लैहिस्सलातु वत्तस्लीमात उस वक़्त नमाज़े अ़स्र अदा फ़रमा रहे थे उन लोगों की नमाज़ का वक़्त भी आ गया और उन्होंने भी मस्जिद शरीफ़ ही में जानिबे शर्क़ मुतवज्जेह होकर नमाज़ शुरू कर दी फ़राग़ के बाद हुज़ूरे अक़दस सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से गुफ़्तगू शुरू की हुज़ूर अ़लैहिस्सलातु वत्तस्लीमात ने फ़रमाया तुम इस्लाम लाओ कहने लगे हम आप से पहले इस्लाम ला चुके हुज़ूर अ़लैहिस्सलातु वत्तस्लीमात ने फ़रमाया यह ग़लत है यह दावा झूठा है। तुम्हें इस्लाम से तुम्हारा यह दावा रोकता है कि अल्लाह के औलाद है और तुम्हारी सलीब परस्ती रोकती है और तुम्हारा ख़िन्ज़ीर खाना रोकता है उन्होंने कहा कि अगर ईसा ख़ुदा के बेटे न हों तो बताईये उनका बाप कौन है और सब के सब बोलने लगे हुज़ूर सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया क्या तुम नहीं जानते कि बेटा बाप से ज़रूर मुशाबेह होता है उन्होंने इक़रार किया फिर फ़रमाया क्या तुम नहीं जानते कि हमारा रब *हय्युन लायमूत* है उसके लिए मौत मुहाल है और ईसा अ़लैहिस्सलातु वत्तस्लीमात पर मौत आने वाली है उन्होंने इसका भी इक़रार किया फिर फ़रमाया क्या तुम नहीं जानते कि हमारा रब बन्दों का कारसाज़ और उनका हाफ़िज़े हक़ीक़ी और रोज़ी देने वाला है उन्होंने कहा हां हुज़ूर ने फ़रमाया क्या हज़रत ईसा भी ऐसे ही हैं कहने लगे नहीं फ़रमाया क्या तुम नहीं जानते कि अल्लाह तआ़ला पर आसमान व ज़मीन की कोई चीज़ पोशीदा नहीं उन्होंने इक़रार किया हुज़ूर ने फ़रमाया कि हज़रते ईसा बग़ैर तालीमे इलाही उसमें से कुछ जानते हैं उन्होंने कहा नहीं हुज़ूर ने फ़रमाया क्या तुम नहीं जानते कि हज़रत ईसा हमल में रहे पैदा होने वालों की तरह पैदा हुए बच्चों की तरह ग़िज़ा दिये गए खाते पीते थे अ़वारिज़े बशरी रखते थे उन्होंने इसका इक़रार किया हुज़ूर ने फ़रमाया फिर वह कैसे इलाह हो सकते हैं जैसा कि तुम्हारा गुमान है इस पर वह सब साकित रह गए और उनसे कोई जवाब बन न आया इस पर सूरह आले इमरान की अव्वल से कुछ ऊपर अस्सी आयतें नाज़िल हुईं। फ़ायदाः सिफ़ाते इलाहिया में *हय्य* ब-माना दाइम बाक़ी के है यानी ऐसा हमेशगी रखने वाला जिसकी मौत मुमकिन न हो *क़य्यूम* वह है जो क़ायम बिज़्ज़ात हो और ख़ल्क़ अपनी दुनियवी और उख़रवी ज़िनदगी में जो हाजतें रखती है उसकी तदबीर फ़रमाए। (फ़ा3) इसमें वफ़्दे नजरान के नसरानी भी दाख़िल हैं। (फ़ा4) मर्द, औ़रत, गोरा, काला, ख़ूबसूरत, बद शक्ल वग़ैरह बुख़ारी व मुस्लिम की हदीस में है सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया तुम्हारा माद्दए पैदाइश मां के पेट में चालीस रोज़ जमा होता है फिर उतने ही दिन अ़लक़ा यानी ख़ूने बस्ता की शक्ल में होता है फिर उतने ही दिन पारए गोश्त की सूरत में रहता है फिर अल्लाह तआ़ला एक फ़रिश्ता भेजता है जो उसका रिज़्क़ उसकी उम्र उसके अ़मल उसका अंजामे कार यानी उसकी सआ़दत व शक़ावत लिखता है फिर उसमें रूह डालता है तो उस की क़सम जिसके सिवा कोई मअ़्बूद नहीं आदमी जन्नतियों के से अ़मल करता रहता है यहां तक कि उसमें और जन्नत में हाथ भर का यानी बहुत ही कम फ़र्क़ रह जाता है तो किताब सबक़त करती है और वह दोज़ख़ियों के से अ़मल करता है इसी पर उसका ख़ात्मा हो जाता है और दाख़िले जहन्नम होता है और कोई ऐसा होता है कि दोज़ख़ियों के से अ़मल करता रहता है यहां तक कि उसमें और दोज़ख़ में एक हाथ का फ़र्क़ रह जाता है फिर किताब सबक़त करती है और उसकी ज़िन्दगी का नक़्शा बदलता है और वह जन्नतियों के से अ़मल करने लगता है इसी पर उसका ख़ात्मा होता है और दाख़िले जन्नत हो जाता है। (फ़ा5) इसमें भी नसारा का रद है जो हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलातु वत्तस्लीमात को ख़ुदा का बेटा कहते और उनकी इबादत करते थे। (फ़ा6) जिसमें कोई एहतेमाल व इश्तेबाह नहीं (फ़ा7) कि अहकाम में उनकी तरफ़ रुजूअ़् किया जाता है और हलाल व हराम में उन्हीं पर अ़मल। (फ़ा8) वह चन्द वुजूह का एहतेमाल रखती हैं उन में से कौन सी वजह मुराद है यह अल्लाह ही जानता है या जिसको अल्लाह तआ़ला उसका इल्म दे। (फ़ा9) यानी गुमराह और बद मज़हब लोग जो हवाए नफ़्सानी के पाबन्द हैं। (फ़ा10) और उसके ज़ाहिर पर हुक्म करते हैं या तावीले बातिल करते हैं और यह नेक नीयती से नहीं बल्कि (जुमल) (फ़ा11) और शक व शुबहा में डालने (जुमल) (फ़ा12) अपनी ख़्वाहिश के मुताबिक़ बावजूदे कि वह तावील के अहल नहीं (जुमल व ख़ाज़िन) (फ़ा13) हक़ीक़त में (जुमल) और अपने करम व अ़ता से जिस को वह नवाज़े। (फ़ा14) हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा से मरवी है आप फ़रमाते थे कि मैं रासेख़ीने फ़िलइल्म से हूं और मुजाहिद से मरवी है कि मैं उन में से हूं जो मुतशाबेह की तावील जानते हैं हज़रत अनस बिन मालिक रज़ियल्लाहु अ़न्हु से मरवी है कि रासेख़ फ़िलइल्म वह आ़लिमे बा अ़मल है जो अपने इल्म का मुत्तबअ़् हो और एक क़ौल मुफ़स्सिरीन का यह है कि रासेख़ फ़िलइल्म वह हैं जिन में चार सिफ़तें हों। तक़वा अल्लाह का, तवाज़ोअ़् लोगों से, ज़ुह्द दुनिया से मुजाहदए नफ़्स के साथ (ख़ाज़िन) (फ़ा15) कि वह अल्लाह की तरफ़ से है और जो माना उसकी मुराद हैं हक़ हैं और उसका नाज़िल फ़रमाना हिकमत है। (फ़ा16) मोहकम हो या मुतशाबेह (फ़ा17) और रासेख़ इल्म वाले कहते हैं।

(बक़िया सफ़हा 94 का) अल्लाह तआ़ला ने उन हज़रात को इस्लाम के साथ बरगुज़ीदा किया था और तुम ऐ यहूद इस्लाम पर नहीं हो तो तुम्हारा यह दावा ग़लत है। (फ़ा67) उनमें बाहम नस्ली तअ़ल्लुक़ात भी हैं और आपस में यह हज़रात एक दूसरे के मुआ़विन व मददगार भी (फ़ा68) इमरान दो हैं एक इमरान बिन यसहुर बिन फ़ाहस बिन लावा बिन याक़ूब यह तो हज़रत मूसा व हारून के वालिद हैं दूसरे इमरान बिन मासान यह हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलातु वस्सलाम की वालिदा मरयम के वालिद हैं दोनों इमरानों के दर्मियान एक हज़ार आठ सौ बरस का फ़र्क़ है यहां दूसरे इमरान मुराद हैं उनकी बीबी साहिबा का नाम हन्ना बिन्ते फ़ाक़ूज़ा है यह मरयम की वालिदा हैं। (फ़ा69) और तेरी इबादत के सिवा दुनिया का कोई काम उसके मुतअ़ल्लिक़ न हो बैतुल मक़दिस की ख़िदमत उसके ज़िम्मा हो उलमा ने वाक़िआ़ इस तरह ज़िक्र किया है कि हज़रत ज़करिया व इमरान दोनों हम-ज़ुल्फ़ थे फ़ाक़ूज़ा की दुख़्तर ईशाअ़. जो हज़रत यह़्या की वालिदा हैं और उनकी बहन हन्ना जो फ़ाक़ूज़ा की दूसरी दुख़्तर और हज़रत मरयम की वालिदा हैं वह इमरान की बीबी थीं एक ज़माना तक हन्ना के औलाद नहीं हुई यहां तक कि बुढ़ापा आ गया और मायूसी हो गई यह सालिहीन का ख़ानदान था। और यह सब लोग अल्लाह के मक़बूल बन्दे थे एक रोज़ हन्ना ने एक दरख़्त के साया में एक चिड़िया देखी जो अपने बच्चा को भरा रही थी यह देख कर आप के दिल में औलाद का शौक़ पैदा हुआ और बारगाहे इलाही में दुआ़ की कि या रब अगर तू मुझे बच्चा दे तो मैं उसको बैतुल मक़दिस का ख़ादिम बनाऊं और इस ख़िदमत के लिए हाज़िर कर दूं जब वह हामिला हुईं और उन्होंने यह नज़र मान ली तो उनके शौहर ने फ़रमाया कि यह तुमने क्या किया अगर लड़की हो गई तो वह इस क़ाबिल कहां है उस ज़माना में लड़कों को ख़िदमते बैतुल मक़दिस के लिए दिया जाता था और लड़कियां अ़वारिज़े नेसाई और ज़नाना कमज़ोरियों और मर्दों के साथ न रह सकने की वजह से इस क़ाबिल नहीं समझी जाती थीं इस लिए उन साहिबों को शदीद फ़िक्र लाहिक़ हुई और हन्ना के वज़अ़े हमल से क़ब्ल इमरान का इन्तेक़ाल हो गया। (फ़ा70) हन्ना ने यह कलिमा एतेज़ार के तौर पर कहा और उनको हसरत व ग़म हुआ कि लड़की हुई तो नज़र किस तरह पूरी हो सकेगी (फ़ा71) क्योंकि यह लड़की अल्लाह की अ़ता है और उसके फ़ज़्ल से फ़रज़न्द से ज़्यादा फ़ज़ीलत रखने वाली है यह साहबज़ादी हज़रत मरयम थीं और अपने ज़माना की औरतों में सबसे अजमल व अफ़ज़ल थीं (फ़ा72) मरयम के माना आ़बिदा हैं (फ़ा73) और नज़र में लड़के की जगह हज़रत मरयम को क़बूल फ़रमाया हन्ना ने विलादत के बाद हज़रत मरयम को एक कपड़े में लपेट कर बैतुल मक़दिस में अहबार के सामने रख दिया यह अहबार हज़रत हारून की औलाद में थे और बैतुल मक़दिस में उनका मन्सब ऐसा था जैसा कि कअ़्बा शरीफ़ में हजबा का चूंकि हज़रत मरयम उनके इमाम और और उनके साहबे क़ुरबान की दुख़्तर थीं और उनका ख़ानदान बनी इसराईल में बहुत आला और अहले इल्म का ख़ानदान था इस लिए उन सबने जिनकी तादाद सत्ताईस थी हज़रत मरयम को लेने और उनका तकफ़्फ़ुल करने की रग़बत की हज़रत ज़करिया ने फ़रमाया कि मैं उन का सबसे ज़्यादा हक़दार हूं क्योंकि मेरे घर में उनकी ख़ाला हैं मुआ़मला इस पर ख़त्म हुआ कि क़ुरआ़ डाला जाए क़ुरआ़ ज़करिया ही के नाम पर निकला (फ़ा74) हज़रत मरयम एक दिन में इतना बढ़ती थीं जितना और बच्चे एक साल में।

(बक़िया सफ़हा 95 का) अल्लाह तआ़ला ने कुन फ़रमा कर बग़ैर बाप के पैदा किया और उन पर सब से पहले ईमान लाने और उनकी तस्दीक़ करने वाले हज़रत यह़्या हैं जो हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम से उम्र में छः माह बड़े थे यह दोनों हज़रात ख़ाला-ज़ाद भाई थे हज़रत यह़्या की वालिदा अपनी बहन हज़रत मरयम से मिलीं तो उन्हें अपने हामिला होने पर मुत्तलअ़ किया हज़रत मरयम ने फ़रमाया मैं भी हामिला हूं हज़रत यह़्या की वालिदा ने कहा ऐ मरयम मुझे मालूम होता है कि मेरे पेट का बच्चा तुम्हारे पेट के बच्चे को सजदा करता है। (फ़ा80) सय्यद उस रईस को कहते हैं जो मख़दूम व मुताअ़ हो हज़रत यह़्या मोमिनीन के सरदार और इल्म व हिल्म व दीन में उनके रईस थे। (फ़ा81) हज़रत ज़करिया अ़लैहिस्सलाम ने बराहे तअ़ज्जुब अ़र्ज़ किया। (फ़ा82) और उम्र एक सौ बीस साल की हो चुकी। (फ़ा83) उनकी उम्र अट्ठानवे साल की, मक़सूद सवाल से यह है कि बेटा किस तरह अ़ता होगा आया मेरी जवानी लौटाई जाएगी और बीबी का बांझ होना दूर किया जाएगा या हम दोनों अपने हाल पर रहेंगे। (फ़ा84) बुढ़ापे में फ़रज़न्द अ़ता करना उसकी क़ुदरत से कुछ बईद नहीं। (फ़ा85) जिससे मुझे अपनी बीबी के हमल का वक़्त मालूम होता कि मैं और ज़्यादा शुक्र व इबादत में मसरूफ़ हूं। (फ़ा86) चुनांचे ऐसा ही हुआ कि आदमियों के साथ गुफ़्तगू करने से ज़बाने मुबारक तीन रोज़ तक बन्द रही और तस्बीह व ज़िक्र पर आप क़ादिर रहे और यह एक अ़ज़ीम मोअ़्जेज़ा है कि जिस में जवारेह सही व सालिम हों और ज़बान से तस्बीह व तक़दीस के कलमात अदा होते रहें मगर लोगों के साथ गुफ़्तगू न हो सके और यह अ़लामत इस लिए मुक़र्रर की गई कि इस निअ़्मते अ़ज़ीमा के अदाए हक़ में ज़बान ज़िक्र व शुक्र के सिवा और किसी बात पर मशग़ूल न हो। (फ़ा87) कि बावजूद औरत होने के बैतुल मक़दिस की ख़िदमत के लिए नज़र में क़बूल फ़रमाया और यह बात उनके सिवा किसी औरत को मुयस्सर न आई इसी तरह उनके लिए जन्नती रिज़्क़ भेजना हज़रत ज़करिया को उनका कफ़ील बनाना यह हज़रत मरयम की बरगुज़ीदगी है। (फ़ा88) मर्द रसीदगी से और गुनाहों से और बक़ौल बाज़े ज़नाने अ़वारिज़ से। (फ़ा89) कि बग़ैर बाप के बेटा दिया और मलाइका का कलाम सुनवाया (फ़ा90) जब फ़रिश्तों ने यह कहा हज़रत मरयम ने इतना तवील क़ियाम किया कि आप के क़दमे मुबारक पर वरम आ गया और पांव फट कर ख़ून जारी हो गया।

(बक़िया सफ़हा 99 का) इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम की तरफ़ मन्सूब करना सही हो सकता है न किसी मुशरिक का, बाज़ मुफ़स्सिरीन ने फ़रमाया कि इसमें यहूद व नसारा पर तअ़्रीज़ है कि वह मुशरिक हैं। (फ़ा128) और उन के अ़हदे नबुव्वत में उन पर ईमान लाए और उन की शरीअ़त पर आ़मिल रहे। (फ़ा129) सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम (फ़ा130) और आपके उम्मती

(बक़िया सफ़हा 97 का) था उनमें जो चल सकता था वह हाज़िरे ख़िदमत होता था और जिसे चलने की ताक़त न होती उसके पास खुद हज़रत तशरीफ़ ले जाते और दुआ फ़रमा कर उसको तन्दुरुस्त करते और अपनी रिसालत पर ईमान लाने की शर्त कर लेते। (फ़ा102) हज़रत इब्ने अ़ब्बास ने फ़रमाया कि हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलातु वस्सलाम ने चार शख़्सों को ज़िन्दा किया एक आ़ज़र जिसको आपके साथ इख़्लास था जब उसकी हालत नाजुक हुई तो उसकी बहन ने आप को इत्तेलाअ्. दी मगर वह आप से तीन रोज़ की मुसाफ़त के फ़ासिले पर था जब आप तीन रोज़ में वहां पहुंचे तो मालूम हुआ कि उसके इन्तेक़ाल को तीन रोज़ हो चुके आपने उसकी बहन से फ़रमाया हमें उसकी क़ब्र पर ले चल वह ले गई आपने अल्लाह तआ़ला से दुआ़ फ़रमाई आ़ज़र बइज़्ने इलाही ज़िन्दा होकर क़ब्र से बाहर आया और मुद्दत तक ज़िन्दा रहा और उसके औलाद हुई। एक बुढ़िया का लड़का जिसका जनाज़ा हज़रत के सामने जा रहा था आपने उसके लिए दुआ फ़रमाई वह ज़िन्दा होकर नअ्.श बरदारों के कन्धों से उतर पड़ा कपड़े पहने घर आया ज़िन्दा रहा औलाद हुई एक आ़शिर की लड़की शाम को मरी अल्लाह तआ़ला ने हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलातु वस्सलाम की दुआ़ से उसको ज़िन्दा किया। एक साम बिन नूह जिनकी वफ़ात को हज़ारों बरस गुज़र चुके थे लोगों ने ख़्वाहिश की कि आप उनको ज़िन्दा करें आप उनकी निशानदेही से क़ब्र पर पहुंचे और अल्लाह तआ़ला से दुआ़ की साम ने सुना कोई कहने वाला कहता है *अजिब रूहुल्लाह* यह सुनते ही वह मरऊब और ख़ौफ़ज़दा उठ खड़े हुए और उन्हें गुमान हुआ कि क़ियामत क़ायम हो गई उस हौल से उनका निस्फ़ सर सफ़ेद हो गया, फिर वह हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम पर ईमान लाए और उन्होंने हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम से दरख़्वास्त की कि दोबारा उन्हें सकराते मौत की तकलीफ़ न हो बग़ैर उसके वापस किया जाए चुनांचे उसी वक़्त उनका इन्तेक़ाल हो गया और बिइज़्निल्लाह फ़रमाने में रद है नसारा का जो हज़रत मसीह की उलूहियत के क़ायल थे। (फ़ा103) जब हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलातु वत्तस्लीमात ने बीमारों को अच्छा किया और मुर्दों को ज़िन्दा किया तो बाज़ लोगों ने कहा कि यह तो जादू है और कोई मोअ्.जेज़ा दिखाइये तो आपने फ़रमाया कि जो तुम खाते और जो जमा कर रखते हो मैं उसकी तुम्हें ख़बर देता हूं इसी से साबित हुआ कि ग़ैब के उलूम अम्बिया का मोअ्.जेज़ा हैं और हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम के दस्ते मुबारक पर यह मोअ्.जेज़ा भी ज़ाहिर हुआ आप आदमी को बता देते थे जो वह कल खा चुका और आज खाएगा और जो अगले वक़्त के लिए तैयार कर रखा। आपके पास बच्चे बहुत से जमा हो जाते थे आप उन्हें बताते थे कि तुम्हारे घर फ़लां चीज़ तैयार हुई है तुम्हारे घर वालों ने फ़लां फ़लां चीज़ खाई है फ़लां चीज़ तुम्हारे लिए उठा रखी है बच्चे घर जाते रोते घर वालों से वह चीज़ मांगते घर वाले वह चीज़ देते और उनसे कहते कि तुम्हें किसने बताया बच्चे कहते हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम ने तो लोगों ने अपने बच्चों को आपके पास आने से रोका और कहा वह जादूगर हैं उनके पास न बैठो। और एक मकान में सब बच्चों को जमा कर दिया हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम बच्चों को तलाश करते तशरीफ़ लाए तो लोगों ने कहा वह यहां नहीं हैं आपने फ़रमाया कि फिर इस मकान में कौन है उन्होंने कहा सूअर हैं फ़रमाया ऐसा ही होगा अब जो दरवाज़ा खोलते हैं तो सब सूअर ही सूअर थे अलहासिल ग़ैब की ख़बरें देना अम्बिया का मोअ्.जेज़ा है और बे वसातत अम्बिया कोई बशर उमूरे ग़ैब पर मुत्तलअ्. नहीं हो सकता। (फ़ा104) जो शरीअ़ते मूसा अ़लैहिस्सलाम में हराम थीं जैसे कि ऊंट के गोश्त मछली कुछ परिन्द। (फ़ा105) यह अपनी अ़ब्दियत का इक़रार और अपनी रुबूबियत की नफ़ी है इसमें नसारा का रद है। (फ़ा106) यानी जब हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलातु वस्सलाम ने देखा कि यहूद अपने कुफ़्र पर क़ायम हैं और आप के क़त्ल का इरादा रखते हैं और इतनी आयाते बाहिरात और मोअ्.जेज़ात से असर पेज़ीर नहीं हुए और इसका सबब यह था कि उन्होंने पहचान लिया था कि आप ही वह मसीह हैं जिनकी तौरेत में बशारत दी गई है और आप उनके दीन को मन्सूख़ करेंगे तो जब हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलातु वस्सलाम ने दावत का इज़हार फ़रमाया तो यह उन पर बहुत शाक़ गुज़रा और वह आपके ईज़ा व क़त्ल के दरपै हुए और आपके साथ उन्होंने कुफ़्र किया। (फ़ा107) हवारी वह मुख़्लिसीन हैं जो हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलातु वस्सलाम के दीन के मददगार थे और आप पर अव्वल ईमान लाए यह बारह अश्ख़ास थे। (फ़ा108) मसलाः इस आयत से ईमान व इस्लाम के एक होने पर इस्तिदलाल किया जाता है और यह भी मालूम होता है कि पहले अम्बिया का दीन इस्लाम था न कि यहूदियत व नसरानियत। (फ़ा109) यानी कुफ़्फ़ारे बनी इसराईल ने हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलातु वस्सलाम के साथ मक्र किया कि धोखे के साथ आप के क़त्ल का इन्तेज़ाम किया और अपने एक शख़्स को इस काम पर मुक़र्रर कर दिया। (फ़ा110) अल्लाह तआ़ला ने उनके मक्र का यह बदला दिया कि हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम को आसमान पर उठा लिया और हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलातु वस्सलाम की शबाहत उस शख़्स पर डाल दी जो उनके क़त्ल के लिए आमादा हुआ था चुनांचे यहूद ने उसको इसी शुबहा पर क़त्ल कर दिया। मसलाः लफ़्ज़ मक्र लुग़ते अ़रब में सत्र यानी पोशीदगी के माना में है इसी लिए ख़ुफ़िया तदबीर को भी मक्र कहते हैं और वह तदबीर अगर अच्छे मक़सद के लिए हो तो महमूद और किसी क़बीह ग़रज़ के लिए हो तो मज़मूम होती है मगर उर्दू ज़बान में यह लफ़्ज़ फ़रेब के माना में मुस्तअ़मल होता है इस लिए हरगिज़ शाने इलाही में न कहा जाएगा और अब चूंकि अ़रबी में भी बमाना ख़दअ्. के मअ्.रूफ़ हो गया है इस लिए अ़रबी में भी शाने इलाही में इसका इतलाक़ जायज़ नहीं। आयत में जहां कहीं वारिद हुआ वह ख़ुफ़िया तदबीर के माना में है (फ़ा111) यानी तुम्हें कुफ़्फ़ार क़त्ल न कर सकेंगे (मदारिक वग़ैरह) (फ़ा112) आसमान पर महले करामत और मक़रे मलायका में बग़ैर मौत के। हदीस शरीफ़ में है सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया हज़रत ईसा मेरी उम्मत पर ख़लीफ़ा होकर नाज़िल होंगे सलीब तोड़ेंगे ख़नाज़ीर को क़त्ल करेंगे चालीस साल रहेंगे निकाह फ़रमायेंगे औलाद होगी फिर आपका विसाल होगा वह उम्मत कैसे हलाक हो जिसके अव्वल मैं हूं और आख़िर ईसा और वस्त में मेरे अहले बैत में से महदी। मुस्लिम शरीफ़ की हदीस में है कि हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम मनारए शर्क़ी दमिश्क़ पर नाज़िल होंगे यह भी वारिद हुआ कि हुजरए रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम में मदफ़ून होंगे।

(बक़िया सफ़हा 100 का) चल सका और मुसलमान पहले से ख़बरदार हो गए (फ़ा137) और जो इसके सिवा है वह बातिल व गुमराही है। (फ़ा138) दीन व हिदायत और किताब व हिकमत और शरफ़े फ़ज़ीलत। (फ़ा139) रोज़े क़ियामत (फ़ा140) यानी नबुव्वत व रिसालत से (फ़ा141) **मसलाः** इससे साबित होता है कि नबुव्वत जिस किसी को मिलती है अल्लाह के फ़ज़्ल से मिलती है उसमें इस्तिहक़ाक़ का दख़ल नहीं। (ख़ाज़िन)। (फ़ा142) **शाने नुज़ूलः** यह आयत अहले किताब के हक़ में नाज़िल हुई और इस में ज़ाहिर फ़रमाया गया कि उनमें दो क़िस्म के लोग हैं अमीन व ख़ाइन, बाज़ तो ऐसे हैं कि कसीर माल उनके पास अमानत रखा जाए तो बे कमो कास्त वक़्त पर अदा कर दें जैसे हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन सलाम जिनके पास एक क़ुरैशी ने बारह सौ औक़िया सोना अमानत रखा था आपने उसको वैसा ही अदा किया और बाज़ अहले किताब में इतने बद-दियानत हैं कि थोड़े पर भी उनकी नीयत बिगड़ जाती है जैसे फ़ख़ास बिन आ़ज़ोरा जिसके पास किसी ने एक अशरफ़ी अमानत रखी थी मांगते वक़्त उससे मुकर गया। (फ़ा143) और जब ही देने वाला उसके पास से हटे वह माले अमानत हज़्म कर जाता है। (फ़ा144) यानी ग़ैर किताबियों।

(बक़िया सफ़हा 101 का) हज़रत अबू अमामा की हदीस में है सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया जो किसी मुसलमान का हक़ मारने के लिए क़सम खाए अल्लाह उस पर जन्नत हराम करता है और दोज़ख़ लाज़िम करता है। सहाबा ने अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह अगरचे थोड़ी ही चीज़ हो फ़रमाया अगरचे बबूल की शाख़ ही क्यों न हो। (फ़ा148) **शाने नुज़ूलः** हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा ने फ़रमाया कि यह आयत यहूद व नसारा दोनों के हक़ में नाज़िल हुई कि उन्होंने तौरेत व इन्जील की तहरीफ़ की और किताबुल्लाह में अपनी तरफ़ से जो चाहा मिलाया। (फ़ा149) और कमाले इल्म व अ़मल अ़ता फ़रमाए और गुनाहों से मासूम करे। (फ़ा150) यह अम्बिया से नामुमकिन है और उनकी तरफ़ ऐसी निस्बत बुहतान है। **शाने नुज़ूलः** नजरान के नसारा ने कहा कि हमें हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलातु वस्सलाम ने हुक्म दिया है कि हम उन्हें रब मानें इस आयत में अल्लाह तआ़ला ने उनके इस क़ौल की तकज़ीब की और बताया कि अम्बिया की शान से ऐसा कहना मुमकिन ही नहीं इस आयत के शाने नुज़ूल में दूसरा क़ौल यह है कि अबू राफ़ेअ़ यहूदी और सय्यद नसरानी ने सरवरे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से कहा या मुहम्मद आप चाहते हैं कि हम आपकी इबादत करें और आप को रब मानें हुज़ूर ने फ़रमाया अल्लाह की पनाह कि मैं ग़ैरुल्लाह की इबादत का हुक्म करूं न मुझे अल्लाह ने इसका हुक्म दिया न मुझे इस लिए भेजा। (फ़ा151) रब्बानी के माना आ़लिमे फ़क़ीह और आ़लिमे बा-अ़मल और निहायत दीनदार के हैं। (फ़ा152) इससे साबित हुआ कि इल्म व तालीम का समरा यह होना चाहिये कि आदमी अल्लाह वाला हो जाए जिसे इल्म से यह फ़ायदा न हुआ उसका इल्म ज़ाया और बेकार है। (फ़ा153) अल्लाह तआ़ला या उसका कोई नबी। (फ़ा154) ऐसा किसी तरह नहीं हो सकता।

(बक़िया सफ़हा 102 का) बाज़ पर ईमान लाए बाज़ के मुन्किर हो गए। (फ़ा166) **शाने नुज़ूलः** हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा ने फ़रमाया कि यह आयत यहूद व नसारा के हक़ में नाज़िल हुई कि यहूद हुज़ूर की बेअ़सत से क़ब्ल आपके वसीला से दुआ़यें करते थे और आपकी नबुव्वत के मुक़िर थे और आप की तशरीफ़ आवरी का इन्तेज़ार करते थे जब हुज़ूर की तशरीफ़ आवरी हुई तो हसदन आप का इंकार करने लगे और काफ़िर हो गए। माना यह हैं कि अल्लाह तआ़ला ऐसी क़ौम को कैसे तौफ़ीक़े ईमान दे कि जो जान पहचान कर और मान कर मुन्किर हो गई।

لَنْ تَنَالُوا الْبِرَّ حَتّٰى تُنْفِقُوْا مِمَّا تُحِبُّوْنَ ؕ وَمَا تُنْفِقُوْا مِنْ شَیْءٍ فَاِنَّ اللّٰهَ بِهٖ عَلِیْمٌ ﴿۹۲﴾ كُلُّ الطَّعَامِ كَانَ حِلًّا لِّبَنِیْۤ اِسْرَآءِیْلَ اِلَّا مَا حَرَّمَ
اِسْرَآءِیْلُ عَلٰی نَفْسِهٖ مِنْ قَبْلِ اَنْ تُنَزَّلَ التَّوْرٰىةُ ؕ قُلْ فَاْتُوْا بِالتَّوْرٰىةِ فَاتْلُوْهَاۤ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِیْنَ ﴿۹۳﴾ فَمَنِ افْتَرٰی عَلَی اللّٰهِ الْكَذِبَ مِنْۢ بَعْدِ ذٰلِكَ
فَاُولٰٓىِٕكَ هُمُ الظّٰلِمُوْنَ ﴿۹۴﴾ قُلْ صَدَقَ اللّٰهُ ۫ فَاتَّبِعُوْا مِلَّةَ اِبْرٰهِیْمَ حَنِیْفًا ؕ وَمَا كَانَ مِنَ الْمُشْرِكِیْنَ ﴿۹۵﴾ اِنَّ اَوَّلَ بَیْتٍ وُّضِعَ لِلنَّاسِ لَلَّذِیْ
بِبَكَّةَ مُبٰرَكًا وَّهُدًی لِّلْعٰلَمِیْنَ ﴿۹۶﴾ فِیْهِ اٰیٰتٌۢ بَیِّنٰتٌ مَّقَامُ اِبْرٰهِیْمَ ۚ وَمَنْ دَخَلَهٗ كَانَ اٰمِنًا ؕ وَلِلّٰهِ عَلَی النَّاسِ حِجُّ الْبَیْتِ
مَنِ اسْتَطَاعَ اِلَیْهِ سَبِیْلًا ؕ وَمَنْ كَفَرَ فَاِنَّ اللّٰهَ غَنِیٌّ عَنِ الْعٰلَمِیْنَ ﴿۹۷﴾ قُلْ یٰۤاَهْلَ الْكِتٰبِ لِمَ تَكْفُرُوْنَ بِاٰیٰتِ اللّٰهِ ۖۗ وَاللّٰهُ شَهِیْدٌ عَلٰی مَا تَعْمَلُوْنَ ﴿۹۸﴾

लन्तनालुल् बिर्-र ह़त्ता तुन्फ़िक़ू मिम्मा तुहिब्बून व मा तुन्फ़िक़ू मिन् शैइन् फ़-इन्नल्ला-ह बिही अ़लीम(92)कुल्लुत्तआमि का-न हिल्लल्-लि-बनी इस्राई-ल इल्ला मा हर्-र-म इस्राईलु अ़ला नफ़्सिही मिन् क़ब्लि अन्तु-नज़्ज़-लत्तौरातु क़ुल् फ़अ्तू बित्तौराति फ़त्लूहा इन् कुन्तुम् सादिक़ीन(93)फ़-मनिफ़्तरा अ़लल्लाहिल् कज़ि-ब मिम्बअ़्दि ज़ालि-क फ़उलाइ-क हुमुज़्ज़ालि-मून(94)क़ुल् स-द-क़ल्लाहु फ़त्तबिऊ मिल्ल-त इब्राही-म ह़नीफ़न् व मा का-न मिनल्-मुश्रिकीन(95)इन्-न अव्व-ल बैतिंव्वुज़ि-अ लिन्नासि लल्लज़ी बि-बक्क-त मुबार-कंव्-व हुदल्-लिल् आ़-लमीन(96)फ़ीहि आयातुम् बय्यिनातुम्-मक़ामु इब्राही-म व मन् द-ख़-लहू का-न आमिनन् व लिल्लाहि अ़लन्नासि हिज्जुल्बैति मनिस्तता-अ़ इलैहि सबीलन् व मन् क-फ़-र फ़-इन्नल्ला-ह ग़निय्युन् अ़निल् आ़-लमीन(97)क़ुल् या अह्ल-ल्किताबि लि-म तक्फ़ुरू-न बि-आयातिल्लाहि वल्लाहु शहीदुन् अ़ला मा तअ़्-मलून(98)

तुम हरगिज़ भलाई को न पहुंचोगे जब तक राहे खुदा में अपनी प्यारी चीज़ ख़र्च न करो (फ़ा172)और तुम जो कुछ ख़र्च करो अल्लाह को मालूम है।(92)सब खाने बनी इसराईल को ह़लाल थे मगर वह जो याकूब ने अपने ऊपर हराम कर लिया था तौरेत उतरने से पहले, तुम फ़रमाओ तौरेत लाकर पढ़ो अगर सच्चे हो।(93) (फ़ा173)तो उसके बाद जो अल्लाह पर झूठ बांधे(फ़ा174)तो वही ज़ालिम हैं।(94) तुम फ़रमाओ अल्लाह सच्चा है तो इब्राहीम के दीन पर चलो(फ़ा175) जो हर बातिल से जुदा थे और शिर्क वालों में न थे।(95) बेशक सब में पहला घर जो लोगों की इबादत को मुकर्रर हुआ, वह है जो मक्का में है बरकत वाला और सारे जहान का राहनुमा।(96) (फ़ा176) उसमें खुली निशानियां हैं (फ़ा177) इब्राहीम के खड़े होने की जगह (फ़ा178) और जो उसमें आए अमान में हो (फ़ा179) और अल्लाह के लिए लोगों पर इस घर का हज करना है जो उस तक चल सके (फ़ा180) और जो मुन्किर हो तो अल्लाह सारे जहान से बे-परवाह है।(97) (फ़ा181) तुम फ़रमाओ ऐ किताबियो अल्लाह की आयतें क्यों नहीं मानते (फ़ा182) और तुम्हारे काम अल्लाह के सामने हैं।(98)

(फ़ा172) बिर्र से तक़्वा व ताअ़त मुराद है हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा ने फ़रमाया कि यहां ख़र्च करना आ़म है तमाम सदक़ात का यानी वाजिबा हों या नाफ़िला सब इसमें दाख़िल हैं। हसन का क़ौल है कि जो माल मुसलमानों को महबूब हो और उसे रज़ाए इलाही के लिए ख़र्च करे वह इस आयत में दाख़िल है ख़्वाह एक खजूर ही हो (ख़ाज़िन) उमर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ शकर की बोरियां ख़रीद कर सदक़ा करते थे उन से कहा गया इसकी क़ीमत ही क्यों नहीं सद्क़ा कर देते फ़रमाया शकर मुझे महबूब व मरग़ूब है यह चाहता हूं कि राहे ख़ुदा में प्यारी चीज़ ख़र्च करूं (मदारिक) बुख़ारी व मुस्लिम की हदीस है कि हज़रत अबू तलहा अंसारी मदीने में बड़े मालदार थे उन्हें अपने अमवाल में बैरहा (बाग़) बहुत प्यारा था जब यह आयत नाज़िल हुई तो उन्होंने बारगाहे रिसालत में खड़े होकर अ़र्ज़ किया मुझे अपने अमवाल में बैरहा सबसे प्यारा है मैं उसको राहे ख़ुदा में सद्क़ा करता हूं हुज़ूर ने इस पर मुसर्रत का इज़्हार फ़रमाया और हज़रत अबू तलहा ने बईमाए हुज़ूर अपने अक़ारिब और बनीए अ़म में उसको तक़्सीम कर दिया हज़रत उमर फ़ारूक़ रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने अबू मूसा अशअ़री को लिखा कि मेरे लिए एक बांदी ख़रीद कर भेज दो जब वह आई तो आप को बहुत पसन्द आई आपने यह आयत पढ़कर अल्लाह के लिए उसको आज़ाद कर दिया। (फ़ा173) **शाने नुज़ूलः** यहूद ने सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से कहा कि हुज़ूर अपने आप को मिल्लते इब्राहीमी पर ख़्याल करते हैं बावजूदेकि हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम ऊंट का गोश्त और दूध नहीं खाते थे आप खाते हैं तो आप मिल्लते इब्राहीमी पर कैसे हुए हुज़ूर ने फ़रमाया कि यह चीज़ें हज़रत इब्राहीम पर हलाल थीं **(बक़िया सफ़हा 137 पर)**

قُلْ يٰٓاَهْلَ الْكِتٰبِ لِمَ تَصُدُّوْنَ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ مَنْ اٰمَنَ تَبْغُوْنَهَا عِوَجًا وَّاَنْتُمْ شُهَدَآءُ ؕ وَمَا اللّٰهُ بِغَافِلٍ عَمَّا تَعْمَلُوْنَ ﴿٩٩﴾ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ
اٰمَنُوْٓا اِنْ تُطِيْعُوْا فَرِيْقًا مِّنَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ يَرُدُّوْكُمْ بَعْدَ اِيْمَانِكُمْ كٰفِرِيْنَ ﴿١٠٠﴾ وَكَيْفَ تَكْفُرُوْنَ وَاَنْتُمْ تُتْلٰى عَلَيْكُمْ اٰيٰتُ
اللّٰهِ وَفِيْكُمْ رَسُوْلُهٗ ؕ وَمَنْ يَّعْتَصِمْ بِاللّٰهِ فَقَدْ هُدِيَ اِلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ﴿١٠١﴾ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اتَّقُوا اللّٰهَ حَقَّ تُقٰتِهٖ وَلَا تَمُوْتُنَّ اِلَّا
وَاَنْتُمْ مُّسْلِمُوْنَ ﴿١٠٢﴾ وَاعْتَصِمُوْا بِحَبْلِ اللّٰهِ جَمِيْعًا وَّلَا تَفَرَّقُوْا ۪ وَاذْكُرُوْا نِعْمَتَ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ اِذْ كُنْتُمْ اَعْدَآءً فَاَلَّفَ بَيْنَ قُلُوْبِكُمْ فَاَصْبَحْتُمْ
بِنِعْمَتِهٖٓ اِخْوَانًا ۚ وَكُنْتُمْ عَلٰى شَفَا حُفْرَةٍ مِّنَ النَّارِ فَاَنْقَذَكُمْ مِّنْهَا ؕ كَذٰلِكَ يُبَيِّنُ اللّٰهُ لَكُمْ اٰيٰتِهٖ لَعَلَّكُمْ تَهْتَدُوْنَ ﴿١٠٣﴾

कुल् या अह्लल् किताबि लि–म तसुद्दू–न अ़न् सबीलिल्लाहि मन् आ–म–न तब्गू–नहा अ़ि–व–जंव्–व अन्तुम् शु–हदाउ व मल्लाहु बिग़ाफ़िलिन् अ़म्मा तअ्–मलून(99)या अय्यु–हल्लज़ी–न आ–मनू इन् तुतीअू फ़रीक़म्–मिनल्लज़ी–न ऊतुल्–किता–ब यरुद्दूकुम् बअ्–द ईमानिकुम् काफ़िरीन(100)व कै–फ़ तक्फ़ुरू–न व अन्तुम् तुत्ला अ़लैकुम् आयातुल्लाहि व फ़ीकुम् रसूलुहू व मंय्यअ्–तसिम् बिल्लाहि फ़–क़द् हुदि–य इला सिरातिम्–मुस्तक़ीम(101)या अय्युहल्लज़ी–न आ–मनुत्तक़ुल्ला–ह हक़्–क़ तुक़ातिही व ला तमूतुन्–न इल्ला व अन्तुम् मुस्लिमून(102) वअ्–तसिमू बि–हब्लिल्लाहि जमीअंव्–व ला तफ़र्रक़ू वज़्कुरू निअ्–म–तल्लाहि अ़लैकुम् इज़् कुन्तुम् अअ्दाअन् फ़–अल्ल–फ़ बै–न क़ुलूबिकुम् फ़–अस्बह्तुम् बिनिअ्–मतिही इख़्वानन् व कुन्तुम् अ़ला शफ़ा हुफ़्रतिम्–मिनन्नारि फ़–अन्क़–ज़कुम् मिन्हा कज़ालि–क युबय्यि–नुल्लाहु लकुम् आयातिही ल–अ़ल्लकुम् तह्तदून(103)

तुम फ़रमाओ ऐ किताबियो क्यों अल्लाह की राह से रोकते हो (फ़ा183) उसे जो ईमान लाए उसे टेढ़ा किया चाहते हो और तुम ख़ुद उस पर गवाह हो (फ़ा184) और अल्लाह तुम्हारे कोतकों (बुरे आमाल) से बे-ख़बर नहीं।(99) ऐ ईमान वालो अगर तुम कुछ किताबियों के कहे पर चले तो वह तुम्हारे ईमान के बाद तुम्हें काफ़िर कर छोड़ेंगे।(100)(फ़ा185) और तुम क्योंकर कुफ़्र करोगे, तुम पर अल्लाह की आयतें पढ़ी जाती हैं और तुम में उस का रसूल तशरीफ़ फ़रमा है और जिस ने अल्लाह का सहारा लिया तो ज़रूर वह सीधी राह दिखाया गया।(101)(रुकूअ़ 1) ऐ ईमान वालो अल्लाह से डरो जैसा उससे डरने का हक़ है और हरगिज़ न मरना मगर मुसलमान।(102) और अल्लाह की रस्सी मज़बूत थाम लो (फ़ा186) सब मिलकर और आपस में फट न जाना (फ़ा187) और अल्लाह का एहसान अपने ऊपर याद करो जब तुम में बैर था उसने तुम्हारे दिलों में मिलाप कर दिया तो उसके फ़ज़्ल से तुम आपस में भाई हो गए (फ़ा188) और तुम एक ग़ारे दोज़ख़ के किनारे पर थे (फ़ा189) तो उसने तुम्हें उससे बचा दिया (फ़ा190) अल्लाह तुमसे यूंही अपनी आयतें बयान फ़रमाता है कि कहीं तुम हिदायत पाओ।(103)

(फ़ा183) नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की तकज़ीब करके और आपकी नअ़्त व सिफ़त छुपाकर जो तौरेत में मज़कूर है। (फ़ा184) कि सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की नअ़्त तौरेत में मकतूब है और अल्लाह को जो दीन मक़बूल है वह सिर्फ़ दीने इस्लाम ही है। (फ़ा185) शाने नुज़ूलः औस व ख़ज़्रज के क़बीलों में पहले बड़ी अ़दावत थी और मुद्दतों उनके दर्मियान जंग जारी रही सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के सदक़ा में उन क़बीलों के लोग इस्लाम लाकर बाहम शीर व शकर हुए एक रोज़ वह एक मजलिस में बैठे हुए उन्स व मुहब्बत की बातें कर रहे थे शास बिन क़ैस यहूदी जो बड़ा दुश्मने इस्लाम था उस तरफ़ से गुज़रा और उनके बाहमी रवाबित देखकर जल गया और कहने लगा कि जब यह लोग आपस में मिल गए तो हमारा क्या ठिकाना है एक जवान को मुक़र्रर किया कि उनकी मजलिस में बैठ कर उनकी पिछली लड़ाईयों का ज़िक्र छेड़े और उस ज़माना में हर क़बीला जो अपनी मदह और दूसरों की हिक़ारत के अशआ़र लिखता था पढ़े चुनांचे उस यहूदी ने ऐसा ही किया और उसकी शर अंगेज़ी से दोनों क़बीलों के लोग तैश में आ गए और हथियार उठा लिये क़रीब था कि ख़ूंरेज़ी हो जाए सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम यह ख़बर पाकर मुहाजिरीन के साथ तशरीफ़ लाए और फ़रमाया कि ऐ जमाअ़ते अहले इस्लाम यह क्या जाहिलियत के हरकात हैं मैं तुम्हारे दर्मियान हूं अल्लाह तआ़ला ने तुमको इस्लाम की इज़्ज़त दी जाहिलियत की बला से नजात दी तुम्हारे दर्मियान उलफ़त व मुहब्बत डाली तुम फिर ज़मानए कुफ़्र की हालत की तरफ़ लौटते हो हुज़ूर के इरशाद ने इन के दिलों पर असर किया और उन्होंने समझा कि यह शैतान का फ़रेब और दुश्मन **(बक़िया सफ़हा 137 पर)**

وَلْتَكُن مِّنكُمْ أُمَّةٌ يَدْعُونَ إِلَى الْخَيْرِ وَيَأْمُرُونَ بِالْمَعْرُوفِ وَيَنْهَوْنَ عَنِ الْمُنكَرِ ۚ وَأُولَٰئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُونَ ۝ وَلَا تَكُونُوا كَالَّذِينَ تَفَرَّقُوا وَ

اخْتَلَفُوا مِن بَعْدِ مَا جَاءَهُمُ الْبَيِّنَاتُ ۚ وَأُولَٰئِكَ لَهُمْ عَذَابٌ عَظِيمٌ ۝ يَوْمَ تَبْيَضُّ وُجُوهٌ وَتَسْوَدُّ وُجُوهٌ ۚ فَأَمَّا الَّذِينَ اسْوَدَّتْ وُجُوهُهُمْ

أَكَفَرْتُم بَعْدَ إِيمَانِكُمْ فَذُوقُوا الْعَذَابَ بِمَا كُنتُمْ تَكْفُرُونَ ۝ وَأَمَّا الَّذِينَ ابْيَضَّتْ وُجُوهُهُمْ فَفِي رَحْمَةِ اللَّهِ ۖ هُمْ فِيهَا خَالِدُونَ ۝

تِلْكَ آيَاتُ اللَّهِ نَتْلُوهَا عَلَيْكَ بِالْحَقِّ ۗ وَمَا اللَّهُ يُرِيدُ ظُلْمًا لِّلْعَالَمِينَ ۝ وَلِلَّهِ مَا فِي السَّمَاوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ ۚ وَإِلَى اللَّهِ تُرْجَعُ الْأُمُورُ ۝

كُنتُمْ خَيْرَ أُمَّةٍ أُخْرِجَتْ لِلنَّاسِ تَأْمُرُونَ بِالْمَعْرُوفِ وَتَنْهَوْنَ عَنِ الْمُنكَرِ وَتُؤْمِنُونَ بِاللَّهِ ۗ وَلَوْ آمَنَ أَهْلُ الْكِتَابِ لَكَانَ خَيْرًا لَّهُم ۚ مِّنْهُمُ

वल्तकुम्–मिन्कुम् उम्मतुंय्यद्अू–न इलल्ख़ैरि व यअ्मुरू–न बिल्मअ्–रूफ़ि व यन्हौ–न अ़निल्मुन्करि व उलाइ–क हुमुल्–मुफ़्लिहू न(104)व ला तकूनू कल्लज़ी–न तफ़र्रकू वख़्त–लफ़ू मिम्बअ़्दि मा जा–अ हुमुल् बय्यिनातु व उलाइ–क लहुम् अ़ज़ाबुन् अ़ज़ीम(105)यौ–म तब्यज़्ज़ु वुजूहुंव्–व तस्वद्दु वुजूहुन् फ़–अम्मल् लज़ीनस्–वद्दत् वुजूहुहुम् अ–क–फ़र्तुम् बअ़्–द ईमानिकुम् फ़ज़ूक़ुल् अ़ज़ा–ब बिमा कुन्तुम् तक्फ़ुरून(106)व अम्मल्लज़ीनब् यज़्ज़त् वुजूहुहुम् फ़फ़ी रह़्मतिल्लाहि हुम् फ़ीहा ख़ालिदून(107)तिल्–क आयातुल्लाहि नत्लूहा अ़लै–क बिल्ह़क़्क़ि व मल्लाहु युरीदु ज़ुल्मल्–लिल्आ़–लमीन(108)व लिल्लाहि मा फ़िस्समावाति व मा फ़िल्अर्ज़ि व इलल्लाहि तुर्जअुल्– उमूर (109)कुन्तुम् ख़ै–र उम्मतिन् उख़्रिजत् लिन्नासि तअ्मुरू–न बिल्मअ्रूफ़ि व तन्हौ–न अ़निल्मुन्करि व तुअ्मिनू–न बिल्लाहि व लौ आ–म–न अह्लुल्–किताबि लका–न ख़ैरल्लहुम् मिन्हुमुल्–

और तुम में एक गरोह ऐसा होना चाहिये कि भलाई की तरफ़ बुलायें और अच्छी बात का हुक्म दें और बुरी से मना करें (फ़ा191) और यही लोग मुराद को पहुंचे।(104)(फ़ा192) और उन जैसे न होना जो आपस में फट गए और उन में फूट पड़ गई। (फ़ा193) बाद इसके कि रौशन निशानियां उन्हें आ चुकी थीं (फ़ा194) और उनके लिए बड़ा अ़ज़ाब है।(105) जिस दिन कुछ मुंह उजाले होंगे और कुछ मुंह काले तो वह जिनके मुंह काले हुए (फ़ा195) क्या तुम ईमान लाकर काफ़िर हुए (फ़ा196) तो अब अ़ज़ाब चखो अपने कुफ़्र का बदला।(106) और वह जिनके मुंह उजाले हुए (फ़ा197) वह अल्लाह की रहमत में हैं वह हमेशा उसमें रहेंगे।(107)यह अल्लाह की आयतें हैं कि हम ठीक ठीक तुम पर पढ़ते हैं और अल्लाह जहान वालों पर ज़ुल्म नहीं चाहता।(108) (फ़ा198) और अल्लाह ही का है जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ ज़मीन में है और अल्लाह ही की तरफ़ से सब कामों की रुजूअ़ है।(109) (रुकूअ़. 2) तुम बेहतर हो (फ़ा199) उन सब उम्मतों में जो लोगों में ज़ाहिर हुईं भलाई का हुक्म देते हो और बुराई से मना करते हो और अल्लाह पर ईमान रखते हो और अगर किताबी ईमान लाते (फ़ा200) तो उनका भला था, उनमें कुछ

(फ़ा191) इस आयत से अम्रे मअ्.रूफ़ नहीए मुन्कर की फ़र्ज़ियत और इज्माअ. के हुज्जत होने पर इस्तिदलाल किया गया है। (फ़ा192) हज़रत अ़ली मुर्तज़ा ने फ़रमाया कि नेकियों का हुक्म करना और बदियों से रोकना बेहतरीन जिहाद है (फ़ा193) जैसा कि यहूद व नसारा आपस में मुख़्तलिफ़ हुए और उनमें एक दूसरे के साथ अ़ेनाद व दुश्मनी रासिख़ हो गई या जैसा कि ख़ुद तुम ज़मानए इस्लाम से पहले जाहिलियत के वक़्त में मुतफ़र्रिक़ थे तुम्हारे दर्मियान बुग्ज़ व एनाद था। मसलाः इस आयत में मुसलमानों को आपस में इत्तेफ़ाक़ व इज्तेमाअ. का हुक्म दिया गया और इख़्तिलाफ़ और उसके असबाब पैदा करने की मुमानअ़त फ़रमाई गई अहादीस में भी इसकी बहुत ताकीदें वारिद हैं और जमाअ़ते मुस्लिमीन से जुदा होने की सख़्ती से मुमानअ़त फ़रमाई गई है जो फ़िरक़ा पैदा होता है उस हुक्म की मुख़ालफ़त करके ही पैदा होता है और जमाअ़ते मुस्लिमीन में तफ़रक़ा अन्दाज़ी के जुर्म का मुर्तकिब होता है और हस्बे इरशादे हदीस वह शैतान का शिकार है *अआ़–ज़ नल्लाहु तआ़ला मिन्हु* (फ़ा194) और हक़ वाज़ेह हो चुका था। (फ़ा195) यानी कुफ़्फ़ार उनसे तौबीख़न कहा जाएगा। (फ़ा196) इसके मुख़ातब या तो तमाम कुफ़्फ़ार हैं इस सूरत में ईमान से रोज़े मीसाक़ का ईमान मुराद है जब अल्लाह तआ़ला ने उन से फ़रमाया था क्या मैं तुम्हारा रब नहीं हूं सबने बला कहा था और ईमान लाए थे अब जो दुनिया में काफ़िर हुए तो उनसे फ़रमाया जाता है कि रोज़े मीसाक़ ईमान लाने के बाद तुम काफ़िर हो गए। हसन का क़ौल है कि इससे मुनाफ़िक़ीन मुराद हैं जिन्होंने ज़बान से इज़्हारे ईमान किया था और उनके दिल मुन्किर थे। इकरमा ने कहा कि वह अहले किताब हैं जो सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की बेअ़.सत के क़ब्ल तो हुज़ूर पर ईमान लाए और हुज़ूर के ज़ुहूर के बाद आप का इंकार करके काफ़िर हो गए। एक क़ौल यह है कि उसके मुख़ातब मुरतद्दीन हैं जो इस्लाम लाकर फिर गए और काफ़िर हो गए (फ़ा197) यानी अह्ले ईमान कि उस रोज़ बेकरमेही तआ़ला वह फ़रहान **(बक़िया सफ़हा 138 पर)**

الْمُؤْمِنُوْنَ وَاَكْثَرُهُمُ الْفٰسِقُوْنَ ﴿۱۱۰﴾ لَنْ یَّضُرُّوْكُمْ اِلَّاۤ اَذًىؕ وَاِنْ یُّقَاتِلُوْكُمْ یُوَلُّوْكُمُ الْاَدْبَارَ ثُمَّ لَا یُنْصَرُوْنَ ﴿۱۱۱﴾ ضُرِبَتْ عَلَیْهِمُ الذِّلَّةُ

اَیْنَ مَا ثُقِفُوْۤا اِلَّا بِحَبْلٍ مِّنَ اللّٰهِ وَحَبْلٍ مِّنَ النَّاسِ وَبَآءُوْ بِغَضَبٍ مِّنَ اللّٰهِ وَضُرِبَتْ عَلَیْهِمُ الْمَسْكَنَةُؕ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ كَانُوْا یَكْفُرُوْنَ

بِاٰیٰتِ اللّٰهِ وَیَقْتُلُوْنَ الْاَنْۢبِیَآءَ بِغَیْرِ حَقٍّؕ ذٰلِكَ بِمَا عَصَوْا وَّكَانُوْا یَعْتَدُوْنَ ﴿۱۱۲﴾ لَیْسُوْا سَوَآءًؕ مِنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ اُمَّةٌ قَآىٕمَةٌ یَّتْلُوْنَ اٰیٰتِ اللّٰهِ اٰنَآءَ

الَّیْلِ وَهُمْ یَسْجُدُوْنَ ﴿۱۱۳﴾ یُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَالْیَوْمِ الْاٰخِرِ وَیَاْمُرُوْنَ بِالْمَعْرُوْفِ وَیَنْهَوْنَ عَنِ الْمُنْكَرِ وَیُسَارِعُوْنَ فِی الْخَیْرٰتِؕ وَاُولٰٓىٕكَ مِنَ

الصّٰلِحِیْنَ ﴿۱۱۴﴾ وَمَا یَفْعَلُوْا مِنْ خَیْرٍ فَلَنْ یُّكْفَرُوْهُؕ وَاللّٰهُ عَلِیْمٌۢ بِالْمُتَّقِیْنَ ﴿۱۱۵﴾ اِنَّ الَّذِیْنَ كَفَرُوْا لَنْ تُغْنِیَ عَنْهُمْ اَمْوَالُهُمْ وَلَاۤ اَوْلَادُهُمْ مِّنَ اللّٰهِ

मुअमिनू–न व अक्सरु हुमुल्फ़ासिकून(110)लंय्यजुर्रूकुम् इल्ला अज़न् व इंय्युक़ातिलूकुम् युवल्लू कुमुल् अदबार सुम्–म ला युन्सरून(111)जुरिबत् अ़लैहिमुज्–ज़िल्लतु ऐ–नमा सुक़िफ़ू इल्ला बि–ह़ब्लिम्–मिनल्लाहि व ह़ब्लिम्–मिनन्नासि व बाऊ बि–ग़–जबिम् मिनल्लाहि व जुरिबत् अ़लैहिमुल्–मस्क–नतु ज़ालि–क बि–अन्नहुम् कानू यक्फुरू–न बि–आयतिल्लाहि व यक़्तुलूनल् अम्बिया–अ बिग़ैरि ह़क़्क़िन् ज़ालि–क बिमा अ़सव्–व कानू यअ्–तदून(112)लैसू सवाअन् मिन् अह्लिल् किताबि उम्मतुन् क़ाइ–म–तुंय्यत्लू–न आयातिल्लाहि आना–अल्लैलि व हुम् यस्जुदून(113)युअमिनू–न बिल्लाहि वल्यौमिल्–आख़िरि व यअ्मुरू–न बिल्मअ़्रूफ़ि व यन्हौ–न अ़निल्मुन्करि व युसारिअू–न फ़िल्ख़ैराति व उलाइ–क मिनस्सा–लिहीन(114)व मा यफ़्अ़लू मिन् ख़ैरिन् फ़–लंय्युक्फ़रूहु वल्लाहु अ़लीमुम्–बिल्मुत्तक़ीन(115)इन्नल्लज़ी–न क–फ़रू लन् तुग़्नि–य अ़न्हुम् अम्वालुहुम् व ला औलादुहुम् मिनल्लाहि

मुसलमान हैं (फ़ा201) और ज़्यादा काफ़िर।(110) वह तुम्हारा कुछ न बिगाड़ेंगे मगर यही सताना (फ़ा202) और अगर तुमसे लड़ें तो तुम्हारे सामने से पीठ फेर जायेंगे(111) (फ़ा203) फिर उनकी मदद न होगी। उन पर जमा दी गई ख़्वारी जहां हों, अमान न पायें (फ़ा204) मगर अल्लाह की डोर (फ़ा205) और आदमियों की डोर से (फ़ा206) और ग़ज़बे इलाही के सज़ावार हुए और उन पर जमा दी गई मोहताजी (फ़ा207) यह इस लिए कि वह अल्लाह की आयतों से कुफ़्र करते और पैग़म्बरों को ना–ह़क़ शहीद यह इसलिए कि नाफ़रमांबरदार और सरकश थे।(112) सब एक से नहीं किताबियों में कुछ वह हैं कि ह़क़ पर क़ायम हैं (फ़ा208) अल्लाह की आयतें पढ़ते हैं रात की घड़ियों में और सजदा करते हैं।(113) (फ़ा209) अल्लाह और पिछले दिन पर ईमान लाते हैं और भलाई का हुक्म और बुराई से मना करते हैं (फ़ा210) और नेक कामों पर दौड़ते हैं और यह लोग लायक़ हैं।(114) और वह जो भलाई करें उनका हक़ न मारा जाएगा और अल्लाह को मालूम हैं डर वाले।(115) (फ़ा211) वह जो काफ़िर हुए उनके माल और औलाद (फ़ा212) उनको अल्लाह से

(फ़ा201) जैसे कि हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन सलाम और उनके असहाब यहूद में से और नजाशी और उनके असहाब नसारा में से। (फ़ा202) ज़बानी तअ़्न व तश्नीअ़ और धमकी वग़ैरह से। शाने नुज़ूलः यहूद में से जो लोग इस्लाम लाए थे जैसे हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन सलाम और उनके हमराही रुअसाए यहूद उनके दुश्मन हो गए और उन्हें ईज़ा देने की फ़िक्र में रहने लगे इस पर यह आयत नाज़िल हुई और अल्लाह तआ़ला ने ईमान लाने वालों को मुत्मईन कर दिया कि ज़बानी क़ील व क़ाल के सिवा वह मुसलमानों को कोई आज़ार न पहुंचा सकेंगे ग़लबा मुसलमानों ही को रहेगा और यहूद का अंजाम ज़िल्लत व रुसवाई है। (फ़ा203) और तुम्हारे मुक़ाबले की ताब न ला सकेंगे यह ग़ैबी ख़बरें ऐसी ही वाक़ेअ़ हुईं। (फ़ा204) हमेशा ज़लील ही रहेंगे इज़्ज़त कभी न पायेंगे उसी का असर है कि आज तक यहूद को कहीं की सल्तनत मुयस्सर न आई जहां रहे रिआ़या व ग़ुलाम ही बन कर रहे। (फ़ा205) थाम कर यानी ईमान लाकर (फ़ा206) यानी मुसलमानों की पनाह लेकर और उन्हें जिज़्या देकर। (फ़ा207) चुनांचे यहूदी को मालदार होकर भी ग़िनाए क़ल्बी मुयस्सर नहीं होता। (फ़ा208) शाने नुज़ूलः जब हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन सलाम और उनके असहाब ईमान लाए तो अहबारे यहूद ने जल कर कहा कि मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम पर हम में से जो ईमान लाए हैं वह बुरे लोग हैं अगर बुरे न होते तो अपने बाप दादा का दीन न छोड़ते इस पर यह आयत नाज़िल फ़रमाई गई। अ़ता का क़ौल है कि *मिन् अह्लिल् किताबि उम्मतुन् क़ाइ–मतुन्* से चालीस मर्द अहले नजरान के बत्तीस हबशा के आठ रूम के मुराद हैं जो दीने ईसवी पर थे फिर सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम पर ईमान लाए। (फ़ा209) यानी नमाज़ पढ़ते हैं इससे या तो नमाज़े इशा मुराद है जो अह्ले किताब नहीं पढ़ते या नमाज़े तहज्जुद (फ़ा210) और दीन में मुदाहनत नहीं करते। (फ़ा211) यहूद ने अ़ब्दुल्लाह बिन सलाम और उनके असहाब से कहा था कि तुम दीने **(बक़िया सफ़हा 138 पर)**

شَيْـًٔا ۖ وَاُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ النَّارِ ۚ هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ﴿۱۱۶﴾ مَثَلُ مَا يُنْفِقُوْنَ فِىْ هٰذِهِ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا كَمَثَلِ رِيْحٍ فِيْهَا صِرٌّ اَصَابَتْ حَرْثَ قَوْمٍ ظَلَمُوْٓا

اَنْفُسَهُمْ فَاَهْلَكَتْهُ ۚ وَمَا ظَلَمَهُمُ اللّٰهُ وَلٰكِنْ اَنْفُسَهُمْ يَظْلِمُوْنَ ﴿۱۱۷﴾ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَتَّخِذُوْا بِطَانَةً مِّنْ دُوْنِكُمْ لَا يَاْلُوْنَكُمْ خَبَالًا ۚ وَدُّوْا

مَا عَنِتُّمْ ۚ قَدْ بَدَتِ الْبَغْضَآءُ مِنْ اَفْوَاهِهِمْ ۚ وَمَا تُخْفِىْ صُدُوْرُهُمْ اَكْبَرُ ۚ قَدْ بَيَّنَّا لَكُمُ الْاٰيٰتِ اِنْ كُنْتُمْ تَعْقِلُوْنَ ﴿۱۱۸﴾ هٰٓاَنْتُمْ اُولَآءِ

تُحِبُّوْنَهُمْ وَلَا يُحِبُّوْنَكُمْ وَتُؤْمِنُوْنَ بِالْكِتٰبِ كُلِّهٖ ۚ وَاِذَا لَقُوْكُمْ قَالُوْٓا اٰمَنَّا ۚۖ وَاِذَا خَلَوْا عَضُّوْا عَلَيْكُمُ الْاَنَامِلَ مِنَ الْغَيْظِ ۚ قُلْ مُوْتُوْا بِغَيْظِكُمْ ۚ

اِنَّ اللّٰهَ عَلِيْمٌۢ بِذَاتِ الصُّدُوْرِ ﴿۱۱۹﴾ اِنْ تَمْسَسْكُمْ حَسَنَةٌ تَسُؤْهُمْ ۖ وَاِنْ تُصِبْكُمْ سَيِّئَةٌ يَّفْرَحُوْا بِهَا ۚ وَاِنْ تَصْبِرُوْا وَتَتَّقُوْا لَا يَضُرُّكُمْ كَيْدُهُمْ

शैअन् व उलाइ–क अस्हाबुन्नारि हुम् फ़ीहा ख़ालिदून(116)म–स़लु मा युन्फ़िकू–न फ़ी हाज़ि–हिल्–ह़यातिद्दुन्या क–म–सलि रीह़िन् फ़ीहा सिर्रुन् अस़ाबत् ह़र्–स क़ौमिन् ज़–लमू अन्फु–सहुम् फ़–अह्ल–कत्हु व मा ज़–ल–म–हुमुल्लाहु व लाकिन् अन्फु–सहुम् यज़्लिमून(117)या अय्युहल्लज़ी–न आ–मनू ला तत्तख़िज़ू बित़ा–नतम्–मिन् दूनिकुम् ला यअ्लू–नकुम् ख़बालन् वद्दू मा अ़नित्तुम् क़द् ब–दतिल् बग़ज़ाउ मिन् अफ़्–वाहिहिम् व मा तुख़्फ़ी सुदूरुहुम् अक्बरु क़द् बय्यन्ना लकुमुल्–आयाति इन् कुन्तुम् तअ्–क़िलून(118)हा अन्तुम् उलाइ तुह़िब्बू–नहुम् व ला युह़िब्बू– नकुम् व तुअ्मिनू–न बिल्किताबि कुल्लिही व इज़ा लक़ूकुम् क़ालू आमन्ना व इज़ा ख़लौ अ़ज़्ज़ू अ़लैकुमुल्–अनामि–ल मिनल्ग़ैज़ि क़ुल् मूतू बि–ग़ैज़िकुम् इन्नल्ला–ह अ़लीमुम्–बि–ज़ातिस्सुदूर(119)इन् तम्सस्कुम् ह़–स–नतुन् तसूअ्हुम् व इन् तुसिब्कुम् सय्यि–अतुंय्यफ़्–रहू बिहा व इन् तस्बिरू व तत्तक़ू ला यजुर्रुकुम् कैदुहुम्

कुछ न बचायेंगे और वह जहन्नमी हैं उनको हमेशा उसमें रहना।(116) (फ़ा213) कहावत उसकी जो इस दुनिया की ज़िन्दगी में (फ़ा214) ख़र्च करते हैं उस हवा की सी है जिसमें पाला हो वह एक ऐसी क़ौम की खेती पर पड़ी जो अपना ही बुरा करते थे तो उसे बिल्कुल मार गई (फ़ा215) और अल्लाह ने उन पर ज़ुल्म न किया हां वह ख़ुद अपनी जान पर ज़ुल्म करते हैं।(117) ऐ ईमान वालो ग़ैरों को अपना राज़दार न बनाओ (फ़ा216) वह तुम्हारी बुराई में कमी नहीं करते उनकी आरज़ू है जितनी ईज़ा तुम्हें पहुंचे बैर उनकी बातों से झलक उठा और वह (फ़ा217) जो सीने में छुपाए हैं और बड़ा है हम ने निशानियां तुम्हें खोल कर सुना दीं अगर तुम्हें अ़क्ल हो।(118) (फ़ा218) सुनते हो यह जो तुम हो, तुम तो उन्हें चाहते हो (फ़ा219) और वह तुम्हें नहीं चाहते (फ़ा220) और हाल यह कि तुम सब किताबों पर ईमान लाते हो (फ़ा221) और वह जब तुम से मिलते हैं कहते हैं, हम ईमान लाए (फ़ा222) और अकेले हों तो तुम पर उंगलियां चबायें ग़ुस्सा से तुम फ़रमा दो कि मर जाओ अपनी घुटन में। (फ़ा223) अल्लाह ख़ूब जानता है दिलों की बात। (119) तुम्हें कोई भलाई पहुंचे तो उन्हें बुरा लगे (फ़ा224) और तुमको बुराई पहुंचे तो उस पर ख़ुश हों और अगर तुम सब्र और परहेज़गारी किये रहो (फ़ा225) तो उनका दांव तुम्हारा कुछ न

(फ़ा213) शाने नुज़ूलः यह आयत बनी क़ुरैज़ा व नुज़ैर के हक़ में नाज़िल हुई यहूद के रुअसा ने तहसीले रियासत व माल की ग़रज़ से रसूले करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के साथ दुश्मनी की थी अल्लाह तआ़ला ने इस आयत में इरशाद फ़रमाया कि उनके माल व औलाद कुछ काम न आयेंगे वह रसूल की दुश्मनी में ना–हक़ अपनी आ़क़िबत बरबाद कर रहे हैं एक क़ौल यह है कि यह आयत मुशरिकीने क़ुरैश के हक़ में नाज़िल हुई क्योंकि अबू जहल को अपनी दौलत व माल पर बड़ा फ़ख़्र था और अबू सुफ़ियान ने बदर व उहद में मुशरिकीन पर बहुत कसीर माल ख़र्च किया था। एक क़ौल यह है कि यह आयत तमाम कुफ़्फ़ार के हक़ में आ़म है उन सब को बताया गया कि माल व औलाद में से कोई भी काम आने वाला और अ़ज़ाबे इलाही से बचाने वाला नहीं।(फ़ा214) मुफ़स्सिरीन का क़ौल है कि इससे यहूद का वह ख़र्च मुराद है जो अपने उलमा और रोअसा पर करते थे। एक क़ौल यह है कि कुफ़्फ़ार के तमाम नफ़क़ात व सदक़ात मुराद हैं। एक क़ौल यह है कि रियाकार का ख़र्च करना मुराद है क्योंकि उन सब लोगों का ख़र्च करना या नफ़ए दुनियवी के लिए होगा या नफ़ए उख़रवी के लिए अगर महज़ नफ़ए दुनियवी के लिए हो तो आख़िरत में उस से क्या फ़ायदा और रियाकार को तो आख़िरत और रज़ाए इलाही मक़सूद ही नहीं होती उसका अ़मल दिखावे और नुमूद के लिए होता है ऐसे अ़मल का आख़िरत में क्या नफ़ा और काफ़िर के तमाम अ़मल अकारत हैं **(बक़िया सफ़हा 138 पर)**

شَيْـًٔا ۗ اِنَّ اللّٰهَ بِمَا يَعْمَلُوْنَ مُحِيْطٌ ﴿۱۲۰﴾ وَ اِذْ غَدَوْتَ مِنْ اَهْلِكَ تُبَوِّئُ الْمُؤْمِنِيْنَ مَقَاعِدَ لِلْقِتَالِ ؕ وَ اللّٰهُ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ﴿۱۲۱﴾ اِذْ هَمَّتْ طَّآئِفَتٰنِ مِنْكُمْ
اَنْ تَفْشَلَا ۙ وَ اللّٰهُ وَلِيُّهُمَا ؕ وَ عَلَى اللّٰهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُؤْمِنُوْنَ ﴿۱۲۲﴾ وَ لَقَدْ نَصَرَكُمُ اللّٰهُ بِبَدْرٍ وَّ اَنْتُمْ اَذِلَّةٌ ۚ فَاتَّقُوا اللّٰهَ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ ﴿۱۲۳﴾
اِذْ تَقُوْلُ لِلْمُؤْمِنِيْنَ اَلَنْ يَّكْفِيَكُمْ اَنْ يُّمِدَّكُمْ رَبُّكُمْ بِثَلٰثَةِ اٰلٰفٍ مِّنَ الْمَلٰٓئِكَةِ مُنْزَلِيْنَ ﴿۱۲۴﴾ بَلٰۤى ۙ اِنْ تَصْبِرُوْا وَ تَتَّقُوْا وَ يَاْتُوْكُمْ مِّنْ فَوْرِهِمْ
هٰذَا يُمْدِدْكُمْ رَبُّكُمْ بِخَمْسَةِ اٰلٰفٍ مِّنَ الْمَلٰٓئِكَةِ مُسَوِّمِيْنَ ﴿۱۲۵﴾ وَ مَا جَعَلَهُ اللّٰهُ اِلَّا بُشْرٰى لَكُمْ وَ لِتَطْمَئِنَّ قُلُوْبُكُمْ بِهٖ ؕ وَ مَا النَّصْرُ اِلَّا مِنْ
عِنْدِ اللّٰهِ الْعَزِيْزِ الْحَكِيْمِ ﴿۱۲۶﴾ لِيَقْطَعَ طَرَفًا مِّنَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْۤا اَوْ يَكْبِتَهُمْ فَيَنْقَلِبُوْا خَآئِبِيْنَ ﴿۱۲۷﴾

शैअन् इन्नल्ला–ह मिबा यअ्मलू–न मुहीत्(120)व इज् ग़दौ–त मिन् अह्लि–क तुबव्विउल् –मुअ्मिनी–न मक़ाअि–द लिल्क़िताालि वल्लाहु समीअुन् अ़लीम(121)इज् हम्मत्–ताइ–फ़तानि मिन्कुम् अन् तफ़्शला वल्लाहु वलिय्युहुमा व अ़लल्लाहि फ़ल्–य–तवक्–कलिल् मुअ्मिनून(122)व ल–क़द् न–स–रकु–मुल्लाहु बि–बदरिंव् व अन्तुम् अज़िल्लतुन् फ़त्तकुल्ला–ह ल–अ़ल्लकुम् तश्कुरून(123)इज् तकूलु लिल्–मुअ्मिनी–न अलं–य्यक्फ़ि–यकुम् अंय्युमिद्दकुम् रब्बुकुम् बि–सला–सति आलाफ़िम् मिनल् मलाइ–कति मुन्ज़लीन(124)बला इन् तस्बिरू व तत्तकू व यअ्–तूकुम् मिन् फ़ौरिहिम् हाज़ा युम्–दिद्कुम् रब्बुकुम् बि–ख़म्सति आलाफ़िम्–मिनल् मलाइ–कति मुसव्विमीन(125) व मा ज–अ़–लहुल्लाहु इल्ला बुश्रा लकुम् वलि–तत्मइन्–न क़ुलूबुकुम् बिही व मन्–नस्रु इल्ला मिन् अ़िन्दिल्लाहिल् अ़ज़ीज़िल् हकीम(126)लि–यक्–त–अ़ त–र–फ़म्–मिनल्लज़ी–न क–फ़रू औ यक्बि–तहुम् फ़–यन्क़लिबू ख़ाइबीन(127)

बिगाड़ेगा बेशक उनके सब काम ख़ुदा के घेरे में हैं।(120) (रुकूअ़ 3) और याद करो ऐ महबूब जब तुम सुबह को (फ़ा226) अपने दौलतख़ाने से बर–आमद हुए मुसलमानों को लड़ाई के मोर्चों पर क़ायम करते (फ़ा227) और अल्लाह सुनता, जानता है।(121) जब तुम में के दो गरोहों का इरादा हुआ कि नामर्दी कर जायें (फ़ा228) और अल्लाह उनका संभालने वाला है और मुसलमानों को अल्लाह ही पर भरोसा चाहिये।(122) और बेशक अल्लाह ने बदर में तुम्हारी मदद की, जब तुम बिल्कुल बे सरो सामान थे (फ़ा229) तो अल्लाह से डरो, कहीं तुम शुक्र गुज़ार हो।(123) जब ऐ महबूब तुम मुसलमानों से फ़रमाते थे क्या तुम्हें यह काफ़ी नहीं कि तुम्हारा रब तुम्हारी मदद करे, तीन हज़ार फ़रिश्ते उतार कर।(124) हां क्यों नहीं अगर तुम सब्र व तक़वा करो और काफ़िर उसी दम तुम पर आ पड़ें तो तुम्हारा रब तुम्हारी मदद को पांच हज़ार फ़रिश्ते निशान वाले भेजेगा।(125) (फ़ा230) और यह फ़तह अल्लाह ने न की मगर तुम्हारी ख़ुशी के लिए और इसी लिए कि इससे तुम्हारे दिलों को चैन मिले (फ़ा231) और मदद नहीं मगर अल्लाह ग़ालिब हिकमत वाले के पास से।(126) (फ़ा232) इस लिए कि काफ़िरों का एक हिस्सा काट दे (फ़ा233) या उन्हें ज़लील करे कि नामुराद फिर जायें।(127)

(फ़ा226) ब–मक़ामे मदीना तय्यबा बक़स्दे उहद (फ़ा227) जम्हूर मुफ़स्सिरीन का क़ौल है कि यह बयान जंगे उहद का है जिसका इजमाली वाक़िआ यह है कि जंगे बदर में शिकस्त खाने से कुफ़्फ़ार को बड़ा रंज था इस लिए उन्होंने बक़स्दे इन्तेक़ाम लश्करे गिरां मुरत्तब करके फ़ौज–कशी की जब रसूले करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को ख़बर मिली कि लश्करे कुफ़्फ़ार उहद में उतरा है तो आपने असहाब से मश्वरा फ़रमाया उस मश्वरत में अ़ब्दुल्लाह बिन उबय बिन सलूल को भी बुलाया गया जो इससे क़ब्ल कभी किसी मश्वरत के लिए बुलाया न गया था अक्सर अंसार की और उस अ़ब्दुल्लाह की यह राय हुई कि हुज़ूर मदीना तय्यबा में ही क़ायम रहें और जब कुफ़्फ़ार यहां आयें तब उनसे मुक़ाबला किया जाए यही सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की मर्ज़ी थी लेकिन बाज़ असहाब की राय यह हुई कि मदीना तय्यबा से बाहर निकल कर लड़ना चाहिये और इसी पर उन्होंने इसरार किया सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम दौलत सराए अक़दस में तशरीफ़ ले गए और असलिहा ज़ेबे तन फ़रमा कर बाहर तशरीफ़ लाए अब हुज़ूर को देख कर उन असहाब को नदामत हुई और उन्होंने अ़र्ज़ किया कि हुज़ूर को राय देना और उस पर इसरार करना हमारी ग़लती थी उसको माफ़ फ़रमाईये और जो मर्ज़ीए मुबारक हो वही कीजिये हुज़ूर ने फ़रमाया कि नबी के लिए सज़ावार नहीं कि हथियार पहन कर क़ब्ले जंग उतार दे मुशरिकीन उहद में चहार शम्बा पंज शम्बा (बुध, जुमेरात) को पहुंचे थे और रसूले करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम जुमा के रोज़ बाद नमाज़े जुमा एक अंसारी की नमाज़े जनाज़ा पढ़कर **(बक़िया सफ़हा 138 पर)**

لَيْسَ لَكَ مِنَ الْاَمْرِ شَىْءٌ اَوْ يَتُوْبَ عَلَيْهِمْ اَوْ يُعَذِّبَهُمْ فَاِنَّهُمْ ظٰلِمُوْنَ ﴿۱۲۸﴾ وَلِلّٰهِ مَا فِى السَّمٰوٰتِ وَمَا فِى الْاَرْضِ ۭ يَغْفِرُ لِمَنْ يَّشَاۗءُ وَيُعَذِّبُ
مَنْ يَّشَاۗءُ ۭ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿۱۲۹﴾ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَاْكُلُوا الرِّبٰٓوا اَضْعَافًا مُّضٰعَفَةً ۠ وَّاتَّقُوا اللّٰهَ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ ﴿۱۳۰﴾ وَاتَّقُوا النَّارَ
الَّتِىْٓ اُعِدَّتْ لِلْكٰفِرِيْنَ ﴿۱۳۱﴾ وَاَطِيْعُوا اللّٰهَ وَالرَّسُوْلَ لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُوْنَ ﴿۱۳۲﴾ وَسَارِعُوْٓا اِلٰى مَغْفِرَةٍ مِّنْ رَّبِّكُمْ وَجَنَّةٍ عَرْضُهَا السَّمٰوٰتُ وَالْاَرْضُ ۙ
اُعِدَّتْ لِلْمُتَّقِيْنَ ﴿۱۳۳﴾ الَّذِيْنَ يُنْفِقُوْنَ فِى السَّرَّاۗءِ وَالضَّرَّاۗءِ وَالْكٰظِمِيْنَ الْغَيْظَ وَالْعَافِيْنَ عَنِ النَّاسِ ۭ وَاللّٰهُ يُحِبُّ الْمُحْسِنِيْنَ ﴿۱۳۴﴾
وَالَّذِيْنَ اِذَا فَعَلُوْا فَاحِشَةً اَوْ ظَلَمُوْٓا اَنْفُسَھُمْ ذَكَرُوا اللّٰهَ فَاسْتَغْفَرُوْا لِذُنُوْبِهِمْ ۠ وَمَنْ يَّغْفِرُ الذُّنُوْبَ اِلَّا اللّٰهُ ۠ وَلَمْ يُصِرُّوْا عَلٰي مَا فَعَلُوْا

लै–स ल–क मिनल्अम्रि शैउन् औ यतू–ब अ़लैहिम् औ युअ़ज़्ज़ि–बहुम् फ़–इन्नहुम् ज़ालिमून (128)व लिल्लाहि मा फ़िस्समावाति व मा फ़िल्अर्ज़ि यग्फ़िरु लि–मंय्यशाउ व युअ़ज़्ज़िबु मंय्यशाउ वल्लाहु ग़फ़ूरुर्रहीम(129)या अय्युहल्ल–ज़ी–न आ–मनू ला तअ्कुलुर्रिबा अज़्– आफ़म्– मुज़ा–अ़–फ़–तन् वत्तकुल्ला–ह ल–अ़ल्लकुम् तुफ़्लिहून(130)वत्तकुन्नारल्लती उअ़िद्दत् लिल्काफ़िरीन (131)व अतीउल्ला–ह वर्रसू–ल ल–अ़ल्लकुम् तुर्हमून(132)व सारिअू इला मग़्फ़ि– रतिम्–मिर्रब्बिकुम् व जन्नतिन् अ़र्ज़ुहस् समावातु वल्अर्ज़ु उअ़िद्दत् लिल्मुत्तक़ीन(133)अल्लज़ी–न युन्फ़िक़ू–न फ़िस्सर्रा–इ वज़्ज़र्रा–इ वल्काज़िमीनल्–ग़ै–ज़ वल्आफ़ी–न अ़निन्नासि वल्लाहु युहिब्बुल् मुह्सिनीन (134)वल्लज़ी–न इज़ा फ़–अ़लू फ़ाहि–शतन् औ ज़–लमू अन्फ़ु–सहुम् ज़–करुल्ला–ह फ़स्तग़्फ़रू लिज़ुनूबिहिम् व मंय्यग़्फ़िरुज़्–ज़ुनू–ब इल्लल्लाहु व लम् युसिर्रू अ़ला मा फ़–अ़लू

यह बात तुम्हारे हाथ नहीं, या उन्हें तौबा की तौफ़ीक़ दे या उन पर अ़ज़ाब करे कि वह ज़ालिम हैं।(128) और अल्लाह ही का है जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ ज़मीन में है जिसे चाहे बख़्शे और जिसे चाहे अ़ज़ाब करे और अल्लाह बख़्शने वाला मेहरबान है।(129) (रुकूअ़ 4) ऐ ईमान वालो सूद दूनादून न खाओ (फ़ा234) और अल्लाह से डरो इस उम्मीद पर कि तुम्हें फ़लाह मिले।(130) और उस आग से बचो जो काफ़िरों के लिए तैयार रखी है।(131) (फ़ा235) और अल्लाह व रसूल के फ़रमांबरदार रहो (फ़ा236) इस उम्मीद पर कि तुम रहम किये जाओ और दौड़ो(132) (फ़ा237) अपने रब की बख़्शिश और ऐसी जन्नत की तरफ़ जिस की चौड़ान में सब आसमान व ज़मीन आ जायें (फ़ा238) परहेज़गारों के लिए तैयार रखी है।(133) (फ़ा239) वह जो अल्लाह की राह में ख़र्च करते हैं ख़ुशी में और रंज में (फ़ा240) और गुस्सा पीने वाले और लोगों से दर-गुज़र करने वाले और नेक लोग अल्लाह के महबूब हैं।(134) और वह कि जब कोई बे-हयाई या अपनी जानों पर ज़ुल्म करें (फ़ा241) अल्लाह को याद करके अपने गुनाहों की माफ़ी चाहें (फ़ा242) और गुनाह कौन बख़्शे सिवा अल्लाह के और अपने किये पर जान बूझ कर

(फ़ा234) मसलाः इस आयत में सूद की मुमानअ़त फ़रमाई गई मअ़ तौबीख़ के इस ज़्यादती पर जो उस ज़माना में मामूल थी कि जब मीआ़द आ जाती थी और क़र्ज़दार के पास अदा की कोई शक्ल न होती तो क़र्ज़ ख़्वाह माल ज़्यादा कर के मुद्दत बढ़ा देता और ऐसा बार-बार करते जैसा कि इस मुल्क के सूदख़्वार करते हैं और इस को सूद दर सूद कहते हैं। मसलाः इस आयत से साबित हुआ गुनाहे कबीरा से आदमी ईमान से ख़ारिज नहीं होता। (फ़ा235) हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा ने फ़रमाया इसमें ईमानदारों को तहदीद है कि सूद वग़ैरह जो चीज़ें अल्लाह ने हराम फ़रमाईं उनको हलाल न जानें क्यों कि हरामे क़तई को हलाल जानना कुफ़्र है। (फ़ा236) कि रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की ताअ़त, ताअ़ते इलाही है और रसूल की ना-फ़रमानी करने वाला अल्लाह का फ़रमांबरदार नहीं हो सकता। (फ़ा237) तौबा व अदाए फ़रायज़ व ताआ़त व इख़्लासे अ़मल इख़्तियार करके। (फ़ा238) यह जन्नत की वुसअ़त का बयान है इस तरह कि लोग समझ सकें क्योंकि उन्होंने सबसे वसीअ़ चीज़ जो देखी है वह आसमान व ज़मीन ही है इससे वह अन्दाज़ा कर सकते हैं कि अगर आसमान व ज़मीन के तबके़ तबके़ और परत परत बना कर जोड़ दिये जायें और सब का एक परत कर दिया जाए उस से जन्नत के अ़र्ज़ का अन्दाज़ा होता है कि जन्नत कितनी वसीअ़ है हिरक़्ल बादशाह ने सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की ख़िदमत में लिखा कि जब जन्नत की यह वुसअ़त है कि आसमान व ज़मीन उसमें आ जायें तो फिर दोज़ख़ कहां है हुज़ूरे अक़दस सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने जवाब में फ़रमाया सुबहानल्लाह जब दिन आता है तो रात कहां होती है इस कलामे बलाग़ते निज़ाम के माना निहायत दक़ीक़ हैं ज़ाहिर पहलू यह है कि दौरए फ़लकी से एक जानिब में दिन हासिल होता है तो उसके जानिबे **(बक़िया सफ़हा 139 पर)**

وَهُمْ يَعْلَمُوْنَ ﴿١٣٥﴾ اُولٰٓئِكَ جَزَآؤُهُمْ مَّغْفِرَةٌ مِّنْ رَّبِّهِمْ وَ جَنّٰتٌ تَجْرِىْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ؕ وَنِعْمَ اَجْرُ الْعٰمِلِيْنَ ﴿١٣٦﴾

قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِكُمْ سُنَنٌ ۙ فَسِيْرُوْا فِى الْاَرْضِ فَانْظُرُوْا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُكَذِّبِيْنَ ﴿١٣٧﴾ هٰذَا بَيَانٌ لِّلنَّاسِ وَهُدًى وَّ مَوْعِظَةٌ لِّلْمُتَّقِيْنَ ﴿١٣٨﴾

وَلَا تَهِنُوْا وَلَا تَحْزَنُوْا وَاَنْتُمُ الْاَعْلَوْنَ اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ﴿١٣٩﴾ اِنْ يَّمْسَسْكُمْ قَرْحٌ فَقَدْ مَسَّ الْقَوْمَ قَرْحٌ مِّثْلُهٗ ؕ وَتِلْكَ الْاَيَّامُ نُدَاوِلُهَا بَيْنَ النَّاسِ ۚ

وَلِيَعْلَمَ اللّٰهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَيَتَّخِذَ مِنْكُمْ شُهَدَآءَ ؕ وَاللّٰهُ لَا يُحِبُّ الظّٰلِمِيْنَ ﴿١٤٠﴾ وَلِيُمَحِّصَ اللّٰهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَيَمْحَقَ الْكٰفِرِيْنَ ﴿١٤١﴾ اَمْ حَسِبْتُمْ اَنْ تَدْخُلُوا

الْجَنَّةَ وَلَمَّا يَعْلَمِ اللّٰهُ الَّذِيْنَ جٰهَدُوْا مِنْكُمْ وَيَعْلَمَ الصّٰبِرِيْنَ ﴿١٤٢﴾ وَلَقَدْ كُنْتُمْ تَمَنَّوْنَ الْمَوْتَ مِنْ قَبْلِ اَنْ تَلْقَوْهُ ۠ فَقَدْ رَاَيْتُمُوْهُ وَاَنْتُمْ

व हुम् यअ्लमून(135)उलाइ-क जज़ाउहुम् मग्फ़ि-रतुम् मिर्रब्बिहिम् व जन्नातुन् तज्री मिन् तह्ति-हल् -अन्हारू ख़ालिदी-न फ़ीहा व निअ्-म अज्रुल्-आमिली-न(136)क़द ख़-लत् मिन् क़ब्लिकुम् सु-ननुन् फ़सीरू फ़िल्अर्ज़ि फ़न्ज़ुरू कै-फ़ का-न आक़ि-बतुल् मुकज़्ज़िबीन(137)हाज़ा बयानुल्-लिन्नासि व हुदंव्-व मौअि-ज़तुल् लिल्मुत्तक़ीन(138)व ला तहिनू व ला तह्ज़नू व अन्तुमुल् अअ्लौ-न इन् कुन्तुम् मुअमिनीन(139)इंय्यम्सस्कुम् क़रहुन् फ़-क़द मस्सल् क़ौ-म क़रहुम् मिस्लुहू व तिल्कल् अय्यामु नुदाविलुहा बैनन्नासि व लि-यअ्ल-मल्ला-हुल्लज़ी-न आ-मनू व यत्तख़ि-ज़ मिन्कुम् शु-हदा-अ वल्लाहु ला युहिब्बुज़्-ज़ालिमीन(140)व लि यु-मह्हिसल्लाहुल्लज़ी-न आ-मनू व यम्ह-क़ल्-काफ़िरीन(141)अम् हसिब्तुम् अन् तद्ख़ुलुल्-जन्न-त व लम्मा यअ्-लमिल्लाहुल्लजी-न जा-हदू मिन्कुम् व यअ्-ल-मस्सा-बिरीन(142)व ल-क़द कुन्तुम् तमन्नौनल्मौ-त मिन् क़ब्लि अन् तल्क़ौहु फ़-क़द रऐतुमूहु व अन्तुम्

अड़ न जायें।(135) ऐसों को बदला उनके रब की बख़्शिश और जन्नतें हैं (फ़ा243) जिनके नीचे नहरें रवां हमेशा उनमें रहें और कामियों (नेक लोगों) का क्या अच्छा नेग (इनाम, हिस्सा) है(136) (फ़ा244) तुमसे पहले कुछ तरीक़े बरताव में आ चुके हैं (फ़ा245) तो ज़मीन में चलकर देखो कैसा अंजाम हुआ झुठलाने वालों का।(137) (फ़ा246) यह लोगों को बताना और राह दिखाना और परहेज़गारों को नसीहत है।(138) और न सुस्ती करो और न ग़म खाओ (फ़ा247) तुम्हीं ग़ालिब आओगे अगर ईमान रखते हो।(139) अगर तुम्हें (फ़ा248) कोई तकलीफ़ पहुंची तो वह लोग भी वैसी ही तकलीफ़ पा चुके हैं (फ़ा249) और यह दिन हैं जिनमें हमने लोगों के लिए बारियां रखी हैं (फ़ा250)और इस लिए कि अल्लाह पहचान करा दे ईमान वालों की (फ़ा251) और तुम में से कुछ लोगों को शहादत का मर्तबा दे और अल्लाह दोस्त नहीं रखता ज़ालिमों को।(140) और इस लिए कि अल्लाह मुसलमानों का निखार कर दे (फ़ा252) और काफ़िरों को मिटा दे।(141)(फ़ा253) क्या इस गुमान में हो कि जन्नत में चले जाओगे और अभी अल्लाह ने तुम्हारे ग़ाज़ियों का इम्तेहान न लिया और न सब्र वालों की आज़माईश की।(142)(फ़ा254) और तुम तो मौत की तमन्ना किया करते थे उसके मिलने से पहले (फ़ा255) तो अब वह तुम्हें नज़र आई आंखों के

(फ़ा243) शाने नुज़ूलः तैहान ख़ुरमा फ़रोश के पास एक हसीन औ़रत ख़ुरमे ख़रीदने आई उसने कहा यह ख़ुरमे तो अच्छे नहीं हैं उम्दा ख़ुरमे मकान के अन्दर हैं इस हीले से उसको मकान में ले गया और पकड़ कर लिपटा लिया और मुंह चूम लिया औ़रत ने कहा ख़ुदा से डर, यह सुनते ही उसको छोड़ दिया और शर्मिन्दा हुआ और सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर होकर हाल अ़र्ज़ किया इस पर यह आयत *वल्लज़ी-न इज़ा फ़-अलू* नाज़िल हुई। एक क़ौल यह है कि एक अंसारी और एक सक़फ़ी दोनों में मुहब्बत थी और हर एक ने एक दूसरे को भाई बनाया था सक़फ़ी जिहाद में गया था और अपने मकान की निगरानी अपने भाई अंसारी के सुपुर्द कर गया था एक रोज़ अंसारी गोश्त लाया जब सक़फ़ी की औ़रत ने गोश्त लेने के लिए हाथ बढ़ाया तो अंसारी ने उसका हाथ चूम लिया और चूमते ही उसको सख़्त नदामत व शर्मिन्दगी हुई और वह जंगल में निकल गया अपने सर पर ख़ाक डाली और मुंह पर तमांचे मारे जब सक़फ़ी जिहाद से वापस आया तो उसने अपनी बीवी से अंसारी का हाल दरियाफ़्त किया उसने कहा ख़ुदा ऐसे भाई न बढ़ाए और वाक़िआ बयान किया अंसारी पहाड़ों में रोता इस्तिग़फ़ार व तौबा करता फिरता था सक़फ़ी उसको तलाश करके सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की ख़िदमत में लाया उसके हक़ में यह आयतें नाज़िल हुईं। (फ़ा244) यानी इताअ़त शेआ़रों के लिए बेहतर जज़ा है। **(बक़िया सफ़हा 139 पर)**

تَنْظُرُوْنَ ﴿١٤٣﴾ وَمَا مُحَمَّدٌ اِلَّا رَسُوْلٌ ۚ قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِهِ الرُّسُلُ ؕ اَفَا۟ئِنْ مَّاتَ اَوْ قُتِلَ انْقَلَبْتُمْ عَلٰۤى اَعْقَابِكُمْ ؕ وَمَنْ يَّنْقَلِبْ عَلٰى عَقِبَيْهِ فَلَنْ
يَّضُرَّ اللّٰهَ شَيْـًٔا ؕ وَسَيَجْزِى اللّٰهُ الشّٰكِرِيْنَ ﴿١٤٤﴾ وَمَا كَانَ لِنَفْسٍ اَنْ تَمُوْتَ اِلَّا بِاِذْنِ اللّٰهِ كِتٰبًا مُّؤَجَّلًا ؕ وَمَنْ يُّرِدْ ثَوَابَ الدُّنْيَا نُؤْتِهٖ مِنْهَا ۚ
وَمَنْ يُّرِدْ ثَوَابَ الْاٰخِرَةِ نُؤْتِهٖ مِنْهَا ؕ وَسَنَجْزِى الشّٰكِرِيْنَ ﴿١٤٥﴾ وَكَاَيِّنْ مِّنْ نَّبِىٍّ قٰتَلَ ۙ مَعَهٗ رِبِّيُّوْنَ كَثِيْرٌ ۚ فَمَا وَهَنُوْا لِمَاۤ اَصَابَهُمْ فِىْ
سَبِيْلِ اللّٰهِ وَمَا ضَعُفُوْا وَمَا اسْتَكَانُوْا ؕ وَاللّٰهُ يُحِبُّ الصّٰبِرِيْنَ ﴿١٤٦﴾ وَمَا كَانَ قَوْلَهُمْ اِلَّاۤ اَنْ قَالُوْا رَبَّنَا اغْفِرْ لَنَا ذُنُوْبَنَا وَاِسْرَافَنَا فِىْۤ
اَمْرِنَا وَثَبِّتْ اَقْدَامَنَا وَانْصُرْنَا عَلَى الْقَوْمِ الْكٰفِرِيْنَ ﴿١٤٧﴾ فَاٰتٰىهُمُ اللّٰهُ ثَوَابَ الدُّنْيَا وَحُسْنَ ثَوَابِ الْاٰخِرَةِ ؕ وَاللّٰهُ يُحِبُّ الْمُحْسِنِيْنَ ﴿١٤٨﴾

तन्जुरून(143)व मा मुहम्मदुन् इल्ला रसूलुन् क़द् ख़–लत् मिन् क़ब्लिहिर्रुसुलु अ–फ़ इम्मा–त औ कुतिलन्–क़लब्तुम् अ़ला अअ़्क़ाबिकुम् व मंय्यन्क़लिब् अ़ला अ़क़िबैहि फ़–लंय्यज़ुर्रल्ला–ह शैअन् व स–यज्ज़िल्लाहुश्–शाकिरीन(144)व मा का–न लि नफ़्सिन् अन् तमू–त इल्ला बि–इज़्निल्लाहि किताबम्–मुअज्जलन् व मंय्युरिद् सवाबद्दुन्या नुअ़तिही मिन्हा व मंय्युरिद् सवाबल् आख़ि–रति नुअ़तिही मिन्हा व स–नज्ज़िश्–शाकिरीन(145)व क–अय्यिम्–मिन् नबिय्यिन् क़ा–त–ल म–अ़हू रिब्बिय्यू–न कसीरुन् फ़मा व हनू लिमा असा–बहुम् फ़ी सबीलिल्लाहि व मा ज़अुफ़ू व मस्तकानू वल्लाहु युहिब्बुस्–साबिरीन(146)व मा का–न क़ौ–लहुम् इल्ला अन् क़ालू रब्बनग़्फ़िर् लना ज़ुनू–बना व इस्रा–फ़ना फ़ी अम्रिना व सब्बित् अक़्दा–मना वन्सुरना अ़लल्क़ौमिल् काफ़िरीन(147)फ़आताहुमुल्लाहु सवाबद्दुन्या व हुस्–न सवाबिल् आख़ि–रति वल्लाहु युहिब्बुल् मुह्सिनीन(148)

सामने।(143)(रुकूअ़ 5) और मुहम्मद तो एक रसूल हैं। (फ़256) उनसे पहले और रसूल हो चुके (फ़257) तो क्या अगर वह इन्तेक़ाल फ़रमायें या शहीद हों तो तुम उलटे पांव फिर जाओगे और जो उलटे पांव फिरेगा अल्लाह का कुछ नक़सान न करेगा और अंक़रीब अल्लाह शुक्र वालों को सिला देगा।(144) (फ़258) और कोई जान बे हुक्मे ख़ुदा मर नहीं सकती। (फ़259)सब का वक़्त लिखा रखा है (फ़260) और जो दुनिया का इनाम चाहे (फ़261) हम उसमें से उसे दें और जो आख़िरत का इनाम चाहे हम उसमें से उसे दें (फ़262) और क़रीब है कि हम शुक्र वालों को सिला अ़ता करें।(145) और कितने ही अम्बिया ने जिहाद किया उनके साथ बहुत ख़ुदा वाले थे तो न सुस्त पड़े उन मुसीबतों से जो अल्लाह की राह में उन्हें पहुंचीं और न कमज़ोर हुए और न दबे (फ़263) और सब्र वाले अल्लाह को महबूब हैं।(146) और वह कुछ भी न कहते थे सिवा इस दुआ के (फ़264) कि ऐ रब हमारे बख़्श दे हमारे गुनाह और जो ज़्यादतियां हमने अपने काम में कीं (फ़265) और हमारे क़दम जमा दे और हमें उन काफ़िर लोगों पर मदद दे।(147) (फ़266) तो अल्लाह ने उन्हें दुनिया का इनाम दिया (फ़267) और आख़िरत के सवाब की ख़ूबी (फ़268) और नेकी वाले अल्लाह को प्यारे हैं।(148) (रुकूअ़ 6)

(फ़256) और रसूलों की बेअ़सत का मक़सूद रिसालत की तबलीग़ और हुज्जत का लाज़िम कर देना है न कि अपनी क़ौम के दर्मियान हमेशा मौजूद रहना। (फ़257) और उनके मुत्तबेईन उनके बाद उनके दीन पर बाक़ी रहे। शाने नुज़ूलः जंगे उहद में जब काफ़िरों ने पुकारा कि मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम शहीद हो गए और शैतान ने यह झूठी अफ़वाह मशहूर की तो सहाबा को बहुत इज़्तेराब हुआ और उनमें से कुछ लोग भाग निकले फिर जब निदा की गई कि रसूले करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम तशरीफ़ रखते हैं तो सहाबा की एक जमाअ़त वापस आई हुज़ूर ने उन्हें हज़ीमत पर मलामत की उन्होंने अ़र्ज़ किया हमारे मां और बाप आप पर फ़िदा हों आपकी शहादत की ख़बर सुनकर हमारे दिल टूट गए और हम से ठहरा न गया इस पर यह आयते करीमा नाज़िल हुई और फ़रमाया गया कि अम्बिया के बाद भी उम्मतों पर उनके दीन का इत्तेबाअ़ लाज़िम रहता है तो अगर ऐसा होता भी तो हुज़ूर के दीन का इत्तेबाअ़ और उसकी हिमायत लाज़िम रहती। (फ़258) जो न फिरे और अपने दीन पर साबित रहे उनको शाकिरीन फ़रमाया क्योंकि उन्होंने अपने सबात से नेअ़मते इस्लाम का शुक्र अदा किया। हज़रत अ़ली मुर्तज़ा रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु फ़रमाते थे कि हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अ़न्हु *अमीनुश्शाकिरीन* हैं (फ़259) इसमें जिहाद की तरग़ीब है और मुसलमानों को दुश्मन के मुक़ाबला पर जरी बनाया जाता है कि कोई शख़्स बग़ैर हुक्मे इलाही के मर नहीं सकता चाहे वह महालिक व मआ़रिक में घुस जाए और जब मौत का वक़्त आता है तो कोई तदबीर नहीं बचा सकती (फ़260) उससे आगे पीछे नहीं हो सकता (फ़261) और उसको अपने अ़मल व **(बक़िया सफ़्हा 139 पर)**

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اِنْ تُطِيْعُوا الَّذِيْنَ كَفَرُوْا يَرُدُّوْكُمْ عَلٰۤى اَعْقَابِكُمْ فَتَنْقَلِبُوْا خٰسِرِيْنَ ۝ بَلِ اللّٰهُ مَوْلٰىكُمْ ۚ وَهُوَ خَيْرُ النّٰصِرِيْنَ ۝ سَنُلْقِيْ فِيْ
قُلُوْبِ الَّذِيْنَ كَفَرُوا الرُّعْبَ بِمَاۤ اَشْرَكُوْا بِاللّٰهِ مَا لَمْ يُنَزِّلْ بِهٖ سُلْطٰنًا ۚ وَمَاْوٰىهُمُ النَّارُ ۚ وَبِئْسَ مَثْوَى الظّٰلِمِيْنَ ۝ وَلَقَدْ صَدَقَكُمُ اللّٰهُ وَعْدَهٗۤ
اِذْ تَحُسُّوْنَهُمْ بِاِذْنِهٖ ۚ حَتّٰۤى اِذَا فَشِلْتُمْ وَتَنَازَعْتُمْ فِي الْاَمْرِ وَعَصَيْتُمْ مِّنْۢ بَعْدِ مَاۤ اَرٰىكُمْ مَّا تُحِبُّوْنَ ۚ مِنْكُمْ مَّنْ يُّرِيْدُ الدُّنْيَا وَ
مِنْكُمْ مَّنْ يُّرِيْدُ الْاٰخِرَةَ ۚ ثُمَّ صَرَفَكُمْ عَنْهُمْ لِيَبْتَلِيَكُمْ ۚ وَلَقَدْ عَفَا عَنْكُمْ ۚ وَاللّٰهُ ذُوْ فَضْلٍ عَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ ۝ اِذْ تُصْعِدُوْنَ وَلَا تَلْوٗنَ
عَلٰۤى اَحَدٍ وَّالرَّسُوْلُ يَدْعُوْكُمْ فِيْۤ اُخْرٰىكُمْ فَاَثَابَكُمْ غَمًّۢا بِغَمٍّ لِّكَيْلَا تَحْزَنُوْا عَلٰى مَا فَاتَكُمْ وَلَا مَاۤ اَصَابَكُمْ ۚ وَاللّٰهُ خَبِيْرٌۢ بِمَا تَعْمَلُوْنَ ۝

या अय्युहल्लज़ी–न आ–मनू इन् तुतीअुल्लज़ी–न क–फ़रू यरुद्दूकुम् अ़ला अअ्–क़ाबिकुम् फ़तन्क़लिबू ख़ासिरीन(149)बलिल्लाहु मौलाकुम् व हु–व ख़ैरुन्नासिरीन(150)सनुल्क़ी फ़ी क़ुलूबिल्लज़ी–न क–फ़रुर्रुअ्–ब बिमा अश्–रकू बिल्लाहि मा लम् युनज़्ज़िल् बिही सुल्तानन् व मअ्वाहुमुन्नारु व बिअ्–स मस्वज़्ज़ालिमीन(151)व ल–क़द् स–द–क़कुमुल्लाहु वअ्–दहू इज़् तहुस्सू–नहुम् बि–इज़्निही हत्ता इज़ा फ़शिल्तुम् व तनाज़अ़्तुम् फ़िल्अम्रि व अ़सैतुम् मिम्बअ़्दि मा अराकुम् मा तुहिब्बू–न मिन्कुम् मंय्युरीदुद–दुन्या व मिन्कुम् मंय्युरीदुल्–आख़ि–र–त सुम्–म स–र–फ़कुम् अ़न्हुम् लि–यब्तलि–यकुम् व ल–क़द् अ़फ़ा अ़न्कुम् वल्लाहु ज़ू फ़ज़्लिन् अ़लल्–मुअ्मिनीन(152)इज़् तुस्अिदू– न व ला तल्वू–न अ़ला अ–हदिंव्वर्रसूलु यदअूकुम् फ़ी उख़्राकुम् फ़–असा–बकुम् ग़म्मम् बि–ग़म्मिल्–लिकैला तह्ज़नू अ़ला मा फ़ा–तकुम् व ला मा असा–बकुम् वल्लाहु ख़बीरुम् बिमा तअ़्मलून(153)

ऐ ईमान वालो अगर तुम काफ़िरों के कहे पर चले (फ़ा269) तो वह तुम्हें उलटे पांव लौटा देंगे (फ़ा270) फिर टूटा खाके (नुक़्सान उठाकर) पलट जाओगे।(149) (फ़ा271) बल्कि अल्लाह तुम्हारा मौला है और वह सबसे बेहतर मददगार। (150) कोई दम जाता है कि हम काफ़िरों के दिलों में रोअ़्ब डालेंगे (फ़ा272) कि उन्होंने अल्लाह का शरीक ठहराया जिस पर उसने कोई समझ न उतारी और उनका ठिकाना दोज़ख़ है और क्या बुरा ठिकाना ना-इन्साफ़ों का।(151) और बेशक अल्लाह ने तुम्हें सच कर दिखाया अपना वादा जबकि तुम उसके हुक्म से काफ़िरों को क़त्ल करते थे (फ़ा273) यहां तक कि जब तुमने बुज़दिली की और हुक्म में झगड़ा डाला (फ़ा274) और नाफ़रमानी की। (फ़ा275) बाद इसके कि अल्लाह तुम्हें दिखा चुका तुम्हारी ख़ुशी की बात। (फ़ा276) तुम में कोई दुनिया चाहता था (फ़ा277) और तुम में कोई आख़िरत चाहता था (फ़ा278) फिर तुम्हारा मुंह उनसे फेर दिया कि तुम्हें आज़माए (फ़ा279) और बेशक उसने तुम्हें माफ़ कर दिया और अल्लाह मुसलमानों पर फ़ज़्ल करता है।(152) जब तुम मुंह उठाए चले जाते थे और पीठ फेर कर किसी को न देखते और दूसरी जमाअ़त में हमारे रसूल तुम्हें पुकार रहे थे (फ़ा280) तो तुम्हें ग़म का बदला ग़म दिया (फ़ा281) और माफ़ी इस लिए सुनाई कि जो हाथ से गया और जो उफ़्ताद पड़ी उसका रंज न करो और अल्लाह को तुम्हारे कामों की ख़बर है।(153)

(फ़ा269) ख़्वाह वह यहूद व नसारा हों या मुनाफ़िक़ व मुशरिक। (फ़ा270) कुफ़्र व बे-दीनी की तरफ़ (फ़ा271) मसलाः इस आयत से मालूम हुआ कि मुसलमानों पर लाज़िम है कि वह कुफ़्फ़ार से अ़लाहिदगी इख़्तियार करें और हरगिज़ उनकी राय व मश्वरे पर अ़मल न करें और उनके कहे पर न चलें। (फ़ा272) जंगे उहद से वापस होकर जब अबू सुफ़ियान वग़ैरह अपने लश्करियों के साथ मक्का मुकर्रमा की तरफ़ रवाना हुए तो उन्हें इस पर अफ़सोस हुआ कि हम ने मुसलमानों को बिल्कुल ख़त्म क्यों न कर डाला आपस में मश्वरा करके इस पर आमादा हुए कि चल कर उन्हें ख़त्म करदें जब यह क़स्द पुख़्ता हुआ तो अल्लाह तआ़ला ने उनके दिलों में रोअ़्ब डाला और उन्हें ख़ौफ़े शदीद पैदा हुआ और वह मक्का मुकर्रमा ही की तरफ़ वापस हो गए अगरचे सबब तो ख़ास था लेकिन रोअ़्ब तमाम कुफ़्फ़ार के दिलों में डाल दिया गया कि दुनिया के सारे कुफ़्फ़ार मुसलमानों से डरते हैं और बेफ़ज़्लेही तआ़ला दीने इस्लाम तमाम अदियान पर ग़ालिब है। (फ़ा273) जंगे उहद में (फ़ा274) कुफ़्फ़ार की हज़ीमत के बाद हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर के साथ जो तीर अन्दाज़ थे वह आपस में कहने लगे कि मुशरिकीन को हज़ीमत हो चुकी अब यहां ठहर कर क्या करें चलो कुछ माले ग़नीमत हासिल करने की कोशिश करें बाज़ ने कहा कि मर्कज़ मत छोड़ो रसूले करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने ब-ताकीद हुक्म फ़रमाया है कि तुम अपनी जगह क़ाइम **(बक़िया सफ़्हा 139 पर)**

ثُمَّ اَنْزَلَ عَلَيْكُمْ مِّنْۢ بَعْدِ الْغَمِّ اَمَنَةً نُّعَاسًا يَّغْشٰى طَآىِٕفَةً مِّنْكُمْ ۙ وَطَآىِٕفَةٌ قَدْ اَهَمَّتْهُمْ اَنْفُسُهُمْ يَظُنُّوْنَ بِاللّٰهِ غَيْرَ الْحَقِّ ظَنَّ الْجَاهِلِيَّةِ ۭ يَقُوْلُوْنَ هَلْ لَّنَا مِنَ الْاَمْرِ مِنْ شَيْءٍ ۭ قُلْ اِنَّ الْاَمْرَ كُلَّهٗ لِلّٰهِ ۭ يُخْفُوْنَ فِيْٓ اَنْفُسِهِمْ مَّا لَا يُبْدُوْنَ لَكَ ۭ يَقُوْلُوْنَ لَوْ كَانَ لَنَا مِنَ الْاَمْرِ شَيْءٌ مَّا قُتِلْنَا هٰهُنَا ۭ قُلْ لَّوْ كُنْتُمْ فِيْ بُيُوْتِكُمْ لَبَرَزَ الَّذِيْنَ كُتِبَ عَلَيْهِمُ الْقَتْلُ اِلٰى مَضَاجِعِهِمْ ۚ وَلِيَبْتَلِيَ اللّٰهُ مَا فِيْ صُدُوْرِكُمْ وَلِيُمَحِّصَ مَا فِيْ قُلُوْبِكُمْ ۭ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌۢ بِذَاتِ الصُّدُوْرِ ﴿۱۵۴﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ تَوَلَّوْا مِنْكُمْ يَوْمَ الْتَقَى الْجَمْعٰنِ ۙ اِنَّمَا اسْتَزَلَّهُمُ الشَّيْطٰنُ بِبَعْضِ مَا كَسَبُوْا ۚ وَلَقَدْ عَفَا اللّٰهُ عَنْهُمْ ۭ اِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ حَلِيْمٌ ﴿۱۵۵﴾ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَكُوْنُوْا كَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَقَالُوْا لِاِخْوَانِهِمْ اِذَا ضَرَبُوْا فِي الْاَرْضِ اَوْ

सुम्–म अन्ज़–ल अ़लैकुम् मिम्बअ़्दिल् ग़म्मि अ–म–नतन्नुआ–संय्यग़्शा ताइ–फ़–तम् मिन्कुम् व ताइ–फ़तुन् क़द् अहम्मत्हुम् अन्फ़ुसुहुम् यज़ुन्नू–न बिल्लाहि ग़ैरल्हक़्क़ि ज़न्नल्–जाहिलिय्यति यक़ूलू–न हल्लना मिनल्अम्रि मिन् शैइन् कुल् इन्नल् अम्–र कुल्लहू लिल्लाहि युख़्फ़ू–न फ़ी अन्फ़ुसिहिम् मा ला युब्दू–न ल–क यक़ूलू–न लौ का–न लना मिनल्–अम्रि शैउम्मा क़ुतिल्ना हाहुना कुल् लौ कुन्तुम् फ़ी बुयूतिकुम् ल–ब–र–ज़ल्लज़ी–न कुति–ब अ़लैहिमुल्क़त्लु इला मज़ाजिअ़िहिम् व लि–यब्तलि–यल्लाहु मा फ़ी सुदूरिकुम् व लियु– मह्हि–स़ मा फ़ी क़ुलूबिकुम् वल्लाहु अ़लीमुम् बि–ज़ातिस्सुदूर(154)इन्नल्लज़ी–न तवल्लौ मिन्कुम् यौमल् त–क़ल्–जम्आनि इन्न–मस्तज़ल्– ल–हुमुश्शैतानु बि–बअ़्ज़ि मा क–सबू व ल–क़द् अ़–फ़ल्लाहु अ़न्हुम् इन्नल्ला–ह ग़फ़ूरुन् ह़लीम(155)या अय्युहल्लज़ी–न आ–मनू ला तकूनू कल्लज़ी–न क–फ़रू व क़ालू लि–इख़्वानिहिम् इज़ा ज़–रबू फ़िल्अर्ज़ि औ

फिर तुम पर ग़म के बाद चैन की नींद उतारी (फ़ा282) कि तुम्हारी एक जमाअ़त को घेरे थी (फ़ा283) और एक गरोह को (फ़ा284) अपनी जान की पड़ी थी (फ़ा285) अल्लाह पर बेजा गुमान करते थे (फ़ा286) जाहिलियत के से गुमान कहते इस काम में कुछ हमारा भी इख़्तियार है तुम फ़रमा दो कि इख़्तियार तो सारा अल्लाह का है (फ़ा287) अपने दिलों में छुपाते हैं (फ़ा288) जो तुम पर ज़ाहिर नहीं करते कहते हैं हमारा कुछ बस होता (फ़ा289) तो हम यहां न मारे जाते, तुम फ़रमा दो कि अगर तुम अपने घरों में होते जब भी जिनका मारा जाना लिखा जा चुका था अपनी क़त्लगाहों तक निकल कर आते (फ़ा290) और इस लिए कि अल्लाह तुम्हारे सीनों की बात आज़माए और जो कुछ तुम्हारे दिलों में है (फ़ा291) उसे खोल दे और अल्लाह दिलों की बात जानता है।(154) (फ़ा292) बेशक वह जो तुम में से फिर गए (फ़ा293) जिस दिन दोनों फ़ौजें मिली थीं, उन्हें शैतान ही ने लग़ज़िश दी उनके बाज़ आमाल के बाइस (फ़ा294) और बेशक अल्लाह ने उन्हें माफ़ फ़रमा दिया बेशक अल्लाह बख़्शने वाला हिल्म वाला है।(155) (रुकूअ़ 7) ऐ ईमान वालो उन काफ़िरों (फ़ा295) की तरह न होना जिन्होंने अपने भाईयों की निस्बत कहा, जब वह सफ़र या जिहाद को गए (फ़ा296) कि

(फ़ा282) जो रोअ़्ब व ख़ौफ़ दिलों में था उसको अल्लाह तआ़ला ने दूर किया और अम्न व राहत के साथ उन पर नींद उतारी यहां तक कि मुसलमानों को ग़ुनूदगी आ गई और नींद ने उन पर ग़लबा किया हज़रत अबू तलहा फ़रमाते हैं कि रोज़े उहद नींद हम पर छा गई हम मैदान में थे तलवार हमारे हाथ से छूट जाती थी फिर उठाते थे फिर छूट जाती थी। (फ़ा283) और वह जमाअ़त मोमिनीन सादिक़ुल ईमान की थी। (फ़ा284) जो मुनाफ़िक़ थे। (फ़ा285) और वह ख़ौफ़ से परेशान थे अल्लाह तआ़ला ने वहां मोमिनीन को मुनाफ़िक़ीन से इस तरह मुमताज़ किया था कि मोमिनीन पर तो अम्न व इत्मीनान की नींद का ग़लबा था और मुनाफ़िक़ीन ख़ौफ़ व हरास में अपनी जानों के ख़ौफ़ से परेशान थे और यह आयते अ़ज़ीमा और मोअ़्जेज़ए बाहिरा था। (फ़ा286) यानी मुनाफ़िक़ीन को यह गुमान हो रहा था कि अल्लाह तआ़ला सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की मदद न फ़रमाएगा या यह कि हुज़ूर शहीद हो गए अब आपका दीन बाक़ी न रहेगा। (फ़ा287) फ़तह व ज़फ़र क़ज़ा व क़द्र सअ उसके हाथ है। (फ़ा288) मुनाफ़िक़ीन अपना कुफ़्र और वादए इलाही में अपना मुतरद्दिद होना और जिहाद में मुसलमानों के साथ चले आने पर मुतास्सिफ़ होना। (फ़ा289) और हमें समझ होती तो हम घर से न निकलते मुसलमानों के साथ अहले मक्का से लड़ाई के लिए न आते और हमारे सरदार न मारे जाते पहले मक़ूला का क़ायल अब्दुल्लाह बिन अबी बिन सलूल मुनाफ़िक़ है और उस मक़ूला का क़ायल मअ़तब बिन क़ुशैर। (फ़ा290) और घरों में बैठ रहना कुछ काम न आता क्योंकि क़ज़ा अ क़द्र के सामने तदबीर व हीला बेकार है। (फ़ा291) इख़लास व निफ़ाक़। (फ़ा292) उससे कुछ छुपा नहीं और यह आज़माईश दूसरों को ख़बरदार करने के लिए है। (फ़ा293) और जंगे उहद में भाग गए और नबीए करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के **(बक़िया सफ़हा 138 पर)**

كَانُوْا غُزًّى لَّوْ كَانُوْا عِنْدَنَا مَا مَاتُوْا وَمَا قُتِلُوْا ۚ لِيَجْعَلَ اللّٰهُ ذٰلِكَ حَسْرَةً فِيْ قُلُوْبِهِمْ ؕ وَاللّٰهُ يُحْيٖ وَيُمِيْتُ ؕ وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ بَصِيْرٌ ۝۱۵۶
وَلَئِنْ قُتِلْتُمْ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ اَوْ مُتُّمْ لَمَغْفِرَةٌ مِّنَ اللّٰهِ وَرَحْمَةٌ خَيْرٌ مِّمَّا يَجْمَعُوْنَ ۝۱۵۷ وَلَئِنْ مُّتُّمْ اَوْ قُتِلْتُمْ لَاِ۟لَى اللّٰهِ تُحْشَرُوْنَ ۝۱۵۸ فَبِمَا رَحْمَةٍ مِّنَ
اللّٰهِ لِنْتَ لَهُمْ ۚ وَلَوْ كُنْتَ فَظًّا غَلِيْظَ الْقَلْبِ لَانْفَضُّوْا مِنْ حَوْلِكَ ۪ فَاعْفُ عَنْهُمْ وَاسْتَغْفِرْ لَهُمْ وَشَاوِرْهُمْ فِي الْاَمْرِ ۚ فَاِذَا عَزَمْتَ فَتَوَكَّلْ
عَلَى اللّٰهِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ الْمُتَوَكِّلِيْنَ ۝۱۵۹ اِنْ يَّنْصُرْكُمُ اللّٰهُ فَلَا غَالِبَ لَكُمْ ۚ وَاِنْ يَّخْذُلْكُمْ فَمَنْ ذَا الَّذِيْ يَنْصُرُكُمْ مِّنْ بَعْدِهٖ ؕ وَعَلَى اللّٰهِ فَلْيَتَوَكَّلِ
الْمُؤْمِنُوْنَ ۝۱۶۰ وَمَا كَانَ لِنَبِيٍّ اَنْ يَّغُلَّ ؕ وَمَنْ يَّغْلُلْ يَاْتِ بِمَا غَلَّ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ۚ ثُمَّ تُوَفّٰى كُلُّ نَفْسٍ مَّا كَسَبَتْ وَهُمْ لَا يُظْلَمُوْنَ ۝۱۶۱

कानू गुज़्ज़ल्लौ कानू इन्दना मा मातू व मा कुतिलू लि–यज्अ़–लल्लाहु ज़ालि–क ह़स्र–तन् फ़ी कुलूबिहिम् वल्लाहु युह़्यी व युमीतु वल्लाहु बिमा तअ़्मलू–न बसीर(156)व लइन् कुतिल्तुम् फ़ी सबीलिल्लाहि औ मुत्तुम् ल–मग़्फ़ि–रतुम्–मिनल्लाहि व रह़्मतुन् ख़ैरुम्–मिम्मा यज्मअ़ून(157)व ल–इम्–मुत्तुम् औ कुतिल्तुम् ल–इलल्लाहि तुह़्शरून(158)फ़बिमा रह़्मतिम् मिनल्लाहि लिन्–त लहुम् व लौ कुन्–त फ़ज़्ज़न् ग़लीज़ल्क़ल्बि लन्फ़ज़्ज़ू मिन् ह़ौलि–क फ़अ़्फु अ़न्हुम् वस्तग़्फ़िर् लहुम् व शाविर्हुम् फ़िलअम्रि फ़–इज़ा अ़–ज़म्–त फ़–त–वक्कल् अ़लल्लाहि इन्नल्ला–ह युह़िब्बुल्– मु–त–वक्किलीन(159)इंय्यन्सुर् कुमुल्लाहु फ़ला ग़ालि–ब लकुम् व इंय्यख़्ज़ुल्कुम् फ़–मन् ज़ल्लज़ी यन्सुरुकुम् मिम्बअ़्–दिही व अ़–लल्लाहि फ़ल्य–त–वक्कलिल् मुअ्मिनून(160)व मा का–न लि–नबिय्यिन् अंय्यग़ुल्–ल व मंय्यग़्लुल् यअ्ति बिमा ग़ल्–ल यौमल्क़िया–मति सुम्–म तुवफ़्फ़ा कुल्लु नफ़्सिम्मा क–सबत् व हुम् ला युज़्लमून(161)

कि हमारे पास होते तो न मरते और न मारे जाते इस लिए कि अल्लाह उनके दिलों में इसका अफ़सोस रखे और अल्लाह जिलाता और मारता है (फ़ा297)और अल्लाह तुम्हारे काम देख रहा है।(156) और बेशक अगर तुम अल्लाह की राह में मारे जाओ या मर जाओ(फ़ा298)तो अल्लाह की बख़्शिश और रहमत(फ़ा299)उनके सारे धन दौलत से बेहतर है।(157) और अगर तुम मरो या मारे जाओ तो अल्लाह ही की तरफ़ उठना है।(158) (फ़ा300)तो कैसी कुछ अल्लाह की मेहरबानी है कि ऐ महबूब तुम उनके लिए नर्म दिल हुए (फ़ा301)और अगर तुन्द मिज़ाज सख़्त दिल होते (फ़ा302) तो वह ज़रूर तुम्हारे गिर्द से परेशान हो जाते तो तुम उन्हें माफ़ फ़रमाओ और उनकी शफ़ाअ़त करो (फ़ा303) और कामों में उनसे मश्वरा लो (फ़ा304) और जो किसी बात का इरादा पक्का कर लो तो अल्लाह पर भरोसा करो (फ़ा305) बेशक तवक्कुल वाले अल्लाह को प्यारे हैं।(159) अगर अल्लाह तुम्हारी मदद करे तो कोई तुम पर ग़ालिब नहीं आ सकता (फ़ा306)और अगर वह तुम्हें छोड़ दे तो ऐसा कौन है जो फिर तुम्हारी मदद करे और मुसलमानों को अल्लाह ही पर भरोसा चाहिये।(160) और किसी नबी पर यह गुमान नहीं हो सकता कि वह कुछ छुपा रखे (फ़ा307) और जो छुपा रखे वह क़ियामत के दिन अपनी छुपाई चीज़ लेकर आएगा फिर हर जान को उनकी कमाई भरपूर दी जाएगी और उन पर ज़ुल्म न होगा।(161)

(फ़ा297) मौत व हयात उसी के इख़्तियार में है वह चाहे तो मुसाफ़िर व ग़ाज़ी को सलामत लाए और महफ़ूज़ घर में बैठे हुए को मौत दे उन मुनाफ़िक़ीन के पास बैठ रहना क्या किसी को मौत से बचा सकता है और जिहाद में जाने से कब मौत लाज़िम है और अगर आदमी जिहाद में मारा जाए तो वह मौत घर की मौत से ब–दर्जहा बेहतर। लिहाज़ा मुनाफ़िक़ीन का यह क़ौल बातिल और फ़रेब–देही है और उनका मक़सद मुसलमानों को जिहाद से नफ़रत दिलाना है जैसा कि अगली आयत में इरशाद होता है। (फ़ा298) और बिलफ़र्ज़ वह सूरत पेश ही आ जाए जिस का तुम्हें अन्देशा दिलाया जाता है। (फ़ा299) जो राहे ख़ुदा में मरने पर हासिल होती है। (फ़ा300) यहां मक़ामाते अ़ब्दियत के तीनों मक़ामों का बयान फ़रमाया गया पहला मक़ाम तो यह है कि बन्दा ब–ख़ौफ़े दोज़ख़ अल्लाह की इबादत करे तो उसको अ़ज़ाबे नार से अम्न दी जाती है उसकी तरफ़ *ल–मग़्फ़ि–रतुम् मिनल्लाहि* में इशारा है दूसरी क़िस्म वह बन्दे हैं जो जन्नत के शौक़ में अल्लाह की इबादत करते हैं उस की तरफ़ व *रह़्–मतुन्* में इशारा है क्योंकि रहमत भी जन्नत का एक नाम है तीसरी क़िस्म वह मुख़लिस बन्दे हैं जो इश्क़े इलाही और उसकी ज़ाते पाक की मुहब्बत में उसकी इबादत करते हैं और उनका मक़सूद उसकी ज़ात के सिवा और कुछ **(बक़िया सफ़हा 140 पर)**

أَفَمَنِ اتَّبَعَ رِضْوَانَ اللَّهِ كَمَنْۢ بَآءَ بِسَخَطٍ مِّنَ اللَّهِ وَمَأْوٰىهُ جَهَنَّمُ ؕ وَبِئْسَ الْمَصِيْرُ ﴿١٦٢﴾ هُمْ دَرَجٰتٌ عِنْدَ اللَّهِ ؕ وَاللَّهُ بَصِيْرٌۢ بِمَا يَعْمَلُوْنَ ﴿١٦٣﴾
لَقَدْ مَنَّ اللَّهُ عَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ اِذْ بَعَثَ فِيْهِمْ رَسُوْلًا مِّنْ اَنْفُسِهِمْ يَتْلُوْا عَلَيْهِمْ اٰيٰتِهٖ وَيُزَكِّيْهِمْ وَيُعَلِّمُهُمُ الْكِتٰبَ وَالْحِكْمَةَ ۚ وَاِنْ كَانُوْا مِنْ قَبْلُ
لَفِيْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ﴿١٦٤﴾ اَوَلَمَّآ اَصَابَتْكُمْ مُّصِيْبَةٌ قَدْ اَصَبْتُمْ مِّثْلَيْهَا ۙ قُلْتُمْ اَنّٰى هٰذَا ؕ قُلْ هُوَ مِنْ عِنْدِ اَنْفُسِكُمْ ؕ اِنَّ اللَّهَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ﴿١٦٥﴾
وَمَآ اَصَابَكُمْ يَوْمَ الْتَقَى الْجَمْعٰنِ فَبِاِذْنِ اللَّهِ وَلِيَعْلَمَ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿١٦٦﴾ وَلِيَعْلَمَ الَّذِيْنَ نَافَقُوْا ۚۖ وَقِيْلَ لَهُمْ تَعَالَوْا قَاتِلُوْا فِيْ سَبِيْلِ اللَّهِ
اَوِ ادْفَعُوْا ؕ قَالُوْا لَوْ نَعْلَمُ قِتَالًا لَّاتَّبَعْنٰكُمْ ؕ هُمْ لِلْكُفْرِ يَوْمَئِذٍ اَقْرَبُ مِنْهُمْ لِلْاِيْمَانِ ۚ يَقُوْلُوْنَ بِاَفْوَاهِهِمْ مَّا لَيْسَ فِيْ قُلُوْبِهِمْ ؕ وَاللَّهُ

अ–फ़–मनित्त–ब–अ रिज़्वानल्लाहि क–मम्बा–अ बि स–ख़तिम् मिनल्लाहि व मावाहु जहन्नमु व बिअ्सल्मसीर(162)हुम् द–रजातुन् अिन्दल्लाहि वल्लाहु बसीरुम्–बिमा यअ्मलून(163)ल–क़द् मन्नल्लाहु अ–लल् मुअ्मिनी–न इज़् ब–अ–स फ़ीहिम् रसूलम्–मिन् अन्फ़ुसि हिम् यत्लू अलैहिम् आयातिही व युज़क्कीहिम् व युअ़ल्लिमुहुमुल्–किता–ब वल्हिक्म–त व इन् कानू मिन् क़ब्लु लफ़ी ज़लालिम्–मुबीन(164)अ–व लम्मा असाबत्कुम् मुसी–बतुन् क़द् असब्तुम् मिस्लैहा कुल्तुम् अन्ना हाज़ा कुल् हु–व मिन् अिन्दि अन्फ़ुसिकुम् इन्नल्ला–ह अ़ला कुल्लि शैइन् क़दीर(165)व मा असा–बकुम् यौमल्–त–क़ल्–जम्आनि फ़बि–इज़्निल्लाहि व लि–यअ्–ल–मल्–मुअ्मिनीन(166)व लि–यअ्–ल–मल्लज़ी–न ना–फ़क़ू व क़ी–ल लहुम् तआलौ क़ातिलू फ़ी सबीलिल्लाहि अविद्फ़अू क़ालू लौ नअ्–लमु क़ितालल्–लत्तबअ्–नाकुम् हुम् लिल्कुफ़्रि यौ–मइज़िन् अक़्रबु मिन्हुम् लिल्ईमानि यक़ूलू–न बि–अफ़्वाहिहिम् मा लै–स फ़ी क़ुलूबिहिम् वल्लाहु

तो क्या जो अल्लाह की मर्ज़ी पर चला (फ़308) वह उस जैसा होगा जिसने अल्लाह का ग़ज़ब ओढ़ा (फ़309) और उसका ठिकाना जहन्नम है और क्या बुरी जगह पलटने की।(162) वह अल्लाह के यहां दर्जा-दर्जा हैं (फ़310) और अल्लाह उनके काम देखता है।(163) बेशक अल्लाह का बड़ा एहसान हुआ (फ़311) मुसलमानों पर कि उनमें उन्हीं में से (फ़312) एक रसूल (फ़313) भेजा जो उन पर उसकी आयतें पढ़ता है (फ़314) और उन्हें पाक करता है (फ़315) और उन्हें किताब व हिकमत सिखाता है (फ़316) और वह ज़रूर इससे पहले खुली गुमराही में थे।(164) (फ़317) क्या जब तुम्हें कोई मुसीबत पहुंचे (फ़318) कि उससे दूनी तुम पहुंचा चुके हो (फ़319) तो कहने लगो कि यह कहां से आई (फ़320) तुम फ़रमा दो कि वह तुम्हारी ही तरफ़ से आई (फ़321) बेशक अल्लाह सब कुछ कर सकता है।(165) और वह मुसीबत जो तुम पर आई (फ़322) जिस दिन दोनों फ़ौजें (फ़323) मिली थीं वह अल्लाह के हुक्म से थी और इस लिए कि पहचान करा दे(166) ईमान वालों की। और इस लिए कि पहचान करा दे उनकी जो मुनाफ़िक़ हुए (फ़324) और उनसे (फ़325) कहा गया कि आओ (फ़326) अल्लाह की राह में लड़ो या दुश्मन को हटाओ (फ़327) बोले अगर हम लड़ाई होती जानते तो ज़रूर तुम्हारा साथ देते और उस दिन ज़ाहिरी ईमान की बनिस्बत खुले कुफ़्र से ज़्यादा क़रीब हैं, अपने मुंह से कहते हैं जो उनके दिल में नहीं और अल्लाह को

(फ़308) और उसकी इताअ़त की ना-फ़रमानी से बचा जैसे कि मुहाजिरीन व अंसार व सालिहीने उम्मत। (फ़309) यानी अल्लाह का ना-फ़रमान हुआ जैसे मुनाफ़िक़ीन व कुफ़्फ़ार। (फ़310) हर एक की मन्ज़िलत और उसका मक़ाम जुदा नेक का अलग बद का अलग। (फ़311) मिन्नत नेअ़्मते अ़ज़ीमा को कहते हैं और बेशक सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की बेअ़्सत नेअ़्मते अ़ज़ीमा है क्योंकि ख़ल्क़ की पैदाईश जहूल व अ़दमे दरायत व क़िल्लते फ़हम व नक़साने अ़क़्ल पर है तो अल्लाह तआ़ला ने रसूले करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को उनमें मबऊस फ़रमा कर उन्हें गुमराही से रिहाई दी और हुज़ूर की बदौलत उन्हें बीनाई अ़ता फ़रमा कर जहूल से निकाला और आपके सदक़ा में राहे रास्त की हिदायत फ़रमाई और आपके तुफ़ैल में बेशुमार नेअ़्मतें अ़ता कीं। (फ़312) यानी उनके हाल पर शफ़क़त व करम फ़रमाने वाला और उनके लिए बाइसे फ़ख़्र व शरफ़ जिस के अहवाल ज़ुह्द वरअ. रास्त बाज़ी दियानतदारी ख़साइले जमीला अख़्लाक़े हमीदा से वह वाक़िफ़ हैं। (फ़313) सय्यदे आ़लम ख़ातिमुल अम्बिया मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम (फ़314) और उसकी **(बक़िया सफ़हा 140 पर)**

اَعْلَمُ بِمَا يَكْتُمُوْنَ ۝ اَلَّذِيْنَ قَالُوْا لِاِخْوَانِهِمْ وَ قَعَدُوْا لَوْ اَطَاعُوْنَا مَا قُتِلُوْا ؕ قُلْ فَادْرَءُوْا عَنْ اَنْفُسِكُمُ الْمَوْتَ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ۝
وَلَا تَحْسَبَنَّ الَّذِيْنَ قُتِلُوْا فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ اَمْوَاتًا ؕ بَلْ اَحْيَآءٌ عِنْدَ رَبِّهِمْ يُرْزَقُوْنَ ۝ فَرِحِيْنَ بِمَآ اٰتٰهُمُ اللّٰهُ مِنْ فَضْلِهٖ ۙ وَيَسْتَبْشِرُوْنَ
بِالَّذِيْنَ لَمْ يَلْحَقُوْا بِهِمْ مِّنْ خَلْفِهِمْ ۙ اَلَّا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ ۝ يَسْتَبْشِرُوْنَ بِنِعْمَةٍ مِّنَ اللّٰهِ وَفَضْلٍ ۙ وَّاَنَّ اللّٰهَ لَا يُضِيْعُ اَجْرَ
الْمُؤْمِنِيْنَ ۝ اَلَّذِيْنَ اسْتَجَابُوْا لِلّٰهِ وَالرَّسُوْلِ مِنْ بَعْدِ مَآ اَصَابَهُمُ الْقَرْحُ ۛؕ لِلَّذِيْنَ اَحْسَنُوْا مِنْهُمْ وَاتَّقَوْا اَجْرٌ عَظِيْمٌ ۝ اَلَّذِيْنَ قَالَ لَهُمُ
النَّاسُ اِنَّ النَّاسَ قَدْ جَمَعُوْا لَكُمْ فَاخْشَوْهُمْ فَزَادَهُمْ اِيْمَانًا ۖۗ وَّقَالُوْا حَسْبُنَا اللّٰهُ وَنِعْمَ الْوَكِيْلُ ۝ فَانْقَلَبُوْا بِنِعْمَةٍ مِّنَ اللّٰهِ وَفَضْلٍ لَّمْ يَمْسَسْهُمْ

अअ्लमु बिमा यक्तुमून(167)अल्लज़ी–न क़ालू लिइख़्वानिहिम् व क़–अदू लौ अताअूना मा क़ुतिलू क़ुल् फ़द्‌रऊ अ़न् अन्फ़ुसिकुमुल्मौ–त इन् कुन्तुम् सादिक़ीन(168)व ला तह्‌स–बन्नल्लज़ी–न क़ुतिलू फ़ी सबी–लिल्लाहि अम्वातन् बल् अह्‌याउन् अि़न्–द रब्बिहिम् युर्ज़क़ून(169)फ़रिही–न बिमा आताहुमुल्लाहु मिन् फ़ज़्लिही व यस्तब्शिरू–न बिल्लज़ी–न लम् यल्हक़ू बिहिम् मिन् ख़ल्फ़िहिम् अल्ला ख़ौफ़ुन् अ़लैहिम् व ला हुम् यह्–ज़नून(170) यस्तब्–शिरू–न बिनिअ्–मतिम् मिनल्लाहि व फ़ज़्लिंव्–व अन्नल्ला–ह ला युज़ीअु अज्रल् मुअ्मिनीन(171)अल्लज़ीनस्तजाबू लिल्लाहि वर्रसूलि मिम्बअ्‌दि मा असा–बहुमुल्–क़र्हु लिल्लज़ी–न अह्सनू मिन्हुम् वत्तक़ौ अज्रुन् अ़ज़ीम(172)अल्लज़ी–न क़ा–ल लहुमुन्नासु इन्नन्ना–स क़द् ज–मअू लकुम् फ़ख़्शौहुम् फ़ज़ा–दहुम् ईमानंव् व क़ालू ह़स्बुनल्लाहु व निअ्मल् वकील(173)फ़न्क़–लबू बि–निअ्मतिम् मिनल्लाहि व फ़ज्लिल्–लम् यम्सस्हुम्

मालूम है जो छुपा रहे हैं।(167) (फ़ा328) वह जिन्होंने अपने भाईयों के बारे में (फ़ा329) कहा और आप बैठ रहे कि वह हमारा कहा मानते (फ़ा330) तो न मारे जाते तुम फ़रमा दो तो अपनी ही मौत टाल दो अगर सच्चे हो।(168) (फ़ा331) और जो अल्लाह की राह में मारे गए (फ़ा332) हरगिज़ उन्हें मुर्दा न ख़्याल करना, बल्कि वह अपने रब के पास ज़िन्दा हैं रोज़ी पाते हैं।(169) (फ़ा333) शाद हैं उस पर जो अल्लाह ने उन्हें अपने फ़ज़्ल से दिया (फ़ा334) और ख़ुशियां मना रहे हैं अपने पिछलों की जो अभी उनसे न मिले (फ़ा335) कि उन पर न कुछ अन्देशा है और न कुछ ग़म।(170) ख़ुशियां मनाते हैं अल्लाह की नेअ्मत और फ़ज़्ल की, और यह कि अल्लाह ज़ाया नहीं करता अज्र मुसलमानों का।(171) (फ़ा336)(रुकूअ् 8) वह जो अल्लाह व रसूल के बुलाने पर हाज़िर हुए बाद इसके कि उन्हें ज़ख़्म पहुंच चुका था (फ़ा337) उनके नेको-कारों और परहेज़गारों के लिए बड़ा सवाब है।(172) वह जिन से लोगों ने कहा (फ़ा338) कि लोगों ने (फ़ा339) तुम्हारे लिए जत्था जोड़ा तो उनसे डरो तो उनका ईमान और ज़ायद हुआ और बोले अल्लाह हम को बस है और क्या अच्छा कार-साज़।(173) (फ़ा340) तो पलटे अल्लाह के एहसान और फ़ज़्ल से (फ़ा341) कि उन्हें कोई बुराई न पहुंची

(फ़ा328) यानी निफ़ाक़। (फ़ा329) यानी शोहदाए उहद जो नसबी तौर पर उनके भाई थे उनके हक़ में अ़ब्दुल्लाह बिन उबय वग़ैरह मुनाफ़िक़ीन ने। (फ़ा330) और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के साथ जिहाद में न जाते या वहां से फिर आते। (फ़ा331) मरवी है कि जिस रोज़ मुनाफ़िक़ीन ने यह बात कही उसी दिन सत्तर मुनाफ़िक़ मर गए। (फ़ा332) शाने नुज़ूल: अक्सर मुफ़स्सिरीन का क़ौल है कि यह आयत शोहदाए उहद के हक़ में नाज़िल हुई। हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा से मरवी है सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया जब तुम्हारे भाई उहद में शहीद हुए अल्लाह तआ़ला ने उनकी अरवाह को सब्ज़ परिन्दों के क़ालिब अ़ता फ़रमाए वह जन्नती नहरों पर सैर करते फिरते हैं जन्नती मेवे खाते हैं तलाई क़नादील जो ज़ेरे अ़र्श मुअ़ल्लक़ हैं उन में रहते हैं जब उन्होंने खाने पीने रहने के पाकीज़ा ऐश पाए तो कहा कि हमारे भाईयों को कौन ख़बर दे कि हम जन्नत में ज़िन्दा हैं ताकि वह जन्नत से बे रग़बती न करें और जंग से बैठ न रहें अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया मैं उन्हें तुम्हारी ख़बर पहुंचाऊंगा पस यह आयत नाज़िल फ़रमाई (अबू दाऊद) इससे साबित हुआ कि अरवाह बाक़ी हैं जिस्म के फ़ना के साथ फ़ना नहीं होतीं। (फ़ा333) और ज़िन्दों की तरह खाते पीते ऐश करते हैं सियाक़े आयत इस पर दलालत करता है कि हयात रूह व जिस्म दोनों के लिए है। उलमा ने फ़रमाया कि शोहदा के जिस्म क़ब्रों में महफ़ूज़ रहते हैं मिट्टी उनको नुक़सान नहीं पहुंचाती और ज़मानए सहाबा में और उसके बाद ब-कसरत मुआ़यना हुआ है कि अगर कभी **(बक़िया सफ़हा 141 पर)**

سُوٓءٌ وَّاتَّبَعُوْا رِضْوَانَ اللّٰهِ ۭ وَاللّٰهُ ذُوْ فَضْلٍ عَظِيْمٍ ﴿۱۷۴﴾ اِنَّمَا ذٰلِكُمُ الشَّيْطٰنُ يُخَوِّفُ اَوْلِيَاۗءَهٗ ۠ فَلَا تَخَافُوْھُمْ وَخَافُوْنِ اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ﴿۱۷۵﴾

وَلَا يَحْزُنْكَ الَّذِيْنَ يُسَارِعُوْنَ فِي الْكُفْرِ ۚ اِنَّھُمْ لَنْ يَّضُرُّوا اللّٰهَ شَـيْـــًٔـا ۭ يُرِيْدُ اللّٰهُ اَلَّا يَجْعَلَ لَھُمْ حَظًّا فِي الْاٰخِرَةِ ۚ وَلَھُمْ عَذَابٌ عَظِيْمٌ ﴿۱۷۶﴾

اِنَّ الَّذِيْنَ اشْتَرَوُا الْكُفْرَ بِالْاِيْمَانِ لَنْ يَّضُرُّوا اللّٰهَ شَـيْـــًٔـا ۚ وَلَھُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿۱۷۷﴾ وَلَا يَحْسَبَنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اَنَّمَا نُمْلِيْ لَھُمْ خَيْرٌ لِّاَنْفُسِھِمْ ۭ

اِنَّمَا نُمْلِيْ لَھُمْ لِيَزْدَادُوْٓا اِثْمًا ۚ وَلَھُمْ عَذَابٌ مُّهِيْنٌ ﴿۱۷۸﴾ مَا كَانَ اللّٰهُ لِيَذَرَ الْمُؤْمِنِيْنَ عَلٰي مَآ اَنْتُمْ عَلَيْهِ حَتّٰى يَمِيْزَ الْخَبِيْثَ مِنَ الطَّيِّبِ ۭ

وَمَا كَانَ اللّٰهُ لِيُطْلِعَكُمْ عَلَي الْغَيْبِ وَلٰكِنَّ اللّٰهَ يَجْتَبِيْ مِنْ رُّسُلِهٖ مَنْ يَّشَاۗءُ ۠ فَاٰمِنُوْا بِاللّٰهِ وَرُسُلِهٖ ۚ وَاِنْ تُؤْمِنُوْا وَتَتَّقُوْا فَلَكُمْ اَجْرٌ عَظِيْمٌ ﴿۱۷۹﴾

सूउंव्–वत्तबअू रिज़्वानल्लाहि वल्लाहु ज़ू फ़ज़्लिन् अ़ज़ीम(174)इन्नमा ज़ालिकुमुश्–शैतानु युख़व्विफ़ु औलिया–अहू फ़लातख़ाफ़ूहुम् व ख़ाफ़ूनि इन् कुन्तुम् मुअ्मिनीन(175)व ला यह्ज़ुन्कल्लज़ी–न युसारिअू–न फ़िल्कुफ़्रि इन्नहुम् लंय्यज़ुर्रुल्ला–ह शैअन् युरीदुल्लाहु अल्ला यज्–अ़–ल लहुम् हज़्ज़न् फ़िल् आख़ि–रति व लहुम् अ़ज़ाबुन् अ़ज़ीम(176) इन्नल्लज़ीनश्त –र–वुल् कुफ़्–र बिलईमानि लंय्यज़ुर्रुल्ला–ह शैअन् व लहुम् अ़ज़ाबुन् अलीम(177)व ला यह्स–बन्नल्लज़ी–न क–फ़रू अन्नमा नुम्ली लहुम् ख़ैरुल्–लि अन्फ़ुसिहिम् इन्नमा नुम्ली लहुम् लि–यज़्दादू इस्मन् व लहुम् अ़ज़ाबुम्–मुहीन(178)मा कानल्लाहु लि–य–ज़–रल्–मुअ्–मिनी–न अ़ला मा अन्तुम् अ़लैहि हत्ता यमीज़ल् ख़बी–स़ मिनत्तय्यिबि व मा कानल्लाहु लि–युत़्लि–अ़कुम् अ़लल्ग़ैबि व लाकिन्नल्ला–ह यज्तबी मिर्रुसुलिही मंय्यशाउ फ़–आमिनू बिल्लाहि व रुसुलिही व इन् तुअ्मिनू व तत्तक़ू फ़–लकुम् अज्रुन् अ़ज़ीम(179)

और अल्लाह की खुशी पर चले (फ़ा342) और अल्लाह बड़े फ़ज़्ल वाला है।(174) (फ़ा343) वह तो शैतान ही है कि अपने दोस्तों से धमकाता है (फ़ा344) तो उनसे न डरो (फ़ा345) और मुझ से डरो अगर ईमान रखते हो।(175) (फ़ा346) और ऐ महबूब तुम उनका कुछ ग़म न करो जो कुफ़्र पर दौड़ते हैं (फ़ा347) वह अल्लाह का कुछ न बिगाड़ेंगे और अल्लाह चाहता है कि आख़िरत में उनका कोई हिस्सा न रखे (फ़ा348) और उनके लिए बड़ा अ़ज़ाब है।(176) वह जिन्होंने ईमान के बदले कुफ़्र मोल लिया। (फ़ा349) अल्लाह का कुछ न बिगाड़ेंगे और उनके लिए दर्दनाक अ़ज़ाब है। (177) और हरगिज़ काफ़िर इस गुमान में न रहें कि वह जो हम उन्हें ढील देते हैं कुछ उनके लिए भला है हम तो इसी लिए उन्हें ढील देते हैं कि और गुनाह में बढ़ें (फ़ा350) और उनके लिए ज़िल्लत का अ़ज़ाब है।(178) अल्लाह मुसलमानों को इसी हाल पर छोड़ने का नहीं जिस पर तुम हो (फ़ा351) जब तक जुदा न कर दे(फ़ा352) सुथरे से (फ़ा353) और अल्लाह की शान यह नहीं ऐ आ़म लोगो तुम्हें ग़ैब का इल्म दे दे हां अल्लाह चुन लेता है अपने रसूलों से जिसे चाहे (फ़ा354) तो ईमान लाओ अल्लाह और उसके रसूलों पर और अगर ईमान लाओ (फ़ा355) और परहेज़गारी करो तो तुम्हारे लिए बड़ा सवाब है।(179)

(फ़ा342) और दुश्मन के मुक़ाबला के लिए जुरअत से निकले और जिहाद का सवाब पाया। (फ़ा343) कि उसने इताअ़ते रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम और आमादगीए जिहाद की तौफ़ीक़ दी और मुशरिकीन के दिलों को ख़ौफ़-ज़दा कर दिया कि वह मुक़ाबला की हिम्मत न कर सके और राह में से वापस हो गए (फ़ा344) और मुसलमानों को मुशरिकीन की कसरत से डराता है जैसा कि नुऐम बिन मसऊद अशजई ने किया। (फ़ा345) यानी मुनाफ़िक़ीन व मुशरिकीन जो शैतान के दोस्त हैं उनका ख़ौफ़ न करो। (फ़ा346) क्योंकि ईमान का मुक़्तज़ा ही यह है कि बन्दे को ख़ुदा ही का ख़ौफ़ हो। (फ़ा347) ख़्वाह वह कुफ़्फ़ारे क़ुरैश हों या मुनाफ़िक़ीन या रुअसाए यहूद या मुरतदीन वह आपके मुक़ाबला के लिए कितने ही लश्कर जमा करें कामयाब न होंगे। (फ़ा348) इसमें क़दरिया व मोअ़तज़ेला का रद्द है और आयत दलील है इस पर कि ख़ैर व शर ब-इरादए इलाही है। (फ़ा349) यानी मुनाफ़िक़ीन जो कलिमए ईमान पढ़ने के बाद काफ़िर हुए या वह लोग जो बावजूद ईमान पर क़ादिर होने के काफ़िर ही रहे और ईमान न लाए (फ़ा350) हक़ से एनाद और रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से ख़िलाफ़ करके, हदीस शरीफ़ में है सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से दरियाफ़्त किया गया, कौन शख़्स अच्छा है फ़रमाया जिसकी उम्र दराज़ हो और अ़मल अच्छे हों। अ़र्ज़ किया गया और बद-तर कौन है फ़रमाया जिस की उम्र दराज़ हो और अ़मल ख़राब (फ़ा351) ऐ कलिमा गोयाने इस्लाम (फ़ा352) यानी मुनाफ़िक़ को। (फ़ा353) मोमिन मुख़लिस से यहां तक कि अपने नबी **(बक़िया सफ़हा 140 पर)**

وَلَا يَحْسَبَنَّ الَّذِينَ يَبْخَلُونَ بِمَآ اٰتٰهُمُ اللّٰهُ مِنْ فَضْلِهٖ هُوَ خَيْرًا لَّهُمْ ؕ بَلْ هُوَ شَرٌّ لَّهُمْ ؕ سَيُطَوَّقُوْنَ مَا بَخِلُوْا بِهٖ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ؕ وَلِلّٰهِ مِيْرَاثُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرٌ ﴿١٨٠﴾ لَقَدْ سَمِعَ اللّٰهُ قَوْلَ الَّذِيْنَ قَالُوْٓا اِنَّ اللّٰهَ فَقِيْرٌ وَّنَحْنُ اَغْنِيَآءُ ۘ سَنَكْتُبُ مَا قَالُوْا وَقَتْلَهُمُ الْاَنْۢبِيَآءَ بِغَيْرِ حَقٍّ ۙ وَّنَقُوْلُ ذُوْقُوْا عَذَابَ الْحَرِيْقِ ﴿١٨١﴾ ذٰلِكَ بِمَا قَدَّمَتْ اَيْدِيْكُمْ وَاَنَّ اللّٰهَ لَيْسَ بِظَلَّامٍ لِّلْعَبِيْدِ ﴿١٨٢﴾ اَلَّذِيْنَ قَالُوْٓا اِنَّ اللّٰهَ عَهِدَ اِلَيْنَآ اَلَّا نُؤْمِنَ لِرَسُوْلٍ حَتّٰى يَاْتِيَنَا بِقُرْبَانٍ تَاْكُلُهُ النَّارُ ؕ قُلْ قَدْ جَآءَكُمْ رُسُلٌ مِّنْ قَبْلِيْ بِالْبَيِّنٰتِ وَبِالَّذِيْ قُلْتُمْ فَلِمَ قَتَلْتُمُوْهُمْ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿١٨٣﴾ فَاِنْ كَذَّبُوْكَ فَقَدْ كُذِّبَ رُسُلٌ مِّنْ قَبْلِكَ جَآءُوْ بِالْبَيِّنٰتِ وَالزُّبُرِ وَالْكِتٰبِ الْمُنِيْرِ ﴿١٨٤﴾ كُلُّ نَفْسٍ ذَآئِقَةُ الْمَوْتِ ؕ

व ला यह्सबन्नल्लज़ी–न यब्ख़लू–न बिमा आताहुमुल्लाहु मिन् फ़ज्.लिही हु–व ख़ैरल्लहुम् बल् हु–व शर्रुल्–लहुम् सयुतव्वकू–न मा बख़िलू बिही यौमल्–क़िया–मति व लिल्लाहि मीरासुस्–समावाति वल्अर्ज़ि वल्लाहु बिमा तअ्मलू–न ख़बीर(180)ल–क़द समिअ़ल्लाहु क़ौलल्लज़ी–न क़ालू इन्नल्ला–ह फ़क़ीरुंव्–व नह्नु अग़्नियाउ स–नक्तुबु मा क़ालू व क़त्लहुमुल्–अम्बिया–अ बिग़ैरि हक़्क़िंव् व नक़ूलु ज़ूक़ू अ़ज़ाबल्हरीक़(181)ज़ालि–क बिमा क़द्द–मत् ऐदीकुम् व अन्नल्ला–ह लै–स बि–ज़ल्लामिल्–लिल्अ़बीद(182)अल्लज़ी–न क़ालू इन्नल्ला–ह अ़हि–द इलैना अल्ला नुअ्मि–न लि–रसूलिन् हत्ता यअ्ति–यना बिक़ुरबानिन् तअ्कुलुहुन्नारु क़ुल् क़द् जा–अकुम् रुसुलुम्मिन् क़ब्ली बिल्बय्यिनाति व बिल्लज़ी क़ुल्तुम् फ़लि–म क़तल्तुमूहुम् इन् कुन्तुम् सादिक़ीन(183)फ़इन् कज़्ज़बू–क फ़–क़द् कुज़्ज़ि–ब रुसुलुम्मिन् क़ब्लि–क जाऊ बिल्–बय्यिनाति वज़्ज़ुबुरि वल्किताबिल्–मुनीर(184)कुल्लु नफ़्सिन् ज़ाइ–क़तुल्मौति

और जो बुख़्ल करते हैं (फ़ा356) उस चीज़ में जो अल्लाह ने उन्हें अपने फ़ज़्ल से दी, हरगिज़ उसे अपने लिए अच्छा न समझें बल्कि वह उनके लिए बुरा है। अंक़रीब वह जिस में बुख़्ल किया क़ियामत के दिन उनके गले का तौक़ होगा (फ़ा357) और अल्लाह ही वारिस है आसमानों और ज़मीन का (फ़ा358) और अल्लाह तुम्हारे कामों से ख़बरदार है।(180) (रुकूअ़ 9) बेशक अल्लाह ने सुना जिन्होंने कहा कि अल्लाह मोहताज है और हम ग़नी (फ़ा359) अब हम लिख रखेंगे उनका कहा (फ़ा360) और अम्बिया को उनका ना–हक़ शहीद करना (फ़ा361) और फ़रमायेंगे कि चखो आग का अ़ज़ाब।(181) यह बदला है उसका जो तुम्हारे हाथों ने आगे भेजा और अल्लाह बन्दों पर ज़ुल्म नहीं करता।(182) वह जो कहते हैं अल्लाह ने हमसे क़रार कर लिया है कि हम किसी रसूल पर ईमान न लायें जब तक ऐसी क़ुरबानी का हुक्म न लाए जिसे आग खाए (फ़ा362) तुम फ़रमा दो मुझ से पहले बहुत रसूल तुम्हारे पास खुली निशानियां और यह हुक्म लेकर आए जो तुम कहते हो फिर तुमने उन्हें क्यों शहीद किया अगर सच्चे हो।(183) (फ़ा363) तो ऐ महबूब अगर वह तुम्हारी तकज़ीब करते हैं तो तुम से अगले रसूलों की भी तकज़ीब की गई है जो साफ़ निशानियां (फ़ा364) और सहीफ़े और चमकती किताब (फ़ा365) लेकर आए थे।(184) हर जान को मौत चखनी है

(फ़ा356) बुख़्ल के माना में अक्सर उलमा इस तरफ़ गए हैं कि वाजिब का अदा न करना बुख़्ल है इसी लिए बुख़्ल पर शदीद वईदें आई हैं चुनांचे इस आयत में भी एक वईद आ रही है तिर्मिज़ी की हदीस में है बुख़्ल और बद ख़ुलक़ी यह दो ख़सलतें ईमानदार में जमा नहीं होतीं अक्सर मुफ़स्सिरीन ने फ़रमाया कि यहां बुख़्ल से ज़कात का न देना मुराद है। (फ़ा357) बुख़ारी शरीफ़ की हदीस में है कि जिसको अल्लाह ने माल दिया और उसने ज़कात अदा न की रोज़े क़ियामत वह माल सांप बन कर उसको तौक़ की तरह लिपटेगा और यह कह कर डसता जाएगा कि मैं तेरा माल हूं मैं तेरा ख़ज़ाना हूं। (फ़ा358) वही दायम बाक़ी है और सब मख़लूक़ फ़ानी उन सब की मिल्क बातिल होने वाली है तो निहायत नादानी है कि उस माले नापायदार पर बुख़्ल किया जाये और राहे ख़ुदा में न दिया जाए। (फ़ा359) यहूद ने आयत *मन् ज़ल्लज़ी युक्.रिज़ुल्ला–ह क़र्ज़न् हसना* सुन कर कहा था कि मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम का मअ़बूद हम से क़र्ज़ मांगता है तो हम ग़नी हुए वह फ़क़ीर हुआ इस पर यह आयते करीमा नाज़िल हुई। (फ़ा360) आमाल नामों में (फ़ा361) क़त्ले अम्बिया को इस मक़ूला पर मअ़तूफ़ करने से मालूम होता है कि यह दोनों जुर्म बहुत अ़ज़ीम तरीन हैं और क़बाहत में बराबर हैं और शाने अम्बिया में गुस्ताख़ी करने वाला शाने इलाही में बे अदब हो जाता है। (फ़ा362) शाने नुज़ूलः यहूद की एक जमाअ़त ने **(बक़िया सफ़हा 139 पर)**

وَإِنَّمَا تُوَفَّوْنَ أُجُورَكُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ۖ فَمَنْ زُحْزِحَ عَنِ النَّارِ وَأُدْخِلَ الْجَنَّةَ فَقَدْ فَازَ ۗ وَمَا الْحَيٰوةُ الدُّنْيَآ إِلَّا مَتَاعُ الْغُرُورِ ﴿١٨٥﴾ لَتُبْلَوُنَّ فِيٓ أَمْوٰلِكُمْ
وَأَنْفُسِكُمْ ۫ وَلَتَسْمَعُنَّ مِنَ الَّذِينَ أُوتُوا الْكِتٰبَ مِنْ قَبْلِكُمْ وَمِنَ الَّذِينَ أَشْرَكُوٓا أَذًى كَثِيرًا ۚ وَإِنْ تَصْبِرُوا وَتَتَّقُوا فَإِنَّ ذٰلِكَ مِنْ عَزْمِ الْأُمُورِ ﴿١٨٦﴾
وَإِذْ أَخَذَ اللّٰهُ مِيثَاقَ الَّذِينَ أُوتُوا الْكِتٰبَ لَتُبَيِّنُنَّهٗ لِلنَّاسِ وَلَا تَكْتُمُونَهٗ فَنَبَذُوهُ وَرَآءَ ظُهُورِهِمْ وَاشْتَرَوْا بِهٖ ثَمَنًا قَلِيلًا ۖ فَبِئْسَ
مَا يَشْتَرُونَ ﴿١٨٧﴾ لَا تَحْسَبَنَّ الَّذِينَ يَفْرَحُونَ بِمَآ أَتَوْا وَّيُحِبُّونَ أَنْ يُّحْمَدُوا بِمَا لَمْ يَفْعَلُوا فَلَا تَحْسَبَنَّهُمْ بِمَفَازَةٍ مِّنَ الْعَذَابِ ۚ وَلَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ﴿١٨٨﴾
وَلِلّٰهِ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ ۗ وَاللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ﴿١٨٩﴾ إِنَّ فِي خَلْقِ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ وَاخْتِلَافِ الَّيْلِ وَالنَّهَارِ لَآيٰتٍ لِّأُولِي الْأَلْبَابِ ﴿١٩٠﴾

व इन्नमा तुवफ़्फ़ौ–न उजू–रकुम् यौमल्क़िया–मति फ़–मन् ज़ुह्ज़ि–ह अनिन्नारि व उद्ख़ि–लल्जन्न–त फ़–क़द् फ़ा–ज़ व मल्ह़यातुद्दुन्या इल्ला मताअुल्गुरूर(185)लतुब्–लवुनन फ़ी अम्वा–लिकुम् व अन्फ़ुसिकुम् व ल–तस्मअुन्–न मिनल्लज़ी–न ऊतुल्–किता–ब मिन् क़ब्लिकुम् व मिनल्–लज़ी–न अश्रकू अ–ज़न् कसीरन् व इन् तस्बिरू व तत्तक़ू फ़–इन्–न ज़ालि–क मिन् अ़ज़्मिल्–उमूर(186)व इज़् अ–ख़–ज़ल्लाहु मीसा–क़ल्लज़ी–न ऊतुल् किता–ब लतु–बय्यिनुन्नहू लिन्नासि व ला तक्तुमू–नहू फ़–न–बज़ूहु व रा–अ ज़ुहूरिहिम् वश्तरौ बिही स़–म–नन् क़लीलन् फ़बिअ् –स मा यश्तरून(187)ला तह़्सबन्नल्लज़ी–न यफ़्रहू–न बिमा अतव्–व युह़िब्बू–न अंय्युह़्–मदू बिमा लम् यफ़्अलू फ़ला तह़्सबन्नहुम् बि–मफ़ा–ज़तिम् मिनल्–अ़ज़ाबि व लहुम् अ़ज़ाबुन् अलीम(188)व लिल्लाहि मुल्कुस्समावाति वल्अर्ज़ि वल्लाहु अ़ला कुल्लि शैइन् क़दीर(189)इन्–न फ़ी ख़ल्क़िस्–समावाति वल्–अर्ज़ि वख़्तिला–फ़िल्लैलि वन्नहारि ल–आयातिल्–लि उलिल् अल्बाब(190)

और तुम्हारे बदले तो क़ियामत ही को पूरे मिलेंगे, जो आग से बचा कर जन्नत में दाख़िल किया गया वह मुराद को पहुंचा, और दुनिया की ज़िन्दगी तो यही धोखे का माल है।(185) (फ़ा366) बेशक ज़रूर तुम्हारी आज़माईश होगी तुम्हारे माल और तुम्हारी जानों में (फ़ा367) और बेशक ज़रूर तुम अगले किताब वालों (फ़ा368) और मुशरिकों से बहुत कुछ बुरा सुनोगे और अगर तुम सब्र करो और बचते रहो (फ़ा369)तो यह बड़ी हिम्मत का काम है।(186)और याद करो जब अल्लाह ने अ़ह्द लिया उनसे जिन्हें किताब अ़ता हुई कि तुम ज़रूर उसे लोगों से बयान कर देना और न छुपाना (फ़ा370) तो उन्होंने उसे अपनी पीठ के पीछे फेंक दिया और उसके बदले ज़लील दाम हासिल किये (फ़ा371)तो कितनी बुरी ख़रीदारी है।(187) (फ़ा372)हरगिज़ न समझना उन्हें जो ख़ुश होते हैं अपने किये पर और चाहते हैं कि बे किये उनकी तारीफ़ हो (फ़ा373) ऐसों को हरगिज़ अ़ज़ाब से दूर न जानना और उनके लिए दर्दनाक अ़ज़ाब है।(188)और अल्लाह ही के लिए है आसमानों और ज़मीन की बादशाही(फ़ा374)और अल्लाह हर चीज़ पर क़ादिर है।(189)(रुकूअ़ 10)बेशक आसमानों और ज़मीन की पैदाइश और रात और दिन की बाहम बदलियों में निशानियां हैं (फ़ा375)अ़क़्लमन्दों के लिए।(190)(फ़ा376)

(फ़ा366) दुनिया की हक़ीक़त इस मुबारक जुमला ने बे हिजाब कर दी आदमी ज़िन्दगानी पर मफ़्तून होता है उसी को सरमाया समझता है और उस फ़ुरसत को बेकार ज़ाया कर देता है वक़्ते अख़ीर उसे मालूम होता है कि उसमें बक़ा न थी और उसके साथ दिल लगाना हयाते बाक़ी और उख़रवी ज़िन्दगी के लिए सख़्त मज़र्रत रसां हुआ हज़रत सईद बिन जुबैर ने फ़रमाया कि दुनिया तालिबे दुनिया के लिए मताअ़े गुरूर और धोखे का सरमाया है लेकिन आख़िरत के तलबगार के लिए दौलते बाक़ी के हुसूल का ज़रिया और नफ़ा देने वाला सरमाया है यह मज़मून इस आयत के ऊपर के जुमलों से मुस्तफ़ाद होता है (फ़ा367) हुक़ूक़ व फ़रायज़ और नक़सान और मसायब और अमराज़ व ख़तरात व क़त्ल व रंज व ग़म वग़ैरह से ताकि मोमिन व ग़ैरे मोमिन में इम्तियाज़ हो जाए मुसलमानों को यह ख़िताब इस लिए फ़रमाया गया कि आने वाले मसायब व शदायद पर उन्हें सब्र आसान हो जाए। (फ़ा368) यहूद व नसारा (फ़ा369) मअ़सीयत से। (फ़ा370) अल्लाह तआ़ला ने उलमाए तौरेत व इंजील पर वाजिब किया था कि इन दोनों किताबों में सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की नबुव्वत पर दलालत करने वाले जो दलायल हैं वह लोगों को ख़ूब अच्छी तरह मुशर्रह करके समझा दें और हरगिज़ न छुपायें। (फ़ा371) और रिश्वतें लेकर हुज़ूर सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के औसाफ़ को छुपाया जो तौरेत व इंजील में मज़कूर थे। (फ़ा372) इल्मे दीन का छुपाना ममनूअ़ है हदीस शरीफ़ में आया कि जिस शख़्स से कुछ दरियाफ़्त किया गया जिसको वह (बक़िया सफ़्हा 141 पर)

الَّذِيْنَ يَذْكُرُوْنَ اللّٰهَ قِيٰمًا وَّ قُعُوْدًا وَّعَلٰى جُنُوْبِهِمْ وَيَتَفَكَّرُوْنَ فِيْ خَلْقِ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۚ رَبَّنَا مَا خَلَقْتَ هٰذَا بَاطِلًا ۚ
سُبْحٰنَكَ فَقِنَا عَذَابَ النَّارِ ﴿١٩١﴾ رَبَّنَآ اِنَّكَ مَنْ تُدْخِلِ النَّارَ فَقَدْ اَخْزَيْتَهٗ ۭ وَمَا لِلظّٰلِمِيْنَ مِنْ اَنْصَارٍ ﴿١٩٢﴾ رَبَّنَآ اِنَّنَا سَمِعْنَا مُنَادِيًا يُّنَادِيْ
لِلْاِيْمَانِ اَنْ اٰمِنُوْا بِرَبِّكُمْ فَاٰمَنَّا ڰ رَبَّنَا فَاغْفِرْ لَنَا ذُنُوْبَنَا وَكَفِّرْ عَنَّا سَيِّاٰتِنَا وَتَوَفَّنَا مَعَ الْاَبْرَارِ ﴿١٩٣﴾ رَبَّنَا وَاٰتِنَا مَا وَعَدْتَّنَا عَلٰى رُسُلِكَ
وَلَا تُخْزِنَا يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ۭ اِنَّكَ لَا تُخْلِفُ الْمِيْعَادَ ﴿١٩٤﴾ فَاسْتَجَابَ لَهُمْ رَبُّهُمْ اَنِّىْ لَآ اُضِيْعُ عَمَلَ عَامِلٍ مِّنْكُمْ مِّنْ ذَكَرٍ اَوْ اُنْثٰى ۚ بَعْضُكُمْ مِّنْ
بَعْضٍ ۚ فَالَّذِيْنَ هَاجَرُوْا وَاُخْرِجُوْا مِنْ دِيَارِهِمْ وَاُوْذُوْا فِيْ سَبِيْلِيْ وَقٰتَلُوْا وَقُتِلُوْا لَاُكَفِّرَنَّ عَنْهُمْ سَيِّاٰتِهِمْ وَلَاُدْخِلَنَّهُمْ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ

अल्लज़ी–न यज़्कुरूनल्ला–ह क़ियामंव्–व क़ुअूदंव्–व अ़ला जुनूबिहिम् व य–त–फ़क्करू–न फ़ी ख़ल्क़िस्–समावाति वल्अर्ज़ि रब्बना मा ख़–लक़्–त हाज़ा बातिलन् सुब्हा–न–क फ़क़िना अ़ज़ाबन्नार(191)रब्बना इन्न–क मन् तुदख़िलिन्ना–र फ़–क़द् अख़्ज़ै–तहू व मा लिज़्ज़ालिमी–न मिन् अन्सार(192)रब्बना इन्नना समिअ्ना मुनादियंय्–युनादी लिल्–ईमानि अन् आमिनू बि–रब्बिकुम् फ़–आमन्ना रब्बना फ़ग़्फ़िर्–लना जुनू–बना व कफ़्फ़िर् अ़न्ना सय्यि–आतिना व तवफ़्फ़ना म–अ़ल्अब्रार(193)रब्बना व आतिना मा व अ़त्तना अ़ला रुसुलि–क व ला तुख़्ज़िना यौमल्–क़िया–मति इन्न–क ला तुख़्लिफ़ुल्–मीआ़द(194)फ़स्तजा–ब लहुम् रब्बुहुम् अन्नी ला उज़ीअु अ़–म–ल आ़मिलिम्–मिन्कुम् मिन् ज़–करिन् औ उन्सा बअ़्ज़ुकुम् मिम्बअ़्जिन् फ़ल्लज़ी–न हाजरू व उख़्रिजू मिन् दियारिहिम् व ऊज़ू फ़ी सबीली व क़ा–तलू व क़ुतिलू लउ–कफ़्फ़िरन्–न अ़न्हुम् सय्यिआतिहिम् व ल–उदख़िलन्न–हुम् जन्नातिन् तजरी मिन्

जो अल्लाह की याद करते हैं, खड़े और बैठे और करवट पर लेटे (फ़ा377) और आसमानों और ज़मीन की पैदाईश में ग़ौर करते हैं (फ़ा378) ऐ रब हमारे तूने यह बेकार न बनाया (फ़ा379) पाकी है तुझे तू हमें दोज़ख़ के अ़ज़ाब से बचा ले।(191) ऐ रब हमारे बेशक जिसे तू दोज़ख़ में ले जाए उसे ज़रूर तू ने रुसवाई दी और ज़ालिमों का कोई मददगार नहीं। (192) ऐ रब हमारे हमने एक मुनादी को सुना (फ़ा380) कि ईमान के लिए निदा फ़रमाता है कि अपने रब पर ईमान लाओ तो हम ईमान लाए, ऐ रब हमारे तू हमारे गुनाह बख़्श दे और हमारी बुराईयां मह्व फ़रमा दे और हमारी मौत अच्छों के साथ कर।(193) (फ़ा381) ऐ रब हमारे और हमें दे वह (फ़ा382) जिसका तूने हमसे वादा किया है अपने रसूलों की मअ़्रेफ़त और हमें क़ियामत के दिन रुसवा न कर, बेशक तू वादा ख़िलाफ़ नहीं करता।(194) तो उनकी दुआ़ सुन ली उनके रब ने कि मैं तुम में काम वाले की मेहनत अकारत नहीं करता मर्द हो या औ़रत, तुम आपस में एक हो (फ़ा383) तो वह जिन्होंने हिजरत की और अपने घरों से निकाले गए और मेरी राह में सताए गए और लड़े और मारे गए मैं ज़रूर उनके सब गुनाह उतार दूंगा और ज़रूर उन्हें बाग़ों में ले जाऊंगा जिनके नीचे

(फ़ा377) यानी तमाम अहवाल में मुस्लिम शरीफ़ में मरवी है कि सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम तमाम अह़्यान में अल्लाह का ज़िक्र फ़रमाते थे बन्दा का कोई हाल यादे इलाही से ख़ाली न होना चाहिये हदीस शरीफ़ में है जो बहिश्ती बाग़ों की ख़ोशा चीनी पसन्द करे उसे चाहिये कि ज़िक्रे इलाही की कसरत करे (फ़ा378) और उससे उनके सानेअ़् की क़ुदरत व हिकमत पर इस्तिदलाल करते हैं यह कहते हुए कि (फ़ा379) बल्कि अपनी मअ़्रेफ़त की दलील बनाया। (फ़ा380) इस मुनादी से मुराद या सय्यदे अम्बिया मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम हैं जिनकी शान में *दाअ़ियन् इलल्लाहि बि–इज़्निही* वारिद है या क़ुरआने करीम (फ़ा381) अम्बिया व सालिहीन के कि हम उनके फ़रमांबरदारों में दाख़िल किये जायें। (फ़ा382) वह फ़ज़्ल व रहमत (फ़ा383) और जज़ाए आमाल में औ़रत व मर्द के दर्मियान कोई फ़र्क़ नहीं। **शाने नुज़ूलः** उम्मुल मोमिनीन हज़रत उम्मे सलमा रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हा ने अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम मैं हिजरत में औ़रतों का कुछ ज़िक्र ही नहीं सुनती यानी मर्दों के फ़ज़ाइल तो मालूम हुए लेकिन यह भी मालूम हो कि औ़रतों को भी हिजरत का कुछ सवाब मिलेगा इस पर यह आयते करीमा नाज़िल हुई और उनकी तस्कीन फ़रमा दी गई कि सवाब अ़मल पर मुरत्तब है औ़रत का हो या मर्द का।

تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ ۚ ثَوَابًا مِّنْ عِنْدِ اللّٰهِ ؕ وَاللّٰهُ عِنْدَهٗ حُسْنُ الثَّوَابِ ﴿۱۹۵﴾ لَا يَغُرَّنَّكَ تَقَلُّبُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا فِى الْبِلَادِ ﴿۱۹۶﴾ مَتَاعٌ قَلِيْلٌ ۟ ثُمَّ مَاْوٰىهُمْ
جَهَنَّمُ ؕ وَبِئْسَ الْمِهَادُ ﴿۱۹۷﴾ لٰكِنِ الَّذِيْنَ اتَّقَوْا رَبَّهُمْ لَهُمْ جَنّٰتٌ تَجْرِىْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا نُزُلًا مِّنْ عِنْدِ اللّٰهِ ؕ وَمَا عِنْدَ اللّٰهِ خَيْرٌ
لِّلْاَبْرَارِ ﴿۱۹۸﴾ وَاِنَّ مِنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ لَمَنْ يُّؤْمِنُ بِاللّٰهِ وَمَاۤ اُنْزِلَ اِلَيْكُمْ وَمَاۤ اُنْزِلَ اِلَيْهِمْ خٰشِعِيْنَ لِلّٰهِ ۙ لَا يَشْتَرُوْنَ بِاٰيٰتِ اللّٰهِ ثَمَنًا قَلِيْلًا ؕ
اُولٰٓئِكَ لَهُمْ اَجْرُهُمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ سَرِيْعُ الْحِسَابِ ﴿۱۹۹﴾ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اصْبِرُوْا وَصَابِرُوْا وَرَابِطُوْا ۟ وَاتَّقُوا اللّٰهَ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ ﴿۲۰۰﴾

तह़्–तिहल्–अन्हारु स़वाबम् मिन् अ़िन्दिल्लाहि वल्लाहु अ़िन्दहू ह़ुस्नुस़्स़वाब(195)ला यग़ुर्रन्न–क तक़ल्–लुबुल्लज़ी–न क–फ़रू फ़िल् बिलाद(196)मताअ़ुन् क़लीलुन् सुम्–म मअ्वाहुम् जहन्न–मु व बिअ्सल्मिहाद(197)लाकिनिल्–लज़ी–नत्तक़ौ रब्बहुम् लहुम् जन्नातुन् तज्री मिन् तह़्तिहल् अन्हारु ख़ालिदी–न फ़ीहा नुज़ुलम् मिन् अ़िन्दिल्लाहि व मा अ़िन्दल्लाहि ख़ैरुल्–लिल्–अब्रार(198)व इन्–न मिन् अह्लिल्किताबि लमंय्युअ्मिनु बिल्लाहि व मा उन्ज़ि–ल इलैकुम् व मा उन्ज़ि–ल इलैहिम् ख़ाशिअ़ी–न लिल्लाहि ला यश्तरू–न बिआयातिल्लाहि स़–म–नन् क़लीलन् उलाइ–क लहुम् अज्रुहुम् अ़िन्द रब्बिहिम् इन्नल्ला–ह सरीअ़ुल्ह़िसाब(199)या अय्यु–हल्लज़ी–न आ–मनुस़्बिरू व स़ाबिरू व राबितू वत्तक़ुल्ला–ह ल–अ़ल्लकुम् तुफ़्लिह़ून(200)

नहरें रवां (फ़ा384) अल्लाह के पास का सवाब और अल्लाह ही के पास अच्छा सवाब है।(195) ऐ सुनने वाले काफ़िरों का शहरों में एहले गेहले (इतराते) फिरना हरगिज़ तुझे धोखा न दे।(196) (फ़ा385) थोड़ा बरतना उनका ठिकाना दोज़ख़ है और क्या ही बुरा बिछौना।(197) लेकिन वह जो अपने रब से डरते हैं उनके लिए जन्नतें हैं जिनके नीचे नहरें बहें, हमेशा उनमें रहें अल्लाह की तरफ़ की मेहमानी और जो अल्लाह के पास है वह नेकों के लिए सबसे भला।(198) (फ़ा386)और बेशक कुछ किताबी ऐसे हैं कि अल्लाह पर ईमान लाते हैं और उस पर जो तुम्हारी तरफ़ उतरा और जो उनकी तरफ़ उतरा (फ़ा387) उनके दिल अल्लाह के हुज़ूर झुके हुए (फ़ा388) अल्लाह की आयतों के बदले ज़लील दाम नहीं लेते (फ़ा389) यह वह हैं जिनका सवाब उनके रब के पास है और अल्लाह जल्द हिसाब करने वाला है।(199) ऐ ईमान वालो सब्र करो (फ़ा390) और सब्र में दुश्मनों से आगे रहो और सरहद पर इस्लामी मुल्क की निगहबानी करो और अल्लाह से डरते रहो इस उम्मीद पर कि कामयाब हो।(200)(रुकूअ. 11)

(फ़ा384) यह सब अल्लाह का फ़ज़्ल व करम है (फ़ा385) शाने नुज़ूलः मुसलमानों की एक जमाअ़त ने कहा कि कुफ़्फ़ार व मुशरिकीन अल्लाह के दुश्मन तो ऐश व आराम में हैं और हम तंगी व मशक़्क़त में इस पर यह आयत नाज़िल हुई और उन्हें बताया गया कि कुफ़्फ़ार का यह ऐश मताअ़े क़लील है और अंजाम ख़राब। (फ़ा386) बुख़ारी व मुस्लिम की हदीस में है कि हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अ़न्हु सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के दौलत सराए अक़दस में हाज़िर हुए तो उन्होंने देखा कि सुल्ताने कौनेन एक बोरीये पर आराम फ़रमा हैं चमड़ा का तकिया जिस में नारियल के रेशे भरे हुए हैं ज़ेरे सरे मुबारक है जिस्मे अक़दस में बोरीये के नक़्श हो गए हैं यह हाल देख कर हज़रत फ़ारूक़ रो पड़े सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने सबबे गिरया दरियाफ़्त किया तो अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह क़ैसर व किसरा तो ऐश व राहत में हों और आप रसूले ख़ुदा होकर इस हालत में, फ़रमाया क्या तुम्हें पसन्द नहीं कि उनके लिए दुनिया हो और हमारे लिए आख़िरत। (फ़ा387) शाने नुज़ूलः हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा ने फ़रमाया यह आयत नजाशी बादशाहे हबशा के बाब में नाज़िल हुई उनकी वफ़ात के दिन सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने अपने असहाब से फ़रमाया चलो और अपने भाई की नमाज़ पढ़ो जिसने दूसरे मुल्क में वफ़ात पाई है हुज़ूर बक़ीअ़ शरीफ़ में तशरीफ़ ले गए और ज़मीने हबशा आपके सामने की गई और नजाशी बादशाह का जनाज़ा पेशे नज़र हुआ इस पर आपने चार तकबीरों के साथ नमाज़ पढ़ी और उसके लिए इस्तिग़फ़ार फ़रमाया। सुबहानल्लाह क्या नज़र है क्या शान है सर ज़मीने हबशा हिजाज़ में सामने पेश कर दी जाती है मुनाफ़िक़ीन ने इस पर तअ़न किया और कहा देखो हबशा के नसरानी पर नमाज़ पढ़ते हैं जिसको आपने कभी देखा भी नहीं और वह आपके दीन पर भी न था इस पर अल्लाह तआ़ला ने यह आयत नाज़िल फ़रमाई (फ़ा388) इज्ज़ व इन्केसार और तवाज़ोअ़ व इख़्लास के साथ। (फ़ा389) जैसा कि यहूद के रुअसा लेते हैं। (फ़ा390) अपने दीन पर और उसको किसी शिद्दत व तकलीफ़ वग़ैरह की वजह से न छोड़ो सब्र के माना में हज़रत जुनैद रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने फ़रमाया कि सब्र नफ़्स को नागवार अम्र पर रोकना है बग़ैर जज़अ़ के बाज़ हुकमा ने कहा, सब्र की तीन क़िस्में हैं (1) तर्के शिकायत (2) क़बूले क़ज़ा (3) सिद्क़े रज़ा।

سُوْرَةُ النِّسَاءِ مَدَنِيَّةٌ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

يَاَيُّهَا النَّاسُ اتَّقُوْا رَبَّكُمُ الَّذِيْ خَلَقَكُمْ مِّنْ نَّفْسٍ وَّاحِدَةٍ وَّخَلَقَ مِنْهَا زَوْجَهَا وَبَثَّ مِنْهُمَا رِجَالًا كَثِيْرًا وَّنِسَآءً ۚ وَاتَّقُوا اللّٰهَ الَّذِيْ تَسَآءَلُوْنَ
بِهٖ وَالْاَرْحَامَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ عَلَيْكُمْ رَقِيْبًا ۝ وَاٰتُوا الْيَتٰمٰۤى اَمْوَالَهُمْ وَلَا تَتَبَدَّلُوا الْخَبِيْثَ بِالطَّيِّبِ ۪ وَلَا تَاْكُلُوْۤا اَمْوَالَهُمْ اِلٰۤى اَمْوَالِكُمْ ؕ
اِنَّهٗ كَانَ حُوْبًا كَبِيْرًا ۝ وَاِنْ خِفْتُمْ اَلَّا تُقْسِطُوْا فِي الْيَتٰمٰى فَانْكِحُوْا مَا طَابَ لَكُمْ مِّنَ النِّسَآءِ مَثْنٰى وَثُلٰثَ وَرُبٰعَ ۚ فَاِنْ خِفْتُمْ اَلَّا تَعْدِلُوْا فَوَاحِدَةً
اَوْ مَا مَلَكَتْ اَيْمَانُكُمْ ؕ ذٰلِكَ اَدْنٰۤى اَلَّا تَعُوْلُوْا ۝ وَاٰتُوا النِّسَآءَ صَدُقٰتِهِنَّ نِحْلَةً ؕ فَاِنْ طِبْنَ لَكُمْ عَنْ شَيْءٍ مِّنْهُ نَفْسًا فَكُلُوْهُ هَنِيْٓـًٔا مَّرِيْٓـًٔا ۝

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम

या अय्युहन्नासुत्–तक़ू रब्बकुमुल्–लज़ी ख़–ल–क़कुम् मिन् नफ़्सिंव्वाहि–दतिंव्–व ख़–ल–क़ मिन्हा ज़ौ–जहा व बस्–स मिन्हुमा रिजालन् कसीरंव्–व निसाअन् वत्तक़ुल्ला–हल्लज़ी तसा–अलू–न बिही वल्अरहा–म इन्नल्ला–ह का–न अलैकुम् रक़ीबा(1)व आतुल् यतामा अम्वा–लहुम् व ला त–त–बद्दलुल्–ख़बी–स बित्–तय्यिबि व ला तअ्कुलू अम्वा–लहुम् इला अम्वालिकुम् इन्नहू का–न हूबन् कबीरा(2)व इन् ख़िफ़्तुम् अल्ला तुक़्सितू फ़िल्यतामा फ़न्किहू मा ता–ब लकुम् मिनन्निसा–इ मस्ना व सुला–स व रुबा–अ फ़–इन् ख़िफ़्तुम् अल्ला तअ्–दिलू फ़वाहि़द–तन् औ मा म–ल–कत् ऐमानुकुम् ज़ालि–क अद्ना अल्ला तअूलू(3) व आतुन्निसा–अ सदुक़ातिहिन्–न निह्–ल–तन् फ़–इन् तिब्–न लकुम् अन् शैइम्–मिन्हु नफ़्सन् फ़–कुलूहु हनीअम्–मरी–आ(4)

अल्लाह के नाम से शुरू जो बहुत मेहरबान रहम वाला। (फ़1)
ऐ लोगो (फ़2) अपने रब से डरो जिसने तुम्हें एक जान से पैदा किया (फ़3) और उसी में से उसका जोड़ा बनाया और उन दोनों से बहुत से मर्द व औरत फैला दिये और अल्लाह से डरो जिसके नाम पर मांगते हो और रिश्तों का लिहाज़ रखो (फ़4) बेशक अल्लाह हर वक़्त तुम्हें देख रहा है।(1) और यतीमों को उनके माल दो (फ़5) और सुथरे (फ़6) के बदले गन्दा न लो (फ़7) और उनके माल अपने मालों में मिला कर न खा जाओ। बेशक यह बड़ा गुनाह है।(2) और अगर तुम्हें अन्देशा हो कि यतीम लड़कियों में इन्साफ़ न करोगे (फ़8) तो निकाह में लाओ जो औरतें तुम्हें ख़ुश आयें दो-दो और तीन-तीन और चार-चार (फ़9) फिर अगर डरो कि दो बीबियों को बराबर न रख सकोगे तो एक ही करो या कनीज़ें जिनके तुम मालिक हो, यह उससे ज़्यादा क़रीब है कि तुम से ज़ुल्म न हो।(3) (फ़10) और औरतों को उनके महर ख़ुशी से दो। (फ़11) फिर अगर वह अपने दिल की ख़ुशी से महर में से तुम्हें कुछ दे दें तो उसे खाओ रचता पचता (खुशगवार और मज़े से)(4) (फ़12)

(फ़1) सूरए निसा मदीना तय्यबा में नाज़िल हुई इस में 176 आयतें हैं और 3045 कलिमे और 16030 हुरूफ़ हैं। (फ़2) यह ख़िताब आम है तमाम बनी आदम को। (फ़3) अबुल बशर हज़रत आदम से जिनको बग़ैर माँ बाप के मिट्टी से पैदा किया था इंसान की इब्तेदाए पैदाईश का बयान करके कुदरते इलाहिया की अज़मत का बयान फ़रमाया गया अगरचे दुनिया के बे दीन बद अक़्ली व ना-फ़हमी से उसका मज़हका उड़ाते हैं लेकिन असहाबे फ़हम व ख़िरद जानते हैं कि यह मज़मून ऐसी ज़बरदस्त बुरहान से साबित है जिसका इंकार मुहाल है मर्दुम शुमारी का हिसाब पता देता है कि आज से सौ बरस क़ब्ल दुनिया में इंसानों की तादाद आज से बहुत कम थी और उससे सौ बरस पहले और भी कम तो इस तरह जानिबे माज़ी में चलते चलते इस कमी की हद एक ज़ात क़रार पाएगी या यूं कहिये कि क़बायल की कसीर तादादें एक शख़्स की तरफ़ मुन्तहा हो जाती हैं मसलन सय्यद दुनिया में करोड़ों पाए जायेंगे मगर जानिबे माज़ी में उनकी निहायत सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की एक ज़ात पर होगी और बनी इसराईल कितने भी कसीर हों मगर इस तमाम कसरत का मरजअ हज़रत याक़ूब अलैहिस्सलाम की एक ज़ात होगी इसी तरह और ऊपर को चलना शुरू करें तो इंसान के तमाम शुऊब व क़बायल की इन्तेहा एक ज़ात पर होगी उसका नाम कुतुबे इलाहिया में आदम अलैहिस्सलाम है और मुमकिन नहीं है कि वह एक शख़्स तवालुद व तनासुल के मामूली तरीक़ा से पैदा हो सके अगर उसके लिए बाप फ़र्ज़ भी किया जाए तो मां कहां से आए लिहाज़ा ज़रूरी है कि उसकी पैदाईश बग़ैर मां बाप के हो और जब बग़ैर मां बाप के पैदा हुआ तो बिलयक़ीन उन्हीं अनासिर **(बक़िया सफ़हा 142 पर)**

وَلَا تُؤْتُوا السُّفَهَاءَ أَمْوَالَكُمُ الَّتِي جَعَلَ اللَّهُ لَكُمْ قِيَامًا وَارْزُقُوهُمْ فِيهَا وَاكْسُوهُمْ وَقُولُوا لَهُمْ قَوْلًا مَّعْرُوفًا ۝ وَابْتَلُوا الْيَتَامَىٰ حَتَّىٰ
إِذَا بَلَغُوا النِّكَاحَ فَإِنْ آنَسْتُم مِّنْهُمْ رُشْدًا فَادْفَعُوا إِلَيْهِمْ أَمْوَالَهُمْ ۖ وَلَا تَأْكُلُوهَا إِسْرَافًا وَبِدَارًا أَن يَكْبَرُوا ۚ وَمَن كَانَ غَنِيًّا فَلْيَسْتَعْفِفْ
وَمَن كَانَ فَقِيرًا فَلْيَأْكُلْ بِالْمَعْرُوفِ ۚ فَإِذَا دَفَعْتُمْ إِلَيْهِمْ أَمْوَالَهُمْ فَأَشْهِدُوا عَلَيْهِمْ ۚ وَكَفَىٰ بِاللَّهِ حَسِيبًا ۝ لِّلرِّجَالِ نَصِيبٌ مِّمَّا
تَرَكَ الْوَالِدَانِ وَالْأَقْرَبُونَ وَلِلنِّسَاءِ نَصِيبٌ مِّمَّا تَرَكَ الْوَالِدَانِ وَالْأَقْرَبُونَ مِمَّا قَلَّ مِنْهُ أَوْ كَثُرَ ۚ نَصِيبًا مَّفْرُوضًا ۝ وَإِذَا حَضَرَ
الْقِسْمَةَ أُولُو الْقُرْبَىٰ وَالْيَتَامَىٰ وَالْمَسَاكِينُ فَارْزُقُوهُم مِّنْهُ وَقُولُوا لَهُمْ قَوْلًا مَّعْرُوفًا ۝ وَلْيَخْشَ الَّذِينَ لَوْ تَرَكُوا مِنْ خَلْفِهِمْ ذُرِّيَّةً ضِعَافًا

व ला तूअ्तुस्सु–फ़हा–अ अम्वा–लकु–मुल्लती ज–अ–लल्लाहु लकुम् किया–मंव्–वर्ज़ुकू. हुम् फ़ीहा वक्सूहुम् व कूलू लहुम् कौलम्मअ्–रूफ़ा(5)वब्तलुल्–यतामा हत्ता इज़ा ब–लग़ुन्निका–ह फ़–इन् आनस्तुम् मिन्हुम् रुश्दन् फ़द्–फ़अ़ू इलैहिम् अम्वा–लहुम् व ला तअ्कुलूहा इस्राफ़ंव्–व बिदारन् अंय्यक्बरू व मन् का–न ग़निय्यन् फ़ल्यस्तअ्फ़िफ़् व मन् का–न फ़क़ीरन् फ़ल्यअ्कुल् बिल्मअ्–रूफ़ि फ़–इज़ा द–फ़अ्–तुम् इलैहिम् अम्वा–लहुम् फ़–अश्हिदू अ़लैहिम् व कफ़ा बिल्लाहि हसीबा(6)लिर्रिजालि नसीबुम् मिम्मा त–र–कल्–वालिदानि वल्अक़्रबू–न व लिन्निसा–इ नसीबुम्–मिम्मा त–र–कल्वालिदानि वल्अक़्रबू–न मिम्मा क़ल्–ल मिन्हु औ कसु–र नसीबम् मफ़्रूज़ा(7) व इज़ा ह–ज़–रल्क़िस्म–त उलुल्क़ुर्बा वल्–यतामा वल्मसा–कीनु फ़र्ज़ुक़ूहुम् मिन्हु व कूलू लहुम् कौलम् मअ.रूफ़ा(8)वल्यख़्श–ल्लज़ी–न लौ त–रकू मिन् ख़ल्फ़िहिम् ज़ुर्रिय्य–तन् ज़िआफ़न्

और बे अ़क़्लों को (फ़ा13) उनके माल न दो जो तुम्हारे पास हैं जिनको अल्लाह ने तुम्हारी बसर औक़ात किया है और उन्हें उसमें से खिलाओ और पहनाओ उनसे अच्छी बात कहो।(5) (फ़ा14) और यतीमों को आज़माते रहो (फ़ा15) यहां तक कि जब वह निकाह के क़ाबिल हों तो अगर तुम उनकी समझ ठीक देखो तो उनके माल उन्हें सुपुर्द कर दो, और उन्हें न खाओ हद से बढ़ कर और इस जल्दी में कि कहीं बड़े न हो जायें और जिसे हाजत न हो वह बचता रहे (फ़ा16) और जो हाजतमन्द हो वह बक़द्रे मुनासिब खाए, फिर जब तुम उनके माल उन्हें सुपुर्द करो तो उन पर गवाह कर लो और अल्लाह काफ़ी है हिसाब लेने को।(6) मर्दों के लिए हिस्सा है उसमें से जो छोड़ गए माँ बाप और क़राबत वाले और औरतों के लिए हिस्सा है उसमें से जो छोड़ गए माँ बाप और क़राबत वाले तर्का थोड़ा हो या बहुत हिस्सा है अन्दाज़ा बांधा हुआ।(7) (फ़ा17) फिर बांटते वक़्त अगर रिश्तादार और यतीम और मिस्कीन (फ़ा18) आ जायें तो उसमें से उन्हें भी कुछ दो (फ़ा19) और उनसे अच्छी बात कहो।(8) (फ़ा20) और डरें (फ़ा21) वह लोग अगर अपने बाद नातवां औलाद छोड़ते तो उनका

(फ़ा13) जो इतनी समझ नहीं रखते कि माल का मसरफ़ पहचानें उसको बे महल ख़र्च करते हैं और अगर उन पर छोड़ दिया जाए तो वह जल्द ज़ाया कर देंगे। (फ़ा14) जिस से उनके दिल को तसल्ली हो और वह परेशान न हों मसलन यह कि माल तुम्हारा है और तुम होशियार हो जाओगे तो तुम्हें सुपुर्द किया जाएगा। (फ़ा15) कि उनमें होशियारी और मुआ़मला फ़हमी पैदा हुई या नहीं। (फ़ा16) यतीम का माल खाने से (फ़ा17) ज़मानए जाहिलियत में औरतों और बच्चों को वरसा न देते थे इस आयत में इस रस्म को बातिल किया गया। (फ़ा18) अजनबी जिन में से कोई मय्यत का वारिस न हो। (फ़ा19) क़ब्ल तक़सीम और यह देना मुस्तहब है। (फ़ा20) इसमें उज़्रे जमील वादए हसना और दुआए ख़ैर सब दाख़िल हैं इस आयत में मय्यत के तर्का से ग़ैर वारिस रिश्तादारों और यतीमों और मिस्कीनों को कुछ बतौरे सदक़ा देने और क़ौले मअ.रूफ़ कहने का हुक्म दिया ज़मानए सहाबा में इस पर अ़मल था मुहम्मद बिन सीरीन से मरवी है कि उनके वालिद ने तक़सीमे मीरास के वक़्त एक बकरी ज़बह कराके खाना पकाया और रिश्तादारों और यतीमों और मिस्कीनों को खिलाया और यह आयत पढ़ी इब्ने सीरीन ने इसी मज़मून की उ़बैदा सलमानी से भी रिवायत की है इसमें यह भी है कि कहा कि अगर यह आयत न आई होती तो यह सदक़ा मैं अपने माल से करता। तीजा जिसको सोयम कहते हैं और मुसलमानों में मामूल है वह भी इसी आयत का इत्तेबाअ. है कि इसमें रिश्तादारों यतीमों व मिस्कीनों पर तसद्दुक़ होता है और कलिमा का ख़त्म और क़ुरआने पाक की तिलावत और दुआ क़ौले मअ.रूफ़ है इसमें बाज़ लोगों को बेजा इसरार हो गया है जो बुज़ुर्गों के इस अ़मल का माख़ज़ तो तलाश न कर सके बावजूदे कि इतना साफ़ क़ुरआन पाक में मौजूद था लेकिन उन्होंने अपनी राय को दीन में दख़ल दिया और अ़मले ख़ैर को रोकने पर मुसिर हो गए। अल्लाह हिदायत करे। (फ़ा21) वसी और यतीमों के वली और वह लोग जो क़रीबे मौत मरने वाले के पास मौजूद हों

خَافُوا عَلَيْهِمْ فَلْيَتَّقُوا اللَّهَ وَلْيَقُولُوا قَوْلًا سَدِيدًا ۝ إِنَّ الَّذِينَ يَأْكُلُونَ أَمْوَالَ الْيَتَامَىٰ ظُلْمًا إِنَّمَا يَأْكُلُونَ فِي بُطُونِهِمْ نَارًا ۖ وَسَيَصْلَوْنَ سَعِيرًا ۝

يُوصِيكُمُ اللَّهُ فِي أَوْلَادِكُمْ ۖ لِلذَّكَرِ مِثْلُ حَظِّ الْأُنثَيَيْنِ ۚ فَإِن كُنَّ نِسَاءً فَوْقَ اثْنَتَيْنِ فَلَهُنَّ ثُلُثَا مَا تَرَكَ ۖ وَإِن كَانَتْ وَاحِدَةً فَلَهَا النِّصْفُ ۚ

وَلِأَبَوَيْهِ لِكُلِّ وَاحِدٍ مِّنْهُمَا السُّدُسُ مِمَّا تَرَكَ إِن كَانَ لَهُ وَلَدٌ ۚ فَإِن لَّمْ يَكُن لَّهُ وَلَدٌ وَوَرِثَهُ أَبَوَاهُ فَلِأُمِّهِ الثُّلُثُ ۚ فَإِن كَانَ لَهُ إِخْوَةٌ فَلِأُمِّهِ

السُّدُسُ ۚ مِن بَعْدِ وَصِيَّةٍ يُوصِي بِهَا أَوْ دَيْنٍ ۗ آبَاؤُكُمْ وَأَبْنَاؤُكُمْ لَا تَدْرُونَ أَيُّهُمْ أَقْرَبُ لَكُمْ نَفْعًا ۚ فَرِيضَةً مِّنَ اللَّهِ ۗ إِنَّ اللَّهَ كَانَ عَلِيمًا

حَكِيمًا ۝ وَلَكُمْ نِصْفُ مَا تَرَكَ أَزْوَاجُكُمْ إِن لَّمْ يَكُن لَّهُنَّ وَلَدٌ ۚ فَإِن كَانَ لَهُنَّ وَلَدٌ فَلَكُمُ الرُّبُعُ مِمَّا تَرَكْنَ ۚ مِن بَعْدِ وَصِيَّةٍ يُوصِينَ بِهَا

ख़ाफ़ू अ़लैहिम् फ़ल्यत्–तक़ुल्ला–ह वल्–यक़ूलू क़ौलन् सदीदा(9)इन्नल्लज़ी–न यअ्कुलू–न अम्वा–लल्–यतामा ज़ुल्मन् इन्नमा यअ्कुलू–न फ़ी बुतूनिहिम् नारन् व स–यस्लौ–न सअ़ीरा (10)यूसी–कुमुल्लाहु फ़ी औलादिकुम् लिज़्–ज़–करि मिस्लु हज़्ज़िल् उन्सययनि फ़–इन् कुन्–न निसाअन् फ़ौक़स्–नतैनि फ़–लहुन्–न सुलुसा मा त–र–क व इन् कानत् वाहि़–द–तन् फ़–ल–हन्निस्फ़ु व लि–अ–बवैहि लि–कुल्लि वाहि़दिम्–मिन्हु–मस्सुदुसु मिम्मा त–र–क इन् का–न लहू व–लदुन् फ़–इल्लम् यकुल्लहू व–लदुंव् व वरि–सहू अ–बवाहु फ़–लिउम्मिहिस्सुलुसु फ़इन् का–न लहू इख़्वतुन् फ़लि उम्मिहिस्सुदुसु मिम्बअ्–दि वसिय्यतिंय्यूसी बिहा औदैनिन् आबाउकुम् व अब्नाउकुम् ला तदरू–न अय्युहुम् अक़्रबु लकुम् नफ़्अ़न् फ़री–ज–तम् मिनल्लाहि इन्नल्ला–ह का–न अ़लीमन् ह़कीमा(11)व लकुम् निस्फ़ु मा त–र–क अज़्वाजुकुम् इल्लम् यकुल्लहुन्–न व–लदुन् फ़–इन् का–न लहुन्–न व–लदुन् फ़–लकुमुर्रुबुअु मिम्मा त–रक्न मिम्बअ्–दि वसिय्यतिंय्यूसी–न बिहा

कैसा उन्हें ख़तरा होता, तो चाहिये कि अल्लाह से डरें (फ़ा22) और सीधी बात करें।(9)(फ़ा23) वह जो यतीमों का माल नाहक़ खाते हैं वह तो अपने पेट में निरी आग भरते हैं (फ़ा24) और कोई दम जाता है कि भड़कते धड़े (आतिशकदे) में जायेंगे।(10) (रुकूअ़ 12) अल्लाह तुम्हें हुक्म देता है (फ़ा25) तुम्हारी औलाद के बारे में (फ़ा26) बेटे का हिस्सा दो बेटियों बराबर (फ़ा27) फिर अगर निरी लड़कियां हों अगरचे दो से ऊपर (फ़ा28) तो उनको तर्का की दो-तिहाई और अगर एक लड़की हो तो उसका आधा (फ़ा29) और मय्यत के मां बाप को हर एक को उसके तर्का से छटा अगर मय्यत के औलाद हो (फ़ा30) फिर अगर उसकी औलाद न हो और मां-बाप छोड़े (फ़ा31) तो मां का तिहाई फिर अगर उसके कई बहन भाई हों (फ़ा32) तो मां का छटा (फ़ा33) बाद उस वसीयत के जो कर गया और दैन के(फ़ा34)तुम्हारे बाप और तुम्हारे बेटे तुम क्या जानो कि उनमें कौन तुम्हारे ज़्यादा काम आएगा (फ़ा35) यह हिस्सा बांधा हुआ है अल्लाह की तरफ़ से बेशक अल्लाह इल्म वाला हिकमत वाला है।(11) और तुम्हारी बीबियां जो छोड़ जायें उसमें से तुम्हें आधा है अगर उनकी औलाद न हो। फिर अगर उनकी औलाद हो तो उनके तर्का में से तुम्हें चौथाई है जो वसीयत वह कर गईं और

(फ़ा22) और मरने वाले की ज़ुर्रियत के साथ ख़िलाफ़े शफ़क़त कोई कार्रवाई न करें जिससे उसकी औलाद परेशान हो (फ़ा23) मरीज़ के पास उसकी मौत के क़रीब मौजूद होने वालों की सीधी बात तो यह है कि उसे सदक़ा व वसीयत में यह राय दें कि वह इतने माल से करे जिससे उसकी औलाद तंगदस्त नादार न रह जाए और वसी व वली की सीधी बात यह है कि वह मरने वाले की ज़ुर्रियत से हुस्ने ख़ुल्क़ के साथ कलाम करें जैसा अपनी औलाद के साथ करते हैं (फ़ा24) यानी यतीमों का माल नाहक़ खाना गोया आग खाना है क्योंकि वह सबब है अ़ज़ाब का। हदीस शरीफ़ में है रोज़े क़ियामत यतीमों का माल खाने वाले इस तरह उठाए जायेंगे कि उनकी क़ब्रों से और उनके मुंह से और उनके कानों से धुआं निकलता होगा तो लोग पहचानेंगे कि यह यतीम का माल खाने वाला है। (फ़ा25) वरसा के मुतअ़ल्लिक़ (फ़ा26) अगर मय्यत ने बेटे बेटियां दोनों छोड़ी हों तो। (फ़ा27) यानी दुख़्तर का हिस्सा पिसर से आधा है और अगर मरने वाले ने सिर्फ़ लड़के छोड़े हों तो कुल माल उनका। (फ़ा28) या दो (फ़ा29) इससे मालूम हुआ कि अगर अकेला लड़का वारिस रहा हो तो कुल माल उसका होगा क्योंकि ऊपर बेटे का हिस्सा बेटियों से दूना बताया गया है तो जब अकेली लड़की का निस्फ़ हुआ तो अकेले लड़के का उससे दूना हुआ और वह कुल है। (फ़ा30) ख़्वाह लड़का हो या लड़की कि उन में से हर एक को औलाद कहा जाता है। (फ़ा31) यानी सिर्फ़ **(बक़िया सफ़हा 140 पर)**

اَوْ دَيْنٍ ؕ وَلَهُنَّ الرُّبُعُ مِمَّا تَرَكْتُمْ اِنْ لَّمْ يَكُنْ لَّكُمْ وَلَدٌ ۚ فَاِنْ كَانَ لَكُمْ وَلَدٌ فَلَهُنَّ الثُّمُنُ مِمَّا تَرَكْتُمْ مِّنْۢ بَعْدِ وَصِيَّةٍ تُوْصُوْنَ بِهَاۤ اَوْ دَيْنٍ ؕ
وَاِنْ كَانَ رَجُلٌ يُّوْرَثُ كَلٰلَةً اَوِ امْرَاَةٌ وَّلَهٗۤ اَخٌ اَوْ اُخْتٌ فَلِكُلِّ وَاحِدٍ مِّنْهُمَا السُّدُسُ ۚ فَاِنْ كَانُوْۤا اَكْثَرَ مِنْ ذٰلِكَ فَهُمْ شُرَكَآءُ فِى الثُّلُثِ مِنْۢ بَعْدِ
وَصِيَّةٍ يُّوْصٰى بِهَاۤ اَوْ دَيْنٍ ۙ غَيْرَ مُضَآرٍّ ۚ وَصِيَّةً مِّنَ اللّٰهِ ؕ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ حَلِيْمٌ ﴿۱۲﴾ تِلْكَ حُدُوْدُ اللّٰهِ ؕ وَمَنْ يُّطِعِ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ يُدْخِلْهُ جَنّٰتٍ تَجْرِىْ مِنْ
تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ؕ وَذٰلِكَ الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ ﴿۱۳﴾ وَمَنْ يَّعْصِ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ وَيَتَعَدَّ حُدُوْدَهٗ يُدْخِلْهُ نَارًا خَالِدًا فِيْهَا ۪ وَلَهٗ عَذَابٌ مُّهِيْنٌ ﴿۱۴﴾
وَالّٰتِىْ يَاْتِيْنَ الْفَاحِشَةَ مِنْ نِّسَآئِكُمْ فَاسْتَشْهِدُوْا عَلَيْهِنَّ اَرْبَعَةً مِّنْكُمْ ۚ فَاِنْ شَهِدُوْا فَاَمْسِكُوْهُنَّ فِى الْبُيُوْتِ حَتّٰى يَتَوَفّٰهُنَّ الْمَوْتُ

औदैनिन् व लहुन्नर्रुबुअु मिम्मा तरक्तुम् इल्लम् यकुल्लकुम् व–लदुन् फ़–इन् का–न लकुम् व–लदुन् फ़–लहुन्नस्सुमुनु मिम्मा तरक्तुम् मिम्बअ़्दि वसिय्यतिन् तूसू–न बिहा औदैनिन् व इन् का–न रजुलुंय्–यू–रसु कला–ल–तन् अविम्र–अतुंव्–व लहू अख़ुन् औ उख़्तुन् फ़–लिकुल्लि वाहि़दिम् मिन्हुमस्सुदुसु फ़–इन् कानू अक्स़–र मिन् ज़ालि–क फ़हुम् शु–रकाउ फ़िस्सुलुसि मिम्बअ़्दि वसिय्यतिंय्यूसा बिहा औदैनि ग़ै–र मुज़ार्‌रिन् वसिय्यतम्–मिनल्लाहि वल्लाहु अ़लीमुन् ह़लीम(12)तिल्क हुदूदुल्लाहि व मंय्युति़अ़िल्ला–ह व रसू–लहू युद्‌ख़िल्हु जन्नातिन् तज्‌री मिन् तह़्ति–हल् अन्हारु ख़ालिदी–न फ़ीहा व ज़ालिकल्–फ़ौज़ुल् अ़ज़ीम(13)व मंय्यअ़्सिल्ला–ह व रसू–लहू व य–त–अ़द्–द हुदू–दहु युद्‌ख़िल्हु नारन् ख़ालिदन् फ़ीहा व लहू अ़ज़ाबुम् मुहीन(14) वल्लाती यअ्‌तीनल् फ़ाहि–श–त मिन् निसाइकुम् फ़स्तश्‌हिदू अ़लैहिन्–न अर्ब–अ़–तम्–मिन्कुम् फ़–इन् शहिदू फ़–अम्सिकू हुन्–न फ़िल्बुयूति ह़त्ता य–त–वफ़्फ़ाहुन्नल्मौतु

दैन निकाल कर और तुम्हारे तर्का में औ़रतों का चौथाई है (फ़ा36) अगर तुम्हारे औलाद न हो, फिर अगर तुम्हारे औलाद हो तो उनका तुम्हारे तर्का में से आठवां (फ़ा37) जो वसीयत तुम कर जाओ और दैन निकाल कर और अगर किसी ऐसे मर्द या औ़रत का तर्का बटता हो जिसने मां, बाप, औलाद कुछ न छोड़े और मां की तरफ़ से उसका भाई या बहन है तो उनमें से हर एक को छटा। फिर अगर वह बहन भाई एक से ज़्यादा हों तो सब तिहाई में शरीक हैं।(फ़ा38)मय्यत की वसीयत और दैन निकाल कर जिसमें उसने नक़्सान न पहुंचाया हो(फ़ा39)यह अल्लाह का इरशाद है और अल्लाह इल्म वाला, हिल्म वाला है।(12)यह अल्लाह की हदें हैं और जो हुक्म माने अल्लाह और अल्लाह के रसूल का अल्लाह उसे बाग़ों में ले जाएगा जिनके नीचे नहरें रवां हमेशा उनमें रहेंगे और यही है बड़ी कामयाबी।(13)और जो अल्लाह और उसके रसूल की ना–फ़रमानी करे और उसकी कुल हदों से बढ़ जाए अल्लाह उसे आग में दाख़िल करेगा, जिसमें हमेशा रहेगा और उसके लिए ख़्वारी का अ़ज़ाब है।(14)(फ़ा40)(रुकूअ़ 13)और तुम्हारी औ़रतों में जो बदकारी करें उन पर ख़ास अपने में के (फ़ा41)चार मर्दों की गवाही लो फिर अगर वह गवाही दे दें तो उन औ़रतों को घर में बन्द रखो (फ़ा42)यहां तक कि उन्हें मौत उठाले

(फ़ा36) ख़्वाह एक बीबी हो या कई एक होगी तो वह अकेली चौथाई पाएगी कई होंगी तो सब उस चौथाई में बराबर की शरीक होंगी ख़्वाह बीबी एक हो या कई हों हिस्सा यही रहेगा। (फ़ा37) ख़्वाह बीबी एक हो या ज़्यादा (फ़ा38) क्योंकि वह मां के रिश्ता की बदौलत मुस्तहिक़ हुए और मां तिहाई से ज़्यादा नहीं पाती और इसी लिए उनमें मर्द का हिस्सा औ़रत से ज़्यादा नहीं है (फ़ा39) अपने वारिसों को तिहाई से ज़्यादा वसीयत कर के या किसी वारिस के हक़ में वसीयत करके **मसायलः फ़रायज़े** वारिस कई क़िस्म हैं असहाबे फ़रायज़- यह वह लोग हैं जिनके लिए हिस्से मुक़र्रर हैं मसलन बेटी एक हो तो आधे माल की मालिक ज़्यादा हों तो सब के लिए दो तिहाई, पोती और परपोती और उससे नीचे की हर पोती अगर मय्यत के औलाद न हो तो बेटी के हुक्म में है और अगर मय्यत ने एक बेटी छोड़ी हो तो यह उसके साथ छटा पाएगी और अगर मय्यत ने बेटा छोड़ा तो साक़ित हो जाएगी कुछ न पाएगी और अगर मय्यत ने दो बेटियां छोड़ीं तो भी पोती साक़ित हो गई लेकिन अगर उसके साथ या उसके नीचे दर्जे में कोई लड़का होगा तो वह उसको असबा बना देगा। सगी बहन मय्यत के बेटा या पोता न छोड़ने की सूरत में बेटियों के हुक्म में है। अ़ल्लाती बहनें जो बाप में शरीक हों और उनकी मायें अ़लाहिदा अ़लाहिदा हों वह हक़ीक़ी बहनों के न होने की सूरत में उनकी मिस्ल हैं और दोनों क़िस्म की बहनें यानी अ़ल्लाती व हक़ीक़ी मय्यत की बेटी या पोती के साथ असबा हो जाती हैं और बेटे और पोते और उसके मातहत के पोते और बाप के साथ साक़ित और इमाम **(बक़िया सफ़हा 143 पर)**

اَوْ يَجْعَلَ اللّٰهُ لَهُنَّ سَبِيْلًا ⑮ وَالَّذٰنِ يَاْتِيٰنِهَا مِنْكُمْ فَاٰذُوْهُمَا ۚ فَاِنْ تَابَا وَاَصْلَحَا فَاَعْرِضُوْا عَنْهُمَا ۗ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ تَوَّابًا رَّحِيْمًا ⑯

اِنَّمَا التَّوْبَةُ عَلَى اللّٰهِ لِلَّذِيْنَ يَعْمَلُوْنَ السُّوْٓءَ بِجَهَالَةٍ ثُمَّ يَتُوْبُوْنَ مِنْ قَرِيْبٍ فَاُولٰٓئِكَ يَتُوْبُ اللّٰهُ عَلَيْهِمْ ۗ وَكَانَ اللّٰهُ عَلِيْمًا حَكِيْمًا ⑰

وَلَيْسَتِ التَّوْبَةُ لِلَّذِيْنَ يَعْمَلُوْنَ السَّيِّاٰتِ ۚ حَتّٰٓى اِذَا حَضَرَ اَحَدَهُمُ الْمَوْتُ قَالَ اِنِّيْ تُبْتُ الْـٰٔنَ وَلَا الَّذِيْنَ يَمُوْتُوْنَ وَهُمْ كُفَّارٌ ۗ اُولٰٓئِكَ

اَعْتَدْنَا لَهُمْ عَذَابًا اَلِيْمًا ⑱ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا يَحِلُّ لَكُمْ اَنْ تَرِثُوا النِّسَآءَ كَرْهًا ۗ وَلَا تَعْضُلُوْهُنَّ لِتَذْهَبُوْا بِبَعْضِ مَآ

اٰتَيْتُمُوْهُنَّ اِلَّآ اَنْ يَّاْتِيْنَ بِفَاحِشَةٍ مُّبَيِّنَةٍ ۚ وَعَاشِرُوْهُنَّ بِالْمَعْرُوْفِ ۚ فَاِنْ كَرِهْتُمُوْهُنَّ فَعَسٰٓى اَنْ تَكْرَهُوْا شَيْـًٔا وَّيَجْعَلَ اللّٰهُ

औ यज्-अ़-लल्लाहु लहुन्-न सबीला(15)वल्लज़ानि यअ्तियानिहा मिन्कुम् फ़-आज़ूहुमा फ़-इन् ताबा व अस्लहा फ़-अअ्रिज़ू अ़न्हुमा इन्नल्ला-ह का-न तव्वाबर्-रहीमा(16) इन्नमत्तौ-बतु अ़-लल्लाहि लिल्लज़ी-न यअ्-मलू-नस्सू-अ बि-जहा-लतिन् सुम्-म यतूबू-न मिन् क़रीबिन् फ़-उलाइ-क यतू-बुल्लाहु अ़लैहिम् व कानल्लाहु अ़लीमन् हकीमा(17)व लै-सतित्तौ-बतु लिल्लज़ी-न यअ्-मलू-नस्सय्यिआति हत्ता इज़ा ह-ज़-र अ-ह-द-हुमुल्मौतु क़ा-ल इन्नी तुब्तुलआ-न व लल्लज़ी-न यमूतू-न व हुम् कुफ़्फ़ारुन् उलाइ-क अअ्तदना लहुम् अ़ज़ाबन् अलीमा(18)या अय्युहल्लज़ी-न आ-मनू ला यहिल्लु लकुम् अन् तरिसुन्निसा-अ कर्हन् व ला तअ्-ज़ुलू हुन्-न लि-तज़्हबू बि-बअ्ज़ि मा आतैतुमूहुन्-न इल्ला अंय्यअ्ती-न बि-फ़ाहि-शतिम् मुबय्यि-नतिन् व आ़शिरू हुन्-न बिल्मअ्-रूफ़ि फ़-इन् करिह्तुमूहुन्-न फ़-अ़सा अन् तक्रहू शैअंव्-व यज्-अ़-लल्लाहु

या अल्लाह उनकी कुछ राह निकाले।(15) (फ़ा43) और तुम में जो मर्द औ़रत ऐसा काम करें उनको ईज़ा दो (फ़ा44) फिर अगर वह तौबा कर लें और नेक हो जायें तो उनका पीछा छोड़ दो। बेशक अल्लाह बड़ा तौबा क़बूल करने वाला मेहरबान है।(16) (फ़ा45) वह तौबा जिसका क़बूल करना अल्लाह ने अपने फ़ज़्ल से लाज़िम कर लिया है वह उन्हीं की है जो नादानी से बुराई कर बैठें फिर थोड़ी ही देर में तौबा कर लें। (फ़ा46) ऐसों पर अल्लाह अपनी रहमत से रुजूअ़ करता है और अल्लाह इल्म व हिकमत वाला है।(17) और वह तौबा उनकी नहीं जो गुनाहों में लगे रहते हैं (फ़ा47) यहां तक कि जब उनमें किसी को मौत आए तो कहे अब मैंने तौबा की (फ़ा48) और न उनकी जो काफ़िर मरें, उनके लिए हमने दर्दनाक अ़ज़ाब तैयार कर रखा है।(18) (फ़ा49) ऐ ईमान वालो तुम्हें हलाल नहीं कि औ़रतों के वारिस बन जाओ ज़बरदस्ती।(फ़ा50) और औ़रतों को रोको नहीं इस नीयत से कि जो महर उनको दिया था उसमें से कुछ ले लो (फ़ा51) मगर उस सूरत में कि सरीह बेहयाई का काम करें (फ़ा52) और उन से अच्छा बरताव करो (फ़ा53) फिर अगर वह तुम्हें पसन्द न आयें (फ़ा54) तो क़रीब है कि कोई चीज़ तुम्हें ना-पसन्द हो और अल्लाह उस में

(फ़ा43) यानी हद मुक़र्रर फ़रमाए या तौबा और निकाह की तौफ़ीक़ दे जो मुफ़स्सिरीन इस आयत *अल्फ़ाहि-शतुन्* (बदकारी) से ज़िना मुराद लेते हैं वह कहते हैं कि हबस का हुक्म हुदूद नाज़िल होने से क़ब्ल था हुदूद के साथ मन्सूख़ किया गया (ख़ाज़िन व जलालैन व अहमदी) (फ़ा44) झिड़को घुड़को बुरा कहो शर्म दिलाओ जूतियां मारो (जलालैन व मदारिक व ख़ाज़िन वग़ैरह) (फ़ा45) हसन का क़ौल है कि ज़िना की सज़ा पहले ईज़ा मुक़र्रर की गई फिर हबस फिर कोड़े मारना या संगसार करना इब्ने बह्र का क़ौल है कि पहली आयत *वल्लाती याती-न* उन औ़रतों के बाब में है जो औ़रतों के साथ (बतरीक़े मसाहक़त) बदकारी करती हैं और दूसरी आयत *वल्लज़ानि लिवातत* करने वालों के हक़ में है और ज़ानी और ज़ानिया का हुक्म सूरह नूर में बयान फ़रमाया गया इस तक़दीर पर यह आयतें ग़ैर मन्सूख़ हैं और इनमें इमाम अबू हनीफ़ा रहमतुल्लाह अ़लैह के लिए दलील ज़ाहिर है इस पर जो वह फ़रमाते हैं कि लिवातत में तअ़ज़ीर है हद नहीं। (फ़ा46) ज़ुहाक का क़ौल है कि जो तौबा मौत से पहले हो वह क़रीब है। (फ़ा47) और तौबा में ताख़ीर करते जाते हैं। (फ़ा48) क़बूले तौबा का वादा जो ऊपर की आयत में गुज़रा वह ऐसे लोगों के लिए नहीं है अल्लाह मालिक है जो चाहे करे उनकी तौबा क़बूल करे या न करे बख़्शे या अ़ज़ाब फ़रमाए उसकी मर्ज़ी (अहमदी) (फ़ा49) इससे मालूम हुआ कि वक़्ते मौत काफ़िर की तौबा और उसका ईमान मक़बूल नहीं। (फ़ा50) **शाने नुज़ूलः** ज़मानए जाहिलियत के लोग माल की तरह अपने अक़ारिब की बीबियों के भी वारिस बन जाते थे फिर अगर चाहते तो बे महर उन्हें अपनी ज़ौजियत में रखते या किसी और के साथ शादी कर देते और ख़ुद **(बक़िया सफ़हा 141 पर)**

فِيْهِ خَيْرًا كَثِيْرًا ۝ وَاِنْ اَرَدْتُّمُ اسْتِبْدَالَ زَوْجٍ مَّكَانَ زَوْجٍ ۙ وَّاٰتَيْتُمْ اِحْدٰىهُنَّ قِنْطَارًا فَلَا تَاْخُذُوْا مِنْهُ شَيْـًٔا ؕ اَتَاْخُذُوْنَهٗ بُهْتَانًا وَّاِثْمًا مُّبِيْنًا ۝

وَكَيْفَ تَاْخُذُوْنَهٗ وَقَدْ اَفْضٰى بَعْضُكُمْ اِلٰى بَعْضٍ وَّاَخَذْنَ مِنْكُمْ مِّيْثَاقًا غَلِيْظًا ۝ وَلَا تَنْكِحُوْا مَا نَكَحَ اٰبَآؤُكُمْ مِّنَ النِّسَآءِ اِلَّا مَا قَدْ سَلَفَ ؕ

اِنَّهٗ كَانَ فَاحِشَةً وَّمَقْتًا ؕ وَسَآءَ سَبِيْلًا ۝ حُرِّمَتْ عَلَيْكُمْ اُمَّهٰتُكُمْ وَبَنٰتُكُمْ وَاَخَوٰتُكُمْ وَعَمّٰتُكُمْ وَخٰلٰتُكُمْ وَبَنٰتُ الْاَخِ وَبَنٰتُ الْاُخْتِ

وَاُمَّهٰتُكُمُ الّٰتِيْۤ اَرْضَعْنَكُمْ وَاَخَوٰتُكُمْ مِّنَ الرَّضَاعَةِ وَاُمَّهٰتُ نِسَآئِكُمْ وَرَبَآئِبُكُمُ الّٰتِيْ فِيْ حُجُوْرِكُمْ مِّنْ نِّسَآئِكُمُ الّٰتِيْ دَخَلْتُمْ بِهِنَّ ۫ فَاِنْ لَّمْ تَكُوْنُوْا

دَخَلْتُمْ بِهِنَّ فَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ ۫ وَحَلَآئِلُ اَبْنَآئِكُمُ الَّذِيْنَ مِنْ اَصْلَابِكُمْ ۙ وَاَنْ تَجْمَعُوْا بَيْنَ الْاُخْتَيْنِ اِلَّا مَا قَدْ سَلَفَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا ۝

फ़ीहि ख़ैरन् कसीरा(19)व इन् अरत्तुमुस्तिब्दा–ल ज़ौजिम्–मका–न ज़ौजिंव्–व आतैतुम् इह्दाहुन्–न क़िन्तारन् फ़ला तअ्ख़ुज़ू मिन्हु शैअन् अ–तअ्ख़ुज़ू–नहू बुह्–तानंव् व इस्मम्–मुबीना(20)व कै–फ़ तअ्ख़ुज़ू–नहू व क़द अफ़्ज़ा बअ्–ज़ुकुम् इला बअ्ज़िंव्–व अ–ख़ज्–न मिन्कुम् मीसाक़न् ग़लीज़ा(21)व ला तन्किहू मा न–क–ह आबाउकुम् मिनन्निसा–इ इल्ला मा क़द स–ल–फ़ इन्नहू का–न फ़ाहि–शतंव्–व मक़्तन् व सा–अ सबीला(22)हुर्रिमत् अ़लैकुम् उम्महातुकुम् व बनातुकुम् व अ–ख़वातुकुम् व अ़म्मातुकुम् व ख़ालातुकुम् व बना–तुल्अख़ि व बनातुल्उख़्ति व उम्म–हातु–कुमुल्लाती अर्ज़अ्–नकुम् व अ–ख़वातुकुम् मिनर्रज़ा–अ़ति व उम्महातु निसा–इकुम् व रबाइबुकु–मुल्लाती फ़ी हुजूरिकुम् मिन् निसाइ–कुमुल्लाती द–ख़ल्तुम् बिहिन्–न फ़–इल्लम् तकूनू दख़ल्तुम् बिहिन्–न फ़ला जुना–ह अ़लैकुम् व हला–इलु अब्नाइ–कुमुल्लज़ी–न मिन् अस्लाबिकुम् व अन् तज्मअू बैनल्–उख़्तैनि इल्ला मा क़द स–ल–फ़ इन्नल्ला–ह का–न ग़फ़ूर्रहीमा(23)

उस में बहुत भलाई रखे।(19) (फ़ा55) और अगर तुम एक बीबी के बदले दूसरी बदलना चाहो (फ़ा56) और उसे ढेरों माल दे चुके हो (फ़ा57) तो उसमें से कुछ वापस न लो (फ़ा58) क्या उसे वापस लोगे झूट बांध कर और खुले गुनाह से(20) (फ़ा59) और क्योंकर उसे वापस लोगे हालांकि तुम में एक दूसरे के सामने बे पर्दा हो लिया और वह तुम से गाढ़ा अ़हद ले चुकीं।(21) (फ़ा60) और बाप दादा की मन्कूहा से निकाह न करो (फ़ा61) मगर जो हो गुज़रा वह बेशक बेहयाई (फ़ा62) और ग़ज़ब का काम है और बहुत बुरी राह।(22) (फ़ा63) (रुकूअ़ 14) हराम हुईं तुम पर तुम्हारी मायें (फ़ा64) और बेटियां (फ़ा65) और बहनें और फूफियां और ख़ालायें और भतीजियां और भांजियां (फ़ा66) और तुम्हारी मायें जिन्होंने दूध पिलाया (फ़ा67) और दूध की बहनें और औ़रतों की मायें (फ़ा68) और उनकी बेटियां जो तुम्हारी गोद में हैं (फ़ा69) उन बीबियों से जिन से तुम सोहबत कर चुके हो, फिर अगर तुमने उनसे सोहबत न की हो तो उनकी बेटियों में हरज नहीं (फ़ा70) और तुम्हारी नस्ली बेटों की बीबियें (फ़ा71) और दो बहनें इकट्ठी करना (फ़ा72) मगर जो हो गुज़रा। बेशक अल्लाह बख़्शने वाला मेहरबान है।(23)

(फ़ा55) वलदे सालेह वग़ैरह (फ़ा56) यानी एक को तलाक़ देकर दूसरी से निकाह करना। (फ़ा57) इस आयत से गिरां महर मुक़र्रर करने के जवाज़ पर दलील लाई गई है। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने बर सरे मिम्बर फ़रमाया कि औ़रतों के महर गिरां न करो एक औ़रत ने यह आयत पढ़ कर कहा कि ऐ इब्ने ख़त्ताब अल्लाह हमें देता है और तुम मना करते हो इस पर अमीरुल मोमिनीन हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने फ़रमाया ऐ उमर तुझ से हर शख़्स ज़्यादा समझदार है जो चाहो मुक़र्रर करो सुबहानल्लाह ख़लीफ़ए रसूल के शाने इंसाफ़ और नफ़्स शरीफ़ की पाकी *र–ज़–क़नल्लाहु तआ़ला इत्तबा–अ़हू* आमीन (फ़ा58) क्योंकि जुदाई तुम्हारी तरफ़ से है। (फ़ा59) यह अहले जाहिलियत के उस फ़ेअ़्ल का रद है कि जब उन्हें कोई दूसरी औ़रत पसन्द आती तो वह अपनी बीबी पर तोहमत लगाते ताकि वह उससे परेशान होकर जो कुछ ले चुकी है वापस दे दे इस तरीक़ा को इस आयत में मना फ़रमाया और झूठ और गुनाह बताया। (फ़ा60) वह अ़हद अल्लाह तआ़ला का यह इरशाद है *फ़–इम्साकुन् बि–मअ़्रूफ़िन् तस्रीहुम् बि–एह्सानिन्* मसलाः यह आयत दलील है इस पर कि ख़िलवते सहीहा से महर मुअक्किद हो जाता है। (फ़ा61) जैसा कि ज़मानए जाहिलियत में रिवाज था कि अपनी मां के सिवा बाप के बाद उसकी दूसरी औ़रत को बेटा ब्याह लेता था (फ़ा62) क्योंकि बाप की बीबी ब–मन्ज़िला मां के है कहा गया है निकाह से वती मुराद है इससे साबित होता है कि बाप की मौतूआ़ यानी जिससे उसने सोहबत की हो ख़्वाह निकाह करके या **(बक़िया सफ़्हा 143 पर)**

(बकि़या सफ़हा 112 का) यहूद कहने लगे कि यह हज़रत नूह पर भी हराम थीं हज़रत इब्राहीम पर भी हराम थीं और हम तक हराम ही चली आईं इस पर अल्लाह तबारक व तआ़ला ने यह आयत नाज़िल फ़रमाई और बताया गया कि यहूद का यह दावा ग़लत है बल्कि यह चीज़ें हज़रत इब्राहीम व इस्माईल व इस्हाक़ व याकू़ब पर हलाल थीं हज़रत याकू़ब ने किसी सबब से उनको अपने ऊपर हराम फ़रमाया और यह हुरमत उनकी औलाद में बाक़ी रही यहूद ने इसका इंकार किया तो हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि तौरेत इस मज़मून पर नातिक़ है अगर तुम्हें इंकार है तो तौरेत लाओ इस पर यहूद को अपनी फ़ज़ीहत व रुसवाई का ख़ौफ़ हुआ और वह तौरेत न ला सके, उनका किज़्ब ज़ाहिर हो गया और उन्हें शर्मिन्दगी उठानी पड़ी **फ़ायदाः** इस से साबित हुआ कि पिछली शरीअ़तों में अहकाम मन्सूख़ होते थे इसमें यहूद का रद है जो नस्ख़ के क़ायल न थे **फ़ायदाः** हुज़ूर सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम उम्मी थे बावजूद इसके यहूद को तौरेत से इल्ज़ाम देना और तौरेत के मज़ामीन से इस्तिदलाल फ़रमाना आप का मोअ़जेज़ा और नबुव्वत की दलील है और इससे आपके वहबी और ग़ैबी उलूम का पता चलता है। (फ़ा174) और कहे कि मिल्लते इब्राहीमी में ऊंटों के गोश्त और दूध अल्लाह तआ़ला ने हराम किये थे। (फ़ा175) कि वही इस्लाम और दीने मुहम्मदी है। (फ़ा176) **शाने नुज़ूलः** यहूद ने मुसलमानों से कहा था कि बैतुल मक़दिस हमारा क़िबला है कअ़बा से अफ़ज़ल और उससे पहला है अम्बिया का मक़ामे हिजरत व क़िबलए इबादत है मुसलमानों ने कहा कि कअ़बा अफ़ज़ल है इस पर यह आयते करीमा नाज़िल हुई और इसमें बताया गया कि सब से पहला मकान जिसको अल्लाह तआ़ला ने ताअ़त व इबादत के लिए मुक़र्रर किया नमाज़ का क़िबला हज और तवाफ़ का मौज़अ़ बनाया जिसमें नेकियों के सवाब ज़्यादा होते हैं वह कअ़बा मुअ़ज़्ज़मा है जो शहरे मक्का मुअ़ज़्ज़मा में वाक़ेअ़ है। हदीस शरीफ़ में है कि कअ़बा मुअ़ज़्ज़मा बैतुल मक़दिस से चालीस साल क़ब्ल बनाया गया। (फ़ा177) जो उसकी हुरमत व फ़ज़ीलत पर दलालत करती हैं उन निशानियों में से बाज़ यह हैं कि परिन्द कअ़बा शरीफ़ के ऊपर नहीं बैठते और उसके ऊपर से परवाज़ नहीं करते बल्कि परवाज़ करते हुए आते हैं तो इधर उधर हट जाते हैं और जो परिन्द बीमार हो जाते हैं वह अपना इलाज यही करते हैं कि हवाए कअ़बा में होकर गुज़र जायें इसी से उन्हें शिफ़ा होती है और वुहूश एक दूसरे को हरम में ईज़ा नहीं देते, हत्ता कि कुत्ते उस सरज़मीन में हिरन पर नहीं दौड़ते और वहां शिकार नहीं करते और लोगों के दिल कअ़बा मुअ़ज़्ज़मा की तरफ़ खिचते हैं और उसकी तरफ़ नज़र करने से आंसू जारी होते हैं और हर शबे जुमा को अरवाहे औलिया उसके गिर्द हाज़िर होती हैं और जो कोई उसकी बेहुरमती का क़स्द करता है बरबाद हो जाता है इन्हीं आयात में से मक़ामे इब्राहीम वग़ैरह वह चीज़ें हैं जिनका आयत में बयान फ़रमाया गया (मदारिक व ख़ाज़िन व अहमदी) (फ़ा178) मक़ामे इब्राहीम वह पत्थर है जिस पर हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम कअ़बा शरीफ़ की तामीर के वक़्त खड़े होते थे और उसमें आपके क़दमे मुबारक के निशान थे जो बावजूद तवील ज़माना गुज़रने और ब-कसरत हाथों से मस होने के अभी तक कुछ बाक़ी हैं। (फ़ा179) यहां तक कि अगर कोई शख़्स क़त्ल व जनायत (गुनाह) करके हरम में दाख़िल हो तो वहां न उसको क़त्ल किया जाए न उस पर हद क़ाइम की जाए। हज़रत उमर फ़ारूक़ रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने फ़रमाया कि अगर मैं अपने वालिद ख़त्ताब के क़ातिल को भी हरम शरीफ़ में पाऊं तो उसको हाथ न लगाऊं यहां तक कि वह वहां से बाहर आए। (फ़ा180) **मसलाः** इस आयत में हज की फ़र्ज़ियत का बयान है और इसका कि इस्तेताअ़त शर्त है। हदीस शरीफ़ में सय्यदे अ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने इसकी तफ़सीर ज़ाद व राहिला से फ़रमाई ज़ाद यानी तोशा खाने पीने का इन्तेज़ाम इस क़दर होना चाहिये कि जाकर वापस आने तक के लिए काफ़ी हो और यह वापसी के वक़्त तक अह्ल व अ़याल के नफ़्क़ा के अलावा होना चाहिये राह की अमन भी ज़रूरी है क्योंकि बग़ैर इसके इस्तेताअ़त साबित नहीं होती। (फ़ा181) इससे अल्लाह तआ़ला की नाराज़गी ज़ाहिर होती है और यह मसला भी साबित होता है कि फ़र्ज़े क़तई का मुन्किर काफ़िर है। (फ़ा182) जो सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के सिद्क़े नबुव्वत पर दलालत करती हैं।

(बकि़या सफ़हा 113 का) का मक्र था उन्होंने हाथों से हथियार फेंक दिये और रोते हुए एक दूसरे से लिपट गए और हुजूर सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के साथ फ़रमांबरदाराना चले आए उनके हक़ में यह आयत नाज़िल हुई। (फ़ा186) *हब्लिल्लाहि* की तफ़सीर में मुफ़स्सिरीन के चन्द क़ौल हैं बाज़ कहते हैं इससे कुरआन मुराद है। मुस्लिम की हदीस शरीफ़ में वारिद हुआ कि कुरआन पाक हबलिल्लाह है जिसने इसका इत्तेबाअ़ किया वह हिदायत पर है जिस ने इसको छोड़ा वह गुमराही पर। हज़रत इब्ने मसऊद रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने फ़रमाया कि हब्लिल्लाह से जमाअ़त मुराद है और फ़रमाया कि तुम जमाअ़त को लाज़िम कर लो कि वह हबलिल्लाह है जिसको मज़बूत थामने का हुक्म दिया गया है। (फ़ा187) जैसे कि यहूद व नसारा मुतफ़र्रिक़ हो गए इस आयत में उन अफ़आ़ल व हरकात की मुमानअ़त की गई जो मुसलमानों के दर्मियान तफ़र्रुक़ का सबब हों तरीक़ए मुस्लिमीन मज़हबे अहले सुन्नत है इसके सिवा कोई राह इख़्तियार करना दीन में तफ़रीक़ और ममनूअ़ है(फ़ा188) और इस्लाम की बदौलत अ़दावत दूर होकर आपस में दीनी मुहब्बत पैदा हुई हत्ता कि औस और ख़ज़रज की वह मशहूर लड़ाई जो एक सौ बीस साल से जारी थी और उसके सबब रात दिन क़त्ल व ग़ारत की गर्म बाज़ारी रहती थी सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के ज़रिया अल्लाह तआ़ला ने मिटा दी और जंग की आग ठंडी कर दी और जंगजू क़बीलों में उलफ़त व मुहब्बत के जज़्बात पैदा कर दिये। (फ़ा189) यानी हालते कुफ़्र में कि अगर उसी हाल पर मर जाते तो दोज़ख़ में पहुंचते। (फ़ा190) दौलते ईमान अ़ता करके।

(बक़िया सफ़हा 114 का) व शादां होंगे और उनके चेहरे चमकते दमकते होंगे दाहिने बायें और सामने नूर होगा। (फ़ा198) और किसी को बे जुर्म अ़ज़ाब नहीं देता और किसी की नेकी का सवाब कम नहीं करता। (फ़ा199) ऐ उम्मते मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम शाने नुज़ूलः यहूदियों में से मालिक बिन सैफ़ और वहब बिन यहूदा ने हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊद वग़ैरह असहाबे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से कहा हम तुम से अफ़ज़ल हैं और हमारा दीन तुम्हारे दीन से बेहतर है जिसकी तुम हमें दावत देते हो इस पर यह आयत नाज़िल हुई। तिर्मिज़ी की हदीस में है सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया अल्लाह तआ़ला मेरी उम्मत को गुमराही पर जमा न करेगा और अल्लाह तआ़ला का दस्ते रहमत जमाअ़त पर है जो जमाअ़त से जुदा हुआ दोज़ख़ में गया। (फ़ा200) सय्यदे अम्बिया मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम पर।

(बक़िया सफ़हा 115 का) इस्लाम क़बूल करके टोटे में पड़े तो अल्लाह तआ़ला ने उन्हें ख़बर दी कि वह दरजाते आ़लिया के मुस्तहिक़ हुए और अपनी नेकियों की जज़ा पायेंगे यहूद की बकवास बेहूदा है। (फ़ा212) जिन पर उन्हें बहुत नाज़ है।

(बक़िया सफ़हा 116 का) वह अगर आख़िरत की नीयत से भी ख़र्च करे तो नफ़ा नहीं पा सकता उन लोगों के लिए वह मिसाल बिल्कुल मुताबिक़ है जो आयत में ज़िक्र फ़रमाई जाती है। (फ़ा215) यानी जिस तरह कि बरफ़ानी हवा खेती को बरबाद कर देती है उसी तरह कुफ़्र इन्फ़ाक़ को बातिल कर देता है। (फ़ा216) उन से दोस्ती न करो मुहब्बत के तअ़ल्लुक़ात न रखो वह क़ाबिले एतेमाद नहीं हैं। **शाने नुज़ूलः** बाज़ मुसलमान यहूद से क़राबत और दोस्ती और पड़ोस वग़ैरह तअ़ल्लुक़ात की बिना पर मेल जोल रखते थे उनके हक़ में यह आयत नाज़िल हुई। **मसलाः** कुफ़्फ़ार से दोस्ती व मुहब्बत करना और उन्हें अपना राज़दार बनाना नाजायज़ व ममनूअ़ है। (फ़ा217) ग़ैज़ व एनाद (फ़ा218) तो उन से दोस्ती न करो। (फ़ा219) रिश्तादारी और दोस्ती वग़ैरह तअ़ल्लुक़ात की बिना पर (फ़ा220) और दीनी मुख़ालफ़त की बिना पर तुम से दुश्मनी रखते हैं। (फ़ा221) और वह तुम्हारी किताब पर ईमान नहीं रखते (फ़ा222) यह मुनाफ़िक़ीन का हाल है (फ़ा223) बेमीर ता ब-रेही ऐ हुसूद कीं रंजेस्त-कि अज़ मशक़्क़ते ऊ जुज़ ब-मर्ग नतवां रुस्त (फ़ा224) और इस पर वह रंजीदा हों (फ़ा225) और उन से दोस्ती व मुहब्बत न करो **मसलाः** इस आयत से मालूम हुआ कि दुश्मन के मुक़ाबला में सब्र व तक़वा काम आता है।

(बक़िया सफ़हा 117 का) रवाना हुए और पन्द्रह शव्वाल सन् ३ हिजरी रोज़ यक शम्बा (इतवार) उहद में पहुंचे यहां नुज़ूल फ़रमाया और पहाड़ का एक दर्रा जो लश्करे इस्लाम के पीछे था उसी तरफ़ से अन्देशा था कि किसी वक़्त दुश्मन पुश्त पर से आकर हमला करे इस लिए हुज़ूर ने अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर को पचास तीर अन्दाज़ों के साथ वहां मामूर फ़रमाया कि अगर दुश्मन इस तरफ़ से हमला आवर हो तो तीर बारी करके उसको दफ़ा कर दिया जाए और हुक्म दिया कि किसी हाल में यहां से न हटना और इस जगह को न छोड़ना ख़्वाह फ़तह हो या शिकस्त हो अ़ब्दुल्लाह बिन उबय बिन सलूल मुनाफ़िक़ जिसने मदीना तय्यबा में रह कर जंग करने की राय दी थी अपनी राय के ख़िलाफ़ किये जाने की वजह से बरहम हुआ और कहने लगा कि हुज़ूर सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने नव उम्र लड़कों का कहना तो माना और मेरी बात की परवाह न की इस अ़ब्दुल्लाह बिन उबय के साथ तीन सौ मुनाफ़िक़ थे उनसे उसने कहा कि जब दुश्मन लश्करे इस्लाम के मुक़ाबिल आ जाए उस वक़्त भाग पड़ो ताकि लश्करे इस्लाम में अबतरी हो जाए और तुम्हें देख कर और लोग भी भाग निकलें मुसलमानों के लश्कर की कुल तादाद मअ़ उन मुनाफ़िक़ीन के हज़ार थी और मुशरिकीन तीन हज़ार। मुक़ाबला होते ही अ़ब्दुल्लाह बिन उबय मुनाफ़िक़ अपने तीन सौ मुनाफ़िक़ों को लेकर भाग निकला और हुज़ूर के सात सौ असहाब हुज़ूर के साथ रह गए अल्लाह तआ़ला ने उनको साबित रखा यहां तक कि मुशरिकीन को हज़ीमत हुई अब सहाबा भागते हुए मुशरिकीन के पीछे पड़ गए और हुज़ूर सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने जहां क़ायम रहने के लिए फ़रमाया था वहां क़ायम न रहे तो अल्लाह तआ़ला ने उन्हें यह दिखा दिया कि बदर में अल्लाह और उसके रसूल की फ़रमांबरदारी की बरकत से फ़तह हुई थी यहां हुज़ूर के हुक्म की मुख़ालफ़त का नतीजा यह हुआ कि अल्लाह तआ़ला ने मुशरिकीन के दिलों से रोअ़ब व हैबत दूर फ़रमाई और वह पलट पड़े और मुसलमानों को हज़ीमत हुई। रसूले करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के साथ एक जमाअ़त रही जिस में हज़रत अबू बकर व अ़ली व अ़ब्बास व तलहा व सअ़द थे इसी जंग में दन्दाने अक़्दस शहीद हुए और चेहरए अक़्दस पर ज़ख़्म आया इसी के मुतअ़ल्लिक़ यह आयते करीमा नाज़िल हुई। (फ़ा228) यह दोनों गरोह अंसार में से थे एक बनी सलमा ख़ज़रज में से और एक बनी हारिसा औस में से। यह दोनों लश्कर के बाज़ू थे, जब अ़ब्दुल्लाह बिन उबय बिन सलूल मुनाफ़िक़ भागा तो उन्होंने भी वापस जाने का क़स्द किया अल्लाह तआ़ला ने करम किया और उन्हें उससे महफ़ूज़ रखा और वह हुज़ूर के साथ साबित रहे यहां उस नेअ़मत व एहसान का ज़िक्र फ़रमाया है। (फ़ा229) तुम्हारी तादाद भी कम थी तुम्हारे पास हथियारों और सवारों की भी कमी थी। (फ़ा230) चुनांचे मोमिनीन ने रोज़े बदर सब्र व तक़्वा से काम लिया अल्लाह तआ़ला ने हस्बे वादा पांच हज़ार फ़रिश्तों की मदद भेजी और मुसलमानों की फ़तह और काफ़िरों की शिकस्त हुई। (फ़ा231) और दुश्मन की कसरत और अपनी क़िल्लत से परेशानी व इज़्तेराब न हो। (फ़ा232) तो चाहिये कि बन्दा मुसब्बिबुल अस्बाब पर नज़र रखे और उसी पर तवक्कुल रखे। (फ़ा233) इस तरह कि उनके बड़े बड़े सरदार मक़तूल हों और गिरिफ़्तार किये जायें जैसा कि बदर में पेश आया।

(बक़िया सफ़हा 122 का) साथ तेरह या चौदह अस्हाब के सिवा कोई बाक़ी न रहा। (फ़ा294) कि उन्होंने सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के हुक्म के बर ख़िलाफ़ मरकज़ छोड़ा। (फ़ा295) यानी इब्न उबई वग़ैरह मुनाफ़िक़ीन। (फ़ा296) और उस सफ़र में मर गए या जिहाद में शहीद हो गए।

(बक़िया सफ़हा 118 का) मुक़ाबिल में शब होती है इसी तरह जन्नत जानिबे बाला में है और दोज़ख़ जेहते पस्ती में। यहूद ने यही सवाल हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अ़न्हु से किया था तो आपने भी यही जवाब दिया था इस पर उन्होंने कहा कि तौरेत में भी इसी तरह समझाया गया है माना यह हैं कि अल्लाह की क़ुदरत व इख़्तियार से कुछ बईद नहीं जिस शय को जहां चाहे रखे यह इंसान की तंगीए नज़र है कि किसी चीज़ की वुसअ़त से हैरान होता है तो पूछने लगता है कि ऐसी बड़ी चीज़ कहां समाएगी। हज़रत अनस बिन मालिक रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से दरियाफ़्त किया गया कि जन्नत आसमान में है या ज़मीन में, फ़रमाया कौनसी ज़मीन और कौनसा आसमान है जिस में जन्नत समा सके अ़र्ज़ किया गया फिर कहां है फ़रमाया आसमानों के ऊपर ज़ेरे अ़र्श। (फ़ा239) इस आयत और इससे ऊपर की आयत *वत्तक़ुन्ना रल्लती उ-इद्दत लिल्-काफ़िरीन* से साबित हुआ कि जन्नत व दोज़ख़ पैदा हो चुकीं मौजूद हैं। (फ़ा240) यानी हर हाल में ख़र्च करते हैं। बुख़ारी व मुस्लिम में हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अ़न्हु से मरवी है सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया ख़र्च करो तुम पर ख़र्च किया जाएगा यानी ख़ुदा की राह में दो तुम्हें अल्लाह की रहमत से मिलेगा। (फ़ा241) यानी उनसे कोई कबीरा या सग़ीरा गुनाह सरज़द हो। (फ़ा242) और तौबा करें और गुनाह से बाज़ आयें और आईन्दा के लिए उससे बाज़ रहने का अ़ज़्म पुख़्ता करें कि यह तौबए मक़बूला के शरायत में से है।

(बक़िया सफ़हा 119 का) (फ़ा245) पिछली उम्मतों के साथ जिन्होंने हिर्से दुनिया और उसके लज़्ज़ात की तलब में अम्बिया व मुरसलीन की मुख़ालफ़त की अल्लाह तआ़ला ने उन्हें मोहलतें दीं फिर भी वह राहे रास्त पर न आए तो उन्हें हलाक व बरबाद कर दिया। (फ़ा246) ताकि तुम्हें इबरत हो। (फ़ा247) उसका जो जंगे उहद में पेश आया (फ़ा248) जंगे उहद में (फ़ा249) जंगे बदर में बावजूद इसके उन्होंने पस्त हिम्मती न की और उनसे मुक़ाबला करने में सुस्ती से काम न लिया तो तुम्हें भी सुस्ती व कम हिम्मती न चाहिये। (फ़ा250) कभी किसी की बारी है कभी किसी की (फ़ा251) सब्र व इख़्लास के साथ कि उनको मशक़्क़त व नाकामी जगह से नहीं हटा सकती और उनके पाए सबात में लग़ज़िश नहीं आ सकती। (फ़ा252) और उन्हें गुनाहों से पाक कर दे। (फ़ा253) यानी काफ़िरों से जो मुसलमानों को तकलीफ़ें पहुंचती हैं वह तो मुसलमानों के लिए शहादत व ततहीर हैं और मुसलमान जो कुफ़्फ़ार को क़त्ल करें तो यह कुफ़्फ़ार की बरबादी और उनका इस्तीसाल है। (फ़ा254) कि अल्लाह की रज़ा के लिए कैसे ज़ख़्म खाते और तकलीफ़ उठाते हैं इसमें उन पर एताब है जो रोज़े उहद कुफ़्फ़ार के मुक़ाबले से भागे। (फ़ा255) **शाने नुज़ूलः** जब शोहदाए बदर के दर्जे और मर्तबे और उन पर अल्लाह तआ़ला के इनाम व एहसान बयान फ़रमाए गए तो जो मुसलमान वहां हाज़िर न थे उन्हें हसरत हुई और उन्होंने आरज़ू की कि काश किसी जिहाद में उन्हें हाज़िरी मुयस्सर आए और शहादत के दरजात मिलें उन्हीं लोगों ने हुज़ूर सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से उहद पर जाने के लिए इसरार किया था उनके हक़ में यह आयत नाज़िल हुई।

(बक़िया सफ़हा 120 का) ताअ़त से हुसूले दुनिया मक़सूद हो। (फ़ा262) इससे साबित हुआ कि मदार नीयत पर है जैसा कि बुख़ारी व मुस्लिम शरीफ़ की हदीस में आया है। (फ़ा263) ऐसा ही हर ईमानदार को चाहिये। (फ़ा264) यानी हिमायते दीन व मक़ामाते हरब में उनकी ज़बान पर कोई ऐसा कलिमा न आता जिस में घबराहट परेशानी और तज़लज़ुल का शायबा भी होता बल्कि वह इस्तिक़लाल के साथ साबित क़दम रहते और दुआ़ करते। (फ़ा265) यानी तमाम सग़ायर व कबायर बावजूदेकि वह लोग रब्बानी यानी अतक़िया थे फिर भी गुनाहों का अपनी तरफ़ निस्बत करना शाने तवाज़ोअ़ व इन्केसार और आदाबे अ़ब्दियत में से है। (फ़ा266) इससे यह मसला मालूम हुआ कि तलबे हाजत से क़ब्ल तौबा व इस्तिग़फ़ार आदाबे दुआ़ में से है। (फ़ा267) यानी फ़तह व ज़फ़र और दुश्मनों पर ग़लबा (फ़ा268) मग़फ़िरत व जन्नत और इस्तेहक़ाक़ से ज़्यादा इनाम व इकराम।

(बक़िया सफ़हा 121 का) रहना किसी हाल में मर्कज़ न छोड़ना जब तक मेरा हुक्म न आए मगर लोग ग़नीमत के लिए चल पड़े और हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर के साथ दस से कम असहाब रह गए (फ़ा275) कि मर्कज़ छोड़ दिया और ग़नीमत हासिल करने में मशग़ूल हो गए (फ़ा276) यानी कुफ़्फ़ार की हज़ीमत। (फ़ा277) जो मर्कज़ छोड़ कर ग़नीमत के लिए चला गया। (फ़ा278) जो अपने अमीर अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर के साथ अपनी जगह पर क़ाइम रह कर शहीद हो गया। (फ़ा279) और मुसीबतों पर तुम्हारे साबिर व साबित रहने का इम्तेहान हो। (फ़ा280) कि ख़ुदा के बन्दो मेरी तरफ़ आओ (फ़ा281) यानी तुम ने जो रसूले करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के हुक्म की मुख़ालफ़त करके आपको ग़म पहुंचाया था उसके बदले तुम को हज़ीमत के ग़म में मुब्तला किया।

(बक़िया सफ़हा 127 का) सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से कहा था कि हम से तौरेत में अ़ह्द लिया गया है कि जो मुद्दईए रिसालत ऐसी क़ुरबानी न लाए जिसको आसमान से सफ़ेद आग उतर कर खाए उस पर हम हरगिज़ ईमान न लायें इस पर यह आयत नाज़िल हुई और उनके इस किज़्बे महज़ और इफ़्तेराए ख़ालिस का इब्ताल किया गया क्योंकि इस शर्त का तौरेत में नाम व निशान भी नहीं है और ज़ाहिर है कि नबी की तस्दीक़ के लिए मोअ़जेज़ा काफ़ी है कोई मोअ़जेज़ा हो जब नबी ने कोई मोअ़जेज़ा दिखाया उसके सिद्क़ पर दलील क़ाइम हो गई और उसकी तस्दीक़ करना और उसकी नबुव्वत को मानना लाज़िम हो गया अब किसी ख़ास मोअ़जेज़ा का इसरार हुज्जत क़ाइम होने के बाद नबी की तस्दीक़ का इंकार है। (फ़ा363) जब तुमने यह निशानी लाने वाले अम्बिया को क़त्ल किया और उन पर ईमान न लाए तो साबित हो गया कि तुम्हारा यह दावा झूठा है। (फ़ा363) यानी मोअ़जेज़ाते बाहिरा (फ़ा365) तौरेत व इंजील।

(बक़िया सफ़हा 123 का) नहीं है उन्हें हक़ सुबहानहू तआला अपने दाइरए करामत में अपनी तजल्ली से नवाज़ेगा उसकी तरफ़ *ल-इलल्लाहि तुह्शरून* में इशारा है। (फ़ा301) और आपके मिज़ाज में इस दर्जा लुत्फ़ व करम और राफ़त व रहमत हुई कि रोज़े उहद ग़ज़ब न फ़रमाया। (फ़ा302) और शिद्दत व ग़िल्ज़त से काम लेते (फ़ा303) ताकि अल्लाह तआला माफ़ फ़रमाए (फ़ा304) कि इसमें उनकी दिलदारी भी है और इज़्ज़त अफ़ज़ाई भी और यह फ़ायदा भी कि मश्वरा सुन्नत हो जाएगा और आईन्दा उम्मत उससे नफ़ा उठाती रहेगी। मश्वरा के माना हैं किसी अम्र में राय दरियाफ़्त करना। मसलाः इससे इज्तेहाद का जवाज़ और क़ियास का हुज्जत होना साबित हुआ। (मदारिक व ख़ाज़िन) (फ़ा305) तवक्कुल के माना हैं अल्लाह तबारक व तआला पर एतेमाद करना और कामों को उसके सुपुर्द कर देना। मक़सूद यह है कि बन्दे का एतेमाद तमाम कामों में अल्लाह पर होना चाहिये। मसलाः इससे मालूम हुआ कि मश्वरा तवक्कुल के ख़िलाफ़ नहीं है। (फ़ा306) और मददे इलाही वही पाता है जो अपनी क़ुव्वत व ताक़त पर भरोसा नहीं करता अल्लाह तआला की क़ुदरत व रहमत का उम्मीदवार रहता है। (फ़ा307) क्योंकि यह शाने नबुव्वत के ख़िलाफ़ है और अम्बिया सब मअ़सूम हैं उन से ऐसा मुमकिन नहीं न वही में न ग़ैर वही में और जो कोई शख़्स कुछ छुपा रखे उसका हुक्म इसी आयत में आगे बयान फ़रमाया जाता है।

(बक़िया सफ़हा 124 का) किताबे मजीद फ़ुरक़ाने हमीद उनको सुनाता है बावजूदेकि उनके कान पहले कभी कलामे हक़ व वहीए समावी से आशना न हुए थे (फ़ा315) कुफ़्र व ज़लालत और इरतेकाबे मुहर्रमात व मआसी व ख़साइले ना-पसन्दीदा व मलकाते रज़ीला व ज़ुल्माते नफ़्सानिया से। (फ़ा316) और नफ़्स की क़ुव्वते अ़मलिया और इल्मिया दोनों की तकमील फ़रमाता है। (फ़ा317) कि हक़ व बातिल व नेक व बद में इम्तियाज़ न रखते थे और जह्ल व ना-बीनाई में मुब्तला थे। (फ़ा318) जैसी कि जंगे उहद में पहुंची कि तुम में से सत्तर क़त्ल हुए। (फ़ा319) बदर में कि तुम ने सत्तर को क़त्ल किया सत्तर को गिरिफ़्तार किया। (फ़ा320) और क्यों पहुंची जबकि हम मुसलमान हैं और हम में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम तशरीफ़ फ़रमा हैं। (फ़ा321) कि तुमने रसूले करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की मर्ज़ी के ख़िलाफ़ मदीना तय्यबा से बाहर निकल कर जंग करने पर इसरार किया फिर वहां पहुंचने के बाद बावजूद हुज़ूर की शदीद मुमानअ़त के ग़नीमत के लिए मर्कज़ छोड़ा यह सबब तुम्हारे क़त्ल व हज़ीमत का हुआ। (फ़ा322) उहद में। (फ़ा323) मोमिनीन व मुशरिकीन की। (फ़ा324) यानी मोमिन व मुनाफ़िक़ मुमताज़ हो गए। (फ़ा325) यानी अ़ब्दुल्लाह बिन उबय बिन सलूल वग़ैरह मुनाफ़िक़ीन से। (फ़ा326) मुसलमानों की तादाद बढ़ाओ और हिफ़ाज़ते दीन के लिए। (फ़ा327) अपने अहल व माल को बचाने के लिए।

(बक़िया सफ़हा 126 का) सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को तुम्हारे अहवाल पर मुत्तलअ़ करके मोमिन व मुनाफ़िक़ हर एक को मुमताज़ फ़रमा दे। शाने नुज़ूलः रसूले करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि ख़िलक़त व आफ़रीनश से क़ब्ल जब कि मेरी उम्मत मिट्टी की शक्ल में थी उसी वक़्त वह मेरे सामने अपनी सूरतों में पेश की गई जैसा कि हज़रत आदम पर पेश की गई और मुझे इल्म दिया गया, कौन मुझ पर ईमान लाएगा कौन कुफ़्र करेगा यह ख़बर जब मुनाफ़िक़ीन को पहुंची तो उन्होंने बराहे इस्तेहज़ा कहा कि मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम का गुमान है कि वह यह जानते हैं कि जो लोग अभी पैदा भी नहीं हुए उन में से कौन उन पर ईमान लाएगा, कौन कुफ़्र करेगा बावजूदेकि हम उनके साथ हैं और वह हमें नहीं पहचानते इस पर सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने मिम्बर पर क़ियाम फ़रमा कर अल्लाह तआ़ला की हम्द व सना के बाद फ़रमाया उन लोगों का क्या हाल है जो मेरे इल्म में तअ़न करते हैं आज से क़ियामत तक जो कुछ होने वाला है उसमें से कोई चीज़ ऐसी नहीं है जिसका तुम मुझ से सवाल करो और मैं तुम्हें उसकी ख़बर न दे दूं। अ़ब्दुल्लाह बिन हुज़ाफ़ा सहमी ने खड़े होकर कहा मेरा बाप कौन है या रसूलल्लाह फ़रमाया हुज़ाफ़ा फिर हज़रत उमर रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु खड़े हुए उन्होंने फ़रमाया या रसूलल्लाह हम अल्लाह की रुबूबियत पर राज़ी हुए इस्लाम के दीन होने पर राज़ी हुए क़ुरआन के इमाम होने पर राज़ी हुए आपके नबी होने पर राज़ी हुए हम आप से माफ़ी चाहते हैं हुज़ूर ने फ़रमाया क्या तुम बाज़ आओगे क्या तुम बाज़ आओगे फिर मिम्बर से उतर आए इस पर अल्लाह तआ़ला ने यह आयत नाज़िल फ़रमाई इस हदीस से साबित हुआ कि सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को क़ियामत तक की तमाम चीज़ों का इल्म अ़ता फ़रमाया गया है और हुज़ूर के इल्मे ग़ैब में तअ़न करना मुनाफ़िक़ीन का तरीक़ा है। (फ़ा354) तो उन बरगुज़ीदा रसूलों को ग़ैब का इल्म देता है और सय्यदे अम्बिया हबीबे ख़ुदा सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम रसूलों में सबसे अफ़ज़ल और आला हैं इस आयत से और इसके सिवा ब-कसरत आयात व अहादीस से साबित है कि अल्लाह तआ़ला ने हुज़ूर अ़लैहिस्सलातु वस्सलाम को ग़ुयूब के उलूम अ़ता फ़रमाए और ग़ुयूब के इल्म आपका मोअ़जेज़ा हैं (फ़ा355) और तस्दीक़ करो कि अल्लाह तआ़ला ने अपने बरगुज़ीदा रसूलों को ग़ैब पर मुत्तलअ़ किया है।

(बक़िया सफ़हा 133 का) मां बाप छोड़े और अगर मां बाप के साथ ज़ौज या ज़ौजा में से किसी को छोड़ा तो माँ का हिस्सा ज़ौज का हिस्सा निकालने के बाद जो बाक़ी बचे उसका तिहाई होगा न कि कुल का तिहाई। (फ़ा32) सगे ख़्वाह सौतेले। (फ़ा33) और एक ही भाई हो तो वह माँ का हिस्सा नहीं घटा सकता (फ़ा34) क्योंकि वसीयत और दैन यानी क़र्ज़ वरसा की तक़सीम से मुक़द्दम है और दैन वसीयत पर भी मुक़द्दम है। हदीस शरीफ़ में है *इन्नद्दै-न क़ब्लल् वसीय-त* (फ़ा35) इस लिए हिस्सों की तअ़य्युन तुम्हारी राय पर नहीं छोड़ी।

(बक़िया सफ़हा 125 का) शोहदा की क़ब्रें खुल गईं तो उनके जिस्म तरो ताज़ा पाए गए। (ख़ाज़िन वग़ैरह) (फ़ा334) फ़ज़्ल व करामत और इनाम व एहसान मौत के बाद हयात दी अपना मुक़र्रब किया जन्नत का रिज़्क़ और उसकी नेअ्मतें अ़ता फ़रमाईं और उन मनाज़िल के हासिल करने के लिए तौफ़ीक़े शहादत दी। (फ़ा335) और दुनिया में वह ईमान व तक़्वा पर हैं जब शहीद होंगे उनके साथ मिलेंगे और रोज़े क़ियामत अम्न और चैन के साथ उठाए जायेंगे। (फ़ा336) बुख़ारी व मुस्लिम की हदीस में है हुज़ूर ने फ़रमाया जिस किसी के राहे ख़ुदा में ज़ख़्म लगा वह रोज़े क़ियामत वैसा ही आएगा जैसा ज़ख़्म लगने के वक़्त था उसके ख़ून में ख़ुश्बू मुश्क की होगी और रंग ख़ून का। तिर्मिज़ी व निसाई की हदीस में है कि शहीद को क़त्ल से तकलीफ़ नहीं होती मगर ऐसी जैसी किसी को एक ख़राश लगे मुस्लिम शरीफ़, हदीस में है शहीद के तमाम गुनाह माफ़ कर दिये जाते हैं सिवाए क़र्ज़ के। (फ़ा337) **शाने नुज़ूलः** जंगे उहद से फ़ारिग़ होने के बाद जब अबू सुफ़ियान मअ़ अपने हमराहियों के मक़ामे रौहा में पहुंचे तो उन्हें अफ़सोस हुआ कि वह वापस क्यों आ गए मुसलमानों का बिल्कुल ख़ात्मा ही क्यों न कर दिया यह ख़्याल करके उन्होंने फिर वापस होने का इरादा किया सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने अबू सुफ़ियान के तआ़क़ुब के लिए अपनी रवानगी का एलान फ़रमा दिया सहाबा की एक जमाअ़त जिन की तादाद सत्तर थी और जो जंगे उहद के ज़ख़्मों से चूर हो रहे थे हुज़ूर के एलान पर हाज़िर हो गए और हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम उस जमाअ़त को लेकर अबू सुफ़ियान के तआ़क़ुब में रवाना हो गए जब हुज़ूर मक़ामे ह़मराउल असद पहुंचे जो मदीना से आठ मील है तो वहां मालूम हुआ कि मुशरिकीन मरऊब व ख़ौफ़ज़दा होकर भाग गए इस वाक़िआ़ के मुतअ़ल्लिक़ यह आयत नाज़िल हुई। (फ़ा338) यानी नुऐम बिन मसऊद अशजई ने। (फ़ा339) यानी अबू सुफ़ियान वग़ैरह मुशरिकीन ने। (फ़ा340) **शाने नुज़ूलः** जंगे उहद से वापस होते हुए अबू सुफ़ियान ने सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से पुकार कर कह दिया था कि अगले साल हमारी आप की मक़ामे बदर में जंग होगी हुज़ूर ने उनके जवाब में फ़रमाया इन्शाअल्लाह, जब वह वक़्त आया और अबू सुफ़ियान अहले मक्का को लेकर जंग के लिए रवाना हुए तो अल्लाह तआ़ला ने उनके दिल में ख़ौफ़ डाला और उन्होंने वापस जाने का इरादा किया इस मौक़ा पर अबू सुफ़ियान की नुऐम बिन मसऊद अशजई से मुलाक़ात हुई जो उमरा करने आया था अबू सुफ़ियान ने उससे कहा ऐ नुऐम इस ज़माना में मेरी लड़ाई मक़ामे बदर में मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के साथ तय हो चुकी है और इस वक़्त मुझे मुनासिब यह मालूम होता है कि मैं जंग में न जाऊं वापस जाऊं तू मदीना जा और तदबीर के साथ मुसलमानों को मैदाने जंग में जाने से रोक दे इसके एवज़ मैं तुझको दस ऊंट दूंगा नुऐम ने मदीना पहुंच कर देखा कि मुसलमान जंग की तैयारी कर रहे हैं उन से कहने लगा कि तुम जंग के लिए जाना चाहते हो अहले मक्का ने तुम्हारे लिए बड़े लश्कर जमा किये हैं ख़ुदा की क़सम तुम में से एक भी फिर कर न आएगा सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया ख़ुदा की क़सम मैं ज़रूर जाऊँगा चाहे मेरे साथ कोई भी न हो। पस हुज़ूर सत्तर सवारों को हमराह लेकर हस्बुनल्लाहु व निअ़मल् वकील पढ़ते हुए रवाना हुए बदर में पहुंचे वहां आठ शब क़ियाम किया माले तिजारत साथ था उसको फ़रोख़्त किया ख़ूब नफ़ा हुआ और सालिम ग़ानिम मदीना तय्यबा वापस हुए जंग नहीं हुई चूंकि अबू सुफ़ियान और अहले मक्का ख़ौफ़ज़दा होकर मक्का शरीफ़ को वापस हो गए थे इस वाक़िआ़ के मुतअ़ल्लिक़ यह आयत नाज़िल हुई। (फ़ा341) ब-अम्न व आ़फ़ियत मुनाफ़ए तिजारत हासिल करके।

(बक़िया सफ़हा 128 का) जानता है और उसने उसको छुपाया रोज़े क़ियामत उसके आग की लगाम लगाई जाएगी मसला उलमा पर वाजिब है कि अपने इल्म से फ़ायदा पहुंचायें और हक़ ज़ाहिर करें और किसी ग़र्ज़े फ़ासिद के लिए उस में से कुछ न छुपायें। (फ़ा373) **शाने नुज़ूलः** यह आयत यहूद के हक़ में नाज़िल हुई जो लोगों को धोखा देने और गुमराह करने पर ख़ुश होते और बावजूद नादान होने के यह पसन्द करते कि उन्हें आ़लिम कहा जाए। **मसलाः** इस आयत में वईद है ख़ुद पसन्दी करने वाले के लिए और उसके लिए जो लोगों से अपनी झूटी तारीफ़ चाहे जो लोग बग़ैर इल्म अपने आप को आ़लिम कहलवाते हैं या इसी तरह और कोई ग़लत वस्फ़ अपने लिए पसन्द करते हैं उन्हें इससे सबक़ हासिल करना चाहिये। (फ़ा374) इस में उन गुस्ताख़ों का रद है जिन्होंने कहा था कि अल्लाह फ़क़ीर है। (फ़ा375) सानेअ् क़दीम अ़लीम हकीम क़ादिर के वजूद पर दलालत करने वाली। (फ़ा376) जिनकी अ़क़्ल कुदूरत से पाक हो और मख़्लूक़ात के अ़जायब व ग़रायब को एतेबार व इस्तिदलाल की नज़र से देखते हों।

(बक़िया सफ़हा 135 का) महर ले लेते या उन्हें क़ैद कर रखते कि जो वरसा उन्होंने पाया है वह देकर रेहाई हासिल करें या मर जायें तो यह उनके वारिस हो जायें ग़रज़ वह औरतें बिल्कुल उनके हाथ में मजबूर होती थीं और अपने इख़्तियार से कुछ भी न कर सकती थीं इस रस्म को मिटाने के लिए यह आयत नाज़िल फ़रमाई गई (फ़ा51) हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा ने फ़रमाया यह उसके मुतअ़ल्लिक़ है जो अपनी बीबी से नफ़रत रखता हो और इस लिए बद सुलूकी करता हो कि औरत परेशान होकर महर वापस करदे या छोड़ दे इसकी अल्लाह तआ़ला ने मुमानअ़त फ़रमाई। एक क़ौल यह है कि लोग औरत को तलाक़ देते फिर रजअ़त करते फिर तलाक़ देते इस तरह उसको मुअ़ल्लक़ रखते थे कि न वह उनके पास आराम पा सकती न दूसरी जगह ठिकाना कर सकती इसको मना फ़रमाया गया। एक क़ौल यह है कि मय्यत के औलिया को ख़िताब है कि वह अपने मूरिस की बीबी को न रोकें। (फ़ा52) शौहर की नाफ़रमानी या उसकी या उसके घर वालों की ईज़ा व बद ज़बानी या हराम कारी ऐसी कोई हालत हो तो ख़ुलअ् चाहने में मुज़ाइक़ा नहीं। (फ़ा53) खिलाने पहनाने में बात चीत में और ज़ौजियत के उमूर में। (फ़ा54) बद ख़ुल्क़ी या सूरत ना-पसन्द होने की वजह से तो सब्र करो और जुदाई मत चाहो।

(बक़िया सफ़हा 131 का) से पैदा होगा जो उसके वजूद में पाए जाते हैं फिर अनासिर में से जो उन्सुर उसका मस्कन हो और जिसके सिवा दूसरे में वह न रह सके लाज़िम है कि वही उसके वजूद में ग़ालिब हो इस लिए पैदाईश की निस्बत उसी उन्सुर की तरफ़ की जाएगी यह भी ज़ाहिर है कि तवालुद व तनासुल का मामूली तरीक़ा एक शख़्स से जारी नहीं हो सकता इस लिए उसके साथ एक और भी हो कि जोड़ा हो जाए और वह दूसरा शख़्से इंसानी जो उसके बाद पैदा हो मुक़्तज़ाए हिकमत यही है कि उसी के जिस्म से पैदा किया जाए क्योंकि एक शख़्स के पैदा होने से नौअ़ मौजूद हो चुकी मगर यह भी लाज़िम है कि उसकी ख़िलक़त पहले इंसान से तवालुद मामूली के सिवा किसी और तरीक़ा से हो क्योंकि तवालुद मामूली बग़ैर दो के मुमकिन ही नहीं और यहां एक ही है लिहाज़ा हिकमते इलाहिया ने हज़रत आदम की एक बायीं पसली उनके ख़्वाब के वक़्त निकाली और उनसे उनकी बीबी हज़रत हव्वा को पैदा किया चूंकि हज़रत हव्वा ब-तरीक़े तवालुदे मामूली पैदा नहीं हुईं इस लिए वह औलाद नहीं हो सकतीं जिस तरह कि इस तरीक़ा के ख़िलाफ़ जिस्मे इंसानी से बहुत से कीड़े पैदा हुआ करते हैं वह उसकी औलाद नहीं हो सकते हैं ख़्वाब से बेदार होकर हज़रत आदम ने अपने पास हज़रत हव्वा को देखा तो मुहब्बते जिन्सियत दिल में मौजज़न हुई उनसे फ़रमाया तुम कौन हो उन्होंने अ़र्ज़ किया औ़रत फ़रमाया किस लिए पैदा की गई हो अ़र्ज़ किया आपकी तस्कीने ख़ातिर के लिए तो आप उनसे मानूस हुए। (फ़ा4) उन्हें क़तअ़ न करो हदीस शरीफ़ में है जो रिज़्क़ की कशाइश चाहे उसको चाहिये कि सिलए रहमी करे और रिश्तादारों के हुक़ूक़ की रिआ़यत रखे। (फ़ा5) **शाने नुज़ूलः** एक शख़्स की निगरानी में उसके यतीम भतीजे का कसीर माल था जब वह यतीम बालिग़ हुआ और उसने अपना माल तलब किया तो चचा ने देने से इंकार कर दिया इस पर यह आयत नाज़िल हुई इसको सुनकर उस शख़्स ने यतीम का माल उसके हवाले किया और कहा कि हम अल्लाह और उसके रसूल की इताअ़त करते हैं (फ़ा6) यानी अपने हलाल माल (फ़ा7) यतीम का माल जो तुम्हारे लिए हराम है उसको अच्छा समझ कर अपने रद्दी माल से न बदलो क्योंकि वह रद्दी तुम्हारे लिए हलाल व तय्यब है और यह हराम व ख़बीस (फ़ा8) और उनके हुक़ूक़ की रिआ़यत न रख सकोगे। (फ़ा9) आयत के माना में चन्द क़ौल हैं हसन का क़ौल है कि पहले ज़माना में मदीना के लोग अपनी ज़ेरे विलायत यतीम लड़की से उसके माल की वजह से निकाह कर लेते बावजूदे कि उसकी तरफ़ रग़बत न होती फिर उसके साथ सोहबत व मुआ़शरत में अच्छा सुलूक न करते और उसके माल के वारिस बनने के लिए उसकी मौत के मुन्तज़िर रहते इस आयत में उन्हें इससे रोका गया एक क़ौल यह है कि लोग यतीमों की विलायत से तो बे-इंसाफ़ी हो जाने के अन्देशा से घबराते थे और ज़ेना की परवाह न करते थे उन्हें बताया गया कि अगर तुम ना-इंसाफ़ी के अन्देशा से यतीमों की विलायत से गुरेज़ करते हो तो ज़ेना से भी ख़ौफ़ करो और उससे बचने के लिए जो औ़रतें तुम्हारे लिए हलाल हैं उनसे निकाह करो और हराम के क़रीब मत जाओ। एक क़ौल यह है कि लोग यतीमों की विलायत व सर-परस्ती में तो ना-इंसाफ़ी का अन्देशा करते थे और बहुत से निकाह करने में कुछ बाक नहीं रखते थे उन्हें बताया गया कि जब ज़्यादा औ़रतें निकाह में हों तो उनके हक़ में ना-इंसाफ़ी होने से डरो। उतनी ही औ़रतों से निकाह करो जिनके हुक़ूक़ अदा कर सको इकरमा ने हज़रत इब्ने अ़ब्बास से रिवायत की कि क़ुरैश दस दस बल्कि इससे ज़्यादा औ़रतें करते थे और जब उन का बार न उठ सकता तो जो यतीम लड़कियां उनकी सर-परस्ती में होतीं उनके माल ख़र्च कर डालते इस आयत में फ़रमाया गया कि अपनी इस्तेताअ़त देख लो और चार से ज़्यादा न करो ताकि तुम्हें यतीमों का माल ख़र्च करने की हाजत पेश न आए। **मसलाः** इस आयत से मालूम हुआ कि आज़ाद मर्द के लिए एक वक़्त में चार औ़रतों तक से निकाह जाइज़ है ख़्वाह वह हुर्रा हों या अमता यानी बांदी। **मसलाः** तमाम उम्मत का इज्माअ़ है कि एक वक़्त में चार औ़रतों से ज़्यादा निकाह में रखना किसी के लिए जायज़ नहीं सिवाए रसूले करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के यह आपके ख़साइस में से है। अबू दाऊद की हदीस में है कि एक शख़्स इस्लाम लाए उनकी आठ बीबीयां थीं हुज़ूर ने फ़रमाया उनमें से चार रखना। तिर्मिज़ी की हदीस में है कि ग़ैलान बिन सलमा सक़फ़ी इस्लाम लाए उनकी दस बीबीयां थीं वह साथ मुसलमान हुईं हुज़ूर ने हुक्म दिया इनमें से चार रखो। (फ़ा10) **मसलाः** इससे मालूम हुआ कि बीबीयों के दर्मियान अ़द्ल फ़र्ज़ है नई पुरानी बाकेरा सय्यिबा सब इस इस्तेहक़ाक़ में बराबर हैं यह अ़द्ल लिबास में खाने पीने में सुकना यानी रहने की जगह में और रात को रहने में लाज़िम है इन उमूर में सब के साथ यकसां सुलूक हो। (फ़ा11) इससे मालूम हुआ कि महर की मुस्तहिक़ औ़रतें हैं न कि उनके औलिया अगर औलिया ने महर वसूल कर लिया हो तो उन्हें लाज़िम है कि वह महर उसकी मुस्तहिक़ औ़रत को पहुंचा दें। (फ़ा12) **मसलाः** औ़रतों को इख़्तियार है कि वह अपने शौहरों को महर का कोई जुज़्व हिबा करें या कुल महर, मगर महर बख़्शवाने के लिए उन्हें मजबूर करना उनके साथ बद-ख़ुल्क़ी करना न चाहिये क्योंकि अल्लाह तआ़ला ने तिब्-न लकुम् फ़रमाया जिसके माना हैं दिल की ख़ुशी से माफ़ करना।

(बक़िया सफ़हा 134 का) साहब के नज़दीक दादा के साथ भी महरूम हैं। सौतेले भाई बहन जो फ़क़त माँ में शरीक हों उनमें से एक हो तो छटा और ज़्यादा हों तो तिहाई और उन में मर्द व औ़रत बराबर हिस्सा पायेंगे औरबेटे पोते और उसके मातहत के पोते और बाप दादा के होते साक़ित हो जायेंगे बाप छटा हिस्सा पाएगा अगर मय्यत ने बेटा या पोता या उससे नीचे के पोते छोड़े हों और अगर मय्यत ने बेटी या पोती या और नीचे की कोई पोती छोड़ी हो तो बाप छठा और वह बाक़ी भी पाएगा जो असहाबे फ़र्ज़ को देकर बचे दादा यानी बाप का बाप। बाप के न होने की सूरत में मिस्ल बाप के है सिवाए इसके कि मां को *सुलुसे मा बक़ा* की तरफ़ रद न कर सकेगा। मां का छठा हिस्सा है अगर मय्यत ने अपनी औलाद या अपने बेटे या पोते या परपोते की औलाद या बहन भाई में से दो छोड़े हों ख़्वाह वह भाई सगे हों या सौतेले और अगर उन में से कोई न छोड़ा हो तो मां कुल-माल का तिहाई पाएगी और अगर मय्यत ने ज़ौज या ज़ौजा और मां बाप छोड़े हों तो मां को ज़ौज या ज़ौजा का हिस्सा देने के बाद जो बाक़ी रहे उसका तिहाई मिलेगा और जद्दा का छठा हिस्सा है ख़्वाह वह मां की तरफ़ से हो यानी नानी या बाप की तरफ़ से हो यानी दादी एक हो या ज़्यादा हों और क़रीब वाली दूर वाली के लिए हाजिब हो जाती है और माँ हर एक जद्दा को महजूब करती है और बाप की तरफ़ की जद्दात बाप के होने से महजूब होती हैं इस सूरत में कुछ न मिलेगा ज़ौज चहारुम पाएगा अगर मय्यत ने अपनी या अपने बेटे पोते परपोते वग़ैरह की औलाद छोड़ी हो और अगर इस क़िस्म की औलाद न छोड़ी हो तो शौहर निस्फ़ पाएगा ज़ौजा मय्यत की और उसके बेटे पोते वग़ैरह की औलाद होने की सूरत में आठवां हिस्सा पाएगी और न होने की सूरत में चौथाई अ़सबात वह वारिस हैं जिनके लिए कोई हिस्सा मुअ़य्यन नहीं असहाबे फ़र्ज़ से जो बाक़ी बचता है वह पाते हैं उन में सबसे औला बेटा है फिर उसका बेटा फिर और नीचे के पोते फिर बाप फिर दादा फिर आबाई सिलसिला में जहां तक कोई पाया जाए। फिर हक़ीक़ी भाई फिर सौतेला यानी बाप शरीक भाई फिर सगे भाई का बेटा फिर बाप शरीक भाई का बेटा। फिर चचा फिर बाप के चचा फिर दादा के चचा फिर आज़ाद करने वाला फिर उसके अ़सबात तर्तीबवार और जिन औ़रतों का हिस्सा निस्फ़ या दो तिहाई है वह अपने भाईयों के साथ अ़सबा हो जाती हैं और जो ऐसी न हों वह नहीं ज़विलअरहाम असहाब फ़र्ज़ और अ़सबात के सिवा जो अक़ारिब हैं वह ज़विलअरहाम में दाख़िल हैं और उनकी तर्तीब अ़सबात के मिस्ल है। (फ़ा40) क्योंकि कुल हदों से तजावुज़ करने वाला काफ़िर है इस लिए कि मोमिन कैसा भी गुनहगार हो ईमान की हद से तो न गुज़रेगा। (फ़ा41) यानी मुसलमानों में के (फ़ा42) कि वह बदकारी न करने पायें।

(बक़िया सफ़हा 136 का) ब-तरीक़े ज़िना या वह बांदी हो उसका वह मालिक होकर उनमें से हर सूरत में बेटे का उससे निकाह हराम है। (फ़ा63) अब इसके के बाद जिस क़दर औ़रतें हराम हैं उनका बयान फ़रमाया जाता है उन में सात तो नसब से हराम हैं। (फ़ा64) और हर औ़रत जिसकी तरफ़ बाप या मां के ज़रिया से नसब रुजूअ़ करता हो यानी दादियां व नानियां ख़्वाह क़रीब की हों या दूर की सब मायें हैं और अपनी वालिदा के हुक्म में दाख़िल हैं। (फ़ा65) पोतियां और नवासियां किसी दर्जा की हों बेटियों में दाख़िल हैं। (फ़ा66) यह सब सगी हों या सौतेली उनके बाद उन औ़रतों का बयान किया जाता है जो सबब से हराम हैं। (फ़ा67) दूध के रिश्ते शीर ख़्वारी की मुद्दत में क़लील दूध पिया जाए या कसीर उसके साथ हुरमत मुतअ़ल्लिक़ होती है शीर ख़्वारी की मुद्दत हज़रत इमाम अबू हनीफ़ा रज़ियल्लाहु अ़न्हु के नज़दीक तीस माह और साहिबैन के नज़दीक दो साल हैं शीर ख़्वारी की मुद्दत के बाद जो दूध पिया जाए उससे हुरमत मुतअ़ल्लिक़ नहीं होती अल्लाह तआ़ला ने रज़ाअ़त (शीर ख़्वारी) को नसब के क़ाइम मक़ाम किया है और दूध पिलाने वाली को शीर ख़्वार की मां और उसकी लड़की को शीर ख़्वार की बहन फ़रमाया इसी तरह दूध पिलाई का शौहर शीर ख़्वार का बाप और उसका बाप शीर ख़्वार का दादा और उसकी बहन उसकी फूफी और उसका हर बच्चा जो दूध पिलाई के सिवा और किसी औ़रत से भी हो ख़्वाह वह क़ब्ल शीर ख़्वारी के पैदा हुआ या उसके बाद वह सब उसके सौतेले भाई बहन हैं और दूध पिलाई की मां शीर ख़्वार की नानी और उसकी बहन उसकी ख़ाला और उस शौहर से उसके जो बच्चे पैदा हों वह शीर ख़्वार के रज़ाअ़ी भाई बहन और उस शौहर के अलावा दूसरे शौहर से जो हों वह उसके सौतेले भाई बहन इसमें असल यह हदीस है कि रज़ाअ़ से वह रिश्ते हराम हो जाते हैं जो नसब से हराम हैं इस लिए शीर ख़्वार पर उसके रज़ाअ़ी मां बाप और उनके नसबी व रज़ाअ़ी उसूल व फ़ुरुअ़ सब हराम हैं। (फ़ा68) यहां से मुहर्रमात बिस्सिहरियत का बयान है वह तीन ज़िक्र फ़रमाई गईं बीबियों की मायें, बीबियों की बेटियां और बेटों की बीबियां बीबियों की मायें सिर्फ़ अ़क़्दे निकाह से हराम हो जाती हैं ख़्वाह वह बीबियां मदख़ूला हों या ग़ैर मदख़ूला (यानी उनसे सोहबत हुई हो या न हुई हो) (फ़ा69) गोद में होना ग़ालिबे हाल का बयान है हुरमत के लिए शर्त नहीं। (फ़ा70) उनकी माओं से तलाक़ या मौत वग़ैरह के ज़रिया से क़ब्ले सोहबत जुदाई होने की सूरत में उनके साथ निकाह जाइज़ है। (फ़ा71) इससे मुतबन्ना निकल गए उनकी औ़रतों के साथ निकाह जायज़ है और रज़ाअ़ी बेटे की बीबी भी हराम है क्योंकि वह नसबी के हुक्म में है और पोते परपोते बेटों में दाख़िल हैं। (फ़ा72) यह भी हराम है ख़्वाह दोनों बहनों को निकाह में जमा किया जाये या मिल्के यमीन के ज़रिया से वती में और हदीस शरीफ़ में फूफी भतीजी और ख़ाला भांजी का निकाह में जमा करना भी हराम फ़रमाया गया और ज़ाबता यह है कि निकाह में हर ऐसी दो औ़रतों का जमा करना हराम है जिन से हर एक को मर्द फ़र्ज़ करने से दूसरी उसके लिए हलाल न हो जैसे कि फूफी भतीजी कि अगर फूफी को मर्द फ़र्ज़ किया जाए तो चचा हुआ भतीजी उस पर हराम है और अगर भतीजी को मर्द फ़र्ज़ किया जाए तो भतीजा हुआ फूफी उस पर हराम है हुरमत दोनों तरफ़ है और अगर सिर्फ़ एक तरफ़ से हो तो जमा हराम न होगी जैसे कि औ़रत और उसके शौहर की लड़की इन दोनों को जमा करना हलाल है। क्योंकि शौहर की लड़की को मर्द फ़र्ज़ किया जाए तो उसके लिए बाप की बीबी तो हराम रहती है। मगर दूसरी तरफ़ से यह बात नहीं है यानी शौहर की बीबी को अगर मर्द फ़र्ज़ किया जाए तो यह अजनबी होगा और कोई रिश्ता ही न रहेगा।

وَّالْمُحْصَنٰتُ مِنَ النِّسَآءِ اِلَّا مَا مَلَكَتْ اَيْمَانُكُمْ ۚ كِتٰبَ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ ۚ وَاُحِلَّ لَكُمْ مَّا وَرَآءَ ذٰلِكُمْ اَنْ تَبْتَغُوْا بِاَمْوَالِكُمْ مُّحْصِنِيْنَ غَيْرَ مُسٰفِحِيْنَ ؕ
فَمَا اسْتَمْتَعْتُمْ بِهٖ مِنْهُنَّ فَاٰتُوْهُنَّ اُجُوْرَهُنَّ فَرِيْضَةً ؕ وَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ فِيْمَا تَرٰضَيْتُمْ بِهٖ مِنْۢ بَعْدِ الْفَرِيْضَةِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ عَلِيْمًا حَكِيْمًا ﴿۲۴﴾
وَمَنْ لَّمْ يَسْتَطِعْ مِنْكُمْ طَوْلًا اَنْ يَّنْكِحَ الْمُحْصَنٰتِ الْمُؤْمِنٰتِ فَمِنْ مَّا مَلَكَتْ اَيْمَانُكُمْ مِّنْ فَتَيٰتِكُمُ الْمُؤْمِنٰتِ ؕ وَاللّٰهُ اَعْلَمُ بِاِيْمَانِكُمْ ؕ بَعْضُكُمْ مِّنْ
بَعْضٍ ۚ فَانْكِحُوْهُنَّ بِاِذْنِ اَهْلِهِنَّ وَاٰتُوْهُنَّ اُجُوْرَهُنَّ بِالْمَعْرُوْفِ مُحْصَنٰتٍ غَيْرَ مُسٰفِحٰتٍ وَّلَا مُتَّخِذٰتِ اَخْدَانٍ ۚ فَاِذَآ اُحْصِنَّ فَاِنْ اَتَيْنَ
بِفَاحِشَةٍ فَعَلَيْهِنَّ نِصْفُ مَا عَلَى الْمُحْصَنٰتِ مِنَ الْعَذَابِ ؕ ذٰلِكَ لِمَنْ خَشِيَ الْعَنَتَ مِنْكُمْ ؕ وَاَنْ تَصْبِرُوْا خَيْرٌ لَّكُمْ ؕ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿۲۵﴾

वल्मुह्सनातु मिनन्निसा–इ इल्ला मा म–ल–कत् ऐमानुकुम् किताबल्लाहि अ़लैकुम् व उहिल्–ल लकुम् मा वरा–अ ज़ालिकुम् अन् तब्तग़ू बि–अम्वालिकुम् मुह्सिनी–न ग़ै–र मुसाफ़िही–न फ़–मस्तम्तअ़तुम् बिही मिन्हुन्–न फ़आतूहुन्–न उजू–रहुन्–न फ़री–ज़–तन् व ला जुना–ह अ़लैकुम् फ़ीमा तराज़ैतुम् बिही मिम्बअ़्दिल् फ़री–ज़ति इन्नल्ला–ह का–न अ़लीमन् हकीमा (24)व मल्लम् यस्ततिअ़् मिन्कुम् तौलन् अंय्यन्किहल् मुह्सनातिल् मुअ़्मि–नाति फ़मिम्मा म–ल–कत् ऐमानुकुम् मिन् फ़–त–यातिकुमुल् मुअ़्मिनाति वल्लाहु अअ़्–लमु बि–ईमानिकुम् बअ़्ज़ुकुम् मिम्बअ़्ज़िन् फ़न्किहू हुन्–न बिइज़्नि अह्लिहिन्–न व आतूहुन्–न उजू–रहुन्–न बिल्म–अ़रूफ़ि मुह्सनातिन् ग़ै–र मुसा–फ़िहातिंव् वला मुत्तख़िज़ाति अख़्दा–निन् फ़–इज़ा उह्सिन्–न फ़इन् अतै–न बिफ़ाहि–शतिन् फ़–अ़लैहिन्–न निस्फ़ु मा अ़–लल्–मुह्सनाति मिनल्अ़ज़ाबि ज़ालि–क लिमन् ख़शियल् अ़–न–त मिन्कुम् व अन् तस्बिरू ख़ैरुल्–लकुम् वल्लाहु ग़फ़ूरुर्रहीम(25)

और हराम हैं शौहरदार औरतें मगर काफ़िरों की औरतें जो तुम्हारी मिल्क में आ जायें(फ़ा73) यह अल्लाह का नविश्ता है तुम पर और उन (फ़ा74) के सिवा जो रहें वह तुम्हें हलाल हैं कि अपने मालों के एवज़ तलाश करो क़ैद लाते (फ़ा75) न पानी गिराते (फ़ा76) तो जिन औरतों को निकाह में लाना चाहो उनके बंधे हुए महर उन्हें दो और क़रारदाद के बाद अगर तुम्हारे आपस में कुछ रज़ामन्दी हो जाये तो उसमें गुनाह नहीं (फ़ा77) बेशक अल्लाह इल्म व हिकमत वाला है। (24) और तुम में बे मक़दूरी के बाइस जिनके निकाह में आज़ाद औरतें ईमान वालियां न हों तो उनसे निकाह करे जो तुम्हारे हाथ की मिल्क हैं ईमान वाली कनीज़ें (फ़ा78) और अल्लाह तुम्हारे ईमान को ख़ूब जानता है तुम में एक दूसरे से है तो उनसे निकाह करो (फ़ा79) उनके मालिकों की इजाज़त से (फ़ा80) और हस्बे दस्तूर उनके महर उन्हें दो (फ़ा81) क़ैद में आतियां न मस्ती निकालती और न यार बनाती (फ़ा82) जब वह क़ैद में आ जायें (फ़ा83) फिर बुरा काम करें तो उनपर उस सज़ा की आधी है जो आज़ाद औरतों पर है (फ़ा84) यह (फ़ा85) उसके लिए जिसे तुम में से ज़िना का अन्देशा है और सब्र करना तुम्हारे लिए बेहतर है(फ़ा86) और अल्लाह बख़्शने वाला मेहरबान है।(25) (रुकूअ़ 1)

(फ़ा73) गिरिफ़्तार होकर बग़ैर अपने शौहरों के वह तुम्हारे लिए बाद इस्तिबरा हलाल हैं अगरचे दारुलहरब में उनके शौहर मौजूद हों क्योंकि तबायुने दारैन की वजह से उनकी शौहरों से फ़ुरक़त हो चुकी। शाने नुज़ूल हज़रत अबू सईद ख़ुदरी रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने फ़रमाया हम ने एक रोज़ बहुत सी क़ैदी औरतें पाईं जिनके शौहर दारुल हरब में मौजूद थे तो हमने उन से क़ुरबत में तअम्मुल किया और सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से मसला दरियाफ़्त किया उस पर यह आयत नाज़िल हुई (फ़ा74) मुहर्रमाते मज़कूरा (फ़ा75) निकाह से या मिल्के यमीन से इस आयत से कई मसले साबित हुए। मसलाः निकाह में महर ज़रूरी है। मसलाः अगर महर मुअ़य्यन न किया हो जब भी वाजिब होता है। मसलाः महर माल ही होता है न कि ख़िदमत व तालीम वग़ैरह जो चीज़ें माल नहीं हैं। मसलाः इतना क़लील जिसको माल न कहा जाये महर होने की सलाहियत नहीं रखता हज़रत जाबिर और हज़रत अली मुर्तज़ा रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा से मरवी है कि महर की अदना मिक़दार दस दिरम हैं इससे कम नहीं हो कसता। (फ़ा76) इससे हराम कारी मुराद है और इस ताबीर में तम्बीह है कि ज़ानी महज़ शहवत रानी करता और मस्ती निकालता है और उसका फ़ेअ़्ल ग़रज़ सही और मक़सदे हसन से ख़ाली होता है न औलाद हासिल करना न नसल व नसब महफ़ूज़ रखना न अपने नफ़्स को हराम से बचाना इन में से कोई बात उसको मद्दे नज़र नहीं होती वह **(बक़िया सफ़हा 169 पर)**

يُرِيدُ اللّٰهُ لِيُبَيِّنَ لَكُمْ وَيَهْدِيَكُمْ سُنَنَ الَّذِينَ مِن قَبْلِكُمْ وَيَتُوبَ عَلَيْكُمْ ۗ وَاللّٰهُ عَلِيمٌ حَكِيمٌ ﴿٢٦﴾ وَاللّٰهُ يُرِيدُ أَن يَتُوبَ عَلَيْكُمْ وَيُرِيدُ الَّذِينَ
يَتَّبِعُونَ الشَّهَوَاتِ أَن تَمِيلُوا مَيْلًا عَظِيمًا ﴿٢٧﴾ يُرِيدُ اللّٰهُ أَن يُخَفِّفَ عَنكُمْ ۚ وَخُلِقَ الْإِنسَانُ ضَعِيفًا ﴿٢٨﴾ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَأْكُلُوا أَمْوَالَكُم
بَيْنَكُم بِالْبَاطِلِ إِلَّا أَن تَكُونَ تِجَارَةً عَن تَرَاضٍ مِّنكُمْ ۚ وَلَا تَقْتُلُوا أَنفُسَكُمْ ۚ إِنَّ اللّٰهَ كَانَ بِكُمْ رَحِيمًا ﴿٢٩﴾ وَمَن يَفْعَلْ ذَٰلِكَ عُدْوَانًا وَظُلْمًا
فَسَوْفَ نُصْلِيهِ نَارًا ۚ وَكَانَ ذَٰلِكَ عَلَى اللّٰهِ يَسِيرًا ﴿٣٠﴾ إِن تَجْتَنِبُوا كَبَائِرَ مَا تُنْهَوْنَ عَنْهُ نُكَفِّرْ عَنكُمْ سَيِّئَاتِكُمْ وَنُدْخِلْكُم مُّدْخَلًا كَرِيمًا ﴿٣١﴾
وَلَا تَتَمَنَّوْا مَا فَضَّلَ اللّٰهُ بِهِ بَعْضَكُمْ عَلَىٰ بَعْضٍ ۚ لِّلرِّجَالِ نَصِيبٌ مِّمَّا اكْتَسَبُوا ۖ وَلِلنِّسَاءِ نَصِيبٌ مِّمَّا اكْتَسَبْنَ ۚ وَاسْأَلُوا اللّٰهَ مِن فَضْلِهِ ۗ

युरीदुल्लाहु लियुबय्यि–न लकुम् व यह्दि–यकुम् सु–न–नल्लज़ी–न मिन् क़ब्लिकुम् व यतू–ब अ़लैकुम् वल्लाहु अ़लीमुन् ह़कीम(26)वल्लाहु युरीदु अंय्यतू–ब अ़लैकुम् व युरीदुल्लज़ी–न यत्तबिअू़नश्– श–हवाति अन् तमीलू मैलन् अ़ज़ीमा(27)युरी–दुल्लाहु अंय्युख़फ़्फ़ि–फ़ अ़न्कुम् व ख़ुलिक़ल्इन्सानु ज़ओ़फ़ा(28)या अय्युहल्लज़ी–न आ–मनू ला तअ्कुलू अम्वा–लकुम् बै–नकुम् बिल्बातिलि इल्ला अन् तकू–न तिजा–र–तन् अ़न् तराज़िम् मिन्कुम् व ला तक़्तुलू अन्फु–सकुम् इन्नल्ला–ह का–न बिकुम् रहीमा(29)व मंय्यफ़्अ़ल् ज़ालि–क अ़ुद्वानंव्–व ज़ुल्मन् फ़सौ–फ़ नुस्लीहि नारन् व का–न ज़ालि–क अ़लल्लाहि यसीरा(30)इन् तज्तनिबू कबाइ–र मा तुन्हौ–न अ़न्हु नुकफ़्फ़िर् अ़न्कुम् सय्यिआतिकुम् व नुद्ख़िल्कुम् मुद्ख़–लन् करीमा(31)व ला त–तमन्नौ मा फ़ज़्ज़लल्लाहु बिही बअ़्–ज़कुम् अ़ला बअ़्ज़िन् लिर्रिजालि नसीबुम् मिम्मक्त–सबू व लिन्निसा–इ नसीबुम् मिम्मक्–त–सब्–न वस्अलुल्ला–ह मिन् फ़ज़्लिही

अल्लाह चाहता है कि अपने अहकाम तुम्हारे लिए साफ़ बयान कर दे और तुम्हें अगलों की रविशें बता दे (फ़ा87)और तुम पर अपनी रहमत से रुजूअ़ फ़रमाए और अल्लाह इल्म व हिकमत वाला है।(26) और अल्लाह तुम पर अपनी रहमत से रुजूअ़ फ़रमाना चाहता है और जो अपने मज़ों के पीछे पड़े हैं वह चाहते हैं कि तुम सीधी राह से बहुत अलग हो जाओ।(27) (फ़ा88) अल्लाह चाहता है कि तुम पर तख़्फ़ीफ़ करे (फ़ा89) और आदमी कमज़ोर बनाया गया।(28) (फ़ा90) ऐ ईमान वालो आपस में एक दूसरे के माल नाहक़ न खाओ (फ़ा91) मगर यह कि कोई सौदा तुम्हारी बाहमी रज़ामन्दी का हो (फ़ा92) और अपनी जानें क़त्ल न करो (फ़ा93) बेशक अल्लाह तुम पर मेहरबान है।(29) और जो .ज़ुल्म व ज़्यादती से ऐसा करेगा तो अ़न्क़रीब हम उसे आग में दाख़िल करेंगे और यह अल्लाह को आसान है।(30) अगर बचते रहो कबीरा गुनाहों से जिनकी तुम्हें मुमानअ़त है (फ़ा94) तो तुम्हारे और गुनाह (फ़ा95) हम बख़्श देंगे और तुम्हें इ़ज़्ज़त की जगह दाख़िल करेंगे।(31) और उसकी आरज़ू न करो जिससे अल्लाह ने तुम में एक को दूसरे पर बड़ाई दी (फ़ा96) मर्दों के लिए उनकी कमाई से हिस्सा है और औरतों के लिए उनकी कमाई से हिस्सा (फ़ा97) और अल्लाह से उसका फ़ज़्ल मांगो

(फ़ा87) अम्बिया व सालिहीन की (फ़ा88) और हराम में मुब्तला होकर उन्हीं की तरह हो जाओ (फ़ा89) और अपने फ़ज़्ल से अहकाम सहल करे (फ़ा90) उसको औरतों से और शहवात से सब्र दुश्वार है हदीस में है सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया औरतों में भलाई नहीं और उनकी तरफ़ से सब्र भी नहीं हो सकता नेकों पर वह ग़ालिब आती हैं बद उन पर ग़ालिब आ जाते हैं। (फ़ा91) चोरी ख़ियानत, ग़सब, जुवा, सूद, जितने हराम तरीक़े हैं सब नाहक़ हैं सब की मुमानअ़त है (फ़ा92) वह तुम्हारे लिए हलाल है (फ़ा93) ऐसे अफ़्आ़ल इख़्तियार करके जो दुनिया या अख़िरत में हलाकत का बाइस हों इसमें मुसलमानों को क़त्ल करना भी आ गया और मोमिन का क़त्ल ख़ुद अपना ही क़त्ल है क्योंकि तमाम मोमिन नफ़्से वाहिद की तरह हैं। **मसला:** इस आयत से ख़ुद कुशी की हुरमत भी साबित हुई और नफ़्स का इत्तेबाअ़ करके हराम में मुबतला होना भी अपने आप को हलाक करना है (फ़ा94) और जिन पर वईद आई यानी वादए अ़ज़ाब दिया गया मिस्ल क़त्ल ज़िना चोरी वग़ैरह के (फ़ा95) सग़ायर **मसला:** कुफ़्र व शिर्क तो न बख़्शा जाएगा अगर आदमी उसी पर मरा (अल्लाह की पनाह) बाक़ी तमाम गुनाह सग़ीरा हों या कबीरा अल्लाह की मशीयत में हैं चाहे उन पर अज़ाब करे चाहे माफ़ फ़रमाये (फ़ा96) ख़्वाह दुनिया की जेहत से या दीन की कि आपस में हसद व बुग़्ज़ न पैदा हो हसद निहायत बुरी सिफ़त है हसद वाला दूसरे को अच्छे हाल में देखता है तो अपने लिए उसकी ख़्वाहिश करता है और साथ में यह भी चाहता है कि उसका भाई इस निअ़मत से महरूम हो जाये यह ममनूअ़ है बन्दे को चाहिये कि अल्लाह की तक़दीर पर राज़ी रहे उसने जिस बन्दे को **(बक़िया सफ़हा 169 पर)**

إِنَّ اللّٰهَ كَانَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمًا ﴿٣٢﴾ وَلِكُلٍّ جَعَلْنَا مَوَالِيَ مِمَّا تَرَكَ الْوَالِدٰنِ وَالْاَقْرَبُوْنَ ۚ وَالَّذِيْنَ عَقَدَتْ اَيْمَانُكُمْ فَاٰتُوْهُمْ نَصِيْبَهُمْ ۚ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ
عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ شَهِيْدًا ﴿٣٣﴾ اَلرِّجَالُ قَوّٰمُوْنَ عَلَى النِّسَآءِ بِمَا فَضَّلَ اللّٰهُ بَعْضَهُمْ عَلٰى بَعْضٍ وَّبِمَآ اَنْفَقُوْا مِنْ اَمْوَالِهِمْ ۚ فَالصّٰلِحٰتُ
قٰنِتٰتٌ حٰفِظٰتٌ لِّلْغَيْبِ بِمَا حَفِظَ اللّٰهُ ۚ وَالّٰتِيْ تَخَافُوْنَ نُشُوْزَهُنَّ فَعِظُوْهُنَّ وَاهْجُرُوْهُنَّ فِي الْمَضَاجِعِ وَاضْرِبُوْهُنَّ ۚ فَاِنْ اَطَعْنَكُمْ فَلَا تَبْغُوْا
عَلَيْهِنَّ سَبِيْلًا ۚ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ عَلِيًّا كَبِيْرًا ﴿٣٤﴾ وَاِنْ خِفْتُمْ شِقَاقَ بَيْنِهِمَا فَابْعَثُوْا حَكَمًا مِّنْ اَهْلِهٖ وَحَكَمًا مِّنْ اَهْلِهَا ۚ اِنْ يُّرِيْدَآ اِصْلَاحًا
يُّوَفِّقِ اللّٰهُ بَيْنَهُمَا ۚ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ عَلِيْمًا خَبِيْرًا ﴿٣٥﴾ وَاعْبُدُوا اللّٰهَ وَلَا تُشْرِكُوْا بِهٖ شَيْئًا وَّبِالْوَالِدَيْنِ اِحْسَانًا وَّبِذِي الْقُرْبٰى وَالْيَتٰمٰى وَالْمَسٰكِيْنِ

इन्नल्ला–ह का–न बिकुल्लि शैइन् अ़लीमा(32)व लिकुल्लिन् ज–अ़ल्ना मवालि–य मिम्मा त– र–कल्वालिदानि वल्–अक़्रबू–न वल्लज़ी–न अ़–क–दत् ऐमानुकुम् फ़–आतूहुम् नसी–बहुम् इन्नल्ला–ह का–न अ़ला कुल्लि शैइन् शहीदा(33)अर्रिजालु क़व्वामू–न अ़लन्निसा–इ बिमा फ़ज़्ज़लल्लाहु बअ्–ज़हुम् अ़ला बअ्ज़िंव्–व बिमा अन्फ़कू मिन् अम्वालिहिम् फ़स्सालिहातु क़ानि–तातुन् हाफ़िज़ातुल् लिल्ग़ैबि बिमा हफ़िज़ल्लाहु वल्लाती तख़ाफू–न नुशू–ज़ हुन्–न फ़अ़िज़ू हुन्–न वह्जुरू हुन्–न फ़िल्मज़ाजिअि वज़्रिबू हुन्–न फ़–इन् अ–तअ्–नकुम् फ़ला तब्ग़ू अ़लैहिन्–न सबीलन् इन्नल्ला–ह का–न अ़लिय्यन् कबीरा(34)व इन् ख़िफ़्तुम् शिक़ा–क़ बैनिहिमा फ़ब्अ़सू ह़–क–मम् मिन् अह्लिही व ह़–क–मम् मिन् अह्लिहा इंय्युरीदा इस्लाहंय्यु–वफ़्फ़िक़िल्लाहु बै–नहुमा इन्नल्ला–ह का–न अ़लीमन् ख़बीरा(35)वअ्–बुदुल्ला–ह व ला तुश्रिकू बिही शैअंव्–व बिल्वालिदैनि इह्सानंव्–व बि ज़िल्क़ुर्बा वल्–यतामा वल्–मसाकीनि

बेशक अल्लाह सब कुछ जानता है।(32) और हमने सबके लिए माल के मुस्तहिक़ बना दिये हैं जो कुछ छोड़ जायें मां, बाप और क़राबत वाले और वह जिनसे तुम्हारा हलफ़ बंध चुका (फ़ा98) उन्हें उनका हिस्सा दो बेशक हर चीज़ अल्लाह के सामने है।(33) (रुकूअ़ 2) मर्द अफ़्सर हैं औरतों पर (फ़ा99) इसलिए कि अल्लाह ने उनमें एक को दूसरे पर फ़ज़ीलत दी (फ़ा100) और इसलिए कि मर्दों ने उनपर अपने माल ख़र्च किये (फ़ा101) तो नेक बख़्त औरतें अदब वालियां हैं ख़ाविन्द के पीछे हिफ़ाज़त रखती हैं (फ़ा102) जिस तरह अल्लाह ने हिफ़ाज़त का हुक्म दिया और जिन औरतों की ना-फ़रमानी का तुम्हें अन्देशा हो (फ़ा103) तो उन्हें समझाओ और उनसे अलग सोओ और उन्हें मारो (फ़ा104) फिर अगर वह तुम्हारे हुक्म में आ जायें तो उनपर ज़्यादती की कोई राह न चाहो बेशक अल्लाह बुलन्द बड़ा है।(34)(फ़ा105) और अगर तुमको मियां बीबी के झगड़े का ख़ौफ़ हो (फ़ा106) तो एक पंच मर्द वालों की तरफ़ से भेजो और एक पंच औरत वालों की तरफ़ से (फ़ा107) यह दोनों अगर सुलह कराना चाहेंगे तो अल्लाह उनमें मेल कर देगा बेशक अल्लाह जानने वाला ख़बरदार है।(35) (फ़ा108) और अल्लाह की बन्दगी करो और उसका शरीक किसी को न ठहराओ (फ़ा109) और मां, बाप से भलाई करो (फ़ा110) और रिश्तेदारों (फ़ा111) और यतीमों और मोहताजों (फ़ा112)

(फ़ा98) इससे अ़क़्दे मवालात मुराद है उसकी सूरत यह है कि कोई मजहूलुन्नसब शख़्स दूसरे से यह कहे कि तू मेरा मौला है मैं मर जाऊं तो तू मेरा वारिस होगा और मैं कोई जिनायत करूं तो तुझे दियत देनी होगी दूसरा कहे मैं ने क़बूल किया इस सूरत में यह अ़क़्द सही हो जाता है और क़बूल करने वाला वारिस बन जाता है और दियत भी उस पर आ जाती है और दूसरा भी उसी की तरह से मजहूलुन्नसब हो और ऐसा ही कहे और यह भी क़बूल करले तो उनमें से हर एक दूसरे का वारिस और उसकी दियत का ज़िम्मेदार होगा यह अ़क़्द साबित है सहाबा रज़ियल्लाहु अ़न्हुम इसके क़ायल हैं (फ़ा99) तो औरतों को उनकी इताअ़त लाज़िम है और मर्दों को हक़ है कि वह औरतों पर रिआ़या की तरह हुक्मरानी करें और उनके मसालेह और तदाबीर और तादीब व हिफ़ाज़त की सर अंजाम देही करें। **शाने नुज़ूलः** हज़रत सअ़द बिन रबीअ़ ने अपनी बीबी हबीबा को किसी ख़ता पर एक तमांचा मारा उनके वालिद उन्हें सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की ख़िदमत में ले गए और उनके शौहर की शिकायत की इस बाब में यह आयत नाज़िल हुई (फ़ा100) यानी मर्दों को औरतों पर अ़क़्ल व दानाई और जिहाद और नबुव्वत व ख़िलाफ़त व इमामत व अज़ान व ख़ुतबा व जमाअ़त व जुमा व तकबीर व तशरीक़ और हुदूद व क़िसास की शहादत के और वरसा में दूने हिस्से और तअ़सीब और निकाह व तलाक़ के मालिक होने और नसबों के उनकी तरफ़ निस्बत किये जाने और नमाज़ व रोज़ा के कामिल तौर पर **(बक़िया सफ़हा 169 पर)**

وَالْجَارِ ذِی الْقُرْبٰی وَالْجَارِ الْجُنُبِ وَالصَّاحِبِ بِالْجَنْۢبِ وَابْنِ السَّبِیْلِ ۙ وَمَا مَلَكَتْ اَیْمَانُكُمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَا یُحِبُّ مَنْ كَانَ مُخْتَالًا فَخُوْرَا ۟ۙ
الَّذِیْنَ یَبْخَلُوْنَ وَیَاْمُرُوْنَ النَّاسَ بِالْبُخْلِ وَیَكْتُمُوْنَ مَاۤ اٰتٰىهُمُ اللّٰهُ مِنْ فَضْلِهٖ ؕ وَاَعْتَدْنَا لِلْكٰفِرِیْنَ عَذَابًا مُّهِیْنًا ۟ۚ وَالَّذِیْنَ یُنْفِقُوْنَ
اَمْوَالَهُمْ رِئَآءَ النَّاسِ وَلَا یُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَلَا بِالْیَوْمِ الْاٰخِرِ ؕ وَمَنْ یَّكُنِ الشَّیْطٰنُ لَهٗ قَرِیْنًا فَسَآءَ قَرِیْنًا ۟ وَمَاذَا عَلَیْهِمْ لَوْ اٰمَنُوْا بِاللّٰهِ
وَالْیَوْمِ الْاٰخِرِ وَاَنْفَقُوْا مِمَّا رَزَقَهُمُ اللّٰهُ ؕ وَكَانَ اللّٰهُ بِهِمْ عَلِیْمًا ۟ اِنَّ اللّٰهَ لَا یَظْلِمُ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ ۚ وَاِنْ تَكُ حَسَنَةً یُّضٰعِفْهَا وَیُؤْتِ مِنْ لَّدُنْهُ
اَجْرًا عَظِیْمًا ۟ فَكَیْفَ اِذَا جِئْنَا مِنْ كُلِّ اُمَّةٍۭ بِشَهِیْدٍ وَّجِئْنَا بِكَ عَلٰی هٰۤؤُلَآءِ شَهِیْدًا ۟ؕ یَوْمَىِٕذٍ یَّوَدُّ الَّذِیْنَ كَفَرُوْا وَعَصَوُا الرَّسُوْلَ لَوْ تُسَوّٰی بِهِمُ الْاَرْضُ ؕ

वल्जारि ज़िल्कुर्बा वल्–जारिल्–जुनुबि वस्साहिबि बिल् जम्बि वब्निस्सबीलि व मा म–ल–कत् ऐमानुकुम् इन्नल्ला–ह ला युहिब्बु मन् का–न मुख़्तालन् फ़ख़ूरा(36)अल्लज़ी–न यब्ख़लू–न व यअ्मुरूनन्ना–स बिल्बुख़्लि व यक्तुमू–न मा आताहुमुल्लाहु मिन् फ़ज़्लिही व अअ्–तद्ना लिल्का–फ़िरी–न अ़ज़ाबम् मुहीना(37)वल्लज़ी–न युन्फ़िकू–न अम्वा–लहुम् रिआ–अन्नासि व ला युअ्मिनू–न बिल्लाहि व ला बिल्यौमिल् आख़िरि व मंय्य–कुनिश्–शैतानु लहू क़रीनन् फ़सा–अ क़रीना(38)व माज़ा अ़लैहिम् लौ आ–मनू बिल्लाहि वल्यौमिल् आख़िरि व अन्फ़कू मिम्मा र–ज़–क़हुमुल्लाहु व कानल्लाहु बिहिम् अ़लीमा(39)इन्नल्ला–ह ला यज़्लिमु मिस्क़ा–ल ज़र्रतिन् व इन् तकु ह–स–नतंय्युज़ाअि़फ़्हा व युअ्ति मिल्लदुन्हु अज्रन् अ़ज़ीमा(40)फ़कै–फ़ इज़ा जिअ्ना मिन् कुल्लि उम्मतिम् बि–शहीदिंव्–व जिअ्ना बि–क अ़ला हा उलाइ शहीदा(41)यौ–म–इज़िंय्यवद्दुल् लज़ी–न क–फ़रू व अ़–स–वुर्रसू–ल लौ तुसव्वा बिहिमुल्अर्ज़ु

और पास के हमसाए और दूर के हमसाए (फ़ा113) और करवट के साथी (फ़ा114) और रहागीर (फ़ा115) और अपनी बांदी गुलाम से (फ़ा116) बेशक अल्लाह को खुश नहीं आता कोई इतराने वाला बड़ाई मारने वाला।(36) (फ़ा117) जो आप बुख़्ल करें और औरों से बुख़्ल के लिए कहें (फ़ा118) और अल्लाह ने जो उन्हें अपने फ़ज़्ल से दिया है उसे छुपायें (फ़ा119) और काफ़िरों के लिए हमने ज़िल्लत का अ़ज़ाब तैयार कर रखा है।(37) और वह जो अपने माल लोगों के दिखावे को ख़रचते हैं (फ़ा120) और ईमान नहीं लाते अल्लाह और न क़ियामत पर और जिसका मुसाहिब शैतान हुआ (फ़ा121) तो कितना बुरा मुसाहिब है।(38)और उनका क्या नक़सान था अगर ईमान लाते अल्लाह और क़ियामत पर और अल्लाह के दिये में से उसकी राह में ख़र्च करते (फ़ा122) और अल्लाह उनको जानता है(39) अल्लाह एक ज़र्रा भर ज़ुल्म नहीं फ़रमाता और अगर कोई नेकी हो तो उसे दूनी करता और अपने पास से बड़ा सवाब देता है।(40)तो कैसी होगी जब हम हर उम्मत से एक गवाह लायें (फ़ा123) और ऐ महबूब तुम्हें उन सब पर गवाह और निगहबान बनाकर लायें।(41)(फ़ा124) उस दिन तमन्ना करेंगे वह जिन्होंने कुफ़्र किया और रसूल की ना–फ़रमानी की काश उन्हें मिट्टी में दबा कर ज़मीन बराबर कर दी जाये

(फ़ा113) सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि जिबरील मुझे हमेशा हमसायों के साथ एहसान करने की ताकीद करते रहे इस हद तक कि गुमान होता था कि उसको वारिस क़रार दें (बुख़ारी व मुस्लिम) (फ़ा114) यानी बीबी जो सोहबत में रहे या रफ़ीके सफ़र हो या साथ पढ़े या मजलिस व मस्जिद में बराबर बैठे (फ़ा115) और मुसाफ़िर व मेहमान हदीस जो अल्लाह और रोज़े क़ियामत पर ईमान रखे उसे चाहिए कि मेहमान का इकराम करे। (बुख़ारी व मुस्लिम) (फ़ा116) कि उन्हें उनकी ताक़त से ज़्यादा न दो और सख़्त कलामी न करो और खाना कपड़ा बक़द्रे ज़रूरत दो। हदीस रसूले अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि ने फ़रमाया जन्नत में बद ख़ुल्क़ दाख़िल न होगा (तिर्मिज़ी) (फ़ा117) मुतकब्बिर खुद बीन जो रिश्तादारों और हमसायों को ज़लील समझे। (फ़ा118) बुख़्ल यह है कि खुद खाये दूसरे को न दे शुह़ यह है कि न खाये न खिलाये। सख़ा यह है कि खुद भी खाये और दूसरों को भी खिलाये। जूद यह है कि आप न खाये दूसरों को खिलाये। **शाने नुज़ूलः** यह आयत यहूद के हक़ में नाज़िल हुई जो सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की सिफ़त बयान करने में बुख़्ल करते और छुपाते थे मसला इससे मालूम हुआ कि इल्म को छुपाना मज़मूम है। (फ़ा119) हदीस शरीफ़ में है कि अल्लाह को पसन्द है कि बन्दे पर उसकी निअ़मत ज़ाहिर हो **मसलाः** अल्लाह की निअ़मत का इज़्हार इख़्लास के साथ हो तो यह भी शुक्र है और इस लिए आदमी को अपनी हैसियत के लायक़ जायज़ लिबासों में बेहतर पहनना मुस्तहब है (फ़ा120) बुख़्ल के बाद सरफ़े बेजा की बुराई बयान फ़रमाई जो लोग महज़ नुमूद व नुमाईश और नाम आवरी के लिए ख़र्च करते हैं और रज़ाए **(बक़िया सफ़हा 153 पर)**

وَلَا يَكْتُمُونَ اللّٰهَ حَدِيْثًا ﴿٤٢﴾ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَقْرَبُوا الصَّلٰوةَ وَاَنْتُمْ سُكٰرٰى حَتّٰى تَعْلَمُوْا مَا تَقُوْلُوْنَ وَلَا جُنُبًا اِلَّا عَابِرِىْ سَبِيْلٍ حَتّٰى
تَغْتَسِلُوْا ؕ وَاِنْ كُنْتُمْ مَّرْضٰۤى اَوْ عَلٰى سَفَرٍ اَوْ جَآءَ اَحَدٌ مِّنْكُمْ مِّنَ الْغَآئِطِ اَوْ لٰمَسْتُمُ النِّسَآءَ فَلَمْ تَجِدُوْا مَآءً فَتَيَمَّمُوْا صَعِيْدًا طَيِّبًا فَامْسَحُوْا
بِوُجُوْهِكُمْ وَاَيْدِيْكُمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ عَفُوًّا غَفُوْرًا ﴿٤٣﴾ اَلَمْ تَرَ اِلَى الَّذِيْنَ اُوْتُوْا نَصِيْبًا مِّنَ الْكِتٰبِ يَشْتَرُوْنَ الضَّلٰلَةَ وَيُرِيْدُوْنَ اَنْ تَضِلُّوا السَّبِيْلَ ﴿٤٤﴾
وَاللّٰهُ اَعْلَمُ بِاَعْدَآئِكُمْ ؕ وَكَفٰى بِاللّٰهِ وَلِيًّا ۙ وَّكَفٰى بِاللّٰهِ نَصِيْرًا ﴿٤٥﴾ مِنَ الَّذِيْنَ هَادُوْا يُحَرِّفُوْنَ الْكَلِمَ عَنْ مَّوَاضِعِهٖ وَيَقُوْلُوْنَ سَمِعْنَا وَعَصَيْنَا
وَاسْمَعْ غَيْرَ مُسْمَعٍ وَّرَاعِنَا لَيًّا بِاَلْسِنَتِهِمْ وَطَعْنًا فِى الدِّيْنِ ؕ وَلَوْ اَنَّهُمْ قَالُوْا سَمِعْنَا وَاَطَعْنَا وَاسْمَعْ وَانْظُرْنَا لَكَانَ خَيْرًا لَّهُمْ وَاَقْوَمَ ۙ وَلٰكِنْ

व ला यक्तुमूनल्ला–ह ह़दीस़ा(42)या अय्युहल्लज़ी–न आ–मनू ला तक़्रबुस़्–स़ला–त व अन्तुम् सुकारा ह़त्ता तअ़्–लमू मा तकूलू–न व ला जुनुबन् इल्ला आ़बिरी सबीलिन् ह़त्ता तग़्तसिलू व इन् कुन्तुम् मर्ज़ा औ अ़ला स–फ़रिन् औ जा–अ अ–ह़दुम् मिन्कुम् मिन–ल्ग़ाइति औ ला–मस्तुमुन्निसा–अ फ़–लम् तजिदू मा–अन् फ़–त–यम्–ममू सअ़ीदन् तय्यिबन् फ़म्सहू बि–वुजूहिकुम् व ऐदीकुम् इन्नल्ला–ह का–न अ़फ़ुव्वन् ग़फ़ूरा(43)अ–लम् त–र इलल्लज़ी–न ऊतू नसीबम् मिनल्किताबि यश्तरूनज़्ज़ला–ल–त व युरीदू–न अन् तज़िल्लुस्सबील(44)वल्लाहु अअ़्–लमु बि–अअ़्–दाइकुम् व कफ़ा बिल्लाहि वलिय्यंव्–व कफ़ा बिल्लाहि नसीरा(45) मिनल्लज़ी–न हादू युहर्रिफ़ूनल्–कलि–म अ़म्मवाज़िअ़िही व यकूलू–न समिअ़्–ना व अ़सैना वस्मअ़्–ग़ै–र मुस्मअ़िंव्–व राअ़िना लय्यम् बि–अल्सि–नतिहिम् व तअ़्–नन् फ़िद्दीनि व लौ अन्नहुम् कालू समिअ़्–ना व अतअ़्–ना वस्मअ़् वन्ज़ुर्ना लका–न ख़ैरल्लहुम् व अक़्व–म व लाकिल्ल–

और कोई बात अल्लाह से न छुपा सकेंगे।(42) (फ़ा125) (रुकूअ़ 3) ऐ ईमान वालो नशे की हालत में नमाज़ के पास न जाओ (फ़ा126) जब तक इतना होश न हो कि जो कहो उसे समझो और न नापाकी की हालत में बे नहाये मगर मुसाफ़िरी में (फ़ा127) और अगर तुम बीमार हो (फ़ा128) या सफ़र में या तुम में से कोई क़ज़ाए हाजत से आया (फ़ा129) या तुमने औरतों को छुआ (फ़ा130) और पानी न पाया (फ़ा131) तो पाक मिट्टी से तयम्मुम करो (फ़ा132) तो अपने मुंह और हाथों का मसह करो (फ़ा133) बेशक अल्लाह माफ़ करने वाला बख़्शने वाला है।(43) क्या तुमने उन्हें न देखा जिनको किताब से एक हिस्सा मिला (फ़ा134) गुमराही मोल लेते हैं (फ़ा135) और चाहते हैं (फ़ा136) कि तुम भी राह से बहक जाओ।(44) और अल्लाह ख़ूब जानता है तुम्हारे दुश्मनों को (फ़ा137) और अल्लाह काफ़ी है वाली (फ़ा138) और अल्लाह काफ़ी है मददगार।(45) कुछ यहूदी कलामों को उनकी जगह से फेरते हैं (फ़ा139) और (फ़ा140) कहते हैं हमने सुना और न माना और (फ़ा141) सुनिये आप सुनाये न जायें (फ़ा142) और राइना कहते हैं (फ़ा143) ज़बानें फेर कर (फ़ा144) और दीन में तअ़ना के लिए (फ़ा145) और अगर वह(फ़ा146) कहते हैं कि हमने सुना और माना और हुज़ूर हमारी बात सुनें और हुज़ूर हम पर नज़र फ़रमायें तो उनके लिए भलाई और रास्ती में ज़्यादा होता लेकिन उन पर तो

(फ़ा125) क्योंकि जब वह अपनी ख़ता से मुकरेंगे और क़सम खाकर कहेंगे कि हम मुशरिक न थे और हमने ख़ता न की थी तो उनके मुंहों पर मोहर लगा दी जाएगी और उनके आज़ा व जवारेह को गोयाई दी जाएगी वह उनके ख़िलाफ़ शाहदत देंगे (फ़ा126) **शाने नुज़ूलः** हज़रत अ़ब्दुर्रहमान बिन औ़फ़ ने एक जमाअ़ते सहाबा की दावत की उस में खाने के बाद शराब पेश की गई बाज़ों ने पी क्योंकि उस वक़्त तक शराब हराम न हुई थी फिर मग़रिब की नमाज़ पढ़ी इमाम नशा में *कुल् या अय्युहल् काफ़िरू–न अअ़्बुदु मा तअ़्बुदू–न व अन्तुम् आ़बिदू–न मा अअ़्बुद* पढ़ गए और दोनों जगह *ला* तर्क कर दिया और नशा में ख़बर न हुई और माना फ़ासिद हो गए उस पर यह आयत नाज़िल हुई और उन्हें नशा की हालत में नमाज़ पढ़ने से मना फ़रमा दिया गया तो मुसलमानों ने नमाज़ के औक़ात में शराब तर्क कर दी उसके बाद शराब बिल्कुल हराम कर दी गई मसला इससे साबित हुआ कि आदमी नशा की हालत में कलमए कुफ़्र ज़बान पर लाने से काफ़िर नहीं होता इस लिए कि *कुल् या अय्युल् काफ़िरून* में दोनों जगह *ला* का तर्क कुफ़्र है लेकिन इस हालत में हुज़ूर ने उस पर कुफ़्र का हुक्म न फ़रमाया बल्कि कुरआन पाक में उनको *या अय्युहल्लज़ी–न आ–मनू* से ख़िताब फ़रमाया गया (फ़ा127) जब कि पानी न पाओ तयम्मुम कर लो। (फ़ा128) और पानी का इस्तेमाल ज़रर करता हो (फ़ा129) यह किनाया है बे वुज़ू होने से (फ़ा130) यानी जिमाअ़ किया (फ़ा131) उसके इस्तेमाल **(बक़िया सफ़हा 170 पर)**

لَعَنَهُمُ اللّٰهُ بِكُفْرِهِمْ فَلَا يُؤْمِنُوْنَ اِلَّا قَلِيْلًا ۝ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ اٰمِنُوْا بِمَا نَزَّلْنَا مُصَدِّقًا لِّمَا مَعَكُمْ مِّنْ قَبْلِ اَنْ نَّطْمِسَ
وُجُوْهًا فَنَرُدَّهَا عَلٰٓى اَدْبَارِهَآ اَوْ نَلْعَنَهُمْ كَمَا لَعَنَّآ اَصْحٰبَ السَّبْتِ ؕ وَكَانَ اَمْرُ اللّٰهِ مَفْعُوْلًا ۝ اِنَّ اللّٰهَ لَا يَغْفِرُ اَنْ يُّشْرَكَ بِهٖ وَيَغْفِرُ مَا دُوْنَ
ذٰلِكَ لِمَنْ يَّشَآءُ ۚ وَمَنْ يُّشْرِكْ بِاللّٰهِ فَقَدِ افْتَرٰٓى اِثْمًا عَظِيْمًا ۝ اَلَمْ تَرَ اِلَى الَّذِيْنَ يُزَكُّوْنَ اَنْفُسَهُمْ ؕ بَلِ اللّٰهُ يُزَكِّيْ مَنْ يَّشَآءُ وَلَا يُظْلَمُوْنَ فَتِيْلًا ۝
اُنْظُرْ كَيْفَ يَفْتَرُوْنَ عَلَى اللّٰهِ الْكَذِبَ ؕ وَكَفٰى بِهٖٓ اِثْمًا مُّبِيْنًا ۝ اَلَمْ تَرَ اِلَى الَّذِيْنَ اُوْتُوْا نَصِيْبًا مِّنَ الْكِتٰبِ يُؤْمِنُوْنَ بِالْجِبْتِ وَالطَّاغُوْتِ
وَيَقُوْلُوْنَ لِلَّذِيْنَ كَفَرُوْا هٰٓؤُلَآءِ اَهْدٰى مِنَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا سَبِيْلًا ۝ اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ لَعَنَهُمُ اللّٰهُ ؕ وَمَنْ يَّلْعَنِ اللّٰهُ فَلَنْ تَجِدَ لَهٗ نَصِيْرًا ۝

अ़–न हुमुल्लाहु बिकुफ़्रिहिम् फ़ला युअ्– मिनू–न इल्ला क़लीला(46)या अय्युहल्–लज़ी–न ऊतुलकिता– ब आमिनू बिमा नज़्ज़ल्ना मुसद्दिक़ल्लिमा म–अ़कुम् मिन् क़ब्लि अन्नत़्मि–स वुजूहन् फ़–नरुद्दहा अ़ला अद्बारिहा औ नल्–अ़–नहुम् कमा ल–अ़न्ना अस्हाबस्सब्ति व का–न अम्रुल्लाहि मफ़्अ़ूला(47)इन्नल्ला–ह ला यग्फ़िरु अंय्युश्र–क बिही व यग्फ़िरु मा दू–न ज़ालि–क लि–मंय्यशाउ व मंय्युश्रिक् बिल्लाहि फ़–क़दिफ़्तरा इस्मन् अ़ज़ीमा(48)अ–लम् त–र इलल्ल–ज़ी–न युज़क्कू–न अन्फ़ु–सहुम् बलिल्लाहु युज़क्की मंय्यशाउ व लायुज़्लमू–न फ़तीला(49)उन्ज़ुर् कै–फ़ यफ़्तरू–न अ़–लल्लाहिल् कज़ि–ब व कफ़ा बिही इस्मम् मुबीना(50)अ–लम् त–र इलल्लज़ी–न ऊतू नसीबम्–मिनल् किताबि युअ्मिनू–न बिल्जिब्ति वत्ताग़ूति व यक़ूलू–न लिल्लज़ी–न क–फ़रू हा–उलाइ अह्दा मिनल्ल–ज़ी–न आ–मनू सबीला(51)उला–इ कल्लज़ी–न ल–अ़–नहुमुल्लाहु व मंय्यल्–अ़निल्लाहु फ़–लन् तजि–द लहू नसीरा(52)

अल्लाह ने लानत की उनके कुफ़्र के सबब तो यक़ीन नहीं रखते मगर थोड़ा।(46) (फ़ा147) ऐ किताब वालो ईमान लाओ उस पर जो हमने उतारा तुम्हारे साथ वाली किताब (फ़ा148) की तस्दीक़ फ़रमाता क़ब्ल इसके कि हम बिगाड़ दें कुछ मुंहों को (फ़ा149) तो उन्हें फेर दें उनकी पीठ की तरफ़ या उन्हें लानत करें जैसी लानत की हफ़्ता वालों पर (फ़ा150) और ख़ुदा का हुक्म होकर रहे।(47) बेशक अल्लाह उसे नहीं बख़्शता कि उसके साथ कुफ़्र किया जाये और कुफ़्र से नीचे जो कुछ है जिसे चाहे माफ़ फ़रमा देता है (फ़ा151) और जिसने ख़ुदा का शरीक ठहराया उसने बड़े गुनाह का तूफ़ान बांधा।(48) क्या तुमने उन्हें न देखा जो ख़ुद अपनी सुथराई बयान करते हैं (फ़ा152) बल्कि अल्लाह जिसे चाहे सुथरा करे और उनपर ज़ुल्म न होगा दानए-ख़ुर्मा के डोरे बराबर।(49) (फ़ा153) देखो कैसा अल्लाह पर झूट बांध रहे हैं (फ़ा154) और यह काफ़ी है सरीह़ गुनाह।(50) (रुकूअ़ 4) क्या तुमने वह न देखे जिन्हें किताब का एक हिस्सा मिला ईमान लाते हैं बुत और शैतान पर और काफ़िरों को कहते हैं कि ये मुसलमानों से ज़्यादा राह पर हैं।(51) यह हैं जिन पर अल्लाह ने लानत की और जिसे ख़ुदा लानत करे तो हरगिज़ उसका कोई यार न पायेगा।(52) (फ़ा155)

(फ़ा147) इतना कि अल्लाह ने उन्हें पैदा किया और रोज़ी दी और इस क़दर काफ़ी नहीं जब तक कि तमाम ईमानियात को न मानें और सबकी तस्दीक़ न करें (फ़ा148) तौरेत (फ़ा149) आंख, नाक, अबरू वग़ैरह नक़्शा मिटा कर (फ़ा150) इन दोनों बातों में से एक ज़रूर लाज़िम है और लानत तो उन पर ऐसी पड़ी कि दुनिया उन्हें मलऊन कहती है यहां मुफ़स्सिरीन के चन्द अक़्वाल हैं बाज़ इस वईद का वुक़ूअ़ दुनिया में बताते हैं बाज़ आख़िरत में बाज़ कहते हैं कि लानत हो चुकी और वईद वाक़ेअ़ हो गई बाज़ कहते हैं अभी इन्तेज़ार है बाज़ का क़ौल है कि यह वईद उस सूरत में थी जबकि यहूद में से कोई ईमान न लाता और चूंकि बहुत से यहूद ईमान ले आये इस लिए शर्त नहीं पाई गई और वईद उठ गई। हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन सलाम जो आज़म उलमाए यहूद से हैं उन्होंने मुल्के शाम से वापस आते हुए राह में यह आयत सुनी और अपने घर पहुंचने से पहले इस्लाम लाकर सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुए और अर्ज़ किया या रसूलल्लाह मैं नहीं ख़्याल करता था कि मैं अपना मुंह पीठ की तरफ़ फिर जाने से पहले और चेहरा का नक़्शा मिट जाने से क़ब्ल आपकी ख़िदमत में हाज़िर हो सकूंगा यानी इस ख़ौफ़ से उन्होंने ईमान लाने में जल्दी की क्योंकि तौरेत शरीफ़ से उन्हें आपके रसूले बरहक़ होने का यक़ीनी इल्म था इसी ख़ौफ़ से हज़रत कअ़्ब अह़बार जो उलमाए यहूद में बड़ी मंज़िलत रखते थे हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अ़न्हु से यह आयत सुनकर मुसलमान हो गए (फ़ा151) माना यह हैं कि जो कुफ़्र पर मरे उसकी बख़्शिश नहीं उस के लिए हमेशगी का अ़ज़ाब है और जिसने कुफ़्र न किया हो वह ख़्वाह कितना ही गुनहगार मुरतकिबे कबायर हो और बे तौबा भी मर जाये तो उसके लिए **(बक़िया सफ़हा 170 पर)**

اَمۡ لَهُمۡ نَصِيۡبٌ مِّنَ الۡمُلۡكِ فَاِذًا لَّا يُؤۡتُوۡنَ النَّاسَ نَقِيۡرًا ۙ﴿۵۳﴾ اَمۡ يَحۡسُدُوۡنَ النَّاسَ عَلٰى مَاۤ اٰتٰٮهُمُ اللّٰهُ مِنۡ فَضۡلِهٖ‌ۚ فَقَدۡ اٰتَيۡنَاۤ اٰلَ
اِبۡرٰهِيۡمَ الۡكِتٰبَ وَالۡحِكۡمَةَ وَاٰتَيۡنٰهُمۡ مُّلۡكًا عَظِيۡمًا ﴿۵۴﴾ فَمِنۡهُمۡ مَّنۡ اٰمَنَ بِهٖ وَمِنۡهُمۡ مَّنۡ صَدَّ عَنۡهُ‌ ؕ وَكَفٰى بِجَهَنَّمَ سَعِيۡرًا ﴿۵۵﴾ اِنَّ الَّذِيۡنَ كَفَرُوۡا
بِاٰيٰتِنَا سَوۡفَ نُصۡلِيۡهِمۡ نَارًا ؕ كُلَّمَا نَضِجَتۡ جُلُوۡدُهُمۡ بَدَّلۡنٰهُمۡ جُلُوۡدًا غَيۡرَهَا لِيَذُوۡقُوا الۡعَذَابَ‌ ؕ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ عَزِيۡزًا حَكِيۡمًا ﴿۵۶﴾ وَالَّذِيۡنَ اٰمَنُوۡا وَعَمِلُوا
الصّٰلِحٰتِ سَنُدۡخِلُهُمۡ جَنّٰتٍ تَجۡرِىۡ مِنۡ تَحۡتِهَا الۡاَنۡهٰرُ خٰلِدِيۡنَ فِيۡهَاۤ اَبَدًا‌ ؕ لَهُمۡ فِيۡهَاۤ اَزۡوَاجٌ مُّطَهَّرَةٌ‌ وَّنُدۡخِلُهُمۡ ظِلًّا ظَلِيۡلًا ﴿۵۷﴾ اِنَّ اللّٰهَ
يَاۡمُرُكُمۡ اَنۡ تُؤَدُّوا الۡاَمٰنٰتِ اِلٰٓى اَهۡلِهَا ۙ وَاِذَا حَكَمۡتُمۡ بَيۡنَ النَّاسِ اَنۡ تَحۡكُمُوۡا بِالۡعَدۡلِ‌ ؕ اِنَّ اللّٰهَ نِعِمَّا يَعِظُكُمۡ بِهٖ‌ ؕ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ سَمِيۡعًا

अम् लहुम् नसी–बुम्–मिनल्मुल्कि फ–इज़ल्ला युअ्तूनन्ना–स नक़ीरा(53)अम् यह्सुदूनन्ना–स अ़ला मा आताहुमु–ल्लाहु मिन् फ़ज़्लिही फ–क़द् आतैना आ–ल इब्राहीमल् किता–ब वल्–हिक्म–त व आतैनाहुम् मुल्कन् अ़ज़ीमा(54)फ़मिन्हुम् मन् आ–म–न बिही व मिन्हुम् मन् सद्–द अ़न्हु व कफ़ा बि–जहन्न–म सअ़ीरा(55)इन्नल्लज़ी–न क–फ़रू बिआयातिना सौ–फ़ नुस्लीहिम् नारन् कुल्लमा नज़ि–जत् जुलूदुहुम् बद्दल्लाहुम् जुलूदन् गै–रहा लि–यज़ूक़ुल् अ़ज़ा–ब इन्नल्ला–ह का–न अ़ज़ीज़न् हकीमा(56)वल्लज़ी–न आ–मनू व अ़मिलुस्–सालिहाति सनुदख़िलुहुम् जन्नातिन् तज्री मिन् तह्तिहल् अन्हारु ख़ालि–दी–न फ़ीहा अ–ब–दन् लहुम् फ़ीहा अज़्वाजुम् मुतह्ह–रतुंव् व नुदख़ि–लुहुम् ज़िल्लन् ज़लीला(57)इन्नल्ला–ह यअ्मुरुकुम् अन् तुअद्–दुल् अमानाति इला अह्लिहा व इज़ा ह–कम्तुम् बैनन्नासि अन् तह्कुमू बिल्–अ़दलि इन्नल्ला–ह निअ़िम्मा यअ़िज़ुकुम् बिही इन्नल्ला–ह का–न समीअ़म्

क्या मुल्क में उनका कुछ हिस्सा है (फ़ा156) ऐसा हो तो लोगों को तिल भर न दें।(53) या लोगों से हसद करते हैं (फ़ा157) उस पर जो अल्लाह ने उन्हें अपने फ़ज़्ल से दिया (फ़ा158) तो हमने तो इब्राहीम की औलाद को किताब और हिकमत अता फ़रमाई और उन्हें बड़ा मुल्क दिया।(54) (फ़ा159) तो उनमें कोई उस पर ईमान लाया (फ़ा160) और किसी ने उससे मुंह फेरा(फ़ा161) और दोज़ख़ काफ़ी है भड़कती आग।(55) (फ़ा162) जिन्होंने हमारी आयतों का इन्कार किया अन्क़रीब हम उनको आग में दाख़िल करेंगे जब कभी उनकी खालें पक जायेंगी हम उनके सिवा और खालें उन्हें बदल देंगे कि अ़ज़ाब का मज़ा लें बेशक अल्लाह ग़ालिब हिकमत वाला है।(56) और जो लोग ईमान लाये और अच्छे काम किये अन्क़रीब हम उन्हें बाग़ों में ले जायेंगे जिनके नीचे नहरें रवां उनमें हमेशा रहेंगे उनके लिए वहां सुथरी बीबियां हैं (फ़ा163) और हम उन्हें वहां दाख़िल करेंगे जहां साया ही साया होगा।(57)(फ़ा164) बेशक अल्लाह तुम्हें हुक्म देता है कि अमानतें जिनकी हैं उन्हें सपुर्द करो (फ़ा165) और यह कि जब तुम लोगों में फ़ैसला करो तो इन्साफ़ के साथ फ़ैसला करो (फ़ा166) बेशक अल्लाह तुम्हें क्या ही ख़ूब नसीहत फ़रमाता है बेशक अल्लाह सुनता

(फ़ा156) यहूद कहते थे कि हम मुल्क व नबुव्वत के ज़्यादा हक़दार हैं तो हम कैसे अरबों का इत्तेबाअ़ करें अल्लाह तआ़ला ने उनके इस दावे को झुठला दिया कि उनका मुल्क में हिस्सा ही क्या है और अगर बिलफ़र्ज़ कुछ होता तो उनका बुख़्ल इस दर्जा का है कि (फ़ा157) नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम और अहले ईमान से (फ़ा158) नबुव्वत व नुसरत व ग़लबा व इज़्ज़त वग़ैरह निअ़मतें। (फ़ा159) जैसा कि हज़रत यूसुफ़ और हज़रत दाऊद अ़लैहिमुस्सलाम को तो फिर अगर अपने हबीब सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम पर करम किया तो उससे क्यों जलते और हसद करते हो (फ़ा160) जैसे कि हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन सलाम और उनके साथ वाले सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम पर ईमान लाये (फ़ा161) और ईमान से महरूम रहा (फ़ा162) उसके लिए जो सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम पर ईमान न लाये (फ़ा163) जो हर नजासत व गन्दगी और क़ाबिले नफ़रत चीज़ से पाक हैं (फ़ा164) यानी सायए जन्नत जिसकी राहत व आसाइश रसाईए फ़हम व इहातए बयान से बाला तर है (फ़ा165) असहाबे अमानात और हुक्काम को अमानतें दियानतदारी के साथ हक़दार को अदा करने और फ़ैसलों में इंसाफ़ करने का हुक्म दिया। बाज़ मुफ़स्सिरीन का क़ौल है कि फ़राइज़ भी अल्लाह तआ़ला की अमानतें हैं उनकी अदा भी इस हुक्म में दाख़िल है (फ़ा166) फ़रीक़ैन में से असलन किसी की रिआ़यत न हो उलमा ने फ़रमाया कि हाकिम को चाहिए कि पांच बातों में फ़रीक़ैन के साथ बराबर सुलूक करे (1) अपने पास आने में जैसे एक को मौक़ा दे दूसरे को भी दे **(बक़िया सफ़हा 171 पर)**

بَصِيْرًا ﴿٥٨﴾ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اَطِيْعُوا اللّٰهَ وَاَطِيْعُوا الرَّسُوْلَ وَاُولِي الْاَمْرِ مِنْكُمْ ۚ فَاِنْ تَنَازَعْتُمْ فِيْ شَيْءٍ فَرُدُّوْهُ اِلَى اللّٰهِ وَالرَّسُوْلِ

اِنْ كُنْتُمْ تُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ ۚ ذٰلِكَ خَيْرٌ وَّاَحْسَنُ تَاْوِيْلًا ﴿٥٩﴾ اَلَمْ تَرَ اِلَى الَّذِيْنَ يَزْعُمُوْنَ اَنَّهُمْ اٰمَنُوْا بِمَاۤ اُنْزِلَ اِلَيْكَ وَمَاۤ اُنْزِلَ

مِنْ قَبْلِكَ يُرِيْدُوْنَ اَنْ يَّتَحَاكَمُوْۤا اِلَى الطَّاغُوْتِ وَقَدْ اُمِرُوْۤا اَنْ يَّكْفُرُوْا بِهٖ ۚ وَيُرِيْدُ الشَّيْطٰنُ اَنْ يُّضِلَّهُمْ ضَلٰلًا بَعِيْدًا ﴿٦٠﴾ وَاِذَا قِيْلَ لَهُمْ تَعَالَوْا

اِلٰى مَاۤ اَنْزَلَ اللّٰهُ وَاِلَى الرَّسُوْلِ رَاَيْتَ الْمُنٰفِقِيْنَ يَصُدُّوْنَ عَنْكَ صُدُوْدًا ﴿٦١﴾ فَكَيْفَ اِذَاۤ اَصَابَتْهُمْ مُّصِيْبَةٌ ۢ بِمَا قَدَّمَتْ اَيْدِيْهِمْ ثُمَّ جَآءُوْكَ

يَحْلِفُوْنَ ۖ بِاللّٰهِ اِنْ اَرَدْنَاۤ اِلَّاۤ اِحْسَانًا وَّتَوْفِيْقًا ﴿٦٢﴾ اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ يَعْلَمُ اللّٰهُ مَا فِيْ قُلُوْبِهِمْ ۚ فَاَعْرِضْ عَنْهُمْ وَعِظْهُمْ وَقُلْ لَّهُمْ

बसीरा(58)या अय्यु–हल्लज़ी–न आ–मनू अतीउल्ला–ह व अतीउर्रसू–ल व उलिल्–अम्रि मिन्कुम् फ़–इन् तनाज़अ्–तुम् फ़ी शैइन् फ़रुद्दूहु इलल्लाहि वर्रसूलि इन् कुन्तुम् तुअ्मिनू–न बिल्लाहि वल्–यौमिल् आख़िरि ज़ालि–क ख़ैरुंव्–व अह्सनु तावीला(59)अलम् त–र इलल्लज़ी–न यज़्अुमू–न अन्नहुम् आ–मनू बिमा उन्ज़ि–ल इलै–क व मा उन्ज़ि–ल मिन् क़ब्लि–क युरीदू–न अंय्य–तहा–कमू इल–त्तागूति व क़द् उमिरू अंय्यक्फ़ुरू बिही व युरीदुश्शैतानु अंय्युज़िल्–लहुम् ज़लालम्–बअीदा(60)व इज़ा क़ी–ल लहुम् तआलौ इला मा अन्ज़लल्लाहु व इलर्रसूलि रऐतल्–मुनाफ़िक़ी–न यसुद्दू–न अन्–क सुदूदा(61)फ़कै–फ़ इज़ा असा–बत्हुम् मुसी–बतुम् बिमा क़द्द–मत् ऐदीहिम् सुम्–म जाऊ–क यह्लिफ़ू–न बिल्लाहि इन् अ–रद्ना इल्ला इह्सानंव्–व तौफ़ीक़ा(62) उलाइ–कल्लज़ी–न यअ्–लमुल्लाहु मा फ़ी क़ुलूबिहिम् फ़–अअ्रिज़् अन्हुम् व अिज़्हुम् व क़ुल्–लहुम्

देखता है।(58) ऐ ईमान वालो हुक्म मानो अल्लाह का और हुक्म मानो रसूल का (फ़ा167) और उनका जो तुम में हुकूमत वाले हैं(फ़ा168) फिर अगर तुम में किसी बात का झगड़ा उठे तो उसे अल्लाह और रसूल के हुज़ूर रुजूअ् करो अगर अल्लाह और क़ियामत पर ईमान रखते हो(फ़ा169) यह बेहतर है और उसका अंजाम सबसे अच्छा।(59)(रुकूअ् 5) क्या तुम ने उन्हें देखा जिनका दावा है कि वह ईमान लाये उस पर जो तुम्हारी तरफ़ उतरा और उस पर जो तुम से पहले उतरा फिर चाहते हैं कि शैतान को अपना पंच बनायें और उनको तो हुक्म यह था कि उसे असलन न मानें और इबलीस यह चाहता है कि उन्हें दूर बहका दे।(60)(फ़ा170)और जब उनसे कहा जाये कि अल्लाह की उतारी किताब और रसूल की तरफ़ आओ तो तुम देखोगे कि मुनाफ़िक़ तुमसे मुंह मोड़ कर फिर जाते हैं।(61) कैसी होगी जब उनपर कोई उफ़्ताद पड़े(फ़ा171)बदला उसका जो उनके हाथों ने आगे भेजा(फ़ा172)फिर ऐ महबूब तुम्हारे हुज़ूर हाज़िर हों अल्लाह की क़सम खाते कि हमारा मक़सूद तो भलाई और मेल ही था।(62)(फ़ा173) उनके दिलों की तो बात अल्लाह जानता है तो तुम उनसे चश्म पोशी करो और उन्हें समझाओ और उनके

(फ़ा167) कि रसूल की इताअ़त अल्लाह ही की इताअ़त है बुख़ारी व मुस्लिम की हदीस है सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया जिसने मेरी इताअ़त की उसने अल्लाह की इताअ़त की और जिसने मेरी नाफ़रमानी की उसने अल्लाह की नाफ़रमानी की (फ़ा168) उसी हदीस में हुज़ूर फ़रमाते हैं जिसने अमीर की इताअ़त की उसने मेरी इताअ़त की और जिसने अमीर की नाफ़रमानी की उसने मेरी नाफ़रमानी की इस आयत से साबित हुआ कि मुस्लिम उमरा व हुक्काम की इताअ़त वाजिब है जब तक वह हक़ के मुवाफ़िक़ रहें और अगर हक़ के ख़िलाफ़ हुक्म करें तो उनकी इताअ़त नहीं (फ़ा169) इस आयत से मालूम हुआ कि अहकाम तीन क़िस्म के हैं एक वह जो ज़ाहिर किताब यानी क़ुरआन से साबित हों एक वह जो ज़ाहिर हदीस से एक वह जो क़ुरआन व हदीस की तरफ़ बतरीक़े क़ियास रुजूअ् करने से उलिल अमूर में इमाम अमीर बादशाह हाकिम क़ाज़ी सब दाख़िल हैं ख़िलाफ़ते कामिला तो ज़मानए रिसालत के बाद तीस साल रही मगर ख़िलाफ़ते नाक़िसा ख़ुलफ़ाए अ़ब्बासिया में थी और अब तो इमामत भी नहीं पाई जाती क्योंकि इमाम के लिए क़ुरैश में से होना शर्त है और यह बात अक्सर मक़ामात में मअ़दूम है। लेकिन सल्तनत व इमारत बाक़ी है और चूंकि सुल्तान व अमीर भी उलिल अम्र में दाख़िल हैं इसलिए हम पर उनकी इताअ़त भी लाज़िम है। (फ़ा170) शाने नुज़ूलः बिश्र नामी एक मुनाफ़िक़ का एक यहूदी से झगड़ा था यहूदी ने कहा चलो सय्यदे आलम मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से तय करा लें। मुनाफ़िक़ ने ख़्याल किया था कि हुज़ूर तो बे रिआयत महज़ हक़ फ़ैसला देंगे उसका मतलब हासिल न होगा इस लिए उसने बावजूद मुद्दईए ईमान होने के यह कहा कि कअ़ब बिन अशरफ़ यहूदी को पंच बनाओ (क़ुरआन करीम में तागूत से उस कअ़ब बिन अशरफ़ के पास फ़ैसला ले जाना मुराद है) यहूदी जानता था कि कअ़ब रिश्वत ख़्वार है इस लिए उसने बावजूद हम मज़हब होने के **(बक़िया सफ़हा 171 पर)**

فِيْٓ اَنْفُسِهِمْ قَوْلًا بَلِيْغًا ۝ وَمَآ اَرْسَلْنَا مِنْ رَّسُوْلٍ اِلَّا لِيُطَاعَ بِاِذْنِ اللّٰهِ ؕ وَلَوْ اَنَّهُمْ اِذْ ظَّلَمُوْٓا اَنْفُسَهُمْ جَآءُوْكَ فَاسْتَغْفَرُوا اللّٰهَ وَاسْتَغْفَرَ لَهُمُ الرَّسُوْلُ

لَوَجَدُوا اللّٰهَ تَوَّابًا رَّحِيْمًا ۝ فَلَا وَرَبِّكَ لَا يُؤْمِنُوْنَ حَتّٰى يُحَكِّمُوْكَ فِيْمَا شَجَرَ بَيْنَهُمْ ثُمَّ لَا يَجِدُوْا فِيْٓ اَنْفُسِهِمْ حَرَجًا مِّمَّا قَضَيْتَ وَيُسَلِّمُوْا تَسْلِيْمًا ۝

وَلَوْ اَنَّا كَتَبْنَا عَلَيْهِمْ اَنِ اقْتُلُوْٓا اَنْفُسَكُمْ اَوِ اخْرُجُوْا مِنْ دِيَارِكُمْ مَّا فَعَلُوْهُ اِلَّا قَلِيْلٌ مِّنْهُمْ ؕ وَلَوْ اَنَّهُمْ فَعَلُوْا مَا يُوْعَظُوْنَ بِهٖ لَكَانَ خَيْرًا لَّهُمْ وَاَشَدَّ

تَثْبِيْتًا ۝ وَّاِذًا لَّاٰتَيْنٰهُمْ مِّنْ لَّدُنَّآ اَجْرًا عَظِيْمًا ۝ وَّلَهَدَيْنٰهُمْ صِرَاطًا مُّسْتَقِيْمًا ۝ وَمَنْ يُّطِعِ اللّٰهَ وَالرَّسُوْلَ فَاُولٰٓئِكَ مَعَ الَّذِيْنَ اَنْعَمَ اللّٰهُ عَلَيْهِمْ

مِّنَ النَّبِيّٖنَ وَالصِّدِّيْقِيْنَ وَالشُّهَدَآءِ وَالصّٰلِحِيْنَ ۚ وَحَسُنَ اُولٰٓئِكَ رَفِيْقًا ۝ ذٰلِكَ الْفَضْلُ مِنَ اللّٰهِ ؕ وَكَفٰى بِاللّٰهِ عَلِيْمًا ۝ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا خُذُوْا

फ़ी अन्फ़ु–सिहिम् क़ौलम् बलीग़ा(63)व मा अर्सल्ना मिर्रसूलिन् इल्ला लियुता–अ़ बि–इज़्निल्लाहि व लौ अन्नहुम् इज्–ज़–लमू अन्फ़ु–सहुम् जाऊ–क फ़स्तग़फ़रुल्ला–ह वस्तग़फ़–र लहु–मुर्रसूलु ल–व–जदुल्ला–ह तव्वाब–र्रह़ीमा(64)फ़ला व रब्बि–क ला युअ्मिनू–न ह़त्ता युह़क्किमू–क फ़ीमा श–ज–र बै–नहुम् सुम्–म ला यजिदू फ़ी अन्फ़ुसिहिम् ह़–र–जम् मिम्मा क़ज़ै–त व युसल्लिमू तस्लीमा (65)व लौ अन्ना क–तब्ना अ़लैहिम् अनिक़्तुलू अन्फ़ु–सकुम् अविख़्रुजू मिन् दियारिकुम् मा फ़–अ़लूहु इल्ला क़लीलुम् मिन्हुम् व लौ अन्नहुम् फ़–अ़लू मा यू–अ़ज़ू–न बिही लका–न ख़ैरल्लहुम् व अशद्–द तस्बीतंव्(66)व इज़ल्–ल–आतैनाहुम् मिल्लदुन्ना अजरन् अ़ज़ीमा(67)व ल–हदैनाहुम् स़िरातम् मुस्तक़ीमा(68)व मंय्युतिअ़िल्ला–ह वर्रसू–ल फ़उलाइ–क म–अ़ल्लज़ी–न अन्–अ़मल्लाहु अ़लैहिम् मिनन्नबिय्यीन वस्सिद्दीक़ी–न वश्शु–हदा–इ वस्सालिही–न व ह़सु–न उलाइ–क रफ़ीक़ा (69) ज़ालिकल्–फ़ज़्लु मिनल्लाहि व कफ़ा बिल्लाहि अ़लीमा(70)या अय्युहल्लज़ी–न आ–मनू ख़ुज़ू

मुआ़मले में उनसे रसा (असर करने वाली) बात कहो।(63) (फ़ा174) और हमने कोई रसूल न भेजा मगर इस लिए कि अल्लाह के हुकम से उसकी इताअ़त की जाये (फ़ा175) और अगर जब वह अपनी जानों पर ज़ुल्म करें (फ़ा176) तो ऐ महबूब तुम्हारे हुज़ूर हाज़िर हों और फिर अल्लाह से माफ़ी चाहें और रसूल उनकी शफ़ाअ़त फ़रमायें तो ज़रूर अल्लाह को बहुत तौबा क़बूल करने वाला मेहरबान पायें।(64) (फ़ा177) तो ऐ महबूब तुम्हारे रब की क़सम वह मुसलमान न होंगे जब तक अपने आपस के झगड़े में तुम्हें हाकिम न बनायें फिर जो कुछ तुम हुक्म फ़रमा दो अपने दिलों में उससे रुकावट न पायें और जी से मान लें।(65) (फ़ा178) और अगर हम उन पर फ़र्ज़ करते कि अपने आपको क़त्ल कर दो या अपने घर बार को छोड़ कर निकल जाओ (फ़ा179) तो उनमें थोड़े ही ऐसा करते और अगर वह करते जिस बात की उन्हें नसीहत दी जाती है (फ़ा180) तो उसमें उनका भला था और ईमान पर ख़ूब जमना।(66) और ऐसा होता तो ज़रूर हम उन्हें अपने पास से बड़ा सवाब देते।(67)और ज़रूर उन को सीधी राह की हिदायत करते।(68)और जो अल्लाह और उसके रसूल का हुक्म माने तो उसे उनका साथ मिलेगा जिन पर अल्लाह ने फ़ज़्ल किया यानी अम्बिया(फ़ा181)और सिद्दीक़(फ़ा182) और शहीद (फ़ा183) और नेक लोग (फ़ा184) यह क्या ही अच्छे साथी हैं।(69) यह अल्लाह का फ़ज़्ल है और अल्लाह काफ़ी है जानने वाला।(70) (रुकूअ़ 6) ऐ ईमान वालो होशियारी से काम लो (फ़ा185)

(फ़ा174) जो उनके दिल में असर कर जाये (फ़ा175) जब कि रसूल का भेजना ही इस लिए है कि वह मुताअ़ बनाये जायें और उनकी इताअ़त फ़र्ज़ हो तो जो उनके हुक्म से राज़ी न हो उसने रिसालत को तस्लीम न किया वह काफ़िर वाजिबुल क़त्ल है (फ़ा176) मअ़सियत व नाफ़रमानी करके। (फ़ा177) इससे मालूम हुआ कि बारगाहे इलाही में रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम का वसीला और आपकी शफ़ाअ़त कार बर-आरी का ज़रीआ़ है सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की वफ़ात शरीफ़ के बाद एक आराबी रौज़ए अक़दस पर हाज़िर हुआ और रौज़ा शरीफ़ा की ख़ाक अपने सर पर डाली और अर्ज़ करने लगा या रसूलल्लाह! जो आपने फ़रमाया हम ने सुना और जो आप पर नाज़िल हुआ उस में यह आयत भी है *व लौ अन्नहुम् इज़्–ज़–लमू* मैंने बेशक अपनी जान पर ज़ुल्म किया और मैं आपके हु.ज़ूर में अल्लाह से अपने गुनाह की बख़्शिश चाहने हाज़िर हुआ तो मेरे रब से मेरे गुनाह की बख़्शिश कराईये इस पर क़ब्र शरीफ़ से निदा आई कि तेरी बख़्शिश की गई इससे चन्द मसायल मालूम हुए मसलाः अल्लाह तआ़ला की बारगाह में अर्ज़े हाजत के लिए उसके मक़बूलों को वसीला बनाना ज़रीअ़ए कामयाबी है मसलाः क़ब्र पर हाजत के लिए जाना भी *जाउ–क* में दाख़िल और ख़ैरुल क़ुरून का **(बक़िया सफ़हा 171 पर)**

حِذْرَكُمْ فَانْفِرُوْا ثُبَاتٍ اَوِ انْفِرُوْا جَمِيْعًا ۝ وَاِنَّ مِنْكُمْ لَمَنْ لَّيُبَطِّئَنَّ ۚ فَاِنْ اَصَابَتْكُمْ مُّصِيْبَةٌ قَالَ قَدْ اَنْعَمَ اللّٰهُ عَلَيَّ اِذْ لَمْ اَكُنْ مَّعَهُمْ شَهِيْدًا ۝

وَلَئِنْ اَصَابَكُمْ فَضْلٌ مِّنَ اللّٰهِ لَيَقُوْلَنَّ كَاَنْ لَّمْ تَكُنْ بَيْنَكُمْ وَبَيْنَهٗ مَوَدَّةٌ يّٰلَيْتَنِيْ كُنْتُ مَعَهُمْ فَاَفُوْزَ فَوْزًا عَظِيْمًا ۝ فَلْيُقَاتِلْ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ

الَّذِيْنَ يَشْرُوْنَ الْحَيٰوةَ الدُّنْيَا بِالْاٰخِرَةِ ؕ وَمَنْ يُّقَاتِلْ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ فَيُقْتَلْ اَوْ يَغْلِبْ فَسَوْفَ نُؤْتِيْهِ اَجْرًا عَظِيْمًا ۝ وَمَا لَكُمْ لَا تُقَاتِلُوْنَ فِيْ

سَبِيْلِ اللّٰهِ وَالْمُسْتَضْعَفِيْنَ مِنَ الرِّجَالِ وَالنِّسَآءِ وَالْوِلْدَانِ الَّذِيْنَ يَقُوْلُوْنَ رَبَّنَآ اَخْرِجْنَا مِنْ هٰذِهِ الْقَرْيَةِ الظَّالِمِ اَهْلُهَا ۚ وَاجْعَلْ لَّنَا مِنْ لَّدُنْكَ

وَلِيًّا ۚ وَّاجْعَلْ لَّنَا مِنْ لَّدُنْكَ نَصِيْرًا ۝ اَلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا يُقَاتِلُوْنَ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ۚ وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا يُقَاتِلُوْنَ فِيْ سَبِيْلِ الطَّاغُوْتِ فَقَاتِلُوْٓا

हिज़्रकुम् फ़न्फ़िरू सुबातिन् अविन्फ़िरू जमीआ(71)व इन्–न मिन्कुम् ल–मल्–लयुब– त्तिअन्–न फ़–इन् अस़ाबत्कुम् मुसी–बतुन् का–ल क़द् अनअ–मल्लाहु अ़लय्–य इज़् लम् अकुम्–म–अ़हुम् शहीदा(72)व लइन् असा–बकुम् फ़ज़्लुम्–मिनल्लाहि ल–यक़ूलन्–न क–अंल्लम् तकुम् बै–नकुम् व बै–नहू मवद्दतुंय्यालै–तनी कुन्तु म–अ़हुम् फ़–अफ़ू–ज़ फ़ौज़न् अ़ज़ीमा(73)फ़ल्युक़ातिल् फ़ी सबीलिल्ला–हिल्–लज़ी–न यश्रूनल्–ह़यातद्–दुन्या बिल्आख़ि–रति व मंय्युक़ा–तिल् फ़ी सबीलिल्लाहि फ़युक़्तल् औ यग़्लिब् फ़सौ–फ़ नुअ्तीहि अज्रन् अज़ीमा(74)व मा लकुम् ला तुक़ातिलू–न फ़ी सबीलिल्लाहि वल्मुस्तज़्अफ़ी–न मिनर्रिजालि वन्निसाइ वल्विल्दानिल्लज़ी–न यक़ूलू–न रब्बना अख़्रिज्ना मिन् हाज़िहिल्–क़र्यतिज़्ज़ालिमि अह्लुहा वज्अ़ल्लना मिल्लदुन् –क वलिय्यंव् वज्अ़ल्–लना मिल्लदुन्–क नसीरा(75)अल्लज़ी–न आ–मनू युक़ा–तिलू–न फ़ी सबीलिल्लाहि वल्लज़ी–न क–फ़रू युक़ातिलू–न फ़ी सबीलित्ताग़ूति फ़क़ातिलू

फिर दुश्मन की तरफ़ थोड़े थोड़े होकर निकलो या इकट्ठे चलो।(71) और तुम में कोई वह है कि ज़रूर देर लगाएगा (फ़ा186) फिर अगर तुम पर कोई उफ़्ताद पड़े तो कहे ख़ुदा का मुझ पर एहसान था कि मैं उनके साथ हाज़िर न था। (72) और अगर तुम्हें अल्लाह का फ़ज़्ल मिले (फ़ा187) तो ज़रूर कहे (फ़ा188) गोया तुममें उसमें कोई दोस्ती न थी ऐ काश मैं उनके साथ होता तो बड़ी मुराद पाता।(73)तो उन्हें अल्लाह की राह में लड़ना चाहिए जो दुनिया की ज़िन्दगी बेच कर आख़िरत लेते हैं और जो अल्लाह की राह में लड़े फिर मारा जाये या ग़ालिब आये तो अन्क़रीब हम उसे बड़ा सवाब देंगे।(74) और तुम्हें क्या हुआ कि न लड़ो अल्लाह की राह में (फ़ा189) और कमज़ोर मर्दों और औरतों और बच्चों के वास्ते जो यह दुआ कर रहे हैं कि ऐ हमारे रब हमें इस बस्ती से निकाल जिसके लोग ज़ालिम हैं और हमें अपने पास से कोई हिमायती दे दे और हमें अपने पास से कोई मददगार देदे।(75) ईमान वाले अल्लाह की राह में लड़ते हैं (फ़ा190) और कुफ़्फ़ार शैतान की राह में लड़ते हैं तो शैतान के

(फ़ा186) यानी मुनाफ़िक़ीन (फ़ा187) तुम्हारी फतह हो और ग़नीमत हाथ आये (फ़ा188) वही जिसके म.कूला से यह साबित होता है कि (फ़ा189) यानी जिहाद फ़र्ज़ है और उसके तर्क का तुम्हारे पास कोई उ़ज़्र नहीं (फ़ा190) इस आयत में मुसलमानों को जिहाद की तरग़ीब दी गई ताकि वह उन कमज़ोर मुसलमानों को कुफ़्फ़ार के पन्जए ज़ुल्म से छुड़ायें जिन्हें मक्का मुकर्रमा में मुशरिकीन ने क़ैद कर लिया था और तरह तरह की ईज़ायें दे रहे थे और उनकी औरतों और बच्चों तक पर बे रहमाना मज़ालिम करते थे और वह लोग उनके हाथों में मजबूर थे इस हालत में वह अल्लाह तआला से अपनी ख़लासी और मददे इलाही की दुआ करते थे यह दुआ क़बूल हुई और अल्लाह तआ़ला ने अपने हबीब सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को उनका वली व नासिर किया और उन्हें मुशरिकीन के हाथों से छुड़ाया और मक्का मुकर्रमा फतह करके उनकी ज़बरदस्त मदद फ़रमाई।

(बक़िया सफ़हा 147 का) इलाही उन्हें मक़सूद नहीं होती जैसे मुशरिकीन व मुनाफ़िक़ीन यह भी उन्हीं के हुक्म में हैं जिनका हुक्म ऊपर गुज़र गया (फ़ा121) दुनिया व आख़िरत में दुनिया में तो इस तरह कि वह शैतानी काम करके उसको खुश करता रहा और आख़िरत में इस तरह कि हर काफ़िर एक शैतान के साथ आतिशी ज़न्जीर में जकड़ा हुआ होगा (ख़ाज़िन) (फ़ा122) इस में सरासर उनका नफ़ा ही था (फ़ा123) उस नबी को और वह अपनी उम्मत के ईमान व कुफ़्र व निफ़ाक़ और तमाम अफ़आल पर गवाही दें क्योंकि अम्बिया अपनी उम्मतों के अफ़आल से बा–ख़बर होते हैं (फ़ा124) कि तुम नबीयुल अम्बिया हो और सारा आलम तुम्हारी उम्मत

أَوْلِيَآءَ الشَّيْطٰنِ ۚ اِنَّ كَيْدَ الشَّيْطٰنِ كَانَ ضَعِيْفًا ﴿۷۶﴾ اَلَمْ تَرَ اِلَى الَّذِيْنَ قِيْلَ لَهُمْ كُفُّوْٓا اَيْدِيَكُمْ وَاَقِيْمُوا الصَّلٰوةَ وَاٰتُوا الزَّكٰوةَ ۚ فَلَمَّا كُتِبَ عَلَيْهِمُ
الْقِتَالُ اِذَا فَرِيْقٌ مِّنْهُمْ يَخْشَوْنَ النَّاسَ كَخَشْيَةِ اللّٰهِ اَوْ اَشَدَّ خَشْيَةً ۚ وَقَالُوْا رَبَّنَا لِمَ كَتَبْتَ عَلَيْنَا الْقِتَالَ ۚ لَوْلَآ اَخَّرْتَنَآ اِلٰٓى اَجَلٍ قَرِيْبٍ ؕ قُلْ
مَتَاعُ الدُّنْيَا قَلِيْلٌ ۚ وَالْاٰخِرَةُ خَيْرٌ لِّمَنِ اتَّقٰى ۫ وَلَا تُظْلَمُوْنَ فَتِيْلًا ﴿۷۷﴾ اَيْنَ مَا تَكُوْنُوْا يُدْرِكْكُّمُ الْمَوْتُ وَلَوْ كُنْتُمْ فِيْ بُرُوْجٍ مُّشَيَّدَةٍ ؕ وَاِنْ تُصِبْهُمْ
حَسَنَةٌ يَّقُوْلُوْا هٰذِهٖ مِنْ عِنْدِ اللّٰهِ ۚ وَاِنْ تُصِبْهُمْ سَيِّئَةٌ يَّقُوْلُوْا هٰذِهٖ مِنْ عِنْدِكَ ؕ قُلْ كُلٌّ مِّنْ عِنْدِ اللّٰهِ ؕ فَمَالِ هٰٓؤُلَآءِ الْقَوْمِ لَا يَكَادُوْنَ يَفْقَهُوْنَ حَدِيْثًا ﴿۷۸﴾
مَآ اَصَابَكَ مِنْ حَسَنَةٍ فَمِنَ اللّٰهِ ۫ وَمَآ اَصَابَكَ مِنْ سَيِّئَةٍ فَمِنْ نَّفْسِكَ ؕ وَاَرْسَلْنٰكَ لِلنَّاسِ رَسُوْلًا ؕ وَكَفٰى بِاللّٰهِ شَهِيْدًا ﴿۷۹﴾

औलि–याअश्–शैतानि इन्–न कैदश्शैतानि का–न ज़ईफ़ा(76)अलम् त–र इलल्लज़ी–न क़ी–ल लहुम् कुफ़्फू ऐदि–यकुम् व अक़ी–मुस्सला–त व आतुज़्ज़का–त फ़–लम्मा कुति–ब अलैहिमुल् क़ितालु इज़ा फ़रीक़ुम् मिन्हुम् यख़्शौ–नन्ना–स क–ख़श्यतिल्लाहि औ अशद्–द ख़श्य–तन् व क़ालू रब्बना लि–म क–तब्–त अलैनल्–क़िता–ल लौला अख़्ख़र्–तना इला अ–जलिन् क़रीबिन् क़ुल् मताउ–द्दुन्या क़लीलुन् वलआख़िरतु ख़ैरुल् लि–मनित्तक़ा व ला तुज़्लमू–न फ़तीला(77) ऐ–न मा तकूनू युदरिक्कुमुल्–मौतु व लौ कुन्तुम् फ़ी बुरूजिम्–मुशय्य–दतिन् व इन् तुसिब्हुम् ह–स–न–तुंय्–यक़ूलू हाज़िही मिन् अिन्दिल्लाहि व इन् तुसिब्हुम् सय्यि–अतुंय्–यक़ूलू हाजिही मिन् अिन्दि–क क़ुल् कुल्लुम् मिन् अिन्दिल्लाहि फ़मालि हाउला–इल्–क़ौमि ला यकादू–न यफ़्क़हू–न हदीसा(78)मा असा–ब–क मिन् ह–स–नतिन् फ़मिनल्लाहि व मा असा–ब–क मिन् सय्यि–अतिन् फ़मिन् नफ़्सि–क व अर्सल्ना–क लिन्नासि रसूलन् व कफ़ा बिल्लाहि शहीदा(79)

दोस्तों से (फ़ा191) लड़ो बेशक शैतान का दाव कमज़ोर है।(76) (फ़ा192) (रुकूअ़ 7) क्या तुमने उन्हें न देखा जिनसे कहा गया अपने हाथ रोक लो (फ़ा193) और नमाज़ क़ायम रखो और ज़कात दो फिर जब उन पर जिहाद फ़र्ज़ किया गया (फ़ा194) तो उनमें बअ़ज़े लोगों से ऐसा डरने लगे जैसे अल्लाह से डरें या उससे भी ज़ायद (फ़ा195) और बोले ऐ रब हमारे तूने हम पर जिहाद क्यों फ़र्ज़ कर दिया (फ़ा196) थोड़ी मुद्दत तक हमें और जीने दिया होता तुम फ़रमा दो कि दुनिया का बरतना थोड़ा है (फ़ा197) और डर वालों के लिए आख़िरत अच्छी और तुम पर तागे बराबर ज़ुल्म न होगा। (77) (फ़ा198) तुम जहां कहीं हो मौत तुम्हें आ लेगी(फ़ा199) अगरचे मज़बूत क़िलों में हो और उन्हें कोई भलाई पहुंचे (फ़ा200) तो कहें यह अल्लाह की तरफ़ से है और उन्हें कोई बुराई पहुंचे (फ़ा201)तो कहें यह हुज़ूर की तरफ़ से आई(फ़ा202) तुम फ़रमा दो सब अल्लाह की तरफ़ से है (फ़ा203) तो उन लोगों को क्या हुआ कोई बात समझते मालूम ही नहीं होते। (78) ऐ सुनने वाले तुझे जो भलाई पहुंचे वह अल्लाह की तरफ़ से है(फ़ा204)और जो बुराई पहुंचे वह तेरी अपनी तरफ़ से है(फ़ा205) और ऐ महबूब हमने तुम्हें सब लोगों के लिए रसूल भेजा (फ़ा206) और अल्लाह काफ़ी है गवाह।(79)(फ़ा207)

(फ़ा191) इअ़्लाए दीन और रज़ाए इलाही के लिए (फ़ा192) यानी काफ़िरों का और वह अल्लाह की मदद के मुक़ाबले में क्या चीज़ है (फ़ा193) क़िताल से। शाने नुज़ूलः मुशरिकीन मक्का मुकर्रमा में मुसलमानों को बहुत ईज़ायें देते थे हिजरत से क़ब्ल असहाबे रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की एक जमाअ़त ने हुज़ूर की ख़िदमत में अ़र्ज़ किया कि आप हमें काफ़िरों से लड़ने की इजाज़त दीजिये उन्होंने हमें बहुत सताया है और बहुत ईज़ायें देते हैं। हुज़ूर ने फ़रमाया कि उनके साथ जंग करने से हाथ रोको। नमाज़ और ज़कात जो तुम पर फ़र्ज़ है वह अदा करते रहो। फ़ायदाः इस से साबित हुआ कि नमाज़ व ज़कात जिहाद से पहले फ़र्ज़ हुईं (फ़ा194) मदीना तय्यबा में और बदर की हाज़िरी का हुक्म दिया गया (फ़ा195) यह ख़ौफ़ तबई था कि इंसान की जबिल्लत है कि मौत व हलाकत से घबराता और डरता है (फ़ा196) उसकी हिकमत क्या है यह सवाल वजहे हिकमत दरियाफ़्त करने के लिए था न बतरीक़े एतेराज़ इसी लिए उनको इस सवाल पर तौबीख़ व ज़जर न फ़रमाया गया बल्कि जवाब तस्कीन बख़्श अ़ता फ़रमा दिया गया (फ़ा197) ज़ायल व फ़ानी है (फ़ा198) और तुम्हारे अजूर कम न किये जायेंगे तो जिहाद में अन्देशा व तअम्मुल न करो। (फ़ा199) और उससे रिहाई पाने की कोई सूरत नहीं और जब मौत नागुज़ीर है तो बिस्तर पर मर जाने से राहे ख़ुदा में जान देना बेहतर है कि यह सआ़दते आख़िरत का सबब है (फ़ा200) अरज़ानी और कसरते पैदावार वग़ैरह की (फ़ा201) गिरानी क़हत साली वग़ैरह (फ़ा202) यह हाल मुनाफ़िक़ीन का है कि जब उनहें कोई सख़्ती **(बक़िया सफ़हा 172 पर)**

مَنْ يُّطِعِ الرَّسُوْلَ فَقَدْ اَطَاعَ اللّٰهَ ۚ وَمَنْ تَوَلّٰى فَمَآ اَرْسَلْنٰكَ عَلَيْهِمْ حَفِيْظًا ﴿٨٠﴾ وَيَقُوْلُوْنَ طَاعَةٌ ۡ فَاِذَا بَرَزُوْا مِنْ عِنْدِكَ بَيَّتَ طَآئِفَةٌ مِّنْهُمْ
غَيْرَ الَّذِىْ تَقُوْلُ ؕ وَاللّٰهُ يَكْتُبُ مَا يُبَيِّتُوْنَ ۚ فَاَعْرِضْ عَنْهُمْ وَتَوَكَّلْ عَلَى اللّٰهِ ؕ وَكَفٰى بِاللّٰهِ وَكِيْلًا ﴿٨١﴾ اَفَلَا يَتَدَبَّرُوْنَ الْقُرْاٰنَ ؕ وَلَوْ
كَانَ مِنْ عِنْدِ غَيْرِ اللّٰهِ لَوَجَدُوْا فِيْهِ اخْتِلَافًا كَثِيْرًا ﴿٨٢﴾ وَاِذَا جَآءَهُمْ اَمْرٌ مِّنَ الْاَمْنِ اَوِ الْخَوْفِ اَذَاعُوْا بِهٖ ؕ وَلَوْ رَدُّوْهُ اِلَى الرَّسُوْلِ وَاِلٰٓى اُولِى
الْاَمْرِ مِنْهُمْ لَعَلِمَهُ الَّذِيْنَ يَسْتَنْۢبِطُوْنَهٗ مِنْهُمْ ؕ وَلَوْلَا فَضْلُ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَتُهٗ لَاتَّبَعْتُمُ الشَّيْطٰنَ اِلَّا قَلِيْلًا ﴿٨٣﴾ فَقَاتِلْ فِىْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ۚ لَا
تُكَلَّفُ اِلَّا نَفْسَكَ وَحَرِّضِ الْمُؤْمِنِيْنَ ۚ عَسَى اللّٰهُ اَنْ يَّكُفَّ بَاْسَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا ؕ وَاللّٰهُ اَشَدُّ بَاْسًا وَّاَشَدُّ تَنْكِيْلًا ﴿٨٤﴾

मंय्युतिअिर्रसू–ल फ़–क़द अताअ़ल्ला–ह व मन् तवल्ला फ़मा अर्सल्ना–क अ़लैहिम् हफ़ीज़ा(80) व यक़ूलू–न ता–अ़तुन् फ़–इज़ा ब–रज़ू मिन् अ़िन्दि–क बय्य–त ताइ–फ़तुम् मिन्हुम् ग़ैरल्लज़ी तक़ूलु वल्लाहु यक्तुबु मा युबय्यितू–न फ़–अअ़्रिज़् अ़न्हुम् व त–वक्कल् अ़–लल्लाहि व कफ़ा बिल्लाहि वकीला(81)अ–फ़ला य–त–दब्बरूनल् क़ुरआ–न व लौ का–न मिन् अ़िन्दि ग़ैरिल्लाहि ल–व–जदू फ़ीहिख़्ति–लाफ़न् कसीरा(82)व इज़ा जा–अहुम् अम्रुम् मिनल् अम्नि अविल्ख़ौफ़ि अज़ाअ़ू बिही व लौ रद्दूहु इलर्रसूलि व इला उलिल् अम्रि मिन्हुम् ल–अ़लि–महुल्लज़ी–न यस्तम्बितू–नहू मिन्हुम् व लौ ला फ़ज़्लुल्लाहि अ़लैकुम् व रह़्मतुहू लत्तबअ़्–तुमुश्शैता–न इल्ला क़लीला(83)फ़क़ातिल् फ़ी सबी–लिल्लाहि ला तुकल्लफ़ु इल्ला नफ़्स–क व हर्रिज़िल्–मुअ्मिनी–न अ़सल्लाहु अंय्यकुफ़्–फ़ बअ्–सल्–लज़ी–न क–फ़रू वल्लाहु अशद्दु बअ्संव् व अशद्दु तन्कीला(84)

जिसने रसूल का हुक्म माना बेशक उसने अल्लाह का हुक्म माना (फ़ा208) और जिसने मुंह फेरा (फ़ा209) तो हमने तुम्हें उनके बचाने को न भेजा।(80) और कहते हैं हमने हुक्म माना (फ़ा210) फिर जब तुम्हारे पास से निकल कर जाते हैं तो उनमें एक गरोह जो कह गया था उसके ख़िलाफ़ रात को मनसूबे गांठता है और अल्लाह लिख रखता है उनके रात के मनसूबे (फ़ा211) तो ऐ महबूब तुम उनसे चश्म पोशी करो और अल्लाह पर भरोसा रखो और अल्लाह काफ़ी है काम बनाने को।(81) तो क्या ग़ौर नहीं करते क़ुरआन में (फ़ा212) और अगर वह ग़ैरे ख़ुदा के पास से होता तो ज़रूर उसमें बहुत इख़्तिलाफ़ पाते।(82) (फ़ा213) और जब उनके पास कोई बात इत्मीनान (फ़ा214) या डर (फ़ा215) की आती है उसका चर्चा कर बैठते हैं (फ़ा216) और अगर उसमें रसूल और अपने ज़ी इख़्तियार लोगों (फ़ा217) की तरफ़ रुजूअ़ लाते (फ़ा218) तो ज़रूर उनसे उसकी हक़ीक़त जान लेते यह जो बात में काविश करते हैं (फ़ा219) और अगर तुम पर अल्लाह का फ़ज़्ल (फ़ा220) और उसकी रहमत (फ़ा221) न होती तो ज़रूर तुम शैतान के पीछे लग जाते(83) (फ़ा222) मगर थोड़े।(फ़ा223) तो ऐ महबूब अल्लाह की राह में लड़ो (फ़ा224) तुम तकलीफ़ न दिये जाओगे मगर अपने दम की (फ़ा225) और मुसलमानों को आमादा करो (फ़ा226) क़रीब है कि अल्लाह काफ़िरों की सख़्ती रोक दे (फ़ा227) और अल्लाह की आंच (जंगी ताक़त) सबसे सख़्त तर है और उसका अ़ज़ाब सबसे कर्रा (सख़्त)।(84)

(फ़ा208) **शाने नुज़ूलः** रसूले करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया जिसने मेरी इताअ़त की उसने अल्लाह की इताअ़त की और जिसने मुझसे मुहब्बत की उसने अल्लाह से मुहब्बत की इस पर आजकल के गुस्ताख़ बद–दीनों की तरह उस ज़माने के बाज़ मुनाफ़िक़ों ने कहा कि मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम यह चाहतें हैं कि हम उन्हें रब मान लें। जैसा कि नसारा ने ईसा बिन मरियम को रब माना इस पर अल्लाह तआ़ला ने उनके रद में यह आयत नाज़िल फ़रमा कर अपने नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के कलाम की तस्दीक़ फ़रमा दी कि बेशक रसूल क़ी इताअ़त अल्लाह की इताअ़त है (फ़ा210) और आपकी इताअ़त से एअ़्राज़ किया (फ़ा२१०) **शाने नुज़ूलः** यह मुनाफ़िक़ीन के हक़ में नाज़िल हुई जो सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के हुज़ूर में ईमान व इताअ़त शेआ़री का इज़हार करते थे और कहते थे हम हुज़ूर पर ईमान लाये हैं हमने हुज़ूर की तस्दीक़ की है हुज़ूर जो हमें हुक्म फ़रमायें उसकी इताअ़त हम पर लाज़िम है। (फ़ा211) उनके आमाल नामों में और उसका उन्हें बदला देगा (फ़ा212) और उसके उ़लूम व हिकम को नहीं देखते कि उसने अपनी फ़साहत से तमाम ख़ल्क़ को आ़जिज़ कर दिया है और ग़ैबी ख़बरों से मुनाफ़िक़ीन के अहवाल और उनके मक्र व कैद का इफ़्शाए राज़ कर दिया और अव्वलीन व आख़िरीन की ख़बरें दी हैं (फ़ा213) और ज़मानए आईन्दा के मुतअ़ल्लिक़ ग़ैबी ख़बरें मुताबिक़ न **(बक़िया सफ़हा 172 पर)**

مَنْ يَّشْفَعْ شَفَاعَةً حَسَنَةً يَّكُنْ لَّهٗ نَصِيْبٌ مِّنْهَا ۚ وَمَنْ يَّشْفَعْ شَفَاعَةً سَيِّئَةً يَّكُنْ لَّهٗ كِفْلٌ مِّنْهَا ؕ وَكَانَ اللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ مُّقِيْتًا ﴿۸۵﴾ وَاِذَا حُيِّيْتُمْ بِتَحِيَّةٍ فَحَيُّوْا بِاَحْسَنَ مِنْهَاۤ اَوْ رُدُّوْهَا ؕ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ حَسِيْبًا ﴿۸۶﴾ اَللّٰهُ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ؕ لَيَجْمَعَنَّكُمْ اِلٰى يَوْمِ الْقِيٰمَةِ لَا رَيْبَ فِيْهِ ؕ وَمَنْ اَصْدَقُ مِنَ اللّٰهِ حَدِيْثًا ﴿۸۷﴾ فَمَا لَكُمْ فِي الْمُنٰفِقِيْنَ فِئَتَيْنِ وَاللّٰهُ اَرْكَسَهُمْ بِمَا كَسَبُوْا ؕ اَتُرِيْدُوْنَ اَنْ تَهْدُوْا مَنْ اَضَلَّ اللّٰهُ ؕ وَمَنْ يُّضْلِلِ اللّٰهُ فَلَنْ تَجِدَ لَهٗ سَبِيْلًا ﴿۸۸﴾ وَدُّوْا لَوْ تَكْفُرُوْنَ كَمَا كَفَرُوْا فَتَكُوْنُوْنَ سَوَآءً فَلَا تَتَّخِذُوْا مِنْهُمْ اَوْلِيَآءَ حَتّٰى يُهَاجِرُوْا فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ؕ فَاِنْ تَوَلَّوْا فَخُذُوْهُمْ وَاقْتُلُوْهُمْ حَيْثُ وَجَدْتُّمُوْهُمْ ۪ وَلَا تَتَّخِذُوْا مِنْهُمْ وَلِيًّا وَّلَا نَصِيْرًا ﴿۸۹﴾

मंय्यशफ़अ् शफ़ा–अ़तन् ह़–स–न–तंय्यकुल्लहू नसीबुम् मिन्हा व मंय्यशफ़अ् शफ़ा–अ़तन् सय्यि–अतंय्यकुल्लहू किफ़्लुम् मिन्हा व कानल्लाहु अ़ला कुल्लि शैइम्–मुक़ीता(85)व इज़ा हुय्यीतुम् बि–तहिय्यतिन् फ़हय्यू बिअह़्स–न मिन्हा औरुद्दूहा इन्नल्ला–ह का–न अ़ला कुल्लि शैइन् ह़सीबा (86)अल्लाहु ला इला–ह इल्ला हु–व ल–यजमअ़न्नकुम् इला यौमिल्क़िया–मति लारै–ब फ़ीहि व मन् अस्दक़ु मिनल्लाहि ह़दीसा(87)फ़मा लकुम् फ़िल्मुनाफ़िक़ी–न फ़ि–अतैनि वल्लाहु अर्–क–सहुम् बिमा क–सबू अतुरीदू–न अन् तह्दू मन् अ–ज़ल्लल्लाहु व मंय्युज़्लि–लिल्लाहु फ़–लन् तजि–द लहू सबीला(88)वद्दू लौ तक्फ़ुरू–न कमा क–फ़रू फ़–तकूनू–न सवाअन् फ़ला तत्तख़िज़ू मिन्हुम् औलिया–अ ह़त्ता युहाजिरू फ़ी सबीलिल्लाहि फ़इन् तवल्लौ फ़खुज़ूहुम् वक़्तुलूहुम् ह़ैसु वजत्तु– मूहुम् व ला तत्तख़िज़ू मिन्हुम् वलिय्यंव्–व ला नसीरा(89)

जो अच्छी सिफ़ारिश करे (फ़ा228) उसके लिए उसमें से हिस्सा है (फ़ा229) और जो बुरी सिफ़ारिश करे उसके लिए उसमें से हिस्सा है (फ़ा230) और अल्लाह हर चीज़ पर क़ादिर है।(85) और जब तुम्हें कोई किसी लफ़्ज़ से सलाम करे तो तुम उससे बेहतर लफ़्ज़ जवाब में कहो या वही कह दो बेशक अल्लाह हर चीज़ पर हिसाब लेने वाला है।(86)(फ़ा231) अल्लाह है कि उसके सिवा किसी की बन्दगी नहीं और वह ज़रूर तुम्हें इकट्ठा करेगा क़ियामत के दिन, जिसमें कुछ शक नहीं और अल्लाह से ज़्यादा किस की बात सच्ची।(87) (फ़ा232) (रुकूअ़ ८) तो तुम्हें क्या हुआ कि मुनाफ़िक़ों के बारे में दो फ़रीक़ हो गए (फ़ा233) और अल्लाह ने उन्हें औंधा कर दिया (फ़ा234) उनके कोतकों (करतूतों) के सबब (फ़ा235) क्या यह चाहते हो कि उसे राह दिखाओ जिसे अल्लाह ने गुमराह किया और जिसे अल्लाह गुमराह करे तो हरगिज़ तू उसके लिए कोई राह न पाएगा।(88) वह तो यह चाहते हैं कि कहीं तुम भी काफ़िर हो जाओ जैसे वह काफ़िर हुए तो तुम सब एक से हो जाओ तो उनमें किसी को अपना दोस्त न बनाओ (फ़ा236) जब तक अल्लाह की राह में घर बार न छोड़ें, (फ़ा237) फिर अगर वह मुंह फेरें (फ़ा238) तो उन्हें पकड़ो और जहां पाओ क़त्ल करो और उनमें किसी को न दोस्त ठहराओ न मददगार।(89)(फ़ा239)

(फ़ा228) किसी से किसी की कि उसको नफ़ा पहुंचाये या किसी मुसीबत व बला से ख़लास कराये और हो वह मुवाफ़िक़े शरअ़ तो (फ़ा229) अजर व जज़ा (फ़ा230) अ़ज़ाब व सज़ा। (फ़ा231) मसायले सलामः सलाम करना सुन्नत है और जवाब देना फ़र्ज़ और जवाब में अफ़ज़ल यह है कि सलाम करने वाले के सलाम पर कुछ बढ़ाये मसलन पहला शख़्स अस्सलामु अलैकुम कहे तो दूसरा शख़्स व अ़लैमुम अस्सलाम व रहमतुल्लाह कहे और अगर पहले ने व रहमतुल्लाह भी कहा था तो यह व बरकातुहू और बढ़ाये पस इससे ज़्यादा सलाम व जवाब में और कोई इज़ाफ़ा नहीं है काफ़िर गुमराह फ़ासिक़ और इस्तिन्जा करते मुसलमान को सलाम न करें। जो शख़्स खुतबा या तिलावते क़ुरआन या हदीस या मुज़ाकरए इल्म या अज़ान या तकबीर में मश्ग़ूल हो इस हाल में उनको सलाम न किया जाये और अगर कोई सलाम करे तो उन पर जवाब देना लाज़िम नहीं और जो शख़्स शतरंज, चौसर, ताश, गंजफ़ा वग़ैरह कोई नाजायज़ खेल खेल रहा हो या गाने बजाने में मश्ग़ूल हो या पाख़ाना या ग़ुस्ल ख़ाना में हो या बे उज़्र बरहना हो उसको सलाम न किया जाये। मसलाः आदमी जब अपने घर में दाख़िल हो तो बीबी को सलाम करे हिन्दुस्तान में यह बड़ी ग़लत रसम है कि ज़न व शौहर के इतने गहरे तअ़ल्लुक़ात होते हुए भी एक दूसरे को सलाम से महरूम करते हैं बावजूदेकि सलाम जिसको किया जाता है उस के लिए सलामती की दुआ है। मसलाः बेहतर सवारी वाला कमतर सवारी वाले को और कमतर सवारी वाला पैदल चलने वाले को और पैदल बैठे हुए को और छोटे बड़े को और थोड़े ज़्यादा को सलाम करें। (फ़ा232) यानी उससे ज़्यादा सच्चा कोई नहीं इस लिए कि उसका किज़्ब नामुमकिन व मुहाल है क्योंकि किज़्ब ऐब है और हर ऐब अल्लाह पर मुहाल है वह जुमला उयूब से पाक है (फ़ा233) शाने नुज़ूलः मुनाफ़िक़ीन की एक जमाअ़त सय्यदे आलम **(बक़िया सफ़हा 162 पर)**

إِلَّا الَّذِينَ يَصِلُونَ إِلَىٰ قَوْمٍ بَيْنَكُمْ وَبَيْنَهُم مِّيثَاقٌ أَوْ جَاءُوكُمْ حَصِرَتْ صُدُورُهُمْ أَن يُقَاتِلُوكُمْ أَوْ يُقَاتِلُوا قَوْمَهُمْ ۚ وَلَوْ شَاءَ اللَّهُ لَسَلَّطَهُمْ

عَلَيْكُمْ فَلَقَاتَلُوكُمْ ۚ فَإِنِ اعْتَزَلُوكُمْ فَلَمْ يُقَاتِلُوكُمْ وَأَلْقَوْا إِلَيْكُمُ السَّلَمَ فَمَا جَعَلَ اللَّهُ لَكُمْ عَلَيْهِمْ سَبِيلًا ۝٩٠ سَتَجِدُونَ آخَرِينَ

يُرِيدُونَ أَن يَأْمَنُوكُمْ وَيَأْمَنُوا قَوْمَهُمْ كُلَّمَا رُدُّوا إِلَى الْفِتْنَةِ أُرْكِسُوا فِيهَا ۚ فَإِن لَّمْ يَعْتَزِلُوكُمْ وَيُلْقُوا إِلَيْكُمُ السَّلَمَ وَيَكُفُّوا أَيْدِيَهُمْ

فَخُذُوهُمْ وَاقْتُلُوهُمْ حَيْثُ ثَقِفْتُمُوهُمْ ۚ وَأُولَٰئِكُمْ جَعَلْنَا لَكُمْ عَلَيْهِمْ سُلْطَانًا مُّبِينًا ۝٩١ وَمَا كَانَ لِمُؤْمِنٍ أَن يَقْتُلَ مُؤْمِنًا إِلَّا خَطَأً ۚ

وَمَن قَتَلَ مُؤْمِنًا خَطَأً فَتَحْرِيرُ رَقَبَةٍ مُّؤْمِنَةٍ وَدِيَةٌ مُّسَلَّمَةٌ إِلَىٰ أَهْلِهِ إِلَّا أَن يَصَّدَّقُوا ۚ فَإِن كَانَ مِن قَوْمٍ عَدُوٍّ لَّكُمْ وَهُوَ

इल्लल्लज़ी–न यसिलू–न इला क़ौमिम् बै–नकुम् व बै–नहुम् मीसाकुन् औ जाऊकुम् ह़सिरत् सुदूरुहुम् अंय्युक़ातिलूकुम् औ युक़ातिलू क़ौ–महुम् व लौ शा–अल्लाहु ल–सल्ल–त–हुम् अ़लैकुम् फ़–लक़ा–तलूकुम् फ़–इनिअ्–त–ज़लू कुम् फ़–लम् युक़ातिलूकुम् व अल्क़ौ इलैकुमुस्–स–ल–म फ़मा ज–अ–लल्लाहु लकुम् अ़लैहिम् सबीला(90)स–तजिदू–न आ–ख़री–न युरीदू–न अंय्यअ् मनूकुम् व यअ्–मनू क़ौ–महुम् कुल्लमा रुद्दू इललफ़ित्नति उर्किसू फ़ीहा फ़–इल्लम् यअ्–तज़िलू कुम् व युल्क़ू इलैकुमुस्स–ल–म व यकुफ़्फ़ू ऐदि–यहुम् फ़–ख़ुज़ूहुम् वक़्तुलूहुम् हैसु सक़िफ़्तुमूहुम् व उला–इकुम् ज–अ़ल्ना लकुम् अ़लैहिम् सुल्तानम्–मुबीना(91)व मा का–न लिमुअ्–मिनिन् अंय्यक़्तु–ल मुअ्मिनन् इल्ला ख़–त –अन् व मन् क़–त–ल मुअ्–मिनन् ख़–त–अन् फ़–तह़रीरु र–क़–बतिम् मुअ्मि–नतिंव् व दि–यतुम् मुसल्ल–मतुन् इला अह्लिही इल्ला अंय्यस्सद्दक़ू फ़इन् का–न मिन् क़ौमिन् अ़दुव्विल्लकुम् व हु–व

मगर वह जो ऐसी क़ौम से इलाक़ा रखते हैं कि तुम में उनमें मुआ़हिदा है (फ़ा240) या तुम्हारे पास यूं आये कि उनके दिलों में सकत न रही कि तुम से लड़ें (फ़ा241) या अपनी क़ौम से लड़ें (फ़ा242) और अल्लाह चाहता तो ज़रूर उन्हें तुम पर क़ाबू देता तो वह बेशक तुम से लड़ते (फ़ा243) फिर अगर वह तुमसे किनारा करें और न लड़ें और सुलह का पयाम डालें तो अल्लाह ने तुम्हें उन पर कोई राह न रखी।(90) (फ़ा244) अब कुछ और तुम ऐसे पाओगे जो यह चाहते हैं कि तुमसे भी अमान में रहें और अपनी क़ौम से भी अमान में रहें (फ़ा245) जब कभी उनकी क़ौम उन्हें फ़साद (फ़ा246) की तरफ़ फेरे तो उसपर औंधे गिरते हैं फिर अगर वह तुमसे किनारा न करें और (फ़ा247) सुलह की गर्दन न डालें और अपने हाथ न रोकें तो उन्हें पकड़ो और जहां पाओ क़त्ल करो और यह है जिन पर हमने तुम्हें सरीह इख़्तियार दिया।(91) (फ़ा248) (रुकूअ़ 9) और मुसलमानों को नहीं पहुंचता कि मुसलमान का ख़ून करे मगर हाथ बहक कर (फ़ा249) और जो किसी मुसलमान को नादानिस्ता क़त्ल करे तो उस पर एक मम्लूक मुसलमान का आज़ाद करना है और ख़ून बहा कि मक़तूल के लोगों को सुपुर्द की जाये (फ़ा250) मगर यह कि वह माफ़ करदें फिर अगर वह (फ़ा251) उस क़ौम से हो जो तुम्हारी दुश्मन है(फ़ा252) और ख़ुद

(फ़ा240) यह इस्तिस्ना क़त्ल की तरफ़ राजेअ़ है क्योंकि कुफ़्फ़ार व मुनाफ़िक़ीन के साथ मुवालात किसी हाल में जाइज़ नहीं और अहद से यह अहद मुराद है कि उस क़ौम को और जो उस क़ौम से जा मिले उसको अमन है जैसा कि सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने मक्का मुकर्रमा तशरीफ़ ले जाते वक़्त हिलाल बिन उवैमिर असलमी से मुआ़मला किया था (फ़ा241) अपनी क़ौम के साथ होकर (फ़ा242) तुम्हारे साथ होकर (फ़ा243) लेकिन अल्लाह तआ़ला ने उनके दिलों में रोअ़्ब डाल दिया और मुसलमानों को उनके शर से महफ़ूज़ रखा। (फ़ा244) कि तुम उनसे जंग करो बाज़ मुफ़स्सिरीन का क़ौल है कि यह हुक्म आयत उक़्तुलुल् मुश्रिकी–न हैसु व जद्दू तुमूहुम् से मन्सूख़ हो गया। (फ़ा245) शाने नुज़ूलः मदीना तय्यबा में क़बीला असद व ग़तफ़ान के लोग रियाअन कलिमए इस्लाम पढ़ते और अपने आपको मुसलमान ज़ाहिर करते और जब उनमें से कोई अपनी क़ौम से मिलता और वह लोग उन से कहते कि तुम किस चीज़ पर ईमान लाये तो वह लोग कहते कि बन्दरों बिच्छुओं वग़ैरह पर इस अन्दाज़ से उनका मतलब यह था कि दोनों तरफ़ से रस्मो राह रखें और किसी जानिब से उन्हें नुक़सान न पहुंचे यह लोग मुनाफ़िक़ीन थे उनके हक़ में यह आयत नाज़िल हुई (फ़ा246) शिर्क या मुसलमानों से जंग (फ़ा247) जंग से बाज़ आकर (फ़ा248) उनके कुफ़्र ग़दर और मुसलमानों की ज़रर रसानी के सबब। (फ़ा249) यानी मोमिन काफ़िर की मिस्ल मुबाहुद्दम नहीं है जिसका हुक्म ऊपर की आयत में मज़कूर हो चुका तो मुसलमान का क़त्ल करना बग़ैर हक़ के (बक़िया सफ़हा 169 पर)

مُؤْمِنٌ فَتَحْرِيْرُ رَقَبَةٍ مُّؤْمِنَةٍ ؕ وَاِنْ كَانَ مِنْ قَوْمٍ بَيْنَكُمْ وَ بَيْنَهُمْ مِّيْثَاقٌ فَدِيَةٌ مُّسَلَّمَةٌ اِلٰۤى اَهْلِهٖ وَتَحْرِيْرُ رَقَبَةٍ مُّؤْمِنَةٍ ۚ

فَمَنْ لَّمْ يَجِدْ فَصِيَامُ شَهْرَيْنِ مُتَتَابِعَيْنِ ۫ تَوْبَةً مِّنَ اللّٰهِ ؕ وَكَانَ اللّٰهُ عَلِيْمًا حَكِيْمًا ﴿۹۲﴾ وَمَنْ يَّقْتُلْ مُؤْمِنًا مُّتَعَمِّدًا فَجَزَآؤُهٗ جَهَنَّمُ خٰلِدًا

فِيْهَا وَغَضِبَ اللّٰهُ عَلَيْهِ وَلَعَنَهٗ وَاَعَدَّ لَهٗ عَذَابًا عَظِيْمًا ﴿۹۳﴾ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اِذَا ضَرَبْتُمْ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ فَتَبَيَّنُوْا وَلَا تَقُوْلُوْا لِمَنْ اَلْقٰۤى

اِلَيْكُمُ السَّلٰمَ لَسْتَ مُؤْمِنًا ۚ تَبْتَغُوْنَ عَرَضَ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۫ فَعِنْدَ اللّٰهِ مَغَانِمُ كَثِيْرَةٌ ؕ كَذٰلِكَ كُنْتُمْ مِّنْ قَبْلُ فَمَنَّ اللّٰهُ عَلَيْكُمْ فَتَبَيَّنُوْا ؕ

اِنَّ اللّٰهَ كَانَ بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرًا ﴿۹۴﴾ لَا يَسْتَوِى الْقٰعِدُوْنَ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ غَيْرُ اُولِى الضَّرَرِ وَالْمُجٰهِدُوْنَ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ بِاَمْوَالِهِمْ وَاَنْفُسِهِمْ ؕ

मुअ्मिनुन् फ़–तह्रीरु र–क़–बतिम् मुअ्मि–नतिन् व इन् का–न मिन् क़ौमिम्–बै–नकुम् व बै–नहुम् मीसाकुन् फ़दि–यतुम् मुसल्ल–मतुन् इला अह्लिही व तह्रीरु र–क़–बतिम् मुअ्मि–नतिन् फ़–मल्लम् यजिद् फ़सियामु शह्रैनि मु–त–ताबिऐनि तौ–बतम् मिनल्लाहि व कानल्लाहु अ़लीमन् हकीमा(92)व मंय्यक़्तुल् मुअ्मिनम् मु–त–अ़म्मिदन् फ़–जज़ाउहू जहन्नमु ख़ालिदन् फ़ीहा व ग़ज़िबल्लाहु अ़लैहि व ल–अ़–नहू व अ–अ़द द–लहू अ़ज़ाबन् अ़ज़ीमा(93)या अय्युहल्लज़ी–न आ–मनू इज़ा ज़रब्तुम् फ़ी सबीलिल्लाहि फ़–त–बय्यनू व ला तक़ूलू लि–मन् अल्क़ा इलैकुमुस्सला–म लस्–त मुअ्मिनन् तब्तग़ू–न अ़–र–ज़ल् हयातिद्दुन्या फ़अिन्दल्लाहि मग़ानिमु कसी–रतुन् कज़ालि–क कुन्तुम् मिन् क़ब्लु फ़–मन्नल्लाहु अ़लैकुम् फ़–त–बय्यनू इन्नल्ला–ह का–न बिमा तअ्–मलू–न ख़बीरा (94)ला यस्तविल् क़ाअिदू–न मिनल्मुअ्–मिनी–न ग़ैरु उलिज़्ज़–ररि वल्मुजा–हिदू–न फ़ी सबीलिल्लाहि बिअम्वा–लिहिम् व अन्फ़ुसिहिम्

मुसलमान है तो सिर्फ़ एक मम्लूक मुसलमान का आज़ाद करना (फ़ा253) और अगर वह उस क़ौम में हो कि तुम में उन में मुआहदा है तो उसके लोगों को ख़ून बहा सुपुर्द किया जाये और एक मुसलमान मम्लूक आज़ाद करना (फ़ा254) तो जिसका हाथ न पहुंचे (फ़ा255) वह लगातार दो महीने के रोज़े रखे (फ़ा256) यह अल्लाह के यहां उसकी तौबा है और अल्लाह जानने वाला हिकमत वाला है।(92) और जो कोई मुसलमान को जान बूझकर क़त्ल करे तो उसका बदला जहन्नम है कि मुद्दतों उसमें रहे (फ़ा257) और अल्लाह ने उस पर ग़ज़ब किया और उस पर लानत की और उसके लिए तैयार रखा बड़ा अ़ज़ाब।(93) ऐ ईमान वालो जब तुम जिहाद को चलो तो तहक़ीक़ कर लो और जो तुम्हें सलाम करे उससे यह न कहो कि तू मुसलमान नहीं (फ़ा258) तुम जीती दुनिया का असबाब चाहते हो तो अल्लाह के पास बहुतेरी ग़नीमतें हैं पहले तुम भी ऐसे ही थे,(फ़ा259) फिर अल्लाह ने तुम पर एहसान किया (फ़ा260) तो तुम पर तहक़ीक़ करना लाज़िम है (फ़ा261) बेशक अल्लाह को तुम्हारे कामों की ख़बर है।(94)बराबर नहीं वह मुसलमान कि बे उज़्र जिहाद से बैठ रहें और वह कि राहे ख़ुदा में अपने मालों और जानों से जिहाद करते हैं।(फ़ा262)

(फ़ा253) लाज़िम है और दियत नहीं (फ़ा254) यानी अगर ज़िम्मी मक़्तूल हो तो उसका वही हुक्म है जो मुसलमान का (फ़ा255) यानी वह किसी गुलाम का मालिक न हो (फ़ा256) लगालार रोज़ा रखना यह है कि उन रोज़ों के दर्मियान रमज़ान और अय्यामे तशरीक़ न हों और दर्मियान में रोज़ों का सिलसिला ब–उज़्र या बिला उज़्र किसी तरह तोड़ा न जाये शाने नुज़ूल यह आयत अ़ैयाश बिन रबीआ मख़्ज़ूमीं के हक़ में नाज़िल हुई वह क़बल हिजरत मक्का मुकर्रमा में इस्लाम लाये और घर वालों के ख़ौफ़ से मदीना तय्यबा जाकर पनाहगुज़ीन हुए उनकी मां को उससे बहुत बेक़रारी हुई और उसने हारिस और अबू जहल अपने दोनों बेटों से जो अ़ैयाश के सौतेले भाई थे यह कहा कि ख़ुदा की क़सम न मैं साया में बैठूं न खाना चखूं न पानी पियूं जब तक तुम अ़ैयाश को मेरे पास न ले आओ वह दोनों हारिस बिन ज़ैद अबी उनीसा को साथ लेकर तलाश के लिए निकले और मदीना पहुंच कर अ़ैयाश को पा लिया और उनको मां के जज़अ़ फ़ज़अ़ बेक़रारी और खाना पीना छोड़ने की ख़बर सुनाई और अल्लाह को दर्मियान देकर यह अहद किया कि हम दीन के बाब में तुझ से कुछ न कहेंगे इस तरह वह अ़ैयाश को मदीना से निकाल लाये और मदीना से बाहर आकर उसको बांधा और हर एक ने सौ सौ कोड़े मारे फिर मां के पास लाये तो मां ने कहा कि मैं तेरी मुश्कें न खोलूंगी जब तक तू अपना दीन तर्क न करे फिर अ़ैयाश को धूप में बंधा हुआ डाल दिया और उन मुसीबतों में मुबतला होकर अ़ैयाश ने उनका कहा मान लिया और अपना दीन तर्क कर दिया तो हारिस बिन ज़ैद **(बक़िया सफ़हा 173 पर)**

فَضَّلَ اللّٰهُ الْمُجٰهِدِيْنَ بِاَمْوَالِهِمْ وَاَنْفُسِهِمْ عَلَى الْقٰعِدِيْنَ دَرَجَةً ۭ وَكُلًّا وَّعَدَ اللّٰهُ الْحُسْنٰى ۭ وَفَضَّلَ اللّٰهُ الْمُجٰهِدِيْنَ عَلَى الْقٰعِدِيْنَ

اَجْرًا عَظِيْمًا ۙ﴿95﴾ دَرَجٰتٍ مِّنْهُ وَمَغْفِرَةً وَّرَحْمَةً ۭ وَكَانَ اللّٰهُ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا ﴿96﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ تَوَفّٰىھُمُ الْمَلٰۗىِٕكَةُ ظَالِمِيْٓ اَنْفُسِهِمْ قَالُوْا فِيْمَ كُنْتُمْ ۭ

قَالُوْا كُنَّا مُسْتَضْعَفِيْنَ فِي الْاَرْضِ ۭ قَالُوْٓا اَلَمْ تَكُنْ اَرْضُ اللّٰهِ وَاسِعَةً فَتُھَاجِرُوْا فِيْھَا ۭ فَاُولٰۗىِٕكَ مَاْوٰىھُمْ جَهَنَّمُ ۭ وَسَاۗءَتْ مَصِيْرًا ﴿97﴾ۙ

اِلَّا الْمُسْتَضْعَفِيْنَ مِنَ الرِّجَالِ وَالنِّسَاۗءِ وَالْوِلْدَانِ لَا يَسْتَطِيْعُوْنَ حِيْلَةً وَّلَا يَهْتَدُوْنَ سَبِيْلًا ﴿98﴾ۙ فَاُولٰۗىِٕكَ عَسَى اللّٰهُ اَنْ يَّعْفُوَ عَنْهُمْ ۭ

وَكَانَ اللّٰهُ عَفُوًّا غَفُوْرًا ﴿99﴾ وَمَنْ يُّھَاجِرْ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ يَجِدْ فِي الْاَرْضِ مُرٰغَمًا كَثِيْرًا وَّسَعَةً ۭ وَمَنْ يَّخْرُجْ مِنْۢ بَيْتِهٖ مُھَاجِرًا اِلَى

फ़ज़्ज़–लल्लाहुल् मुजाहिदी–न बिअम्वा–लिहिम् व अन्फ़ुसिहिम् अ–लल्क़ा–अिदी–न द–र–ज–तन् व कुल्लंव्–व अ–दल्लाहुल्–हुस्ना व फ़ज़्ज़–लल्लाहुल् मुजाहिदी–न अलल्–क़ाअिदी–न अज्रन् अज़ीमा(95)द–रजातिम् मिन्हु व मग़्फ़ि–र–तंव् व रह्मतन् व कानल्लाहु ग़फ़ूररहीमा(96) इन्नल्लज़ी–न त–तवफ़्फ़ा–हुमुल् मलाइ–कतु ज़ालिमी अन्फ़ु–सिहिम् क़ालू फ़ी–म कुन्तुम् क़ालू कुन्ना मुस्तज़्–अफ़ी–न फ़िल्अर्ज़ि क़ालू अ–लम् तकुन् अर्ज़ुल्लाहि वासि–अ–तन् फ़तुहाजिरू फ़ीहा फ़–उलाइ–क मअ्वाहुम् जहन्नमु व साअत् मसीरा(97)इल्लल्– मुस्त–ज़्अफ़ी–न मिनर्रिजालि वन्निसाइ वल्विल्दानि ला यस्ततीअू–न ही–ल–तंव् व ला यह्तदू–न सबीला(98) फ़–उलाइ–क अ़सल्लाहु अंय्यअ्फ़ु–व अ़न्हुम् व कानल्लाहु अ़फ़ुव्वन् ग़फ़ूरा(99)व मंय्युहाजिर् फ़ी सबीलिल्लाहि यजिद् फ़िल्अर्ज़ि मुरा–ग़–मन् कसीरंव्–व स–अ–तन् व मंय्यख़्रुज् मिम्बैतिही मुहाजिरन् इलल्लाहि

अल्लाह ने अपने मालों और जानों के साथ जिहाद वालों का दर्जा बैठने वालों से बड़ा किया (फ़263) और अल्लाह ने सबसे भलाई का वादा फ़रमाया (फ़264) और अल्लाह ने जिहाद वालों को (फ़265) बैठने वालों पर बड़े सवाब से फ़ज़ीलत दी है।(95) उसकी तरफ़ से दर्जे और बख़्शिश और रहमत (फ़266) और अल्लाह बख़्शने वाला मेहरबान है।(96) (रुकूअ़ 10) वह लोग जिनकी जान फ़रिश्ते निकालते हैं इस हाल में कि वह अपने ऊपर ज़ुल्म करते थे उनसे फ़रिश्ते कहते हैं तुम काहे में थे कहते हैं कि हम ज़मीन में कमज़ोर थे (फ़267) कहते हैं क्या अल्लाह की ज़मीन कुशादा न थी कि तुम उसमें हिजरत करते तो ऐसों का ठिकाना जहन्नम है और बहुत बुरी जगह पलटने की।(97)(फ़268) मगर वह जो दबा लिए गए मर्द और औरतें और बच्चे जिन्हें न कोई तदबीर बन पड़े (फ़269) न रास्ता जानें।(98) तो क़रीब है अल्लाह ऐसों को माफ़ फ़रमाए (फ़270) और अल्लाह माफ़ फ़रमाने वाला बख़्शने वाला है।(99) और जो अल्लाह की राह में घर बार छोड़ कर निकलेगा वह ज़मीन में बहुत जगह और गुंजाइश पाएगा और जो अपने घर से निकला (फ़271)

(फ़263) जो उज़्र की वजह से जिहाद में हाज़िर न हो सके अगरचे वह नीयत का सवाब पायेंगे लेकिन जिहाद करने वालों को अमल की फ़ज़ीलत उससे ज़्यादा हासिल है (फ़264) जिहाद करने वाले हों या उज़्र से रह जाने वाले (फ़265)बग़ैर उज़्र के (फ़266) हदीस शरीफ़ में अल्लाह तआ़ला ने मुजाहिदीन के लिए जन्नत में सौ दर्जे मुहैया फ़रमाये। हर दो दर्जों में इतना फ़ासिला है जैसे आसमान व ज़मीन में (फ़267)शाने नु.ज़ूलः यह आयत उन लोगों के हक़ में नाज़िल हुई जिन्होंने कलिमए इस्लाम तो ज़बान से अदा किया मगर जिस ज़माना में हिजरत फ़र्ज़ थी उस वक़्त हिजरत न की और जब मुशरिकीन जंगे बदर में मुसलमानों के मुक़ाबला के लिए गए तो यह लोग उनके साथ हुए और कुफ़्फ़ार के साथ ही मारे भी गए उनके हक़ में यह आयत नाज़िल हुई और बताया गया कि कुफ़्फ़ार के साथ होना और फ़र्ज़ हिजरत तर्क करना अपनी जान पर ज़ुल्म करना है (फ़268) मसलाः यह आयत दलालत करती है कि जो शख़्स किसी शहर में अपने दीन पर क़ाइम न रह सकता हो और यह जाने कि दूसरी जगह जाने से अपने फ़रायज़े दीनी अदा कर सकेगा हिजरत वाजिब हो जाती है हदीस में है जो शख़्स अपने दीन की हिफ़ाज़त के लिए एक जगह से दूसरी जगह मुन्तक़िल हो अगरचे एक बालिश्त ही क्यों न हो उसके लिए जन्नत वाजिब हुई और उसको हज़रत इबराहीम और सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अलैहिमा वसल्लम की रिफ़ाक़त मुयस्सर होगी। (फ़269) ज़मीने कुफ़्र से निकलने और हिजरत करने की (फ़270) कि वह करीम है और करीम जो उम्मीद दिलाता है पूरी करता है और यक़ीनन माफ़ फ़रमाएगा (फ़271) **शाने नुज़ूलः** इससे पहली आयत जब नाज़िल हुई तो जुन्दअ़ बिन ज़मरतुल् लैसी ने उसको सुना यह बहुत बूढ़े शख़्स थे कहने लगे कि मैं मुस्तसना लोगों में तो हूं नहीं क्योंकि मेरे पास इतना माल है जिससे मैं मदीना तय्यबा हिजरत **(बक़िया सफ़हा 170 पर)**

اللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ ثُمَّ يُدْرِكْهُ الْمَوْتُ فَقَدْ وَقَعَ اَجْرُهٗ عَلَى اللّٰهِ ؕ وَكَانَ اللّٰهُ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا ۝ وَاِذَا ضَرَبْتُمْ فِي الْاَرْضِ فَلَيْسَ عَلَيْكُمْ جُنَاحٌ
اَنْ تَقْصُرُوْا مِنَ الصَّلٰوةِ ۖ اِنْ خِفْتُمْ اَنْ يَّفْتِنَكُمُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا ؕ اِنَّ الْكٰفِرِيْنَ كَانُوْا لَكُمْ عَدُوًّا مُّبِيْنًا ۝ وَاِذَا كُنْتَ فِيْهِمْ فَاَقَمْتَ لَهُمُ الصَّلٰوةَ
فَلْتَقُمْ طَآئِفَةٌ مِّنْهُمْ مَّعَكَ وَلْيَاْخُذُوْا اَسْلِحَتَهُمْ ۫ فَاِذَا سَجَدُوْا فَلْيَكُوْنُوْا مِنْ وَّرَآئِكُمْ ۪ وَلْتَاْتِ طَآئِفَةٌ اُخْرٰى لَمْ يُصَلُّوْا فَلْيُصَلُّوْا مَعَكَ
وَلْيَاْخُذُوْا حِذْرَهُمْ وَاَسْلِحَتَهُمْ ۚ وَدَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَوْ تَغْفُلُوْنَ عَنْ اَسْلِحَتِكُمْ وَاَمْتِعَتِكُمْ فَيَمِيْلُوْنَ عَلَيْكُمْ مَّيْلَةً وَّاحِدَةً ؕ وَلَا جُنَاحَ
عَلَيْكُمْ اِنْ كَانَ بِكُمْ اَذًى مِّنْ مَّطَرٍ اَوْ كُنْتُمْ مَّرْضٰٓى اَنْ تَضَعُوْٓا اَسْلِحَتَكُمْ ۚ وَخُذُوْا حِذْرَكُمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ اَعَدَّ لِلْكٰفِرِيْنَ عَذَابًا مُّهِيْنًا ۝

व रसूलिही सुम्-म युदरिक्हुल् मौतु फ़-क़द् व-क़-अ अज्रुहू अ़लल्लाहि व कानल्लाहु ग़फ़ूरर्-रहीमा(100)व इज़ा ज़रब्तुम् फ़िल्अर्ज़ि फ़लै-स अ़लैकुम् जुनाहुन् अन् तक़्सुरू मि-नस्सलाति इन् ख़िफ़्तुम् अंय्य-फ़्ति-नकुमुल्लज़ी-न क-फ़रू इन्नल्-काफ़िरी-न कानू लकुम् अ़दुव्वम् मुबीना(101)व इज़ा कुन्-त फ़ीहिम् फ़-अ-क़म्-त लहुमुस्सला-त फ़ल्तक़ुम् ताइ-फ़तुम् मिन्हुम् म-अ़-क वल्य-अ्ख़ुज़ू अस्लि-ह-तहुम् फ़-इज़ा स-जदू फ़ल्यकूनू मिंव्-वराइकुम् वल्तअ्ति ताइ-फ़तुन् उख़्रा लम् युसल्लू फ़ल्यु-सल्लू म-अ़-क वल्यअ्ख़ुज़ू हिज़्रहुम् व अस्लि-ह-तहुम् वद्दल्लज़ी-न क- फ़रू लौ तग़्फ़ुलू-न अ़न् अस्लि-हतिकुम् व अम्ति-अ़तिकुम् फ़-यमीलू-न अ़लैकुम् मै-लतंव्वाहि-द-तन् व ला जुना-ह अ़लैकुम् इन् का-न बिकुम् अ-ज़म् मिम्म-तरिन् औ कुन्तुम् मरज़ा अन् त-ज़अू अस्लि-ह-तकुम् व ख़ुज़ू हिज़्-रकुम् इन्नल्ला-ह अ-अ़द्-द लिल्का-फ़िरी-न अ़ज़ाबम् मुहीना(102)

अल्लाह व रसूल की तरफ़ हिजरत करता फिर उसे मौत ने आ लिया तो उसका सवाब अल्लाह के ज़िम्मे पर हो गया (फ़ा272) और अल्लाह बख़्शने वाला मेहरबान है।(100) (रुकूअ. 11)और जब तुम ज़मीन में सफ़र करो तो तुम पर गुनाह नहीं कि बाज़ नमाज़ें क़स्र से (फ़ा273) पढ़ो अगर तुम्हें अन्देशा हो कि काफ़िर तुम्हें ईज़ा देंगे (फ़ा274)बेशक कुफ़्फ़ार तुम्हारे खुले दुश्मन हैं।(101) और ऐ महबूब जब तुम उनमें तशरीफ़ फ़रमा हो (फ़ा275) फिर नमाज़ में उनकी इमामत करो (फ़ा276) तो चाहिए कि उनमें एक जमाअ़त तुम्हारे साथ हो (फ़ा277) और वह अपने हथियार लिए रहें (फ़ा278) फिर जब वह सज्दा करलें (फ़ा279) तो हटकर तुमसे पीछे हो जायें (फ़ा280) और अब दूसरी जमाअ़त आये जो उस वक़्त तक नमाज़ में शरीक न थी (फ़ा281) अब वह तुम्हारे मुक़्तदी हों और चाहिए कि अपनी पनाह और अपने हथियार लिए रहें (फ़ा282) काफ़िरों की तमन्ना है कि कहीं तुम अपने हथियारों और अपने असबाब से ग़ाफ़िल हो जाओ तो एक दफ़ा तुम पर झुक पड़ें (फ़ा283) और तुम पर मुज़ायक़ा नहीं अगर तुम्हें मेंह के सबब तकलीफ़ हो या बीमार हो कि अपने हथियार खोल रखो और अपनी पनाह लिए रहो। (फ़ा284) बेशक अल्लाह ने काफ़िरों के लिए ख़्वारी का अ़ज़ाब तैयार कर रखा है।(102)

(फ़ा272) उसके वादे और उसके फ़ज़्ल व करम से क्योंकि बतरीक़े इस्तेहक़ाक़ कोई चीज़ उस पर वाजिब नहीं उसकी शान इससे आ़ली है। मसलाः जो कोई नेकी का इरादा करे और उसको पूरा करने से आ़जिज़ हो जाये वह उस ताअ़त का सवाब पाएगा मसलाः तलबे इल्म, हज, जिहाद, ज़ियारत, ताअ़त, ज़ुहद व क़नाअ़त और रिज़्क़े हलाल की तलब के लिए तर्के वतन करना ख़ुदा और रसूल की तरफ़ हिजरत है इस राह में मर जाने वाला अज्र पायेगा (फ़ा273) यानी चार रकअ़त वाली दो रकअ़त (फ़ा274) मसलाः ख़ौफ़े कुफ़्फ़ार क़स्र के लिए शर्त नहीं हदीस यअ्ला बिन उमैया ने हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अ़न्हु से कहा कि हम तो अमन में हैं फिर हम क्यों क़स्र करते हैं फ़रमाया इसका मुझे भी तअ़ज्जुब हुआ था तो मैं ने सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से दरियाफ़्त किया हुज़ूर ने फ़रमाया कि तुम्हारे लिए यह अल्लाह की तरफ़ से सदक़ा है तुम उसका सदक़ा क़बूल करो इससे यह मसला मालूम होता है कि सफ़र में चार रकअ़त वाली नमाज़ को पूरा पढ़ना जायज़ नहीं है क्योंकि जो चीज़ क़ाबिले तमलीक नहीं हैं उनका सदक़ा इस्क़ाते महज़ है रद का एहतेमाल नहीं। रखता आयत के नुज़ूल के वक़्त सफ़र अन्देशा से ख़ाली न होते थे इस लिए आयत में इसका ज़िक्र बयाने हाल है शर्ते क़स्र नहीं। हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उमर की क़िराअत भी इसकी दलील है जिसमें *अंय्यफ़्ति-नकुम् बग़ैर इन् ख़िफ़्तुम्* के है सहाबा का भी यही अ़मल था कि अमन के सफ़रों में भी क़स्र फ़रमाते जैसा कि ऊपर की हदीस से साबित होता है और अहादीस से भी यह साबित है और पूरी चार पढ़ने में अल्लाह तआ़ला के सदक़ा का रद करना लाज़िम आता है लिहाज़ा क़स्र ज़रूरी है। (बक़िया सफ़हा 174 पर)

فَإِذَا قَضَيْتُمُ الصَّلٰوةَ فَاذْكُرُوا اللّٰهَ قِيٰمًا وَّقُعُوْدًا وَّعَلٰى جُنُوْبِكُمْ ۚ فَإِذَا اطْمَاْنَنْتُمْ فَاَقِيْمُوا الصَّلٰوةَ ۚ اِنَّ الصَّلٰوةَ كَانَتْ عَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ كِتٰبًا مَّوْقُوْتًا ۝
وَلَا تَهِنُوْا فِى ابْتِغَآءِ الْقَوْمِ ؕ اِنْ تَكُوْنُوْا تَاْلَمُوْنَ فَاِنَّهُمْ يَاْلَمُوْنَ كَمَا تَاْلَمُوْنَ ۚ وَتَرْجُوْنَ مِنَ اللّٰهِ مَا لَا يَرْجُوْنَ ؕ وَكَانَ اللّٰهُ عَلِيْمًا حَكِيْمًا ۝ اِنَّآ
اَنْزَلْنَآ اِلَيْكَ الْكِتٰبَ بِالْحَقِّ لِتَحْكُمَ بَيْنَ النَّاسِ بِمَآ اَرٰىكَ اللّٰهُ ؕ وَلَا تَكُنْ لِّلْخَآئِنِيْنَ خَصِيْمًا ۝ وَّاسْتَغْفِرِ اللّٰهَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا ۝
وَلَا تُجَادِلْ عَنِ الَّذِيْنَ يَخْتَانُوْنَ اَنْفُسَهُمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَا يُحِبُّ مَنْ كَانَ خَوَّانًا اَثِيْمًا ۝ يَّسْتَخْفُوْنَ مِنَ النَّاسِ وَلَا يَسْتَخْفُوْنَ مِنَ اللّٰهِ وَهُوَ مَعَهُمْ
اِذْ يُبَيِّتُوْنَ مَا لَا يَرْضٰى مِنَ الْقَوْلِ ؕ وَكَانَ اللّٰهُ بِمَا يَعْمَلُوْنَ مُحِيْطًا ۝ هٰٓاَنْتُمْ هٰٓؤُلَآءِ جٰدَلْتُمْ عَنْهُمْ فِى الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۟ فَمَنْ يُّجَادِلُ اللّٰهَ

फ़–इज़ा क़ज़ैतुमुस्सला–त फ़ज़्कु–रुल्ला–ह क़ियामंव् व क़ुअूदंव्–व अ़ला जुनूबिकुम् फ़–इज़्तमअ् नन्तुम् फ़–अक़ीमुस्सला–त इन्नस्सला–त कानत् अ़लल्मुअ्मिनी–न किताबम् मौक़ूता(103)व ला तहिनू फ़िब्ति–ग़ाइल्–क़ौमि इन् तकूनू तअ्–लमू–न फ़ इन्नहुम् यअ्–लमू–न कमा तअ्–लमू–न व तर्जू–न मिनल्लाहि मा ला यर्जू–न व कानल्लाहु अ़लीमन् ह़कीमा (104)इन्ना अन्ज़ल्ना इलै–कल्–किता–ब बिल्ह़क़्क़ि लि–तह़्कु–म बैनन्नासि बिमा अरा–कल्लाहु व ला तकुल्लिल् ख़ाइनी–न ख़सीमंव्(105)वस्तग़्फ़िरिल्ला–ह इन्नल्ला–ह का–न ग़फ़ूरर्रहीमा(106)व ला तुजादिल् अ़निल्लज़ी–न यख़्तानू–न अन्फ़ु–सहुम् इन्नल्ला–ह ला युह़िब्बु मन् का–न ख़व्वानन् असीमंय्(107)यस्तख़्फ़ू–न मिनन्नासि व ला यस्तख़्फ़ू–न मिनल्लाहि व हु–व म–अ़हुम् इज़् युबय्यितू–न मा ला यर्ज़ा मिनल्क़ौलि व कानल्लाहु बिमा यअ्मलू–न मुह़ीता(108)हा–अन्तुम् हाउला–इ जादल्तुम् अ़न्हुम् फ़िल्ह़यातिद्–दुन्या फ़–मंय्युजादि लुल्ला–ह

फिर जब तुम नमाज़ पढ़ चुको तो अल्लाह की याद करो खड़े और बैठे और करवटों पर लेटे (फ़ा285) फिर जब मुतमइन हो जाओ तो हस्बे दस्तूर नमाज़ क़ायम करो बेशक नमाज़ मुसलमानों पर वक़्त बांधा हुआ फ़र्ज़ है।(103) (फ़ा286) और काफ़िरों की तलाश में सुस्ती न करो अगर तुम्हें दुःख पहुंचता है तो उन्हें भी दुख पहुंचता है जैसा तुम्हें पहुंचता है और तुम अल्लाह से वह उम्मीद रखते हो जो वह नहीं रखते और अल्लाह जानने वाला हिकमत वाला है।(104) (फ़ा287) (रुकूअ़ 12) ऐ महबूब बेशक हमने तुम्हारी तरफ़ सच्ची किताब उतारी कि तुम लोगों में फ़ैसला करो (फ़ा288)जिस तरह तुम्हें अल्लाह दिखाये (फ़ा289) और दग़ा वालों की तरफ़ से न झगड़ो।(105)और अल्लाह से माफ़ी चाहो बेशक अल्लाह बख़्शने वाला मेहरबान है।(106) और उनकी तरफ़ से न झगड़ो जो अपनी जानों को ख़यानत में डालते हैं।(फ़ा290)बेशक अल्लाह नहीं चाहता किसी बड़े दग़ाबाज़ गुनाहगार को।(107) आदमियों से छुपते हैं और अल्लाह से नहीं छुपते (फ़ा291) और अल्लाह उनके पास है (फ़ा292) जब दिल में वह बात तजवीज़ करते हैं जो अल्लाह को नापसन्द है (फ़ा293) और अल्लाह उनके कामों को घेरे हुए है।(108) सुनते हो यह जो तुम हो (फ़ा294) दुनिया की ज़िन्दगी में तो उनकी तरफ़ से झगड़े तो उनकी तरफ़ से

(फ़ा285) यानी ज़िक्रे इलाही की हर हाल में मदावमत करो और किसी हाल में अल्लाह के ज़िक्र से ग़ाफ़िल न रहो। हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा ने फ़रमाया अल्लाह तआ़ला ने हर फ़र्ज़ की एक हद मुअ़ैयन फ़रमाई सिवाए ज़िक्र के उसकी कोई हद न रखी फ़रमाया ज़िक्र करो खड़े बैठे करवटों पर लेटे रात में हो या दिन में ख़ुश्की हो या तरी में सफ़र में और हज़र में ग़िना में और फ़क़्र में तन्दुरुस्ती और बीमारी में पोशीदा और ज़ाहिर। मसलाः इससे नमाज़ों के बाद बग़ैर फ़सल के कलमए तौहीद पढ़ने पर इस्तिदलाल किया जा सकता है जैसा कि मशाइख़ की आदत है और अहादीस सहीहा से साबित है। मसलाः ज़िक्र में तस्बीह तहमीद तहलील तकबीर सना दुआ़ सब दाख़िल हैं (फ़ा286) तो लाज़िम है कि उसके औक़ात की रिआ़यत की जाये। (फ़ा287) **शाने नुज़ूलः** उहद की जंग से जब अबू सुफ़ियान और उनके साथी वापस हुए तो रसूले करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने जो सहाबा उहद में हाज़िर हुए थे उन्हें मुशरिकीन के तआ़क़ुब में जाने का हुक्म दिया असहाब ज़ख़्मी थे उन्होंने अपने ज़ख़्मों की शिकायत की उस पर यह आयत नाज़िल हुई (फ़ा288) **शाने नुज़ूलः** अंसार के क़बीला बनी ज़फ़र के एक शख़्स तुअ़्मा बिन उबैरिक़ ने अपने हमसाया क़तादा बिन नोअ़मान की ज़िरह चुरा कर आटे की बोरी में ज़ैद बिन समीन यहूदी के यहां छुपाई जब ज़िरह की तलाश हुई और तुअ़्मा पर शुबहा किया गया तो वह इंकार कर गया और क़सम खा गया बोरी फटी हुई थी और आटा उसमें से गिरता जाता था उसके निशान से लोग यहूदी के मकान तक पहुंचे और बोरी वहां पाई गई। यहूदी ने कहा कि तुअ़्मा उसके पास रख गया है और यहूद की एक जमाअ़त ने उसकी गवाही दी और **(बक़िया सफ़हा 175 पर)**

عَنْهُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ اَمْ مَّنْ يَّكُوْنُ عَلَيْهِمْ وَكِيْلًا ﴿١٠٩﴾ وَمَنْ يَّعْمَلْ سُوْٓءًا اَوْ يَظْلِمْ نَفْسَهٗ ثُمَّ يَسْتَغْفِرِ اللّٰهَ يَجِدِ اللّٰهَ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا ﴿١١٠﴾ وَمَنْ يَّكْسِبْ اِثْمًا فَاِنَّمَا يَكْسِبُهٗ عَلٰى نَفْسِهٖ ؕ وَكَانَ اللّٰهُ عَلِيْمًا حَكِيْمًا ﴿١١١﴾ وَمَنْ يَّكْسِبْ خَطِيْٓئَةً اَوْ اِثْمًا ثُمَّ يَرْمِ بِهٖ بَرِيْٓئًا فَقَدِ احْتَمَلَ بُهْتَانًا وَّاِثْمًا مُّبِيْنًا ﴿١١٢﴾ وَلَوْلَا فَضْلُ اللّٰهِ عَلَيْكَ وَرَحْمَتُهٗ لَهَمَّتْ طَّآئِفَةٌ مِّنْهُمْ اَنْ يُّضِلُّوْكَ ؕ وَمَا يُضِلُّوْنَ اِلَّآ اَنْفُسَهُمْ وَمَا يَضُرُّوْنَكَ مِنْ شَيْءٍ ؕ وَاَنْزَلَ اللّٰهُ عَلَيْكَ الْكِتٰبَ وَالْحِكْمَةَ وَعَلَّمَكَ مَا لَمْ تَكُنْ تَعْلَمُ ؕ وَكَانَ فَضْلُ اللّٰهِ عَلَيْكَ عَظِيْمًا ﴿١١٣﴾ لَا خَيْرَ فِيْ كَثِيْرٍ مِّنْ نَّجْوٰىهُمْ اِلَّا مَنْ اَمَرَ بِصَدَقَةٍ اَوْ مَعْرُوْفٍ اَوْ اِصْلَاحٍۭ بَيْنَ النَّاسِ ؕ وَمَنْ يَّفْعَلْ ذٰلِكَ ابْتِغَآءَ مَرْضَاتِ اللّٰهِ فَسَوْفَ نُؤْتِيْهِ اَجْرًا عَظِيْمًا ﴿١١٤﴾

अ़न्हुम् यौमल्–क़िया–मति अम्–मंय्यकूनु अ़लैहिम् वकीला(109)व मंय्यअ्–मल् सूअन् औ यज़्लिम् नफ़्सहू सुम्–म यस्तग्फ़िरिल्ला–ह यजिदिल्ला–ह ग़फ़ूरर्रहीमा(110)व मंय्यक्सिब् इस्मन् फ़–इन्नमा यक्सिबुहू अ़ला नफ़्सिही व कानल्लाहु अ़लीमन् हकीमा(111)व मंय्यक्सिब् ख़ती–अ–तन् औ इस्मन् सुम्–म यर्मि बिही बरीअन् फ़–क़दिह्त–म–ल बुह्ता–नंव् व इस्मम् मुबीना(112)व लौला फ़ज़्लुल्लाहि अ़लै–क व रह्मतुहू ल–हम्मत् ताइ–फ़तुम् मिन्हुम् अंय्युज़िल्लू–क व मा युज़िल्लू–न इल्ला अन्फ़ु–सहुम् व मा यजुर्रू–न–क मिन् शैइन् व अन्ज़–लल्लाहु अ़लैकल्किता–ब वल्हिक्म–त व अ़ल्ल–म–क मा लम् तकुन् तअ्–लमु व का–न फ़ज़्लुल्लाहि अ़लै–क अ़ज़ीमा(113) ला ख़ै–र फ़ी कसीरिम् मिन्नज्वाहुम् इल्ला मन् अ–म–र बि स–द–क़तिन् औ मअ्–रूफ़िन् औ इस्लाहिम् बैनन्नासि व मंय्यफ़्–अ़ल् ज़ालि–कब्तिग़ा–अ मर्ज़ातिल्लाहि फ़सौ–फ़ नुअ्तीहि अज्रन् अ़ज़ीमा(114)

कौन झगड़ेगा अल्लाह से क़ियामत के दिन या कौन उनका वकील होगा।(109) और जो कोई बुराई या अपनी जान पर ज़ुल्म करे फिर अल्लाह से बख़्शिश चाहे तो अल्लाह को बख़्शने वाला मेहरबान पाएगा।(110)और जो गुनाह कमाए तो उसकी कमाई उसी की जान पर पड़े और अल्लाह इल्म व हिकमत वाला है।(111)(फ़ा295) और जो कोई ख़ता या गुनाह कमाये (फ़ा296) फिर उसे किसी बे गुनाह पर थोप दे उसने ज़रूर बोहतान और खुला गुनाह उठाया।(112) (रुकूअ़ 13) और ऐ महबूब अगर अल्लाह का फ़ज़्ल व रहमत तुम पर न होता (फ़ा297) तो उनमें के कुछ लोग यह चाहते कि तुम्हें धोका दे दें और वह अपने ही आप को बहका रहे हैं (फ़ा298) और तुम्हारा कुछ न बिगाड़ेंगे (फ़ा299) और अल्लाह ने तुम पर किताब (फ़ा300) और हिकमत उतारी और तुम्हें सिखा दिया जो कुछ तुम न जानते थे (फ़ा301)और अल्लाह का तुम पर बड़ा फ़ज़्ल है।(113) (फ़ा302) उनके अक्सर मश्वरों में कुछ भलाई नहीं (फ़ा303) मगर जो हुक्म दे ख़ैरात या अच्छी बात या लोगों में सुलह करने का और जो अल्लाह की रज़ा चाहने को ऐसा करे उसे अन्क़रीब हम बड़ा सवाब देंगे।(114)

(फ़ा295) किसी को दूसरे के गुनाह पर अज़ाब नहीं फ़रमाता (फ़ा296) सग़ीरा या कबीरा। (फ़ा297) तुम्हें नबी व मासूम करके और राज़ों पर मुत्तलअ़ फ़रमा के (फ़ा298) क्योंकि उसका वबाल उन्हीं पर है (फ़ा299) क्योंकि अल्लाह ने आपको हमेशा के लिए मासूम किया है (फ़ा300) यानी क़ुरआने करीम (फ़ा301) उमूरे दीन व अहकामे शरअ़ व उलूमे ग़ैब। **मसलाः** इस आयत से साबित हुआ कि अल्लाह तआ़ला ने अपने हबीब सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को तमाम कायनात के उलूम अता फ़रमाये और किताब व हिकमत के असरार व हक़ायक़ पर मुतलअ़ किया यह मसला क़ुरआने करीम की बहुत आयात और अहादीसे कसीरा से साबित है (फ़ा302) कि तुम्हें इन नेअ़मतों के साथ मुमताज़ किया। (फ़ा303) यह सब लोगों के हक़ में आम है।

(बक़िया सफ़हा 156 का) सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के साथ जिहाद में जाने से रुक गई थी उनके बाब में असहाबे किराम के दो फ़िरक़े हो गए एक फ़िरक़ा क़त्ल पर मुसिर था और एक उनके क़त्ल से इंकार करता था इस मुआ़मले में यह आयत नाज़िल हुई (फ़ा234) कि वह हुज़ूर के साथ जिहाद में जाने से महरूम रहे (फ़ा235) उनके कुफ़्र व इरतेदाद और मुशरिकीन के साथ मिले के बाइस तो चाहिए कि मुसलमान भी उनके कुफ़्र में इख़्तिलाफ़ न करें (फ़ा236) इस आयत में कुफ़्फ़ार के साथ मवालात ममनूअ़ की गई ख़्वाह वह ईमान का इज़्हार ही करते हों (फ़ा237) और इससे उनके ईमान की तहक़ीक़ न हो ले। (फ़ा238) ईमान व हिजरत से और अपनी हालत पर क़ायम रहें (फ़ा239) और अगर तुम्हारी दोस्ती का दावा करें और मदद के लिए तैयार हों तो उनकी मदद न क़बूल करो।

وَمَنْ يُّشَاقِقِ الرَّسُوْلَ مِنْ بَعْدِ مَا تَبَيَّنَ لَهُ الْهُدٰى وَيَتَّبِعْ غَيْرَ سَبِيْلِ الْمُؤْمِنِيْنَ نُوَلِّهٖ مَا تَوَلّٰى وَنُصْلِهٖ جَهَنَّمَ ۚ وَسَآءَتْ مَصِيْرًا ﴿١١٥﴾ اِنَّ اللّٰهَ لَا يَغْفِرُ اَنْ يُّشْرَكَ بِهٖ وَيَغْفِرُ مَا دُوْنَ ذٰلِكَ لِمَنْ يَّشَآءُ ۚ وَمَنْ يُّشْرِكْ بِاللّٰهِ فَقَدْ ضَلَّ ضَلٰلًا ۢ بَعِيْدًا ﴿١١٦﴾ اِنْ يَّدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِهٖٓ اِلَّآ اِنٰثًا ۚ وَاِنْ يَّدْعُوْنَ اِلَّا شَيْطٰنًا مَّرِيْدًا ﴿١١٧﴾ لَّعَنَهُ اللّٰهُ ۘ وَقَالَ لَاَتَّخِذَنَّ مِنْ عِبَادِكَ نَصِيْبًا مَّفْرُوْضًا ﴿١١٨﴾ وَّلَاُضِلَّنَّهُمْ وَلَاُمَنِّيَنَّهُمْ وَلَاٰمُرَنَّهُمْ فَلَيُبَتِّكُنَّ اٰذَانَ الْاَنْعَامِ وَلَاٰمُرَنَّهُمْ فَلَيُغَيِّرُنَّ خَلْقَ اللّٰهِ ۚ وَمَنْ يَّتَّخِذِ الشَّيْطٰنَ وَلِيًّا مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ فَقَدْ خَسِرَ خُسْرَانًا مُّبِيْنًا ﴿١١٩﴾ يَعِدُهُمْ وَيُمَنِّيْهِمْ ۚ وَمَا يَعِدُهُمُ الشَّيْطٰنُ اِلَّا غُرُوْرًا ﴿١٢٠﴾ اُولٰٓئِكَ مَاْوٰىهُمْ جَهَنَّمُ ۡ وَلَا يَجِدُوْنَ عَنْهَا مَحِيْصًا ﴿١٢١﴾

व मंय्युशाक़िक़िर्रसू–ल मिम्बअ्–दि मा तबय्य–न लहुल्हुदा व यत्तबिअ् ग़ै–र सबीलिल् मुअ्मिनी–न नुवल्लिही मा तवल्ला व नुस्लिही जहन्न–म व सा–अत् मसीरा(115)इन्नल्ला–ह ला यग्फ़िरु अंय्युश्र–क बिही व यग्फ़िरु मा दू–न ज़ालि–क लि–मंय्यशाउ व मंय्युश्रिक् बिल्लाहि फ़–क़द् ज़ल्–ल ज़लालम् बअ़ीदा(116)इंय्यदअू–न मिन्दूनिही इल्ला इनासन् व इंय्यदअू–न इल्ला शैतानम् मरीदल्(117)ल–अ–नहुल्लाहु व क़ा–ल ल–अत्–तख़िज़न्–न मिन् अ़िबादि–क नसीबम् मफ़्रूज़ंव(118)व ल–उज़िल्लन्नहुम् व ल–उमन्नियन्नहुम् व ल–आमुरन्नहुम् फ़–लयु–बत्तिकुन्–न आज़ानल् अन्आमि व ल–आमुरन्नहुम् फ़–लयुग़य्यिरुन्–न ख़ल्क़ल्लाहि व मंय्यत्त–ख़िज़िश्–शैता–न वलिय्यम् मिन् दूनिल्लाहि फ़–क़द् ख़सि–र ख़ुस्रा–नम् मुबीना(119)यअ़िदुहुम् व युमन्नीहिम् व मा यअ़िदुहुमश् शैतानु इल्ला गुरूरा(120)उलाइ–क मअ्वाहुम् जहन्नमु व ला यजिदू–न अन्हा महीसा(121)

और जो रसूल का ख़िलाफ़ करे बाद इसके कि हक़ रास्ता उस पर खुल चुका और मुसलमानों की राह से जुदा राह चले, हम उसे उसके हाल पर छोड़ देंगे और उसे दोज़ख़ में दाख़िल करेंगे और क्या ही बुरीह जगह पलटने की।(115) (फ़ा304) (रुकूअ़ 14) अल्लाह इसे नहीं बख़्शता कि उसका कोई शरीक ठहराया जाये और उससे नीचे जो कुछ है जिसे चाहे माफ़ फ़रमा देता है (फ़ा305) और जो अल्लाह का शरीक ठहराये वह दूर की गुमराही में पड़ा।(116)यह शिर्क वाले अल्लाह के सिवा नहीं पूजते मगर कुछ औरतों को (फ़ा306) और नहीं पूजते मगर सरकश शैतान को।(117) (फ़ा307) जिस पर अल्लाह ने लानत की और बोला (फ़ा308) क़सम है मैं ज़रूर तेरे बन्दों में से कुछ ठहराया हुआ हिस्सा लूंगा।(118) (फ़ा309) क़सम है मैं ज़रूर उन्हें बहका दूंगा और ज़रूर उन्हें आरज़ूयें दिलाऊँगा (फ़ा310) और ज़रूर उन्हें कहूंगा कि वह चौपायों के कान चीरेंगे (फ़ा311) और ज़रूर उन्हें कहूंगा कि वह अल्लाह की पैदा की हुई चीज़ बदल देंगे (फ़ा312) और जो अल्लाह को छोड़ कर शैतान को दोस्त बनाये वह सरीह टोटे में पड़ा।(119) शैतान उन्हें वादे देता है और आरज़ूयें दिलाता है(फ़ा313) और शैतान उन्हें वादे नहीं देता मगर फ़रेब के।(120) (फ़ा314) उनका ठिकाना दोज़ख़ है उससे बचने की जगह न पायेंगे।(121)

(फ़ा304) यह आयत दलील है इसकी कि इजमाअ़ हुज्जत है इसकी मुख़ालफ़त जायज़ नहीं जैसे कि किताब व सुन्नत की मुख़ालफ़त जायज़ नहीं (मदारिक) और इससे साबित हुआ कि तरीक़े मुस्लिमीन ही सिराते मुस्तक़ीम है हदीस शरीफ़ में वारिद हुआ कि जमाअ़त पर अल्लाह का हाथ है एक और हदीस में है कि सवादे आज़म यानी बड़ी जमाअ़त का इत्तेबाअ़ करो जो जमाअ़ते मुस्लिमीन से जुदा हुआ वह दोज़ख़ी है इससे वाज़ेह है कि हक़ मज़हब अहले सुन्नत व जमाअ़त है (फ़ा305) शाने नुज़ूलः हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा का क़ौल है कि यह आयत एक कुहन साल आराबी के हक़ में नाज़िल हुई जिसने सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर होकर अ़र्ज़ किया या नबीयल्लाह मैं बूढ़ा हूं गुनाहों में ग़र्क़ हूं बजुज़ इसके कि जब से मैं ने अल्लाह को पहचाना और उस पर ईमान लाया उस वक़्त से कभी मैंने उसके साथ शिर्क न किया और उसके सिवा किसी और को वली न बनाया और जुरअत के साथ गुनाहों में मुब्तला न हुआ और एक पल भी मैंने यह गुमान न किया कि मैं अल्लाह से भाग सकता हूं शर्मिन्दा हूं, ताइब हूं, मग़फ़िरत चाहता हूं अल्लाह के यहां मेरा क्या हाल होगा इस पर यह आयत नाज़िल हुई यह आयत नस्से सरीह है इस पर कि शिर्क बख़्शा न जाएगा अगर मुशरिक अपने शिर्क पर मरे क्योंकि यह साबित हो चुका है कि मुशरिक जो अपने शिर्क से तौबा करे और ईमान लाये तो उसकी तौबा व ईमान मक़बूल है (फ़ा306) यानी मुअन्नस बुतों को जैसे लात, उज़्ज़ा, मनात वग़ैरह यह सब मुअन्नस हैं और अ़रब (बक़िया सफ़हा 172 पर)

وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ سَنُدْخِلُهُمْ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَاۤ اَبَدًا ؕ وَعْدَ اللّٰهِ حَقًّا ؕ وَمَنْ اَصْدَقُ مِنَ اللّٰهِ قِيْلًا ﴿۱۲۲﴾ لَيْسَ بِاَمَانِيِّكُمْ وَلَاۤ اَمَانِيِّ اَهْلِ الْكِتٰبِ ؕ مَنْ يَّعْمَلْ سُوْٓءًا يُّجْزَ بِهٖ ۙ وَلَا يَجِدْ لَهٗ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ وَلِيًّا وَّلَا نَصِيْرًا ﴿۱۲۳﴾ وَمَنْ يَّعْمَلْ مِنَ الصّٰلِحٰتِ مِنْ ذَكَرٍ اَوْ اُنْثٰى وَهُوَ مُؤْمِنٌ فَاُولٰٓئِكَ يَدْخُلُوْنَ الْجَنَّةَ وَلَا يُظْلَمُوْنَ نَقِيْرًا ﴿۱۲۴﴾ وَمَنْ اَحْسَنُ دِيْنًا مِّمَّنْ اَسْلَمَ وَجْهَهٗ لِلّٰهِ وَهُوَ مُحْسِنٌ وَّاتَّبَعَ مِلَّةَ اِبْرٰهِيْمَ حَنِيْفًا ؕ وَاتَّخَذَ اللّٰهُ اِبْرٰهِيْمَ خَلِيْلًا ﴿۱۲۵﴾ وَلِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ؕ وَكَانَ اللّٰهُ بِكُلِّ شَيْءٍ مُّحِيْطًا ﴿۱۲۶﴾ وَيَسْتَفْتُوْنَكَ فِي النِّسَآءِ ؕ قُلِ اللّٰهُ يُفْتِيْكُمْ فِيْهِنَّ ۙ وَمَا يُتْلٰى عَلَيْكُمْ فِي الْكِتٰبِ فِيْ يَتٰمَى النِّسَآءِ الّٰتِيْ لَا تُؤْتُوْنَهُنَّ مَا كُتِبَ لَهُنَّ وَتَرْغَبُوْنَ اَنْ تَنْكِحُوْهُنَّ

वल्लज़ी–न आ–मनू व अ़मिलुस्सालिहाति सनुदख़िलुहुम् जन्नातिन् तजरी मिन् तह़्तिहल् अन्हारु ख़ालिदी–न फ़ीहा अ–ब–दन् वअ़्दल्लाहि ह़क़्क़न् व मन् अस्दकु मिनल्लाहि क़ीला(122)लै–स बि–अमानिय्यिकुम् व ला अमानिय्यि अह़्लिल्–किताबि मंय्यअ़्–मल् सू–अंय्युज्–ज़ बिही व ला यजिद् लहू मिन् दूनिल्लाहि वलिय्यंव्–व ला नसीरा(123)व मंय्यअ़्–मल् मिनस् सालिहाति मिन् ज़–करिन् औ उन्सा व हु–व मुअ्मिनुन् फ़उलाइ–क यद्–खुलूनल्–जन्न–त व ला युज़्लमू–न नक़ीरा(124)व मन् अह़्सनु दीनम् मिम्मन् अस्ल–म वज्हहू लिल्लाहि व हु–व मुह़्सिनुंव्वत्त–ब–अ़ मिल्ल–त इब्राही–म ह़नीफ़न् वत्त–ख़–ज़ल्लाहु इब्राही–म ख़लीला(125)व लिल्लाहि मा फ़िस्समावाति व मा फ़िल्अर्ज़ि व कानल्लाहु बिकुल्लि शैइम् मुहीता(126)व यस्तफ़्तून–क फ़िन्निसा–इ कुलिल्लाहु युफ़्तीकुम् फ़ीहिन्–न व मा युत्ला अ़लैकुम् फ़िल्किताबि फ़ी यतामन्–निसाइल्–लाती ला तुअ्तू–नहुन्–न मा कुति–ब लहुन्–न व तर्ग़बू–न अन् तन्किहूहुन्–न

और जो ईमान लाये और अच्छे काम किये कुछ देर जाती है कि हम उन्हें बाग़ों में ले जायेंगे जिनके नीचे नहरें बहें, हमेशा हमेशा उन में रहे अल्लाह का सच्चा वादा और अल्लाह से ज़्यादा किस की बात सच्ची।(122) काम न कुछ तुम्हारे ख़्यालों पर है (फ़ा315) और न किताब वालों की हवस पर (फ़ा316) जो बुराई करेगा (फ़ा317) उसका बदला पायेगा और अल्लाह के सिवा न कोई अपना हिमायती पाएगा न मददगार।(123) (फ़ा318) और जो कुछ भले काम करेगा मर्द हो या औरत और हो मुसलमान (फ़ा319) तो वह जन्नत में दाख़िल किये जायेंगे और उन्हें तिल भर नक़सान न दिया जाएगा।(124) और उससे बेहतर किस का दीन, जिसने अपना मुंह अल्लाह के लिए झुका दिया (फ़ा320) और वह नेकी वाला है और इब्राहीम के दीन पर चला (फ़ा321) जो हर बातिल से जुदा था और अल्लाह ने इब्राहीम को अपना गहरा दोस्त बनाया।(125) (फ़ा322) और अल्लाह ही का है जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ ज़मीन में और हर चीज़ पर अल्लाह का क़ाबू है।(126) (फ़ा323) (रुकूअ़ 15) और तुम से औरतों के बारे में फ़तवा पूछते हैं (फ़ा324) तुम फ़रमा दो कि अल्लाह तुम्हें उनका फ़तवा देता है और वह जो तुम पर कुरआन में पढ़ा जाता है उन यतीम लड़कियों के बारे में कि तुम उन्हें नहीं देते जो उनका मुक़र्रर है (फ़ा325) और उन्हें निकाह में भी लाने से मुंह फेरते हो

(फ़ा315) जो तुम ने सोच रखा है कि बुत तुम्हें नफ़ा पहुंचायेंगे (फ़ा316) जो कहते हैं कि हम अल्लाह के बेटे और उसके प्यारे हैं। हमें आग चन्द रोज़ से ज़्यादा न जलाएगी यहूद व नसारा का यह ख़्याल भी मुशरिकीन की तरह बातिल है (फ़ा317) ख़्वाह मुशरिकीन में से हो या यहूद व नसारा में से (फ़ा318) यह वईद कुफ़्फ़ार के लिए है (फ़ा319) मसलाः इसमें इशारा है कि आमाल दाख़िले ईमान नहीं। (फ़ा320) यानी इताअ़त व इख़्लास इख़्तियार किया (फ़ा321) जो मिल्लते इस्लाम के मुवाफ़िक़ है हज़रत इबराहीम अ़लैहिस्सलाम की शरीअ़त व मिल्लत सय्यदे अम्बिया सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की मिल्लत में दाख़िल है और ख़ुसूसियात दीने मुहम्मदी के इसके अलावा हैं दीने मुहम्मदी का इत्तेबाअ़ करने से शरअ़ व मिल्लते इबराहीम अ़लैहिस्सलाम का इत्तेबाअ़ हासिल होता है चूंकि अ़रब और यहूद व नसारा सब हज़रत इबराहीम अ़लैहिस्सलातु वस्सलाम से इन्तेसाब पर फ़ख़्र करते थे और आपकी शरीअ़त उन सब को मक़बूल थी और शरअ़े मुहम्मदी उस पर हावी है तो उन सबको दीने मुहम्मदी में दाख़िल होना और उसको क़बूल करना लाज़िम है (फ़ा322) ख़ुल्लत सफ़ाए मवद्दत और ग़ैर से इन्क़ेताअ़ को कहते हैं हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलातु वत्तस्लीमात यह औसाफ़ रखते थे इस लिए आपको ख़लील कहा गया। **(बक़िया सफ़हा 175 पर)**

وَالْمُسْتَضْعَفِيْنَ مِنَ الْوِلْدَانِ ۙ وَاَنْ تَقُوْمُوْا لِلْيَتٰمٰى بِالْقِسْطِ ؕ وَمَا تَفْعَلُوْا مِنْ خَيْرٍ فَاِنَّ اللّٰهَ كَانَ بِهٖ عَلِيْمًا ۝١٢٧ وَاِنِ امْرَاَةٌ خَافَتْ مِنْۢ بَعْلِهَا

نُشُوْزًا اَوْ اِعْرَاضًا فَلَا جُنَاحَ عَلَيْهِمَآ اَنْ يُّصْلِحَا بَيْنَهُمَا صُلْحًا ؕ وَالصُّلْحُ خَيْرٌ ؕ وَاُحْضِرَتِ الْاَنْفُسُ الشُّحَّ ؕ وَاِنْ تُحْسِنُوْا وَتَتَّقُوْا فَاِنَّ اللّٰهَ كَانَ بِمَا

تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرًا ۝١٢٨ وَلَنْ تَسْتَطِيْعُوْٓا اَنْ تَعْدِلُوْا بَيْنَ النِّسَآءِ وَلَوْ حَرَصْتُمْ فَلَا تَمِيْلُوْا كُلَّ الْمَيْلِ فَتَذَرُوْهَا كَالْمُعَلَّقَةِ ؕ وَاِنْ تُصْلِحُوْا وَتَتَّقُوْا فَاِنَّ اللّٰهَ

كَانَ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا ۝١٢٩ وَاِنْ يَّتَفَرَّقَا يُغْنِ اللّٰهُ كُلًّا مِّنْ سَعَتِهٖ ؕ وَكَانَ اللّٰهُ وَاسِعًا حَكِيْمًا ۝١٣٠ وَلِلّٰهِ مَا فِى السَّمٰوٰتِ وَمَا فِى الْاَرْضِ ؕ وَلَقَدْ وَصَّيْنَا الَّذِيْنَ

اُوْتُوا الْكِتٰبَ مِنْ قَبْلِكُمْ وَاِيَّاكُمْ اَنِ اتَّقُوا اللّٰهَ ؕ وَاِنْ تَكْفُرُوْا فَاِنَّ لِلّٰهِ مَا فِى السَّمٰوٰتِ وَمَا فِى الْاَرْضِ ؕ وَكَانَ اللّٰهُ غَنِيًّا حَمِيْدًا ۝١٣١

वल्मुस्तज़्अफ़ी–न मिनल्विल्दानि व अन् तकूमू लिल्–यतामा बिल्क़िस्ति व मा तफ़्अ़लू मिन् ख़ैरिन् फ़–इन्नल्ला–ह का–न बिही अ़लीमा(127)व इनिम्–र अतुन् ख़ाफ़त् मिम्बअ़लिहा नुशूज़न् औ इअ्–राज़न् फ़ला जुना–ह् अ़लैहिमा अंय्युस्लिहा बै–नहुमा सुल्हन् वस्सुल्हु ख़ैरुन् व उह्ज़ि– रतिल् अन्फ़ुसुश्शुह्–ह् व इन् तुह्सिनू व तत्तकू फ़इन्नल्ला–ह का–न बिमा तअ्–मलू–न ख़बीरा(128)व लन् तस्ततीअू अन् तअ्दिलू बै–नन्निसाइ व लौ ह्–रस्तुम् फ़ला तमीलू कुल्लल्मैलि फ़–त–ज़रूहा कल्मुअ़ल्ल–क़ति व इन् तुस्लिहू व तत्तकू फ़इन्नल्ला–ह का–न ग़फ़ूर–र्रहीमा(129)व इंय्य–त–फ़र्रक़ा युग्निल्लाहु कुल्लम् मिन् स–अ़तिही व कानल्लाहु वासिअ़न् ह़कीमा(130)व लिल्लाहि मा फ़िस्समावाति व मा फ़िल्अर्ज़ि व ल–क़द् वस्सैनल्लज़ी–न ऊतुल्किता–ब मिन् क़ब्लिकुम् व इय्याकुम् अनित्तकुल्ला–ह व इन् तक्फ़ुरू फ़इन्–न लिल्लाहि मा फ़िस्समावाति व मा फ़िल्अर्ज़ि व कानल्लाहु ग़निय्यन् हमीदा(131)

और कमज़ोर (फ़ा326) बच्चों के बारे में और यह कि यतीमों के हक़ में इन्साफ़ पर क़ायम रहो (फ़ा327) और तुम जो भलाई करो तो अल्लाह को उसकी ख़बर है।(127)और अगर कोई औरत अपने शौहर की ज़्यादती या बे रग़बती का अन्देशा करे (फ़ा328) तो उन पर गुनाह नहीं कि आपस में सुलह कर लें(फ़ा329) और सुलह ख़ूब है (फ़ा330) और दिल लालच के फन्दे में हैं(फ़ा331) और अगर तुम नेकी और परहेज़गारी करो(फ़ा332) तो अल्लाह को तुम्हारे कामों की ख़बर है।(128)(फ़ा333)और तुम से हरगिज़ न हो सकेगा कि औरतों को बराबर रखो और चाहे कितनी ही हिर्स करो (फ़ा334) तो यह तो न हो कि एक तरफ़ पूरा झुक जाओ कि दूसरी को अधर में लटकती छोड़ दो (फ़ा335) और अगर तुम नेकी और परहेज़गारी करो तो बेशक अल्लाह बख़्शने वाला मेहरबान है।(129) और अगर वह दोनों (फ़ा336) जुदा हो जायें तो अल्लाह अपनी कशाईश से तुम में हर एक को दूसरे से बे नियाज़ कर देगा(फ़ा337)और अल्लाह कशाईश वाला हिकमत वाला है।(130) और अल्लाह ही का है जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ ज़मीन में और बेशक ताकीद फ़रमा दी है हमने उनसे जो तुम से पहले किताब दिये गए और तुम को कि अल्लाह से डरते रहो (फ़ा338) और अगर कुफ़्र करो तो बेशक अल्लाह ही का है जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ ज़मीन में(फ़ा339) और अल्लाह बे नियाज़ है (फ़ा340)सब ख़ूबियों वाला।(131)

(फ़ा326) तीम (फ़ा327) उनके पूरे हुक़ूक़ उनको दो (फ़ा328) ज़्यादती तो इस तरह कि उससे अलाहिदा रहे खाने पहनने को न दे या कमी करे या मारे या बद ज़बानी करे और ऐराज़ यह कि मुहब्बत न रखे बोल चाल तर्क करदे या कम कर दे (फ़ा329) और इस सुलह के लिए अपने हुक़ूक़ का बार कम करने पर राज़ी हो जायें (फ़ा330) और ज़्यादती और जुदाई दोनों से बेहतर है (फ़ा331) हर एक अपनी राहत व आसाईश चाहता और अपने ऊपर कुछ मशक़्क़त गवारा करके दूसरे की आसाईश को तरजीह नहीं देता (फ़ा332) और बावजूद ना-मरग़ूब होने के अपनी मौजूदा औरतों पर सब्र करो और ब-रिआ़यते हक़्क़े सोहबत उनके साथ अच्छा बरताव करो और उन्हें ईज़ा व रन्ज देने से और झगड़ा पैदा करने वाली बातों से बचते रहो और सोहबत व मुआशरत में नेक सुलूक करो और यह जानते रहो कि वह तुम्हारे पास अमानतें हैं (फ़ा333) वह तुम्हें तुम्हारे आमाल की जज़ा देगा (फ़ा334) यानी अगर बीबियां हों तो यह तुम्हारी मक़दरत में नहीं कि हर अमूर में तुम उन्हें बराबर रखो और किसी अमर में किसी को किसी पर तरजीह न होने दो न मेल व मुहब्बत में न ख़्वाहिश व रग़बत में न (बक़िया सफ़हा 175 पर)

وَلِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ؕ وَكَفٰى بِاللّٰهِ وَكِيْلًا ﴿۱۳۲﴾ اِنْ يَّشَاْ يُذْهِبْكُمْ اَيُّهَا النَّاسُ وَيَاْتِ بِاٰخَرِيْنَ ؕ وَكَانَ اللّٰهُ عَلٰى ذٰلِكَ قَدِيْرًا ﴿۱۳۳﴾
مَنْ كَانَ يُرِيْدُ ثَوَابَ الدُّنْيَا فَعِنْدَ اللّٰهِ ثَوَابُ الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ ؕ وَكَانَ اللّٰهُ سَمِيْعًا بَصِيْرًا ﴿۱۳۴﴾ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا كُوْنُوْا قَوّٰمِيْنَ بِالْقِسْطِ شُهَدَآءَ
لِلّٰهِ وَلَوْ عَلٰۤى اَنْفُسِكُمْ اَوِ الْوَالِدَيْنِ وَالْاَقْرَبِيْنَ ۚ اِنْ يَّكُنْ غَنِيًّا اَوْ فَقِيْرًا فَاللّٰهُ اَوْلٰى بِهِمَا ۫ فَلَا تَتَّبِعُوا الْهَوٰۤى اَنْ تَعْدِلُوْا ۚ وَاِنْ تَلْوٗۤا اَوْ تُعْرِضُوْا
فَاِنَّ اللّٰهَ كَانَ بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرًا ﴿۱۳۵﴾ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اٰمِنُوْا بِاللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ وَالْكِتٰبِ الَّذِيْ نَزَّلَ عَلٰى رَسُوْلِهٖ وَالْكِتٰبِ الَّذِيْۤ اَنْزَلَ مِنْ قَبْلُ ؕ
وَمَنْ يَّكْفُرْ بِاللّٰهِ وَمَلٰٓئِكَتِهٖ وَكُتُبِهٖ وَرُسُلِهٖ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ فَقَدْ ضَلَّ ضَلٰلًاۢ بَعِيْدًا ﴿۱۳۶﴾

व लिल्लाहि मा फ़िस्समावाति व मा फ़िल्अर्ज़ि व कफ़ा बिल्लाहि वकीला(132)इंय्यशअ्–युज्हिब्कुम् अय्युहन्नासु व यअ्ति बिआ–ख़री–न व कानल्लाहु अ़ला जालि–क क़दीरा(133)मन् का–न युरीदु सवाबद्दुन्या फ़अि़न्दल्लाहि सवाबुद्दुन्या वल्आख़ि–रति व कानल्लाहु समीअ़म्–बसीरा(134)या अय्युहल्लज़ी–न आ–मनू कूनू क़व्वामी–न बिल्क़िस्ति शु–हदा–अ लिल्लाहि व लौ अ़ला अन्फ़ुसिकुम् अविल्–वालिदैनि वल्अक़्रबी–न इंय्यकुन् ग़निय्यन् औ फ़क़ीरन् फ़ल्लाहु औला बिहिमा फ़ला तत्त–बिअुल् हवा अन् तअ़्दिलू व इन् तल्वू औ तुअ़्–रिज़ू फ़इन्नल्ला–ह का–न बिमा तअ़्–मलू–न ख़बीरा(135)या अय्युहल्लज़ी–न आ–मनू आमिनू बिल्लाहि व रसूलिही वल्–किता–बिल्लज़ी नज़्ज़–ल अ़ला रसूलिही वल्किताबिल्–लज़ी अन्ज़–ल मिन् क़ब्लु व मंय्यक्फ़ुर् बिल्लाहि व मलाइ–कतिही व कुतुबिही व रुसुलिही वल्यौमिल्–आख़िरि फ़–क़द् ज़ल्–ल ज़लालम्–बअ़ीदा(136)

और अल्लाह ही का है जो कुछ आसमानों में और जो कुछ ज़मीन में और अल्लाह काफ़ी है कारसाज़ ।(132) ऐ लोगो वह चाहे तो तुम्हें ले जाये (फ़ा341) और औरों को ले आये और अल्लाह को इसकी क़ुदरत है(133) जो दुनिया का इनाम चाहे तो अल्लाह ही के पास दुनिया व आख़िरत दोनों का इनाम है (फ़ा342) और अल्लाह सुनता देखता है ।(134) (रुकूअ़ 16) ऐ ईमान वालो इन्साफ़ पर ख़ूब क़ायम हो जाओ अल्लाह के लिए गवाही देते चाहे उसमें तुम्हारा अपना नक़सान हो या मां, बाप का या रिश्तेदारों का जिस पर गवाही दो वह ग़नी हो या फ़क़ीर हो (फ़ा343) बहरहाल अल्लाह को इसका सबसे ज़्यादा इख़्तियार है तो ख़्वाहिश के पीछे न जाओ कि हक़ से अलग पड़ो और अगर तुम हेरफेर करो (फ़ा344) या मुंह फेरो (फ़ा345) तो अल्लाह को तुम्हारे कामों की ख़बर है। (135)(फ़ा346) ऐ ईमान वालो ईमान रखो अल्लाह और अल्लाह के रसूल पर(फ़ा347)और उस किताब पर जो अपने इन रसूल पर उतारी और उस किताब पर जो पहले उतारी(फ़ा348)और जो न माने अल्लाह और उसके फ़रिश्तों और किताबों और रसूलों और क़ियामत को(फ़ा349)तो वह ज़रूर दूर की गुमराही में पड़ा ।(136)

(फ़ा341) मअ़्दूम कर दे (फ़ा342) माना यह हैं कि जिसको अपने अमल से दुनिया मक़सूद हो और उसकी मुराद इतनी ही जो अल्लाह उसको दे देता है और सवाबे आख़िरत से वह महरूम रहता है और जिसने अमल रज़ाए इलाही और सवाबे आख़िरत के लिए किया तो अल्लाह दुनिया व आख़िरत दोनों में सवाब देने वाला है तो जो शख़्स अल्लाह से फ़क़त दुनिया का तालिब हो वह नादान ख़सीस और कम हिम्मत है (फ़ा343) किसी की रिआ़यत व तरफ़दारी में इंसाफ़ से न हटो और कोई क़राबत व रिश्ता हक़ कहने में मुख़िल न होने पाये (फ़ा344) हक़ बयान में और जैसा चाहिए न कहो (फ़ा345) अदाए शहादत से (फ़ा346) जैसे अमल होंगे वैसा बदला देगा (फ़ा347) यानी ईमान पर साबित रहो यह माना इस सूरत में हैं कि *या अय्युहल्लज़ी–न आ–मनू* का ख़िताब मुसलमानों से हो और अगर ख़िताब यहूद व नसारा से हो तो माना यह हैं कि ऐ बाज़ किताबों बाज़ रसूलों पर ईमान लाने वालो तुम्हें यह हुक्म है और अगर ख़िताब मुनाफ़िक़ीन से हो तो माना यह हैं कि ऐ ईमान का ज़ाहिरी दावा करने वालो इख़्लास के साथ ईमान ले आओ यहां रसूल से सय्यदे अम्बिया सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम और किताब से क़ुरआन पाक मुराद है। शाने नुज़ूलः हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा ने फ़रमाया यह आयत अ़ब्दुल्लाह बिन सलाम और असद व उसैद और सअ़्लबा बिन क़ैस और सलाम व सलमा व यामीन के हक़ में नाज़िल हुई यह लोग मोमिनीने अहले किताब में से थे रसूले करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की ख़िदमते अक़्दस में हाज़िर हुए और अर्ज़ किया हम आप पर और आपकी किताब पर और हज़रत मूसा पर और तौरेत पर और उज़ैर पर ईमान लाते हैं और उसके सिवा **(बक़िया सफ़हा 173 पर)**

إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا ثُمَّ كَفَرُوا ثُمَّ آمَنُوا ثُمَّ كَفَرُوا ثُمَّ ازْدَادُوا كُفْرًا لَّمْ يَكُنِ اللَّهُ لِيَغْفِرَ لَهُمْ وَلَا لِيَهْدِيَهُمْ سَبِيلًا ۞ بَشِّرِ الْمُنَافِقِينَ بِأَنَّ لَهُمْ
عَذَابًا أَلِيمًا ۞ الَّذِينَ يَتَّخِذُونَ الْكَافِرِينَ أَوْلِيَاءَ مِن دُونِ الْمُؤْمِنِينَ ۚ أَيَبْتَغُونَ عِندَهُمُ الْعِزَّةَ فَإِنَّ الْعِزَّةَ لِلَّهِ جَمِيعًا ۞ وَقَدْ نَزَّلَ عَلَيْكُمْ فِي
الْكِتَابِ أَنْ إِذَا سَمِعْتُمْ آيَاتِ اللَّهِ يُكْفَرُ بِهَا وَيُسْتَهْزَأُ بِهَا فَلَا تَقْعُدُوا مَعَهُمْ حَتَّىٰ يَخُوضُوا فِي حَدِيثٍ غَيْرِهِ ۚ إِنَّكُمْ إِذًا مِّثْلُهُمْ ۗ إِنَّ اللَّهَ جَامِعُ
الْمُنَافِقِينَ وَالْكَافِرِينَ فِي جَهَنَّمَ جَمِيعًا ۞ الَّذِينَ يَتَرَبَّصُونَ بِكُمْ فَإِن كَانَ لَكُمْ فَتْحٌ مِّنَ اللَّهِ قَالُوا أَلَمْ نَكُن مَّعَكُمْ وَإِن كَانَ لِلْكَافِرِينَ نَصِيبٌ قَالُوا
أَلَمْ نَسْتَحْوِذْ عَلَيْكُمْ وَنَمْنَعْكُم مِّنَ الْمُؤْمِنِينَ ۚ فَاللَّهُ يَحْكُمُ بَيْنَكُمْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ ۗ وَلَن يَجْعَلَ اللَّهُ لِلْكَافِرِينَ عَلَى الْمُؤْمِنِينَ سَبِيلًا ۞

इन्नल्लज़ी–न आ–मनू सुम्–म क–फ़रू सुम्–म आ–मनू सुम्–म क–फ़रू सुम्मज़्दादू कुफ़्रल्लम् यकुनिल्लाहु लियग्फ़ि–र लहुम् व ला लियह्दि–यहुम् सबीला(137)बश्शिरिल्–मुनाफ़िक़ी–न बि–अन्–न लहुम् अ़ज़ाबन् अलीमा(138)अल्लज़ी–न यत्तख़िज़ूनल् काफ़िरी–न औलिया–अ मिन् दूनिल् मुअ्– मिनी–न अ–यब्तग़ू–न अ़िन्द हुमुल्–अ़िज़्ज़–त फ़–इन्नल् अ़िज़्ज़–त लिल्लाहि जमीआ(139)व क़द् नज़्ज़–ल अ़लैकुम् फ़िल्किताबि अन् इज़ा समिअ्–तुम् आयातिल्लाहि युक्फ़रु बिहा व युस्तह्ज़उ बिहा फ़ला तक़्अुदू म–अहुम् ह़त्ता यख़ूज़ू फ़ी ह़दीसिन् ग़ैरिही इन्नकुम् इज़म् मिस्लुहुम् इन्नल्ला–ह जामिअुल् मुनाफ़िक़ी–न वल्काफ़िरी–न फ़ी जहन्न–म जमीआ(140)अल्लज़ी–न य–त–रब्बसू–न बिकुम् फ़इन् का–न लकुम् फ़त्हुम् मिनल्लाहि क़ालू अ–लम् नकुम् म–अकुम् व इन् का–न लिल्काफ़िरी–न नसीबुन् क़ालू अ–लम् नस्तह्विज़् अ़लैकुम् व नम्नअ्–कुम् मिनल् मुअ्मिनी–न फ़ल्लाहु यह्कुमु बै–नकुम् यौमल्क़िया–मति व लंय्यज्अ़लल्लाहु लिल्काफ़िरी–न अ़–लल्मुअ्मिनी–न सबीला(141)

बेशक वह लोग जो ईमान लाये, फिर काफ़िर हुए, फिर ईमान लाये, फिर काफ़िर हुए, फिर और कुफ़्र में बढ़े। (फ़ा350)अल्लाह हरगिज़ न उन्हें बख़्शे (फ़ा351)न उन्हें राह दिखाये।(137) ख़ुशख़बरी दो मुनाफ़िक़ों को, कि उनके लिए दर्दनाक अ़ज़ाब है।(138) वह जो मुसलमानों को छोड़कर काफ़िरों को दोस्त बनाते हैं (फ़ा352) क्या उनके पास इज़्ज़त ढूंडते हैं तो इज़्ज़त तो सारी अल्लाह के लिए है।(139)(फ़ा353)और बेशक अल्लाह तुम पर किताब (फ़ा354) में उतार चुका कि जब तुम अल्लाह की आयतों को सुनो कि उनका इंकार किया जाता है, और उनकी हंसी बनाई जाती है तो उन लोगों के साथ न बैठो जब तक वह और बात में मश्ग़ूल न हों (फ़ा355) वरना तुम भी उन्हीं जैसे हो (फ़ा356) बेशक अल्लाह मुनाफ़िक़ों और काफ़िरों को सबको जहन्नम में इकट्ठा करेगा।(140)वह जो तुम्हारी हालत तका करते हैं तो अगर अल्लाह की तरफ़ से तुमको फ़तह मिले कहें क्या हम तुम्हारे साथ न थे(फ़ा357)और अगर काफ़िरों का हिस्सा हो तो उनसे कहें क्या हमें तुम पर क़ाबू न था (फ़ा358) और हमने तुम्हें मुसलमानों से बचाया (फ़ा359) तो अल्लाह तुम सब में (फ़ा360) क़ियामत के दिन फ़ैसला कर देगा (फ़ा361)और अल्लाह काफ़िरों को मुसलमानों पर कोई राह न देगा।(141)(फ़ा362)(रुकूअ़ 17)

(फ़ा350) **शाने नुज़ूलः** हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा ने फ़रमाया कि यह आयत यहूद के हक़ में नाज़िल हुई जो हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम पर ईमान लाये फिर बछड़ा पूज कर काफ़िर हुए फिर उसके बाद ईमान लाये फिर हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम और इन्जील का इंकार करके काफ़िर हो गए फिर सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम और क़ुरआन का इंकार करके और कुफ़्र में बढ़े एक क़ौल यह है कि यह आयत मुनाफ़िक़ीन के हक़ में नाज़िल हुई कि वह ईमान लाये फिर काफ़िर हो गए ईमान के बाद फिर ईमान लाये यानी उन्होंने अपने ईमान का इज़्हार किया ताकि उन पर मोमिनीन के अहकाम जारी हों फिर कुफ़्र में बढ़े यानी कुफ़्र पर उनकी मौत हुई (फ़ा351) जब तक कुफ़्र पर रहें और कुफ़्र पर मरें क्योंकि कुफ़्र बख़्शा नहीं जाता मगर जबकि काफ़िर तौबा करे और ईमान लाये जैसा कि फ़रमाया *क़ुल् लिल्–लज़ी–न क–फ़रू इंय्यन्–तहू युग़्फ़र्–लहुम्–मा क़द्–स–ल–फ़* (फ़ा352) यह मुनाफ़िक़ीन का हाल है जिनका ख़्याल था कि इस्लाम ग़ालिब न होगा और इस लिए वह कुफ़्फ़ार को साहिबे कुव्वत व शौकत समझ कर उनसे दोस्ती करते थे और उनसे मिलने में इज़्ज़त जानते थे बावजूदेकि कुफ़्फ़ार के साथ दोस्ती ममनूअ़ और उनके मिलने से तलबे इज़्ज़त बातिल (फ़ा353) और उसके लिए जिसको वह इज़्ज़त दे जैसे कि अम्बिया व मोमिनीन। (फ़ा354) यानी क़ुरआन (फ़ा355) कुफ़्फ़ार की हमनशीनी और उनकी मजलिसों में शिरकत करना ऐसे ही और बे दीनों और गुमराहों की मजलिसों की शिरकत और उनके साथ याराना व मुसाहबत ममनूअ़ फ़रमाई गई (फ़ा356) इससे साबित हुआ कि कुफ़्र के साथ राज़ी होने वाला भी काफ़िर है (फ़ा357) इससे उनकी मुराद **(बक़िया सफ़्हा 168 पर)**

إِنَّ الْمُنٰفِقِيْنَ يُخٰدِعُوْنَ اللّٰهَ وَهُوَ خَادِعُهُمْ ۚ وَإِذَا قَامُوْٓا إِلَى الصَّلٰوةِ قَامُوْا كُسَالٰى ۙ يُرَآءُوْنَ النَّاسَ وَلَا يَذْكُرُوْنَ اللّٰهَ إِلَّا قَلِيْلًا ﴿١٤٢﴾ مُّذَبْذَبِيْنَ
بَيْنَ ذٰلِكَ ۖ لَآ إِلٰى هٰٓؤُلَآءِ وَلَآ إِلٰى هٰٓؤُلَآءِ ۚ وَمَنْ يُّضْلِلِ اللّٰهُ فَلَنْ تَجِدَ لَهٗ سَبِيْلًا ﴿١٤٣﴾ يٰٓأَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَتَّخِذُوا الْكٰفِرِيْنَ أَوْلِيَآءَ
مِنْ دُوْنِ الْمُؤْمِنِيْنَ ۚ أَتُرِيْدُوْنَ أَنْ تَجْعَلُوْا لِلّٰهِ عَلَيْكُمْ سُلْطٰنًا مُّبِيْنًا ﴿١٤٤﴾ إِنَّ الْمُنٰفِقِيْنَ فِى الدَّرْكِ الْأَسْفَلِ مِنَ النَّارِ ۚ وَلَنْ تَجِدَ لَهُمْ نَصِيْرًا ﴿١٤٥﴾
إِلَّا الَّذِيْنَ تَابُوْا وَأَصْلَحُوْا وَاعْتَصَمُوْا بِاللّٰهِ وَأَخْلَصُوْا دِيْنَهُمْ لِلّٰهِ فَأُولٰٓئِكَ مَعَ الْمُؤْمِنِيْنَ ۖ وَسَوْفَ يُؤْتِ اللّٰهُ الْمُؤْمِنِيْنَ أَجْرًا عَظِيْمًا ﴿١٤٦﴾
مَا يَفْعَلُ اللّٰهُ بِعَذَابِكُمْ إِنْ شَكَرْتُمْ وَاٰمَنْتُمْ ۚ وَكَانَ اللّٰهُ شَاكِرًا عَلِيْمًا ﴿١٤٧﴾

इन्नल्मुनाफ़िक़ी–न युख़ादि–ऊ.नल्ला–ह व हु–व ख़ादिउहुम् व इज़ा क़ामू इलस्सलाति क़ामू कुसाला युराऊनन्ना–स व ला यज़्कुरू–नल्ला–ह इल्ला क़लीला(142)मुज़ब्ज़बी–न बै–न ज़ालि–क ला इला हा उलाइ व ला इला हा उलाइ व मंय्युज़्लिलिल्लाहु फ़लन् तजि–द लहू सबीला(143)या अय्यु–हल्लज़ी–न आ–मनू ला तत्तख़ि–ज़ुल्–काफ़िरी–न औलिया–अ मिन् दूनिल् मुअ्मिनी–न अतुरीदू–न अन् तज्अ़लू लिल्लाहि अ़लैकुम् सुल्तानम् मुबीना(144)इन्नल्–मुनाफ़िक़ी–न फ़िद्दर्किल्–अस्फ़लि मिनन्नारि व लन् तजि–द लहुम् नसीरा(145)इल्लल्लज़ी–न ताबू व अस्लहू वअ्–त–समू बिल्लाहि व अख़्लसू दी–नहुम् लिल्लाहि फ़उलाइ–क म–अ़ल्–मुअ्मिनी–न व सौ–फ़ युअ्–तिल्लाहुल् मुअ्मिनी–न अज्रन् अ़ज़ीमा(146)मा यफ़्–अ़लुल्लाहु बि–अ़ज़ाबिकुम् इन् शकर्तुम् व आमन्तुम् व कानल्लाहु शाकिरन् अ़लीमा(147)

बेशक मुनाफ़िक़ लोग अपने गुमान में अल्लाह को फ़रेब दिया चाहते हैं (फ़ा363) और वही उन्हें ग़ाफ़िल करके मारेगा और जब नमाज़ को खड़े हों (फ़ा364) तो हारे जी से (फ़ा365) लोगों को दिखावा करते हैं और अल्लाह को याद नहीं करते मगर थोड़ा।(142) (फ़ा366) बीच में डगमगा रहे हैं (फ़ा367) न इधर के न उधर के (फ़ा368) और जिसे अल्लाह गुमराह करे तो उसके लिए कोई राह न पाएगा।(143) ऐ ईमान वालो काफ़िरों को दोस्त न बनाओ मुसलमानों के सिवा (फ़ा369) क्या यह चाहते हो कि अपने ऊपर अल्लाह के लिए सरीह हुज्जत कर लो।(144) (फ़ा370) बेशक मुनाफ़िक़ दोज़ख़ के सबसे नीचे तबक़े में हैं (फ़ा371) और तू हरगिज़ उनका कोई मददगार न पाएगा।(145) मगर वह जिन्होंने तौबा की (फ़ा372) और संवरे और अल्लाह की रस्सी मज़बूत थामी और अपना दीन ख़ालिस अल्लाह के लिए कर लिया तो यह मुसलमानों के साथ हैं (फ़ा373) और अ़न्क़रीब अल्लाह मुसलमानों को बड़ा सवाब देगा।(146) और अल्लाह तुम्हें अ़ज़ाब देकर क्या करेगा अगर तुम हक़ मानो और ईमान लाओ और अल्लाह है सिला देने वाला जानने वाला।(147)

(फ़ा363) क्योंकि हक़ीक़त में तो अल्लाह को फ़रेब देना मुमकिन नहीं (फ़ा364) मोमिनीन के साथ (फ़ा365) क्योंकि ईमान तो है नहीं जिससे ज़ौक़े ताअ़त और लुत्फ़े इबादत हासिल हो महज़ रियाकारी है इस लिए मुनाफ़िक़ को नमाज़ बार मालूम होती है (फ़ा366) इस तरह मुसलमानों के पास हुए तो नमाज़ पढ़ ली और अलाहिदा हुए तो नदारद (फ़ा367) कुफ़्र व ईमान के (फ़ा368) न ख़ालिस मोमिन न खुले काफ़िर (फ़ा369) इस आयत में मुसलमानों को बताया गया कि कुफ़्फ़ार को दोस्त बनाना मुनाफ़िक़ीन की ख़सलत है तुम उससे बचो (फ़ा370) अपने निफ़ाक़ की और मुस्तहिक़े जहन्नम हो जाओ (फ़ा371) मुनाफ़िक़ का अज़ाब काफ़िर से भी ज़्यादा है क्योंकि वह दुनिया में इज़हारे इस्लाम करके मुजाहिदीन के हाथों से बचा रहा है और कुफ़्र करके बावजूद मुसलमानों को मुग़ालता देना और इस्लाम के साथ इस्तेहज़ा करना उसका शीवा रहा है (फ़ा372) निफ़ाक़ से (फ़ा373) दारैन में।

(बक़िया सफ़हा 167 का) ग़नीमत में शिरकत करना और हिस्सा चाहना है (फ़ा358) कि हम तुम्हें क़त्ल करते गिरिफ़्तार करते मगर हमने यह कुछ नहीं किया (फ़ा359) और उन्हें तरह तरह के हीलों से रोका और उनके राज़ों पर तुम्हें मुत्तलअ़ किया तो अब हमारे इस सुलूक की क़दर करो और हिस्सा दो (यह मुनाफ़िक़ों का हाल है) (फ़ा360) ऐ ईमानदारो और मुनाफ़िक़ो (फ़ा361) कि मोमिनीन को जन्नत अता करेगा और मुनाफ़िक़ों को दाख़िले जहन्नम करेगा। (फ़ा362) यानी काफ़िर न मुसलमानों को मिटा सकेंगे न हुज्जत में ग़ालिब आ सकेंगे उलमा ने इस आयत से चन्द मसायल मुस्तंबत किये हैं। (1) काफ़िर मुसलमान का वारिस नहीं (2) काफ़िर मुसलमान के माल पर इस्तीला पाकर मालिक नहीं हो सकता (3) काफ़िर को मुसलमान .ग़ुलाम के ख़रीदने का मजाज़ नहीं (4) ज़िम्मी के एवज़ मुसलमान क़त्ल न किया जाएगा (जुमल)

(बक़िया सफ़हा 144 का) अपने नुत्फ़ा व माल को ज़ाये करके दीन व दुनिया के ख़सारा में गिरिफ़्तार होता है (फ़ा77) ख़्वाह वह औरत महर मुक़र्रर शुदा से कम करदे या बिल्कुल बख़्श दे या मर्द मिक़दार महर की और ज़्यादा कर दे। (फ़ा78) यानी मुसलमानों की ईमानदार कनीज़ें क्योंकि निकाह अपनी कनीज़ से नहीं होता वह बग़ैर निकाह ही मौला के लिए हलाल है माना यह हैं कि जो शख़्स हुर्रा मोमिना से निकाह की मक़दरत व वुसअ़त न रखता हो वह ईमानदार कनीज़ से निकाह करे यह बात आ़र की नहीं। **मसलाः** जो शख़्स हुर्रा से निकाह की वुसअ़त रखता हो उसको भी मुसलमान बांदी से निकाह करना जायज़ है यह मसला इस आयत में तो नहीं है मगर ऊपर की आयत *व उहिल्-ल-लकुम् मा वरा-अ् ज़ालिकुम्* से साबित है। **मसलाः** ऐसे ही किताबिया बांदी से भी निकाह जायज़ है और मोमिना के साथ अफ़ज़ल व मुस्तहब है जैसा कि इस आयत से साबित हुआ (फ़ा79) यह कोई आ़र की बात नहीं फ़ज़ीलते ईमान से है इसी को काफ़ी समझो। (फ़ा80) मसलाः इस से मालूम हुआ कि बांदी को अपने मौला की इजाज़त के बग़ैर निकाह का हक़ नहीं इसी तरह ग़ुलाम को। (फ़ा81) अगरचे मालिक उनके महर के मौला हैं लेकिन बांदियों को देना मौला ही को देना है क्योंकि वह ख़ुद और जो कुछ उनके क़ब्ज़ा में हो सब मौला की मिल्क है या यह माना हैं कि उनके मालिकों की इजाज़त से महर उन्हें दो। (फ़ा82) यानी ऐलानिया व ख़ुफ़िया किसी तरह बदकारी नहीं करतीं। (फ़ा83) और शौहरदार हो जायें। (फ़ा84) जो शौहरदार न हों यानी पचास ताज़ियाने क्यों कि हुर्रा के लिए सौ ताज़ियाने हैं और बांदियों को रजम नहीं किया जाता। क्योंकि रजम क़ाबिले तन्सीफ़ नहीं है। (फ़ा85) बांदी से निकाह करना (फ़ा86) बांदी के साथ निकाह करने से क्योंकि उससे औलाद ममलूक पैदा होगी।

(बक़िया सफ़हा 145 का) जो फ़ज़ीलत दी ख़्वाह दौलत व ग़िना की या दीनी मनासिब व मदारिज की यह उसकी हिकमत है शाने नुज़ूल जब आयते मीरास में *लिज़्-ज़-करि मिस्लु हज़्ज़िल् उन्सयैनि* नाज़िल हुआ और मय्यत के तर्का में मर्द का हिस्सा औरत से दूना मुक़र्रर किया गया तो मर्दों ने कहा कि हमें उम्मीद है कि आख़िरत में नेकियों का सवाब भी हमें औरतों से दूना मिलेगा और औरतों ने कहा कि हमें उम्मीद है कि गुनाह का अ़ज़ाब हमें मर्दों से आधा होगा उस पर यह आयत नाज़िल हुई और उसमें बताया गया कि अल्लाह तआ़ला ने जिसको जो फ़ज़्ल दिया वह ऐन हिकमत है बन्दे को चाहिए कि वह उसकी क़ज़ा पर राज़ी रहे (फ़ा97) हर एक को उसके आमाल की जज़ा। **शाने नुज़ूलः** उम्मुल मोमिनीन हज़रत उम्मे सलमा रज़ियल्लाहु अ़न्हा ने फ़रमाया कि हम भी अगर मर्द होते तो जिहाद करते और मर्दों की तरह जान फ़िदा करने का सवाबे अ़ज़ीम पाते इस पर यह आयते करीमा नाज़िल हुई और उन्हें तस्कीन दी गई कि मर्द जिहाद से सवाब हासिल कर सकते हैं तो औरतें शौहरों की इताअ़त और पाक दामनी से सवाब हासिल कर सकती हैं।

(बक़िया सफ़हा 146 का) क़ाबिल होने के साथ कि उनके लिए कोई ज़माना ऐसा नहीं है कि नमाज़ व रोज़ा के क़ाबिल न हों और दाढ़ियों और एमामों के साथ फ़ज़ीलत दी (फ़ा101) **मसलाः** इस आयत से मालूम हुआ कि औरतों के नफ़्क़े मर्दों पर वाजिब हैं (फ़ा102) अपनी इफ़्फ़त और शौहरों के घर माल और उनके राज़ की (फ़ा103) उन्हें शौहर की नाफ़रमानी और उसके इताअ़त न करने और उसके हुक़ूक़ का लिहाज़ न रखने के नताइज समझाओ जो दुनिया व आख़िरत में पेश आते हैं और अल्लाह के अ़ज़ाब का ख़ौफ़ दिलाओ और बताओ कि हमारा तुम पर शरअ़न हक़ है और हमारी इताअ़त तुम पर फ़र्ज़ है अगर इस पर भी न मानें (फ़ा104) ज़रबे ग़ैर शदीद (फ़ा105) और तुम गुनाह करते हो फिर भी वह तुम्हारी तौबा क़बूल फ़रमाता है तो तुम्हारी ज़ेरे दस्त औरतें अगर क़ुसूर करने के बाद माफ़ी चाहें तो तुम्हें बतरीक़े औला माफ़ करना चाहिए और अल्लाह की क़ुदरत व बरतरी का लिहाज़ रख कर ज़ुल्म से मुजतनिब रहना चाहिये। (फ़ा106) और तुम देखो कि समझाना, अलाहिदा सोना, मारना कुछ भी कारआमद न हुआ और दोनों की ना-इत्तेफ़ाक़ी रफ़अ़ न हुई (फ़ा107) क्योंकि अक़ारिब अपने रिश्तेदारों के ख़ानगी हालात से वाक़िफ़ होते हैं और ज़ौजैन के दर्मियान मुवाफ़क़त की ख़्वाहिश भी रखते हैं और फ़रीक़ैन को उन पर इत्मीनान भी होता है और उनसे अपने दिल की बात कहने में तअम्मुल भी नहीं होता है (फ़ा108) जानता है कि ज़ौजैन में ज़ालिम कौन है **मसलाः** पंचों को ज़ौजैन में तफ़रीक़ कर देने का इख़्तियार नहीं। (फ़ा109) न जानदार को न बे जान को उसकी रूबूबियत में उसकी इबादत में (फ़ा110) अदब व ताज़ीम के साथ और उनकी ख़िदमत में मुस्तइद रहना और उन पर ख़र्च करने में कमी न करो। मुस्लिम शरीफ़ की हदीस है सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने तीन मर्तबा फ़रमाया उसकी नाक ख़ाक आलूद हो हज़रत अबू हुरैरह ने अर्ज़ किया किस की या रसूलल्लाह! फ़रमाया जिसने बूढ़े मां बाप पाये या उनमें से एक को पाया और जन्नती न हो गया (फ़ा111) हदीस शरीफ़ में है रिश्तादारों के साथ अच्छे सुलूक करने वालों की उम्र दराज़ और रिज़्क़ वसीअ़ होता है (बुख़ारी व मुस्लिम) (फ़ा112) हदीस सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया मैं और यतीम की सरपरस्ती करने वाला ऐसे क़रीब होंगे जैसे अंगुश्ते शहादत और बीच की उंगली (बुख़ारी शरीफ़) हदीस सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया बेवा और मिस्कीन की इमदाद व ख़बर गीरी करने वाला मुजाहिद फ़ी सबीलिल्लाह की मिस्ल है।

(बक़िया सफ़हा 157 का) रवा नहीं और मुसलमान की शान नहीं कि उससे किसी मुसलमान का क़त्ल सरज़द हो बजुज़ इसके कि ख़ताअन हो। इस तरह कि मारता था शिकार को या काफ़िर हरबी को और हाथ बहक कर ज़द पड़ी मुसलमान पर या यह कि किसी शख़्स को काफ़िर हरबी जान कर मारा और था वह मुसलमान (फ़ा250) यानी उसके वारिसों को दी जाये वह उसे मिस्ल मीरास के तक़सीम करलें दियत मक़तूल के तर्का के हुक्म में है इससे मक़तूल का दैन भी अदा किया जाएगा वसीयत भी जारी की जायेगी (फ़ा251) जो ख़ताअन क़त्ल किया गया (फ़ा252) यानी काफ़िर

(बक़िया सफ़हा 148 का) पर क़ादिर न होने ख़्वाह पानी मौजूद न होने के बाइस या दूर होने के सबब या उसके हासिल करने का आला न होने के सबब या सांप दरिन्दा दुश्मन वग़ैरह कोई मानेअ़ होने के बाइस (फ़ा132) यह हुक्म मरीज़ों, मुसाफ़िरों, जनाबत और हदस वालों को शामिल है जो पानी न पायें या उसके इस्तेमाल से आ़जिज़ हों (मदारिक) **मसलाः** हैज़ व निफ़ास से तहारत के लिए भी पानी से आ़जिज़ होने की सूरत में तयम्मुम, तयय्युम जायज़ है जैसा कि हदीस शरीफ़ में आया है (फ़ा133) तरीक़ए तयम्मुम, तयम्मुम करने वाला दिल से पाकी हासिल करने की नीयत करे। तयम्मुम में नीयत बिलइज्माअ़ शर्त है क्योंकि वह नस्स से साबित है जो चीज़ मिट्टी की जिन्स से हो जैसे गर्द, रेता, पत्थर इन सब पर तयम्मुम जायज़ है, ख़्वाह पत्थर पर ग़ुबार भी न हो लेकिन पाक होना इन चीज़ों का शर्त है तयम्मुम में दो ज़रबें हैं एक मर्तबा हाथ मार कर चेहरा पर फेर लें दूसरी मर्तबा हाथों पर। **मसलाः** पानी के साथ तहारत असल है और तयम्मुम पानी से आजिज़ होने की हालत में उसका पूरा पूरा क़ायम मक़ाम है जिस तरह हदस पानी से ज़ायल होता है इसी तरह तयम्मुम से हत्ता कि एक तयम्मुम से बहुत से फ़रायज़ व नवाफ़िल पढ़े जा सकते हैं। **मसलाः** तयम्मुम करने वाले के पीछे .ग़ुस्ल और वुज़ू करने वाले की इक़्तेदा सही है। **शाने नुज़ूलः** ग़ज़वए बनिल मुस्तलक़ में जब लश्करे इस्लाम शब को एक बयाबान में उतरा जहां पानी न था और सुबह वहां से कूच करने का इरादा था वहां उम्मुल मोमिनीन हज़रत आ़इशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु अ़न्हा का हार गुम हो गया उसकी तलाश के लिए सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने वहां इक़ामत फ़रमाई सुबह हुई तो पानी न था अल्लाह तआ़ला ने आयते तयम्मुम नाज़िल फ़रमाई। उसैद बिन हुज़ैर रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने कहा कि ऐ आले अबू बकर यह तुम्हारी पहली ही बरकत नहीं है यानी तुम्हारी बरकत से मुसलमानों को बहुत आसानियाँ हुई और बहुत फ़वायद पहुंचे फिर ऊंट उठाया गया तो उसके नीचे हार मिला। हार गुम होने और सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के न बताने में बहुत हिकमतें हैं। हज़रत सिद्दीक़ा के हार की वजह से क़ियाम उनकी फ़ज़ीलत व मंज़िलत का मुशइर है सहाबा का जुस्तजू फ़रमाना इसमें हिदायत है कि हुज़ूर के अज़्वाज की ख़िदमत मोमिनीन की सआ़दत है और फिर हुक्मे तयम्मुम होना मालूम होता है कि हुज़ूर की अज़्वाज की ख़िदमत का ऐसा सिला है जिससे क़ियामत तक मुसलमान मुनतफ़अ़ होते रहेंगे सुबहानल्लाह°। (फ़ा134) वह यह कि तौरेत से उन्होंने सिर्फ़ मूसा अ़लैहिस्सलाम की नबुव्वत को पहचाना और सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम का जो उसमें बयान था उस हिस्सा से वह महरूम रहे और आपकी नबुव्वत के मुन्किर हो गए। **शाने नुज़ूलः** यह आयत रुफ़ाआ़ बिन ज़ैद और मालिक बिन दुख़्शम यहूदियों के हक़ में नाज़िल हुई यह दोनों जब रसूले करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से बात करते तो ज़बान टेढ़ी करके बोलते (फ़ा135) हुज़ूर की नबुव्वत का इंकार करके (फ़ा136) ऐ मुसलमानो (फ़ा137) और उसने तुम्हें भी उनकी अ़दावत पर ख़बरदार कर दिया तो चाहिए कि उन से बचते रहो (फ़ा138) और जिस का कारसाज़ अल्लाह हो उसे क्या अन्देशा (फ़ा139) जो तौरेत शरीफ़ में अल्लाह तआ़ला ने सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की नअ़त में फ़रमाये। (फ़ा140) जब सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम उन्हें कुछ हुक्म फ़रमाते हैं तो (फ़ा141) कहते हैं (फ़ा142) यह कलिमा ज़ू जेहतैन है मदह व ज़म के दोनों पहलू रखता है मदह का पहलू तो यह है कि कोई नागवार बात आपके सुनने में न आये और ज़म का पहलू यह कि आप को सुनना नसीब न हो (फ़ा143) बावजूदेकि इस कलिमा के साथ ख़िताब की मुमानअ़त की गई है क्योंकि यह उनकी ज़बान में ख़राब माना रखता है (फ़ा144) हक़ से बातिल की तरफ़ (फ़ा145) कि वह अपने रफ़ीक़ों से कहते थे कि हम हुज़ूर की बदगोई करते हैं अगर आप नबी होते तो आप उसको जान लेते अल्लाह तआ़ला ने उनके ख़ुब्से ज़मायर को ज़ाहिर फ़रमा दिया (फ़ा146) बजाए इन कलिमात के अहले अदब के तरीक़ा पर।

(बक़िया सफ़हा 149 का) ख़ुलूद नहीं उसकी मग़फ़िरत अल्लाह की मशीयत में है चाहे माफ़ फ़रमाये या उसके गुनाहों पर अ़ज़ाब करे फिर अपनी रहमत से जन्नत में दाख़िल फ़रमाये इस आयत में यहूद को ईमान की तरग़ीब है और इस पर भी दलालत है कि यहूद पर उर्फ़े शरअ़ में मुशरिक का इतलाक़ दुरुस्त है। (फ़ा152) यह आयत यहूद व नसारा के हक़ में नाज़िल हुई जो अपने आप को अल्लाह का बेटा और उसका प्यारा बताते थे और कहते थे कि यहूद व नसारा के सिवा कोई जन्नत में न दाख़िल होगा इस आयत में बता गया कि इंसान का दीनदारी और सलाह व तक़वा और क़ुर्ब व मक़बूलियत का मुद्दई होना और अपने मुंह से अपनी तारीफ़ करना काम नहीं आता (फ़ा153) यानी बिल्कुल ज़ुल्म न होगा वही सज़ा दी जाएगी जिसके वह मुस्तहिक़ हैं (फ़ा154) अपने आपको बे गुनाह और मक़बूले बारगाह बता कर (फ़ा155) **शाने नुज़ूलः** यह आयत कअ़ब बिन अशरफ़ वग़ैरह उलमाए यहूद के हक़ में नाज़िल हुई जो सत्तर सवारों की जमीअ़त लेकर क़ुरैश से सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के साथ जंग करने पर हलफ़ लेने पहुंचे क़ुरैश ने उनसे कहा चूंकि तुम किताबी हो इस लिए तुम सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के साथ ज़्यादा क़ुर्ब रखते हो हम कैसे इत्मीनान करें कि तुम हम से फ़रेब के साथ नहीं मिल रहे हो अगर इत्मीनान दिलाना हो तो हमारे बुतों को सजदा करो तो उन्होंने शैतान की इताअ़त करके बुतों को सजदा किया फिर अबू सुफ़ियान ने कहा कि हम ठीक राह पर हैं या मुहम्मद (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) कअ़ब बिन अशरफ़ ने कहा तुम्हीं ठीक राह पर हो इस पर यह आयत नाज़िल हुई और अल्लाह तआ़ला ने उन पर लानत फ़रमाई कि उन्होंने हुज़ूर की अ़दावत में मुशरिकीन के बुतों तक को पूजा।

(बक़िया सफ़हा 159 का) करके पहुंच सकता हूं ख़ुदा की क़सम मक्का मुकर्रमा में अब एक रात न ठहरूंगा मुझे ले चलो चुनान्चे उनको चारपाई पर लेके चले मक़ामे तनईम में आकर उनका इन्तेक़ाल हो गया आख़िर वक़्त उन्होंने अपना दाहिना हाथ बाये हाथ पर रखा और कहा या रब यह तेरा और यह तेरे रसूल का है मैं उस पर बैअ़त करता हूं जिस पर तेरे रसूल ने बैअ़त की यह ख़बर पाकर सहाबा किराम ने फ़रमाया काश वह मदीना पहुंचते तो उनका अज्र कितना बड़ा होता और मुशरिक हंसे और कहने लगे कि जिस मतलब के लिए निकले थे वह न मिला इस पर यह आयते करीमा नाज़िल हुई।

(बक़िया सफ़्हा 150 का) (2) नशिस्त दोनों को एक सी दे (3) दोनों की तरफ़ बराबर मुतवज्जह रहे (4) कलाम सुनने में हर एक के साथ एक ही तरीक़ा रखे (5) फ़ैसला देने में हक़ की रिआयत करे जिसका दूसरे पर हक़ हो पूरा पूरा दिलाये हदीस शरीफ़ में है इंसाफ़ करने वालों को कुर्बे इलाही में नूरी मिम्बर अ़ता होंगे **शाने नुज़ूलः** बाज़ मुफ़स्सिरीन ने इसकी शाने नुज़ूल में इस वाक़िआ का ज़िक्र किया है कि फ़तहे मक्का के वक़्त सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने उसमान बिन तलहा ख़ादिमे कअ़बा से कअ़बा मुअ़ज़्ज़मा की कलीद ले ली फिर जब यह आयत नाज़िल हुई तो आपने वह कलीद उन्हें वापस दी और फ़रमाया कि अब यह कलीद हमेशा तुम्हारी नसल में रहेगी उस पर उसमान बिन तलहा हजबी इस्लाम लाये अगरचे यह वाक़िआ थोड़े थोड़े तग़य्युरात के साथ बहुत से मुहद्दिसीन ने ज़िक्र किया है मगर अहादीस पर नज़र करने से यह क़ाबिले वुसूक़ नहीं मालूम होता क्योंकि इब्ने अ़ब्दुल्लाह और इब्ने मन्दा और इब्ने असीर की रिवायतों से मालूम होता है कि उसमान बिन तलहा सन् 8 हिजरी में मदीना तय्यबा हाज़िर होकर मुशर्रफ़ ब-इस्लाम हो चुके थे और उन्होंने फ़तहे मक्का के रोज़ कुन्जी खुद अपनी खुशी से पेश की थी बुख़ारी व मुस्लिम की हदीसों से यही मुस्तफ़ाद होता है।

(बक़िया सफ़्हा 151 का) उस को पंच तस्लीम न किया नाचार मुनाफ़िक़ को फ़ैसला के लिए सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के हुज़ूर आना पड़ा हुज़ूर ने जो फ़ैसला दिया वह यहूदी के मुवाफ़िक़ हुआ यहाँ से फ़ैसला सुनने के बाद फिर मुनाफ़िक़ यहूदी के दरपै हुआ और उसे मजबूर करके हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अ़न्हु के पास लाया यहूदी ने आप से अर्ज़ किया कि मेरा उसका मुआमला सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम तै फ़रमा चुके। लेकिन यह हुज़ूर के फ़ैसला से राज़ी नहीं आपसे फ़ैसला चाहता है फ़रमाया कि हां मैं अभी आकर उसका फ़ैसला करता हूं यह फ़रमा कर मकान में तशरीफ़ ले गए और तलवार लाकर उसको क़त्ल कर दिया। और फ़रमाया जो अल्लाह और उसके रसूल के फ़ैसला से राज़ी न हो उसका मेरे पास यह फ़ैसला है। (फ़ा171) जिससे भागने बचने की कोई राह न हो जैसी कि बिश्र मुनाफ़िक़ पर पड़ी कि उसको हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने क़त्ल कर दिया (फ़ा172) कुफ़्र व निफ़ाक़ और मआसी जैसा कि बिश्र मुनाफ़िक़ ने रसूले करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के फ़ैसले से एअ़राज़ करके किया (फ़ा173) और वह उज़्र व नदामत कुछ काम न दे जैसा कि बिश्र मुनाफ़िक़ के मारे जाने के बाद उसके औलिया उसके ख़ून का बदला तलब करने आये और बेजा मअ़ज़रतें करने और बातें बनाने लगे अल्लाह तआ़ला ने उसके ख़ून का बदला नहीं दिलाया क्योंकि वह कुश्तनी ही था

(बक़िया सफ़्हा 152 का) मअ़मूल है **मसलाः** बाद वफ़ात मक़बूलाने हक़ को या के साथ निदा करना जायज़ है **मसलाः** मक़बूलाने हक़ मदद फ़रमाते हैं और उनकी दुआ से हाजत रवाई होती है (फ़ा178) माना यह हैं कि जब तक आपके फ़ैसले और हुक्म को सिद्क़े दिल से न मान लें मुसलमान नहीं हो सकते। सुबहानल्लाह इससे रसूले अकरम की शान मालूम होती है। **शाने नुज़ूलः** पहाड़ से आने वाला पानी जिससे बाग़ों में आब रसानी करते हैं उसमें एक अंसारी का हज़रत ज़ुबैर रज़ियल्लाहु अ़न्हु से झगड़ा हुआ मुआमला सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के हुज़ूर पेश किया गया हुज़ूर ने फ़रमाया ऐ ज़ुबैर तुम अपने बाग़ को पानी देकर अपने पड़ोसी की तरफ़ पानी छोड़ दो यह अंसारी को गिरां गुज़रा और उसकी ज़बान से यह कलिमा निकला कि ज़ुबैर आपके फूफी ज़ाद भाई हैं बावजूदेकि फ़ैसला में हज़रत ज़ुबैर को अंसारी के साथ एहसान की हिदायत फ़रमाई गई थी लेकिन अंसारी ने उसकी क़दर न की तो हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने हज़रत ज़ुबैर को हुक्म दिया कि अपने बाग़ को सैराब करके पानी रोक लो इंसाफ़न क़रीब वाला ही पानी का मुस्तहिक़ है इस पर यह आयत नाज़िल हुई (फ़ा179) जैसा कि बनी इसराईल को मिस्र से निकल जाने और तौबा के लिए अपने आपको क़त्ल का हुक्म दिया था। **शाने नुज़ूलः** साबित बिन क़ैस बिन शम्मास से एक यहूदी ने कहा कि अल्लाह ने हम पर अपना क़त्ल और घर बार छोड़ना फ़र्ज़ किया था हम उसको बजा लाये साबित ने फ़रमाया कि अगर अल्लाह हम पर फ़र्ज़ करता तो हम भी ज़रूर बजा लाते इस पर यह आयत नाज़िल हुई (फ़ा180) यानी रसूले करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की इताअ़त और आपकी फ़रमांबरदारी की (फ़ा181) तो अम्बिया के मुख़लिस फ़रमांबरदार जन्नत में उनकी सोहबत व दीदार से महरूम न होंगे (फ़ा182) सिद्दीक़ अम्बिया के सच्चे मुत्तबेईन को कहते हैं जो इख़्लास के साथ उनकी राह पर क़ाइम रहें मगर इस आयत में नबीए करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के अफ़ाज़िल असहाब मुराद हैं जैसे कि हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ (फ़ा183) जिन्होंने राहे ख़ुदा में जाने दीं (फ़ा184) वह दीनदार जो हक़्क़ुल इबाद और हक़्क़ुल्लाह दोनों अदा करें और उनके अहवाल व आमाल और ज़ाहिर व बातिन अच्छे और पाक हों। **शाने नुज़ूलः** हज़रत सौबान सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के साथ कमाले मुहब्बत रखते थे जुदाई की ताब न थी एक रोज़ इस क़दर ग़मगीन और रंजीदा हाज़िर हुए कि चेहरे का रंग बदल गया था हुज़ूर ने फ़रमाया आज रंग क्यों बदला हुआ है अ़र्ज़ किया न मुझे कोई बीमारी है न दर्द बजुज़ इसके कि जब हुज़ूर सामने नहीं होते तो इन्तेहा दर्जे की वहशत व परेशानी हो जाती है जब आख़िरत को याद करता हूं तो यह अन्देशा होता है कि वहां मैं किस तरह दीदार पा सकूंगा आप आला तरीन मक़ाम में होंगे मुझे अल्लाह तआ़ला ने अपने करम से जन्नत भी दी तो उस मक़ामे आली तक रसाई कहां इस पर यह आयते करीमा नाज़िल हुई और उन्हें तस्कीन दी गई कि बावजूद फ़र्क़ मनाज़िल के फ़रमांबरदारों को बारयाबी और मअ़ियत की निअ़मत से सरफ़राज़ फ़रमाया जाएगा (फ़ा185) दुश्मन की घात से बचो और उसे अपने ऊपर मौक़ा न दो एक क़ौल यह भी है कि हथियार साथ रखो **मसलाः** इससे मालूम हुआ कि दुश्मन के मुक़ाबले में अपनी हिफ़ाज़त की तदबीरें जायज़ हैं।

(बक़िया सफ़्हा 154 का) पेश आती तो उसको सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की तरफ़ निस्बत करते और कहते जब से यह आये हैं ऐसी ही सख़्तियां पेश आया करती हैं (फ़ा203) गिरानी हो या अरज़ानी, क़हत हो या फ़राख़ हाली, रंज हो या राहत आराम हो या तकलीफ़ फ़तह हो या शिकस्त हक़ीक़त में सब अल्लाह की तरफ़ से है (फ़ा204) उसका फ़ज़्ल व रहमत है (फ़ा205) कि तूने ऐसे गुनाहों का इरतेकाब किया कि तू इसका मुस्तहिक़ हुआ। मसलाः यहां बुराई की निस्बत बन्दे की तरफ़ मजाज़ है और ऊपर जो मज़कूर हुआ वह हक़ीक़त थी बाज़ मुफ़स्सिरीन ने फ़रमाया कि बदी की निस्बत बन्दे की तरफ़ बर सबीले अदब है ख़ुलासा यह कि बन्दा जब फ़ाइले हक़ीक़ी की तरफ़ नज़र करे तो बुराईयों को अपनी शामते नफ़्स के सबब से समझे (फ़ा206) अ़रब हों या अ़जम आप तमाम ख़ल्क़ के लिए रसूल बनाये गए और कुल जहान आपका उम्मती किया गया। यह सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की जलालते मन्सब और रिफ़अ़ते मंज़िलत का बयान है (फ़ा207) आपकी रिसालते आ़म्मा पर तो सब पर आपकी इताअ़त और आपका इत्तेबाअ़ फ़र्ज़ है।

(बक़िया सफ़्हा 155 का) होतीं और जब ऐसा न हुआ और क़ुरआन पाक की ग़ैबी ख़बरों से आईन्दा पेश आने वाले वाक़िआ़त मुताबक़त करते चले गए तो साबित हुआ कि यक़ीनन वह किताबुल्लाह की तरफ़ से है। नीज़ उसके मज़ामीन में भी बाहम इख़्तिलाफ़ नहीं इसी तरह फ़साहत व बलाग़त में भी क्योंकि मख़्लूक़ का कलाम फ़सीह भी हो तो सब यकसां नहीं होता कुछ बलीग़ होता है तो कुछ रकीक होता है जैसा कि शोअ़रा और ज़बानदानों के कलाम में देखा जाता है कि कोई बहुत मलीह और कोई निहायत फीका यह अल्लाह तआ़ला ही के कलाम की शान है कि उसका तमाम कलाम फ़साहत व बलाग़त की आला मर्तबत पर है (फ़ा214) यानी फ़तहे इस्लाम (फ़ा215)यानी मुसलमानों की हज़ीमत की ख़बर (फ़ा216) जो मफ़सदे का मूजिब होता है कि मुसलमानों की फ़तह की शोहरत से तो कुफ़्फ़ार में जोश पैदा होता है और शिकस्त की ख़बर से मुसलमानों की हौसला शिकनी होती है। (फ़ा217) अकाबिर सहाबा जो साहबे राय और साहबे बसीरत हैं। (फ़ा218) और ख़ुद कुछ दख़ल न देते (फ़ा219) मसलाः मुफ़स्सिरीन ने फ़रमाया इस आयत में दलील है जवाज़े क़ियास पर और यह भी मालूम होता है कि एक इल्म तो वह है जो ब-नस्से क़ुरआन व हदीस हासिल हो और एक इल्म वह है जो क़ुरआन व हदीस से इस्तेम्बात व क़ियास के ज़रीए हासिल होता है। मसला यह भी मालूम हुआ कि उमूरे दीनिया में हर शख़्स को दख़ल देना जायज़ नहीं जो अहल हो उसको तफ़वीज़ करना चाहिए (फ़ा220) रसूले करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की बेअ़सत (फ़ा221) नुज़ूले क़ुरआन (फ़ा222) और कुफ़्र व ज़लाल में गिरिफ़्तार रहते (फ़ा223) वह लोग जो सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की बेअ़सत और क़ुरआन पाक के नुज़ूल से पहले आप पर ईमान लाये जैसे ज़ैद बिन अमर बिन नुफ़ैल और वरक़ा बिन नौफ़ल और क़ैस बिन साअ़ेदा (फ़ा224) ख़्वाह कोई तुम्हारा साथ दे या न दे और तुम अकेले रह जाओ (फ़ा225) शाने नुज़ूल बदरे सुग़रा की जंग जो अबू सुफ़ियान से ठहर चुकी थी जब उसका वक़्त आ पहुंचा तो रसूले करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने वहां जाने के लिए लोगों को दावत दी बाज़ों पर यह गिरां हुआ तो अल्लाह तआ़ला ने यह आयत नाज़िल फ़रमाई और अपने हबीब सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को हुक्म दिया कि वह जिहाद न छोड़ें अगरचे तन्हा हों अल्लाह आपका नासिर है अल्लाह का वादा सच्चा है यह हुक्म पा कर रसूले करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम बदरे सुग़रा की जंग के लिए रवाना हुए सिर्फ़ सत्तर सवार हमराह थे (फ़ा226) उन्हें जिहाद की तरग़ीब दो और बस (फ़ा227) चुनांचे ऐसा ही हुआ कि मुसलमानों का यह छोटा से लश्कर कामयाब आया और कुफ़्फ़ार ऐसे मरऊब हुए कि वह मुसलमानों के मुक़ाबिल मैदान में न आ सकें। फ़ायदाः इस आयत से साबित हुआ कि सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम शुजाअ़त में सबसे आला हैं कि आपको तन्हा कुफ़्फ़ार के मुक़ाबिल तशरीफ़ ले जाने का हुक्म हुआ और आप आमादा हो गए।

(बक़िया सफ़्हा 163 का) के हर कबीले का बुत था जिसकी वह इबादत करते थे और उसको उस कबीला की उन्सा (औरत) कहते थे हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा की किराअत में *इल्ला औसाना* और हज़रत इब्ने अ़ब्बास की किराअत में *इल्ला उसुना* आया है इससे भी साबित होता है कि इनास से मुराद बुत हैं एक क़ौल यह भी है कि मुशरिकीने अरब अपने बातिल मअ़बूदों को ख़ुदा की बेटियां कहते थे और एक क़ौल यह है कि मुशरिकीन बुतों को ज़ेवर वग़ैरह पहनाकर औरतों की तरह सजाते थे (फ़ा307) क्योंकि उसी के इग़वा से बुतपरस्ती करते हैं (फ़ा308) शैतान (फ़ा309) उन्हें अपना मुतीअ़ बनाऊंगा (फ़ा310) तरह तरह की कभी उम्र तवील की कभी लज़्ज़ाते दुनिया की कभी ख़्वाहिशाते बातिला की कभी और कभी और (फ़ा311) चुनांचे उन्होंने ऐसा किया कि ऊँटनी जब पांच मर्तबा बियाह लेती तो वह उसको छोड़ देते और उससे नफ़ा उठाना अपने ऊपर हराम कर लेते और उसका दूध बुतों के लिए कर लेते और उसको बहीरा कहते थे शैतान ने उनके दिल में यह डाल दिया था कि ऐसा करना इबादत है (फ़ा312) मर्दों का औरतों की शक्ल में ज़नाना लिबास पहनना औरतों की तरह बात चीत और हरकात करना जिस्म को गोद कर सुर्मा या सेन्दुर वग़ैरह जिल्द में पैवस्त करके नक़्श व निगार बनाना बालों में बाल जोड़ कर बड़ी बड़ी जटें बनाना भी इसमें दाख़िल है (फ़ा313) और दिल में तरह तरह की उम्मीदें और वसवसे डालता है ताकि इंसान गुमराही में पड़े (फ़ा314) कि जिस चीज़ के नफ़ा और फ़ायदा की तवक़्क़ो दिलाता है दर हक़ीक़त उसमें सख़्त ज़रर और नकसान होता है।

(बकि़या सफ़हा 158 का) ने अ़ैयाश को मलामत की और कहा तू इसी दीन पर था अगर यह हक़ था तो तू ने हक़ को छोड़ दिया और अगर बातिल था तो तू बातिल दीन पर रहा यह बात अ़ैयाश को बड़ी नागवार गुज़री और अ़ैयाश ने कहा कि मैं तुझको अकेला पाऊँगा तो खुदा की क़सम ज़रूर क़त्ल कर दूंगा उसके बाद अ़ैयाश इस्लाम लाये और उन्होंने मदीना तय्यबा हिजरत की और उनके बाद हारिस भी इस्लाम लाये और हिजरत करके रसूले करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की ख़िदमत में पहुंचे लेकिन उस रोज़ अ़ैयाश मौजूद न थे न उन्हें हारिस के इस्लाम की इत्तेलाअ़ हुई क़ुबा के क़रीब अ़ैयाश ने हारिस को देख पाया और क़त्ल कर दिया तो लोगों ने कहा ऐ अ़ैयाश तुम ने बहुत बुरा किया हारिस इस्लाम ला चुके थे इस पर अ़ैयाश को बहुत अफ़सोस हुआ और उन्होंने सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की ख़िदमते अक़दस में हाज़िर होकर वाक़िआ अ़र्ज़ किया और कहा कि मुझे ता वक़्ते क़त्ल उनके इस्लाम की ख़बर ही न हुई। इस पर यह आयते करीमा नाज़िल हुई। (फ़ा257) मुसलमान को अ़मदन क़त्ल करना सख़्त गुनाह और अशद कबीरा है हदीस शरीफ़ में है कि दुनिया का हलाक होना अल्लाह के नज़दीक एक मुसलमान के क़त्ल होने से हल्का है फिर यह क़त्ल अगर ईमान की अ़दावत से हो या क़ातिल उस क़त्ल को हलाल जानता हो तो यह कुफ़्र भी है फ़ाइदा खुलूद मुद्दते दराज़ के माना में भी मुस्तअ़मल है और क़ातिल अगर सिर्फ़ दुनियवी अ़दावत से मुसलमान को क़त्ल करे और उसके क़त्ल को मुबाह न जाने जब भी उसकी जज़ा मुद्दत दराज़ के लिए जहन्नम है फ़ाइदा खुलूद का लफ़्ज़ मुद्दते तवीला के माना में होता है तो क़ुरआने करीम में उसके साथ लफ़्ज़े अबद मज़कूर नहीं होता और कुफ़्फ़ार के हक़ में खुलूद बमाना दवाम आया है तो उसके साथ अबद भी ज़िक्र फ़रमाया गया है शाने नु.जूल यह आयत मुक़्यस बिन ख़बाबा के हक़ में नाज़िल हुई उसके भाई क़बीला बनी नज्जार में मक़्तूल पाये गए थे और क़ातिल मालूम न था बनी नज्जार ने बहुक्मे रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम दियत अदा करदी उसके बाद मुक़्यस ने ब-इग़वाए शैतान एक मुसलमान को बेख़बरी में क़त्ल कर दिया और दियत के ऊँट लेकर मक्का को चलता हो गया और मुरतद हो गया यह इस्लाम में पहला शख़्स है जो मुरतद हुआ (फ़ा258) या जिस में इस्लाम की अ़लामत व निशानी पाओ उससे हाथ रोको और जब तक उसका कुफ़्र साबित न हो जाये उस पर हाथ न डालो अबू दाऊद व तिर्मिज़ी की हदीस में है सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम जब कोई लश्कर रवाना फ़रमाते हुक्म देते कि अगर तुम मस्जिद देखो या अज़ान सुनो तो क़त्ल न करना मसला अक्सर .फ़ुक़हा ने फ़रमाया कि अगर यहूदी या नसरानी यह कहे कि मैं मोमिन हूं तो उसको मोमिन न माना जाएगा क्यों कि वह अपने अ़क़ीदा ही को ईमान कहता है और अगर ला इला-ह इल्लल्लाह मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह कहे जब भी उसके मुसलमान होने का हुक्म न किया जाएगा जब तक कि वह अपने दीन से बेज़ारी का इज़हार और उसके बातिल होने का एतेराफ़ न करे इससे मालूम हुआ कि जो शख़्स किसी कुफ़्र में मुबतला हो उसके लिए उस कुफ़्र से बेज़ारी और उसको कुफ़्र जानना ज़रूर है (फ़ा259) यानी जब तुम इस्लाम में दाख़िल हुए थे तो तुम्हारी ज़बान से कलिमा शहादत सुनकर तुम्हारे जान व माल महफ़ूज़ कर दिये गए थे और तुम्हारा इज़हार बे ऐतबार न क़रार दिया गया था ऐसा ही इस्लाम में दाख़िल होने वालों के साथ तुम्हें भी सुलूक करना चाहिए शाने नु.जूल यह आयत मिरदास बिन नहीक के हक़ में नाज़िल हुई जो अहले फ़िदक में से थे और उनके सिवा उनकी क़ौम का कोई शख़्स इस्लाम न लाया था उस क़ौम को ख़बर मिली कि लश्करे इस्लाम उनकी तरफ़ आ रहा है तो क़ौम के सब लोग भाग गए मगर मिरदास ठहरे रहे जब उन्होंने दूर से लश्कर को देखा तो बईं ख़्याल कि मबादा कोई ग़ैर-मुस्लिम जमाअ़त हो यह पहाड़ की चोटी पर अपनी बकरियां लेकर चढ़ गए जब लश्कर आया और उन्होंने अल्लाहु अक्बर के नअ़रों की आवाज़ सुनीं तो खुद भी तकबीर पढ़ते हुए उतर आये और कहने लगे ला इला-ह इल्लल्लाह मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह अस्सलामु अ़लैकुम मुसलमानों ने ख़्याल किया कि अहले फ़िदक तो सब काफ़िर हैं यह शख़्स मुग़ालता देने के लिए इज़हारे ईमान करता है बईं ख़्याल उसामा बिन ज़ैद ने उनको क़त्ल कर दिया और बकरियां ले आये जब सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के हु.जूर में हाज़िर हुए तो तमाम माजरा अर्ज़ किया हु.जूर को निहायत रंज हुआ और फ़रमाया तुम ने उसके सामान के सबब उसको क़त्ल कर दिया इस पर यह आयत नाज़िल हुई और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने उसामा को हुक्म दिया कि मक़्तूल की बकरियां उसके अहल को वापस करें (फ़ा260) कि तुम को इस्लाम पर इस्तेक़ामत बख़्शी और तुम्हारा मोमिन होना मशहूर किया (फ़ा261) ताकि तुम्हारे हाथ से कोई ईमानदार क़त्ल न हो (फ़ा262) इस आयत में जिहाद की तरग़ीब है कि बैठ रहने वाले और जिहाद करने वाले बराबर नहीं हैं मुजाहिदीन के लिए बड़े दर्जात व सवाब हैं और यह मसला भी साबित होता है कि जो लोग बीमारी या पीरी व नाताक़ती या नाबीनाई या हाथ पाँव के नाकारा होने और उज़्र की वजह से जिहाद में हाज़िर हों वह फ़ज़ीलत से महरूम न किये जायेंगे अगर नियत सालेह रखते हों, हदीस बुख़ारी में है सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने ग़ज़वए तबूक से वापसी के वक़्त फ़रमाया कुछ लोग मदीना में रह गए हैं हम किसी घाटी या आबादी में नहीं चलते मगर वह हमारे साथ होते हैं उन्हें उज़्र ने रोक लिया है।

(बकि़या सफ़हा 188 का) बाक़ी किताबों और रसूलों पर ईमान न लायेंगे हु.ज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने उनसे फ़रमाया कि तुम अल्लाह पर और उसके रसूल मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम पर और क़ुरआन पर और उससे पहली हर किताब पर ईमान लाओ इस पर यह आयत नाज़िल हुई (फ़ा348) यानी क़ुरआन पाक पर और उन तमाम किताबों पर ईमान लाओ जो अल्लाह तआ़ला ने क़ुरआन से पहले अपने अम्बिया पर नाज़िल फ़रमाईं (फ़ा349) यानी उनमें से किसी एक का भी इंकार करे कि एक रसूल और एक किताब का इंकार भी सब का इंकार है।

(बक़िया सफ़हा 160 का) मुद्दते सफ़र, **मसला:** जिस सफ़र में क़स्र किया जाता है उसकी अदना मुद्दत तीन रात दिन की मसाफ़त है जो ऊंट या पैदल की मुतवस्सित रफ़्तार से तय की जाती हो और उसकी मिक़दारें ख़ुश्की और दरिया और पहाड़ों में मुख़्तलिफ़ हो जाती हैं तो जो मसाफ़त मुतवस्सित रफ़्तार से चलने वाले तीन रोज़ में तय करते हों उसके सफ़र में क़स्र होगा। **मसला:** मुसाफ़िर की जल्दी और देर का ऐतबार नहीं ख़्वाह वह तीन रोज़ की मसाफ़त तीन घन्टे में तय करे जब भी क़स्र होगा और अगर एक रोज़ की मसाफ़त तीन रोज़ से ज़्यादा में तय करे तो क़स्र न होगा फ़र्ज़ ऐतबारे मसाफ़त का है (फ़ा275) यानी अपने असहाब में (फ़ा276) इसमें जमाअ़ते नमाज़ ख़ौफ़ का बयान है। **शाने नुज़ूलः** जिहाद में जब रसूले करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को मुशरिकीन ने देखा कि आपने मअ़ तमाम असहाब के नमाज़े ज़ुहर ब-जमाअ़त अदा फ़रमाई तो उन्हें अफ़सोस हुआ कि उन्होंने उस वक़्त में क्यों न हमला किया और आपस में एक दूसरे से कहने लगे कि क्या ही अच्छा मौक़ा था बाज़ों ने उनमें से कहा इसके बाद एक और नमाज़ है जो मुसलमानों को अपने मां बाप से ज़्यादा प्यारी है यानी नमाज़े अस्र, जब मुसलमान उस नमाज़ के लिए खड़े हों तो पूरी क़ुव्वत से हमला करके उन्हें क़त्ल कर दो उस वक़्त हज़रत जिबरील नाज़िल हुए और उन्होंने सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह यह नमाज़े ख़ौफ़ है और अल्लाह अ़ज़्ज़ व जल्ल फ़रमाता है *व इज़ा कुन्-त फ़ीहिम्* .... (फ़ा277) यानी हाज़िरीन को दो जमाअ़तों में तक़सीम कर दिया जाये। एक उनमें से आपके साथ रहे आप उन्हें नमाज़ पढ़ायें और एक जमाअ़त दुश्मन के मुक़ाबला में क़ायम रहे। (फ़ा278) यानी जो लोग दुश्मन के मुक़ाबिल हों और हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा से मरवी है कि अगर नमाज़ बा-जमाअ़त मुराद हो तो वह लोग ऐसे हथियार लगाये रहें जिन से नमाज़ में कोई ख़लल न हो जैसे तलवार ख़न्जर वग़ैरह बाज़ मुफ़स्सिरीन का क़ौल है कि हथियार साथ रखने का हुक्म दोनों फ़रीक़ों के लिए है और यह एहतियात के क़रीब है (फ़ा279) यानी दोनों सजदे करके रकअ़त पूरी कर लें (फ़ा280) ताकि दुश्मन के मुक़ाबले में खड़े हो सकें (फ़ा281) और अब तक दुश्मन के मुक़ाबिल थी (फ़ा282) पनाह से ज़िरह वग़ैरह ऐसी चीज़ें मुराद हैं जिन से दुश्मन के हमले से बचा जा सके उनका साथ रखना बहरहाल वाजिब है जैसा कि क़रीब ही इरशाद होगा *व ख़ुज़ू हिज़्-रकुम्* और हथियार साथ रखना मुस्तहब है नमाज़े ख़ौफ़ का मुख़्तसर तरीक़ा यह है कि पहली जमाअ़त इमाम के साथ एक रकअ़त पूरी करके दुश्मन के मुक़ाबिल जाये और दूसरी जमाअ़त जो दुश्मन के मुक़ाबिल खड़ी थी वह आकर इमाम के साथ दूसरी रकअ़त पढ़े फिर फ़क़त इमाम सलाम फेरे और पहली जमाअ़त आकर दूसरी रकअ़त बग़ैर क़िराअत के पढ़े और सलाम फेर दे और दुश्मन के मुक़ाबिल चली जाये फिर दूसरी जमाअ़त अपनी जगह आकर एक रकअ़त जो बाक़ी रही थी उसको क़िराअत के साथ पूरा करके सलाम फेरे क्योंकि यह लोग मस्बूक़ हैं और पहली लाहिक़ हज़रत इब्ने मसऊद रज़ियल्लाहु अ़न्हु से सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम का इसी तरह नमाज़े ख़ौफ़ अदा फ़रमाना मरवी है हुज़ूर के बाद भी नमाज़े ख़ौफ़ सहाबा पढ़ते रहे हैं हालते ख़ौफ़ में दुश्मन के मुक़ाबिल इस एहतिमाम के साथ नमाज़ अदा करने से मालूम होता है कि जमाअ़त किस क़दर ज़रूरी है। **मसायलः** हालते सफ़र में अगर सूरते ख़ौफ़ पेश आये तो उसका यह बयान हुआ लेकिन अगर मुक़ीम को ऐसी हालत पेश आये तो वह चार रकअ़त वाली नमाज़ों में हर हर जमाअ़त को दो दो रकअ़त पढ़ाये और तीन रकअ़त वाली नमाज़ में पहली जमाअ़त को दो रकअ़त और दूसरी को एक (फ़ा283) **शाने नुज़ूलः** नबीए करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ग़ज़वए ज़ातुर्रिक़ाअ़ से जब फ़ारिग़ हुए और दुश्मन के बहुत आदमियों को गिरिफ़्तार किया और अमवाले ग़नीमत हाथ आये और कोई दुश्मन मुक़ाबिल बाक़ी न रहा तो हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम क़ज़ाए हाजत के लिए जंगल में तन्हा तशरीफ़ ले गए तो दुश्मन की जमाअ़त में से हुवैरिस बिन हारिस मुहारबी यह ख़बर पाकर तलवार लिये हुए छुपा छुपा पहाड़ से उतरा और अचानक हज़रत के पास पहुंचा और तलवार खींच कर कहने लगा या मुहम्मद (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) अब तुम्हें मुझ से कौन बचाएगा हुज़ूर ने फ़रमाया अल्लाह तआ़ला और दुआ फ़रमाई जब ही उसने हुज़ूर पर तलवार चलाने का इरादा किया औंधे मुंह गिर पड़ा और तलवार हाथ से छूट गई हुज़ूर ने वह तलवार लेकर फ़रमाया कि तुझको मुझ से कौन बचाएगा कहने लगा मेरा बचाने वाला कोई नहीं है फ़रमाया *अश्हदु अंल्-लाइला-ह इल्लल्लाहु व अश्हदु अन्-न मुहम्मदर् रसूलुल्लाह* पढ़ तो तेरी तलवार तुझे दे दूंगा उसने इससे इंकार किया और कहा कि इसकी शहादत देता हूं कि मैं कभी आप से न लडूंगा और ज़िन्दगी भर आपके किसी दुश्मन की मदद न करूंगा आपने उसकी तलवार उसको दे दी कहने लगा या मुहम्मद (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) आप मुझसे बहुत बेहतर हैं फ़रमाया हां हमारे लिए यही सज़ावार है इस पर यह आयत नाज़िल हुई और हथियार और बचाव साथ रखने का हुक्म दिया गया (अहमदी) (फ़ा284) कि उसका साथ रखना हमेशा ज़रूरी है। **शाने नुज़ूलः** इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा ने फ़रमाया कि अ़ब्दुर्रहमान बिन औफ़ ज़ख़्मी थे और उस वक़्त हथियार रखना उनके लिए बहुत तकलीफ़ और बार था उनके हक़ में यह आयत नाज़िल हुई और हालते उ़ज़्र में हथियार खोल रखने की इजाज़त दी गई।

(बक़िया सफ़हा 161 का) तुअ्मा की क़ौम बनी ज़फ़र ने यह अ़ज़्म कर लिया कि यहूदी को चोर बतायेंगे और इस पर क़सम खा लेंगे ताकि क़ौम रुसवा न हो और उनकी ख़्वाहिश थी कि रसूले करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम तुअ्मा को बरी कर दें और यहूदी को सज़ा दें इसी लिए उन्होंने हुजू़र के सामने तुअ्मा के मुवाफ़िक़ और यहूदी के ख़िलाफ़ झूटी गवाही दी और उस गवाही पर कोई जिरह व क़दह न हुई (इस वाक़िआ़ के मुतअ़ल्लिक़ मुतअद्दिद रिवायात आई हैं और उनमें बाहम इख़्तिलाफ़ात भी हैं) (फ़ा289) और इल्म अता फ़रमाये इल्मे यक़ीनी को कुव्वते ज़ुहूर की वजह से रूयत से ताबीर फ़रमाया हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अ़न्हु से मरवी है कि हरगिज़ कोई न कहे कि जो अल्लाह ने मुझे दिखाया उस पर मैंने फ़ैसला किया क्योंकि अल्लाह तआ़ला ने यह मन्सब ख़ास अपने नबी सल्लल्लहु अ़लैहि वसल्लम को अ़ता फ़रमाया आप की राय हमेशा सवाब होती है। क्योंकि अल्लाह तआ़ला ने हक़ायक़ व हवादिस आपके पेशे नज़र कर दिये हैं और दूसरे लोगों की राय ज़न का मर्तबा रखती है (फ़ा290) मअ़सीयत का इरतेकाब करके (फ़ा291) हया नहीं करते (फ़ा292) उनका हाल जानता है उस पर उनका कोई राज़ छुप नहीं सकता है (फ़ा293) जैसे तुअ्मा की तरफ़दारी में झूटी क़सम और झूटी शहादत (फ़ा294) ऐ क़ौमे तुअ्मा।

(बक़िया सफ़हा 164 का) एक क़ौल यह भी है कि ख़लील उस मुहिब को कहते हैं जिसकी मुहब्बत कामिला हो और उसमें किसी क़िस्म का ख़लल और नक़सान न हो यह माना भी हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलातु वत्तस्लीम में पाये जाते हैं तमाम अम्बिया के जो कमालात हैं सब सय्यदे अम्बिया सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को हासिल हैं हुजू़र अल्लाह के ख़लील भी हैं जैसा कि बुख़ारी व मुस्लिम की हदीस में है और हबीब भी जैसा कि तिर्मिज़ी शरीफ़ की हदीस में है कि मैं अल्लाह का हबीब हूं और यह फ़ख़्रन नहीं कहता (फ़ा323) और वह उसके इहातए इल्म व कु़दरत में है। इहाता बिलइल्म यह है कि किसी शय के लिए जितने वुजूह हो सकते हैं उनमें से कोई वजह इल्म से ख़ारिज न हो (फ़ा324) **शाने नुजू़लः** ज़मानए जाहिलियत में अरब के लोग औरत और छोटे बच्चों को मय्यत के माल का वारिस नहीं क़रार देते थे जब आयते मीरास नाज़िल हुई तो उन्होंने अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह क्या औरत और छोटे बच्चे वारिस होंगे आपने उनको इस आयत से जवाब दिया हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा ने फ़रमाया कि यतीमों के औलिया का दस्तूर यह था कि अगर यतीम लड़की साहबे माल व जमाल होती तो उससे थोड़े महर पर निकाह कर लेते और अगर हुस्न व माल न रखती तो उसे छोड़ देते और अगर हुस्ने सूरत न रखती और होती मालदार तो उससे निकाह न करते और इस अन्देशा से दूसरे के निकाह में भी न देते कि वह माल में हिस्सादार हो जाएगा अल्लाह तआ़ला ने यह आयतें नाज़िल फ़रमा कर उन्हें इन आदतों से मना फ़रमाया (फ़ा325) मीरास से।

(बक़िया सफ़हा 165 का) इशरत व इख़्तेलात में न नज़र व तवज्जोह में तुम कोशिश करके यह तो कर नहीं सकते लेकिन अगर इतना तुम्हारे मक़दूर में नहीं है और इस वजह से इन तमाम पाबन्दियों का बार तुम पर नहीं रखा गया और मुहब्बते क़ल्बी और मैले तबई जो तुम्हारा इख़्तियारी नहीं है उसमें बराबरी करने का तुम्हें हुक्म नहीं दिया गया (फ़ा335) बल्कि यह ज़रूर है कि जहां तक तुम्हें कु़दरत व इख़्तियार है वहां तक यकसां बरताव करो मुहब्बत इख़्तियारी शय नहीं तो बात चीत हुस्न व अख़्लाक़ खाने पहनने पास रखने और ऐसे उमूर में बराबरी करना इख़्तियारी है इन उमूर में दोनों के साथ यकसां सुलूक करना लाज़िम व ज़रूरी है (फ़ा336) ज़न व शौहर बाहम सुलह न करें और वह जुदाई ही बेहतर समझें और खुलअ़ के साथ तफ़रीक़ हो जाये या मर्द औरत को तलाक़ देकर उसका महर और इद्दत का नफ़क़ा अदा कर दे और इस तरह वह (फ़ा337) और हर एक को बेहतर बदल अता फ़रमएगा (फ़ा338) उसकी फ़रमांबरदारी करो और उसके हुक्म के ख़िलाफ़ न करो तौहीद व शरीअ़त पर क़ायम रहो इस आयत से मालूम हुआ कि तक़्वा और परहेज़गारी का हुक्म क़दीम है तमाम उम्मतों को इसकी ताकीद होती रही है (फ़ा339) तमाम जहान उसके फ़रमांबरदारों से भरा है तुम्हारे कुफ़्र से उसका क्या ज़रर (फ़ा340) तमाम ख़ल्क़ से और उनकी इबादत से।

لَا يُحِبُّ اللّٰهُ الْجَهْرَ بِالسُّوْٓءِ مِنَ الْقَوْلِ اِلَّا مَنْ ظُلِمَ ؕ وَكَانَ اللّٰهُ سَمِيْعًا عَلِيْمًا ۝ اِنْ تُبْدُوْا خَيْرًا اَوْ تُخْفُوْهُ اَوْ تَعْفُوْا عَنْ سُوْٓءٍ فَاِنَّ اللّٰهَ كَانَ عَفُوًّا
قَدِيْرًا ۝ اِنَّ الَّذِيْنَ يَكْفُرُوْنَ بِاللّٰهِ وَرُسُلِهٖ وَيُرِيْدُوْنَ اَنْ يُّفَرِّقُوْا بَيْنَ اللّٰهِ وَرُسُلِهٖ وَيَقُوْلُوْنَ نُؤْمِنُ بِبَعْضٍ وَّنَكْفُرُ بِبَعْضٍ ۙ وَّيُرِيْدُوْنَ اَنْ
يَّتَّخِذُوْا بَيْنَ ذٰلِكَ سَبِيْلًا ۝ اُولٰٓئِكَ هُمُ الْكٰفِرُوْنَ حَقًّا ۚ وَاَعْتَدْنَا لِلْكٰفِرِيْنَ عَذَابًا مُّهِيْنًا ۝ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا بِاللّٰهِ وَرُسُلِهٖ وَلَمْ يُفَرِّقُوْا بَيْنَ اَحَدٍ مِّنْهُمْ
اُولٰٓئِكَ سَوْفَ يُؤْتِيْهِمْ اُجُوْرَهُمْ ؕ وَكَانَ اللّٰهُ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا ۝ يَسْـَٔلُكَ اَهْلُ الْكِتٰبِ اَنْ تُنَزِّلَ عَلَيْهِمْ كِتٰبًا مِّنَ السَّمَآءِ فَقَدْ سَاَلُوْا مُوْسٰۤى اَكْبَرَ
مِنْ ذٰلِكَ فَقَالُوْۤا اَرِنَا اللّٰهَ جَهْرَةً فَاَخَذَتْهُمُ الصّٰعِقَةُ بِظُلْمِهِمْ ۚ ثُمَّ اتَّخَذُوا الْعِجْلَ مِنْۢ بَعْدِ مَا جَآءَتْهُمُ الْبَيِّنٰتُ فَعَفَوْنَا عَنْ ذٰلِكَ ۚ وَاٰتَيْنَا مُوْسٰى سُلْطٰنًا مُّبِيْنًا ۝

ला युहिब्बुल्लाहुल्जह–र बिस्सूइ मिनल्क़ौलि इल्ला मन् ज़ुलि–म व कानल्लाहु समीअन् अ़लीमा (148)इन् तुब्दू ख़ैरन् औ तुख़्फ़ूहु औ तअ़फ़ू अन् सूइन् फ़–इन्नल्ला–ह का–न अ़फ़ुव्वन् क़दीरा (149)इन्नल्लज़ी–न यक्फ़ुरू–न बिल्लाहि व रुसुलिही व युरीदू–न अंय्युफ़र्रिक़ू बैनल्लाहि व रुसुलिही व यक़ूलू–न नुअ्मिनु बि–बअ़्ज़िंव्–व नक्फ़ुरु बि–बअ़्ज़िंव्–व युरीदू–न अंय्यत्तख़िज़ू बै–न ज़ालि–क सबीला(150)उलाइ–क हुमुल् काफ़िरू–न हक़्क़न् व् अअ़्तदना लिल् काफ़िरी–न अ़ज़ाबम् मुहीना(151)वल्लज़ी–न आ–मनू बिल्लाहि व रुसुलिही व लम् युफ़र्रिक़ू बै–न अ–हदिम् मिन्हुम् उलाइ–क सौ–फ़ युअ्तीहिम् उजू–रहुम् व कानल्लाहु ग़फ़ूर्रहीमा(152)यस्अलु–क अह्–लुल्किताबि अन् तुनज़्ज़ि–ल अ़लैहिम् किताबम् मि–नस्समाइ फ़–क़द् स–अलू मूसा अक्ब–र मिन् ज़ालि–क फ़क़ालू अरि–नल्ला–ह जह्–र–तन् फ़–अ–ख़–ज़त्–हुमुस्–साअ़ि–क़तु बि ज़ुल्मिहिम् सुम्मत्त–ख़जुल्–अ़िज्–ल मिम्बअ़्दि मा जाअत् हुमुल्बय्यिनातु फ़–अ़फ़ौना अन् ज़ालि–क व आतैना मूसा सुल्तानम् मुबीना(153)

अल्लाह पसन्द नहीं करता बुरी बात का एलान करना (फ़ा374) मगर मज़लूम से (फ़ा375) और अल्लाह सुनता जानता है।(148) अगर तुम कोई भलाई एलानिया करो या छुप कर या किसी की बुराई से दरगुज़रो तो बेशक अल्लाह माफ़ करने वाला क़ुदरत वाला है।(149) (फ़ा376) वह जो अल्लाह और उसके रसूलों को नहीं मानते और चाहते हैं कि अल्लाह से उसके रसूलों को जुदा कर दें (फ़ा377) और कहते हैं हम किसी पर ईमान लाये और किसी के मुन्किर हुए (फ़ा378) और चाहते हैं कि ईमान व कुफ़्र के बीच में कोई राह निकाल लें।(150) यही हैं ठीक-ठीक काफ़िर (फ़ा379) और हमने काफ़िरों के लिए ज़िल्लत का अ़ज़ाब तैयार कर रखा है।(151)और वह जो अल्लाह और उसके सब रसूलों पर ईमान लाये और उनमें से किसी पर ईमान में फ़र्क़ न किया उन्हें अंक़रीब अल्लाह उनके सवाब देगा (फ़ा380) और अल्लाह बख़्शने वाला मेहरबान है।(152) (फ़ा381) (रुकूअ़ 1) ऐ महबूब अहले किताब (फ़ा382) तुमसे सवाल करते हैं कि उन पर आसमान से एक किताब उतार दो (फ़ा383) तो वह तो मूसा से उससे भी बड़ा सवाल कर चुके (फ़ा384) कि बोले हमें अल्लाह को एलानिया दिखा दो तो उन्हें कड़क ने आ लिया उनके गुनाहों पर फिर बछड़ा ले बैठे (फ़ा385) बाद इसके कि रौशन आयतें (फ़ा386) उनके पास आ चुकीं तो हमने यह माफ़ फ़रमा दिया (फ़ा387) और हमने मूसा को रौशन ग़लबा दिया।(153) (फ़ा388)

(फ़ा374) यानी किसी के पोशीदा हाल का ज़ाहिर करना। इसमें ग़ीबत भी आ गई चुग़लख़ोरी भी आक़िल वह है जो अपने ऐबों को देखे एक क़ौल यह भी है कि बुरी बात से गाली मुराद है (फ़ा375) कि उसको जायज़ है कि ज़ालिम के ज़ुल्म का बयान करे वह चोर या ग़ासिब की निस्बत कह सकता है कि उसने मेरा माल चुराया ग़सब किया। **शाने नुज़ूलः** एक शख़्स एक क़ौम का मेहमान हुआ था उन्होंने अच्छी तरह उसकी मेज़बानी न की जब वह वहां से निकला तो उनकी शिकायत करता निकला इस वाक़िआ के मुतअ़ल्लिक़ यह आयत नाज़िल हुई बाज़ मुफ़स्सिरीन ने फ़रमाया कि यह आयत हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अ़न्हु के बाब में नाज़िल हुई एक शख़्स सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के सामने आपकी शान में ज़बान दराज़ी करता रहा आपने कई बार सुकूत किया मगर वह बाज़ न आया तो एक मर्तबा आपने उसको जवाब दिया उस पर हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम उठ खड़े हुए हज़रत सिद्दीक़े अकबर ने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम यह शख़्स मुझको बुरा कहता रहा तो हुज़ूर ने कुछ न फ़रमाया मैं ने एक मर्तबा जवाब **(बक़िया सफ़हा 200 पर)**

وَرَفَعْنَا فَوْقَهُمُ الطُّورَ بِمِيثَاقِهِمْ وَقُلْنَا لَهُمُ ادْخُلُوا الْبَابَ سُجَّدًا وَقُلْنَا لَهُمْ لَا تَعْدُوا فِي السَّبْتِ وَأَخَذْنَا مِنْهُمْ مِيثَاقًا غَلِيظًا ﴿١٥٤﴾
فَبِمَا نَقْضِهِمْ مِيثَاقَهُمْ وَكُفْرِهِمْ بِآيَاتِ اللَّهِ وَقَتْلِهِمُ الْأَنْبِيَاءَ بِغَيْرِ حَقٍّ وَقَوْلِهِمْ قُلُوبُنَا غُلْفٌ بَلْ طَبَعَ اللَّهُ عَلَيْهَا بِكُفْرِهِمْ فَلَا يُؤْمِنُونَ
إِلَّا قَلِيلًا ﴿١٥٥﴾ وَبِكُفْرِهِمْ وَقَوْلِهِمْ عَلَىٰ مَرْيَمَ بُهْتَانًا عَظِيمًا ﴿١٥٦﴾ وَقَوْلِهِمْ إِنَّا قَتَلْنَا الْمَسِيحَ عِيسَى ابْنَ مَرْيَمَ رَسُولَ اللَّهِ وَمَا قَتَلُوهُ وَمَا
صَلَبُوهُ وَلَٰكِنْ شُبِّهَ لَهُمْ وَإِنَّ الَّذِينَ اخْتَلَفُوا فِيهِ لَفِي شَكٍّ مِنْهُ مَا لَهُمْ بِهِ مِنْ عِلْمٍ إِلَّا اتِّبَاعَ الظَّنِّ وَمَا قَتَلُوهُ يَقِينًا ﴿١٥٧﴾ بَلْ رَفَعَهُ اللَّهُ
إِلَيْهِ وَكَانَ اللَّهُ عَزِيزًا حَكِيمًا ﴿١٥٨﴾ وَإِنْ مِنْ أَهْلِ الْكِتَابِ إِلَّا لَيُؤْمِنَنَّ بِهِ قَبْلَ مَوْتِهِ وَيَوْمَ الْقِيَامَةِ يَكُونُ عَلَيْهِمْ شَهِيدًا ﴿١٥٩﴾

व र-फ़अ्ना फ़ौ-क़हुमुत्तू-र बिमी-साक़िहिम् व कुल्ना लहुमुदखु-लुल्बा- -ब सुज्जदंव्-व कुल्ना लहुम् ला तअ्दू फ़िस्सब्ति व अ-ख़ज्ना मिन्हुम् मीसाक़न् ग़लीज़ा(154)फ़बिमा नक़्ज़िहिम् मीसा-क़हुम् व कुफ़्रिहिम् बिआयातिल्लाहि व क़त्लिहिमुल् अम्बिया-अ बिग़ैरि हक़्क़िंव् व क़ौलिहिम् क़ुलूबुना गुल्फ़ुन् बल् त-ब-अल्लाहु अ़लैहा बिकुफ़्रिहिम् फ़ला युअ्मिनू-न इल्ला क़लीला(155)व बि-कुफ़्रिहिम् व क़ौलिहिम् अ़ला मर्य-म बुह्तानन् अ़ज़ीमा(156)व क़ौलिहिम् इन्ना क़-तल्नल्मसी-ह ई़सब्-न मर्य-म रसूलल्लाहि व मा क़-तलूहु व मा स-लबूहु व लाकिन् शुब्बि-ह लहुम् व इन्नल्लज़ी-नख़्त-लफ़ूफ़ीहि लफ़ी शक्किम् मिन्हु मा लहुम् बिही मिन् अ़िल्मिन् इल्लत्तिबाअ़ज़्-ज़न्नि व मा क़-तलूहु यक़ीना(157)बर्र-फ़-अ़हुल्लाहु इलैहि व का-नल्लाहु अ़ज़ीज़न् हकीमा(158)व इम् मिन् अह्लिल् किताबि इल्ला ल-युअ्मिनू-न बिही क़ब्-ल मौतिही व यौमल्क़ियामति यकूनु अ़लैहिम् शहीदा(159)

फिर हमने उन पर तूर को ऊंचा किया उनसे अहद लेने को और उनसे फ़रमाया कि दरवाज़े में सजदा करते दाख़िल हो और उनसे फ़रमाया कि हफ़्ता में हद से न बढ़ो (फ़ा389) और हमने उनसे गाढ़ा अहद लिया।(154) (फ़ा390) तो उनकी कैसी बद-अहदियों के सबब हमने उन पर लानत की और इसलिए कि वह आयाते इलाही के मुन्किर हुए (फ़ा391) और अम्बिया को नाहक़ शहीद करते (फ़ा392) और उनके इस कहने पर कि हमारे दिलों पर ग़िलाफ़ हैं (फ़ा393) बल्कि अल्लाह ने उनके कुफ़्र के सबब उनके दिलों पर मुहर लगा दी है तो ईमान नहीं लाते मगर थोड़े। (155) और इस लिए कि उन्होंने कुफ़्र किया (फ़ा394) और मरयम पर बड़ा बोहतान उठाया।(156) और उनके इस कहने पर कि हमने मसीह ईसा इब्ने मरयम अल्लाह के रसूल को शहीद किया (फ़ा395) और है यह कि उन्होंने न उसे क़त्ल किया और न उसे सूली दी बल्कि उनके लिए उनकी शबीह का एक बना दिया गया (फ़ा396) और वह जो उसके बारे में इख़्तिलाफ़ कर रहे हैं ज़रूर उसकी तरफ़ से शुबहा में पड़े हुए हैं(फ़ा397) उन्हें उसकी कुछ भी ख़बर नहीं (फ़ा398) मगर यही गुमान की पैरवी (फ़ा399) और बेशक उन्होंने उसको क़त्ल न किया।(157) (फ़ा400)बल्कि अल्लाह ने उसे अपनी तरफ़ उठा लिया (फ़ा401) और अल्लाह ग़ालिब हिकमत वाला है।(158) कोई किताबी ऐसा नहीं जो उसकी मौत से पहले उस पर ईमान न लाये (फ़ा402) और क़ियामत के दिन वह उन पर गवाह होगा।(159) (फ़ा403)

(फ़ा389) यानी मछली का शिकार वग़ैरह जो अमल उस रोज़ तुम्हारे लिए हलाल नहीं न करो। सूरह बक़रह में इन तमाम अहकाम की तफ़सीलें गुज़र चुकीं। (फ़ा390) कि जो उन्हें हुक्म दिया गया है वह करें और जिसकी मुमानअ़त की गई है उससे बाज़ रहें फिर उन्होंने इस अहद को तोड़ा (फ़ा391) जो अम्बिया के सिद्क़ पर दलालत करते थे जैसे कि हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम के मोअ्जेज़ात (फ़ा392) अम्बिा का क़त्ल करना तो नाहक़ है ही किसी तरह हक़ हो ही नहीं सकता लेकिन यहां मक़सूद यह है कि उनके ज़ोअ़म में भी उन्हें इसका कोई इस्तेहक़ाक़ न था (फ़ा393) लिहाज़ा कोई पन्द व वअ़ज़ कारगर नहीं हो सकता। (फ़ा394) हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलातु वस्सलाम के साथ भी। (फ़ा395) यहूद ने दावा किया कि उन्होंने हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलातु वस्सलाम को क़त्ल कर दिया और नसारा ने उसकी तस्दीक़ की थी अल्लाह तआ़ला ने उन दोनों की तकज़ीब फ़रमा दी। (फ़ा396) जिसको उन्होंने क़त्ल किया और ख़्याल करते रहे कि यह हज़रत ईसा हैं बावजूदेकि उनका यह ख़्याल ग़लत था (फ़ा397) और यक़ीनी नहीं कह सकते कि वह मक़तूल कौन है बाज़े कहते हैं कि यह मक़तूल ईसा हैं बाज़ कहते हैं कि चेहरा तो ईसा का है और जिस्म ईसा का नहीं लिहाज़ा यह वह नहीं इसी तरद्दुद में हैं (फ़ा398) जो हक़ीक़ते हाल है (फ़ा399) और अटकलें दौड़ाना (फ़ा400) उनका दावाए क़त्ल झूठा है (फ़ा401) सही व सालिम बसूए आसमान अहादीस में उसकी तफ़सीलें **(बक़िया सफ़हा 200 पर)**

فَبِظُلْمٍ مِّنَ الَّذِيْنَ هَادُوْا حَرَّمْنَا عَلَيْهِمْ طَيِّبٰتٍ اُحِلَّتْ لَهُمْ وَبِصَدِّهِمْ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ كَثِيْرًا ۝ وَّاَخْذِهِمُ الرِّبٰوا وَقَدْ نُهُوْا عَنْهُ وَاَكْلِهِمْ اَمْوَالَ النَّاسِ بِالْبَاطِلِ ؕ وَاَعْتَدْنَا لِلْكٰفِرِيْنَ مِنْهُمْ عَذَابًا اَلِيْمًا ۝ لٰكِنِ الرّٰسِخُوْنَ فِي الْعِلْمِ مِنْهُمْ وَالْمُؤْمِنُوْنَ يُؤْمِنُوْنَ بِمَاۤ اُنْزِلَ اِلَيْكَ وَمَاۤ اُنْزِلَ مِنْ قَبْلِكَ وَالْمُقِيْمِيْنَ الصَّلٰوةَ وَالْمُؤْتُوْنَ الزَّكٰوةَ وَالْمُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ ؕ اُولٰٓئِكَ سَنُؤْتِيْهِمْ اَجْرًا عَظِيْمًا ۝ اِنَّاۤ اَوْحَيْنَاۤ اِلَيْكَ كَمَاۤ اَوْحَيْنَاۤ اِلٰى نُوْحٍ وَّالنَّبِيّٖنَ مِنْۢ بَعْدِهٖ ۚ وَاَوْحَيْنَاۤ اِلٰۤى اِبْرٰهِيْمَ وَاِسْمٰعِيْلَ وَاِسْحٰقَ وَيَعْقُوْبَ وَالْاَسْبَاطِ وَعِيْسٰى وَاَيُّوْبَ وَيُوْنُسَ وَهٰرُوْنَ وَسُلَيْمٰنَ ۚ وَاٰتَيْنَا دَاوٗدَ زَبُوْرًا ۝ وَرُسُلًا قَدْ قَصَصْنٰهُمْ عَلَيْكَ مِنْ قَبْلُ وَرُسُلًا لَّمْ نَقْصُصْهُمْ عَلَيْكَ ؕ وَكَلَّمَ اللّٰهُ مُوْسٰى تَكْلِيْمًا ۝

फ़बिज़ुल्मिम् मिनल्लज़ी–न हादू हर्रम्ना अ़लैहिम् तय्यिबातिन् उहिल्लत् लहुम् व बि– सदिदहिम् अन् सबीलिल्लाहि कसीरा(160)व अख़्ज़ि हिमुर्रिबा व क़द् नुहू अ़न्हु व अक्लिहिम् अम्वा–लन्नासि बिल्बातिलि व अअ्तद्ना लिल्काफ़िरी–न मिन्हुम् अ़ज़ाबन् अलीमा(161)लाकिनिर्–रासिख़ू–न फ़िल्अ़िल्मि मिन्हुम् वल्मुअ्मिनू–न युअ्मिनू–न बिमा उन्ज़ि–ल इलै–क व मा उन्ज़ि–ल मिन् क़ब्लि–क वल्मुक़ीमीनस्सला–त वल्–मुअ्तू–नज़्ज़का–त वल्मुअ्मिनू–न बिल्लाहि वल्–यौमिल् आख़िरि उलाइ–क सनुअ्तीहिम् अज्रन् अ़ज़ीमा(162)इन्ना औहैना इलै–क कमा औहैना इला नूहिंव्–वन्नबिय्यी–न मिम्ब–अ़्दिही व औहैना इला इब्राही–म व इस्माअ़ी–ल व इस्हा–क़ व यअ़्क़ू–ब वल्अस्बाति व अ़ीसा व अय्यू–ब व यूनु–स व हारू–न व सुलैमा–न व आतैना दावू–द ज़बूरा(163)व रुसुलन् क़द् क़–सस्नाहुम् अ़लै–क मिन् क़ब्लु व रुसुलल्लम् नक़्सुस्हुम् अ़लै–क व कल्लमल्लाहु मूसा तक्लीमा(164)

तो यहूदियों के बड़े ज़ुल्म के(फ़ा404)सबब हमनें वह बाज़ सुथरी चीज़ें कि उनके लिए हलाल थीं (फ़ा405) उन पर हराम फ़रमा दीं और इस लिए कि उन्होंने बहुतों को अल्लाह की राह से रोका।(160) और इस लिए कि वह सूद लेते हालांकि वह इससे मना किये गए थे और लोगों का माल नाहक़ खा जाते (फ़ा406)और उनमें जो काफ़िर हुए हमने उनके लिए दर्दनाक अ़ज़ाब तैयार कर रखा है।(161)हां जो उनमें इल्म में पक्के(फ़ा407)और ईमान वाले हैं वह ईमान लाते हैं उस पर जो ऐ महबूब तुम्हारी तरफ़ उतरा और जो तुमसे पहले उतरा(फ़ा408)और नमाज़ क़ाइम रखने वाले और ज़कात देने वाले और अल्लाह और क़ियामत पर ईमान लाने वाले ऐसों को अंक़रीब हम बड़ा सवाब देंगे।(162)(रुकूअ़ 2) बेशक ऐ महबूब हमने तुम्हारी तरफ़ 'वह़ी' भेजी जैसे 'वह़ी' नूह और उसके बाद पैग़म्बरों को भेजी (फ़ा409)और हमने इब्राहीम और इस्माईल और इसहाक़ और याकूब और उनके बेटों और ईसा और अय्यूब और यूनुस और हारून और सुलैमान को 'वह़ी' की और हमने दाऊद को ज़बूर अ़ता फ़रमाई।(163)और रसूलों को जिनका ज़िक्र आगे हम तुमसे(फ़ा410)फ़रमा चुके और उन रसूलों को जिनका ज़िक्र तुमसे न फ़रमाया(फ़ा411)और अल्लाह ने मूसा से हक़ीक़तन कलाम फ़रमाया।(164) (फ़ा412)

(फ़ा404) नक़्ज़े अहद वग़ैरह जिनका ऊपर आयात में ज़िक्र हो चुका। (फ़ा405) जिन का सूरह अनआ़म की आयत *व अ़–लल्लज़ी–न हादू हर्रम्ना* में बयान है (फ़ा406) रिशवत वग़ैरह हराम तरीक़ों से (फ़ा407) मिस्ल हज़रत अब्दुल्लाह बिन सलाम और उनके असहाब के जो इल्मे रासिख़ और अक़्ले साफ़ी और बसीरते कामिला रखते थे उन्होंने अपने इल्म से दीने इस्लाम की हक़ीक़त को जाना और सय्यदे अम्बिया सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम पर ईमान लाये (फ़ा408) पहले अम्बिया पर (फ़ा409) **शाने नुज़ूलः** यहूद व नसारा ने सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से जो यह सवाल किया था कि उनके लिए आसमान से यकबारगी किताब नाज़िल की जाये तो वह आपकी नबुव्वत पर ईमान लायें इस पर यह आयते करीमा नाज़िल हुई और उन पर हुज्जत क़ायम की गई कि हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलातु वस्सलाम के सिवा बकसरत अम्बिया हैं जिन में से ग्यारह के अस्माए शरीफ़ा यहां आयत में बयान फ़रमाए गए हैं अहले किताब उन सब की नबुव्वत को मानते हैं उन सब हज़रात में से किसी पर यकबारगी किताब नाज़िल न हुई तो जब इस वजह से उनकी नबुव्वत तस्लीम करने में अहले किताब को कुछ पस व पेश न हुआ तो सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की नबुव्वत तस्लीम करने में क्या उज़्र है और मक़सूद रसूलों के भेजने से ख़ल्क़ की हिदायत और उनको अल्लाह तआ़ला की तौहीद व मअ़रेफ़त का दर्स देना और ईमान की तकमील और तरीक़े इबादत की तालीम है किताब के मुतफ़र्रिक़ तौर पर नाज़िल होने से यह मक़सद बर वजहे अतम हासिल होता है कि थोड़ा थोड़ा ब–आसानी दिल–नशीं होता चला जाता है **(बक़िया सफ़हा 200 पर)**

رُسُلًا مُّبَشِّرِينَ وَمُنذِرِينَ لِئَلَّا يَكُونَ لِلنَّاسِ عَلَى اللهِ حُجَّةٌۢ بَعْدَ الرُّسُلِ ۚ وَكَانَ اللهُ عَزِيزًا حَكِيمًا ﴿١٦٥﴾ لَٰكِنِ اللهُ يَشْهَدُ بِمَا أَنزَلَ إِلَيْكَ ۖ أَنزَلَهُ بِعِلْمِهِ ۖ

وَالْمَلَٰٓئِكَةُ يَشْهَدُونَ ۚ وَكَفَىٰ بِاللهِ شَهِيدًا ﴿١٦٦﴾ إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا وَصَدُّوا عَن سَبِيلِ اللهِ قَدْ ضَلُّوا ضَلَٰلًۢا بَعِيدًا ﴿١٦٧﴾ إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا وَظَلَمُوا

لَمْ يَكُنِ اللهُ لِيَغْفِرَ لَهُمْ وَلَا لِيَهْدِيَهُمْ طَرِيقًا ﴿١٦٨﴾ إِلَّا طَرِيقَ جَهَنَّمَ خَٰلِدِينَ فِيهَآ أَبَدًا ۚ وَكَانَ ذَٰلِكَ عَلَى اللهِ يَسِيرًا ﴿١٦٩﴾ يَٰٓأَيُّهَا النَّاسُ قَدْ جَآءَكُمُ

الرَّسُولُ بِالْحَقِّ مِن رَّبِّكُمْ فَـَٔامِنُوا خَيْرًا لَّكُمْ ۚ وَإِن تَكْفُرُوا فَإِنَّ لِلّٰهِ مَا فِى السَّمَٰوَٰتِ وَالْأَرْضِ ۚ وَكَانَ اللهُ عَلِيمًا حَكِيمًا ﴿١٧٠﴾ يَٰٓأَهْلَ الْكِتَٰبِ

لَا تَغْلُوا فِى دِينِكُمْ وَلَا تَقُولُوا عَلَى اللهِ إِلَّا الْحَقَّ ۚ إِنَّمَا الْمَسِيحُ عِيسَى ابْنُ مَرْيَمَ رَسُولُ اللهِ وَكَلِمَتُهُۥٓ أَلْقَىٰهَآ إِلَىٰ مَرْيَمَ وَرُوحٌ مِّنْهُ ۖ فَـَٔامِنُوا بِاللهِ

रुसुलम् मुबश्शिरी–न व मुन्ज़िरी–न लिअल्ला यकू–न लिन्नासि अ़–लल्लाहि हुज्जतुम् बअ़्–दर्रुसुलि व कानल्लाहु अ़ज़ीज़न् ह़कीमा(165)लाकि–निल्लाहु यश्हदु बिमा अन्ज़–ल इलै–क अन्ज़–लहू बिअ़िल्मिही वल्–मलाइ–कतु यश्हदू–न व कफ़ा बिल्लाहि शहीदा(166)इन्नल्लज़ी–न क–फ़रू व सद्दू अ़न् सबी–लिल्लाहि क़द् ज़ल्लू ज़लालम् बअ़ीदा(167)इन्नल्लज़ी–न क–फ़रू व ज़–लमू लम् यकुनिल्लाहु लि–यग़्फ़ि–र लहुम् व ला लि–यह्दि यहुम् तरीक़ा(168)इल्ला त़री–क़ जहन्न–म ख़ालिदी–न फ़ीहा अ–ब–दन् व का–न ज़ालि–क अ़–लल्लाहि यसीरा(169)या अय्युहन्नासु क़द् जा–अकुमुर्रसूलु बिल्ह़क़्क़ि मिर्रब्बिकुम् फ़आमिनू ख़ैरल्लकुम् व इन् तक्फ़ुरू फ़इन्–न लिल्लाहि मा फ़िस्समावाति वल् अर्ज़ि व कानल्लाहु अ़लीमन् ह़कीमा(170)या अह्लल्किताबि ला तग़्लू फ़ी–दीनिकुम् व ला तक़ूलू अ़–लल्लाहि इल्लल्–ह़क़्–क़ इन्नमल मसीहु अ़ीसब्नु मर्य–म रसूलुल्लाहि व कलि–मतुहू अल्क़ाहा इला मर्य–म व रूहुम् मिन्हु फ़आमिनू बिल्लाहि

रसूल ख़ुशख़बरी देते (फ़ा413) और डर सुनाते (फ़ा414) कि रसूलों के बाद अल्लाह के यहां लोगों को कोई उ़ज़्र न रहे (फ़ा415) और अल्लाह ग़ालिब हिकमत वाला है।(165) लेकिन ऐ महबूब अल्लाह उसका गवाह है जो उसने तुम्हारी तरफ़ उतारा वह उसने अपने इल्म से उतारा है और फ़रिश्ते गवाह हैं और अल्लाह की गवाही काफ़ी।(166) वह जिन्होंने कुफ़्र किया (फ़ा416) और अल्लाह की राह से रोका (फ़ा417) बेशक वह दूर की गुमराही में पड़े।(167) बेशक जिन्होंने कुफ़्र किया (फ़ा418) और हद से बढ़े (फ़ा419) अल्लाह हरगिज़ उन्हें न बख़्शेगा (फ़ा420) और न उन्हें कोई राह दिखाये।(168) मगर जहन्नम का रास्ता कि उसमें हमेशा हमेशा रहेंगे और यह अल्लाह को आसान है।(169) ऐ लोगो तुम्हारे पास यह रसूल (फ़ा421) हक़ के साथ तुम्हारे रब की तरफ़ से तशरीफ़ लाये हैं तो ईमान लाओ अपने भले को और अगर तुम कुफ़्र करो (फ़ा422) तो बेशक अल्लाह ही का है जो कुछ आसमानों और ज़मीन में है और अल्लाह इल्म व हिकमत वाला है।(170) ऐ किताब वालो अपने दीन में ज़्यादती न करो (फ़ा423) और अल्लाह पर न कहो मगर सच (फ़ा424) मसीह ईसा मरयम का बेटा (फ़ा425) अल्लाह का रसूल ही है और उसका एक कलिमा (फ़ा426) कि मरयम की तरफ़ भेजा और उसके यहां की एक रूह़ तो अल्लाह और उसके

(फ़ा413) सवाब की ईमान लाने वालों को (फ़ा414) अ़ज़ाब का कुफ़्र करने वालों को (फ़ा415) और यह कहने का मौक़ा न हो कि अगर हमारे पास रसूल आते तो हम ज़रूर उनका हुक्म मानते और अल्लाह के मुतीअ़ व फ़रमांबरदार होते इस आयत से यह मसला मालूम होता है कि अल्लाह तआ़ला रसूलों की बेअ़सत से क़बल ख़ल्क़ पर अ़ज़ाब नहीं फ़रमाता जैसा दूसरी जगह इरशाद फ़रमाया *व मा कुन्ना मुअ़ज़्ज़िबी–न ह़त्ता तब्–अ़–स रसूला* और यह मसला भी साबित होता है कि मअ़रिफ़ते इलाही बयाने शरअ़ व ज़बाने अम्बिया ही से हासिल होती है अक़्ले महज़ से उस मन्ज़िल तक पहुंचना मुयस्सर नहीं होता। (फ़ा416) सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की नबुव्वत का इंकार करके (फ़ा417) हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की नअ़त व सिफ़त छुपा कर और लोगों के दिलों में शुबहा डाल कर (यह हाल यहूद का है) (फ़ा418) अल्लाह के साथ (फ़ा419) किताबे इलाही में हुज़ूर के औसाफ़ बदल कर और आपकी नबुव्वत का इंकार करके (फ़ा420) जब तक वह कुफ़्र पर क़ायम रहें या कुफ़्र पर मरें (फ़ा421) सय्यदे अम्बिया मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम (फ़ा422) और सय्यदे अम्बिया मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की रिसालत का इंकार करो तो इसमें उनका कुछ ज़रर नहीं और अल्लाह तुम्हारे ईमान से बे नियाज़ है। (फ़ा423) शाने नुज़ूलः यह आयत नसारा के हक़ में नाज़िल हुई जिनके कई फ़िरक़े हो गए थे और हर एक हज़रत **(बक़िया सफ़हा 201 पर)**

وَرُسُلِهٖ ۚ وَلَا تَقُوْلُوْا ثَلٰثَةٌ ؕ اِنْتَهُوْا خَيْرًا لَّكُمْ ؕ اِنَّمَا اللّٰهُ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ ؕ سُبْحٰنَهٗۤ اَنْ يَّكُوْنَ لَهٗ وَلَدٌ ۘ لَهٗ مَا فِى السَّمٰوٰتِ وَمَا فِى الْاَرْضِ ؕ وَكَفٰى بِاللّٰهِ وَكِيْلًا ﴿۱۷۱﴾

لَنْ يَّسْتَنْكِفَ الْمَسِيْحُ اَنْ يَّكُوْنَ عَبْدًا لِّلّٰهِ وَلَا الْمَلٰۤئِكَةُ الْمُقَرَّبُوْنَ ؕ وَمَنْ يَّسْتَنْكِفْ عَنْ عِبَادَتِهٖ وَيَسْتَكْبِرْ فَسَيَحْشُرُهُمْ اِلَيْهِ جَمِيْعًا ﴿۱۷۲﴾

فَاَمَّا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ فَيُوَفِّيْهِمْ اُجُوْرَهُمْ وَيَزِيْدُهُمْ مِّنْ فَضْلِهٖ ۚ وَاَمَّا الَّذِيْنَ اسْتَنْكَفُوْا وَاسْتَكْبَرُوْا فَيُعَذِّبُهُمْ عَذَابًا اَلِيْمًا ۙ وَّلَا يَجِدُوْنَ

لَهُمْ مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ وَلِيًّا وَّلَا نَصِيْرًا ﴿۱۷۳﴾ يٰۤاَيُّهَا النَّاسُ قَدْ جَآءَكُمْ بُرْهَانٌ مِّنْ رَّبِّكُمْ وَاَنْزَلْنَاۤ اِلَيْكُمْ نُوْرًا مُّبِيْنًا ﴿۱۷۴﴾ فَاَمَّا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا بِاللّٰهِ وَاعْتَصَمُوْا

بِهٖ فَسَيُدْخِلُهُمْ فِىْ رَحْمَةٍ مِّنْهُ وَفَضْلٍ ۙ وَّيَهْدِيْهِمْ اِلَيْهِ صِرَاطًا مُّسْتَقِيْمًا ﴿۱۷۵﴾ يَسْتَفْتُوْنَكَ ؕ قُلِ اللّٰهُ يُفْتِيْكُمْ فِى الْكَلٰلَةِ ؕ اِنِ امْرُؤٌا هَلَكَ لَيْسَ لَهٗ

وَلَدٌ وَّلَهٗۤ اُخْتٌ فَلَهَا نِصْفُ مَا تَرَكَ ۚ وَهُوَ يَرِثُهَاۤ اِنْ لَّمْ يَكُنْ لَّهَا وَلَدٌ ؕ فَاِنْ كَانَتَا اثْنَتَيْنِ فَلَهُمَا الثُّلُثٰنِ مِمَّا تَرَكَ ؕ وَاِنْ كَانُوْۤا اِخْوَةً رِّجَالًا وَّنِسَآءً

فَلِلذَّكَرِ مِثْلُ حَظِّ الْاُنْثَيَيْنِ ؕ يُبَيِّنُ اللّٰهُ لَكُمْ اَنْ تَضِلُّوْا ؕ وَاللّٰهُ بِكُلِّ شَىْءٍ عَلِيْمٌ ﴿۱۷۶﴾

व रुसुलिही व ला तक़ूलू स़ला–स़तुन् इन्तहू ख़ैरल्–लकुम् इन्नमल्लाहु इलाहुंव् वाहिदुन् सुब्हा–नहू अंय्यकू–न लहू व–लदुन् लहू मा फ़िस्–समावाति व मा फ़िल्अर्ज़ि व कफ़ा बिल्लाहि वकीला(171)लंय्यस्तन्कि–फ़ल् मसीहु अंय्यकू–न अ़ब्दल् लिल्लाहि व लल्–मलाइ–कतुल् मुक़र्रबू–न व मंय्यस्तन्किफ़् अ़न् अ़िबा–दतिही व यस्तक्बिर् फ़–स–यह्शुरुहुम् इलैहि जमीअ़ा(172)फ़–अम्मल्लज़ी–न आ–मनू व अ़मिलुस्सालिहाति फ़युवफ़्फ़ीहिम् उजू–रहुम् व यज़ीदुहुम् मिन् फ़ज़्लिही व अम्मल् लज़ी–नस्तन्–कफ़ू वस्तक्बरू फ़युअ़ज़्ज़िबुहुम् अ़ज़ाबन् अलीमंव्–व ला यजिदू–न लहुम् मिन् दूनिल्लाहि वलिय्यंव्–व ला नसीरा(173)या अय्युहन्नासु क़द् जा–अकुम् बुर्हानुम्–मि–र्रब्बिकुम् व अन्ज़ल्ना इलैकुम् नूरम्–मुबीना(174)फ़–अम्मल्लज़ी–न आ–मनू बिल्लाहि वअ़्–त–समू बिही फ़–सयुद् ख़िलुहुम् फ़ी रह़्मतिम्–मिन्हु व फ़ज़्लिंव् व यह्दीहिम् इलैहि सिरातम्–मुस्तक़ीमा(175) यस्तफ़्तू–न–क कुलिल्लाहु युफ़्तीकुम् फ़िल्कला–लति इनिम्रुउन् ह–ल–क लै–स लहू व लदुंव्–व लहू उख़्तुन् फ़–लहा निस्फ़ु मा त–र–क व हु–व यरिसुहा इल्लम् यकुल्लहा व–लदुन् फ़–इन् का–न–तस्नतैनि फ़–लहुमस्–सुलुसानि मिम्मा त–र–क व इन् कानू इख़्वत–तर्रिजालंव्–व निसाअन् फ़लिज़्ज़–करि मिस्लु हज़्ज़िल्उन्स–ययनि युबय्यिनुल्लाहु लकुम् अन् तज़िल्लू वल्लाहु बिकुल्लि शैइन् अ़लीम(176)

रसूलों पर ईमान लाओ (फ़ा427) और तीन न कहो (फ़ा428) बाज़ रहो अपने भले को अल्लाह तो एक ही ख़ुदा है (फ़ा429) पाकी उसे इससे कि उसके कोई बच्चा हो, उसी का माल है जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ ज़मीन में (फ़ा430) और अल्लाह काफ़ी कारसाज़ है।(171) (रुकूअ़ 3) हरगिज़ मसीह़ अल्लाह का बन्दा बनने से कुछ नफ़रत नहीं करता (फ़ा431) और न मुक़र्रब फ़रिश्ते और जो अल्लाह की बन्दगी से नफ़रत और तकब्बुर करे तो कोई दम जाता है कि वह उन सबको अपनी तरफ़ हांकेगा।(172) (फ़ा432) तो वह जो ईमान लाये और अच्छे काम किये उनकी मज़दूरी उन्हें भरपूर दे कर अपने फ़ज़्ल से उन्हें और ज़्यादा देगा और वह जिन्होंने (फ़ा433) नफ़रत और तकब्बुर किया था उन्हें दर्दनाक सज़ा देगा और अल्लाह के सिवा न अपना कोई हिमायती पायेंगे न मददगार।(173) ऐ लोगो बेशक तुम्हारे पास अल्लाह की तरफ़ से वाज़ेह़ दलील आई (फ़ा434) और हमने तुम्हारी तरफ़ रौशन नूर उतारा।(174)(फ़ा435) तो वह जो अल्लाह पर ईमान लाये और उसकी रस्सी मज़बूत थामी तो अ़नक़रीब अल्लाह उन्हें अपनी रहमत और फ़ज़्ल में दाख़िल करेगा (फ़ा436) और उन्हें अपनी तरफ़ सीधी राह दिखायेगा।(175) ऐ महबूब तुम से फ़तवा पूछते हैं, तुम फ़रमा दो कि अल्लाह तुम्हें कलाला (फ़ा437) में फ़तवा देता है अगर किसी मर्द का इन्तेक़ाल हो जो बे औलाद है (फ़ा438) और उसकी एक बहन हो तो तर्का में से उसकी बहन का आधा है (फ़ा439) और मर्द अपनी बहन का वारिस होगा अगर बहन के औलाद न हो (फ़ा440) फिर अगर दो बहनें हों **(बक़िया सफ़हा 201 पर)**

سُورَةُ الْمَائِدَةِ مَدَنِيَّةٌ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اَوْفُوْا بِالْعُقُوْدِ ۬ؕ اُحِلَّتْ لَكُمْ بَهِيْمَةُ الْاَنْعَامِ اِلَّا مَا يُتْلٰى عَلَيْكُمْ غَيْرَ مُحِلِّى الصَّيْدِ وَاَنْتُمْ حُرُمٌ ؕ اِنَّ اللّٰهَ يَحْكُمُ مَا يُرِيْدُ ۝ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تُحِلُّوْا شَعَآئِرَ اللّٰهِ وَلَا الشَّهْرَ الْحَرَامَ وَلَا الْهَدْیَ وَلَا الْقَلَآئِدَ وَلَاۤ اٰمِّيْنَ الْبَيْتَ الْحَرَامَ يَبْتَغُوْنَ فَضْلًا مِّنْ رَّبِّهِمْ وَرِضْوَانًا ؕ وَاِذَا حَلَلْتُمْ فَاصْطَادُوْا ؕ وَلَا يَجْرِمَنَّكُمْ شَنَاٰنُ قَوْمٍ اَنْ صَدُّوْكُمْ عَنِ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ اَنْ تَعْتَدُوْا ۘ وَتَعَاوَنُوْا عَلَى الْبِرِّ وَالتَّقْوٰى ۪ وَلَا تَعَاوَنُوْا عَلَى الْاِثْمِ وَالْعُدْوَانِ ۪ وَاتَّقُوا اللّٰهَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ شَدِيْدُ الْعِقَابِ ۝ حُرِّمَتْ عَلَيْكُمُ الْمَيْتَةُ وَالدَّمُ وَلَحْمُ الْخِنْزِيْرِ وَمَاۤ اُهِلَّ لِغَيْرِ اللّٰهِ بِهٖ وَالْمُنْخَنِقَةُ

सूरतुल माइदा

मदनी है इस सूरत में 120 आयतें और 16 रूकूअ हैं

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

या अय्युहल्लज़ी–न आ–मनू औफू बिलउकूदि उहिल्लत् लकुम् बही–मतुलअन्आमि इल्ला मा युत्ला अलैकुम् गै–र मुहिल्लिस्सैदि व अन्तुम् हुरुमुन् इन्नल्ला–ह यह्कुमु मा युरीद(1)या अय्युहल्–लज़ी–न आ–मनू ला तुहिल्लू शआइरल्लाहि व लश्शह्रल्हरा–म व लल्हद्–य व लल्क़लाइ–द वला आम्मीनल्–बैतल्हरा–म यब्तग़ू–न फ़ज़्लम्–मिर्रब्बिहिम् व रिज़्वानन् व इज़ा ह–लल्तुम् फ़स्तादू व ला यजि्–मन्नकुम् श–नआनु क़ौमिन् अन् सद्दूकुम् अनिल्मस्जिदिल्–हरामि अन् तअ्–तदू व तआ–वनू अ–लल्बिर्रि वत्तक़्वा व ला तआ–वनू अ–लल् इस्मि वल्उद्वानि वत्त–कुल्ला–ह इन्नल्ला–ह शदीदुल् अिक़ाब(2)हुर्रिमत् अलैकुमुल्मै–ततु वद्–दमु व लह्मुल्–ख़िन्ज़ीरि व मा उहिल्–ल लिग़ैरिल्लाहि बिही वल्–मुन्ख़नि–क़तु

अल्लाह के नाम से शुरू जो बहुत मेहरबान रहम वाला। (फ़ा1)

ऐ ईमान वालो अपने क़ौल पूरे करो (फ़ा2) तुम्हारे लिए हलाल हुए बे ज़बान मवेशी मगर वह जो आगे सुनाया जाएगा तुमको (फ़ा3) लेकिन शिकार हलाल न समझो जब तुम एहराम में हो (फ़ा4) बेशक अल्लाह हुक्म फ़रमाता है जो चाहे। (1) ऐ ईमान वालो हलाल न ठहरा लो अल्लाह के निशान (फ़ा5) और न अदब वाले महीने (फ़ा6) और न हरम को भेजी हुई क़ुरबानियां और न (फ़ा7) जिनके गले में अलामतें आवेज़ां (फ़ा8) और न उनका माल व आबरू जो इज़्ज़त वाले घर का क़स्द करके आयें (फ़ा9) अपने रब का फ़ज़्ल और उसकी खुशी चाहते और जब एहराम से निकलो तो शिकार कर सकते हो (फ़ा10) और तुम्हें किसी क़ौम की अदावत कि उन्होंने तुमको मस्जिदे हराम से रोका था ज़्यादती करने पर न उभारे (फ़ा11) और नेकी और परहेज़गारी पर एक दूसरे की मदद करो और गुनाह और ज़्यादती पर बाहम मदद न दो (फ़ा12) और अल्लाह से डरते रहो बेशक अल्लाह का अज़ाब सख़्त है।(2) तुम पर हराम है (फ़ा13) मुर्दार और ख़ून और सूअर का गोश्त और वह जिसके ज़िबह में ग़ैरे ख़ुदा का नाम पुकारा गया और जो गला घोंटने से मरे

(फ़ा1) सूरह माइदा मदीना तय्यबा में नाज़िल हुई सिवाए आयत *अल्यौ–म अक्मल्तु लकुम् दी–नकुम्* के कि यह आयत रोज़े अरफ़ा हज्जतुल वेदाअ में नाज़िल हुई और सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने खुतबा में इसको पढ़ा इस में एक सौ बीस आयतें और 12464 हरफ़ हैं (फ़ा2) उक़ूद के माना में मुफ़स्सिरीन के चन्द क़ौल हैं इब्ने जुरैर ने कहा कि अहले किताब को ख़िताब फ़रमाया गया है माना यह हैं कि ऐ मोमिनीन अह्ले किताब मैं ने कुतुबे मुतक़द्दमा में सय्यदे आलम मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर ईमान लाने और आपकी इताअत करने के मुतअल्लिक़ जो तुम से अहद लिये हैं वह पूरे करो बाज़ मुफ़स्सिरीन का क़ौल है कि ख़िताब मोमिनीन को है उन्हें उक़ूद के वफ़ा करने का हुक्म दिया गया है। हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा ने फ़रमाया कि इन उक़ूद से मुराद ईमान और वह अहद हैं जो हराम व हलाल के मुतअल्लिक़ क़ुरआन पाक में लिए गए बाज़ मुफ़स्सिरीन का क़ौल है कि इस में मोमिनीन के बाहमी मुआहदे मुराद हैं (फ़ा3) यानी जिनकी हुरमत शरीअत में वारिद हुई उनके सिवा तमाम चौपाये तुम्हारे लिए हलाल किये गए (फ़ा4) मसलाः कि ख़ुश्की का शिकार हालते एहराम में हराम है और दरियाई शिकार जायज़ है जैसा कि इस सूरह के आख़िर में आएगा (फ़ा5) उसके दीन के मआलिम माना यह हैं कि जो चीज़ें अल्लाह ने फ़र्ज़ कीं और जो मना फ़रमाईं सबकी हुरमत का लिहाज़ रखो (फ़ा6) माह हाए हज जिनमें क़ेताल ज़मानए जाहिलियत में भी ममनूअ. था और इस्लाम में भी यह हुक्म बाक़ी रहा (फ़ा7) वह क़ुरबानियां (फ़ा8) अरब के लोग क़ुरबानियों के गले में हरम शरीफ़ के अश्जार की छालों वग़ैरह से गुलूबन्द बुन कर डालते थे ताकि देखने वाले जान लें कि यह हरम को भेजी हुई **(बक़िया सफ़हा 202 पर)**

وَالْمَوْقُوْذَةُ وَالْمُتَرَدِّيَةُ وَالنَّطِيْحَةُ وَمَآ اَكَلَ السَّبُعُ اِلَّا مَا ذَكَّيْتُمْ وَمَا ذُبِحَ عَلَى النُّصُبِ وَاَنْ تَسْتَقْسِمُوْا بِالْاَزْلَامِ ذٰلِكُمْ فِسْقٌ اَلْيَوْمَ يَئِسَ
الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ دِيْنِكُمْ فَلَا تَخْشَوْهُمْ وَاخْشَوْنِ اَلْيَوْمَ اَكْمَلْتُ لَكُمْ دِيْنَكُمْ وَاَتْمَمْتُ عَلَيْكُمْ نِعْمَتِيْ وَرَضِيْتُ لَكُمُ الْاِسْلَامَ دِيْنًا فَمَنِ اضْطُرَّ
فِيْ مَخْمَصَةٍ غَيْرَ مُتَجَانِفٍ لِّاِثْمٍ فَاِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۝ يَسْـَٔلُوْنَكَ مَاذَآ اُحِلَّ لَهُمْ قُلْ اُحِلَّ لَكُمُ الطَّيِّبٰتُ وَمَا عَلَّمْتُمْ مِّنَ الْجَوَارِحِ مُكَلِّبِيْنَ تُعَلِّمُوْنَهُنَّ
مِمَّا عَلَّمَكُمُ اللّٰهُ فَكُلُوْا مِمَّآ اَمْسَكْنَ عَلَيْكُمْ وَاذْكُرُوا اسْمَ اللّٰهِ عَلَيْهِ وَاتَّقُوا اللّٰهَ اِنَّ اللّٰهَ سَرِيْعُ الْحِسَابِ ۝ اَلْيَوْمَ اُحِلَّ لَكُمُ الطَّيِّبٰتُ وَطَعَامُ الَّذِيْنَ اُوْتُوا
الْكِتٰبَ حِلٌّ لَّكُمْ وَطَعَامُكُمْ حِلٌّ لَّهُمْ وَالْمُحْصَنٰتُ مِنَ الْمُؤْمِنٰتِ وَالْمُحْصَنٰتُ مِنَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ مِنْ قَبْلِكُمْ اِذَآ اٰتَيْتُمُوْهُنَّ اُجُوْرَهُنَّ مُحْصِنِيْنَ

वल्मौकू–जतु वल्मु–त–रद्दि–यतु वन्नती–हतु व मा अ–क–लस्सबुअु इल्ला मा ज़क्कैतुम् व मा ज़ुबि–ह अ–लन्नु–सुबि व अन् तस्तक़्सिमू बिल्–अज़्लामि ज़ालिकुम् फ़िस्कुन् अल्यौ–म यइ–सल्लज़ी–न क–फ़रू मिन् दीनिकुम् फ़ला तख़्शौहुम् वख़्शौनि अल्यौ–म अक्मल्तु लकुम् दी–नकुम् व अत्मम्तु अ़लैकुम् निअ़्–मती व रज़ीतु लकुमुल्–इस्ला–म दीनन् फ़–मनिज़्तुर्–र फ़ी मख़्–म–सतिन् ग़ै–र मु–तजानिफ़िल् लि–इस्मिन् फ़–इन्नल्ला–ह ग़फ़ूरुर्रहीम(3)यस्अलू–न–क माज़ा उहिल्–ल लहुम् कुल् उहिल्–ल लकुमुत्–तय्यिबातु व मा अ़ल्लम्तुम् मिनल्जवारिहि मुकल्लिबी–न तुअ़ल्लिमू–नहुन्–न मिम्मा अ़ल्ल–मकुमुल्लाहु फ़कुलू मिम्मा अम्सक्–न अ़लैकुम् वज़्कुरुस्–मल्लाहि अ़लैहि वत्तकुल्ला–ह इन्नल्ला–ह सरीअुल्हिसाब(4)अल्यौ–म उहिल्–ल लकुमुत्–तय्यिबातु व तआ़मुल्लज़ी–न ऊतुल् किता–ब हिल्लुल्लकुम् व तआ़मुकुम् हिल्लुल्–लहुम् वल्मुह्सनातु मिनल् मुअ्मिनाति वल्मुह्सनातु मिनल्ल–ज़ी–न ऊतुल् किता–ब मिन् क़ब्लिकुम् इज़ा आतैतुमूहुन्–न उजू–रहुन्–न मुह्सिनी–न

और बेधार की चीज़ से मारा हुआ और जो गिरकर मरा और जिसे किसी जानवर ने सींग मारा और जिसे कोई दरिन्दा खा गया मगर जिन्हें तुम ज़बह कर लो और जो किसी थान पर ज़बह किया गया और पाँसे डालकर बांटा करना यह गुनाह का काम है आज तुम्हारे दीन की तरफ़ से काफ़िरों की आस टूट गई (फ़ा14) तो उनसे न डरो और मुझ से डरो आज मैंने तुम्हारे लिए तुम्हारा दीन कामिल कर दिया (फ़ा15) और तुम पर अपनी निअ़्मत पूरी कर दी (फ़ा16) और तुम्हारे लिए इस्लाम को दीन पसन्द किया (फ़ा17) तो जो भूख प्यास की शिद्दत में नाचार हो यूंकि गुनाह की तरफ़ न झुके (फ़ा18) तो बेशक अल्लाह बख़्शने वाला मेहरबान है।(3) ऐ महबूब तुम से पूछते हैं कि उनके लिए क्या हलाल हुआ तुम फ़रमा दो कि हलाल की गई तुम्हारे लिए पाक चीज़ें (फ़ा19) और जो शिकारी जानवर तुमने सधा लिये (फ़ा20) उन्हें शिकार पर दौड़ाते जो इल्म तुम्हें ख़ुदा ने दिया उसमें उन्हें सिखाते तो खाओ उसमें से जो वह मार कर तुम्हारे लिए रहने दें (फ़ा21) और उस पर अल्लाह का नाम लो (फ़ा22) और अल्लाह से डरते रहो, बेशक अल्लाह को हिसाब करते देर नहीं लगती।(4) आज तुम्हारे लिए पाक चीज़ें हलाल हुईं और किताबियों का खाना (फ़ा23) तुम्हारे लिए हलाल है और तुम्हारा खाना उनके लिए हलाल है और पारसा औरतें मुसलमान (फ़ा24) और पारसा औरतें उनमें से जिनको तुम से पहले किताब मिली जब तुम उन्हें उनके महर दो क़ैद में लाते हुए (फ़ा25)

(फ़ा14) यह आयत हज्जतुल वेदाअ़ में अ़रफ़ा के रोज़ जो जुमा को था बाद अ़स्र नाज़िल हुई माना यह हैं कि कुफ़्फ़ार तुम्हारे दीन पर ग़ालिब आने से मायूस हो गए और उमूरे तकलीफ़िया में हराम व हलाल के जो अहकाम हैं वह और क़ियास के क़ानून सब मुकम्मल कर दिये इसी लिए इस आयत के नुज़ूल के बाद बयाने हलाल व हराम की कोई आयत नाज़िल न हुई अगरचे *वत्तकू. यौमन् तुर्जऊ–न फ़ीहि इलल्लाहि* नाज़िल हुई। मगर वह आयत मौअ़ेज़त व नसीहत है बाज़ मुफ़स्सिरीन का क़ौल है कि दीन कामिल करने के माना इस्लाम को ग़ालिब करना है जिसका यह असर है कि हज्जतुल विदाअ़ में जब यह आयत नाज़िल हुई कोई मुशरिक मुसलमानों के साथ हज में शरीक न हो सका एक क़ौल यह है कि माना यह हैं कि मैंने तुम्हें दुश्मन से अमन दी एक क़ौल यह है कि दीन का इकमाल यह है कि वह पिछली शरीअ़तों की तरह मन्सूख़ न होगा और क़ियामत तक बाक़ी रहेगा। शाने नुज़ूलः बुख़ारी व मुस्लिम की हदीस में है कि हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अ़न्हु के पास एक यहूदी आया और उसने कहा कि ऐ अमीरुल मोमिनीन आपकी किताब में एक आयत है अगर वह हम यहूदियों पर नाज़िल हुई होती तो हम रोज़े नुज़ूल को ईद मनाते फ़रमाया कौन सी आयत उसने यही आयत *अल्यौ–म अक्मल्तु लकुम्* पढ़ी **(बक़िया सफ़हा 203 पर)**

غَيْرَ مُسٰفِحِيْنَ وَلَا مُتَّخِذِيْٓ اَخْدَانٍ ؕ وَمَنْ يَّكْفُرْ بِالْاِيْمَانِ فَقَدْ حَبِطَ عَمَلُهٗ ۡ وَهُوَ فِي الْاٰخِرَةِ مِنَ الْخٰسِرِيْنَ ۝۵ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِذَا قُمْتُمْ اِلَى
الصَّلٰوةِ فَاغْسِلُوْا وُجُوْهَكُمْ وَاَيْدِيَكُمْ اِلَى الْمَرَافِقِ وَامْسَحُوْا بِرُءُوْسِكُمْ وَاَرْجُلَكُمْ اِلَى الْكَعْبَيْنِ ؕ وَاِنْ كُنْتُمْ جُنُبًا فَاطَّهَّرُوْا ؕ وَاِنْ كُنْتُمْ مَّرْضٰٓى اَوْ عَلٰى
سَفَرٍ اَوْ جَآءَ اَحَدٌ مِّنْكُمْ مِّنَ الْغَآئِطِ اَوْ لٰمَسْتُمُ النِّسَآءَ فَلَمْ تَجِدُوْا مَآءً فَتَيَمَّمُوْا صَعِيْدًا طَيِّبًا فَامْسَحُوْا بِوُجُوْهِكُمْ وَاَيْدِيْكُمْ مِّنْهُ ؕ مَا يُرِيْدُ اللّٰهُ
لِيَجْعَلَ عَلَيْكُمْ مِّنْ حَرَجٍ وَّلٰكِنْ يُّرِيْدُ لِيُطَهِّرَكُمْ وَلِيُتِمَّ نِعْمَتَهٗ عَلَيْكُمْ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ ۝۶ وَاذْكُرُوْا نِعْمَةَ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ وَمِيْثَاقَهُ الَّذِيْ وَاثَقَكُمْ بِهٖٓ ۙ
اِذْ قُلْتُمْ سَمِعْنَا وَاَطَعْنَا ۡ وَاتَّقُوا اللّٰهَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَلِيْمٌۢ بِذَاتِ الصُّدُوْرِ ۝۷

ग़ै-र मुसा-फ़िही-न व ला मुत्तख़िज़ी अख़्-दानिन् व मंय्यक्फ़ुर् बिल्ईमानि फ़-क़द् हबि-त अ-मलुहू व हु-व फ़िल् आख़ि-रति मिनल्ख़ासिरीन(5)या अय्युहल्लज़ी-न आ-मनू इज़ा क़ुम्तुम् इलस्सलाति फ़ग़्सिलू वुजू-हकुम् व ऐदि-यकुम् इलल् मराफ़िक़ि वम्सहू बि-रुऊसिकुम् व अर्जु-लकुम् इलल्कअ्-बैनि व इन् कुन्तुम् जुनुबन् फ़त्तह्-हरू व इन् कुन्तुम् मर्ज़ा औ अला स-फ़रिन् औ जा-अ अ-हदुम् मिन्कुम् मिनल्ग़ाइति औ लामस्तुमुन् निसा-अ फ़-लम् तजिदू माअन् फ़-त-यम्ममू सअीदन् तय्यिबन् फ़म्सहू बि-वुजूहिकुम् व ऐदीकुम् मिन्हु मा युरीदुल्लाहु लि-यज्-अ-ल अलैकुम् मिन् ह-रजिंव् व लाकिंय्युरीदु लियु-तह्हि-रकुम् व लि-युतिम्-म निअ्म-तहू अलैकुम् ल-अ़ल्लकुम् तश्कुरून(6)वज़्कुरू निअ्-म-तल्लाहि अलैकुम् व मीसा-क़हुल्लज़ी वा-स-क़कुम् बिही इज़् क़ुल्तुम् समिअ्ना व अ-तअ्ना वत्तक़ुल्ला-ह इन्नल्ला-ह अलीमुम् बिज़ातिस्सुदूर(7)

न मस्ती निकालते न आशना बनाते (फ़ा26) और जो मुसलमान से काफ़िर हो उसका किया धरा सब अकारत गया और वह आख़िरत में ज़ियाँकार है।(5) (फ़ा27) (रुकूअ़ 5) ऐ ईमान वालो जब नमाज़ को खड़े होना चाहो (फ़ा28) तो अपना मुंह धोओ और कुहनियों तक हाथ (फ़ा29) और सरों का मसह करो (फ़ा30) और गट्टों तक पांव धोओ (फ़ा31) और अगर तुम्हें नहाने की हाजत हो तो ख़ूब सुथरे हो लो (फ़ा32) और अगर तुम बीमार या सफ़र में हो या तुम में कोई क़ज़ाए हाजत से आया या तुमने औरतों से सोहबत की और इन सूरतों में पानी न पाया तो पाक मिट्टी से तयम्मुम करो तो अपने मुंह और हाथों का उससे मसह करो। अल्लाह नहीं चाहता कि तुम पर कुछ तंगी रखे हां यह चाहता है कि तुम्हें ख़ूब सुथरा कर दे और अपनी निअ़मत तुम पर पूरी करदे कि कहीं तुम एहसान मानो।(6)और याद करो अल्लाह का एहसान अपने ऊपर (फ़ा33) और वह अहद जो उसने तुम से लिया (फ़ा34) जब कि तुम ने कहा, हमने सुना और माना (फ़ा35) और अल्लाह से डरो बेशक अल्लाह दिलों की बात जानता है।(7)

(फ़ा26) नाजायज़ तरीक़े पर मस्ती निकालने से बे धड़क ज़िना करना और आशना बनाने से पोशीदा ज़िना मुराद है (फ़ा27) क्योंकि इरतेदाद से तमाम अमल अकारत हो जाते हैं। (फ़ा28) और तुम बे वुज़ू हो तो तुम पर वुज़ू फ़र्ज़ है और फ़रायज़ वुज़ू के यह चार हैं जो आगे बयान किये जाते हैं फ़ाइदा सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम और आपके असहाब हर नमाज़ के लिए ताज़ा वुज़ू के आ़दी थे अगरचे एक वुज़ू से बहुत सी नमाज़ें फ़रायज़ व नवाफ़िल दुरुस्त हैं मगर हर नमाज़ के लिए जुदागाना वुज़ू करना ज़्यादा बरकत व सवाब का मूजिब है बाज़ मुफ़स्सिरीन का क़ौल है कि इब्तेदाए इस्लाम में हर नमाज़ के लिए जुदागाना वुज़ू फ़र्ज़ था बाद में मन्सूख़ किया गया और जब हदस वाक़ेअ़ न हो एक ही वुज़ू से फ़रायज़ व नवाफ़िल सब का अदा करना जायज़ हुआ (फ़ा29) कोहनियां भी धोने के हुक्म में दाख़िल हैं जैसा कि हदीस से साबित है जम्हूर इसी पर हैं (फ़ा30) चौथाई सर का मसह फ़र्ज़ है यह मिक़दार हदीसे मुग़ीरा से साबित है और यह हदीस आयत का बयान है (फ़ा31) यह वुज़ू का चौथा फ़र्ज़ है हदीसे सही में है सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने कुछ लोगों को पांव पर मसह करते देखा तो मना फ़रमाया और अता से मरवी है वह बक़सम फ़रमाते हैं कि मेरे इल्म में असहाबे रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम में से किसी ने भी वुज़ू में पांव पर मसह न किया (फ़ा32) मसलाः जनाबत से तहारते कामिला लाज़िम होती है जनाबत कभी बेदारी में दफ़्क़ व शह्वत के साथ इन्ज़ाल से होती है और कभी नींद में एहतेलाम से जिसके बाद असर पाया जाये हत्ता कि अगर ख़्वाब याद आया मगर तरी न पाई तो ग़ुस्ल वाजिब न होगा और कभी सबीलैन में से किसी में इदख़ाले हशफ़ा से फ़ाइल व मफ़ऊल दोनों के हक़ में ख़्वाह इन्ज़ाल हो या न हो यह तमाम सूरतें जनाबत में दाख़िल हैं इनसे ग़ुस्ल वाजिब हो जाता है मसलाः हैज़ व निफ़ास से भी ग़ुस्ल लाज़िम होता है हैज़ का। मसलाः सूरह बक़रह में गुज़र गया **(बक़िया सफ़हा 200 पर)**

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا كُوْنُوْا قَوّٰمِيْنَ لِلّٰهِ شُهَدَآءَ بِالْقِسْطِ ز وَلَا يَجْرِمَنَّكُمْ شَنَاٰنُ قَوْمٍ عَلٰٓى اَلَّا تَعْدِلُوْا ؕ اِعْدِلُوْا ۟ هُوَ اَقْرَبُ لِلتَّقْوٰى ز

وَاتَّقُوا اللّٰهَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ خَبِيْرٌ ۢ بِمَا تَعْمَلُوْنَ ۝٨ وَعَدَ اللّٰهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ ۙ لَهُمْ مَّغْفِرَةٌ وَّ اَجْرٌ عَظِيْمٌ ۝٩ وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَكَذَّبُوْا

بِاٰيٰتِنَآ اُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ الْجَحِيْمِ ۝١٠ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اذْكُرُوْا نِعْمَتَ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ اِذْ هَمَّ قَوْمٌ اَنْ يَّبْسُطُوْٓا اِلَيْكُمْ اَيْدِيَهُمْ فَكَفَّ اَيْدِيَهُمْ عَنْكُمْ ج

وَاتَّقُوا اللّٰهَ ؕ وَعَلَى اللّٰهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُؤْمِنُوْنَ ۝١١ ع وَلَقَدْ اَخَذَ اللّٰهُ مِيْثَاقَ بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ ج وَبَعَثْنَا مِنْهُمُ اثْنَيْ عَشَرَ نَقِيْبًا ؕ وَقَالَ اللّٰهُ اِنِّيْ مَعَكُمْ ط

لَئِنْ اَقَمْتُمُ الصَّلٰوةَ وَاٰتَيْتُمُ الزَّكٰوةَ وَاٰمَنْتُمْ بِرُسُلِيْ وَعَزَّرْتُمُوْهُمْ وَاَقْرَضْتُمُ اللّٰهَ قَرْضًا حَسَنًا لَّاُكَفِّرَنَّ عَنْكُمْ سَيِّاٰتِكُمْ وَلَاُدْخِلَنَّكُمْ جَنّٰتٍ

या अय्युहल्लज़ी–न आ–मनू कूनू क़व्वामी–न लिल्लाहि शु–हदा–अ बिल्क़िस्ति व ला यज्रिमन्नकुम् श–नआनु क़ौमिन् अ़ला अल्ला तअ़्दिलू इअ़्दिलू हु–व अक़्रबु लित्तक़्वा वत्तकुल्ला–ह इन्नल्ला–ह ख़बीरुम् बिमा तअ़्–मलून(8)व अ़–दल्ला–हुल्–लजी–न आ–मनू व अ़मि–लुस् सालिहाति लहुम् मग़्फ़ि–रतुंव् व अज्रुन् अ़ज़ीम(9)वल्लज़ी–न क–फ़रू व कज़्ज़बू बिआयातिना उलाइ–क अस्हाबुल् जहीम(10)या अय्युहल्लज़ी–न आ–मनुज़्कुरू निअ़्–म–तल्लाहि अ़लैकुम् इज् हम्–म क़ौमुन् अंय्यब्सुतू इलैकुम् ऐदियहुम् फ़–कफ़्–फ़ ऐदि–यहुम् अन्कुम् वत्तकुल्ला–ह व अ़–लल्लाहि फ़ल्य–त–वक्क–लिल्मुअ्मिनून(11)व ल–क़द् अ–ख़–जल्लाहु मीसा–क़ बनी इस्राई–ल व ब–अ़स्ना मिन्हुमुस्नय् अ़–श–र नक़ीबन् व क़ालल्लाहु इन्नी म–अ़कुम् लइन् अ–क़म्तुमुस्सला–त व आतैतुमुज़्–ज़का–त व आमन्–तुम् बि–रुसुली व अ़ज़्ज़रतु–मूहुम् व अक़्रज़्तुमुल्ला–ह क़र्ज़न् ह–स–नल्–ल उ–कफ़्फ़िरन्–न अ़न्कुम् सय्यिआतिकुम् व ल–उदख़ि–लन्नकुम् जन्नातिन्

ऐ ईमान वालो अल्लाह के हुक्म पर ख़ूब क़ायम हो जाओ। इंसाफ़ के साथ गवाही देते (फ़ा36) और तुमको किसी क़ौम की अ़दावत इस पर न उभारे कि इंसाफ़ न करो। इंसाफ़ करो वह परहेज़गारी के ज़्यादा क़रीब है और अल्लाह से डरो बेशक अल्लाह को तुम्हारे कामों की ख़बर है।(8) ईमान वाले नेकोकारों से अल्लाह का वादा है कि उनके लिए बख़्शिश और बड़ा सवाब है।(9) और वह जिन्होंने कुफ़्र किया और हमारी आयतें झुटलाईं वहीं दोज़ख़ वाले हैं।(10) (फ़ा37) ऐ ईमान वालो अल्लाह का एहसान अपने ऊपर याद करो जब एक क़ौम ने चाहा कि तुम पर दस्त दराज़ी करें तो उसने उनके हाथ तुम पर से रोक दिये (फ़ा38) और अल्लाह से डरो और मुसलमानों को अल्लाह ही पर भरोसा चाहिए।(11) (रुकूअ़ 6) और बेशक अल्लाह ने बनी इसराईल से अहद लिया (फ़ा39) और हमने उनमें बारह सरदार क़ाइम किये (फ़ा40) और अल्लाह ने फ़रमाया बेशक मैं (फ़ा41) तुम्हारे साथ हूं ज़रूर, अगर तुम नमाज़ क़ाइम रखो और ज़कात दो और मेरे रसूलों पर ईमान लाओ और उनकी ताज़ीम करो और अल्लाह को क़र्ज़े हसन दो (फ़ा42) बेशक मैं तुम्हारे गुनाह उतार दूंगा और ज़रूर तुम्हें बाग़ों में ले जाऊंगा।

(फ़ा36) इस तरह कि क़राबत व अ़दावत का कोई असर तुम्हें अ़दल से न हटा सके (फ़ा37) यह आयत नस्से क़ातेअ़ है इस पर कि ख़ुलूदे नार सिवाए कुफ़्फ़ार के और किसी के लिए नहीं (ख़ाज़िन) (फ़ा38) शाने नुज़ूलः एक मर्तबा नबीए करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने एक मन्ज़िल में क़ियाम फ़रमाया असहाब जुदा जुदा दरख़्तों के साये में आराम करने लगे सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने अपनी तलवार एक दरख़्त में लटका दी एक अअ़्राबी मौक़ा पाकर आया और छुप कर उसने तलवार ली और तलवार खींच कर हुज़ूर से कहने लगा ऐ मुहम्मद तुम्हें मुझ से कौन बचाएगा हुज़ूर ने फ़रमाया अल्लाह यह फ़रमाना था हज़रत जिबरील ने उसके हाथ से तलवार गिरा दी और नबीए करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने तलवार लेकर फ़रमाया कि तुझे मुझ से कौन बचाएगा कहने लगा कि कोई नहीं मैं गवाही देता हूं कि अल्लाह के सिवा कोई मअ़बूद नहीं और गवाही देता हूं कि मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम उसके रसूल हैं। (तफ़सीर अबुस्सऊद) (फ़ा39) कि अल्लाह की इबादत करेंगे उसके साथ किसी को शरीक न करेंगे तौरेत के अहकाम का इत्तेबाअ़ करेंगे (फ़ा40) हर सिब्त (गरोह) पर एक सरदार जो अपनी क़ौम का ज़िम्मादार हो कि वह अ़हदे वफ़ा करेंगे और हुक्म पर चलेंगे (फ़ा41) मदद व नुसरत से (फ़ा42) यानी उसकी राह में ख़र्च करो

تَجْرِىْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ ۚ فَمَنْ كَفَرَ بَعْدَ ذٰلِكَ مِنْكُمْ فَقَدْ ضَلَّ سَوَآءَ السَّبِيْلِ ﴿۱۲﴾ فَبِمَا نَقْضِهِمْ مِّيْثَاقَهُمْ لَعَنّٰهُمْ وَجَعَلْنَا قُلُوْبَهُمْ قٰسِيَةً ۚ

يُحَرِّفُوْنَ الْكَلِمَ عَنْ مَّوَاضِعِهٖ ۙ وَنَسُوْا حَظًّا مِّمَّا ذُكِّرُوْا بِهٖ ۚ وَلَا تَزَالُ تَطَّلِعُ عَلٰى خَآئِنَةٍ مِّنْهُمْ اِلَّا قَلِيْلًا مِّنْهُمْ فَاعْفُ عَنْهُمْ وَاصْفَحْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ

يُحِبُّ الْمُحْسِنِيْنَ ﴿۱۳﴾ وَمِنَ الَّذِيْنَ قَالُوْٓا اِنَّا نَصٰرٰٓى اَخَذْنَا مِيْثَاقَهُمْ فَنَسُوْا حَظًّا مِّمَّا ذُكِّرُوْا بِهٖ ۠ فَاَغْرَيْنَا بَيْنَهُمُ الْعَدَاوَةَ وَالْبَغْضَآءَ اِلٰى يَوْمِ الْقِيٰمَةِ ؕ وَسَوْفَ

يُنَبِّئُهُمُ اللّٰهُ بِمَا كَانُوْا يَصْنَعُوْنَ ﴿۱۴﴾ يٰٓاَهْلَ الْكِتٰبِ قَدْ جَآءَكُمْ رَسُوْلُنَا يُبَيِّنُ لَكُمْ كَثِيْرًا مِّمَّا كُنْتُمْ تُخْفُوْنَ مِنَ الْكِتٰبِ وَيَعْفُوْا عَنْ كَثِيْرٍ ؕ قَدْ جَآءَكُمْ

مِّنَ اللّٰهِ نُوْرٌ وَّكِتٰبٌ مُّبِيْنٌ ﴿۱۵﴾ يَّهْدِىْ بِهِ اللّٰهُ مَنِ اتَّبَعَ رِضْوَانَهٗ سُبُلَ السَّلٰمِ وَيُخْرِجُهُمْ مِّنَ الظُّلُمٰتِ اِلَى النُّوْرِ بِاِذْنِهٖ وَيَهْدِيْهِمْ اِلٰى

तजरी मिन् तह्ति–हल् अन्हारु फ़–मन् क–फ़–र बअ्–द ज़ालि–क मिन्कुम् फ़–क़द् ज़ल्–ल सवा–अस्सबील(12)फ़बिमा नक़्ज़िहिम् मीसा–क़हुम् ल–अ़नाहुम् व ज–अ़ल्ना क़ुलू–बहुम् क़ासिय–तन् युहर्रिफ़ूनल् कलि–म अ़म् मवाज़िअ़िही व नसू हज़्ज़म् मिम्मा ज़ुक्किरू बिही व ला तज़ालु तत्तलिअु अ़ला ख़ाइ–नतिम् मिन्हुम् इल्ला क़लीलम् मिन्हुम् फ़अ्–फ़ु अ़न्हुम् वस्फ़ह्, इन्नल्ला–ह युहिब्बुल् मुह्सिनी–न(13)व मि–नल्लज़ी–न क़ालू इन्ना नसारा अ–ख़ज़्ना मीसा–क़हुम् फ़–नसू हज़्ज़म् मिम्मा ज़ुक्किरू बिही फ़–अग़्रैना बै–नहुमुल् अ़दाव–त वल्बग़्ज़ा–अ इला यौमिल्–क़िया–मति व सौ–फ़ युनब्बिउहुमुल्लाहु बिमा कानू यस्नअू न(14)या अह्लल् किताबि क़द् जा–अकुम् रसूलुना युबय्यिनु लकुम् कसीरम् मिम्मा कुन्तुम् तुख़्फ़ू–न मिनल् किताबि व यअ्–फ़ू अ़न् कसीरिन् क़द् जा–अकुम् मि–नल्लाहि नूरुंव् व किताबुम् मुबीन(15)यह्दी बिहिल्लाहु मनित्त–ब–अ़ रिज़्वा–नहू सुबुलस्सलामि व युख़्–रिजुहुम् मिनज़्ज़ुलुमाति इलन्नूरि बि–इज़्निही व यह्दीहिम् इला

जिनके नीचे नहरें रवां, फिर उसके बाद जो तुम में से कुफ़्र करे वह ज़रूर सीधी राह से बहका।(12) (फ़ा43) तो उनकी कैसी बद–अहदियों (फ़ा44) पर हमने उन्हें लानत की और उनके दिल सख़्त कर दिये। अल्लाह की बातों को (फ़ा45) उनके ठिकानों से बदलते हैं और भुला बैठे, बड़ा हिस्सा उन नसीहतों का जो उन्हें दी गईं (फ़ा46) और तुम हमेशा उनकी एक न एक दग़ा पर मुत्तलअ् होते रहोगे (फ़ा47) सिवा थोड़ों के (फ़ा48) तो उन्हें माफ़ कर दो और उनसे दरगुज़रो (फ़ा49) बेशक एहसान वाले अल्लाह को महबूब हैं।(13) और वह जिन्होंने दावा किया कि हम नसारा हैं हमने उन से अहद लिया (फ़ा50) तो वह भुला बैठे बड़ा हिस्सा उन नसीहतों का जो उन्हें दी गईं (फ़ा51) तो हमने उनके आपस में क़ियामत के दिन तक बैर और बुग्ज़ डाल दिया (फ़ा52) और अ़नक़रीब अल्लाह उन्हें बता देगा जो कुछ करते थे।(14)(फ़ा53) ऐ किताब वालो (फ़ा54) बेशक तुम्हारे पास हमारे यह रसूल (फ़ा55) तशरीफ़ लाये कि तुम पर ज़ाहिर फ़रमाते हैं बहुत सी वह चीज़ें जो तुमने किताब में छुपा डाली थीं (फ़ा56) और बहुत सी माफ़ फ़रमाते हैं। (फ़ा57) बेशक तुम्हारे पास अल्लाह की तरफ़ से एक नूर आया (फ़ा58) और रौशन किताब।(15) (फ़ा59) अल्लाह उससे हिदायत देता है उसे, जो अल्लाह की मर्ज़ी पर चला, सलामती के रास्ते और उन्हें अंधेरियों से रौशनी की तरफ़ ले जाता है अपने हुक्म से और उन्हें सीधी राह।

(फ़ा43) वाक़िआ यह था कि अल्लाह तआ़ला ने हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम से वादा फ़रमाया था कि उन्हें और उनकी क़ौम को अर्ज़े मुक़द्दसा का वारिस बनाएगा जिस में कनआ़नी जब्बार रहते थे तो फ़िरऔ़न के हलाक के बाद हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम को हुक्मे इलाही हुआ कि बनी इसराईल को अर्ज़े मुक़द्दसा की तरफ़ ले जायें मैंने उसको तुम्हारे लिए दार व क़रार बनाया है तो वहां जाओ और जो दुश्मन वहां हैं उन पर जिहाद करो मैं तुम्हारी मदद फ़रमाऊंगा और ऐ मूसा तुम अपनी क़ौम के हर हर सिब्त में से एक एक सरदार बनाओ इस तरह बारह सरदार मुक़र्रर करो हर एक उनमें से अपनी क़ौम के हुक्म मानने और अहदे वफ़ा करने का ज़िम्मेदार हो। हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम सरदार मुन्तख़ब करके बनी इसराई को लेकर रवाना हुए जो अरीहा के क़रीब पहुंचे तो उन नक़ीबों को तजस्सुसे अहवाल के लिए भेजा वहां उन्होंने देखा कि लोग बहुत अ़ज़ीमुलजुस्सा और निहायत क़वी व तवाना साहिबे हैबत व शौकत हैं यह उनसे हैबत–ज़दा होकर वापस हुए और आकर उन्होंने अपनी क़ौम से सब हाल बयान किया बावजूदेकि उनको इससे मना किया गया था लेकिन सबने अहद शिकनी की सिवाए कालिब बिन यूक़न्ना और यूशअ् बिन नून के कि यह अहद पर क़ायम रहे (फ़ा44) कि उन्होंने अहदे इलाही को तोड़ा और हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलातु वस्सलाम के बाद आने वाले अम्बिया की तकज़ीब की और अम्बिया को क़त्ल किया किताब के **(बक़िया सफ़हा 201 पर)**

صِرَاطٍ مُّسْتَقِيمٍ ۝١٦ لَقَدْ كَفَرَ الَّذِينَ قَالُوٓا إِنَّ اللّٰهَ هُوَ الْمَسِيحُ ابْنُ مَرْيَمَ ۚ قُلْ فَمَن يَمْلِكُ مِنَ اللّٰهِ شَيْـًٔا إِنْ أَرَادَ أَن يُهْلِكَ الْمَسِيحَ ابْنَ
مَرْيَمَ وَأُمَّهُۥ وَمَن فِى الْأَرْضِ جَمِيعًا ۗ وَلِلّٰهِ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا ۚ يَخْلُقُ مَا يَشَآءُ ۚ وَاللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَىْءٍ قَدِيرٌ ۝١٧ وَقَالَتِ
الْيَهُودُ وَالنَّصٰرٰى نَحْنُ أَبْنٰٓؤُا اللّٰهِ وَأَحِبّٰٓؤُهُۥ ۚ قُلْ فَلِمَ يُعَذِّبُكُم بِذُنُوبِكُم ۖ بَلْ أَنتُم بَشَرٌ مِّمَّنْ خَلَقَ ۚ يَغْفِرُ لِمَن يَشَآءُ وَيُعَذِّبُ مَن يَشَآءُ ۚ
وَلِلّٰهِ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا ۖ وَإِلَيْهِ الْمَصِيرُ ۝١٨ يٰٓأَهْلَ الْكِتٰبِ قَدْ جَآءَكُمْ رَسُولُنَا يُبَيِّنُ لَكُمْ عَلٰى فَتْرَةٍ مِّنَ الرُّسُلِ أَن تَقُولُوا مَا
جَآءَنَا مِن بَشِيرٍ وَلَا نَذِيرٍ ۖ فَقَدْ جَآءَكُم بَشِيرٌ وَنَذِيرٌ ۗ وَاللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَىْءٍ قَدِيرٌ ۝١٩ وَإِذْ قَالَ مُوسٰى لِقَوْمِهِۦ يٰقَوْمِ اذْكُرُوا نِعْمَةَ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ

सिरातिम् मुस्तक़ीम(16)ल–क़द् क–फ़–रल्लज़ी–न क़ालू इन्नल्ला–ह हु–वल्मसीहुब्नु मर्य–म क़ुल् फ़–मंय्यम्लिकु मिनल्लाहि शैअन् इन् अरा–द अंय्युह्लिकल् मसीहब्–न मर्य–म व उम्महू व मन् फ़िल्अर्ज़ि जमीअन् व लिल्लाहि मुल्कुस्समा–वाति वल्अर्ज़ि व मा बै–नहुमा यख़्लुक़ु मा यशाउ वल्लाहु अ़ला कुल्लि शैइन् क़दीर(17)व क़ा–लतिल्–यहूदु वन्नसारा नह़्नु अब्ना–उल्लाहि व अह़िब्बाउहू क़ुल् फ़लि–म युअ़ज़्ज़िबुकुम् बिज़ुनूबिकुम् बल् अन्तुम् ब–शरुम् मिम्मन् ख़–ल–क़ यग़्फ़िरु लि–मंय्यशा–उ व युअ़ज़्ज़िबु मंय्यशाउ व लिल्लाहि मुल्कुस्समावाति वल्अर्ज़ि व मा बै–नहुमा व इलैहिल्मसीर(18)या अह्लल्–किताबि क़द् जा–अकुम् रसूलुना युबय्यिनु लकुम् अ़ला फ़त्रतिम् मिनर्रुसुलि अन् तक़ूलू मा जा–अना मिम्बशीरिंव् व ला नज़ीरिन् फ़–क़द् जा–अकुम् बशीरुंव्–व नज़ीरुन्. वल्लाहु अ़ला कुल्लि शैइन् क़दीर(19)व इज़् क़ा–ल मूसा लिक़ौमिही या क़ौमिज़्कुरु निअ़्–म–तल्लाहि अ़लैकुम्

दिखाता है।(16) बेशक काफ़िर हुए वह जिन्होंने कहा कि अल्लाह मसीह बिन मरयम ही है (फ़ा60) तुम फ़रमा दो फिर अल्लाह का कोई क्या कर सकता है।(17)अगर वह चाहे कि हलाक कर दे मसीह बिन मरयम और उसकी मां और तमाम ज़मीन वालों को (फ़ा61)और अल्लाह ही के लिए है सल्तनत आसमानों और ज़मीन और उनके दर्मियान की जो चाहे पैदा करता है और अल्लाह सब कुछ कर सकता है। और यहूदी और नसरानी बोले कि हम अल्लाह के बेटे और उसके प्यारे हैं। (फ़ा62) तुम फ़रमा दो फिर तुम्हें क्यों तुम्हारे गुनाहों पर अज़ाब फ़रमाता है (फ़ा63) बल्कि तुम आदमी हो उसकी मख़्लूक़ात से जिसे चाहे बख़्शता है और जिसे चाहे सज़ा देता है और अल्लाह ही के लिए है सल्तनत आसमानों और ज़मीन और उनके दर्मियान की और उसी की तरफ़ फिरना है।(18) ऐ किताब वालो बेशक तुम्हारे पास हमारे यह रसूल (फ़ा64) तशरीफ़ लाये कि तुम पर हमारे अहकाम ज़ाहिर फ़रमाते हैं बाद उसके कि रसूलों का आना मुद्दतों बन्द रहा था (फ़ा65) कि तुम कहो कि हमारे पास कोई ख़ुशी और डर सुनाने वाला न आया तो यह ख़ुशी और डर सुनाने वाले तुम्हारे पास तशरीफ़ लाये हैं और अल्लाह को सब क़ुदरत है।(19) (रुकूअ़ 7) और जब मूसा ने कहा अपनी क़ौम से ऐ मेरी क़ौम अल्लाह का एहसान अपने ऊपर याद करो

(फ़ा60) हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा ने फ़रमाया कि नजरान के नसारा से यह मक़ूला सरज़द हुआ और नसरानियों के फ़िरक़ा याक़ूबिया व मलकानिया का यह मज़हब है कि वह हज़रत मसीह को अल्लाह बताते हैं क्योंकि वह हुलूल के क़ायल हैं और उनका एतेक़ादे बातिल यह है कि अल्लाह तआ़ला ने बदने ईसा में हुलूल किया *मआ़ज़ल्लाह व तआ़लल्लाहु अ़म्मा यक़ूलू–न उलूव्वन् कबीरा* अल्लाह तआ़ला ने इस आयत में हुक्मे कुफ़्र दिया और उसके बाद उनके मज़हब का फ़साद बयान फ़रमाया (फ़ा61) इसका जवाब यही है कि कोई कुछ नहीं कर सकता तो फिर हज़रत मसीह को अल्लाह बताना कितना सरीह बातिल है। (फ़ा62) शाने नुज़ूलः सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के पास अहले किताब आये और उन्होंने दीन के मुआ़मले में आप से गुफ़्तगू शुरू की आपने उन्हें इस्लाम की दावत दी और अल्लाह की नाफ़रमानी करने से उसके अज़ाब का ख़ौफ़ दिलाया तो वह कहने लगे कि ऐ मुहम्मद आप हमें क्या डराते हैं हम तो अल्लाह के बेटे और उसके प्यारे हैं इस पर यह आयत नाज़िल हुई और उनके इस दावा का बुतलान ज़ाहिर फ़रमाया गया (फ़ा63) यानी इस बात का तो तुम्हें भी इक़रार है कि गिनती के दिन तुम जहन्नम में रहोगे तो सोचो कोई बाप अपने बेटे को या कोई शख़्स अपने प्यारे को आग में जलाता है जब ऐसा नहीं तो तुम्हारे दावे का किज़्ब व बुतलान तुम्हारे इक़रार से साबित है (फ़ा64) मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम (फ़ा65) हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम के बाद सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के ज़माना तक पांच सौ **(बक़िया सफ़हा 200 पर)**

اِذْ جَعَلَ فِيْكُمْ اَنْۢبِيَآءَ وَجَعَلَكُمْ مُّلُوْكًا ۖۗ وَّاٰتٰىكُمْ مَّا لَمْ يُؤْتِ اَحَدًا مِّنَ الْعٰلَمِيْنَ ۝ يٰقَوْمِ ادْخُلُوا الْاَرْضَ الْمُقَدَّسَةَ الَّتِيْ كَتَبَ اللّٰهُ لَكُمْ وَلَا
تَرْتَدُّوْا عَلٰٓى اَدْبَارِكُمْ فَتَنْقَلِبُوْا خٰسِرِيْنَ ۝ قَالُوْا يٰمُوْسٰٓى اِنَّ فِيْهَا قَوْمًا جَبَّارِيْنَ ۖ وَاِنَّا لَنْ نَّدْخُلَهَا حَتّٰى يَخْرُجُوْا مِنْهَا ۚ فَاِنْ يَّخْرُجُوْا مِنْهَا فَاِنَّا
دٰخِلُوْنَ ۝ قَالَ رَجُلٰنِ مِنَ الَّذِيْنَ يَخَافُوْنَ اَنْعَمَ اللّٰهُ عَلَيْهِمَا ادْخُلُوْا عَلَيْهِمُ الْبَابَ ۚ فَاِذَا دَخَلْتُمُوْهُ فَاِنَّكُمْ غٰلِبُوْنَ ۚ وَعَلَى اللّٰهِ فَتَوَكَّلُوْٓا اِنْ كُنْتُمْ
مُّؤْمِنِيْنَ ۝ قَالُوْا يٰمُوْسٰٓى اِنَّا لَنْ نَّدْخُلَهَآ اَبَدًا مَّا دَامُوْا فِيْهَا فَاذْهَبْ اَنْتَ وَرَبُّكَ فَقَاتِلَآ اِنَّا هٰهُنَا قٰعِدُوْنَ ۝ قَالَ رَبِّ اِنِّيْ لَآ اَمْلِكُ اِلَّا نَفْسِيْ
وَاَخِيْ فَافْرُقْ بَيْنَنَا وَبَيْنَ الْقَوْمِ الْفٰسِقِيْنَ ۝ قَالَ فَاِنَّهَا مُحَرَّمَةٌ عَلَيْهِمْ اَرْبَعِيْنَ سَنَةً ۚ يَتِيْهُوْنَ فِي الْاَرْضِ ۚ فَلَا تَاْسَ عَلَى الْقَوْمِ الْفٰسِقِيْنَ ۝

इज् ज़–अ़–ल फ़ीकुम् अम्बिया–अ व ज–अ़–लकुम् मुलूकंव् व आताकुम् मालम् युअ्ति अ–ह़–दम् मिनल् आ़–लमीन(20)या क़ौमिदख़ुलुल्–अर्ज़ल् मुक़द्–द–स–तल्–लती क–त–बल्लाहु लकुम् व ला तर्तद्दू अ़ला अद्बारिकुम् फ़–तन्क़लिबू ख़ासिरीन(21)क़ालू या मूसा इन्–न फ़ीहा क़ौमन् जब्बारी–न व इन्ना लन् नद्ख़ु–लहा ह़त्ता यख़्रुजू मिन्हा फ़–इंय्यख़्रुजू मिन्हा फ़इन्ना दाख़िलून (22)क़ा–ल रजुलानि मिनल्–लज़ी–न यख़ाफ़ू–न अन्–अ़मल्लाहु अ़लैहिमद्ख़ुलू अ़लैहिमुल्बा–ब फ़–इज़ा द–ख़ल्तुमूहु फ़इन्नकुम् ग़ालिबू–न व अ़–लल्लाहि फ़–त–वक्कलू इन् कुन्तुम् मुअ्मिनीन (23)क़ालू या मूसा इन्ना लन्नद्ख़ु–लहा अ–ब–दम् मा दामू फ़ीहा फ़ज़्हब् अन्–त व रब्बु–क फ़क़ातिला इन्ना–हाहुना क़ाअ़िदून(24)क़ा–ल रब्बि इन्नी ला अम्लिकु इल्ला नफ़्सी व अख़ी फ़फ़्रुक़् बै–नना व बैनल्क़ौ–मिल्फ़ासिक़ीन(25)क़ा–ल फ़–इन्नहा मुह़र्र–मतुन् अ़लैहिम् अर्बअ़ी–न स–न–तन् यतीहू–न फ़िल्अर्ज़ि फ़ला तअ्–स अ़लल् क़ौमिल् फ़ासिक़ीन(26)

कि तुम में से पैग़म्बर किये (फ़ा66) और तुम्हें बादशाह किया (फ़ा67) और तुम्हें वह दिया जो आज सारे जहान में किसी को न दिया।(20) (फ़ा68) ऐ क़ौम उस पाक ज़मीन में दाख़िल हो जो अल्लाह ने तुम्हारे लिए लिखी है और पीछे न पलटो (फ़ा69) कि नक़ुसान पर पलटोगे।(21) बोले ऐ मूसा उसमें तो बड़े ज़बरदस्त लोग हैं और हम उसमें हरगिज़ दाख़िल न होंगे जब तक वह वहां से निकल न जायें। हां वह वहां से निकल जायें तो हम वहां जायेंगे।(22) दो मर्द कि अल्लाह से डरने वालों में से थे (फ़ा70) अल्लाह ने उन्हें नवाज़ा (फ़ा71) बोले कि ज़बरदस्ती दरवाज़े में (फ़ा72) उन पर दाख़िल हो अगर तुम दरवाज़े में दाख़िल हो गए तो तुम्हारा ही ग़लबा है (फ़ा73) और अल्लाह ही पर भरोसा करो अगर तुम्हें ईमान है।(23) बोले (फ़ा74) ऐ मूसा हम तो वहां (फ़ा75) कभी न जायेंगे जब तक वह वहां है तो आप जाईये और आपका रब तुम दोनों लड़ो, हम यहां बैठे हैं।(24) मूसा ने अ़र्ज़ की कि ऐ रब मेरे मुझे इख़्तियार नहीं मगर अपना और अपने भाई का तो तू हमको इन बे हुक्मों से जुदा रख।(25) (फ़ा76) फ़रमाया तो वह ज़मीन उन पर हराम है (फ़ा77) चालीस बरस तक भटकते फिरें ज़मीन में (फ़ा78) तो तुम उन बेहुक्मों का अफ़सोस न खाओ।(26) (रुकूअ़ 8)

(फ़ा66) मसलाः इस आयत से मालूम हुआ कि पैग़म्बरों की तशरीफ़ आवरी निअ़मत है और हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम ने अपनी क़ौम को उसके ज़िक्र करने का हुक्म दिया कि वह बरकात व समरात का सबब है इससे महाफ़िले मीलाद मुबारक के मूजिबे बरकात व समरात और महमूद व मुस्तहसन होने की सनद मिलती है (फ़ा67) यानी आज़ाद और साहिबे हशम व ख़दम और फ़िरऔ़नियों के हाथों में मुक़य्यद होने के बाद उनकी ग़ुलामी से नजात हासिल करके ऐश व आराम की ज़िन्दगी पाना बड़ी निअ़मत है हज़रत अबू सईद ख़ुदरी रज़ियल्लाहु अ़न्हु से मरवी है कि सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि बनी इसराईल में जो कोई ख़ादिम और औरत और सवारी रखता वह मलिक कहलाया जाता (फ़ा68) जैसे कि दरिया में राह बनाना दुश्मन को ग़र्क़ करना मन्न और सलवा उतारना पत्थर से चश्मे जारी करना अब्र को सायेबान बनाना वग़ैरह (फ़ा69) हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम ने अपनी क़ौम को अल्लाह की निअ़मतें याद दिलाने के बाद उनको अपने दुश्मनों पर जिहाद के लिए निकलने का हुक्म दिया और फ़रमाया कि ऐ क़ौम अर्ज़े मुक़द्दसा में दाख़िल हो जाओ उस ज़मीन को मुक़द्दस इस लिए कहा गया कि वह अम्बिया की मसकन थी मसला इससे मालूम हुआ कि अम्बिया की सुकूनत से ज़मीनों को भी शरफ़ हासलि होता है और दूसरों के लिए वह बाइसे बरकत होता है कलबी से मन्क़ूल है कि हज़रत इबराहीम अ़लैहिस्सलातु वस्सलाम कोहे लुबनान पर चढ़े तो आप से कहा गया देखिये जहां तक आपकी नज़र पहुंचे वह जगह मुक़द्दस है और आपकी **(बक़िया सफ़हा 204 पर)**

وَاتْلُ عَلَيْهِمْ نَبَاَ ابْنَیْ اٰدَمَ بِالْحَقِّ اِذْ قَرَّبَا قُرْبَانًا فَتُقُبِّلَ مِنْ اَحَدِهِمَا وَلَمْ يُتَقَبَّلْ مِنَ الْاٰخَرِ ؕ قَالَ لَاَقْتُلَنَّكَ ؕ قَالَ اِنَّمَا يَتَقَبَّلُ اللّٰهُ مِنَ الْمُتَّقِيْنَ ﴿۲۷﴾
لَئِنْۢ بَسَطْتَّ اِلَیَّ يَدَكَ لِتَقْتُلَنِیْ مَاۤ اَنَا بِبَاسِطٍ يَّدِیَ اِلَيْكَ لِاَقْتُلَكَ ۚ اِنِّیْۤ اَخَافُ اللّٰهَ رَبَّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿۲۸﴾ اِنِّیْۤ اُرِيْدُ اَنْ تَبُوْٓاَ بِاِثْمِیْ وَاِثْمِكَ
فَتَكُوْنَ مِنْ اَصْحٰبِ النَّارِ ۚ وَذٰلِكَ جَزٰٓؤُا الظّٰلِمِيْنَ ﴿۲۹﴾ فَطَوَّعَتْ لَهٗ نَفْسُهٗ قَتْلَ اَخِيْهِ فَقَتَلَهٗ فَاَصْبَحَ مِنَ الْخٰسِرِيْنَ ﴿۳۰﴾ فَبَعَثَ اللّٰهُ غُرَابًا يَّبْحَثُ
فِی الْاَرْضِ لِيُرِيَهٗ كَيْفَ يُوَارِیْ سَوْءَةَ اَخِيْهِ ؕ قَالَ يٰوَيْلَتٰۤی اَعَجَزْتُ اَنْ اَكُوْنَ مِثْلَ هٰذَا الْغُرَابِ فَاُوَارِیَ سَوْءَةَ اَخِیْ ۚ فَاَصْبَحَ مِنَ النّٰدِمِيْنَ ﴿۳۱﴾
مِنْ اَجْلِ ذٰلِكَ ۛۚ كَتَبْنَا عَلٰی بَنِیْۤ اِسْرَآءِيْلَ اَنَّهٗ مَنْ قَتَلَ نَفْسًۢا بِغَيْرِ نَفْسٍ اَوْ فَسَادٍ فِی الْاَرْضِ فَكَاَنَّمَا قَتَلَ النَّاسَ جَمِيْعًا ؕ وَمَنْ اَحْيَاهَا فَكَاَنَّمَاۤ اَحْيَا

वत्लु अ़लैहिम् न–ब–अब्नय् आ–द–म बिल्हक़्क़ि इज् क़र्रबा क़ुरबानन् फतुक़ुब्बि–ल मिन् अ–ह़दिहिमा व लम् यु–त–क़ब्बल् मिनल् आ–ख़रि क़ा–ल ल–अक़्तुलन्न–क क़ा–ल इन्नमा य–त–क़ब्बलुल्लाहु मिनल् मुत्तक़ीन(27)लइम्–ब–सत्–त इलय्–य य–द–क लि–तक़्तु–लनी मा अनाबिबासितिंय्यदि–य इलै–क लि–अक़्तु–ल–क इन्नी अख़ा–फ़ुल्ला–ह रब्बल् आ–लमीन(28)इन्नी उरीदु अन् तबू–अ बि–इस्मी व इस्मि–क फ़–तकू–न मिन् अस्हा–बिन्नारि व ज़ालि–क जज़ा–उज़्– ज़ालिमीन(29) फ़–तव्व–अ़त् लहू नफ़्सुहू क़त्–ल अख़ीहि फ़–क़–त–लहू फ़–अस्ब–ह़मिनल्ख़ासिरीन (30)फ़–ब–अ़–स़ल्लाहु ग़ुराबंय्यब्ह़सु फ़िल्अर्ज़ि लियुरि–यहू कै–फ़ युवारी सौ–अ–त अख़ीहि क़ा–ल या वै–लता अ–अ़जज़्तु अन् अकू–न मिस्–ल हा–ज़ल्ग़ुराबि फ़–उवारि–य सौ–अ–त अख़ी फ़– अस्ब–ह़ मिनन्नादिमीन(31)मिन् अज्लि ज़ालि–क क–तब्ना अ़ला बनी इस्राई–ल अन्नहू मन् क़–त–ल नफ़्सम्–बिग़ैरि नफ़्सिन् औ फ़सादिन् फ़िल्अर्ज़ि फ़–क–अन्नमा क़–त–लन्ना–स जमीअ़न् व मन् अह्याहा फ़–क–अन्नमा अह्यन्ना–स

और उन्हें पढ़कर सुनाओ आदम के दो बेटों की सच्ची ख़बर (फ़ा79) जब दोनों ने एक एक नियाज़ पेश की तो एक की क़बूल हुई और दूसरे की न क़बूल हुई बोला क़सम है मैं तुझे क़त्ल कर दूंगा (फ़ा80) कहा अल्लाह उसी से क़बूल करता है जिसे डर है।(27) (फ़ा81) बेशक अगर तू अपना हाथ मुझ पर बढ़ाएगा कि मुझे क़त्ल करे तो मैं अपना हाथ तुझ पर न बढ़ाऊंगा कि तुझे क़त्ल करूं (फ़ा82) मैं अल्लाह से डरता हूं जो मालिक सारे जहान का।(28) मैं तो यह चाहता हूं कि मेरा (फ़ा83) और तेरा गुनाह (फ़ा84) दोनों तेरे ही पल्ले पड़े तो तू दोज़ख़ी हो जाये और बे इन्साफ़ों की यही सज़ा है।(29) तो उसके नफ़्स ने उसे भाई के क़त्ल का चाव दिलाया तो उसे क़त्ल कर दिया तो रह गया नक़सान में।(30)(फ़ा85) तो अल्लाह ने एक कौवा भेजा ज़मीन कुरेदता कि उसे दिखाये क्यों कर अपने भाई की लाश छुपाये (फ़ा86) बोला हाये ख़राबी मैं इस कौवे जैसा भी न हो सका कि मैं अपने भाई की लाश छुपाता, तो पछताता रह गया।(31)(फ़ा87) इस सबब से हमने बनी इसराईल पर लिख दिया कि जिसने कोई जान क़त्ल की बग़ैर जान के बदले या ज़मीन में फ़साद किये (फ़ा88) तो गोया उसने सब लोगों को

(फ़ा79) जिनका नाम हाबील और क़ाबील था इस ख़बर को सुनाने से मक़सद यह है कि हसद की बुराई मालूम हो और सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से हसद करने वालों को इससे सबक़ हासिल करने का मौक़ा मिले उलमाए सियर व अख़्बार का बयान है कि हज़रते हव्वा के हमल में एक लड़का एक लड़की पैदा होते थे और एक हमल के लड़के का दूसरे हमल की लड़की से निकाह किया जाता था और जबकि आदमी सिर्फ़ हज़रत आदम अ़लैहिस्सलाम की औलाद में मुन्हसिर थे तो मुनाकहत की और कोई सबील ही न थी इसी दस्तूर के मुताबिक़ हज़रत आदम अ़लैहिस्सलाम ने क़ाबील का निकाह लियूदा से जो हाबील के साथ पैदा हुई थी और हाबील का अक़लीमा से जो क़ाबील के साथ पैदा हुई थी करना चाहा क़ाबील इस पर राज़ी न हुआ और चूंकि अक़लीमा ज़्यादा ख़ूबसूरत थी इस लिए उसका तलबगार हुआ हज़रत आदम अ़लैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि वह तेरे साथ पैदा हुई लिहाज़ा तेरी बहन है उसके साथ तेरा निकाह हलाल नहीं कहने लगा यह तो आपकी राय है अल्लाह तआ़ला ने यह हुक्म नहीं दिया आपने फ़रमया तो तुम दोनों क़ुरबानियां लाओ जिसकी क़ुरबानी मक़बूल हो जाये वही अक़लीमा का हक़दार है उस ज़माना में जो क़ुरबानी मक़बूल होती थी आसमान से एक आग उतर कर उसको खा लिया करती थी क़ाबील ने एक अम्बार गन्दुम और हाबील ने एक बकरी क़ुरबानी के लिए पेश की आसमानी आग ने हाबील की क़ुरबानी को ले लिया और क़ाबील के गेहूं छोड़ गई इस पर क़ाबील के दिल में बहुत बुग़्ज़ व हसद पैदा हुआ (फ़ा80) जब हज़रत आदम **(बक़िया सफ़हा 203 पर)**

النَّاسَ جَمِيعًا ۚ وَلَقَدْ جَاءَتْهُمْ رُسُلُنَا بِالْبَيِّنَاتِ ثُمَّ إِنَّ كَثِيرًا مِّنْهُم بَعْدَ ذَٰلِكَ فِي الْأَرْضِ لَمُسْرِفُونَ ﴿٣٢﴾ إِنَّمَا جَزَاءُ الَّذِينَ يُحَارِبُونَ اللَّهَ
وَرَسُولَهُ وَيَسْعَوْنَ فِي الْأَرْضِ فَسَادًا أَن يُقَتَّلُوا أَوْ يُصَلَّبُوا أَوْ تُقَطَّعَ أَيْدِيهِمْ وَأَرْجُلُهُم مِّنْ خِلَافٍ أَوْ يُنفَوْا مِنَ الْأَرْضِ ۚ ذَٰلِكَ لَهُمْ خِزْيٌ
فِي الدُّنْيَا ۖ وَلَهُمْ فِي الْآخِرَةِ عَذَابٌ عَظِيمٌ ﴿٣٣﴾ إِلَّا الَّذِينَ تَابُوا مِن قَبْلِ أَن تَقْدِرُوا عَلَيْهِمْ ۖ فَاعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ﴿٣٤﴾ يَا أَيُّهَا
الَّذِينَ آمَنُوا اتَّقُوا اللَّهَ وَابْتَغُوا إِلَيْهِ الْوَسِيلَةَ وَجَاهِدُوا فِي سَبِيلِهِ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُونَ ﴿٣٥﴾ إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا لَوْ أَنَّ لَهُم مَّا فِي الْأَرْضِ جَمِيعًا
وَمِثْلَهُ مَعَهُ لِيَفْتَدُوا بِهِ مِنْ عَذَابِ يَوْمِ الْقِيَامَةِ مَا تُقُبِّلَ مِنْهُمْ ۖ وَلَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ﴿٣٦﴾ يُرِيدُونَ أَن يَخْرُجُوا مِنَ النَّارِ وَمَا هُم بِخَارِجِينَ مِنْهَا

जमीअन् व ल–कृद् जा–अत्हुम् रुसुलुना बिल्बय्यिनाति सुम्–म इन्–न कसीरम् मिन्हुम् बअ्–द ज़ालि–क फ़िल्अर्ज़ि लमुस्रिफ़ून(32)इन्नमा जज़ा–उल्लज़ी–न युहारिबूनल्ला–ह व रसू–लहू व यस्औ–न फ़िल्अर्ज़ि फ़सादन् अंय्युक़त्तलू औ युसल्लबू औ तुक़त्त–अ ऐदीहिम् व अर्–जुलुहुम् मिन् ख़िलाफ़िन् औ युन्फ़ौ मिनलअर्ज़ि ज़ालि–क लहुम् ख़िज़्युन् फ़िद्–दुन्या व लहुम् फ़ि–ल्आख़ि–रति अज़ाबुन् अज़ीम(33)इल्लल्लज़ी–न ताबू मिन् क़ब्लि अन् तक़्दिरू अलैहिम् फ़अ्–लमू अन्नल्ला–ह ग़फ़ूरुर्रहीम (34)या अय्युहल्लज़ी–न आमनुत्तक़ुल्ला–ह वब्–तग़ू इलैहिल् वसी–ल–त व जाहिदू फ़ी सबीलिही ल–अ़ल्लकुम् तुफ़्लिहू न(35)इन्नल्लज़ी–न क–फ़रू लौ अन्–न लहुम् मा फ़िल्अर्ज़ि जमीअंव्–व मिस्लहू म–अ़हू लि–यफ़्तदू बिही मिन् अज़ाबि यौमिल् क़िया–मति मा तुक़ुब्बि–ल मिन्हुम् व लहुम् अज़ाबुन् अलीम(36)युरीदू–न अंय्यख़्रुजू मिनन्नारि व मा हुम् बिख़ारिजी–न मिन्हा

क़त्ल किया (फ़ा89) और जिसने एक जान को जिला लिया (फ़ा90) उसने गोया सब लोगों को जिला लिया और बेशक उनके (फ़ा91) पास हमारे रसूल रौशन दलीलों के साथ आये (फ़ा92) फिर बेशक उनमें बहुत उसके बाद ज़मीन में ज़्यादती करने वाले हैं।(32) (फ़ा93) वह कि अल्लाह और उसके रसूल से लड़ते (फ़ा94) और मुल्क में फ़साद करते फिरते हैं उनका बदला यही है कि गिन गिन कर क़त्ल किये जायें या सूली दिये जायें या उनके एक तरफ़ के हाथ और दूसरी तरफ़ के पांव काटे जायें या ज़मीन से दूर कर दिये जायें। यह दुनिया में उनकी रुसवाई है और आख़िरत में उनके लिए बड़ा अज़ाब।(33) मगर वह जिन्होंने तौबा कर ली इससे पहले कि तुम उन पर क़ाबू पाओ (फ़ा95) तो जान लो कि अल्लाह बख़्शने वाला मेहरबान है।(34)(रुकूअ़ 9) ऐ ईमान वालो अल्लाह से डरो और उसकी तरफ़ वसीला ढूंढो (फ़ा96) और उसकी राह में जिहाद करो इस उम्मीद पर कि फ़लाह पाओ।(35) बेशक वह जो काफ़िर हुए जो कुछ ज़मीन में है सब और उसकी बराबर और अगर उनकी मिल्क हो कि उसे देकर क़ियामत के अज़ाब से अपनी जान छुड़ायें तो उनसे न लिया जाएगा और उनके लिए दुःख का अज़ाब है।(36) (फ़ा97) दोज़ख़ से निकलना चाहेंगे और वह उससे न निकलेंगे

(फ़ा89) क्योंकि उसने हक़ुल्लाह की रिआयत और हुदूदे शरीअ़त का पास न किया (फ़ा90) इस तरह कि क़त्ल होने या डूबने या जलने वग़ैरह असबाबे हलाकत से बचाया (फ़ा91) यानी बनी इसराईल के (फ़ा92) मोअ्जेज़ाते बाहिरात भी लाये और अहकाम व शराएअ् भी (फ़ा93) कि कुफ़्र व क़त्ल वग़ैरह का इरतेकाब करके हुदूद से तजावुज़ करते हैं (फ़ा94) अल्लाह तआला से लड़ना यही है कि उसके औलिया से अदावत करे जैसा कि हदीस शरीफ़ में वारिद हुआ इस आयत में क़ुत्ताअ़े तरीक़ यानी रहज़नों की सज़ा का बयान है। शाने नुज़ूलः सन् ६ हिजरी में उरैना के चन्द लोग मदीना तय्यबा में आकर इस्लाम लाये और बीमार हो गए उनके रंग ज़र्द हो गए पेट बढ़ गए हुज़ूर ने हुक्म दिया कि सदक़ा के ऊंटों का दूध और पेशाब मिलाकर पिया करें ऐसा करने से वह तन्दुरुस्त हो गए मगर तन्दुरुस्त होकर वह मुरतद होगए और पन्द्रह ऊंट लेकर वह अपने वतन को चलते हो गए सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने उनकी तलब में हज़रत यसार को भेजा उन लोगों ने उनके हाथ पांव काटे और ईज़ायें देते देते शहीद कर डाला फिर जब यह लोग हुज़ूर की ख़िदमत में गिरिफ़्तार करके हाज़िर किये गए तो उनके हक़ में यह आयत नाज़िल हुई। (तफ़सीर अहमदी) (फ़ा95) यानी गिरिफ़्तारी से क़बल तौबा कर लेने से वह अज़ाबे आख़िरत और क़ुतअ़े तरीक़ (रहज़नी) की हद से तो बच जायेंगे मगर माल की वापसी और क़िसास हक़्क़ुलअ़ेबाद है यह बाक़ी रहेगा। (अहमदी) (फ़ा96) जिस की बदौलत तुम्हें उसका क़ुर्ब हासिल हो (फ़ा97) यानी कुफ़्फ़ार के लिए अज़ाब लाज़िम है और उससे रिहाई पाने की कोई सबील नहीं।

وَلَهُمْ عَذَابٌ مُّقِيمٌ ۝ وَالسَّارِقُ وَالسَّارِقَةُ فَاقْطَعُوٓا اَيْدِيَهُمَا جَزَآءًۢ بِمَا كَسَبَا نَكَالًا مِّنَ اللّٰهِ ؕ وَاللّٰهُ عَزِيْزٌ حَكِيْمٌ ۝ فَمَنْ تَابَ مِنْۢ بَعْدِ
ظُلْمِهٖ وَاَصْلَحَ فَاِنَّ اللّٰهَ يَتُوْبُ عَلَيْهِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۝ اَلَمْ تَعْلَمْ اَنَّ اللّٰهَ لَهٗ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ يُعَذِّبُ مَنْ يَّشَآءُ وَيَغْفِرُ
لِمَنْ يَّشَآءُ ؕ وَاللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ۝ يٰٓاَيُّهَا الرَّسُوْلُ لَا يَحْزُنْكَ الَّذِيْنَ يُسَارِعُوْنَ فِي الْكُفْرِ مِنَ الَّذِيْنَ قَالُوْٓا اٰمَنَّا بِاَفْوَاهِهِمْ وَلَمْ تُؤْمِنْ
قُلُوْبُهُمْ ۛۚ وَمِنَ الَّذِيْنَ هَادُوْا ۛۚ سَمّٰعُوْنَ لِلْكَذِبِ سَمّٰعُوْنَ لِقَوْمٍ اٰخَرِيْنَ ۙ لَمْ يَاْتُوْكَ ؕ يُحَرِّفُوْنَ الْكَلِمَ مِنْۢ بَعْدِ مَوَاضِعِهٖ ۚ يَقُوْلُوْنَ
اِنْ اُوْتِيْتُمْ هٰذَا فَخُذُوْهُ وَاِنْ لَّمْ تُؤْتَوْهُ فَاحْذَرُوْا ؕ وَمَنْ يُّرِدِ اللّٰهُ فِتْنَتَهٗ فَلَنْ تَمْلِكَ لَهٗ مِنَ اللّٰهِ شَيْـًٔا ؕ اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ لَمْ يُرِدِ اللّٰهُ اَنْ يُّطَهِّرَ

व लहुम् अ़ज़ाबुम् मुक़ीम(37)वस्सारिक़ु वस्सारि–क़तु फ़क़्तअू ऐदि–यहुमा जज़ाअम् बिमा क–सबा नकालम् मिनल्लाहि वल्लाहु अ़ज़ीज़ुन् ह़कीम(38)फ़–मन् ता–ब मिम्बअ़्दि ज़ुल्मिही व अस्–ल–ह़ फ़–इन्नल्ला–ह यतूबु अ़लैहि इन्नल्ला–ह ग़फ़ूरुर्रह़ीम(39)अलम् तअ़्–लम् अनल्ला–ह लहू मुल्कुस्–समावाति वल्अर्ज़ि युअ़ज़्ज़िबु मंय्यशाउ व यग़्फ़िरु लि–मंय्यशाउ वल्लाहु अ़ला कुल्लि शैइन् क़दीर(40)या अय्युहर्रसूलु ला यह़्ज़ुन्कल्लज़ी–न युसारिअू–न फ़िल्कुफ़्रि मिनल्लज़ी–न क़ालू आमन्ना बि–अफ़्वाहिहिम् व लम् तुअ़्मिन् क़ुलूबुहुम् व मिनल्लज़ी–न हादू सम्माअू–न लिल्कज़िबि सम्माअू–न लिक़ौमिन् आ–ख़री–न लम् यअ्तू–क युह़र्रिफ़ूनल् कलि–म मिम्बअ़्दि मवाज़िअ़िही यक़ूलू–न इन् ऊतीतुम् हाज़ा फ़ख़ुज़ूहु व इल्लम् तुअ़्तौहु फ़ह़्ज़रू व मंय्युरि–दिल्लाहु फ़ित्–न–तहू फ़–लन् तम्लि–क लहू मिनल्लाहि शैअन् उलाइ कल्लज़ी–न लम् युरीदिल्लाहु अंय्युतह्हि–र

और उनको दवामी सज़ा है।(37) और जो मर्द या औरत चोर हो (फ़ा98) तो उनका हाथ काटो (फ़ा99) उनके किये का बदला अल्लाह की तरफ़ से सज़ा और अल्लाह ग़ालिब हिकमत वाला है।(38) तो जो अपने ज़ुल्म के बाद तौबा करे और सँवर जाये तो अल्लाह अपनी मेहर से उस पर रुजूअ़ फ़रमाएगा (फ़ा100) बेशक अल्लाह बख़्शने वाला मेहरबान है।(39) क्या तुझे मालूम नहीं कि अल्लाह के लिए है आसमानों और ज़मीन की बादशाही सज़ा देता है जिसे चाहे और बख़्शता है जिसे चाहे, और अल्लाह सब कुछ कर सकता है।(40) (फ़ा101) ऐ रसूल तुम्हें ग़मगीन न करें वह जो कुफ़्र पर दौड़ते हैं (फ़ा102) जो कुछ वह अपने मुंह से कहते हैं हम ईमान लाये और उनके दिल मुसलमान नहीं (फ़ा103) और कुछ यहूदी झूट ख़ूब सुनते हैं (फ़ा104) और लोगों की ख़ूब सुनते हैं (फ़ा105) जो तुम्हारे पास हाज़िर न हुए अल्लाह की बातों को उनके ठिकानों के बाद बदल देते हैं कहते हैं यह हुक्म तुम्हें मिले तो मानो और यह न मिले तो बचो (फ़ा106) और जिसे अल्लाह गुमराह करना चाहे तो हरगिज़ तू अल्लाह से उसका कुछ बना न सकेगा। वह है कि अल्लाह ने उनका दिल पाक करना

(फ़ा98) और उसकी चोरी दो मर्तबा के इक़रार या दो मर्दों की शहादत से हाकिम के सामने साबित हो और जो माल चुराया है वह दस दिरहम से कम का न हो (कमा फ़ी हदीसे इब्ने मसऊद) (फ़ा99) यानी दाहिना इस लिए कि हज़रत इब्ने मसऊद रज़ियल्लाहु अ़न्हु की क़िराअत में *ऐमा–नहुमा* आया है। मसलाः पहली मर्तबा की चोरी में दाहिना हाथ काटा जाएगा फिर दोबारा अगर करे तो बायां पांव उसके बाद भी अगर चोरी करे तो क़ैद किया जाये यहां तक कि तौबा करे। मसलाः चोर का हाथ काटना तो वाजिब है और माले मसरूक़ मौजूद हो तो उसका वापस करना भी वाजिब और अगर वह ज़ाया हो गया हो तो ज़िमान वाजिब नहीं। (तफ़सीर अहमदी) (फ़ा100) और अ़ज़ाबे आख़िरत से उसको नजात देगा। (फ़ा101) मसलाः इससे मालूम हुआ कि अ़ज़ाब करना और रहमत फ़रमाना अल्लाह तआ़ला की मशीयत पर है वह मालिक है जो चाहे करे किसी को मजाले एतेराज़ नहीं। इससे क़दरिया व मोअ़्तज़िला का इबताल हो गया जो मुतीअ़ पर रहमत और आ़सी पर अ़ज़ाब करना अल्लाह तआ़ला पर वाजिब कहते हैं (फ़ा102) अल्लाह तआ़ला सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को *या अय्युहर्रसूलु* के ख़िताबे इज़्ज़त के साथ मुख़ातब फ़रमाकर तस्कीन ख़ातिर फ़रमाता है कि ऐ हबीब मैं आपका नासिर व मुईन हूं मुनाफ़िक़ीन के कुफ़्र में जल्दी करने यानी उनके इज़हारे कुफ़्र और कुफ़्फ़ार के साथ दोस्ती व मुवालात कर लेने से आप रन्जीदा न हों (फ़ा103) यह उनके निफ़ाक़ का बयान है (फ़ा104) अपने सरदारों से और उनके इफ़्तेराओं को क़बूल करते हैं (फ़ा105) माशाअल्लाह हज़रत मुतर्जिम क़द्देस सिर्रुहू ने बहुत सही तर्जुमा फ़रमाया इस मक़ाम पर बाज़ मुतर्जिमीन व मुफ़स्सिरीन से लग़्ज़िश वाक़ेअ़ हुई कि उन्होंने *लिक़ौमिन्* के लाम को इल्लत का क़रार देकर आयत के माना यह बयान किये कि मुनाफ़िक़ीन व यहूद अपने सरदारों की झूटी बातें सुनते हैं आपकी बातें दूसरी क़ौम की ख़ातिर से कान धर कर सुनते हैं जिसके वह **(बक़िया सफ़हा 205 पर)**

قُلُوبُهُمْ لَهُمْ فِي الدُّنْيَا خِزْيٌ ۚ وَلَهُمْ فِي الْآخِرَةِ عَذَابٌ عَظِيمٌ ﴿٤١﴾ سَمَّاعُونَ لِلْكَذِبِ أَكَّالُونَ لِلسُّحْتِ ۚ فَإِنْ جَاءُوكَ فَاحْكُمْ بَيْنَهُمْ أَوْ أَعْرِضْ عَنْهُمْ ۖ وَإِنْ تُعْرِضْ عَنْهُمْ فَلَنْ يَضُرُّوكَ شَيْئًا ۖ وَإِنْ حَكَمْتَ فَاحْكُمْ بَيْنَهُمْ بِالْقِسْطِ ۚ إِنَّ اللَّهَ يُحِبُّ الْمُقْسِطِينَ ﴿٤٢﴾ وَكَيْفَ يُحَكِّمُونَكَ وَعِنْدَهُمُ التَّوْرَاةُ فِيهَا حُكْمُ اللَّهِ ثُمَّ يَتَوَلَّوْنَ مِنْ بَعْدِ ذَٰلِكَ ۚ وَمَا أُولَٰئِكَ بِالْمُؤْمِنِينَ ﴿٤٣﴾ إِنَّا أَنْزَلْنَا التَّوْرَاةَ فِيهَا هُدًى وَنُورٌ ۚ يَحْكُمُ بِهَا النَّبِيُّونَ الَّذِينَ أَسْلَمُوا لِلَّذِينَ هَادُوا وَالرَّبَّانِيُّونَ وَالْأَحْبَارُ بِمَا اسْتُحْفِظُوا مِنْ كِتَابِ اللَّهِ وَكَانُوا عَلَيْهِ شُهَدَاءَ ۚ فَلَا تَخْشَوُا النَّاسَ وَاخْشَوْنِ وَلَا تَشْتَرُوا بِآيَاتِي ثَمَنًا قَلِيلًا ۚ وَمَنْ لَمْ يَحْكُمْ بِمَا أَنْزَلَ اللَّهُ فَأُولَٰئِكَ هُمُ الْكَافِرُونَ ﴿٤٤﴾

क़ुलू–बुहुम् लहुम् फ़िद्दुन्या ख़िज़्युंव्–व लहुम् फ़िल् आख़ि–रति अज़ाबुन् अज़ीम(41)दसम्माऊ–न लिल्कज़िबि अक्कालू–न लिस्सुह्ति फ़इन् जाऊ–क फ़ह्कुम् बै–नहुम् औ अअ्रिज़् अ़न्हुम् व इन् तुअ्रिज़् अ़न्हुम् फ़–लंय्यज़ुर्रू–क शैअन् व इन् ह–कम्–त फ़ह्कुम् बै–नहुम् बिल्क़िस्ति इन्नल्ला–ह यु–हिब्बुल् मुक़्सितीन(42)व कै–फ युहक्किमू–न–क व अ़िन्दहुमुत्तौरातु फ़ीहा हुक्मुल्लाहि सुम्–म य–त–वल्लौ–न मिम्बअ्दि ज़ालि–क व मा उलाइ–क बिल्मुअ्–मिनीन(43)इन्ना अन्ज़ल्नत्तौरा–त फ़ीहा हुदंव्–व नूरुन् यह्कुमु बि–हन्नबिय्यूनल्लज़ी–न अस्लमू लिल्लज़ी–न हादू वर्रब्बानिय्यू–न वल्–अह्बारु बि–मस्तुह्फ़िज़ू मिन् किताबिल्लाहि व कानू अ़लैहि शु–हदा–अ फ़ला तख़्–शवुन्ना–स वख़्शौनि व ला तश्तरू बि–आयाती स–म–नन् क़लीलन् व मल्लम् यह्कुम् बिमा अन्ज़–लल्लाहु फ़–उलाइ–क हुमुल्काफ़िरून(44)

चाहा। उन्हें दुनिया में रुसवाई है और उन्हें आख़िरत में बड़ा अ़ज़ाब।(41) बड़े झूठ सुनने वाले बड़े हरामख़ोर (फ़ा107) तो अगर तुम्हारे हुज़ूर हाज़िर हों (फ़ा108) उनमें फ़ैसला फ़रमाओ, या उनसे मुंह फेर लो (फ़ा109) और अगर तुम उनसे मुंह फेर लोगे तो वह तुम्हारा कुछ न बिगाड़ेंगे (फ़ा110) और अगर उनमें फ़ैसला फ़रमाओ तो इंसाफ़ से फ़ैसला करो बेशक इन्साफ़ वाले अल्लाह को पसन्द हैं।(42) और वह तुमसे क्यों कर फ़ैसला चाहेंगे हालांकि उनके पास तौरेत है जिसमें अल्लाह का हुक्म मौजूद है।(फ़ा111) बईं–हमा उसी से मुंह फेरते हैं (फ़ा112) और वह ईमान लाने वाले नहीं।(43) (रुकूअ़ 10) बेशक हमने तौरेत उतारी उसमें हिदायत और नूर है। उसके मुताबिक़ यहूद को हुक्म देते थे, हमारे फ़रमांबरदार नबी और आलिम और फ़क़ीह कि उनसे किताबुल्लाह की हिफ़ाज़त चाही गई थी (फ़ा113) और वह उस पर गवाह थे तो (फ़ा114) लोगों से ख़ौफ़ न करो और मुझसे डरो और मेरी आयतों के बदले ज़लील क़ीमत न लो (फ़ा115) और जो अल्लाह के उतारे पर हुक्म न करे (फ़ा116) वही लोग काफ़िर हैं।(44)

(फ़ा107) यह यहूद के हुक्काम की शान में है जो रिशवतें लेकर हराम को हलाल करते और अहकामे शरअ़ को बदल देते थे मसलाः रिशवत का लेना देना दोनों हराम हैं हदीस शरीफ़ में रिशवत लेने देने वाले दोनों पर लानत आई है (फ़ा108) यानी अहले किताब (फ़ा109) सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को मुख़य्यिर फ़रमाया गया कि अहले किताब आपके पास कोई मुक़द्दमा लायें तो आप को इख़्तियार है फ़ैसला फ़रमायें या न फ़रमायें बाज़ मुफ़स्सिरीन का क़ौल है कि यह तख़्यीर आयत *व अनि–हकुम् बै–नहुम्* से मन्सूख़ हो गई। इमाम अहमद ने फ़रमाया कि इन आयतों में कुछ मनाफ़ात नहीं क्योंकि यह आयत मुफ़ीदे तख़्यीर है और आयत *व अनि–हकुम्* में कैफ़ियते हुक्म का बयान है। (ख़ाज़िन व मदारिक वग़ैरह) (फ़ा110) क्योंकि अल्लाह तआ़ला आपका निगहबान है (फ़ा111) कि ब्याहे मर्द और शौहरदार औरत के ज़िना की सज़ा रजम यानी संगसार करना है (फ़ा112) बावजूदेकि तौरेत पर ईमान लाने के मुद्दई भी हैं और उन्हें यह मालूम भी है कि तौरेत में रजम का हुक्म है उसको न मानना और आपकी नबुव्वत के मुन्किर होते हुए आपसे फ़ैसला चाहना निहायत तअ़ज्जुब की बात है (फ़ा113) कि उसको अपने सीनों में महफ़ूज़ रखें और उसके दर्स में मशग़ूल रहें ताकि वह किताब फ़रामोश न हो और उसके अहकाम ज़ाये न हों (ख़ाज़िन) मसलाः तौरेत के मुताबिक़ अम्बिया का हुक्म देना जो इस आयत में मज़कूर है इससे साबित होता है कि हम से पहली शरीअ़तों के जो अहकाम अल्लाह व रसूल ने बयान फ़रमाये हों और उनके हमें तर्क का हुक्म न दिया हो मन्सूख़ न किये गए हों वह हम पर लाज़िम होते हैं (जुमल व अबुस्सऊद) (फ़ा114) ऐ यहूदियो तुम सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की नअ़त व सिफ़त और रजम का हुक्म जो तौरेत में मज़कूर है उसके इज़्हार में। (फ़ा115) यानी अहकामे इलाहिया की तब्दील बहर सूरत ममनूअ़ है ख़्वाह लोगों के ख़ौफ़ और उनकी नाराज़ी के अन्देशा से हो या माल व जाह व रिशवत की तमअ़ से (फ़ा116) उसका मुन्किर होकर (*कमा क़ालहू इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा*)

وَكَتَبْنَا عَلَيْهِمْ فِيهَآ أَنَّ النَّفْسَ بِالنَّفْسِ وَالْعَيْنَ بِالْعَيْنِ وَالْأَنفَ بِالْأَنفِ وَالْأُذُنَ بِالْأُذُنِ وَالسِّنَّ بِالسِّنِّ وَالْجُرُوحَ قِصَاصٌ ۚ
فَمَن تَصَدَّقَ بِهِۦ فَهُوَ كَفَّارَةٌ لَّهُۥ ۚ وَمَن لَّمْ يَحْكُم بِمَآ أَنزَلَ ٱللَّهُ فَأُو۟لَٰٓئِكَ هُمُ ٱلظَّٰلِمُونَ ۝ وَقَفَّيْنَا عَلَىٰٓ ءَاثَٰرِهِم بِعِيسَى ٱبْنِ مَرْيَمَ مُصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيْهِ مِنَ ٱلتَّوْرَىٰةِ ۖ
وَءَاتَيْنَٰهُ ٱلْإِنجِيلَ فِيهِ هُدًى وَنُورٌ وَمُصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيْهِ مِنَ ٱلتَّوْرَىٰةِ وَهُدًى وَمَوْعِظَةً لِّلْمُتَّقِينَ ۝ وَلْيَحْكُمْ أَهْلُ ٱلْإِنجِيلِ بِمَآ أَنزَلَ
ٱللَّهُ فِيهِ ۚ وَمَن لَّمْ يَحْكُم بِمَآ أَنزَلَ ٱللَّهُ فَأُو۟لَٰٓئِكَ هُمُ ٱلْفَٰسِقُونَ ۝ وَأَنزَلْنَآ إِلَيْكَ ٱلْكِتَٰبَ بِٱلْحَقِّ مُصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيْهِ مِنَ ٱلْكِتَٰبِ
وَمُهَيْمِنًا عَلَيْهِ ۖ فَٱحْكُم بَيْنَهُم بِمَآ أَنزَلَ ٱللَّهُ ۖ وَلَا تَتَّبِعْ أَهْوَآءَهُمْ عَمَّا جَآءَكَ مِنَ ٱلْحَقِّ ۚ لِكُلٍّ جَعَلْنَا مِنكُمْ شِرْعَةً وَمِنْهَاجًا ۚ وَلَوْ شَآءَ ٱللَّهُ

व क–तब्ना अ़लैहिम् फ़ीहा अन्न–न्नफ़्–स बिन्नफ़्सि वल्औ़–न बिल्औ़नि वल्–अन्–फ़ बिल्–अन्फ़ि वल्–उजु–न बिल् उजुनि वस्सिन्–न बिस्सिन्नि वल्जुरू–ह़ क़िसासुन् फ़–मन् त–सद्–द–क़ बिही फ़हु–व कफ़्फ़ा–रतुल्लहू व मल्लम् यह्कुम् बिमा अन्–ज़–लल्लाहु फ़–उलाइ–क हुमुज़्ज़ालिमून(45)व क़फ़्फ़ैना अ़ला आसारिहिम् बि–ई़सब्नि मर्य–म मुसद्दि–क़ल्लिमा बै–न यदैहि मिनत्तौराति व आतैना–हुल् इन्जी–ल फ़ीहि हुदंव्–व नूरुंव्–व मुसद्दि–क़ल्लिमा बै–न यदैहि मिनत्तौराति व हुदंव् व मौअ़िज़–त–तल् लिल्मुत्तक़ीन(46)वल्–यह्कुम् अह्लुल्–इन्जीलि बिमा अन्ज़–लल्लाहु फ़ीहि व मल्लम् यह्कुम् बिमा अन्ज़–लल्लाहु फ़–उलाइ–क हुमुल्–फ़ासिक़ून(47)व अन्ज़ल्ना इलैकल् किता–ब बिल्ह़क़्क़ि मुसद्दि–क़ल्लिमा बै–न यदैहि मिनल् किताबि व मुहैमिनन् अ़लैहि फ़ह्कुम् बै–नहुम् बिमा अन्ज़–लल्लाहु व ला तत्तबिअ़् अह्वा–अहुम् अ़म्मा जाअ–क मिनल्–ह़क़्क़ि लिकुल्लिन् ज–अ़ल्ना मिन्कुम् शिरअ़–तंव्–व मिन्हाजन् व लौ शाअल्लाहु

और हमने तौरेत में उन पर वाजिब किया (फ़ा117) कि जान के बदले जान (फ़ा118) और आंख के बदले आंख और नाक के बदले नाक और कान के बदले कान और दांत के बदले दांत और ज़ख़्मों में बदला है (फ़ा119) फिर जो दिल की ख़ुशी से बदला करा दे तो वह उसका गुनाह उतार देगा (फ़ा120) और जो अल्लाह के उतारे पर हुक्म न करे तो वही लोग ज़ालिम हैं।(45) और हम उन नबियों के पीछे उनके निशाने क़दम पर ईसा इब्ने मरयम को लाये, तस्दीक़ करता हुआ तौरेत की जो इससे पहले थी (फ़ा121) और हमने उसे इन्जील अ़ता की जिसमें हिदायत और नूर है और तस्दीक़ फ़रमाती है तौरेत की कि इससे पहले थी और हिदायत (फ़ा122) और नसीहत परहेज़गारों को।(46) और चाहिये कि इन्जील वाले हुक्म करें उस पर जो अल्लाह ने उसमें उतारा (फ़ा123) और जो अल्लाह के उतारे पर हुक्म न करें तो वही लोग फ़ासिक़ है।(47) और ऐ महबूब हमने तुम्हारी तरफ़ सच्ची किताब उतारी अगली किताबों की तस्दीक़ फ़रमाती (फ़ा124) और उन पर मुहाफ़िज़ व गवाह तो उनमें फ़ैसला करो अल्लाह के उतारे से (फ़ा125) और ऐ सुनने वाले उनकी ख़्वाहिशों की पैरवी न करना अपने पास आया हुआ हक़ छोड़कर हमने तुम सबके लिए एक एक शरीअ़त और रास्ता रखा (फ़ा126) और अल्लाह चाहता तो

(फ़ा117) इस आयत में अगरचे यह बयान है कि तौरेत में यहूद पर क़िसास के यह अहकाम थे लेकिन चूंकि हमें उनके तर्क का हुक्म नहीं दिया गया इस लिए हम पर यह अहकाम लाज़िम रहेंगे क्योंकि शराएअ़ साबिक़ा के जो अहकाम ख़ुदा व रसूल के बयान से हम तक पहुंचे और मन्सूख़ न हुए हों वह हम पर लाज़िम हुआ करते हैं जैसा कि ऊपर की आयत से साबित हुआ (फ़ा118) यानी अगर किसी ने किसी को क़त्ल किया तो उसकी जान मक़तूल के बदले में माख़ूज़ होगी ख़्वाह वह मक़तूल मर्द हो या औरत आज़ाद हो या ग़ुलाम मुस्लिम हो या ज़िम्मी। शाने नुज़ूलः हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा से मरवी है कि मर्द को औरत के बदले क़त्ल न करते थे इस पर यह आयत नाज़िल हुई (मदारिक) (फ़ा119) यानी मुमासलत व मुसावात की रिआ़यत ज़रूरी है (फ़ा120) यानी जो क़ातिल या जिनायत करने वाला अपने जुर्म पर नादिम होकर वबाले मअ़्सियत से बचने के लिए बख़ुशी अपने ऊपर हुक्मे शरअ़ जारी कराये तो क़िसास उसके जुर्म का कफ़्फ़ारा हो जाएगा और आख़िरत में उस पर अ़ज़ाब न होगा (जलालैन व जुमल) बाज़ मुफ़स्सिरीन ने इसके माना यह बयान किये हैं कि जो साहिबे हक़ क़िसास को माफ़ करदे तो यह माफ़ी उसके लिए कफ़्फ़ारा है (मदारिक) तफ़सीर अहमदी में है यह तमाम क़िसास जब ही वाजिब होंगे कि साहबे हक़ माफ़ न करे और अगर वह माफ़ कर दे तो क़िसास साक़ित (फ़ा121) अहकामे तौरेत के बयान के बाद अहकामे इन्जील का ज़िक्र शुरू हुआ और बताया गया कि हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम तौरेत के मुसद्दिक़ थे कि वह मुनज़्ज़ल मिनल्लाह है और नस्ख़ से पहले उस पर अ़मल वाजिब था हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम की शरीअ़त में इसके बाज़ अहकाम मन्सूख़ हुए (फ़ा122) इस आयत में इन्जील के लिए लफ़्ज़ *हुदन* दो जगह इरशाद हुआ पहली जगह ज़लालत**(बक़िया सफ़हा 202 पर)**

لَجَعَلَكُمْ اُمَّةً وَّاحِدَةً وَّلٰكِنْ لِّيَبْلُوَكُمْ فِيْ مَآ اٰتٰىكُمْ فَاسْتَبِقُوا الْخَيْرٰتِ اِلَى اللّٰهِ مَرْجِعُكُمْ جَمِيْعًا فَيُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ فِيْهِ تَخْتَلِفُوْنَ ﴿۴۸﴾ وَاَنِ احْكُمْ
بَيْنَهُمْ بِمَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ وَلَا تَتَّبِعْ اَهْوَآءَهُمْ وَاحْذَرْهُمْ اَنْ يَّفْتِنُوْكَ عَنْ بَعْضِ مَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ اِلَيْكَ فَاِنْ تَوَلَّوْا فَاعْلَمْ اَنَّمَا يُرِيْدُ اللّٰهُ
اَنْ يُّصِيْبَهُمْ بِبَعْضِ ذُنُوْبِهِمْ وَاِنَّ كَثِيْرًا مِّنَ النَّاسِ لَفٰسِقُوْنَ ﴿۴۹﴾ اَفَحُكْمَ الْجَاهِلِيَّةِ يَبْغُوْنَ وَمَنْ اَحْسَنُ مِنَ اللّٰهِ حُكْمًا لِّقَوْمٍ يُّوْقِنُوْنَ ﴿۵۰﴾
يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَتَّخِذُوا الْيَهُوْدَ وَالنَّصٰرٰٓى اَوْلِيَآءَ بَعْضُهُمْ اَوْلِيَآءُ بَعْضٍ وَمَنْ يَّتَوَلَّهُمْ مِّنْكُمْ فَاِنَّهٗ مِنْهُمْ اِنَّ اللّٰهَ لَا يَهْدِى الْقَوْمَ
الظّٰلِمِيْنَ ﴿۵۱﴾ فَتَرَى الَّذِيْنَ فِيْ قُلُوْبِهِمْ مَّرَضٌ يُّسَارِعُوْنَ فِيْهِمْ يَقُوْلُوْنَ نَخْشٰٓى اَنْ تُصِيْبَنَا دَآئِرَةٌ فَعَسَى اللّٰهُ اَنْ يَّاْتِيَ بِالْفَتْحِ اَوْ اَمْرٍ

ल ज–अ–लकुम् उम्मतंव्वाहिदतंव्–व लाकिल्–लियब्लु–वकुम् फ़ी मा आताकुम् फ़स्तबिकुल्–ख़ैराति इलल्लाहि मर्जिअुकुम् जमीअन् फ़युनब्बिउकुम् बिमा कुन्तुम् फ़ीहि तख़्–तलिफ़ू न(48) व अनिह्कुम् बै–नहुम् बिमा अन्ज़–लल्लाहु व ला तत्तबिअ् अह्वा–अहुम् वह्ज़रहुम् अंय्यफ़्तिनू–क अम्बअ्ज़ि मा अन्ज़–लल्लाहु इलै–क फ़–इन् तवल्लौ फ़अ्–लम् अन्नमा युरीदुल्लाहु अंय्युसी–बहुम् बि–बअ्ज़ि ज़ुनूबिहिम् व इन्–न कसीरम् मिनन्नासि लफ़ासिकू न(49)अ–फ़–हुक्मल् जाहिलि–य्यति यब्ग़ू–न व मन् अह्सनु मिनल्लाहि हुक्मल्लि–क़ौमिंय्यूकिनून(50)या अय्युहल्लज़ी–न आ–मनू ला तत्तख़िज़ुल्–यहू–द वन्नसारा औलिया–अ बअ्ज़ुहुम् औलियाउ बअ्ज़िन् व मंय्य–त–वल्लहुम् मिन्–कुम् फ़–इन्नहू मिन्हुम् इन्नल्ला–ह ला यह्दिल् क़ौमज़् ज़ालिमीन(51)फ़–त–रल्लज़ी–न फ़ी कुलूबिहिम् म–रज़ुंय्युसारिअू–न फ़ीहिम् यकूलू–न नख़्शा अन् तुसी–बना दाइ–रतुन् फ़–अ–सल्लाहु अंय्यअ्ति–य बिल्फ़त्हि औ अम्रिम्

तुम सबको एक ही उम्मत कर देता मगर मंज़ूर यह है कि जो कुछ तुम्हें दिया उसमें तुम्हें आज़माये (फ़ा127) तो भलाइयों की तरफ़ सब्क़त चाहो, तुम सबका फ़िरना अल्लाह ही की तरफ़ है तो वह तुम्हें बता देगा जिस बात में तुम झगड़ते थे। (48) और यह कि ऐ मुसलमान अल्लाह के उतारे पर हुक्म कर और उनकी ख़्वाहिशों पर न चल और उनसे बचता रह कि कहीं तुझे लग़ज़िश न दे दें किसी हुक्म में जो तेरी तरफ़ उतरा फिर अगर वह मुंह फेरें (फ़ा128) तो जान लो कि अल्लाह उनके बाज़ गुनाहों की (फ़ा129) सज़ा उनको पहुंचाया चाहता है (फ़ा130) और बेशक बहुत आदमी बेहुक्म हैं।(49) तो क्या जाहिलियत का हुक्म चाहते हैं (फ़ा131) और अल्लाह से बेहतर किस का हुक्म यक़ीन वालों के लिए।(50) (रुकूअ़ ११)ऐ ईमान वालो यहूद व नसारा को दोस्त न बनाओ।(फ़ा132)वह आपस में एक दूसरे के दोस्त हैं (फ़ा133) और तुम में जो कोई उनसे दोस्ती रखेगा तो वह उन्हीं में से है (फ़ा134) बेशक अल्लाह बे इन्साफ़ों को राह नहीं देता।(51)(फ़ा135)अब तुम उन्हें देखोगे जिनके दिलों में आज़ार है(फ़ा136) कि यहूद व नसारा की तरफ़ दौड़ते हैं कहते हैं हम डरते हैं कि हम पर कोई गर्दिश आजाये (फ़ा137) तो नज़दीक है कि अल्लाह फ़तह लाये(फ़ा138)या अपनी तरफ़ से कोई हुक्म (फ़ा139)

(फ़ा127) और इम्तेहान में डाले ताकि ज़ाहिर हो जाये कि हर ज़माने के मुनासिब जो अहकाम दिये क्या तुम उन पर इस यक़ीन व ऐतक़ाद के साथ अमल करते हो कि उनका इख़्तिलाफ़ मशीयते इलाहिया के इक़्तेज़ा से हिकमते बालिग़ा और दुनियवी व उख़रवी मसालेहे नाफ़िआ़ पर मबनी है या हक़ को छोड़ कर हवाए नफ़्स का इत्तेबाअ़ करते हो (तफ़सीर अबुस्सऊद) (फ़ा128) अल्लाह के नाज़िल फ़रमाए हुए हुक्म से (फ़ा129) जिनमें यह एअ़राज़ भी है (फ़ा130) दुनिया में क़त्ल व गिरिफ़्तारी व जिला वतनी के साथ और तमाम गुनाहों की सज़ा आख़िरत में देगा (फ़ा131) जो सरासर गुमराही और ज़ुल्म और मुख़ालिफ़े अहकामे इलाही होता था। शाने नुज़ूलः बनी नुज़ैर और बनी क़ुरैज़ा यहूद के दो क़बीले थे उन में बाहम एक दूसरे का क़त्ल होता रहता था जब सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम मदीना तय्येबा में रौनक़ अफ़रोज़ हुए तो यह लोग अपना मुक़द्दमा हुज़ूर की ख़िदमत में लाये और बनी क़ुरैज़ा ने कहा कि बनी नुज़ैर हमारे भाई हैं हम वह एक जद्द की औलाद हैं एक दीन रखते हैं एक किताब (तौरेत) मानते हैं लेकिन अगर बनी नुज़ैर हम में से किसी को क़त्ल करें तो उसके ख़ून-बहा में हम सत्तर वस्क़ खजूरें देते हैं और अगर हम में से कोई उनके किसी आदमी को क़त्ल करे तो हम से उसके ख़ून-बहा में एक सौ चालीस वस्क़ लेते हैं आप इसका फ़ैसला फ़रमा दें हुज़ूर ने फ़रमाया मैं हुक्म देता हूं कि क़ुरैज़ी और नुज़ैरी का ख़ून बराबर है किसी को दूसरे पर फ़ज़ीलत नहीं इस पर बनी नुज़ैर बहुत बरहम हुए और कहने लगे कि हम आपके फ़ैसले से राज़ी (बक़िया सफ़हा 204 पर)

مِّنْ عِنْدِهٖ فَيُصْبِحُوْا عَلٰى مَآ اَسَرُّوْا فِيْٓ اَنْفُسِهِمْ نٰدِمِيْنَ ۝ وَيَقُوْلُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اَهٰٓؤُلَاۗءِ الَّذِيْنَ اَقْسَمُوْا بِاللّٰهِ جَهْدَ اَيْمَانِهِمْ ۙ اِنَّهُمْ لَمَعَكُمْ ۭ حَبِطَتْ اَعْمَالُهُمْ فَاَصْبَحُوْا خٰسِرِيْنَ ۝ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مَنْ يَّرْتَدَّ مِنْكُمْ عَنْ دِيْنِهٖ فَسَوْفَ يَاْتِي اللّٰهُ بِقَوْمٍ يُّحِبُّهُمْ وَيُحِبُّوْنَهٗٓ ۙ اَذِلَّةٍ عَلَي الْمُؤْمِنِيْنَ اَعِزَّةٍ عَلَي الْكٰفِرِيْنَ ۡ يُجَاهِدُوْنَ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَلَا يَخَافُوْنَ لَوْمَةَ لَاۗىِٕمٍ ۭ ذٰلِكَ فَضْلُ اللّٰهِ يُؤْتِيْهِ مَنْ يَّشَاۗءُ ۭ وَاللّٰهُ وَاسِعٌ عَلِيْمٌ ۝ اِنَّمَا وَلِيُّكُمُ اللّٰهُ وَرَسُوْلُهٗ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوا الَّذِيْنَ يُقِيْمُوْنَ الصَّلٰوةَ وَيُؤْتُوْنَ الزَّكٰوةَ وَهُمْ رٰكِعُوْنَ ۝ وَمَنْ يَّتَوَلَّ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا فَاِنَّ حِزْبَ اللّٰهِ هُمُ الْغٰلِبُوْنَ ۝

मिन् अिन्दिही फ़युस्बिहू अ़ला मा असर्रू फ़ी अन्फ़ुसिहिम् नादिमीन(52)व यक़ूलुल्लज़ी–न आ–मनू अ–हाउलाइल्लज़ी–न अक़्समू बिल्लाहि जह्–द ऐमानिहिम् इन्नहुम् ल–म–अकुम् हबितत् अअ्–मालुहुम् फ़–अस्बहू ख़ासिरीन(53)या अय्यु–हल्लज़ी–न आ–मनू मंय्यर्तद्–द मिन्कुम् अन् दीनिही फ़सौ–फ़ यअ्तिल्लाहु बिक़ौमिंय्युहिब्बुहुम् व युहिब्बू–नहू अज़िल्लतिन् अ़–लल्मुअ्–मिनी–न अ–अिज़्ज़तिन् अ़लल्–काफ़िरी–न युजाहिदू–न फ़ी सबीलिल्लाहि व ला यख़ाफ़ू–न लौ–म–त लआइमिन् ज़ालि–क फ़ज़्लुल्लाहि युअ्तीहि मंय्यशाउ वल्लाहु वासिअुन् अ़लीम(54)इन्नमा वलिय्युकुमुल्लाहु व रसूलुहू वल्लज़ी–न आ–मनुल्लज़ी–नयुक़ीमूनस्सला–त व युअ्तूनज़्ज़–का–त व हुम् राकिअून (55)व मंय्य–त–वल्लल्ला–ह व रसू–लहू वल्लज़ी–न आ–मनू फ़इन्–न हिज़्बल्लाहि हुमुल्ग़ालिबून(56)

फिर उस पर जो अपने दिलों में छुपाया था (फ़ा140) पछताते रह जायें।(52) और (फ़ा141) ईमान वाले कहते हैं क्या यही हैं जिन्होंने अल्लाह की क़सम खाई थी अपने हलफ़ में पूरी कोशिश से कि वह तुम्हारे साथ हैं उनका किया धरा सब अकारत गया तो रह गये नक़सान में।(53) (फ़ा142) ऐ ईमान वालो तुम में जो कोई अपने दीन से फिरेगा (फ़ा143) तो अ़नक़रीब अल्लाह ऐसे लोग लाएगा कि वह अल्लाह के प्यारे और अल्लाह उनका प्यारा मुसलमानों पर नर्म और काफ़िरों पर सख़्त अल्लाह की राह में लड़ेंगे और किसी मलामत करने वाले की मलामत का अन्देशा न करेंगे (फ़ा144) यह अल्लाह का फ़ज़्ल है जिसे चाहे दे और अल्लाह वुसअ़त वाला इल्म वाला है।(54) तुम्हारे दोस्त नहीं मगर अल्लाह और उसका रसूल और ईमान वाले (फ़ा145) कि नमाज़ क़ाइम करते हैं और ज़कात देते हैं और अल्लाह के हुज़ूर झुके हुए हैं।(55) (फ़ा146) और जो अल्लाह और उसके रसूल और मुसलमानों को अपना दोस्त बनाये तो बेशक अल्लाह ही का गरोह ग़ालिब है।(56) (रुकूअ़ 12)

(फ़ा140) यानी निफ़ाक़ या मुनाफ़िक़ीन का यह ख़्याल कि सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम कुफ़्फ़ार के मुक़ाबले में कामयाब न होंगे (फ़ा141) मुनाफ़िक़ीन का पर्दा खुलने पर (फ़ा142) कि दुनिया में ज़लील व रुसवा हुए और आख़िरत में अज़ाबे दाइमी के सज़ावार (फ़ा143) कुफ़्फ़ार के साथ दोस्ती व मुवालात बेदीनी व इरतेदाद की मुस्तदई है इसकी मुमानअ़त के बाद मुरतदीन का ज़िक्र फ़रमाया और मुरतद होने से क़बल लोगों के मुरतद होने की ख़बर दी चुनांचे यह ख़बर सादिक़ हुई और बहुत लोग मुरतद हुए (फ़ा144) यह सिफ़त जिनकी है वह कौन हैं इसमें कई क़ौल हैं हज़रत अली मुर्तज़ा व हसन व क़तादा ने कहा कि यह लोग हज़तर अबू बकर सिद्दीक़ और उनके असहाब हैं जिन्होंने नबीए करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के बाद मुरतद होने और ज़कात से मुन्किर होने वालों पर जिहाद किया अयाज़ बिन ग़नम अशअ़री से मरवी है कि जब यह आयत नाज़िल हुई सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने हज़रत अबू मूसा अशअ़री की निस्बत फ़रमाया कि यह उनकी क़ौम है। एक क़ौल यह है कि यह लोग अहले यमन हैं जिनकी तारीफ़ बुख़ारी व मुस्लिम की हदीसों में आई है। सुद्दी का क़ौल है कि यह लोग अंसार हैं जिन्होंने रसूले करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की ख़िदमत की और इन अक़वाल में कुछ मुनाफ़ात नहीं क्योंकि इन सब हज़रात का इन सिफ़ात के साथ मुत्तसिफ़ होना सही है (फ़ा145) जिनके साथ मुवालात हराम है उनका ज़िक्र फ़रमाने के बाद उनका बयान फ़रमाया जिनके साथ मुवालात वाजिब है शाने नुज़ूल हज़रत जाबिर रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने फ़रमाया कि यह आयत हज़रत अब्दुल्लाह बिन सलाम के हक़ में नाज़िल हुई उन्होंने सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर होकर अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह हमारी क़ौम क़ुरैज़ा और नुज़ैर ने हमें छोड़ दिया और क़समें खा लीं कि वह हमारे साथ मुजालसत (हमनशीनी) न करेंगे इस पर यह आयत नाज़िल हुई तो अ़ब्दुल्लाह बिन सलाम ने कहा हम राज़ी हैं अल्लाह के रब होने पर उसके रसूल के नबी होने पर मोमिनीन के दोस्त होने पर और हुक्म आयत का तमाम मोमिनीन के लिए आम है। सब एक दूसरे के दोस्त और मुहिब हैं। (फ़ा146) जुमला व हुम् राकिऊन दो वजह रखता है एक (बक़िया सफ़हा 205 पर)

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَتَّخِذُوا الَّذِينَ اتَّخَذُوا دِينَكُمْ هُزُوًا وَلَعِبًا مِّنَ الَّذِينَ أُوتُوا الْكِتَابَ مِن قَبْلِكُمْ وَالْكُفَّارَ أَوْلِيَاءَ ۚ وَاتَّقُوا اللَّهَ إِن كُنتُم
مُّؤْمِنِينَ ﴿٥٧﴾ وَإِذَا نَادَيْتُمْ إِلَى الصَّلَاةِ اتَّخَذُوهَا هُزُوًا وَلَعِبًا ۚ ذَٰلِكَ بِأَنَّهُمْ قَوْمٌ لَّا يَعْقِلُونَ ﴿٥٨﴾ قُلْ يَا أَهْلَ الْكِتَابِ هَلْ تَنقِمُونَ مِنَّا إِلَّا
أَنْ آمَنَّا بِاللَّهِ وَمَا أُنزِلَ إِلَيْنَا وَمَا أُنزِلَ مِن قَبْلُ وَأَنَّ أَكْثَرَكُمْ فَاسِقُونَ ﴿٥٩﴾ قُلْ هَلْ أُنَبِّئُكُم بِشَرٍّ مِّن ذَٰلِكَ مَثُوبَةً عِندَ اللَّهِ ۚ
مَن لَّعَنَهُ اللَّهُ وَغَضِبَ عَلَيْهِ وَجَعَلَ مِنْهُمُ الْقِرَدَةَ وَالْخَنَازِيرَ وَعَبَدَ الطَّاغُوتَ ۚ أُولَٰئِكَ شَرٌّ مَّكَانًا وَأَضَلُّ عَن سَوَاءِ السَّبِيلِ ﴿٦٠﴾
وَإِذَا جَاءُوكُمْ قَالُوا آمَنَّا وَقَد دَّخَلُوا بِالْكُفْرِ وَهُمْ قَدْ خَرَجُوا بِهِ ۚ وَاللَّهُ أَعْلَمُ بِمَا كَانُوا يَكْتُمُونَ ﴿٦١﴾ وَتَرَىٰ كَثِيرًا مِّنْهُمْ يُسَارِعُونَ فِي الْإِثْمِ

या अय्युहल्लज़ी–न आ–मनू ला तत्तख़िज़ुल् लजीनत्तख़जू दी–नकुम् हुज़ुवंव्–व लअ़िबम् मिनल्लज़ी–न ऊतुल् किता–ब मिन् क़ब्लिकुम् वल्कुफ़्फ़ा–र औलिया–अ वत्त–कुल्ला–ह इन् कुन्तुम् मुअ्मिनीन(57)व इज़ा नादैतुम् इलस्सलातित् त–ख़ज़ूहा हुज़ुवंव्–व लअ़िबन् ज़ालि–क बि–अन्नहुम् क़ौमुल् ला यअ़्कि–लून(58)क़ुल् या अह्लल्किताबि हल् तन्क़िमू–न मिन्ना इल्ला अन् आमन्ना बिल्लाहि व मा उन्ज़ि–ल इलैना व मा उन्ज़ि–ल मिन् क़ब्लु व अन्–न अक्स़–रकुम् फ़ासिक़ून(59)क़ुल् हल् उनब्बिउकुम् बि–शर्रिम् मिन् ज़ालि–क मसू–ब–तन् अ़िन्दल्लाहि मल्ल–अ़–न–हुल्लाहु व ग़ज़ि–ब अ़लैहि व ज–अ़–ल मिन्हुमुल्–क़ि–र–द–त वल्ख़ना–ज़ी–र व अ़–ब–दत्तागू–त उलाइ–क शर्रुम् मकानंव्–व अज़ल्लु अ़न् सवाइस्सबील(60)व इज़ा जाऊकुम् क़ालू आमन्ना व क़द्–द–ख़लू बिल्कुफ़्रि व हुम् क़द् ख़–रजू बिही वल्लाहु अअ़्–लमु बिमा कानू यक्तुमून(61)व तरा कस़ीरम् मिन्हुम् युसारिअू–न फ़िल्इस्मि

ऐ ईमान वालो जिन्होंने तुम्हारे दीन को हंसी खेल बना लिया है (फ़ा147) वह जो तुम से पहले किताब दिये गए और काफ़िर (फ़ा148) उनमें किसी को अपना दोस्त न बनाओ और अल्लाह से डरते रहो अगर ईमान रखते हो।(57) (फ़ा149) और जब तुम नमाज़ के लिये अज़ान दो तो उसे हंसी खेल बनाते हैं (फ़ा150) यह इस लिए कि वह निरे बे अ़क्ल लोग हैं।(58) (फ़ा151) तुम फ़रमाओ ऐ किताबियो तुम्हें हमारा क्या बुरा लगा यही ना कि हम ईमान लाये अल्लाह पर और उस पर जो हमारी तरफ़ उतरा और उस पर जो पहले उतरा (फ़ा152) और यह कि तुम में अक्सर बे हुक्म हैं।(59) तुम फ़रमाओ क्या मैं बता दूं जो अल्लाह के यहां उससे बदतर दर्जे में हैं (फ़ा153) वह जिन पर अल्लाह ने लानत की और उन पर ग़ज़ब फ़रमाया और उनमें से कर दिये बन्दर और सुअर (फ़ा154) और शैतान के पुजारी उनका ठिकाना ज़्यादा बुरा है (फ़ा155) और यह ९सीधी राह से ज़्यादा बहके।(60) और जब तुम्हारे पास आयें (फ़ा156) तो कहते हैं हम मुसलमान हैं और वह आते वक़्त भी काफ़िर थे और जाते वक़्त भी काफ़िर और अल्लाह ख़ूब जानता है जो छुपा रहे हैं।(61) और उन (फ़ा157) में तुम बहुतों को देखोगे कि गुनाह

(फ़ा147) **शाने नुज़ूलः** रूफ़ाआ़ बिन ज़ैद और सुवैद बिन हारिस दोनों इज़हारे इस्लाम के बाद मुनाफ़िक़ हो गए बाज़ मुसलमान उन से मुहब्बत रखते थे अल्लाह तआ़ला ने यह आयत नाज़िल फ़रमाई और बताया कि ज़बान से इस्लाम का इज़हार करना और दिल में कुफ़्र छुपाये रखना दीन को हंसी और खेल बनाना है (फ़ा148) यानी बुत परस्त मुशरिक जो अहले किताब से भी बद तर हैं (ख़ाज़िन) (फ़ा149) क्योंकि ख़ुदा के दुश्मनों से दोस्ती करना ईमानदार का काम नहीं (फ़ा150) **शाने नुज़ूलः** कलबी का क़ौल है कि जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम का मुअज़्ज़िन नमाज़ के लिए अज़ान कहता और मुसलमान उठते तो यहूद हंसते और तमस्ख़ुर करते इस पर यह आयत नाज़िल हुई सुद्दी का क़ौल है कि मदीना तय्येबा में जब मुअज़्ज़िन अज़ान में अश्हदु अंल् ला इला–ह इल्लल्लाह और अश्–हदु अन्–न मुहम्मदर् रसूलुल्लाह कहता तो एक नसरानी यह कहा करता कि जल जाये झूठा एक शब उसका ख़ादिम आग लाया वह और उसके घर के लोग सो रहे थे आग से एक शरारा उड़ा और वह नसरानी और उसके घर के लोग और तमाम घर जल गया (फ़ा151) जो ऐसे सफ़ीहाना और जाहिलाना हरकात करते हैं इस आयत से मालूम हुआ कि अज़ान नस्से .क़ुरआनी से भी साबित है (फ़ा152) **शाने नुज़ूलः** यहूद की एक जमाअ़त ने सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से दरियाफ़्त किया कि आप अम्बिया में से किस किस को मानते हैं इस सवाल से उनका मतलब यह था कि अगर आप ईसा अ़लैहिस्सलाम को न मानें तो वह आप पर ईमान ले आयें लेकिन **(बक़िया सफ़हा 206 पर)**

وَالْعُدْوَانِ وَاَكْلِهِمُ السُّحْتَ ۭ لَبِئْسَ مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿۶۲﴾ لَوْلَا يَنْهٰىهُمُ الرَّبّٰنِيُّوْنَ وَالْاَحْبَارُ عَنْ قَوْلِهِمُ الْاِثْمَ وَاَكْلِهِمُ السُّحْتَ ۭ لَبِئْسَ مَا
كَانُوْا يَصْنَعُوْنَ ﴿۶۳﴾ وَقَالَتِ الْيَهُوْدُ يَدُ اللّٰهِ مَغْلُوْلَةٌ ۭ غُلَّتْ اَيْدِيْهِمْ وَلُعِنُوْا بِمَا قَالُوْا ۘ بَلْ يَدٰهُ مَبْسُوْطَتٰنِ ۙ يُنْفِقُ كَيْفَ يَشَاۗءُ ۭ وَلَيَزِيْدَنَّ كَثِيْرًا مِّنْهُمْ مَّآ
اُنْزِلَ اِلَيْكَ مِنْ رَّبِّكَ طُغْيَانًا وَّكُفْرًا ۭ وَاَلْقَيْنَا بَيْنَهُمُ الْعَدَاوَةَ وَالْبَغْضَاۗءَ اِلٰى يَوْمِ الْقِيٰمَةِ ۭ كُلَّمَآ اَوْقَدُوْا نَارًا لِّلْحَرْبِ اَطْفَاَهَا اللّٰهُ ۙ وَيَسْعَوْنَ
فِي الْاَرْضِ فَسَادًا ۭ وَاللّٰهُ لَا يُحِبُّ الْمُفْسِدِيْنَ ﴿۶۴﴾ وَلَوْ اَنَّ اَهْلَ الْكِتٰبِ اٰمَنُوْا وَاتَّقَوْا لَكَفَّرْنَا عَنْهُمْ سَيِّاٰتِهِمْ وَلَاَدْخَلْنٰهُمْ جَنّٰتِ النَّعِيْمِ ﴿۶۵﴾ وَلَوْ اَنَّهُمْ
اَقَامُوا التَّوْرٰىةَ وَالْاِنْجِيْلَ وَمَآ اُنْزِلَ اِلَيْهِمْ مِّنْ رَّبِّهِمْ لَاَكَلُوْا مِنْ فَوْقِهِمْ وَمِنْ تَحْتِ اَرْجُلِهِمْ ۭ مِنْهُمْ اُمَّةٌ مُّقْتَصِدَةٌ ۭ وَكَثِيْرٌ مِّنْهُمْ سَاۗءَ مَا يَعْمَلُوْنَ ﴿۶۶﴾

वल्‌अुद्‌वानि व अक्‌लिहिमुस्सुह्‌—त लबिअ्—स मा कानू यअ्—मलून(62)लौला यन्हाहुमुर्‌—रब्बानिय्यू—न वल्—अह्‌बारु अ़न् क़ौलिहिमुल् इस्—म व अक्‌लिहिमुस्सुह्—त लबिअ्—स मा कानू यस्नअ़ून(63) व क़ा—लतिल्‌यहूदु यदुल्लाहि मग़्लू—लतुन् गुल्लत् ऐदीहिम् व लुअ़िनू बिमा क़ालू बल् यदाहु मब्सू—ततानि युन्फ़िक़ु कै—फ़ यशाउ व—ल—यज़ीदन्—न कसीरम् मिन्हुम् मा उन्ज़ि—ल इलै—क मिर्रब्बि—क तुग़्यानंव्—व कुफ़्रन् व अल्क़ैना बै—नहुमुल् अ़दा—व—त वल्बग़्ज़ा—अ इला यौमिल् क़िया—मति कुल्लमा औ—क़दू नारल् लिल्‌हर्बि अत्फ़—अ हल्लाहु व यस्औ—न फ़िल्‌अर्ज़ि फ़सा—दन् वल्लाहु ला युहिब्बुल् मुफ़्सिदीन(64)व लौ अन्—न अह्‌लल्‌किताबि आ—मनू वत्तक़ौ ल—कफ़्फ़र्ना अ़न्हुम् सय्यिआतिहिम् व ल—अद्—ख़ल्लाहम् जन्नातिन् नअ़ीम(65)व लौ अन्नहुम् अक़ामुत्तौरा—त वल्—इन्जी—ल व मा उन्ज़ि—ल इलैहिम् मिर्रब्बिहिम् ल—अ—कलू मिन् फ़ौक़िहिम् व मिन् तह्‌ति अर्जुलिहिम् मिन्हुम् उम्मतुम् मुक़्तसि—दतुन् व कसीरुम्—मिन्हुम् सा—अ मा यअ्—मलून(66)

और ज़्यादती और हरामख़ोरी पर दौड़ते हैं (फ़ा158) बेशक बहुत ही बुरे काम करते हैं।(62) उन्हें क्यों नहीं मना करते उनके पादरी और दर्वेश गुनाह की बात कहने और हराम खाने से बेशक बहुत ही बुरे काम कर रहे हैं।(63) (फ़ा159) और यहूदी बोले अल्लाह का हाथ बंधा हुआ है (फ़ा160) उन्हीं के हाथ बांधे जायें (फ़ा161) और उन पर इस कहने से लानत है बल्कि उसके हाथ कुशादा हैं (फ़ा162) अ़ता फ़रमाता है जैसे चाहे (फ़ा163) और ऐ महबूब यह (फ़ा164) जो तुम्हारी तरफ़ तुम्हारे रब के पास से उतरा उस से उन में बहुतों को शरारत और कुफ़्र में तरक़्क़ी होगी (फ़ा165) और उनमें हमने क़ियामत तक आपस में दुश्मनी और बैर डाल दिया (फ़ा166) जब कभी लड़ाई की आग भड़काते हैं अल्लाह उसे बुझा देता है (फ़ा167) और ज़मीन में फ़साद के लिए दौड़ते फिरते हैं और अल्लाह फ़सादियों को नहीं चाहता।(64) और अगर किताब वाले ईमान लाते और परहेज़गारी करते तो ज़रूर हम उनके गुनाह उतार देते और ज़रूर उन्हें चैन के बाग़ों में ले जाते।(65) और अगर क़ाइम रखते तौरेत और इन्जील (फ़ा168) और जो कुछ उनकी तरफ़ उनके रब की तरफ़ से उतरा (फ़ा169) तो उन्हें रिज़्क़ मिलता ऊपर से और उनके पांव के नीचे से (फ़ा170) उनमें कोई गरोह अगर एतेदाल पर है (फ़ा171) और उनमें अक्सर बहुत ही बुरे काम कर रहे हैं।(66) (फ़ा172) (रुकूअ़ 13)

(फ़ा158) गुनाह हर मअ़सियत व नाफ़रमानी को शामिल है बाज़ मुफ़स्सिरीन का क़ौल है कि गुनाह से तौरेत के मज़ामीन छुपाना और उसमें सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के जो महासिन व औसाफ़ हैं उनका मख़फ़ी रखना और उदवान यानी ज़्यादती से तौरेत के अन्दर अपनी तरफ़ से कुछ बढ़ा देना और हराम ख़ोरी से रिशवतें वग़ैरह मुराद हैं। (ख़ाज़िन) (फ़ा159) कि लोगों को गुनाहों और बुरे कामों से नहीं रोकते। मसलाः इससे मालूम हुआ कि उलमा पर नसीहत और बदी से रोकना वाजिब है और जो शख़्स बुरी बात से मना करने को तर्क करे और नही मुनकर से बाज़ रहे वह बमन्ज़िला मुर्तकिबे गुनाह के है (फ़ा160) यानी मआ़ज़ल्लाह वह बख़ील है। शाने नुज़ूलः हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा ने फ़रमाया कि यहूद बहुत ख़ुशहाल और निहायत दौलतमन्द थे जब उन्होंने सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की तकज़ीब व मुख़ालफ़त की तो उनकी रोज़ी कम हो गई उस वक़्त फ़ख़ास यहूदी ने कहा कि अल्लाह का हाथ बंधा है यानी मआ़ज़ल्लाह वह रिज़्क़ देने और ख़र्च करने मे बुख़्ल करता है उसके इस क़ौल पर किसी यहूदी ने मना न किया बल्कि राज़ी रहे इसी लिये यह सब का मक़ूला क़रार दिया गया और यह आयत उनके हक़ में नाज़िल हुई। (फ़ा161) तंगी और दाद-देहिश से इस इरशाद का यह असर हुआ कि यहूद दुनिया में सबसे ज़्यादा बख़ील हो गए या यह माना हैं कि उनके हाथ जहन्नम में **(बक़िया सफ़हा 206 पर)**

يٰۤاَيُّهَا الرَّسُوْلُ بَلِّغْ مَاۤ اُنْزِلَ اِلَيْكَ مِنْ رَّبِّكَ ؕ وَاِنْ لَّمْ تَفْعَلْ فَمَا بَلَّغْتَ رِسَالَتَهٗ ؕ وَاللّٰهُ يَعْصِمُكَ مِنَ النَّاسِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَا يَهْدِى الْقَوْمَ الْكٰفِرِيْنَ ﴿۶۷﴾

قُلْ يٰۤاَهْلَ الْكِتٰبِ لَسْتُمْ عَلٰى شَىْءٍ حَتّٰى تُقِيْمُوا التَّوْرٰىةَ وَالْاِنْجِيْلَ وَمَاۤ اُنْزِلَ اِلَيْكُمْ مِّنْ رَّبِّكُمْ ؕ وَلَيَزِيْدَنَّ كَثِيْرًا مِّنْهُمْ مَّاۤ اُنْزِلَ اِلَيْكَ مِنْ رَّبِّكَ

طُغْيَانًا وَّكُفْرًا ۚ فَلَا تَاْسَ عَلَى الْقَوْمِ الْكٰفِرِيْنَ ﴿۶۸﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَالَّذِيْنَ هَادُوْا وَالصّٰبِـُٔوْنَ وَالنَّصٰرٰى مَنْ اٰمَنَ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ

وَعَمِلَ صَالِحًا فَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ ﴿۶۹﴾ لَقَدْ اَخَذْنَا مِيْثَاقَ بَنِىْۤ اِسْرَآءِيْلَ وَاَرْسَلْنَاۤ اِلَيْهِمْ رُسُلًا ؕ كُلَّمَا جَآءَهُمْ رَسُوْلٌۢ بِمَا لَا تَهْوٰۤى اَنْفُسُهُمْ ۙ

فَرِيْقًا كَذَّبُوْا وَفَرِيْقًا يَّقْتُلُوْنَ ﴿۷۰﴾ وَحَسِبُوْۤا اَلَّا تَكُوْنَ فِتْنَةٌ فَعَمُوْا وَصَمُّوْا ثُمَّ تَابَ اللّٰهُ عَلَيْهِمْ ثُمَّ عَمُوْا وَصَمُّوْا كَثِيْرٌ مِّنْهُمْ ؕ وَاللّٰهُ بَصِيْرٌۢ بِمَا يَعْمَلُوْنَ ﴿۷۱﴾

या अय्युहर्रसूलु बल्लिग़ मा उन्ज़ि–ल इलै–क मिर्रब्बि–क व इल्लम् तफ़् अल् फ़मा बल्लग्–त रिसा–ल–तहू वल्लाहु यअ्सिमु–क मिनन्नासि इन्नल्ला–ह ला यह्दिल्–क़ौमल् काफ़िरीन(67) क़ुल् या अह्लल् किताबि लस्तुम् अ़ला शैइन् ह़त्ता तुक़ीमुत्तौरा–त वल्इन्जी–ल व मा उन्ज़ि–ल इलैकुम् मिर्रब्बिकुम् व ल–यज़ीदन्–न कसीरम् मिन्हुम् मा उन्ज़ि–ल इलै–क मिर्रब्बि–क तुग़्यानंव्–व कुफ़्रन् फ़ला तअ्–स अ़लल् क़ौमिल् काफ़िरीन(68)इन्नल्लज़ी–न आ–मनू वल्लज़ी–न हादू वस्साबिऊ–न वन्नसारा मन् आ–म–न बिल्लाहि वल्यौमिल् आख़िरि व अ़मि–ल सालिहन् फ़ला ख़ौफ़ुन् अ़लैहिम् व ला हुम यह्ज़नून(69)ल–क़द् अ–ख़ज़्ना मीसा–क़ बनी इस्राई–ल व अर्सल्ना इलैहिम् रुसुलन् कुल्लमा जा–अहुम् रसूलुम् बिमा ला तह्वा अन्फ़ुसुहुम् फ़रीक़न् कज्जबू व फ़रीक़ंय्–यक़्तुलून(70)व ह़सिबू अल्ला तकू–न फ़ित्–नतुन् फ़–अमू व सम्मू सुम्–म ताबल्लाहु अ़लैहिम् सुम्–म अ़मू व सम्मू कसीरुम् मिन्हुम् वल्लाहु बसीरुम् बिमा यअ्मलून(71)

ऐ रसूल पहुंचा दो जो कुछ उतरा तुम्हें तुम्हारे रब की तरफ़ से (फ़ा173) और ऐसा न हो तो तुमने उसका कोई पयाम न पहुंचाया और अल्लाह तुम्हारी निगहबानी करेगा लोगों से (फ़ा174) बेशक अल्लाह काफ़िरों को राह नहीं देता।(67) तुम फ़रमा दो ऐ किताबियो तुम कुछ भी नहीं हो (फ़ा175) जब तक न क़ाइम करो तौरेत और इन्जील और जो कुछ तुम्हारी तरफ़ तुम्हारे रब के पास से उतरा (फ़ा176) और बेशक ऐ महबूब वह जो तुम्हारी तरफ़ तुम्हारे रब के पास से उतरा उससे उनमें बहुतों को शरारत और कुफ़्र की और तरक़्क़ी होगी (फ़ा177) तो तुम काफ़िरों का कुछ ग़म न खाओ।(68) बेशक वह जो अपने आप को मुसलमान कहते हैं (फ़ा178) और इसी तरह यहूदी और सितारा परस्त और नसरानी उनमें जो कोई सच्चे दिल से अल्लाह और क़ियामत पर ईमान लाये और अच्छे काम करे तो उन पर न कुछ अन्देशा है और न कुछ ग़म।(69) बेशक हमने बनी इसराईल से अहद लिया (फ़ा179) और उनकी तरफ़ रसूल भेजे जब कभी उनके पास कोई रसूल वह बात लेकर आया जो उनके नफ़्स की ख़्वाहिश न थी (फ़ा180) एक गरोह को झुटलाया और एक गरोह को शहीद करते हैं।(70) (फ़ा181) और इस गुमान में रहे कि कोई सज़ा न होगी (फ़ा182)तो अन्धे और बहरे हो गए (फ़ा183) फिर अल्लाह ने उनकी तौबा क़बूल की (फ़ा184) फिर उनमें बहुतेरे अन्धे और बहरे हो गए और अल्लाह उनके काम देख रहा है।(71)

(फ़ा173) और कुछ अन्देशा न करो (फ़ा174) यानी कुफ़्फ़ार से जो आपके क़त्ल का इरादा रखते हैं सफ़रों में शब को हुज़ूरे अक़्दस सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम का पहरा दिया जाता था जब यह आयत नाज़िल हुई पहरा हटा दिया गया और हुज़ूर ने पहरेदारों से फ़रमाया कि तुम लोग चले जाओ अल्लाह तआ़ला ने मेरी हिफ़ाज़त फ़रमाई। (फ़ा175) किसी दीन व मिल्लत में नहीं (फ़ा176) यानी क़ुरआन पाक उन तमाम किताबों में सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की नअ़्त व सिफ़त और आप पर ईमान लाने का हुक्म है जब तक हुज़ूर पर ईमान न लायें तौरेत व इन्जील की इक़ामत का दावा सही नहीं हो सकता (फ़ा177) क्योंकि जितना क़ुरआन पाक नाज़िल होता जाएगा यह मुकाबरा व अ़ेनाद से इसके इंकार में और शिद्दत करते जायेंगे (फ़ा178) और दिल में ईमान नहीं रखते मुनाफ़िक़ हैं (फ़ा179) तौरेत में कि अल्लाह तआ़ला और उसके रसूलों पर ईमान लायें और हुक्मे इलाही के मुताबिक़ अमल करें (फ़ा180) और उन्होंने अम्बिया अ़लैहिमुस्सलाम के अहकाम को अपनी ख़्वाहिशों के ख़िलाफ़ पाया तो उन में से (फ़ा181) अम्बिया अ़लैहिस्सलाम की तकज़ीब में तो यहूद व नसारा सब शरीक हैं मगर क़त्ल करना यह ख़ास यहूद का काम है उन्होंने बहुत से अम्बिया को शहीद किया जिन में से **(बक़िया सफ़हा 205 पर)**

لَقَدْ كَفَرَ الَّذِيْنَ قَالُوْٓا اِنَّ اللّٰهَ هُوَ الْمَسِيْحُ ابْنُ مَرْيَمَ ؕ وَقَالَ الْمَسِيْحُ يٰبَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ اعْبُدُوا اللّٰهَ رَبِّيْ وَرَبَّكُمْ ؕ اِنَّهٗ مَنْ يُّشْرِكْ بِاللّٰهِ فَقَدْ حَرَّمَ اللّٰهُ عَلَيْهِ الْجَنَّةَ وَمَاْوٰىهُ النَّارُ ؕ وَمَا لِلظّٰلِمِيْنَ مِنْ اَنْصَارٍ ۝ لَقَدْ كَفَرَ الَّذِيْنَ قَالُوْٓا اِنَّ اللّٰهَ ثَالِثُ ثَلٰثَةٍ ۘ وَمَا مِنْ اِلٰهٍ اِلَّآ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ ؕ وَاِنْ لَّمْ يَنْتَهُوْا عَمَّا يَقُوْلُوْنَ لَيَمَسَّنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ۝ اَفَلَا يَتُوْبُوْنَ اِلَى اللّٰهِ وَيَسْتَغْفِرُوْنَهٗ ؕ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۝ مَا الْمَسِيْحُ ابْنُ مَرْيَمَ اِلَّا رَسُوْلٌ ۚ قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِهِ الرُّسُلُ ؕ وَاُمُّهٗ صِدِّيْقَةٌ ؕ كَانَا يَاْكُلٰنِ الطَّعَامَ ؕ اُنْظُرْ كَيْفَ نُبَيِّنُ لَهُمُ الْاٰيٰتِ ثُمَّ انْظُرْ اَنّٰى يُؤْفَكُوْنَ ۝ قُلْ اَتَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ مَا لَا يَمْلِكُ لَكُمْ ضَرًّا وَّلَا نَفْعًا ؕ وَاللّٰهُ هُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ۝

ल–क़द क–फ़रल्लज़ी–न क़ालू इन्नल्ला–ह हुवल्–मसीहुब्नु मर्य–म व क़ालल् मसीहु या–बनी इस्राई–लअ़बु–दुल्ला–ह रब्बी व रब्बकुम् इन्नहू मंय्युश्रिक् बिल्लाहि फ़–क़द् हर्रमल्लाहु अ़लैहिल् जन्न–त व मअ्वाहुन्नारु व मा लिज़्ज़ालिमी–न मिन् अन्सार(72)ल–क़द क–फ़–रल्लज़ी–न क़ालू इन्नल्ला–ह सालिसु सला–सतिन् व मा मिन् इलाहिन् इल्ला इलाहुंव्वाहिदुन् व इल्लम् यन्तहू अ़म्मा यक़ूलू–न ल–य–मस्सन्नल्लज़ी–न क–फ़रू मिन्हुम् अ़ज़ाबुन् अलीम(73)अ–फ़ला यतूबू–न इलल्लाहि व यस्तग़्फ़िरू–नहू वल्लाहु ग़फ़ूरुर्रहीम(74)मल्मसीहुब्नु मर्य–म इल्ला रसूलुन् क़द् ख़–लत् मिन् क़ब्लिहि–र्रुसुलु व उम्मुहू सिद्दी–क़तुन् काना यअ्–कुलानित्तआ़–म उन्ज़ुर् कै–फ़ नुबय्यिनु लहुमुल्आयाति सुम्मन्ज़ुर् अन्ना युअ्–फ़कून(75)क़ुल् अ–तअ़्बुदू–न मिन् दूनिल्लाहि मा ला यम्लिकु लकुम् ज़र्रंव्–व ला नफ़्अ़न् वल्लाहु हुवस्समीअ़ुल् अ़लीम(76)

बेशक काफ़िर हैं वह जो कहते हैं कि अल्लाह वही मसीह मरयम का बेटा है (फ़ा185) और मसीह ने तो यह कहा था ऐ बनी इसराईल अल्लाह की बन्दगी करो जो मेरा रब (फ़ा186) और तुम्हारा रब बेशक जो अल्लाह का शरीक ठहराये तो अल्लाह ने उस पर जन्नत हराम कर दी और उसका ठिकाना दोज़ख़ है और ज़ालिमों का कोई मददगार नहीं।(72) बेशक काफ़िर हैं वह जो कहते हैं अल्लाह तीन ख़ुदाओं में का तीसरा है (फ़ा187) और ख़ुदा तो नहीं मगर एक ख़ुदा (फ़ा188) और अगर अपनी बात से बाज़ न आये (फ़ा189) तो जो इनमें काफ़िर मरेंगे उनको ज़रूर दर्दनाक अ़ज़ाब पहुंचेगा।(73) तो क्यों नहीं रुजूअ़ करते अल्लाह की तरफ़ और उससे बख़्शिश मांगते और अल्लाह बख़्शने वाला मेहरबान।(74) मसीह इब्न मरयम नहीं मगर एक रसूल (फ़ा190) उस से पहले बहुत रसूल हो गुज़रे (फ़ा191) और उसकी मां सिद्दीक़ा है (फ़ा192) दोनों खाना खाते थे (फ़ा193) देखो तो हम कैसी साफ़ निशानियां उनके लिए बयान करते हैं फिर देखो वह कैसे औंधे जाते हैं।(75)तुम फ़रमाओ क्या अल्लाह के सिवा ऐसे को पूजते हो जो तुम्हारे नक़सान का मालिक न नफ़ा का (फ़ा194) और अल्लाह ही सुनता जानता है।(76)

(फ़ा185) नसारा के बहुत फ़िरक़े हैं उनमें से याक़ूबिया और मलकानिया का यह क़ौल था वह कहते थे कि मरयम ने इलाह जना और यह भी कहते थे कि इलाह ने ज़ाते ईसा में हुलूल किया और वह उनके साथ मुत्तहिद हो गया तो ईसा इलाह हो गए *तआ़लल्लाहु अ़न् ज़ालि–क उलूव्वन् कबीरा* (ख़ाज़िन) (फ़ा186) और मैं उसका बन्दा हूं इलाह नहीं (फ़ा187) यह क़ौल नसारा के फ़िरक़ा मरक़ूसिया व नस्तूरिया का है अक्सर मुफ़स्सिरीन का क़ौल है कि इससे उनकी मुराद यह थी कि अल्लाह और मरयम और ईसा तीना इलाह हैं और इलाह होना इन सब में मुश्तरक है मुतकल्लिमीन फ़रमाते हैं कि नसारा कहते हैं कि बाप बेटा रूहुलक़ुदुस यह तीनों एक इलाह हैं। (फ़ा188) न उसका कोई सानी न सालिस वह वहदानियत के साथ मौसूफ़ है उसका कोई शरीक नहीं बाप बेटे बीवी सब से पाक (फ़ा189) और तसलीस के मोअ़तक़िद रहे तौहीद इख़्तियार न की। (फ़ा190) उनको इलाह मानना ग़लत बातिल और कुफ़्र है (फ़ा191) वह भी मोअ्जेज़ात रखते थे यह मोअ्जेज़ात उनके सिदक़े नबुव्वत की दलील थे इसी तरह हज़रत मसीह अ़लैहिस्सलाम भी रसूल हैं उनके मोअ्जेज़ात भी दलीले नबुव्वत हैं उन्हें रसूल ही मानना चाहिए जैसे और अम्बिया अ़लैहिमुस्सलाम को मोअ्जेज़ात की बिना पर ख़ुदा नहीं मानते उनको भी ख़ुदा न मानो (फ़ा192) जो अपने रब के कलिमात और उसकी किताबों की तस्दीक़ करने वाली हैं (फ़ा193) इसमें नसारा का रद्द है कि इलाह ग़िज़ा का मोहताज नहीं हो सकता तो जो ग़िज़ा खाये जिस्म रखे उस जिस्म में तहलील वाक़ेअ़ हो ग़िज़ा उसका बदल बने वह कैसे इलाह हो सकता है (फ़ा194) यह इबताले शिर्क की एक और दलील है इसका ख़ुलासा यह है कि इलाह (मुस्तहिक़े इबादत) वही हो सकता है जो नफ़ा व ज़रर वग़ैरह हर चीज़ पर ज़ाती क़ुदरत व इख़्तियार रखता हो जो ऐसा न हो वह इलाह **(बक़िया सफ़हा 205 पर)**

قُلْ يٰاَهْلَ الْكِتٰبِ لَا تَغْلُوْا فِيْ دِيْنِكُمْ غَيْرَ الْحَقِّ وَلَا تَتَّبِعُوْٓا اَهْوَآءَ قَوْمٍ قَدْ ضَلُّوْا مِنْ قَبْلُ وَاَضَلُّوْا كَثِيْرًا وَّضَلُّوْا عَنْ سَوَآءِ السَّبِيْلِ ۝
لُعِنَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ عَلٰى لِسَانِ دَاوٗدَ وَعِيْسَى ابْنِ مَرْيَمَ ذٰلِكَ بِمَا عَصَوْا وَّكَانُوْا يَعْتَدُوْنَ ۝ كَانُوْا لَا يَتَنَاهَوْنَ عَنْ مُّنْكَرٍ
فَعَلُوْهُ لَبِئْسَ مَا كَانُوْا يَفْعَلُوْنَ ۝ تَرٰى كَثِيْرًا مِّنْهُمْ يَتَوَلَّوْنَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَبِئْسَ مَا قَدَّمَتْ لَهُمْ اَنْفُسُهُمْ اَنْ سَخِطَ اللّٰهُ عَلَيْهِمْ وَفِي الْعَذَابِ
هُمْ خٰلِدُوْنَ ۝ وَلَوْ كَانُوْا يُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَالنَّبِيِّ وَمَآ اُنْزِلَ اِلَيْهِ مَا اتَّخَذُوْهُمْ اَوْلِيَآءَ وَلٰكِنَّ كَثِيْرًا مِّنْهُمْ فٰسِقُوْنَ ۝ لَتَجِدَنَّ اَشَدَّ النَّاسِ
عَدَاوَةً لِّلَّذِيْنَ اٰمَنُوا الْيَهُوْدَ وَالَّذِيْنَ اَشْرَكُوْا وَلَتَجِدَنَّ اَقْرَبَهُمْ مَّوَدَّةً لِّلَّذِيْنَ اٰمَنُوا الَّذِيْنَ قَالُوْٓا اِنَّا نَصٰرٰى ذٰلِكَ بِاَنَّ مِنْهُمْ قِسِّيْسِيْنَ وَرُهْبَانًا وَّاَنَّهُمْ لَا يَسْتَكْبِرُوْنَ ۝

कुल् या अह्लल्कि–ताबि ला तग्.लू फ़ी दीनिकुम् ग़ैरल् हक़्क़ि व ला तत्तबिअू अह्वा–अ क़ौमिन् क़द् ज़ल्लू मिन् क़ब्लु व अज़ल्लू कसीरंव्–व ज़ल्लू अन् सवा–इस्सबील(77)लुअ़ि–नल्लज़ी–न क–फ़रू मिम् बनी इस्राई–ल अ़ला लिसानि दावू–द व ओ़सब्नि मर्य–म ज़ालि–क बिमा अ़–सव्–व कानू यअ़्–तदून(78)कानू ला य–तना हौ–न अ़म्मुन्करिन् फ़–अ़लूहु लबिअ्–स मा कानू यफ़्–अ़लून(79) तरा कसीरम् मिन्हुम् य–त–वल्लौनल्–लज़ी–न क–फ़रू लबिअ्–स मा क़दद–मत् लहुम् अन्फ़ुसुहुम् अन् सख़ितल्लाहु अ़लैहिम् व फ़िल्अ़ज़ाबि हुम् ख़ालिदून(80)व लौ कानू युअमिनू–न बिल्लाहि वन्नबिय्यि व मा उन्ज़ि–ल इलैहि मत्त–ख़ज़ूहुम् औलिया–अ व ला–किन्–न कसीरम् मिन्हुम् फ़ासिक़ून(81)ल–तजिदन्–न अशद्दन्नासि अ़दा–वतल् लिल्लज़ी–न आ–मनुल्–यहू–द वल्लज़ी–न अश्रकू व ल–तजिदन्–न अक़्र–बहुम् मवद्–द–तल्लिल्–लज़ी–न आ–मनुल्लज़ी–न क़ालू इन्ना नसारा ज़ालि–क बि अन्–न मिन्हुम् क़िस्सीसी–न व रुह्बानंव्–व अन्न–हुम् ला यस्तक्बिरून(82)

तुम फ़रमाओ ऐ किताब वालो अपने दीन में नाहक़ ज़्यादती न करो (फ़ा195) और ऐसे लोगों की ख़्वाहिश पर न चलो (फ़ा196) जो पहले गुमराह हो चुके और बहुतों को गुमराह किया और सीधी राह से बहक गए।(77) (रुकूअ़ 14) लानत किये गए वह जिन्होंने कुफ़्र किया बनी इसराईल में दाऊद और ईसा बिन मरयम की ज़बान पर (फ़ा197) यह (फ़ा198) बदला उनकी नाफ़रमानी और सरकशी का।(78) जो बुरी बात करते आपस में एक दूसरे को न रोकते ज़रूर बहुत ही बुरे काम करते थे।(79) (फ़ा199) उनमें तुम बहुत को देखोगे कि काफ़िरों से दोस्ती करते हैं, क्या ही बुरी चीज़ अपने लिए खुद आगे भेजी यह कि अल्लाह का उन पर ग़ज़ब हुआ और वह अ़ज़ाब में हमेशा रहेंगे।(80) (फ़ा200) और अगर वह ईमान लाते (फ़ा201) अल्लाह और उन नबी पर और उस पर जो उनकी तरफ़ उतरा तो काफ़िरों से दोस्ती न करते (फ़ा202) मगर उनमें तो बहुतेरे फ़ासिक़ हैं।(81)ज़रूर तुम मुसलमानों का सबसे बढ़कर दुश्मन यहूदियों और मुशरिकों को पाओगे और ज़रूर तुम मुसलमानों की दोस्ती में सबसे ज़्यादा क़रीब उनको पाओगे जो कहते थे हम नसारा हैं (फ़ा203) यह इस लिए कि उनमें आलिम और दर्वेश हैं और यह ग़ुरूर नहीं करते।(82) (फ़ा204)

(फ़ा195) यहूद की ज़्यादती तो यह कि हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम की नबुव्वत ही नहीं मानते और नसारा की ज़्यादती यह कि उन्हें मअ़्बूद ठहराते हैं (फ़ा196) यानी अपने बद दीन बाप दादा वग़ैरह की (फ़ा197) बाशिन्दगाने ईला ने जब हद से तजावुज़ किया और सनीचर के रोज़ शिकार तर्क करने का जो हुक्म था उसकी मुख़ालफ़त की तो हज़रत दाऊद अ़लैहिस्सलाम ने उन पर लानत की और उनके हक़ में बद दुआ फ़रमाई तो वह बन्दरों और ख़िन्ज़ीरों की शक्ल में मस्ख़ कर दिये गए और असहाबे मायदा ने जब नाज़िल शुदा ख़्वान की निअ़्मतें खाने के बाद कुफ़्र किया तो हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम ने उनके हक़ में बद दुआ की तो वह ख़िन्ज़ीर और बन्दर हो गए और उनकी तादाद पांच हज़ार थी (जुमल वग़ैरह) बाज़ मुफ़स्सिरीन का क़ौल है कि यहूद अपने आबा पर फ़ख़्र किया करते थे और कहते थे हम अम्बिया की औलाद हैं इस आयत में उन्हें बताया गया कि उन अम्बिया अ़लैहिमस्सलाम ने उन पर लानत की है एक क़ौल यह है कि हज़रत दाऊद और हज़रत ईसा अ़लैहिमुस्सलाम ने उनपर लानत की है, एक क़ौल यह है कि हज़रत दाऊद और हज़रत ईसा अ़लैहिमस्सलाम ने सय्यदे आलम मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की जलवा अफ़रोज़ी की बशारत दी और हुज़ूर पर ईमान न लाने और कुफ़्र करने वालों पर लानत की (फ़ा198) लानत (फ़ा199) **मसलाः** आयत से साबित हुआ कि नही मुन्कर यानी बुराई से लोगों को रोकना वाजिब है और बदी को मना करने से बाज़ रहना सख़्त गुनाह है। तिर्मिज़ी की हदीस में है कि जब बनी इसराईल गुनाहों में **(बक़िया सफ़हा 206 पर)**

(बक़िया सफ़हा 176 का) दिया तो हुज़ूर उठ गए फ़रमाया एक फ़रिश्ता तुम्हारी तरफ़ से जवाब दे रहा था जब तुमने जवाब दिया तो फ़रिश्ता चला गया और शैतान आ गया उसके मुतअ़ल्लिक़ यह आयत नाज़िल हुई (फ़ा376) तुम उसके बन्दों से दरगुज़र करो वह तुम से दरगुज़र फ़रमाएगा हदीस तुम ज़मीन वालों पर रहम करो आसमान वाला तुम पर रहम करेगा (फ़ा377) इस तरह कि अल्लाह पर ईमान लायें और उसके रसूलों पर न लायें (फ़ा378) **शाने नुज़ूलः** यह आयत यहूद व नसारा के हक़ में नाज़िल हुई कि यहूद हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम पर ईमान लाये और हज़रत ईसा और सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के साथ उन्होंने कुफ़्र किया और नसारा हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलातु वस्सलाम पर ईमान लाये और उन्होंने सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के साथ कुफ़्र किया (फ़ा379) बाज़ रसूलों पर ईमान लाना उन्हें कुफ़्र से नहीं बचाता क्योंकि एक नबी का इंकार भी तमाम अम्बिया के इंकार के बराबर है। (फ़ा380) मुर्तकिबे कबीरा भी इस में दाख़िल है क्यों कि वह अल्लाह और उसके सब रसूलों पर ईमान रखता है मुअ़तज़िला साहबे कबीरा के ख़ुलूदे अ़ज़ाब का अक़ीदा रखते हैं इस आयत से उनके इस अ़क़ीदा का बुतलान साबित हुआ (फ़ा381) **मसलाः** यह आयत सिफ़ाते फ़ेअ़लिया (जैसे कि मग़फ़िरत व रहमत) के क़दीम होने पर दलालत करती है क्योंकि हुदूस के क़ायल को कहना पड़ता है कि अल्लाह तआ़ला (मआ़ज़ल्लाह) अज़ल में ग़फ़ूर व रहीम नहीं था फिर हो गया उसके इस क़ौल को यह आयत बातिल करती है (फ़ा382) बराहे सरकशी (फ़ा383) यकबारगी शाने नुज़ूल यहूद में से कअ़ब बिन अशरफ़ फ़ख़्ख़ास बिन आ़ज़ूरा ने सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से कहा कि अगर आप नबी हैं तो हमारे पास आसमान से यकबारगी किताब लाईये जैसा हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम तौरेत लाये थे यह सवाल उनका तलबे हिदायत व इत्तेबाअ़ के लिए न था बल्कि सरकशी व बग़ावत से था इस पर यह आयत नाज़िल हुई (फ़ा384) यानी यह सवाल उनका कमाले जहल से है और इस क़िस्म की जहालतों में उनके बाप दादा भी गिरिफ़्तार थे अगर सवाल तलबे रुश्द के लिए होता तो पूरा कर दिया जाता मगर वह तो किसी हाल में ईमान लाने वाले न थे (फ़ा385) उसको पूजने लगे (फ़ा386) तौरेत और हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलातु वस्सलाम के मोअ़जेज़ात जो अल्लाह तआ़ला की वहदानियत और हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलातु वत्तस्लीमात के सिद्क़ पर वाज़ेहुद्दलालत थे और बावजूदेकि तौरेत हमने यकबारगी ही नाज़िल की थी लेकिन "ख़ूए बद रा बहाना बिस्यार" बजाए इताअ़त करने के उन्होंने ख़ुदा के देखने का सवाल कर दिया (फ़ा387) जब उन्होंने तौबा की उसमें हुज़ूर के ज़माना के यहूदियों के लिए तवक़्क़ो है कि वह भी तौबा करें तो अल्लाह उन्हें भी अपने फ़ज़्ल से माफ़ फ़रमाए। (फ़ा388) ऐसा तसल्लुत अता फ़रमाया कि जब आपने बनी इसराईल को तौबा के लिए ख़ुद उनके अपने क़त्ल का हुक्म दिया वह इंकार न कर सके और उन्होंने इताअ़त की।

(बक़िया सफ़हा 177 का) वारिद हैं सूरह आले इमरान में इस वाक़िआ़ का ज़िक्र गुज़र चुका है (फ़ा402) इस आयत की तफ़सीर में चन्द क़ौल हैं एक क़ौल यह है कि यहूद व नसारा को अपनी मौत के वक़्त जब अ़ज़ाब के फ़रिश्ते नज़र आते हैं तो वह हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम पर ईमान ले आते हैं जिनके साथ उन्होंने कुफ़्र किया था और उस वक़्त का ईमान मक़बूल व मोअ़तबर नहीं दूसरा क़ौल यह है कि क़रीबे क़ियामत जब हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम आसमान से नुज़ूल फ़रमायेंगे उस वक़्त के तमाम अहले किताब उन पर ईमान ले आयेंगे उस वक़्त हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलातु वत्तस्लीमात शरीअ़ते मुहम्मदिया के मुताबिक़ हुक्म करेंगे और उसी दीन के अइम्मा में से एक इमाम की हैसियत में होंगे और नसारा ने उनकी निस्बत जो गुमान बांध रखे हैं उनका इबताल फ़रमायेंगे दीने मुहम्मदी की इशाअ़त करेंगे उस वक़्त यहूद व नसारा को या तो इस्लाम क़बूल करना होगा या क़त्ल कर डाले जायेंगे जिज़्या क़बूल करने का हुक्म हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम के नुज़ूल करने के वक़्त तक है। तीसरा क़ौल यह है कि आयत के माना यह हैं कि हर किताबी अपनी मौत से पहले सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम पर ईमान ले आएगा। चौथा क़ौल यह है कि अल्लाह तआ़ला पर ईमान ले आएगा, लेकिन वक़्ते मौत का ईमान मक़बूल नहीं नाफ़ेअ़ न होगा (फ़ा403) यानी हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम यहूद पर तो यह गवाही देंगे कि उन्होंने आपकी तकज़ीब की और आपके हक़ में ज़बाने तअ़न दराज़ की और नसारा पर यह कि उन्होंने आप को रब ठहराया और ख़ुदा का शरीक गरदाना और अहले किताब में से जो लोग ईमान ले आयें उनके ईमान की भी आप शहादत देंगे।

(बक़िया सफ़हा 178 का) इस हिकमत को न समझना और ऐतराज़ करना कमाले हिमाक़त है (फ़ा410) क़ुरआन शरीफ़ में नाम बनाम फ़रमा चुके हैं (फ़ा411) और अब तक उनके अस्मा की तफ़सील क़ुरआन पाक में ज़िक्र नहीं फ़रमाई गई (फ़ा412) तो जिस तरह हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलातु वस्सलाम से बे वास्ता कलाम फ़रमाना दूसरे अम्बिया अ़लैहिमुस्सलाम की नबुव्वत की क़ादिह नहीं जिनसे इस तरह कलाम नहीं फ़रमाया गया ऐसे ही हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम पर किताब का यकबारगी नाज़िल होना दूसरे अम्बिया की नबुव्वत में कुछ भी क़ादिह नहीं हो सकता।

(बक़िया सफ़हा 183 का) और निफ़ास का मूजिबे ग़ुस्ल होना इज्माअ. से साबित है। तयम्मुम का बयान सूरह निसा में गुज़र चुका (फ़ा33) कि तुम्हें मुसलमान किया। (फ़ा34) नबीए करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से बैअ़त करते वक़्त शबे अ़क़बा और बैअ़ते रिज़वान में (फ़ा35) नबीए करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम का हर हुक्म हर हाल में।

(बक़िया सफ़हा 186 का) उनहत्तर बरस की मुद्दत नबी से ख़ाली रही उसके बाद हुज़ूर के तशरीफ़ लाने की मिन्नत का इज़हार फ़रमाया जाता है कि निहायत हाजत के वक़्त तुम पर अल्लाह तआ़ला की अ़ज़ीम निअ़मत भेजी गई और इसमें इलज़ामे हुज्जत व क़तअ़े उज़्र भी है कि अब यह कहने का मौक़ा न रहा कि हमारे पास तम्बीह करने वाले तशरीफ़ न लाये।

(बक़िया सफ़्हा 179 का) ईसा अलैहिस्सलातु वस्सलाम की निस्बत जुदागाना कुफ़्री अक़ीदा रखता था नस्तूरी आपको खुदा का बेटा कहते थे मरकूसी कहते कि वह तीन में के तीसरे हैं और इस कलिमे की तौजीहात में भी इख़्तिलाफ़ था बाज़ तीन उक्नूम मानते थे और कहते थे कि बाप बेटा रूहुल क़ुदुस बाप से ज़ात बेटे से ईसा रूहुल क़ुदुस से उनमें हुलूल करने वाली हयात मुराद लेते थे तो उनके नज़दीक इलाह तीन थे और इस तीन को एक बताते थे तौहीद फ़ित्तस्लीस और तस्लीस फ़ित्तौहीद के चक्कर में गिरिफ़्तार थे बाज़ कहते थे कि ईसा नासूतियत और उलूहियत के जामेअ़ हैं मां की तरफ़ से उनमें नासूतियत आई और बाप की तरफ़ से उलूहियत आई *तआलल्लाहु अ़म्मा तक़ूलू-न उलुव्वन् कबीरा* यह फ़िरक़ाबन्दी नसारा में एक यहूदी ने पैदा की जिसका नाम बौलुस था और उसने उन्हें गुमराह करने के लिए इस क़िस्म के अ़क़ीदों की तालीम की इस आयत में अहले किताब को हिदायत की गई कि वह हज़रत ईसा अलैहिस्सलातु वस्सलाम के बाब में इफ़रात व तफ़रीत से बाज़ रहें खुदा और खुदा का बेटा भी न कहें और उनकी तनक़ीस भी न करें (फ़ा424) अल्लाह का शरीक और बेटा भी किसी को न बनाओ और हुलूल व इत्तेहाद के ऐब भी मत लगाओ और इस एतेक़ादे हक़ पर रहो कि (फ़ा425) है और उस मोहतरम के लिए उसके सिवा कोई नसब नहीं (फ़ा426) कि कुन फ़रमाया और वह बग़ैर बाप और बग़ैर नुत्फ़ा के महज़ अमरे इलाही से पैदा हो गए।

(बक़िया सफ़्हा 180 का) तर्का में उनका दो तिहाई और अगर भाई बहन हों मर्द भी और औरतें भी तो मर्द का हिस्सा दो औरतों के बराबर अल्लाह तुम्हारे लिए साफ़ बयान फ़रमाता है कि कहीं बहक न जाओ और अल्लाह हर चीज़ जानता है।(176)(रुकूअ़ 4)

(फ़ा427) और तस्दीक़ करो कि अल्लाह वाहिद है बेटे और औलाद से पाक है। और उसके रसूलों की तस्दीक़ करो। और इसकी कि हज़रत ईसा अलैहिस्सलातु वस्सलाम अल्लाह के रसूलों में से हैं। (फ़ा428) जैसा नसारा का अक़ीदा है कि वह कुफ़्रे महज़ है। (फ़ा429) कोई उसका शरीक नहीं। (फ़ा430) और वह सब का मालिक है और जो मालिक हो वह बाप नहीं हो सकता (फ़ा431) **शाने नुज़ूलः** नसारा नजरान का एक वफ़्द सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुआ उसने हुज़ूर से कहा कि आप हज़रत ईसा को ऐब लगाते हैं कि वह अल्लाह के बन्दे हैं हुज़ूर ने फ़रमाया कि हज़रत ईसा के लिए यह आर की बात नहीं इस पर यह आयते शरीफ़ा नाज़िल हुई (फ़ा432) यानी आख़िरत में उस तकब्बुर की सज़ा देगा (फ़ा433) इबादते इलाही बजा लाने से। (फ़ा434) दलील वाज़ेह से सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ज़ाते गिरामी मुराद है जिनके सिद्क़ पर उनके मोअ़जेज़े शाहिद हैं और मुन्किरीन की अक़्लों को हैरान कर देते हैं (फ़ा435) यानी क़ुरआन पाक (फ़ा436) और जन्नत व दरजात आलिया फ़रमाएगा (फ़ा437) कलाला उसको कहते हैं जो अपने बाद न बाप छोड़े न औलाद (फ़ा438) **शाने नुज़ूलः** हज़रत जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु अ़न्हु से मरवी है कि वह बीमार थे तो रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मअ़ हज़रत सिद्दीक़े अकबर रज़ियल्लाहु अ़न्हु के एयादत के लिए तशरीफ़ लाये हज़रत जाबिर बेहोश थे हज़रत ने वुज़ू फ़रमा कर आबे वुज़ू उन पर डाला उन्हें इफ़ाक़ा हुआ आंख खोल कर देखा तो हुज़ूर तशरीफ़ फ़रमा हैं अर्ज़ किया या रसूलल्लाह मैं अपने माल का क्या इन्तेज़ाम करूं इस पर यह आयते करीम नाज़िल हुई (बुख़ारी व मुस्लिम) अबू दाऊद की रिवायत में यह भी है कि सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हज़रत जाबिर रज़ियल्लाहु अ़न्हु से फ़रमाया ऐ जाबिर मेरे इल्म में तुम्हारी मौत इस बीमारी से नहीं है। इस हदीस से चन्द मसले मालूम हुए मसला बुज़ुर्गों का आबे वुज़ू तबर्रुक है और उसको हुसूले शिफ़ा के लिए इस्तेमाल करना सुन्नत है। **मसलाः** मरीज़ों की अयादत सुन्नत है। **मसलाः** सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को अल्लाह तआ़ला ने उलूमे ग़ैब अता फ़रमाए हैं इस लिए हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को मालूम था कि हज़रत जाबिर की मौत इस मरज़ में नहीं है। (फ़ा439) अगर वह बहन सगी या बाप शरीक हो (फ़ा440) यानी अगर बहन बे औलाद मरी और भाई रहा तो वह भाई उसके कुल माल का वारिस होगा।

(बक़िया सफ़्हा 185 का) अहकाम की मुख़ालफ़त की इस (फ़ा45) जिनमें सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की नअ़त व सिफ़त है और जो तौरेत में बयान की गई हैं (फ़ा46) तौरेत में कि सय्यदे आलम मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का इत्तेबाअ़ करें और उनपर ईमान लायें (फ़ा47) क्यों कि दग़ा व ख़ियानत व नक़्ज़े अहद और रसूलों के साथ बद अहदी उनकी और उनके आबा की क़दीम आदत है (फ़ा48) जो ईमान लाये (फ़ा49) और जो कुछ उनसे पहले सरज़द हुआ उस पर गिरिफ़्त न करो। **शाने नुज़ूलः** बाज़ मुफ़स्सिरीन का क़ौल है कि यह आयत उस क़ौम के हक़ में नाज़िल हुई जिन्होंने पहले नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से अहद किया फिर तोड़ा फिर अल्लाह तआ़ला ने अपने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को इस पर मुत्तलअ़ फ़रमाया और यह आयत नाज़िल की इस सूरत में माना यह हैं कि उनकी इस अहद शिकनी से दर गुज़र कीजिये जब तक कि वह जंग से बाज़ रहें और जिज़्या अदा करने से मना न करें (फ़ा50) अल्लाह तआ़ला और उसके रसूलों पर ईमान लाने का (फ़ा51) इन्जील में और उन्होंने अहद शिकनी की (फ़ा52) क़तादा ने कहा कि जब नसारा ने किताबे इलाही (इन्जील) पर अमल करना तर्क किया और रसूलों की नाफ़रमानी की फ़रायज़ अदा न किये हुदूद की परवाह न की तो अल्लाह तआ़ला ने उनके दर्मियान अ़दावत डाल दी (फ़ा53) यानी रोज़े क़ियामत वह अपने किरदार का बदला पायेंगे (फ़ा54) यहूदियो व नसरानियो (फ़ा55) सय्यदे आलम मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम (फ़ा56) जैसे कि आयते रजम और सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के औसाफ़ और हुज़ूर का उसको बयान फ़रमाना मोअ़जेज़ा है (फ़ा57) और उनका ज़िक्र भी नहीं करते न उन पर मुआख़ज़ा फ़रमाते हैं क्योंकि आप उसी चीज़ का ज़िक्र फ़रमाते हैं जिसमें मसलहत हो (फ़ा58) सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को नूर फ़रमाया गया क्योंकि आपसे तारीकीए कुफ़्र दूर हुई और राहे हक़ वाज़ेह हुई (फ़ा59) यानी क़ुरआन शरीफ़।

(बक़िया सफ़हा 181 का) क़ुरबानियां हैं और उनसे तअर्रुज़ न करें (फ़ा9) हज व उमरा करने के लिए। **शाने नुज़ूलः** शुरैह बिन हिन्द एक मशहूर शक़ी था वह मदीना तय्यबा में आया और सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर होकर अ़र्ज़ करने लगा कि आप ख़ल्क़े ख़ुदा को क्या दावत देते हैं फ़रमाया अपने रब के साथ ईमान लाने और अपनी रिसालत की तस्दीक़ करने और नमाज़ क़ायम रखने और ज़कात देने की कहने लगा बहुत अच्छी दावत है मैं अपने सरदारों से राय ले लूं तो मैं भी इस्लाम लाऊँगा और उन्हें भी लाऊंगा यह कह कर चला गया हुज़ूर सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने उसके आने से पहले ही अपने असहाब को ख़बर दे दी थी कि क़बीला रबीआ़ का एक शख़्स आने वाला है जो शैतानी ज़बान बोलेगा उसके चले जाने के बाद हुज़ूर ने फ़रमाया कि काफ़िर का चेहरा लेकर आया और ग़ादिर व बद-अहद की तरह पीठ फेर कर गया यह इस्लाम लाने वाला नहीं चुनांचे उसने उज़्र किया और मदीना शरीफ़ से निकलते हुए वहां के मवेशी और अमवाल ले गया अगले साल यमामा के हाजियों के साथ तिजारत का कसीर सामान और हज की क़लादा पोश क़ुरबानियां लेकर ब-इरादए हज निकला सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम अपने असहाब के साथ तशरीफ़ लेजा रहे थे राह में सहाबा ने शुरैह को देखा और चाहा कि मवेशी उससे वापस ले लें रसूले करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने मना फ़रमाया इस पर यह आयते करीमा नाज़िल हुई और हुक्म दिया गया कि जिस की ऐसी शान हो उससे तअर्रुज़ न चाहिए। (फ़ा10) यह बयाने एबाहत है कि एहराम के बाद शिकार मुबाह हो जाता है (फ़ा11) यानी अहले मक्का ने रसूले करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को और आपके असहाब को रोज़े हुदैबिया उमरा से रोका उनके इस मुआनेदाना फ़ेअ़ल का तुम इन्तेक़ाम न लो (फ़ा12) बाज़ मुफ़स्सिरीन ने फ़रमाया जिसका हुक्म दिया गया उसका बजा लाना बिर और जिससे मना फ़रमाया गया उस को तर्क करना तक़्वा और जिसका हुक्म दिया गया उसको न करना इस्म (गुनाह) और जिससे मना किया गया उसको करना उदवान (ज़्यादती) कहलाता है। (फ़ा13) आयत *इल्ला मा युत्ला अ़लैकुम्* में जो इस्तिसना ज़िक्र फ़रमाया गया था यहां उसका बयान है और ग्यारह चीज़ों की हुरमत का ज़िक्र किया गया है एक मुर्दार यानी जिस जानवर के लिए शरीअ़त में ज़बह का हुक्म हो और वह बे ज़िबह मर जाये दूसरे बहने वाला ख़ून, तीसरे सुअर का गोश्त और उसके तमाम अजज़ा, चौथे वह जानवर जिसके ज़िबह के वक़्त ग़ैर ख़ुदा का नाम लिया गया हो जैसा कि ज़मानए जाहिलियत के लोग बुतों के नाम पर ज़िबह करते थे और जिस जानवर को ज़बह तो सिर्फ़ अल्लाह के नाम पर किया गया हो मगर दूसरे औक़ात में वह ग़ैरे ख़ुदा की तरफ़ मन्सूब रहा हो वह हराम नहीं जैसा कि अब्दुल्लाह की गाय, अ़क़ीक़े का बकरा, वलीमे का जानवर या वह जानवर जिन से औलिया की अरवाह को सवाब पहुंचाना मन्ज़ूर हो उनको ग़ैर वक़्ते ज़बह में औलिया के नामों के साथ नामज़द किया जाये मगर ज़िबह उनका फ़क़त अल्लाह के नाम पर हो उस वक़्त किसी दूसरे का नाम न लिया जाये वह हलाल व तय्यब हैं इस आयत में सिर्फ़ उसी को हराम फ़रमाया गया है जिस को ज़बह करते वक़्त ग़ैरे ख़ुदा का नाम लिया गया हो वहाबी जो ज़बह की क़ैद नहीं लगाते वह आयत के माना में ग़लती करते हैं और उनका क़ौल तमाम तफ़ासीरे मोअ़तबरा के ख़िलाफ़ है और ख़ुद आयत उनके माना को बनने नहीं देती क्यों कि *मा उहिल्-ल बिही* को अगर वक़्ते ज़िबह के साथ मुक़य्यद न करें तो *इल्ला मा ज़क्कैतुम्* का इस्तिसना उसको लाहिक़ होगा और वह जानवर जो ग़ैर वक़्ते ज़िबह में ग़ैरे ख़ुदा के नाम से मौसूम रहा हो वह *इल्ला मा ज़क्कैतुम्* से हलाल होगा ग़रज़ वहाबी को आयत से सनद लाने की कोई सबील नहीं पांचवां गला घोंट कर मारा हुआ जानवर छटे वह जानवर जो लाठी पत्थर ढेले गोली छर्रे यानी बग़ैर धारदार चीज़ से मारा गया हो सातवें जो गिर कर मरा हो ख़्वाह पहाड़ से या कुंवें वग़ैरह में आठवें वह जानवर जिसे दूसरे जानवर ने सींग मारा हो और वह उसके सदमा से मर गया हो नवें वह जिसे किसी दरिन्दे ने थोड़ा सा खाया हो और वह उसके ज़ख़्म की तकलीफ़ से मर गया हो लेकिन अगर यह जानवर मर न गए हों और बाद ऐसे वाक़िआ़त के ज़िन्दा बच रहे हों फिर तुम उन्हें बाक़ायदा ज़बह करलो तो वह हलाल हैं दसवें वह जो किसी थान पर इबादतन ज़िबह किया गया हो जैसे कि अहले जाहिलियत ने कअ़बा शरीफ़ के गिर्द तीन सौ साठ पत्थर नसब किये थे जिनकी वह इबादत करते और उनके लिए ज़बह करते और उस ज़बह से उनकी ताज़ीम व तक़र्रुब की नीयत करते थे, ग्यारहवें हिस्सा और हुक्म मालूम करने के लिए पांसा डालना ज़मानए जाहिलियत के लोगों को जब सफ़र या जंग या तिजारत या निकाह वग़ैरह काम दर पेश होते तो वह तीन तीरों से पांसे डालते और जो निकलता उसके मुताबिक़ अ़मल करते और उसको हुक्मे इलाही जानते उन सब की मुमानअ़त फ़रमाई गई।

(बक़िया सफ़हा 192 का) व जहालत से बचाने के लिए रहनुमाई मुराद है दूसरी जगह *हुदन* से सय्यदे अम्बिया हबीबे किब्रिया सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की तशरीफ़ आवरी की बशारत मुराद है जो हुज़ूर अ़लैहिस्सलातु वस्सलाम की नबुव्वत की तरफ़ लोगों की राहयाबी का सबब है। (फ़ा123) यानी सय्यदे अम्बिया सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम पर ईमान लाने और आपकी नबुव्वत की तस्दीक़ करने का हुक्म (फ़ा124) जो उससे क़बल हज़रात अम्बिया अ़लैहिमुस्सलाम पर नाज़िल हुईं (फ़ा125) यानी जब अहले किताब अपने मुक़द्दमात आपकी तरफ़ रुजूअ़ करें तो आप क़ुरआन पाक से फ़ैसला फ़रमायें (फ़ा126) यानी फ़ुरूअ़ व आमाल हर एक के ख़ास हैं और असल दीन सब का एक हज़रत अली मुर्तज़ा रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने फ़रमाया कि ईमान हज़रत आदम अ़लैहिस्सलाम के ज़माने से यही है कि ला इला-ह इल्लल्लाह की शहादत और जो अल्लाह की तरफ़ से आया उसका इक़रार करना और शरीअ़त व तरीक़ हर उम्मत का ख़ास है।

(बक़िया सफ़्हा 182 का) आपने फ़रमाया मैं उस दिन को जानता हूं जिस में यह नाज़िल हुई थी और उस के मक़ामे नुज़ूल को भी पहचानता हूं वह मक़ाम अ़रफ़ात का था और दिन जुमा का आपकी मुराद इससे यह थी कि हमारे लिए वह दिन ईद है तिर्मिज़ी शरीफ़ में ह़ज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा से मरवी है आपसे भी एक यहूदी ने ऐसा ही कहा आपने फ़रमाया कि जिस रोज़ यह नाज़िल हुई उस दिन दो ईदें थीं जुमा व अरफ़ा। **मसलाः** इससे मालूम हुआ कि किसी दीनी कामयाबी के दिन को ख़ुशी का दिन मनाना जायज़ और सहाबा से साबित है वरना ह़ज़रत अ़म्र इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुम साफ़ फ़रमा देते कि जिस दिन कोई ख़ुशी का वाक़िआ हो उसकी यादगार क़ायम करना और उस रोज़ को ईद मनाना हम बिदअ़त जानते हैं इससे साबित हुआ कि ईद मीलाद मनाना जायज़ है क्योंकि वह आज़म नेअ़मे इलाहिया की यादगार व शुक्र गुज़ारी है (फ़ा15) मक्का मुकर्रमा फ़तह फ़रमा कर (फ़ा16) कि उसके सिवा कोई और दीन क़बूल नहीं (फ़ा17) माना यह हैं कि ऊपर हराम चीज़ों का बयान कर दिया गया है लेकिन जब खाने पीने को कोई हलाल चीज़ मुयस्सर ही न आये और भूक प्यास की शिद्दत से जान पर बन जाये उस वक़्त जान बचाने के लिए क़द्रे ज़रूरत खाने पीने की इजाज़त है इस तरह कि गुनाह की तरफ़ माइल न हो यानी ज़रूरत से ज़्यादा न खाये और ज़रूरत उसी क़दर खाने से रफ़अ़ हो जाती है जिससे ख़तरए जान जाता रहे (फ़ा18) जिनकी हुरमत क़ुरआन व हदीस इज्माअ़ और क़ियास से साबित नहीं है (फ़ा19) एक क़ौल यह भी है कि तय्येबात वह चीज़ें हैं जिनको अरब और सलीमुत्तअ़ लोग पसन्द करते हैं और ख़बीस वह चीज़ें हैं जिनसे सलीम तबीअ़तें नफ़रत करती हैं। **मसलाः** इससे मालूम हुआ कि किसी चीज़ की हुरमत पर दलील न होना भी उसकी हिल्लत के लिए काफ़ी है। **शाने नु.ज़ूलः** यह आयत अ़दी इब्ने हातिम और ज़ैद बिन मुहलहल के हक़ में नाज़िल हुई जिनका नाम रसूले करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने ज़ैदुलख़ैर रखा था उन दोनों साहबों ने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह हम लोग कुत्ते और बाज़ के ज़रीआ से शिकार करते हैं तो क्या हमारे लिए हलाल है तो इस पर यह आयते करीमा नाज़िल हुई (फ़ा20) ख़्वाह वह दरिन्दों में से हों मिस्ल कुत्ते और चीते के या शिकारी परिन्दों में से मिस्ल शिकरे, बाज़, शाहीन वग़ैरह के जब उन्हें इस तरह सधा लिया जाये कि जो शिकार करें उस में से न खायें और जब शिकारी उनको छोड़े तब शिकार पर जायें जब बुलाये वापस आ जायें ऐसे शिकारी जानवरों को मुअ़ल्लम कहते हैं (फ़ा21) और ख़ुद उसमें से न खायें (फ़ा22) आयत से जो मुस्तफ़ाद होता है उसका ख़ुलासा यह है कि जिस शख़्स ने कुत्ता या शिकरा वग़ैरह कोई शिकारी जानवर शिकार पर छोड़ा तो उसका शिकार चन्द शर्तों से हलाल है (1) शिकारी जानवर मुसलमान का हो और सिखाया हुआ (2) उसने शिकार को ज़ख़्म लगा कर मारा हो (3) शिकारी जानवर बिस्मिल्लाह अल्लाहु अक्बर कहकर छोड़ा गया हो (4) अगर शिकारी के पास शिकार ज़िन्दा पहुंचा हो तो उसको बिस्मिल्लाह अल्लाहु अक्बर कहकर ज़िबह करे, अगर इन शर्तों में से कोई शर्त न पाई गई तो हलाल न होगा मसलन अगर शिकारी जानवर मुअ़ल्लम (सिखाया हुआ) न हो या उसने ज़ख़्म न किया हो या शिकार पर छोड़ते वक़्त *बिस्मिल्लाह अल्लाहु अक्बर* न पढ़ा हो या शिकार ज़िन्दा पहुंचा हो और उसको ज़िबह न किया हो या मुअ़ल्लम के साथ ग़ैर मुअ़ल्लम शिकार में शरीक हो गया हो जिसको छोड़ते वक़्त *बिस्मिल्लाह अल्लाहु अक्बर* न पढ़ा गया हो या वह शिकारी जानवर मजूसी काफ़िर का हो इन सब सूरतों में वह शिकार हराम है। **मसलाः** तीर से शिकार करने का भी यही हुक्म है अगर *बिस्मिल्लाह अल्लाहु अक्बर* कहकर तीर मारा और उससे शिकार मजरूह होकर मर गया तो हलाल है और अगर न मरा तो दोबारा उसको *बिस्मिल्लाह अल्लाहु अक्बर* पढ़कर ज़िबह करे अगर उस पर बिस्मिल्लाह न पढ़ी या तीर का ज़ख़्म उसको न लगा या ज़िन्दा पाने के बाद उसको ज़िबह न किया इन सब सूरतों में हराम है (फ़ा23) यानी उनके ज़बीहे। **मसलाः** मुस्लिम व किताबी का ज़बीहा हलाल है ख़्वाह वह मर्द हो या औरत या बच्चा (फ़ा24) निकाह करने में औरत की पारसाई का लिहाज़ मुस्तहब है लेकिन सेहते निकाह के लिए शर्त नहीं (फ़ा25) निकाह करके।

(बक़िया सफ़्हा 188 का) अ़लैहिस्सलाम हज के लिए मक्का मुकर्रमा तशरीफ़ ले गए तो क़ाबील ने हाबील से कहा कि मैं तुझको क़त्ल करूंगा हाबील ने कहा क्यों कहने लगा इस लिए कि तेरी क़ुरबानी मक़बूल हुई मेरी न हुई और तू अक़लीमा का मुस्तहिक़ ठहरा इसमें मेरी ज़िल्लत है (फ़ा81) हाबील के इस मक़ूला का मतलब यह है कि क़ुरबानी का क़बूल करना अल्लाह का काम है वह मुत्तक़ियों की क़ुरबानी क़बूल फ़रमाता है तू मुत्तक़ी होता तो तेरी क़ुरबानी क़बूल होती यह ख़ुद तेरे अफ़आ़ल का नतीजा है इसमें मेरा क्या दख़ल है (फ़ा82) और मेरी तरफ़ से इब्तेदा हो बावजूदेकि मैं तुझसे क़वी व तवाना हूं यह सिर्फ़ इसलिए कि (फ़ा83) यानी मुझको क़त्ल करने का (फ़ा84) जो इससे पहले तूने किया कि वालिद की नाफ़रमानी की हसद किया और ख़ुदाई फ़ेसला को न माना (फ़ा85) और मुतहय्यिर हुआ कि इस लाश को क्या करे क्योंकि उस वक़्त तक कोई इंसान मरा ही न था मुद्दत तक लाश को पुश्त पर लादे फिरा (फ़ा86) मरवी है कि दो कव्वे आपस में लड़े उनमें से एक ने दूसरे को मार डाला फिर ज़िन्दा कव्वे ने मिनक़ार (चोंच) और पंजों से ज़मीन कुरेद कर गड्ढा किया उसमें मरे हुए कव्वे को डाल कर मिट्टी से दबा दिया यह देख कर क़ाबील को मालूम हुआ कि मुर्दे की लाश को दफ़न करना चाहिए चुनांचे उसने ज़मीन खोद कर दफ़न कर दिया (जलालैन मदारिक वग़ैरह) (फ़ा87) अपनी नादानी व परेशानी पर और यह नदामत गुनाह पर न थी कि तौबा में शुमार हो सकती या नदामत का तौबा होना सय्यदे अम्बिया सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ही की उम्मत के साथ ख़ास हो। (मदारिक) (फ़ा88) यानी ख़ूने नाहक़ किया कि न तो मक़तूल को किसी ख़ून के बदले क़ेसास के तौर पर मारा न शिर्क व कुफ़्र या क़तअ़े तरीक़ वग़ैरह किसी मूजिबे क़त्ल व फ़साद की वजह से मारा।

(बक़िया सफ़हा 187 का) ज़ुर्रियत की मीरास है यह सर ज़मीन तूर और उसके गिर्द व पेश की थी और एक क़ौल यह है कि तमाम मुल्के शाम (फ़ा70) कालिब बिन यूक़न्ना और यूशअ़ बिन नून जो उन नुक़बा में से थे जिन्हें हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम ने जबाबिरह का हाल दरियाफ़्त करने के लिए भेजा था। (फ़ा71) हिदायत और वफ़ाए अ़हद के साथ उन्होंने जबाबिरह का हाल सिर्फ़ हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम से अ़र्ज़ किया और उसका इफ़शा न किया बख़िलाफ़ दूसरे नुक़बा के कि उन्होंने इफ़शा किया था (फ़ा72) शहर के (फ़ा73) क्योंकि अल्लाह तआ़ला ने मदद का वादा किया है और उसका वादा ज़रूर पूरा होना तुम जब्बारीन के बड़े बड़े जिस्मों से अन्देशा न करो हमने उन्हें देखा है उनके जिस्म बड़े हैं और दिल कमज़ोर हैं उन दोनों ने जब यह कहा तो बनी इसराईल बहुत बरहम हुए और उन्होंने चाहा कि उन पर संग बारी करें (फ़ा74) बनी इसराईल (फ़ा75) जब्बारीन के शहर में। (फ़ा76) और हमें उनकी सोहबत और क़ुर्ब से बचा या यह माना कि हमारे उनके दर्मियान फ़ैसला फ़रमा। (फ़ा77) उसमें न दाख़िल हो सकेंगे (फ़ा78) वह ज़मीन जिसमें लोग भटकते फिरे नौ फ़रसंग थी और क़ौम छः लाख जंगी जो अपने सामान लिए तमाम दिन चलते थे जब शाम होती तो अपने को वहीं पाते जहां से चले थे यह उनपर उक़ूबत थी सिवाए हज़रत मूसा व हारून व यूशअ़ व कालिब के कि उन पर अल्लाह तआ़ला ने आसानी फ़रमाई और उनकी इआ़नत की जैसा कि हज़रत इबराहीम अ़लैहिस्सलातु वस्सलाम के लिए आग को सर्द और सलामती बनाया और इतनी बड़ी जमाअ़ते अ़ज़ीमा का इतने छोटे हिस्सए ज़मीन में चालीस बरस आवारा व हैरान फिरना और किसी का वहां से निकल न सकना ख़्वारिक़े आ़दात में से है जब बनी इसराईल ने उस जंगल में हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम से खाने पीने वग़ैरह ज़रूरियात और तकालीफ़ की शिकायत की तो अल्लाह तआ़ला ने हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम की दुआ़ से उनको आसमानी ग़िज़ा मन्न व सलवा अता फ़रमाया और लिबास ख़ुद उनके बदन पर पैदा किया जो जिस्म के साथ बढ़ता था और एक सफ़ेद पत्थर कोहे तूर का इनायत किया कि जब रख़्ते सफ़र उतारते और किसी वक़्त ठहरते तो हज़रत उस पत्थर पर अ़सा मारते उससे बनी इसराईल के बारह अस्बात के लिए बारह चश्मे जारी हो जाते और साया करने के लिए एक अब्र भेजा और तीह में जितने लोग दाख़िल हुए थे उनमें से जो बीस साल से ज़्यादा उम्र के थे सब वहीं मर गए सिवाए यूशअ़ बिन नून और कालिब बिन यूक़न्ना के और जिन लोगों ने अर्ज़े मुक़द्दसा में दाख़िल होने से इंकार किया उनमें से कोई भी दाख़िल न हो सका और कहा गया है कि तीह में ही हज़रत हारून व हज़रत मूसा अ़लैहिमुस्सलाम की वफ़ात हुई हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम की वफ़ात से चालीस बरस बाद हज़रत यूशअ़ को नबुव्वत अता की गई और जब्बारीन पर जिहाद का हुक्म दिया गया आप बाक़ीमांदा बनी इसराईल को साथ लेकर गए और जब्बारीन पर जिहाद किया।

(बक़िया सफ़हा 193 का) नहीं आप हमारे दुश्मन हैं हमें ज़लील करना चाहते हैं इस पर यह आयत नाज़िल हुई और फ़रमाया गया कि क्या जाहिलियत की गुमराही व ज़ुल्म का हुक्म चाहते हैं (फ़ा132) मसलाः इस आयत में यहूद व नसारा के साथ दोस्ती व मुवालात यानी उनकी मदद करना उनसे मदद चाहना उनके साथ मुहब्बत के रवाबित रखना ममनूअ़ फ़रमाया गया यह हुक्म आम है अगरचे आयत का नुज़ूल किसी ख़ास वाक़िआ़ में हुआ हो। **शाने नुज़ूलः** यह आयत हज़रत उबादा बिन सामित सहाबी और अ़ब्दुल्लाह बिन उबय बिन सलूल के हक़ में नाज़िल हुई जो मुनाफ़िक़ीन का सरदार था हज़रत उबादा रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने फ़रमाया कि यहूद में मेरे बहुत कसीरुत्तादाद दोस्त हैं जो बड़ी शौकत व क़ुव्वत वाले हैं अब मैं उनकी दोस्ती से बेज़ार हूं और अल्लाह व रसूल के सिवा मेरे दिल में और किसी की मुहब्बत की गुन्जाईश नहीं इस पर अ़ब्दुल्लाह बिन उबय ने कहा कि मैं तो यहूद की दोस्ती से बेज़ारी नहीं कर सकता मुझे पेश आने वाले हवादिस का अन्देशा है और मुझे उनके साथ रस्म व राह रखनी ज़रूरी है हुज़ूर सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने उससे फ़रमाया कि यहूद की दोस्ती का दम भरना तेरा ही काम है उबादा का यह काम नहीं इस पर यह आयते करीमा नाज़िल हुई (ख़ाज़िन) (फ़ा133) इससे मालूम हुआ कि काफ़िर कोई भी हों उनमें बाहम कितने ही इख़्तिलाफ़ हों मुसलमानों के मुक़ाबले में वह सब एक हैं *अल्कुफ़्रु मिल्लतुंव्-वाहि-दतुन्* (मदारिक) (फ़ा134) इसमें बहुत शिद्दत व ताकीद है कि मुसलमानों पर यहूद व नसारा और हर मुख़ालिफ़े दीने इस्लाम से अलाहिदगी और जुदा रहना वाजिब है (मदारिक व ख़ाज़िन) (फ़ा135) जो काफ़िरों से दोस्ती करके अपनी जानों पर ज़ुल्म करते हैं हज़रत अबू मूसा अशअ़री रज़ियल्लाहु अ़न्हु का कातिब नसरानी था हज़रत अमीरुल मोमिनीन उमर रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने उनसे फ़रमाया कि नसरानी से क्या वास्ता तुमने यह आयत नहीं सुनी *या अय्युहल्-लज़ी-न आमनू ला तत्तख़ि-ज़ुलयहूद* .....उन्होंने अ़र्ज़ किया उसका दीन उसके साथ मुझे तो उसकी किताबत से ग़रज़ है अमीरुलमोमिनीन ने फ़रमाया कि अल्लाह ने उन्हें ज़लील किया तुम उन्हें इज़्ज़त न दो अल्लाह ने उन्हें दूर किया तुम उन्हें क़रीब न करो हज़रत अबू मूसा ने अ़र्ज़ किया बग़ैर इसके हुकूमते बसरा का काम चालाना दुशवार है यानी इस ज़रूरत से बमजबूरी इसको रखा है कि इस क़ाबिलियत का दूसरा आदमी मुसलमानों में नहीं मिलता इस पर हज़रत अमीरुल मोमिनीन ने फ़रमाया नसरानी मर गया वस्सलाम यानी फ़र्ज़ करो कि वह मर गया उस वक़्त जो इन्तेज़ाम करोगे वह अब करो इससे हरगिज़ काम न लो यह आख़िरी बात है। (ख़ाज़िन) (फ़ा136) यानी निफ़ाक़ (फ़ा137) जैसा कि अ़ब्दुल्लाह बिन उबय मुनाफ़िक़ ने कहा (फ़ा138) और अपने रसूल मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को मुज़फ़्फ़र व मन्सूर करे और उनके दीन को तमाम अद्यान पर ग़ालिब करे और मुसलमानों को उनके दुश्मन यहूद व नसारा वग़ैरह कुफ़्फ़ार पर ग़लबा दे चुनांचे यह ख़बर सादिक़ हुई और बेकरमेही तआ़ला मक्का मुकर्रमा और यहूद के बिलाद फ़तह हुए (ख़ाज़िन वग़ैरह) (फ़ा139) जैसे कि सरज़मीने हिजाज़ को यहूद से पाक करना और वहां उनका नाम व निशान बाक़ी न रखना या मुनाफ़िक़ीन के राज़ इफ़शा करके उन्हें रुसवा करना (ख़ाज़िन व जलालैन)।

(बक़िया सफ़हा 190 का) जासूस हैं मगर यह माना सही नहीं और नज़्मे क़ुरआनी इससे बिल्कुल मुवाफ़क़त नहीं फ़रमाती बल्कि यहां *लाम मिन* के माना में है और मुराद है कि यह लोग अपने सरदारों की झूठी बातें ख़ूब सुनते हैं और लोगों यानी यहूदे ख़ैबर की बातों को ख़ूब मानते हैं जिनके अहवाल का आयत शरीफ़ में बयान आ रहा है। (तफ़सीर अबुस्सऊद व जुमल) (फ़ा106) **शाने नुज़ूल:** यहूदे ख़ैबर के शुरफ़ा में से एक ब्याहे मर्द और एक ब्याही औरत ने ज़िना किया उसकी सज़ा तौरेत में संगसार करना थी यह उन्हें गवारा न था इस लिए उन्होंने चाहा कि उस मुक़द्दमे का फ़ैसला हुज़ूर सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से करायें चुनांचे उन दोनों (मुजरिमों) को एक जमाअ़त के साथ मदीना तय्यबा भेजा और कह दिया कि अगर हुज़ूर हद का हुक्म दें तो मान लेना और संगसार करने का हुक्म दें तो मत मानना वह लोग यहूदे बनी क़ुरैज़ा व बनी नुज़ैर के पास आये और ख़्याल किया कि यह हुज़ूर के हम-वतन हैं और उनके साथ आपकी सुलह भी है उनकी सिफ़ारिश से काम बन जाएगा चुनांचे सरदाराने यहूद में से कअ़ब बिन अशरफ़ व कअ़ब बिन असद व सईद बिन अ़मर व मालिक बिन सैफ़ व किनाना बिन अबिलहक़ीक़ वग़ैरह उन्हें लेकर हुज़ूर की ख़िदमत में हाज़िर हुए और मसला दरियाफ़्त किया हुज़ूर ने फ़रमाया क्या मेरा फ़ैसला मानोगे उन्होंने इक़रार किया आयते रजम नाज़िल हुई और संगसार करने का हुक्म दिया गया यहूद ने उस हुक्म को मानने से इंकार किया हुज़ूर ने फ़रमाया कि तुम में एक नौजवान गोरा यक-चश्म फ़िदक का बाशिन्दा इब्ने सोरिया नामी है तुम उसको जानते हो कहने लगे हां फ़रमाया वह कैसा आदमी है कहने लगे कि आज रूए ज़मीन पर यहूद में उसके पाया का आलिम नहीं तौरेत का यकता माहिर है फ़रमाया उसको बुलाओ चुनांचे बुलाया गया जब वह हाज़िर हुआ तो हुज़ूर ने फ़रमाया तू इब्ने सोरिया है उसने अर्ज़ किया जी हां फ़रमाया यहूद में सबसे बड़ा आलिम तू ही है अर्ज़ किया लोग तो ऐसा ही कहते हैं हुज़ूर ने यहूद से फ़रमाया इस मुआमले में इसकी बात मानोगे सबने इक़रार किया तब हुज़ूर ने इब्ने सोरिया से फ़रमाया मैं तुझे उस अल्लाह की क़सम देता हूं जिसके सिवा कोई मअ़बूद नहीं जिसने हज़रत मूसा पर तौरेत नाज़िल फ़रमाई और तुम लोगों को मिस्र से निकाला तुम्हारे लिए दरिया में राहें बनाईं तुम्हें नजात दी फ़िरऔनियों को ग़र्क़ किया तुम्हारे लिए अब्र को सायेबान बनाया मन्न व सलवा नाज़िल फ़रमाया अपनी किताब नाज़िल फ़रमाई जिसमें हलाल व हराम का बयान है क्या तुम्हारी किताब में ब्याहे मर्द व औरत के लिए संगसार करने का हुक्म है इब्ने सोरिया ने अर्ज़ किया बेशक है उसी की क़सम जिसका आपने मुझसे ज़िक्र किया अ़ज़ाब नाज़िल होने का अन्देशा न होता तो मैं इक़रार न करता और झूट बोल देता मगर यह फ़रमाइये कि आपकी किताब में इसका क्या हुक्म है फ़रमाया जब चार आ़दिल व मोअ़तबर शाहिदों की गवाही से ज़िना बसराहत साबित हो जाये तो संगसार करना वाजिब हो जाता है इब्ने सोरिया ने अर्ज़ किया बख़ुदा बेऐनेही ऐसा ही तौरेत में है फिर हुज़ूर ने इब्ने सोरिया से दरियाफ़्त फ़रमाया कि हुक्मे इलाही में तब्दीली किस तरह वाक़ेअ़ हुई उसने अर्ज़ किया कि हमारा दस्तूर यह था कि हम किसी शरीफ़ को पकड़ते तो छोड़ देते और ग़रीब आदमी पर हद क़ायम करते इस तर्ज़े अमल से शोरफ़ा में ज़िना की बहुत कसरत हो गई यहां तक कि एक मर्तबा बादशाह के चचाज़ाद भाई ने ज़िना किया तो हमने उसको संगसार न किया फिर एक दूसरे शख़्स ने अपनी क़ौम की औरत से ज़िना किया तो बादशाह ने उसको संगसार करना चाहा उसकी क़ौम उठ खड़ी हुई और उन्होंने कहा कि जब तक बादशाह के भाई को संगसार न किया जाये उस वक़्त तक इसको हरगिज़ संगसार न किया जाएगा तब हमने जमा होकर ग़रीब शरीफ़ सब के लिए बजाए संगसार करने के यह सज़ा निकाली कि चालीस कोड़े मारे जायें और मुंह काला करके गधे पर उलटा बिठा कर गश्त कराई जाये यह सुनकर यहूद बहुत बिगड़े और इब्ने सोरिया से कहने लगे तूने हज़रत को बड़ी जल्दी ख़बर दे दी और हम ने जितनी तेरी तारीफ़ की थी तू उसका मुस्तहिक़ नहीं इब्ने सोरिया ने कहा कि हुज़ूर ने मुझे तौरेत की क़सम दिलाई अगर मुझे अज़ाब के नाज़िल होने का अन्देशा न होता तो मैं आपको ख़बर न देता उसके बाद हुज़ूर के हुक्म से उन दोनों ज़ेना कारों को संगसार किया गया और यह आयते करीमा नाज़िल हुई (ख़ाज़िन)

(बक़िया सफ़हा 194 का) यह कि पहले जुमलों पर मअ़तूफ़ हो दूसरी यह कि हाल वाक़ेअ़ हो पहली वजह अज़हर व अक़वा है और हज़रत मुतर्जिम क़ुद्देस सिर्रुहू का तर्जुमा भी इसी के मुसाइद है (जुमल अ़निस्समीन) दूसरी वजह पर दो एहतेमाल हैं एक यह कि *युक़ीमू-न व यूअ्तू-न* दोनों फ़ेअ़लों के फ़ायल से हाल वाक़ेअ़ हो इस सूरत में माना यह होंगे कि वह ब-खुशूअ़ व तवाज़ोअ़ नमाज़ क़ायम करते और ज़कात देते हैं (तफ़सीर अबुस्सऊद) दूसरा एहतेमाल यह है कि सिर्फ़ *यूतू-न* के फ़ाइल से हाल वाक़ेअ़ हो इस सूरत में माना यह होंगे कि नमाज़ क़ायम करते हैं और मुतवाज़ेअ़ होकर ज़कात देते हैं (जुमल) बाज़ का क़ौल है कि यह आयत हज़रत अली मुर्तज़ा रज़ियल्लाहु अ़न्हु की शान में है कि आपने नमाज़ में सायल को अंगुश्तरी सदक़तन दी थी वह अंगुश्तरी अंगुश्ते मुबारक में ढीली थी बे अ़मले कसीर के निकल गई लेकिन इमाम फ़ख़रुद्दीन राज़ी ने तफ़सीर कबीर में इसका बहुत शद्दो मद्द से रद्द किया है और इसके बुतलान पर बहुत वजूह क़ायम किये हैं।

(बक़िया सफ़हा 197 का) हज़रत ज़करिय्या और हज़रत यहया अ़लैहिमस्सलाम भी हैं (फ़ा182) और ऐसे शदीद जुर्मों पर भी अज़ाब न किया जाएगा (फ़ा183) हक़ के देखने और सुनने से यह उनके ग़ायते जहल और निहायते कुफ़्र और क़बूले हक़ से बदजर्ए ग़ायत एअ़राज़ करने का बयान है (फ़ा184) जब उन्होंने हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम के बाद तौबा की उसके बाद दोबारा

(बक़िया सफ़हा 198 का) मुस्तहिक़्क़े इबादत नहीं हो सकता और हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम नफ़ा व ज़रर के बिज़्ज़ात मालिक न थे अल्लाह तआ़ला के मालिक करने से मालिक हुए तो उनकी निस्बत उलूहियत का एतेक़ाद बातिल है। (तफ़सीर अबुस्सऊद)

(बक़िया सफ़्हा 195 का) हुज़ूर ने इसके जवाब में फ़रमाया कि मैं अल्लाह पर ईमान रखता हूं और जो उसने हम पर नाज़िल फ़रमाया और जो हज़रत इबराहीम व इसमाईल व इसहाक़ व याक़ूब व असबात पर नाज़िल फ़रमाया और जो हज़रत ईसा व मूसा को दिया गया यानी तौरेत व इन्जील और जो नबियों को उनके रब की तरफ़ से दिया गया सब को मानता हूं हम अम्बिया में फ़र्क़ नहीं करते कि किसी को माने और किसी को न मानें जब उन्हें मालूम हुआ कि आप हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम की नबुव्वत को भी मानते हैं तो वह आपकी नबुव्वत के मुन्किर हो गए और कहने लगे जो ईसा को माने हम उस पर ईमान न लायेंगे इस पर यह आयते करीमा नाज़िल हुई। (फ़ा153) कि इस बरहक़ दीन वालों को तो तुम महज़ अपने इनाद व अ़दावत ही से बुरा कहते हो और तुम पर अल्लाह तआ़ला ने लानत कीऔर ग़ज़ब फ़रमाया और जो आयत में मज़कूर है वह तुम्हारा हाल हुआ तो बदतर दर्जे में तो तुम खुद हो कुछ दिल में सोचो (फ़ा154) सूरतें मस्ख़ करके (फ़ा155) और वह जहन्नम है। (फ़ा156) **शाने नुज़ूलः** यह आयत यहूद की एक जमाअ़त के हक़ में नाज़िल हुई जिन्होंने सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर होकर अपने ईमान व इख़्लास का इज़हार किया और कुफ़्र व ज़लाल छुपाये रखा अल्लाह तआ़ला ने यह आयत नाज़िल फ़रमा कर अपने हबीब सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को उनके हाल की ख़बर दी (फ़ा157) यानी यहूद

(बक़िया सफ़्हा 196 का) बांधे जायें और इस तरह उन्हें आतिशे दोज़ख़ में डाला जाये उनकी इस बेहूदा गोई और गुस्ताख़ी की सज़ा में (फ़ा162) वह जव्वाद करीम है (फ़ा163) अपनी हिकमत के मुवाफ़िक़ उसमें किसी को मजाले एतेराज़ नहीं (फ़ा164) क़ुरआन शरीफ़ (फ़ा165) यानी जितना क़ुरआन पाक उतरता जायेगा उतना हसद व इनाद बढ़ता जाएगा और वह उसके साथ कुफ़्र व सरकशी में बढ़ते रहेंगे (फ़ा166) वह हमेशा बाहम मुख़्तलिफ़ रहेंगे और उनके दिल कभी न मिलेंगे (फ़ा167) और उनकी मदद नहीं फ़रमाता वह ज़लील होते हैं (फ़ा168) इस तरह कि सय्यदे अम्बिया सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम पर ईमान लाते और आपका इत्तेबाअ़ करते कि तौरेत व इन्जील में इसका हुक्म दिया गया है (फ़ा169) यानी तमाम किताबें जो अल्लाह तआ़ला ने अपने रसूलों पर नाज़िल फ़रमाईं सब में सय्यदे अम्बिया सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम का ज़िक्र और आप पर ईमान लाने का हुक्म है (फ़ा170) यानी रिज़्क़ की कसरत होती और हर तरफ़ से पहुंचता फ़ायदा इस आयत से मालूम हुआ कि दीन की पाबन्दी और अल्लाह तआ़ला की इताअ़त व फ़रमांबरदारी से रिज़्क़ में में वुसअ़त होती है (फ़ा171) हद से तजावुज़ नहीं करता यह यहूदियों में से वह लोग हैं जो सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम पर ईमान लाये (फ़ा172) जो कुफ़्र पर जमे हुए हैं।

(बक़िया सफ़्हा 199 का) मुबतला हुए तो उनके उलमा ने अव्वल तो उन्हें मना किया जब वह बाज़ न आये तो फिर वह उलमा भी उनसे मिल गए और खाने पीने उठने बैठने में उनके साथ शामिल हो गए उनके इस इसियां व तअ़द्दी का यह नतीजा हुआ कि अल्लाह तआ़ला ने हज़रत दाऊद और हज़रत ईसा अ़लैहिमस्सलाम की ज़बान से उन पर लानत उतारी (फ़ा200) **मसलाः** इस आयत से साबित हुआ कि कुफ़्फ़ार से दोस्ती व मुवालात हराम और अल्लाह तआ़ला के ग़ज़ब का सबब है (फ़ा201) सिद्क़ व इख़्लास के साथ बग़ैर निफ़ाक़ के (फ़ा202) इससे साबित हुआ कि मुशरिकीन के साथ दोस्ती व मुवालात अलामते निफ़ाक़ है (फ़ा203) इस आयत में उनकी मदह है जो ज़मानए अक़दस तक हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम के दीन पर रहे और सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की बेअ़सत मालूम होने पर हुज़ूर अ़लैहिस्सलातु वस्सलाम पर ईमान ले आये। **शाने नुज़ूलः** इब्तेदाए इस्लाम में जब कुफ़्फ़ारे क़ुरैश ने मुसलमानों को बहुत ईज़ायें दीं तो असहाबे किराम में से ग्यारह मर्द और चार औरतों ने हुज़ूर के हुक्म से हबशा की तरफ़ हिजरत की उन मुहाजिरीन के असमा यह हैं- हज़रत उसमान ग़नी और उनकी ज़ौजए ताहिरा हज़रत रुक़ैया बिन्ते रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम और हज़रत ज़ुबैर हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊद हज़रत अ़ब्दुर्रहमान बिन औफ़ हज़रत अबू हुज़ैफ़ा और उनकी ज़ौजा हज़रत सहला बिन्ते सुहैल और हज़रत मुसअ़ब बिन उमैर हज़रत अबू सलमा और उनकी बीबी हज़रत उम्मे सलमा बिन्ते उमैया हज़रत उसमान बिन मज़ऊन हज़रत आमिर बिन रबीआ़ और उनकी बीबी हज़रत लैला बिन्ते अबी ख़ैसमा हज़रत हातिब बिन उमर व हज़रत सुहैल बिन बैज़ा रज़ियल्लाहु अ़न्हुम यह हज़रात नबुव्वत के पांचवें साल माह रजब में बहरी सफ़र करके हबशा पहुंचे इस हिजरत को हिजरते ऊला कहते हैं उनके बाद हज़रत जअ़फ़र बिन अबी तालिब गए फिर और मुसलमान रवाना होते रहे यहां तक कि बच्चों और औरतों के इलावा मुहाजिरीन की तादाद बेयासी मर्दों तक पहुंच गई जब क़ुरैश को इस हिजरत का इल्म हुआ तो उन्होंने एक जमाअ़त तोहफ़ा तहाइफ़ लेकर नजाशी बादशाह के पास भेजी उन लोगों ने दरबारे शाही में बारयाबी हासिल करके बादशाह से कहा कि हमारे मुल्क में एक शख़्स ने नबुव्वत का दावा किया है और लोगों को नादान बना डाला है उनकी जमाअ़त जो आपके मुल्क में आई है वह यहां फ़साद अंगेज़ी करेगी और आपकी रिआ़या को बाग़ी बनाएगी हम आपको ख़बर देने के लिए आये हैं और हमारी क़ौम दरख़्वास्त करती है कि आप उन्हें हमारे हवाले कीजिये नजाशी बादशाह ने कहा हम उन लोगों से गुफ़्तगू करलें यह कह कर मुसलमानों को तलब किया और उनसे दरियाफ़्त किया कि तुम हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम और उनकी वालिदा के हक़ में क्या एतेक़ाद रखते हो हज़रत जअ़फ़र बिन अबी तालिब ने फ़रमाया कि हज़रत ईसा अल्लाह के बन्दे और उसके रसूल और कलिमतुल्लाह व रूहुल्लाह हैं और हज़रत मरयम कुंवारी पाक हैं यह सुनकर नजाशी ने ज़मीन से एक लकड़ी का टुकड़ा उठा कर कहा खुदा की क़सम तुम्हारे आक़ा ने हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम के कलाम में इतना भी नहीं बढ़ाया जितनी यह लकड़ी यानी हुज़ूर का इरशाद कलामे ईसा अ़लैहिस्सलाम के बिल्कुल मुताबिक़ है यह देख कर मुशरिकीने मक्का के चेहरे उतर गए फिर नजाशी ने क़ुरआन शरीफ़ सुनने की ख़्वाहिश की हज़रत जअ़फ़र ने सूरह मरयम तिलावत की उस वक़्त दरबार में नसरानी आलिम और दर्वेश मौजूद थे क़ुरआने करीम सुनकर बे इख़्तियार रोने लगे और नजाशी ने मुसलमानों से कहा कि तुम्हारे लिए मेरे क़लमरौ में कोई ख़तरा नहीं मुशरिकीने मक्का नाकाम फिरे और मुसलमान नजाशी के पास बहुत इज़्ज़त व आसाइश के साथ रहे और फ़ज़्ले इलाही से नजाशी को दौलते ईमान का शरफ़ हासिल हुआ इस वाक़िआ़ के मुतअ़ल्लिक़ यह आयत नाज़िल हुई (फ़ा204) **मसलाः** इससे साबित हुआ कि इल्म और तर्के तकब्बुर बहुत काम आने वाली चीज़ें हैं और उनकी बदौलत हिदायत नसीब होती है।

وَاِذَا سَمِعُوْا مَآ اُنْزِلَ اِلَى الرَّسُوْلِ تَرٰۤى اَعْيُنَهُمْ تَفِيْضُ مِنَ الدَّمْعِ مِمَّا عَرَفُوْا مِنَ الْحَقِّ ۚ يَقُوْلُوْنَ رَبَّنَاۤ اٰمَنَّا فَاكْتُبْنَا مَعَ الشّٰهِدِيْنَ ۝٨٣ وَمَا لَنَا لَا نُؤْمِنُ بِاللّٰهِ وَمَا جَآءَنَا مِنَ الْحَقِّ ۙ وَنَطْمَعُ اَنْ يُّدْخِلَنَا رَبُّنَا مَعَ الْقَوْمِ الصّٰلِحِيْنَ ۝٨٤ فَاَثَابَهُمُ اللّٰهُ بِمَا قَالُوْا جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ؕ وَذٰلِكَ جَزَآءُ الْمُحْسِنِيْنَ ۝٨٥ وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَكَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَاۤ اُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ الْجَحِيْمِ ۝٨٦ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تُحَرِّمُوْا طَيِّبٰتِ مَاۤ اَحَلَّ اللّٰهُ لَكُمْ وَلَا تَعْتَدُوْا ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَا يُحِبُّ الْمُعْتَدِيْنَ ۝٨٧ وَكُلُوْا مِمَّا رَزَقَكُمُ اللّٰهُ حَلٰلًا طَيِّبًا ۪ وَّاتَّقُوا اللّٰهَ الَّذِيْۤ اَنْتُمْ بِهٖ مُؤْمِنُوْنَ ۝٨٨ لَا يُؤَاخِذُكُمُ اللّٰهُ بِاللَّغْوِ فِيْۤ اَيْمَانِكُمْ وَلٰكِنْ يُّؤَاخِذُكُمْ بِمَا عَقَّدْتُّمُ الْاَيْمَانَ ۚ فَكَفَّارَتُهٗۤ اِطْعَامُ عَشَرَةِ مَسٰكِيْنَ مِنْ اَوْسَطِ مَا تُطْعِمُوْنَ اَهْلِيْكُمْ اَوْ كِسْوَتُهُمْ اَوْ تَحْرِيْرُ رَقَبَةٍ ؕ فَمَنْ لَّمْ يَجِدْ فَصِيَامُ ثَلٰثَةِ اَيَّامٍ ؕ

व इज़ा समिअू मा उन्ज़ि–ल इलर्रसूलि तरा अअ्.यु–नहुम् तफ़ीज़ु मिनद् दम्अि मिम्मा अ्–रफ़ू मिन–ल्हक़्क़ि यक़ूलू–न रब्बना आमन्ना फ़क्तुब्ना म–अश्–शाहिदीन(83)व मा लना ला नुअ्मिनु बिल्लाहि व मा जा–अना मिनल्हक़्क़ि व नत्मअु अंय्युद् ख़ि–लना रब्बुना म–अ़ल्क़ौमिस् सालिहीन (84)फ़–असा–ब–हुमुल्लाहु बिमा क़ालू जन्नातिन् तज्री मिन् तह्तिहल् अन्हारु ख़ालिदी–न फ़ीहा व ज़ालि–क जज़ाउल् मुह्सिनीन(85)वल्लज़ी–न क–फ़रू व कज़्ज़बू बिआयातिना उलाइ–क अस्हाबुल्–जहीम(86)या अय्युहल्लज़ी–न आ–मनू ला तुहर्रिमू तय्यिबाति मा अ–हल्लल्लाहु लकुम् व ला तअ्–तदू इन्नल्ला–ह ला युहिब्बुल् मुअ्–तदीन(87)व कुलू मिम्मा र–ज़–क़कुमुल्लाहु हलालन् तय्यिबंव्–वत्तक़ुल्लाहल्–लज़ी अन्तुम् बिही मुअ्मिनून(88)ला युआख़िज़ुकुमु अ़क़्क़त्तुमुल् ऐमा–न फ़–कफ़्फ़ा–रतुहू इत्आमु अ्–श–रति मसाकी–न मिन् औ–सति मा तुत्अिमू–न अह्लीकुम् औ किस्व–तुहुम् औ तह्रीरु र–क़–बतिन् फ़–मल्लम् यजिद् फ़सियामु सलासति अय्यामिन्

और जब सुनते हैं वह जो रसूल की तरफ़ उतरा (फ़ा205) तो उनकी आंखें देखो कि आंसुओं से उबल रही हैं (फ़ा206) इस लिए कि वह हक़ को पहचान गये कहते हैं ऐ रब हमारे, हम ईमान लाये (फ़ा207) हमें हक़ के गवाहों में लिख ले।(83) (फ़ा208) और हमें क्या हुआ कि हम ईमान न लायें अल्लाह पर और उस हक़ पर कि हमारे पास आया और हम तमअ्. करते हैं कि हमें हमारा रब नेक लोगों के साथ दाख़िल करे।(84) (फ़ा209) तो अल्लाह ने उनके इस कहने के बदले उन्हें बाग़ दिये जिनके नीचे नहरें रवां हमेशा उनमें रहेंगे यह बदला है नेकों का।(85) (फ़ा210) और वह जिन्होंने कुफ़्र किया और हमारी आयतें झुटलाईं वह हैं दोज़ख़ वाले।(86) (रुकूअ्. 1) ऐ ईमान वालो (फ़ा211) हराम न ठहराओ वह सुथरी चीज़ें कि अल्लाह ने तुम्हारे लिए हलाल कीं (फ़ा212) और हद से न बढ़ो बेशक हद से बढ़ने वाले अल्लाह को नापसन्द हैं।(87) और खाओ जो कुछ तुम्हें अल्लाह ने रोज़ी दी हलाल पाकीज़ा और डरो अल्लाह से जिस पर तुम्हें ईमान है।(88) अल्लाह तुम्हें नहीं पकड़ता तुम्हारी ग़लत फ़हमी की क़समों पर (फ़ा213) हां उन क़समों पर गिरिफ़्त फ़रमाता है जिन्हें तुम ने मज़बूत किया (फ़ा214) तो ऐसी क़सम का बदला दस मिस्कीनों को खाना देना (फ़ा215) अपने घर वालों को जो खिलाते हो उसके औसत में से (फ़ा216) या उन्हें कपड़े देना (फ़ा217) या एक बर्दा (गुलाम) आज़ाद करना तो जो इनमें से कुछ न पाए तो तीन दिन के रोज़े(फ़ा218)

(फ़ा205) यानी क़ुरआन शरीफ़ (फ़ा206) यह उनकी रिक़्क़ते क़ल्ब का बयान है कि क़ुरआने करीम के दिल में असर करने वाले मज़ामीन सुन कर रो पड़ते हैं चुनांचे नजाशी बादशाह की दरख़्वास्त पर हज़रत जअ़्फ़र ने उसके दरबार में सूरह मरयम और सूरह ताहा की आयात पढ़ कर सुनाईं तो नजाशी बादशाह और उसके दरबारी जिनमें उसकी क़ौम के उलमा मौजूद थे सब ज़ारो क़तार रोने लगे इसी तरह नजाशी क़ौम के सत्तर आदमी जो सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुए थे हुज़ूर से सूरह यासीन सुन कर बहुत रोये (फ़ा207) सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम पर और हमने उनके बरहक़ होने की शहादत दी (फ़ा208) और सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की उम्मत में दाख़िल कर जो रोज़े क़ियामत तमाम उम्मतों के गवाह होंगे (यह उन्हें इन्जील से मालूम हो चुका था) (फ़ा209) जब हबशा का वफ़्द इस्लाम से मुशर्रफ़ होकर वापस हुआ तो यहूद ने उन्हें इस पर मलामत की उसके जवाब में उन्होंने यह कहा कि जब हक़ वाज़ेह हो गया तो हम क्यों ईमान न लाते यानी ऐसी हालत में ईमान न लाना क़ाबिले मलामत है न कि ईमान लाना क्योंकि यह सबब है फ़लाहे दारैन का (फ़ा210) जो सिद्क़ व इख़्लास के साथ ईमान लायें और हक़ का इक़रार करें (फ़ा211) शाने नुज़ूलः सहाबा (बक़िया सफ़हा 231 पर)

ذٰلِكَ كَفَّارَةُ اَيْمَانِكُمْ اِذَا حَلَفْتُمْ ۚ وَاحْفَظُوْٓا اَيْمَانَكُمْ ۚ كَذٰلِكَ يُبَيِّنُ اللّٰهُ لَكُمْ اٰيٰتِهٖ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ ۝ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِنَّمَا الْخَمْرُ وَالْمَيْسِرُ وَالْاَنْصَابُ وَالْاَزْلَامُ رِجْسٌ مِّنْ عَمَلِ الشَّيْطٰنِ فَاجْتَنِبُوْهُ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ ۝ اِنَّمَا يُرِيْدُ الشَّيْطٰنُ اَنْ يُّوْقِعَ بَيْنَكُمُ الْعَدَاوَةَ وَالْبَغْضَآءَ فِي الْخَمْرِ وَالْمَيْسِرِ وَيَصُدَّكُمْ عَنْ ذِكْرِ اللّٰهِ وَعَنِ الصَّلٰوةِ ۚ فَهَلْ اَنْتُمْ مُّنْتَهُوْنَ ۝ وَاَطِيْعُوا اللّٰهَ وَاَطِيْعُوا الرَّسُوْلَ وَاحْذَرُوْا ۚ فَاِنْ تَوَلَّيْتُمْ فَاعْلَمُوْٓا اَنَّمَا عَلٰى رَسُوْلِنَا الْبَلٰغُ الْمُبِيْنُ ۝ لَيْسَ عَلَى الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ جُنَاحٌ فِيْمَا طَعِمُوْٓا اِذَا مَا اتَّقَوْا وَّاٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ ثُمَّ اتَّقَوْا وَّاٰمَنُوْا ثُمَّ اتَّقَوْا وَّاَحْسَنُوْا ۚ وَاللّٰهُ يُحِبُّ الْمُحْسِنِيْنَ ۝ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَيَبْلُوَنَّكُمُ اللّٰهُ بِشَيْءٍ مِّنَ الصَّيْدِ تَنَالُهٗٓ اَيْدِيْكُمْ وَرِمَاحُكُمْ

ज़ालि–क कफ़्फ़ा–रतु ऐमानिकुम् इज़ा ह–लफ़्तुम् वह्फ़ज़ू ऐमा–नकुम् कज़ालि–क यु–बय्यि–नुल्लाहु लकुम् आयातिही ल–अल्लकुम् तश्कुरून(89)या अय्यु–हल्लज़ी–न आ–मनू इन्नमल्ख़म्रु वल्मैसिरु वलअन्साबु वलअज़्लामु रिज्सुम् मिन् अ–मलिश्शैतानि फ़ज्तनिबूहु ल–अल्लकुम् तुफ़लिहून (90)इन्नमा युरीदुश्शैतानु अंय्यूकि–अ बै–नकुमुल् अ़दाव–त वल्बग्ज़ा–अ फ़िल्ख़म्रि वल्मैसिरि व यसुद–दकुम् अ़न् ज़िक्रिल्लाहि व अ़–निस्सलाति फ़–हल् अन्तुम् मुन्तहून(91)व अतीअुल्ला–ह व अती–अुर्रसू–ल वह्ज़रू फ़इन् त–वल्लैतुम् फ़अ़्–लमू अन्नमा अ़ला रसूलिनल् बलागुल्–मुबीन(92) लै–स अ़–लल्लज़ी–न आ–मनू व अ़मिलुस्सालिहाति जुनाहुन् फ़ीमा तअ़िमू इज़ा मत्तक़व्–व आ–मनू व अ़मिलुस्सालिहाति सुम्मत्तक़व्–व आ–मनू सुम्मत्तक़व्–व अह्सनू वल्लाहु युहिब्बुल् मुह्सिनीन(93) या अय्युहल्लज़ी–न आ–मनू ल–यब्लुवन्–न–कुमुल्लाहु बिशैइम् मिनस्सैदि तनालुहू ऐदीकुम् व रिमाहुकुम्

यह बदला है तुम्हारी क़समों का जब क़सम खाओ (फ़ा219) और अपनी क़समों की हिफ़ाज़त करो (फ़ा220) इसी तरह अल्लाह तुमसे अपनी आयतें बयान फ़रमाता है कि कहीं तुम एहसान मानो।(89) ऐ ईमान वालो शराब और जुआ और बुत और पांसे नापाक ही हैं शैतानी काम तो इनसे बचते रहना कि तुम फ़लाह पाओ।(90) शैतान यही चाहता है कि तुम में बैर और दुश्मनी डलवा दे शराब और जुए में और तुम्हें अल्लाह की याद और नमाज़ से रोके (फ़ा221) तो क्या तुम बाज़ आये।(91) और हुक्म मानो अल्लाह का और हुक्म मानो रसूल का और होशियार रहो फिर अगर तुम फिर जाओ (फ़ा222) तो जान लो कि हमारे रसूल का ज़िम्मा सिर्फ़ वाज़ेह तौर पर हुक्म पहुंचा देना है।(92)(फ़ा223) जो ईमान लाये और नेक काम किये उन पर कुछ गुनाह नहीं है (फ़ा224) जो कुछ उन्होंने चखा जब कि डरें और ईमान रखें और नेकियां करें फिर डरें और ईमान रखें फिर डरें और नेक रहें और अल्लाह नेकों को दोस्त रखता है।(93)(फ़ा225) (रुकूअ़ 2) ऐ ईमान वालो ज़रूर अल्लाह तुम्हें आज़माएगा ऐसे बाज़ शिकार से जिस तक तुम्हारे हाथ और नेज़े पहुंचें (फ़ा226)

(फ़ा219) और क़सम खाकर तोड़ दो यानी उसको पूरा न करो। **मसला:** क़सम तोड़ने से पहले कफ़्फ़ारा देना दुरुस्त नहीं (फ़ा220) यानी उन्हें पूरा करो अगर उसमें शरअ़न कोई हरज न हो और यह भी हिफ़ाज़त है कि क़सम खाने की आ़दत तर्क की जाये। (फ़ा221) इस आयत में शराब और जूए के नतायज और वबाल बयान फ़रमाए गए कि शराब ख़्वारी और जूए बाज़ी का एक वबाल तो यह है कि इससे आपस में बुग्ज़ और अ़दावतें पैदा होती हैं और जो इन बदियों में मुब्तला हो वह ज़िक्रे इलाही और नमाज़ के औक़ात की पाबन्दी से महरूम हो जाता है। (फ़ा222) इताअ़ते ख़ुदा और रसूल से (फ़ा223) यह वईद व तहदीद है कि जब रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने हुक्मे इलाही साफ़ साफ़ पहुंचा दिया तो उनका जो फ़र्ज़ था अदा हो चुका अब जो एअ़राज़ करे वह मुस्तहिक़े अ़ज़ाब है। (फ़ा224) **शाने नुज़ूल:** यह आयत उन असहाब के हक़ में नाज़िल हुई जो शराब हराम किये जाने से क़ब्ल वफ़ात पा चुके थे हुरमते शराब का हुक्म नाज़िल होने के बाद सहाबा किराम को उनकी फ़िक्र हुई कि उनसे इसका मुआख़ज़ा होगा या न होगा उनके हक़ में यह आयत नाज़िल हुई और बताया गया कि हुरमत का हुक्म नाज़िल होने से क़ब्ल जिन नेक ईमानदारों ने कुछ खाया पिया वह गुनहगार नहीं। (फ़ा225) आयत में लफ़्ज़ *इत्तक़ू* जिसके माना डरने और परहेज़ करने के हैं तीन मर्तबा आया है पहले से शिर्क से डरना और परहेज़ करना दूसरे से शराब और जूए से बचना तीसरे से तमाम मुहर्रमात से परहेज़ करना मुराद है। बाज़ मुफ़स्सिरीन का क़ौल है कि पहले से तर्के शिर्क दूसरे से तर्के मआ़सी व मुहर्रमात तीसरे से तर्के शुबहात मुराद है बाज़ का क़ौल है कि पहले से तमाम हराम चीज़ों से बचना और दूसरे से उस पर क़ायम रहना और तीसरे से ज़मानए नुज़ूले वही में या उसके बाद जो चीज़ें मना की जायें उनको छोड़ देना मुराद है। (मदारिक व ख़ाज़िन व जुमल वग़ैरह) (फ़ा226) सनू 6 हिजरी जिस में हुदैबिया का वाक़िआ पेश आया उस **(बक़िया सफ़हा 231 पर)**

لِيَعْلَمَ اللّٰهُ مَنْ يَّخَافُهٗ بِالْغَيْبِ ۚ فَمَنِ اعْتَدٰى بَعْدَ ذٰلِكَ فَلَهٗ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿۹۴﴾ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَقْتُلُوا الصَّيْدَ وَاَنْتُمْ حُرُمٌ ؕ وَمَنْ قَتَلَهٗ مِنْكُمْ مُّتَعَمِّدًا

فَجَزَآءٌ مِّثْلُ مَا قَتَلَ مِنَ النَّعَمِ يَحْكُمُ بِهٖ ذَوَا عَدْلٍ مِّنْكُمْ هَدْيًاۢ بٰلِغَ الْكَعْبَةِ اَوْ كَفَّارَةٌ طَعَامُ مَسٰكِيْنَ اَوْ عَدْلُ ذٰلِكَ صِيَامًا لِّيَذُوْقَ وَبَالَ اَمْرِهٖ ؕ عَفَا

اللّٰهُ عَمَّا سَلَفَ ؕ وَمَنْ عَادَ فَيَنْتَقِمُ اللّٰهُ مِنْهُ ؕ وَاللّٰهُ عَزِيْزٌ ذُو انْتِقَامٍ ﴿۹۵﴾ اُحِلَّ لَكُمْ صَيْدُ الْبَحْرِ وَطَعَامُهٗ مَتَاعًا لَّكُمْ وَلِلسَّيَّارَةِ ۚ وَحُرِّمَ عَلَيْكُمْ

صَيْدُ الْبَرِّ مَا دُمْتُمْ حُرُمًا ؕ وَاتَّقُوا اللّٰهَ الَّذِيْۤ اِلَيْهِ تُحْشَرُوْنَ ﴿۹۶﴾ جَعَلَ اللّٰهُ الْكَعْبَةَ الْبَيْتَ الْحَرَامَ قِيٰمًا لِّلنَّاسِ وَالشَّهْرَ الْحَرَامَ وَالْهَدْيَ

وَالْقَلَآئِدَ ؕ ذٰلِكَ لِتَعْلَمُوْۤا اَنَّ اللّٰهَ يَعْلَمُ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ وَاَنَّ اللّٰهَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمٌ ﴿۹۷﴾

लि–यअ्–ल–मल्लाहु मंय्यख़ाफ़ुहू बिल्ग़ैबि फ़–मनिअ्–तदा बअ्–द ज़ालि–क फ़–लहू अज़ाबुन् अलीम (94)या अय्यु–हल्लज़ी–न आ–मनू ला तक़्तुलुस्सै–द व अन्तुम् हुरुमुन् व मन् क़–त–लहू मिन्कुम् मु–त–अ़म्मिदन् फ़–जज़ाउम् मिस्लु मा क़–त–ल मिनन्नअ़मि यह्कुमु बिही ज़वा अ़द्लिम् मिन्कुम् हद्यम् बालिग़ल् कअ्–बति औ कफ़्फ़ा–रतुन् तआमु मसाकी–न औ अ़द्लु ज़ालि–क सियामल् लि–यज़ू–क़ वबा–ल अम्रिही अ़फ़ल्लाहु अ़म्मा स–ल–फ़ व मन् आ़–द फ़–यन्तक़िमुल्लाहु मिन्हु वल्लाहु अ़ज़ीज़ुन् ज़ुन्तिक़ाम(95)उहिल्–ल लकुम् सैदुल्बह्रि व तआ़मुहू मताअ़ल् लकुम् व लिस्स–य्या–रति व हुर्रि–म अ़लैकुम् सैदुल्बर्रि मा दुम्तुम् हुरुमन् वत्त–क़ुल्लाहल्लज़ी इलैहि तुह्शरून(96) ज–अ़–लल्लाहुल् कअ्–ब–तल् बैतल्हरा–म क़ियामल् लिन्नासि वश्शह्रल्हरा–म वल् हद्–य वल्क़लाइ–द ज़ालि–क लि–तअ्–लमू अन्नल्ला–ह यअ्–लमु मा फ़िस्समावाति व मा फ़िल्अर्ज़ि व अन्नल्ला–ह बि–कुल्लि शैइन् अ़लीम(97)

कि अल्लाह पहचान करा दे, उनकी जो उससे बिन देखे डरते हैं फिर उसके बाद जो हद से बढ़े (फ़ा227) उसके लिए दर्दनाक अ़ज़ाब है।(94)ऐ ईमान वालो शिकार न मारो जब तुम एहराम में हो(फ़ा228)और तुम में जो उसे क़स्दन क़त्ल करे(फ़ा229)तो उस का बदला यह है कि वैसा ही जानवर मवेशी से दे (फ़ा230)तुम में के दो सिक़ह आदमी उसका हुक्म करें(फ़ा231)यह क़ुरबानी हो कअ़बा को पहुंचती (फ़ा232)या कफ़्फ़ारा दे चन्द मिस्कीनों का खाना (फ़ा233)या उसके बराबर रोज़े कि अपने काम का वबाल चखे अल्लाह ने माफ़ किया जो हो गुज़रा(फ़ा234)और जो अब करेगा अल्लाह उससे बदला लेगा और अल्लाह ग़ालिब है बदला लेने वाला।(95)हलाल है तुम्हारे लिए दरिया का शिकार और उसका खाना तुम्हारे और मुसाफ़िरों के फ़ाइदे को और तुम पर हराम है ख़ुश्की का शिकार(फ़ा235)जब तक तुम एहराम में हो और अल्लाह से डरो जिसकी तरफ़ तुम्हें उठना है।(96)अल्लाह ने अदब वाले घर कअ़बा को लोगों के क़ियाम का बाइस किया (फ़ा236) और हुरमत वाले महीने (फ़ा237) और हरम की क़ुरबानी और गले में अलामत आवेज़ां जानवरों को (फ़ा238) यह इस लिए कि तुम यक़ीन करो कि अल्लाह जानता है जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ ज़मीन में और यह कि अल्लाह सब कुछ जानता है।(97)

(फ़ा227) और बाद इबतेला के नाफ़रमानी करे (फ़ा228) मसलाः मोहरिम पर शिकार यानी ख़ुश्की के किसी वहशी जानवर को मारना हराम है। मसलाः जानवर की तरफ़ शिकार करने के लिए इशारा करना या किसी तरह बताना भी शिकार में दाख़िल और ममनूअ़ है मसलाः हालते एहराम में हर वहशी जानवर का शिकार ममनूअ़ है ख़्वाह वह हलाल हो या न हो। मसलाः काटने वाला कुत्ता और कव्वा और बिच्छू और चील और चूहा और भेड़िया और सांप इन जानवरों को अहादीस में फ़वासिक़ फ़रमाया गया और इनके क़त्ल की इजाज़त दी गई मसलाः मच्छर, पिस्सू, च्यूंटी मक्खी और हशरातुल अ़र्ज़ और हमला आवर दरिन्दों को मारना माफ़ है (तफ़सीर अहमदी वग़ैरह) (फ़ा229) मसलाः हालते एहराम में जिन जानवरों का मारना ममनूअ़ है वह हर हाल में ममनूअ़ है अ़मदन हो या ख़ताअन अ़मदन का हुक्म तो इस आयत से मालूम हुआ और ख़ताअन का हदीस शरीफ़ से साबित है (मदारिक) (फ़ा230) वैसा ही जानवर देने से मुराद यह है कि क़ीमत में मारे हुए जानवर के बराबर हो हज़रत इमाम अबू हनीफ़ा और इमाम अबू यूसुफ़ रहमतुल्लाह तआ़ला अ़लैहिमा का यही क़ौल है और इमाम मुहम्मद व शाफ़ेई रहमतुल्लाह अ़लैहिमा के नज़दीक ख़िल्क़त व सूरत में मारे हुए जानवर की मिस्ल होना मुराद है। (मदारिक व अहमदी) (फ़ा231) यानी क़ीमत का अन्दाज़ा करें और क़ीमत वहां की मोअ़तबर होगी जहां शिकार मारा गया हो या उसके क़रीब के मक़ाम की (फ़ा232)यानी कफ़्फ़ारा के जानवर का हरमे मक्का शरीफ़ के बाहर ज़िबह करना दुरुस्त नहीं मक्का मुकर्रमा में होना चाहिए और ऐन कअ़बा (बक़िया सफ़हा 231 पर)

اِعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ شَدِيْدُ الْعِقَابِ وَاَنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿۹۸﴾ مَا عَلَى الرَّسُوْلِ اِلَّا الْبَلٰغُ ۭ وَاللّٰهُ يَعْلَمُ مَا تُبْدُوْنَ وَمَا تَكْتُمُوْنَ ﴿۹۹﴾ قُلْ لَّا يَسْتَوِي الْخَبِيْثُ وَالطَّيِّبُ وَلَوْ اَعْجَبَكَ كَثْرَةُ الْخَبِيْثِ ۚ فَاتَّقُوا اللّٰهَ يٰٓاُولِي الْاَلْبَابِ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ ﴿۱۰۰﴾ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَسْـَٔلُوْا عَنْ اَشْيَاۗءَ اِنْ تُبْدَ لَكُمْ تَسُؤْكُمْ ۚ وَاِنْ تَسْـَٔلُوْا عَنْهَا حِيْنَ يُنَزَّلُ الْقُرْاٰنُ تُبْدَ لَكُمْ ۭ عَفَا اللّٰهُ عَنْهَا ۭ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ حَلِيْمٌ ﴿۱۰۱﴾ قَدْ سَاَلَهَا قَوْمٌ مِّنْ قَبْلِكُمْ ثُمَّ اَصْبَحُوْا بِهَا كٰفِرِيْنَ ﴿۱۰۲﴾ مَا جَعَلَ اللّٰهُ مِنْۢ بَحِيْرَةٍ وَّلَا سَاۗىِٕبَةٍ وَّلَا وَصِيْلَةٍ وَّلَا حَامٍ ۙ وَّلٰكِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا يَفْتَرُوْنَ عَلَى اللّٰهِ الْكَذِبَ ۭ وَاَكْثَرُهُمْ لَا يَعْقِلُوْنَ ﴿۱۰۳﴾ وَاِذَا قِيْلَ لَهُمْ تَعَالَوْا اِلٰى مَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ وَاِلَى الرَّسُوْلِ قَالُوْا حَسْبُنَا مَا وَجَدْنَا عَلَيْهِ اٰبَاۗءَنَا ۭ اَوَلَوْ كَانَ اٰبَاۗؤُهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ شَـيْــــًٔـا وَّلَا يَهْتَدُوْنَ ﴿۱۰۴﴾

इअ्–लमू अन्नल्ला–ह शदीदुल्‌अिक़ाबि व अन्नल्ला–ह ग़फ़ूरुर्रहीम(98)मा अ़लर्रसूलि इल्ललबलाग़ु वल्लाहु यअ्–लमु मा तुब्दू–न व मा तक्तुमून(99)कुल् ला यस्तविल्ख़बीसु वत्तय्यिबु व लौ अअ्–ज–ब–क कस्–रतुल्ख़बीसि फ़त्तकुल्ला–ह या उलिल्अल्बाबि ल–अ़ल्लकुम् तुफ़्लिहून(100) या अयुहल्लज़ी–न आ–मनू ला तस्अलू अ़न् अश्या–अ इन् तुब्–द लकुम् तसूअ्कुम् व इन् तस्अलू अ़न्हा ही–न युनज़्ज़लुल् कुरआनु तुब्–द लकुम् अ़फ़ल्लाहु अ़न्हा वल्लाहु ग़फ़ूरुन् हलीम(101) क़द् स–अ–लहा कौमुम् मिन् क़ब्लिकुम् सुम्–म अस्बहू बिहा काफ़िरीन(102)मा ज–अ–लल्लाहु मिम् बही–रतिंव्–व ला साइ–बतिंव्–व ला वसी–ल–तिंव् व ला हामिंव् व ला किन्नल्–लज़ी–न क–फ़रू यफ़्तरू–न अ़–लल्लाहिल्–कज़ि–ब व अक्–सरुहुम् ला यअ्क़िलून(103)व इज़ा क़ी–ल लहुम् तआलौ इला मा अन्ज़लल्लाहु व इलर्रसूलि क़ालू हस्बुना मा व जद्ना अ़लैहि आबा–अना अ–व लौ का–न आबाउहुम् ला यअ्–लमू–न शैअंव् व ला यहतदून(104)

जान रखो कि अल्लाह का अ़ज़ाब सख़्त है(फ़ा239)और अल्लाह बख़्शने वाला मेहरबान।(98) रसूल पर नहीं मगर हुक्म पहुंचाना(फ़ा240)और अल्लाह जानता है जो तुम ज़ाहिर करते हो और जो तुम छुपाते हो।(99) (फ़ा241) तुम फ़रमा दो कि सुथरा और गन्दा बराबर नहीं (फ़ा242)अगरचे तुझे गन्दे की कसरत भाये तो अल्लाह से डरते रहो ऐ अक़्ल वालो कि तुम फ़लाह पाओ।(100) (रुकूअ़ 3) ऐ ईमान वालो ऐसी बातें न पूछो जो तुम पर ज़ाहिर की जायें तो तुम्हें बुरी लगें(फ़ा243)और अगर उन्हें उस वक़्त पूछोगे कि कुरआन उतर रहा है तो तुम पर ज़ाहिर कर दी जायेंगी अल्लाह उन्हें माफ़ कर चुका है (फ़ा244) और अल्लाह बख़्शने वाला हिल्म वाला है।(101)तुम से अगली एक क़ौम ने उन्हें पूछा (फ़ा245) फिर उनसे मुन्किर हो बैठे।(102)अल्लाह ने मुक़र्रर नहीं किया है कान चिरा हुआ और न बिजार (वह साण्ड जिसे मुशिरक अपने किसी बुत के नाम पर दाग़ देकर छोड़ देते हैं) और न वसीला (साथी) और न हामी। (फ़ा246)हां काफ़िर लोग अल्लाह पर झूटा इफ़्तेरा बांधते हैं (फ़ा247) और उनमें अक्सर निरे बे अक़्ल हैं।(103) (फ़ा248)और जब उनसे कहा जाये आओ उस तरफ़ जो अल्लाह ने उतारा और रसूल की तरफ़ (फ़ा249)कहें हमें वह बहुत है जिस पर हमने अपने बाप दादा को पाया क्या अगरचे उनके बाप दादा न कुछ जाने न राह पर हों।(104) (फ़ा250)

(फ़ा239) तो हरम व एहराम की हुरमत का लिहाज़ रखो अल्लाह तआ़ला ने अपनी रहमतों का ज़िक्र फ़रमाने के बाद अपनी सिफ़त शदीदुल एक़ाब ज़िक्र फ़रमाई ताकि ख़ौफ़ व रिज़ा से तकमीले ईमान हो उसके बाद सिफ़ते ग़फ़ूर व रहीम बयान फ़रमा कर अपनी वुसअ़ते रहमत का इज़्हार फ़रमाया (फ़ा240) तो जब रसूल हुक्म पहुंचा कर फ़ारिग़ होगए तो तुम पर ताअ़त लाज़िम और हुज्जत क़ायम हो गई और जाए उज़्र बाक़ी न रही (फ़ा241) उसको तुम्हारे ज़ाहिर व बातिन निफ़ाक़ व इख़्लास सबका इल्म है (फ़ा242) यानी हलाल व हराम नेक व बद मुस्लिम व काफ़िर और खरा खोटा एक दर्जा में नहीं हो सकता (फ़ा243) **शाने नुज़ूलः** बाज़ लोग सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से बहुत से बे फ़ायदा सवाल किया करते थे यह ख़ातिरे मुबारक पर गिरां होता था एक रोज़ फ़रमाया कि जो जो दरियाफ़्त करना हो दरियाफ़्त करो मैं हर बात का जवाब दूंगा एक शख़्स ने दरियाफ़्त किया कि मेरा अंजाम क्या है फ़रमाया जहन्नम, दूसरे ने दरियाफ़्त किया कि मेरा बाप कौन है आपने उसके असली बाप का नाम बता दिया जिसके नुत्फ़ा से वह था कि सदाक़ा है बावजूदेकि उसकी मां का शौहर और था जिसका यह शख़्स बेटा कहलाता था इस पर यह आयत नाज़िल हुई और फ़रमाया गया कि ऐसी बातें न पूछो जो ज़ाहिर की जायें तो तुम्हें नागवार गुज़रें (तफ़सीर अहमदी) बुख़ारी व मुस्लिम की हदीस शरीफ़ में है कि एक रोज़ सय्यदे **(बक़िया सफ़हा 232 पर)**

يَاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا عَلَيْكُمْ اَنْفُسَكُمْ ۚ لَا يَضُرُّكُمْ مَّنْ ضَلَّ اِذَا اهْتَدَيْتُمْ ؕ اِلَى اللّٰهِ مَرْجِعُكُمْ جَمِيْعًا فَيُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ۝ يَاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا
شَهَادَةُ بَيْنِكُمْ اِذَا حَضَرَ اَحَدَكُمُ الْمَوْتُ حِيْنَ الْوَصِيَّةِ اثْنٰنِ ذَوَا عَدْلٍ مِّنْكُمْ اَوْ اٰخَرٰنِ مِنْ غَيْرِكُمْ اِنْ اَنْتُمْ ضَرَبْتُمْ فِي الْاَرْضِ فَاَصَابَتْكُمْ مُّصِيْبَةُ
الْمَوْتِ ؕ تَحْبِسُوْنَهُمَا مِنْ بَعْدِ الصَّلٰوةِ فَيُقْسِمٰنِ بِاللّٰهِ اِنِ ارْتَبْتُمْ لَا نَشْتَرِيْ بِهٖ ثَمَنًا وَّلَوْ كَانَ ذَا قُرْبٰى ۙ وَلَا نَكْتُمُ شَهَادَةَ اللّٰهِ اِنَّا اِذًا لَّمِنَ الْاٰثِمِيْنَ ۝ فَاِنْ عُثِرَ
عَلٰى اَنَّهُمَا اسْتَحَقَّا اِثْمًا فَاٰخَرٰنِ يَقُوْمٰنِ مَقَامَهُمَا مِنَ الَّذِيْنَ اسْتَحَقَّ عَلَيْهِمُ الْاَوْلَيٰنِ فَيُقْسِمٰنِ بِاللّٰهِ لَشَهَادَتُنَا اَحَقُّ مِنْ شَهَادَتِهِمَا وَمَا اعْتَدَيْنَا ۖ اِنَّا
اِذًا لَّمِنَ الظّٰلِمِيْنَ ۝ ذٰلِكَ اَدْنٰى اَنْ يَّاْتُوْا بِالشَّهَادَةِ عَلٰى وَجْهِهَا اَوْ يَخَافُوْا اَنْ تُرَدَّ اَيْمَانٌ بَعْدَ اَيْمَانِهِمْ ؕ وَاتَّقُوا اللّٰهَ وَاسْمَعُوْا ؕ وَاللّٰهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الْفٰسِقِيْنَ ۝

या अय्युहल्लज़ी–न आ–मनू अ़लैकुम् अन्फु–सकुम् ला यजुर्रुकुम् मन् ज़ल्–ल इ–ज़्हतदैतुम् इलल्लाहि मर्जिअुकुम् जमीअ़न् फ़यु–नब्बिउ–कुम् बिमा कुन्तुम् तअ़्–मलून(105)या अय्युहल्लज़ी–न आ–मनू शहा–दतु बैनिकुम् इज़ा ह–ज़–र अ–ह–दकुमुल्मौतु हीनल्–वसिय्यतिस्नानि ज़वा अ़दलिम् मिन्कुम् औ आ–ख़रानि मिन् ग़ैरिकुम् इन् अन्तुम् ज़रब्तुम् फ़िलअर्ज़ि फ़– असाबत्कुम् मुसी–बतुल्मौति तह्बिसू–नहुमा मिम्बअ़्दिस्सलाति फ़युक़्सिमानि बिल्लाहि इनिर्तब्तुम् ला नश्तरी बिही स–म–नंव्–व लौ का–न ज़ाकुर्बा व ला नक्तुमु शहा–द–त ल्लाहि इन्ना इज़ल्लमिनल् आसिमीन(106)फ़इन् अुसि–र अ़ला अन्नहुमस्–तहक़्क़ा इस्मन् फ़आ–ख़रानि यक़ू मानि मक़ा–महुमा मिनल्लज़ीनस्–त–हक़्–क़ अ़लैहिमुल् औ–लयानि फ़युक़्सिमानि बिल्लाहि ल–शहा–दतुना अहक़्क़ु मिन् शहा–दतिहिमा व मअ़्.–तदैना इन्ना इज़ल् [illegible]मि–नज्–ज़ालिमीन (107)ज़ालि–क अद्ना अंय्यअ्तू बिश्शहा–दति अ़ला वज्हिहा औ यख़ाफ़ू अन् तुरद्–द ऐमानुम् बअ़्–द ऐमानिहिम् वत्तक़ुल्ला–ह वस्मअू. वल्लाहु ला यह्दिल्–क़ौमल् फ़ासिक़ीन(108)

ऐ ईमान वालों तुम अपनी फ़िक्र रखो तुम्हारा कुछ न बिगाड़ेगा जो गुमराह हुआ जबकि तुम राह पर हो (फ़ा251) तुम सबकी रुजूअ़् अल्लाह ही की तरफ़ है फिर वह तुम्हें बता देगा जो तुम करते थे।(105) ऐ ईमान वालो (फ़ा252) तुम्हारी आपस की गवाही जब तुम में किसी को मौत आये (फ़ा253) वसीयत करते वक़्त तुम में के दो मोअ़्तबर शख़्स हों या ग़ैरों में के दो जब तुम मुल्क में सफ़र को जाओ फिर तुम्हें मौत का हादसा पहुंचे उन दोनों को नमाज़ के बाद रोको (फ़ा254) वह अल्लाह की क़सम खायें अगर तुम्हें कुछ शक पड़े (फ़ा255) हम हलफ़ के बदले कुछ माल न खरीदेंगे (फ़ा256) अगरचे क़रीब का रिश्तेदार हो और अल्लाह की गवाही न छुपायेंगे ऐसा करें तो हम ज़रूर गुनहगारों में हैं।(106)फिर अगर पता चले कि वह किसी गुनाह के सज़ावार हुए (फ़ा257)तो उनकी जगह दो और खड़े हों उनमें से कि उस गुनाह यानी झूटी गवाही ने उनका हक़ लेकर उनको नक़सान पहुंचाया (फ़ा258)जो मय्यत से ज़्यादा क़रीब हों तो अल्लाह की क़सम खायें कि हमारी गवाही ज़्यादा ठीक है उन दो की गवाही से और हम हद से न बढ़े (फ़ा259)ऐसा हो तो हम ज़ालिमों में हों।(107)यह क़रीब तर है उससे कि गवाही जैसी चाहिए अदा करें या डरें कि कुछ क़समें रद्द कर दी जायें उनकी क़समों के बाद (फ़ा260)और अल्लाह से डरो और हुक्म सुनो और अल्लाह बे हुक्मों को राह नहीं देता।(108)(रुकूअ़् 4)

(फ़ा251) मुसलमान कुफ़्फ़ार की महरूमी पर अफ़सोस करते थे और उन्हें रंज होता था कि कुफ़्फ़ार एनाद में मुब्तला होकर दौलते इस्लाम से महरूम रहे अल्लाह तआ़ला ने उनकी तसल्ली फ़रमा दी कि इसमें तुम्हारा कुछ ज़रर नहीं अमर बिल मअ़रूफ़ नहीं अ़निल मुन्कर का फ़र्ज़ अदा करके तुम बरीउज़्ज़िम्मा हो चुके तुम अपनी नेकी की जज़ा पाओगे अब्दुल्लाह बिन मुबारक ने फ़रमाया इस आयत में अमर बिलमअ़रूफ़ व नही अ़निल मुन्कर के वजूब की बहुत ताकीद की है क्योंकि अपनी फ़िक्र रखने के माना यह हैं कि एक दूसरे की ख़बर गीरी करे नेकियों की रग़बत दिलाये बदियों से रोके (ख़ाज़िन) (फ़ा252)शाने नुज़ूलः मुहाजिरीन में से बदील जो हज़रत अ़म्र बिन आ़स के मवाली में से थे बक़स्दे तिजारत मुल्के शाम की तरफ़ दो नसरानियों के साथ रवाना हुए उनमें से एक का नाम तमीम बिन औसदारी था और दूसरे का अ़दी बिन बदा शाम पहुंचते ही बदील बीमार हो गए और उन्होंने अपने तमाम सामान की एक फ़ेहरिस्त लिख कर सामान में डाल दी और हमराहियों को उसकी इत्तेलाअ़ न दी जब मर्ज़ की शिद्दत हुई तो बदील ने तमीम व अ़दी दोनों को वसीयत की कि उनका तमाम सरमाया मदीना शरीफ़ पहुंच कर उनके अहल को दे दें और बदील की वफ़ात हो गई उन दोनों ने उनकी मौत के बाद उनका सामान देखा उसमें एक चांदी का जाम था **(बक़िया सफ़हा 233 पर)**

يَوْمَ يَجْمَعُ اللّٰهُ الرُّسُلَ فَيَقُوْلُ مَاذَآ اُجِبْتُمْ ؕ قَالُوْا لَا عِلْمَ لَنَا ؕ اِنَّكَ اَنْتَ عَلَّامُ الْغُيُوْبِ ﴿۱۰۹﴾ اِذْ قَالَ اللّٰهُ يٰعِيْسَى ابْنَ مَرْيَمَ اذْكُرْ نِعْمَتِيْ
عَلَيْكَ وَعَلٰى وَالِدَتِكَ ۘ اِذْ اَيَّدْتُّكَ بِرُوْحِ الْقُدُسِ ۗ تُكَلِّمُ النَّاسَ فِى الْمَهْدِ وَكَهْلًا ۚ وَاِذْ عَلَّمْتُكَ الْكِتٰبَ وَالْحِكْمَةَ وَالتَّوْرٰىةَ وَالْاِنْجِيْلَ ۚ وَاِذْ تَخْلُقُ
مِنَ الطِّيْنِ كَهَيْـَٔةِ الطَّيْرِ بِاِذْنِيْ فَتَنْفُخُ فِيْهَا فَتَكُوْنُ طَيْرًا بِاِذْنِيْ وَتُبْرِئُ الْاَكْمَهَ وَالْاَبْرَصَ بِاِذْنِيْ ۚ وَاِذْ تُخْرِجُ الْمَوْتٰى بِاِذْنِيْ ۚ وَاِذْ كَفَفْتُ بَنِيْٓ
اِسْرَآءِيْلَ عَنْكَ اِذْ جِئْتَهُمْ بِالْبَيِّنٰتِ فَقَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْهُمْ اِنْ هٰذَآ اِلَّا سِحْرٌ مُّبِيْنٌ ﴿۱۱۰﴾ وَاِذْ اَوْحَيْتُ اِلَى الْحَوَارِيّٖنَ اَنْ اٰمِنُوْا بِيْ وَبِرَسُوْلِيْ ۚ قَالُوْٓا
اٰمَنَّا وَاشْهَدْ بِاَنَّنَا مُسْلِمُوْنَ ﴿۱۱۱﴾ اِذْ قَالَ الْحَوَارِيُّوْنَ يٰعِيْسَى ابْنَ مَرْيَمَ هَلْ يَسْتَطِيْعُ رَبُّكَ اَنْ يُّنَزِّلَ عَلَيْنَا مَآئِدَةً مِّنَ السَّمَآءِ ؕ قَالَ اتَّقُوا اللّٰهَ اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ﴿۱۱۲﴾

यौ–म यज्मअुल्लाहुर्–रुसु–ल फ़–यकूलु माज़ा उजिब्तुम् क़ालू ला अ़िल्–म लना इन्न–क अन्–त अ़ल्लामुल्गुयूब(109)इज़् क़ा–लल्लाहु या अ़ीसब्–न मर्यमज़्कुर् निअ़्–मती अ़लै–क व अ़ला वालि–दतिक इज़् अय्यत्तु–क बिरू–हिल्कुदुसि तुकल्लिमुन्–ना–स फ़िल्मह्दि व कह्लन् व इज़् अ़ल्लम्तुकल्किता–ब वल्हिक्म–त वत्तौरा–त वल्इन्जी–ल व इज़् तख़्लुकु मिनत्तीनि कहै–अतित्तैरि बिइज़्नी फ़–तन्फुखु फ़ीहा फ़–तकूनु तैरम् बिइज़्नी व तुब्रिउल् अक् म–ह वल्–अब्–र–स बिइज़्नी व इज़् तुख़्रिजुल्मौता बिइज़्नी व इज़् क–फ़फ़्तु बनी इस्राई–ल अ़न्–क इज़् जिअ्–तहुम् बिल्बय्यिनाति फ़कालल्लज़ी–न क–फ़रू मिन्हुम् इन् हाजा इल्ला सिह्रुम् मुबीन(110)व इज़् औहैतु इलल्–ह़वारिय्यी–न अन् आमिनू बी व बि–रसूली क़ालू आमन्ना वश्हद् बि–अन्नना मुस्लिमून(111)इज़् क़ालल्ह़वारिय्यू–न या अ़ीसब्–न मर्य–म हल् यस्ततीअु रब्बु–क अंय्युनज़्ज़ि–ल अ़लैना माइ–द–तम् मिनस्समाइ क़ालत्तकुल्ला–ह इन् कुन्तुम् मुअ्मिनीन(112)

जिस दिन अल्लाह जमा फ़रमाएगा रसूलों को (फ़ा261) फिर फ़रमाएगा तुम्हें क्या जवाब मिला (फ़ा262) अ़र्ज़ करेंगे हमें कुछ इल्म नहीं बेशक तू ही है सब ग़ैबों का ख़ूब जानने वाला।(109) (फ़ा263) जब अल्लाह फ़रमाएगा ऐ मरयम के बेटे ईसा याद कर मेरा एहसान अपने ऊपर और अपनी मां पर (फ़ा264) जब मैंने पाक रूह से तेरी मदद की (फ़ा265) तू लोगों से बातें करता पालने में (फ़ा266) और पक्की उम्र का होकर (फ़ा267) और जब मैंने तुझे सिखाई किताब और हिकमत (फ़ा268) और तौरेत और इन्जील और जब तू मिट्टी से परिन्द की सी मूरत मेरे हुक्म से बनाता फिर उसमें फूंक मारता तो वह मेरे हुक्म से उड़ने लगती (फ़ा269) और तू मादरज़ाद अन्धे और सफ़ेद दाग़ वाले को मेरे हुक्म से शिफ़ा देता और जब तू मुर्दों को मेरे हुक्म से ज़िन्दा निकालता (फ़ा270) और जब मैंने बनी इसराईल को तुझ से रोका (फ़ा271) जब तू उनके पास रौशन निशानियां लेकर आया तो उनमें के काफ़िर बोले कि यह (फ़ा272) तो नहीं मगर खुला जादू। (110) और जब मैंने हवारियों (फ़ा273) के दिल में डाला कि मुझ पर और मेरे रसूल पर (फ़ा274) ईमान लाओ बोले हम ईमान लाये और गवाह रह कि हम मुसलमान हैं।(111) (फ़ा275) जब हवारियों ने कहा ऐ ईसा बिन मरयम क्या आपका रब ऐसा करेगा कि हम पर आसमान से एक ख़्वान उतारे (फ़ा276)कहा अल्लाह से डरो अगर ईमान रखते हो।(112) (फ़ा277)

(फ़ा261) यानी रोज़े क़ियामत (फ़ा262) यानी जब तुम ने अपनी उम्मतों को ईमान की दावत दी तो उन्होंने तुम्हें क्या जवाब दिया इस सवाल में मुन्किरीन की तोबीख़ है (फ़ा263) अम्बिया का यह जवाब उनके कमाले अदब की शान ज़ाहिर करता है कि वह इल्मे इलाही के हुज़ूर अपने इल्म को असलन नज़र में न लायेंगे और क़ाबिले ज़िक्र करार न देंगे और मुआ़मला अल्लाह तआ़ला के इल्म व अ़दल पर तफ़वीज़ फ़रमायेंगे (फ़ा264) कि मैंने उनको पाक किया और जहान की औरतों पर उनको फ़ज़ीलत दी (फ़ा265) यानी हज़रत जिबरील से कि वह हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम केसाथ रहते और हवादिस में उनकी मदद करते (फ़ा266) सिग़र सिनी में और यह मोअ़्जेज़ा है (फ़ा267) इस आयत से साबित होता है कि हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम क़ियामत से पहले नुज़ूल फ़रमायेंगे क्योंकि कहूलत (पुख़्ता उम्र) का वक़्त आने से पहले आप उठा लिए गए नुज़ूल के वक़्त आप तैंतीस साल के जवान की सूरत में जलवा अफ़रोज़ होंगे और बमिस्दाक़ इस आयत के कलाम करेंगे और जो पालने में फ़रमाया था इन्नी अब्दुल्लाह वही फ़रमायेंगे (जुमल) (फ़ा268) यानी असरारे उलूम (फ़ा269) यह भी हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलातु वस्सलाम का मोअ़्जेज़ा था (फ़ा270) अन्धे और सफ़ेद दाग़ वाले को बीना और तन्दुरुस्त करना और मुर्दों को क़ब्रों से ज़िन्दा करके निकालना यह सब **(बक़िया सफ़्हा 231 पर)**

قَالُوا نُرِيدُ أَنْ نَأْكُلَ مِنْهَا وَتَطْمَئِنَّ قُلُوبُنَا وَنَعْلَمَ أَنْ قَدْ صَدَقْتَنَا وَنَكُونَ عَلَيْهَا مِنَ الشَّاهِدِينَ ﴿١١٣﴾ قَالَ عِيسَى ابْنُ مَرْيَمَ اللَّهُمَّ رَبَّنَا أَنْزِلْ
عَلَيْنَا مَائِدَةً مِنَ السَّمَاءِ تَكُونُ لَنَا عِيدًا لِأَوَّلِنَا وَآخِرِنَا وَآيَةً مِنْكَ ۖ وَارْزُقْنَا وَأَنْتَ خَيْرُ الرَّازِقِينَ ﴿١١٤﴾ قَالَ اللَّهُ إِنِّي مُنَزِّلُهَا عَلَيْكُمْ ۖ فَمَنْ يَكْفُرْ
بَعْدُ مِنْكُمْ فَإِنِّي أُعَذِّبُهُ عَذَابًا لَا أُعَذِّبُهُ أَحَدًا مِنَ الْعَالَمِينَ ﴿١١٥﴾ وَإِذْ قَالَ اللَّهُ يَا عِيسَى ابْنَ مَرْيَمَ أَأَنْتَ قُلْتَ لِلنَّاسِ اتَّخِذُونِي وَأُمِّيَ إِلَٰهَيْنِ
مِنْ دُونِ اللَّهِ ۖ قَالَ سُبْحَانَكَ مَا يَكُونُ لِي أَنْ أَقُولَ مَا لَيْسَ لِي بِحَقٍّ ۚ إِنْ كُنْتُ قُلْتُهُ فَقَدْ عَلِمْتَهُ ۚ تَعْلَمُ مَا فِي نَفْسِي وَلَا أَعْلَمُ مَا فِي نَفْسِكَ ۚ إِنَّكَ أَنْتَ عَلَّامُ الْغُيُوبِ ﴿١١٦﴾
مَا قُلْتُ لَهُمْ إِلَّا مَا أَمَرْتَنِي بِهِ أَنِ اعْبُدُوا اللَّهَ رَبِّي وَرَبَّكُمْ ۚ وَكُنْتُ عَلَيْهِمْ شَهِيدًا مَا دُمْتُ فِيهِمْ ۖ فَلَمَّا تَوَفَّيْتَنِي كُنْتَ أَنْتَ الرَّقِيبَ عَلَيْهِمْ ۚ وَأَنْتَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ شَهِيدٌ ﴿١١٧﴾
إِنْ تُعَذِّبْهُمْ فَإِنَّهُمْ عِبَادُكَ ۖ وَإِنْ تَغْفِرْ لَهُمْ فَإِنَّكَ أَنْتَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ﴿١١٨﴾ قَالَ اللَّهُ هَٰذَا يَوْمُ يَنْفَعُ الصَّادِقِينَ صِدْقُهُمْ ۚ لَهُمْ جَنَّاتٌ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا
الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا أَبَدًا ۚ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمْ وَرَضُوا عَنْهُ ۚ ذَٰلِكَ الْفَوْزُ الْعَظِيمُ ﴿١١٩﴾ لِلَّهِ مُلْكُ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ وَمَا فِيهِنَّ ۚ وَهُوَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ﴿١٢٠﴾

क़ालू नुरीदु अन् नअ्कु–ल मिन्हा व तत्मइन्–न कुलूबुना व नअ्–ल–म अन् क़द स–दक़्तना व नकू–न अ़लैहा मिनश्शाहिदीन(113)क़ा–ल ईसब्नु मर्यमल्लाहुम्–म रब्बना अन्ज़िल् अ़लैना माइ–द–तम् मि–नस्समा–इ तकूनु लना ईदल् लि–अव्वलिना व आख़िरिना व आ–यतम् मिन्– क वर्ज़ुक़्ना व अन्–त ख़ैरुर्राज़िक़ीन(114)क़ालल्लाहु इन्नी मुनज़्ज़िलुहा अ़लैकुम् फ़–मंयक्फुर् बअ्दु मिन्कुम् फ़–इन्नी उ–अ़ज़्ज़िबुहू अ़ज़ाबल् ला उ–अ़ज़्ज़िबुहू अ–ह–दम् मिनल् आ–लमीन(115)व इज़् क़ालल्लाहु या ईसब् –न मर्य–म अ–अन्–त कुल्–त लिन्ना–सित्–तख़िज़ूनी व उम्मि–य इलाहैनि मिन् दूनिल्लाहि क़ा–ल सुब्हा–न–क मा यकूनु ली अन् अक़ू–ल मा लै–स ली बिहक़्क़िन् इन् कुन्तु क़ुल्तुहू फ़–क़द अ़लिम्तहू तअ्–लमु मा फ़ी नफ़्सी व ला अअ्–लमु मा फ़ी नफ़्सि–क इन्न–क अन्–त अ़ल्ला–मुल् गुयूब(116) मा क़ुल्तु लहुम् इल्ला मा अमर्–तनी बिही अनि–अ़्बुदुल्ला–ह रब्बी व रब्बकुम् व कुन्तु अ़लैहिम् शहीदम् मा दुम्तु फ़ीहिम् फ़–लम्मा तवफ़्फ़ैतनी कुन्–त अन्तर्रक़ी–ब अ़लैहिम् व अन्–त अ़ला कुल्लि शैइन् शहीद(117)इन् तुअ़ज़्ज़िब्हुम् फ़–इन्नहुम् अ़िबादु–क व इन् तग़्फ़िर् लहुम् फ़–इन्न–क अन्तल् अ़ज़ीज़ुल् हकीम(118)क़ालल्लाहु हाज़ा यौमु यन्फ़–उस्सादिक़ी–न सिदक़ुहुम् लहुम् जन्नातुन् तज्री मिन् तह्ति–हल् अन्हारु ख़ालिदी–न फ़ीहा अ–ब–दन् रज़ियल्लाहु अ़न्हुम् व रज़ू अ़न्हु ज़ालिकल् फ़ौज़ुल्–अ़ज़ीम(119) लिल्लाहि मुल्कुस्समावाति वल्अर्ज़ि व मा फ़ीहिन्–न व हु–व अ़ला कुल्लि शैइन् क़दीर(120)

बोले हम चाहते हैं (फ़ा278) कि उसमें से खायें और हमारे दिल ठहरें (फ़ा279) और हम आंखों देख लें कि आपने हमसे सच फ़रमाया (फ़ा280) और हम उस पर गवाह हो जायें।(113) (फ़ा281) ईसा इब्न मरयम ने अ़र्ज़ की ऐ अल्लाह ऐ रब हमारे हम पर आसमान से एक ख़्वान उतार कि वह हमारे लिए ईद हो (फ़ा282) हमारे अगले पिछलों की (फ़ा283) और तेरी तरफ़ से निशानी (फ़ा284) और हमें रिज़्क़ दे और तू सबसे बेहतर रोज़ी देने वाला है।(114) अल्लाह ने फ़रमाया कि मैं उसे तुम पर उतारता हूं फिर अब जो तुम में कुफ़्र करेगा (फ़ा285) तो बेशक मैं उसे वह अ़ज़ाब दूंगा कि सारे जहान में किसी पर न करूंगा।(115) (फ़ा286) (रुकूअ़ 5) और जब अल्लाह फ़रमाएगा (फ़ा287) ऐ मरयम के बेटे ईसा क्या तूने लोगों से कह दिया था कि मुझे और मेरी मां को दो ख़ुदा बना लो अल्लाह के सिवा (फ़ा288) अर्ज़ करेगा पाकी है तुझे (फ़ा289) मुझे रवा नहीं कि वह बात कहूं जो मुझे नहीं पहुंचती (फ़ा290) अगर मैंने ऐसा कहा हो तो ज़रूर तुझे मालूम होगा तू जानता है जो मेरे जी में है और मैं नहीं जानता जो तेरे इल्म में है बेशक तू ही है सब ग़ैबों का ख़ूब जानने वाला।(116) (फ़ा291) मैंने तो उनसे न कहा मगर वही जो तूने मुझे हुक्म दिया था कि अल्लाह को पूजो जो मेरा भी रब और तुम्हारा भी रब और मैं उन पर मुत्तलअ़ था जब तक मैं उनमें रहा फिर जब तूने मुझे उठा लिया (फ़ा292) तो तूही उन पर निगाह रखता था और हर चीज़ तेरे सामने हाज़िर है। (बक़िया सफ़हा 234 पर)

سُوْرَةُ الْاَنْعَامِ مَكِّيَّةٌ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِیْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ وَجَعَلَ الظُّلُمٰتِ وَالنُّوْرَ ۬ ثُمَّ الَّذِیْنَ كَفَرُوْا بِرَبِّهِمْ یَعْدِلُوْنَ ○ هُوَ الَّذِیْ خَلَقَكُمْ مِّنْ طِیْنٍ ثُمَّ قَضٰۤی اَجَلًا ؕ وَاَجَلٌ مُّسَمًّی عِنْدَهٗ ثُمَّ اَنْتُمْ تَمْتَرُوْنَ ○ وَهُوَ اللّٰهُ فِی السَّمٰوٰتِ وَفِی الْاَرْضِ ؕ یَعْلَمُ سِرَّكُمْ وَجَهْرَكُمْ وَیَعْلَمُ مَا تَكْسِبُوْنَ ○ وَمَا تَاْتِیْهِمْ مِّنْ اٰیَةٍ مِّنْ اٰیٰتِ رَبِّهِمْ اِلَّا كَانُوْا عَنْهَا مُعْرِضِیْنَ ○ فَقَدْ كَذَّبُوْا بِالْحَقِّ لَمَّا جَآءَهُمْ ؕ فَسَوْفَ یَاْتِیْهِمْ اَنْۢبٰٓؤُا مَا كَانُوْا بِهٖ یَسْتَهْزِءُوْنَ ○ اَلَمْ یَرَوْا كَمْ اَهْلَكْنَا مِنْ قَبْلِهِمْ مِّنْ قَرْنٍ مَّكَّنّٰهُمْ فِی الْاَرْضِ مَا لَمْ نُمَكِّنْ لَّكُمْ وَاَرْسَلْنَا السَّمَآءَ عَلَیْهِمْ مِّدْرَارًا ۪ وَّجَعَلْنَا الْاَنْهٰرَ تَجْرِیْ مِنْ تَحْتِهِمْ فَاَهْلَكْنٰهُمْ

सूरतुल अनआमि

मक्की है इसमें 165 आयतें और 20 रूकूअ़ हैं

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

अल्हम्दु लिल्लाहिल् लज़ी ख़–ल–क़स्समावाति वल् अर्–ज़ व ज–अ–लज़्ज़ुलुमाति वन्नू–र सुम्मल्लज़ी–न क–फ़रू बि–रब्बि–हिम् यअ़्दिलून(1)हुवल्लज़ी ख़–ल–क़कुम् मिन् तीनिन् सुम्–म क़ज़ा अ–ज–लन व अ–जलुम् मुसम्मन् अ़िन्दहू सुम्–म अन्तुम् तम्तरून(2)व हुवल्लाहु फ़िस्समावाति व फ़िल्अर्ज़ि यअ़्–लमु सिर्–रकुम् व जह्–रकुम् व यअ़्–लमु मा तक्सिबून(3)व मा तअ्तीहिम् मिन् आ–यतिम् मिन् आयाति रब्बिहिम् इल्ला कानू अ़न्हा मुअ़्रिज़ीन(4)फ़–क़द् कज़्ज़बू बिल्हक़्क़ि लम्मा जाअहुम् फ़सौ–फ़ यअ्तीहिम् अम्बाउ मा कानू बिही यस्तह्ज़िऊन(5)अ–लम् यरौ कम् अह्लक्ना मिन् क़ब्लिहिम् मिन् क़र्निम् मक्कन्नाहुम् फ़िल्अर्ज़ि मा लम् नुमक्किल् लकुम् व अर्सल्नस्समा–अ अ़लैहिम् मिद्रारंव्–व ज–अ़ल्नल् अन्हा–र तज्री मिन् तह़्तिहिम् फ़–अह्–लक्नाहुम्

अल्लाह के नाम से शुरू जो बड़ा मेहरबान रहम वाला।(फ़ा1)

सब ख़ूबियां अल्लाह को जिसने आसमान और ज़मीन बनाये (फ़ा2) और अंधेरियां और रौशनी पैदा की (फ़ा3) उस पर (फ़ा4) काफ़िर लोग अपने रब के बराबर ठहराते हैं।(1) (फ़ा5) वही है जिसने तुम्हें (फ़ा6) मिट्टी से पैदा किया फिर एक मीआ़द का हुक्म रखा (फ़ा7) और एक मुक़र्रर वादा उसके यहां है (फ़ा8) फिर तुम लोग शक करते हो।(2) और वही अल्लाह है आसमानों का और ज़मीन का (फ़ा9) उसे तुम्हारा छुपा और ज़ाहिर सब मालूम है और तुम्हारे काम जानता है।(3) और उनके पास कोई भी निशानी उनके रब की निशानियों से नहीं आती मगर उससे मुंह फेर लेते हैं।(4) तो बेशक उन्होंने हक़ को झुठलाया (फ़ा10) जब उनके पास आया तो अब उन्हें ख़बर हुआ चाहती है उस चीज़ की जिस पर हंस रहे थे।(5) (फ़ा11) क्या उन्होंने न देखा कि हमने उनसे पहले (फ़ा12) कितनी संगतें (क़ौमें) खपा दीं उन्हें हमने ज़मीन में वह जमाव दिया (फ़ा13) जो तुमको न दिया और उन पर मुसलाधार पानी भेजा (फ़ा14) और उनके नीचे नहरें बहाईं (फ़ा15) तो उन्हें हमने उनके गुनाहों के सबब

(फ़ा1) सूरह अनआ़म मक्की है इसमें बीस रुकूअ़ और एक सौ पैंसठ आयतें तीन हज़ार एक सौ कलिमा और बारह हज़ार नौ सौ पैंतीस हरफ़ हैं हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा ने फ़रमाया कि यह कुल सूरत एक ही शब में बमक़ामे मक्का मुकर्रमा नाज़िल हुई और इसके साथ सत्तर हज़ार फ़रिश्ते आये जिन से आसमानों के किनारे भर गए यह भी एक रिवायत में है कि वह फ़रिश्ते तस्बीह व तक़दीस करते आये और सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम सुबहान रब्बियल अज़ीम फ़रमाते हुए सर बसुजूद हुए (फ़ा2) हज़रत कअ़ब अहबार रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने फ़रमाया तौरेत में सबसे अव्वल यही आयत है इस आयत में बन्दों को शाने इस्तिग़ना के साथ हम्द की तालीम फ़रमाई गई और पैदाइशे आसमान व ज़मीन का ज़िक्र इस लिए है कि उनमें नाज़िरीन के लिए बहुत अ़जाइबे कुदरत व ग़राइबे हिकमत और इबरतें व मनाफ़ेअ़ हैं (फ़ा3) यानी हर एक अंधेरी और रौशनी ख़्वाह वह अंधेरी शब की हो या कुफ़्र की या जहल की या जहन्नम की और रौशनी ख़्वाह दिन की हो या ईमान व हिदायत व इल्म व जन्नत की ज़ुलमात को जमा और नूर को वाहिद सेग़ा से ज़िक्र फ़रमाने में इस तरफ़ इशारा है कि बातिल की राहें बहुत कसीर हैं और राहे हक़ सिर्फ़ एक दीने इस्लाम (फ़ा4) यानी बावजूद ऐसे दलायल पर मुत्तलअ़ होने और ऐसे निशानहाए क़ुदरत देखने के (फ़ा5) दूसरों को हत्ता कि पत्थरों को पूजते हैं बावजूदेकि इसके मुक़िर हैं कि आसमानों और ज़मीन का पैदा करने वाला अल्लाह है। (फ़ा6) यानी तुम्हारी असल हज़रत आदम को जिनकी नसल से तुम पैदा हुए फ़ायदा इसमें मुश्रिकीन का रद है जो कहते थे कि हम जब गल कर मिट्टी हो जायेंगे फिर कैसे ज़िन्दा **(बक़िया सफ़हा 231 पर)**

بِذُنُوْبِهِمْ وَاَنْشَاْنَا مِنْۢ بَعْدِهِمْ قَرْنًا اٰخَرِيْنَ ۝ وَلَوْ نَزَّلْنَا عَلَيْكَ كِتٰبًا فِيْ قِرْطَاسٍ فَلَمَسُوْهُ بِاَيْدِيْهِمْ لَقَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اِنْ هٰذَآ اِلَّا سِحْرٌ
مُّبِيْنٌ ۝ وَقَالُوْا لَوْلَآ اُنْزِلَ عَلَيْهِ مَلَكٌ ؕ وَلَوْ اَنْزَلْنَا مَلَكًا لَّقُضِيَ الْاَمْرُ ثُمَّ لَا يُنْظَرُوْنَ ۝ وَلَوْ جَعَلْنٰهُ مَلَكًا لَّجَعَلْنٰهُ رَجُلًا وَّلَلَبَسْنَا عَلَيْهِمْ مَّا يَلْبِسُوْنَ ۝
وَلَقَدِ اسْتُهْزِئَ بِرُسُلٍ مِّنْ قَبْلِكَ فَحَاقَ بِالَّذِيْنَ سَخِرُوْا مِنْهُمْ مَّا كَانُوْا بِهٖ يَسْتَهْزِءُوْنَ ۝ قُلْ سِيْرُوْا فِي الْاَرْضِ ثُمَّ انْظُرُوْا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ
الْمُكَذِّبِيْنَ ۝ قُلْ لِّمَنْ مَّا فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ قُلْ لِّلّٰهِ ؕ كَتَبَ عَلٰى نَفْسِهِ الرَّحْمَةَ ؕ لَيَجْمَعَنَّكُمْ اِلٰى يَوْمِ الْقِيٰمَةِ لَا رَيْبَ فِيْهِ ؕ اَلَّذِيْنَ خَسِرُوْٓا اَنْفُسَهُمْ
فَهُمْ لَا يُؤْمِنُوْنَ ۝ وَلَهٗ مَا سَكَنَ فِي الَّيْلِ وَالنَّهَارِ ؕ وَهُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ۝

बिजुनूबिहिम् व अन्शअ्ना मिम्बअ्दिहिम् कर्नन् आ—ख़रीन(6)व लौ नज़्ज़ल्ना अ़लै—क किताबन् फ़ी क़िर्तासिन् फ़—ल—मसूहु बिऐदी—हिम् लक़ालल्लज़ी—न क—फ़रू इन् हाज़ा इल्ला सिहरुम् मुबीन(7) व क़ालू लौला उन्ज़ि—ल अ़लैहि म—लकुन् व लौ अन्ज़ल्ना म—ल—कल् लक़ुज़ियल् अम्रु सुम्—म ला युन्ज़रून(8)वं लौ ज—अ़ल्नाहु म—ल—कल् ल—ज—अ़ल्नाहु रजुलंव् व ल—लबस्ना अ़लैहिम् मा यल्बिसून(9)व ल—क़दिस्तुह्ज़ि—अ बिरुसु—लिम् मिन् क़ब्लि—क फ़हा—क़ बिल्लज़ी—न सख़िरू मिन्हुम् मा कानू बिही यस्तह्ज़िऊन(10)क़ुल् सीरू फ़िल्अर्ज़ि सुम्—मन्ज़ुरू कै—फ़ का—न आ़क़ि—बतुल् मुकज़्ज़िबीन(11)क़ुल् लिमम् मा फ़िस्समावाति वल्अर्ज़ि क़ुल् लिल्लाहि क—त—ब अ़ला नफ़्सिहिर् रह्—म—त ल—यज्म—अ़न्नकुम् इला यौमिल् क़िया—मति ला रै—ब फ़ीहि अल्लज़ी—न ख़सिरू अन्फ़ु—सहुम् फ़हुम् ला युअ्मिनून(12)व लहू मा स—क—न फ़िल्लैलि वन्नहारि व हुवस्समी—उल् अ़लीम(13)

हलाक किया (फ़ा16) और उनके बाद और संगत उठाई।(6) (फ़ा17) और अगर हम तुम पर कागज़ में कुछ लिखा हुआ उतारते (फ़ा18) कि वह उसे अपने हाथों से छूते जब भी काफ़िर कहते कि यह नहीं मगर खुला जादू।(7) और बोले (फ़ा19) उन पर (फ़ा20) कोई फ़रिश्ता क्यों न उतारा गया और अगर हम फ़रिश्ता उतारते (फ़ा21) तो काम तमाम हो गया होता (फ़ा22) फिर उन्हें मोहलत न दी जाती।(8) (फ़ा23) और अगर हम नबी को फ़रिश्ता करते (फ़ा24) जब भी उसे मर्द ही बनाते (फ़ा25) और उन पर वही शुबह रखते जिसमें अब पड़े हैं।(9) और ज़रूर ऐ महबूब तुमसे पहले रसूलों के साथ भी ठट्ठा किया गया तो वह जो उनसे हंसते थे उनकी हंसी उन्हीं को ले बैठी।(10) (फ़ा26) (रुकूअ़ 7) तुम फ़रमा दो (फ़ा27) ज़मीन में सैर करो फिर देखो कि झुठलाने वालों का कैसा अन्जाम हुआ।(11)(फ़ा28) तुम फ़रमाओ किस का है जो कुछ आसमानों और ज़मीन में है (फ़ा29) तुम फ़रमाओ अल्लाह का है।(फ़ा30) उसने अपने करम के ज़िम्मे पर रहमत लिख ली है (फ़ा31) बेशक ज़रूर तुम्हें क़ियामत के दिन जमा करेगा (फ़ा32) इसमें कुछ शक नहीं वह जिन्होंने अपनी जान नक़सान में डाली (फ़ा33) ईमान नहीं लाते।(12) और उसी का है जो कुछ बसता है रात और दिन में (फ़ा34) और वही है सुनत्ता जानता।(13)(फ़ा35)

(फ़ा16) कि उन्होंने अम्बिया की तकज़ीब की और उनका यह सरो सामान उन्हें हलाक से न बचा सका (फ़ा17) और दूसरे क़र्न वालों को उनका जा-नशीन किया मुद्दआ यह है कि गुज़री हुई उम्मतों के हाल से इबरत व नसीहत हासिल करना चाहिए कि वह लोग बावजूद कुव्वत व दौलत व कसरते माल व अयाल के कुफ़्र व तुग़यान की वजह से हलाक कर दिये गए तो चाहिए के उनके हाल से इबरत हासिल करके ख़्वाबे ग़फ़लत से बेदार हों (फ़ा18) शाने नुज़ूलः यह आयत नज़र बिन हारिस और अब्दुल्लाह बिन उमय्या और नौफ़ल बिन ख़ुवैलिद के हक़ में नाज़िल हुई जिन्होंने कहा था कि मुहम्मद (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) पर हम हरगिज़ ईमान न लायेंगे जब तक तुम हमारे पास अल्लाह की तरफ़ से किताब न लाओ जिसके साथ चार फ़रिश्ते हों वह गवाही दें कि यह अल्लाह की किताब है और तुम उसके रसूल हो इस पर यह आयते करीमा नाज़िल हुई और बताया गया कि यह सब हीले बहाने हैं अगर कागज़ पर लिखी हुई किताब उतार दी जाती और वह उसे अपने हाथों से छू कर और टटोल कर देख भी लेते और यह कहने का मौक़ा भी न होता कि नज़र बन्दी कर दी गई थी किताब उतरती नज़र आई, था कुछ भी नहीं तो भी यह बद-नसीब ईमान लाने वाले न थे उसको जादू बताते और जिस तरह शक़्क़ुल-क़मर को जादू बताया और उस मोअ्जेज़ा को देख कर ईमान न लाये इस तरह इस पर भी ईमान न लाते क्योंकि जो लोग अ़ेनादन इंकार करते हैं वह आयात व मोअ्जेज़ात से मुन्तफ़अ् नहीं हो सकते (फ़ा19) मुशरिकीन (फ़ा20) यानी सय्यदे आलम **(बक़िया सफ़हा 233 पर)**

قُلْ اَغَيْرَ اللّٰهِ اَتَّخِذُ وَلِيًّا فَاطِرِ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَهُوَ يُطْعِمُ وَلَا يُطْعَمُ ؕ قُلْ اِنِّيْٓ اُمِرْتُ اَنْ اَكُوْنَ اَوَّلَ مَنْ اَسْلَمَ وَلَا تَكُوْنَنَّ مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ ۝ قُلْ اِنِّيْٓ اَخَافُ اِنْ عَصَيْتُ رَبِّيْ عَذَابَ يَوْمٍ عَظِيْمٍ ۝ مَنْ يُّصْرَفْ عَنْهُ يَوْمَئِذٍ فَقَدْ رَحِمَهٗ ؕ وَذٰلِكَ الْفَوْزُ الْمُبِيْنُ ۝ وَاِنْ يَّمْسَسْكَ اللّٰهُ بِضُرٍّ فَلَا كَاشِفَ لَهٗٓ اِلَّا هُوَ ؕ وَاِنْ يَّمْسَسْكَ بِخَيْرٍ فَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ۝ وَهُوَ الْقَاهِرُ فَوْقَ عِبَادِهٖ ؕ وَهُوَ الْحَكِيْمُ الْخَبِيْرُ ۝ قُلْ اَيُّ شَيْءٍ اَكْبَرُ شَهَادَةً ؕ قُلِ اللّٰهُ ۙ شَهِيْدٌۢ بَيْنِيْ وَبَيْنَكُمْ ۙ وَاُوْحِيَ اِلَيَّ هٰذَا الْقُرْاٰنُ لِاُنْذِرَكُمْ بِهٖ وَمَنْۢ بَلَغَ ؕ اَئِنَّكُمْ لَتَشْهَدُوْنَ اَنَّ مَعَ اللّٰهِ اٰلِهَةً اُخْرٰى ؕ قُلْ لَّآ اَشْهَدُ ۚ قُلْ اِنَّمَا هُوَ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ وَّاِنَّنِيْ بَرِيْٓءٌ مِّمَّا تُشْرِكُوْنَ ۝ اَلَّذِيْنَ اٰتَيْنٰهُمُ الْكِتٰبَ يَعْرِفُوْنَهٗ كَمَا يَعْرِفُوْنَ اَبْنَآءَهُمْ ۘ اَلَّذِيْنَ خَسِرُوْٓا اَنْفُسَهُمْ فَهُمْ لَا يُؤْمِنُوْنَ ۝

कुल् अग़ैरल्लाहि अत्तख़िजु वलिय्यन् फ़ातिरिस्समावाति वल्अर्ज़ि व हु–व युत्‌अ़िमु व ला युत्‌अ़मु कुल् इन्नी उमिरतु अन् अकू–न अव्व–ल मन् अस्ल–म व ला तकूनन्–न मि–नल्मुश्रिकीन(14)कुल् इन्नी अख़ाफ़ु इन् अ़सैतु रब्बी अ़ज़ा–ब यौमिन् अ़ज़ीम(15)मंय्युस्रफ़् अ़न्हु यौ–मइज़िन् फ़–क़द् रहि–महू व ज़ालिकल् फ़ौज़ुल्मुबीन(16)व इंय्यम्सस्कल्लाहु बिज़ुर्रिन् फ़ला काशि–फ़ लहू इल्ला हु–व व इंय्यम्सस्–क बिख़ैरिन् फ़हु–व अ़ला कुल्लि शैइन् क़दीर(17)व हुवल्क़ाहिरू फ़ौ–क़ अ़िबादिही व हुवल् हकीमुल्–ख़बीर(18)कुल् अय्यु शैइन् अक्बरु शहा–द–तन् क़ुलिल्लाहु शहीदुम् बैनी व बै–नकुम् व ऊहि–य इलय्–य हा–ज़ल्क़ुर्आनु लिउन्ज़ि–र कुम् बिही व मम् ब–ल–ग़ अइन्नकुम् ल–तश्हदू–न अन्–न म–अ़ल्लाहि आलि–हतन् उख़्रा कुल् ला अश्हदु कुल् इन्नमा हु–व इलाहुंव्वाहिदुंव्–व इन्ननी बरीउम् मिम्मा तुश्रिकून(19)अल्लज़ी–न आतैनाहुमुल् किता–ब यअ़्रिफ़ू–नहू कमा यअ़्रिफ़ू–न अब्ना–अहुम् अल्लज़ी–न ख़सिरू अन्फ़ु–सहुम् फ़हुम् ला युअ्मिनून(20)

तुम फ़रमाओ क्या अल्लाह के सिवा किसी और को वाली बनाऊं। (फ़ा36) वह अल्लाह जिसने आसमान और ज़मीन पैदा किये और वह खिलाता है और खाने से पाक है। (फ़ा37) तुम फ़रमाओ मुझे हुक्म हुआ है कि सबसे पहले गर्दन रखूं (फ़ा38) और हरगिज़ शिर्क वालों में से न होना।(14) तुम फ़रमाओ अगर मैं अपने रब की नाफ़रमानी करूं तो मुझे बड़े दिन(फ़ा39)के अ़ज़ाब का डर है।(15) उस दिन जिससे अ़ज़ाब फेर दिया जाये (फ़ा40) ज़रूर उस पर अल्लाह की मेहर हुई और यही खुली कामयाबी है।(16)और अगर तुझे अल्लाह कोई बुराई (फ़ा41) पहुंचाये तो उसके सिवा उसका कोई दूर करने वाला नहीं और अगर तुझे भलाई पहुंचाये (फ़ा42) तो वह सब कुछ कर सकता है।(17) (फ़ा43) और वही ग़ालिब है अपने बन्दों पर और वही है हिकमत वाला ख़बरदार।(18) तुम फ़रमाओ सबसे बड़ी गवाही किसकी (फ़ा44) तुम फ़रमाओ कि अल्लाह गवाह है मुझ में और तुम में (फ़ा45) और मेरी तरफ़ इस क़ुरआन की 'वही' हुई कि मैं इससे तुम्हें डराऊं (फ़ा46) और जिन जिन को पहुंचे (फ़ा47) तो क्या तुम (फ़ा48) यह गवाही देते हो कि अल्लाह के साथ और ख़ुदा हैं तुम फ़रमाओ(फ़ा49)कि मैं यह गवाही नहीं देता (फ़ा50) तुम फ़रमाओ कि बह तो एक ही मअ़बूद है(फ़ा51)और मैं बेज़ार हूं उनसे जिनको तुम शरीक ठहराते हो।(19)(फ़ा52)जिनको हमने किताब दी(फ़ा53)इस नबी को पहचानते हैं(फ़ा54)जैसा अपने बेटों को पहचानते हैं(फ़ा55)जिन्होंने अपनी जान नुक़सान में डाली वह ईमान नहीं लाते।(20) (रुकूअ़ 8)

(फ़ा36) शाने नुज़ूलः जब कुफ़्फ़ार ने हुज़ूरे अक़दस सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को अपने बाप दादा के दीन की दावत दी तो यह आयत नाज़िल हुई (फ़ा37) यानी ख़ल्क़ सब उसकी मोहताज है वह सब से बे नियाज़ (फ़ा38) क्योंकि नबी अपनी उम्मत से दीन में साबिक़ होते हैं (फ़ा39) यानी रोज़े क़ियामत (फ़ा40) और नजात दी जाये (फ़ा41) बीमारी या तंगदस्ती या और कोई बला (फ़ा42) मिस्ले सेहत व दौलत वग़ैरह के (फ़ा43) क़ादिरे मुतलक़ है हर शय पर ज़ाती क़ुदरत रखता है कोई उसकी मशीयत के ख़िलाफ़ कुछ नहीं कर सकता तो कोई उसके सिवा मुस्तहिक़े इबादत कैसे हो सकता है यह रद्दे शिर्क की दिल में असर करने वाली दलील है (फ़ा44) शाने नुज़ूलः अहले मक्का रसूले करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से कहने लगे कि ऐ मुहम्मद (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) हमें कोई ऐसा सुबूत दिखाईये जो आपकी रिसालत की गवाही देता हो इस पर यह आयते करीमा नाज़िल हुई (फ़ा45) और इतनी बड़ी क़ाबिले क़ुबूल गवाही और किस की हो सकती है (फ़ा46) यानी अल्लाह तआ़ला मेरी नबुव्वत की शहादत देता है इस लिए कि उसने मेरी तरफ़ इस क़ुरआन की वही फ़रमाई और यह ऐसा मोअ्जेज़ा है कि तुम बावजूद फ़सीह व बलीग़ साहबे ज़बान होने के उसके मुक़ाबले से आजिज़ रहे तो इस किताब का मुझ पर **(बक़िया सफ़हा 232 पर)**

وَمَنْ اَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرٰى عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا اَوْ كَذَّبَ بِاٰيٰتِهٖ ؕ اِنَّهٗ لَا يُفْلِحُ الظّٰلِمُوْنَ ۝٢١ وَيَوْمَ نَحْشُرُهُمْ جَمِيْعًا ثُمَّ نَقُوْلُ لِلَّذِيْنَ اَشْرَكُوْۤا اَيْنَ شُرَكَآؤُكُمُ الَّذِيْنَ كُنْتُمْ
تَزْعُمُوْنَ ۝٢٢ ثُمَّ لَمْ تَكُنْ فِتْنَتُهُمْ اِلَّاۤ اَنْ قَالُوْا وَاللّٰهِ رَبِّنَا مَا كُنَّا مُشْرِكِيْنَ ۝٢٣ اُنْظُرْ كَيْفَ كَذَبُوْا عَلٰۤى اَنْفُسِهِمْ وَضَلَّ عَنْهُمْ مَّا كَانُوْا يَفْتَرُوْنَ ۝٢٤ وَمِنْهُمْ
مَّنْ يَّسْتَمِعُ اِلَيْكَ ۚ وَجَعَلْنَا عَلٰى قُلُوْبِهِمْ اَكِنَّةً اَنْ يَّفْقَهُوْهُ وَفِيْۤ اٰذَانِهِمْ وَقْرًا ؕ وَاِنْ يَّرَوْا كُلَّ اٰيَةٍ لَّا يُؤْمِنُوْا بِهَا ؕ حَتّٰۤى اِذَا جَآءُوْكَ يُجَادِلُوْنَكَ يَقُوْلُ
الَّذِيْنَ كَفَرُوْۤا اِنْ هٰذَاۤ اِلَّاۤ اَسَاطِيْرُ الْاَوَّلِيْنَ ۝٢٥ وَهُمْ يَنْهَوْنَ عَنْهُ وَيَنْـَٔوْنَ عَنْهُ ۚ وَاِنْ يُّهْلِكُوْنَ اِلَّاۤ اَنْفُسَهُمْ وَمَا يَشْعُرُوْنَ ۝٢٦ وَلَوْ تَرٰۤى اِذْ وُقِفُوْا عَلَى
النَّارِ فَقَالُوْا يٰلَيْتَنَا نُرَدُّ وَلَا نُكَذِّبَ بِاٰيٰتِ رَبِّنَا وَنَكُوْنَ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ ۝٢٧ بَلْ بَدَا لَهُمْ مَّا كَانُوْا يُخْفُوْنَ مِنْ قَبْلُ ؕ وَلَوْ رُدُّوْا لَعَادُوْا لِمَا نُهُوْا عَنْهُ وَاِنَّهُمْ لَكٰذِبُوْنَ ۝٢٨

व मन् अज़्लमु मिम्मनिफ़्तरा अ़—लल्लाहि कज़िबन् औ कज़्ज़—ब बिआयातिही इन्नहू ला युफ़्लिहुज़्— ज़ालिमून(21)व यौ—म नह्शुरुहुम् जमीअ़न् सुम्—म नकूलु लिल्लज़ी—न अश्रकू ऐ—न शु—रकाउ कुमुल्लज़ी—न कुन्तुम् तज़्अुमून(22)सुम्—म लम् तकुन् फ़ित्नतुहुम् इल्ला अन् क़ालू वल्लाहि रब्बिना मा कुन्ना मुश्रिकीन(23)उन्ज़ुर् कै—फ़ क—ज़बू अ़ला अन्फ़ुसिहिम् व ज़ल्—ल अ़न्हुम् मा कानू यफ़्तरून(24)व मिन्हुम् मंय्यस्तमिअु इलै—क व ज—अ़ल्ना अ़ला कुलूबिहिम् अकिन्नतन् अंय्यफ़्—क़हूहु व फ़ी आज़ानिहिम् वक़्रन् व इंय्यरौ कुल्—ल आ—यतिल् ला युअ्मिनू बिहा हत्ता इज़ा जाऊ—क युजादिलू—न—क यकू—लुल्लज़ी—न क—फ़रू इन् हाज़ा इल्ला असातीरुल् अव्वलीन(25)व हुम् यन्हौ—न अ़न्हु व यन्औ—न अ़न्हु व इंय्युह्लिकू—न इल्ला अन्फ़ु—सहुम् व मा यश्अुरून(26)व लौ तरा इज़् वुक़िफ़ू अ़लन्नारि फ़क़ालू यालै—तना नुरद्दु व ला नुकज़्ज़ि—ब बिआयाति रब्बिना व नकू—न मिनल्मुअ्मिनीन(27)बल् बदा लहुम् मा कानू युख़्फ़ू—न मिन् क़ब्लु व लौ रुद्दू ल—आ़दू लिमा नुहू अ़न्हु व इन्नहुम् लकाज़िबून(28)

और उससे बढ़ कर ज़ालिम कौन जो अल्लाह पर झूठ बांधे (फ़ा56) या उसकी आयतें झुठलाये बेशक ज़ालिम फ़लाह न पायेंगे।(21) और जिस दिन हम सबको उठायेंगे फिर मुश्रिकों से फ़रमायेंगे कहां है तुम्हारा वह शरीक जिनका तुम दावा करते थे।(22) फिर उनकी कुछ बनावट न रही (फ़ा57) मगर यह कि बोले हमें अपने रब अल्लाह की क़सम कि हम मुश्रिक न थे।(23) देखो कैसा झूठ बांधा ख़ुद अपने ऊपर (फ़ा58) और गुम गईं उनसे जो बातें बनाते थे।(24) और उनमें कोई वह है जो तुम्हारी तरफ़ कान लगाता है (फ़ा59) और हमने उनके दिलों पर ग़िलाफ़ कर दिये हैं कि उसे न समझें और उनके कानों में टेंट (रुकावट) और अगर सारी निशानियां देखें तो उन पर ईमान न लायेंगे यहां तक कि जब तुम्हारे हुज़ूर तुम से झगड़ते हाज़िर हों, तो काफ़िर कहें यह तो नहीं मगर अगलों की दास्तानें।(25) (फ़ा60) और वह उससे रोकते (फ़ा61) और उससे दूर भागते हैं और हलाक नहीं करते मगर अपनी जानें (फ़ा62) और उन्हें शुऊर नहीं। (26) और कभी तुम देखो जब वह आग पर खड़े किये जायेंगे तो कहेंगे काश किसी तरह हम वापस भेजे जायें (फ़ा63) और अपने रब की आयतें न झुटलायें और मुसलमान हो जायें।(27) बल्कि उन पर खुल गया जो पहले छुपाते थे (फ़ा64) और अगर वापस भेजे जायें तो फिर वही करें जिससे मना किये गए थे और बेशक वह ज़रूर झूठे हैं।(28)

(फ़ा56) उसका शरीक ठहराये या जो बात उसकी शान के लायक़ न हो उसकी तरफ़ निस्बत करे (फ़ा57) यानी कुछ मअ़्ज़ेरत न मिली (फ़ा58) कि उम्र भर के शिर्क ही से मुकर गए। (फ़ा59) अबू सुफ़ियान, वलीद व नज़र और अबू जहल वग़ैरह जमा होकर नबीए करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की तिलावते क़ुरआन पाक सुनने लगे तो नज़र से उसके साथियों ने कहा कि मुहम्मद (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) क्या कहते हैं कहने लगा मैं नहीं जानता ज़बान को हरकत देते हैं और पहलों के क़िस्से कहते हैं जैसे मैं तुम्हें सुनाया करता हूं अबू सुफ़ियान ने कहा कि उनकी बातें मुझे हक़ मालूम होती हैं अबू जहल ने कहा कि उसका इक़रार करने से मर जाना बेहतर है इस पर यह आयते करीमा नाज़िल हुई (फ़ा60) इससे उनका मतलब कलाम पाक की वहीए इलाही होने का इंकार करना है (फ़ा61) यानी मुश्रिकीन लोगों को क़ुरआन शरीफ़ से या रसूले करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से आप पर ईमान लाने और आपका इत्तेबाअ़ करने से रोकते हैं। शाने नुज़ूलः यह आयत कुफ़्फ़ारे मक्का के हक़ में नाज़िल हुई जो लोगों को सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम पर ईमान लाने और आपकी **(बक़िया सफ़हा 232 पर)**

وَقَالُوٓا إِنْ هِىَ إِلَّا حَيَاتُنَا الدُّنْيَا وَمَا نَحْنُ بِمَبْعُوثِينَ ۝٢٩ وَلَوْ تَرَىٰٓ إِذْ وُقِفُوا عَلَىٰ رَبِّهِمْ ۚ قَالَ أَلَيْسَ هَٰذَا بِالْحَقِّ ۚ قَالُوا بَلَىٰ وَرَبِّنَا ۚ قَالَ فَذُوقُوا الْعَذَابَ بِمَا كُنتُمْ تَكْفُرُونَ ۝٣٠

قَدْ خَسِرَ الَّذِينَ كَذَّبُوا بِلِقَآءِ اللَّهِ ۖ حَتَّىٰٓ إِذَا جَآءَتْهُمُ السَّاعَةُ بَغْتَةً قَالُوا يَٰحَسْرَتَنَا عَلَىٰ مَا فَرَّطْنَا فِيهَا وَهُمْ يَحْمِلُونَ أَوْزَارَهُمْ عَلَىٰ ظُهُورِهِمْ ۚ أَلَا سَآءَ مَا يَزِرُونَ ۝٣١

وَمَا الْحَيَوٰةُ الدُّنْيَآ إِلَّا لَعِبٌ وَلَهْوٌ ۖ وَلَلدَّارُ الْءَاخِرَةُ خَيْرٌ لِّلَّذِينَ يَتَّقُونَ ۗ أَفَلَا تَعْقِلُونَ ۝٣٢ قَدْ نَعْلَمُ إِنَّهُۥ لَيَحْزُنُكَ الَّذِى يَقُولُونَ ۖ فَإِنَّهُمْ لَا يُكَذِّبُونَكَ وَلَٰكِنَّ

الظَّٰلِمِينَ بِـَٔايَٰتِ اللَّهِ يَجْحَدُونَ ۝٣٣ وَلَقَدْ كُذِّبَتْ رُسُلٌ مِّن قَبْلِكَ فَصَبَرُوا عَلَىٰ مَا كُذِّبُوا وَأُوذُوا حَتَّىٰٓ أَتَىٰهُمْ نَصْرُنَا ۚ وَلَا مُبَدِّلَ لِكَلِمَٰتِ اللَّهِ ۚ وَلَقَدْ جَآءَكَ

مِن نَّبَإِى الْمُرْسَلِينَ ۝٣٤ وَإِن كَانَ كَبُرَ عَلَيْكَ إِعْرَاضُهُمْ فَإِنِ اسْتَطَعْتَ أَن تَبْتَغِىَ نَفَقًا فِى الْأَرْضِ أَوْ سُلَّمًا فِى السَّمَآءِ فَتَأْتِيَهُم بِـَٔايَةٍ ۚ وَلَوْ شَآءَ اللَّهُ

व क़ालू इन् हि–य इल्ला ह़यातु–नद्दुन्या व मा नह़्नु बि–मब्अ़ूसीन(29)व लौ तरा इज़् वुक़िफ़ू अ़ला रब्बिहिम् क़ा–ल अलै–स हाज़ा बिल्ह़क़्क़ि क़ालू बला व रब्बिना क़ा–ल फ़ज़ूक़ुल् अ़ज़ा–ब बिमा कुन्तुम् तक्फ़ुरून(30)क़द् ख़सि–रल्लज़ी–न कज़्ज़बू बिलिक़ाइल्लाहि ह़त्ता इज़ा जाअत्–हुमुस्सा–अ़तु बग़्–त–तन् क़ालू या ह़स्–तना अ़ला मा फ़र्रत्ना फ़ीहा व हुम् यह़्मिलू–न औज़ा–रहुम् अ़ला ज़ुहूरिहिम् अला सा–अ मा यज़िरून(31)व मल्ह़यातुद्दुन्या इल्ला लअ़िबुंव् व लह्वुन् व लद्दारुल् आख़ि–रतु ख़ैरुल् लिल्लज़ी–न यत्तक़ू–न अ–फ़ला तअ़्क़िलून(32)क़द् नअ़्–लमु इन्नहू ल–यह़्ज़ुनुकल्लज़ी यक़ूलू–न फ़–इन्नहुम् ला युकज़्ज़िबू–न–क व लाकिन्नज़्ज़ा–लिमी–न बिआयातिल्लाहि यज्ह़दून(33)व ल–क़द् कुज़्ज़िबत् रुसुलुम् मिन् क़ब्लि–क फ़–स–बरू अ़ला मा कुज़्ज़िबू व ऊज़ू ह़त्ता अताहुम् नस्रुना व ला मुबद्दि–ल लि–कलिमातिल्लाहि व ल–क़द् जाअ–क मिन् न–बइल् मुर्सलीन(34)व इन् का–न कबु–र अ़लै–क इअ़्–राज़ुहुम् फ़–इनिस्त–तअ़्–त अन् तब्तग़ि–य न–फ़–क़न् फ़िल्अर्ज़ि औ सुल्ल–मन् फ़िस्समाइ फ़–तअ्ति–यहुम् बिआ–यतिन् व लौ शाअल्लाहु

और बोलें (फ़ा65) वह तो यही हमारी दुनिया की ज़िन्दगी है और हमें उठना नहीं।(29) (फ़ा66) और कभी तुम देखो जब अपने रब के हुज़ूर खड़े किये जायेंगे फ़रमाएगा क्या यह हक़ नहीं है (फ़ा67) कहेंगे क्यों नहीं हमें अपने रब की क़सम फ़रमाएगा तो अब अज़ाब चखो बदला अपने कुफ़्र का।(30) (रुकूअ़ 9) बेशक 'हार' में रहे वह जिन्होंने अपने रब से मिलने का इन्कार किया यहां तक कि जब उन पर क़ियामत अचानक आ गई बोले, हाय अफ़सोस हमारा इस पर कि उसके मानने में हमने तक़सीर की और वह अपने (फ़ा68) बोझ अपनी पीठ पर लादे हुए हैं अरे कितना बुरा बोझ उठाये हैं।(31)(फ़ा69) और दुनिया की ज़िन्दगी नहीं मगर खेल कूद(फ़ा70) और बेशक पिछला घर भला उनके लिये जो डरते हैं (फ़ा71) तो क्या तुम्हें समझ नहीं।(32) हमें मालूम है कि तुम्हें रंज देती है वह बात जो यह कह रहे हैं (फ़ा72) तो वह तुम्हें नहीं झुठलाते (फ़ा73) बल्कि ज़ालिम अल्लाह की आयतों से इन्कार करते हैं।(33) (फ़ा74) और तुम से पहले रसूल झुठलाये गये तो उन्होंने सब्र किया उस झुटलाने पर और ईज़ायें पाने पर यहां तक कि उन्हें हमारी मदद आई (फ़ा75) और अल्लाह की बातें बदलने वाला कोई नहीं (फ़ा76) और तुम्हारे पास रसूलों की ख़बरें आ ही चुकी हैं।(34) (फ़ा77) और अगर उनका मुंह फेरना तुम पर शाक़ गुज़रा है (फ़ा78) तो अगर तुमसे हो सके तो ज़मीन में कोई सुरंग तलाश कर लो या आसमान में ज़ीना फिर उनके लिए निशानी ले आओ (फ़ा79) और अल्लाह चाहता तो

(फ़ा65) यानी कुफ़्फ़ार जो बअ़्स व आख़िरत के मुन्किर हैं और उसका वाक़िआ़ यह था कि जब नबीए करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने कुफ़्फ़ार को क़ियामत के अहवाल और आख़िरत की ज़िन्दगानी ईमानदारों और फ़रमांबरदारों के सवाब काफ़िरों और नाफ़रमानों पर अ़ज़ाब का ज़िक्र फ़रमाया तो काफ़िर कहने लगे कि ज़िन्दगी तो बस दुनिया ही की है (फ़ा66) यानी मरने के बाद (फ़ा67) क्या तुम मरने के बाद ज़िन्दा नहीं किये गए (फ़ा68) गुनाहों के (फ़ा69) हदीस शरीफ़ में है कि काफ़िर जब अपनी क़ब्र से निकलेगा तो उसके सामने निहायत क़बीह भयानक और बहुत बदबूदार सूरत आएगी वह काफ़िर से कहेगी तू मुझे पहचानता है काफ़िर कहेगा नहीं तो वह काफ़िर से कहेगी मैं तेरा ख़बीस अमल हूं दुनिया में तू मुझ पर सवार रहा था आज मैं तुझ पर सवार हूंगा और तुझे तमाम ख़ल्क़ में रुसवा करूंगा फिर वह उस पर सवार हो जाता है (फ़ा70) जिसे बक़ा नहीं जल्द गुज़र जाती है और नेकियां और ताअ़तें अगरचे मोमिनीन से दुनिया ही में वाक़ेअ़ हों लेकिन वह उमूरे आख़िरत में से हैं (फ़ा71) इससे साबित हुआ कि आमाले मुत्तक़ीन के सिवा दुनिया में जो कुछ है सब लह्व व लइब है **(बक़िया सफ़हा 235 पर)**

لَجَمَعَهُمْ عَلَى الْهُدٰى فَلَا تَكُوْنَنَّ مِنَ الْجٰهِلِيْنَ ﴿۳۵﴾ اِنَّمَا يَسْتَجِيْبُ الَّذِيْنَ يَسْمَعُوْنَ ؕ وَالْمَوْتٰى يَبْعَثُهُمُ اللّٰهُ ثُمَّ اِلَيْهِ يُرْجَعُوْنَ ﴿۳۶﴾ وَقَالُوْا لَوْلَا نُزِّلَ عَلَيْهِ اٰيَةٌ
مِّنْ رَّبِّهٖ ؕ قُلْ اِنَّ اللّٰهَ قَادِرٌ عَلٰٓى اَنْ يُّنَزِّلَ اٰيَةً وَّلٰكِنَّ اَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿۳۷﴾ وَمَا مِنْ دَآبَّةٍ فِى الْاَرْضِ وَلَا طٰٓئِرٍ يَّطِيْرُ بِجَنَاحَيْهِ اِلَّآ اُمَمٌ اَمْثَالُكُمْ ؕ مَا فَرَّطْنَا
فِى الْكِتٰبِ مِنْ شَىْءٍ ثُمَّ اِلٰى رَبِّهِمْ يُحْشَرُوْنَ ﴿۳۸﴾ وَالَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا صُمٌّ وَّبُكْمٌ فِى الظُّلُمٰتِ ؕ مَنْ يَّشَاِ اللّٰهُ يُضْلِلْهُ ؕ وَمَنْ يَّشَاْ يَجْعَلْهُ عَلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ﴿۳۹﴾
قُلْ اَرَءَيْتَكُمْ اِنْ اَتٰىكُمْ عَذَابُ اللّٰهِ اَوْ اَتَتْكُمُ السَّاعَةُ اَغَيْرَ اللّٰهِ تَدْعُوْنَ ۚ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿۴۰﴾ بَلْ اِيَّاهُ تَدْعُوْنَ فَيَكْشِفُ مَا تَدْعُوْنَ اِلَيْهِ اِنْ شَآءَ
وَتَنْسَوْنَ مَا تُشْرِكُوْنَ ﴿۴۱﴾ وَلَقَدْ اَرْسَلْنَآ اِلٰٓى اُمَمٍ مِّنْ قَبْلِكَ فَاَخَذْنٰهُمْ بِالْبَاْسَآءِ وَالضَّرَّآءِ لَعَلَّهُمْ يَتَضَرَّعُوْنَ ﴿۴۲﴾ فَلَوْلَآ اِذْ جَآءَهُمْ بَاْسُنَا تَضَرَّعُوْا

ल–ज–म–अ़हुम् अ़–लल्हुदा फ़ला तकूनन्–न मिनल् जाहिलीन(35)इन्नमा यस्तजी–बुल्लज़ी–न यस्मअू–न वल्मौता यब्अ़सुहुमुल्लाहु सुम्–म इलैहि युर्जअू–न(36)व क़ालू लौला नुज़्ज़ि–ल अ़लैहि आ–यतुम् मिर्रब्बिही कुल् इन्नल्ला–ह क़ादिरुन् अ़ला अंय्यु–नज़्ज़ि–ल आयतंव् व लाकिन्–न अक्स–रहुम् ला यअ्–लमून(37)व मा मिन् दाब्बतिन् फ़िल्अर्ज़ि व ला ताइरिंय्यतीरु बि–जनाहैहि इल्ला उ–ममुन् अम्सालुकुम् मा फ़र्रत्ना फ़िल्किताबि मिन् शैइन् सुम्–म इला रब्बिहिम् युह़्शरून (38)वल्लज़ी–न कज़्ज़बू बिआयातिना सुम्मुंव्–व बुक्मुन् फ़िज़्ज़ुलुमाति मंय्य–श इल्लाहु युज़्लिल्हु व मंय्यशअ् यज्अ़ल्हु अ़ला सिरातिम्–मुस्तक़ीम(39)कुल् अ–रऐ–तकुम् इन् अता–कुम् अ़ज़ाबुल्लाहि औ अतत्कुमुस्–सा–अ़तु अग़ैरल्लाहि तदअू–न इन् कुन्तुम् सादिक़ीन(40)बल् इय्याहु तदअू–न फ़–यक्शिफ़ु मा तदअू–न इलैहि इन् शा–अ व तन्सौ–न मा तुश्रिकून(41)व ल–क़द् अर्सल्ना इला उ–ममिम् मिन् क़ब्लि–क फ़–अ–ख़ज़्नाहुम् बिल्बअ्साइ वज़्ज़र्राइ ल–अ़ल्लहुम् य–त–ज़र्रअू–न (42)फ़–लौला इज़् जा–अहुम् बअ्सुना तज़र्रअू

उन्हें हिदायत पर इकट्ठा कर देता तो ऐ सुनने वाले तू हरगिज़ नादान न बन।(35) मानते तो वही हैं जो सुनते हैं(फ़ा80) और उन मुर्दा दिलों (फ़ा81) को अल्लाह उठायेगा (फ़ा82) फिर उसकी तरफ़ हांके जायेंगे।(36) (फ़ा83) और बोले (फ़ा84) उन पर कोई निशानी क्यों न उतरी उनके रब की तरफ़ से (फ़ा85) तुम फ़रमाओ कि अल्लाह क़ादिर है कि कोई निशानी उतारे लेकिन उनमें बहुत निरे जाहिल हैं।(37) (फ़ा86) और नहीं कोई ज़मीन में चलने वाला और न कोई परिन्द कि अपने परों उड़ता है मगर तुम जैसी उम्मतें (फ़ा87) हमने इस किताब में कुछ उठा न रखा (फ़ा88) फिर अपने रब की तरफ़ उठाये जायेंगे।(38) (फ़ा89) और जिन्होंने हमारी आयतें झुटलाईं बहरे और गुंगे हैं(फ़ा90) अन्धेरों में (फ़ा91) अल्लाह जिसे चाहे गुमराह करे और जिसे चाहे सीधे रास्ते डाल दे।(39) (फ़ा92) तुम फ़रमाओ भला बताओ तो अगर तुम पर अल्लाह का अज़ाब आये या क़ियामत क़ाइम हो क्या अल्लाह के सिवा किसी और को पुकारोगे (फ़ा93) अगर सच्चे हो।(40) (फ़ा94) बल्कि उसी की पुकारोगे तो वह अगर चाहे (फ़ा95) जिस पर उसे पुकारते हो, उसे उठा ले और शरीकों को भूल जाओगे।(41) (फ़ा96) (रुकूअ़ 10) और बेशक हमने तुम से पहली उम्मतों की तरफ़ रसूल भेजे तो उन्हें सख़्ती और तक़लीफ़ से पकड़ा (फ़ा97)कि वह किसी तरह गिड़गिड़ायें।(42) (फ़ा98) तो क्यों न हुआ कि जब उन पर हमारा अज़ाब आया तो गिड़गिड़ाये होते

(फ़ा80) दिल लगाकर समझने के लिए वही पन्द-पज़ीर होते हैं और दीने हक़ की दावत क़बूल करते हैं (फ़ा81) यानी कुफ़्फ़ार (फ़ा82) रोज़े क़ियामत (फ़ा83) और अपने आमाल की जज़ा पायेंगे (फ़ा84) कुफ़्फ़ारे मक्का (फ़ा85) कुफ़्फ़ार की गुमराही और उनकी सरकशी इस हद तक पहुंच गई कि वह कसीर आयात व मोअ़जेज़ात जो उन्होंने सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से मुशाहदा किये थे उनपर क़नाअ़त न की और सबसे मुकर गए और ऐसी आयत तलब करने लगे जिसके साथ अज़ाबे इलाही हो जैसा कि उन्होंने कहा था *अल्लाहुम्म इन् का–न हाज़ा हुवल् हक़्–क़ मिन् अ़िन्दि–क फ़–अम्तिर् अ़लैना ह़िजा–रतम्– मि–नस्समाइ* या रब अगर यह हक़ है तेरे पास से तो हम पर आसमान से पत्थर बरसा (तफ़सीर अबुस्सऊद) (फ़ा86) नहीं जानते कि उसका नुज़ूल उनके लिए बला है कि इंकार करते ही हलाक कर दिये जायेंगे (फ़ा87) यानी तमाम जानदार ख़्वाह वह बहाइम हों या दरिन्दे या परिन्द तुम्हारी मिस्ल उम्मतें हैं यह मुमासलत जमीअ़े वुजूह से तो है नहीं बाज़ से है उन वुजूह के बयान में बाज़ **(बक़िया सफ़हा 236 पर)**

وَلٰكِنْ قَسَتْ قُلُوْبُهُمْ وَزَيَّنَ لَهُمُ الشَّيْطٰنُ مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿٤٣﴾ فَلَمَّا نَسُوْا مَا ذُكِّرُوْا بِهٖ فَتَحْنَا عَلَيْهِمْ اَبْوَابَ كُلِّ شَیْءٍ ۭ حَتّٰۤى اِذَا فَرِحُوْا بِمَاۤ اُوْتُوْۤا اَخَذْنٰهُمْ
بَغْتَةً فَاِذَا هُمْ مُّبْلِسُوْنَ ﴿٤٤﴾ فَقُطِعَ دَابِرُ الْقَوْمِ الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا ۭ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿٤٥﴾ قُلْ اَرَءَيْتُمْ اِنْ اَخَذَ اللّٰهُ سَمْعَكُمْ وَاَبْصَارَكُمْ وَخَتَمَ
عَلٰى قُلُوْبِكُمْ مَّنْ اِلٰهٌ غَيْرُ اللّٰهِ يَاْتِيْكُمْ بِهٖ ۭ اُنْظُرْ كَيْفَ نُصَرِّفُ الْاٰيٰتِ ثُمَّ هُمْ يَصْدِفُوْنَ ﴿٤٦﴾ قُلْ اَرَءَيْتَكُمْ اِنْ اَتٰىكُمْ عَذَابُ اللّٰهِ بَغْتَةً اَوْ جَهْرَةً
هَلْ يُهْلَكُ اِلَّا الْقَوْمُ الظّٰلِمُوْنَ ﴿٤٧﴾ وَمَا نُرْسِلُ الْمُرْسَلِيْنَ اِلَّا مُبَشِّرِيْنَ وَمُنْذِرِيْنَ ۚ فَمَنْ اٰمَنَ وَاَصْلَحَ فَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ ﴿٤٨﴾
وَالَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا يَمَسُّهُمُ الْعَذَابُ بِمَا كَانُوْا يَفْسُقُوْنَ ﴿٤٩﴾

व लाकिन् क़–सत् कुलूबुहुम् व ज़य्–य–न लहुमुश्शैतानु मा कानू यअ्–मलून(43)फ़–लम्मा नसू मा ज़ुक्किरू बिही फ़–तह्ना अ़लैहिम् अब्वा–ब कुल्लि शैइन् ह़त्ता इज़ा फ़रिहू बिमा ऊतू अ–ख़ज़्नाहुम् बग़्–तन् फ़–इज़ा हुम् मुब्लिसून(44)फ़कुति–अ दाबिरुल् क़ौमिल्लज़ी–न ज़–लमू वल्ह़म्दु लिल्लाहि रब्बिल् आ–लमीन(45)क़ुल् अ–रऐतुम् इन् अ–ख़–ज़ल्लाहु सम्–अकुम् व अब्सा–रकुम् व ख़–त–म अ़ला क़ुलूबिकुम् मन् इलाहुन् ग़ैरुल्लाहि यअ्तीकुम् बिही उन्ज़ुर् कै–फ़ नुसर्रिफ़ुल् आयाति सुम्–म हुम् यस्दिफ़ून(46)क़ुल् अ–रऐ–तकुम् इन् अताकुम् अ़ज़ाबुल्लाहि बग़्–त–तन् औ जह्–र–तन् हल् युह्लकु इल्लल् क़ौमुज़्ज़ालिमून(47)व मा नुर्सिलुल् मुर्सली–न इल्ला मुबश्शिरी–न व मुन्ज़िरी–न फ़–मन् आ–म–न व अस्ल–ह फ़ला ख़ौफ़ुन् अ़लैहिम् व ला हुम् यह़्ज़नून(48) वल्लज़ी–न कज़्ज़बू बिआयातिना यमस्सुहुमुल् अ़ज़ाबु बिमा कानू यफ़्सुक़ून(49)

लेकिन उनके दिल तो सख़्त हो गए (फ़ा99) और शैतान ने उनके काम उनकी निगाह में भले कर दिखाये।(43) फिर जब उन्होंने भुला दिया जो नसीहतें उनको की गई थीं (फ़ा100) हमने उन पर हर चीज़ के दरवाज़े खोल दिये (फ़ा101) यहां तक कि जब ख़ुश हुए उस पर जो उन्हें मिला (फ़ा102) तो हमने अचानक उन्हें पकड़ लिया (फ़ा103) अब वह आस टूटे रह गए।(44) तो जड़ काट दी गई ज़ालिमों की (फ़ा104) और सब ख़ूबियों सराहा अल्लाह रब सारे जहान का।(45) (फ़ा105) तुम फ़रमाओ भला बताओ तो अगर अल्लाह तुम्हारे कान आंख ले ले, और तुम्हारे दिलों पर मुहर कर दे (फ़ा106) तो अल्लाह के सिवा कौन ख़ुदा है कि तुम्हें यह चीज़ें ला दे (फ़ा107) देखो हम किस किस रंग से आयतें बयान करते हैं फिर वह मुंह फेर लेते हैं।(46) तुम फ़रमाओ भला बताओ तो अगर तुम पर अल्लाह का अज़ाब आये अचानक (फ़ा108) या खुल्लम खुल्ला (फ़ा109) तो कौन तबाह होगा सिवा ज़ालिमों के।(47) (फ़ा110) और हम नहीं भेजते रसूलों को मगर ख़ुशी और डर सुनाते (फ़ा111) तो जो ईमान लाये और संवरे (फ़ा112) उनको न कुछ अन्देशा न कुछ ग़म।(48) और जिन्होंने हमारी आयतें झुटलाईं उन्हें अज़ाब पहुंचेगा बदला उनकी बे हुक्मी का।(49)

(फ़ा99) वह बारगाहे इलाही में आ़जिज़ी करने के बजाए कुफ़्र व तकज़ीब पर मुसिर रहे (फ़ा100) और वह किसी तरह पन्द पज़ीर न हुए न पेश आई हुई मुसीबतों से न अम्बिया की नसीहतों से (फ़ा101) सेहत व सलामत और वुसअ़ते रिज़्क़ व ऐश वग़ैरह के (फ़ा102) और अपने आपको उसका मुस्तहिक़ समझे और क़ारून की तरह तकब्बुर करने लगे (फ़ा103) और मुबतलाए अ़ज़ाब किया। (फ़ा104) और सब के सब हलाक कर दिये गए कोई बाक़ी न छोड़ा गया (फ़ा105) इस से मालूम हुआ कि गुमराहों बे दीनों ज़ालिमों की हलाकत अल्लाह तआ़ला की निअ़मत है इस पर शुक्र करना चाहिए (फ़ा106) और इल्म व मअ़रेफ़त का तमाम निज़ाम दरहम बरहम हो जाये (फ़ा107) उसका जवाब यही है कि कोई नहीं तो अब तौहीद पर क़वी दलील क़ायम हो गई कि जब अल्लाह के सिवा कोई इतनी क़ुदरत व इख़्तियार वाला नहीं तो इबादत का मुस्तहिक़ सिर्फ़ वही है और शिर्क बद तरीन ज़ुल्म व जुर्म है (फ़ा108) जिसके आसार व अ़लामात पहले से मालूम न हों (फ़ा109) आंखों देखते (फ़ा110) यानी काफ़िरों के कि उन्होंने अपनी जानों पर ज़ुल्म किया और हलाकत उनके हक़ में अ़ज़ाब है (फ़ा111) ईमानदारों को जन्नत व सवाब की बशारतें देते और काफ़िरों को जहन्नम व अ़ज़ाब से डराते (फ़ा112) नेक अमल करे।

قُلْ لَّآ اَقُوْلُ لَكُمْ عِنْدِيْ خَزَآئِنُ اللّٰهِ وَلَآ اَعْلَمُ الْغَيْبَ وَلَآ اَقُوْلُ لَكُمْ اِنِّيْ مَلَكٌ ۚ اِنْ اَتَّبِعُ اِلَّا مَا يُوْحٰٓى اِلَيَّ ؕ قُلْ هَلْ يَسْتَوِي الْاَعْمٰى
وَالْبَصِيْرُ ؕ اَفَلَا تَتَفَكَّرُوْنَ ۝ وَاَنْذِرْ بِهِ الَّذِيْنَ يَخَافُوْنَ اَنْ يُّحْشَرُوْٓا اِلٰى رَبِّهِمْ لَيْسَ لَهُمْ مِّنْ دُوْنِهٖ وَلِيٌّ وَّلَا شَفِيْعٌ لَّعَلَّهُمْ يَتَّقُوْنَ ۝ وَلَا
تَطْرُدِ الَّذِيْنَ يَدْعُوْنَ رَبَّهُمْ بِالْغَدٰوةِ وَالْعَشِيِّ يُرِيْدُوْنَ وَجْهَهٗ ؕ مَا عَلَيْكَ مِنْ حِسَابِهِمْ مِّنْ شَيْءٍ وَّمَا مِنْ حِسَابِكَ عَلَيْهِمْ مِّنْ شَيْءٍ فَتَطْرُدَهُمْ
فَتَكُوْنَ مِنَ الظّٰلِمِيْنَ ۝ وَكَذٰلِكَ فَتَنَّا بَعْضَهُمْ بِبَعْضٍ لِّيَقُوْلُوْٓا اَهٰٓؤُلَآءِ مَنَّ اللّٰهُ عَلَيْهِمْ مِّنْۢ بَيْنِنَا ؕ اَلَيْسَ اللّٰهُ بِاَعْلَمَ بِالشّٰكِرِيْنَ ۝ وَاِذَا جَآءَكَ
الَّذِيْنَ يُؤْمِنُوْنَ بِاٰيٰتِنَا فَقُلْ سَلٰمٌ عَلَيْكُمْ كَتَبَ رَبُّكُمْ عَلٰى نَفْسِهِ الرَّحْمَةَ ۙ اَنَّهٗ مَنْ عَمِلَ مِنْكُمْ سُوْٓءًۢا بِجَهَالَةٍ ثُمَّ تَابَ مِنْۢ بَعْدِهٖ وَاَصْلَحَ فَاَنَّهٗ

कुल् ला अकूलु लकुम् अिन्दी ख़ज़ाइनुल्लाहि व ला अअ्–लमुल्ग़ै–ब व ला अकूलु लकुम् इन्नी म–लकुन् इन् अत्तबिअु इल्ला मा यूहा इलय्–य कुल् हल् यस्तविल् अअ्मा वल्बसीरु अ–फला त–त–फक्करून(50)व अन्ज़िर् बिहिल् लज़ी–न यख़ाफू–न अंय्युह्शरू इला रब्बिहिम् लै–स लहुम् मिन् दूनिही वलिय्युंव्–व ला शफ़ीअुल् ल–अल्लहुम् यत्तकून(51)व ला तत्रुदिल्लज़ी–न यद्अू–न रब्बहुम् बिलग़दाति वल्–अशिय्यि युरीदू–न वज्हहू मा अ़लै–क मिन् हिसाबिहिम् मिन् शैइंव्–व मा मिन् हिसाबि–क अ़लैहिम् मिन् शैइन् फ़–तत्रु–दहुम् फ़–तकू–न मिनज़्ज़ालिमीन(52)व कज़ालि–क फ़–तन्ना बअ्–ज़हुम् बि–बअ्ज़िल् लि–यकूलू अ–हाउलाइ मन्नल्लाहु अ़लैहिम् मिम् बैनिना अलैसल्लाहु बि–अअ्–ल–म बिश्शाकिरीन(53)व इज़ा जाअ–कल्लज़ी–न युअ्मिनू–न बिआया–तिना फ़कुल् सलामुन् अ़लैकुम् क–त–ब रब्बुकुम् अ़ला नफ़्सिहिर्रह्–म–त अन्नहू मन् अ़मि–ल मिन्कुम् सूअम् बि–जहा–लतिन् सुम्–म ता–ब मिम् बअ्दिही व अस्–ल–ह फ़–अन्नहू

तुम फ़रमा दो मैं तुम से नहीं कहता कि मेरे पास अल्लाह के ख़ज़ाने हैं और न यह कहूं कि मैं आप ग़ैब जान लेता हूं और न तुम से यह कहूं कि मैं फ़रिश्ता हूं (फ़ा113) मैं तो उसी का ताबेअ् हूं जो मुझे 'वही' आती है (फ़ा114) तुम फ़रमाओ क्या बराबर हो जायेंगे अन्धे और अंखियारे (फ़ा115) तो क्या तुम ग़ौर नहीं करते।(50) (रुकूअ् 11) और इस क़ुरआन से उन्हें डराओ जिन्हें ख़ौफ़ हो कि अपने रब की तरफ़ यूं उठाये जायें कि अल्लाह के सिवा न उनका कोई हिमायती हो न कोई सिफ़ारिशी इस उम्मीद पर कि वह परहेज़गार हो जायें।(51) और दूर न करो उन्हें जो अपने रब को पुकारते हैं सुबह और शाम उस की रज़ा चाहते (फ़ा116) तुम पर उनके हिसाब से कुछ नहीं और उन पर तुम्हारे हिसाब से कुछ नहीं (फ़ा117) फिर उन्हें तुम दूर करो तो यह काम इंसाफ़ से बईद है।(52) और यूं ही हमने उनमें एक को दूसरे के लिए फ़ितना बनाया कि मालदार काफ़िर मोहताज मुसलमानों को देख कर (फ़ा118) कहें क्या यह हैं जिन पर अल्लाह ने एहसान किया हममें से (फ़ा119) क्या अल्लाह ख़ूब नहीं जानता हक़ मानने वालों को।(53) और जब तुम्हारे हुज़ूर वह हाज़िर हों जो हमारी आयतों पर ईमान लाते हैं तो उन से फ़रमाओ तुम पर सलाम तुम्हारे रब ने अपने ज़िम्मए करम पर रहमत लाज़िम कर ली है (फ़ा120) कि तुम में जो कोई नादानी से कुछ बुराई कर बैठे फिर उसके बाद तौबा करे और संवर जाये तो बेशक अल्लाह बख़्शने वाला

(फ़ा113) कुफ़्फ़ार का तरीक़ा था कि वह सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से तरह तरह के सवाल किया करते थे कभी कहते कि आप रसूल हैं तो हमें बहुत सी दौलत और माल दीजिये कि हम कभी मोहताज न हों हमारे लिए पहाड़ों को सोना कर दीजिये कभी कहते कि गुज़श्ता और आईन्दा की ख़बरें सुनाईये और हमें हमारे मुस्तक़बिल की ख़बर दीजिये क्या क्या पेश आएगा ताकि हम मुनाफ़ा हासिल कर लें और नुक़सानों से बचने के पहले से इन्तेज़ाम कर लें कभी कहते हमें क़ियामत का वक़्त बताईये कब आएगी कभी कहते कि आप कैसे रसूल हैं जो खाते पीते भी हैं निकाह भी करते हैं उनकी इन तमाम बातों का इस आयत में जवाब दिया गया कि यह कलाम निहायत बे महल और जाहिलाना है क्यों कि जो शख़्स किसी अमर का मुद्दई हो उससे वही बातें दरियाफ़्त की जा सकती हैं जो उसके दावे से तअ़ल्लुक़ रखती हों ग़ैर-मुतअ़ल्लिक़ बातों का दरियाफ़्त करना और उनको इस दावे के ख़िलाफ़ हुज्जत बनाना इन्तेहा दर्जे का जहल है इस लिए इरशाद हुआ कि आप फ़रमा दीजिये कि मेरा दावा यह तो नहीं कि मेरे पास अल्लाह के ख़ज़ाने हैं जो तुम मुझ से माल व दौलत का सवाल करो और मैं उसकी तरफ़ इल्तेफ़ात न करूं तो रिसालत से मुन्किर हो जाओ न मेरा दावा ज़ाती ग़ैब-दानी का है कि अगर (बक़िया सफ़हा 236 पर)

غَفُورٌ رَّحِيمٌ ۝ وَكَذَٰلِكَ نُفَصِّلُ الْآيَاتِ وَلِتَسْتَبِينَ سَبِيلُ الْمُجْرِمِينَ ۝ قُلْ إِنِّي نُهِيتُ أَنْ أَعْبُدَ الَّذِينَ تَدْعُونَ مِن دُونِ اللَّهِ ۚ قُل لَّا أَتَّبِعُ أَهْوَاءَكُمْ ۙ
قَدْ ضَلَلْتُ إِذًا وَمَا أَنَا مِنَ الْمُهْتَدِينَ ۝ قُلْ إِنِّي عَلَىٰ بَيِّنَةٍ مِّن رَّبِّي وَكَذَّبْتُم بِهِ ۚ مَا عِندِي مَا تَسْتَعْجِلُونَ بِهِ ۚ إِنِ الْحُكْمُ إِلَّا لِلَّهِ ۖ يَقُصُّ الْحَقَّ ۖ
وَهُوَ خَيْرُ الْفَاصِلِينَ ۝ قُل لَّوْ أَنَّ عِندِي مَا تَسْتَعْجِلُونَ بِهِ لَقُضِيَ الْأَمْرُ بَيْنِي وَبَيْنَكُمْ ۗ وَاللَّهُ أَعْلَمُ بِالظَّالِمِينَ ۝ وَعِندَهُ مَفَاتِحُ الْغَيْبِ
لَا يَعْلَمُهَا إِلَّا هُوَ ۚ وَيَعْلَمُ مَا فِي الْبَرِّ وَالْبَحْرِ ۚ وَمَا تَسْقُطُ مِن وَرَقَةٍ إِلَّا يَعْلَمُهَا وَلَا حَبَّةٍ فِي ظُلُمَاتِ الْأَرْضِ وَلَا رَطْبٍ وَلَا يَابِسٍ إِلَّا فِي
كِتَابٍ مُّبِينٍ ۝ وَهُوَ الَّذِي يَتَوَفَّاكُم بِاللَّيْلِ وَيَعْلَمُ مَا جَرَحْتُم بِالنَّهَارِ ثُمَّ يَبْعَثُكُمْ فِيهِ لِيُقْضَىٰ أَجَلٌ مُّسَمًّى ۖ ثُمَّ إِلَيْهِ مَرْجِعُكُمْ ثُمَّ

ग़फ़ूरुर्रहीम(54)व कज़ालि–क नुफ़स्सिलुल् आयाति व लितस्तबी–न सबीलुल् मुज्रिमीन(55)कुल् इन्नी नुहीतु अन् अअ्–बुदल्लज़ी–न तदअू–न मिन् दूनिल्लाहि कुल् ला अत्तबिअु अह्वा–अकुम् क़द् ज़लल्तु इज़ंव्–व मा अना मिनल्–मुह्तदीन(56)कुल् इन्नी अला बय्यि–नतिम् मिर्–रब्बी व कज़्ज़ब्तुम् बिही मा अिन्दी मा तस्तअ्जिलू–न बिही इनिलहुक्मु इल्ला लिल्लाहि य–कुस्सुल् हक़्–क़ व हु–व ख़ैरुल्फ़ासिलीन(57)कुल् लौ अन्–न अिन्दी मा तस्तअ्जिलू–न बिही लकुज़ियल्– अम्रु बैनी व बै–नकुम् वल्लाहु अअ्–लमु बिज़्ज़ा–लिमीन(58)व अिन्दहू मफ़ाति–हुल्ग़ैबि ला यअ्लमुहा इल्ला हु–व व यअ्लमु मा फ़िल्बर्रि वल्बह्रि व मा तस्कुतु मिंव्–व–र–क़तिन् इल्ला यअ्– लमुहा व ला हब्बतिन् फ़ी ज़ुलुमा–तिलअर्ज़ि व ला रत्बिंव्–व ला याबिसिन् इल्ला फ़ी किताबिम् मुबीन(59)व हुवल्लज़ी य–त–वफ़्फ़ाकुम् बिल्लैलि व यअ्–लमु मा जरह्तुम् बिन्नहारि सुम्–म यब्असुकुम् फ़ीहि लियुक़्ज़ा अ–जलुम् मुसम्मन् सुम्–म इलैहि मर्जिअुकुम् सुम्–म

मेहरबान है।(54) और इसी तरह हम आयतों को मुफ़स्सल बयान फ़रमाते हैं (फ़ा121) और इसलिए कि मुजरिमों का रस्ता ज़ाहिर हो जाये।(55) (फ़ा122) (रुकूअ् 12) तुम फ़रमाओ मुझे मना किया गया है कि उन्हें पूजूं जिनको तुम अल्लाह के सिवा पूजते हो (फ़ा123) तुम फ़रमाओ मैं तुम्हारी ख़्वाहिश पर नहीं चलता। (फ़ा124) यूं हो तो मैं बहक जाऊं और राह पर न रहूं।(56) तुम फ़रमाओ मैं तो अपने रब की तरफ़ से रौशन दलील पर हूं (फ़ा125) और तुम उसे झुटलाते हो मेरे पास नहीं जिस की तुम जल्दी मचा रहे हो (फ़ा126) हुक्म नहीं मगर अल्लाह का वह हक़ फ़रमाता है और वह सबसे बेहतर फ़ैसला करने वाला।(57) तुम फ़रमाओ अगर मेरे पास होती वह चीज़ जिसकी तुम जल्दी कर रहे हो (फ़ा127) तो मुझ में तुम में काम ख़त्म हो चुका होता (फ़ा128) और अल्लाह ख़ूब जानता है सितमगारों को। (58) और उसी के पास हैं कुन्जियां ग़ैब की उन्हें वही जानता है (फ़ा129) और जानता है जो कुछ ख़ुश्की और तरी में है और जो पत्ता गिरता है वह उसे जानता है और कोई दाना नहीं ज़मीन की अंधेरियों में और न कोई तर और न ख़ुश्क जो एक रौशन किताब में लिखा न हो।(59) (फ़ा130) और वही है जो रात को तुम्हारी रूहें क़ब्ज़ करता है (फ़ा131) और जानता है जो कुछ दिन में कमाओ फिर तुम्हें दिन में उठाता है कि ठहराई हुई मीआद पूरी हो (फ़ा132) फिर उसी की तरफ़ तुम्हें फिरना है (फ़ा133) फिर

(फ़ा121) ताकि हक़ ज़ाहिर हो और उस पर अमल किया जाये (फ़ा122) ताकि उससे इज्तेनाब किया जाये (फ़ा123) क्योंकि यह अक़्ल व नक़्ल दोनों के ख़िलाफ़ है (फ़ा124) यानी तुम्हारा तरीक़ा इत्तेबाअ़े नफ़्स व ख़्वाहिशे हवा है न कि इत्तबाअ़े दलील इस लिए इख़्तियार करने के क़ाबिल नहीं (फ़ा125) और मुझे इसकी मअ़रेफ़त हासिल है मैं जानता हूं कि इसके सिवा कोई मुस्तहिक़े इबादत नहीं रौशन दलील क़ुरआन शरीफ़ और मोअ़्जेज़ात और तौहीद के बराहीने वाज़ेहा सब को शामिल है (फ़ा126) कुफ़्फ़ार इस्तेहज़ाअन हुज़ूर सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से कहा करते थे कि हम पर जल्दी अज़ाब नाज़िल कराईये इस आयत में उन्हें जवाब दिया गया और ज़ाहिर कर दिया गया कि हुज़ूर से यह सवाल करना निहायत बेजा है (फ़ा127) यानी अ़ज़ाब (फ़ा128) मैं तुम्हें एक साअ़त की मोहलत न देता और तुम्हें रब का मुख़ालिफ़ देख कर बे–दरंग हलाक कर डालता लेकिन अल्लाह तआ़ला हलीम है उक़ूबत में जल्दी नहीं फ़रमाता (फ़ा129) तो जिसे वह चाहे वही ग़ैब पर मुत्तलअ़ हो सकता है बग़ैर उसके बताये कोई ग़ैब नहीं जान सकता। (वाहिदी) (फ़ा130) किताबे मुबीन से लौहे महफ़ूज़ मुराद है अल्लाह तआ़ला ने *मा का–न व मा यकूनु* के उलूम इसमें मकतूब फ़रमाये (फ़ा131) तो तुम पर नींद मुसल्लत होती है और **(बक़िया सफ़हा 232 पर)**

يُنَبِّئُكُم بِمَا كُنتُمْ تَعْمَلُونَ ﴿٦٠﴾ وَهُوَ الْقَاهِرُ فَوْقَ عِبَادِهِ ۖ وَيُرْسِلُ عَلَيْكُمْ حَفَظَةً حَتَّىٰ إِذَا جَاءَ أَحَدَكُمُ الْمَوْتُ تَوَفَّتْهُ رُسُلُنَا وَهُمْ لَا يُفَرِّطُونَ ﴿٦١﴾ ثُمَّ رُدُّوا إِلَى اللَّهِ مَوْلَاهُمُ الْحَقِّ ۚ أَلَا لَهُ الْحُكْمُ وَهُوَ أَسْرَعُ الْحَاسِبِينَ ﴿٦٢﴾ قُلْ مَن يُنَجِّيكُم مِّن ظُلُمَاتِ الْبَرِّ وَالْبَحْرِ تَدْعُونَهُ تَضَرُّعًا وَخُفْيَةً لَّئِنْ أَنجَانَا مِنْ هَٰذِهِ لَنَكُونَنَّ مِنَ الشَّاكِرِينَ ﴿٦٣﴾ قُلِ اللَّهُ يُنَجِّيكُم مِّنْهَا وَمِن كُلِّ كَرْبٍ ثُمَّ أَنتُمْ تُشْرِكُونَ ﴿٦٤﴾ قُلْ هُوَ الْقَادِرُ عَلَىٰ أَن يَبْعَثَ عَلَيْكُمْ عَذَابًا مِّن فَوْقِكُمْ أَوْ مِن تَحْتِ أَرْجُلِكُمْ أَوْ يَلْبِسَكُمْ شِيَعًا وَيُذِيقَ بَعْضَكُم بَأْسَ بَعْضٍ ۗ انظُرْ كَيْفَ نُصَرِّفُ الْآيَاتِ لَعَلَّهُمْ يَفْقَهُونَ ﴿٦٥﴾ وَكَذَّبَ بِهِ قَوْمُكَ وَهُوَ الْحَقُّ ۚ قُل لَّسْتُ عَلَيْكُم بِوَكِيلٍ ﴿٦٦﴾ لِّكُلِّ نَبَإٍ مُّسْتَقَرٌّ ۚ وَسَوْفَ تَعْلَمُونَ ﴿٦٧﴾

युनब्बिउकुम् बिमा कुन्तुम् तअ्–मलून(60)व हुवल्काहिरु फौ–क़ अिबादिही व युर्सिलु अलैकुम् ह–फ़–ज़–तन् हत्ता इज़ा जा–अ अ–ह–द–कुमुल्मौतु तवफ़्फ़त्हु रुसुलुना व हुम् ला युफ़र्रितून(61) सुम्–म रुद्दू इलल्लाहि मौलाहुमुल्–हक़्क़ि अला लहुलहुक्मु व हु–व अस्रअुल्–हासिबीन(62)कुल् मंय्युनज्जीकुम् मिन् ज़ुलुमातिल् बर्रि वल्बह्रि तद्अू–नहू तज़र्रुअंव्–व खुफ़्य–तन् लइन् अन्जाना मिन् हाज़िही ल–नकू नन्–न मिनश्शाकिरीन(63)कु–लिल्लाहु युनज्जीकुम् मिन्हा व मिन् कुल्लि कर्बिन् सुम्–म अन्तुम् तुश्रिकून(64)कुल् हुवल् कादिरु अला अंय्यब्–अ–स अलैकुम् अज़ाबम् मिन् फ़ौक़िकुम् औ मिन् तह्ति अर्जुलिकुम् औ यल्बि–सकुम् शि–य–अंव्–व युज़ी–क़ बअ्–ज़कुम् बअ्–स बअ्ज़िन् उन्ज़ुर् कै–फ़ नु–सर्रिफ़ुल् आयाति ल–अल्लहुम् यफ़्क़हून(65)व कज़्ज़–ब बिही कौमु–क व हुवल्–हक़्क़ु कुल् लस्तु अलैकुम् बि–वकील(66)लिकुल्लि न–बइम् मुस्तक़र्रुंव्–व सौ–फ़ तअ्लमून(67)

वह बता देगा जो कुछ तुम करते थे।(60) (रुकूअ्. 13) और वही ग़ालिब है अपने बन्दों पर और तुम पर निगहबान भेजता है (फ़ा134) यहां तक कि जब तुम में किसी को मौत आती है हमारे फ़रिश्ते उस की रूह क़ब्ज़ करते हैं (फ़ा135) और वह क़ुसूर नहीं करते।(61) (फ़ा136) फिर फेरे जाते हैं अपने सच्चे मौला अल्लाह की तरफ़ सुनता है उसी का हुक्म है (फ़ा137) और वह सबसे जल्द हिसाब करने वाला।(62) (फ़ा138) तुम फ़रमाओ वह कौन है जो तुम्हें नजात देता है जंगल और दरिया की आफ़तों से जिसे पुकारते हो गिड़गिड़ा कर और आहिस्ता कि अगर वह हमें इससे बचावे तो हम ज़रूर एहसान मानेंगे।(63) (फ़ा139) तुम फ़रमाओ अल्लाह तुम्हें नजात देता है उससे और हर बेचैनी से फिर तुम शरीक ठहराते हो।(64) (फ़ा140) तुम फ़रमाओ वह क़ादिर है कि तुम पर अज़ाब भेजे तुम्हारे ऊपर से या तुम्हारे पाँवों के तले (नीचे) से या तुम्हें भिड़ा दे मुख़्तलिफ़ गरोह करके और एक को दूसरे की सख़्ती चखाये देखो हम क्यों कर तरह–तरह से आयतें बयान करते हैं कि कहीं उनको समझ हो।(65) (फ़ा141) और उसे (फ़ा142) झुटलाया तुम्हारी क़ौम ने और यही हक़ है तुम फ़रमाओ मैं तुम पर कुछ कड़ोड़ा(हाकिमे आला) नहीं।(66) (फ़ा143) हर ख़बर का एक वक़्त मुक़र्रर है (फ़ा144) और अनक़रीब जान जाओगे।(67)

(फ़ा134) फ़रिश्ते जिनको किरामन कातिबीन कहते हैं वह बनी आदम की नेकी और बदी लिखते रहते हैं हर आदमी के साथ दो फ़रिश्ते हैं एक दाहिने एक बायें नेकियां दाहिनी तरफ़ का फ़रिश्ता लिखता है और बदियां बायें तरफ़ का बन्दों को चाहिए कि होशियार रहें और बदियों और गुनाहों से बचें क्योंकि हर एक अमल लिखा जाता है और रोज़े क़ियामत वह नामए आमाल तमाम ख़ल्क़ के सामने पढ़ा जाएगा तो गुनाह कितनी रुसवाई का सबब होंगे अल्लाह पनाह दे (फ़ा135) उन फ़रिश्तों से मुराद या तो तन्हा मल्कुल मौत हैं इस सूरत में सीग़ए जमा ताज़ीम के लिए है या मल्कुल मौत मअ़ उन फ़रिश्तों के मुराद हैं जो उनके आवान हैं जब किसी की मौत का वक़्त आता है मलकुल मौत बहुक्मे इलाही अपने आवान को उसकी रूह क़ब्ज़ करने का हुक्म देते हैं जब रूह हलक़ तक पहुंचती है तो खुद क़ब्ज़ फ़रमाते हैं (ख़ाज़िन) (फ़ा136) और तअ़मीले हुक्म में उन से कोताही वाक़ेअ् नहीं होती और उनके अमल में सुस्ती और ताख़ीर राह नहीं पाती अपने फ़रायज़ ठीक वक़्त पर अदा करते हैं (फ़ा137) और उस रोज़ उसके सिवा कोई हुक्म करने वाला नहीं (फ़ा138) क्योंकि उसको सोचने जांचने शुमार करने की हाजत नहीं जिस में देर हो (फ़ा139) इस आयत में कुफ़्फ़ार को तम्बीह की गई कि ख़ुश्की और तरी के सफ़रों में जब वह मुब्तलाए आफ़ात होकर परेशान होते हैं और ऐसे शदायद व अहवाल पेश आते हैं जिन से दिल कांप जाते है। और ख़तरात क़ुलूब को मुज़्तरिब और बेचैन कर देते हैं उस वक़्त बुत–परस्त भी बुतों को भूल जाता है और अल्लाह तआ़ला ही से दुआ करता है उसी की जनाब में तज़र्रुअ् व ज़ारी करता है और कहता है कि इस मुसीबत से अगर तूने नजात दी तो मैं शुक्र (बक़िया सफ़हा 236 पर)

وَاِذَا رَاَيْتَ الَّذِيْنَ يَخُوْضُوْنَ فِيْۤ اٰيٰتِنَا فَاَعْرِضْ عَنْهُمْ حَتّٰى يَخُوْضُوْا فِيْ حَدِيْثٍ غَيْرِهٖ ؕ وَاِمَّا يُنْسِيَنَّكَ الشَّيْطٰنُ فَلَا تَقْعُدْ بَعْدَ الذِّكْرٰى مَعَ الْقَوْمِ الظّٰلِمِيْنَ ۝

وَمَا عَلَى الَّذِيْنَ يَتَّقُوْنَ مِنْ حِسَابِهِمْ مِّنْ شَيْءٍ وَّلٰكِنْ ذِكْرٰى لَعَلَّهُمْ يَتَّقُوْنَ ۝ وَذَرِ الَّذِيْنَ اتَّخَذُوْا دِيْنَهُمْ لَعِبًا وَّ لَهْوًا وَّ غَرَّتْهُمُ الْحَيٰوةُ

الدُّنْيَا وَ ذَكِّرْ بِهٖۤ اَنْ تُبْسَلَ نَفْسٌۢ بِمَا كَسَبَتْ ۖۗ لَيْسَ لَهَا مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ وَلِيٌّ وَّلَا شَفِيْعٌ ۚ وَاِنْ تَعْدِلْ كُلَّ عَدْلٍ لَّا يُؤْخَذْ مِنْهَا ؕ اُولٰٓىِٕكَ الَّذِيْنَ

اُبْسِلُوْا بِمَا كَسَبُوْا ۚ لَهُمْ شَرَابٌ مِّنْ حَمِيْمٍ وَّعَذَابٌ اَلِيْمٌۢ بِمَا كَانُوْا يَكْفُرُوْنَ ۝ قُلْ اَنَدْعُوْا مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ مَا لَا يَنْفَعُنَا وَلَا يَضُرُّنَا وَنُرَدُّ عَلٰۤى اَعْقَابِنَا

بَعْدَ اِذْ هَدٰىنَا اللّٰهُ كَالَّذِي اسْتَهْوَتْهُ الشَّيٰطِيْنُ فِي الْاَرْضِ حَيْرَانَ ۪ لَهٗۤ اَصْحٰبٌ يَّدْعُوْنَهٗۤ اِلَى الْهُدَى ائْتِنَا ؕ قُلْ اِنَّ هُدَى اللّٰهِ هُوَ الْهُدٰى ؕ

व इज़ा रऐतल्लज़ी–न यख़ूज़ू–न फ़ी आयातिना फ़–अअ्रिज़् अन्हुम् हत्ता यख़ूज़ू फ़ी हदीसिन् ग़ैरिही व इम्मा युन्सियन्न–कश्शैतानु फ़ला तक़्अुद बअ्–दज़्ज़िक्रा म–अल्क़ौमिज़्ज़ालिमीन(68) व मा अ–लल्लज़ी–न यत्तक़ू–न मिन् हि–साबिहिम् मिन् शैइंव् व लाकिन् ज़िक्रा ल–अ़ल्लहुम् यत्तक़ून(69)व ज़रिल्लज़ी–नत् त–ख़ज़ू दी–नहुम् लअिबंव् व लह्वंव्–व ग़र्रत्हुमुल् हयातुद्दुन्या व ज़क्किर् बिही अन् तुब्स–ल नफ़्सुम् बिमा क–स–बत् लै–स लहा मिन् दूनिल्लाहि वलिय्युंव्–व ला शफ़ीअुन् व इन् तअ्दिल् कुल्–ल अ़द्लिल् ला युअख़ज़् मिन्हा उलाइ–कल्लज़ी–न उब्सिलू बिमा क–सबू लहुम् शराबुम् मिन् हमीमिंव्–व अ़ज़ाबुन् अलीमुम् बिमा कानू यक्फ़ुरून(70) कुल् अ–नदअू मिन् दूनिल्लाहि मा ला यन्फ़–अुना व ला यजुर्रुना व नुरद्दु अ़ला अअ्क़ाबिना बअ्–द इज़् हदानल्लाहु कल्लज़िस्–तह्वत्हुश् शयातीनु फ़िलअर्ज़ि हैरा–न लहू अस्हा–बुंय्यदअू–नहू इलल् हुदअ्तिना कुल् इन्–न हुदल्लाहि हुवलहुदा

और ऐ सुनने वाले जब तू उन्हें देखे जो हमारी आयतों में पड़ते हैं (फ़ा145) तो उनसे मुंह फेर ले (फ़ा146) जब तक और बात में पड़ें और जो कहीं तुझे शैतान भुलावे तो याद आये पर ज़ालिमों के पास न बैठ।(68)और परहेज़गारों पर उनके हिसाब से कुछ नहीं (फ़ा147) हां नसीहत देना शायद वह बाज़ आयें।(69)(फ़ा148) और छोड़ दे उनको जिन्होंने अपना दीन हंसी खेल बना लिया और उन्हें दुनिया की ज़िन्दगानी ने फ़रेब दिया और क़ुरआन से नसीहत दो (फ़ा149) कि कहीं कोई जान अपने किये पर पकड़ी न जाये (फ़ा150) अल्लाह के सिवा न उसका कोई हिमायती हो न सिफ़ारिशी और अगर अपने एवज़ सारे बदले दे तो उससे न लिये जायें यह हैं (फ़ा151) वह जो अपने किये पर पकड़े गए उन्हें पीने को खौलता पानी और दर्दनाक अज़ाब बदला उनके कुफ़्र का।(70) (रुकूअ़ 14) तुम फ़रमाओ (फ़ा152) क्या हम अल्लाह के सिवा उसको पूजें जो हमारा न भला करे न बुरा (फ़ा153) और उल्टे पांव पलटा दिये जायें बाद उसके कि अल्लाह ने हमें राह दिखाई (फ़ा154) उसकी तरह जिसे शैतान ने ज़मीन में राह भुला दी(फ़ा155) हैरान हैं उसके रफ़ीक़ उसे राह की तरफ़ बुला रहे हैं कि इधर आ तुम फ़रमाओ कि अल्लाह ही की हिदायत हिदायत है (फ़ा156)

(फ़ा145) तअ़न व तश्नीअ़ इस्तेहज़ा के साथ (फ़ा146) और उनकी हमनशीनी तर्क कर मसलाः इस आयत से मालूम हुआ कि बे दीनों की जिस मजलिस में दीन का एहतेराम न किया जाता हो मुसलमान को वहां बैठना जायज़ नहीं इससे साबित हो गया कि कुफ़्फ़ार और बे दीनों के जलसे जिन में वह दीन के ख़िलाफ़ तक़रीरें करते हैं उन में जाना सुनने के लिए शिरकत करना जायज़ नहीं और रद व जवाब के लिए जाना मुजालसत नहीं बल्कि इज़्हारे हक़ है वह ममनूअ़ नहीं जैसा कि अगली आयत से ज़ाहिर है। (फ़ा147) यानी तअ़न व इस्तेहज़ा करने वालों के गुनाह उन्हीं पर हैं उन्हीं से उसका हिसाब होगा परहेज़गारों पर नहीं। शाने नुज़ूलः मुसलमानों ने कहा था कि हमें गुनाह का अन्देशा है जब कि हम उन्हें छोड़ दें और मना न करें इस पर यह आयत नाज़िल हुई (फ़ा148) मसलाः इस आयत से मालूम हुआ कि पन्द व नसीहत और इज़्हारे हक़ के लिए उनके पास बैठना जायज़ है (फ़ा149) और अहकामे शरईया बताओ (फ़ा150) और अपने जरायम के सबब अज़ाबे जहन्नम में गिरिफ़्तार न हो (फ़ा151) दीन को हंसी और खेल बनाने वाले और दुनिया के मफ़्तून (फ़ा152) ऐ मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम उन मुश्रिकीन से जो अपने बाप दादा के दीन की दावत देते हैं (फ़ा153) और उसमें कोई क़ुदरत नहीं (फ़ा154) और इस्लाम और तौहीद की निअ़मत अ़ता फ़रमाई और बुत परस्ती के बदतरीन वबाल से बचाया। (फ़ा155) इस आयत में हक़ व बातिल के दावत देने वालों की एक तम्सील बयान फ़रमाई गई कि जिस तरह मुसाफ़िर अपने रफ़ीक़ों के साथ था **(बक़िया सफ़हा 237 पर)**

وَ اُمِرْنَا لِنُسْلِمَ لِرَبِّ الْعٰلَمِیْنَۙ۝ وَ اَنْ اَقِیْمُوا الصَّلٰوةَ وَ اتَّقُوْهُؕ وَ هُوَ الَّذِیْۤ اِلَیْهِ تُحْشَرُوْنَ۝ وَ هُوَ الَّذِیْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضَ بِالْحَقِّؕ وَ یَوْمَ یَقُوْلُ كُنْ فَیَكُوْنُ۬ؕ قَوْلُهُ الْحَقُّؕ وَ لَهُ الْمُلْكُ یَوْمَ یُنْفَخُ فِی الصُّوْرِؕ عٰلِمُ الْغَیْبِ وَ الشَّهَادَةِؕ وَ هُوَ الْحَكِیْمُ الْخَبِیْرُ۝ وَ اِذْ قَالَ اِبْرٰهِیْمُ لِاَبِیْهِ اٰزَرَ اَتَتَّخِذُ اَصْنَامًا اٰلِهَةًۚ اِنِّیْۤ اَرٰىكَ وَ قَوْمَكَ فِیْ ضَلٰلٍ مُّبِیْنٍ۝ وَ كَذٰلِكَ نُرِیْۤ اِبْرٰهِیْمَ مَلَكُوْتَ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ وَ لِیَكُوْنَ مِنَ الْمُوْقِنِیْنَ۝ فَلَمَّا جَنَّ عَلَیْهِ الَّیْلُ رَاٰ كَوْكَبًاۚ قَالَ هٰذَا رَبِّیْۚ فَلَمَّاۤ اَفَلَ قَالَ لَاۤ اُحِبُّ الْاٰفِلِیْنَ۝ فَلَمَّا رَاَ الْقَمَرَ بَازِغًا قَالَ هٰذَا رَبِّیْۚ فَلَمَّاۤ اَفَلَ قَالَ لَىٕنْ لَّمْ یَهْدِنِیْ رَبِّیْ لَاَكُوْنَنَّ مِنَ الْقَوْمِ الضَّآلِّیْنَ۝ فَلَمَّا رَاَ الشَّمْسَ بَازِغَةً

व उमिरना लिनुस्लि–म लि–रब्बिल् आ–लमीन(71)व अन् अक़ी–मुस्सला–त वत्तक़ूहु व हुवल्लज़ी इलैहि तुह्शरून(72)व हुवल्लज़ी ख़–ल–क़स्समावाति वल्अर–ज़ बिल्हक़्क़ि व यौ–म यक़ूलु कुन् फ़–यकून क़ौलुहुल्–हक़्क़ु व लहुल्मुल्कु यौ–म युन्फ़ख़ु फ़िस्सूरि आलिमुल्ग़ैबि वश्शहा–दति व हुव–ल्हकीमुल् ख़बीर(73)व इज़् क़ा–ल इब्राहीमु लि–अबीहि आ–ज़–र अ–तत्तख़िज़ू अस्नामन् आलि–ह–तन् इन्नी अरा–क व क़ौ–म–क फ़ी ज़लालिम् मुबीन(74)व कज़ालि–क नुरी इब्राही–म म–लकूतस्स–मावाति वल्अर्ज़ि व लि–यकू–न मिनल्मूक़िनीन(75)फ़–लम्मा जन्–न अ़लैहिल् लैलु रआ कौ–क–बन्. क़ा–ल हाज़ा रब्बी फ़लम्मा अ–फ़–ल क़ा–ल ला उहिब्बुल् आफ़िलीन(76) फ़–लम्मा र–अल् क़–म–र बाज़िग़न् क़ा–ल हाज़ा रब्बी फ़–लम्मा अ–फ़–ल क़ा–ल ल–इल्लम् यह्दिनी रब्बी ल–अकूनन्–न मताउद दुनिया क़लीलुन वल आख़िरतु ख़ैरुल लिमनित्तक़ा मिनल् क़ौमिज़्–ज़ाल्लीन(77)फ़–लम्मा–र अश्शम्–स बाज़ि–ग़–तन्

और हमें हुक्म है कि हम उसके लिए गर्दन रख दें (फ़ा157) जो रब है सारे जहान का।(71) और यह कि नमाज़ क़ायम रखो और उससे डरो और वही है जिसकी तरफ़ तुम्हें उठना है।(72) और वही है जिसने आसमान व ज़मीन ठीक बनाये (फ़ा158) और जिस दिन फ़ना हुई हर चीज़ को कहेगा हो जा वह फ़ौरन हो जाएगी उसकी बात सच्ची ही है और उसी की सल्तनत है जिस दिन सूर फूंका जाएगा (फ़ा159) हर छुपे और ज़ाहिर को जानने वाला और वही है हिकमत वाला ख़बरदार।(73) और याद करो जब इब्राहीम ने अपने बाप (फ़ा160) आज़र से कहा क्या तुम बुतों को ख़ुदा बनाते हो बेशक मैं तुम्हें और तुम्हारी क़ौम को खुली गुमराही में पाता हूं।(74) (फ़ा161) और इसी तरह हम इब्राहीम को दिखाते हैं सारी बादशाही आसमानों और ज़मीन की (फ़ा162) और इसलिए कि वह ऐनुलयक़ीन वालों में हो जाये।(75) (फ़ा163) फिर जब उन पर रात का अंधेरा आया एक तारा देखा (फ़ा164) बोले इसे मेरा रब ठहराते हो फिर जब वह डूब गया बोले मुझे ख़ुश नहीं आते डूबने वाले।(76) फिर जब चांद चमकता देखा बोले इसे मेरा रब बताते हो फिर जब वह डूब गया कहा अगर मुझे मेरा रब हिदायत न करता तो मैं भी इन्हीं गुमराहों में होता।(77) (फ़ा165) फिर जब सूरज जगमगाता देखा

(फ़ा157) और उसी की इताअ़त व फ़रमांबरदारी करें और ख़ास उसी की इबादत करें। (फ़ा158) जिन से उसकी क़ुदरते कामिला और उसका इल्मे मुहीत और उसकी हिकमत व सनअ़त ज़ाहिर है (फ़ा159) कि नाम को भी कोई सल्तनत का दावा करने वाला न होगा तमाम जबाबेरह फ़राअ़ेना और सब दुनिया की सल्तनत का ग़ुरूर करने वाले देखेंगे कि दुनिया में जो वह सल्तनत का दावा रखते थे वह बातिल था (फ़ा160) क़ामूस में है कि आज़र हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम के चचा का नाम है इमाम अ़ल्लामा जलालुद्दीन सुयूती ने मसालिकुल हुनफ़ा में भी ऐसा ही लिखा है चचा को बाप कहना तमाम ममालिक में मामूल है बिलख़ुसूस अ़रब में क़ुरआने करीम में है *नअ़्बुदु इला–ह–क व इला–ह आबाइ–क इब्राही–म व इस्माई–ल व इस्हा–क़ इला–हंव्–वाहिदा* इस में हज़रत इसमाईल को हज़रत याक़ूब के आबा में ज़िक्र किया गया बावजूदेकि आप अ़म हैं। हदीस शरीफ़ में भी हज़रत सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने हज़रत अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हु को अब् फ़रमाया चुनांचे इरशाद किया *रुद्दू अ़लय्–य अबी* और यहां अबी से हज़रत अ़ब्बास मुराद हैं (मुफ़रदात राग़िब व कबीर वग़ैरह) (फ़ा161) यह आयत मुश्रिकीने अरब पर हुज्जत है जो हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलातु वस्सलाम को मुअ़ज़्ज़म जानते थे और उनकी फ़ज़ीलत के मोअ़तरिफ़ थे उन्हें दिखाया जाता है कि हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलातु वस्सलाम बुत परस्ती को कितना बुरा ऐब और गुमराही बताते हैं अगर तुम उन्हें मानते हो तो बुत परस्ती तुम भी छोड़ दो (फ़ा162) यानी जिस तरह हज़रत इब्राहीम **(बक़िया सफ़हा 235 पर)**

قَالَ هٰذَا رَبِّىْ هٰذَآ اَكْبَرُ فَلَمَّآ اَفَلَتْ قَالَ يٰقَوْمِ اِنِّىْ بَرِىْٓءٌ مِّمَّا تُشْرِكُوْنَ ﴿۷۸﴾ اِنِّىْ وَجَّهْتُ وَجْهِىَ لِلَّذِىْ فَطَرَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ حَنِيْفًا

وَّمَآ اَنَا مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ ﴿۷۹﴾ وَحَآجَّهٗ قَوْمُهٗ ۭ قَالَ اَتُحَآجُّوْٓنِّىْ فِى اللّٰهِ وَقَدْ هَدٰىنِ ۭ وَلَآ اَخَافُ مَا تُشْرِكُوْنَ بِهٖٓ اِلَّآ اَنْ يَّشَآءَ رَبِّىْ شَيْـًٔا ۭ وَسِعَ رَبِّىْ

كُلَّ شَىْءٍ عِلْمًا ۭ اَفَلَا تَتَذَكَّرُوْنَ ﴿۸۰﴾ وَكَيْفَ اَخَافُ مَآ اَشْرَكْتُمْ وَلَا تَخَافُوْنَ اَنَّكُمْ اَشْرَكْتُمْ بِاللّٰهِ مَا لَمْ يُنَزِّلْ بِهٖ عَلَيْكُمْ سُلْطٰنًا ۭ فَاَىُّ

الْفَرِيْقَيْنِ اَحَقُّ بِالْاَمْنِ ۚ اِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ﴿۸۱﴾ اَلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَلَمْ يَلْبِسُوْٓا اِيْمَانَهُمْ بِظُلْمٍ اُولٰۗىِٕكَ لَهُمُ الْاَمْنُ وَهُمْ مُّهْتَدُوْنَ ﴿۸۲﴾ وَتِلْكَ حُجَّتُنَآ

اٰتَيْنٰهَآ اِبْرٰهِيْمَ عَلٰي قَوْمِهٖ ۭ نَرْفَعُ دَرَجٰتٍ مَّنْ نَّشَآءُ ۭ اِنَّ رَبَّكَ حَكِيْمٌ عَلِيْمٌ ﴿۸۳﴾ وَوَهَبْنَا لَهٗٓ اِسْحٰقَ وَيَعْقُوْبَ ۭ كُلًّا هَدَيْنَا ۚ وَنُوْحًا هَدَيْنَا مِنْ قَبْلُ وَمِنْ ذُرِّيَّتِهٖ دَاوٗدَ

क़ा–ल हाज़ा रब्बी हाज़ा अक्बरु फ़–लम्मा अ–फ़–लत् क़ा–ल याक़ौमि इन्नी बरीउम् मिम्मा तुश्रिकून(78)इन्नी वज्जह्तु वज्हि–य लिल्लज़ी फ़–त–रस्समा–वाति वल्अर–ज़ ह़नीफ़ंव्–व मा अना मिनल् मुश्रिकीन(79)व ह़ाज्जहू क़ौमुहू क़ा–ल अतुह़ाज्जून्नी फ़िल्लाहि व क़द् हदानि व ला अख़ाफ़ु मा तुश्रिकू–न बिही इल्ला अंय्यशा–अ रब्बी शैअन् वसि–अ़ रब्बी कुल्–ल शैइन् अ़िल्मन् अ–फ़ला त–त–ज़क्–करून(80)व कै–फ़ अख़ाफ़ु मा अश्रक्तुम् व ला तख़ाफ़ू–न अन्नकुम् अश्रक्तुम् बिल्लाहि मा लम् युनज़्ज़िल् बिही अ़लैकुम् सुल्तानन् फ़–अय्युल् फ़रीक़ैनि अह़क़्क़ु बिल् अम्नि इन् कुन्तुम् तअ़्–लमून(81)अल्लज़ी–न आ–मनू व लम् यल्बिसू ईमा–नहुम् बिज़ुल्मिन् उलाइ–क लहुमुल्–अम्नु व हुम् मुह्तदून(82)व तिल्–क हुज्जतुना आतैनाहा इब्राही–म अ़ला क़ौमिही नर्फ़अ़ु द–र–जातिम् मन् नशाउ इन्–न रब्ब–क ह़कीमुन् अ़लीम(83)व व–हब्ना लहू इस्ह़ा–क़ व यअ़्कू–ब कुल्लन् हदैना व नूहन् हदैना मिन् क़ब्लु व मिन् ज़ुर्रिय्यतिही दावू–द

बोले इसे मेरा रब कहते हो(फ़ा166)यह तो उन सब से बड़ा है फिर जब वह डूब गया कहा ऐ क़ौम मैं बेज़ार हूं उन चीज़ों से जिन्हें तुम शरीक ठहराते हो।(78)(फ़ा167)मैंने अपना मुंह उसकी तरफ़ किया जिसने आसमान व ज़मीन बनाये एक उसी का होकर(फ़ा168)और मैं मुश्रिकों में नहीं।(79)और उनकी क़ौम उनसे झगड़ने लगी कहा क्या अल्लाह के बारे में मुझसे झगड़ते हो वह तो मुझे राह बता चुका (फ़ा169) और मुझे उनका डर नहीं जिन्हें तुम शरीक बताते हो (फ़ा170) हां जो मेरा ही रब कोई बात चाहे (फ़ा171) मेरे रब का इल्म हर चीज़ को मुहीत है तो क्या तुम नसीहत नहीं मानते।(80)और मैं तुम्हारे शरीकों से क्यों कर डरूं (फ़ा172) और तुम नहीं डरते कि तुम ने अल्लाह का शरीक उसको ठहराया जिसकी तुम पर उसने कोई सनद न उतारी तो दोनों गरोहों में अमान का ज़्यादा सज़ावार कौन है(फ़ा173)अगर तुम जानते हो।(81)वह जो ईमान लाये और अपने ईमान में किसी नाहक़ की आमेज़िश न की उन्हीं के लिए अमान है और वही राह पर हैं।(82)(रुकूअ़ 15)और यह हमारी दलील है कि हमने इब्राहीम को उसकी क़ौम पर अता फ़रमाई हम जिसे चाहें दर्जों बुलन्द करें (फ़ा174)बेशक तुम्हारा रब इल्म व हिकमत वाला है।(83)और हमने उन्हें इसहाक़ और याकूब अ़ता किये उन सबको हमने राह दिखाई और उनसे पहले नूह को राह दिखाई और उसकी औलाद में से दाऊद

(फ़ा166) शम्स मुअन्नस ग़ैर हक़ीक़ी है उसके लिए मुज़क्कर व मुअन्नस के दोनों सेग़े इस्तेमाल किये जा सकते हैं यहां हाज़ा मुज़क्कर लाया गया इस में तालीमे अदब है कि लफ़्ज़े रब की रिआयत के लिए लफ़्ज़े तानीस न लाया गया इसी लिहाज़ से अल्लाह तआला की सिफ़त में अ़ल्लाम आता है न कि अ़ल्लामा (फ़ा167) हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलातु वस्सलाम ने साबित कर दिया कि सितारों में छोटे बड़े तक कोई भी रब होने की सलाहियत नहीं रखता उनका इलाह होना बातिल है और क़ौम जिस शिर्क में मुब्तला है आपने उससे बेज़ारी का इज़हार किया और उसके बाद दीने हक़ का बयान फ़रमाया जो आगे आता है (फ़ा168) यानी इस्लाम के सिवा बाक़ी तमाम अदियान से जुदा रह कर। **मसलाः** इससे मालूम हुआ कि दीने हक़ का क़ियाम व इस्तेहकाम जब ही हो सकता है जबकि तमाम अदियाने बातिला से बेज़ारी हो। (फ़ा169) अपनी तौहीद व मअ़्रेफ़त की (फ़ा170) क्योंकि वह बेजान बुत हैं न ज़रर दे सकते हैं न नफ़ा पहुंचा सकते हैं उन से क्या डरना यह आपने मुश्रिकीन से जवाब में फ़रमाया था जिन्होंने आप से कहा था कि बुतों से डरो उनके बुरा कहने से कहीं आप को कुछ नक़सान न पहुंच जाए (फ़ा171) वह होगी क्योंकि मेरा रब क़ादिरे मुतलक़ है (फ़ा172) जो बे जान जमाद और आजिज़ महज़ हैं (फ़ा173) **(बक़िया सफ़हा 231 पर)**

وَسُلَيْمٰنَ وَاَيُّوْبَ وَيُوْسُفَ وَمُوْسٰى وَهٰرُوْنَ ؕ وَكَذٰلِكَ نَجْزِى الْمُحْسِنِيْنَ ۝ وَزَكَرِيَّا وَيَحْيٰى وَعِيْسٰى وَاِلْيَاسَ ؕ كُلٌّ مِّنَ الصّٰلِحِيْنَ ۝ وَاِسْمٰعِيْلَ وَالْيَسَعَ وَيُوْنُسَ

وَلُوْطًا ؕ وَكُلًّا فَضَّلْنَا عَلَى الْعٰلَمِيْنَ ۝ وَمِنْ اٰبَآئِهِمْ وَذُرِّيّٰتِهِمْ وَاِخْوَانِهِمْ ۚ وَاجْتَبَيْنٰهُمْ وَهَدَيْنٰهُمْ اِلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ۝ ذٰلِكَ هُدَى اللّٰهِ يَهْدِىْ بِهٖ مَنْ

يَّشَآءُ مِنْ عِبَادِهٖ ؕ وَلَوْ اَشْرَكُوْا لَحَبِطَ عَنْهُمْ مَّا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ۝ اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ اٰتَيْنٰهُمُ الْكِتٰبَ وَالْحُكْمَ وَالنُّبُوَّةَ ۚ فَاِنْ يَّكْفُرْ بِهَا هٰٓؤُلَآءِ فَقَدْ وَكَّلْنَا بِهَا قَوْمًا

لَّيْسُوْا بِهَا بِكٰفِرِيْنَ ۝ اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ هَدَى اللّٰهُ فَبِهُدٰىهُمُ اقْتَدِهْ ؕ قُلْ لَّآ اَسْئَلُكُمْ عَلَيْهِ اَجْرًا ؕ اِنْ هُوَ اِلَّا ذِكْرٰى لِلْعٰلَمِيْنَ ۝ وَمَا قَدَرُوا اللّٰهَ حَقَّ قَدْرِهٖٓ اِذْ قَالُوْا مَآ

اَنْزَلَ اللّٰهُ عَلٰى بَشَرٍ مِّنْ شَيْءٍ ؕ قُلْ مَنْ اَنْزَلَ الْكِتٰبَ الَّذِىْ جَآءَ بِهٖ مُوْسٰى نُوْرًا وَّهُدًى لِّلنَّاسِ تَجْعَلُوْنَهٗ قَرَاطِيْسَ تُبْدُوْنَهَا وَتُخْفُوْنَ كَثِيْرًا ۚ وَعُلِّمْتُمْ مَّا لَمْ

व सुलैमा–न व अय्यू–ब व यूसु–फ़ व मूसा व हारू–न व कज़ालि–क नज्ज़िल् मुह्सिनीन(84) व ज़–करिय्या व यह्या व अीसा व इल्या–स कुल्लुम् मिनस्सालिहीन(85)व इस्माअी–ल वल् य–स–अ व यूनु–स व लूतन् व कुल्लन् फ़ज़्ज़ल्ना अ–लल्आ–लमीन(86)व मिन् आबाइहिम् व ज़ुर्रिय्यातिहिम् व इख़्वानिहिम् वज्–तबैनाहुम् व हदैनाहुम् इला सिरातिम् मुस्तक़ीम(87)ज़ालि–क हुदल्लाहि यह्दी बिही मंय्यशाउ मिन् अिबादिही व लौ अशरकू ल–हबि–त अ़न्हुम् मा कानू यअ्–मलून(88)उलाइ–कल्लज़ी–न आतैनाहुमुल् किता–ब वल्हुक्–म वन्नुबुव्व–त फ़इंय्यक्फ़ुर् बिहा हाउला–इ फ़–क़द् वक्कल्ना बिहा क़ौमल्लैसू बिहा बिकाफ़िरीन(89)उलाइ–कल् लज़ी–न हदल्लाहु फ़बिहुदाहुमुक़्तदिह् क़ुल् ला अस्अ–लुकुम् अ़लैहि अज्रन् इन् हु–व इल्ला ज़िक्रा लिल्– आ–लमीन(90)व मा क़–दरुल्ला–ह हक़्–क़ क़द्–रिही इज़् क़ालू मा अन्ज़लल्लाहु अ़ला ब–शरिम् मिन् शैइन् क़ुल् मन् अन्ज़लल् किताबल्लज़ी जा–अ बिही मूसा नूरंव्–व हुदल्–लिन्नासि तज्अ़लू–नहू क़राती–स तुब्दू–नहा व तुख़्फ़ू–न कसीरन् व अ़ुल्लिम्तुम् मा लम्

और सुलैमान और अय्यूब और यूसुफ़ और मूसा और हारून को और हम ऐसा ही बदला देते हैं नेकोकारों को।(84) और ज़करिया और यहया और ईसा और इलियास को यह सब हमारे क़ुर्ब के लायक़ हैं।(85) और इसमाईल और यसअ़ और यूनुस और लूत को और हमने हर एक को उसके वक़्त में सब पर फ़ज़ीलत दी।(86) (फ़ा175) और कुछ उनके बाप दादा और औलाद और भाईयों में से बाज़ को (फ़ा176) और हमने उन्हें चुन लिया और सीधी राह दिखाई। (87)यह अल्लाह की हिदायत है कि अपने बन्दों में जिसे चाहे दे और अगर वह शिर्क करते तो ज़रूर उनका किया अकारत जाता।(88) यह हैं जिनको हमने किताब और हुक्म और नबुव्वत अ़ता की तो अगर यह लोग (फ़ा177) उससे मुन्किर हों तो हमने उसके लिए एक ऐसी क़ौम् लगा रखी है जो इंकार वाली नहीं।(89) (फ़ा178) यह हैं जिनको अल्लाह ने हिदायत की तो तुम उन्हीं की राह चलो (फ़ा179) तुम फ़रमाओ मैं क़ुरआन पर तुम से कोई उजरत नहीं मांगता वह तो नहीं मगर नसीहत सारे जहान को।(90) (फ़ा180) (रुकूअ़16) और यहूद ने अल्लाह की क़द्र न जानी जैसी चाहिए थी (फ़ा181) जब बोले अल्लाह ने किसी आदमी पर कुछ नहीं उतारा तुम फ़रमाओ किसने उतारी वह किताब जो मूसा लाये थे रौशनी और लोगों के लिए हिदायत जिसके तुम ने अलग-अलग कागज़ बना लिये ज़ाहिर करते हो (फ़ा182) और बहुत से छुपा लेते हो (फ़ा183) और तुम्हें वह सिखाया जाता है (फ़ा184)

(फ़ा175) नबुव्वत व रिसालत के साथ **मसलाः** इस आयत से इस पर सनद लाई जाती है कि अम्बिया मलाइका से अफ़ज़ल हैं क्यों कि आलम अल्लाह के सिवा तमाम मौजूदात को शामिल है फ़रिश्ते भी उसमें दाख़िल हैं तो जब तमाम जहान वालों पर फ़ज़ीलत दी तो मलायका पर भी फ़ज़ीलत साबित हो गई यहां अल्लाह तआ़ला ने अट्ठारह अम्बिया अ़लैहिमुस्सलात वस्सलाम का ज़िक्र फ़रमाया और उस ज़िक्र में तर्तीब न ज़माने के एतेबार से है न फ़ज़ीलत के न वाव तर्तीब का मुक़तज़ी लेकिन जिस शान से कि अम्बिया अ़लैहिमुस्सलाम के असमा ज़िक्र फ़रमाए गए उस में एक अ़जीब लतीफ़ा है वह यह कि अल्लाह तआ़ला ने अम्बिया की हर एक जमाअ़त को एक ख़ास तरह की करामत व फ़ज़ीलत के साथ मुम्ताज़ फ़रमाया तो हज़रत नूह व इब्राहीम व इसहाक़ व याकूब का अव्वल ज़िक्र किया क्योंकि यह अम्बिया के उसूल हैं यानी उनकी औलाद में बकसरत अम्बिया हुए जिनके अन्साब उन्हीं की तरफ़ रुजूअ़ करते हैं नबुव्वत के बाद मरातिबे मोअ़तबरा में से मिल्क व इख़्तियार (बक़िया सफ़हा 237 पर)

تَعْلَمُوا أَنتُمْ وَلَا آبَاؤُكُمْ ۖ قُلِ اللَّهُ ۖ ثُمَّ ذَرْهُمْ فِي خَوْضِهِمْ يَلْعَبُونَ ﴿٩١﴾ وَهَٰذَا كِتَابٌ أَنزَلْنَاهُ مُبَارَكٌ مُّصَدِّقُ الَّذِي بَيْنَ يَدَيْهِ وَلِتُنذِرَ أُمَّ الْقُرَىٰ وَمَنْ حَوْلَهَا ۚ وَالَّذِينَ
يُؤْمِنُونَ بِالْآخِرَةِ يُؤْمِنُونَ بِهِ ۖ وَهُمْ عَلَىٰ صَلَاتِهِمْ يُحَافِظُونَ ﴿٩٢﴾ وَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرَىٰ عَلَى اللَّهِ كَذِبًا أَوْ قَالَ أُوحِيَ إِلَيَّ وَلَمْ يُوحَ إِلَيْهِ شَيْءٌ وَمَن قَالَ سَأُنزِلُ
مِثْلَ مَا أَنزَلَ اللَّهُ ۗ وَلَوْ تَرَىٰ إِذِ الظَّالِمُونَ فِي غَمَرَاتِ الْمَوْتِ وَالْمَلَائِكَةُ بَاسِطُو أَيْدِيهِمْ أَخْرِجُوا أَنفُسَكُمُ ۖ الْيَوْمَ تُجْزَوْنَ عَذَابَ الْهُونِ بِمَا كُنتُمْ تَقُولُونَ عَلَى
اللَّهِ غَيْرَ الْحَقِّ وَكُنتُمْ عَنْ آيَاتِهِ تَسْتَكْبِرُونَ ﴿٩٣﴾ وَلَقَدْ جِئْتُمُونَا فُرَادَىٰ كَمَا خَلَقْنَاكُمْ أَوَّلَ مَرَّةٍ وَتَرَكْتُم مَّا خَوَّلْنَاكُمْ وَرَاءَ ظُهُورِكُمْ ۖ وَمَا نَرَىٰ مَعَكُمْ شُفَعَاءَكُمُ
الَّذِينَ زَعَمْتُمْ أَنَّهُمْ فِيكُمْ شُرَكَاءُ ۚ لَقَد تَّقَطَّعَ بَيْنَكُمْ وَضَلَّ عَنكُم مَّا كُنتُمْ تَزْعُمُونَ ﴿٩٤﴾ إِنَّ اللَّهَ فَالِقُ الْحَبِّ وَالنَّوَىٰ ۖ يُخْرِجُ الْحَيَّ مِنَ الْمَيِّتِ وَمُخْرِجُ الْمَيِّتِ مِنَ

तअ्–लमू अन्तुम् व ला आबाउकुम् कुलिल्लाहु सुम्–म ज़रहुम् फ़ी ख़ौज़िहिम् यल्–अबून(91)व हाज़ा किताबुन् अन्ज़ल्नाहु मुबा–रकुम् मुसद्–दिकुल्लज़ी बै–न यदैहि व लितुन्ज़ि–र उम्मल्कुरा व मन् हौ–लहा वल्लज़ी–न युअ्मिनू–न बिल्आख़ि–रति युअ्मिनू–न बिही व हुम् अ़ला सलातिहिम् युहाफ़िज़ून (92)व मन् अज़्लमु मिम्मनिफ़्तरा अ़–लल्लाहि कज़िबन् औ क़ा–ल ऊहि–य इलय्–य व लम् यू–ह् इलैहि शैउंव्–व मन् क़ा–ल स–उन्ज़िलु मिस्–ल मा अन्ज़लल्लाहु व लौ तरा इज़िज़्ज़ालिमू–न फ़ी ग़–मरातिल् मौति वल्मलाइ–कतु बासितू ऐदीहिम् अख़्रिजू अन्फु–सकुम् अल्यौ–म तुज्ज़ौ–न अ़ज़ाबल्हूनि बिमा कुन्तुम् तकूलू–न अ़–लल्लाहि ग़ैरल्हक़्क़ि व कुन्तुम् अ़न् आयातिही तस्तक्बिरून(93)व ल–क़द् जिअ्तुमूना फ़ुरादा कमा ख़–लक़्नाकुम् अव्व–ल मर्रतिंव्–व तरक्तुम् मा ख़व्वल्नाकुम् वरा–अ ज़ुहूरिकुम् व मा नरा म–अकुम् शु–फ़आ–अ कुमुल्लज़ी–न ज़–अम्तुम् अन्नहुम् फ़ीकुम् शु–रकाउ ल–क़त्–त क़त्त–अ़ बै–नकुम् व ज़ल्–ल अ़न्कुम् मा कुन्तुम् तज़्अुमून(94)इन्नल्ला–ह फ़ालिक़ुल् हब्बि वन्नवा युख़्रिजुल् हय्–य मिनल्मय्यिति व मुख़्रिजुल्मय्यिति मिनल्हय्यि

जो न तुमको मा़लूम था न तुम्हारे बाप दादा को अल्लाह कहो (फ़ा185) फिर उन्हें छोड़ दो उनकी बेहूदगी में खेलता।(91) (फ़ा186) और यह है बरकत वाली किताब कि हमने उतारी (फ़ा187) तस्दीक़ फ़रमाती उन किताबों की जो आगे थीं और इसलिए कि तुम डर सुनाओ सब बस्तियों के सरदार को (फ़ा188) और जो कोई सारे जहान में उसके गिर्द हैं और जो आख़िरत पर ईमान लाते हैं (फ़ा189) इस किताब पर ईमान लाते हैं और अपनी नमाज़ की हिफ़ाज़त करते हैं।(92) और उससे बढ़कर ज़ालिम कौन जो अल्लाह पर झूठ बांधे (फ़ा190) या कहे मुझे 'वही' हुई और उसे कुछ 'वही' न हुई (फ़ा191) और जो कहे अभी मैं उतारता हूं ऐसा जैसा खुदा ने उतारा (फ़ा192) और कभी तुम देखो जिस वक़्त ज़ालिम मौत की सख़्तियों में हैं और फ़रिश्ते हाथ फैलाए हुए हैं (फ़ा193) कि निकालो अपनी जानें आज तुम्हें ख़्वारी का अ़ज़ाब दिया जाएगा बदला उसका कि अल्लाह पर झूठ लगाते थे (फ़ा194) और उसकी आयतों से तकब्बुर करते।(93) और बेशक तुम हमारे पास अकेले आये जैसा हमने तुम्हें पहली बार पैदा किया था (फ़ा195) और पीठ पीछे छोड़ आये जो माल व मताअ़ हमने तुम्हें दिया था और हम तुम्हारे साथ तुम्हारे उन सिफ़ारिशियों को नहीं देखते जिनका तुम अपने में साझा बताते थे (फ़ा196) बेशक तुम्हारे आपस की डोर कट गई (फ़ा197) और तुम से गए जो दावे करते थे।(94) (फ़ा198) (रुकूअ़ 17) बेशक अल्लाह दाने और गुठली को चीरने वाला है (फ़ा199) ज़िन्दा को मुर्दा से

(फ़ा185) यानी जब वह उसका जवाब न दे सकें कि वह किताब किसने उतारी तो आप फ़रमा दीजिये अल्लाह ने (फ़ा186) क्योंकि जब आपने हुज्जत क़ायम कर दी और अंदाज़ व नसीहत निहायत को पहुंचा दी और उनके लिए जाए उज़्र न छोड़ी इस पर भी वह बाज़ न आयें तो उन्हें उनकी बेहूदगी में छोड़ दीजिये यह कुफ़्फ़ार के हक़ में वईद व तहदीद है। (फ़ा187) यानी क़ुरआन शरीफ़ (फ़ा188) उम्मुलक़ुरा मक्का मुकर्रमा है क्योंकि वह तमाम ज़मीन वालों का क़िबला है (फ़ा189) और क़ियामत व आख़िरत और मरने के बाद उठने का यक़ीन रखते हैं और अपने अंजाम से ग़ाफ़िल व बे ख़बर नहीं हैं। (फ़ा190) और नबुव्वत का झूठा दावा करे (फ़ा191) **शाने नुज़ूलः** यह आयत मुसैलेमा कज़्ज़ाब के बारे में नाज़िल हुई जिसने यमामा इलाक़ा यमन में नबुव्वत का झूठा दावा किया था क़बीला बनी हनीफ़ा के चन्द लोग उसके फ़रेब में आ गए थे यह कज़्ज़ाब ज़मानए ख़िलाफ़ते हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ में वहशी क़ातिले अमीर हमज़ा रज़ियल्लाहु अ़न्हु के हाथ से क़त्ल हुआ (फ़ा192) **शाने नुज़ूलः** यह **(बक़िया सफ़हा 238 पर)**

الْحَيِّ ذٰلِكُمُ اللّٰهُ فَاَنّٰى تُؤْفَكُوْنَ ﴿۹۵﴾ فَالِقُ الْاِصْبَاحِ ۚ وَجَعَلَ الَّيْلَ سَكَنًا وَّالشَّمْسَ وَالْقَمَرَ حُسْبَانًا ؕ ذٰلِكَ تَقْدِيْرُ الْعَزِيْزِ الْعَلِيْمِ ﴿۹۶﴾ وَهُوَ الَّذِيْ جَعَلَ لَكُمُ النُّجُوْمَ

لِتَهْتَدُوْا بِهَا فِيْ ظُلُمٰتِ الْبَرِّ وَالْبَحْرِ ؕ قَدْ فَصَّلْنَا الْاٰيٰتِ لِقَوْمٍ يَّعْلَمُوْنَ ﴿۹۷﴾ وَهُوَ الَّذِيْۤ اَنْشَاَكُمْ مِّنْ نَّفْسٍ وَّاحِدَةٍ فَمُسْتَقَرٌّ وَّمُسْتَوْدَعٌ ؕ قَدْ فَصَّلْنَا الْاٰيٰتِ لِقَوْمٍ

يَّفْقَهُوْنَ ﴿۹۸﴾ وَهُوَ الَّذِيْۤ اَنْزَلَ مِنَ السَّمَآءِ مَآءً ۚ فَاَخْرَجْنَا بِهٖ نَبَاتَ كُلِّ شَيْءٍ فَاَخْرَجْنَا مِنْهُ خَضِرًا نُّخْرِجُ مِنْهُ حَبًّا مُّتَرَاكِبًا ۚ وَمِنَ النَّخْلِ مِنْ طَلْعِهَا قِنْوَانٌ دَانِيَةٌ

وَّجَنّٰتٍ مِّنْ اَعْنَابٍ وَّالزَّيْتُوْنَ وَالرُّمَّانَ مُشْتَبِهًا وَّغَيْرَ مُتَشَابِهٍ ؕ اُنْظُرُوْۤا اِلٰى ثَمَرِهٖۤ اِذَاۤ اَثْمَرَ وَيَنْعِهٖ ؕ اِنَّ فِيْ ذٰلِكُمْ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يُّؤْمِنُوْنَ ﴿۹۹﴾ وَجَعَلُوْا لِلّٰهِ

شُرَكَآءَ الْجِنَّ وَخَلَقَهُمْ وَخَرَقُوْا لَهٗ بَنِيْنَ وَبَنٰتٍۢ بِغَيْرِ عِلْمٍ ؕ سُبْحٰنَهٗ وَتَعٰلٰى عَمَّا يَصِفُوْنَ ﴿۱۰۰﴾ بَدِيْعُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ اَنّٰى يَكُوْنُ لَهٗ وَلَدٌ وَّلَمْ تَكُنْ لَّهٗ صَاحِبَةٌ

ज़ालिकुमुल्लाहु फ़–अन्ना तुअ्फ़कून(95)फ़ालिकुल् इस्बाहि व ज–अ–लल्लै–ल स–क–नंव्वश्शम्स वल् क़–म–र हुस्बानन् ज़ालि–क तक़्दीरुल् अ़ज़ीज़िल अ़लीम(96)व हुवल्–लज़ी ज–अ–ल लकुमुन्नुजू–म लि–तह्तदू बिहा फ़ी ज़ुलुमातिल् बर्रि वल्बह़्रि क़द् फ़स्सल्नल् आयाति लिक़ौ–मिंय्यअ्–लमून(97)व हुवल्लज़ी अन्श–अकुम् मिन् नफ़्सिंव्वाहि–दतिन् फ़मुस्त–क़र्रुंव्–व मुस्तौद–अुन् क़द् फ़स्सल्नल् आयाति लिक़ौमिंय्यफ़्क़हून(98)व हुवल्लज़ी अन्ज़–ल मिनस्समाइ माअन् फ़–अख़्रज्ना बिही नबा–त कुल्लि शैइन् फ़–अख़्रज्ना मिन्हु ख़ज़िरन् नुख़्रिजु मिन्हु ह़ब्बम् मु–तराकिबन् व मिनन् नख़्लि मिन् तल्अ़िहा क़िन्वानुन् दानि–यतुंव्–व जन्नातिम् मिन् अअ्–ना–बिंव्वज़्ज़ैतू–न वर्रुम्मा–न मुश्तबिहंव्–व ग़ै–र मु–तशाबिहिन् उन्ज़ुरू इला स–मरिही इज़ा अस्म–र व यन्अ़िही इन्–न फ़ी ज़ालिकुम् ल–आयातिल् लिक़ौमिंय्यु–अ्मिनून(99)व ज–अ़लू लिल्लाहि शु–रकाअल् जिन्–न व ख़–ल–क़हुम् व ख़–रक़ू लहू बनी–न व बनातिम् बिग़ैरि अ़िल्मिन् सुब्हा–नहू व तआ़ला अ़म्मा यसिफ़ून(100)बदीअुस्समावाति वल्अर्ज़ि अन्ना यकूनु लहू व–लदुंव्–व लम् तकुल्लहू साहि–बतुन्

निकाले (फ़ा200) और मुर्दा को ज़िन्दा से निकालने वाला (फ़ा201) यह है अल्लाह तुम कहां औंधे जाते हो।(95) (फ़ा202) तारीकी चाक करके सुबह निकालने वाला और उसने रात को चैन बनाया (फ़ा203) और सूरज और चांद को हिसाब (फ़ा204) यह साधा है ज़बरदस्त जानने वाले का।(96) और वही है जिसने तुम्हारे लिए तारे बनाए कि उनसे राह पाओ ख़ुश्की और तरी के अंधेरों में हमने निशानियां मुफ़स्सल बयान कर दीं इल्म वालों के लिए।(97) और वही है जिसने तुमको एक जान से पैदा किया (फ़ा205) फिर कहीं तुम्हें ठहरना है (फ़ा206) और कहीं अमानत रहना (फ़ा207) बेशक हमने मुफ़स्सल आयतें बयान कर दीं समझ वालों के लिए।(98) और वही है जिसने आसमान से पानी उतारा तो हमने उससे हर उगने वाली चीज़ निकाली (फ़ा208) तो हमने उससे निकाली सब्ज़ी जिस में से दाने निकालते हैं एक दूसरे पर चढ़े हुए और खजूर के गाभे से पास-पास गुच्छे और अंगूर के बाग़ और ज़ैतून और अनार किसी बात में मिलते और किसी बात में अलग उसका फल देखो जब फले और उसका पकना बेशक उसमें निशानियां हैं ईमान वालों के लिए।(99) और (फ़ा209) अल्लाह का शरीक ठहराया जिन्नों को (फ़ा210) हालांकि उसी ने उनको बनाया और उसके लिए बेटे और बेटियां गढ़ लीं जहालत से पाकी और बरतरी है उसको उनकी बातों से।(100)(रुकूअ़ 18) बे किसी नमूने के आसमानों और ज़मीन का बनाने वाला उसके बच्चा कहां से हो हालांकि उसकी औरत नहीं (फ़ा211)

(फ़ा200) जानदार सब्ज़ा को बे जान दाने और गुठली से और इंसान व हैवान को नुत्फ़ा से और परिन्द को अन्डे से (फ़ा201) जानदार दरख़्त से बेजान गुठली और दाने को और इंसान व हैवान से नुत्फ़े को और परिन्द से अन्डे को यह उसके अ़जायबे क़ुदरत व हिकमत हैं (फ़ा202) और ऐसे बराहीन क़ायम होने के बाद क्यों ईमान नहीं लाते और मौत के बाद उठने का यक़ीन नहीं करते जो बेजान नुत्फ़े से जानदार हैवान पैदा करता है उसकी क़ुदरत से मुर्दे को ज़िन्दा करना क्या बईद है (फ़ा203) कि ख़ल्क़ उस में चैन पाती है और दिन की तकान व मांदगी को इस्तेराहत से दूर करती है और शब बेदार ज़ाहिद तन्हाई में अपने रब की इबादत से चैन पाते हैं (फ़ा204) कि उनके दौरे और सैर से इबादात व मुआ़मलात के औक़ात मालूम हों। (फ़ा205) यानी हज़रत आदम से (फ़ा206) मां के रेहम में या ज़मीन के ऊपर (फ़ा207) बाप की पुश्त में या क़ब्र (बक़िया सफ़हा 237 पर)

وَخَلَقَ كُلَّ شَيْءٍ ۚ وَهُوَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ ۝ ذٰلِكُمُ اللّٰهُ رَبُّكُمْ ۚ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۚ خَالِقُ كُلِّ شَيْءٍ فَاعْبُدُوْهُ ۚ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ وَّكِيْلٌ ۝ لَا تُدْرِكُهُ الْاَبْصَارُ وَهُوَ يُدْرِكُ
الْاَبْصَارَ ۚ وَهُوَ اللَّطِيْفُ الْخَبِيْرُ ۝ قَدْ جَآءَكُمْ بَصَآئِرُ مِنْ رَّبِّكُمْ ۚ فَمَنْ اَبْصَرَ فَلِنَفْسِهٖ ۚ وَمَنْ عَمِيَ فَعَلَيْهَا ۚ وَمَآ اَنَا عَلَيْكُمْ بِحَفِيْظٍ ۝ وَكَذٰلِكَ نُصَرِّفُ الْاٰيٰتِ
وَلِيَقُوْلُوْا دَرَسْتَ وَلِنُبَيِّنَهٗ لِقَوْمٍ يَّعْلَمُوْنَ ۝ اِتَّبِعْ مَآ اُوْحِيَ اِلَيْكَ مِنْ رَّبِّكَ ۚ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۚ وَاَعْرِضْ عَنِ الْمُشْرِكِيْنَ ۝ وَلَوْ شَآءَ اللّٰهُ مَآ اَشْرَكُوْا ۚ وَمَا جَعَلْنٰكَ
عَلَيْهِمْ حَفِيْظًا ۚ وَمَآ اَنْتَ عَلَيْهِمْ بِوَكِيْلٍ ۝ وَلَا تَسُبُّوا الَّذِيْنَ يَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ فَيَسُبُّوا اللّٰهَ عَدْوًا ۢبِغَيْرِ عِلْمٍ ۚ كَذٰلِكَ زَيَّنَّا لِكُلِّ اُمَّةٍ عَمَلَهُمْ ۪ ثُمَّ اِلٰى رَبِّهِمْ
مَّرْجِعُهُمْ فَيُنَبِّئُهُمْ بِمَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ۝ وَاَقْسَمُوْا بِاللّٰهِ جَهْدَ اَيْمَانِهِمْ لَئِنْ جَآءَتْهُمْ اٰيَةٌ لَّيُؤْمِنُنَّ بِهَا ۚ قُلْ اِنَّمَا الْاٰيٰتُ عِنْدَ اللّٰهِ وَمَا يُشْعِرُكُمْ ۙ اَنَّهَآ اِذَا جَآءَتْ
لَا يُؤْمِنُوْنَ ۝ وَنُقَلِّبُ اَفْـِٕدَتَهُمْ وَاَبْصَارَهُمْ كَمَا لَمْ يُؤْمِنُوْا بِهٖٓ اَوَّلَ مَرَّةٍ وَّنَذَرُهُمْ فِيْ طُغْيَانِهِمْ يَعْمَهُوْنَ ۝

व ख़–ल–क़ कुल्–ल शैइन् व हु–व बिकुल्लि शैइन् अ़लीम(101)ज़ालिकुमुल्लाहु रब्बुकुम् ला इला–ह इल्ला हु–व ख़ालिक़ु कुल्लि शैइन् फ़अ्–बुदूहु व हु–व अ़ला कुल्लि शैइंव्–वकील(102)ला तुद्रिकुहुल् अब्सारु व हु–व युद्रिकुल् अब्सा–र व हुवल् लतीफ़ुल् ख़बीर(103)क़द् जाअकुम् बसाइरु मिर्रब्बिकुम् फ़–मन् अब्स–र फ़लि–नफ़्सिही व मन् अ़मि–य फ़–अ़लैहा व मा अना अ़लैकुम् बि–ह़फ़ीज़(104)व कज़ालि–क नुसर्रिफ़ुल् आयाति व लियक़ूलू द–रस्–त व लिनुबय्यि–नहू लिक़ौमिंय्यअ्–लमून(105)इत्तबिअ़ मा ऊह़ि–य इलै–क मिर्रब्बि–क ला इला–ह इल्ला हु–व व अअ्रिज़् अ़निल्मुश्रिकीन(106)व लौ शाअल्लाहु मा अश्रकू व मा ज–अ़ल्ना–क अ़लैहिम् ह़फ़ीज़न् व मा अन्–त अ़लैहिम् बि–वकील(107)व ला तसुब्बुल्लज़ी–न यद्अू–न मिन् दूनिल्लाहि फ़–य–सुब्बुल्ला–ह अ़द्वम् बिग़ैरि अ़िल्मिन् कज़ालि–क ज़य्यन्ना लिकुल्लि उम्मतिन् अ़–म–लहुम् सुम्–म इला रब्बिहिम् मर्जिअ़ुहुम् फ़युनब्बिउहुम् बिमा कानू यअ्–मलून(108)व अक़्समू बिल्लाहि जह्–द ऐमानिहिम् लइन् जाअत्हुम् आयतुल् लयुअ्मि–नुन्–न बिहा क़ुल् इन्नमल् आयातु अ़िन्दल्लाहि व मा युश्अ़िरुकुम् अन्नहा इज़ा जाअत् ला युअ्मिनून(109)व नुक़ल्लिबु अफ़्इ–द–तहुम् व अब्सा–रहुम् कमा लम् युअ्मिनू बिही अव्व–ल मर्रतिंव्–व न–ज़रुहुम् फ़ी तुग़्यानिहिम् यअ्–महून(110)

और उसने हर चीज़ पैदा की (फ़ा212) और वह सब कुछ जानता है।(101) यह है अल्लाह तुम्हारा रब (फ़ा213) उसके सिवा किसी की बन्दगी नहीं हर चीज़ का बनाने वाला तो उसे पूजो और वह हर चीज़ पर निगहबान है।(102) (फ़ा214) आंखें उसे इहाता नहीं करतीं (फ़ा215) और सब आंखें उसके इहाता में हैं और वही है निहायत बातिन पूरा ख़बरदार। (103) तुम्हारे पास आंखें खोलने वाली दलीलें आईं तुम्हारे रब की तरफ़ से तो जिसने देखा तो अपने भले को और जो अन्धा हुआ तो अपने बुरे को और मैं तुम पर निगहबान नहीं।(104) और हम इसी तरह आयतें तरह-तरह से बयान करते हैं (फ़ा216) और इस लिए कि काफ़िर बोल उठें कि तुम तो पढ़े हो और इसलिए कि उसे इल्म वालों पर वाज़ेह कर दें। (105) उस पर चलो जो तुम्हें तुम्हारे रब की तरफ़ से 'वही' होती है (फ़ा217) उसके सिवा कोई मअ़बूद नहीं और मुश्रिकों से मुंह फेर लो।(106) और अल्लाह चाहता तो वह शिर्क नहीं करते और हमने तुम्हें उन पर निगहबान नहीं किया और तुम उन पर कड़ोड़े (हाकिमे आला) नहीं।(107) और उनहें गाली न दो जिन को वह अल्लाह के सिवा पूजते हैं कि वह अल्लाह की शान में बे अदबी करेंगे ज्यादती और जहालत से (फ़ा218) यूंही हमने हर उम्मत की निगाह में उसके अमल भले कर दिये हैं फिर उन्हें अपने रब की तरफ़ फिरना है और वह उन्हें बता देगा जो करते थे।(108) और उन्होंने अल्लाह की क़सम खाई अपने हलफ़ में पूरी कोशिश से कि अगर उनके पास कोई निशानी आई तो ज़रूर उस पर ईमान लायेंगे तुम फ़रमा दो कि निशानियां तो अल्लाह के पास हैं (फ़ा219) और तुम्हें (फ़ा220) क्या ख़बर कि जब वह आयें तो यह ईमान न लायेंगे।(109) और हम फेर देते हैं उनके दिलों और आंखों को (फ़ा221) जैसा वह पहली बार उसपर ईमान न लाये थे (फ़ा222) और उन्हें छोड़ देते हैं कि अपनी सरकशी में भटका करें।(110) (रुकूअ़ 19) **(बक़िया सफ़्हा 238 पर)**

(बक़िया सफ़हा 207 का) किराम की एक जमाअत रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का वअ्ज़ सुनकर एक रोज़ हज़रत उस्मान बिन मज़ऊन के यहां जमा हुई और उन्होंने बाहम तर्के दुनिया का अहद किया और इस पर इत्तेफ़ाक़ किया कि वह टाट पहनेंगे हमेशा दिन में रोज़ा रखेंगे शब इबादते इलाही में बेदार रह कर गुज़ारा करेंगे बिस्तर पर न लेटेंगे गोश्त और चिकनाई न खायेंगे औरतों से जुदा रहेंगे ख़ुश्बू न लगायेंगे इस पर यह आयते करीमा नाज़िल हुई और उन्हें इस इरादे से रोक दिया गया (फ़ा212) यानी जिस तरह हराम को तर्क किया जाता है उस तरह हलाल चीज़ों को तर्क न करो और न मुबालग़तन किसी हलाल चीज़ को यह कहो कि हमने उसको अपने ऊपर हराम कर लिया (फ़ा213) ग़लत फ़हमी की क़सम यानी यमीन लग्व यह है कि आदमी किसी वाक़िआ को अपने ख़्याल में सही जानकर क़सम खा ले और हक़ीक़त में वह ऐसा न हो ऐसी क़सम पर कफ़्फ़ारा नहीं (फ़ा214) यानी यमीने मुनअ़क़िदा पर जो किसी आईन्दा अमर पर क़स्द करके खाई जाये ऐसी क़सम तोड़ना गुनाह भी है और इस पर कफ़्फ़ारा भी लाज़िम है (फ़ा215) दोनों वक़्त ख़्वाह उन्हें खिला दे या पौने दो सेर गेहूं या साढ़े तीन सेर जौ सदक़ए फ़ित्र की तरह देदे। **मसलाः** यह भी जायज़ है कि एक मिस्कीन को दस रोज़ देदे या खिला दिया करे (फ़ा216) यानी न बहुत आला दर्जा का न बिल्कुल अदना बल्कि मुतवस्सित। (फ़ा217) औसत दर्जे के जिन से अक्सर बदन ढक सके हज़रत इब्ने उमर रिज़यल्लाहु अन्हुमा से मरवी है कि एक तहबन्द और कुरता या एक तहबन्द और एक चादर हो **मसलाः** कफ़्फ़ारा में इन तीनों बातों का इख़्तियार है ख़्वाह खाना दे ख़्वाह कपड़े ख़्वाह ग़ुलाम आज़ाद करे हर एक से कफ़्फ़ारा अदा हो जाएगा। (फ़ा218) **मसलाः** रोज़ा से कफ़्फ़ारा जब ही अदा हो सकता है जबकि खाना कपड़ा देने और ग़ुलाम आज़ाद करने की क़ुदरत न हो **मसलाः** यह भी ज़रूरी है कि यह रोज़े मुतवातिर रखे जायें।

(बक़िया सफ़हा 208 का) साल मुसलमान मोहरिम (एहराम पोश) थे इस हालत में वह इस आज़माईश में डाले गए कि वुहूश व तुयूर बकसरत आये और उनकी सवारियों पर छा गए हाथ से पकड़ना हथियार से शिकार कर लेना बिल्कुल इख़्तियार में था अल्लाह तआला ने यह आयत नाज़िल फ़रमाई और इस आज़माईश में वह बफ़ज़्ले इलाही फ़रमांबरदार साबित हुए और हुक्मे इलाही की तामील में साबित क़दम रहे (ख़ाज़िन वग़ैरह)।

(बक़िया सफ़हा 209 का) में भी ज़बह जायज़ नहीं इसी लिए कअ़बा को पहुंचती फ़रमाया कअ़बा के अन्दर न फ़रमाया और कफ़्फ़ारा खाने या रोज़ा से अदा किया जाये तो उसके लिए मक्का मुकर्रमा में होने की क़ैद नहीं बाहर भी जायज़ है (तफ़सीर अहमदी वग़ैरह) (फ़ा233) **मसलाः** यह भी जायज़ है कि शिकार की क़ीमत का ग़ल्ला ख़रीद कर मसाकीन को इस तरह दे कि हर मिस्कीन को सदक़ए फ़ित्र के बराबर पहुंचे और यह भी जायज़ है कि उस क़ीमत में जितने मिस्कीनों के ऐसे हिस्से होते थे उतने रोज़े रखे (फ़ा234) यानी इस हुक्म से क़बल जो शिकार मारे (फ़ा235) इस आयत में यह मसला बयान फ़रमाया गया कि मोहरिम के लिए दरिया का शिकार हलाल है और ख़ुश्की का हराम। दरिया का शिकार वह है जिसकी पैदाईश दरिया में हो और ख़ुश्की का वह जिसकी पैदाईश ख़ुश्की में हो (फ़ा236) कि वहां दीनी व दुनियवी उमूर का क़ियाम होता है ख़ायफ़ वहां पनाह लेता है ज़ईफ़ों को वहां अमन मिलती है ताजिर वहां नफ़ा पाते हैं हज व उमरा करने वाले वहां हाज़िर होकर मनासिक अदा करते हैं (फ़ा237) यानी ज़िलहिज्जा को जिस में हज किया जाता है (फ़ा238)कि उनमें सवाब ज़्यादा है इन सबको तुम्हारे मसालेह के क़ियाम का सबब बनाया।

(बक़िया सफ़हा 212 का) बिइज़्निल्लाह हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के मोअ्जेज़ात जलीला हैं (फ़ा271) यह एक और निअ्मत का बयान है कि अल्लाह तआला ने हज़रत ईसा अलैहिस्सलातु वस्सलाम को यहूद के शर से महफ़ूज़ रखा जिन्होंने हज़रत के मोअ्जेज़ाते बाहिरात देख कर आपके क़त्ल का इरादा किया अल्लाह तआला ने आपको आसमान पर उठा लिया और यहूद नामुराद रह गए (फ़ा272) यानी हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के मोअ्जेज़ात (फ़ा273) हवारी हज़रत ईसा अलैहिस्सलातु वस्सलाम के असहाब और आपके मख़्सूसीन हैं (फ़ा274) हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम पर (फ़ा275) ज़ाहिर और बातिन में मुख़लिस व मुतीअ् (फ़ा276) माना यह हैं कि क्या अल्लाह तआला इस बाब में आपकी दुआ क़बूल फ़रमाएगा। (फ़ा277) और तक़वा इख़्तियार करो ताकि यह मुराद हासिल हो बाज़ मुफ़स्सिरीन ने कहा माना यह हैं कि तमाम उम्मतों से निराला सवाल करने में अल्लाह से डरो या यह माना हैं कि उसकी कमाले क़ुदरत पर ईमान रखते हो तो उसमें तरद्दुद न करो हवारी मोमिन आरिफ़ और क़ुदरते इलाहिया के मोअ्तरिफ़ थे उन्होंने हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम से अर्ज़ किया।

(बक़िया सफ़हा 214 का) किये जायेंगे उन्हें बताया गया कि तुम्हारी असल मिट्टी ही से है तो फिर दोबारा पैदा किये जाने पर क्या तअ़ज्जुब जिस क़ादिर ने पहले पैदा किया उसकी क़ुदरत से बादे मौत ज़िन्दा फ़रमाने को बईद जानना नादानी है। (फ़ा7) जिसके पूरा हो जाने पर तुम मर जाओगे (फ़ा8) मरने के बाद उठाने का (फ़ा9) उसका कोई शरीक नहीं (फ़ा10) यहां हक़ से या क़ुरआन मजीद की आयात मुराद हैं या सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और आपके मोअ्जेज़ात। (फ़ा11) कि वह कैसी अ़ज़मत वाली है और उसकी हंसी बनानेका अंजाम कैसा वबाल व अ़ज़ाब (फ़ा12) पिछली उम्मतों में से (फ़ा13) क़ुव्वत व माल और दुनिया के कसीर सामान देकर (फ़ा14) जिससे खेतियां शादाब हों (फ़ा15) जिससे बाग़ परवरिश पाये और दुनिया की ज़िन्दगानी के लिए ऐश व राहत के असबाब बहम पहुंचे।

(बक़िया सफ़हा 226 का) मुवह्हिद या मुश्रिक (फ़ा174) इल्म व अ़क़्ल व फ़हम व फ़ज़ीलत के साथ जैसे कि हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम के दर्जे बुलन्द फ़रमाए दुनिया में इल्म व हिकमत व नबुव्वत के साथ और आख़िरत में क़ुर्ब व सवाब के साथ।

(बक़िया सफ़हा 210 का) आलम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने खुतबा फ़रमाते हुए फ़रमाया जिसको जो दरियाफ़्त करना हो दरियाफ़्त करे अब्दुल्लाह बिन हुज़ाफ़ह सहमी ने खड़े होकर दरियाफ़्त किया कि मेरा बाप कौन है फ़रमाया हुज़ाफ़ह फिर फ़रमाया और पूछो हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने उठकर इक़रारे ईमान व रिसालत के साथ मअ़ज़रत पेश की इब्ने शेहाब की रिवायत है कि अब्दुल्लाह बिन हुज़ाफ़ह की वालिदा ने उनसे शिकायत की और कहा कि तू बहुत नालायक़ बेटा है तुझे क्या मालूम कि ज़मानए जाहलियत की औरतों का क्या हाल था खुदा न-ख़्वास्ता तेरी मां से कोई क़ुसूर हुआ होता तो आज वह कैसी रुसवा होती इस पर अ़ब्दुल्लाह बिन हुज़ाफ़ह ने कहा कि अगर हुज़ूर किसी हब्शी ग़ुलाम को मेरा बाप बता देते तो मैं यक़ीन के साथ मान लेता बुख़ारी शरीफ़ की हदीस में है कि लोग बतरीक़े इस्तेहज़ा इस क़िस्म के सवाल किया करते थे कोई कहता मेरा बाप कौन है कोई पूछता मेरी ऊंटनी गुम हो गई है वह कहां है इस पर यह आयत नाज़िल हुई मुस्लिम शरीफ़ की हदीस में है कि रसूले करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने खुतबा में हज फ़र्ज़ होने का बयान फ़रमाया इस पर एक शख़्स ने कहा क्या हर साल फ़र्ज़ है हज़रत ने सुकूत फ़रमाया सायल ने सवाल की तकरार की तो इरशाद फ़रमाया कि जो मैं बयान न करूं उसके दरपै न हो अगर मैं हां कह देता तो हर साल हज करना फ़र्ज़ हो जाता और तुम न कर सकेते। **मसलाः** इस से मालूम हुआ कि अहकाम हुज़ूर को मुफ़व्वज़ हैं जो फ़र्ज़ फ़रमा दें वह फ़र्ज़ हो जाये न फ़रमायें न हो (फ़ा244) **मसलाः** इस आयत से साबित हुआ कि जिस अमर की शरअ़ में मुमानअ़त न आई हो वह मुबाह है हज़रत सलमान रज़ियल्लाहु अ़न्हु की हदीस में है कि हलाल वह है जो अल्लाह ने अपनी किताब में हलाल फ़रमाया हराम वह है जिसको उसने अपनी किताब में हराम फ़रमाया और जिस से सुकूत किया वह माफ़ तो कुलफ़त में न पड़ो (ख़ाज़िन) (फ़ा245) अपने अम्बिया से और बे ज़रूरत सवाल किये हज़राते अम्बिया ने अहकाम बयान फ़रमा दिये तो बजा न ला सके (फ़ा246) ज़मानए जाहलियत में कुफ़्फ़ार का यह दस्तूर था कि जो ऊँटनी पांच मर्तबा बच्चे जनती और आख़िर मर्तबा उसके नर होता उसका कान चीर देते फिर न उस पर सवारी करते न उसको ज़िबह करते न पानी और चारे पर से हंकाते उसको बहीरा कहते और जब सफ़र पेश होता या कोई बीमार होता तो यह नज़र करते कि अगर मैं सफ़र से बख़ैरियत वापस आऊं या तन्दुरुस्त हो जाऊं तो मेरी ऊंटनी सायबा (बिजार) है और इससे भी नफ़ा उठाना बहीरा की तरह हराम जानते और उस को आज़ाद छोड़ देते और बकरी जब सात मर्तबा बच्चे जन चुकती तो अगर सातवां बच्चा नर होता तो उसको मर्द खाते और अगर मादा होता तो बकरियों में छोड़ देते और ऐसे ही अगर नर मादा दोनों होते और कहते कि यह अपने भाई से मिल गई उसको वसीला कहते और जब नर ऊंट से दस गयाभ हासिल हो जाते तो उसको छोड़ देते न उस पर सवारी करते न उससे काम लेते न उसको चारे पानी पर से रोकते उसको हामी कहते (मदारिक) बुख़ारी व मुस्लिम की हदीस में है कि बहीरा वह है जिसका दूध बुतों के लिए रोकते थे कोई उस जानवर का दूध न दूहता और सायबा वह जिसको अपने बुतों के लिए छोड़ देते थे कोई उससे काम न लेता यह रस्में ज़मानए जाहलियत से इब्तदाए इस्लाम तक चली आ रही थीं इस आयत में उनको बातिल किया गया (फ़ा247) क्यों कि अल्लाह तआ़ला ने उन जानवरों को हराम नहीं किया उसकी तरफ़ इसकी निस्बत ग़लत है जो (फ़ा248) अपने सरदारों के कहने से उन चीज़ों को हराम समझते हैं इतना शुऊर नहीं रखते कि जो चीज़ अल्लाह और उसके रसूल ने हराम न की उसको कोई हराम नहीं कर सकता (फ़ा249) यानी हुक्मे खुदा और रसूल का इत्तेबाअ़ करो और समझ लो कि यह चीज़ें हराम नहीं। (फ़ा250) यानी बाप दादा का इत्तेबाअ़ जब दुरुस्त होता कि वह इल्म रखते और सीधी राह पर होते।

(बक़िया सफ़हा 216 का) नाज़िल होना अल्लाह की तरफ़ से मेरे रसूल होने की शहादत है जब यह क़ुरआन अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से यक़ीनी शहादत है और मेरी तरफ़ वही फ़रमाया गया ताकि मैं तुम्हें डराऊँ कि तुम हुक्मे इलाही की मुख़ालफ़त न करो (फ़ा47)यानी मेरे बाद क़ियामत तक आने वाले जिन्हें यह क़ुरआन पाक पहुंचे ख़्वाह वह इंसान हों या जिन्न उन सब को मैं हुक्मे इलाही की मुख़ालफ़त से डराऊं। हदीस शरीफ़ में है कि जिस शख़्स को क़ुरआन पाक पहुंचा गोया कि उसने नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को देखा और आप का कलामे मुबारक सुना हज़रत अनस बिन मालिक रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने फ़रमाया कि जब यह आयत नाज़िल हुई तो रसूले करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने किसरा और क़ैसर वग़ैरह सलातीन को दावते इस्लाम के मकतूब भेजे (मदारिक व ख़ाज़िन) इसकी तफ़सीर में एक क़ौल यह भी है कि *मन बल-ग़* में मन मरफ़ूउल-महल है और माना यह हैं कि इस क़ुरआन से मैं तुम को डराऊँ और वह डरायें जिन्हें यह क़ुरआन पहुंचे तिर्मिज़ी की हदीस में है कि अल्लाह तरो ताज़ा करे उसको जिसने हमारा कलाम सुना और जैसा सुना वैसा पहुंचाया बहुत से पहुंचाये हुए सुनने वाले से ज़्यादा अहल होते हैं और एक रिवायत में है सुनने वाले से ज़्यादा अफ़क़ह होते हैं इससे फ़ुक़हा की मन्ज़िलत मालूम होती है (फ़ा48) ऐ मुश्रिकीन (फ़ा49) ऐ हबीबे अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम (फ़ा50) जो गवाही तुम देते हो और अल्लाह के साथ दूसरे मअ़बूद ठहराते हो (फ़ा51) उसका कोई शरीक नहीं (फ़ा52) **मसलाः** इस आयत से साबित हुआ कि जो शख़्स इस्लाम लाये उसको चाहिए कि तौहीद व रिसालत की शहादत के साथ इस्लाम के हर मुख़ालिफ़ अ़क़ीदा व दीन से बेज़ारी का इज़्हार करे (फ़ा53) यानी उलमाए यहूद व नसारा जिन्होंने तौरेत व इन्जील पाई। (फ़ा54) आपके हुलिया शरीफ़ और आपकी नअ़त व सिफ़त से जो उन किताबों में मज़कूर है (फ़ा55) यानी बग़ैर किसी शक व शुबहा के।

(बक़िया सफ़हा 222 का) तुम्हारे तसर्रुफ़ात अपने हाल पर बाक़ी नहीं रहते (फ़ा132) और उम्र अपनी इन्तेहा को पहुंचे (फ़ा133) आख़िरत में इस आयत में बअ़स *बअ़दल-मौत* यानी मरने के बाद ज़िन्दा होने पर दलील ज़िक्र फ़रमाई गई जिस तरह रोज़ मर्रा सोने के वक़्त एक तरह की मौत तुम पर वारिद की जाती है जिससे तुम्हारे हवास मुअ़त्तल हो जाते हैं और चलना फिरना पकड़ना और बेदारी के अफ़आ़ल सब मुअ़त्तल होते हैं इसके बाद फिर बेदारी के वक़्त अल्लाह तआ़ला तमाम क़ुवा को उनके तसर्रुफ़ात अ़ता फ़रमाता है यह दलीले बय्यिन है इस बात की कि वह ज़िन्दगानी के तसर्रुफ़ात बाद मौत अ़ता करने पर इसी तरह क़ादिर है।

(बक़िया सफ़हा 211 का) जिस पर सोने का काम बना था उसमे तीन सौ मिस्क़ाल चांदी थी बदील यह जाम बादशाह को नज़र करने के क़स्द से लाये थे उनकी वफ़ात के बाद उनके उन दोनों साथियों ने उस जाम को ग़ायब कर दिया और अपने काम से फ़ारिग़ होने के बाद जब यह लोग मदीना तय्येबा पहुंचे तो उन्होंने बदील का सामान उनके घर वालों के सपुर्द कर दिया सामान खोलने पर फ़ेहरिस्त उनके हाथ आगई जिसमें तमाम मताअ़ की तफ़सील थी समान को उसके मुताबिक़ किया तो जाम न पाया अब वह तमीम और अ़दी के पास पहुंचे और उन्होंने दरियाफ़्त किया कि बदील ने कुछ सामान बेचा भी था उन्होंने कहा नहीं कहा कोई तिजारती मुआ़मला किया था उन्होंने कहा नहीं फिर दरियाफ़्त किया बदील बहुत अर्सा बीमार रहे और उन्होंने अपने इलाज में कुछ ख़र्च किया उन्होंने कहा नहीं वह तो शहर पहुंचते ही बीमार हो गए और जल्द ही उनका इन्तेक़ाल हो गया इस पर उन लोगों ने कहा कि उनके सामान में एक फ़ेहरिस्त मिली है उस में चांदी का एक जाम सोने से मुनक़्क़श किया हुआ जिसमें तीन सौ मिस्क़ाल चांदी है यह भी लिखा है तमीम व अ़दी ने कहा हमें नहीं मालूम हमें तो जो वसीयत की थी उसके मुताबिक़ सामान हमने तुम्हें दे दिया जाम की हमें ख़बर भी नहीं यह मुक़द्दमा रसूले करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के दरबार में पेश हुआ तमीम व अ़दी वहां भी इंकार पर जमे रहे और क़सम खा ली इस पर यह आयत नाज़िल हुई (ख़ाज़िन) हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा की रिवायत में है कि फिर वह जाम मक्का मुकर्रमा में पकड़ा गया जिस शख़्स के पास था उसने कहा मैं ने यह जाम तमीम व अ़दी से ख़रीदा है मालिके जाम के औलिया में से दो शख़्सों ने खड़े होकर क़सम खाई कि हमारी शहादत उनकी शहादत से ज़्यादा अहक़ है यह जाम हमारे मूरिस का है इस बाब में यह आयत नाज़िल हुई (तिर्मिज़ी) (फ़ा253) यानी मौत का वक़्त क़रीब आये ज़िन्दगी की उम्मीद न रहे मौत के आसार व अ़लामात ज़ाहिर हों (फ़ा254) इस नमाज़ से नमाज़े अ़स्र मुराद है क्योंकि वह लोगों के इज्तेमाअ़ का वक़्त होता है हसन रहमतुल्लाह अ़लैह ने फ़रमाया कि नमाज़े जुहर या अ़स्र क्योंकि अहले हिजाज़ मुक़द्दमात उसी वक़्त करते थे हदीस शरीफ़ में है कि जब यह आयत नाज़िल हुई तो रसूले करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने नमाज़े अ़स्र पढ़कर अ़दी व तमीम को बुलाया उन दोनों को मिम्बर शरीफ़ के पास क़समें दीं उन दोनों ने क़समें खाईं उसके बाद मक्का मुकर्रमा में वह जाम पकड़ा गया तो जिस शख़्स के पास था उसने कहा मैंने तमीम व अ़दी से ख़रीदा है (मदारिक) (फ़ा255) उनकी अमानत व दियानत में और वह यह कहें कि (फ़ा256) यानी झूठी क़सम न खायेंगे और किसी की ख़ातिर ऐसा न करेंगे। (फ़ा257) ख़ियानत के या झूठ वग़ैरह के (फ़ा258) और वह मय्यत के अहल व अक़ारिब हैं (फ़ा259) चुनांचे बदील के वाक़िआ़ में जब उनके दोनों हमराहियों की ख़ियानत ज़ाहिर हुई तो बदील के वुरसा में से दो शख़्स खड़े हुए और उन्होंने क़सम खाई कि यह जाम हमारे मूरिस का है और हमारी गवाही उन दोनों की गवाही से ज़्यादा ठीक है (फ़ा260) हासिले माना यह है कि इस मुआ़मले में जो हुक्म दिया गया कि अ़दी व तमीम की क़समों के बाद माल बर-आमद होने पर औलियाए मय्यत की क़समें ली गईं यह इस लिए कि लोग इस वाक़िआ़ से सबक़ लें और शहादतों में राहे हक़ व सवाब न छोड़ें और इससे ख़ायफ़ रहें कि झूठी गवाही का अंजाम शर्मिन्दगी व रुसवाई है। फ़ायदाः मुद्दई पर क़सम नहीं लेकिन यहां जब माल पाया गया तो मुद्दआ़ अ़लैहिमा ने दावा किया कि उन्होंने मय्यत से ख़रीद लिया था अब उनकी हैसियत मुद्दई की हो गई और उनके पास इसका कोई सुबूत न था लिहाज़ा उनके ख़िलाफ़ औलियाए मय्यत की क़सम ली गई।

(बक़िया सफ़हा 215 का) सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम पर (फ़ा21) और फिर भी यह ईमान न लाते (फ़ा22) यानी अज़ाब वाजिब हो जाता और यह सुन्नते इलाहिया है कि जब कुफ़्फ़ार कोई निशानी तलब करें और उसके बाद भी ईमान न लायें तो अज़ाब वाजिब हो जाता है और वह हलाक कर दिये जाते हैं (फ़ा23) एक लम्हा की भी और अज़ाब मुअख़्ख़र न किया जाता तो फ़रिश्ता का उतारना जिसको वह तलब करते हैं उन्हें क्या नाफ़ेअ़ होता (फ़ा24) यह उन कुफ़्फ़ार का जवाब है जो नबी अ़लैहिस्सलाम को कहा करते थे यह हमारी तरह बशर हैं और इसी ख़ब्त में वह ईमान से महरूम रहते थे उन्हें इंसानों में से रसूल मबऊस फ़रमाने की हिकमत बताई जाती है कि उनके मुन्तफ़अ़ होने और तालीमे नबी से फ़ैज़ उठाने की यही सूरत है कि नबी सूरते बशरी में जलवागर हो क्योंकि फ़रिश्ते को उसकी असली सूरत में देखने की तो यह लोग ताब न ला सकते देखते ही हैबत से बेहोश हो जाते या मर जाते इस लिए अगर बिलफ़र्ज़ रसूल फ़रिश्ता ही बनाया जाता (फ़ा25) और सूरते इंसानी ही में भेजते ताकि यह लोग उसको देख सकें उसका कलाम सुन सकें उससे दीन के अहकाम मालूम कर सकें लेकिन अगर फ़रिश्ता सूरते बशरी में आता तो उन्हें फिर वही कहने का मौक़ा रहता कि यह बशर है तो फ़रिश्ता को नबी बनाने का क्या फ़ाइदा होता (फ़ा26) वह मुबतलाए अज़ाब हुए इसमें नबीए करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की तसल्ली व तस्कीने ख़ातिर है कि आप रंजीदा व मलूल न हों कुफ़्फ़ार का पहले अम्बिया के साथ भी यही दस्तूर रहा है और उसका वबाल उन कुफ़्फ़ार को उठाना पड़ा है नीज़ मुश्रिकीन को तम्बीह है कि पिछली उम्मतों के हाल से इबरत हासिल करें और अम्बिया के साथ तरीक़े अदब मलहूज़ रखें ताकि पहलों की तरह मुबतलाए अज़ाब न हों (फ़ा27) ऐ हबीब सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम उन तमस्ख़ुर करने वालों से कि तुम (फ़ा28) और उन्होंने कुफ़्र व तकज़ीब का समरा पाया (फ़ा29) अगर वह इसका जवाब न दें तो (फ़ा30) क्योंकि उसके सिवा और कोई जवाब ही नहीं है और वह उसके ख़िलाफ़ नहीं कर सकते क्योंकि बुत जिनको मुश्रिकीन पूजते हैं वह बे जान हैं किसी चीज़ के मालिक होने की सलाहियत नहीं रखते ख़ुद दूसरे के ममलूक हैं आसमान व ज़मीन का वही मालिक हो सकता है जो हय्य व क़य्यूम अज़ली व अबदी क़ादिरे मुतलक़ हर शय पर मुतसर्रिफ़ व हुकमरां हो तमाम चीज़ें उसके पैदा करने से वजूद में आई हों ऐसा सिवाए अल्लाह के कोई नहीं इस लिए तमाम समावी व अरज़ी काइनात का मालिक उसके सिवा कोई नहीं हो सकता (फ़ा31) यानी उसने रहमत का वादा किया और उसका वादा ख़िलाफ़ नहीं हो सकता क्योंकि वादा ख़िलाफ़ी व किज़्ब उसके लिए मुहाल है और रहमत आम है दीनी हो या दुनियवी अपनी मअ़रेफ़त और तौहीद और इल्म की तरफ़ हिदायत फ़रमाना भी रहमत में दाख़िल है और कुफ़्फ़ार को मोहलत देना और उक़ूबत में तअ़जील न फ़रमाना भी कि उससे उन्हें तौबा और इनाबत का मौक़ा मिलात है (जुमल वग़ैरह) (फ़ा32) और आमाल का बदला देगा (फ़ा33) कुफ़्र इख़्तियार करके। (फ़ा34) यानी तमाम मौजूदात उसी की मिल्क है और वह सबका ख़ालिक़ मालिक रब है (फ़ा35) उससे कोई चीज़ पोशीदा नहीं

(बक़िया सफ़हा 213 का) (117) (फ़293) अगर तू उन्हें अ़ज़ाब करे तो वह तेरे बन्दे हैं और अगर तू उन्हें बख़्श दे तो बेशक तू ही है ग़ालिब हिकमतवाला।(118) (फ़294) अल्लाह ने फ़रमाया कि यह (फ़295) है वह दिन जिसमें सच्चों को (फ़296) उनका 'सच' काम आएगा उनके लिए बाग़ हैं जिन के नीचे नहरें रवां हमेशा हमेशा उनमें रहेंगे अल्लाह उन से राज़ी और वह अल्लाह से राज़ी यह है बड़ी कामयाबी।(119) अल्लाह ही के लिए है आसमानों और ज़मीन और जो कुछ उन में है सब की सल्तनत और वह हर चीज़ पर क़ादिर है। (120) (फ़297) (रुकूअ़. 6)

(फ़278) हुसूले बरकत के लिए (फ़279) और यक़ीन क़वी हो और जैसा कि हमने क़ुदरते इलाही को दलील से जाना है मुशाहदा से भी उसको पुख़्ता कर लें (फ़280) बेशक आप अल्लाह के रसूल हैं (फ़281)अपने बाद वालों के लिए हवारियों के यह अ़र्ज़ करने पर हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम ने उन्हें तीस रोज़े रखने का हुक्म दिया और फ़रमाया जब तुम इन रोज़ों से फ़ारिग़ हो जाओगे तो अल्लाह तआ़ला से जो दुआ करोगे क़बूल होगी उन्होंने रोज़े रख कर ख़्वान उतरने की दुआ की उस वक़्त हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलातु वस्सलाम ने गुस्ल फ़रमाया और मोटा लिबास पहना और दो रकअ़त नमाज़ अदा की और सरे मुबारक झुकाया और रो रोकर यह दुआ की जिसका अगली आयत में ज़िक्र है।(फ़282) यानी हम उसके नुज़ूल के दिन को ईद बनायें उसकी ताज़ीम करें ख़ुशियां मनायें तेरी इबादत करें शुक्र बजा लायें। **मसलाः** इससे मालूम हुआ कि जिस रोज़ अल्लाह तआ़ला की ख़ास रहमत नाज़िल हो उस दिन को ईद बनाना और ख़ुशियां मनाना इबादतें करना शुक्रे इलाही बजा लाना तरीक़ए सालिहीन है और कुछ शक नहीं कि सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की तशरीफ़ आवरी अल्लाह तआ़ला की अ़ज़ीम तरीन निअ़्मत और बुज़ुर्ग तरीन रहमत है। इस लिए हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की विलादते मुबारका के दिन ईद मनाना और मीलाद शरीफ़ पढ़कर शुक्रे इलाही बजा लाना और इज़्हारे फ़रह और सुरूर करना मुस्तहसन व महमूद और अल्लाह के मक़बूल बन्दों का तरीक़ा है (फ़283) जो दीनदार हमारे ज़माने में हैं उनकी और जो हमारे बाद आयें उनकी (फ़284) तेरी क़ुदरत की और मेरी नबुव्वत की (फ़285) यानी ख़्वान नाज़िल होने के बाद (फ़286) चुनांचे आसमान से ख़्वान नाज़िल हुआ उसके बाद जिन्होंने उनमें से कुफ़्र किया वह सूरतें मस्ख़ करके ख़िन्ज़ीर बना दिये गए और तीन रोज़ में सब हलाक हो गए (फ़287) रोज़े क़ियामत ईसाईयों की तौबीख़ के लिए (फ़288) इस ख़िताब को सुनकर हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम कांप जायेंगे और (फ़289) जुमला नक़ायस व उयूब से और इससे कि कोई तेरा शरीक हो सके (फ़290) यानी जब कोई तेरा शरीक नहीं हो सकता तो मैं यह लोगों से कैसे कह सकता था (फ़291) इल्म को अल्लाह तआ़ला की तरफ़ निस्बत करना और मुआ़मला उसको तफ़वीज़ कर देना और अ़ज़मते इलाही के सामने अपनी मिस्कीनी का इज़्हार करना यह हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम की शाने अदब है (फ़292) *त-वफ़्फ़ै-तनी* के लफ़्ज़ से हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम की मौत पर दलील लाना सही नहीं क्योंकि अव्वल तो लफ़्ज़ *तवफ़्फ़ा* मौत के लिए ख़ास नहीं किसी शय के पूरे तौर पर लेने को कहते हैं ख़्वाह वह बग़ैर मौत के हो जैसा कि क़ुरआने करीम में इरशाद हुआ *अल्लाहु य-तवफ़्फ़ल् अन्फु-स ही-न मौतिहा वल्लती लम् तमुत् फ़ी मनामिहा* दोम जब यह सवाल व जवाब रोज़े क़ियामत का है तो अगर लफ़्ज़ (त-वफ़्फ़ा) मौत के माना में भी फ़र्ज़ कर लिया जाए जब भी हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलातु वस्सलाम की मौत क़ब्ल नुज़ूल इससे साबित न हो सकेगी। (फ़293) और मेरा उनका किसी का हाल तुझ से पोशीदा नहीं (फ़294) हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलातु वस्सलाम को मालूम है कि क़ौम में बाज़ लोग कुफ़्र पर मुसिर रहे बाज़ शरफ़े ईमान से मुशर्रफ़ हुए इस लिए आपकी बारगाहे इलाही में यह अ़र्ज़ है कि उन में से जो कुफ़्र पर क़ायम रहे उन पर तो अज़ाब फ़रमाये तो बिल्कुल हक़ व बजा और अ़द्ल व इंसाफ़ है क्योंकि उन्होंने हुज्जत तमाम होने के बाद कुफ़्र इख़्तियार किया और जो ईमान लाये उन्हें तू बख़्शे तो तेरा फ़ज़्ल व करम है और तेरा हर काम हिकमत है (फ़295) रोज़े क़ियामत (फ़296) जो दुनिया में सच्चाई पर रहे जैसे कि हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम (फ़297) सादिक़ को सवाब देने पर भी और काज़िब को अ़ज़ाब फ़रमाने पर भी। **मसलाः** क़ुदरत मुमकिनात से मुतअ़ल्लिक़ होती है न कि वाजिबात व मुहालात से तो माना आयत के यह हैं कि अल्लाह तआ़ला हर अमरे मुमकिनुल वुजूद पर क़ादिर है (जुमल) **मसलाः** किज़्ब वग़ैरह उयूब व क़बाएह अल्लाह सुबहानहू तबारक व तआ़ला के लिए मुहाल हैं उनको तहते क़ुदरत बताना और इस आयत से सनद लाना ग़लत व बातिल है।

(बक़िया सफ़हा 217 का) मजलिस में हाज़िर होने और क़ुरआने करीम सुनने से रोकते थे और ख़ुद भी दूर रहते थे कि कहीं कलामे मुबारक उनके दिल में असर न कर जाये हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा ने फ़रमाया कि यह आयत हुज़ूर के चचा अबू तालिब के हक़ में नाज़िल हुई जो मुश्रिकीन को तो हुज़ूर की ईज़ा रसानी से रोकते थे और ख़ुद ईमान लाने से बचते थे (फ़62) यानी उसका ज़रर ख़ुद उन्हीं को पहुंचता है (फ़63) दुनिया में (फ़64) जैसा कि ऊपर इसी रुकूअ में मज़कूर हो चुका कि मुश्रिकीन से जब फ़रमाया जाएगा कि तुम्हारे शरीक कहां हैं तो वह अपने कुफ़्र को छुपायेंगे और अल्लाह की क़सम खा कर कहेंगे कि हम मुश्रिक न थे इस आयत में बताया गया कि फिर जब उनहें ज़ाहिर हो जाएगा जो वह छुपाते थे यानी उनका कुफ़्र इस तरह ज़ाहिर होगा कि उनके आज़ा व जवारेह उनके कुफ़्र व शिर्क की गवाहियां देंगे तब वह दुनिया में वापस जाने की तमन्ना करेंगे।

(बक़िया सफ़हा 225 का) अलैहिस्सलातु वस्सलाम को दीन में बीनाई अता फ़रमाई ऐसे ही उन्हें आसमानों और ज़मीन के मिल्क दिखाते हैं हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा ने फ़रमाया इससे आसमान और ज़मीन की ख़ल्क़ मुराद है मुजाहिद और सईद बिन जुबैर कहते हैं कि आयाते समावात व अर्ज़ मुराद हैं यह इस तरह कि हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलातु वस्सलाम को सख़रा (पत्थर) पर खड़ा किया गया और आपके लिए समावात मक्शूफ़ किये गए यहां तक कि आपने अर्श व कुर्सी और आसमानों के तमाम अजायब और जन्नत में अपने मक़ाम को मुआयना फ़रमाया आपके लिए ज़मीन कश्फ़ फ़रमा दी गई यहां तक कि आपने सबसे नीचे की ज़मीन तक नज़र की और ज़मीनों के तमाम अजायब देखे। मुफ़स्सिरीन का इस में इख़्तिलाफ़ है कि यह रूयत बचश्मे बातिन थी या बचश्मे सर (दुर्रे मन्सूर व ख़ाज़िन वग़ैरह) (फ़ा163) क्योंकि हर ज़ाहिर व मख़फ़ी चीज़ उनके सामने कर दी गई और ख़ल्क़ के आमाल में से कुछ भी उनसे न छुपा रहा (फ़ा164) उलमाए तफ़सीर और असहाबे अख़बार व सियर का बयान है कि नमरूद इब्ने कनआन बड़ा जाबिर बादशाह था सबसे पहले उसी ने ताज सर पर रखा यह बादशाह लोगों से अपनी परस्तिश कराता था काहिन और मुनज्जिम कसरत से उसके दरबार में हाज़िर रहते थे नमरूद ने ख़्वाब देखा कि एक सितारा तुलूअ़ हुआ है उसकी रौशनी के सामने आफ़ताब माहताब बिल्कुल बे नूर हो गए इससे वह बहुत ख़ौफ़ज़दा हुआ काहिनों से तअ्बीर दरियाफ़्त की उन्होंने कहा इस साल तेरी क़लमरौ में एक फ़रज़न्द पैदा होगा जो तेरे ज़वाले मिल्क का बायस होगा और तेरे दीन वाले उसके हाथ से हलाक होंगे यह ख़बर सुनकर वह परेशान हुआ और उसने हुक्म दे दिया कि जो बच्चा पैदा हो क़त्ल कर डाला जाये और मर्द औरतों से अलाहिदा रहें और उसकी निगहबानी के लिए एक महकमा क़ायम कर दिया गया तक़दीराते इलाहिया को कौन टाल सकता है हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम की वालिदा माजिदा हामिला हुईं और काहिनों ने नमरूद को इसकी भी ख़बर दी कि वह बच्चा हमल में आ गया लेकिन चूंकि हज़रत की वालिदा साहेबा की उम्र कम थी उन का हमल किसी तरह पहचाना ही न गया जब ज़मानए विलादत क़रीब हुआ तो आपकी वालिदा उस तह ख़ाना में चली गईं जो आपके वालिद ने शहर से दूर खोद कर तैयार किया था वहां आपकी विलादत हुई और वहीं आप रहे पत्थरों से उस तह ख़ाना का दरवाज़ा बन्द कर दिया जाता था रोज़ाना वालिदा साहेबा दूध पिला आती थीं और जब वहां पहुंचती थीं तो देखती थीं कि आप अपनी सरे अंगुश्त चूस रहे हैं और उससे दूध बर आमद होता है आप बहुत जल्द बढ़ते थे एक महीना में इतना जितने दूसरे बच्चे एक साल में, इसमें इख़्तिलाफ़ है कि आप तह ख़ाना में कितने अर्सा रहे बाज़ कहते हैं ७ बरस बाज़ १३ बरस बाज़ 17 बरस। यह मसला यक़ीनी है कि अम्बिया अलैहिमुस्सलाम हर हाल में मअ्सूम होते हैं और वह अपनी इब्तेदाए हस्ती से तमाम औक़ात वुजूद में आरिफ़ होते हैं एक रोज़ हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने अपनी वालिदा से दरियाफ़्त फ़रमाया मेरा रब (पालने वाला) कौन है उन्होंने कहा मैं फ़रमाया तुम्हारा रब कौन है उन्होंने कहा तुम्हारे वालिद फ़रमाया उनका रब कौन है इस पर वालिदा ने कहा ख़ामोश रहो और अपने शौहर से जाकर कहा कि जिस लड़के की निस्बत यह मशहूर है कि वह ज़मीन वालों का दीन बदल देगा वह तुम्हारा फ़रज़न्द ही है और यह गुफ़्तगू बयान की हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने इब्तेदा ही से तौहीद की हिमायत और अक़ायदे कुफ़्रिया का इबताल शुरू फ़रमा दिया और जब एक सूराख़ की राह से शब के वक़्त आपने ज़ुहरा या मुश्तरी सितारा को देखा तो इक़ामते हुज्जत शुरू कर दी क्योंकि उस ज़माने के लोग बुत और कवाकिब की परस्तिश करते थे तो आपने एक निहायत नफ़ीस और दिल-नशीन पैराये में उन्हें नज़र व इस्तेदलाल की तरफ़ रहनुमाई की जिससे वह इस नतीजे पर पहुंचे कि आलम बेतमामेही हादिस है इलाह नहीं हो सकता वह ख़ुद मूजिद व मुदब्बिर का मोहताज है जिसके क़ुदरत व इख़्तियार से उसमें तग़य्युर होते रहते हैं (फ़ा165) इसमें क़ौम की तम्बीह है कि जो क़मर को इलाह ठहराए वह गुमराह है क्योंकि उसका एक हाल से दूसरे हाल की तरफ़ मुन्तक़िल होना दलीले हदूस व इमकान है।

(बक़िया सफ़हा 218 का) (फ़ा72) **शाने नुज़ूलः** अख़नस बिन शरीक़ और अबू जहल की बाहम मुलाक़ात हुई तो अख़नस ने अबू जहल से कहा ऐ अबुल हकम (कुफ़्फ़ार अबू जहल को अबुल हकम कहते थे) यह तन्हाई की जगह है और यहां कोई ऐसा नहीं जो मेरी तेरी बात पर मुत्तलअ़ हो सके अब तो मुझे ठीक ठीक बता कि मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) सच्चे हैं या नहीं अबू जहल ने कहा कि अल्लाह की क़सम मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) बेशक सच्चे हैं कभी कोई झूठा हरफ़ उनकी ज़बान पर न आया मगर बात यह है कि यह क़ुसै की औलाद हैं और लिवा, सिक़ायत, हिजाबत, नदवह वग़ैरह तो सारे एअ्ज़ाज़ उन्हें हासिल ही हैं नबुव्वत भी उन्हीं में हो जाये तो बाक़ी क़ुरैशियों के लिए एअ्ज़ाज़ क्या रह गया। तिर्मिज़ी ने हज़रत अली मुर्तज़ा से रिवायत की कि अबू जहल ने हज़रत नबीए करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से कहा हम आपकी तकज़ीब नहीं करते हम तो उस किताब की तकज़ीब करते हैं जो आप लाये इस पर यह आयते करीमा नाज़िल हुई (फ़ा73) इसमें सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की तस्कीने ख़ातिर है कि क़ौम हुज़ूर के सिद्क़ का एतेक़ाद रखती है लेकिन उनकी ज़ाहिरी तकज़ीब का बाइस उनका हसद व इनाद है। (फ़ा74) आयत के यह माना भी होते हैं कि ऐ हबीबे अकरम आपकी तकज़ीब आयाते इलाहिया की तकज़ीब है और तकज़ीब करने वाले ज़ालिम (फ़ा75) और तकज़ीब करने वाले हलाक किये गए (फ़ा76) उसके हुक्म को कोई पलट नहीं सकता रसूलों की नुसरत और उनकी तकज़ीब करने वालों का हलाक उसने जिस वक़्त मुक़द्दर फ़रमाया है ज़रूर होगा (फ़ा77) और आप जानते हैं कि उन्हें कुफ़्फ़ार से कैसी ईज़ायें पहुंचीं यह पेशे नज़र रखकर आप दिल मुतमइन रखें। (फ़ा78) सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को बहुत ख़्वाहिश थी कि सब लोग इस्लाम ले आयें जो इस्लाम से महरूम रहते उनकी महरूमी आप पर बहुत शाक़ रहती। (फ़ा79) मक़सूद उनके ईमान की तरफ़ से सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की उम्मीद मुन्क़तअ़ करना है ताकि आप को उनके एअ्राज़ करने और ईमान न लाने से रंज व तकलीफ़ न हो।

(बक़िया सफ़हा 219 का) मुफ़स्सिरीन ने फ़रमाया कि यह हैवानात तुम्हारी तरह अल्लाह को पहचानते वाहिद जानते उसकी तस्बीह पढ़ते इबादत करते हैं बाज़ का क़ौल है कि वह मख़्लूक़ होने में तुम्हारी मिस्ल हैं बाज़ ने कहा कि वह इंसान की तरह बाहमी उलफ़त रखते और एक दूसरे से तफ़हीम व तफ़हहुम करते हैं बाज़ का क़ौल है कि रोज़ी तलब करने हलाकत से बचने नर मादा की इम्तियाज़ रखने में तुम्हारी मिस्ल हैं बाज़ ने कहा कि पैदा होने मरने, मरने के बाद हिसाब के लिए उठने में तुम्हारी मिस्ल हैं (फ़ा88) यानी जुमला उलूम और तमाम *मा का-न व मा यकू-न* का इसमें बयान है और जमीअ़् अशिया का इल्म इसमें है इस किताब से यह क़ुरआने करीम मुराद है या लौहे महफ़ूज़ (जुमल वग़ैरह) (फ़ा89) और तमाम दवाब व तुयूर का हिसाब होगा उसके बाद वह ख़ाक कर दिये जायेंगे (फ़ा90) कि हक़ मानना और हक़ बोलना उन्हें मुयस्सर नहीं (फ़ा91) जहल और हैरत और कुफ़्र के (फ़ा92) इस्लाम की तौफ़ीक़ अता फ़रमाये (फ़ा93) और जिनको दुनिया में मअ़्बूद मानते थे उनसे हाजत रवाई चाहोगे (फ़ा94) अपने इस दावा में कि मआ़ज़ल्लाह बुत मअ़्बूद हैं तो उस वक़्त उन्हें पुकारो मगर ऐसा न करोगे (फ़ा95) तो इस मुसीबत को (फ़ा96) जिन्हें एतेक़ादे बातिल में मअ़्बूद जानते थे और उनकी तरफ़ इल्तेफ़ात भी न करोगे क्योंकि तुम्हें मालूम है कि वह तुम्हारे काम नहीं आ सकते (फ़ा97) फ़क़्र व इफ़लास और बीमारी वग़ैरह में मुब्तला किया (फ़ा98) अल्लाह की तरफ़ रुजूअ़् करें अपने गुनाहों से बाज़ आयें।

(बक़िया सफ़हा 221 का) मैं तुम्हें गुज़श्ता या आईन्दा की ख़बरें न बताऊं तो मेरी नबुव्वत मानने में उज़्र कर सको न मैंने फ़रिश्ता होने का दावा किया है कि खाना पीना निकाह करना क़ाबिले एतेराज़ हो तो जिन चीज़ों का दावा ही नहीं किया उनका सवाल बे महल है और इसकी इजाबत मुझ पर लाज़िम नहीं मेरा दावा नबुव्वत व रिसालत का है और जब इस पर ज़बरदस्त दलीलें और क़वी बुरहानें क़ायम हो चुकीं तो ग़ैर मुतअ़ल्लिक़ बातें पेश करना क्या माना रखता है। फ़ायदाः इस से साफ़ वाज़ेह हो गया कि इस आयते करीमा को सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के ग़ैब पर मुत्तलअ़् किये जाने की नफ़ी के लिए सनद बनाना ऐसा ही बे महल है जैसा कुफ़्फ़ार का उन सवालात को इंकारे नबुव्वत की दस्तावेज़ बनाना बे महल था अलावा बरीं इस आयत से हुज़ूर सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के इल्मे अ़ताई की नफ़ी किसी तरह मुराद ही नहीं हो सकती क्योंकि इस सूरत में तआ़रुज़ बैनल-आयात का क़ायल होना पड़ेगा *व हुव बातिलुन*, मुफ़स्सिरीन का यह भी क़ौल है कि हुज़ूर का ला *अक़ूलु लकुम्* फ़रमाना बतरीक़े तवाज़ोअ़ है। (ख़ाज़िन व मदारिक व जुमल वग़ैरह) (फ़ा114) और यही नबी का काम है तो मैं तुम्हें वही दूंगा जिसका मुझे इज़्न होगा वही बताऊंगा जिसकी इजाज़त होगी वही करूंगा जिसका मुझे हुक्म मिला हो (फ़ा115) मोमिन व काफ़िर आलिम व जाहिल (फ़ा116) **शाने नुज़ूलः** कुफ़्फ़ार की एक जमाअ़त सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की ख़िदमत में आई तो उन्होंने देखा कि हुज़ूर के गिर्द ग़रीब सहाबा की एक जमाअ़त हाज़िर है जो अदना दर्जे के लिबास पहने हुए हैं यह देख कर वह कहने लगे कि हमें इन लोगों के पास बैठते शर्म आती है अगर आप उनहें अपनी मजलिस से निकाल दें तो हम आप पर ईमान ले आयें और आपकी ख़िदमत में हाज़िर रहें हुज़ूर ने इसको मंज़ूर न फ़रमाया इस पर यह आयत नाज़िल हुई (फ़ा117) सबका हिसाब अल्लाह पर है वही तमाम ख़ल्क़ को रोज़ी देने वाला है उसके सिवा किसी के ज़िम्मे किसी का हिसाब नहीं हासिले माना यह कि वह ज़ईफ़ फ़ुक़रा जिनका ऊपर ज़िक्र हुआ आपके दरबार में क़ुर्ब पाने के मुस्तहिक़ हैं उन्हें दूर न करना ही बजा है (फ़ा118) बतरीक़े हसद (फ़ा119) कि उन्हें ईमान व हिदायत नसीब की बावजूदेकि वह लोग फ़क़ीर ग़रीब हैं और हम रईस सरदार हैं इससे उनका मतलब अल्लाह तआ़ला पर एतेराज़ करना है कि ग़ुरबा उमरा पर सबक़त का हक़ नहीं रखते तो अगर वह हक़ होता जिस पर यह ग़ुरबा हैं तो वह हम पर साबिक़ न होते। (फ़ा120) और अपने फ़ज़्ल व करम से वादा फ़रमाया।

(बक़िया सफ़हा 223 का) गुज़ार हूंगा और तेरा हक़्क़े निअ़मत बजा लाऊंगा (फ़ा140) और बजाए शुक्र गुज़ारी के ऐसी बड़ी नाशुक्री करते हो और यह जानते हुए कि बुत निकम्मे हैं किसी काम के नहीं फिर उन्हें अल्लाह का शरीक करते हो कितनी बड़ी गुमराही है। (फ़ा141) मुफ़स्सिरीन का इस में इख़्तिलाफ़ है कि इस आयत से कौन लोग मुराद हैं एक जमाअ़त ने कहा कि इससे उम्मते मुहम्मदिया मुराद है और आयत उन्हीं के हक़ में नाज़िल हुई बुख़ारी की हदीस में है कि जब यह नाज़िल हुआ कि वह क़ादिर है तुम पर अज़ाब भेजे तुम्हारे ऊपर से तो सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया तेरी ही पनाह मांगता हूं और जब यह नाज़िल हुआ कि या तुम्हारे पाँव के नीचे से तो फ़रमाया मैं तेरी ही पनाह मांगता हूं और जब यह नाज़िल हुआ या तुम्हें भिड़ा दे मुख़्तलिफ़ गरोह करके और एक को दूसरे की सख़्ती चखाये तो फ़रमाया यह आसान है मुस्लिम की हदीस शरीफ़ में है कि एक रोज़ सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने मस्जिद बनी मुआ़विया में दो रकअ़त नमाज़ अदा फ़रमाई और उसके बाद तवील दुआ की फिर सहाबा की तरफ़ मुतवज्जह होकर फ़रमाया मैं ने अपने रब से तीन सवाल किये उन में से सिर्फ़ दो क़बूल फ़रमाए गए एक सवाल तो यह था कि मेरी उम्मत को क़हते आ़म से हलाक न फ़रमाये यह क़बूल हुआ एक यह था कि उन्हें ग़र्क़ से अ़ज़ाब न फ़रमाये यह भी क़बूल हुआ तीसरा सवाल यह था कि उनमें बाहम जंग व जेदाल न हो यह क़बूल नहीं हुआ (फ़ा142) यानी क़ुरआन शरीफ़ को या नुज़ूले अ़ज़ाब को (फ़ा143) मेरा काम हिदायत है क़ुलूब की ज़िम्मेदारी मुझ पर नहीं (फ़ा144) यानी अल्लाह तआ़ला ने जो ख़बरें दीं उनके लिए वक़्त मुअ़य्यन हैं उनका वुक़ूअ़ ठीक उसी वक़्त होगा।

(बकि़या सफ़हा 227 का) व सल्तनत व इक़्तेदार है अल्लाह तआला ने हज़रत दाऊद व सुलैमान को इसका हज़्ज़े वाफ़िर दिया और मरातिबे रफ़ीआ में से मुसीबत व बला पर साबिर रहना है अल्लाह तआला ने हज़रत अय्यूब को उसके साथ मुम्ताज़ फ़रमाया फिर मुल्क व सब्र के दोनों मर्तबे हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलातु वस्सलाम को इनायत किये कि आपने शिद्दत व बला पर मुद्दतों सब्र फ़रमाया फिर अल्लाह तआला ने नबुव्वत के साथ मुल्के मिस्र अता किया कसरते मोअ्जेज़ात व कुव्वते बराहीन भी मरातिबे मोअ्तबरा में से है अल्लाह तआला ने हज़रत मूसा व हारून को इसके साथ मुशर्रफ़ किया ज़ुह्द व तर्के देना भी मरातिबे मोअ्तबरा में से है हज़रत ज़करिया व यह्या व ईसा व इलियास को इसके साथ मख़सूस फ़रमाया इन हज़रात के बाद अल्लाह तआला ने उन अम्बिया का ज़िक्र फ़रमाया कि जिन के न मुत्तबेईन बाक़ी रहे न उनकी शरीअत जैसे कि हज़रत इस्माईल यसअ. यूनुस लूत अलैहिमुस्सलातु वस्सलाम इस शान से अम्बिया का ज़िक्र फ़रमाने में उनकी करामतों और खुसूसियतों का एक अजीब लतीफ़ा नज़र आता है (फ़ा176) हमने फ़ज़ीलत दी। (फ़ा177) यानी अहले मक्का (फ़ा178) इस क़ौम से या अन्सार मुराद हैं या मुहाजिरीन या तमाम असहाबे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम या हुज़ूर पर ईमान लाने वाले सब लोग फ़ायदा इस आयत में दलालत है कि अल्लाह तआला अपने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की नुसरत फ़रमाएगा और आप के दीन को कुव्वत देगा और इसको तमाम अदियान पर ग़ालिब करेगा चुनांचे ऐसा ही हुआ और यह ग़ैबी ख़बर वाक़ेअ् हो गई (फ़ा179) मसला: उलमाए दीन ने इस आयत से यह मसला साबित किया है कि सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तमाम अम्बिया से अफ़ज़ल हैं क्योंकि ख़िसाले कमाल व औसाफ़े शरफ़ जो जुदा जुदा अम्बिया को अता फ़रमाए गए थे नबीए करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के लिए सबको जमा फ़रमा दिया और आपको हुक्म दिया *फ़बिहुदा हुमुक़्तदिह्* तो जब आप तमाम अम्बिया के औसाफ़े कमालिया के जामेअ् हैं तो बेशक सब से अफ़ज़ल हुए (फ़ा180) इस आयत से साबित हुआ कि सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तमाम ख़ल्क़ की तरफ़ मबऊस हैं और आपकी दावत तमाम ख़ल्क़ को आम और कुल जहान आपकी उम्मत। (ख़ाज़िन) (फ़ा181) और उसकी मअ्रेफ़त से महरूम रहे और अपने बन्दों पर उसको जो रहमत व करम है उसको न जाना। शाने नुज़ूल: यहूद की एक जमाअत अपने हिबरुल अहबार मालिक इब्ने सैफ़ को लेकर सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से मुजादला करने आई सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उससे फ़रमाया मैं तुझे उस परवरदिगार की क़सम देता हूं जिसने हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम पर तौरेत नाज़िल फ़रमाई क्या तौरेत में तूने यह देखा है *इन्नल्ला-ह यब्ग़ज़ुल् हिब्रस् समीन* यानी अल्लाह को मोटा आलिम मबग़ूज़ है कहने लगा हां यह तौरेत में है हुज़ूर ने फ़रमाया तू मोटा आलिम ही तो है इस पर वह ग़ज़बनाक होकर कहने लगा कि अल्लाह ने किसी आदमी पर कुछ नहीं उतारा इस पर यह आयते करीमा नाज़िल हुई और इसमें फ़रमाया गया किसने उतारी वह किताब जो मूसा लाये थे तो वह लाजवाब हुआ और यहूद उस से बरहम हुए और उसको झिड़कने लगे और उसको हिब्र के ओहदा से मअज़ूल कर दिया (मदारिक व ख़ाज़िन) (फ़ा182) उनमें से बाज़ को जिसका इज़हार अपनी ख़्वाहिश के मुताबिक़ समझते हो (फ़ा183) जो तुम्हारी ख़्वाहिश के ख़िलाफ़ करते हैं जैसे कि तौरेत के वह मज़ामीन जिनमें सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की नअ्त व सिफ़त मज़कूर है (फ़ा184) सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की तालीम और कुरआने करीम से।

(बकि़या सफ़हा 224 का) जंगल में भूतों और शैतानों ने उसको रस्ता बहका दिया और कहा मन्ज़िले मक़सूद की यही राह है और उसके रफ़ीक़ उसको राहे रास्त की तरफ़ बुलाने लगे वह हैरान रह गया किधर जाये अंजाम उसका यही होगा कि अगर वह भूतों की राह पर चल दे तो हलाक हो जाएगा और रफ़ीक़ों का कहा माने तो सलामत रहेगा और मंज़िल पर पहुंच जाएगा यही हाल उस शख़्स का है जो तरीक़ए इस्लाम से बहका और शैतान की राह चला मुसलमान उसको राहे रास्त की तरफ़ बुलाते हैं अगर उनकी बात मानेगा राह पाएगा वरना हलाक हो जाएगा (फ़ा156) यानी जो तरीक़ अल्लाह तआला ने अपने बन्दों के लिए वाज़ेह फ़रमाया और जो दीन (इस्लाम) उनके लिए मुक़र्रर किया वही हिदायत व नूर है और जो इसके सिवा है वह दीन बातिल है।

(बकि़या सफ़हा 229 का) के अन्दर। (फ़ा208)पानी एक और उससे जो चीज़ें उगाईं वह क़िस्म क़िस्म और रंगारंग। (फ़ा209) बावजूदेकि इन दलायले कुदरत व अजायबे हिकमत और इस इनाम व इकराम और इन नेअ्मतों के पैदा करने और अता फ़रमाने का इक़्तेज़ा था कि उस करीम कारसाज़ पर ईमान लाते बजाये इसके बुत परस्तों ने यह सितम किया (जो आयत में आगे मज़कूर है) (फ़ा210) कि उनकी इताअत करके बुत परस्त हो गए (फ़ा211) और बे औरत औलाद नहीं होती और ज़ौजा उसकी शान के लायक़ नहीं क्योंक कोई शय उसकी मिस्ल नहीं।

(बक़िया सफ़हा 228 का) अब्दुल्लाह बिन अबी सरह कातिबे वही के हक़ में नाज़िल हुई जब आयत *व लक़द् ख़-लक़्नल् इन्सा-न* नाज़िल हुई उसने इसको लिखा और आख़िर तक पहुंचते पहुंचते पैदाइशे इन्सान की तफ़सील पर मुत्तलअ़. होकर मुतअ़ज्जिब हुआ और इस हालत में आयत का आख़िर *फ़ तबा-र कल्लाहु अह्-सनुल् ख़ालिक़ीन* बे इख़्तियार उसकी ज़बान पर जारी हो गया इस पर उसको यह घमंड हुआ कि मुझ पर वही आने लगी और मुरतद हो गया यह न समझा कि नूरे वही और कुव्वत व हुस्ने कलाम से आयत का आख़िर कलिमा ज़बान पर आ गया इसमें उसकी क़ाबिलियत का कोई दख़ल न था ज़ोरे कलाम ख़ुद अपने आख़िर को बता दिया करता है जैसे कभी कोई शायर नफ़ीस मज़मून पढ़े वह मज़मून ख़ुद क़ाफ़िया बता देता है और सुनने वाले शायर से पहले क़ाफ़िया ख़ुद पढ़ देते हैं उन में ऐसे लोग भी होते हैं जो हरगिज़ वैसा शेअ़्र कहने पर क़ादिर नहीं तो क़ाफ़िया बताना उनकी क़ाबिलियत नहीं कलाम की कुव्वत है और यहां तो नूरे वही और नूरे नबी से सीने में रौशनी आती थी चुनांचे मजलिस शरीफ़ से जुदा होने और मुरतद हो जाने के बाद फिर वह एक जुमला भी ऐसा बनाने पर क़ादिर न हुआ जो नज़्मे क़ुरआनी से मिल सकता आख़िरकार ज़माना अक़दस ही में क़ब्ले फ़तहे मक्का फिर इस्लाम से मुशर्रफ़ हुआ (फ़ा193) अरवाह क़ब्ज़ करने के लिए झिड़कते जाते हैं और कहते जाते हैं। (फ़ा194) नबुव्वत और वही के झूठे दावे करके और अल्लाह के लिए शरीक बीबी बच्चे बता कर (फ़ा195) न तुम्हारे साथ माल है न जाह न औलाद जिनकी मुहब्बत में तुम उम्र भर गिरिफ़्तार रहे न वह बुत जिन्हें पूजा किये आज उनमें से कोई तुम्हारे काम न आया यह कुफ़्फ़ार से रोज़े क़ियामत फ़रमा दिया जाएगा (फ़ा196) कि वह इबादत के हक़दार होने में अल्लाह के शरीक हैं (मआ़ज़ल्लाह) (फ़ा197) और इलाक़े टूट गए जमाअ़त मुन्तशिर हो गई (फ़ा198) तुम्हारे वह तमाम झूठे दावे जो तुम दुनिया में किया करते थे बातिल हो गए (फ़ा199) तौहीद व नबुव्वत के बयान के बाद अल्लाह तआ़ला ने अपने कमाले क़ुदरत व इल्म व हिकमत के दलायल ज़िक्र फ़रमाये क्योंकि मक़सूदे आज़म अल्लाह सुबहानहू और उसके तमाम सिफ़ात व अफ़आ़ल की मअ़रेफ़त है और यह जानना कि वही तमाम चीज़ों का पैदा करने वाला है और जो ऐसा हो वही मुस्तहिक़े इबादत हो सकता है न कि वह बुत जिन्हें मुश्रिकीन पूजते हैं। ख़ुश्क दाना और गुठली चीर कर उन से सब्ज़ा और दरख़्त पैदा करना और ऐसी संगलाख़ ज़मीनों में उनके नर्म रेशों को रवां करना जहां आहिनी मेख़ भी काम न कर सके उसकी क़ुदरत के कैसे अ़जायबात हैं।

(बक़िया सफ़हा 230 का) (फ़ा212) तो जो है वह उसकी मख़्लूक़ है और मख़्लूक़ औलाद नहीं हो सकती तो किसी मख़्लूक़ को औलाद बताना बातिल है (फ़ा213) जिसके सिफ़ात मज़कूर हुए और जिसके यह सिफ़ात हों वही मुस्तहिक़े इबादत है (फ़ा214) ख़्वाह वह रिज़्क़ हो या अजल या हमल (फ़ा215) मसाइल इदराक के माना हैं मरई के जवानिब व हुदूद पर वाक़िफ़ होना इसी को इहाता कहते हैं इदराक की यही तफ़सीर हज़रत सईद इब्ने मुसय्यिइब और हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा से मन्क़ूल है और जम्हूर मुफ़स्सिरीन इदराक की तफ़सीर इहाता से फ़रमाते हैं और इहाता उसी चीज़ का हो सकता है जिसके हुदूद व जेहात हों अल्लाह तआ़ला के लिए हद व जेहत मुहाल है तो उसका इदराक व इहाता भी नामुमकिन यही मज़हब है अहले सुन्नत का ख़्वारिज व मोअ़्तज़ेला वग़ैरह गुमराह फ़िरक़े इदराक और रूयत में फ़र्क़ नहीं करते इस लिए वह इस गुमराही में मुब्तला हो गए कि उन्होंने दीदारे इलाही को मुहाले अक़्ली क़रार दे दिया बावजूदेकि नफ़ीए रूयत नफ़ीए इल्म को मुस्तलिज़म है वरना जैसा कि बारी तआ़ला बख़िलाफ़ तमाम मौजूदात के बिला कैफ़ियत व जेहत जाना जा सकता है ऐसे ही देखा भी जा सकता है क्योंकि अगर दूसरी मौजूदात बग़ैर कैफ़ियत व जेहत देखी नहीं जा सकती तो जानी भी नहीं जा सकती राज़ इसका यह है कि रूयत व दीद के माना यह हैं कि बसर किसी शय को जैसी कि वह हो वैसा जाने तो जो शय जेहत वाली होगी उसकी रूयत व दीद जेहत में होगी और जिसके लिए जेहत न होगी उसकी दीद बे जेहत होगी। दीदारे इलाही आख़िरत में अल्लाह तआ़ला का दीदार मोमिनीन के लिए अहले सुन्नत का अ़क़ीदा और क़ुरआन व हदीस व इज्माअ़् सहाबा व सल्फ़े उम्मत के दलाइले कसीरा से साबित है क़ुरआने करीम में फ़रमाया *वुजूहुंय्यौ-मइज़िन्- नाज़ि-रतुन् इला रब्बिहा नज़िरह* इस से साबित है कि मोमिनीन को रोज़ क़ियामत उनके रब का दीदार मुयस्सर होगा इसके अलावा और बहुत आयात और सेहाह की कसीर अहादीस से साबित है अगर दीदारे इलाही नामुमकिन होता तो हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलातु वस्सलाम दीदार का सवाल न फ़रमाते *रब्बि अरिनी उन्ज़ुर् इलै-क* इरशाद न करते और उनके जवाब में *इनिस्त-क़र्-र मका-नहू फ़सौ-फ़ तरानी* न फ़रमाया जाता इन दलायल से साबित हो गया कि आख़िरत में मोमिनीन के लिए दीदारे इलाही शरअ़् में साबित है और इसका इंकार गुमराही (फ़ा216) कि हुज्जत लाज़िम हो (फ़ा217) और कुफ़्फ़ार की बेहूदा गोइयों की तरफ़ इल्तेफ़ात न करो इसमें नबीए करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की तस्कीन ख़ातिर है आप कुफ़्फ़ार की यावा गोइयों से रन्जीदा न हों यह उनकी बद-नसीबी है कि वह ऐसी वाज़ेह बुरहानों से फ़ायदा न उठायें (फ़ा219) क़तादा का क़ौल है कि मुसलमान कुफ़्फ़ार के बुतों की बुराई किया करते थे ताकि कुफ़्फ़ार को नसीहत हो और वह बुत परस्ती के ऐब से बा-ख़बर हों मगर उन नाख़ुदा शनास जाहिलों ने बजाए पन्द पज़ीर होने के शाने इलाही में बे अदबी के साथ ज़बान खोलनी शुरू की इस पर यह आयत नाज़िल हुई अगरचे बुतों को बुरा कहना और उनकी हक़ीक़त का इज़्हार ताअ़त व सवाब है लेकिन अल्लाह और उसके रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की शान में कुफ़्फ़ार की बद-गोइयों को रोकने के लिए उसको मना फ़रमाया गया। इब्ने अम्बारी का क़ौल है कि यह हुक्म अव्वल ज़माने में था जब अल्लाह तआ़ला ने इस्लाम को कुव्वत अ़ता फ़रमाई मन्सूख़ हो गया (फ़ा219) वह जब चाहता है हस्बे इक़्तेज़ाए हिकमत नाज़िल फ़रमाता है (फ़ा220) ऐ मुसलमानो (फ़ा221) हक़ के मानने और देखने से (फ़ा222) उन आयात पर जो नबीए करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के दस्ते अक़दस पर ज़ाहिर हुई थीं मिस्ल शक़्क़ुल-क़मर वग़ैरह मोअ़जेज़ाते बाहिरात के।

وَلَوْ اَنَّنَا نَزَّلْنَآ اِلَيْهِمُ الْمَلٰٓئِكَةَ وَكَلَّمَهُمُ الْمَوْتٰى وَحَشَرْنَا عَلَيْهِمْ كُلَّ شَیْءٍ قُبُلًا مَّا كَانُوْا لِيُؤْمِنُوْٓا اِلَّآ اَنْ يَّشَآءَ اللّٰهُ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَهُمْ يَجْهَلُوْنَ ﴿۱۱۱﴾
وَكَذٰلِكَ جَعَلْنَا لِكُلِّ نَبِیٍّ عَدُوًّا شَيٰطِيْنَ الْاِنْسِ وَالْجِنِّ يُوْحِیْ بَعْضُهُمْ اِلٰى بَعْضٍ زُخْرُفَ الْقَوْلِ غُرُوْرًا وَلَوْ شَآءَ رَبُّكَ مَا فَعَلُوْهُ فَذَرْهُمْ وَمَا يَفْتَرُوْنَ ﴿۱۱۲﴾
وَلِتَصْغٰٓى اِلَيْهِ اَفْـِٕدَةُ الَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِالْاٰخِرَةِ وَلِيَرْضَوْهُ وَلِيَقْتَرِفُوْا مَا هُمْ مُّقْتَرِفُوْنَ ﴿۱۱۳﴾ اَفَغَيْرَ اللّٰهِ اَبْتَغِیْ حَكَمًا وَّهُوَ الَّذِیْٓ اَنْزَلَ اِلَيْكُمُ
الْكِتٰبَ مُفَصَّلًا وَالَّذِيْنَ اٰتَيْنٰهُمُ الْكِتٰبَ يَعْلَمُوْنَ اَنَّهٗ مُنَزَّلٌ مِّنْ رَّبِّكَ بِالْحَقِّ فَلَا تَكُوْنَنَّ مِنَ الْمُمْتَرِيْنَ ﴿۱۱۴﴾ وَتَمَّتْ كَلِمَتُ رَبِّكَ صِدْقًا
وَّعَدْلًا لَا مُبَدِّلَ لِكَلِمٰتِهٖ وَهُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ﴿۱۱۵﴾ وَاِنْ تُطِعْ اَكْثَرَ مَنْ فِی الْاَرْضِ يُضِلُّوْكَ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ اِنْ يَّتَّبِعُوْنَ اِلَّا الظَّنَّ

व लौ अन्नना नज़्ज़ल्ना इलैहिमुल् मलाइ–क–त व कल्ल–महुमुल् मौता व ह–शरना अ़लैहिम् कुल्–ल शैइन् कुबुलम् मा कानू लियुअ्मिनू इल्ला अंय्यशा–अल्लाहु व लाकिन्–न अक्स–रहुम् यज्हलून(111)व कज़ालि–क ज–अ़ल्ना लिकुल्लि नबिय्यिन् अ़दुव्वन् शयातीनल् इन्सि वल्जिन्नि यूही बअ्जुहुम् इला बअ्ज़िन् ज़ुख्रु–फ़ल्कौलि गुरूरन् व लौ शा–अ रब्बु–क मा फ़–अ़लूहु फ़–ज़रहुम् व मा यफ़्तरून(112)व लितस्गा इलैहि अफ़्इ–दतुल्लज़ी–न ला युअ्मिनू–न बिल्आख़ि–रति व लियरज़ौहु व लियक़्तरिफ़ू मा हुम् मुक़्तरिफ़ून(113)अ–फ़ग़ैरल्लाहि अब्तग़ी ह–क–मंव् व हुवल्लज़ी अन्ज़–ल इलैकुमुल् किता–ब मुफ़स्सलन् वल्लज़ी–न आतैनाहु–मुल् किता–ब यअ्–लमू–न अन्नहू मुनज़्ज़लुम् मिर्रब्बि–क बिल्हक़्क़ि फ़ला तकूनन्–न मिनल् मुम्तरीन(114)व तम्मत् कलि–मतु रब्बि–क सिद्कंव् व अ़द्लन् ला मुबद्दि–ल लि–कलिमातिही व हुवस्समीअुल् अ़लीम(115) व इन् तुतिअ् अक्स–र मन् फ़िल्अर्ज़ि युज़िल्लू–क अ़न् सबीलिल्लाहि इंय्यत्तबिअू–न इल्लज़्ज़न्–न

और अगर हम उनकी तरफ़ फ़रिश्ते उतारते (फ़ा223)और उनसे मुर्दे बातें करते और हम हर चीज़ उनके सामने उठा लाते जब भी वह ईमान लाने वाले न थे (फ़ा224) मगर यह कि ख़ुदा चाहता (फ़ा225) लेकिन उनमें बहुत निरे जाहिल हैं(111) (फ़ा226) और इसी तरह हमने हर नबी के दुश्मन किये हैं आदमियों और जिन्नों में के शैतान कि उनमें एक दूसरे पर खुफ़िया डालता है बनावट की बात (फ़ा227) धोखे को और तुम्हारा रब चाहता तो वह ऐसा न करते (फ़ा228) तो उन्हें उनकी बनावटों पर छोड़ दो।(112) (फ़ा229) और इस लिए कि उस (फ़ा230) की तरफ़ उनके दिल झुकें जिन्हें आख़िरत पर ईमान नहीं और उसे पसन्द करें और गुनाह कमायें जो उन्हें कमाना है(113) तो क्या अल्लाह के सिवा मैं किसी और का फ़ैसला चाहूं और वही है जिसने तुम्हारी तरफ़ मुफ़स्सल किताब उतारी (फ़ा231) और जिनको हमने किताब दी वह जानते हैं कि यह तेरे रब की तरफ़ से सच उतरा है (फ़ा232) तो ऐ सुनने वाले! तू हरगिज़ शक वालों में न हो।(114) और पूरी है तेरे रब की बात सच और इन्साफ़ में उसकी बातों का कोई बदलने वाला नहीं (फ़ा233) और वही है सुनता जानता। (115) और ऐ सुनने वाले ज़मीन में अक्सर वह हैं कि तू उनके कहे पर चले तो तुझे अल्लाह की राह से बहका दें वह सिर्फ़ गुमान के पीछे हैं (फ़ा234)

(फ़ा223) शाने नुज़ूलः इब्ने जुरैर का क़ौल है कि यह आयत इस्तेहज़ा करने वाले क़ुरैश की शान में नाज़िल हुई जिन्होंने सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से कहा था कि ऐ मुहम्मद (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) आप हमारे मुर्दों को उठा लाइये हम उनसे दरियाफ़्त कर लें कि आप जो फ़रमाते हैं यह हक़ है या नहीं और हमें फ़रिश्ते दिखाइये जो आपके रसूल होने की गवाही दें या अल्लाह को और फ़रिश्तों को हमारे सामने लाइये उसके जवाब में यह आयते करीमा नाज़िल हुई (फ़ा224) वह अहले शक़ावत हैं (फ़ा225) उसकी मशीयत जो होती है वही होता है जो उसके इल्म में अहले सआदत हैं वह ईमान से मुशर्रफ़ होते हैं (फ़ा226) नहीं जानते कि यह लोग वह निशानियां बल्कि उससे ज़्यादा देख कर भी ईमान लाने वाले नहीं (जुमल व मदारिक) (फ़ा227) यानी वसवसे और फ़रेब की बातें इग़वा करने के लिए (फ़ा228) लेकिन अल्लाह तआ़ला अपने बन्दों में से जिसे चाहता है इम्तेहान में डालता है ताकि उसके मेहनत पर साबिर रहने से ज़ाहिर हो जाये कि यह जज़ील सवाब पाने वाला है (फ़ा229) अल्लाह उन्हें बदला देगा रुसवा करेगा और आपकी मदद फ़रमाएगा (फ़ा230) बनावट की बात (फ़ा231) यानी क़ुरआन शरीफ़ जिसमें अमर व नही वादा व वईद और हक़ व बातिल का फ़ैसला और मेरे सिद्क़ की शहादत और तुम्हारे इफ़्तेरा का बयान है शाने नुज़ूल सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से मुश्रिकीन कहा करते थे कि आप हमारे और अपने दर्मियान एक हकम मुक़र्रर कीजिए उनके जवाब में यह आयत नाज़िल हुई (फ़ा232) क्योंकि उनके पास उसकी **(बक़िया सफ़हा 249 पर)**

وَإِنْ هُمْ إِلَّا يَخْرُصُونَ ۝ إِنَّ رَبَّكَ هُوَ أَعْلَمُ مَن يَضِلُّ عَن سَبِيلِهِ ۖ وَهُوَ أَعْلَمُ بِالْمُهْتَدِينَ ۝ فَكُلُوا مِمَّا ذُكِرَ اسْمُ اللَّهِ عَلَيْهِ إِن كُنتُم بِآيَاتِهِ
مُؤْمِنِينَ ۝ وَمَا لَكُمْ أَلَّا تَأْكُلُوا مِمَّا ذُكِرَ اسْمُ اللَّهِ عَلَيْهِ وَقَدْ فَصَّلَ لَكُم مَّا حَرَّمَ عَلَيْكُمْ إِلَّا مَا اضْطُرِرْتُمْ إِلَيْهِ ۗ وَإِنَّ كَثِيرًا لَّيُضِلُّونَ بِأَهْوَائِهِم
بِغَيْرِ عِلْمٍ ۗ إِنَّ رَبَّكَ هُوَ أَعْلَمُ بِالْمُعْتَدِينَ ۝ وَذَرُوا ظَاهِرَ الْإِثْمِ وَبَاطِنَهُ ۚ إِنَّ الَّذِينَ يَكْسِبُونَ الْإِثْمَ سَيُجْزَوْنَ بِمَا كَانُوا يَقْتَرِفُونَ ۝ وَلَا تَأْكُلُوا
مِمَّا لَمْ يُذْكَرِ اسْمُ اللَّهِ عَلَيْهِ وَإِنَّهُ لَفِسْقٌ ۗ وَإِنَّ الشَّيَاطِينَ لَيُوحُونَ إِلَىٰ أَوْلِيَائِهِمْ لِيُجَادِلُوكُمْ ۖ وَإِنْ أَطَعْتُمُوهُمْ إِنَّكُمْ لَمُشْرِكُونَ ۝ أَوَمَن كَانَ مَيْتًا
فَأَحْيَيْنَاهُ وَجَعَلْنَا لَهُ نُورًا يَمْشِي بِهِ فِي النَّاسِ كَمَن مَّثَلُهُ فِي الظُّلُمَاتِ لَيْسَ بِخَارِجٍ مِّنْهَا ۚ كَذَٰلِكَ زُيِّنَ لِلْكَافِرِينَ مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ۝ وَكَذَٰلِكَ

व इन् हुम् इल्ला यख़्रुसून(116)इन्–न रब्ब–क हु–व अअ्–लमु मंय्यज़िल्लु अ़न् सबी–लिही व हु–व अअ्–लमु बिल्मुह्त–दीन(117)फ़कुलू मिम्मा ज़ुकि–रस्मुल्लाहि अ़लैहि इन् कुन्तुम् बिआयातिही मुअ्मिनीन(118)व मा लकुम् अल्ला तअ्कुलू मिम्मा ज़ुकिरस्मुल्लाहि अ़लैहि व क़द् फ़स्स–ल लकुम् मा हर्र–म अ़लैकुम् इल्ला मज़्तुरिर्तुम् इलैहि व इन्–न कसीरल् लयुज़िल्लू–न बिअह्वाइ–हिम् बिग़ैरि अ़िल्मिन् इन्–न रब्ब–क हु–व अअ्–लमु बिल्मुअ्–तदीन(119)व ज़रू ज़ाहिरल् इस्मि व बाति–नहू इन्नल् लज़ी–न यक्सिबू–नल् इस्–म सयुज्ज़ौ–न बिमा कानू यक़्तरिफ़ून(120)व ला तअ्कुलू मिम्मा लम् युज़्करिस्मुल्लाहि अ़लैहि व इन्नहू लफ़िस्कुन् व इन्नश्श–याती–न लयूहू–न इला औलियाइ–हिम् लियुजादिलूकुम् व इन् अ–तअ्तुमूहुम् इन्नकुम् लमुश्रिकून(121)अ–व मन् का–न मैतन् फ़–अह्य–यनाहु व ज–अ़ल्ना लहू नूरंय्यम्शी बिही फ़िन्नासि क–मम् म–सलुहू फ़िज़्ज़ुलुमाति लै–स बिख़ारिजिम् मिन्हा कज़ालि–क ज़ुय्यि–न लिल्काफ़िरी–न मा कानू यअ्–मलून(122)व कज़ालि–क

और निरी अटकलें (फ़ुज़ूल अन्दाज़े) दौड़ते हैं।(116) (फ़ा235) तेरा रब ख़ूब जानता है कि कौन बहका उसकी राह से और वह ख़ूब जानता है हिदायत वालों को।(117) तो खाओ उसमें से जिस पर अल्लाह का नाम लिया गया (फ़ा236) अगर तुम उसकी आयतें मानते हो(118) और तुम्हें क्या हुआ कि उसमें से न खाओ जिस (फ़ा237) पर अल्लाह का नाम लिया गया वह तो तुम से मुफ़स्सल बयान कर चुका जो कुछ तुम पर हराम हुआ (फ़ा238) मगर जब तुम्हें उससे मजबूरी हो (फ़ा239) और बेशक बहुतेरे अपनी ख़्वाहिशों से गुमराह करते हैं बेजाने, बेशक तेरा रब हद से बढ़ने वालों को ख़ूब जानता है।(119) और छोड़ दो खुला और छुपा गुनाह, वह जो गुनाह कमाते हैं अ़नक़रीब अपनी कमाई की सज़ा पायेंगे(120) और उसे न खाओ जिस पर अल्लाह का नाम न लिया गया (फ़ा240) और वह बेशक हुक्म उदूली है और बेशक शैतान अपने दोस्तों के दिलों में डालते हैं कि तुम से झगड़ें और अगर तुम उनका कहना मानो (फ़ा241) तो उस वक़्त तुम मुश्रिक हो(121) (फ़ा242) (रुकूअ़ 1) और क्या वह कि मुर्दा था तो हमने उसे ज़िन्दा किया (फ़ा243) और उसके लिए एक नूर कर दिया (फ़ा244) जिससे लोगों में चलता है (फ़ा245) वह उस जैसा हो जाएगा जो अंधेरियों में है (फ़ा246) उनसे निकलने वाला नहीं यूं ही काफ़िरों की आंख में उनके आमाल भले कर दिये गए हैं(122) और इसी तरह

(फ़ा235) कि यह हलाल है यह हराम और अटकल से कोई चीज़ हलाल हराम नहीं होती जिसे अल्लाह और उसके रसूल ने हलाल किया वह हलाल और जिसे हराम किया वह हराम (फ़ा236) यानी जो अल्लाह के नाम पर ज़बह किया गया न वह जो अपनी मौत मरा या बुतों के नाम पर ज़िबह किया गया वह हराम है हिल्लत अल्लाह के नाम पर ज़बह होने से मुतअ़ल्लिक़ है यह मुश्रिकीन के उस एतेराज़ का जवाब है कि जो उन्होंने मुसलमानों पर किया था कि तुम अपना क़त्ल किया हुआ तो खाते हो और अल्लाह का मारा हुआ यानी जो अपनी मौत मरे उसको हराम जानते हो (फ़ा237) ज़बीहा (फ़ा238) **मसलाः** इस से साबित हुआ कि हराम चीज़ों का मुफ़स्सल ज़िक्र होता है और सुबूते हुरमत के लिए हुक्मे हुरमत दरकार है और जिस चीज़ पर शरीअ़त में हुरमत का हुक्म न हो वह मुबाह है (फ़ा239) तो इन्दलइज़्तिरार क़द्रे ज़रूरत रवा है। (फ़ा240) वक़्ते ज़बह न तहक़ीक़तन न तक़दीरन ख़्वाह इस तरह कि वह जानवर अपनी मौत मर गया हो या इस तरह कि उसको बग़ैर तस्मिया के या ग़ैर ख़ुदा के नाम पर ज़बह किया गया हो यह सब हराम हैं लेकिन जहां मुसलमान ज़बह करने वाला वक़्ते ज़बह बिस्मिल्लाह अल्लाहु अक्बर कहना भूल गया वह ज़बह जाइज़ है वहां ज़िक्रे तक़दीरी है जैसा कि हदीस शरीफ़ में वारिद हुआ (फ़ा241) और अल्लाह के हराम किये हुए को हलाल जानो (फ़ा242) क्यों कि दीन में हुक्मे इलाही को छोड़ना और **(बक़िया सफ़हा 264 पर)**

جَعَلْنَا فِي كُلِّ قَرْيَةٍ أَكَابِرَ مُجْرِمِيهَا لِيَمْكُرُوا فِيهَا ۖ وَمَا يَمْكُرُونَ إِلَّا بِأَنفُسِهِمْ وَمَا يَشْعُرُونَ ﴿١٢٣﴾ وَإِذَا جَاءَتْهُمْ آيَةٌ قَالُوا لَن نُّؤْمِنَ حَتَّىٰ نُؤْتَىٰ مِثْلَ مَا
أُوتِيَ رُسُلُ اللَّهِ ۘ اللَّهُ أَعْلَمُ حَيْثُ يَجْعَلُ رِسَالَتَهُ ۗ سَيُصِيبُ الَّذِينَ أَجْرَمُوا صَغَارٌ عِندَ اللَّهِ وَعَذَابٌ شَدِيدٌ بِمَا كَانُوا يَمْكُرُونَ ﴿١٢٤﴾ فَمَن يُرِدِ اللَّهُ أَن
يَهْدِيَهُ يَشْرَحْ صَدْرَهُ لِلْإِسْلَامِ ۖ وَمَن يُرِدْ أَن يُضِلَّهُ يَجْعَلْ صَدْرَهُ ضَيِّقًا حَرَجًا كَأَنَّمَا يَصَّعَّدُ فِي السَّمَاءِ ۚ كَذَٰلِكَ يَجْعَلُ اللَّهُ الرِّجْسَ عَلَى الَّذِينَ
لَا يُؤْمِنُونَ ﴿١٢٥﴾ وَهَٰذَا صِرَاطُ رَبِّكَ مُسْتَقِيمًا ۗ قَدْ فَصَّلْنَا الْآيَاتِ لِقَوْمٍ يَذَّكَّرُونَ ﴿١٢٦﴾ لَهُمْ دَارُ السَّلَامِ عِندَ رَبِّهِمْ ۖ وَهُوَ وَلِيُّهُم بِمَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿١٢٧﴾ وَيَوْمَ
يَحْشُرُهُمْ جَمِيعًا يَا مَعْشَرَ الْجِنِّ قَدِ اسْتَكْثَرْتُم مِّنَ الْإِنسِ ۖ وَقَالَ أَوْلِيَاؤُهُم مِّنَ الْإِنسِ رَبَّنَا اسْتَمْتَعَ بَعْضُنَا بِبَعْضٍ وَبَلَغْنَا أَجَلَنَا الَّذِي

ज–अल्ना फ़ी कुल्लि क़र्यतिन् अकाबि–र मुज्रि–मीहा लियम्कुरू फ़ीहा व मा यम्कुरू–न इल्ला बिअन्फ़ुसिहिम् व मा यश्अुरून(123)व इज़ा जा–अत्हुम् आ–यतुन् क़ालू लन् नुअ्मि–न हत्ता नुअ्ता मिस्–ल मा ऊति–य रुसुलुल्लाहि अल्लाहु अअ्–लमु हैसु यज्अलु रिसा–ल–तहू सयुसी–बुल् लज़ी–न अज्रमू सग़ारुन् अिन्दल्लाहि व अज़ाबुन् शदीदुम् बिमा कानू यम्कुरून(124)फ़मंय्यु–रिदिल्लाहु अंय्यह्दि–यहू यश्रह् सद्रहू लिल्इस्लामि व मंय्युरिद् अंय्युज़िल्लहू यज्अल् सद्–रहू ज़य्यिक़न् ह़–र–जन् क–अन्नमा यस्सअ्–अदु फ़िस्समाइ कज़ालि–क यज्–अलुल्लाहुर् रिज्–स अ–लल्लज़ी–न ला युअ्मिनून(125)व हाज़ा सिरातु रब्बि–क मुस्तक़ीमन् क़द् फ़स्सल्नल् आयाति लिक़ौ–मिंय्यज़्ज़क्करून (126)लहुम् दारुस्सलामि अिन्–द रब्बिहिम् व हु–व वलिय्युहुम् बिमा कानू यअ्मलून(127)व यौ–म यह्शुरुहुम् जमीअन् या–मअ्शरल् जिन्नि क़दिस्तक्सर् तुम् मिनल्इन्सि व क़ा–ल औलियाउहुम् मिनल्इन्सि रब्ब–नस्तम्–त–अ़ बअ्ज़ुना बि–बअ्ज़िंव् व ब–लग्.ना अ–ज–ल–नल् लज़ी

हमने हर बस्ती में उसके मुजरिमों के सरग़ना किये कि उसमें दांव खेलें (फ़ा247) और दांव नहीं खेलते मगर अपनी जानों पर और उन्हें शुऊर नहीं।(123) (फ़ा248) और जब उनके पास कोई निशानी आए तो कहते हैं हम हरगिज़ ईमान न लायेंगे जब तक हमें भी वैसा ही न मिले जैसा अल्लाह के रसूलों को मिला (फ़ा249) अल्लाह ख़ूब जानता है जहां अपनी रिसालत रखे (फ़ा250) अ़नक़रीब मुजरिमों को अल्लाह के यहां ज़िल्लत पहुंचेगी और सख़्त अज़ाब बदला उनके मक्र का(124) और जिसे अल्लाह राह दिखाना चाहे उसका सीना इस्लाम के लिए खोल देता है (फ़ा251) और जिसे गुमराह करना चाहे उसका सीना तंग ख़ूब रुका हुआ कर देता है (फ़ा252) गोया किसी की ज़बरदस्ती से आसमान पर चढ़ रहा है अल्लाह यूं ही अज़ाब डालता है ईमान न लाने वालों को(125) और यह (फ़ा253) तुम्हारे रब की सीधी राह है हमने आयतें मुफ़स्सल बयान कर दीं नसीहत मानने वालों के लिए(126) उनके लिए सलामती का घर है अपने रब के यहां और वह उनका मौला है यह उनके कामों का फल है(127) और जिस दिन सबको उठाएगा और फ़रमाएगा ऐ जिन्न के गरोह तुम ने बहुत आदमी घेर लिए (फ़ा254) और उनके दोस्त आदमी अ़र्ज़ करेंगे ऐ हमारे रब हममें एक ने दूसरे से फ़ाइदा उठाया (फ़ा255) और हम अपनी उस मीआ़द को पहुंच गए

(फ़ा247) तरह तरह के हीलों और फ़रेबों और मक्कारियों से लोगों को बहकाते और बातिल को रिवाज देने की कोशिश करते हैं (फ़ा248) कि उसका वबाल उन्हीं पर पड़ता है (फ़ा249) यानी जब तक हमारे पास वही न आये और हमें नबी न बनाया जाये शाने नुज़ूल वलीद बिन मुग़ीरा ने कहा था कि अगर नबुव्वत हक़ हो तो उसका ज़्यादा मुस्तहिक़ मैं हूं क्योंकि मेरी उम्र सय्यदे आलम (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) से ज़्यादा है और माल भी इस पर यह आयत नाज़िल हुई (फ़ा250) यानी अल्लाह जानता है कि नबुव्वत की अहलियत और उसका इस्तेहक़ाक़ किस को है किस को नहीं उम्र व माल से कोई मुस्तहिक़े नबुव्वत नहीं हो सकता और यह नबुव्वत के तलबगार तो हसद मक्र बद अहदी वग़ैरह क़बाएह अफ़आल और रज़ाइल ख़िसाल में मुबतला हैं यह कहां और नबुव्वत का मन्सबे आली कहां (फ़ा251) उसको ईमान की तौफ़ीक़ देता है और उसके दिल में रौशनी पैदा करता है (फ़ा252) कि उसमें इल्म और दलाइल तौहीद व ईमान की गुन्जाईश न हो तो उसकी ऐसी हालत होती है कि जब उसको ईमान की दावत दी जाती है और इस्लाम की तरफ़ बुलाया जाता है तो वह उस पर निहायत शाक़ होता है और उसको बहुत दुशवार मालूम होता है (फ़ा253) दीने इस्लाम (फ़ा254) उनको बहकाया और इग़वा किया (फ़ा255) इस तरह कि इंसानों ने शहवात व मआ़सी में उनसे मदद पाई और जिन्नों ने इंसानों को अपना मुतीअ़ बनाया आख़िरकार उसका नतीजा पाया

أَجَّلْتَ لَنَا ؕ قَالَ النَّارُ مَثْوٰىكُمْ خٰلِدِيْنَ فِيْهَآ اِلَّا مَا شَآءَ اللّٰهُ ؕ اِنَّ رَبَّكَ حَكِيْمٌ عَلِيْمٌ ۝١٢٨ وَكَذٰلِكَ نُوَلِّيْ بَعْضَ الظّٰلِمِيْنَ بَعْضًۢا بِمَا كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ ۝١٢٩

يٰمَعْشَرَ الْجِنِّ وَالْاِنْسِ اَلَمْ يَاْتِكُمْ رُسُلٌ مِّنْكُمْ يَقُصُّوْنَ عَلَيْكُمْ اٰيٰتِيْ وَيُنْذِرُوْنَكُمْ لِقَآءَ يَوْمِكُمْ هٰذَا ؕ قَالُوْا شَهِدْنَا عَلٰٓى اَنْفُسِنَا وَغَرَّتْهُمُ الْحَيٰوةُ

الدُّنْيَا وَشَهِدُوْا عَلٰٓى اَنْفُسِهِمْ اَنَّهُمْ كَانُوْا كٰفِرِيْنَ ۝١٣٠ ذٰلِكَ اَنْ لَّمْ يَكُنْ رَّبُّكَ مُهْلِكَ الْقُرٰى بِظُلْمٍ وَّاَهْلُهَا غٰفِلُوْنَ ۝١٣١ وَلِكُلٍّ دَرَجٰتٌ مِّمَّا

عَمِلُوْا ؕ وَمَا رَبُّكَ بِغَافِلٍ عَمَّا يَعْمَلُوْنَ ۝١٣٢ وَرَبُّكَ الْغَنِيُّ ذُو الرَّحْمَةِ ؕ اِنْ يَّشَاْ يُذْهِبْكُمْ وَيَسْتَخْلِفْ مِنْۢ بَعْدِكُمْ مَّا يَشَآءُ كَمَآ اَنْشَاَكُمْ مِّنْ ذُرِّيَّةِ

قَوْمٍ اٰخَرِيْنَ ۝١٣٣ اِنَّ مَا تُوْعَدُوْنَ لَاٰتٍ ۙ وَّمَآ اَنْتُمْ بِمُعْجِزِيْنَ ۝١٣٤ قُلْ يٰقَوْمِ اعْمَلُوْا عَلٰى مَكَانَتِكُمْ اِنِّيْ عَامِلٌ ۚ فَسَوْفَ تَعْلَمُوْنَ ۙ مَنْ تَكُوْنُ لَهٗ عَاقِبَةُ

अज्जल्–त लना क़ा–लन्नारु मस्वाकुम् ख़ालिदी–न फ़ीहा इल्ला मा शा–अल्लाहु इन्–न रब्ब–क हकीमुन् अ़लीम(128)व कज़ालि–क नुवल्ली बअ्ज़ज़् ज़ालिमी–न बअ्ज़म् बिमा कानू यक्सिबून(129) या–मअ्शरल्जिन्नि वल्इन्सि अ–लम् यअ्तिकुम् रुसु–लुम् मिन्कुम् यक़ुस्सू–न अ़लैकुम् आयाती व युन्ज़िरू–नकुम् लिक़ा–अ यौमिकुम् हाज़ा क़ालू शहिद्ना अ़ला अन्फ़ुसिना व ग़र्रत्हुमुल् ह़यातुद्दुन्या व शहिदू अ़ला अन्फ़ुसिहिम् अन्नहुम् कानू काफ़िरीन(130)ज़ालि–क अल्लम् यकुर्रब्बु–क मुह्लि–कल्क़ुरा बिज़ुल्मिंव् व अह्लुहा ग़ाफ़िलून(131)व लिकुल्लिन् द–रजातुम् मिम्मा अ़मिलू व मा रब्बु–क बिग़ाफ़िलिन् अ़म्मा यअ्–मलून(132)व रब्बु–कल् ग़निय्यु ज़ुर्रह्मति इंय्–यशअ् युज़्हिब्कुम् व यस्तख़्लिफ़् मिम् बअ्दिकुम् मा यशाउ कमा अन्श–अकुम् मिन् ज़ुर्रिय्यति क़ौमिन् आ–ख़रीन (133)इन्–न मा तू–अ़दू–न लआतिंव् व मा अन्तुम् बिमुअ्–जिज़ीन(134)क़ुल् या क़ौमिअ्मलू अ़ला मका–नतिकुम् इन्नी आ़मिलुन् फ़सौ–फ़ तअ्–लमू–न मन् तकूनु लहू आ़क़ि–बतुद

जो तूने हमारे लिए मुक़र्रर फ़रमाई थी। (फ़ा256) फ़रमाएगा आग तुम्हारा ठिकाना है हमेशा इसमें रहो मगर जिसे ख़ुदा चाहे (फ़ा257) ऐ महबूब बेशक तुम्हारा रब हिकमत वाला इल्म वाला है।(128) और यूं ही हम ज़ालिमों में एक को दूसरे पर मुसल्लत करते हैं बदला उनके किये का(129) (फ़ा258) (रुकूअ् 2) ऐ जिन्नो और आदमियों के गरोह क्या तुम्हारे पास तुम में के रसूल न आए थे तुम पर मेरी आयतें पढ़ते और तुम्हें यह दिन (फ़ा259) देखने से डराते (फ़ा260) कहेंगे हमने अपनी जानों पर गवाही दी (फ़ा261) और उन्हें दुनिया की ज़िन्दगी ने फ़रेब दिया और ख़ुद अपनी जानों पर गवाही देंगे कि वह काफ़िर थे(130)(फ़ा262) यह (फ़ा263) इस लिए कि तेरा रब बस्तियों को (फ़ा264) ज़ुल्म से तबाह नहीं करता कि उनके लोग बेख़बर हों(131) (फ़ा265) और हर एक के लिए (फ़ा266) उनके कामों से दर्जे हैं और तेरा रब उनके आमाल से बे-ख़बर नहीं(132) और ऐ महबूब तुम्हारा रब बे परवाह है रहमत वाला ऐ लोगो वह चाहे तो तुम्हें ले जाए (फ़ा267) और जिसे चाहे तुम्हारी जगह लाए जैसे तुम्हें औरों की औलाद से पैदा किया(133) (फ़ा268) बेशक जिसका तुम्हें वादा दिया जाता है (फ़ा269) ज़रूर आने वाली है और तुम थका नहीं सकते(134) तुम फ़रमाओ ऐ मेरी क़ौम तुम अपनी जगह पर काम किये जाओ मैं अपना काम करता हूं तो अब जानना चाहते हो किसका रहता है आख़िरत का घर

(फ़ा256) वक़्त गुज़र गया क़ियामत का दिन आ गया हसरत व नदामत बाक़ी रह गई (फ़ा257) हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा ने फ़रमाया कि यह इस्तेसना उस क़ौम की तरफ़ राजेअ् है जिनकी निस्बत इल्मे इलाही में है कि वह इस्लाम लायेंगे और नबीए करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की तस्दीक़ करेंगे और जहन्नम से निकाले जायेंगे। (फ़ा258) हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा ने फ़रमाया कि अल्लाह जब किसी क़ौम की भलाई चाहता है तो अच्छों को उन पर मुसल्लत करता है बुराई चाहता है तो बुरों को इससे यह नतीजा बरआमद होता है कि जो क़ौम ज़ालिम होती है उस पर ज़ालिम बादशाह मुसल्लत किया जाता है तो जो उस ज़ालिम के पन्जए ज़ुल्म से रिहाई चाहें उन्हें चाहिए कि ज़ुल्म तर्क करें (फ़ा259) यानी रोज़े क़ियामत (फ़ा260) और अ़ज़ाबे इलाही का ख़ौफ़ दिलाते (फ़ा261) काफ़िर जिन्न और इंसान इक़रार करेंगे कि रसूल उनके पास आये और उन्होंने ज़बानी प्याम पहुंचाए और उस दिन पेश आने वाले हालात का ख़ौफ़ दिलाया लेकिन काफ़िरों ने उनकी तकज़ीब की और उन पर ईमान न लाये कुफ़्फ़ार का यह इक़रार उस वक़्त होगा जब कि उनके आज़ा व जवारेह उनके शिर्क व कुफ़्र की शहादतें देंगे (फ़ा262) क़ियामत का दिन बहुत तवील होगा और उसमें हालात बहुत मुख़्तलिफ़ पेश आयेंगे जब कुफ़्फ़ार मोमिनीन के इनाम व इकराम और इज़्ज़त व मन्ज़िलत को देखेंगे तो अपने कुफ़्र और शिर्क से मुन्किर हो जायेंगे और इस **(बक़िया सफ़हा 249 पर)**

الدَّارِ اِنَّهٗ لَا يُفْلِحُ الظّٰلِمُوْنَ ﴿۱۳۵﴾ وَجَعَلُوْا لِلّٰهِ مِمَّا ذَرَاَ مِنَ الْحَرْثِ وَالْاَنْعَامِ نَصِيْبًا فَقَالُوْا هٰذَا لِلّٰهِ بِزَعْمِهِمْ وَهٰذَا لِشُرَكَآئِنَا فَمَا كَانَ لِشُرَكَآئِهِمْ
فَلَا يَصِلُ اِلَى اللّٰهِ وَمَا كَانَ لِلّٰهِ فَهُوَ يَصِلُ اِلٰى شُرَكَآئِهِمْ سَآءَ مَا يَحْكُمُوْنَ ﴿۱۳۶﴾ وَكَذٰلِكَ زَيَّنَ لِكَثِيْرٍ مِّنَ الْمُشْرِكِيْنَ قَتْلَ اَوْلَادِهِمْ شُرَكَآؤُهُمْ لِيُرْدُوْهُمْ
وَلِيَلْبِسُوْا عَلَيْهِمْ دِيْنَهُمْ وَلَوْ شَآءَ اللّٰهُ مَا فَعَلُوْهُ فَذَرْهُمْ وَمَا يَفْتَرُوْنَ ﴿۱۳۷﴾ وَقَالُوْا هٰذِهٖٓ اَنْعَامٌ وَّحَرْثٌ حِجْرٌ لَّا يَطْعَمُهَآ اِلَّا مَنْ نَّشَآءُ بِزَعْمِهِمْ
وَاَنْعَامٌ حُرِّمَتْ ظُهُوْرُهَا وَاَنْعَامٌ لَّا يَذْكُرُوْنَ اسْمَ اللّٰهِ عَلَيْهَا افْتِرَآءً عَلَيْهِ سَيَجْزِيْهِمْ بِمَا كَانُوْا يَفْتَرُوْنَ ﴿۱۳۸﴾ وَقَالُوْا مَا فِيْ بُطُوْنِ هٰذِهِ
الْاَنْعَامِ خَالِصَةٌ لِّذُكُوْرِنَا وَمُحَرَّمٌ عَلٰٓى اَزْوَاجِنَا وَاِنْ يَّكُنْ مَّيْتَةً فَهُمْ فِيْهِ شُرَكَآءُ سَيَجْزِيْهِمْ وَصْفَهُمْ اِنَّهٗ حَكِيْمٌ عَلِيْمٌ ﴿۱۳۹﴾ قَدْ خَسِرَ الَّذِيْنَ

दारि इन्नहू ला युफ़्लिहुज़् ज़ालिमून(135)व ज–अलू लिल्लाहि मिम्मा ज़–र–अ मिनल् ह़र्सि वल्अन्आमि नसीबन् फ़क़ालू हाज़ा लिल्लाहि बि–ज़अ्–मिहिम् व हाज़ा लिशु–रकाइना फ़मा का–न लिशु–रकाइहिम् फ़ला यसिलु इलल्लाहि व मा का–न लिल्लाहि फ़हु–व यसिलु इला शु–रकाइहिम् सा–अ मा यह़्कुमून(136)व कज़ालि–क ज़य्य–न लि–कसीरिम् मिनल् मुश्रिकी–न क़त्–ल औला–दिहिम् शु–रकाउहुम् लियुर्दूहुम् व लियल्बिसू अ़लैहिम् दी–नहुम् व लौ शाअल्लाहु मा फ़–अ़लूहु फ़ज़र्हुम् व मा यफ़्तरून(137)व क़ालू हाज़िही अन्आमुंव् व ह़र्सुन् ह़िज्रुल् ला यत्–अ़मुहा इल्ला मन् नशाउ बि–ज़अ़्मिहिम् व अन्आ़मुन् हुर्रिमत् ज़ुहूरुहा व अन्–आ़मुल् ला यज़्कुरूनस्मल्लाहि अ़लैहफ़्तिराअन् अ़लैहि स–यज्ज़ीहिम् बिमा कानू यफ़्तरून(138)व क़ालू मा फ़ी बुतूनि हाज़िहिल् अन्आ़मि ख़ालि–सतुल् लिज़ुकूरिना व मुह़र्रमुन् अ़ला अज़्वाजिना व इंय्यकुम् मै–त–तन् फ़हुम् फ़ीहि शु–रकाउ स–यज्ज़ीहिम् वस्फ़हुम् इन्नहू ह़कीमुन् अ़लीम (139)क़द् ख़सिरल् लज़ी–न

बेशक ज़ालिम फ़लाह नहीं पाते(135) और (फ़ा270) अल्लाह ने जो खेती और मवेशी पैदा किये उनमें से एक हिस्सादार ठहराया तो बोले यह अल्लाह का है उनके ख़्याल में और यह हमारे शरीकों का (फ़ा271) तो वह जो उनके शरीकों का है वह तो खुदा को नहीं पहुंचता और जो खुदा का है वह उनके शरीकों को पहुंचता है क्या ही बुरा हुक्म लगाते हैं(136) (फ़ा272) और यूं ही बहुत मुश्रिकों की निगाह में उनके शरीकों ने औलाद का क़त्ल भला कर दिखाया है (फ़ा273) कि उन्हें हलाक करें और उनका दीन उन पर मुश्तबह करदें (फ़ा274) और अल्लाह चाहता तो ऐसा न करते तो तुम उन्हें छोड़ दो वह हैं और उनके इफ़्तेरा।(137) और बोले (फ़ा275) यह मवेशी और खेती रोकी हुई (फ़ा276) है उसे वही खाए जिसे हम चाहें अपने झूठे ख़्याल से (फ़ा277) और कुछ मवेशी हैं जिन पर चढ़ना हराम ठहराया (फ़ा278) और कुछ मवेशी के ज़बह पर अल्लाह का नाम नहीं लेते (फ़ा279) यह सब अल्लाह पर झूठ बांधना है अ़नक़रीब वह उन्हें बदला देगा उनके इफ़्तेराओं का(138) और बोले जो इन मवेशी के पेट में है वह निरा (ख़ालिस) हमारे मर्दों का है (फ़ा280) और हमारी औ़रतों पर हराम है और मरा हुआ निकले तो वह सब (फ़ा281) उसमें शरीक हैं क़रीब है कि अल्लाह उन्हें उनकी बातों का बदला देगा बेशक वह हिकमत व इल्म वाला है(139) बेशक तबाह हुए वह जो

(फ़ा270) ज़मानए जाहिलियत में मुशिरकीन का तरीक़ा था कि वह अपनी खेतियों और दरख़्तों के फलों और चौपायों और तमाम मालों में से एक हिस्सा तो अल्लाह का मुक़र्रर करते थे और एक हिस्सा बुतों का तो जो हिस्सा अल्लाह के लिए मुक़र्रर करते थे उसको तो मेहमानों और मिस्कीनों पर सर्फ़ कर देते थे और जो बुतों के लिए मुक़र्रर करते थे वह ख़ास उन पर और उनके ख़ादिमों पर सर्फ़ करते और जो हिस्सा अल्लाह के लिये मुक़र्रर करते अगर उसमें से कुछ बुतों वाले हिस्सा में मिल जाता तो उसे छोड़ देते और अगर बुतों वाले हिस्सा में से कुछ उस में मिलता तो उसको निकाल कर फिर बुतों ही के हिस्से में शामिल कर देते इस आयत में उनकी इस जहालत व बद अक़ली का ज़िक्र फ़रमा कर उन पर तम्बीह फ़रमाई गई (फ़ा271) यानी बुतों का (फ़ा272) और इन्तेहा दर्जा के जहल में गिरिफ़्तार हैं ख़ालिक़ मुनइम के इज़्ज़त व जलाल की उन्हें ज़रा भी मअ्.रेफ़त नहीं और फ़सादे अक़्ल इस हद तक पहुंच गया कि उन्होंने बेजान बुतों पत्थर की तस्वीरों को कारसाज़े आलम के बराबर कर दिया और जैसा उसके लिए हिस्सा मुक़र्रर किया ऐसा ही बुतों के लिए भी किया बेशक यह बहुत ही बुरा फ़ेअ्.ल और इन्तेहा **(बक़िया सफ़हा 264 पर)**

قَتَلُوْٓا اَوْلَادَهُمْ سَفَهًاۢ بِغَيْرِ عِلْمٍ وَّحَرَّمُوْا مَا رَزَقَهُمُ اللّٰهُ افْتِرَآءً عَلَى اللّٰهِ ۚ قَدْ ضَلُّوْا وَمَا كَانُوْا مُهْتَدِيْنَ ﴿۱۴۰﴾ وَهُوَ الَّذِيْٓ اَنْشَاَ جَنّٰتٍ مَّعْرُوْشٰتٍ

وَّغَيْرَ مَعْرُوْشٰتٍ وَّالنَّخْلَ وَالزَّرْعَ مُخْتَلِفًا اُكُلُهٗ وَالزَّيْتُوْنَ وَالرُّمَّانَ مُتَشَابِهًا وَّغَيْرَ مُتَشَابِهٍ ۭ كُلُوْا مِنْ ثَمَرِهٖٓ اِذَآ اَثْمَرَ وَاٰتُوْا حَقَّهٗ يَوْمَ حَصَادِهٖ

وَلَا تُسْرِفُوْا ۭ اِنَّهٗ لَا يُحِبُّ الْمُسْرِفِيْنَ ﴿۱۴۱﴾ وَمِنَ الْاَنْعَامِ حَمُوْلَةً وَّفَرْشًا ۭ كُلُوْا مِمَّا رَزَقَكُمُ اللّٰهُ وَلَا تَتَّبِعُوْا خُطُوٰتِ الشَّيْطٰنِ ۭ اِنَّهٗ لَكُمْ عَدُوٌّ مُّبِيْنٌ ﴿۱۴۲﴾

ثَمٰنِيَةَ اَزْوَاجٍ ۚ مِنَ الضَّاْنِ اثْنَيْنِ وَمِنَ الْمَعْزِ اثْنَيْنِ ۭ قُلْ ءٰۗالذَّكَرَيْنِ حَرَّمَ اَمِ الْاُنْثَيَيْنِ اَمَّا اشْتَمَلَتْ عَلَيْهِ اَرْحَامُ الْاُنْثَيَيْنِ ۭ نَبِّـُٔـوْنِيْ بِعِلْمٍ

اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿۱۴۳﴾ وَمِنَ الْاِبِلِ اثْنَيْنِ وَمِنَ الْبَقَرِ اثْنَيْنِ ۭ قُلْ ءٰۗالذَّكَرَيْنِ حَرَّمَ اَمِ الْاُنْثَيَيْنِ اَمَّا اشْتَمَلَتْ عَلَيْهِ اَرْحَامُ الْاُنْثَيَيْنِ ۭ اَمْ كُنْتُمْ

क़–तलू औला–दहुम् स–फ़–हम् बिग़ैरि अ़िल्मिंव् व हर्रमू मा र–ज़–क़हुमुल्लाहुफ़्तिरा–अन् अ़लल्लाहि क़द् ज़ल्लू व मा कानू मुह्तदीन(140)व हुवल्लज़ी अन्श–अ जन्नातिम् मअ़्रूशातिंव् व ग़ै–र मअ़्रूशातिंव् वन्नख़्–ल वज़्ज़र्–अ़ मुख़्तलिफ़न् उकुलुहू वज़्ज़ैतू–न वर्रुम्मा–न मु–तशाबिहंव् व ग़ै–र मु–तशाबिहिन् कुलू मिन् स़–मरिही इज़ा अस़्म–र व आतू हक़्क़हू यौ–म ह़सादिही व ला तुस्रिफ़ू इन्नहू ला युहिब्बुल् मुस्रिफ़ीन(141)व मिनल् अन्आ़मि ह़मू–ल–तंव् व फ़र्शन् कुलू मिम्मा र–ज़–क़कु–मुल्लाहु व ला तत्तबिअ़ू ख़ुतुवातिश् शैतानि इन्नहू लकुम् अ़दुव्वुम् मुबीन(142) स़मानि–य–त अज़्वाजिन् मिनज़्ज़अ़्निस्नैनि व मिनल्मअ़् ज़िस्नैनि क़ुल् आज़्ज़–करैनि ह़र्र–म अमिल् उन्स़यैनि अम्मश्–त–म–लत् अ़लैहि अर्ह़ामुल् उन्स़ययनि नब्बिऊनी बिअ़िल्मिन् इन् कुन्तुम् सादिक़ीन(143)व मिनल् इबिलिस्नैनि व मिनल् ब–क़रिस्नैनि क़ुल् आज़्ज़–करैनि ह़र्र–म अमिल् उन्स़ययनि अम्मशत–म–लत् अ़लैहि अर्ह़ामुल् उन्स़ययनि अम् कुन्तुम्

अपनी औलाद को क़त्ल करते हैं अहमक़ाना जहालत से (फ़ा282)और हराम ठहराते हैं वह जो अल्लाह ने उन्हें रोज़ी दी(फ़ा283)अल्लाह पर झूठ बांधने को(फ़ा284)बेशक वह बहके और राह न पाई(140) (फ़ा285)(रुकूअ़ 3)और वही है जिसने पैदा किये बाग़ कुछ ज़मीन पर छए (छाए) हुए(फ़ा286) और कुछ बे छए(फैले)और खजूर और खेती जिसमें रंग रंग के खाने(फ़ा287)और ज़ैतून और अनार किसी बात में मिलते(फ़ा288)और किसी में अलग(फ़ा289)खाओ उसका फल जब फल लाए और उसका हक़ दो जिस दिन कटे (फ़ा290) और बेजा न ख़र्चो (फ़ा291) बेशक बेजा ख़रचने वाले उसे पसन्द नहीं(141) और मवेशी में से कुछ बोझ उठाने वाले और कुछ ज़मीन पर बिछे, (फ़ा292) खाओ उसमें से जो अल्लाह ने तुम्हें रोज़ी दी और शैतान के क़दमों पर न चलो बेशक वह तुम्हारा सरीह दुश्मन है (142) आठ नर और मादा एक जोड़ा भेड़ का और एक जोड़ा बकरी का तुम फ़रमाओ क्या उसने दोनों नर हराम किये या दोनों मादा या वह जिसे दोनों मादा पेट में लिए हैं (फ़ा293) किसी इल्म से बताओ अगर तुम सच्चे हो।(143) और एक जोड़ा ऊँट का और एक जोड़ा गाय का तुम फ़रमाओ क्या उसने दोनों नर हराम किये या दोनों मादा या वह जिसे दोनों मादा पेट में लिए हैं (फ़ा294) क्या तुम

(फ़ा282) **शाने नुज़ूलः** यह आयत ज़मानए जाहलियत के उन लोगों के हक़ में नाज़िल हुई जो अपनी लड़कियों को निहायत संगदिली और बे-रहमी के साथ ज़िन्दा दरगोर कर दिया करते थे रबीआ़ व मुज़र वग़ैरह क़बाइल में इसका बहुत रिवाज था और जाहलियत से बाज़ लोग लड़कों को भी क़त्ल करते थे और बे-रहमी का यह आ़लम था कि कुत्तों की परवरिश करते और औलाद को क़त्ल करते थे उनकी निस्बत यह इरशाद हुआ कि तबाह हुए इसमें शक नहीं कि औलाद अल्लाह तआ़ला की निअ़्मत है और उसकी हलाकत से अपनी तादाद कम होती है अपनी नस्ल मिटती है यह दुनिया का ख़सारा है घर की तबाही है और आख़िरत में उस पर अ़ज़ाबे अज़ीम है तो यह अमल दुनिया और आख़िरत दोनों में तबाही का बाइस हुआ और अपनी दुनिया और आख़िरत दोनों को तबाह कर लेना और औलाद जैसी अज़ीज़ और प्यारी चीज़ के साथ इस क़िस्म की सफ़्फ़ाकी और बेदर्दी गवारा करना इन्तेहा दर्जा की हिमाक़त और जहालत है (फ़ा283) यानी बहीरे साइबा हामी वग़ैरह जो मज़कूर हो चुके (फ़ा284) क्योंकि वह यह गुमान करते हैं कि ऐसे मज़मूम अफ़आ़ल का अल्लाह ने हुक्म दिया है उनका यह ख़्याल अल्लाह पर इफ़्तरा है (फ़ा285) हक़ व सवाब की (फ़ा286) यानी टट्टियों पर क़ाइम किये हुए मिस्ल अंगूर वग़ैरह के (फ़ा287) रंग और मज़े और मिक़दार और ख़ुश्बू में बाहम मुख़्तलिफ़ (फ़ा288) मसलन रंग में या पत्तों में (फ़ा289) मसलन ज़ाइक़ा और तासीर में (फ़ा290) माना यह है कि यह चीज़ें जब फलें खाना तो उसी वक़्त से तुम्हारे लिए मुबाह है और उस की ज़कात यानी उश्र उसके कामिल होने के **(बक़िया सफ़हा 266 पर)**

شُهَدَآءَ اِذْ وَصّٰىكُمُ اللّٰهُ بِهٰذَا ۚ فَمَنْ اَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرٰى عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا لِّيُضِلَّ النَّاسَ بِغَيْرِ عِلْمٍ ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَا يَهْدِى الْقَوْمَ الظّٰلِمِيْنَ ۝ قُلْ لَّاۤ اَجِدُ فِىْ

مَاۤ اُوْحِىَ اِلَىَّ مُحَرَّمًا عَلٰى طَاعِمٍ يَّطْعَمُهٗۤ اِلَّاۤ اَنْ يَّكُوْنَ مَيْتَةً اَوْ دَمًا مَّسْفُوْحًا اَوْ لَحْمَ خِنْزِيْرٍ فَاِنَّهٗ رِجْسٌ اَوْ فِسْقًا اُهِلَّ لِغَيْرِ اللّٰهِ بِهٖ ۚ فَمَنِ اضْطُرَّ غَيْرَ

بَاغٍ وَّلَا عَادٍ فَاِنَّ رَبَّكَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۝ وَعَلَى الَّذِيْنَ هَادُوْا حَرَّمْنَا كُلَّ ذِىْ ظُفُرٍ ۚ وَمِنَ الْبَقَرِ وَالْغَنَمِ حَرَّمْنَا عَلَيْهِمْ شُحُوْمَهُمَاۤ اِلَّا مَا حَمَلَتْ ظُهُوْرُهُمَاۤ

اَوِ الْحَوَايَاۤ اَوْ مَا اخْتَلَطَ بِعَظْمٍ ؕ ذٰلِكَ جَزَيْنٰهُمْ بِبَغْيِهِمْ ۖ وَاِنَّا لَصٰدِقُوْنَ ۝ فَاِنْ كَذَّبُوْكَ فَقُلْ رَّبُّكُمْ ذُوْ رَحْمَةٍ وَّاسِعَةٍ ۚ وَلَا يُرَدُّ بَاْسُهٗ عَنِ الْقَوْمِ

الْمُجْرِمِيْنَ ۝ سَيَقُوْلُ الَّذِيْنَ اَشْرَكُوْا لَوْ شَآءَ اللّٰهُ مَاۤ اَشْرَكْنَا وَلَاۤ اٰبَآؤُنَا وَلَا حَرَّمْنَا مِنْ شَىْءٍ ؕ كَذٰلِكَ كَذَّبَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ حَتّٰى ذَاقُوْا

शु–हदा–अ इज़् वस्साकुमुल्लाहु बिहाज़ा फ़–मन् अज़्–लमु मिम्म–निफ़्तरा अ़लल्लाहि कज़िबल् लियु–ज़िल्लन्ना–स बिग़ैरि अ़िल्मिन् इन्नल्ला–ह ला यह्दिल् क़ौमज़्ज़ा–लिमीन(144)क़ुल् ला अजिदु फ़ी मा ऊहि–य इलय्–य मुहर्रमन् अ़ला ताअ़ि–मिंय्यत्–अ़मुहू इल्ला अंय्यकू–न मैत–तन् औ द–मम् मस्फ़ूहन् औ लह्–म ख़िन्ज़ीरिन् फ़–इन्नहू रिज्सुन् औ फ़िस्क़न् उहिल्–ल लिग़ैरिल्लाहि बिही फ़–मनिज़्तुर्–र ग़ै–र बाग़िंव् व ला आदिन् फ़इन्–न रब्ब–क ग़फ़ूरु–र्रहीम(145)व अ़लल् लज़ी–न हादू हर्रम्ना कुल्–ल ज़ी ज़ुफ़ुरिन् व मिनल् ब–क़रि वल्ग़–नमि हर्रम्ना अ़लैहिम् शुहू–महुमा इल्ला मा ह–म–लत् ज़ुहूरुहुमा अविल् हवाया औ मख़्त–लत् बि–अ़ज़्मिन् ज़ालि–क जज़ैनाहुम् बि–बग़्यिहिम् व इन्ना लसादिक़ू–न(146)फ़इन् कज़्ज़बू–क फ़क़ुर् रब्बुकुम् ज़ू रह्मतिंव् वासि–अ़तिन् व ला युरद्दु बअ्सुहू अ़निल् क़ौमिल् मुज्रिमीन(147)स–यक़ूलुल् लज़ी–न अश्–रकू लौ शा–अल्लाहु मा अश्रक्ना व ला आबाउना व ला हर्रम्ना मिन् शैइन् कज़ालि–क कज़्ज़बल्लज़ी–न मिन् क़ब्लिहिम् हत्ता ज़ाक़ू

मौजूद थे जब अल्लाह ने तुम्हें यह हुक्म दिया (फ़ा295) तो उससे बढ़ कर ज़ालिम कौन जो अल्लाह पर झूट बांधे कि लोगों को अपनी जहालत से गुमराह करे बेशक अल्लाह ज़ालिमों को राह नहीं दिखाता(144)(रुकूअ़ 4) तुम फ़रमाओ (फ़ा296) मैं नहीं पाता उसमें जो मेरी तरफ़ 'वही' हुई किसी खाने वाले पर कोई खाना हराम (फ़ा297) मगर यह कि मुर्दार हो या रगों का बहता ख़ून (फ़ा298) या बद जानवर का गोश्त कि वह नजासत है या वह बेहुक्मी का जानवर जिसके ज़बह में ग़ैरे ख़ुदा का नाम पुकारा गया तो जो नाचार हुआ (फ़ा299) न यूं कि आप ख़्वाहिश करे और न यूं कि ज़रूरत से बढ़े तो बेशक अल्लाह बख़्शने वाला मेहरबान है(145) (फ़ा300)और यहूदियों पर हमने हराम किया हर नाखुन वाला जानवर (फ़ा301) और गाय और बकरी की चरबी उनपर हराम की मगर जो उनकी पीठ में लगी हो या आँत या हड्डी से मिली हो हमने यह उनकी सरकशी का बदला दिया (फ़ा302) और बेशक हम ज़रूर सच्चे हैं(146) फिर अगर वह तुम्हें झुठलायें तो तुम फ़रमाओ कि तुम्हारा रब वसीअ़ रहमत वाला है (फ़ा303) और उसका अ़ज़ाब मुजरिमों पर से नहीं टाला जाता(147)(फ़ा304) अब कहेंगे मुशिरक कि (फ़ा305) अल्लाह चाहता तो न हम शिर्क करते न हमारे बाप दादा न हम कुछ हराम ठहराते (फ़ा306) ऐसा ही उनसे अगलों ने झुठलाया था यहां तक कि हमारा अ़ज़ाब

(फ़ा295) जब यह नहीं है और नबुव्वत का तो इक़रार नहीं करते तो उन अहकामे हुरमत को अल्लाह की तरफ़ निस्बत करना किज़्ब व बातिल व इफ़्तेराए ख़ालिस है (फ़ा296) उन जाहिल मुशिरकों से जो हलाल चीज़ों को अपनी ख़्वाहिशे नफ़्स से हराम कर लेते हैं (फ़ा297) इसमें तम्बीह है कि हुरमत जेहते शरअ़ से साबित होती है न हवाए नफ़्स से मसला तो जिस चीज़ की हुरमत शरअ़ में वारिद न हो उसको नाजाइज़ व हराम कहना बातिल सुबूते हुरमत ख़्वाह वही क़ुरआनी से हो या वही हदीस से यही मोअ़तबर है (फ़ा298) तो जो ख़ून बहता न हो मिस्ल जिगर तिल्ली के वह हराम नहीं (फ़ा299) और ज़रूरत ने उसे उन चीज़ों में से किसी के खाने पर मजबूर किया ऐसी हालत में मुज़तर होकर उस ने कुछ खाया (फ़ा300) इस पर मुवाख़ज़ा न फ़रमाएगा (फ़ा301) जो उंगली रखता हो ख़्वाह चौपाया हो या परिन्द इसमें ऊँट और शुतर मुर्ग़ दाख़िल हैं (मदारिक) बाज़ मुफ़स्सिरीन का क़ौल है कि यहां शुतर मुर्ग़ और बत और ऊंट ख़ास तौर पर मुराद हैं (फ़ा302) यहूद अपनी सरकशी के बाइस इन चीज़ों से महरूम किये गए लिहाज़ा यह चीज़ें उन पर हराम रहीं और हमारी शरीअ़त में गाय बकरी की चरबी और ऊँट और बत और शुतर मुर्ग़ हलाल हैं इसी पर सहाबा और ताबेईन का इज्माअ़ है (तफ़सीर अहमदी) (फ़ा303) **(बक़िया सफ़हा 255 पर)**

بَأْسَنَا ۗ قُلْ هَلْ عِنْدَكُمْ مِّنْ عِلْمٍ فَتُخْرِجُوْهُ لَنَا ۗ اِنْ تَتَّبِعُوْنَ اِلَّا الظَّنَّ وَاِنْ اَنْتُمْ اِلَّا تَخْرُصُوْنَ ﴿۱۴۸﴾ قُلْ فَلِلّٰهِ الْحُجَّةُ الْبَالِغَةُ ۚ فَلَوْ شَآءَ لَهَدٰىكُمْ
اَجْمَعِيْنَ ﴿۱۴۹﴾ قُلْ هَلُمَّ شُهَدَآءَكُمُ الَّذِيْنَ يَشْهَدُوْنَ اَنَّ اللّٰهَ حَرَّمَ هٰذَا ۚ فَاِنْ شَهِدُوْا فَلَا تَشْهَدْ مَعَهُمْ ۚ وَلَا تَتَّبِعْ اَهْوَآءَ الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا وَالَّذِيْنَ لَا
يُؤْمِنُوْنَ بِالْاٰخِرَةِ وَهُمْ بِرَبِّهِمْ يَعْدِلُوْنَ ﴿۱۵۰﴾ قُلْ تَعَالَوْا اَتْلُ مَا حَرَّمَ رَبُّكُمْ عَلَيْكُمْ اَلَّا تُشْرِكُوْا بِهٖ شَيْئًا وَّبِالْوَالِدَيْنِ اِحْسَانًا ۚ وَلَا تَقْتُلُوْٓا اَوْلَادَكُمْ
مِّنْ اِمْلَاقٍ ۭ نَحْنُ نَرْزُقُكُمْ وَاِيَّاهُمْ ۚ وَلَا تَقْرَبُوا الْفَوَاحِشَ مَا ظَهَرَ مِنْهَا وَمَا بَطَنَ ۚ وَلَا تَقْتُلُوا النَّفْسَ الَّتِيْ حَرَّمَ اللّٰهُ اِلَّا بِالْحَقِّ ۭ ذٰلِكُمْ وَصّٰىكُمْ
بِهٖ لَعَلَّكُمْ تَعْقِلُوْنَ ﴿۱۵۱﴾ وَلَا تَقْرَبُوْا مَالَ الْيَتِيْمِ اِلَّا بِالَّتِيْ هِيَ اَحْسَنُ حَتّٰى يَبْلُغَ اَشُدَّهٗ ۚ وَاَوْفُوا الْكَيْلَ وَالْمِيْزَانَ بِالْقِسْطِ ۚ لَا نُكَلِّفُ نَفْسًا اِلَّا

बअ्–सना कुल् हल् अ़िन्दकुम् मिन् अ़िल्मिन् फ़तुख़्रिजूहु लना इन् तत्तबिअू–न इल्लज़्ज़न्–न व इन् अन्तुम् इल्ला तख़्रुसून(148)कुल् फ़लिल्लाहिल् हुज्जतुल् बालि–ग़तु फ़लौ शा–अ ल–हदाकुम् अज्मअ़ीन(149)कुल् हलुम्–म शु–हदा–अकुमुल् लज़ी–न यश्–हदू–न अन्नल्ला–ह हर्र–म हाज़ा फ़इन् शहिदू फ़ला तश्हद् म–अ़हुम् व ला तत्तबिअ् अह्वा–अल्लज़ी–न कज़्ज़बू बिआयातिना वल्लज़ी–न ला युअ्मिनू–न बिल्–आख़ि–रति व हुम् बि–रब्बिहिम् यअ्दिलून(150)कुल् तआ़लौ अत्लु मा हर्र–म रब्बुकुम् अ़लैकुम् अल्ला तुश्रिकू बिही शैअंव् व बिल्वालिदैनि इह्सानन् व ला तक़्तुलू औला–दकुम् मिन् इम्लाक़िन् नह्नु नरज़ुक़ुकुम् व इय्याहुम् व ला तक़्रबुल्फ़वाहि–श मा ज़–ह–र मिन्हा व मा ब–त़–न व ला तक़्तुलुन् नफ़्सल्लती हर्र–मल्लाहु इल्ला बिल्हक़्क़ि ज़ालिकुम् वस्साकुम् बिही ल–अ़ल्लकुम् तअ़्क़िलून(151)व ला तक़्रबू मालल् यतीमि इल्ला बिल्लती हि–य अह्सनु हत्ता यब्लु–ग़ अशुद्–दहू व औफ़ुल्कै–ल वल्मीज़ा–न बिल्क़िस्ति ला नुकल्लिफ़ु नफ़्सन् इल्ला

चखा (फ़ा307) तुम फ़रमाओ क्या तुम्हारे पास कोई इल्म है कि उसे हमारे लिए निकालो तुम तो निरे गुमान (ख़ाम ख़्याली) के पीछे हो और तुम यूं ही तख़मीने करते हो(148) (फ़ा308) तुम फ़रमाओ तो अल्लाह ही की हुज्जत पूरी है (फ़ा309) तो वह चाहता तो तुम सब को हिदायत फ़रमाता(149) तुम फ़रमाओ लाओ अपने वह गवाह जो गवाही दें कि अल्लाह ने उसे हराम किया (फ़ा310) फिर अगर वह गवाही दे बैठें (फ़ा311) तो तू ऐ सुनने वाले उनके साथ गवाही न देना और उनकी ख़्वाहिशों के पीछे न चलना जो हमारी आयतें झुटलाते हैं और जो आख़िरत पर ईमान नहीं लाते और अपने रब का बराबर वाला ठहराते हैं(150) (फ़ा312) (रुकूअ़ 5) तुम फ़रमाओ आओ मैं तुम्हें पढ़ सुनाऊं जो तुम पर तुम्हारे रब ने हराम किया (फ़ा313) यह कि उसका कोई शरीक न करो और माँ बाप के साथ भलाई करो (फ़ा314) और अपनी औलाद क़त्ल न करो मुफ़लिसी के बाइस हम तुम्हें और उन्हें सबको रिज़्क़ देंगे (फ़ा315) और बेहयाइयों के पास न जाओ जो उनमें खुली हैं और जो छुपी (फ़ा316) और जिस जान की अल्लाह ने हुरमत रखी उसे नाहक़ न मारो (फ़ा317) यह तुम्हें हुक्म फ़रमाया है कि तुम्हें अ़क़्ल हो(151)और यतीम के माल के पास न जाओ मगर बहुत अच्छे तरीक़े से (फ़ा318) जब तक वह अपनी जवानी को पहुंचे (फ़ा319) और नाप और तौल इंसाफ़ के साथ पूरी करो हम किसी जान पर बोझ नहीं डालते मगर

(फ़ा307) और यह उज़्र बातिल उनके कुछ काम न आया क्योंकि किसी अमर का मशीयत में होना उसकी मर्ज़ी व मामूर होने का मुस्तलज़िम नहीं मर्ज़ी वही है जो अम्बिया के वास्ते से बताई गई और उसका अमर फ़रमाया गया (फ़ा308) और ग़लत अटकलें चलाते हो (फ़ा309) कि उसने रसूल भेजे किताबें नाज़िल फ़रमाईं राहे हक़ वाज़ेह कर दी (फ़ा310) जिसे तुम अपने लिए हराम क़रार देते हो और कहते हो कि अल्लाह तआ़ला ने हमें इसका हुक्म दिया है यह गवाही इस लिए तलब की गई कि ज़ाहिर हो जाये कि कुफ़्फ़ार के पास कोई शाहिद नहीं है और जो वह कहते हैं वह उनकी तराशीदा बात है (फ़ा311) इसमें तम्बीह है कि अगर यह शहादत वाक़ेअ. हो भी तो वह महज़ इत्तेबाअ़े हवा और किज़्ब व बातिल होगी (फ़ा312) बुतों को मअ्.बूद मानते हैं और शिर्क में गिरिफ़्तार हैं। (फ़ा313) इसका बयान यह है (फ़ा314) क्योंकि तुम पर उनके बहुत हुक़ूक़ हैं उन्होंने तुम्हारी परवरिश की तुम्हारे साथ शफ़क़त और मेहरबानी का सुलूक किया तुम्हारी हर ख़तरे से निगहबानी की उनके हुक़ूक़ का लिहाज़ न करना और उनके साथ हुस्ने सुलूक का तर्क करना हराम है (फ़ा315) इसमें औलाद को ज़िन्दा **(बक़िया सफ़हा 265 पर)**

وُسۡعَهَا ۚ وَ اِذَا قُلۡتُمۡ فَاعۡدِلُوۡا وَلَوۡ كَانَ ذَا قُرۡبٰى ۚ وَ بِعَهۡدِ اللّٰهِ اَوۡفُوۡا ؕ ذٰ لِكُمۡ وَصّٰكُمۡ بِهٖ لَعَلَّكُمۡ تَذَكَّرُوۡنَ ۝١٥٢ وَاَنَّ هٰذَا صِرَاطِىۡ مُسۡتَقِيۡمًا

فَاتَّبِعُوۡهُ ۚ وَلَا تَتَّبِعُوا السُّبُلَ فَتَفَرَّقَ بِكُمۡ عَنۡ سَبِيۡلِهٖ ؕ ذٰ لِكُمۡ وَصّٰكُمۡ بِهٖ لَعَلَّكُمۡ تَتَّقُوۡنَ ۝١٥٣ ثُمَّ اٰتَيۡنَا مُوۡسَى الۡكِتٰبَ تَمَامًا عَلَى الَّذِىۡۤ اَحۡسَنَ

وَتَفۡصِيۡلًا لِّكُلِّ شَىۡءٍ وَّهُدًى وَّرَحۡمَةً لَّعَلَّهُمۡ بِلِقَآءِ رَبِّهِمۡ يُؤۡمِنُوۡنَ ۝١٥٤ وَهٰذَا كِتٰبٌ اَنۡزَلۡنٰهُ مُبٰرَكٌ فَاتَّبِعُوۡهُ وَاتَّقُوۡا لَعَلَّكُمۡ تُرۡحَمُوۡنَ ۝١٥٥ اَنۡ تَقُوۡلُوۡۤا

اِنَّمَاۤ اُنۡزِلَ الۡكِتٰبُ عَلٰى طَآئِفَتَيۡنِ مِنۡ قَبۡلِنَا ۖ وَاِنۡ كُنَّا عَنۡ دِرَاسَتِهِمۡ لَغٰفِلِيۡنَ ۝١٥٦ اَوۡ تَقُوۡلُوۡا لَوۡ اَنَّاۤ اُنۡزِلَ عَلَيۡنَا الۡكِتٰبُ لَكُنَّاۤ اَهۡدٰى مِنۡهُمۡ ۚ

فَقَدۡ جَآءَكُمۡ بَيِّنَةٌ مِّنۡ رَّبِّكُمۡ وَهُدًى وَّرَحۡمَةٌ ۚ فَمَنۡ اَظۡلَمُ مِمَّنۡ كَذَّبَ بِاٰيٰتِ اللّٰهِ وَصَدَفَ عَنۡهَا ؕ سَنَجۡزِى الَّذِيۡنَ يَصۡدِفُوۡنَ عَنۡ اٰيٰتِنَا

वुस्अहा व इज़ा कुल्तुम् फ़अ्दिलू व लौ का–न ज़ा कुर्बा व बि–अह्दिल्लाहि औफ़ू ज़ालिकुम् वस्साकुम् बिही ल–अ़ल्लकुम् त–ज़क्करून(152)व अन्–न हाज़ा सिराती मुस्तक़ीमन् फ़त्तबिअ़ूहु व ला तत्तबिअुस् सुबु–ल फ़–त–फ़र्र–क़ बिकुम् अन् सबी–लिही ज़ालिकुम् वस्साकुम् बिही ल–अ़ल्लकुम् तत्तकू़न(153)सुम्–म आतैना मूसल्किता–ब तमामन् अ़–लल्लज़ी अह्स–न व तफ़्सीलल् लिकुल्लि शैइंव् व हुदंव् व रह्मतल् ल–अ़ल्लहुम् बिलिक़ा–इ रब्बिहिम् युअ्मिनून(154)व हाज़ा किताबुन् अन्ज़ल्नाहु मुबा–रकुन् फ़त्तबिअ़ूहु वत्तकू ल–अ़ल्लकुम् तुर्–हमून(155)अन् तकू़लू इन्नमा उन्ज़िलल् किताबु अ़ला ताइ–फ़तैनि मिन् क़ब्लिना व इन् कुन्ना अ़न् दिरा–सतिहिम् लग़ाफ़िलीन(156)औ तकू़लू लौ अन्ना उन्ज़ि–ल अ़लैनल् किताबु लकुन्ना अह्दा मिन्हुम् फ़–क़द् जा–अकुम् बय्यि–नतुम् मिर्र–ब्बिकुम् व हुदंव् व रह्मतुन् फ़–मन् अज़्लमु मिम्मन् कज़्–ज़–ब बिआयातिल्लाहि व स–द–फ़ अ़न्हा स–नज्ज़िल् लज़ी–न यस्दिफ़ू–न अ़न् आयातिना

उसके मक़दूर भर और जब बात कहो तो इन्साफ़ की कहो अगरचे तुम्हारे रिश्तेदार का मुआ़मला हो और अल्लाह ही का अहद पूरा करो यह तुम्हें ताकीद फ़रमाई कि कहीं तुम नसीहत मानो(152) और यह कि (फ़ा320) यह है मेरा सीधा रास्ता तो इस पर चलो और, और राहें न चलो (फ़ा321) कि तुम्हें उसकी राह से जुदा कर देंगी यह तुम्हें हुक्म फ़रमाया कि कहीं तुम्हें परहेज़गारी मिले(153) फिर हमने मूसा को किताब अ़ता फ़रमाई (फ़ा322) पूरा एहसान करने को उसपर जो नेकोकार है और हर चीज़ की तफ़सील और हिदायत और रहमत कि कहीं वह (फ़ा323) अपने रब से मिलने पर ईमान लायें(154) (फ़ा324) (रुकूअ़ 6) और यह बरकत वाली किताब (फ़ा325) हमने उतारी तो इसकी पैरवी करो और परहेज़गारी करो कि तुम पर रहम हो(155) कभी कहो कि किताब तो हमसे पहले दो गरोहों पर उतरी थी (फ़ा326) और हमें उनके पढ़ने पढ़ाने की कुछ ख़बर न थी(156) (फ़ा327) या कहो कि अगर हम पर किताब उतरती तो हम उनसे ज़्यादा ठीक राह पर होते(फ़ा328) तो तुम्हारे पास तुम्हारे रब की रौशन दलील और हिदायत और रहमत आई(फ़ा329)तो उससे ज़्यादा ज़ालिम कौन जो अल्लाह की आयतों को झुठलाए और उनसे मुँह फेरे अ़नक़रीब वह जो हमारी आयतों से मुँह फेरते हैं हम उन्हें बुरे अ़ज़ाब की

(फ़ा320) इन दोनों आयतों में जो हुक्म दिया (फ़ा321) जो इस्लाम के ख़िलाफ़ हों यहूदियत हो या नसरानियत या और कोई मिल्लत (फ़ा322) तौरेत (फ़ा323) यानी बनी इसराईल (फ़ा324) और बअ़्स व हिसाब और सवाब व अ़ज़ाब और दीदारे इलाही की तस्दीक़ करें (फ़ा325) यानी क़ुरआन शरीफ़ जो कसीरुल ख़ैर और कसीरुन्–नफ़ा और कसीरुल बरकत है और क़ियामत तक बाक़ी रहेगा और तहरीफ़ व तब्दील व नस्ख़ से महफ़ूज़ रहेगा (फ़ा326) यानी यहूद व नसारा पर तौरेत और इन्जील (फ़ा327) क्योंकि वह हमारी ज़बान ही में न थी न हमें किसी ने उसके माना बताये अल्लाह तआ़ला ने क़ुरआने करीम नाज़िल फ़रमा कर उनके इस उज़्र को क़तअ़. फ़रमा दिया (फ़ा328) कुफ़्फ़ार की एक जमाअ़त ने कहा था कि यहूद व नसारा पर किताबें नाज़िल हुईं मगर वह बद अ़क़्ली में गिरिफ़्तार रहे उन किताबों से मुन्तफ़अ़् न हुए हम उनकी तरह ख़फ़ीफ़ुल अ़क़्ल और नादान नहीं हैं हमारी अ़क़्लें सही हैं हमारी अ़क़्ल व ज़ेहानत और फ़हम व फ़रासत ऐसी है कि अगर हम पर किताब उतरती तो हम ठीक राह पर होते क़ुरआन नाज़िल फ़रमा कर उनका यह उज़्र भी क़तअ़् फ़रमा दिया चुनांचे आगे इरशाद होता है (फ़ा329) यानी यह क़ुरआन पाक जिसमें हुज्जत वाज़ेहा और बयान साफ़ और हिदायत व रहमत है।

سُوْٓءَ الْعَذَابِ بِمَا كَانُوْا يَصْدِفُوْنَ ﴿۱۵۷﴾ هَلْ يَنْظُرُوْنَ اِلَّآ اَنْ تَاْتِيَهُمُ الْمَلٰٓئِكَةُ اَوْ يَاْتِيَ رَبُّكَ اَوْ يَاْتِيَ بَعْضُ اٰيٰتِ رَبِّكَ ؕ يَوْمَ يَاْتِيْ بَعْضُ اٰيٰتِ رَبِّكَ
لَا يَنْفَعُ نَفْسًا اِيْمَانُهَا لَمْ تَكُنْ اٰمَنَتْ مِنْ قَبْلُ اَوْ كَسَبَتْ فِيْٓ اِيْمَانِهَا خَيْرًا ؕ قُلِ انْتَظِرُوْٓا اِنَّا مُنْتَظِرُوْنَ ﴿۱۵۸﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ فَرَّقُوْا دِيْنَهُمْ وَكَانُوْا
شِيَعًا لَّسْتَ مِنْهُمْ فِيْ شَيْءٍ ؕ اِنَّمَآ اَمْرُهُمْ اِلَى اللّٰهِ ثُمَّ يُنَبِّئُهُمْ بِمَا كَانُوْا يَفْعَلُوْنَ ﴿۱۵۹﴾ مَنْ جَآءَ بِالْحَسَنَةِ فَلَهٗ عَشْرُ اَمْثَالِهَا ۚ وَمَنْ جَآءَ بِالسَّيِّئَةِ فَلَا
يُجْزٰٓى اِلَّا مِثْلَهَا وَهُمْ لَا يُظْلَمُوْنَ ﴿۱۶۰﴾ قُلْ اِنَّنِيْ هَدٰىنِيْ رَبِّيْٓ اِلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ۚ دِيْنًا قِيَمًا مِّلَّةَ اِبْرٰهِيْمَ حَنِيْفًا ۚ وَمَا كَانَ مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ ﴿۱۶۱﴾
قُلْ اِنَّ صَلَاتِيْ وَنُسُكِيْ وَمَحْيَايَ وَمَمَاتِيْ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿۱۶۲﴾

सू–अल् अ़ज़ाबि बिमा कानू यस्दिफ़ून(157)हल् यन्ज़ुरू–न इल्ला अन् तअ्ति–यहुमुल् मलाइ–कतु औ यअ्ति–य रब्बु–क औ यअ्ति–य बअ्ज़ु आयाति रब्बि–क यौ–म यअ्ती बअ्ज़ु आयाति रब्बि–क ला यन्फ़अु नफ़्सन् ईमानुहा लम् तकुन् आ–म–नत् मिन् क़ब्लु औ क–स–बत् फ़ी ईमानिहा ख़ैरन् क़ुलिन्–तज़िरु इन्ना मुन्तज़िरून(158)इन्नल्लज़ी–न फ़र्रकू दी–नहुम् व कानू शि–य–अ़ल्लस्–त मिन्हुम् फ़ी शैइन् इन्नमा अम्रुहुम् इलल्लाहि सुम्–म युनब्बिउहुम् बिमा कानू यफ़्–अ़लून(159)मन् जा–अ बिल्ह़–स–नति फ़–लहू अ़श्रु अम्सालिहा व मन् जा–अ बिस्सय्यि–अति फ़ला युज्ज़ा इल्ला मिस्लहा व हुम् ला युज़्लमून(160)क़ुल् इन्ननी हदानी रब्बी इला सिरातिम् मुस्तक़ीम दीनन् क़ि–य–मम् मिल्ल–त इब्राही–म ह़नीफ़न् व मा का–न मिनल् मुश्रिकीन (161)क़ुल् इन्–न स़लाती व नुसुकी व मह़्या–य व ममाती लिल्लाहि रब्बिल् आ़–लमीन(162)

सज़ा देंगे। बदला उनके मुंह फेरने का।(157) काहे के इन्तेज़ार में हैं (फ़ा330) मगर यह कि आयें उनके पास फ़रिश्ते(फ़ा331)या तुम्हारे रब का अज़ाब आए या तुम्हारे रब की एक निशानी आए (फ़ा332) जिस दिन तुम्हारे रब की वह एक निशानी आएगी किसी जान को ईमान लाना काम न देगा जो पहले ईमान न लाई थी या अपने ईमान में कोई भलाई न कमाई थी (फ़ा333) तुम फ़रमाओ रस्ता देखो (फ़ा334)हम भी देखते हैं(158)वह जिन्होंने अपने दीन में जुदा-जुदा राहें निकालीं और कई गरोह हो गए (फ़ा335) ऐ महबूब तुम्हें उनसे कुछ इलाक़ा नहीं उनका मुआ़मला अल्लाह ही के हवाले है फिर वह उन्हें बता देगा जो कुछ वह करते थे(159)(फ़ा336)जो एक नेकी लाए तो उसके लिए उस जैसी दस हैं(फ़ा337)और जो बुराई लाए तो उसे बदला न मिलेगा मगर उसके बराबर और उन पर ज़ुल्म न होगा(160)तुम फ़रमाओ बेशक मुझे मेरे रब ने सीधी राह दिखाई(फ़ा338)ठीक दीने इब्राहीम की मिल्लत जो हर बातिल से जुदा थे और मुश्रिक न थे(161)(फ़ा339)तुम फ़रमाओ बेशक मेरी नमाज़ और मेरी क़ुरबानियां और मेरा जीना और मेरा मरना सब अल्लाह के लिए है जो रब सारे जहान का(162)

(फ़ा330) जब वहदानियत व रिसालत पर ज़बरदस्त हुज्जतें क़ायम हो चुकीं और एतेक़ादाते कुफ़्र व ज़लाल का बुतलान ज़ाहिर कर दिया गया तो अब ईमान लाने में क्यों तवक़्क़ुफ़ है क्या इन्तेज़ार बाक़ी है (फ़ा331) उनकी अरवाह क़ब्ज़ करने के लिए (फ़ा332) क़ियामत की निशानियों में से जम्हूर मुफ़स्सिरीन के नज़दीक इस निशानी से आफ़ताब का मग़रिब से तुलूअ़ होना मुराद है तिर्मिज़ी की हदीस में भी ऐसा ही वारिद है बुख़ारी व मुस्लिम की हदीस में है कि क़ियामत क़ाइम न होगी जब तक आफ़ताब मग़रिब से तुलूअ़ न करे और जब वह मग़रिब से तुलूअ़ करेगा और उसे लोग देखेंगे तो सब ईमान लायेंगे और यह ईमान नफ़ा न देगा (फ़ा333) यानी ताअ़त न की थी माना यह हैं कि निशानी आने से पहले जो ईमान न लाये निशानी के बाद उसका ईमान क़बूल नहीं इसी तरह जो निशानी से पहले तौबा न करे बाद निशानी के उसकी तौबा क़बूल नहीं लेकिन जो ईमानदार पहले से नेक अ़मल करते होंगे निशानी के बाद भी उनके अमल मक़बूल होंगे (फ़ा334) इन में से किसी एक का यानी मौत के फ़रिश्तों की आमद या अ़ज़ाब या निशानी आने का (फ़ा335) मिस्ल यहूद व नसारा के हदीस शरीफ़ में है यहूद इकहत्तर (71) फ़िरक़े हो गए उन से सिर्फ़ एक नाजी है बाक़ी सब नारी और नसारा बहत्तर (72) फ़िरक़े हो गए एक नाजी बाक़ी सब नारी और मेरी उम्मत तिहत्तर (73) फ़िरक़े हो जाएगी वह सब के सब नारी होंगे सिवाए एक के जो सवादे आज़म यानी बड़ी जमाअ़त है और एक रिवायत में है कि जो मेरी और मेरे असहाब की राह पर है (फ़ा336) और आख़िरत में उन्हें अपने किरदार का अंजाम मालूम हो जाएगा (फ़ा337) यानी एक नेकी करने वाले को दस नेकियों की जज़ा और यह भी हद व निहायत के तरीक़ा पर नहीं बल्कि अल्लाह तआ़ला जिसके लिए जितना चाहे उसकी नेकियों को बढ़ाये एक के सात सौ करे या बे हिसाब अता फ़रमाए असल यह है कि नेकियों का सवाब महज़ फ़ज़्ल है यही मज़हब है अहले सुन्नत का और **(बक़िया सफ़हा 255 पर)**

لَا شَرِيكَ لَهٗ ۚ وَبِذٰلِكَ اُمِرْتُ وَاَنَا اَوَّلُ الْمُسْلِمِيْنَ ﴿۱۶۳﴾ قُلْ اَغَيْرَ اللّٰهِ اَبْغِيْ رَبًّا وَّهُوَ رَبُّ كُلِّ شَيْءٍ ۭ وَلَا تَكْسِبُ كُلُّ نَفْسٍ اِلَّا عَلَيْهَا ۚ وَلَا تَزِرُ وَازِرَةٌ وِّزْرَ اُخْرٰى ۚ ثُمَّ اِلٰى رَبِّكُمْ مَّرْجِعُكُمْ فَيُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ فِيْهِ تَخْتَلِفُوْنَ ﴿۱۶۴﴾ وَهُوَ الَّذِيْ جَعَلَكُمْ خَلٰٓئِفَ الْاَرْضِ وَرَفَعَ بَعْضَكُمْ فَوْقَ بَعْضٍ دَرَجٰتٍ لِّيَبْلُوَكُمْ فِيْ مَآ اٰتٰىكُمْ ۭ اِنَّ رَبَّكَ سَرِيْعُ الْعِقَابِ ۡۖ وَاِنَّهٗ لَغَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿۱۶۵﴾

ला शरी–क लहू व बिजालि–क उमिर्तु व अना अव्वलुल् मुस्लिमीन(163)कुल् अग़ैरल्लाहि अब्ग़ी रब्बंव् व हु–व रब्बु कुल्लि शैइन् व ला तक्सिबु कुल्लु नफ़्सिन् इल्ला अ़लैहा व ला तज़िरु वाज़ि–रतुंव् विज़्–र उख़्रा सुम्–म इला रब्बिकुम् मर्जि–अुकुम् फ़युनब्बिउकुम् बिमा कुन्तुम् फ़ीहि तख़्तलिफ़ून(164)व हु–वल्लज़ी ज–अ़–लकुम् ख़लाइ–फ़ल्–अर्ज़ि व र–फ़–अ़ बअ़्–ज़कुम् फ़ौ–क़ बअ़्ज़िन् द–रजातिल् लियब्लु–वकुम् फ़ी मा आताकुम् इन्–न रब्ब–क स़रीअुल् अ़िक़ाबि व इन्नहू ल–ग़फ़ूरुर् रह़ीम(165)

उसका कोई शरीक नहीं मुझे यही हुक्म हुआ है और मैं सबसे पहला मुसलमान हूं(163) (फ़ा340) तुम फ़रमाओ क्या अल्लाह के सिवा और रब चाहूं हालांकि वह हर चीज़ का रब है (फ़ा341) और जो कोई कुछ कमाए वह उसी के ज़िम्मा है और कोई बोझ उठाने वाली जान दूसरे का बोझ न उठाएगी (फ़ा342) फिर तुम्हें अपने रब की तरफ़ फिरना है (फ़ा343) वह तुम्हें बता देगा जिसमें इख़्तिलाफ़ करते थे(164) और वही है जिसने ज़मीन में तुम्हें नाइब किया (फ़ा344) और तुम में एक को दूसरे पर दर्जों बुलन्दी दी (फ़ा345) कि तुम्हें आज़माए (फ़ा346) उस चीज़ में जो तुम्हें अ़ता की बेशक तुम्हारे रब को अ़ज़ाब करते देर नहीं लगती और बेशक वह ज़रूर बख़्शने वाला मेहरबान है।(165) (रुकूअ़ 7)

(फ़ा340) अव्वलियत या तो इस ऐतबार से है कि अम्बिया का इस्लाम उनकी उम्मत पर मुक़द्दम होता है या इस ऐतबार से कि सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम अव्वल मख़्लूक़ात हैं तो ज़रूर अव्वलुल मुस्लिमीन हुए (फ़ा341) शाने नुज़ूलः कुफ़्फ़ार ने नबीए करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से कहा था कि आप हमारे दीन की तरफ़ लौट आईये और हमारे मअ़बूदों की इबादत कीजिये हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा ने फ़रमाया कि वलीद इब्ने मुग़ीरा कहता था कि मेरा रस्ता इख़्तियार करो उसमें अगर कुछ गुनाह है तो मेरी गर्दन पर इस पर यह आयते करीमा नाज़िल हुई और बताया गया कि वह रस्ता बातिल है खुदा शनास किस तरह गवारा कर सकता है कि अल्लाह के सिवा किसी और को रब बताये और यह भी बातिल है कि किसी का गुनाह दूसरा उठा सके (फ़ा342) हर शख़्स अपने गुनाह में माख़ूज़ होगा दूसरे के गुनाह में नहीं (फ़ा343) रोज़े क़ियामत (फ़ा344) क्योंकि सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ख़ातमुन्नबीईन हैं आप के बाद कोई नबी नहीं और आपकी उम्मत आख़िरुल उमम है इस लिए इनको ज़मीन में पहलों का ख़लीफ़ा किया कि उसके मालिक हों और उसमें तसर्रुफ़ करें (फ़ा345) शक्ल व सूरत में हुस्न व जमाल में रिज़्क़ व माल में इल्म व अक़्ल में क़ुव्वत व कमाल में (फ़ा346) यानी आज़माइश में डाले कि तुम निअ़्मत व जाह व माल पाकर कैसे शुक्र गुज़ार रहते हो और बाहम एक दूसरे के साथ किस क़िस्म के सुलूक करते हो।

(बक़िया सफ़्हा 239 का) दलीलें हैं (फ़ा233) न कोई उसकी क़ज़ा का तब्दील करने वाला न हुक्म का रद करने वाला न उसका वादा ख़िलाफ़ हो सके बाज़ मुफ़स्सिरीन ने फ़रमाया कि कलाम जब ताम है तो वह क़ाबिले नक़्स व तग़य्युर नहीं और वह क़ियामत तक तहरीफ़ व तग़य्युर से महफ़ूज़ है बाज़ मुफ़स्सिरीन फ़रमाते हैं माना यह हैं कि किसी की क़ुदरत नहीं कि क़ुरआन पाक की तहरीफ़ कर सके क्योंकि अल्लाह तआ़ला उसकी हिफ़ाज़त का ज़ामिन है (तफ़सीर अबुस्सऊद) (फ़ा234) अपने जाहिल और गुमराह बाप दादा की तक़लीद करते हैं बसीरत व हक़ शनासी से महरूम हैं

(बक़िया सफ़्हा 242 का) ख़्याल से कि शायद मुकर जाने से कुछ काम बने यह कहेंगे वल्लाहि रब्बना मा कुन्ना मुश्रिकीन यानी खुदा की क़सम हम मुश्रिक न थे उस वक़्त उनके मुंहों पर मुहरें लगा दी जायेंगी और उनके आज़ा उनके शिर्क व कुफ़्र की गवाही देंगे उसी की निस्बत इस आयत में इरशाद हुआ व शहिदू अ़ला अनूफ़ुसिहिम् अन्नहुम् कानू काफ़िरीन (फ़ा263) यानी रसूलों की बेअ़.सत (फ़ा264) उनकी मअ़.सियत और (फ़ा265) बल्कि रसूल भेजे जाते हैं वह उन्हें हिदायतें फ़रमाते हैं हुज्जतें क़ाइम करते हैं इस पर भी वह सरकशी करते हैं तब हलाक किये जाते हैं (फ़ा266) ख़्वाह वह नेक हो या बद नेकी और बदी के दर्जा में उन ही के मुताबिक़ सवाब व अ़ज़ाब होगा (फ़ा267) यानी हलाक करदे (फ़ा268) और उनका जानशीन बनाया (फ़ा269) वह चीज़ ख़्वाह क़ियामत हो या मरने के बाद उठना या हिसाब या सवाब व अ़ज़ाब

سُورَةُ الْأَعْرَافِ مَكِّيَّةٌ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

الٓمٓصٓ ۝١ كِتٰبٌ اُنْزِلَ اِلَيْكَ فَلَا يَكُنْ فِيْ صَدْرِكَ حَرَجٌ مِّنْهُ لِتُنْذِرَ بِهٖ وَذِكْرٰى لِلْمُؤْمِنِيْنَ ۝٢ اِتَّبِعُوْا مَاۤ اُنْزِلَ اِلَيْكُمْ مِّنْ رَّبِّكُمْ وَلَا تَتَّبِعُوْا مِنْ دُوْنِهٖۤ اَوْلِيَآءَ قَلِيْلًا مَّا تَذَكَّرُوْنَ ۝٣ وَكَمْ مِّنْ قَرْيَةٍ اَهْلَكْنٰهَا فَجَآءَهَا بَاْسُنَا بَيَاتًا اَوْ هُمْ قَآئِلُوْنَ ۝٤ فَمَا كَانَ دَعْوٰىهُمْ اِذْ جَآءَهُمْ بَاْسُنَاۤ اِلَّاۤ اَنْ قَالُوْۤا اِنَّا كُنَّا ظٰلِمِيْنَ ۝٥ فَلَنَسْـَٔلَنَّ الَّذِيْنَ اُرْسِلَ اِلَيْهِمْ وَلَنَسْـَٔلَنَّ الْمُرْسَلِيْنَ ۝٦ فَلَنَقُصَّنَّ عَلَيْهِمْ بِعِلْمٍ وَّمَا كُنَّا غَآئِبِيْنَ ۝٧ وَالْوَزْنُ يَوْمَئِذِ ِالْحَقُّ فَمَنْ ثَقُلَتْ

सूरतुल अअ्राफ़

मक्की है इस सूरत में 206 आयतें और 24 रूकूअ़ हैं

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

अलिफ़् लाम् मीम् साद(1)किताबुन् उन्ज़ि–ल इलै–क फ़ला यकुन् फ़ी सदरि–क ह–रजुम् मिन्हु लितुन्ज़ि–र बिही व ज़िक्रा लिल्मु–अ्मिनीन(2)इत्तबिऊ मा उन्ज़ि–ल इलैकुम् मिर्रब्बिकुम् व ला तत्तबिऊ मिन् दूनिही औलिया–अ क़लीलम् मा त–ज़क्करून(3)व कम् मिन् क़र्यतिन् अह्लक्नाहा फ़जा–अहा बअ्सुना बयातन् औ हुम् क़ाइलून(4)फ़मा का–न दअ्वाहुम् इज़् जा–अहुम् बअ्सुना इल्ला अन् क़ालू इन्ना कुन्ना ज़ालिमीन(5)फ़–ल–नस्अलन् नल्लज़ी–न उर्सि–ल इलैहिम् व ल–नस्–अलन्नल् मुर्–सलीन(6)फ़–लनुक़ुस्सन्–न अ़लैहिम् बिअ़िल्मिंव् व मा कुन्ना ग़ाइबीन(7)वल्वज़्नु यौ–मइज़ि निल्–हक़्क़ु फ़–मन् सक़ुलत्

अल्लाह के नाम से शुरू जो बहुत मेहरबान रहम वाला (फ़ा1)

अलिफ़ लाम् मीम् साद(1) ऐ महबूब एक किताब तुम्हारी तरफ़ उतारी गई तो तुम्हारा जी उससे न रुके (फ़ा2) इस लिए कि तुम उससे डर सुनाओ और मुसलमानों को नसीहत(2)ऐ लोगो उस पर चलो जो तुम्हारी तरफ़ तुम्हारे रब के पास से उतरा (फ़ा3) और उसे छोड़ कर और हाकिमों के पीछे न जाओ बहुत ही कम समझते हो(3) और कितनी ही बस्तियां हमने हलाक कीं (फ़ा4) तो उन पर हमारा अ़ज़ाब रात में आया या जब वह दोपहर को सोते थे(4)(फ़ा5) तो उनके मुंह से कुछ न निकला जब हमारा अ़ज़ाब उन पर आया मगर यही बोले कि हम ज़ालिम थे(5)(फ़ा6) तो बेशक ज़रूर हमें पूछना है उनसे जिनके पास रसूल गए (फ़ा7) और बेशक ज़रूर हमें पूछना है रसूलों से(6)(फ़ा8) तो ज़रूर हम उनको बता देंगे (फ़ा9) अपने इल्म से और हम कुछ ग़ायब न थे(7) और उस दिन तौल ज़रूर होनी है (फ़ा10) तो जिनके पल्ले

(फ़ा1) यह सूरत मक्का मुकर्रमा में नाज़िल हुई और एक रिवायत में है कि यह सूरत मक्किया है सिवा पांच आयतों के जिनमें से पहली वस्–अलुहुम् अ़निल् क़र्–यतिल्–लती है इस सूरत में 206 आयतें और 24 रुकूअ़ और 3325 कलिमे और 14 हज़ार दस हरफ़ हैं (फ़ा2) बईं ख़्याल कि शायद लोग न मानें और इससे एअ्.राज़ करें ओर इसकी तकज़ीब के दरपै हों (फ़ा3) या क़ुरआन शरीफ़ जिस में हिदायत व नूर का बयान है ज़ज्जाज ने कहा कि इत्तेबाअ्. करो क़ुरआन का और उस चीज़ का जो नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम लाये क्योंकि यह सब अल्लाह का नाज़िल किया हुआ है जैसा कि क़ुरआन में फ़रमाया मा आताकुमुर्–रसूलु फ़ख़ुज़ूहु ..... यानी जो कुछ रसूल तुम्हारे पास लायें उसे अख़ज़ करो और जिस से मना फ़रमायें उस से बाज़ रहो (फ़ा4) अब हुक्मे इलाही का इत्तेबाअ्. तर्क करने और उस से एअ्.राज़ करने के नतायज पिछली क़ौमों के हालात में दिखाये जाते हैं (फ़ा5) माना यह हैं कि हमारा अ़ज़ाब ऐसे वक़्त आया जब कि उन्हें ख़्याल भी न था या तो रात का वक़्त था और वह आराम की नींद सोते थे या दिन में क़ैलूला का वक़्त था और वह मसरूफ़े राहत थे न अ़ज़ाब के नुज़ूल की कोई निशानी थी न क़रीना कि पहले से आगाह होते अचानक आ गया इससे कुफ़्फ़ार को मुतनब्बह किया जाता है कि वह असबाबे अमन व राहत पर मग़रूर न हों अ़ज़ाबे इलाही जब आता है दफ़अ़तन आ जाता है (फ़ा6) अ़ज़ाब आने पर उन्होंने अपने जुर्म का एतेराफ़ किया और उस वक़्त एतेराफ़ भी फ़ायदा नहीं देता (फ़ा7) कि उन्होंने रसूलों की दावत का क्या जवाब दिया और उनके हुक्म की क्या तअ्.मील की (फ़ा8) कि उन्होंने अपनी उम्मतों को हमारे पयाम पहुंचाए और उन उम्मतों ने उन्हें क्या जवाब दिया (फ़ा9) रसूलों को भी और उनकी उम्मतों को भी कि उन्होंने दुनिया में क्या किया (फ़ा10) इस तरह कि अल्लाह अ़ज़्ज़ व जल्ल एक मीज़ान क़ाइम फ़रमाएगा जिस का हर एक पल्ला इतनी वुसअ़त रखेगा जैसी मशरिक़ व मग़रिब के दर्मियान वुसअ़त है इब्ने जौज़ी ने कहा कि हदीस में आया है कि हज़रत दाऊद अ़लैहिस्सलातु वस्सलाम ने बारगाहे इलाही में मीज़ान देखने की दरख़्वास्त की जब मीज़ान दिखाई गई और आपने उसके पल्लों की वुसअ़त देखी तो अ़र्ज़ किया या रब किस का मक़दूर है कि उनको नेकियों से भर सके इरशाद हुआ कि ऐ दाऊद मैं जब अपने बन्दों से राज़ी होता हूं तो एक खजूर से इसको भर देता हूं यानी थोड़ी नेकी भी मक़बूल हो जाये तो फ़ज़्ले इलाही से इतनी बढ़ जाती है कि मीज़ान को भर दे

مَوَازِيْنُهٗ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ﴿٨﴾ وَمَنْ خَفَّتْ مَوَازِيْنُهٗ فَاُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ خَسِرُوْٓا اَنْفُسَهُمْ بِمَا كَانُوْا بِاٰيٰتِنَا يَظْلِمُوْنَ ﴿٩﴾ وَلَقَدْ مَكَّنّٰكُمْ فِي الْاَرْضِ
وَجَعَلْنَا لَكُمْ فِيْهَا مَعَايِشَ ؕ قَلِيْلًا مَّا تَشْكُرُوْنَ ﴿١٠﴾ وَلَقَدْ خَلَقْنٰكُمْ ثُمَّ صَوَّرْنٰكُمْ ثُمَّ قُلْنَا لِلْمَلٰٓئِكَةِ اسْجُدُوْا لِاٰدَمَ ۖ فَسَجَدُوْٓا اِلَّآ اِبْلِيْسَ ؕ لَمْ يَكُنْ مِّنَ
السّٰجِدِيْنَ ﴿١١﴾ قَالَ مَا مَنَعَكَ اَلَّا تَسْجُدَ اِذْ اَمَرْتُكَ ؕ قَالَ اَنَا خَيْرٌ مِّنْهُ ۚ خَلَقْتَنِيْ مِنْ نَّارٍ وَّخَلَقْتَهٗ مِنْ طِيْنٍ ﴿١٢﴾ قَالَ فَاهْبِطْ مِنْهَا فَمَا يَكُوْنُ لَكَ اَنْ
تَتَكَبَّرَ فِيْهَا فَاخْرُجْ اِنَّكَ مِنَ الصّٰغِرِيْنَ ﴿١٣﴾ قَالَ اَنْظِرْنِيْٓ اِلٰى يَوْمِ يُبْعَثُوْنَ ﴿١٤﴾ قَالَ اِنَّكَ مِنَ الْمُنْظَرِيْنَ ﴿١٥﴾ قَالَ فَبِمَآ اَغْوَيْتَنِيْ لَاَقْعُدَنَّ لَهُمْ
صِرَاطَكَ الْمُسْتَقِيْمَ ﴿١٦﴾ ثُمَّ لَاٰتِيَنَّهُمْ مِّنْ بَيْنِ اَيْدِيْهِمْ وَمِنْ خَلْفِهِمْ وَعَنْ اَيْمَانِهِمْ وَعَنْ شَمَآئِلِهِمْ ؕ وَلَا تَجِدُ اَكْثَرَهُمْ شٰكِرِيْنَ ﴿١٧﴾ قَالَ

मवा–ज़ीनुहू फ़उलाइ–क हुमुल् मुफ़्लिहू़न(8)व मन् ख़फ़्फ़त् मवाज़ीनुहू फ़उलाइ–कल्लज़ी–न ख़सिरू अन्फ़ु–सहुम् बिमा कानू बि–आया–तिना यज़्लिमून(9)व ल–क़द् मक्कन्नाकुम् फ़िल्अर्ज़ि व ज–अ़ल्ना लकुम् फ़ीहा मआयि–श क़लीलम् मा तश्कुरून(10)व ल–क़द् ख़–लक़्नाकुम् सुम्–म सव्वर्नाकुम् सुम्–म क़ुल्ना लिल्म–लाइ–कतिस्जुदू लिआ–द–म फ़–स–जदू इल्ला इब्ली–स लम् यकुम् मिनस् साजिदीन(11)क़ा–ल मा म–न–अ़–क अल्ला तस्जु–द इज़् अमर्तु–क क़ा–ल अना ख़ैरुम् मिन्हु ख़–लक़्तनी मिन् नारिंव् व ख़–लक़्तहू मिन् तीन(12)क़ा–ल फ़ह्बित् मिन्हा फ़मा यकूनु ल–क अन् त–त–कब्ब–र फ़ीहा फ़ख़्रुज् इन्न–क मिनस्साग़िरीन(13)क़ा–ल अन्ज़िर्नी इला यौमि युब्–अ़सून(14)क़ा–ल इन्न–क मिनल्मुन्ज़रीन(15)क़ा–ल फ़बिमा अग़्वैतनी ल–अक़्अुदन्–न लहुम् सिरा–त–कल् मुस्तक़ीम(16)सुम्–म लआतियन्नहुम् मिम् बैनि ऐदी–हिम् व मिन् ख़ल्फ़िहिम् व अ़न् ऐमानिहिम् व अ़न् शमा–इलिहिम् व ला तजिदु अक्स़–रहुम् शाकिरीन(17)क़ालख़्रुज्

भारी हुए (फ़ा11) वही मुराद को पहुंचे(8) और जिन के पल्ले हलके हुए (फ़ा12) तो वही हैं जिन्होंने अपनी जान घाटे में डाली उन ज़्यादतियों का बदला जो हमारी आयतों पर करते थे(9) (फ़ा13) और बेशक हमने तुम्हें ज़मीन में जमाव (ठिकाना) दिया और तुम्हारे लिए उसमें ज़िन्दगी के असबाब बनाए (फ़ा14) बहुत ही कम शुक्र करते हो(10) (फ़ा15) (रुकूअ़ 8) और बेशक हमने तुम्हें पैदा किया फिर तुम्हारे नक़्शे बनाए फिर हमने मलायका से फ़रमाया कि आदम को सज्दा करो तो वह सब सज्दे में गिरे मगर इबलीस यह सज्दा वालों में न हुआ(11) फ़रमाया किस चीज़ ने तुझे रोका कि तूने सजदा न किया जब मैंने तुझे हुक्म दिया था (फ़ा16) बोला मैं इससे बेहतर हूं तूने मुझे आग से बनाया और इसे मिट्टी से बनाया(12) (फ़ा17) फ़रमाया तू यहां से उतर जा तुझे नहीं पहुंचता कि यहां पर रह कर ग़ुरूर करे निकल (फ़ा18) तू है ज़िल्लत वालों में(13) (फ़ा19) बोला मुझे फ़ुरसत दे उस दिन तक कि लोग उठाए जायें(14) फ़रमाया तुझे मुहलत है(15) (फ़ा20) बोला तो क़सम उसकी कि तूने मुझे गुमराह किया मैं ज़रूर तेरे सीधे रास्ते पर उनकी ताक में बैठूंगा (16) (फ़ा21) फिर ज़रूर मैं उनके पास आऊँगा उनके आगे और पीछे और दाहिने और बायें से (फ़ा22) और तू उनमें से अक्सर को शुक्रगुज़ार न पाएगा(17) (फ़ा23) फ़रमाया

(फ़ा11) नेकियां ज़्यादा हुईं (फ़ा12) और उनमें कोई नेकी न हुई यह कुफ़्फ़ार का हाल होगा जो ईमान से महरूम हैं और इस वजह से उनका कोई अमल मक़बूल नहीं (फ़ा13) कि उनको छोड़ते थे झुठलाते थे उनकी इताअ़त से मुंह मोड़ते थे (फ़ा14) और अपने फ़ज़्ल से तुम्हें राहतें दीं बावजूद इसके तुम (फ़ा15) शुक्र की हक़ीक़त निअ़मत का तसव्वुर और उसका इज़हार है और ना शुक्री निअ़मत को भूल जाना और उसको छुपाना (फ़ा16) मसलाः इससे साबित होता है कि अमर वुजूब के लिए होता है और सज्दा न करने का सबब दरियाफ़्त फ़रमाना तौबीख़ के लिए है और इस लिए कि शैतान की मुआ़नदत और उसका कुफ़्र व किब्र और अपनी असल पर मुफ़्तख़िर होना और हज़रत आदम अ़लैहिस्सलाम के असल की तहक़ीर करना ज़ाहिर हो जाये (फ़ा17) इससे उसकी मुराद यह थी कि आग मिट्टी से अफ़ज़ल व आला है तो जिसकी असल आग होगी वह उससे अफ़ज़ल होगा जिसकी असल मिट्टी हो और उस ख़बीस का यह ख़्याल ग़लत व बातिल है क्योंकि अफ़ज़ल वह है जिसे मालिक व मौला फ़ज़ीलत दे फ़ज़ीलत का मदार असल व जौहर पर नहीं बल्कि मालिक की इताअ़त व फ़रमांबरदारी **(बक़िया सफ़हा 266 पर)**

اخْرُجْ مِنْهَا مَذْءُوْمًا مَّدْحُوْرًا ۭ لَمَنْ تَبِعَكَ مِنْهُمْ لَاَمْلَئَنَّ جَهَنَّمَ مِنْكُمْ اَجْمَعِيْنَ ﴿١٨﴾ وَيٰٓاٰدَمُ اسْكُنْ اَنْتَ وَزَوْجُكَ الْجَنَّةَ فَكُلَا مِنْ حَيْثُ شِئْتُمَا

وَلَا تَقْرَبَا هٰذِهِ الشَّجَرَةَ فَتَكُوْنَا مِنَ الظّٰلِمِيْنَ ﴿١٩﴾ فَوَسْوَسَ لَهُمَا الشَّيْطٰنُ لِيُبْدِيَ لَهُمَا مَا وٗرِيَ عَنْهُمَا مِنْ سَوْاٰتِهِمَا وَقَالَ مَا نَهٰىكُمَا رَبُّكُمَا عَنْ

هٰذِهِ الشَّجَرَةِ اِلَّآ اَنْ تَكُوْنَا مَلَكَيْنِ اَوْ تَكُوْنَا مِنَ الْخٰلِدِيْنَ ﴿٢٠﴾ وَقَاسَمَهُمَآ اِنِّيْ لَكُمَا لَمِنَ النّٰصِحِيْنَ ﴿٢١﴾ فَدَلّٰىهُمَا بِغُرُوْرٍ ۚ فَلَمَّا ذَاقَا الشَّجَرَةَ

بَدَتْ لَهُمَا سَوْاٰتُهُمَا وَطَفِقَا يَخْصِفٰنِ عَلَيْهِمَا مِنْ وَّرَقِ الْجَنَّةِ ۭ وَنَادٰىهُمَا رَبُّهُمَآ اَلَمْ اَنْهَكُمَا عَنْ تِلْكُمَا الشَّجَرَةِ وَاَقُلْ لَّكُمَآ اِنَّ الشَّيْطٰنَ لَكُمَا عَدُوٌّ

مُّبِيْنٌ ﴿٢٢﴾ قَالَا رَبَّنَا ظَلَمْنَآ اَنْفُسَنَا ۫ وَاِنْ لَّمْ تَغْفِرْ لَنَا وَتَرْحَمْنَا لَنَكُوْنَنَّ مِنَ الْخٰسِرِيْنَ ﴿٢٣﴾ قَالَ اهْبِطُوْا بَعْضُكُمْ لِبَعْضٍ عَدُوٌّ ۚ وَلَكُمْ فِي الْاَرْضِ

क़ालख़्रुज् मिन्हा मज़्ऊमम् मद्हूरन् ल–मन् तबि–अ़–क मिन्हुम् ल–अम्ल–अन्–न जहन्न–म मिन्कुम् अज्मअ़ीन(18)व या आ–दमुस्कुन् अन्–त व ज़ौजुकल्जन्न–त फ़कुला मिन् हैसु शिअ्तुमा व ला तक़्र–बा हाज़िहिश् श–ज–र–त फ़–तकूना मिनज़्ज़ालिमीन(19)फ़–वस्व–स लहुमश् शैतानु लियुब्दि–य लहुमा मा वूरि–य अ़न्हुमा मिन् सौआतिहिमा व क़ा–ल मा नहाकुमा रब्बुकुमा अ़न् हाज़िहिश् श–ज–रति इल्ला अन् तकूना म–लकैनि औ तकूना मिनल् ख़ालिदीन(20)व क़ा–स–महुमा इन्नी लकुमा लमिनन् नासिहीन(21)फ़–दल्लाहुमा बिग़ुरूरिन् फ़–लम्मा ज़ाक़श् श–ज–र–त ब–दत् लहुमा सौआतुहुमा व तफ़िक़ा यख़्सिफ़ानि अ़लैहिमा मिंव् व रक़िल्जन्नति व नादाहुमा रब्बुहुमा अलम् अन्–हकुमा अ़न् तिल्कुमश् श–ज–रति व अक़ुल् लकुमा इन्नश्शैता–न लकुमा अ़दुव्वुम् मुबीन(22)क़ाला रब्बना ज़–लम्ना अन्फ़ु–सना व इल्लम् तग़्फ़िर् लना व तर्हम्ना ल–नकू–नन्–न मिनल्ख़ासिरीन(23)क़ाल–ह्बितू बअ़्जुकुम् लिबअ़्ज़िन् अ़दुव्वुन् व लकुम् फ़िल्अर्ज़ि

यहां से निकल जा रद् किया गया रांदा हुआ ज़रूर जो उनमें से तेरे कहे पर चला मैं तुम सब से जहन्नम भर दूंगा(18) (फ़ा24) और ऐ आदम तू और तेरा जोड़ा (फ़ा25) जन्नत में रहो तो उसमें से जहां चाहो खाओ और उस पेड़ के पास न जाना कि हद से बढ़ने वालों में होगे(19) फिर शैतान ने उनके जी में ख़तरा डाला कि उन पर खोल दे उनकी शर्म की चीज़ें (फ़ा26) जो उनसे छुपी थीं (फ़ा27) और बोला तुम्हें तुम्हारे रब ने इस पेड़ से इसी लिए मना फ़रमाया है कि कहीं तुम दो फ़रिश्ते हो जाओ या हमेशा जीने वाले(20) (फ़ा28) और उनसे क़सम खाई कि मैं तुम दोनों का ख़ैरख़्वाह हूं (21) तो उतार लाया उन्हें फ़रेब से (फ़ा29) फिर जब उन्होंने वह पेड़ चखा उन पर उनकी शर्म की चीज़ें खुल गईं (फ़ा30) और अपने बदन पर जन्नत के पत्ते चिपटाने लगे और उन्हें उनके रब ने फ़रमाया क्या मैंने तुम्हें उस पेड़ से मना न किया और न फ़रमाया था कि शैतान तुम्हारा खुला दुश्मन है(22) दोनों ने अ़र्ज़ की ऐ रब हमारे हमने अपना आप बुरा किया तो अगर तू हमें न बख़्शे और हम पर रहम न करे तो हम ज़रूर नक़सान वालों में हुए(23) फ़रमाया उतरो (फ़ा31) तुम में एक दूसरे का दुश्मन है और तुम्हें ज़मीन में

(फ़ा24) तुझ को भी और तेरी ज़ुर्रियत को भी और तेरी इताअ़त करने वाले आदमियों को भी सबको जहन्नम में दाख़िल किया जाएगा शैतान को जन्नत से निकाल देने के बाद हज़रत आदम को ख़िताब फ़रमाया जो आगे आता है (फ़ा25) यानी हज़रत हव्वा (फ़ा26) यानी ऐसा वसवसा डाला कि जिस का नतीजा यह हुआ कि वह दोनों आपस में एक दूसरे के सामने बरहना हो जायें इस आयत से यह मसला साबित हुआ कि वह जिस्म जिसको औरत कहते हैं उसका छुपाना ज़रूरी और खोलना मना है और यह भी साबित हुआ कि उसका खोलना हमेशा से अ़क़्ल के नज़दीक मज़मूम और तबीअ़तों को नागवार रहा है (फ़ा27) इससे मालूम हुआ कि इन दोनों साहिबों ने अब तक एक दूसरे का सत्र न देखा था (फ़ा28) कि जन्नत में रहो और कभी न मरो (फ़ा29) माना यह हैं कि इबलीस मलऊन ने झूटी क़सम खाकर हज़रत आदम अ़लैहिस्सलातु वस्सलाम को धोखा दिया और पहला झूठी क़सम खाने वाला इबलीस ही है हज़रत आदम अ़लैहिस्सलाम को गुमान भी न था कि कोई अल्लाह की क़सम खाकर झूठ बोल सकता है इस लिए आप ने उसकी बात का ऐतबार किया (फ़ा30) और जन्नती लिबास जिस्म से जुदा हो गए और उनमें एक दूसरे से अपना बदन छुपा न सका उस वक़्त तक उन साहिबों में से किसी ने ख़ुद भी अपना सत्र न देखा था और न उस वक़्त तक उन्हें इसकी हाजत पेश आई थी (फ़ा31) ऐ आदम व हव्वा मअ़ अपनी ज़ुर्रियत के जो/तुम में है

مُسْتَقَرٌّ وَّمَتَاعٌ اِلٰى حِيْنٍ ﴿۲۴﴾ قَالَ فِيْهَا تَحْيَوْنَ وَفِيْهَا تَمُوْتُوْنَ وَمِنْهَا تُخْرَجُوْنَ ﴿۲۵﴾ يٰبَنِيْٓ اٰدَمَ قَدْ اَنْزَلْنَا عَلَيْكُمْ لِبَاسًا يُّوَارِيْ سَوْاٰتِكُمْ وَرِيْشًا

وَلِبَاسُ التَّقْوٰى ذٰلِكَ خَيْرٌ ذٰلِكَ مِنْ اٰيٰتِ اللّٰهِ لَعَلَّهُمْ يَذَّكَّرُوْنَ ﴿۲۶﴾ يٰبَنِيْٓ اٰدَمَ لَا يَفْتِنَنَّكُمُ الشَّيْطٰنُ كَمَآ اَخْرَجَ اَبَوَيْكُمْ مِّنَ الْجَنَّةِ يَنْزِعُ عَنْهُمَا لِبَاسَهُمَا

لِيُرِيَهُمَا سَوْاٰتِهِمَا اِنَّهٗ يَرٰىكُمْ هُوَ وَقَبِيْلُهٗ مِنْ حَيْثُ لَا تَرَوْنَهُمْ اِنَّا جَعَلْنَا الشَّيٰطِيْنَ اَوْلِيَآءَ لِلَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ ﴿۲۷﴾ وَاِذَا فَعَلُوْا فَاحِشَةً قَالُوْا

وَجَدْنَا عَلَيْهَآ اٰبَآءَنَا وَاللّٰهُ اَمَرَنَا بِهَا قُلْ اِنَّ اللّٰهَ لَا يَاْمُرُ بِالْفَحْشَآءِ اَتَقُوْلُوْنَ عَلَى اللّٰهِ مَا لَا تَعْلَمُوْنَ ﴿۲۸﴾ قُلْ اَمَرَ رَبِّيْ بِالْقِسْطِ وَاَقِيْمُوْا

وُجُوْهَكُمْ عِنْدَ كُلِّ مَسْجِدٍ وَّادْعُوْهُ مُخْلِصِيْنَ لَهُ الدِّيْنَ كَمَا بَدَاَكُمْ تَعُوْدُوْنَ ﴿۲۹﴾ فَرِيْقًا هَدٰى وَفَرِيْقًا حَقَّ عَلَيْهِمُ الضَّلٰلَةُ اِنَّهُمُ اتَّخَذُوا

मुस्तक़र्रुंव् व मताअुन् इला हीन(24)क़ा–ल फ़ीहा तह्यौ–न व फ़ीहा तमूतू–न व मिन्हा तुख़्रजू–न(25)या बनी आ–द–म क़द अन्ज़ल्ना अ़लैकुम् लिबासंय्युवारी सौआतिकुम् व रीशन् व लिबासुत् तक़्वा ज़ालि–क ख़ैरुन् ज़ालि–क मिन् आयातिल्लाहि ल–अ़ल्लहुम् यज़्ज़क्करून (26)या बनी आ–द–म ला यफ़्तिनन्नकुमुश् शैतानु कमा अख़्र–ज अ–बवैकुम् मिनल् जन्नति यन्ज़िअु अ़न्हुमा लिबा–सहुमा लियु–रि–यहुमा सौआतिहिमा इन्नहू यराकुम् हु–व व क़बीलुहू मिन् हैसु ला तरौ–नहुम् इन्ना ज–अ़ल्नश् शयाती–न औलिया–अ लिल्लज़ी–न ला युअ्मिनून(27)व इज़ा फ़–अ़लू फ़ाहि–श–तन् क़ालू व–जदना अ़लैहा आबा–अना वल्लाहु अ–म–रना बिहा क़ुल् इन्नल्ला–ह ला यअ्मुरु बिल्फ़ह्शाइ अ–तक़ूलू–न अ़लल्लाहि मा ला तअ़्–लमून(28) क़ुल् अ–म–र रब्बी बिल्क़िस्ति व अक़ीमू वुजू–हकुम् अ़िन्–द कुल्लि मस्जिदिंव् वदअ़ूहु मुख़्लिसी–न लहुद्दी–न कमा ब–द–अकुम् तअ़ूदू न(29)फ़रीक़न् हदा व फ़रीक़न् हक़्–क़ अ़लैहिमुज़्ज़ला–लतु इन्नहुमुत् त–ख़ज़ुश्

एक वक़्त तक ठहरना और बरतना है(24) फ़रमाया इसी में जियोगे और इसी में मरोगे और इसी में से उठाए जाओगे (25) (फ़ा32) (रुकूअ़ 9) ऐ आदम की औलाद बेशक हमने तुम्हारी तरफ़ एक लिबास वह उतारा कि तुम्हारी शर्म की चीज़ें छुपाए और एक वह कि तुम्हारी आराइश हो (फ़ा33) और परहेज़गारी का लिबास वह सबसे भला (फ़ा34) यह अल्लाह की निशानियों में से है कि कहीं वह नसीहत मानें।(26) ऐ आदम की औलाद (फ़ा35) ख़बरदार तुम्हें शैतान फ़ितने में न डाले जैसा तुम्हारे मां बाप को बहिश्त से निकाला, उतरवा दिये उनके लिबास कि उनकी शर्म की चीज़ें उन्हें नज़र पड़ें बेशक वह और उसका कुम्बा वहां से तुम्हें देखते हैं कि तुम उन्हें नहीं देखते (फ़ा36) बेशक हमने शैतानों को उनका दोस्त किया है जो ईमान नहीं लाते(27) और जब कोई बेहयाई करें (फ़ा37) तो कहते हैं हमने इस पर अपने बाप दादा को पाया और अल्लाह ने हमें इसका हुक्म दिया (फ़ा38) तो फ़रमाओ बेशक अल्लाह बेहयाई का हुक्म नहीं देता क्या अल्लाह पर वह बात लगाते हो जिस की तुम्हें ख़बर नहीं(28) तुम फ़रमाओ मेरे रब ने इन्साफ़ का हुक्म दिया है और अपने मुँह सीधे करो हर नमाज़ के वक़्त और उसकी इबादत करो निरे (ख़ालिस) उसके बन्दे होकर जैसे उसने तुम्हारा आग़ाज़ किया वैसे ही पलटोगे(29) (फ़ा39) एक फ़िरक़े को राह दिखाई (फ़ा40) और एक फ़िरक़े की गुमराही साबित हुई (फ़ा41) उन्होंने अल्लाह को छोड़कर

(फ़ा32) रोज़े क़ियामत हिसाब के लिए (फ़ा33) यानी एक लिबास तो वह है जिससे बदन छुपाया जाये और सत्र किया जाये और एक लिबास वह है जिस से ज़ीनत हो और यह भी ग़र्ज़े सही है (फ़ा34) परहेज़गारी का लिबास ईमान, हया, नेक ख़सलतें, नेक अ़मल हैं यह बेशक लिबासे ज़ीनत से अफ़ज़ल व बेहतर हैं। (फ़ा35) शैतान की कय्यादी और हज़रत आदम अ़लैहिस्सलाम के साथ उसकी अ़दावत का बयान फ़रमा कर बनी आदम को मुतनब्बेह और होशियार किया जाता है कि वह शैतान के वसवसे और इग़वा और उसकी मक्कारियों से बचते रहें जो हज़रत आदम अ़लैहिस्सलातु वस्सलाम के साथ ऐसी फ़रेब–कारी कर चुका है वह उनकी औलाद के साथ कब दरगुज़र करने वाला है (फ़ा36) अल्लाह तआ़ला ने जिन्नों को ऐसा इदराक दिया है कि वह इंसानों को देखते हैं और इंसानों को ऐसा इदराक नहीं मिला कि वह जिन्नों को देख सकें हदीस शरीफ़ में है कि शैतान इंसान के जिस्म में ख़ून की राहों में पैर जाता है हज़रत ज़ुन्नून रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने फ़रमाया कि अगर (बक़िया सफ़हा 267 पर)

الشَّيٰطِيْنَ اَوْلِيَآءَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ وَيَحْسَبُوْنَ اَنَّهُمْ مُّهْتَدُوْنَ ۝ يٰبَنِيْٓ اٰدَمَ خُذُوْا زِيْنَتَكُمْ عِنْدَ كُلِّ مَسْجِدٍ وَّكُلُوْا وَاشْرَبُوْا وَلَا تُسْرِفُوْا ۚ اِنَّهٗ

لَا يُحِبُّ الْمُسْرِفِيْنَ ۝ قُلْ مَنْ حَرَّمَ زِيْنَةَ اللّٰهِ الَّتِيْٓ اَخْرَجَ لِعِبَادِهٖ وَالطَّيِّبٰتِ مِنَ الرِّزْقِ ۭ قُلْ هِيَ لِلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا خَالِصَةً يَّوْمَ

الْقِيٰمَةِ ۭ كَذٰلِكَ نُفَصِّلُ الْاٰيٰتِ لِقَوْمٍ يَّعْلَمُوْنَ ۝ قُلْ اِنَّمَا حَرَّمَ رَبِّيَ الْفَوَاحِشَ مَا ظَهَرَ مِنْهَا وَمَا بَطَنَ وَالْاِثْمَ وَالْبَغْيَ بِغَيْرِ الْحَقِّ وَاَنْ تُشْرِكُوْا

بِاللّٰهِ مَا لَمْ يُنَزِّلْ بِهٖ سُلْطٰنًا وَّاَنْ تَقُوْلُوْا عَلَى اللّٰهِ مَا لَا تَعْلَمُوْنَ ۝ وَلِكُلِّ اُمَّةٍ اَجَلٌ ۚ فَاِذَا جَآءَ اَجَلُهُمْ لَا يَسْتَاْخِرُوْنَ سَاعَةً وَّلَا يَسْتَقْدِمُوْنَ ۝

يٰبَنِيْٓ اٰدَمَ اِمَّا يَاْتِيَنَّكُمْ رُسُلٌ مِّنْكُمْ يَقُصُّوْنَ عَلَيْكُمْ اٰيٰتِيْ ۙ فَمَنِ اتَّقٰى وَاَصْلَحَ فَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ ۝ وَالَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا

शयाती–न औलिया–अ मिन् दूनिल्लाहि व यह्सबू–न अन्नहुम् मुह्तदून(30)या बनी आ–द–म खुज़ू ज़ी–न–तकुम् अिन्–द कुल्लि मस्जिदिंव् व कुलू वश्रबू व ला तुस्रिफ़ू इन्नहू ला युहिब्बुल् मुस्रिफ़ीन(31)क़ुल् मन् हर्–र–म ज़ी–नतल्लाहिल् लती अख़्र–ज लिअिबादिही वत्तय्यिबाति मिनर्रिज़्क़ि क़ुल् हि–य लिल्लज़ी–न आ–मनू फ़िल् हयातिद्दुन्या ख़ालि–स–तंय्यौमल् क़िया–मति कज़ालि–क नुफ़स्सिलुल् आयाति लिक़ौमिंय्यअ्–लमून(32)क़ुल् इन्नमा हर्–र–म रब्बियल् फ़वाहि–श मा ज़–ह–र मिन्हा व मा ब–त–न वल्इस्–म वल्बग्–य बिग़ैरिल् हक़्क़ि व अन् तुश्रिकू बिल्लाहि मा लम् युनज़्ज़िल् बिही सुल्तानंव् व अन् तक़ूलू अ़लल्लाहि मा ला तअ्–लमून(33)व लिकुल्लि उम्मतिन् अ–जलुन् फ़–इज़ा जा–अ अ–जलुहुम् ला यस्तअ्–ख़िरू–न सा–अ़तंव् व ला यस्तक़्दि–मून(34)या बनी आ–द–म इम्मा यअ्तियन्नकुम् रुसुलुम् मिन्कुम् यक़ुस्सू–न अ़लैकुम् आयाती फ़–मनित्तक़ा व अस्ल–ह फ़ला ख़ौफ़ुन् अ़लैहिम् व ला हुम् यह्ज़नून(35)वल्लज़ी–न कज़्ज़बू बिआयातिना

शैतानों को वाली बनाया (फ़ा42) और समझते यह हैं कि वह राह पर हैं(30) ऐ आदम की औलाद अपनी ज़ीनत लो जब मस्जिद में जाओ (फ़ा43) और खाओ और पियो (फ़ा44) और हद से न बढ़ो बेशक हद से बढ़ने वाले उसे पसन्द नहीं(31) (रुकूअ् 10) तुम फ़रमाओ किसने हराम की अल्लाह की वह ज़ीनत जो उसने अपने बन्दों के लिए निकाली (फ़ा45) और पाक रिज़्क़ (फ़ा46) तुम फ़रमाओ कि वह ईमान वालों के लिए है दुनिया में और क़ियामत में तो ख़ास उन्हीं की है हम यूं ही मुफ़स्सल आयतें बयान करते हैं (फ़ा47) इल्म वालों के लिए(32) (फ़ा48) तुम फ़रमाओ मेरे रब ने तो बेहयाइयां हराम फ़रमाई हैं (फ़ा49) जो उनमें खुली हैं और जो छुपी और गुनाह और नाहक़ ज़्यादती और यह (फ़ा50) कि अल्लाह का शरीक करो जिसकी उसने सनद न उतारी और यह (फ़ा51) कि अल्लाह पर वह बात कहो जिसका इल्म नहीं रखते।(33) और हर गरोह का एक वादा है (फ़ा52) तो जब उनका वादा आएगा एक घड़ी न पीछे हो न आगे(34) ऐ आदम की औलाद अगर तुम्हारे पास तुममें के रसूल आयें (फ़ा53) मेरी आयतें पढ़ते तो जो परहेज़गारी करे (फ़ा54) और संवरे (फ़ा55) तो उस पर न कुछ ख़ौफ़ और न कुछ ग़म(35) और जिन्होंने हमारी आयतें झुठलाईं

(फ़ा42) उनकी इताअ़त की उनके कहे पर चले उनके हुक्म से कुफ़्र व मआसी को इख़्तियार किया (फ़ा43) यानी लिबासे ज़ीनत और एक क़ौल यह है कि कंघी करना खुश्बू लगाना दाख़िले ज़ीनत है मसला और सुन्नत यह है कि आदमी बेहतर हय्यत के साथ नमाज़ के लिए हाज़िर हो क्योंकि नमाज़ में रब से मुनाजात है तो उसके लिए ज़ीनत करना इत्र लगाना मुस्तहब जैसा कि सत्रे तहारत वाजिब है शाने नुज़ूल मुस्लिम शरीफ़ की हदीस में है कि ज़मानए जाहलियत में दिन में मर्द और औरतें रात में नंगे होकर तवाफ़ करते थे इस आयत में सत्र छुपाने और कपड़े पहनने का हुक्म दिया गया और इसमें दलील है कि सत्रे औरत नमाज़ व तवाफ़ और हर हाल में वाजिब है (फ़ा44) शाने नुज़ूलः कलबी का क़ौल है कि बनी आ़मिर ज़मानए हज में अपनी खुराक बहुत ही कम कर देते थे और गोश्त और चिकनाई तो बिल्कुल खाते ही न थे और इसको हज की ताज़ीम जानते थे मुसलमानों ने उन्हें देख कर अर्ज़ किया या रसूलल्लाह हमें ऐसा करने का ज़्यादा हक़ है इस पर यह नाज़िल हुआ कि खाओ और पियो गोश्त हो ख़्वाह चिकनाई हो और इसराफ़ न करो और वह यह है कि सैर हो चुकने के बाद भी खाते रहो या हराम की परवाह न करो और यह भी इसराफ़ है कि जो चीज़ अल्लाह तआ़ला ने हराम नहीं की उसको **(बक़िया सफ़हा 267 पर)**

وَاسْتَكْبَرُوْا عَنْهَآ اُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ النَّارِ هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ﴿٣٦﴾ فَمَنْ اَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرٰى عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا اَوْ كَذَّبَ بِاٰيٰتِهٖ اُولٰٓئِكَ يَنَالُهُمْ نَصِيْبُهُمْ
مِّنَ الْكِتٰبِ حَتّٰٓى اِذَا جَآءَتْهُمْ رُسُلُنَا يَتَوَفَّوْنَهُمْ قَالُوْٓا اَيْنَ مَا كُنْتُمْ تَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ قَالُوْا ضَلُّوْا عَنَّا وَشَهِدُوْا عَلٰٓى اَنْفُسِهِمْ اَنَّهُمْ كَانُوْا
كٰفِرِيْنَ ﴿٣٧﴾ قَالَ ادْخُلُوْا فِيْٓ اُمَمٍ قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِكُمْ مِّنَ الْجِنِّ وَالْاِنْسِ فِى النَّارِ كُلَّمَا دَخَلَتْ اُمَّةٌ لَّعَنَتْ اُخْتَهَا حَتّٰٓى اِذَا ادَّارَكُوْا فِيْهَا جَمِيْعًا
قَالَتْ اُخْرٰىهُمْ لِاُوْلٰىهُمْ رَبَّنَا هٰٓؤُلَآءِ اَضَلُّوْنَا فَاٰتِهِمْ عَذَابًا ضِعْفًا مِّنَ النَّارِ قَالَ لِكُلٍّ ضِعْفٌ وَّلٰكِنْ لَّا تَعْلَمُوْنَ ﴿٣٨﴾ وَقَالَتْ اُوْلٰىهُمْ
لِاُخْرٰىهُمْ فَمَا كَانَ لَكُمْ عَلَيْنَا مِنْ فَضْلٍ فَذُوْقُوا الْعَذَابَ بِمَا كُنْتُمْ تَكْسِبُوْنَ ﴿٣٩﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا وَاسْتَكْبَرُوْا عَنْهَا لَا تُفَتَّحُ

वस्तक्बरू अ़न्हा उलाइ-क अस्हाबुन्नारि हुम् फ़ीहा ख़ालिदून(36)फ़-मन् अज़्-लमु मिम्मनिफ़्तरा अ़लल्लाहि क़ज़िबन् औ कज़्ज़-ब बिआयातिही उलाइ-क यनालुहुम् नसीबुहुम् मिनल् किताबि हत्ता इज़ा जा-अत्हुम् रुसुलुना य-त-वफ़्फ़ौ-नहुम् क़ालू ऐ-न मा कुन्तुम् तदअू-न मिन् दूनिल्लाहि क़ालू ज़ल्लू अ़न्ना व शहिदू अ़ला अन्फ़ुसिहिम् अन्नहुम् कानू काफ़िरीन(37) क़ालदखुलू फ़ी उ-ममिन् क़द ख़-लत् मिन् क़ब्लि-कुम् मिनल्जिन्नि वल्-इन्सि फ़िन्नारि कुल्लमा द-ख़-लत् उम्म-तुल् ल-अ़नत् उख़्तहा हत्ता इज़द्दा-रकू फ़ीहा जमीअ़न् क़ालत् उख़्रा-हुम् लि-ऊलाहुम् रब्बना हा-उलाइ अज़ल्लूना फ़आतिहिम् अ़ज़ाबन् ज़िअ़्फ़म् मिनन् नारि क़ा-ल लि-कुल्लिन् ज़िअ़्-फ़ुंव् व लाकिल् ला तअ़्-लमून(38)व क़ालत् ऊलाहुम् लिउख़्राहुम् फ़मा का-न लकुम् अ़लैना मिन् फ़ज़्लिन् फ़ज़ूक़ुल् अ़ज़ा-ब बिमा कुन्तुम् तक्सिबून(39)इन्नल्लज़ी-न कज़्ज़बू बिआयातिना वस्तक्बरू अ़न्हा ला तुफ़त्तहु

और उनके मुक़ाबिल तकब्बुर किया वह दोज़ख़ी हैं उन्हें उसमें हमेशा रहना(36) तो उससे बढ़कर ज़ालिम कौन जिसने अल्लाह पर झूठ बांधा या उसकी आयतें झुठलाईं उन्हें उनके नसीब का लिखा पहुंचेगा (फ़ा56) यहां तक कि जब उनके पास हमारे भेजे हुए (फ़ा57) उनकी जान निकालने आयें तो उनसे कहते हैं कहां हैं वह जिन को तुम अल्लाह के सिवा पूजते थे कहते हैं वह हम से गुम गए (फ़ा58) और अपनी जानों पर आप गवाही देते हैं कि वह काफ़िर थे(37) अल्लाह उनसे (फ़ा59) फ़रमाता है कि तुम से पहले जो और जमाअ़तें जिन्न और आदमियों की आग में गईं उन्हीं में जाओ जब एक गरोह (फ़ा60) दाख़िल होता है दूसरे पर लानत करता है (फ़ा61) यहां तक कि जब सब उसमें जा पड़े तो पिछले पहलों को कहेंगे (फ़ा62) ऐ रब हमारे उन्होंने हमको बहकाया था तू उन्हें आग का दूना अज़ाब दे फ़रमाएगा सबको दूना है (फ़ा63) मगर तुम्हें ख़बर नहीं(38) (फ़ा64) और पहले पिछलों से कहेंगे तो तुम कुछ हमसे अच्छे न रहे (फ़ा65) तो चखो अ़ज़ाब बदला अपने किये का(39) (फ़ा66) (रुकूअ़ 11)वह जिन्होंने हमारी आयतें झुटलाईं और उनके मुक़ाबिल तकब्बुर किया उनके लिए आसमान के

(फ़ा56) यानी जितनी उम्र और रोज़ी अल्लाह ने उनके लिए लिख दी है उनको पहुंचेगी (फ़ा57) मलकुलमौत और उनके अअ़्वान उन लोगों की उम्रें और रोज़ियां पूरी होने के बाद (फ़ा58) उनका कहीं नाम व निशान ही नहीं (फ़ा59) उन काफ़िरों से रोज़े क़ियामत (फ़ा60) दोज़ख़ में (फ़ा61) जो उसके दीन पर था तो मुशरिक मुशरिकों पर लानत करेंगे और यहूद यहूदियों पर और नसारा नसारा पर (फ़ा62) यानी पहलों की निस्बत अल्लाह तआ़ला से कहेंगे (फ़ा63) क्योंकि पहले ख़ुद भी गुमराह हुए और उन्होंने दूसरों को भी गुमराह किया और पिछले भी ऐसे ही हैं कि ख़ुद गुमराह हुए और गुमराहों का ही इत्तेबाअ़ करते रहे (फ़ा64) कि तुम में से हर फ़रीक़ के लिए कैसा अ़ज़ाब है (फ़ा65) कुफ़्र व ज़लाल में दोनों बराबर हैं (फ़ा66) कुफ़्र का और आमाले ख़बीसा का

(बक़िया सफ़हा 245 का) मुकज़्ज़िबीन को मोहलत देता है और अ़ज़ाब में जल्दी नहीं फ़रमाता ताकि उन्हें ईमान लाने का मौक़ा मिले (फ़ा304) अपने वक़्त पर आ ही जाता है (फ़ा305) यह ख़बरे ग़ैब है कि जो बात वह कहने वाले थे वह बात पहले से बयान फ़रमा दी (फ़ा306) हमने जो कुछ किया यह सब अल्लाह की मशीयत से हुआ यह दलील है इसकी कि वह उससे राज़ी है

(बक़िया सफ़हा 248 का) बदी की उतनी ही जज़ा यह अ़द्ल है (फ़ा338) यानी दीने इस्लाम जो अल्लाह को मक़बूल है (फ़ा339) इस में कुफ़्फ़ारे कुरैश का रद है जो गुमान करते थे कि वह दीने इब्राहीमी पर हैं अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया कि हज़रत इब्राही म अ़लैहिस्सलाम मुशरिक व बुत परस्त न थे तो बुत परस्ती करने वाले मुशरिकीन का यह दावा कि वह इब्राहीमी मिल्लत पर हैं बातिल है।

لَهُمْ أَبْوَابُ السَّمَاءِ وَلَا يَدْخُلُونَ الْجَنَّةَ حَتَّىٰ يَلِجَ الْجَمَلُ فِي سَمِّ الْخِيَاطِ ۚ وَكَذَٰلِكَ نَجْزِي الْمُجْرِمِينَ ﴿٤٠﴾ لَهُم مِّن جَهَنَّمَ مِهَادٌ وَمِن فَوْقِهِمْ
غَوَاشٍ ۚ وَكَذَٰلِكَ نَجْزِي الظَّالِمِينَ ﴿٤١﴾ وَالَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ لَا نُكَلِّفُ نَفْسًا إِلَّا وُسْعَهَا أُولَٰئِكَ أَصْحَابُ الْجَنَّةِ ۖ هُمْ فِيهَا خَالِدُونَ ﴿٤٢﴾
وَنَزَعْنَا مَا فِي صُدُورِهِم مِّنْ غِلٍّ تَجْرِي مِن تَحْتِهِمُ الْأَنْهَارُ ۖ وَقَالُوا الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي هَدَانَا لِهَٰذَا وَمَا كُنَّا لِنَهْتَدِيَ لَوْلَا أَنْ هَدَانَا اللَّهُ ۖ
لَقَدْ جَاءَتْ رُسُلُ رَبِّنَا بِالْحَقِّ ۖ وَنُودُوا أَن تِلْكُمُ الْجَنَّةُ أُورِثْتُمُوهَا بِمَا كُنتُمْ تَعْمَلُونَ ﴿٤٣﴾ وَنَادَىٰ أَصْحَابُ الْجَنَّةِ أَصْحَابَ النَّارِ أَن قَدْ
وَجَدْنَا مَا وَعَدَنَا رَبُّنَا حَقًّا فَهَلْ وَجَدتُّم مَّا وَعَدَ رَبُّكُمْ حَقًّا ۖ قَالُوا نَعَمْ ۚ فَأَذَّنَ مُؤَذِّنٌ بَيْنَهُمْ أَن لَّعْنَةُ اللَّهِ عَلَى الظَّالِمِينَ ﴿٤٤﴾ الَّذِينَ

लहुम् अब्वाबुस् समाइ व ला यद्खुलूनल् जन्न–त हत्ता यलिजल् ज–मलु फ़ी सम्मिल्ख़ि–याति व कज़ालि–क नज्ज़िल् मुज्रिमीन(40)लहुम् मिन् जहन्न–म मिहादुंव् व मिन् फ़ौक़िहिम् ग़वाशिन् व कज़ालि–क नज्ज़िज़्ज़ालिमीन(41)वल्लज़ी–न आ–मनू व अ़मिलुस्सालिहाति ला नुकल्लिफ़ु नफ़्सन् इल्ला वुस्–अ़हा उलाइ–क अस्हाबुल्जन्नति हुम् फ़ीहा ख़ालिदून(42)व न–ज़अ्ना मा फ़ी सुदूरिहिम् मिन् ग़िल्लिन् तज्री मिन् तह्तिहिमुल् अन्हारु व क़ालुल्हम्दु लिल्लाहिल्लज़ी हदाना लिहाज़ा व मा कुन्ना लिनह्–तदि–य लौला अन् हदानल्लाहु ल–क़द् जाअत् रुसुलु रब्बिना बिल्हक़्क़ि व नूदू अन् तिल्कुमुल् जन्नतु ऊरिस्तुमूहा बिमा कुन्तुम् तअ्–मलून(43)व नादा अस्हाबुल् जन्नति अस्हा–बन्नारि अन् क़द् व–जद्ना मा व–अ़–दना रब्बुना हक़्क़न् फ़–हल् वजत्तुम् मा व–अ़–द रब्बुकुम् हक़्क़न् क़ालू न–अ़म् फ़–अज़्ज़–न मुअज़्ज़िनुम् बै–नहुम् अल्लअ्–नतुल्लाहि अ़–लज़्–ज़ालिमीन(44)अल्लज़ी–न

दरवाज़े न खोले जायेंगे (फ़ा67)और न वह जन्नत में दाख़िल हों जब तक सुई के नाके ऊंट न दाख़िल हो (फ़ा68) और मुजरिमों को हम ऐसा ही बदला देते हैं(40) (फ़ा69) उन्हें आग ही बिछौना और आग ही ओढ़ना (फ़ा70) और ज़ालिमों को हम ऐसा ही बदला देते हैं।(41) और वह जो ईमान लाए और ताक़त भर अच्छे काम किये हम किसी पर ताक़त से ज़्यादा बोझ नहीं रखते वह जन्नत वाले हैं उन्हें उसमें हमेशा रहना(42) और हमने उनके सीनों में से कीने खींच लिए (फ़ा71) उनके नीचे नहरें बहेंगी और कहेंगे (फ़ा72) सब ख़ूबियां अल्लाह को जिसने हमें इस की राह दिखाई (फ़ा73) और हम राह न पाते अगर अल्लाह न दिखाता बेशक हमारे रब के रसूल हक़ लाए (फ़ा74) और निदा हुई कि यह जन्नत तुम्हें मीरास मिली (फ़ा75) सिला तुम्हारे आमाल का(43) और जन्नत वालों ने दोज़ख़ वालों को पुकारा कि हमें तो मिल गया जो सच्चा वादा हमसे हमारे रब ने किया था (फ़ा76) तो क्या तुमने भी पाया जो तुम्हारे रब ने (फ़ा77) सच्चा वादा तुम्हें दिया था बोले हां और बीच में मुनादी ने पुकार दिया कि अल्लाह की लानत ज़ालिमों पर(44) जो अल्लाह की

(फ़ा67) न उनके आमाल के लिए न उनकी अरवाह के लिए क्योंकि उनके आमाल व अरवाह दोनों ख़बीस हैं हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा ने फ़रमाया कि कुफ़्फ़ार की अरवाह के लिए आसमान के दरवाज़े नहीं खोले जाते और मोमिनीन की अरवाह के लिए खोले जाते हैं इब्ने जुरैज ने कहा कि आसमान के दरवाज़े न काफ़िरों के आमाल के लिए खोले जायें न अरवाह के लिए यानी न ज़िन्दगी में उनका अमल ही आसमान पर जा सकता है न बादे मौत रूह इस आयत की तफ़सीर में एक क़ौल यह भी है कि आसमान के दरवाज़े न खोले जाने के यह माना हैं कि वह ख़ैर व बरकत और रहमत के नुज़ूल से महरूम रहते हैं (फ़ा68) और यह मुहाल तो कुफ़्फ़ार का जन्नत में दाख़िल होना मुहाल क्योंकि मुहाल पर जो मौक़ूफ़ हो वह मुहाल होता है इससे साबित हुआ कि कुफ़्फ़ार का जन्नत से महरूम रहना क़तई है (फ़ा69) मुजरिमीन से यहां कुफ़्फ़ार मुराद हैं क्योंकि ऊपर उनकी सिफ़त में आयाते इलाहिया की तकज़ीब और उनसे तकब्बुर करने का बयान हो चुका है (फ़ा70) यानी ऊपर नीचे हर तरफ़ से आग उन्हें घेरे हुए है। (फ़ा71) जो दुनिया में उनके दर्मियान थे और तबीअ़तें साफ़ कर दी गईं और उनमें आपस में न बाक़ी रही मगर मुहब्बत व मवद्दत हज़रत अ़ली मुर्तज़ा रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने फ़रमाया कि यह हम अहले बद्र के हक़ में नाज़िल हुआ और यह भी आप से मरवी है कि आपने फ़रमाया मुझे उम्मीद है कि मैं और उसमान और तलहा और ज़ुबैर रज़ियल्लाहु अ़न्हुम उन में से हूं जिनके हक़ में अल्लाह तआ़ला ने व न-ज़अ्ना मा फ़ी सुदूरिहिम् मिन् ग़िल्लिन् फ़रमाया हज़रत अ़ली मुर्तज़ा के इस इरशाद ने रफ़्ज़ की बीख़ व बुनियाद का क़िला क़ुमा कर दिया (फ़ा72) मोमिनीन जन्नत में **(बक़िया सफ़हा 267 पर)**

يَصُدُّوْنَ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَيَبْغُوْنَهَا عِوَجًا ۚ وَهُمْ بِالْاٰخِرَةِ كٰفِرُوْنَ ﴿٤٥﴾ وَبَيْنَهُمَا حِجَابٌ ۚ وَعَلَى الْاَعْرَافِ رِجَالٌ يَّعْرِفُوْنَ كُلًّاۢ بِسِيْمٰهُمْ ۚ
وَنَادَوْا اَصْحٰبَ الْجَنَّةِ اَنْ سَلٰمٌ عَلَيْكُمْ ۟ لَمْ يَدْخُلُوْهَا وَهُمْ يَطْمَعُوْنَ ﴿٤٦﴾ وَاِذَا صُرِفَتْ اَبْصَارُهُمْ تِلْقَآءَ اَصْحٰبِ النَّارِ ۙ قَالُوْا رَبَّنَا لَا تَجْعَلْنَا مَعَ
الْقَوْمِ الظّٰلِمِيْنَ ﴿٤٧﴾ وَنَادٰۤى اَصْحٰبُ الْاَعْرَافِ رِجَالًا يَّعْرِفُوْنَهُمْ بِسِيْمٰهُمْ قَالُوْا مَاۤ اَغْنٰى جَمْعُكُمْ وَمَا كُنْتُمْ تَسْتَكْبِرُوْنَ ﴿٤٨﴾ اَهٰۤؤُلَآءِ
الَّذِيْنَ اَقْسَمْتُمْ لَا يَنَالُهُمُ اللّٰهُ بِرَحْمَةٍ ۭ اُدْخُلُوا الْجَنَّةَ لَا خَوْفٌ عَلَيْكُمْ وَلَاۤ اَنْتُمْ تَحْزَنُوْنَ ﴿٤٩﴾ وَنَادٰۤى اَصْحٰبُ النَّارِ اَصْحٰبَ الْجَنَّةِ اَنْ اَفِيْضُوْا
عَلَيْنَا مِنَ الْمَآءِ اَوْ مِمَّا رَزَقَكُمُ اللّٰهُ ۭ قَالُوْۤا اِنَّ اللّٰهَ حَرَّمَهُمَا عَلَى الْكٰفِرِيْنَ ﴿٥٠﴾ الَّذِيْنَ اتَّخَذُوْا دِيْنَهُمْ لَهْوًا وَّلَعِبًا وَّغَرَّتْهُمُ الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا ۚ

यसुद्दू–न अ़न् सबी–लिल्लाहि व यब्ग़ू–नहा अ़ि–व–जन् व हुम् बिल्आख़ि–रति काफ़िरून(45)व बै–नहुमा हिजाबुन् व अ़लल् अअ्राफ़ि रिजालुंय्यअ्रिफ़ू–न कुल्लम् बिसीमाहुम् व नादौ अस्हाबल् जन्नति अन् सलामुन् अ़लैकुम् लम् यद्ख़ुलूहा व हुम् यत्मअ़ू–न(46)व इज़ा सुरिफ़त् अब्सारुहुम् तिल्क़ा–अ अस्हा–बिन्नारि क़ालू रब्बना ला तज्अ़ल्ना म–अ़ल् क़ौमिज़्ज़ालिमीन (47)व नादा अस्हाबुल् अअ्राफ़ि रिजा–लंय्यअ्रिफ़ू–नहुम् बिसीमाहुम् क़ालू मा अग़्ना अ़न्कुम् जम्अ़ुकुम् व मा कुन्तुम् तस्तक्बिरून(48)अहा–उला–इल्लज़ी–न अक़्सम्तुम् ला य–नालुहुमुल्लाहु बिरह्मतिन् उद्ख़ुलुल् जन्न–त ला ख़ौफ़ुन् अ़लैकुम् व ला अन्तुम् तह़्–ज़नून(49)व नादा अस्हाबुन्नारि अस्हाबल् जन्नति अन् अफ़ीज़ू अ़लैना मि–नल्माइ औ मिम्मा र–ज़–क़कु–मुल्लाहु क़ालू इन्नल्ला–ह हर्र–महुमा अ़लल्काफ़िरीन(50)अल्ल–ज़ीनत् त–ख़ज़ू दी–नहुम् लह्वंव् व लअ़िबंव् व ग़र्रत्हुमुल् ह़यातुद्दुन्या

राह से रोकते हैं (फ़ा78) और उसे कजी चाहते हैं (फ़ा79) और आख़िरत का इन्कार रखते हैं(45) और जन्नत व दोज़ख़ के बीच में एक पर्दा है (फ़ा80) और अअ्राफ़ पर कुछ मर्द होंगे (फ़ा81) कि दोनों फ़रीक़ को उनकी पेशानियों से पहचानेंगे (फ़ा82) और वह जन्नतियों को पुकारेंगे कि सलाम तुम पर यह (फ़ा83) जन्नत में न गए और उसकी तमअ़ रखते हैं(46) और जब उनकी (फ़ा84) आंखें दोज़ख़ियों की तरफ़ फिरेंगी कहेंगे ऐ हमारे रब हमें ज़ालिमों के साथ न कर (47) (रुकूअ़ 12) और अअ्राफ़ वाले कुछ मर्दों को (फ़ा85) पुकारेंगे जिन्हें उनकी पेशानी से पहचानते हैं कहेंगे तुम्हें क्या काम आया तुम्हारा जत्था और वह जो तुम ग़ुरूर करते थे(48) (फ़ा86) क्या यह हैं वह लोग (फ़ा87) जिन पर तुम क़समें खाते थे कि अल्लाह उनको अपनी रहमत कुछ न करेगा (फ़ा88) उनसे तो कहा गया कि जन्नत में जाओ न तुमको अन्देशा न कुछ ग़म।(49) और दोज़ख़ी बहिश्तियों को पुकारेंगे कि हमें अपने पानी का कुछ फ़ैज़ दो या उस खाने का जो अल्लाह ने तुम्हें दिया (फ़ा89) कहेंगे बेशक अल्लाह ने उन दोनों को काफ़िरों पर हराम किया है(50) जिन्होंने अपने दीन को खेल तमाशा बना लिया (फ़ा90) और दुनिया की ज़ीस्त ने उन्हें फ़रेब दिया (फ़ा91)

(फ़ा78) और लोगों को इस्लाम में दाख़िल होने से मना करते हैं (फ़ा79) यानी यह चाहते हैं कि दीने इलाही को बदल दें और जो तरीक़ा अल्लाह तआ़ला ने अपने बन्दों के लिए मुक़र्रर फ़रमाया है उसमें तग़य्युर डाल दें (ख़ाज़िन) (फ़ा80) जिसको अअ्राफ़ कहते हैं (फ़ा81) यह किस तबक़ा के होंगे इसमें बहुत मुख़्तलिफ़ अक़्वाल हैं एक क़ौल तो यह है कि यह वह लोग होंगे जिनकी नेकियां और बदियां बराबर हों वह अअ्राफ़ पर ठहरे रहेंगे जब अहले जन्नत की तरफ़ देखेंगे सलाम करेंगे और दोज़ख़ियों की तरफ़ देखें तो कहेंगे या रब हमें ज़ालिम क़ौम के साथ न कर आख़िरकार जन्नत में दाख़िल किये जायेंगे एक क़ौल यह है कि जो लोग जिहाद में शहीद हुए मगर उनके वालिदैन उन से नाराज़ थे वह अअ्राफ़ में ठहराये जायेंगे एक क़ौल यह है कि जो लोग ऐसे हैं कि उनके वालिदैन में से एक उन से राज़ी हो एक नाराज़ वह अअ्राफ़ में रखे जायेंगे इन अक़्वाल से मालूम होता है कि अहले अअ्राफ़ का मर्तबा अहले जन्नत से कम है मुजाहिद का क़ौल यह है अअ्राफ़ में सुलहा फ़ुक़रा उलमा होंगे और उनका वहां क़ियाम इस लिए होगा कि दूसरे उनके फ़ज़्ल व शरफ़ को देखें और एक क़ौल यह है कि अअ्राफ़ में अम्बिया होंगे और वह उस मकाने आ़ली में तमाम अहले क़ियामत पर मुमताज़ किये जायेंगे और उनकी फ़ज़ीलत और रुतबए आ़लिया का इज़्हार किया जाएगा ताकि जन्नती और दोज़ख़ी उनको देखें और वह उन सब के अहवाल और सवाब व अ़ज़ाब के मिक़दार व अहवाल का मुआइना करें और इन क़ौलों पर असहाबे अअ्राफ़ जन्नतियों में से अफ़ज़ल लोग **(बक़िया सफ़हा 267 पर)**

فَالْيَوْمَ نَنْسٰىهُمْ كَمَا نَسُوْا لِقَآءَ يَوْمِهِمْ هٰذَا ۙ وَمَا كَانُوْا بِاٰيٰتِنَا يَجْحَدُوْنَ ۝ وَلَقَدْ جِئْنٰهُمْ بِكِتٰبٍ فَصَّلْنٰهُ عَلٰى عِلْمٍ هُدًى وَّرَحْمَةً لِّقَوْمٍ يُّؤْمِنُوْنَ ۝
هَلْ يَنْظُرُوْنَ اِلَّا تَاْوِيْلَهٗ ؕ يَوْمَ يَاْتِيْ تَاْوِيْلُهٗ يَقُوْلُ الَّذِيْنَ نَسُوْهُ مِنْ قَبْلُ قَدْ جَآءَتْ رُسُلُ رَبِّنَا بِالْحَقِّ ۚ فَهَلْ لَّنَا مِنْ شُفَعَآءَ فَيَشْفَعُوْا
لَنَآ اَوْ نُرَدُّ فَنَعْمَلَ غَيْرَ الَّذِيْ كُنَّا نَعْمَلُ ؕ قَدْ خَسِرُوْۤا اَنْفُسَهُمْ وَضَلَّ عَنْهُمْ مَّا كَانُوْا يَفْتَرُوْنَ ۝ اِنَّ رَبَّكُمُ اللّٰهُ الَّذِيْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ
فِيْ سِتَّةِ اَيَّامٍ ثُمَّ اسْتَوٰى عَلَى الْعَرْشِ ۫ يُغْشِي الَّيْلَ النَّهَارَ يَطْلُبُهٗ حَثِيْثًا ۙ وَّالشَّمْسَ وَالْقَمَرَ وَالنُّجُوْمَ مُسَخَّرٰتٍۭ بِاَمْرِهٖ ؕ اَلَا لَهُ الْخَلْقُ وَالْاَمْرُ ؕ
تَبٰرَكَ اللّٰهُ رَبُّ الْعٰلَمِيْنَ ۝ اُدْعُوْا رَبَّكُمْ تَضَرُّعًا وَّخُفْيَةً ؕ اِنَّهٗ لَا يُحِبُّ الْمُعْتَدِيْنَ ۝ وَلَا تُفْسِدُوْا فِي الْاَرْضِ بَعْدَ اِصْلَاحِهَا وَادْعُوْهُ خَوْفًا

फ़ल्यौ–म नन्साहुम् कमा नसू लिक़ा–अ यौमिहिम् हाज़ा व मा कानू बिआयातिना यज्हदून(51)व ल–क़द् जिअ्नाहुम् बिकिताबिन् फ़स्सल्नाहु अ़ला अ़िल्मिन् हुदंव् व रह्म–तल् लिक़ौमिंय्युअ्मिनून (52)हल् यन्ज़ुरू–न इल्ला तअ्वी–लहू यौ–म यअ्ती तअ्वीलुहू यकू–लुल्लज़ी–न नसूहु मिन् क़ब्लु क़द् जाअत् रुसुलु रब्बिना बिल्हक़्क़ि फ़हल् लना मिन् शु–फ़आ–अ फ़–यश्–फ़अू लना औ नुरद्दु फ़–नअ्–म–ल ग़ैरल्लज़ी कुन्ना नअ्–मलु क़द् ख़सिरू अन्फ़ु–सहुम् व ज़ल्–ल अ़न्हुम् मा कानू यफ़्तरून(53)इन्–न रब्बकुमुल्लाहुल्लज़ी ख़–ल–क़स्समावाति वल्अर्–ज़ फ़ी सित्–तति अय्यामिन् सुम्मस्तवा अ़लल्–अ़र्शि युग़्शिल् लैलन्नहा–र यत्लुबुहू हसीसंव् व वश्शम्–स वल्क़्–म–र वन्नुजू–म मुसख़्ख़रातिम् बिअम्रिही अला लहुल्ख़ल्क़ु वल्अम्रु तबा–र–कल्लाहु रब्बुल् आ–लमीन(54)उदअू रब्बकुम् त–ज़र्रुअंव् व ख़ुफ़्य–तन् इन्नहू ला युहिब्बुल् मुअ्तदीन(55)व ला तुफ़्सिदू फ़िल्अर्ज़ि बअ्–द इस्लाहिहा वदअूहु ख़ौफ़ंव्

तो आज हम उन्हें छोड़ देंगे जैसा उन्होंने इस दिन के मिलने का ख़्याल छोड़ा था और जैसा हमारी आयतों से इन्कार करते थे(51) और बेशक हम उनके पास एक किताब लाये (फ़ा92) जिसे हमने एक बड़े इल्म से मुफ़स्सल किया हिदायत व रहमत ईमान वालों के लिए(52) काहे की राह देखते हैं मगर उसकी कि इस किताब का कहा हुआ अन्जाम सामने आए जिस दिन उसका बताया अंजाम वाक़ेअ़ होगा (फ़ा93) बोल उठेंगे वह जो इसे पहले से भुलाए बैठे थे (फ़ा94) कि बेशक हमारे रब के रसूल हक़ लाए थे, तो हैं कोई हमारे सिफ़ारिशी जो हमारी शफ़ाअ़त करें, या हम वापस भेजे जायें कि पहले कामों के ख़िलाफ़ काम करें (फ़ा95) बेशक उन्होंने अपनी जानें नुक़सान में डालीं और उनसे खोए गए जो बुहतान उठाते थे(53) (फ़ा96) (रुकूअ़ 13) बेशक तुम्हारा रब अल्लाह है जिसने आसमान और ज़मीन (फ़ा97) छः दिन में बनाए (फ़ा98) फिर अ़र्श पर इस्तवा फ़रमाया जैसा उसकी शान के लाइक़ है (फ़ा99) रात दिन को एक दूसरे से ढांकता है कि जल्द उसके पीछे लगा आता है और सूरज और चाँद और तारों को बनाया सब उसके हुक्म के दबे हुए। सुन लो उसी के हाथ है पैदा करना और हुक्म देना बड़ी बरकत वाला है अल्लाह रब सारे जहान का(54) अपने रब से दुआ करो गिड़गिड़ाते और आहिस्ता बेशक हद से बढ़ने वाले उसे पसन्द नहीं(55) (फ़ा100) और ज़मीन में फ़साद न फैलाओ (फ़ा101) उसके संवरने के बाद (फ़ा102) और उससे दुआ करो डरते

(फ़ा92) क़ुरआन शरीफ़ (फ़ा93) और वह रोज़े क़ियामत है (फ़ा94) न उस पर ईमान लाते थे न उसके मुताबिक़ अमल करते थे (फ़ा95) यानी बजाए कुफ़्र के ईमान लायें और बजाए मअ़सियत और नाफ़रमानी के ताअ़त और फ़रमांबरदारी इख़्तियार करें मगर न उन्हें शफ़ाअ़त मुयस्सर आएगी न दुनिया में वापस भेजे जायेंगे (फ़ा96) और झूठ बकते थे कि बुत ख़ुदा के शरीक हैं और अपने पुजारियों की शफ़ाअ़त करेंगे अब आख़िरत में उन्हें मालूम हो गया कि उनके यह दावे झूठे थे (फ़ा97) मअ़ उन तमाम चीज़ों के जो उनके दर्मियान हैं जैसा कि दूसरी आयत में वारिद हुआ व ल-क़द् ख़-लक़्नस्-समावाति वल्-अर्ज़ि व मा बै-नहुमा फ़ी सित्तति अय्याम (फ़ा98) छः दिन से दुनिया के छः दिनों की मिक़्दार मुराद है क्योंकि यह दिन तो उस वक़्त थे नहीं आफ़ताब ही न था जिस से दिन होता और अल्लाह तआ़ला क़ादिर था कि एक लम्हा में या उससे कम में पैदा फ़रमाता लेकिन इतने अ़र्सा में उनकी पैदाइश फ़रमाना ब-तक़ाज़ाए हिकमत है और इससे बन्दों को अपने कामों में तदरीज इख़्तियार करने का सबक़ मिलता है (फ़ा99) यह इस्तेवा मुतशाबेहात में से है हम उस पर ईमान लाते हैं कि अल्लाह की इससे जो मुराद है हक़ है हज़रत इमाम अबू हनीफ़ा रहमतुल्लाह अलैह ने फ़रमाया कि इस्तेवा मालूम है और उसकी कैफ़ियत मजहूल और **(बक़िया सफ़हा 268 पर)**

وَّطَمَعًا ۭ اِنَّ رَحْمَتَ اللّٰهِ قَرِيْبٌ مِّنَ الْمُحْسِنِيْنَ ۝ وَهُوَ الَّذِيْ يُرْسِلُ الرِّيٰحَ بُشْرًاۢ بَيْنَ يَدَيْ رَحْمَتِهٖ ۭ حَتّٰٓى اِذَآ اَقَلَّتْ سَحَابًا ثِقَالًا سُقْنٰهُ

لِبَلَدٍ مَّيِّتٍ فَاَنْزَلْنَا بِهِ الْمَاۗءَ فَاَخْرَجْنَا بِهٖ مِنْ كُلِّ الثَّمَرٰتِ ۭ كَذٰلِكَ نُخْرِجُ الْمَوْتٰى لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُوْنَ ۝ وَالْبَلَدُ الطَّيِّبُ يَخْرُجُ نَبَاتُهٗ

بِاِذْنِ رَبِّهٖ ۚ وَالَّذِيْ خَبُثَ لَا يَخْرُجُ اِلَّا نَكِدًا ۭ كَذٰلِكَ نُصَرِّفُ الْاٰيٰتِ لِقَوْمٍ يَّشْكُرُوْنَ ۝ لَقَدْ اَرْسَلْنَا نُوْحًا اِلٰى قَوْمِهٖ فَقَالَ يٰقَوْمِ

اعْبُدُوا اللّٰهَ مَا لَكُمْ مِّنْ اِلٰهٍ غَيْرُهٗ ۭ اِنِّىْٓ اَخَافُ عَلَيْكُمْ عَذَابَ يَوْمٍ عَظِيْمٍ ۝ قَالَ الْمَلَاُ مِنْ قَوْمِهٖٓ اِنَّا لَنَرٰىكَ فِيْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ۝

قَالَ يٰقَوْمِ لَيْسَ بِيْ ضَلٰلَةٌ وَّلٰكِنِّيْ رَسُوْلٌ مِّنْ رَّبِّ الْعٰلَمِيْنَ ۝ اُبَلِّغُكُمْ رِسٰلٰتِ رَبِّيْ وَاَنْصَحُ لَكُمْ وَاَعْلَمُ مِنَ اللّٰهِ مَا لَا تَعْلَمُوْنَ ۝

व त–म–अन् इन्–न रह़्मतल्लाहि क़रीबुम् मिनल्मुह़्सि–नीन(56)व हुवल्लज़ी युरसिलुर्–रिया–ह़ बुश्रम् बै–न यदै रह़्मतिही ह़त्ता इज़ा अ–क़ल्लत् सह़ाबन् सि–क़ालन् सुक़्नाहु लि–ब–लदिम् मय्यितिन् फ़–अन्ज़ल्ना बिहिल्मा–अ फ़–अख़्रज्ना बिही मिन् कुल्लिस् स–मराति कज़ालि–क नुख़्रिजुल् मौताल–अ़ल्लकुम् त–ज़क्करून(57)वल्ब–लदुत्तय्यिबु यख़्रुजु नबातुहू बिइज़्नि रब्बिही वल्लज़ी ख़बु–स़ ला यख़्रुजु इल्ला नकिदन् कज़ालि–क नुसर्रिफ़ुल् आयाति लिक़ौमिंय्यश्कुरून(58)ल–क़द् अर्सल्ना नूह़न् इला क़ौमिही फ़क़ा–ल या क़ौमिअ़्बुदुल्ला–ह मा लकुम् मिन् इलाहिन् ग़ैरुहू इन्नी अख़ाफ़ु अ़लैकुम् अ़ज़ा–ब यौमिन् अ़ज़ीम(59)क़ालल् म–लउ मिन् क़ौमिही इन्ना ल–नरा–क फ़ी ज़लालिम् मुबीन(60)क़ा–ल याक़ौमि लै–स बी ज़ला–लतुंव् व लाकिन्नी रसूलुम् मिर्रब्बिल् आ़–लमीन(61)उबल्लिग़ुकुम् रिसालाति रब्बी व अन्स़हु लकुम् व अअ़्–लमु मि–नल्लाहि मा ला तअ़्–लमून(62)

और तमअ् करते बेशक अल्लाह की रहमत नेकों से क़रीब है(56) और वही है कि हवायें भेजता है उसकी रहमत के आगे मुज़दह सुनाती (फ़ा103) यहां तक कि जब उठा लायें भारी बादल हमने उसे किसी मुर्दा शहर की तरफ़ चलाया (फ़ा104) फिर उससे पानी उतारा फिर उससे तरह तरह के फल निकाले इसी तरह हम मुर्दों को निकालेंगे (फ़ा105) कहीं तुम नसीहत मानो।(57) और जो अच्छी ज़मीन है उसका सब्ज़ा अल्लाह के हुक्म से निकलता है (फ़ा106) और जो ख़राब है उसमें नहीं निकलता मगर थोड़ा बमुश्किल (फ़ा107) हम यूं ही तरह तरह से आयतें बयान करते हैं (फ़ा108) उनके लिए जो एहसान मानें(58)(रुकूअ् 14) बेशक हमने नूह को उसकी क़ौम की तरफ़ भेजा (फ़ा109) तो उसने कहा ऐ मेरी क़ौम अल्लाह को पूजो (फ़ा110) उसके सिवा तुम्हारा कोई मअ़्बूद नहीं (फ़ा111) बेशक मुझे तुम पर बड़े दिन के अ़ज़ाब का डर है(59) (फ़ा112) उसकी क़ौम के सरदार बोले बेशक हम तुम्हें खुली गुमराही में देखते हैं(60) कहा ऐ मेरी क़ौम मुझमें गुमराही कुछ नहीं मैं तो रब्बुल आ़लमीन का रसूल हूं(61) तुम्हें अपने रब की रिसालतें पहुंचाता और तुम्हारा भला चाहता और मैं अल्लाह की तरफ़ से वह इल्म रखता हूं जो तुम नहीं रखते(62)

(फ़ा103) बारिश का और रहमत से यहां मेंह मुराद है (फ़ा104) जहां बारिश न हुई थी सबुज़ा न जमा था (फ़ा105) यानी जिस तरह मुर्दा ज़मीन को वीरानी के बाद ज़िन्दगी अता फ़रमाता और उसको सर सब्ज़ और शादाब फ़रमाता है और उसमें खेती दरख़्त फल फूल पैदा करता है ऐसे ही मुर्दों को क़ब्र से ज़िन्दा करके उठाएगा क्योंकि जो ख़ुश्क लकड़ी से तरो ताज़ा फल पैदा करने पर क़ादिर है उससे मुर्दों का ज़िन्दा करना क्या बईद है क़ुदरत की यह निशानी देख लेने के बाद आक़िल सलीमुल-हवास को मुर्दों के ज़िन्दा किये जाने में कुछ तरद्दुद बाक़ी नहीं रहता। (फ़ा106) यह मोमिन की मिसाल है जिस तरह उम्दा ज़मीन पानी से नफ़ा पाती है और उसमें फूल फल पैदा होते हैं इसी तरह जब मोमिन के दिल पर क़ुरआनी अनवार की बारिश होती है तो वह उससे नफ़ा पाता है ईमान लाता है ताअ़ात व इबादात से फलता फूलता है (फ़ा107) यह काफ़िर की मिसाल है कि जैसे ख़राब ज़मीन बारिश से नफ़ा नहीं पाती ऐसे ही काफ़िर क़ुरआन पाक से मुन्तफ़अ़ नहीं होता (फ़ा108) जो तौहीद व ईमान पर हुज्जत व बुरहान हैं (फ़ा109) हज़रत नूह अ़लैहिस्सलाम के वालिद का नाम लमक है वह मतोशलख़ के वह अख़्नूख़ अ़लैहिस्सलाम के फ़रज़न्द हैं अख़्नूख़ हज़रत इद्रीस अ़लैहिस्सलातु वस्सलाम का नाम है हज़रत नूह अ़लैहिस्सलातु वस्सलाम चालीस या पचास साल की उम्र में नबुव्वत से सरफ़राज़ फ़रमाए गए आयाते बाला में अल्लाह तआ़ला ने अपने दलाइले क़ुदरत व अ़जाइबे सनअ़त बयान फ़रमाये जिन से उसकी तौहीद व रबूबियत साबित होती है और मरने के बाद उठने **(बक़िया सफ़हा 268 पर)**

اَوَعَجِبْتُمْ اَنْ جَآءَكُمْ ذِكْرٌ مِّنْ رَّبِّكُمْ عَلٰى رَجُلٍ مِّنْكُمْ لِيُنْذِرَكُمْ وَلِتَتَّقُوْا وَلَعَلَّكُمْ تُرْحَمُوْنَ ﴿۶۳﴾ فَكَذَّبُوْهُ فَاَنْجَيْنٰهُ وَالَّذِيْنَ
مَعَهٗ فِى الْفُلْكِ وَاَغْرَقْنَا الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا ؕ اِنَّهُمْ كَانُوْا قَوْمًا عَمِيْنَ ﴿۶۴﴾ وَاِلٰى عَادٍ اَخَاهُمْ هُوْدًا ؕ قَالَ يٰقَوْمِ اعْبُدُوا اللّٰهَ
مَا لَكُمْ مِّنْ اِلٰهٍ غَيْرُهٗ ؕ اَفَلَا تَتَّقُوْنَ ﴿۶۵﴾ قَالَ الْمَلَاُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ قَوْمِهٖۤ اِنَّا لَنَرٰىكَ فِىْ سَفَاهَةٍ وَّاِنَّا لَنَظُنُّكَ مِنَ الْكٰذِبِيْنَ ﴿۶۶﴾ قَالَ
يٰقَوْمِ لَيْسَ بِىْ سَفَاهَةٌ وَّلٰكِنِّىْ رَسُوْلٌ مِّنْ رَّبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿۶۷﴾ اُبَلِّغُكُمْ رِسٰلٰتِ رَبِّىْ وَاَنَا لَكُمْ نَاصِحٌ اَمِيْنٌ ﴿۶۸﴾ اَوَعَجِبْتُمْ اَنْ جَآءَكُمْ
ذِكْرٌ مِّنْ رَّبِّكُمْ عَلٰى رَجُلٍ مِّنْكُمْ لِيُنْذِرَكُمْ ؕ وَاذْكُرُوْۤا اِذْ جَعَلَكُمْ خُلَفَآءَ مِنْۢ بَعْدِ قَوْمِ نُوْحٍ وَّزَادَكُمْ فِى الْخَلْقِ بَصْۜطَةً ۚ فَاذْكُرُوْۤا

अ–व अ़जिब्तुम् अन् जा–अकुम् ज़िक्रुम् मिर्–रब्बिकुम् अ़ला रजुलिम् मिन्कुम् लियुन्ज़ि–रकुम् वलितत्तकू. व ल–अ़ल्लकुम् तुर्–हमून(63)फ़–कज़्ज़बूहु फ़–अन्जैनाहु वल्लज़ी–न म–अ़हू फ़िल्फुल्कि व अग्रक्नल् लज़ी–न कज़्ज़बू बिआयातिना इन्नहुम् कानू क़ौमन् अ़मीन(64)व इला आ़दिन् अख़ाहुम् हूदन् क़ा–ल या क़ौमिअ़्–बुदुल्ला–ह मा लकुम् मिन् इलाहिन् ग़ैरुहू अ–फ़ला तत्तकून(65)क़ालल् म–लउल्लज़ी–न क–फ़रू मिन् क़ौमिही इन्ना ल–नरा–क फ़ी सफ़ा–हतिंव् व इन्ना ल–नजुन्नु–क मिनल् काज़िबीन(66)क़ा–ल या क़ौमि लै–स बी सफ़ा–हतुंव् व लाकिन्नी रसूलुम् मिर्रब्बिल् आ़–लमीन(67)उबल्लिगुकुम् रिसालाति रब्बी व अना लकुम् नासिहुन् अमीन(68)अ–व अ़जिब्तुम् अन् जा–अकुम् ज़िक्रुम् मिर्रब्बिकुम् अ़ला रजुलिम् मिन्कुम् लियुन्ज़ि–रकुम् वज़्कुरू इज़् ज–अ़–लकुम् ख़ु–लफ़ा–अ मिम् बअ़्दि क़ौमि नूहिंव् व ज़ा–दकुम् फ़िल्ख़ल्कि़ बस्त–तन् फ़ज़्कुरू

और क्या तुम्हें इसका अचंभा हुआ कि तुम्हारे पास तुम्हारे रब की तरफ़ से एक नसीहत आई तुम में के एक मर्द की मअ़्रेफ़त (फ़ा113) कि वह तुम्हें डराए और तुम डरो और कहीं तुम पर रहम हो(63) तो उन्होंने उसे (फ़ा114) झुठलाया तो हमने उसे और जो (फ़ा115) उसके साथ कश्ती में थे, नजात दी और अपनी आयतें झुटलाने वालों को डुबो दिया बेशक वह अन्धा गरोह था(64) (फ़ा116) (रुकूअ़् 15) और आ़द की तरफ़ (फ़ा117) उनकी बिरादरी से हूद को भेजा (फ़ा118) कहा ऐ मेरी क़ौम अल्लाह की बन्दगी करो उसके सिवा तुम्हारा कोई मअ़्बूद नहीं तो क्या तुम्हें डर नहीं(65) (फ़ा119) उसकी क़ौम के सरदार बोले बेशक हम तुम्हें बेवक़ूफ़ समझते हैं और बेशक हम तुम्हें झूटों में गुमान करते हैं(66) (फ़ा120) कहा ऐ मेरी क़ौम मुझे बेवकूफ़ी से क्या इलाक़ा मैं तो परवरदिगारे आ़लम का रसूल हूं(67) तुम्हें अपने रब की रिसालतें पहुंचाता हूं और तुम्हारा मोअ़्तमद ख़ैरख़्वाह हूं(68)(फ़ा121) और क्या तुम्हें इसका अचंभा हुआ कि तुम्हारे पास

(फ़ा113) जिसको तुम ख़ूब जानते और उसके नसब को पहचानते हो (फ़ा114) यानी हज़रत नूह अ़लैहिस्सलाम को (फ़ा115) इन पर ईमान लाये (फ़ा116) और जिसे हक़ नज़र न आता था हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा ने फ़रमाया कि उनके दिल अन्धे थे नूरे मअ़्रेफ़त से उनको बहरा न था (फ़ा117) यहां आ़दे ऊला मुराद है यह हज़रत हूद अ़लैहिस्सलाम की क़ौम है और आ़दे सानिया हज़रत सालेह अ़लैहिस्सलाम की क़ौम है इसी को समूद कहते हैं। इन दोनों के दर्मियान सौ बरस का फ़ासला है (जुमल) (फ़ा118) हूद अ़लैहिस्सलाम ने (फ़ा119) अल्लाह के अ़ज़ाब का (फ़ा120) यानी रिसालत के दावा में सच्चा नहीं जानते (फ़ा121) कुफ़्फ़ार का हज़रत हूद अ़लैहिस्सलाम की जनाब में यह गुस्ताख़ाना कलाम कि तुम्हें बेवक़ूफ़ समझते हैं झूठा गुमान करते हैं इन्तेहा दर्जा की बे–अदबी और कमीनगी थी और वह मुस्तहिक़ इस बात के थे कि उन्हें सख़्त तरीन जवाब दिया जाता मगर आपने अपने अख़्लाक़ व आदाब और शाने हिल्म से जो जवाब दिया उसमें शाने मुक़ाबला ही न पैदा होने दी और उनकी जहालत से चश्म पोशी फ़रमाई इससे दुनिया को सबक़ मिलता है कि सुफ़हा और बद ख़िसाल लोगों से इस तरह मुख़ातिबा करना चाहिए मअ़हाज़ा आपने अपनी रिसालत और ख़ैर ख़्वाही व अमानत का ज़िक्र फ़रमाया इससे यह मसला मालूम हुआ कि अहले इल्म व कमाल को ज़रूरत के मौक़ा पर अपने मन्सब व कमाल का इज़्हार जायज़ है।

اَلَآءَ اللّٰهِ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ ۝ قَالُوْٓا اَجِئْتَنَا لِنَعْبُدَ اللّٰهَ وَحْدَهٗ وَنَذَرَ مَا كَانَ يَعْبُدُ اٰبَآؤُنَا ۚ فَاْتِنَا بِمَا تَعِدُنَآ اِنْ كُنْتَ مِنَ الصّٰدِقِيْنَ ۝ قَالَ قَدْ وَقَعَ عَلَيْكُمْ مِّنْ رَّبِّكُمْ رِجْسٌ وَّغَضَبٌ ؕ اَتُجَادِلُوْنَنِيْ فِيْٓ اَسْمَآءٍ سَمَّيْتُمُوْهَآ اَنْتُمْ وَاٰبَآؤُكُمْ مَّا نَزَّلَ اللّٰهُ بِهَا مِنْ سُلْطٰنٍ ؕ فَانْتَظِرُوْٓا اِنِّيْ مَعَكُمْ مِّنَ الْمُنْتَظِرِيْنَ ۝ فَاَنْجَيْنٰهُ وَالَّذِيْنَ مَعَهٗ بِرَحْمَةٍ مِّنَّا وَقَطَعْنَا دَابِرَ الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا وَمَا كَانُوْا مُؤْمِنِيْنَ ۝ وَاِلٰى ثَمُوْدَ اَخَاهُمْ صٰلِحًا ۘ قَالَ يٰقَوْمِ اعْبُدُوا اللّٰهَ مَا لَكُمْ مِّنْ اِلٰهٍ غَيْرُهٗ ؕ قَدْ جَآءَتْكُمْ بَيِّنَةٌ مِّنْ رَّبِّكُمْ ؕ هٰذِهٖ نَاقَةُ اللّٰهِ لَكُمْ اٰيَةً فَذَرُوْهَا تَاْكُلْ فِيْٓ اَرْضِ اللّٰهِ وَلَا تَمَسُّوْهَا بِسُوْٓءٍ فَيَاْخُذَكُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ۝ وَاذْكُرُوْٓا اِذْ جَعَلَكُمْ خُلَفَآءَ مِنْۢ بَعْدِ عَادٍ

आलाअल्लाहि ल–अ़ल्लकुम् तुफ़्लिहू.न(69)क़ालू अजिअ्–तना लिनअ्बुदल्ला–ह वह्–दहू व न–ज़–र मा का–न यअ्बुदु आबाउना फ़अ्तिना बिमा तअिदुना इन् कुन्–त मिनस्सादिक़ीन (70)क़ा–ल क़द् व–क़–अ़ अ़लैकुम् मिर्रब्बिकुम् रिज्सुंव् व ग़–ज़बुन् अतुजादिलू–ननी फ़ी अस्माइन् सम्मैतुमूहा अन्तुम् व आबाउकुम् मा नज़्ज़लल्लाहु बिहा मिन् सुल्तानिन् फ़न्तज़िरू इन्नी म–अ़कुम् मिनल् मुन्तज़िरीन(71)फ़–अन्जैनाहु वल्लज़ी–न म–अ़हू बि–रह्मतिम् मिन्ना व क़–तअ्ना दाबिरल्लजी–न कज्जबू बिआयातिना व मा कानू मुअ्मिनीन(72)व इला समू–द अख़ाहुम् सालिहन् क़ा–ल या क़ौमिअ्बुदुल्ला–ह मा लकुम् मिन् इलाहिन् ग़ैरुहू क़द् जा–अत्कुम् बय्यि–नतुम् मिर्रब्बिकुम् हाज़िही ना–क़तुल्लाहि लकुम् आ–यतन् फ़–ज़रूहा तअ्कुल्फ़ी अर्–ज़िल्लाहि व ला त–मस्सूहा बिसूइन् फ़यअ्ख़ु–ज़कुम् अ़ज़ाबुन् अलीम(73)वज़्कुरू इज़् ज–अ़–लकुम् ख़ु–लफ़ा–अ मिम् बअ्दि आ़दिंव्

तुम्हारे रब की तरफ़ से एक नसीहत आई तुम में के एक मर्द की मअ्रेफ़त कि वह तुम्हें डराए और याद करो जब उसने तुम्हें क़ौमे नूह का जा–नशीन किया (फ़ा122) और तुम्हारे बदन का फैलाव बढ़ाया (फ़ा123) तो अल्लाह की नेअ्मतें याद करो (फ़ा124) कि कहीं तुम्हारा भला हो(69) बोले क्या तुम हमारे पास इसलिए आए हो (फ़ा125) कि हम एक अल्लाह को पूजें और जो (फ़ा126) हमारे बाप दादा पूजते थे उन्हें छोड़ दें तो लाओ (फ़ा127) जिसका हमें वादा दे रहे हो अगर सच्चे हो।(70) कहा (फ़ा128) ज़रूर तुम पर तुम्हारे रब का अ़ज़ाब और ग़ज़ब पड़ गया (फ़ा129) क्या मुझ से ख़ाली उन नामों में झगड़ रहे हो जो तुमने और तुम्हारे बाप दादा ने रख लिये (फ़ा130) अल्लाह ने उनकी कोई सनद न उतारी तो रास्ता देखो (फ़ा131) मैं भी तुम्हारे साथ देखता हूं (71) तो हमने उसे और उसके साथ वालों को (फ़ा132) अपनी एक बड़ी रहमत फ़रमा कर नजात दी (फ़ा133) और जो हमारी आयतें झुठलाते (फ़ा134) थे उनकी जड़ काट दी (फ़ा135) और वह ईमान वाले न थे(72) (रुकूअ् 16) और समूद की तरफ़ (फ़ा136) उनकी बिरादरी से सालेह को भेजा कहा ऐ मेरी क़ौम अल्लाह को पूजो उसके सिवा तुम्हारा कोई मअ्बूद नहीं बेशक तुम्हारे पास तुम्हारे रब की तरफ़ से (फ़ा137) रौशन दलील आई (फ़ा138) यह अल्लाह का नाक़ा है (फ़ा139) तुम्हारे लिए निशानी तो इसे छोड़ दो कि अल्लाह की ज़मीन में खाए और इसे बुराई से हाथ न लगाओ (फ़ा140) कि तुम्हें दर्दनाक अ़ज़ाब आएगा(73) और याद करो (फ़ा141) जब तुम को आ़द का जा–नशीन किया

(फ़ा122) यह उसका कितना बड़ा एहसान है (फ़ा123) और बहुत ज़्यादा कुव्वत व तूले क़ामत इनायत किया (फ़ा124) और ऐसे मुनइम पर ईमान लाओ और ताआ़त व इबादात बजा लाकर उसके एहसान की शुक्र गुज़ारी करो (फ़ा125) यानी अपने इबादत ख़ाना से हज़रत हूद अ़लैहिस्सलाम अपनी क़ौम की बस्ती से अलाहिदा एक तन्हाई के मकाम में इबादत किया करते थे जब आपके पास वही आती तो क़ौम के पास आकर सुना देते (फ़ा126) बुत (फ़ा127) वह अ़ज़ाब। (फ़ा128) हज़रत हूद अ़लैहिस्सलाम ने (फ़ा129) और तुम्हारी सरकशी से तुम पर अ़ज़ाब आना वाजिब व लाज़िम हो गया (फ़ा130) और उन्हें पूजने लगे और मअ्बूद मानने लगे बावजूदेकि उनकी कुछ हक़ीक़त ही नहीं है और उलूहियत के माना से क़तअ़न ख़ाली व आ़री हैं (फ़ा131) अ़ज़ाबे इलाही का (फ़ा132) जो उनके मुत्तबेअ् थे और उन पर ईमान लाये थे (फ़ा133) उस अ़ज़ाब से जो क़ौमे हूद पर उतरा (फ़ा134) और हज़रत हूद अ़लैहिस्सलाम की तकज़ीब करते (फ़ा135) और इस तरह हलाक कर दिया कि उनमें एक भी न बचा मुख़्तसर वाक़िआ़ यह है कि क़ौमे आ़द अहक़ाफ़ में रहती थी जो अ़मान व हज़र मौत के दर्मियान इलाक़ा **(बक़िया सफ़हा 265 पर)**

وَبَوَّاَكُمْ فِی الْاَرْضِ تَتَّخِذُوْنَ مِنْ سُهُوْلِهَا قُصُوْرًا وَّتَنْحِتُوْنَ الْجِبَالَ بُيُوْتًا ۚ فَاذْكُرُوْٓا اٰلَآءَ اللّٰهِ وَلَا تَعْثَوْا فِی الْاَرْضِ مُفْسِدِيْنَ ۝

قَالَ الْمَلَاُ الَّذِيْنَ اسْتَكْبَرُوْا مِنْ قَوْمِهٖ لِلَّذِيْنَ اسْتُضْعِفُوْا لِمَنْ اٰمَنَ مِنْهُمْ اَتَعْلَمُوْنَ اَنَّ صٰلِحًا مُّرْسَلٌ مِّنْ رَّبِّهٖ ؕ قَالُوْٓا اِنَّا بِمَآ اُرْسِلَ

بِهٖ مُؤْمِنُوْنَ ۝ قَالَ الَّذِيْنَ اسْتَكْبَرُوْٓا اِنَّا بِالَّذِیْٓ اٰمَنْتُمْ بِهٖ كٰفِرُوْنَ ۝ فَعَقَرُوا النَّاقَةَ وَعَتَوْا عَنْ اَمْرِ رَبِّهِمْ وَقَالُوْا يٰصٰلِحُ ائْتِنَا بِمَا تَعِدُنَآ

اِنْ كُنْتَ مِنَ الْمُرْسَلِيْنَ ۝ فَاَخَذَتْهُمُ الرَّجْفَةُ فَاَصْبَحُوْا فِیْ دَارِهِمْ جٰثِمِيْنَ ۝ فَتَوَلّٰی عَنْهُمْ وَقَالَ يٰقَوْمِ لَقَدْ اَبْلَغْتُكُمْ رِسَالَةَ رَبِّیْ وَنَصَحْتُ

لَكُمْ وَلٰكِنْ لَّا تُحِبُّوْنَ النّٰصِحِيْنَ ۝ وَلُوْطًا اِذْ قَالَ لِقَوْمِهٖٓ اَتَاْتُوْنَ الْفَاحِشَةَ مَا سَبَقَكُمْ بِهَا مِنْ اَحَدٍ مِّنَ الْعٰلَمِيْنَ ۝ اِنَّكُمْ لَتَاْتُوْنَ

व बव्व–अकुम् फ़िल्अर्ज़ि तत्तख़िज़ू–न मिन् सुहूलिहा क़ुसूरंव व तन्हितूनल् जिबा–ल बुयूतन् फ़ज़्कुरू आला–अल्लाहि व ला तअ्सौ फ़िल्अर्ज़ि मुफ़्सिदीन(74)क़ालल्म–लउल् लज़ीनस्तक्बरू मिन् क़ौमिही लिल्लज़ीनस्तुज़्अिफ़ू. लिमन् आ–म–न मिन्हुम् अतअ्–लमू–न अन्–न सालिहम् मुर्–सलुम् मिर्रब्बिही क़ालू इन्ना बिमा उर्सि–ल बिही मुअ्मिनून(75)क़ालल्लज़ी–नस्तक्बरू इन्ना बिल्लज़ी आमन्तुम् बिही काफ़िरून(76)फ़–अ–क़रुन् ना–क़–त व अतौ अन् अम्रि रब्बिहिम् व क़ालू यासालिहुअ्तिना बिमा तअिदुना इन् कुन्–त मिनल् मुर्–सलीन(77) फ़–अ–ख़–ज़त्हुमुर रज्फ़तु फ़–अस्बहू. फ़ी दारिहिम् जासिमीन(78)फ़–त–वल्ला अन्हुम् व क़ा–ल या क़ौमि ल–क़द् अब्लग़्तुकुम् रिसा–ल–त रब्बी व नसह्तु लकुम् व लाकिल् ला तुहिब्बूनन् नासिहीन(79)व लूतन् इज़् क़ा–ल लिक़ौमिही अ–तअ्तूनल् फ़ाहि–श–त मा स–ब–क़कुम् बिहा मिन् अ–हदिम् मिनल् आ–लमीन(80)इन्नकुम् ल–तअ्तूनर

और मुल्क में जगह दी कि नर्म ज़मीन में महल बनाते हो (फ़ा142) और पहाड़ों में मकान तराशते हो (फ़ा143) तो अल्लाह की नेअ्मतें याद करो (फ़ा144) और ज़मीन में फ़साद मचाते न फिरो(74) उसकी क़ौम के तकब्बुर वाले कमज़ोर मुसलमानों से बोले क्या तुम जानते हो कि सालेह़ अपने रब के रसूल हैं, बोले वह जो कुछ लेकर भेजे गए हम उस पर ईमान रखते हैं(75) (फ़ा145) मुतकब्बिर बोले जिस पर तुम ईमान लाए हमें उससे इन्कार है(76)पस (फ़ा146) नाक़ा की कूचें काट दीं और अपने रब के हुक्म से सरकशी की और बोले ऐ सालेह़ हम पर ले आओ (फ़ा147) जिस का तुम वादा दे रहे हो अगर तुम रसूल हो(77) तो उन्हें ज़लज़ला ने आ लिया तो सुबह को अपने घरों में औंधे पड़े रह गए। तो सालेह़ ने उनसे मुंह फेरा(78) (फ़ा148) और कहा ऐ मेरी क़ौम बेशक मैं ने तुम्हें अपने रब की रिसालत पहुंचा दी और तुम्हारा भला चाहा मगर तुम ख़ैरख़्वाहों के ग़र्ज़ी (पसन्द करने वाले) ही नहीं (79) और लूत को भेजा (फ़ा149) जब उसने अपनी क़ौम से कहा क्या वह बेहयाई करते हो जो तुम से पहले जहान में किसी ने न की(80) तुम तो मर्दों के पास

(फ़ा142) मौसमे गरमा में आराम करने के लिए (फ़ा143) मौसमे सरमा के लिए (फ़ा144) और उसका शुक्र बजा लाओ (फ़ा145) उनके दीन को क़बूल करते हैं उनकी रिसालत को मानते हैं (फ़ा146) क़ौमे समूद ने (फ़ा147) वह अ़ज़ाब। (फ़ा148) जब कि उन्होंने सरकशी की मन्क़ूल है कि उन लोगों ने चहार शम्बा को नाक़ा की कूँचें काटी थीं तो हज़रत सालेह अ़लैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि तुम इसके बाद तीन रोज़ ज़िन्दा रहोगे पहले रोज़ तुम्हारे सब के चेहरे ज़र्द हो जायेंगे दूसरे रोज़ सुर्ख़ तीसरे रोज़ सियाह चौथे रोज़ अ़ज़ाब आएगा चुनान्चे ऐसा ही हुआ और यक-शम्बा को दोपहर के क़रीब आसमान से एक हौलनाक आवाज़ आई जिस से उन लोगों के दिल फट गए और सब हलाक होगए (फ़ा149) जो हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम के भतीजे हैं आप अहले सदूम की तरफ़ भेजे गए और जब आपके चचा हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम ने शाम की तरफ़ हिजरत की तो हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम ने सर-ज़मीने फ़लस्तीन में नुज़ूल फ़रमाया और हज़रत लूत अ़लैहिस्सलाम उर्दुन में उतरे अल्लाह तआ़ला ने आपको अहले सदूम की तरफ़ मबऊस किया आप उन लोगों को दीने हक़ की दावत देते थे और फ़ेअ्ले बद से रोकते थे जैसा कि आयत शरीफ़ में ज़िक्र आता है।

الرِّجَالَ شَهْوَةً مِّنْ دُوْنِ النِّسَاۤءِ ۭ بَلْ اَنْتُمْ قَوْمٌ مُّسْرِفُوْنَ ﴿۸۱﴾ وَمَا كَانَ جَوَابَ قَوْمِهٖۤ اِلَّاۤ اَنْ قَالُوْۤا اَخْرِجُوْهُمْ مِّنْ قَرْيَتِكُمْ ۚ اِنَّهُمْ اُنَاسٌ يَّتَطَهَّرُوْنَ ﴿۸۲﴾

فَاَنْجَيْنٰهُ وَاَهْلَهٗۤ اِلَّا امْرَاَتَهٗ ۖ كَانَتْ مِنَ الْغٰبِرِيْنَ ﴿۸۳﴾ وَاَمْطَرْنَا عَلَيْهِمْ مَّطَرًا ۭ فَانْظُرْ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُجْرِمِيْنَ ﴿۸۴﴾ وَاِلٰى مَدْيَنَ اَخَاهُمْ شُعَيْبًا ۭ قَالَ

يٰقَوْمِ اعْبُدُوا اللّٰهَ مَا لَكُمْ مِّنْ اِلٰهٍ غَيْرُهٗ ۭ قَدْ جَاۤءَتْكُمْ بَيِّنَةٌ مِّنْ رَّبِّكُمْ فَاَوْفُوا الْكَيْلَ وَالْمِيْزَانَ وَلَا تَبْخَسُوا النَّاسَ اَشْيَاۤءَهُمْ وَلَا تُفْسِدُوْا

فِي الْاَرْضِ بَعْدَ اِصْلَاحِهَا ۭ ذٰلِكُمْ خَيْرٌ لَّكُمْ اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ﴿۸۵﴾ وَلَا تَقْعُدُوْا بِكُلِّ صِرَاطٍ تُوْعِدُوْنَ وَتَصُدُّوْنَ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ

مَنْ اٰمَنَ بِهٖ وَتَبْغُوْنَهَا عِوَجًا ۚ وَاذْكُرُوْۤا اِذْ كُنْتُمْ قَلِيْلًا فَكَثَّرَكُمْ ۠ وَانْظُرُوْا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُفْسِدِيْنَ ﴿۸۶﴾ وَاِنْ كَانَ طَاۤىِٕفَةٌ مِّنْكُمْ

اٰمَنُوْا بِالَّذِيْۤ اُرْسِلْتُ بِهٖ وَطَاۤىِٕفَةٌ لَّمْ يُؤْمِنُوْا فَاصْبِرُوْا حَتّٰى يَحْكُمَ اللّٰهُ بَيْنَنَا ۚ وَهُوَ خَيْرُ الْحٰكِمِيْنَ ﴿۸۷﴾

रिजा–लशह्व–तम् मिन् दूनिन् निसाइ बल् अन्तुम् क़ौमुम् मुस्रिफ़ून(81)व मा का–न जवा–ब क़ौमिही इल्ला अन् क़ालू अख़्रिजू–हुम् मिन् क़र्–यतिकुम् इन्नहुम् उनासुंय्य–त–तह्हरून(82)फ़–अन्जैनाहु व अह्लहू इल्लम्–र–अ–तहू कानत् मिनल् ग़ाबिरीन(83)व अम्तर्ना अ़लैहिम् म–त–रन् फ़न्ज़ुर् कै–फ़ का–न आ़क़ि–बतुल् मुज्रिमीन(84)व इला मद्य–न अख़ाहुम् शुअ़ैबन् क़ा–ल या क़ौमि–अ़्बुदुल्ला–ह मा लकुम् मिन् इलाहिन् ग़ैरुहू क़द् जा–अत्कुम् बय्यि–नतुम् मिर्रब्बिकुम् फ़औ–फ़ुल्कै–ल वल्मीज़ा–न व ला तब्–ख़सुन्ना–स अश्या–अहुम् व ला तुफ़्सिदू फ़िल्अर्ज़ि बअ्–द इस्ला–हिहा ज़ालिकुम् ख़ैरुल् लकुम् इन् कुन्तुम् मुअ्मिनीन(85)व ला तक़्अुदू बिकुल्लि सिरातिन् तूअिदू–न व तसुद्दू–न अ़न् सबीलिल्लाहि मन् आ–म–न बिही व तब्ग़ू–नहा अ़ि–व–जन् वज़्कुरू इज़् कुन्तुम् क़लीलन् फ़–क़स्स–रकुम् वन्ज़ुरू कै–फ़ का–न आ़क़ि–बतुल् मुफ़्सिदीन(86)व इन् का–न ताइ–फ़तुम् मिन्कुम् आ–मनू बिल्लज़ी उर्सिल्तु बिही व ताइ–फ़तुल् लम् युअ्मिनू फ़स्बिरू हत्ता यह्कुमल्लाहु बै–नना व हु–व ख़ैरुल् हाकिमीन(87)

शह्वत से जाते हो (फ़ा150) औरतें छोड़ कर, बल्कि तुम लोग हद से गुज़र गए(81) (फ़ा151) और उसकी क़ौम का कुछ जवाब न था मगर यही कहना कि (फ़ा152) उनको अपनी बस्ती से निकाल दो यह लोग तो पाकीज़गी चाहते हैं (82) (फ़ा153) तो हमने उसे (फ़ा154) और उसके घर वालों को नजात दी मगर उसकी औरत वह रह जाने वालों में हुई(83) (फ़ा155) और हमने उन पर एक मेंह बरसाया (फ़ा156) तो देखो कैसा अन्जाम हुआ मुजरिमों का(84) (फ़ा157) (रुकूअ़ 17) और मदयन की तरफ़ उनकी बिरादरी से शुएब को भेजा (फ़ा158) कहा ऐ मेरी क़ौम अल्लाह की इबादत करो उसके सिवा तुम्हारा कोई मअ़बूद नहीं बेशक तुम्हारे पास तुम्हारे रब की तरफ़ से रौशन दलील आई (फ़ा159) तो नाप और तौल पूरी करो और लोगों की चीज़ें घटाकर न दो (फ़ा160) और ज़मीन में इन्तेज़ाम के बाद फ़साद न फैलाओ यह तुम्हारा भला है अगर ईमान लाओ(85) और हर रास्ते पर यूं न बैठो कि राहगीरों को डराओ और अल्लाह की राह से उन्हें रोको (फ़ा161) जो उस पर ईमान लाए और उसमें कजी चाहो और याद करो जब तुम थोड़े थे, उसने तुम्हें बढ़ा दिया (फ़ा162) और देखो (फ़ा163) फ़सादियों का कैसा अन्जाम हुआ(86) और अगर तुम में एक गरोह उस पर ईमान लाया जो मैं लेकर भेजा गया और एक गरोह ने न माना (फ़ा164) तो ठहरे रहो यहां तक कि अल्लाह हम में फ़ैसला करे (फ़ा165) और अल्लाह का फ़ैसला सब से बेहतर।(87)(फ़ा166)

(फ़ा150) यानी उनके साथ बद-फ़ेअ़्ली करते हो (फ़ा151) कि हलाल को छोड़ कर हराम में मुबतला हुए और ऐसे ख़बीस फ़ेअ़्ल का इरतेकाब किया इंसान को शहवत बक़ाए नस्ल और दुनिया की आबादी के लिए दी गई और औरतें महले शहवत व मौज़अ़े नस्ल बनाई गई हैं कि उन से बतरीक़ए मअ़रूफ़ हस्बे इजाज़ते शरअ़् औलाद हासिल की जाये जब आदमियों ने औरतों को छोड़ कर उनका काम मर्दों से लेना चाहा तो वह हद से गुज़र गए और उन्होंने इस कुव्वत के मक़सदे सही को फ़ौत कर दिया क्योंकि मर्द को न हमल रहता है न वह बच्चा जनता है तो उसके साथ मश्ग़ूल होना सिवाए शैतानियत के और क्या है उलमाए सियर व अख़्बार का बयान है कि क़ौमे लूत की बस्तियां निहायत सर सब्ज़ व शादाब थीं और वहां ग़ल्ले **(बक़िया सफ़हा 264 पर)**

(बक़िया सफ़्हा 240 का) दूसरे के हुक्म को मानना अल्लाह के सिवा और को हाकिम क़रार देना शिर्क है (फ़ा243) मुर्दा से काफ़िर और ज़िन्दा से मोमिन मुराद है क्योंकि कुफ़्र क़ुलूब के लिए मौत है और ईमान हयात (फ़ा244) नूर से ईमान मुराद है जिसकी बदौलत आदमी कुफ़्र की तारीकियों से नजात पाता है क़तादा का क़ौल है कि नूर से किताबुल्लाह यानी क़ुरआन मुराद है (फ़ा245) और बीनाई हासिल करके राहे हक़ का इम्तियाज़ कर लेता है (फ़ा246) कुफ़्र व जहल वतीरए बातिनी की यह एक मिसाल है जिसमें मोमिन व काफ़िर का हाल बयान फ़रमाया गया है कि हिदायत पाने वाला मोमिन उस मुर्दा की तरह है जिसने ज़िन्दगानी पाई और उस को नूर मिला जिससे वह मक़्सूद की राह पाता है और काफ़िर उसकी मिस्ल है जो तरह तरह की अंधेरियों में गिरिफ़्तार हुआ और उन से निकल न सके हमेशा हैरत में मुबतला रहे यह दोनों मिसालें हर मोमिन व काफ़िर के लिए आम हैं अगरचे बक़ौल हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा उनकी शाने नुज़ूल यह है कि अबू जहल ने एक रोज़ सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम पर कोई नजिस चीज़ फेंकी थी उस रोज़ हज़रत अमीर हमज़ा रज़ियल्लाहु अ़न्हु शिकार को गए हुए थे जिस वक़्त वह हाथ में कमान लिए हुए शिकार से वापस आये तो उन्हें इस वाक़िआ की ख़बर दी गई गो अभी तक वह ईमान से मुशर्रफ़ न हुए थे मगर यह ख़बर सुनकर उनको निहायत तैश आया और वह अबू जहल पर चढ़ गए और उसको कमान से मारने लगे और अबू जहल आ़जिज़ी व ख़ुशामद करने लगा और कहने लगा ऐ अबू युअ़्ला (हज़रत अमीर हमज़ा की कुन्नियत है) क्या आपने नहीं देखा कि मुहम्मद (मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) कैसा दीन लाये और उन्होंने हमारे मअ़्बूदों को बुरा कहा और हमारे बाप दादा की मुख़ालफ़त की और हमें बद-अक़्ल बताया उस पर हज़रत अमीर हमज़ा ने फ़रमाया तुम्हारे बराबर बद अक़्ल कौन हे कि अल्लाह को छोड़ कर पत्थरों को पूजते हो मैं गवाही देता हूं कि अल्लाह के सिवा कोई मअ़्बूद नहीं और मैं गवाही देता हूं कि मुहम्मद मुस्तफ़ा (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) अल्लाह के रसूल हैं, उसी वक़्त हज़रत अमीर हमज़ा इस्लाम ले आए इस पर यह आयते करीमा नाज़िल हुई तो हज़रत अमीर हमज़ा का हाल उसके मुशाबह है जो मुर्दा था ईमान न रखता था अल्लाह तआ़ला ने उसको ज़िन्दा किया और नूरे बातिन अता फ़रमाया और अबू जहल की शान यही है कि वह कुफ़्र व जहल की तारीकियों में गिरिफ़्तार रहे और

(बक़िया सफ़्हा 243 का) का जहल और अ़ज़ीम ख़ता व ज़लाल है उसके बाद उनके जहल व ज़लालत की एक और हालत ज़िक्र फ़रमाई जाती है (फ़ा273) यहां शरीकों से मुराद वह शयातीन हैं जिनकी इताअ़त के शौक़ में मुश्रिकीन अल्लाह तआ़ला की नाफ़रमानी और उसकी मअ़्सियत गवारा करते थे और ऐसे क़बाएह अफ़आ़ल और जाहिलाना अफ़आ़ल के मुर्तकिब होते थे जिनको अक़्ले सही कभी गवारा न कर सके और जिनकी क़बाहत में अदना समझ के आदमी को भी तरद्दुद न हो बुत परस्ती की शामत से वह ऐसे फ़सादे अक़्ल में मुबतला हुए कि हैवानों से बदतर हो गए और औलाद जिसके साथ हर जानदार को फ़ितरतन मुहब्बत होती है शयातीन के इत्तेबाअ़् में उसका बे गुनाह ख़ून करना उन्होंने गवारा किया और उसको अच्छा समझने लगे (फ़ा274) हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा ने फ़रमाया कि यह लोग पहले हज़रत इस्माईल अ़लैहिस्सलाम के दीन पर थे शयातीन ने उनको इग़वा करके इन गुमराहियों में डाला ताकि उन्हें दीने इस्माईली से मुनहरिफ़ करे। (फ़ा275) मुश्रिकीन अपने बाज़ मवेशियों और खेतों को अपने बातिल मअ़्बूदों के साथ नामज़द करके कि (फ़ा276) ममनूउल इन्तेफ़ाअ़् (फ़ा277) यानी बुतों की ख़िदमत करने वाले वग़ैरह (फ़ा278) जिनको बहीरा साइबा हामी कहते हैं (फ़ा279) बल्कि उनको बुतों के नाम पर ज़बह करते हैं और उन तमाम अफ़आ़ल की निस्बत यह ख़्याल करते हैं कि उन्हें अल्लाह ने इसका हुक्म दिया है (फ़ा280) सिर्फ़ उन्हीं के लिए हलाल है अगर ज़िन्दा पैदा हो (फ़ा281) मर्द व औरत

(बक़िया सफ़्हा 263 का)और फल बकसरत पैदा होते थे ज़मीन का दूसरा ख़ित्ता इस का मिस्ल न था इसलिए जा बजा से लोग यहां आते थे और उन्हें परेशान करते थे ऐसे वक़्त में इबलीस लईन एक बूढ़े की सूरत में नमूदार हुआ और उनसे कहने लगा कि अगर तुम मेहमानों की इस कसरत से नजात चाहते हो जब वह लोग आयें तो उनके साथ बद फ़ेअ़ली करो इस तरह यह फ़ेअ़्ले बद उन्होंने शैतान से सीखा और उनमें राइज हुआ। (फ़ा152) यानी हज़रत लूत और उनके मुत्तबेईन (फ़ा153) और पाकीज़गी ही अच्छी होती है वही क़ाबिले मदह है लेकिन उस क़ौम का ज़ौक़ इतना ख़राब हो गया था कि उन्होंने इस सिफ़ते मदह को ऐब क़रार दिया (फ़ा154) यानी हज़रत लूत अ़लैहिस्सलाम को (फ़ा155) वह काफ़िरा थी और उस क़ौम से मुहब्बत रखती थी (फ़ा156) अ़जीब तरह का जिसमें ऐसे पत्थर बरसे कि गन्धक और आग से मुरक्कब थे एक क़ौल यह है कि बस्ती में रहने वाले जो वहां मुक़ीम थे वह तो ज़मीन में धंसा दिये गए और जो सफ़र में थे वह उस बारिश से हलाक किये गए (फ़ा157) मुजाहिद ने कहा कि हज़रत जिबरील अ़लैहिस्सलाम नाज़िल हुए और उन्होंने अपना बाज़ू क़ौमे लूत की बस्तियों के नीचे डाल कर उस ख़ित्ता को उखाड़ लिया और आसमान के क़रीब पहुंच कर उसको औंधा करके गिरा दिया उसके बाद पत्थरों की बारिश की गई (फ़ा158) हज़रत शोऐब अ़लैहिस्सलाम ने (फ़ा159) जिस से मेरी नबुव्वत व रिसालत यक़ीनी तौर पर साबित होती है इस दलील से मोअ़्जेज़ा मुराद है (फ़ा160) उनके हक़ दियानतदारी के साथ पूरे पूरे अदा करो (फ़ा161) और दीन का इत्तेबाअ़् करने में लोगों के लिए सद्दे राह न बनो (फ़ा162) तुम्हारी तादाद ज़्यादा कर दी तो उसकी नेअ़्मत का शुक्र करो और ईमान लाओ (फ़ा163) ब-निगाहे इबरत पिछली उम्मतों के अहवाल और गुज़रे हुए ज़मानों में सरकशी करने वालों के अंजाम व मआल देखो और सोचो (फ़ा164) यानी अगर तुम मेरी रिसालत में इख़्तिलाफ़ करके दो फ़िरक़े हो गए एक फ़िरक़े ने माना और एक मुन्किर हुआ (फ़ा165) कि तस्दीक़ करने वाले ईमानदारों को इज़्ज़त दे और उनकी मदद फ़रमाए और झुठलाने वाले मुन्किरीन को हलाक करे और उन्हें अ़ज़ाब दे (फ़ा166) क्योंकि वह हाकिमे हक़ीक़ी है।

(बक़िया सफ़हा 261 का) यमन में एक रेगिस्तान है उन्होंने ज़मीन को फ़िस्क़ से भर दिया था और दुनिया की क़ौमों को अपनी जफ़ाकारियों से अपने ज़ोरे कुव्वत के ज़ोअ़म में पामाल कर डाला था यह लोग बुत परस्त थे उनके एक बुत का नाम सदा एक का समूद एक का हबा था अल्लाह तआ़ला ने उनमें हूद अ़लैहिस्सलाम को मबऊस फ़रमाया आपने उन्हें तौहीद का हुक्म दिया शिर्क व बुत परस्ती और ज़ुल्म व जफ़ाकारी की मुमानअ़त की इस पर वह लोग मुन्किर हुए आपकी तकज़ीब करने लगे ओर कहने लगे हम से ज़्यादा ज़ोर आवर कौन है चन्द आदमी उन में से हज़रत हूद अ़लैहिस्सलाम पर ईमान लाये वह थोड़े थे और अपना ईमान छुपाये रहते थे उन मोमिनीन में से एक शख़्स का नाम मुरसद इब्ने सअ़्द बिन अ़ज़ीर था वह अपना ईमान मख़्फ़ी रखते थे जब क़ौम ने सरकशी की और अपने नबी हज़रत आ़द अ़लैहिस्सलाम की तकज़ीब की और ज़मीन में फ़साद किया और सितमगारियों में ज़्यादती की और बड़ी मज़बूत इमारतें बनाईं मालूम होता था कि उन्हें गुमान है कि वह दुनिया में हमेशा ही रहेंगे जब उनकी नौबत यहां तक पहुंची तो अल्लाह ने बारिश रोक दी तीन साल बारिश न हुई अब वह बहुत मुसीबत में मुबतला हुए और उस ज़माना मे दस्तूर यह था कि जब कोई बला या मुसीबत नाज़िल होती थी तो लोग बैतुल्लाहिल-हराम में हाज़िर होकर अल्लाह तआ़ला से उसके दफ़ा की दुआ़ करते थे इसी लिए उन लोगों ने एक वफ़्द बैतुल्लाह को रवाना किया उस वफ़्द में क़ील बिन अ़न्ज़ा और नईम इब्ने हज़ाल और मुरसद बिन सअ़्द थे यह वही साहब हैं जो हज़रत हूद अ़लैहिस्सलाम पर ईमान लाये थे और अपना ईमान मख़्फ़ी रखते थे उस ज़माना में मक्का मुकर्रमा में अ़मालीक़ की सुकूनत थी और उन लोगों का सरदार मुआ़विया बिन बकर था उस शख़्स का नानेहाल क़ौमे आ़द में था उसी इलाक़ा से यह वफ़्द मक्का मुकर्रमा के हवाली में मुआ़विया बिन बकर के यहां मुक़ीम हुआ उसने उन लोगों का बहुत इकराम किया निहायत ख़ातिर व मदारात की यह लोग वहां शराब पीते बांदियों का नाच देखते थे इस तरह उन्होंने ऐश व निशात में एक महीना बसर किया मुआ़विया को ख़्याल आया कि यह लोग तो राहत में पड़ गए और क़ौम की मुसीबत को भूल गए जो वहां गिरिफ़्तारे बला है मगर मुआ़विया बिन बकर को यह ख़्याल भी था कि अगर वह उन लोगों से कुछ कहे तो शायद वह यह ख़्याल करें कि अब उसको मेज़बानी गिराँ गुज़रने लगी है इस लिए उसने गाने वाली बाँदी को ऐसे अशआ़र दिये जिन में क़ौमे आ़द की हाजत का तज़्किरा था जब बांदी ने वह नज़्म गाई तो उन लोगों को याद आया कि हम इस क़ौम की मुसीबत की फ़रियाद करने के लिए मक्का मुकर्रमा भेजे गए हैं अब उन्हें ख़्याल हुआ कि हरम शरीफ़ में दाख़िल होकर क़ौम के लिए पानी बरसने की दुआ़ करें उस वक़्त मुरसद इब्ने सअ़्द ने कहा कि अल्लाह की क़सम तुम्हारी दुआ़ से पानी न बरसेगा लेकिन अगर तुम अपने नबी की इताअ़त करो और अल्लाह तआ़ला से तौबा करो तो बारिश होगी और उस वक़्त मुरसद ने अपने इस्लाम का इज़्हार कर दिया उन लोगों ने मुरसद को छोड़ दिया और खुद मक्का मुकर्रमा जाकर दुआ़ की अल्लाह तआ़ला ने तीन अब्र भेजे एक सफ़ेद एक सुर्ख़ एक सियाह और आसमान से निदा हुई कि ऐ क़ील अपने और अपनी क़ौम के लिए इनमें से एक अब्र इख़्तियार कर उसने अब्र सियाह को इख़्तियार किया बईं ख़्याल कि इससे बहुत पानी बरसेगा चुनान्चे वह अब्र क़ौमे आ़द की तरफ़ चला और वह लोग उसको देख कर बहुत खुश हुए मगर उसमें से एक हवा चली वह इस शिद्दत की थी कि ऊंटों और आदमियों को उड़ा उड़ा कर कहीं से कहीं ले जाती थी यह देख कर वह लोग घरों में दाख़िल हुए और अपने दरवाज़े बन्द कर लिए मगर हवा की तेज़ी से बच न सके उसने दरवाज़े भी उखेड़ दिये और उन लोगों को हलाक भी कर दिया और क़ुदरते इलाही से सियाह परिन्दे नमूदार हुए जिन्होंने उनकी लाशों को उठा कर समुन्दर में फेंक दिया हज़रत हूद मोमिनीन को लेकर क़ौम से जुदा हो गए थे इस लिए वह सलामत रहे क़ौम के हलाक होने के बाद ईमानदारों को साथ लेकर मक्का मुकर्रमा तशरीफ़ लाए और आख़िर उम्र शरीफ़ तक वहीं अल्लाह तआ़ला की इबादत करते रहे (फ़ा136) जो हिजाज़ व शाम के दर्मियान सर ज़मीने हजर में रहते थे (फ़ा137) मेरे सिद्क़े नबुव्वत पर (फ़ा138) जिसका बयान यह है कि (फ़ा139) जो न किसी पीठ में रहा न किसी पेट में न किसी नर से पैदा हुआ न मादा से न हमल में रहा न उसकी ख़िल्क़त तदरीजन तकमील को पहुंची बल्कि तरीक़ए आ़दिया के ख़िलाफ़ वह पहाड़ के एक पत्थर से दफ़अ़तन पैदा हुआ उसकी यह पैदाइश मोअ़्जज़ा है फिर वह एक दिन पानी पीता है और तमाम क़बीला समूद एक दिन यह भी मोअ़्जेज़ा है कि एक नाक़ा एक क़बीला के बराबर पी जाये इसके इलावा उसके पीने के रोज़ उसका दूध दूहा जाता था और वह इतना होता था कि तमाम क़बीला को काफ़ी हो और पानी के क़ाइम मक़ाम हो जाये यह भी मोअ़्जज़ा और तमाम वुहूश व हैवानात उसकी बारी के ०रोज़ पानी पीने से बाज़ रहते थे यह भी मोअ़्जेज़ा इतने मोअ़्जेज़ात हज़रत सालेह अ़लैहिस्सलाम के सिद्क़ नबुव्वत की ज़बरदस्त हुज्जतें हैं (फ़ा140) न मारो न हंकाओ अगर ऐसा किया तो यही नतीजा होगा (फ़ा141) ऐ क़ौमे समूद

(बक़िया सफ़हा 246 का) दर गोर करने और मार डालने की हुरमत बयान फ़रमाई गई जिसका अहले जाहिलियत में दस्तूर था कि वह अक्सर नादारी के अन्देशा से औलाद को हलाक करते थे उन्हें बताया गया कि रोज़ी देने वाला तुम्हारा उनका सब का अल्लाह है फिर तुम क्यों क़त्ल जैसे शदीद जुर्म का इरतेकाब करते हो (फ़ा316) क्यों कि इंसान जब खुले और ज़ाहिर गुनाह से बचे और छुपे गुनाह से परहेज़ न करे तो उसका ज़ाहिर गुनाह से बचना भी लिल्लाहियत से नहीं लोगों के दिखाने और उनकी बदगोई से बचने के लिए है और अल्लाह की रज़ा व सवाब का मुस्तहिक़ वह है जो उसके ख़ौफ़ से गुनाह तर्क करे (फ़ा317) वह उमूर जिन से क़त्ल मुबाह होता है यह हैं मुरतद होना या क़िसास या ब्याहे हुए का ज़िना बुख़ारी व मुस्लिम की हदीस में है कि सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया कोई मुसलमान जो ला इला-ह इल्लल्लाह मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह की गवाही देता हो उसका ख़ून हलाल नहीं मगर इन तीन सबबों में से किसी एक सबब से या तो ब्याहे होने के बावजूद उससे ज़िना सरज़द हुआ हो या उसने किसी को नाहक़ क़त्ल किया हो और उसका क़िसास उस पर आता हो या वह दीन छोड़ कर मुरतद हो गया हो (फ़ा318) जिससे उसका फ़ाइदा हो (फ़ा319) उस वक़्त उस का माल उसके सपुर्द कर दो

(बक़िया सफ़हा 266 पर) बाद वाजिब होता है जब खेती काटी जाये या फल तोड़े जायें मसला लकड़ी बांस घास के सिवा ज़मीन की बाक़ी पैदावार में अगर यह पैदावार बारिश से हो तो उसमें उश्र वाजिब होता है और अगर रहट वग़ैरह से हो तो निस्फ़ उश्र (फ़ा291) हज़रत मुतर्जिम क़ुद्देस सिर्रुहू ने इसराफ़ का तर्जुमा बेजा ख़र्च करना फ़रमाया निहायत ही नफ़ीस तर्जुमा है अगर कुल माल ख़र्च कर डाला और अपने अ़याल को कुछ न दिया और खुद फ़क़ीर बन बैठा तो सुद्दी का क़ौल है कि यह ख़र्च बेजा है और अगर सदक़ा देने ही से हाथ रोक लिया तो यह भी बेजा और दाख़िले इसराफ़ है जैसा कि सईद बिन मुसय्यिब रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने फ़रमाया सुफ़ियान का क़ौल है कि अल्लाह की इताअ़त के सिवा और काम में जो माल ख़र्च किया जाये वह क़लील भी हो तो इसराफ़ है ज़ुहरी का क़ौल है कि इसके माना यह हैं कि मअ़सियत में ख़र्च न करो मुजाहिद ने कहा कि हक़्क़ुल्लाह में कोताही करना इसराफ़ है और अगर अबू क़ुबैस पहाड़ सोना हो और उस तमाम को राहे ख़ुदा में ख़र्च कर दो तो इसराफ़ न हो और एक दिरहम मअ़सियत में ख़र्च करो तो इसराफ़ (फ़ा292) चौपाये दो क़िस्म के होते हैं कुछ बड़े जो लादने के काम में आते हैं कुछ छोटे मिस्ल बकरी वग़ैरह के जो इस क़ाबिल नहीं उनमें से जो अल्लाह तआ़ला ने हलाल किये उन्हें खाओ और अहले जाहलियत की तरह अल्लाह की हलाल फ़रमाई हुई चीज़ों को हराम न ठहराओ (फ़ा293) यानी अल्लाह तआ़ला ने न भेड़ बकरी के नर हराम किये न उनकी मादायें हराम कीं न उनकी औलाद उनमें से तुम्हारा यह फ़ेअ़्ल कि कभी नर हराम ठहराओ कभी मादा कभी उनके बच्चे यह सब तुम्हारा इख़्तेराअ़ है और हवाए नफ़्स का इत्तेबाअ़ कोई हलाल चीज़ किसी के हराम करने से हराम नहीं होती। (फ़ा294) इस आयत में अहले जाहिलियत को तौबीख़ की गई जो अपनी तरफ़ से हलाल चीज़ों को हराम ठहरा लिया करते थे जिनका ज़िक्र ऊपर की आयात में आ चुका है जब इस्लाम में अहकाम का बयान हुआ तो उन्होंने नबीए करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से जिदाल किया और उनका ख़तीब मालिक बिन औफ़ जशमी सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर होकर कहने लगा कि या मुहम्मद (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) हम ने सुना है आप उन चीज़ों को हराम करते है जो हमारे बाप दादा करते चले आये हैं हुज़ूर ने फ़रमाया तुम ने बग़ैर किसी असल के चन्द क़िस्में चौपायों की हराम कर लीं और अल्लाह तआ़ला ने आठ नर व मादा अपने बन्दों के खाने और उनके नफ़ा उठाने के लिए पैदा किये तुम ने कहां से उन्हें हराम किया उनमें हुरमत नर की तरफ़ से आई या मादा की तरफ़ से मालिक बिन औफ़ यह सुनकर साकित और मुतहय्यर रह गया और कुछ न बोल सका नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया बोलता क्यों नहीं कहने लगा आप फ़रमाइये मैं सुनूंगा सुबहानल्लाह सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के कलाम की क़ुव्वत और ज़ोर ने अहले जाहलियत के ख़तीब को साकित व हैरान कर दिया और वह बोल ही क्या सकता था अगर कहता कि नर की तरफ़ से हुरमत आई तो लाज़िम होता कि तमाम नर हराम हों अगर कहता कि मादा की तरफ़ से तो ज़रूरी होता कि हर एक मादा हराम हो और अगर कहता जो पेट में है वह हराम है तो फिर सब ही हराम हो जाते क्योंकि जो पेट में रहता है वह नर होता है या मादा वह जो तख़्सीसे क़ायम करते थे और बाज़ को हलाल और बाज़ को हराम क़रार देते थे इस हुज्जत ने उनके इस दावाए तहरीम को बातिल कर दिया इलावा बरीं उनसे यह दरियाफ़्त करना कि अल्लाह ने नर हराम किये हैं या मादा या उनके बच्चे यह मुन्किरे नबुव्वत मुख़ालिफ़ को इक़रारे नबुव्वत पर मजबूर करता था क्योंकि जब तक नबुव्वत का वास्ता न हो तो अल्लाह तआ़ला की मर्ज़ी और उसका किसी चीज़ को हराम फ़रमाना कैसे जाना जा सकता है चुनांचे अगले जुमला ने उसको साफ़ किया है।

(बक़िया सफ़हा 251 का) पर है और आग का मिट्टी से अफ़ज़ल होना यह भी सही नहीं क्यों कि आग में तैश व तेज़ी और तरफ़्फ़ुअ़ है यह सबब इस्तिकबार का होता है और मिट्टी से वक़ारे हिल्म व हया व सब्र हासिल होते हैं मिट्टी से मुल्क आबाद होते हैं आग से हलाक मिट्टी अमानतदार है जो चीज़ उसमें रखी जाये उसको महफ़ूज़ रखे और बढ़ाये आग फ़ना कर देती है बावजूद इसके लुत्फ़ यह है कि मिट्टी आग को बुझा देती है और आग मिट्टी को फ़ना नहीं कर सकती इलावा बरीं हिमाक़त व शक़ावत इबलीस की यह कि उसने नस के मौजूद होते हुए उसके मुक़ाबिल क़ियास किया और जो क़ियास कि नस के ख़िलाफ़ हो वह ज़रूर मरदूद (फ़ा18) जन्नत से कि यह जगह इताअ़त व तवाज़ोअ़ वालों की है मुन्किर व सरकश की नहीं (फ़ा19) कि इंसान तेरी मज़म्मत करेगा और हर ज़बान तुझ पर लानत करेगी और यही तकब्बुर वाले का अंजाम है। (फ़ा20) और मुद्दत इस मोहलत की सूरह हजर में बयान फ़रमाई गई इन्न-क मिनलू-मुनज़री-न इला यौमिलू-वक़्तिल् मअ़लूम और यह वक़्त नफ़ख़ए ऊला का है जब सब लोग मर जायेंगे शैतान ने मुर्दों के ज़िन्दा होने के वक़्त तक की मोहलत चाही थी और इससे उसका मतलब यह था कि मौत की सख़्ती से बच जाए यह क़बूल न हुआ और नफ़ख़ए ऊला तक की मोहलत दी गई (फ़ा21) कि बनी आदम के दिल में वसवसे डालूं और उन्हें बातिल की तरफ़ माइल करूं गुनाहों की रग़बत दिलाऊं तेरी इताअ़त और इबादत से रोकूं और गुमराही में डालूं (फ़ा22) यानी चारों तरफ़ से उन्हें घेर कर राहे रास्त से रोकूंगा (फ़ा23) चूंकि शैतान बनीए आदम को गुमराह करने और मुबतलाए शहवात व क़बाएह करने में अपनी इन्तेहाई सई ख़र्च करने का अ़ज़्म कर चुका था इस लिए उसे गुमान था कि वह बनी आदम को बहका लेगा और उन्हें फ़रेब देकर ख़ुदावन्दे आ़लम की निअ़मतों के शुक्र और उसकी इताअ़त व फ़रमांबरदारी से रोक देगा

(बक़िया सफ़हा 253 का) शैतान ऐसा है कि वह तुम्हें देखता है तुम उसे नहीं देख सकते तो तुम ऐसे से मदद चाहो जो उसको देखता हो और वह उसे न देख सके यानी अल्लाह करीम सत्तार रहीम ग़फ़्फ़ार से मदद चाहो (फ़ा37) और कोई क़बीह फ़ेअ़ल या गुनाह उनसे सादिर हो जैसाकि ज़मानए जाहलियत के लोग मर्द व औरत नंगे होकर कअ़बा मुअ़ज़्ज़मा का तवाफ़ करते थे अ़ता का क़ौल है कि बेहयाई शिर्क है और हक़ीक़त यह है कि हर क़बीह फ़ेअ़ल और तमाम मआ़सी व कबाइर इसमें दाख़िल हैं अगरचे यह आयत ख़ास नंगे होकर तवाफ़ करने के बारे में आई हो जब कुफ़्फ़ार की ऐसी बेहयाई के कामों पर उनकी मज़म्मत की गई तो इस पर उन्होंने जो कहा वह आगे आता है (फ़ा38) कुफ़्फ़ार ने अपने अफ़आ़ले क़बीहा के दो उज़्र बयान किये एक तो यह कि उन्होंने अपने बाप दादा को यही फ़ेअ़ल करते पाया लिहाज़ा उनकी इत्तेबाअ़ में यह भी करते हैं यह तो जाहिल व बदकार की तक़लीद हुई और यह किसी साहिबे अ़क़्ल के नज़दीक जाइज़ नहीं तक़लीद की जाती है अहले इल्म व तक़वा की न कि जाहिल गुमराह की दूसरा उज़्र उनका यह था कि अल्लाह ने उन्हें इन अफ़आ़ल का हुक्म दिया है यह महज़ इफ़्तेरा व बुहतान था चुनांचे अल्लाह तबारक व तआ़ला रद्द फ़रमाता है (फ़ा39) यानी जैसे उसने तुम्हें नेस्त से हस्त किया ऐसे ही बादे मौत ज़िन्दा फ़रमाएगा यह उख़रवी ज़िन्दगी का इंकार करने वालों पर हुज्जत है और इससे यह भी मुस्तफ़ाद होता है कि जब उसी की तरफ़ पलटना है और वह आमाल की जज़ा देगा तो ताआ़त व इबादात को उसके लिए ख़ालिस करना ज़रूरी है (फ़ा40) ईमान व मअ़्रेफ़त की और उन्हें ताअ़त व इबादत की तौफ़ीक़ दी (फ़ा41) वह कुफ़्फ़ार हैं

(बक़िया सफ़हा 254 का) हराम करलो हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा ने फ़रमाया खा जो चाहे और पहन जो चाहे इसराफ़ और तकब्बुर से बचता रह मसला आयत में दलील है कि खाने और पीने की तमाम चीज़ें हलाल हैं सिवाए उनके जिन पर शरीअ़त में दलीले हुरमत क़ायम हो क्योंकि यह क़ायदा मुक़र्ररा मुसल्लमा है कि असल तमाम अशिया में इबाहत है मगर जिस पर शारेअ़ ने मुमानअ़त फ़रमाई हो और उसकी हुरमत दलीले मुस्तक़िल से साबित हो (फ़ा45) ख़्वाह लिबास हो या और सामाने ज़ीनत (फ़ा46) और खाने पीने की लज़ीज़ चीज़ें मसला आयत अपने उमूम पर है हर खाने की चीज़ इस में दाख़िल है जिसकी हुरमत पर नस वारिद न हुई हो (ख़ाज़िन) तो जो लोग तोशा ग्यारहवीं मीलाद शरीफ़ बुज़ुर्गों की फ़ातिहा उर्स मजालिसे शहादत वग़ैरह की शीरीनी सबील के शरबत को ममनूअ़ कहते हैं वह इस आयत के ख़िलाफ़ करके गुनहगार होते हैं और इसको ममनूअ़ कहना अपनी राय को दीन में दाख़िल करना है और यही बिदअ़त व ज़लालत है (फ़ा47) जिन से हलाल व हराम के अहकाम मालूम हों (फ़ा48) जो यह जानते हैं कि अल्लाह वाहिद ला शरीक लहू है वह जो हराम करे वही हराम है (फ़ा49) यह ख़िताब मुश्रिकीन से है जो बरहना होकर ख़ानए कअ़बा का तवाफ़ करते थे और अल्लाह तआ़ला की हलाल की हुई पाक चीज़ों को हराम कर लेते थे उनसे फ़रमाया जाता है कि अल्लाह ने यह चीज़ें हराम नहीं कीं और उन से अपने बन्दों को नहीं रोका जिन चीज़ों को उसने हराम फ़रमाया वह यह हैं जो अल्लाह तआ़ला बयान फ़रमाता है उन में से बेहयाईयाँ हैं जो खुली हुई हों या छुपी हुई क़ौली हों या फ़ेअ़ली (फ़ा50) हराम किया (फ़ा51) हराम किया। (फ़ा52) वक़्ते मुअ़य्यन जिस पर मोहलत ख़त्म हो जाती है (फ़ा53) मुफ़स्सिरीन के इस में दो क़ौल हैं एक तो यह कि रुसुल से तमाम मुर्सलीन मुराद हैं दूसरा यह कि ख़ास सय्यदे आलम ख़ातमुल अम्बिया सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम मुराद हैं जो तमाम ख़ल्क़ की तरफ़ रसूल बनाये गए हैं और सीग़ए जमा ताज़ीम के लिए है (फ़ा54) ममनूआ़त से बचे (फ़ा55) ताआ़त व इबादात बजा लाये

(बक़िया सफ़हा 256 का) दाख़िल होते वक़्त (फ़ा73) और हमें ऐसे अमल की तौफ़ीक़ दी जिसका यह अज्र व सवाब है और हम पर फ़ज़्ल व रहमत फ़रमाई और अपने करम से अ़ज़ाबे जहन्नम से महफ़ूज़ किया (फ़ा74) और जो उन्होंने हमें दुनिया में सवाब की ख़बरें दीं वह सब हम ने अ़यां देख लीं उनकी हिदायत हमारे लिए कमाले लुत्फ़ व करम था (फ़ा75) मुस्लिम शरीफ़ की हदीस में है जब जन्नती जन्नत में दाख़िल होंगे एक निदा करने वाला पुकारेगा तुम्हारे लिए ज़िन्दगानी है कभी न मरोगे तुम्हारे लिए तन्दुरुस्ती है कभी बीमार न होगे तुम्हारे लिए ऐश है कभी तंग हाल न होगे जन्नत को मीरास फ़रमाया गया इसमें इशारा है कि वह महज़ अल्लाह के फ़ज़्ल से हासिल हुई (फ़ा76) और रसूलों ने फ़रमाया था कि ईमान व ताअ़त पर अज्र व सवाब पाओगे (फ़ा77) कुफ़्र व नाफ़रमानी पर अ़ज़ाब का

(बक़िया सफ़हा 257 का) होंगे क्योंकि वह बाक़ियों से मर्तबा में आला हैं इन तमाम अक़वाल में कुछ तनाक़ुज़ नहीं है इस लिए कि हो सकता है कि हर तबक़ा के लोग अअ़्राफ़ में ठहराये जायें और हर एक के ठहराने की हिकमत जुदागाना हो (फ़ा82) दोनों फ़रीक़ से जन्नती और दोज़ख़ी मुराद हैं जन्नतियों के चेहरे सफ़ेद और तरो ताज़ा होंगे और दोज़ख़ियों के चेहरे सियाह और आंखें नीली यही उनकी अ़लामतें हैं (फ़ा83) अअ़्राफ़ वाले अभी तक (फ़ा84) अअ़्राफ़ वालों की (फ़ा85) कुफ़्फ़ार में से (फ़ा86) और अहले अअ़्राफ़ ग़रीब मुसलमानों की तरफ़ इशारा करके कुफ़्फ़ार से कहेंगे (फ़ा87) जिनको तुम दुनिया में हक़ीर समझते थे और (फ़ा88) अब देख लो कि जन्नत के दायमी ऐश व राहत में किस इज़्ज़त व एहतेराम के साथ हैं। (फ़ा89) हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा से मरवी है कि जब अअ़्राफ़ वाले जन्नत में चले जायेंगे तो दोज़ख़ियों को भी तमअ़् दामनगीर होगी और वह अ़र्ज़ करेंगे या रब जन्नत में हमारे रिश्तेदार हैं इजाज़त फ़रमा कि हम उन्हें देखें उनसे बात करें इजाज़त दी जाएगी तो वह अपने रिश्तेदारों को जन्नत की नेअ़्मतों में देखेंगे और पहचानेंगे लेकिन अहले जन्नत उन दोज़ख़ी रिश्तेदारों को न पहचानेंगे क्योंकि दोज़ख़ियों के मुंह काले होंगे सूरतें बिगड़ गई होंगी तो वह जन्नतियों को नाम लेकर पुकारेंगे कोई अपने बाप को पुकारेगा कोई अपने भाई को और कहेगा मैं जल गया मुझ पर पानी डालो और तुम्हें अल्लाह ने दिया है खाने को दो इस पर अहले जन्नत (फ़ा90) कि हलाल व हराम में अपनी हवाए नफ़्स के ताबेअ़् हुए जब ईमान की तरफ़ उन्हें दावत दी गई मस्ख़रगी करने लगे (फ़ा91) उसकी लज़्ज़तों में आख़िरत को भूल गए

(बक़िया सफ़हा 258 का) उस पर ईमान लाना वाजिब हज़रत मुतर्जिम कुद्देस सिर्रुहू ने फ़रमाया या उसके माना यह हैं कि आफ़रीनश का ख़ात्मा अर्श पर जा ठहरा वल्लाहु आलम ब-असरारे किताबिही (फ़ा100) दुआ अल्लाह तआला से ख़ैर तलब करने को कहते हैं और यह दाख़िले इबादत है क्योंकि दुआ करने वाला अपने आपको आजिज़ व मोहताज और अपने परवरदिगार को हक़ीक़ी क़ादिर व हाजत-रवा एतेक़ाद करता है इसी लिए हदीस शरीफ़ में वारिद हुआ अद्दुआउ मुख़्ख़ुल् इबा-दति तज़र्रुअ़ से इज़हारे इज्ज़ व ख़ुशूअ् मुराद है और अदब दुआ में यह है कि आहिस्ता हो हसन रज़ियल्लाहु अ़न्हु का क़ौल है कि आहिस्ता दुआ करना एलानिया करने से सत्तर दर्जा ज़्यादा अफ़ज़ल है मसला इस में उलमा का इख़्तिलाफ़ है कि इबादात में इज़हार अफ़ज़ल है या इख़्फ़ा बाज़ कहते हैं कि इख़्फ़ा अफ़ज़ल है क्यों कि वह रिया से बहुत दूर है बाज़ कहते हैं कि इज़हार अफ़ज़ल है इस लिए कि इससे दूसरों को रग़बते इबादत पैदा होती है। तिर्मिज़ी ने कहा कि अगर आदमी अपने नफ़्स पर रिया का अन्देशा रखता हो तो उस के लिए इख़्फ़ा अफ़ज़ल है और अगर क़ल्ब साफ़ हो अन्देशए रिया न हो तो इज़हार अफ़ज़ल है बाज़ हज़रात यह फ़रमाते हैं कि फ़र्ज़ इबादतों में इज़हार अफ़ज़ल है नमाज़े फ़र्ज़ मस्जिद ही में बेहतर है और ज़कात का इज़हार करके देना ही अफ़ज़ल है और नफ़्ल इबादात में ख़्वाह वह नमाज़ हो या सदक़ा वग़ैरह उनमें इख़्फ़ा अफ़ज़ल है दुआ में हद से बढ़ना कई तरह होता है इस में से एक यह भी है कि बहुत बुलन्द आवाज़ से चीख़े (फ़ा101) कुफ़्र व मअ़सियत व ज़ुल्म करके (फ़ा102) अम्बिया के तशरीफ़ लाने हक़ की दावत फ़रमाने अहकाम बयान करने अद्ल क़ायम फ़रमाने के बाद

(बक़िया सफ़हा 259 का) और ज़िन्दा होने की सेहत पर दलाइले क़ातेआ क़ाइम किये उसके बाद अम्बिया अ़लैहिमुस्सलातु वस्सलाम का ज़िक्र फ़रमाता है और उनके उन मुआमलात का जो उन्हें उम्मतों के साथ पेश आये उसमें नबीए करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की तसल्ली है कि फ़क़त आप ही की क़ौम ने क़बूले हक़ से एअ्राज़ नहीं किया बल्कि पहली उम्मतें भी एअ्राज़ करती रहीं और अम्बिया की तकज़ीब करने वालों का अंजाम दुनिया में हलाक और आख़िरत में अज़ाबे अज़ीम है इससे ज़ाहिर है कि अम्बिया की तकज़ीब करने वाले ग़ज़बे इलाही के सज़ावार होते हैं जो शख़्स सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की तकज़ीब करेगा उसका भी यही अंजाम होगा। अम्बिया के इन तज़्किरों में सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की नबुव्वत की ज़बरदसत दलील है क्योंकि हुज़ूर उम्मी थे फिर आपका इन वाक़िआत को तफ़सीलन बयान फ़रमाना बिलख़ुसूस ऐसे मुल्क में जहां अहले किताब के उलमा बकसरत मौजूद थे और सरगरम मुख़ालिफ़ भी थे ज़रा सी बात पाते तो बहुत शोर मचाते वहां हुज़ूर का इन वाक़िआत को बयान फ़रमाना और अहले किताब का साकित व हैरान रह जाना सरीह दलील है कि आप नबीए बरहक़ हैं और परवरदिगारे आलम ने आप पर उलूम के दरवाज़े खोल दिये हैं (फ़ा110) वही मुस्तहिक़े इबादत है (फ़ा111) तो उसके सिवा किसी को न पूजो (फ़ा112) रोज़े क़ियामत का या रोज़े तूफ़ान का अगर तुम मेरी नसीहत क़बूल न करो और राहे रास्त पर न आओ

قَالَ الْمَلَاُ الَّذِيْنَ اسْتَكْبَرُوْا مِنْ قَوْمِهٖ لَنُخْرِجَنَّكَ يٰشُعَيْبُ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مَعَكَ مِنْ قَرْيَتِنَاۤ اَوْ لَتَعُوْدُنَّ فِيْ مِلَّتِنَا ؕ قَالَ اَوَلَوْ كُنَّا كٰرِهِيْنَ ۟ۚ (٨٨)
قَدِ افْتَرَيْنَا عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا اِنْ عُدْنَا فِيْ مِلَّتِكُمْ بَعْدَ اِذْ نَجّٰىنَا اللّٰهُ مِنْهَا ؕ وَمَا يَكُوْنُ لَنَاۤ اَنْ نَّعُوْدَ فِيْهَاۤ اِلَّاۤ اَنْ يَّشَآءَ اللّٰهُ رَبُّنَا ؕ وَسِعَ رَبُّنَا كُلَّ
شَيْءٍ عِلْمًا ؕ عَلَى اللّٰهِ تَوَكَّلْنَا ؕ رَبَّنَا افْتَحْ بَيْنَنَا وَبَيْنَ قَوْمِنَا بِالْحَقِّ وَاَنْتَ خَيْرُ الْفٰتِحِيْنَ (٨٩) وَقَالَ الْمَلَاُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ قَوْمِهٖ لَئِنِ اتَّبَعْتُمْ شُعَيْبًا
اِنَّكُمْ اِذًا لَّخٰسِرُوْنَ (٩٠) فَاَخَذَتْهُمُ الرَّجْفَةُ فَاَصْبَحُوْا فِيْ دَارِهِمْ جٰثِمِيْنَ ۟ۚۖ (٩١) اَلَّذِيْنَ كَذَّبُوْا شُعَيْبًا كَاَنْ لَّمْ يَغْنَوْا فِيْهَا ۛۚ اَلَّذِيْنَ كَذَّبُوْا شُعَيْبًا كَانُوْا
هُمُ الْخٰسِرِيْنَ (٩٢) فَتَوَلّٰى عَنْهُمْ وَقَالَ يٰقَوْمِ لَقَدْ اَبْلَغْتُكُمْ رِسٰلٰتِ رَبِّيْ وَنَصَحْتُ لَكُمْ ۚ فَكَيْفَ اٰسٰى عَلٰى قَوْمٍ كٰفِرِيْنَ ۟۠ (٩٣) وَمَاۤ اَرْسَلْنَا فِيْ قَرْيَةٍ مِّنْ نَّبِيٍّ

कालल् म–ल–उल्लज़ीनस्तक्बरू मिन् क़ौमिही लनुख़्रिजन्न–क याशु–अ़ैबु वल्लीज़–न आ–मनू म–अ़–क मिन् क़र्–यतिना औ ल–तअूदुन्–न फ़ी मिल्लतिना क़ा–ल अ–व लौ कुन्ना कारिहीन(88)क़दिफ़्तरैना अ़–लल्लाहि कज़िबन् इन् अ़ुद्ना फ़ी मिल्लतिकुम् बअ़्–द इज़् नज्जा–नल्लाहु मिन्हा व मा यकूनु लना अन् नअ़ू–द फ़ीहा इल्ला अंय्यशा–अल्लाहु रब्बुना वसि–अ़ रब्बुना कुल्–ल शैइन् अ़िल्मन् अ़–लल्लाहि त–वक्कल्ना रब्बनफ़्तह् बै–नना व बै–न क़ौमिना बिल्हक़्क़ि व अन्–त ख़ैरुल्फ़ातिहीन(89)व क़ालल् म–ल–उल्लज़ी–न क–फ़रू मिन् क़ौमिही लइनित् त–बअ़्तुम् शुअ़ैबन् इन्नकुम् इज़ल्–ल ख़ासिरून(90)फ़–अ–ख़–ज़त् हुमुर्–रज्फ़तु फ़–अस्बहू फ़ी दारिहिम् जासिमीन(91)अल्लज़ी–न कज़्ज़बू शुअ़ैबन् क–अल्लम् यग़्नौ फ़ीहा अल्–लज़ी–न कज़्ज़बू शुअ़ैबन् कानू हुमुल्–ख़ासिरीन(92)फ़–तवल्ला अ़न्हुम् व क़ा–ल या क़ौमि ल–क़द् अब्लग़्तुकुम् रिसाला–ति रब्बी व न–सह्तु लकुम् फ़कै–फ़ आसा अ़ला क़ौमिन् काफ़िरीन(93)व मा अर्सल्ना फ़ी क़र्–यतिम् मिन् नबिय्यिन्

उसकी क़ौम के मुतकब्बिर सरदार बोले ऐ शुएब क़सम है कि हम तुम्हें और तुम्हारे साथ वाले मुसलमानों को अपनी बस्ती से निकाल देंगे या तुम हमारे दीन में आ जाओ कहा (फ़ा167)क्या अगरचे हम बेज़ार हों(88) (फ़ा168) ज़रूर हम अल्लाह पर झूठ बांधेंगे अगर तुम्हारे दीन में आ जायें बाद इसके कि अल्लाह ने हमें उससे बचाया है। (फ़ा169) और हम मुसलमानों में किसी का काम नहीं कि तुम्हारे दीन में आये मगर यह कि अल्लाह चाहे (फ़ा170) जो हमारा रब है हमारे रब का इल्म हर चीज़ को मुहीत है हमने अल्लाह ही पर भरोसा किया (फ़ा171) ऐ रब हमारे हममें और हमारी क़ौम में हक़ फ़ैसला कर(फ़ा172)और तेरा फ़ैसला सबसे बेहतर।(89)और उसकी क़ौम के काफ़िर सरदार बोले कि अगर तुम शुएब के ताबेअ़ हुए तो ज़रूर तुम नक़सान में रहोगे।(90) तो उन्हें ज़लज़ला ने आ लिया तो सबुह अपने घरों में औंधे पड़े रह गए(91)(फ़ा173) शुएब को झुठलाने वाले गोया उन घरों में कभी रहे ही न थे शुएब को झुठलाने वाले वही तबाही में पड़े (92) तो शुएब ने उनसे मुंह फेरा (फ़ा174)और कहा ऐ मेरी क़ौम मैं तुम्हें अपने रब की रिसालत पहुंचा चुका और तुम्हारे भले को नसीहत की (फ़ा175) तो क्यों कर ग़म करूं काफ़िरों का(93) (रुकूअ़ 1)और न भेजा हमने किसी बस्ती में कोई नबी (फ़ा176)

(फ़ा167) हज़रत शुऐब अ़लैहिस्सलाम ने (फ़ा168) हासिले मतलब यह है कि हम तुम्हारा दीन न क़बूल करेंगे और अगर तुमने हम पर जब्र किया जब भी न मानेंगे क्योंकि (फ़ा169) और तुम्हारे दीने बातिल के क़ुबह व फ़साद का इल्म दिया है (फ़ा170) और उसको हलाक करना मंज़ूर हो और ऐसा ही मुक़द्दर हो (फ़ा171) अपने तमाम उमूर में वही हमें ईमान पर साबित रखेगा वही ज़्यादते ईक़ान की तौफ़ीक़ देगा (फ़ा172) जुज्जाज ने कहा कि इसके यह माना हो सकते हैं कि ऐ रब हमारे अम्र को ज़ाहिर फ़रमा दे मुराद इससे यह है कि उन पर ऐसा अ़ज़ाब नाज़िल फ़रमा जिससे उनका बातिल होना और हज़रत शुऐब अ़लैहिस्सलाम और उनके मुत्तबेईन का हक़ पर होना ज़ाहिर हो। (फ़ा173) हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा ने फ़रमाया कि अल्लाह तआ़ला ने उस क़ौम पर जहन्नम का दरवाज़ा खोला और उन पर दोज़ख़ की शदीद गर्मी भेजी जिससे सांस बन्द हो गए अब न उन्हें साया काम देता था न पानी इस हालत में वह तह ख़ाना में दाख़िल हुए ताकि वहां उन्हें कुछ अमन मिले लेकिन वहां बाहर से ज़्यादा गर्मी थी वहां से निकल कर जंगल की तरफ़ भागे अल्लाह तआ़ला ने एक अब्र भेजा जिस में निहायत सर्द और ख़ुशगवार हवा थी उसके साया में आये और एक ने दूसरे को पुकार पुकार कर जमा कर लिया मर्द औरतें बच्चे सब मुजतमा हो गए तो वह ब–हुक्मे इलाही आग बनकर भड़क उठा और वह उसमें इस तरह जल गए जैसे भाड़ में कोई चीज़ भुन जाती है क़तादा का **(बक़िया सफ़हा 292 पर)**

إِلَّآ أَخَذْنَآ أَهْلَهَا بِالْبَأْسَآءِ وَالضَّرَّآءِ لَعَلَّهُمْ يَضَّرَّعُونَ ﴿٩٤﴾ ثُمَّ بَدَّلْنَا مَكَانَ السَّيِّئَةِ الْحَسَنَةَ حَتّٰى عَفَوْا وَّقَالُوا قَدْ مَسَّ اٰبَآءَنَا الضَّرَّآءُ وَالسَّرَّآءُ
فَأَخَذْنٰهُمْ بَغْتَةً وَّهُمْ لَا يَشْعُرُونَ ﴿٩٥﴾ وَلَوْ أَنَّ أَهْلَ الْقُرٰٓى اٰمَنُوا وَاتَّقَوْا لَفَتَحْنَا عَلَيْهِمْ بَرَكٰتٍ مِّنَ السَّمَآءِ وَالْأَرْضِ وَلٰكِنْ كَذَّبُوا فَأَخَذْنٰهُمْ بِمَا
كَانُوا يَكْسِبُونَ ﴿٩٦﴾ أَفَأَمِنَ أَهْلُ الْقُرٰٓى أَنْ يَّأْتِيَهُمْ بَأْسُنَا بَيَاتًا وَّهُمْ نَآئِمُونَ ﴿٩٧﴾ أَوَأَمِنَ أَهْلُ الْقُرٰٓى أَنْ يَّأْتِيَهُمْ بَأْسُنَا ضُحًى وَّهُمْ يَلْعَبُونَ ﴿٩٨﴾ أَفَأَمِنُوا مَكْرَ
اللّٰهِ فَلَا يَأْمَنُ مَكْرَ اللّٰهِ إِلَّا الْقَوْمُ الْخٰسِرُونَ ﴿٩٩﴾ أَوَلَمْ يَهْدِ لِلَّذِيْنَ يَرِثُونَ الْأَرْضَ مِنْ بَعْدِ أَهْلِهَآ أَنْ لَّوْ نَشَآءُ أَصَبْنٰهُمْ بِذُنُوبِهِمْ وَنَطْبَعُ عَلٰى
قُلُوبِهِمْ فَهُمْ لَا يَسْمَعُونَ ﴿١٠٠﴾ تِلْكَ الْقُرٰى نَقُصُّ عَلَيْكَ مِنْ أَنْبَآئِهَا وَلَقَدْ جَآءَتْهُمْ رُسُلُهُمْ بِالْبَيِّنٰتِ فَمَا كَانُوا لِيُؤْمِنُوا بِمَا كَذَّبُوا مِنْ قَبْلُ

इल्ला अ–ख़ज़्ना अह्लहा बिल्बअ्साइ वज़्ज़र्राइ ल–अ़ल्लहुम् यज़्ज़र्रअ़ून(94)सुम्–म बद्दल्ना मकानस् सय्यि–अतिल् ह़–स–न–त ह़त्ता अ़–फ़व् व क़ालू क़द् मस्–स आबा–अ नज़्–ज़र्राउ वस्सर्राउ फ़–अ– ख़ज़्नाहुम् बग़्–त–तंव् व हुम् ला यश्अुरून(95)व लौ अन्–न अह्–लल्क़ुरा आ–मनू वत्तक़ौ ल–फ़–तह़्ना अ़लैहिम् ब–रकातिम् मिनस्–समाइ वल्अर्ज़ि व लाकिन् कज़्ज़बू फ़–अ–ख़ज़्नाहुम् बिमा कानू यक्सिबून(96)अ–फ़–अमि–न अह्लुल्क़ुरा अंय्यअ्ति–यहुम् बअ्–सुना बयातंव्–व हुम् नाइमून(97)अ–व अमि–न अह्लुल्क़ुरा अंय्य–अ्ति–यहुम् बअ्सुना ज़ुहंव् व हुम् यलअ़बून(98)अ–फ़–अमिनू मक्रल्लाहि फ़ला यअ्–मनु मक्रल्लाहि इल्लल्क़ौमुल् ख़ासि–रून(99)अ–व लम् यह्दि लिल्लज़ी–न यरिसूनल् अर्–ज़ मिम् बअ़्दि अह्लिहा अंल्लौ नशाउ अ–सब्ना–हुम् बिज़ुनूबिहिम् व नत्बअ़ु अ़ला क़ुलूबिहिम् फ़हुम् ला यस्मअ़ून(100)तिल्कल्क़ुरा नक़ुस्सु अ़लै–क मिन् अम्बाइहा व ल–क़द् जाअत्हुम् रुसुलुहुम् बिल्बय्यिनाति फ़मा कानू लियुअ्मिनू बिमा कज़्ज़बू मिन् क़ब्लु

मगर यह कि उसके लोगों को सख़्ती और तकलीफ़ में पकड़ा(फ़ा177) कि वह किसी तरह ज़ारी करें(94) (फ़ा178) फिर हमने बुराई की जगह भलाई बदल दी (फ़ा179) यहां तक कि वह बहुत हो गए (फ़ा180) और बोले बेशक हमारे बाप दादा को रंज व राहत पहुंचे थे (फ़ा181) तो हमने उन्हें अचानक उनकी ग़फ़लत में पकड़ लिया(95) (फ़ा182) और अगर बस्तियों वाले ईमान लाते और डरते (फ़ा183) तो ज़रूर हम उन पर आसमान और ज़मीन से बरकतें खोल देते (फ़ा184) मगर उन्होंने तो झुठलाया (फ़ा185) तो हमने उन्हें उनके किए पर गिरिफ़्तार किया(96) (फ़ा186) क्या बस्तियों वाले (फ़ा187) नहीं डरते कि उन पर हमारा अ़ज़ाब रात को आए जब वह सोते हों(97) या बस्तियों वाले नहीं डरते कि उन पर हमारा अ़ज़ाब दिन चढ़े आये जब वह खेल रहे हों(98)(फ़ा188) क्या अल्लाह की ख़फ़ी तदबीर से निडर हैं (फ़ा189) तो अल्लाह की ख़फ़ी तबदीर से निडर नहीं होते मगर तबाही वाले(99) (फ़ा190) (रुकूअ़. 2) और क्या वह जो ज़मीन के मालिकों के बाद उसके वारिस हुए उन्हें इतनी हिदायत न मिली कि हम चाहें तो उन्हें उनके गुनाहों पर आफ़त पहुंचायें (फ़ा191) और हम उनके दिलों पर मुहर करते हैं कि वह कुछ नहीं सुनते(100)(फ़ा192) यह बस्तियां हैं (फ़ा193) जिनके अहवाल हम तुम्हें सुनाते हैं (फ़ा194) और बेशक उनके पास उनके रसूल रौशन दलीलें (फ़ा195) लेकर आये तो वह (फ़ा196) इस क़ाबिल न हुए कि वह उस पर ईमान लाते जिसे पहले

(फ़ा177) फ़क्र व तंगदस्ती और मरज़ व बीमारी में गिरिफ़्तार किया (फ़ा178) तकब्बुर छोड़ें तौबा करें हुक्मे इलाही के मुतीअ़ बनें (फ़ा179) कि सख़्ती व तकलीफ़ के बाद राहत व आसाईश पहुंचना और बदनी व माली निअ़मतें मिलना इताअ़त व शुक्रगुज़ारी का मुस्तदई है (फ़ा180) उनकी तादाद भी ज़्यादा हुई और माल भी बढ़े (फ़ा181) यानी ज़माना का दस्तूर ही यह है कि कभी तकलीफ़ होती है कभी राहत हमारे बाप दादा पर भी ऐसे अहवाल गुज़र चुके हैं इससे उनका मुद्दआ़ यह था कि पिछला ज़माना जो सख़्तियों में गुज़रा है वह अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से कुछ अ़क़ूबत व सज़ा न था तो अपना दीन तर्क करना न चाहिए न उन लोगों ने शिद्दत व तकलीफ़ से कुछ नसीहत हासिल की न राहत व आराम से उनमें कोई जज़्बए शुक्र व ताअ़त पैदा हुआ वह ग़फ़लत में सरशार रहे (फ़ा182) जब कि उन्हें अ़ज़ाब का ख़्याल भी न था इन वाक़िआ़त से इबरत हासिल करनी चाहिए और बन्दों को गुनाह व सरकशी तर्क करके अपने मालिक का रज़ा जू होना चाहिए। (फ़ा183) **(बक़िया सफ़हा 293 पर)**

كَذٰلِكَ يَطۡبَعُ اللّٰهُ عَلٰى قُلُوۡبِ الۡكٰفِرِيۡنَ ﴿۱۰۱﴾ وَمَا وَجَدۡنَا لِاَكۡثَرِهِمۡ مِّنۡ عَهۡدٍ‌ ۚ وَاِنۡ وَّجَدۡنَاۤ اَكۡثَرَهُمۡ لَفٰسِقِيۡنَ ﴿۱۰۲﴾ ثُمَّ بَعَثۡنَا مِنۡۢ بَعۡدِهِمۡ مُّوۡسٰى بِاٰيٰتِنَاۤ اِلٰى فِرۡعَوۡنَ وَمَلَا۟ئِهٖ فَظَلَمُوۡا بِهَا‌ ۚ فَانۡظُرۡ كَيۡفَ كَانَ عَاقِبَةُ الۡمُفۡسِدِيۡنَ ﴿۱۰۳﴾ وَقَالَ مُوۡسٰى يٰفِرۡعَوۡنُ اِنِّىۡ رَسُوۡلٌ مِّنۡ رَّبِّ الۡعٰلَمِيۡنَ ۙ ﴿۱۰۴﴾ حَقِيۡقٌ عَلٰٓى اَنۡ لَّاۤ اَقُوۡلَ عَلَى اللّٰهِ اِلَّا الۡحَـقَّ‌ ؕ قَدۡ جِئۡتُكُمۡ بِبَيِّنَةٍ مِّنۡ رَّبِّكُمۡ فَاَرۡسِلۡ مَعِىَ بَنِىۡۤ اِسۡرَآءِيۡلَ ﴿۱۰۵﴾ قَالَ اِنۡ كُنۡتَ جِئۡتَ بِاٰيَةٍ فَاۡتِ بِهَاۤ اِنۡ كُنۡتَ مِنَ الصّٰدِقِيۡنَ ﴿۱۰۶﴾ فَاَلۡقٰى عَصَاهُ فَاِذَا هِىَ ثُعۡبَانٌ مُّبِيۡنٌ ۖ ﴿۱۰۷﴾ وَّنَزَعَ يَدَهٗ فَاِذَا هِىَ بَيۡضَآءُ لِلنّٰظِرِيۡنَ ﴿۱۰۸﴾ قَالَ الۡمَلَاُ مِنۡ قَوۡمِ فِرۡعَوۡنَ اِنَّ هٰذَا لَسٰحِرٌ عَلِيۡمٌ ۙ ﴿۱۰۹﴾ يُّرِيۡدُ اَنۡ يُّخۡرِجَكُمۡ مِّنۡ اَرۡضِكُمۡ‌ ۚ فَمَاذَا تَاۡمُرُوۡنَ ﴿۱۱۰﴾ قَالُوۡۤا اَرۡجِهۡ وَاَخَاهُ وَاَرۡسِلۡ فِى الۡمَدَآٮِٕنِ حٰشِرِيۡنَ ۙ ﴿۱۱۱﴾ يَاۡتُوۡكَ بِكُلِّ سٰحِرٍ عَلِيۡمٍ ﴿۱۱۲﴾

कज़ालि-क यत्बअुल्लाहु अ़ला कुलूबिल् काफ़िरीन(101)व मा व-जद्ना लि-अक्स़रिहिम् मिन् अ़ह्दिन् व इंव्व-जद्ना अक्स़-रहुम् लफ़ा-सिक़ीन(102)सुम्-म ब-अ़स्ना मिम् बअ़्दिहिम् मूसा बिआयातिना इला फ़िरऔ-न व म-ल-इही फ़-ज़-लमू बिहा फ़न्ज़ुर् कै-फ़ का-न आ़क़ि-बतुल् मुफ़्सिदीन(103)व क़ा-ल मूसा या फ़िरऔनु इन्नी रसूलुम् मिर्रब्बिल् आ़-लमीन(104)हक़ीक़ुन् अ़ला अंल्ला अक़ू-ल अ़लल्लाहि इल्लल्हक़्-क क़द् जिअ्तुकुम् बि-बय्यि-नतिम् मिर्रब्बिकुम् फ़-अर्सिल् मअ़ि-य बनी इस्राईल(105)क़ा-ल इन् कुन्-त जिअ्-त बिआ-यतिन् फ़अ्ति बिहा इन् कुन्-त मिनस्सादिक़ीन(106)फ़-अल्क़ा अ़साहु फ़-इज़ा हि-य सुअ्बानुम् मुबीन(107)व न-ज़-अ़ य-दहू फ़-इज़ा हि-य बैज़ाउ लिन्नाज़िरीन(108)क़ालल् म-लउ मिन् क़ौमि फ़िरऔ-न इन्-न हाज़ा लसाहिरुन् अ़लीम(109) युरीदु अंय्युख़्रि-जकुम् मिन् अर्ज़िकुम् फ़-माज़ा तअ्मुरून(110)क़ालू अर्जिह् व अख़ाहु व अर्सिल् फ़िल्-मदाइनि हाशिरीन(111)यअ्तू-क बिकुल्लि साहिरिन् अ़लीम(112)

झुठला चुके थे(फ़ा197) अल्लाह यूं ही छाप लगा देता है काफ़िरों के दिलों पर(101)(फ़ा198) और उनमें अक्सर को हमने क़ौल का सच्चा न पाया (फ़ा199) और ज़रूर उनमें अक्सर को बे हुक्म ही पाया।(102) फिर उन (फ़ा200) के बाद हमने मूसा को अपनी निशानियों (फ़ा201) के साथ फ़िरऔन और उसके दरबारियों की तरफ़ भेजा तो उन्होंने उन निशानियों पर ज़्यादती की (फ़ा202) तो देखो कैसा अंजाम हुआ मुफ़्सिदों का।(103) और मूसा ने कहा, ऐ फ़िरऔ़न मैं परवरदिगारे आलम का रसूल हूं।(104) मुझे सज़ावार है कि अल्लाह पर न कहूं मगर सच्ची बात (फ़ा203) मैं तुम सब के पास तुम्हारे रब की तरफ़ से निशानी लेकर आया हूं (फ़ा204) तो तू बनी इसराईल को मेरे साथ छोड़ दे।(105)(फ़ा205) बोला अगर तुम कोई निशानी लेकर आये हो तो लाओ अगर सच्चे हो।(106) तो मूसा ने अपना अ़सा डाल दिया वह फ़ौरन एक ज़ाहिर अज़दहा हो गया।(107)(फ़ा206) और अपना हाथ गिरेबान में डालकर निकाला तो वह देखने वालों के सामने जगमगाने लगा।(108) (फ़ा207) (रुकूअ़ 3) क़ौमे फ़िरऔन के सरदार बोले यह तो एक इल्म वाला जादूगर है।(109)(फ़ा208) तुम्हें तुम्हारे मुल्क (फ़ा209) से निकाला चाहता है तो तुम्हारा क्या मश्वरा है।(110) बोले इन्हें और इनके भाई (फ़ा210) को ठहरा और शहरों में लोग जमा करने वाले भेज दे।(111) कि हर इल्म वाले जादूगर को तेरे पास ले आयें।(112) (फ़ा211)

(फ़ा197) अपने कुफ़्र व तकज़ीब पर जमे ही रहे (फ़ा198) जिनकी निस्बत उसके इल्म में है कि कुफ़्र पर क़ायम रहेंगे और कभी ईमान न लायेंगे (फ़ा199) उन्होंने अल्लाह के अहद पूरे न किये उन पर जब कभी कोई मुसीबत आती तो अहद करते कि या रब तू अगर इससे हमें नजात दे तो हम ज़रूर ईमान लायेंगे फिर जब नजात पाते अहद से फिर जाते (मदारिक) (फ़ा200) अम्बिया मज़कूरीन (फ़ा201) यानी मोअ़जेज़ात वाज़ेहात मिस्ल यदे बैज़ा व अ़सा वग़ैरह (फ़ा202) उन्हें झुठलाया और कुफ़्र किया (फ़ा203) क्योंकि रसूल की यही शान है वह कभी ग़लत बात नहीं कहते और तबलीग़े रिसालत में उनका किज़्ब मुमकिन नहीं (फ़ा204) जिस से मेरी रिसालत साबित है और वह निशानी मोअ़जेज़ात हैं (फ़ा205) और अपनी क़ैद से आज़ाद कर दे ताकि वह मेरे साथ अर्ज़े मुक़द्दसा में चले जायें जो उनका वतन है (फ़ा206) हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा ने फ़रमाया कि जब हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलातु वस्सलाम ने अ़सा डाला तो वह एक बड़ा अज़दहा बन गया ज़र्द रंग मुंह खोले हुए ज़मीन से एक मील ऊंचा अपनी दुम पर खड़ा हो गया और एक जबड़ा उसने ज़मीन पर रखा और एक क़स्रे शाही की दीवार पर फिर उसने फ़िरऔ़न की तरफ़ रुख़ किया तो फ़िरऔ़न अपने तख़्त से कूद कर भागा और डर से उसकी रीह निकल गई और लोगों की **(बक़िया सफ़हा 293 पर)**

وَجَآءَ السَّحَرَةُ فِرْعَوْنَ قَالُوْٓا اِنَّ لَنَا لَاَجْرًا اِنْ كُنَّا نَحْنُ الْغٰلِبِيْنَ ﴿۱۱۳﴾ قَالَ نَعَمْ وَاِنَّكُمْ لَمِنَ الْمُقَرَّبِيْنَ ﴿۱۱۴﴾ قَالُوْا يٰمُوْسٰٓى اِمَّآ اَنْ تُلْقِيَ وَاِمَّآ اَنْ

نَّكُوْنَ نَحْنُ الْمُلْقِيْنَ ﴿۱۱۵﴾ قَالَ اَلْقُوْا ۚ فَلَمَّآ اَلْقَوْا سَحَرُوْٓا اَعْيُنَ النَّاسِ وَاسْتَرْهَبُوْهُمْ وَجَآءُوْ بِسِحْرٍ عَظِيْمٍ ﴿۱۱۶﴾ وَاَوْحَيْنَآ اِلٰى مُوْسٰٓى اَنْ اَلْقِ عَصَاكَ ۚ فَاِذَا

هِيَ تَلْقَفُ مَا يَاْفِكُوْنَ ﴿۱۱۷﴾ فَوَقَعَ الْحَقُّ وَبَطَلَ مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿۱۱۸﴾ فَغُلِبُوْا هُنَالِكَ وَانْقَلَبُوْا صٰغِرِيْنَ ﴿۱۱۹﴾ وَاُلْقِيَ السَّحَرَةُ سٰجِدِيْنَ ﴿۱۲۰﴾ قَالُوْٓا

اٰمَنَّا بِرَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿۱۲۱﴾ رَبِّ مُوْسٰى وَهٰرُوْنَ ﴿۱۲۲﴾ قَالَ فِرْعَوْنُ اٰمَنْتُمْ بِهٖ قَبْلَ اَنْ اٰذَنَ لَكُمْ ۚ اِنَّ هٰذَا لَمَكْرٌ مَّكَرْتُمُوْهُ فِى الْمَدِيْنَةِ لِتُخْرِجُوْا مِنْهَآ

اَهْلَهَا ۚ فَسَوْفَ تَعْلَمُوْنَ ﴿۱۲۳﴾ لَاُقَطِّعَنَّ اَيْدِيَكُمْ وَاَرْجُلَكُمْ مِّنْ خِلَافٍ ثُمَّ لَاُصَلِّبَنَّكُمْ اَجْمَعِيْنَ ﴿۱۲۴﴾ قَالُوْٓا اِنَّآ اِلٰى رَبِّنَا مُنْقَلِبُوْنَ ﴿۱۲۵﴾ وَمَا تَنْقِمُ مِنَّآ

व जा–अस् स–ह्–रतु फ़िर्औ–न क़ालू इन्–न लना ल–अज्रन् इन् कुन्ना नह्नुल्–ग़ालिबीन(113) क़ा–ल न–अ़म् व इन्नकुम् लमिनल् मुक़र्रबीन(114)क़ालू या मूसा इम्मा अन् तुल्कि़–य व इम्मा अन्–नकू–न नह्नुल् मुल्क़ीन(115)क़ा–ल अल्क़ू फ़–लम्मा अल्क़ौ स–ह्रू अअ्.यु–नन्नासि वस्तर्– हबूहुम् व जाऊ बिसिह्रिन् अ़ज़ीम(116)व औहैना इला मूसा अन् अल्कि़ अ़सा–क फ़–इज़ा हि–य तल्क़फ़ु मा यअ्फ़िकून(117)फ़–व–क़–अ़ल् ह़क़्क़ु व ब–त–ल मा कानू यअ्मलून(118) फ़ग़ुलिबू हुनालि–क वन्क़–लबू साग़िरीन(119)व उल्कि़–यस् स–ह्–रतु साजिदीन(120)क़ालू आमन्ना बिरब्बिल् आ़–लमीन(121)रब्बि मूसा व हारून(122)क़ा–ल फ़िर्औ़नु आमन्तुम् बिही क़ब्–ल अन् आ–ज़–न लकुम् इन्–न हाज़ा ल–मक्रुम् म–कर्तुमूहु फ़िल्मदी–नति लितुख़्रिजू मिन्हा अह्लहा फ़सौ–फ़ तअ्लमून(123) लउ–क़त्तिअ़न्–न ऐदि–यकुम व अर्जु–लकुम् मिन् ख़िलाफ़िन् सुम्–म लउ–सल्लि–बन्नकुम् अज्मईन(124)क़ालू इन्ना इला रब्बिना मुन्क़लिबून(125)व मा तन्क़िमु मिन्ना

और जादूगर फ़िरऔन के पास आये बोले कुछ हमें इनआ़म मिलेगा अगर हम ग़ालिब आयें।(113) बोला हां और उस वक़्त तुम मुक़र्रब हो जाओगे।(114) बोले ऐ मूसा या तो (फ़ा212) आप डालें या हम डालने वाले हों।(115) (फ़ा213) कहा तुम्हीं डालो (फ़ा214) जब उन्होंने डाला (फ़ा215) लोगों की निगाहों पर जादू कर दिया और उन्हें डरा दिया और बड़ा जादू लाये(116) और हम ने मूसा को 'वह़ी' फ़रमाई कि अपना अ़सा डाल तो नागाह वह उनकी बनावटों को निगलने लगा।(117) (फ़ा216) तो ह़क़ साबित हुआ और उनका काम बातिल हुआ।(118) तो यहां वह मग़लूब पड़े और ज़लील होकर पलटे।(119) और जादूगर सजदे में गिरा दिये गए।(120) (फ़ा217) बोले हम ईमान लाए जहान के रब पर।(121) जो रब है मूसा और हारून का।(122) फ़िरऔन बोला तुम उस पर ईमान ले आये क़ब्ल इसके कि मैं तुम्हें इजाज़त दूं यह तो बड़ा जअ्.ल (फ़रेब) है जो तुम सबने (फ़ा218) शहर में फैलाया है कि शहर वालों को उससे निकाल दो(123) (फ़ा219) तो अब जान जाओगे। (फ़ा220) क़सम है कि मैं तुम्हारे एक तरफ़ के हाथ और दूसरी तरफ़ के पांव काटूंगा फिर तुम सब को सूली दूंगा।(124) (फ़ा221) बोले हम अपने रब की तरफ़ फिरने वाले हैं।(125) (फ़ा222) और तुझे हमारा क्या बुरा लगा

(फ़ा212) पहले अपना अ़सा (फ़ा213) जादूगरों ने हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलातु वस्सलाम का यह अदब किया कि आपको मुक़द्दम किया और बग़ैर आपकी इजाज़त के अपने अमल में मश्.ग़ूल न हुए इस अदब का एवज़ उन्हें यह मिला कि अल्लाह तआ़ला ने उन्हें ईमान व हिदायत के साथ मुशर्रफ़ किया (फ़ा214) यह फ़रमाना हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम का इस लिए था कि आप उनकी कुछ परवाह नहीं करते थे और एतेमाद कामिल रखते थे कि उनके मोअ्जज़े के सामने सहर नाकाम व मग़लूब होगा। (फ़ा215) अपना सामान जिस में बड़े बड़े रस्से और शहतीर थे तो वह अज़्दहे नज़र आने लगे और मैदान उनसे भरा मालूम होने लगा (फ़ा216) जब हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम ने अपना अ़सा डाला तो वह एक अ़ज़ीमुश्शान अज़्दहा बन गया इब्ने ज़ैद का क़ौल है कि यह इज्तेमाअ. अस्कन्दरिया में हुआ था और हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम के अज़्दहे की दुम समुन्दर के पार पहुंच गई थी वह जादूगरों की सहर कारियों को एक एक करके निगल गया और तमाम रस्से व लट्ठे जो उन्हों ने जमा किये थे जो तीन सौ ऊंट का बार थे सब का ख़ात्मा कर दिया जब मूसा अ़लैहिस्सलातु वस्सलाम ने उसको दस्ते मुबारक में लिया तो पहले की तरह अ़सा हो गया और उसका हजम और वज़न अपने हाल पर रहा यह देख कर जादूगरों **(बक़िया सफ़हा 293 पर)**

إِلَّآ أَنْ اٰمَنَّا بِاٰيٰتِ رَبِّنَا لَمَّا جَآءَتْنَا ۚ رَبَّنَآ أَفْرِغْ عَلَيْنَا صَبْرًا وَّتَوَفَّنَا مُسْلِمِيْنَ ﴿١٢٦﴾ وَقَالَ الْمَلَاُ مِنْ قَوْمِ فِرْعَوْنَ أَتَذَرُ مُوْسٰى وَقَوْمَهٗ لِيُفْسِدُوْا فِي الْاَرْضِ وَيَذَرَكَ وَاٰلِهَتَكَ ۚ قَالَ سَنُقَتِّلُ أَبْنَآءَهُمْ وَنَسْتَحْيٖ نِسَآءَهُمْ ۚ وَإِنَّا فَوْقَهُمْ قٰهِرُوْنَ ﴿١٢٧﴾ قَالَ مُوْسٰى لِقَوْمِهِ اسْتَعِيْنُوْا بِاللّٰهِ وَاصْبِرُوْا ۚ إِنَّ الْاَرْضَ لِلّٰهِ ۙ يُوْرِثُهَا مَنْ يَّشَآءُ مِنْ عِبَادِهٖ ۚ وَالْعَاقِبَةُ لِلْمُتَّقِيْنَ ﴿١٢٨﴾ قَالُوْٓا أُوْذِيْنَا مِنْ قَبْلِ أَنْ تَأْتِيَنَا وَمِنْۢ بَعْدِ مَا جِئْتَنَا ۚ قَالَ عَسٰى رَبُّكُمْ أَنْ يُّهْلِكَ عَدُوَّكُمْ وَيَسْتَخْلِفَكُمْ فِي الْاَرْضِ فَيَنْظُرَ كَيْفَ تَعْمَلُوْنَ ﴿١٢٩﴾ وَلَقَدْ أَخَذْنَآ اٰلَ فِرْعَوْنَ بِالسِّنِيْنَ وَنَقْصٍ مِّنَ الثَّمَرٰتِ لَعَلَّهُمْ يَذَّكَّرُوْنَ ﴿١٣٠﴾ فَإِذَا جَآءَتْهُمُ الْحَسَنَةُ قَالُوْا لَنَا هٰذِهٖ ۚ وَإِنْ تُصِبْهُمْ سَيِّئَةٌ يَّطَّيَّرُوْا بِمُوْسٰى وَمَنْ مَّعَهٗ ۗ أَلَآ إِنَّمَا طٰٓئِرُهُمْ عِنْدَ اللّٰهِ وَلٰكِنَّ أَكْثَرَهُمْ

इल्ला अन् आमन्ना बिआयाति रब्बिना लम्मा जा–अत्ना रब्बना अफ़्रिग् अ़लैना सब्रंव्–व त–वफ़्फ़ना मुस्लिमीन(126)व क़ालल् म–लउ मिन् क़ौमि फ़िरऔ़–न अ–त–ज़रु मूसा व क़ौ–महू लियुफ़्सिदू फ़िल्अर्ज़ि व य–ज़–र–क व आलि–ह–त–क क़ा–ल सनु–क़त्तिलु अब्ना–अहुम् व नस्तह्यी निसा–अहुम् व इन्ना फ़ौ–क़हुम् क़ाहिरून(127)क़ा–ल मूसा लिक़ौमिहिस् तई़नू बिल्लाहि वस्बिरू इन्नल् अर्–ज़ लिल्लाहि यूरिसुहा मंय्यशाउ मिन् इ़बादिही वल्आक़ि–बतु लिल्मुत्त–क़ीन(128)क़ालू ऊज़ीना मिन् क़ब्लि अन् तअ्ति–यना व मिम् बअ़्दि मा जिअ्–तना क़ा–ल अ़सा रब्बुकुम् अंय्युह्लि–क अ़दुव्वकुम् व यस्तख़्लि–फ़कुम् फ़िल्अर्ज़ि फ़–यन्जु–र कै–फ़ तअ्–मलून(129)व ल–क़द अख़ज़्ना आ–ल फ़िरऔ़–न बिस्सिनी–न व नक़्सिम् मिनस् स–मराति ल–अ़ल्लहुम् यज़्–ज़क्करून(130)फ़–इज़ा जा–अत्हुमुल् ह–स–नतु क़ालू लना हाज़िही व इन् तुसिब्हुम् सय्यि–अतुंय्यत्तय्–यरू बिमूसा व मम् म–अ़हू अला इन्नमा ताइरुहुम् अ़िन्दल्लाहि व लाकिन्–न अक्स–रहुम्

यही ना कि हम अपने रब की निशानियों पर ईमान लाए जब वह हमारे पास आई ऐ रब हमारे हम पर सब्र उंडेल दे (फ़ा223) और हमें मुसलमान उठा।(126) (फ़ा224) (रुकूअ़ 4) और क़ौमे फ़िरऔ़न के सरदार बोले क्या तू मूसा और उसकी क़ौम को इस लिए छोड़ता है कि वह ज़मीन में फ़साद फैलायें (फ़ा225) और मूसा तुझे और तेरे ठहराये हुए मअ़बूदों को छोड़ दे (फ़ा226) बोला अब हम उनके बेटों को क़त्ल करेंगे और उनकी बेटियां ज़िन्दा रखेंगे और हम बेशक उन पर ग़ालिब हैं। (127) (फ़ा227) मूसा ने अपनी क़ौम से फ़रमाया अल्लाह की मदद चाहो (फ़ा228) और सब्र करो (फ़ा229) बेशक ज़मीन का मालिक अल्लाह है (फ़ा230) अपने बन्दों में जिसे चाहे वारिस बनाये (फ़ा231) और आख़िर मैदान परहेज़गारों के हाथ है।(128) (फ़ा232) बोले हम सताए गए आपके आने से पहले (फ़ा233) और आपके तशरीफ़ लाने के बाद (फ़ा234) कहा क़रीब है कि तुम्हारा रब तुम्हारे दुश्मन को हलाक करे और उसकी जगह ज़मीन का मालिक तुम्हें बनाये फिर देखे कैसे काम करते हो।(129) (फ़ा235) (रुकूअ़ 5) और बेशक हमने फ़िरऔ़न वालों को बरसों के क़हत और फलों के घटाने से पकड़ा (फ़ा236) कि कहीं वह नसीहत मानें।(130) (फ़ा237) तो जब उन्हें भलाई मिलती (फ़ा238) कहते यह हमारे लिए है (फ़ा239) और जब बुराई पहुंचती तो मूसा और उसके साथ वालों से बद-शगूनी लेते (फ़ा240) सुन लो उनके नसीबा की शामत तो अल्लाह के यहां है (फ़ा241) लेकिन उनमें अक्सर को

(फ़ा223) यानी हमको सब्रे कामिल ताम अ़ता फ़रमा और इस कसरत से अ़ता फ़रमा जैसे पानी किसी पर उंडेल दिया जाता है (फ़ा224) हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा ने फ़रमाया यह लोग दिन के अव्वल वक़्त में जादूगर थे और उसी रोज़ आख़िर वक़्त में शहीद (फ़ा225) यानी मिस्र में तेरी मुख़ालफ़त करें और वहां के बाशिन्दों का दीन बदलें और यह उन्होंने इस लिए कहा था कि साहिरों के साथ छः लाख आदमी ईमान ले आये थे (मदारिक) (फ़ा226) कि न तेरी इबादत करें न तेरे मुक़र्रर किये हुए मअ़बूदों की। सुदी का क़ौल है कि फ़िरऔ़न ने अपनी क़ौम के लिए बुत बनवा दिये थे और उनकी इबादत करने का हुक्म देता था और कहता था कि मैं तुम्हारा भी रब हूं और इन बुतों का भी बाज़ मुफ़स्सिरीन ने फ़रमाया कि फ़िरऔ़न दहरी था यानी सानेअ़ आलम के वजूद का मुन्किर उसका ख़्याल था कि आलिमे सिफ़ली के मुदब्बिर कवाकिब हैं इसी लिए उसने सितारों की सूरतों पर बुत बनवाए थे उनकी ख़ुद भी इबादत करता था और दूसरों को भी उनकी इबादत का हुक्म देता था और अपने आपको मुताअ़ व मख़दूम ज़मीन का कहता था इसी लिए *अना रब्बुकुमुल् अअ़्ला* कहता था (फ़ा227) क़ौमे फ़िरऔ़न के सरदारों ने **(बक़िया सफ़हा 293 पर)**

لَا يَعْلَمُوْنَ ۝ وَقَالُوْا مَهْمَا تَاْتِنَا بِهٖ مِنْ اٰيَةٍ لِّتَسْحَرَنَا بِهَا ۙ فَمَا نَحْنُ لَكَ بِمُؤْمِنِيْنَ ۝ فَاَرْسَلْنَا عَلَيْهِمُ الطُّوْفَانَ وَالْجَرَادَ وَالْقُمَّلَ وَالضَّفَادِعَ
وَالدَّمَ اٰيٰتٍ مُّفَصَّلٰتٍ ۫ فَاسْتَكْبَرُوْا وَكَانُوْا قَوْمًا مُّجْرِمِيْنَ ۝ وَلَمَّا وَقَعَ عَلَيْهِمُ الرِّجْزُ قَالُوْا يٰمُوْسَى ادْعُ لَنَا رَبَّكَ بِمَا عَهِدَ عِنْدَكَ ۚ لَئِنْ كَشَفْتَ
عَنَّا الرِّجْزَ لَنُؤْمِنَنَّ لَكَ وَلَنُرْسِلَنَّ مَعَكَ بَنِيْۤ اِسْرَآءِيْلَ ۝ فَلَمَّا كَشَفْنَا عَنْهُمُ الرِّجْزَ اِلٰۤى اَجَلٍ هُمْ بٰلِغُوْهُ اِذَا هُمْ يَنْكُثُوْنَ ۝ فَانْتَقَمْنَا مِنْهُمْ فَاَغْرَقْنٰهُمْ
فِى الْيَمِّ بِاَنَّهُمْ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا وَكَانُوْا عَنْهَا غٰفِلِيْنَ ۝ وَاَوْرَثْنَا الْقَوْمَ الَّذِيْنَ كَانُوْا يُسْتَضْعَفُوْنَ مَشَارِقَ الْاَرْضِ وَمَغَارِبَهَا الَّتِيْ بٰرَكْنَا فِيْهَا ؕ
وَتَمَّتْ كَلِمَتُ رَبِّكَ الْحُسْنٰى عَلٰى بَنِيْۤ اِسْرَآءِيْلَ ۙ۬ بِمَا صَبَرُوْا ؕ وَدَمَّرْنَا مَا كَانَ يَصْنَعُ فِرْعَوْنُ وَقَوْمُهٗ وَمَا كَانُوْا يَعْرِشُوْنَ ۝ وَجٰوَزْنَا بِبَنِيْۤ

ला यअ्–लमून(131)व क़ालू मह्मा तअ्तिना बिही मिन् आयतिल् लितस्–ह्–रना बिहा फ़मा नह्नु ल–क बिमुअ्मिनीन(132)फ़–अर्सल्ना अ़लैहिमुत्तूफ़ा–न वल्जरा–द वल्कुम्म–ल वज़्ज़फ़ादि–अ़वद्–द–म आयातिम् मुफ़स्सला–तिन् फ़स्तक्बरू व कानू क़ौमम् मुज्रिमीन(133)व लम्मा व–क़्–अ़ अ़लैहिमुर् रिज्ज़ु क़ालू या मूसद् अु–लना रब्ब–क बिमा अ़हि–द अ़िन्द–क लइन् क–शफ़्–त अ़न्नर् रिज्–ज़ लनुअ्–मिनन्–न ल–क व लनुर्–सिलन्–न म–अ़–क बनी इस्राई–ल(134) फ़लम्मा कशफ़्ना अ़न्हुमुर् रिज्–ज़ इला अ–जलिन् हुम् बालिगूहु इज़ा हुम् यन्कुसून(135)फ़न्त–क़म्ना मिन्हुम् फ़–अग़रक़्नाहुम् फ़िल्यम्मि बि–अन्नहुम् कज़्ज़बू बिआयातिना व कानू अ़न्हा ग़ाफ़िलीन (136)व औरस्नल् क़ौमल् लज़ी–न कानू युस्तज़्–अफ़ू–न मशारिक़ल् अर्ज़ि व मग़ारि ब–हल्लती बारक्ना फ़ीहा व तम्मत् कलि–मतु रब्बिकल् हुस्ना अ़ला बनी इस्राई–ल बिमा स–बरू व दम्मर्ना मा का–न यस्नअु फ़िर्औनु व क़ौमुहू व मा कानू यअ्रिशून(137)व जावज़्ना बि–बनी

ख़बर नहीं।(131) और बोले तुम कैसी भी निशानी लेकर हमारे पास आओ कि हम पर उससे जादू करो हम किसी तरह तुम पर ईमान लाने वाले नहीं।(132) (फ़ा242) तो भेजा हमने उन पर तूफ़ान (फ़ा243) और टिड्डी और घुन (या किल्नी या जूएं) और मेंडक और ख़ून जुदा जुदा निशानियां (फ़ा244) तो उन्होंने तकब्बुर किया (फ़ा245) और वह मुजरिम क़ौम थी।(133) और जब उन पर अ़ज़ाब पड़ता कहते ऐ मूसा हमारे लिए अपने रब से दुआ करो उस अ़हद के सबब जो उसका तुम्हारे पास है (फ़ा246) बेशक अगर तुम हम पर अ़ज़ाब उठा दोगे तो हम ज़रूर तुम पर ईमान लायेंगे और बनी इसराईल को तुम्हारे साथ कर देंगे।(134) फिर जब हम उनसे अ़ज़ाब उठा लेते एक मुद्दत के लिए जिस तक उन्हें पहुंचना है जभी वह फिर जाते।(135) तो हमने उनसे बदला लिया तो उन्हें दरिया में डुबो दिया (फ़ा247) इस लिए कि हमारी आयतें झुठलाते और उनसे बेख़बर थे।(136) (फ़ा248) और हमने उस क़ौम को (फ़ा249) जो दबा ली गई थी उस ज़मीन (फ़ा250) के पूरब पच्छिम का वारिस किया जिस में हमने बरकत रखी (फ़ा251) और तेरे रब का अच्छा वादा बनी इसराईल पर पूरा हुआ बदला उनके सब्र का और हमने बरबाद कर दिया (फ़ा252) जो कुछ फ़िरऔ़न और उसकी क़ौम बनाती, और जो चुनाईयां उठाते थे (तामीर करते थे)।(137) और हमने (फ़ा253) बनी

(फ़ा242) जब उनकी सरकशी यहां तक पहुंची तो हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम ने उनके हक़ में बद दुआ़ की आप मुस्तजाबुद्दावात थे दुआ़ क़बूल हुई (फ़ा243) जब जादूगरों के ईमान लाने के बाद भी फ़िरऔ़नी अपने कुफ़्र व सरकशी पर जमे रहे तो उन पर आयाते इलाहिया पयापे वारिद होने लगीं क्योंकि हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम ने दुआ़ की थी कि या रब फ़िरऔ़न ज़मीन में बहुत सरकश हो गया और उसकी क़ौम ने अहद शिकनी की उन्हें ऐसे अ़ज़ाब में गिरिफ़्तार कर जो उनके लिए सज़ा हो और मेरी क़ौम और बाद वालों के लिए इबरत तो अल्लाह तआ़ला ने तूफ़ान भेजा अब्र आया अंधेरा हुआ कसरत से बारिश होने लगी क़िबतियों के घरों में पानी भर गया यहां तक कि वह उस में खड़े रह गए और पानी उनकी गर्दनों की हंसलियों तक आ गया उन में से जो बैठा डूब गया न हिल सकते थे न कुछ काम कर सकते थे सनीचर से सनीचर तक सात रोज़ तक इसी मुसीबत में मुब्तला रहे और बावजूद इसके कि बनी इसराईल के घर उनके घरों से मुत्तसिल थे उनके घरों में पानी न आया जब यह लोग आ़जिज़ हुए तो हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम से अ़र्ज़ किया हमारे लिए दुआ़ फ़रमाइये कि यह मुसीबत रफ़अ़्. हो तो हम आप पर ईमान लायें और बनी इसराईल को आपके साथ भेज दें हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम ने दुआ़ फ़रमाई तूफ़ान की मुसीबत रफ़अ़्. हुई ज़मीन में वह सर सब्ज़ी व शादाबी आई जो पहले न देखी थी खेतियां ख़ूब हुईं दरख़्त ख़ूब फले तो फ़िरऔ़नी कहने लगे यह पानी तो **(बक़िया सफ़हा 294 पर)**

إِسْرَاءِيلَ الْبَحْرَ فَأَتَوْا عَلَىٰ قَوْمٍ يَعْكُفُونَ عَلَىٰ أَصْنَامٍ لَهُمْ ۚ قَالُوا يَا مُوسَى اجْعَلْ لَنَا إِلَٰهًا كَمَا لَهُمْ آلِهَةٌ ۚ قَالَ إِنَّكُمْ قَوْمٌ تَجْهَلُونَ ﴿١٣٨﴾ إِنَّ هَٰؤُلَاءِ
مُتَبَّرٌ مَا هُمْ فِيهِ وَبَاطِلٌ مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿١٣٩﴾ قَالَ أَغَيْرَ اللَّهِ أَبْغِيكُمْ إِلَٰهًا وَهُوَ فَضَّلَكُمْ عَلَى الْعَالَمِينَ ﴿١٤٠﴾ وَإِذْ أَنْجَيْنَاكُمْ مِنْ آلِ فِرْعَوْنَ
يَسُومُونَكُمْ سُوءَ الْعَذَابِ ۖ يُقَتِّلُونَ أَبْنَاءَكُمْ وَيَسْتَحْيُونَ نِسَاءَكُمْ ۚ وَفِي ذَٰلِكُمْ بَلَاءٌ مِنْ رَبِّكُمْ عَظِيمٌ ﴿١٤١﴾ وَوَاعَدْنَا مُوسَىٰ ثَلَاثِينَ
لَيْلَةً وَأَتْمَمْنَاهَا بِعَشْرٍ فَتَمَّ مِيقَاتُ رَبِّهِ أَرْبَعِينَ لَيْلَةً ۚ وَقَالَ مُوسَىٰ لِأَخِيهِ هَارُونَ اخْلُفْنِي فِي قَوْمِي وَأَصْلِحْ وَلَا تَتَّبِعْ سَبِيلَ الْمُفْسِدِينَ ﴿١٤٢﴾
وَلَمَّا جَاءَ مُوسَىٰ لِمِيقَاتِنَا وَكَلَّمَهُ رَبُّهُ قَالَ رَبِّ أَرِنِي أَنْظُرْ إِلَيْكَ ۚ قَالَ لَنْ تَرَانِي وَلَٰكِنِ انْظُرْ إِلَى الْجَبَلِ فَإِنِ اسْتَقَرَّ مَكَانَهُ فَسَوْفَ

इस्राई–लल्बह्–र फ़–अतौ अ़ला क़ौमिंय्यअ़्कुफ़ू–न अ़ला अस्नामिल् लहुम् क़ालू या मूसज्अ़ल् लना इलाहन् कमा लहुम् आलि–हतुन् क़ा–ल इन्नकुम् क़ौमुन् तज्हलून(138)इन्–न हाउलाइ मुतब्बरुम् मा हुम् फ़ीहि व बातिलुम् मा कानू यअ्–मलून(139)क़ा–ल अग़ैरल्लाहि अब्ग़ीकुम् इलाहंव्–व हु–व फ़ज़्ज़–लकुम् अ़–लल्आ़–लमीन(140)व इज़् अन्जैनाकुम् मिन् आलि फ़िर्औ़–न यसूमू–नकुम् सू– अल्अ़ज़ाबि युक़त्तिलू–न अब्ना–अकुम् व यस्तह्यू–न निसा–अकुम् व फ़ी ज़ालिकुम् बलाउम् मिर्रब्बिकुम् अ़ज़ीम(141)व वाअ़द्ना मूसा सलासी–न लै–लतंव्–व अत्मम्नाहा बिअ़श्रिन् फ़–तम्–म मीक़ातु रब्बिही अर्बअ़ी–न लै–लतन् व क़ा–ल मूसा लि–अख़ीहि हारूनख़्लुफ़्नी फ़ी क़ौमी व अस्लिह् व ला तत्तबिअ़् सबीलल् मुफ़्सिदीन(142)व लम्मा जा–अ मूसा लिमीक़ातिना व कल्ल–महू रब्बुहू क़ा–ल रब्बि अरिनी अन्ज़ुर् इलै–क क़ा–ल लन् तरानी व लाकिनिन्ज़ुर् इलल् ज–बलि फ़इनिस्–तक़र्–र मका–नहू फ़सौ–फ़

इसराईल को दरिया पार उतारा तो उनका गुज़र एक ऐसी क़ौम पर हुआ कि अपने बुतों के आगे आसन मारे थे (जमकर बैठे थे) (फ़ा254) बोले ऐ मूसा हमें एक ख़ुदा बना दे जैसा उनके लिएं इतने ख़ुदा हैं बोला तुम ज़रूर जाहिल लोग हो। (138) (फ़ा255) यह हाल तो बरबादी का है जिसमें यह (फ़ा256) लोग हैं और जो कुछ कर रहे हैं निरा बातिल है। (139) कहा क्या अल्लाह के सिवा तुम्हारा और कोई ख़ुदा तलाश करूं हालांकि उसने तुम्हें ज़माने भर पर फ़ज़ीलत दी।(140) (फ़ा257) और याद करो जब हमने तुम्हें फ़िरऔ़न वालों से नजात बख़्शी कि तुम्हें बुरी मार देते तुम्हारे बेटे ज़िबह करते और तुम्हारी बेटियां बाक़ी रखते और इसमें तुम्हारे रब का बड़ा फ़ज़्ल हुआ।(141) (फ़ा258) (रुकूअ़ 6) और हमने मूसा से (फ़ा259) तीस रात का वादा फ़रमाया और उनमें (फ़ा260) दस और बढ़ा कर पूरी कीं तो उसके रब का वादा पूरी चालीस रात का हुआ (फ़ा261) और मूसा ने (फ़ा262) अपने भाई हारून से कहा मेरी क़ौम पर मेरे नाइब रहना और इस्लाह करना और फ़सादियों की राह को दख़ल न देना।(142) और जब मूसा हमारे वादे पर हाज़िर हुआ और उससे उसके रब ने कलाम फ़रमाया (फ़ा263) अ़र्ज़ की ऐ रब मेरे मुझे अपना दीदार दिखा कि मैं तुझे देखूं फ़रमाया तू मुझे हरगिज़ न देख सकेगा (फ़ा264) हां इस पहाड़ की तरफ़ देख यह अगर अपनी जगह पर ठहरा रहा तो अ़नक़रीब तू मुझे

(फ़ा254) और उनकी इबादत करते थे इब्ने जुरैह ने कहा कि यह बुत गाय के शक्ल के थे उनको देख कर बनी इसराईल (फ़ा255) कि इतनी निशानियां देख कर भी न समझे कि अल्लाह वाहिद ला शरी–क लहू है उसके सिवा कोई मुस्तहिके इबादत नहीं और किसी की इबादत जायज़ नहीं। (फ़ा256) बुत परस्त (फ़ा257) यानी ख़ुदा वह नहीं होता जो तलाश करके बना लिया जाये बल्कि ख़ुदा वह है जिसने तुम्हें फ़ज़ीलत दी क्यों कि वह फ़ज़्ल व एहसान पर क़ादिर है तो वही इबादत का मुस्तहिक़ है (फ़ा258) यानी जब उसने तुम पर ऐसी अज़ीम निअ़्मतें फ़रमाईं तो तुम्हें कब शायां है कि तुम उसके सिवा और की इबादत करो (फ़ा259) तौरेत अता फ़रमाने के लिए माह ज़ीक़अ़्दा की (फ़ा260) ज़िलहिज्जा की (फ़ा261) हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम का बनी इसराईल से वादा था कि जब अल्लाह तआ़ला उनके दुश्मन फ़िरऔ़न को हलाक फ़रमा दे तो वह उनके पास अल्लाह तआ़ला की जानिब से एक किताब लायेंगे जिसमें हलाल व हराम का बयान होगा जब अल्लाह तआ़ला ने फ़िरऔ़न को हलाक किया तो हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम ने अपने रब से उस किताब के नाज़िल फ़रमाने की दरख़्वास्त की हुक्म हुआ कि तीस रोज़े रखें जब आप वह रोज़े पूरे कर चुके तो आपको अपने दहने मुबारक में एक तरह की बू मालूम हुई आपने मिस्वाक की मलायका ने अ़र्ज़ किया कि हमें आपके दहन मुबारक से बड़ी महबूब ख़ुश्बू आया करती थी आपने मिस्वाक करके उसको ख़त्म (बक़िया सफ़हा 295 पर)

تَرٰىنِیْ ۚ فَلَمَّا تَجَلّٰی رَبُّهٗ لِلْجَبَلِ جَعَلَهٗ دَكًّا وَّ خَرَّ مُوْسٰی صَعِقًا ۚ فَلَمَّاۤ اَفَاقَ قَالَ سُبْحٰنَكَ تُبْتُ اِلَیْكَ وَ اَنَا اَوَّلُ الْمُؤْمِنِیْنَ ﴿۱۴۳﴾ قَالَ یٰمُوْسٰۤی اِنِّی
اصْطَفَیْتُكَ عَلَی النَّاسِ بِرِسٰلٰتِیْ وَ بِكَلَامِیْ ۖ٘ فَخُذْ مَاۤ اٰتَیْتُكَ وَ كُنْ مِّنَ الشّٰكِرِیْنَ ﴿۱۴۴﴾ وَ كَتَبْنَا لَهٗ فِی الْاَلْوَاحِ مِنْ كُلِّ شَیْءٍ مَّوْعِظَةً وَّ تَفْصِیْلًا
لِّكُلِّ شَیْءٍ ۚ فَخُذْهَا بِقُوَّةٍ وَّ اْمُرْ قَوْمَكَ یَاْخُذُوْا بِاَحْسَنِهَا ؕ سَاُورِیْكُمْ دَارَ الْفٰسِقِیْنَ ﴿۱۴۵﴾ سَاَصْرِفُ عَنْ اٰیٰتِیَ الَّذِیْنَ یَتَكَبَّرُوْنَ فِی الْاَرْضِ بِغَیْرِ الْحَقِّ ؕ
وَ اِنْ یَّرَوْا كُلَّ اٰیَةٍ لَّا یُؤْمِنُوْا بِهَا ۚ وَ اِنْ یَّرَوْا سَبِیْلَ الرُّشْدِ لَا یَتَّخِذُوْهُ سَبِیْلًا ۚ وَ اِنْ یَّرَوْا سَبِیْلَ الْغَیِّ یَتَّخِذُوْهُ سَبِیْلًا ؕ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ كَذَّبُوْا بِاٰیٰتِنَا وَ كَانُوْا
عَنْهَا غٰفِلِیْنَ ﴿۱۴۶﴾ وَ الَّذِیْنَ كَذَّبُوْا بِاٰیٰتِنَا وَ لِقَآءِ الْاٰخِرَةِ حَبِطَتْ اَعْمَالُهُمْ ؕ هَلْ یُجْزَوْنَ اِلَّا مَا كَانُوْا یَعْمَلُوْنَ ﴿۱۴۷﴾ وَ اتَّخَذَ قَوْمُ مُوْسٰی مِنْ بَعْدِهٖ

तरानी फ़–लम्मा त–जल्ला रब्बुहू लिल्–ज–बलि ज–अ़–लहू दक्कंव्–व ख़र्–र मूसा सअ़िक़न् फ़–लम्मा अफ़ा– क़ क़ा–ल सुब्हा–न–क तुब्तु इलै–क व अना अव्वलुल् मुअ्मिनीन(143)क़ा–ल या मूसा इन्निस्तफ़ैतु–क अ़लन्नासि बिरिसालाती व बि–कलामी फ़ख़ुज़् मा आतैतु–क व कुम् मिनश्शाकिरीन(144)व कतब्ना लहू फ़िल्अल्वाहि मिन् कुल्लि शैइम् मौअ़ि–ज़–तंव्–व तफ़्सीलल् लि–कुल्लि शैइन् फ़ख़ुज़्हा बिक़ुव्वतिंव् वअ्मुर् क़ौ–म–क यअ्ख़ुज़ू बि–अह्सनिहा स–उरीकुम् दारल् फ़ासिक़ीन(145)स–अस्रिफ़ु अ़न् आयाति–यल्लज़ी–न य–त–कब्बरू–न फ़िल्अर्ज़ि बिग़ैरिल् हक़्क़ि व इंय्यरौ कुल्–ल आ–यतिल् ला युअ्मिनू बिहा व इंय्यरौ सबीलर् रुश्दि ला यत्तख़िज़ूहु सबीलन् व इंय्यरौ सबीलल् ग़य्यि यत्तख़िज़ूहु सबीलन् ज़ालि–क बि– अन्नहुम् कज़्ज़बू बिआयातिना व कानू अ़न्हा ग़ाफ़िलीन(146)वल्लज़ी–न कज़्ज़बू बिआयातिना व लिक़ाइल् आख़ि–रति हबितत् अअ्–मालुहुम् हल् युज्ज़ौ–न इल्ला मा कानू यअ्–मलून(147)वत्त–ख़–ज़ क़ौमु मूसा मिम् बअ़्दिही

देख लेगा। (फ़ा265) फिर जब उसके रब ने पहाड़ पर अपना नूर चमकाया उसे पाश पाश कर दिया और मूसा गिरा बेहोश फिर जब होश हुआ बोला पाकी है तुझे मैं तेरी तरफ़ रुजूअ़ लाया और मैं सबसे पहला मुसलमान हूं।(143) (फ़ा266) फ़रमाया ऐ मूसा मैंने तुझे लोगों से चुन लिया अपनी रिसालतों और अपने कलाम से, तो ले जो मैं ने तुझे अता फ़रमाया और शुक्र वालों में हो।(144) और हमने उसके लिए तख़्तियों में (फ़ा267) लिख दी हर चीज़ की नसीहत और हर चीज़ की तफ़सील और फ़रमाया ऐ मूसा इसे मज़बूती से ले और अपनी क़ौम को हुक्म दे कि इसकी अच्छी बातें इख़्तियार करें (फ़ा268) अ़नक़रीब मैं तुम्हें दिखाऊंगा बे हुक्मों का घर।(145) (फ़ा269) और मैं अपनी आयतों से उन्हें फेर दूंगा जो ज़मीन में नाहक़ अपनी बड़ाई चाहते हैं (फ़ा270) और अगर सब निशानियां देखें उन पर ईमान न लायें और अगर हिदायत की राह देखें उसमें चलना पसन्द न करें (फ़ा271) और गुमराही का रास्ता नज़र पड़े तो उसमें चलने को मौजूद हो जायें यह इस लिए कि उन्होंने हमारी आयतें झुटलाईं और उनसे बेख़बर बने।(146)और जिन्होंने हमारी आयतें और आख़िरत के दरबार को झुठलाया उनका सब किया धरा अकारत गया उन्हे क्या बदला मिलेगा मगर वही जो करते थे।(147)(रुकूअ़ 7) और मूसा के (फ़ा272) बाद उस की क़ौम अपने ज़ेवरों से (फ़ा273)

(फ़ा265) और पहाड़ का साबित रहना अमरे मुमकिन है क्योंकि उसकी निस्बत फ़रमाया *ज–अ़–लहू दक्का* इसको पाश पाश कर दिया तो जो चीज़ अल्लाह तआ़ला की मजऊल है, और जिसको वह मौजूद फ़रमाये मुमकिन है कि वह न मौजूद हो अगर उसको न मौजूद करे क्योंकि वह अपने फ़ेअ़्ल में मुख़्तार है इससे साबित हुआ कि पहाड़ का इस्तिक़रार अम्रे मुमकिन है मुहाल नहीं और जो चीज़ अम्रे मुमकिन पर मुअ़ल्लक़ की जाये वह भी मुमकिन ही होती है मुहाल नहीं होती लिहाज़ा दीदारे इलाही जिसको पहाड़ के साबित रहने पर मुअ़ल्लक़ फ़रमाया गया वह मुमकिन हुआ तो उनका क़ौल बातिल है जो अल्लाह तआ़ला का दीदार मुहाल बताते हैं। (फ़ा266) बनी इसराईल में से (फ़ा267) तौरेत की जो सात या दस थीं ज़बुर्जद की या ज़मुर्रद की (फ़ा268) उसके अहकाम पर आमिल हों (फ़ा269) जो आख़िरत में उनका ठिकाना है। हसन व अता ने कहा कि बेहुक्मों के घर से जहन्नम मुराद है क़तादा का क़ौल है कि माना यह हैं कि मैं तुम्हें शाम में दाख़िल करूंगा और गुज़री हुई उम्मतों के मनाज़िल दिखाऊंगा जिन्होंने अल्लाह की मुख़ालफ़त की ताकि तुम्हें इससे इबरत हासिल हो अतिया औफ़ी का क़ौल है **(बक़िया सफ़हा 294 पर)**

مِنْ حُلِيِّهِمْ عِجْلًا جَسَدًا لَّهُ خُوَارٌ ۚ أَلَمْ يَرَوْا أَنَّهُ لَا يُكَلِّمُهُمْ وَلَا يَهْدِيهِمْ سَبِيلًا ۘ اتَّخَذُوهُ وَكَانُوا ظَالِمِينَ ﴿١٤٨﴾ وَلَمَّا سُقِطَ فِي أَيْدِيهِمْ وَرَأَوْا أَنَّهُمْ

قَدْ ضَلُّوا قَالُوا لَئِن لَّمْ يَرْحَمْنَا رَبُّنَا وَيَغْفِرْ لَنَا لَنَكُونَنَّ مِنَ الْخَاسِرِينَ ﴿١٤٩﴾ وَلَمَّا رَجَعَ مُوسَىٰ إِلَىٰ قَوْمِهِ غَضْبَانَ أَسِفًا قَالَ بِئْسَمَا خَلَفْتُمُونِي

مِن بَعْدِي ۖ أَعَجِلْتُمْ أَمْرَ رَبِّكُمْ ۖ وَأَلْقَى الْأَلْوَاحَ وَأَخَذَ بِرَأْسِ أَخِيهِ يَجُرُّهُ إِلَيْهِ ۚ قَالَ ابْنَ أُمَّ إِنَّ الْقَوْمَ اسْتَضْعَفُونِي وَكَادُوا يَقْتُلُونَنِي فَلَا

تُشْمِتْ بِيَ الْأَعْدَاءَ وَلَا تَجْعَلْنِي مَعَ الْقَوْمِ الظَّالِمِينَ ﴿١٥٠﴾ قَالَ رَبِّ اغْفِرْ لِي وَلِأَخِي وَأَدْخِلْنَا فِي رَحْمَتِكَ ۖ وَأَنتَ أَرْحَمُ الرَّاحِمِينَ ﴿١٥١﴾ إِنَّ الَّذِينَ

اتَّخَذُوا الْعِجْلَ سَيَنَالُهُمْ غَضَبٌ مِّن رَّبِّهِمْ وَذِلَّةٌ فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا ۚ وَكَذَٰلِكَ نَجْزِي الْمُفْتَرِينَ ﴿١٥٢﴾ وَالَّذِينَ عَمِلُوا السَّيِّئَاتِ ثُمَّ تَابُوا مِن بَعْدِهَا وَآمَنُوا

मिन् हुलिय्यिहिम् अिज्लन् ज–स–दल् लहू ख़ुवारुन् अ–लम् यरौ अन्नहू ला युकल्लिमुहुम् व ला यह्दीहिम् सबीला इत्–त–ख़ज़ूहु व कानू ज़ालिमीन(148)व लम्मा सुकि़–त फ़ी ऐदीहिम् व रऔ अन्नहुम् क़द् ज़ल्लू क़ालू लइल्लम् यर् ह़म्ना रब्बुना व यग़्फ़िर् लना ल–नकूनन्–न मिनल् ख़ासिरीन(149)व लम्मा र–ज–अ़ मूसा इला क़ौमिही ग़ज़्बा–न असिफ़न् क़ा–ल बिअ्–समा ख़लफ़्तुमूनी मिम्बअ्दी अ–अ़जिल्तुम् अम्–र रब्बिकुम् व अल्क़ल् अल्वा–ह़ व अ–ख़–ज बि–रअ्सि अख़ीहि यजुर्रुहू इलैहि क़ालब्–न उम्–म इन्नल् क़ौमस्तज़् अ़फ़ूनी व कादू यक़्तुलून–नी फ़ला तुश्मित् बियल् अअ्दा–अ व ला तज्अ़ल्नी म–अ़ल् क़ौमिज़्ज़ालिमीन(150)क़ा–ल रब्बिग़्फ़िर्ली व लि–अख़ी व अद्–ख़िल्ना फ़ी रह़्मति–क व अन्–त अर्–ह़मुर्राहि़मीन(151) इन्नल्ल–ज़ी–नत् त–ख़ज़ुल् अिज्–ल स–यनालुहुम् ग़–ज़बुम् मिर्रब्बिहिम् व ज़िल्लतुन् फ़िल्ह़यातिद्दुन्या व कज़ालि–क नज्ज़िल् मुफ़्तरीन(152)वल्लज़ी–न अ़मिलुस् सय्यिआति सुम्–म ताबू मिम् बअ्दिहा व आ–मनू

एक बछड़ा बना बैठी बेजान का धड़ (फ़ा274) गाय की तरह आवाज़ करता क्या न देखा कि वह उनसे न बात करता है और न उन्हें कुछ राह बताये (फ़ा275) उसे लिया और वह ज़ालिम थे।(148) (फ़ा276) और जब पछताए और समझे कि हम बहके, बोले अगर हमारा रब हम पर मेह़र न करे और हमें न बख़्शे तो हम तबाह हुए।(149) और जब मूसा (फ़ा277) अपनी क़ौम की तरफ़ पलटा ग़ुस्से में भरा झुंझलाया हुआ (फ़ा278) कहा तुमने क्या बुरी मेरी जानशीनी की मेरे बाद (फ़ा279) क्या तुम ने अपने रब के हुक्म से जल्दी की (फ़ा280) और तख़्तियां डाल दीं (फ़ा281) और अपने भाई के सर के बाल पकड़ कर अपनी तरफ़ खींचने लगा (फ़ा282) कहा ऐ मेरे मांजाए, (फ़ा283) क़ौम ने मुझे कमज़ोर समझा और क़रीब था कि मुझे मार डालें तू मुझ पर दुश्मनों को न हंसा (फ़ा284) और मुझे ज़ालिमों में न मिला।(150) (फ़ा285) अ़र्ज़ की ऐ मेरे रब मुझे और मेरे भाई को बख़्श दे (फ़ा286) और हमें अपनी रहमत के अन्दर ले ले और तू सब मेहर वालों से बढ़कर मेह़र वाला।(151) (रुकूअ़ 8) बेशक वह जो बछड़ा ले बैठे अंक़रीब उन्हें उनके रब का ग़ज़ब और ज़िल्लत पहुंचना है दुनिया की ज़िन्दगी में और हम ऐसा ही बदला देते हैं बुहतानहायों (बांधने वालों) को।(152) और जिन्होंने बुराईयां कीं और उनके बाद तौबा की और ईमान लाये

(फ़ा274) और उसके मुंह में हज़रत जिबरील के घोड़े के क़दम के नीचे की ख़ाक डाली जिसके असर से वह (फ़ा275) नाक़िस है, आ़जिज़ है, जमाद है, या हैवान दोनों तक़दीरों पर सलाहियत नहीं रखता कि पूजा जाये (फ़ा276) कि उन्होंने अल्लाह तआ़ला की इबादत से एअ्राज़ किया और ऐसे आ़जिज़ व नाक़िस बछड़े को पूजा (फ़ा277) अपने रब की मुनाजात से मुशर्रफ़ होकर तूर से (फ़ा278) इस लिए कि अल्लाह तआ़ला ने उनको ख़बर दे दी थी कि सामरी ने उनकी क़ौम को गुमराह कर दिया (फ़ा279) कि लोगों को बछड़ा पूजने से न रोका (फ़ा280) और मेरे तौरेत लेकर आने का इन्तेज़ार न किया (फ़ा281) तौरेत की हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम ने (फ़ा282) क्योंकि हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलातु वस्सलाम को अपनी क़ौम का ऐसी बदतरीन मअ़सियत में मुब्तला होना निहायत शाक़ और गिरां हुआ तब हज़रत हारून अ़लैहिस्सलाम ने हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलातु वस्सलाम से (फ़ा283) मैंने क़ौम को रोकने और उनको वअ़ज़ व नसीहत करने में कमी नहीं की लेकिन (फ़ा284) और मेरे साथ ऐसा सुलूक न करो जिस से वह ख़ुश हों (फ़ा285) हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलातु वस्सलाम ने अपने भाई का उज़्र क़बूल करके **(बक़िया सफ़हा 294 पर)**

إِنَّ رَبَّكَ مِنۢ بَعۡدِهَا لَغَفُورٞ رَّحِيمٞ ۝ وَلَمَّا سَكَتَ عَن مُّوسَى ٱلۡغَضَبُ أَخَذَ ٱلۡأَلۡوَاحَۖ وَفِي نُسۡخَتِهَا هُدٗى وَرَحۡمَةٞ لِّلَّذِينَ هُمۡ لِرَبِّهِمۡ يَرۡهَبُونَ ۝ وَٱخۡتَارَ مُوسَىٰ قَوۡمَهُۥ سَبۡعِينَ رَجُلٗا لِّمِيقَٰتِنَاۖ فَلَمَّآ أَخَذَتۡهُمُ ٱلرَّجۡفَةُ قَالَ رَبِّ لَوۡ شِئۡتَ أَهۡلَكۡتَهُم مِّن قَبۡلُ وَإِيَّٰيَۖ أَتُهۡلِكُنَا بِمَا فَعَلَ ٱلسُّفَهَآءُ مِنَّآۖ إِنۡ هِيَ إِلَّا فِتۡنَتُكَ تُضِلُّ بِهَا مَن تَشَآءُ وَتَهۡدِي مَن تَشَآءُۖ أَنتَ وَلِيُّنَا فَٱغۡفِرۡ لَنَا وَٱرۡحَمۡنَاۖ وَأَنتَ خَيۡرُ ٱلۡغَٰفِرِينَ ۝ وَٱكۡتُبۡ لَنَا فِي هَٰذِهِ ٱلدُّنۡيَا حَسَنَةٗ وَفِي ٱلۡأٓخِرَةِ إِنَّا هُدۡنَآ إِلَيۡكَۚ قَالَ عَذَابِيٓ أُصِيبُ بِهِۦ مَنۡ أَشَآءُۖ وَرَحۡمَتِي وَسِعَتۡ كُلَّ شَيۡءٖۚ فَسَأَكۡتُبُهَا لِلَّذِينَ يَتَّقُونَ وَيُؤۡتُونَ ٱلزَّكَوٰةَ وَٱلَّذِينَ هُم بِـَٔايَٰتِنَا يُؤۡمِنُونَ ۝ ٱلَّذِينَ يَتَّبِعُونَ ٱلرَّسُولَ ٱلنَّبِيَّ ٱلۡأُمِّيَّ ٱلَّذِي يَجِدُونَهُۥ مَكۡتُوبًا عِندَهُمۡ فِي

इन्–न रब्ब–क मिम् बअ़्दिहा ल–ग़फ़ूरुर्रहीम(153)व लम्मा स–क–त अ़म् मूसल्–ग़–ज़बु अ–ख़–ज़ल् अल्वा–ह व फ़ी नुस्ख़तिहा हुदंव्–व रह्मतुल् लिल्लज़ी–न हुम् लि–रब्बिहिम् यर्–हबून(154)वख़्ता–र मूसा क़ौ–महू सब्‌ई–न रजुलल् लिमीक़ातिना फ़–लम्मा अ–ख़–ज़त्हुमुर् रज्–फ़तु क़ा–ल रब्बि लौ शिअ्–त अह्लक्–तहुम् मिन् क़ब्लु व इय्या–य अतुह्लिकुना बिमा फ़–अ़–लस् सु–फ़हाउ मिन्ना इन् हि–य इल्ला फ़ित्नतु–क तुज़िल्लु बिहा मन् तशाउ व तह्दी मन् तशाउ अन्–त वलिय्युना फ़ग़्फ़िर् लना वर्–हम्ना व अन्–त ख़ैरुल्–ग़ाफ़िरीन(155) वक्तुब् लना फ़ी हाज़िहिद्दुन्या ह–स–नतंव्–व फ़िल् आख़ि–रति इन्ना हुदना इलै–क क़ा–ल अ़ज़ाबी उसीबु बिही मन् अशाउ व रह्मती वसि–अ़त् कुल्–ल शैइन् फ़–स– अक्तु–बुहा लिल्लज़ी–न यत्तकू–न व युअ्–तूनज़्ज़का–त वल्लज़ी–न हुम् बि–आयातिना युअ्मिनून(156)अल्लज़ी–न यत्तबिअू नर्–रसूलन् नबिय्यल् उम्मिय्यल् लज़ी यजिदू–नहू मक्तूबन् अ़िन्दहुम् फ़ित्तौराति

तो उसके बाद तुम्हारा रब बख़्शने वाला मेहरबान है।(153) (फ़ा287) और जब मूसा का ग़ुस्सा थमा तख़्तियां उठा लीं और उनकी तहरीर में हिदायत और रहमत है उनके लिए जो अपने रब से डरते हैं।(154) और मूसा ने अपनी क़ौम से सत्तर मर्द हमारे वादे के लिए चुने (फ़ा288) फिर जब उन्हें ज़लज़ले ने लिया (फ़ा289) मूसा ने अ़र्ज़ की ऐ रब मेरे तू चाहता तो पहले ही उन्हें और मुझे हलाक कर देता (फ़ा290) क्या तू हमें उस काम पर हलाक फ़रमाएगा जो हमारे बे अ़क़्लों ने किया (फ़ा291) वह नहीं मगर तेरा आज़माना तू उसे बहकाये जिसे चाहे और राह दिखाये जिसे चाहे तू हमारा मौला है तू हमें बख़्श दे और हम पर मेहर कर और तू सबसे बेहतर बख़्शने वाला है।(155) और हमारे लिए इस दुनिया में भलाई लिख (फ़ा292) और आख़िरत में बेशक हम तेरी तरफ़ रुजूअ़ लाये फ़रमाया (फ़ा293) मेरा अ़ज़ाब मैं जिसे चाहूं दूं (फ़ा294) और मेरी रहमत हर चीज़ को घेरे है (फ़ा295) तो अ़क़रीब मैं (फ़ा२९६) नेअ़्मतों को उनके लिए लिख दूंगा जो डरते और ज़कात देते हैं और वह हमारी आयतों पर ईमान लाते हैं।(156) वह जो ग़ुलामी करेंगे उस रसूल बे पढ़े ग़ैब की ख़बरें देने वाले की (फ़ा297) जिसे लिखा हुआ पायेंगे अपने पास

(फ़ा287) मसलाः इस आयत से साबित हुआ कि गुनाह ख़्वाह सग़ीरा हों या कबीरा जब बन्दा उन से तौबा करता है तो अल्लाह तबारक व तआ़ला अपने फ़ज़्ल व रहमत से उन सब को माफ़ फ़रमाता है। (फ़ा288) कि वह हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम के साथ अल्लाह के हुज़ूर में हाज़िर होकर क़ौम की गौसाला परस्ती की उज़्र ख़्वाही करें चुनांचे हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम उन्हें लेकर हाज़िर हुए (फ़ा289) हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा ने फ़रमाया कि ज़लज़ला में मुब्तला होने का सबब यह था कि क़ौम ने जब बछड़ा क़ायम किया था यह उन से जुदा न हुए थे (ख़ाज़िन) (फ़ा290) यानी मीक़ात में हाज़िर होने से पहले ताकि बनी इसराईल उन सब की हलाकत अपनी आंखों से देख लेते और उन्हें मुझ पर क़त्ल की तोहमत लगाने को मौक़ा न मिलता (फ़ा291) यानी हमें हलाक न कर और अपना लुत्फ़ व करम फ़रमा (फ़ा292) और हमें तौफ़ीक़े ताअ़त मरहमत फ़रमा (फ़ा293) अल्लाह तआ़ला ने हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम से (फ़ा294) मुझे इख़्तियार है सब मेरे ममलूक और बन्दे हैं किसी को मजाले एतेराज़ नहीं (फ़ा295) दुनिया में नेक और बद सब को पहुंचती है (फ़ा296) आख़िरत की (फ़ा297) यहां रसूल से इज्माअ़् मुफ़स्सिरीन सय्यदे आलम मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम मुराद हैं आपका ज़िक्र वस्फ़े रिसालत से फ़रमाया गया क्योंकि आप अल्लाह और उसके मख़्लूक़ के दर्मियान वास्ता हैं फ़रायज़े रिसालत अदा फ़रमाते हैं अल्लाह तआ़ला के अवामिर व नही व शराएअ़् व अहकाम उसके बन्दों को पहुंचाते हैं उसके बाद आपकी तौसीफ़ में नबी फ़रमाया **(बक़िया सफ़हा 295 पर)**

التَّوْرٰىةِ وَ الْاِنْجِيْلِ يَاْمُرُهُمْ بِالْمَعْرُوْفِ وَيَنْهٰهُمْ عَنِ الْمُنْكَرِ وَيُحِلُّ لَهُمُ الطَّيِّبٰتِ وَ يُحَرِّمُ عَلَيْهِمُ الْخَبٰٓئِثَ وَ يَضَعُ عَنْهُمْ اِصْرَهُمْ وَ الْاَغْلٰلَ الَّتِيْ كَانَتْ

عَلَيْهِمْ ؕ فَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا بِهٖ وَعَزَّرُوْهُ وَنَصَرُوْهُ وَ اتَّبَعُوا النُّوْرَ الَّذِيْٓ اُنْزِلَ مَعَهٗٓ ۙ اُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ﴿۱۵۷﴾ قُلْ يٰٓاَيُّهَا النَّاسُ اِنِّيْ رَسُوْلُ اللّٰهِ

اِلَيْكُمْ جَمِيْعَا ا۟لَّذِيْ لَهٗ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ ۚ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ يُحْيٖ وَ يُمِيْتُ ۪ فَاٰمِنُوْا بِاللّٰهِ وَ رَسُوْلِهِ النَّبِيِّ الْاُمِّيِّ الَّذِيْ يُؤْمِنُ بِاللّٰهِ وَ كَلِمٰتِهٖ

وَ اتَّبِعُوْهُ لَعَلَّكُمْ تَهْتَدُوْنَ ﴿۱۵۸﴾ وَمِنْ قَوْمِ مُوْسٰٓى اُمَّةٌ يَّهْدُوْنَ بِالْحَقِّ وَ بِهٖ يَعْدِلُوْنَ ﴿۱۵۹﴾ وَقَطَّعْنٰهُمُ اثْنَتَيْ عَشْرَةَ اَسْبَاطًا اُمَمًا ؕ وَ اَوْحَيْنَآ اِلٰى مُوْسٰٓى

اِذِ اسْتَسْقٰىهُ قَوْمُهٗٓ اَنِ اضْرِبْ بِّعَصَاكَ الْحَجَرَ ۚ فَانْۢبَجَسَتْ مِنْهُ اثْنَتَا عَشْرَةَ عَيْنًا ؕ قَدْ عَلِمَ كُلُّ اُنَاسٍ مَّشْرَبَهُمْ ؕ وَ ظَلَّلْنَا عَلَيْهِمُ الْغَمَامَ

वल्इन्जीलि यअ्मुरुहुम् बिल्मअ्–रूफ़ि व यन्हाहुम् अ़निल्–मुन्करि व युहि़ल्लु लहुमुत्त़य्यिबाति व युहर्रिमु अ़लैहिमुल् ख़बाइ–स व य–ज़अु अ़न्हुम् इस्–रहुम् वल्अग़्लालल्लती कानत् अ़लैहिम् फ़ल्लज़ी–न आ–मनू बिही व अ़ज़्ज़रूहु व न–स–रूहु वत्तबअुन्–नूरल्लज़ी उन्ज़ि–ल म–अ़हू उलाइ–क हुमुल् मुफ़्लिहू़न(157)कुल् या अय्युहन्नासु इन्नी रसूलुल्लाहि इलैकुम् जमी–अ़ निल्लज़ी लहू मुल्कुस्समावाति वल्अर्ज़ि ला इला–ह इल्ला हु–व युह़्यी व युमीतु फ़–आमिनू बिल्लाहि व रसूलिहिन्–नबिय्यिल्–उम्मिय्यिल् लज़ी युअ्मिनु बिल्लाहि व कलिमातिही वत्तबिअू़हु ल–अ़ल्लकुम् तह्तदून(158)व मिन् क़ौमि मूसा उम्मतुंय्यह्दू–न बिल्ह़क़्क़ि व बिही यअ्दिलून(159)व क़त्तअ्–नाहुमुस्नतै अ़श्र–त अस्बातन् उम–मन् व औहैना इला मूसा इज़िस्तस्क़ाहु क़ौमुहू अनिज़्रिब् बि–अ़साकल् ह–जर फ़म्ब–ज–सत् मिन्हुस्नता अ़श्–र–त अ़ैनन् क़द् अ़लि–म कुल्लु उनासिम् मश्र–बहुम् व ज़ल्लल्ना अ़लैहिमुल् ग़मा–म

तौरेत और इन्जील में (फ़ा298) वह उन्हें भलाई का हुक्म देगा और बुराई से मना फ़रमाएगा और सुथरी चीज़ें उन के लिए हलाल फ़रमायेगा और गन्दी चीज़ें उन पर हराम करेगा और उन पर से वह बोझ (फ़ा299) और गले के फन्दे (फ़ा300) जो उन पर थे उतारेगा तो वह जो उस पर (फ़ा301) ईमान लायें और उसकी ताज़ीम करें और उसे मदद दें और उस नूर की पैरवी करें जो उसके साथ उतरा (फ़ा302) वही बा मुराद हुए।(157)(रुकूअ़ 9) तुम फ़रमाओ ऐ लोगों मैं तुम सब की तरफ़ उस अल्लाह का रसूल हूं (फ़ा303) कि आसमानों और ज़मीन की बादशाही उसी को है उसके सिवा कोई मअ़बूद नहीं जिलाए और मारे तो ईमान लाओ अल्लाह और उसके रसूल बे पढ़े ग़ैब बताने वाले पर कि अल्लाह और उसकी बातों पर ईमान लाते हैं और इनकी ग़ुलामी करो कि तुम राह पाओ।(158) और मूसा की क़ौम से एक गरोह है कि ह़क़ की राह बताता और उसी से (फ़ा304) इन्साफ़ करता।(159) और हमने उन्हें बांट दिया बारह क़बीले गरोह गरोह और हमने 'वह़ी' भेजी मूसा को जब उससे उसकी क़ौम ने (फ़ा305) पानी मांगा कि इस पत्थर पर अपना अ़सा मारो तो उसमें से बारह चश्मे फूट निकले (फ़ा306) हर गरोह ने अपना घाट पहचान लिया और हमने उन पर अब्र साएबान किया (फ़ा307)

(फ़ा298) यानी तौरेत व इन्जील में आपकी नअ़्त व सिफ़त व नबुव्वत लिखी पायेंगे हदीस हज़रत अता इब्ने यसार ने हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने अ़मर रज़ियल्लाहु अ़न्हु से सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के वह औसाफ़ दरियाफ़्त किये जो तौरेत में मज़कूर हैं उन्होंने फ़रमाया कि हुज़ूर के जो औसाफ़ क़ुरआने करीम में आये हैं उन ही में के बाज़ औसाफ़ तौरेत में मज़कूर हैं इसके बाद उन्होंने पढ़ना शुरू किया ऐ नबी हमने तुम्हें भेजा शाहिद व मुबश्शिर और नज़ीर और उम्मीयों का निगहबान बना कर तुम मेरे बन्दे और मेरे रसूल हो मैं ने तुम्हारा नाम मुतवक्किल रखा न बद ख़ुल्क़ हो न सख़्त मिज़ाज न बाज़ारों में आवाज़ बुलन्द करने वाले न बुराई से बुराई को दफ़ा करो लेकिन ख़ताकारों को माफ़ करते हो और उन पर एहसान फ़रमाते हो अल्लाह तआ़ला तुम्हें न उठाएगा जब तक कि तुम्हारी बरकत से ग़ैर मुस्तक़ीम मिल्लत को इस तरह रास्त न फ़रमा दे कि लोग सिद्क़ व यक़ीन के साथ *ला इला–ह इल्लल्लाहु मुहम्मदुर् रसूलुल्लाह* पुकारने लगें और तुम्हारी बदौलत अन्धी आंखें बीना और बहरे कान शुनवा और पर्दों में लिपटे हुए दिल कुशादा हो जायें और हज़रत कअ़ब अहबार से हुज़ूर की सिफ़ात में तौरेत शरीफ़ का यह मज़मून भी मन्क़ूल है कि अल्लाह तआ़ला ने आपकी सिफ़त में फ़रमाया कि मैं इन्हें हर ख़ूबी के क़ाबिल करूंगा और हर ख़ुल्क़े करीम अ़ता फ़रमाऊंगा और इत्मीनाने क़ल्ब व वक़ार को उनका लिबास बनाऊंगा और ताअ़ात व एहसान को उनका शेआ़र करूंगा और तक़्वा को उनका ज़मीर और हिकमत को उनका राज़ और सिद्क़ व वफ़ा को **(बक़िया सफ़हा 296 पर)**

وَاَنْزَلْنَا عَلَيْهِمُ الْمَنَّ وَالسَّلْوٰى ؕ كُلُوْا مِنْ طَيِّبٰتِ مَا رَزَقْنٰكُمْ ؕ وَمَا ظَلَمُوْنَا وَلٰكِنْ كَانُوْۤا اَنْفُسَهُمْ يَظْلِمُوْنَ ﴿۱۶۰﴾ وَاِذْ قِيْلَ لَهُمُ اسْكُنُوْا هٰذِهِ الْقَرْيَةَ

وَكُلُوْا مِنْهَا حَيْثُ شِئْتُمْ وَقُوْلُوْا حِطَّةٌ وَّادْخُلُوا الْبَابَ سُجَّدًا نَّغْفِرْ لَكُمْ خَطِيْٓـٰٔتِكُمْ ؕ سَنَزِيْدُ الْمُحْسِنِيْنَ ﴿۱۶۱﴾ فَبَدَّلَ الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا مِنْهُمْ قَوْلًا غَيْرَ الَّذِيْ قِيْلَ

لَهُمْ فَاَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ رِجْزًا مِّنَ السَّمَآءِ بِمَا كَانُوْا يَظْلِمُوْنَ ﴿۱۶۲﴾ وَسْــَٔلْهُمْ عَنِ الْقَرْيَةِ الَّتِيْ كَانَتْ حَاضِرَةَ الْبَحْرِ ۘ اِذْ يَعْدُوْنَ فِي السَّبْتِ اِذْ

تَاْتِيْهِمْ حِيْتَانُهُمْ يَوْمَ سَبْتِهِمْ شُرَّعًا وَّيَوْمَ لَا يَسْبِتُوْنَ ۙ لَا تَاْتِيْهِمْ ۛۚ كَذٰلِكَ ۛۚ نَبْلُوْهُمْ بِمَا كَانُوْا يَفْسُقُوْنَ ﴿۱۶۳﴾ وَاِذْ قَالَتْ اُمَّةٌ مِّنْهُمْ لِمَ

تَعِظُوْنَ قَوْمًا ۙ اللّٰهُ مُهْلِكُهُمْ اَوْ مُعَذِّبُهُمْ عَذَابًا شَدِيْدًا ؕ قَالُوْا مَعْذِرَةً اِلٰى رَبِّكُمْ وَلَعَلَّهُمْ يَتَّقُوْنَ ﴿۱۶۴﴾ فَلَمَّا نَسُوْا مَا ذُكِّرُوْا بِهٖۤ اَنْجَيْنَا الَّذِيْنَ

व अन्ज़ल्ना अ़लैहिमुल् मन्–न वस्सल्वा कुलू मिन् तृय्यिबाति मा र–ज़क्नाकुम् व मा ज़–लमूना व लाकिन् कानू अन्फु–सहुम् यज़्लिमून(160)व इज़् क़ी–ल लहुमुस्कुनू हाज़िहिल्क़र्य–त व कुलू मिन्हा हैसु शिअ्तुम् व कूलू ह़ित्–ततुंव् वद्खुलुल्बा–ब सुज्जदन् नग़्फ़िर् लकुम् ख़तीआतिकुम् स–नज़ीदुल् मुह़्सिनीन(161)फ़–बद्–द लल्लज़ी–न ज़–लमू मिन्हुम् क़ौलन् ग़ैरल्लज़ी क़ी–ल लहुम् फ़–अर्सल्ना अ़लैहिम् रिज्–ज़म् मिनस्समाइ बिमा कानू यज़्लिमून(162)वस्–अल्हुम् अ़निल्क़र्–यतिल्लती कानत् ह़ाज़ि–र–तल् बह़्रि इज़् यअ़्दू–न फ़िस्सब्ति इज़् तअ्तीहिम् ह़ीतानुहुम् यौ–म सब्तिहिम् शुर्रअंव्–व यौ–म ला यस्बितू–न ला तअ्तीहिम् कज़ालि–क नब्लूहुम् बिमा कानू यफ़्सुकू़न(163)व इज़् क़ालत् उम्मतुम् मिन्हुम् लि–म तअ़िज़ू–न क़ौ–म निल्लाहु मुह्लि–कुहुम् औ मुअ़ज़्ज़िबुहुम् अ़ज़ाबन् शदीदा क़ालू मअ़्ज़ि–रतन् इला रब्बिकुम् व ल–अ़ल्लहुम् यत्तकू़न(164)फ़–लम्मा नसू मा ज़ुक्किरू बिही अन्जैनल्लज़ी–न

और उन पर मन्न व सलवा उतारा खाओ हमारी दी हुई पाक चीज़ें और उन्होंने (फ़ा308) हमारा कुछ नक़्सान न किया लेकिन अपनी ही जानों का बुरा करते थे।(160)और याद करो जब उन (फ़ा309) से फ़रमाया गया इस शहर में बसो (फ़ा310) और इसमें जो चाहो खाओ और कहो गुनाह उतरे और दरवाज़े में सजदे करते दाख़िल हो हम तुम्हारे गुनाह बख़्श देंगे अ़नक़रीब नेकों को ज़्यादा अ़ता फ़रमाएंगे।(161) तो उनमें के ज़ालिमों ने बात बदल दी उसके ख़िलाफ़ जिसका उन्हें हुक्म था (फ़ा311) तो हमने उन पर आसमान से अ़ज़ाब भेजा बदला उनके ज़ुल्म का।(162) (फ़ा312) (रुकूअ़ 10) और उनसे हाल पूछो उस बस्ती का कि दरिया कनारे थी (फ़ा313) जब वह हफ़्ते के बारे में हद से बढ़ते (फ़ा314) जब हफ़्ते के दिन उनकी मछलियां पानी पर तैरतीं उनके सामने आतीं और जो दिन हफ़्ते का न होता न आतीं इस तरह हम उन्हें आज़माते थे उनकी बेहुक्मी के सबब।(163) और जब उनमें से एक गरोह ने कहा क्यों नसीहत करते हो उन लोगों को जिन्हें अल्लाह हलाक करने वाला है या उन्हें सख़्त अ़ज़ाब देने वाला बोले तुम्हारे रब के हुज़ूर मअ़ज़रत को (फ़ा315) और शायद उन्हें डर हो।(164) (फ़ा316) फिर जब वह भुला बैठे जो नसीहत उन्हें हुई थी हमने बचा लिए

(फ़ा308) नाशुक्री करके (फ़ा309) बनी इसराईल (फ़ा310) यानी बैतुल मक़्दिस में (फ़ा311) यानी हुक्म तो था कि *हित्तुन* कहते हुए दरवाज़े में दाख़िल हों, *हित्तातुन* तौबा व इस्तिग़फ़ार का कलिमा है लेकिन वह बजाए इसके बराहे तमस्ख़ुर *हिन्ततुन फ़ी शअ़ीरा* कहते हुए दाख़िल हुए (फ़ा312) यानी अ़ज़ाब भेजने का सबब उनका ज़ुल्म और हुक्मे इलाही की मुख़ालफ़त करना है (फ़ा313) हज़रत नबीए करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को ख़िताब है कि आप अपने क़रीब रहने वाले यहूद से तौबीख़न उस बस्ती वालों का हाल दरियाफ़्त फ़रमायें मक़सूद इस सवाल से यह था कि कुफ़्फ़ार पर ज़ाहिर कर दिया जाये कि कुफ़्र व मअ़सियत उनका क़दीमी दस्तूर है। सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की नबुव्वत और हुज़ूर के मोअ़्जेज़ात का इंकार करना यह उनके लिए कोई नई बात नहीं है इनके पहले भी कुफ़्र पर मुसिर रहे हैं इसके बाद उनके असलाफ़ का हाल बयान फ़रमाया कि वह हुक्मे इलाही की मुख़ालफ़त के सबब बन्दरों और सूअरों की शक्ल में मस्ख़ कर दिये गए उस बस्ती में इख़्तिलाफ़ है कि वह कौन थी हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा ने फ़रमाया कि वह एक क़रिया मिस्र व मदीना के दर्मियान है। एक क़ौल है कि मद्यन व तूर के दर्मियान ज़ुहरी ने कहा कि वह क़रिया तिबरिया शाम है और हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा की एक रिवायत में है कि वह मद्यन है बाज़ ने कहा ऐला है वल्लाहु तआ़ला अअ़्लम (फ़ा314) कि बावजूद मुमानअ़त के हफ़्ते के रोज़ शिकार करते उस बस्ती के लोग तीन गरोह में मुनक़सिम हो गए थे एक तिहाई **(बक़िया सफ़हा 295 पर)**

يَنْهَوْنَ عَنِ السُّوْٓءِ وَاَخَذْنَا الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا بِعَذَابٍۭ بَـِٕيْسٍۭ بِمَا كَانُوْا يَفْسُقُوْنَ ﴿۱۶۵﴾ فَلَمَّا عَتَوْا عَنْ مَّا نُهُوْا عَنْهُ قُلْنَا لَهُمْ كُوْنُوْا قِرَدَةً
خٰسِـِٕيْنَ ﴿۱۶۶﴾ وَاِذْ تَاَذَّنَ رَبُّكَ لَيَبْعَثَنَّ عَلَيْهِمْ اِلٰى يَوْمِ الْقِيٰمَةِ مَنْ يَّسُوْمُهُمْ سُوْٓءَ الْعَذَابِ ؕ اِنَّ رَبَّكَ لَسَرِيْعُ الْعِقَابِ ۖۚ وَاِنَّهٗ لَغَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿۱۶۷﴾
وَقَطَّعْنٰهُمْ فِى الْاَرْضِ اُمَمًا ۚ مِنْهُمُ الصّٰلِحُوْنَ وَمِنْهُمْ دُوْنَ ذٰلِكَ ۫ وَبَلَوْنٰهُمْ بِالْحَسَنٰتِ وَالسَّيِّاٰتِ لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُوْنَ ﴿۱۶۸﴾ فَخَلَفَ مِنْۢ بَعْدِهِمْ خَلْفٌ
وَّرِثُوا الْكِتٰبَ يَاْخُذُوْنَ عَرَضَ هٰذَا الْاَدْنٰى وَيَقُوْلُوْنَ سَيُغْفَرُ لَنَا ۚ وَاِنْ يَّاْتِهِمْ عَرَضٌ مِّثْلُهٗ يَاْخُذُوْهُ ؕ اَلَمْ يُؤْخَذْ عَلَيْهِمْ مِّيْثَاقُ الْكِتٰبِ
اَنْ لَّا يَقُوْلُوْا عَلَى اللّٰهِ اِلَّا الْحَقَّ وَدَرَسُوْا مَا فِيْهِ ؕ وَالدَّارُ الْاٰخِرَةُ خَيْرٌ لِّلَّذِيْنَ يَتَّقُوْنَ ؕ اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ ﴿۱۶۹﴾ وَالَّذِيْنَ يُمَسِّكُوْنَ بِالْكِتٰبِ وَاَقَامُوا

यन्हौ–न अ़निस्सूइ व अ–ख़ज़्–नल्लज़ी–न ज–लमू बि–अ़ज़ाबिम् बईसिम् बिमा कानू यफ़्सुकून (165)फ़–लम्मा अ़तौ अ़म्मा नुहू अ़न्हु कु़ल्ना लहुम् कूनू कि़–र–द–तन् ख़ासिईन(166)व इज़् त–अज़्ज़–न रब्बु–क ल–यब्–अ–सन्–न अ़लैहिम् इला यौमिल् कि़या–मति मंय्यसूमुहुम् सू–अल्अ़ज़ाबि इन्–न रब्ब–क ल–सरीउल् अि़क़ाबि व इन्नहू ल–ग़फ़ूरुर् रहीम(167)व क़त्तअ्–नाहुम् फ़िल्अर्ज़ि उ–म–मन् मिन्हु–मुस् सालिहू–न व मिन्हुम् दू–न ज़ालि–क व बलौनाहुम् बिल्ह़–सनाति वस्सय्यिआति ल–अ़ल्लहुम् यर्जिअू–न(168)फ़–ख़–ल–फ़ मिम् बअ्दिहिम् ख़ल्फ़ुंव् वरिसुल् किता–ब यअ्ख़ुज़ू–न अ़–र–ज़ हाज़ल् अद्ना व यक़ूलू–न स–युग़्फ़रु लना व इंय्यअ्तिहिम् अ़–रज़ुम् मिस्लुहू यअ्ख़ुज़ूहु अलम् यूअ्ख़ज़् अ़लैहिम् मीसाकु़ल् किताबि अंल्ला यक़ूलू अ़लल्लाहि इल्लल्ह़क़्–क़ व द–रसू मा फ़ीहि वद्दारुल् आख़ि–रतु ख़ैरुल् लिल्लज़ी– न यत्तक़ू–न अ–फ़ला तअ्क़िलून(169)वल्–लज़ी–न युमस्सिकू–न बिल्किताबि व अक़ामुस्–

वह जो बुराई से मना करते थे और ज़ालिमों को बुरे अ़ज़ाब में पकड़ा बदला उनकी नाफ़रमानी का।(165) फिर जब उन्होंने मुमानअ़त के हुक्म से सरकशी की हमने उनसे फ़रमाया हो जाओ बंदर धुतकारे हुए।(166) (फ़ा317) और जब तुम्हारे रब ने हुक्म सुना दिया कि ज़रूर क़ियामत के दिन तक उन (फ़ा318) पर ऐसे को भेजता रहूंगा जो उन्हें बुरी मार चखाए (फ़ा319) बेशक तुम्हारा रब ज़रूर जल्द अ़ज़ाब वाला है (फ़ा320) और बेशक वह बख़्शने वाला मेहरबान है।(167) (फ़ा321) और उन्हें हमने ज़मीन में मुतफ़र्रिक़ कर दिया गरोह गरोह उनमें कुछ नेक हैं (फ़ा322) और कुछ और तरह के (फ़ा323) और हमने उन्हें भलाईयों और बुराईयों से आज़माया कि कहीं वह रुजूअ़. लायें।(168) (फ़ा324)फिर उनकी जगह उनके बाद वह (फ़ा325) ना–ख़लफ़ आये कि किताब के वारिस हुए (फ़ा326)इस दुनिया का माल लेते हैं(फ़ा327) और कहते अब हमारी बख़्शिश होगी (फ़ा328)और अगर वैसा ही माल उनके पास और आये तो ले लें (फ़ा329) क्या उन पर किताब में अ़हद न लिया गया कि अल्लाह की तरफ़ निस्बत न करें मगर हक़ और उन्होंने उसे पढ़ा (फ़ा330) और बेशक पिछला घर बेहतर है परहेज़गारों को (फ़ा331) तो क्या तुम्हें अ़क़्ल नहीं।(169)और वह जो किताब को मज़बूत थामते हैं(फ़ा332)और उन्होंने

(फ़ा317) वह बन्दर हो गए और तीन रोज़ इसी हाल में मुब्तला रह कर हलाक हो गए। (फ़ा318) यहूद (फ़ा319) चुनांचे उन पर अल्लाह तआ़ला ने बुख़्ते नसर और सन्जारीब और शाहाने रूम को भेजा जिन्होंने उन्हें सख़्त ईज़ायें और तकलीफ़ें दीं और क़ियामत तक के लिए उन पर जिज़्या और ज़िल्लत लाज़िम हुई (फ़ा320) उनके लिए जो कुफ़्र पर क़ायम रहें इस आयत से साबित हुआ कि उन पर अ़ज़ाब मुस्तमिर रहेगा दुनिया में भी और आख़िरत में भी (फ़ा321) उनको जो अल्लाह की इताअ़त करें और ईमान लायें (फ़ा322) जो अल्लाह और रसूल पर ईमान लाये और दीन पर साबित रहे। (फ़ा323) जिन्होंने नाफ़रमानी की और जिन्होंने कुफ़्र किया और दीन को बदला और मुतग़य्यर किया (फ़ा324) भलाईयों से निअ़मत व राहत और बुराईयों से शिद्दत व तकलीफ़ मुराद है (फ़ा325) जिनकी दो क़िस्में बयान फ़रमाई गईं (फ़ा326) यानी तौरेत के जो उन्होंने अपने असलाफ़ से पाई और उसके अवामिर व नवाही और तहलील व तहरीम वग़ैरह मज़ामीन पर मुत्तलअ़ हुए। मदारिक में है कि यह वह लोग हैं जो रसूले करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के ज़माना में थे उनकी हालत यह है कि (फ़ा327) बतौर रिश्वत के अहकाम की तब्दील और कलाम की तग़य्यिर पर और वह जानते भी हैं कि यह हराम है लेकिन फिर भी इस गुनाहे अ़ज़ीम पर मुसिर हैं (फ़ा328) और उन गुनाहों पर हम से कुछ मुवाख़ज़ा न होगा (फ़ा329) और आईन्दा भी गुनाह करते चले जायें सुद्दी ने कहा कि बनी इसराईल में कोई क़ाज़ी ऐसा न होता था जो रिश्वत न ले जब उससे कहा जाता था कि तुम रिश्वत लेते हो **(बक़िया सफ़हा 297 पर)**

الصَّلٰوةَ ۗ اِنَّا لَا نُضِيْعُ اَجْرَ الْمُصْلِحِيْنَ ۝ وَاِذْ نَتَقْنَا الْجَبَلَ فَوْقَهُمْ كَاَنَّهٗ ظُلَّةٌ وَّظَنُّوْٓا اَنَّهٗ وَاقِعٌۢ بِهِمْ ۚ خُذُوْا مَآ اٰتَيْنٰكُمْ بِقُوَّةٍ وَّاذْكُرُوْا

مَا فِيْهِ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُوْنَ ۝ وَاِذْ اَخَذَ رَبُّكَ مِنْۢ بَنِيْٓ اٰدَمَ مِنْ ظُهُوْرِهِمْ ذُرِّيَّتَهُمْ وَاَشْهَدَهُمْ عَلٰٓى اَنْفُسِهِمْ ۚ اَلَسْتُ بِرَبِّكُمْ ۭ قَالُوْا بَلٰى ۚ شَهِدْنَا ۚ

اَنْ تَقُوْلُوْا يَوْمَ الْقِيٰمَةِ اِنَّا كُنَّا عَنْ هٰذَا غٰفِلِيْنَ ۝ اَوْ تَقُوْلُوْٓا اِنَّمَآ اَشْرَكَ اٰبَاۗؤُنَا مِنْ قَبْلُ وَكُنَّا ذُرِّيَّةً مِّنْۢ بَعْدِهِمْ ۚ اَفَتُهْلِكُنَا بِمَا فَعَلَ

الْمُبْطِلُوْنَ ۝ وَكَذٰلِكَ نُفَصِّلُ الْاٰيٰتِ وَلَعَلَّهُمْ يَرْجِعُوْنَ ۝ وَاتْلُ عَلَيْهِمْ نَبَاَ الَّذِيْٓ اٰتَيْنٰهُ اٰيٰتِنَا فَانْسَلَخَ مِنْهَا فَاَتْبَعَهُ الشَّيْطٰنُ فَكَانَ

مِنَ الْغٰوِيْنَ ۝ وَلَوْ شِئْنَا لَرَفَعْنٰهُ بِهَا وَلٰكِنَّهٗٓ اَخْلَدَ اِلَى الْاَرْضِ وَاتَّبَعَ هَوٰىهُ ۚ فَمَثَلُهٗ كَمَثَلِ الْكَلْبِ ۚ اِنْ تَحْمِلْ عَلَيْهِ يَلْهَثْ اَوْ تَتْرُكْهُ

स़ला–त इन्ना ला नुज़ीअु अज्रल् मुस्लिहीन(170)व इज़् न–तक़्नल् ज–ब–ल फ़ौ–क़हुम् क–अन्नहू ज़ुल्लतुंव्–व ज़न्नू अन्नहू वाक़िअुम् बिहिम् ख़ुज़ू मा आतैना–कुम् बिक़ुव्वतिंव् वज़्कुरू मा फ़ीहि ल–अ़ल्लकुम् तत्तक़ून(171)व इज़् अ–ख़–ज़ रब्बु–क मिम् बनी आ–द–म मिन् ज़ुहूरिहिम् ज़ुर्रिय्य–तहुम् व अश्ह–द हुम् अ़ला अन्फ़ुसिहिम् अ–लस्तु बिरब्बिकुम् क़ालू बला शहिद्ना अन् तक़ूलू यौमल् क़िया–मति इन्ना कुन्ना अन् हाज़ा ग़ाफ़िलीन(172)औ तक़ूलू इन्नमा अश्र–क आबाउना मिन् क़ब्लु व कुन्ना ज़ुर्रिय्यतम् मिम् बअ़्दिहिम् अ–फ़तुह्लिकुना बिमा फ़–अ़–लल् मुब्तिलून(173)व कज़ालि–क नुफ़स़्स़िलुल् आयाति व ल–अ़ल्लहुम् यर्जिअून (174)वत्लु अ़लैहिम् न–ब–अल्लज़ी आतैनाहु आयातिना फ़न्स–ल–ख़ मिन्हा फ़–अत्ब–अहुश् शैतानु फ़का–न मिनल्ग़ावीन(175)व लौ शिअ्ना ल–र फ़अ्नाहु बिहा व लाकिन्नहू अख़्ल–द इलल्अर्ज़ि वत्त–ब–अ़ हवाहु फ़–म–स़लुहू क–म–स़लिल्कल्बि इन् तह़्मिल् अ़लैहि यल्हस् औ तत्रुक्हु

नमाज़ क़ायम रखी हम नेकों का नेग (अज्र) नहीं गंवाते।(170) और जब हमने पहाड़ उन पर उठाया गोया वह सायबान है और समझे कि वह उन पर गिर पड़ेगा (फ़ा333) लो जो हमने तुम्हें दिया ज़ोर से (फ़ा334) और याद करो जो उसमें है कि कहीं तुम परहेज़गार हो।(171) (रुकूअ़ ११) और ऐ महबूब याद करो जब तुम्हारे रब ने औलादे आदम की पुश्त से उनकी नस्ल निकाली और उन्हें खुद उन पर गवाह किया क्या मैं तुम्हारा रब नहीं (फ़ा335) सब बोले क्यों नहीं हम गवाह हुए (फ़ा336) कि कहीं क़ियामत के दिन कहो कि हमें इसकी ख़बर न थी।(172) (फ़ा337) या कहो कि शिर्क तो पहले हमारे बाप दादा ने किया और हम उनके बाद बच्चे हुए (फ़ा338) तो क्या तू हमें इस पर हलाक फ़रमाएगा जो अहले बातिल ने किया।(173) (फ़ा339) और हम इसी तरह आयतें रंग रंग से बयान करते हैं (फ़ा340) और इस लिए कि कहीं वह फिर आयें।(174) (फ़ा341) और ऐ महबूब उन्हें उसका अहवाल सुनाओ जिसे हमने अपनी आयतें दीं (फ़ा342) तो वह उनसे साफ़ निकल गया (फ़ा343) तो शैतान उसके पीछे लगा तो गुमराहों में हो गया।(175) और हम चाहते तो आयतों के सबब उसे उठा लेते (फ़ा344) मगर वह तो ज़मीन पकड़ गया (फ़ा345) और अपनी ख़्वाहिश का ताबेअ़ हुआ तो उसका हाल कुत्ते की तरह है तू उस पर हमला करे तो ज़बान निकाले और छोड़ दे

(फ़ा333) जब बनी इसराईल ने तकालीफ़े शाक़्क़ा की वजह से अहकामे तौरेत को क़बूल करने से इंकार किया तो हज़रत जिबरील ने बहुक्मे इलाही एक बड़ा पहाड़ जिसकी मिक़दार उनके लश्कर के बराबर एक फ़रसंग तवील एक फ़रसंग अ़रीज़ थी उठा कर सायबान की तरह उनके सरदारों के क़रीब कर दिया और उन से कहा गया कि अहकामे तौरेत क़बूल करो वरना यह तुम पर गिरा दिया जाएगा, पहाड़ को सरों पर देख कर सबके सब सजदे में गिर गए मगर इस तरह कि बायां रुख़सार व अबरू तो उन्होंने सजदे में रख दिये और दाहिनी आंख से पहाड़ को देखते रहे कि कहीं गिर न पड़े चुनांचे अब तक यहूदियों के सजदे की यही शान है (फ़ा334) अ़ज़्म व कोशिश से (फ़ा335) हदीस शरीफ़ में है कि अल्लाह तआ़ला ने हज़रत आदम अ़लैहिस्सलाम की पुश्त से उनकी ज़ुर्रियत निकाली और उनसे अहद लिया आयात व हदीस दोनों पर नज़र करने से यह मालूम होता है कि ज़ुर्रियत का निकालना उस सिलसिला के साथ जिस तरह कि दुनिया में एक दूसरे से पैदा होंगे और उनके लिए रबूबियत और वहदानियत के दलायल क़ायम फ़रमा कर और अक़्ल देकर उनसे अपनी रबूबियत की शहादत तलब फ़रमाई (फ़ा336) अपने ऊपर और हमने तेरी रबूबियत और वहदानियत का इक़रार किया यह शाहिद करना इस लिए है (फ़ा337) **(बक़िया सफ़हा 297 पर)**

يَلْهَثْ ۚ ذَٰلِكَ مَثَلُ الْقَوْمِ الَّذِينَ كَذَّبُوا بِآيَاتِنَا ۚ فَاقْصُصِ الْقَصَصَ لَعَلَّهُمْ يَتَفَكَّرُونَ ﴿١٧٦﴾ سَاءَ مَثَلًا الْقَوْمُ الَّذِينَ كَذَّبُوا بِآيَاتِنَا وَأَنْفُسَهُمْ
كَانُوا يَظْلِمُونَ ﴿١٧٧﴾ مَنْ يَهْدِ اللَّهُ فَهُوَ الْمُهْتَدِي ۖ وَمَنْ يُضْلِلْ فَأُولَٰئِكَ هُمُ الْخَاسِرُونَ ﴿١٧٨﴾ وَلَقَدْ ذَرَأْنَا لِجَهَنَّمَ كَثِيرًا مِنَ الْجِنِّ وَالْإِنْسِ ۖ
لَهُمْ قُلُوبٌ لَا يَفْقَهُونَ بِهَا وَلَهُمْ أَعْيُنٌ لَا يُبْصِرُونَ بِهَا وَلَهُمْ آذَانٌ لَا يَسْمَعُونَ بِهَا ۚ أُولَٰئِكَ كَالْأَنْعَامِ بَلْ هُمْ أَضَلُّ ۚ أُولَٰئِكَ هُمُ
الْغَافِلُونَ ﴿١٧٩﴾ وَلِلَّهِ الْأَسْمَاءُ الْحُسْنَىٰ فَادْعُوهُ بِهَا ۖ وَذَرُوا الَّذِينَ يُلْحِدُونَ فِي أَسْمَائِهِ ۚ سَيُجْزَوْنَ مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿١٨٠﴾ وَمِمَّنْ خَلَقْنَا
أُمَّةٌ يَهْدُونَ بِالْحَقِّ وَبِهِ يَعْدِلُونَ ﴿١٨١﴾ وَالَّذِينَ كَذَّبُوا بِآيَاتِنَا سَنَسْتَدْرِجُهُمْ مِنْ حَيْثُ لَا يَعْلَمُونَ ﴿١٨٢﴾ وَأُمْلِي لَهُمْ ۚ إِنَّ كَيْدِي

यल्हस् ज़ालि–क म–सलुल् क़ौमिल् लज़ी–न कज़्ज़बू बि–आयातिना फ़क़्सुसिल् क़–स–स ल–अ़ल्लहुम् य–त–फ़क्करून(176)सा–अ म–स–लनिल् क़ौमुल्लज़ी–न कज़्ज़बू बिआयातिना व अन्फ़ु–सहुम् कानू यज़्लिमून(177)मंय्यहदिल्लाहु फ़हुवल् मुह्तदी व मंय्युज़्लिल् फ़उलाइ–क हुमुल्ख़ासिरून(178)व ल–क़द् ज़–रअ्ना लि–जहन्न–म कसीरम् मिनल्जिन्नि वल् इन्सि लहुम् क़ुलूबुल् ला यफ़्क़हू–न बिहा व लहुम् अअ़्युनुल् ला युब्सिरू–न बिहा व लहुम् आज़ानुल् ला यस्मअू–न बिहा उलाइ–क कल्अन्आ़मि बल् हुम् अज़ल्लु उलाइ–क हुमुल्–ग़ाफ़िलून(179)व लिल्लाहिल् अस्माउल् हुस्ना फ़दअ़ूहु बिहा व ज़रुल्लज़ी–न युल्हिदू–न फ़ी अस्माइही सयुज्ज़ौ–न मा कानू यअ़्मलून(180)व मिम्मन् ख़–लक़्ना उम्मतुंय् यह्दू–न बिल्हक़्क़ि व बिही यअ़्दिलून(181)वल्लज़ी–न कज़्ज़बू बि–आयातिना स–नस्तदरिजुहुम् मिन हैसु ला यअ़्लमून(182)व उम्ली लहुम् इन्–न कैदी

तो ज़बान निकाले (फ़ा346) यह हाल है उनका जिन्होंने हमारी आयतें झुटलाईं तो तुम नसीहत सुनाओ कि कहीं वह ध्यान करें।(176) क्या बुरी कहावत है उनकी जिन्होंने हमारी आयतें झुठलाईं और अपनी ही जान का बुरा करते थे। (177) जिसे अल्लाह राह दिखाये तो वही राह पर है और जिसे गुमराह करे तो वही नक़्सान में रहे।(178) और बेशक हमने जहन्नम के लिए पैदा किए बहुत जिन्न और आदमी, (फ़ा347) वह दिल रखते हैं जिन में समझ नहीं (फ़ा348) और वह आंखें जिनसे देखते नहीं (फ़ा349) और वह कान जिनसे सुनते नहीं (फ़ा350) वह चौपायों की तरह हैं (फ़ा351) बल्कि उनसे बढ़कर गुमराह (फ़ा352) वही ग़फ़लत में पड़े हैं।(179) और अल्लाह ही के हैं बहुत अच्छे नाम (फ़ा353) तो उसे उनसे पुकारो और उन्हें छोड़ दो जो उसके नामों में हक़ से निकलते हैं(फ़ा354)वह जल्द अपना किया पायेंगे। (180)और हमारे बनाये हुओं में एक गरोह वह है कि हक़ बतायें और उस पर इंसाफ़ करें।(181) (फ़ा355)(रुकूअ़ 12)और जिन्होंने हमारी आयतें झुठलाईं जल्द हम उन्हें आहिस्ता आहिस्ता (फ़ा356) अज़ाब की तरफ़ ले जायेंगे जहां से उन्हें ख़बर न होगी।(182)और मैं उन्हें

(फ़ा346) यह एक ज़लील जानवर के साथ तश्बीह है कि दुनिया की हिर्स रखने वाला अगर उसको नसीहत करो तो मुफ़ीद नहीं मुब्तलाए हिर्स रहता है छोड़ दो तो उसी हिर्स का गिरिफ़्तार जिस तरह ज़बान निकालना कुत्ते की लाज़मी तबीअ़त है ऐसी ही हिर्स उनके लिए लाज़िम हो गई है। (फ़ा347) यानी कुफ़्फ़ार जो आयाते इलाहिया में तदब्बुर से एअ़राज़ करते हैं और उनका काफ़िर होना अल्लाह के इल्मे अज़ली में है (फ़ा348) यानी हक़ से एअ़्राज़ करके आयाते इलाहिया में तदब्बुर करने से महरूम हो गए और यही दिल का ख़ास काम था (फ़ा349) राहे हक़ व हिदायत और आयाते इलाहिया और दलायले तौहीद (फ़ा350) मौअ़ेज़त व नसीहत को बगोश क़बूल और बावजूद क़ल्ब व हवास रखने के वह उमूरे दीन में उनसे नफ़ा नहीं उठाते लिहाज़ा (फ़ा351) कि अपने क़ल्ब व हवास से मदारिके इल्मिया व मअ़ारिफ़े रब्बानिया का इदराक नहीं करते हैं खाने पीने के दुनियवी कामों मे तमाम हैवानात भी अपने हवास से काम लेते हैं इन्सान भी उतना ही करता रहा तो उसको बहायम पर क्या फ़ज़ीलत (फ़ा352) क्यों कि चौपाया भी अपने नफ़ा की तरफ़ बढ़ता है और ज़रर से बचता और उससे पीछे हटता है और काफ़िर जहन्नम की राह पर चल कर अपना ज़रर इख़्तियार करता है तो उससे बदतर हुआ आदमी रूहानी शहवानी समावी अरज़ी है जब उसकी रूह शहवात पर ग़ालिब हो जाती है तो मलायका से फ़ायक़ हो जाता है और जब शहवात रूह पर ग़लबा पा जाती हैं तो ज़मीन के जानवरों से बदतर हो जाता है (फ़ा353) हदीस शरीफ़ में है अल्लाह तआ़ला के निन्नानवे नाम जिस किसी ने याद कर लिए जन्नती हुआ उलमा का इस पर इत्तेफ़ाक़ है कि अस्माए इलाहिया निन्नानवे में मुनहसिर नहीं हैं हदीस का मक़सूद सिर्फ़ यह है कि इतने नामों के याद करने से इन्सान जन्नती हो जाता है। शाने नुज़ूलः अबू **(बक़िया सफ़हा 298 पर)**

مَتِيْنٌ ﴿١٨٣﴾ اَوَلَمْ يَتَفَكَّرُوْا ۜ مَا بِصَاحِبِهِمْ مِّنْ جِنَّةٍ ؕ اِنْ هُوَ اِلَّا نَذِيْرٌ مُّبِيْنٌ ﴿١٨٤﴾ اَوَلَمْ يَنْظُرُوْا فِىْ مَلَكُوْتِ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَمَا خَلَقَ اللّٰهُ مِنْ
شَىْءٍ ۙ وَّاَنْ عَسٰٓى اَنْ يَّكُوْنَ قَدِ اقْتَرَبَ اَجَلُهُمْ ۚ فَبِاَىِّ حَدِيْثٍۭ بَعْدَهٗ يُؤْمِنُوْنَ ﴿١٨٥﴾ مَنْ يُّضْلِلِ اللّٰهُ فَلَا هَادِىَ لَهٗ ؕ وَيَذَرُهُمْ فِىْ طُغْيَانِهِمْ
يَعْمَهُوْنَ ﴿١٨٦﴾ يَسْـَٔلُوْنَكَ عَنِ السَّاعَةِ اَيَّانَ مُرْسٰىهَا ؕ قُلْ اِنَّمَا عِلْمُهَا عِنْدَ رَبِّىْ ۚ لَا يُجَلِّيْهَا لِوَقْتِهَآ اِلَّا هُوَ ؔ ثَقُلَتْ فِى السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ
لَا تَاْتِيْكُمْ اِلَّا بَغْتَةً ؕ يَسْـَٔلُوْنَكَ كَاَنَّكَ حَفِىٌّ عَنْهَا ؕ قُلْ اِنَّمَا عِلْمُهَا عِنْدَ اللّٰهِ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿١٨٧﴾ قُلْ لَّآ اَمْلِكُ لِنَفْسِىْ نَفْعًا وَّلَا ضَرًّا اِلَّا
مَا شَآءَ اللّٰهُ ؕ وَلَوْ كُنْتُ اَعْلَمُ الْغَيْبَ لَاسْتَكْثَرْتُ مِنَ الْخَيْرِ ۛۚ وَمَا مَسَّنِىَ السُّوْٓءُ ۛۚ اِنْ اَنَا اِلَّا نَذِيْرٌ وَّبَشِيْرٌ لِّقَوْمٍ يُّؤْمِنُوْنَ ﴿١٨٨﴾ هُوَ الَّذِىْ خَلَقَكُمْ مِّنْ

मतीन(183)अ–व लम् य–तफ़क्करू मा बिसाहिबिहिम् मिन् जिन्नतिन् इन् हु–व इल्ला नज़ीरुम् मुबीन(184)अ–व लम् यन्ज़ुरू फ़ी म–लकूतिस् समावाति वलअर्ज़ि व मा ख़–ल–क़ल्लाहु मिन् शैइंव्–व अन् असा अंय्यकू–न क़दिक़्–त–र–ब अ–जलुहुम् फ़बिअय्यि हदीसिम् बअ्–दहू युअ्मिनून(185)मंय्युज़्लि–लिल्लाहु फ़ला हादि–य लहू व य–ज़रुहुम् फ़ी तुग़्यानिहिम् यअ्महून (186)यस्अलू–न–क अनिस्सा–अति अय्या–न मुर्साहा कुल् इन्नमा अिल्मुहा अिन्–द रब्बी ला यु–जल्लीहा लिवक़्तिहा इल्ला हु–व सक़ुलत् फ़िस्समावाति वलअर्ज़ि ला तअ्तीकुम् इल्ला बग़्त–तन् यस्अलू–न–क क–अन्न–क हफ़िय्युन् अन्हा कुल् इन्नमा अिल्मुहा अिन्दल्लाहि व लाकिन्–न अक्सरन्नासि ला यअ्–लमून(187)कुल् ला अम्लिकु लिनफ़्सी नफ़्–अंव्–व ला ज़र्रन् इल्ला मा शा–अल्लाहु व लौ कुन्तु अअ्–लमुल्ग़ै–ब लस्तक्सरतु मिनल्ख़ैरि व मा मस्सनियस्सूउ इन् अना इल्ला नज़ीरुंव्–व बशीरुल् लिक़ौमिंय्यु–अ्मिनून(188)हु–वल्लज़ी ख़–ल–क़कुम् मिन्

ढील दूंगा(183) (फ़ा357) बेशक मेरी ख़ुफ़िया तदबीर बहुत पक्की है। (फ़ा358) क्या सोचते नहीं कि उनके साहिब को जुनून से कुछ इलाक़ा नहीं वह तो साफ़ डर सुनाने वाले हैं।(184) (फ़ा359) क्या उन्होंने निगाह न की आसमानों और ज़मीन की सल्तनत में और जो चीज़ अल्लाह ने बनाई (फ़ा360) और यह कि शायद उन का वादा नज़दीक आ गया हो (फ़ा361) तो उसके बाद और कौन सी बात पर यक़ीन लायेंगे।(185) (फ़ा362) जिसे अल्लाह गुमराह करे उसे कोई राह दिखाने वाला नहीं और उन्हें छोड़ता है कि अपनी सरकशी में भटका करें।(186) तुम से क़ियामत को पूछते हैं (फ़ा363) कि वह कब को ठहरी है तुम फ़रमाओ इसका इल्म तो मेरे रब के पास है उसे वही उसके वक़्त पर ज़ाहिर करेगा (फ़ा364) भारी पड़ रही है आसमानों और ज़मीन में तुम पर न आएगी मगर अचानक तुम से ऐसा पूछते हैं गोया तुम ने उसे ख़ूब तहक़ीक़ कर रखा है तुम फ़रमाओ उसका इल्म तो अल्लाह ही के पास है लेकिन बहुत लोग जानते नहीं।(187) (फ़ा365) तुम फ़रमाओ मैं अपनी जान के भले बुरे का ख़ुद मुख़्तार नहीं (फ़ा366) मगर जो अल्लाह चाहे (फ़ा367) और अगर मैं ग़ैब जान लिया करता तो यूं होता कि मैंने बहुत भलाई जमा कर ली और मुझे कोई बुराई न पहुंची (फ़ा368) मैं तो यही डर (फ़ा369) और ख़ुशी सुनाने वाला हूं उन्हें जो ईमान रखते हैं।(188)(रुकूअ़ 13)वही है जिसने तुम्हें

(फ़ा357) उनकी उम्रें दराज़ करके (फ़ा358) और मेरी गिरिफ़्त सख़्त (फ़ा359) शाने नुज़ूल: जब नबीए करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने कोहे सफ़ा पर चढ़ कर शब के वक़्त क़बीला क़बीला को पुकारा और फ़रमाया कि मैं तुम्हें अज़ाबे इलाही से डराने वाला हूं और आपने उन्हें अल्लाह का ख़ौफ़ दिलाया और पेश आने वाले हवादिस का ज़िक्र किया तो उन में से किसी ने आपकी तरफ़ जुनून की निस्बत की इस पर यह आयते करीमा नाज़िल हुई और फ़रमाया गया क्या उन्होंने फ़िक्र व तअम्मुल से काम न लिया और आक़बत अन्देशी व दूर बीनी बिल्कुल बालाए ताक़ रख दी और यह देख कर सय्यदुल अम्बिया सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अक़वाल व अफ़आल में उनके मुख़ालिफ़ हैं और दुनिया और उसकी लज़्ज़तों से आपने मुंह फेर लिया है आख़िरत की तरफ़ मुतवज्जह हैं और अल्लाह तआला की तरफ़ दावत देने और उसका ख़ौफ़ दिलाने में शब व रोज़ मशग़ूल हैं उन लोगों ने आपकी तरफ़ जुनून की निस्बत कर दी यह उनकी ग़लती है। (फ़ा360) इन सब में उसकी वहदानियत और कमाले हिकमत व क़ुदरत की रौशन दलीलें हैं। (फ़ा361) और वह कुफ़्र पर मर जायें और हमेशा के लिए जहन्नमी हो जायें ऐसे हाल में आक़िल पर ज़रूरी है कि वह सोचे समझे दलायल पर नज़र करे (फ़ा362) यानी क़ुरआन पाक के बाद और कोई किताब और सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बाद और कोई रसूल आने वाला नहीं जिस का इन्तेज़ार हो **(बक़िया सफ़हा 298 पर)**

نَفْسٍ وَّاحِدَةٍ وَّ جَعَلَ مِنْهَا زَوْجَهَا لِيَسْكُنَ اِلَيْهَا ۚ فَلَمَّا تَغَشّٰىهَا حَمَلَتْ حَمْلًا خَفِيْفًا فَمَرَّتْ بِهٖ ۚ فَلَمَّآ اَثْقَلَتْ دَّعَوَا اللّٰهَ رَبَّهُمَا لَئِنْ اٰتَيْتَنَا
صَالِحًا لَّنَكُوْنَنَّ مِنَ الشّٰكِرِيْنَ ﴿١٨٩﴾ فَلَمَّآ اٰتٰىهُمَا صَالِحًا جَعَلَا لَهٗ شُرَكَآءَ فِيْمَآ اٰتٰىهُمَا ۚ فَتَعٰلَى اللّٰهُ عَمَّا يُشْرِكُوْنَ ﴿١٩٠﴾ اَيُشْرِكُوْنَ مَا لَا يَخْلُقُ
شَيْـًٔا وَّهُمْ يُخْلَقُوْنَ ﴿١٩١﴾ وَلَا يَسْتَطِيْعُوْنَ لَهُمْ نَصْرًا وَّلَآ اَنْفُسَهُمْ يَنْصُرُوْنَ ﴿١٩٢﴾ وَاِنْ تَدْعُوْهُمْ اِلَى الْهُدٰى لَا يَتَّبِعُوْكُمْ ۚ سَوَآءٌ عَلَيْكُمْ اَدَعَوْتُمُوْهُمْ
اَمْ اَنْتُمْ صَامِتُوْنَ ﴿١٩٣﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ تَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ عِبَادٌ اَمْثَالُكُمْ فَادْعُوْهُمْ فَلْيَسْتَجِيْبُوْا لَكُمْ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿١٩٤﴾ اَلَهُمْ اَرْجُلٌ يَّمْشُوْنَ
بِهَآ ۫ اَمْ لَهُمْ اَيْدٍ يَّبْطِشُوْنَ بِهَآ ۫ اَمْ لَهُمْ اَعْيُنٌ يُّبْصِرُوْنَ بِهَآ ۫ اَمْ لَهُمْ اٰذَانٌ يَّسْمَعُوْنَ بِهَا ۗ قُلِ ادْعُوْا شُرَكَآءَكُمْ ثُمَّ كِيْدُوْنِ فَلَا تُنْظِرُوْنِ ﴿١٩٥﴾

नफ़्सिंव् वाहि–दतिंव् व ज–अ़–ल मिन्हा ज़ौ–जहा लियस्कु–न इलैहा फ़–लम्मा त–ग़श्शाहा ह–म–लत् ह़म्लन् ख़फ़ीफ़न् फ़–मर्रत् बिही फ़–लम्मा अस्क़लद्–द–अ़–वल्ला–ह रब्बहुमा लइन् आतै–तना स़ालिहल् ल–नकूनन्–न मिनश्शाकिरीन(189)फ़–लम्मा आताहुमा स़ालि–हन् ज–अ़ला लहू शु–रका–अ फ़ीमा आताहुमा फ़–तआ़लल्लाहु अ़म्मा युश्रिकून(190)अयुश्रिकू–न मा ला यख़्लुक़ु शैअंव् व हुम् युख़्– लक़ून(191)व ला यस्त–तीअू–न लहुम् नस्रंव्–व ला अन्फ़ु–सहुम् यन्सुरून(192)व इन् तदअू–हुम् इलल्हुदा ला यत्तबिअू.कुम् सवाउन् अ़लैकुम् अ–दऔतुमूहुम् अम् अन्तुम् सामितून(193)इन्नल्लज़ी–न तदअू–न मिन् दूनिल्लाहि अ़िबादुन् अम्स़ालुकुम् फ़दअूहुम् फ़ल्यस्तजीबू लकुम् इन् कुन्तुम् स़ादिक़ीन(194)अ–लहुम् अर्जुलुंय्यम्शू–न बिहा अम् लहुम् ऐदिंय्यब्तिशू–न बिहा अम् लहुम् अअ़्युनुंय्युब्सिरू–न बिहा अम् लहुम् आज़ानुंय्यस्मअू–न बिहा क़ुलिदअू शु–र–का–अकुम् सुम्–म कीदूनि फ़ला तुन्ज़िरून(195)

एक जान से पैदा किया (फ़ा370) और उसी में से उसका जोड़ा बनाया (फ़ा371) कि उससे चैन पाए फिर जब मर्द उस पर छाया उसे एक हल्का सा पेट रह गया (फ़ा372) तो उसे लिए फिरा की फिर जब बोझल पड़ी दोनों ने अपने रब अल्लाह से दुआ़ की ज़रूर अगर तू हमें जैसा चाहिये बच्चा देगा तो बेशक हम शुक्रगुज़ार होंगे।(189) फिर जब उसने उन्हें जैसा चाहिये बच्चा अता फ़रमाया उन्होंने उसकी अ़ता में उसके साझी ठहराए तो अल्लाह को बरतरी है उनके शिर्क से।(190) (फ़ा373) क्या उसे शरीक करते हैं जो कुछ न बनाए (फ़ा374) और वह खुद बनाए हुए हैं।(191)और न वह उनको कोई मदद पहुंचा सकें और न अपनी जानों की मदद करें।(192) (फ़ा375) और अगर तुम उन्हें (फ़ा376) राह की तरफ़ बुलाओ तो तुम्हारे पीछे न आयें (फ़ा377) तुम पर एक सा है चाहे उन्हें पुकारो या चुप रहो।(193) (फ़ा378) बेशक वह जिनको तुम अल्लाह के सिवा पूजते हो तुम्हारी तरह बन्दे हैं (फ़ा379) तो उन्हें पुकारो फिर वह तुम्हें जवाब दें अगर तुम सच्चे हो।(194) क्या उनके पांव हैं जिन से चलें या उनके हाथ हैं जिनसे गिरिफ़्त करें या उनके आंखें हैं जिन से देखें या उनके कान हैं जिनसे सुनें (फ़ा380) तुम फ़रमाओ कि अपने शरीकों को पुकारो और मुझ पर दाँव चलो और मुझे मोहलत न दो।(195) (फ़ा381)

(फ़ा370) इकरमा का क़ौल है कि इस आयत में ख़िताबे आम है हर एक शख़्स को और माना यह हैं कि अल्लाह वही है जिसने तुम में से हर एक को एक जान से यानी उसके बाप से पैदा किया और उसकी जिन्स से उसकी बीबी को बनाया फिर जब वह दोनों जमा हुए और हमल ज़ाहिर हुआ और उन दोनों ने तन्दुरुस्त बच्चा की दुआ़ की और ऐसा बच्चा मिलने पर अदाए शुक्र का अहद किया फिर अल्लाह तआ़ला ने उनहें वैसा ही बच्चा इनायत फ़रमाया उनकी हालत यह हुई कि कभी तो वह उस बच्चा को तबाअ़े की तरफ़ निस्बत करते हैं जैसे दहरियों का हाल है कभी सितारों की तरफ़ जैसा कि कवाकिब परस्तों का तरीक़ा है कभी बुतों की तरफ़ जैसा बुत-परस्तों का दस्तूर है अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया कि वह उनके इस शिर्क से बरतर है। (कबीर) (फ़ा371) यानी उसके बाप की जिन्स से उसकी बीबी बनाई (फ़ा372) मर्द का छाना किनाया है जिमाअ़ करने से और हलका सा पेट रहना इब्तेदाए हमल की हालत का बयान है। (फ़ा373) बाज़ मुफ़स्सिरीन का क़ौल है कि इस आयत में क़ुरैश को ख़िताब है जो क़ुसइ की औलाद हैं उन से फ़रमाया गया कि तुम्हें एक शख़्स क़ुसइ से पैदा किया और उसकी बीबी उसी की जिन्स से अ़रबी क़रशी की ताकि उससे चैन व आराम पाये फिर जब उनकी दरख़्वास्त के मुताबिक़ उन्हें तन्दुरुस्त बच्चा इनायत किया तो उन्होंने अल्लाह की इस अ़ता में दूसरों को शरीक बनाया और अपने चारों बेटों का नाम अ़ब्दे **(बक़िया सफ़हा 299 पर)**

إِنَّ وَلِـۧىَ اللّٰهُ الَّذِىْ نَزَّلَ الْكِتٰبَ ۖ وَهُوَ يَتَوَلَّى الصّٰلِحِيْنَ ۝ وَالَّذِيْنَ تَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِهٖ لَا يَسْتَطِيْعُوْنَ نَصْرَكُمْ وَلَاۤ اَنْفُسَهُمْ يَنْصُرُوْنَ ۝ وَاِنْ تَدْعُوْهُمْ اِلَى الْهُدٰى لَا يَسْمَعُوْا ۖ وَتَرٰىهُمْ يَنْظُرُوْنَ اِلَيْكَ وَهُمْ لَا يُبْصِرُوْنَ ۝ خُذِ الْعَفْوَ وَاْمُرْ بِالْعُرْفِ وَاَعْرِضْ عَنِ الْجٰهِلِيْنَ ۝ وَاِمَّا يَنْزَغَنَّكَ مِنَ الشَّيْطٰنِ نَزْغٌ فَاسْتَعِذْ بِاللّٰهِ ۖ اِنَّهٗ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ۝ اِنَّ الَّذِيْنَ اتَّقَوْا اِذَا مَسَّهُمْ طٰٓئِفٌ مِّنَ الشَّيْطٰنِ تَذَكَّرُوْا فَاِذَا هُمْ مُّبْصِرُوْنَ ۝ وَاِخْوَانُهُمْ يَمُدُّوْنَهُمْ فِى الْغَىِّ ثُمَّ لَا يُقْصِرُوْنَ ۝ وَاِذَا لَمْ تَاْتِهِمْ بِاٰيَةٍ قَالُوْا لَوْلَا اجْتَبَيْتَهَا ۖ قُلْ اِنَّمَاۤ اَتَّبِعُ مَا يُوْحٰۤى اِلَىَّ مِنْ رَّبِّىْ ۚ هٰذَا بَصَآئِرُ مِنْ رَّبِّكُمْ وَهُدًى وَّرَحْمَةٌ لِّقَوْمٍ يُّؤْمِنُوْنَ ۝ وَاِذَا قُرِئَ الْقُرْاٰنُ فَاسْتَمِعُوْا لَهٗ وَاَنْصِتُوْا لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُوْنَ ۝ وَاذْكُرْ رَّبَّكَ فِىْ نَفْسِكَ تَضَرُّعًا وَّخِيْفَةً وَّدُوْنَ الْجَهْرِ مِنَ الْقَوْلِ بِالْغُدُوِّ وَالْاٰصَالِ وَلَا تَكُنْ مِّنَ الْغٰفِلِيْنَ ۝ اِنَّ الَّذِيْنَ عِنْدَ رَبِّكَ لَا يَسْتَكْبِرُوْنَ عَنْ عِبَادَتِهٖ وَيُسَبِّحُوْنَهٗ وَلَهٗ يَسْجُدُوْنَ ۝

इन्–न वलिय्यि यल्लाहुल्लज़ी नज़्ज़लल् किता–ब व हु–व य–त–वल्लस़ा–लिहीन(196) वल्लज़ी–न तदअू–न मिन् दूनिही ला यस्ततीअू–न नस्रकुम् व ला अन्फु–सहुम् यन्सुरून(197)व इन् तदअूहुम् इललहुदा ला यस्मअू व तराहुम् यन्जुरू–न इलै–क व हुम् ला युब्स़िरून(198) खुज़िल्अ़फ़्–व वअ्मुर् बिल्उ़र्फ़ि व अअ्रिज़् अ़निल्जाहिलीन(199)व इम्मा यन्ज़ ग़न्न–क मिनश्शैत़ानि नज़्गुन् फ़स्त–अ़िज़् बिल्लाहि इन्नहू समीअुन् अ़लीम(200)इन्नल्लज़ीनत् तक़ौ इज़ा मस्सहुम् त़ाइफुम् मिनश्शैत़ानि त–ज़क्करू फ़–इज़ा हुम् मुब्स़िरून(201)व इख़्वानुहुम् यमुद्दू–नहुम् फ़िल्ग़य्यि सुम्–म ला युक़्स़िरून(202)व इज़ा लम् तअ्तिहिम् बिआ–यतिन् क़ालू लौलज्तबै–तहा कुल् इन्नमा अत्तबिअु मा यूहा इलय्–य मिर्रब्बी हाज़ा बस़ाइरु मिर्रब्बिकुम् व हुदंव्–व रह़्मतुल् लिक़ौमिंय्युअ्–मिनून(203)व इज़ा क़ुरिअल्–क़ुर्आनु फ़स्तमिअू लहू व अन्स़ितू ल–अ़ल्लकुम् तुर्–ह़मून(204)वज़्कुर् रब्ब–क फ़ी नफ़्सि–क तज़र्रुअंव्–व ख़ी–फ़तंव्–व दूनल्जह्रि मिनल्क़ौलि बिल्ग़ुदुव्वि वल्आस़ालि व ला तकुम् मिनल् ग़ाफ़िलीन(205)इन्नल्लज़ी–नअ़िन्–द रब्बि–क ला यस्तक्बिरू–न अ़न् अ़िबा–दतिही व युसब्बिहू–नहू व लहू यस्जुदून(206)

बेशक मेरा वाली अल्लाह है जिसने किताब उतारी (फ़ा382) और वह नेकों को दोस्त रखता है।(196) (फ़ा383) और जिन्हें उसके सिवा पूजते हो वह तुम्हारी मदद नहीं कर सकते और न खुद अपनी मदद करें।(197) (फ़ा384) और अगर तुम उन्हें राह की तरफ़ बुलाओ तो न सुनें और तू उन्हें देखे कि वह तेरी तरफ़ देख रहे हैं (फ़ा385) और उन्हें कुछ भी नहीं सूझता।(198) ऐ महबूब माफ़ करना इख़्तियार करो और भलाई का हुक्म दो और जाहिलों से मुंह फेर लो।(199) और ऐ सुनने वाले अगर शैतान तुझे कोई कोंचा (किसी बुरे काम पर उचकाए) दे (फ़ा386) तो अल्लाह की पनाह मांग बेशक वही सुनता जानता है।(200) बेशक वह जो डर वाले हैं जब उन्हें किसी शैतानी ख़्याल की ठेस लगती है होशियार हो जाते हैं उसी वक़्त उनकी आंखें खुल जाती हैं।(201) (फ़ा387) और वह जो शैतानों के भाई हैं (फ़ा388) शैतान उन्हें गुमराही में खींचते हैं फिर कमी नहीं करते।(202) और ऐ महबूब जब तुम उनके पास कोई आयत न लाओ तो कहते हैं तुमने दिल से क्यों न बनाई तुम फ़रमाओ मैं तो उसी की पैरवी करता हूं जो मेरी तरफ़ मेरे रब से 'वही' होती है यह तुम्हारे रब की तरफ़ से आंखें खोलना है और हिदायत और रहमत मुसलमानों के लिए।(203)और जब कुरआन पढ़ा जाये तो उसे कान लगाकर सुनो और ख़ामोश रहो कि तुम पर रहम हो।(204) (फ़ा389) और अपने रब को अपने दिल में याद करो (फ़ा390) ज़ारी और डर से और बे आवाज़ निकले ज़बान से सुबह और शाम (फ़ा391) और ग़ाफ़िलों में न होना।(205) बेशक वह जो तेरे रब के पास हैं(फ़ा392)उसकी इबादत से तकब्बुर नहीं करते और उसकी पाकी बोलते और उसी को सजदा करते हैं।(206)(फ़ा393)(रुकूअ़ 14)

(फ़ा382) और मेरी तरफ़ वही भेजी और मेरी इज़्ज़त की (फ़ा383) और उनका हाफ़िज़ व नासिर है उस **(बक़िया सफ़हा 299 पर)**

سُوْرَةُ الْاَنْفَالِ مَدَنِيَّةٌ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝

يَسْـَٔلُوْنَكَ عَنِ الْاَنْفَالِ ۖ قُلِ الْاَنْفَالُ لِلّٰهِ وَالرَّسُوْلِ ۚ فَاتَّقُوا اللّٰهَ وَاَصْلِحُوْا ذَاتَ بَيْنِكُمْ ۖ وَاَطِيْعُوا اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗۤ اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ۝ اِنَّمَا الْمُؤْمِنُوْنَ
الَّذِيْنَ اِذَا ذُكِرَ اللّٰهُ وَجِلَتْ قُلُوْبُهُمْ وَاِذَا تُلِيَتْ عَلَيْهِمْ اٰيٰتُهٗ زَادَتْهُمْ اِيْمَانًا وَّعَلٰى رَبِّهِمْ يَتَوَكَّلُوْنَ ۝ الَّذِيْنَ يُقِيْمُوْنَ الصَّلٰوةَ وَمِمَّا رَزَقْنٰهُمْ
يُنْفِقُوْنَ ۝ اُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُؤْمِنُوْنَ حَقًّا ۚ لَهُمْ دَرَجٰتٌ عِنْدَ رَبِّهِمْ وَمَغْفِرَةٌ وَّرِزْقٌ كَرِيْمٌ ۝ كَمَاۤ اَخْرَجَكَ رَبُّكَ مِنْۢ بَيْتِكَ بِالْحَقِّ ۖ وَاِنَّ فَرِيْقًا
مِّنَ الْمُؤْمِنِيْنَ لَكٰرِهُوْنَ ۝ يُجَادِلُوْنَكَ فِى الْحَقِّ بَعْدَ مَا تَبَيَّنَ كَاَنَّمَا يُسَاقُوْنَ اِلَى الْمَوْتِ وَهُمْ يَنْظُرُوْنَ ۝ وَاِذْ يَعِدُكُمُ اللّٰهُ اِحْدَى
الطَّآئِفَتَيْنِ اَنَّهَا لَكُمْ وَتَوَدُّوْنَ اَنَّ غَيْرَ ذَاتِ الشَّوْكَةِ تَكُوْنُ لَكُمْ وَيُرِيْدُ اللّٰهُ اَنْ يُّحِقَّ الْحَقَّ بِكَلِمٰتِهٖ وَيَقْطَعَ دَابِرَ الْكٰفِرِيْنَ ۝

सूरतुल अन्फ़ालि

(मदनी है इस सूरह में 75 आयतें और 10 रुकूअ़ हैं)

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

यस्अलू–न–क अ़निल् अन्फ़ालि कुलिल् अन्फ़ालु लिल्लाहि वर्रसूलि फ़त्तकुल्ला–ह व अस्लिहू ज़ा–त बैनिकुम् व अतीअुल्ला–ह व रसू–लहू इन् कुन्तुम् मुअ्मिनीन(1)इन्नमल् मुअ्मिनूनल् लज़ी–न इज़ा ज़ुकिरल्लाहु वजिलत् क़ुलूबुहुम् व इज़ा तुलियत् अ़लैहिम् आयातुहू ज़ादत्हुम् ईमानंव्–व अ़ला रब्बिहिम् य–त–वक्कलून(2)अल्लज़ी–न युक़ीमूनस्सला–त व मिम्मा र–ज़क़्नाहुम् युन्फ़िक़ून(3) उलाइ–क हुमुल्–मुअ्मिनू–न हक़्क़न् लहुम् द–रजातुन् अ़िन्–द रब्बिहिम् व मग़्फ़ि–रतुंव्–व रिज़्क़ुन् करीम(4)कमा अख़्र–ज–क रब्बु–क मिम्बैति–क बिल्हक़्क़ि व इन्–न फ़रीक़म् मिनल् मुअ्मिनी–न लकारिहून(5)युजादिलू–न–क फ़िल्हक़्क़ि बअ्–द मा त–बय्य–न क–अन्नमा युसाकू–न इलल्मौति व हुम् यन्ज़ुरून(6)व इज़् यअ़िदुकुमुल्लाहु इह्दत्ताइ–फ़तैनि अन्नहा लकुम् व त–वद्दू–न अन्–न ग़ै–र ज़ातिश्शौ–कति तकूनु लकुम् व युरीदुल्लाहु अंय्युहिक़्क़ल् हक़्–क़ बि–कलिमातिही व यक़्त–अ़ दाबिरल्–काफ़िरीन(7)

अल्लाह के नाम से शुरू जो बहुत मेहरबान रहम वाला। (फ़ा1)

ऐ महबूब तुम से ग़नीमतों को पूछते हैं (फ़ा2) तुम फ़रमाओ ग़नीमतों के मालिक अल्लाह और रसूल हैं (फ़ा3) तो अल्लाह से डरो (फ़ा4) और अपने आपस में मेल (सुलह सफ़ाई) रखो और अल्लाह और रसूल का हुक्म मानो अगर ईमान रखते हो।(1) ईमान वाले वही हैं कि जब अल्लाह याद किया जाये (फ़ा5) उनके दिल डर जायें और जब उन पर उसकी आयतें पढ़ी जायें उनका ईमान तरक़्क़ी पाए और अपने रब ही पर भरोसा करें।(2) (फ़ा6) वह जो नमाज़ क़ायम रखें और हमारे दिए से कुछ हमारी राह में ख़र्च करें।(3) यही सच्चे मुसलमान हैं इनके लिए दर्जे हैं इनके रब के पास (फ़ा7) और बख़्शिश है और इज़्ज़त की रोज़ी।(4)(फ़ा8) जिस तरह ऐ महबूब तुम्हें तुम्हारे रब ने तुम्हारे घर से हक़ के साथ बर-आमद किया (फ़ा9) और बेशक मुसलमानों का एक गरोह उस पर नाख़ुश था।(5) (फ़ा10) सच्ची बात में तुम से झगड़ते थे (फ़ा11) बाद इसके कि ज़ाहिर हो चुकी (फ़ा12) गोया वह आंखों देखी मौत की तरफ़ हांके जाते हैं।(6) (फ़ा13) और याद करो जब अल्लाह ने तुम्हें वादा दिया था कि उन दोनों गरोहों (फ़ा14) में एक तुम्हारे लिए है और तुम यह चाहते थे कि तुम्हें वह मिले जिसमें कांटे का खटका नहीं (कोई नुक़सान न हो) (फ़ा15) और अल्लाह यह चाहता था कि अपने कलाम से सच को सच कर दिखाए (फ़ा16) और काफ़िरों की जड़ काट दे।(7) (फ़ा17)

(फ़ा1) यह सूरत मदनी है बजुज़ सात आयतों के जो मक्का मुकर्रमा में नाज़िल हुईं और *इज़् यम्कुरुबि-कल्लज़ीन* से शुरू होती हैं इसमें 75 आयतें और 1075 कलिमे और 5080 हरफ़ हैं। (फ़ा2) शाने नुज़ूलः हज़रत अ़ोबादा **(बक़िया सफ़हा 300 पर)**

لِيُحِقَّ الْحَقَّ وَيُبْطِلَ الْبَاطِلَ وَلَوْ كَرِهَ الْمُجْرِمُونَ ۝ إِذْ تَسْتَغِيثُونَ رَبَّكُمْ فَاسْتَجَابَ لَكُمْ أَنِّي مُمِدُّكُم بِأَلْفٍ مِّنَ الْمَلَائِكَةِ مُرْدِفِينَ ۝ وَمَا
جَعَلَهُ اللَّهُ إِلَّا بُشْرَىٰ وَلِتَطْمَئِنَّ بِهِ قُلُوبُكُمْ ۚ وَمَا النَّصْرُ إِلَّا مِنْ عِندِ اللَّهِ ۚ إِنَّ اللَّهَ عَزِيزٌ حَكِيمٌ ۝ إِذْ يُغَشِّيكُمُ النُّعَاسَ أَمَنَةً مِّنْهُ
وَيُنَزِّلُ عَلَيْكُم مِّنَ السَّمَاءِ مَاءً لِّيُطَهِّرَكُم بِهِ وَيُذْهِبَ عَنكُمْ رِجْزَ الشَّيْطَانِ وَلِيَرْبِطَ عَلَىٰ قُلُوبِكُمْ وَيُثَبِّتَ بِهِ الْأَقْدَامَ ۝ إِذْ يُوحِي
رَبُّكَ إِلَى الْمَلَائِكَةِ أَنِّي مَعَكُمْ فَثَبِّتُوا الَّذِينَ آمَنُوا ۚ سَأُلْقِي فِي قُلُوبِ الَّذِينَ كَفَرُوا الرُّعْبَ فَاضْرِبُوا فَوْقَ الْأَعْنَاقِ وَاضْرِبُوا
مِنْهُمْ كُلَّ بَنَانٍ ۝ ذَٰلِكَ بِأَنَّهُمْ شَاقُّوا اللَّهَ وَرَسُولَهُ ۚ وَمَن يُشَاقِقِ اللَّهَ وَرَسُولَهُ فَإِنَّ اللَّهَ شَدِيدُ الْعِقَابِ ۝ ذَٰلِكُمْ فَذُوقُوهُ وَأَنَّ

लियु-हिक्क़ल् हक़्-क़ व युब्तिलल् बाति-ल व लौ करिहल् मुज्रिमून(8)इज़् तस्तग़ीसू-न रब्बकुम् फ़स्तजा-ब लकुम् अन्नी मुमिद्दुकुम् बिअल्फ़िम् मिनल् मलाइ-कति मुर्दिफ़ीन(9)व मा ज-अ़-लहुल्लाहु इल्ला बुश्रा व लितत्मइन्-न बिही क़ुलूबुकुम् व मन्नस्रु इल्ला मिन् अ़िन्दिल्लाहि इन्नल्ला-ह अ़ज़ीज़ुन् हकीम(10)इज़् यु-ग़श्शीकुमुन्नुआ़-स अ-म-नतम् मिन्हु व युनज़्ज़िलु अ़लैकुम् मिनस्समाइ माअल् लियु-तह्हि-रकुम् बिही व युज़्हि-ब अ़न्कुम् रिज्ज़श्शैतानि व लियर्बि-त अ़ला क़ुलूबिकुम् व युसब्बि-त बिहिल् अक़्दाम(11)इज़् यूही रब्बु-क इलल्मलाइ-कति अन्नी म-अ़कुम् फ़-सब्बितुल्-लज़ी-न आ-मनू स-उल्क़ी फ़ी क़ुलूबिल्लज़ी-न क-फ़-रुर्रुअ़्-ब फ़ज़्रिबू फ़ौक़ल् अअ़्नाक़ि वज़्रिबू मिन्हुम् कुल्-ल बनान(12)ज़ालि-क बिअन्नहुम शाक़्क़ुल्ला-ह व रसू-लहू व मंय्युशाक़िक़िल्ला-ह व रसू-लहू फ़-इन्नल्ला-ह शदीदुल्-अ़िक़ाब(13)ज़ालिकुम् फ़ज़ूक़ूहु व अन्-न

कि सच को सच करे और झूठ को झूठा (फ़ा18) पड़े (अगरचे भले से) बुरा मानें मुजरिम।(8) जब तुम अपने रब से फ़रियाद करते थे (फ़ा19) तो उसने तुम्हारी सुन ली कि मैं तुम्हें मदद देने वाला हूं हज़ार फ़रिश्तों की क़तार से।(9) (फ़ा20) और यह तो अल्लाह ने किया मगर तुम्हारी ख़ुशी को और इस लिए कि तुम्हारे दिल चैन पायें और मदद नहीं मगर अल्लाह की तरफ़ से (फ़ा21) बेशक अल्लाह ग़ालिब हिकमत वाला है।(10) (रुकूअ़ 15) जब उसने तुम्हें ऊंघ से घेर दिया तो उसकी तरफ़ से चैन थी (तस्कीन थी) (फ़ा22) और आसमान से तुम पर पानी उतारा कि तुम्हें उससे सुथरा कर दे और शैतान की नापाकी तुम से दूर फ़रमा दे और तुम्हारे दिलों को ढारस बंधाये और उससे तुम्हारे क़दम जमा दे।(11) (फ़ा23) जब ऐ महबूब तुम्हारा रब फ़रिश्तों को 'वही' भेजता था कि मैं तुम्हारे साथ हूं तुम मुसलमानों को साबित रखो (फ़ा24) अ़नक़रीब मैं काफ़िरों के दिलों में हैबत डालूंगा तो काफ़िरों की गर्दनों से ऊपर मारो और उनकी एक एक पोर (जोड़) पर ज़र्ब लगाओ।(12) (फ़ा25) यह इस लिए कि उन्होंने अल्लाह और उसके रसूल से मुख़ालफ़त की और जो अल्लाह और उसके रसूल से मुख़ालफ़त करे तो बेशक अल्लाह का अज़ाब सख़्त है।(13) यह तो चखो (फ़ा26) और उसके साथ

(फ़ा18) यानी इस्लाम को ज़ुहूर व सबात अ़ता फ़रमाये और कुफ़्र को मिटाये (फ़ा19) **शाने नुज़ूलः** मुस्लिम शरीफ़ की हदीस है रोज़े बदर रसूले करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने मुशरिकीन को मुलाहज़ा फ़रमाया कि हज़ार हैं और आपके असहाब तीन सौ दस से कुछ ज़्यादा तो हुज़ूर क़िब्ले की तरफ़ मुतवज्जह हुए और अपने मुबारक हाथ फैला कर अपने रब से यह दुआ़ करने लगे या रब जो तूने मुझे वादा फ़रमाया है पूरा कर या रब जो तूने मुझ से वादा किया इनायत फ़रमा, या रब अगर तू अहले इस्लाम की इस जमाअ़त को हलाक कर देगा तो ज़मीन में तेरी परस्तिश न होगी इसी तरह हुज़ूर दुआ़ करते रहे यहां तक कि दोशे मुबारक से चादर शरीफ़ उतर गई तो हज़रत अबू बकर हाज़िर हुए और चादर मुबारक दोशे मुबारक पर डाली और अ़र्ज़ किया या नबीयल्लाह आपकी मुनाजात अपने रब के साथ काफ़ी हो गई वह बहुत जल्द अपना वादा पूरा फ़रमाएगा इस पर यह आयते शरीफ़ा नाज़िल हुई (फ़ा20) चुनांचे अव्वल हज़ार फ़रिश्ते आये फिर तीन हज़ार फिर पांच हज़ार हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने फ़रमाया कि मुसलमान उस रोज़ काफ़िरों का तआ़क़ुब करते थे और काफ़िर मुसलमान के आगे आगे भागता जाता था अचानक ऊपर से कोड़े की आवाज़ आती थी और सवार का यह कलिमा सुना जाता था (अक़्दिम ख़ैरदम) यानी आगे बढ़ ऐ ख़ैरदम (ख़ैरदम हज़रत जिबरील अ़लैहिस्सलाम के घोड़े का नाम है) और नज़र आता था कि काफ़िर गिर कर मर गया और उसकी नाक तलवार से उड़ा दी गई और चेहरा ज़ख़्मी हो गया सहाबा ने सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से अपने यह मुआ़इने बयान किये तो हुज़ूर ने फ़रमाया कि यह आसमाने सोम की मदद है **(बक़िया सफ़हा 300 पर)**

لِلْكٰفِرِيْنَ عَذَابَ النَّارِ ﴿14﴾ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِذَا لَقِيْتُمُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا زَحْفًا فَلَا تُوَلُّوْهُمُ الْاَدْبَارَ ﴿15﴾ وَمَنْ يُّوَلِّهِمْ يَوْمَىِٕذٍ
دُبُرَهٗٓ اِلَّا مُتَحَرِّفًا لِّقِتَالٍ اَوْ مُتَحَيِّزًا اِلٰى فِئَةٍ فَقَدْ بَآءَ بِغَضَبٍ مِّنَ اللّٰهِ وَمَاْوٰىهُ جَهَنَّمُ ۭ وَبِئْسَ الْمَصِيْرُ ﴿16﴾ فَلَمْ تَقْتُلُوْهُمْ وَلٰكِنَّ
اللّٰهَ قَتَلَهُمْ ۠ وَمَا رَمَيْتَ اِذْ رَمَيْتَ وَلٰكِنَّ اللّٰهَ رَمٰى ۚ وَلِيُبْلِيَ الْمُؤْمِنِيْنَ مِنْهُ بَلَاۗءً حَسَنًا ۭ اِنَّ اللّٰهَ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ﴿17﴾ ذٰلِكُمْ وَاَنَّ اللّٰهَ مُوْهِنُ
كَيْدِ الْكٰفِرِيْنَ ﴿18﴾ اِنْ تَسْتَفْتِحُوْا فَقَدْ جَاۗءَكُمُ الْفَتْحُ ۚ وَاِنْ تَنْتَهُوْا فَهُوَ خَيْرٌ لَّكُمْ ۚ وَاِنْ تَعُوْدُوْا نَعُدْ ۚ وَلَنْ تُغْنِيَ عَنْكُمْ فِئَتُكُمْ شَيْـًٔا وَّلَوْ
كَثُرَتْ ۙ وَاَنَّ اللّٰهَ مَعَ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿19﴾ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اَطِيْعُوا اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ وَلَا تَوَلَّوْا عَنْهُ وَاَنْتُمْ تَسْمَعُوْنَ ﴿20﴾ وَلَا تَكُوْنُوْا

लिल्काफ़िरी–न अ़ज़ाबन्नार(14)या अय्युहल्लज़ी–न आ–मनू इज़ा लक़ीतुमुल्लज़ी–न क–फ़रू ज़ह्फ़न् फ़ला तुवल्लू हुमुल् अद्बार(15)व मंय्युवल्लिहिम् यौ–मइज़िन् दुबू–रहू इल्ला मु–त–ह़र्रिफ़ल् लिक़ितालिन् औ मु–त–ह़य्यिज़न् इला फ़ि–अतिन् फ़–क़द् बा–अ बि–ग़–जबिम् मिनल्लाहि व मअ्वाहु जहन्–नमु व बिअ्–सल्मसीर(16)फ़–लम् तक़्तुलूहुम् व ला–किन्नल्ला–ह क़–त–लहुम् व मा रमै–त इज़् रमै–त व लाकिन्नल्ला–ह रमा व लियुब्लियल् मुअ्मिनी–न मिन्हु बलाअन् ह़–सनन् इन्नल्ला–ह समीअुन् अ़लीम (17)ज़ालिकुम् व अन्नल्ला–ह मूहिनु कैदिल्काफ़िरीन(18)इन् तस्तफ़्तिहू फ़–क़द् जा–अकुमुल् फ़त्हु व इन् तन्तहू फ़हु–व ख़ैरुल्लकुम् व इन् तअ़ूदू नअ़ुद् व लन् तुग़्नि–य अ़न्कुम् फ़ि–अतुकुम् शैअंव्–व लौ कसुरत् व अन्नल्ला–ह मअ़ल् मुअ्मिनीन(19)या अय्युहल्लज़ी–न आ–मनू अतीअुल्ला–ह व रसू–लहू व ला तवल्लौ अ़न्हु व अन्तुम् तस्मअ़ू–न(20)व ला तकूनू

यह है कि काफ़िरों को आग का अ़ज़ाब है।(14) (फ़ा27) ऐ ईमान वालो जब काफ़िरों के लाम (लश्कर) से तुम्हारा मुक़ाबला हो तो उन्हें पीठ न दो।(13) (फ़ा28) और जो उस दिन उन्हें पीठ देगा मगर लड़ाई का हुनर करने या अपनी जमाअ़त में जा मिलने को तो वह अल्लाह के ग़ज़ब में पलटा और उसका ठिकाना दोज़ख़ है और क्या बुरी जगह है पलटने की।(16) (फ़ा29) तो तुमने उन्हें क़त्ल न किया बल्कि अल्लाह ने (फ़ा30) उन्हें क़त्ल किया और ऐ महबूब वह ख़ाक जो तुमने फेंकी तुमने न फेंकी थी बल्कि अल्लाह ने फेंकी और इस लिए कि मुसलमानों को उससे अच्छा इनाम अ़ता फ़रमाए बेशक अल्लाह सुनता जानता है।(17) (फ़ा31) यह तो लो और उसके साथ यह है कि अल्लाह काफ़िरों का दांव सुस्त करने वाला है।(18) ऐ काफ़िरो अगर तुम फ़ैसला मांगते हो तो यह फ़ैसला तुम पर आ चुका (फ़ा32) और अगर बाज़ आओ (फ़ा33) तो तुम्हारा भला है और अगर तुम फिर शरारत करो तो हम फिर सज़ा देंगे और तुम्हारा जत्था तुम्हें कुछ काम न देगा चाहे कितना ही बहुत हो और उसके साथ यह है कि अल्लाह मुसलमानों के साथ है।(19) (रुकूअ़ 16) ऐ ईमान वालो अल्लाह और उसके रसूल का हुक्म मानो (फ़ा34) और सुन सुनाकर उससे न फिरो।(20) और उन जैसे

(फ़ा27) आख़िरत में (फ़ा28) यानी अगर कुफ़्फ़ार तुम से ज़्यादा भी हों तो उनके मुक़ाबला से न भागो (फ़ा29) यानी मुसलमानों में से जो जंग में कुफ़्फ़ार के मुक़ाबला से भागा वह ग़ज़बे इलाही में गिरिफ़्तार हुआ उसका ठिकाना दोज़ख़ है सिवाए दो हालतों के एक तो यह कि लड़ाई का हुनर या करतब करने के लिए पीछे हटा वह पीठ देने और भागने वाला नहीं है दूसरे जो अपनी जमाअ़त में मिलने के लिए पीछे हटा हो वह भी भागने वाला नहीं है। (फ़ा30) **शाने नुज़ूलः** जब मुसलमान जंगे बदर से वापस हुए तो उन में से एक कहता था कि मैंने फ़लां को क़त्ल किया दूसरा कहता था मैंने फ़लां को क़त्ल किया इस पर यह आयत नाज़िल हुई और फ़रमाया गया कि इस क़त्ल को तुम अपने ज़ोरे क़ुव्वत की तरफ़ निस्बत न करो कि यह दर हक़ीक़त अल्लाह की इमदाद और उसकी तक़वियत और ताईद है। (फ़ा31) फ़तह व नुसरत (फ़ा32) **शाने नुज़ूलः** यह ख़िताब मुशरिकीन को है जिन्होंने बदर में सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से जंग की और उन में से अबू जहल ने अपनी और हुज़ूर की निस्बत यह दुआ़ की कि या रब हम में जो तेरे नज़दीक अच्छा हो उसकी मदद कर और जो बुरा हो उसे मुब्तलाए मुसीबत कर और एक रिवायत में है कि मुशरिकीन ने मक्का मुकर्रमा से बदर को चलते वक़्त कअ़बा मुअ़ज़्ज़मा के पर्दों से लिपट कर यह दुआ़ की थी कि या रब अगर मुहम्मद (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) हक़ पर हों तो तू उनकी मदद फ़रमा और अगर हम हक़ पर हों तो हमारी मदद कर इस पर यह आयत नाज़िल हुई कि जो फ़ैसला तुम ने चाहा था वह कर दिया गया और जो गरोह हक़ पर था उसको फ़तह दी गई यह तुम्हारा मांगा हुआ फ़ैसला है अब आसमानी फ़ैसला से भी जो उनका तलब किया हुआ था इस्लाम की हक़्क़ानियत साबित हुई अबू जहल भी उस जंग में ज़िल्लत और रुसवाई के **(बक़िया सफ़हा 296 पर)**

كَالَّذِيْنَ قَالُوْا سَمِعْنَا وَهُمْ لَا يَسْمَعُوْنَ ۝٢١ اِنَّ شَرَّ الدَّوَآبِّ عِنْدَ اللّٰهِ الصُّمُّ الْبُكْمُ الَّذِيْنَ لَا يَعْقِلُوْنَ ۝٢٢ وَلَوْ عَلِمَ اللّٰهُ فِيْهِمْ خَيْرًا لَّاَسْمَعَهُمْ
وَلَوْ اَسْمَعَهُمْ لَتَوَلَّوْا وَّهُمْ مُّعْرِضُوْنَ ۝٢٣ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اسْتَجِيْبُوْا لِلّٰهِ وَلِلرَّسُوْلِ اِذَا دَعَاكُمْ لِمَا يُحْيِيْكُمْ ۚ وَاعْلَمُوْۤا اَنَّ اللّٰهَ يَحُوْلُ بَيْنَ
الْمَرْءِ وَقَلْبِهٖ وَاَنَّهٗۤ اِلَيْهِ تُحْشَرُوْنَ ۝٢٤ وَاتَّقُوْا فِتْنَةً لَّا تُصِيْبَنَّ الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا مِنْكُمْ خَآصَّةً ۚ وَاعْلَمُوْۤا اَنَّ اللّٰهَ شَدِيْدُ الْعِقَابِ ۝٢٥ وَاذْكُرُوْۤا
اِذْ اَنْتُمْ قَلِيْلٌ مُّسْتَضْعَفُوْنَ فِى الْاَرْضِ تَخَافُوْنَ اَنْ يَّتَخَطَّفَكُمُ النَّاسُ فَاٰوٰىكُمْ وَاَيَّدَكُمْ بِنَصْرِهٖ وَرَزَقَكُمْ مِّنَ الطَّيِّبٰتِ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ ۝٢٦
يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَخُوْنُوا اللّٰهَ وَالرَّسُوْلَ وَتَخُوْنُوْۤا اَمٰنٰتِكُمْ وَاَنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ۝٢٧ وَاعْلَمُوْۤا اَنَّمَاۤ اَمْوَالُكُمْ وَاَوْلَادُكُمْ فِتْنَةٌ ۙ وَّاَنَّ اللّٰهَ عِنْدَهٗۤ

कल्लज़ी–न क़ालू समिअ्ना व हुम् ला यस्मअू न(21)इन्–न शर्रद्दवाब्बि अ़िन्दल्लाहिस् सुम्मुल् बुक्मुल् लज़ी–न ला यअ्–क़िलून(22)व लौ अ़लिमल्लाहु फ़ीहिम् ख़ैरल्–ल अस्म–अ़हुम् व लौ अस्म–अ़हुम् ल–त–वल्लव् वहुम् मुअ्रिज़ू न(23)या अय्यु–हल्लज़ी–न आमनुस्तजीबू लिल्लाहि व लिर्रसूलि इज़ा दआकुम् लिमा युह्यीकुम् वअ्–लमू अन्नल्ला–ह यहूलु बैनल्मरइ व क़ल्बिही व अन्नहू इलैहि तुह्शरून(24)वत्तकू. फ़ित्न–तल्ला तुसीबन्नल्–लज़ी–न ज़–लमू मिन्कुम् ख़ास्सतन् वअ्लमू अन्नल्ला–ह शदीदुल्–अ़िक़ाब(25)वज़्कुरू इज़् अन्तुम् क़लीलुम् मुस्तज़्–अफ़ू–न फ़िल्अर्ज़ि तख़ाफ़ू–न अंय्य–त–ख़त्–त–फ़कुमुन्नासु फ़आवाकुम् व अय्य–दकुम् बि–नस्रिही व र–ज़–क़कुम् मिनत् तय्यिबाति ल–अ़ल्लकुम् तश्कुरून(26)या अय्युहल्लज़ी–न आ–मनू ला तख़ूनुल्ला–ह वर्रसू–ल व तख़ूनू अमानातिकुम् व अन्तुम् तअ्–लमून(27)वअ्–लमू अन्नमा अम्वालुकुम् व औलादुकुम् फ़ित्–नतुंव् व अन्नल्ला–ह अ़िन्दहू

न होना जिन्होंने कहा हमने सुना और वह नहीं सुनते।(21) (फ़ा35) बेशक सब जानवरों में बदतर अल्लाह के नज़दीक वह है जो बहरे, गूंगे हैं जिनको अ़क्ल नहीं।(22) (फ़ा36) और अगर अल्लाह उनमें कुछ भलाई (फ़ा37) जानता तो उन्हें सुना देता और अगर (फ़ा38) सुना देता जब भी अन्जामकार मुंह फेर कर पलट जाते।(23) (फ़ा39) ऐ ईमान वालो अल्लाह और उसके रसूल के बुलाने पर हाज़िर हो (फ़ा40) जब रसूल तुम्हें उस चीज़ के लिए बुलायें जो तुम्हें ज़िन्दगी बख़्शेगी (फ़ा41) और जान लो कि अल्लाह का हुक्म आदमी और उसके दिली इरादों में हायल हो जाता है और यह कि तुम्हें उसकी तरफ़ उठना है।(24) और उस फ़ितना से डरते रहो जो हरगिज़ तुम में ख़ास ज़ालिमों ही को न पहुंचेगा (फ़ा42) और जान लो कि अल्लाह का अ़ज़ाब सख़्त है।(25)और याद करो (फ़ा43) जब तुम थोड़े थे मुल्क में दबे हुए (फ़ा44) डरते थे कि कहीं लोग तुम्हें उचक न ले जायें तो उसने तुम्हें (फ़ा45) जगह दी और अपनी मदद से ज़ोर दिया और सुथरी चीज़ें तुम्हें रोज़ी दीं (फ़ा46) कि कहीं तुम एहसान मानो।(26) ऐ ईमान वालो अल्लाह और रसूल से दग़ा न करो (फ़ा47) और न अपनी अमानतों में दानिस्ता ख़ियानत।(27)और जान रखो कि तुम्हारे माल और तुम्हारी औलाद सब फ़ितना है (फ़ा48) और अल्लाह के पास बड़ा

(फ़ा35) क्योंकि जो सुनकर नफ़ा न उठाये और नसीहत पज़ीर न हो उसका सुनना सुनना ही नहीं है। यह मुनाफ़िक़ीन व मुशरिकीन का हाल है मुसलमानों को इस हाल से दूर रहने का हुक्म दिया जाता है (फ़ा36) न वह हक़ सुनते हैं न हक़ बोलते हैं न हक़ को समझते हैं कान और ज़बान व अक़्ल से फ़ायदा नहीं उठाते जानवरों से भी बदतर हैं क्योंकि यह दीदा व दानिस्ता बहरे गूंगे बनते हैं और अक़्ल से दुश्मनी करते हैं। **शाने नुज़ूलः** यह आयत बनी अ़ब्दुद्दार इब्ने क़ुसइ के हक़ में नाज़िल हुई जो कहते थे कि जो कुछ मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम लाये हम उससे बहरे गूंगे अन्धे हैं यह सब लोग जंगे उहद में मक़्तूल हुए और उनमें से सिर्फ़ दो शख़्स ईमान लाये मुसअ़ब इब्ने उमैर और स्वैबित इब्ने हर्मला (फ़ा37) यानी सिद्क़ व रग़बत (फ़ा38) बहालते मौजूदा यह जानते हुए कि उनमें सिद्क़े रग़बत नहीं है (फ़ा39) अपने इनाद और हक़ से दुश्मनी के बाइस (फ़ा40) क्योंकि रसूल का बुलाना अल्लाह ही का बुलाना है बुख़ारी शरीफ़ में सईद बिन मुअ़ल्ला से मरवी है कि फ़रमाते हैं कि मैं मस्जिद में नमाज़ पढ़ता था मुझे रसूले अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने पुकारा मैंने जवाब न दिया फिर मैंने हाज़िरे ख़िदमत होकर अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह मैं नमाज़ पढ़ रहा था हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि क्या अल्लाह तआ़ला ने यह नहीं फ़रमाया है कि अल्लाह और रसूल के बुलाने पर हाज़िर हो ऐसा ही दूसरी हदीस में है कि **(बक़िया सफ़हा 301 पर)**

أَجْرٌ عَظِيمٌ ﴿٢٨﴾ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِنْ تَتَّقُوا اللَّهَ يَجْعَلْ لَكُمْ فُرْقَانًا وَيُكَفِّرْ عَنْكُمْ سَيِّئَاتِكُمْ وَيَغْفِرْ لَكُمْ ۗ وَاللَّهُ ذُو الْفَضْلِ الْعَظِيمِ ﴿٢٩﴾ وَإِذْ
يَمْكُرُ بِكَ الَّذِينَ كَفَرُوا لِيُثْبِتُوكَ أَوْ يَقْتُلُوكَ أَوْ يُخْرِجُوكَ ۚ وَيَمْكُرُونَ وَيَمْكُرُ اللَّهُ ۖ وَاللَّهُ خَيْرُ الْمَاكِرِينَ ﴿٣٠﴾ وَإِذَا تُتْلَىٰ عَلَيْهِمْ آيَاتُنَا قَالُوا قَدْ
سَمِعْنَا لَوْ نَشَاءُ لَقُلْنَا مِثْلَ هَٰذَا ۙ إِنْ هَٰذَا إِلَّا أَسَاطِيرُ الْأَوَّلِينَ ﴿٣١﴾ وَإِذْ قَالُوا اللَّهُمَّ إِنْ كَانَ هَٰذَا هُوَ الْحَقَّ مِنْ عِنْدِكَ فَأَمْطِرْ عَلَيْنَا
حِجَارَةً مِنَ السَّمَاءِ أَوِ ائْتِنَا بِعَذَابٍ أَلِيمٍ ﴿٣٢﴾ وَمَا كَانَ اللَّهُ لِيُعَذِّبَهُمْ وَأَنْتَ فِيهِمْ ۚ وَمَا كَانَ اللَّهُ مُعَذِّبَهُمْ وَهُمْ يَسْتَغْفِرُونَ ﴿٣٣﴾ وَمَا لَهُمْ
أَلَّا يُعَذِّبَهُمُ اللَّهُ وَهُمْ يَصُدُّونَ عَنِ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ وَمَا كَانُوا أَوْلِيَاءَهُ ۚ إِنْ أَوْلِيَاؤُهُ إِلَّا الْمُتَّقُونَ وَلَٰكِنَّ أَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُونَ ﴿٣٤﴾ وَمَا كَانَ

अज्रुन् अ़ज़ीम(28)या अय्युहल्लज़ी–न आ–मनू इन् तत्तकुल्ला–ह यज्अ़ल् लकुम् फ़ुर्क़ानंव् व यु–कफ़्फ़िर् अ़न्कुम् सय्यिआतिकुम् व यग़्फ़िर् लकुम् वल्लाहु ज़ुलफ़ज़्लिल् अ़ज़ीम(29)व इज़् यम्कुरु बि–कल्लज़ी–न क–फ़रू लियुस्बितू–क औ यक़्तुलू–क औ युख़्रिजू–क व यम्कुरू–न व यम्कुरुल्लाहु वल्लाहु ख़ैरुल् माकिरीन(30)व इज़ा तुत्ला अ़लैहिम् आयातुना क़ालू क़द् समिअ्ना लौ नशाउ ल–क़ुल्ना मिस्–ल हाज़ा इन् हाज़ा इल्ला असातीरुल् अव्वलीन(31)व इज़् क़ालुल्लाहुम्–म इन् का–न हाज़ा हुवल्हक़्–क़ मिन् अ़िन्दि–क फ़–अम्तिर् अ़लैना हिजा–रतम् मिनस्समाइ अविअ्तिना बि–अ़ज़ाबिन् अलीम(32)व मा का–नल्लाहु लियु– अ़ज़्ज़ि–बहुम् व अन्–त फ़ीहिम् व मा कानल्लाहु मुअ़ज़्ज़ि–बहुम् व हुम् यस्तग़फ़िरून(33)व मा लहुम् अल्ला युअ़ज़्ज़ि ब–हुमुल्लाहु व हुम् यसुद्दू–न अ़निल् मस्जिदिल् हरामि व मा कानू औलिया–अहू इन् औलियाउहू इल्लल् मुत्तक़ू–न व लाकिन्–न अक्स–रहुम् ला यअ़्लमून(34)व मा का–न

सवाब है।(28) (फ़ा49) (रुकूअ़ 17) ऐ ईमान वालो अगर अल्लाह से डरोगे (फ़ा50) तो तुम्हें वह देगा जिस से हक़ को बातिल से जुदा कर लो और तुम्हारी बुराईयां उतार देगा और तुम्हें बख़्श देगा और अल्लाह बड़े फ़ज़्ल वाला है(29) और ऐ महबूब याद करो जब काफ़िर तुम्हारे साथ मक्र करते थे कि तुम्हें बन्द कर लें या शहीद कर दें या निकाल दें (फ़ा51) और वह अपना सा मक्र करते थे और अल्लाह अपनी ख़ुफ़िया तदबीर फ़रमाता था और अल्लाह की ख़ुफ़िया तदबीर सब से बेहतर।(30)और जब उन पर हमारी आयतें पढ़ी जायें तो कहते हैं हां हमने सुना हम चाहते तो ऐसी हम भी कह देते यह तो नहीं मगर अगलों के क़िस्से। (31) (फ़ा52) और जब बोले (फ़ा53) कि ऐ अल्लाह अगर यही (कुरआन) तेरी तरफ़ से हक़ है तो हम पर आसमान से पत्थर बरसा या कोई दर्दनाक अ़ज़ाब हम पर ला।(32) और अल्लाह का काम नहीं कि उन्हें अज़ाब करे जब तक ऐ महबूब तुम उनमें तशरीफ़ फ़रमा हो (फ़ा54) और अल्लाह उन्हें अ़ज़ाब करने वाला नहीं जब तक वह बख़्शिश मांग रहे हैं(33) (फ़ा55) और उन्हें क्या है कि अल्लाह उन्हें अ़ज़ाब न करे वह तो मस्जिदे हराम से रोक रहे हैं (फ़ा56) और वह उसके अहल नहीं (फ़ा57) उसके औलिया तो परहेज़गार ही हैं मगर उनमें अक्सर को इल्म नहीं।(34) और कअ़्बा

(फ़ा49) तो आक़िल को चाहिए कि उसी का तलबगार रहे और माल व औलाद के सबब से उससे महरूम न हो (फ़ा50) इस तरह कि गुनाह तर्क करो और ताअ़त बजा लाओ (फ़ा51) इसमें उस वाक़िआ़ का बयान है जो हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा ने ज़िक्र फ़रमाया कि कुफ़्फ़ारे क़ुरैश दारुन्नदवा (कमेटी घर) में रसूले अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की निस्बत मशवरा करने के लिए जमा हुए और इबलीस लईन एक बुड्ढे की सूरत में आया और कहने लगा कि मैं शैख़ नज्द हूं मुझे तुम्हारे इस इज्तेमाअ़ की इत्तलाअ़ हुई तो मैं आया मुझ से तुम कुछ न छुपाना मैं तुम्हारा रफ़ीक़ हूं और इस मुआ़मला में बेहतर राये से तुम्हारी मदद करूंगा उन्होंने उसको शामिल कर लिया और सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के मुतअ़ल्लिक़ रायज़नी शुरू हुई अबुलबख़्तरी ने कहा मेरी राय यह है कि मुहम्मद (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) को पकड़ कर एक मकान में क़ैद कर दो और मज़बूत बन्दिशों से बांध दो दरवाज़ा बन्द करदो सिर्फ़ एक सुराख़ छोड़ दो जिससे कभी कभी खाना पानी दिया जाये और वह वहीं हलाक होकर रह जायें इस पर शैतान लईन जो शैख़ नज्दी बना हुआ था बहुत नाख़ुश हुआ और कहा निहायत नाक़िस राय है यह ख़बर मशहूर होगी और उनके असहाब आयेंगे और तुम से मुक़ाबला करेंगे और उनको तुम्हारे हाथ से छुड़ा लेंगे लोगों ने कहा शैख़ नज्दी ठीक कहता है फिर हश्शाम बिन अमर खड़ा हुआ उसने कहा मेरी राय यह है कि उनको (यानी मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को) ऊंट पर सवार करके अपने शहर से निकाल दो फिर वह (बक़िया सफ़हा 302 पर)

صَلَاتُهُمْ عِنْدَ الْبَيْتِ اِلَّا مُكَآءً وَّ تَصْدِيَةً ؕ فَذُوْقُوا الْعَذَابَ بِمَا كُنْتُمْ تَكْفُرُوْنَ ﴿۳۵﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا يُنْفِقُوْنَ اَمْوَالَهُمْ لِيَصُدُّوْا

عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ؕ فَسَيُنْفِقُوْنَهَا ثُمَّ تَكُوْنُ عَلَيْهِمْ حَسْرَةً ثُمَّ يُغْلَبُوْنَ ۬ؕ وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْۤا اِلٰى جَهَنَّمَ يُحْشَرُوْنَ ﴿۳۶﴾ لِيَمِيْزَ اللّٰهُ الْخَبِيْثَ مِنَ

الطَّيِّبِ وَيَجْعَلَ الْخَبِيْثَ بَعْضَهٗ عَلٰى بَعْضٍ فَيَرْكُمَهٗ جَمِيْعًا فَيَجْعَلَهٗ فِيْ جَهَنَّمَ ؕ اُولٰٓئِكَ هُمُ الْخٰسِرُوْنَ ﴿۳۷﴾ قُلْ لِّلَّذِيْنَ كَفَرُوْۤا اِنْ يَّنْتَهُوْا يُغْفَرْ

لَهُمْ مَّا قَدْ سَلَفَ ۚ وَاِنْ يَّعُوْدُوْا فَقَدْ مَضَتْ سُنَّتُ الْاَوَّلِيْنَ ﴿۳۸﴾ وَقٰتِلُوْهُمْ حَتّٰى لَا تَكُوْنَ فِتْنَةٌ وَّيَكُوْنَ الدِّيْنُ كُلُّهٗ لِلّٰهِ ۚ فَاِنِ انْتَهَوْا فَاِنَّ اللّٰهَ

بِمَا يَعْمَلُوْنَ بَصِيْرٌ ﴿۳۹﴾ وَاِنْ تَوَلَّوْا فَاعْلَمُوْۤا اَنَّ اللّٰهَ مَوْلٰىكُمْ ؕ نِعْمَ الْمَوْلٰى وَنِعْمَ النَّصِيْرُ ﴿۴۰﴾

स़लातुहुम् अ़िन्दल्बैति इल्ला मुकाअंव्–व तस्दि–यतन् फ़ज़ूक़ुल् अ़ज़ा–ब बिमा कुन्तुम् तक्फ़ुरून(35)इन्नल्लज़ी–न क–फ़रू युन्फ़िक़ू–न अम्वा लहुम् लि–यसुद्दू अ़न् सबीलिल्लाहि फ़–सयुन्फ़िक़ू–नहा सुम्–म तकूनु अ़लैहिम् ह़स्र–तन् सुम्–म युग्–लबू–न वल्लज़ी–न क–फ़रू इला जहन्न–म युह़्शरून(36)लि–यमीज़ल्लाहुल् ख़बी–स़ मिनत्तय्यिबि व यज्–अ़–लल् ख़बी–स़ बअ़्–ज़हू अ़ला बअ़्ज़िन् फ़–यरकु–महू जमीअ़न् फ़–यज्अ़–लहू फ़ी जहन्न–म उलाइ–क हुमुल्ख़ा–सिरून(37)क़ुल् लिल्लज़ी–न क–फ़रू इय्यन्तहू युग्फ़र् लहुम् मा क़द् स–ल–फ़ व इंय्यअ़ूदू फ़–क़द् मज़त् सुन्नतुल् अव्वलीन(38)व क़ाति–लूहुम् ह़त्ता ला तकू–न फ़ित्नतुंव्–व यकू–नद्दीनु कुल्लुहू लिल्लाहि फ़इनिन्तहौ फ़इन्नल्ला–ह बिमा यअ़्मलू–न बसीर(39)व इन् तवल्लौ फ़अ़्लमू अन्नल्ला–ह मौलाकुम् निअ़्मल् व निअ़्मन् नस़ीर(40)

के पास उनकी नमाज़ नहीं मगर सीटी और ताली (फ़ा58) तो अब अ़ज़ाब चखो (फ़ा59) बदला अपने कुफ़्र का।(35) बेशक काफ़िर अपने माल ख़र्च करते हैं कि अल्लाह की राह से रोकें (फ़ा60) तो अब उन्हें ख़र्च करेंगे फिर वह उन पर पछतावा होंगे (फ़ा61) फिर मग़लूब कर दिये जायेंगे और क़ाफ़िरों का हश्र जहन्नम की तरफ़ होगा।(36) इस लिए कि अल्लाह गन्दे को सुथरे से जुदा फ़रमा दे (फ़ा62) और नजासतों को तले ऊपर रख कर सब एक ढेर बनाकर जहन्नम में डाल दे वही नक़सान पाने वाले हैं।(37)(फ़ा63)(रुकूअ़ 18)तुम काफ़िरों से फ़रमाओ अगर वह बाज़ रहे तो जो हो गुज़रा वह उन्हें माफ़ फ़रमा दिया जाएगा (फ़ा64) और अगर फिर वही करें तो अगलों का दस्तूर गुज़र चुका है।(38)(फ़ा65)और उनसे लड़ो यहां तक कि कोई फ़साद(फ़ा66) बाक़ी न रहे और सारा दीन अल्लाह ही का होजाये फिर अगर वह बाज़ रहें तो अल्लाह उनके काम देख रहा है।(39)और अगर वह फिरें (फ़ा67)तो जान लो कि अल्लाह तुम्हारा मौला है(फ़ा68)तो क्या ही अच्छा मौला और क्या ही अच्छा मददगार।(40)

(फ़ा58) यानी नमाज़ की जगह सीटी और ताली बजाते हैं हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा ने फ़रमाया कि क़ुरैश नंगे होकर ख़ाना कअ़्बा का तवाफ़ करते थे और सीटियां और तालियां बजाते थे और यह फ़ेअ़्ल उनका या तो इस एतेक़ादे बातिल से था कि सीटी व ताली बजाना इबादत है और या इस शरारत से कि उनके इस शोर से सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को नमाज़ में परेशानी हो (फ़ा59) क़त्ल व क़ैद का बदर में (फ़ा60) यानी लोगों को अल्लाह और उसके रसूल पर ईमान लाने से मानेअ़् हों। शाने नुज़ूलः यह आयत कुफ़्फ़ार में से उन बारह क़ुरैशियों के हक़ में नाज़िल हुई जिन्होंने लश्करे कुफ़्फ़ार का खाना अपने ज़िम्मा लिया था और हर एक उन में से लश्कर को खाना देता था हर रोज़ दस ऊंट (फ़ा61) कि माल भी गया और काम भी न बना (फ़ा62) यानी गरोहे कुफ़्फ़ार को गरोहे मोमिनीन से मुमताज़ करदे (फ़ा63) कि दुनिया व आख़िरत के टोटे में रहे और अपने माल ख़र्च करके अ़ज़ाबे आख़िरत मोल लिया। (फ़ा64) मसलाः इस आयत से मालूम हुआ कि काफ़िर जब कुफ़्र से बाज़ आये और इस्लाम लाये तो उसका पहला कुफ़्र और मआसी माफ़ हो जाते हैं। (फ़ा65) कि अल्लाह तआ़ला अपने दुश्मनों को हलाक करता है और अपने अम्बिया और औलिया की मदद फ़रमाता है (फ़ा66) यानी शिर्क (फ़ा67) ईमान लाने से (फ़ा68) तुम उसकी मदद पर भरोसा रखो।

(बक़िया सफ़हा 269 का) क़ौल है कि अल्लाह तआ़ला ने हज़रत शुऐब अ़लैहिस्सलाम को असहाबे ऐका की तरफ़ भी मबऊस फ़रमाया था और अहले मद्यन की तरफ़ भी असहाबे ऐका तो अब्र से हलाक किये गए और अहले मद्यन ज़लज़ला में गिरफ़्तार हुए और एक हौलनाक आवाज़ से हलाक हो गए (फ़ा174) जब उन पर अ़ज़ाब आया (फ़ा175) मगर तुम किसी तरह ईमान न लाये (फ़ा176) जिसको उसकी क़ौम ने झुठलाया हो

(बक़िया सफ़हा 270 का) और खुदा और रसूल की इताअ़त इख़्तियार करते और जिस चीज़ को अल्लाह व रसूल ने मना फ़रमाया उससे बाज़ रहते (फ़ा184) हर तरफ़ से उन्हें ख़ैर पहुंचती वक़्त पर नाफ़ेअ़ और मुफ़ीद बारिशें होतीं ज़मीन से खेती फल बकसरत पैदा होते रिज़्क़ की फ़राख़ी होती अमन व सलामती रहती आफ़तों से महफ़ूज़ रहते। (फ़ा185) अल्लाह के रसूलों को (फ़ा186) और अनवाओ़ अ़ज़ाब में मुब्तला किया। (फ़ा187) कुफ़्फ़ार ख़्वाह वह मक्का मुकर्रमा के रहने वाले हों या गिर्दो पेश के या और कहीं के (फ़ा188) और अ़ज़ाब के आने से ग़ाफ़िल हों (फ़ा189) और उसके ढील देने और दुनियवी निअ़मत देने पर मग़रूर होकर उसके अ़ज़ाब से बे फ़िक्र हो गए हैं (फ़ा190) और उसके मुख़लिस बन्दे उसका ख़ौफ़ रखते हैं। रबीअ़ बिन ख़सीम की साहबज़ादी ने उनसे कहा क्या सबब है मैं देखती हूं सब लोग सोते हैं और आप नहीं सोते हैं फ़रमाया ऐ नूरे नज़र तेरा बाप शब को सोने से डरता है यानी यह कि ग़ाफ़िल होकर सो जाना कहीं सबबे अ़ज़ाब न हो (फ़ा191) जैसा कि हमने उनके मूरिसों को उनकी नाफ़रमानी के सबब हलाक किया (फ़ा192) और कोई पन्द व नसीहत नहीं मानते (फ़ा193) क़ौमे हज़रत नूह और और आ़द समूद और क़ौमे हज़रत लूत व क़ौमे हज़रत शुऐब की (फ़ा194) ताकि मालूम हो कि हम अपने रसूलों की और उन पर ईमान लाने वालों की अपने दुश्मनों यानी काफ़िरों के मुक़ाबला में मदद किया करते हैं (फ़ा195) यानी मोअ़जेज़ाते बाहिरात (फ़ा196) ता दमे मर्ग

(बक़िया सफ़हा 271 का) तरफ़ रुख़ किया तो ऐसी भाग पड़ी कि हज़ारों आदमी आपस में कुचल कर मर गए फ़िरऔ़न घर में जाकर चीख़ने लगा ऐ मूसा तुम्हें उसकी क़सम जिसने तुम्हें रसूल बनाया इसको पकड़ लो मैं तुम पर ईमान लाता हूं और तुम्हारे साथ बनी इसराईल को भेजे देता हूं हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम ने उसको उठा लिया तो वह मिस्ले साबिक़ असा था। (फ़ा207) और उसकी रौशनी और चमक नूरे आफ़ताब पर ग़ालिब हो गई (फ़ा208) जिसने जादू से नज़रबन्दी की और लोगों को असा अज़दहा नज़र आने लगा और गन्दुमी रंग का हाथ आफ़ताब से ज़्यादा रौशन मालूम होने लगा (फ़ा209) मिस्र (फ़ा210) हज़रत हारून (फ़ा211) जो सहर में माहिर हो और सब से फ़ायक़ चुनांचे लोग रवाना हुए और अतराफ़ व बिलाद में तलाश करके जादूगरों को ले आये।

(बक़िया सफ़हा 272 का) ने पहचान लिया कि असाए मूसा सहर नहीं और क़ुदरते बशरी ऐसा करिश्मा नहीं दिखा सकती ज़रूर यह अम्रे समावी है यह बात समझ कर वह *आमन्ना बिरब्बिल् आ़-लमीन* कहते हुए सजदे में गिर गए(फ़ा217)यानी यह मोअ़जेज़ा देख कर उन पर ऐसा असर हुआ कि वह बे इख़्तियार सजदे में गिर गए मालूम होता था किसी ने पेशानियां पकड़ कर ज़मीन पर लगा दीं (फ़ा218) यानी तुम ने और हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम ने सब ने मुत्तफ़िक़ होकर(फ़ा219)और ख़ुद इस पर मुसल्लत हो जाओ(फ़ा220)कि मैं तुम्हारे साथ किस तरह पेश आता हूं(फ़ा221)नील के कनारे हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा ने फ़रमाया कि दुनिया में पहला सूली देने वाला पहला हाथ पांव काटने वाला फ़िरऔ़न है। फ़िरऔ़न की इस गुफ़्तगू पर जादूगरों ने यह जवाब दिया जो अगली आयत में मज़कूर है(फ़ा222) तो हमें मौत का क्या ग़म क्योंकि मर कर हमें अपने रब की लिक़ा और उसकी रहमत नसीब होगी और जब सबको उसी की तरफ़ रुजूअ़ करना है तो वह ख़ुद हमारे तेरे दर्मियान फ़ैसला फ़रमा देगा।

(बक़िया सफ़हा 273 का) फ़िरऔ़न से यह जो कहा था कि क्या तू मूसा और उसकी क़ौम को इस लिए छोड़ता है कि वह ज़मीन में फ़साद फैलायें इससे उनका मतलब फ़िरऔ़न को हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम के और आपकी क़ौम के क़त्ल पर उभारना था जब उन्होंने ऐसा किया तो मूसा अ़लैहिस्सलातु वस्सलाम ने उनको नुज़ूले अ़ज़ाब का ख़ौफ़ दिलाया और फ़िरऔ़न अपनी क़ौम की ख़्वाहिश पर क़ुदरत नहीं रखता था क्योंकि वह हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम के मोअ़जज़े की क़ुव्वत से मरऊब हो चुका था इसी लिए उसने अपनी क़ौम से यह कहा कि हम बनी इसराईल के लड़कों को क़त्ल करेंगे लड़कियों को छोड़ देंगे इससे उसका मतलब यह था कि इस तरह क़ौमे हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम की तादाद घटा कर उनकी क़ुव्वत कम करेंगे और अवाम में अपना भरम रखने के लिए यह भी कह दिया कि हम बेशक इन पर ग़ालिब हैं लेकिन फ़िरऔ़न के इस क़ौल से कि हम बनी इसराईल के लड़कों को क़त्ल करेंगे बनी इसराईल में कुछ परेशानी पैदा हो गई और उन्होंने हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलातु वस्सलाम से इसकी शिकायत की उसके जवाब में हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलातु वस्सलाम ने फ़रमाया (जो इसके बाद आता है) (फ़ा228) वह काफ़ी है (फ़ा229) मुसीबतों और बलाओं पर और घबराओ नहीं (फ़ा230) और ज़मीने मिस्र भी इसी में दाख़िल है (फ़ा231) यह फ़रमा कर हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम ने बनी इसराईल को तवक़्क़ोअ़ दिलाई कि फ़िरऔ़न और उसकी क़ौम हलाक होगी और बनी इसराईल उनकी ज़मीनों और शहरों के मालिक होंगे (फ़ा232) उन्हीं के लिए फ़तह व ज़फ़र है और उन्हीं के लिए आ़क़िबते महमूदा (फ़ा233) कि फ़िरऔ़न और फ़िरऔ़नियों ने तरह तरह की मुसीबतों में मुब्तला कर रखा था और लड़कों को बहुत ज़्यादा क़त्ल किया था (फ़ा234) कि अब वह फिर हमारी औलाद के क़त्ल का इरादा रखता है तो हमारी मदद कब होगी और यह मुसीबतें कब दफ़ा की जायेंगी (फ़ा235) और किस तरह शुक्रे निअ़मत बजा लाते हो। (फ़ा236) और फ़क्र व फ़ाक़ा की मुसीबत में गिरिफ़्तार किया (फ़ा237) और कुफ़्र व मअ़सियत से बाज़ आयें फ़िरऔ़न ने अपनी चार सौ बरस की उम्र में से तीन सौ बीस साल तो इस आराम के साथ गुज़ारे थे कि इस मुद्दत में कभी दर्द या बुख़ार या भूक में मुब्तला ही नहीं हुआ अब क़हत साली की सख़्ती उन पर इस लिए डाली गई कि वह उस सख़्ती ही से ख़ुदा को याद करें और इसकी तरफ़ मुतवज्जह हों लेकिन वह कुफ़्र में इस क़दर रासिख़ हो चुके थे कि उन तकलीफ़ों से भी उनकी सरकशी ही बढ़ती रही (फ़ा238) और अरज़ानी व फ़राख़ी व अमन व आफ़ियत होती (फ़ा239) यानी हम उसके मुस्तहिक़ ही हैं और उसको अल्लाह का फ़ज़्ल न जानते और शुक्रे इलाही न बजा लाते (फ़ा240) और कहते कि यह बलायें इनकी वजह से पहुंचीं अगर यह न होते तो यह मुसीबतें न आतीं (फ़ा241) जो उसने मुक़द्दर किया है वही पहुंचता है और यह उनके कुफ़्र के सबब है बाज़ मुफ़स्सिरीन फ़रमाते हैं माना यह हैं कि बड़ी शामत तो वह है जो उनके लिए अल्लाह के यहां है यानी अ़ज़ाबे दोज़ख़

(बक़िया सफ़्हा 274 का) नेअ्मत था और ईमान न लाये एक महीना तो आफ़ियत से गुज़रा फिर अल्लाह तआला ने टिड्डी भेजी वह खेतियां और फल व दरख़्तों के पत्ते मकानों के दरवाज़े छतें तख़्ते सामान हत्ता कि लोहे की कीलें तक खा गईं और क़िबतियों के घरों में भर गईं और बनी इसराईल के यहां न गईं अब क़िबतियों ने परेशान होकर फिर हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम से दुआ़ की दरख़्वास्त की ईमान लाने का वादा किया इस पर अहदो पैमान किया सात रोज़ यानी शम्बा से शम्बा तक टिड्डी की मुसीबत में मुब्तला रहे फिर हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम की दुआ़ से नजात पाई खेतियां और फल जो कुछ बाक़ी रह गए थे उन्हें देख कर कहने लगे यह हमें काफ़ी हैं हम अपना दीन नहीं छोड़ते चुनांचे ईमान न लाये अहद वफ़ा न किया और अपने आमाले ख़बीसा में मुब्तला हो गए एक महीना आफ़ियत से गुज़रा फिर अल्लाह तआ़ला ने क़ुम्मल भेजे इसमें मुफ़स्सिरीन का इख़्तिलाफ़ है बाज़ कहते हैं कि क़ुम्मल घुन है बाज़ कहते हैं कि जूं बाज़ कहते हैं एक छोटा सा कीड़ा है उस कीड़े ने जो खेतियां और फल बाक़ी रहे थे वह खा लिए कपड़ों में घुस जाता था और जिल्द को काटता था खाने में भर जाता था अगर कोई दस बोरी गेहूं चक्की पर ले जाता तो तीन सेर वापस लाता बाक़ी सब कीड़े खा जाते यह फ़िरऔ़नियों के बाल भंवें पलकें चाट गए जिस्म पर चेचक की तरह भर जाते सोना दुशवार कर दिया था इस मुसीबत से फ़िरऔ़नी चीख़ पड़े और उन्होंने हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम से अर्ज़ किया हम तौबा करते हैं आप इस बला के दफ़अ़ होने की दुआ़ फ़रमाइये चुनांचे सात रोज़ के बाद यह मुसीबत भी हज़रत की दुआ़ से रफ़अ़ हुई लेकिन फ़िरऔ़नियों ने फिर अहद शिकनी की और पहले से ज़्यादा ख़बीस तर अ़मल शुरू किये। एक महीना अमन में गुज़रने के बाद फिर हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम ने बद दुआ़ की तो अल्लाह तआ़ला ने मेंडक भेजे और यह हाल हुआ कि आदमी बैठता तो उसकी मजलिस में मेंडक भर जाते थे बात करने के लिए मुंह खोलता तो मेंडक कूद कर मुंह में पहुंचता हांडियों में मेंडक खानों में मेंडक चूल्हों में मेंडक, भर जाते थे आग बुझ जाती थी लेटते थे तो मेंडक ऊपर सवार होते थे इस मुसीबत से फ़िरऔ़नी रो पड़े और हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम से अ़र्ज़ किया अब की बार हम पक्की तौबा करते हैं हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम ने उनसे अहदो पैमान लेकर दुआ़ की तो सात रोज़ के बाद यह मुसीबत भी दफ़अ़ हुई और एक महीना आफ़ियत से गुज़रा लेकिन फिर उन्होंने अ़हद तोड़ दिया और अपने कुफ़्र की तरफ़ लौटे फिर हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम ने बद दुआ़ फ़रमाई तो तमाम कुओं का पानी नहरों और चश्मों का पानी दरियाए नील का पानी ग़रज़ हर पानी उनके लिए ताज़ा ख़ून बन गया उन्होंने फ़िरऔ़न से इसकी शिकायत की तो कहने लगा कि हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम ने जादू से तुम्हारी नज़र बन्दी कर दी, उन्होंने कहा कैसी नज़र बन्दी हमारे बर्तनों में ख़ून के सिवा पानी का नामो निशान ही नहीं तो फ़िरऔ़न ने हुक्म दिया कि क़िबती बनी इसराईल के साथ एक ही बर्तन से पानी लें तो जब बनी इसराईल निकालते तो पानी निकलता क़िबती निकालते तो उसी बर्तन से ख़ून निकलता यहां तक कि फ़िरऔ़नी औरतें प्यास से आ़जिज़ होकर बनी इसराईल की औरतों के पास आईं और उनसे पानी मांगा तो वह पानी उनके बर्तन में आते ही ख़ून हो गया तो फ़िरऔ़नी औरत कहने लगी कि तू पानी अपने मुंह में लेकर मेरे मुंह में कुल्ली करदे जब तक वह पानी इसराईली औरत के मुंह में रहा पानी था जब फ़िरऔ़नी औरत के मुंह में पहुंचा ख़ून हो गया। फ़िरऔ़न ख़ुद प्यास से मुज़तरिब हुआ तो उसने तर दरख़्तों की रतूबत चूसी वह रतूबत मुंह में पहुंचते ही ख़ून हो गई सात रोज़ तक ख़ून के सिवा कोई चीज़ पीने की मुयस्सर न आई तो फिर हज़रत मूसा अला नबिय्यिना व अ़लैहिस्सलातु वस्सलाम से दुआ़ की दरख़्वास्त की और ईमान लाने का वादा किया हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलातु वस्सलाम ने दुआ़ फ़रमाई यह मुसीबत भी रफ़अ़ हुई मगर ईमान फिर भी न लाये। (फ़ा244) एक के बाद दूसरी और हर अ़ज़ाब एक हफ़्ता क़ायम रहता और दूसरे अ़ज़ाब से एक महीना का फ़ासिला होता (फ़ा245) और हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम पर ईमान न लाये (फ़ा246) कि वह आपकी दुआ़ क़बूल फ़रमाएगा (फ़ा247) यानी दरियाए नील में जब बार बार उन्हें अ़ज़ाबों से नजात दी गई और वह किसी अहद पर क़ायम न रहे और ईमान न लाये और कुफ़्र न छोड़ा तो वह मीआ़द पूरी होने के बाद जो उनके लिए मुक़र्रर फ़रमाई गई थी उन्हें अल्लाह तआ़ला ने ग़र्क़ करके हलाक कर दिया (फ़ा248) असलन तदब्बुर व इल्तेफ़ात नहीं करते थे (फ़ा249) यानी बनी इसराईल को (फ़ा250) यानी मिस्र व शाम (फ़ा251) नहरों दरख़्तों फलों खेतियों और पैदावार की कसरत से (फ़ा252) इन तमाम इमारतों और ऐवानों और बाग़ों को (फ़ा253) फ़िरऔ़न और उसकी क़ौम को दसवीं मुहर्रम को ग़र्क़ करने के बाद।

(बक़िया सफ़्हा 276 का) कि *दारुलफ़ासिक़ीन* से फ़िरऔ़न और उसकी क़ौम के मकानात मुराद हैं जो मिस्र में हैं सुद्दी का क़ौल है कि इससे मनाज़िले कुफ़्फ़ार मुराद हैं। कलबी ने कहा कि आ़द समूद और हलाक शुदा उम्मतों के मनाज़िल मुराद हैं जिन पर अ़रब के लोग अपने सफ़रों में हो कर गुज़रा करते थे। (फ़ा270) ज़ुन्नून क़द्देस सिर्रहू ने फ़रमाया कि अल्लाह तआ़ला हिकमते क़ुरआन से अहले बातिल के क़ुलूब का इकराम नहीं फ़रमाता। हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा ने फ़रमाया मुराद यह है कि जो लोग मेरे बन्दों पर तकब्बुर करते हैं और मेरे औलिया से लड़ते हैं मैं उन्हें अपनी आयतों के क़बूल और तस्दीक़ से फेर दूंगा ताकि वह मुझ पर ईमान न लायें यह उनके इ़नाद की सज़ा है कि उन्हें हिदायत से महरूम किया गया। (फ़ा271) यही तकब्बुर का समरा मोतकब्बिर का अन्जाम है। (फ़ा272) तूर की तरफ़ अपने रब की मुनाजात के लिए जाने के (फ़ा273) जो उन्होंने क़ौमे फ़िरऔ़न से अपनी ईद के लिए आ़रियत लिए थे।

(बक़िया सफ़्हा 277 का) बारगाहे इलाही में (फ़ा286) अगर हम में से किसी से कोई इफ़्रात या तफ़्रीत हो गई यह दुआ़ आपने भाई को राज़ी करने और आदा की शमातत रफ़अ़ करने के लिए फ़रमाई।

(बक़िया सफ़हा 275 का) कर दिया अल्लाह तआला ने हुक्म फ़रमाया कि माहे ज़िलहिज्जा में दस रोज़े रखें और फ़रमाया कि ऐ मूसा क्या तुम्हें मालूम नहीं कि रोज़ेदार की मुंह की खुश्बू मेरे नज़दीक खुश्बूए मुश्क से ज़्यादा अत्यब है (फ़ा262) पहाड़ पर मुनाजात के लिए जाते वक़्त (फ़ा263) आयत से साबित हुआ कि अल्लाह तआला ने हज़रत मूसा अलैहिस्सलातु वस्सलाम से कलाम फ़रमाया इस पर हमारा ईमान है और हमारी क्या हक़ीक़त है कि हम उस कलाम की हक़ीक़त से बहस कर सकें अख़बार में वारिद है कि जब हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम कलाम सुनने के लिए हाज़िर हुए तो आपने तहारत की और पाकीज़ा लिबास पहना और रोज़ा रख कर तूरे सीना में हाज़िर हुए अल्लाह तआला ने एक अब्र नाज़िल फ़रमाया जिसने पहाड़ को हर तरफ़ से बक़द्रे चार फ़रसंग के ढक लिया शयातीन और ज़मीन के जानवर हत्ता कि साथ रहने वाले फ़रिश्ते तक वहां से अलाहिदा कर दिये गए और आपके लिए आसमान खोल दिया गया तो आपने मलायका को मुलाहज़ा फ़रमाया कि हवा में खड़े हैं और आपने अर्शे इलाही को साफ़ देखा यहां तक कि अलवाह पर क़लमों की आवाज़ सुनी और अल्लाह तआला ने आप से कलाम फ़रमाया आपने उसकी बारगाह में अपने मअ्रूज़ात पेश किये उसने अपना कलामे करीम सुना कर नवाज़ा। हज़रत जिबरील अलैहिस्सलाम आप के साथ थे लेकिन जो अल्लाह तआला ने हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम से फ़रमाया वह उन्होंने कुछ न सुना हज़रत मूसा अलैहिस्सलातु वस्सलाम को कलामे रब्बानी की लज़्ज़त ने उसके दीदार का आरज़ूमन्द बनाया (ख़ाज़िन वग़ैरह) (फ़ा264) इन आंखों से सवाल करके बल्कि दीदारे इलाही बग़ैर सवाल के महज़ उसकी अता व फ़ज़्ल से हासिल होगा वह भी इस फ़ानी आंख से नहीं बल्कि बाक़ी आंख से यानी कोई बशर मुझे दुनिया में देखने की ताक़त नहीं रखता अल्लाह तआला ने यह नहीं फ़रमाया कि मेरा देखना मुमकिन नहीं इससे साबित हुआ कि दीदारे इलाही मुमकिन है अगरचे दुनिया में न हो क्योंकि सहीह हदीसों में है कि रोज़े क़ियामत मोमिनीन अपने रब अज़्ज़ व जल्ल के दीदार से फ़ैज़याब किये जायेंगे अलावा बरीं यह कि हज़रत मूसा अलैहिस्सलातु वस्सलाम आरिफ़ बिल्लाह हैं अगर दीदारे इलाही मुमकिन न होता तो आप हरगिज़ सवाल न फ़रमाते

(बक़िया सफ़हा 278 का) गया। इसका तर्जमा हज़रत मुतर्जिम क़द्देस सिर्रुहू ने (ग़ैब की ख़बर देने वाले) किया है और यह निहायत ही सही तर्जमा है क्योंकि *नबा* ख़बर को कहते हैं जो मुफ़ीद इल्म हो और शाइबए किज़्ब से ख़ाली हो क़ुरआने करीम में यह लफ़्ज़ इस माना में बकसरत मुस्तअमल हुआ है एक जगह इरशाद हुआ *क़ुल् हु-व न-बउन् अज़ीम* एक जगह फ़रमाया *तिल्-क मिन् अम्बाइल् ग़ैबि नूहीहा इलैक* एक जगह फ़रमाया *फ़लम्मा अम्-ब-अहुम् बि-अस्माएहिम्* और बकसरत आयात में यह लफ़्ज़ इस मानी में वारिद हुआ है फिर यह लफ़्ज़ या फ़ायल के मानी में होगा या मफ़ऊल के माना में पहली सूरत में इसके मानी होंगे ग़ैब की ख़बरें देने वाले और दूसरी सूरत में इसके मानी होंगे ग़ैब की ख़बरें दिये हुए और दोनों माना को क़ुरआने करीम से ताईद पहुंचती है पहले माना की ताईद इस आयत से होती है *नब्बिअ् इबादी* दूसरी आयत में फ़रमाया *क़ुल् अउ-नब्बिउकुम्* और इसी क़बील से है। हज़रत मसीह अलैहिस्सलातु वस्सलाम का इरशाद जो क़ुरआने करीम में वारिद हुआ *उ-नब्बिउकुम् बिमा ताकुलू-न व मा तद्-द ख़िरू-न* और दूसरी सूरत की ताईद इस आयत से होती है *नब्-ब अनि-यल् अलीमुल् ख़बीर* और हक़ीक़त में अम्बिया अलैहिमुस्सलाम ग़ैब की ख़बरें देने वाले ही होते हैं तफ़सीर ख़ाज़िन में है कि आपके वस्फ़ में नबी फ़रमाया क्यों कि नबी होना आला और अशरफ़ मरातिब में से है और यह इस पर दलालत करता है कि आप अल्लाह के नज़दीक बहुत बुलन्द दर्जे रखने वाले और उसकी तरफ़ से ख़बर देने वाले हैं उम्मी का तर्जमा हज़रत क़द्देस सिर्रुहू ने (बे पढ़े) फ़रमाया यह तर्जमा बिल्कुल हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा के इरशाद के मुताबिक़ है और यक़ीनन उम्मी होना आपके मोअ्जेज़ात में एक मोअ्जेज़ा है कि दुनिया में किसी से पढ़े नहीं और किताब वह लाये जिसमें अव्वलीन व आख़िरीन ग़ैबों के उलूम हैं (ख़ाज़िन)

ख़ाकी व बर औजे अर्श मन्ज़िल
उम्मी व किताब ख़ाना दरे दिल।
दीगर उम्मी व दक़ीक़ा दाने आलम
बे साया व सायबाने आलम।
सलवातुल्लाह अलैहि वसलामहू।

(बक़िया सफ़हा 280 का) ऐसे लोग थे जो शिकार से बाज़ रहे और शिकार करने वालों को मना करते थे और तिहाई ख़ामोश थे दूसरों को मना न करनते थे और मना करने वालों से कहते थे ऐसी क़ौम को क्यों नसीहत करते हो जिन्हें अल्लाह हलाक करने वाला है और एक गरोह वह ख़ताकार लोग जिन्होंने हुक्मे इलाही की मुख़ालफ़त की और शिकार किया और खाया और बेचा और जब वह उस मअ्सियत से बाज़ न आये तो मना करने वाले गरोह ने कहा कि हम तुम्हारे साथ बूदो बाश न रखेंगे और गांव को तक़सीम करके दर्मियान में एक दीवार खींच दी मना करने वालों का एक दरवाज़ा अलग था जिससे आते जाते थे हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम ने ख़ताकारों पर लानत की एक रोज़ मना करने वालों ने देखा कि ख़ताकारों में से कोई नहीं निकला तो उन्होंने ख़्याल किया कि शायद आज शराब के नशा में मदहोश हो गए होंगे उन्हें देखने के लिए दीवार पर चढ़े तो देखा कि वह बन्दरों की सूरतों में मस्ख़ हो गए थे अब यह लोग दरवाज़ा खोल कर दाख़िल हुए तो वह बन्दर अपने रिश्तेदारों को पहचानते थे और उनके पास आकर उनके कपड़े सूंघते थे और यह लोग उन बन्दर हो जाने वालों को नहीं पहचानते थे उन लोगों ने उनसे कहा क्या हम लोगों ने तुम से मना नहीं किया था उन्होंने सर के इशारा से कहा हां और वह सब हलाक हो गए और मना करने वाले सलामत रहे (फ़ा315) ताकि हम पर नही अनिल मुन्कर तर्क करने का इलज़ाम न रहे (फ़ा316) और वह नसीहत से नफ़ा उठा सकें।

(बक़िया सफ़हा 279 का) उनकी तबीअ़त और अ़.फ़ू व करम को उनकी आदत और अदल को उनकी सीरत और इज़हारे हक़ को उनकी शरीअ़त और हिदायत को उनका इमाम और इस्लाम को उनकी मिल्लत बनाऊंगा अहमद उनका नाम है ख़ल्क़ को उनके सदक़े में गुमराही के बाद हिदायत और जहालत के बाद इल्म व मअ़रेफ़त और गुमनामी के बाद रिफ़अ़त व मन्ज़िलत अता करूंगा और उन्हीं की बरकत से क़िल्लत के बाद कसरत और फ़क़्र के बाद दौलत और तफ़रक़े के बाद मुहब्बत इनायत करूंगा इन्हीं की बदौलत मुख़्तलिफ़ क़बायल ग़ैर मुजतमअ़ ख़्वाहिशों और इख़्तिलाफ़ रखने वाले दिलों में उलफ़त पैदा करूंगा और उनकी उम्मत को तमाम उम्मतों से बेहतर करूंगा। एक और हदीस में तौरेत शरीफ़ से हुज़ूर के यह औसाफ़ मन्क़ूल हैं मेरे बन्दे अहमद मुख़्तार उनका जाए विलादत मक्का मुकर्रमा और जाए हिजरत मदीना तय्येबा है उनकी उम्मत हर हाल में अल्लाह की कसीर हम्द करने वाली है यह चन्द नुक़ूल अहादीस से पेश किये गए। कुतुबे इलाहिया हुज़ूर सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की नअ़्त व सिफ़त से भरी हुई थीं अहले किताब हर क़र्न में अपनी किताबों में तराश ख़राश करते रहे और उनकी बड़ी कोशिश इस पर मुसल्लत रही कि हु.जूर का ज़िक्र अपनी किताबों में नाम को न छोड़ें तौरेत इन्जील वग़ैरह उनके हाथ में थीं इस लिए उन्हें इसमें कुछ दुशवारी न थी लेकिन हज़ारों तब्दीलें करने के बाद भी मौजूदा ज़माना की बाइबिल में हुज़ूर सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की बशारत का कुछ न कुछ निशान बाक़ी रह ही गया चुनांचे ब्रिटिश एन्ड फारेन बाइबिल सोसाइटी लाहौर 1931 ई° की छपी हुई बाइबिल में योहन्ना की इन्जील के बाब चौदह की सोलहवीं आयत में है। "और मैं बाप से दरख़्वास्त करूंगा तो वह तुम्हें दूसरा मददगार बख़्शेगा कि अबद तक तुम्हारे साथ रहे" लफ़्ज़ मददगार पर हाशिया है उस में इसके माना वकील या शफ़ीअ़ लिखे तो अब हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम के बाद ऐसा आने वाला जो शफ़ीअ़ हो और अबद तक रहे यानी उसका दीन कभी मन्सूख़ न हो। बजुज़ सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के कौन है फिर उन्तीसवीं तीसवीं आयत में है "और अब मैंने तुम से उसके होने से पहले कह दिया है ताकि जब हो जाये तो तुम यक़ीन करो उसके बाद मैं तुम से बहुत सी बातें न करूंगा क्योंकि दुनिया का सरदार आता है और मुझ में उसका कुछ नहीं।" कैसी साफ़ बशारत है और हज़रत मसीह अ़लैहिस्सलाम ने अपनी उम्मत को हु.जूर की विलादत का कैसा मुन्तज़िर बनाया और शौक़ दिलाया है और दुनिया का सरदारे ख़ास सय्यदे आलम का तर्जुमा है और यह फ़रमाना कि मुझ में उसका कुछ नहीं हुज़ूर की अज़मत का इज़हार उसके हु.जूर अपना कमाले अदब व इन्केसार है फिर उसी किताब के बाब सोलह की सातवीं आयत है। "लेकिन मैं तुम से सच कहता हूं कि मेरा जाना तुम्हारे लिए फ़ायदामन्द है क्योंकि अगर मैं न जाऊं तो वह मददगार तुम्हारे पास न आयेगा लेकिन अगर जाऊंगा तो उसे तुम्हारे पास भेज दूंगा।" इस में हु.जूर की बशारत के साथ इसका भी साफ़ इज़हार है कि हुज़ूर ख़ातमुल अम्बिया हैं आपका ज़ुहूर जब ही होगा जब हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम भी तशरीफ़ ले जायें इसकी तेरहवीं आयत है। "लेकिन जब वह यानी सच्चाई का रूह आएगा तो तुम को तमाम सच्चाई की राह दिखाएगा इस लिए कि वह अपनी तरफ़ से न कहेगा लेकिन जो कुछ सुनेगा वही कहेगा और तुम्हें आईन्दा की ख़बरें देगा।" इस आयत में बताया गया कि सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की आमद पर दीने इलाही की तकमील हो जाएगी और आप सच्चाई की राह यानी दीने हक़ को मुकम्मल कर देंगे इससे यही नतीजा निकलता है कि उनके बाद कोई नबी न होगा और यह कलिमे कि अपनी तरफ़ से न कहेगा जो कुछ सुनेगा वही कहेगा ख़ास *मा यन्ति.क़ु अ़निल् हवा इन् हु-व इल्ला वह्युन् यूहा* का तर्जमा है और यह जुमला कि तुम्हें आईन्दा की ख़बरें देगा इस में साफ़ बयान है कि वह नबीए अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ग़ैबी उलूम तालीम फ़रमायेंगे जैसा कि क़ुरआने करीम में फ़रमाया *युअ़ल्लिमुकुम् मा लम् तकूनू तअ़्-लमून और मा हु-व अ़लल् ग़ैबि बि-ज़नीन* (फ़ा299) यानी सख़्त तकलीफ़ें जैसे कि तौबा में अपने आपको क़त्ल करना और जिन आज़ा से गुनाह सादिर हों उनको काट डलना (फ़ा300) यानी अहकामे शाक़्क़ा जैसे कि बदन और कपड़े के जिस मक़ाम को नजासत लगे उसको क़ैंची से काट डालना और ग़नीमतों को जलाना और गुनाहों का मकानों के दरवाज़ों पर ज़ाहिर होना वग़ैरह। (फ़ा301) यानी मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम पर (फ़ा302) इस नूर से क़ुरआन शरीफ़ मुराद है जिससे मोमिन का दिल रौशन होता है और शक व जहालत की तारीकियां दूर होती हैं और इल्म व यक़ीन की ज़िया फैलती है (फ़ा303) यह आयत सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के उमूमे रिसालत की दलील है कि आप तमाम ख़ल्क़ के रसूल हैं और कुल जहान आप की उम्मत। बुख़ारी व मुस्लिम की हदीस है हुज़ूर फ़रमाते हैं पांच चीज़ें मुझे ऐसी अता हुईं जो मुझ से पहले किसी को न मिलीं (1) हर नबी ख़ास क़ौम की तरफ़ मबऊस होता था और मैं सुर्ख़ व सियाह की तरफ़ मबऊस फ़रमाया गया (2) मेरे लिए ग़नीमतें हलाल की गईं और मुझ से पहले किसी के लिए नहीं हुई थीं (3) मेरे लिए ज़मीन पाक और पाक करने वाली (क़ाबिले तयम्मुम) और मस्जिद की गई जिस किसी को कहीं नमाज़ का वक़्त आये वहीं पढ़ ले (4) दुश्मन पर एक माह की मुसाफ़त तक मेरा रोअ़ब डाल कर मेरी मदद फ़रमाई गई (5) और मुझे शफ़ाअ़त इनायत की गई मुस्लिम शरीफ़ की हदीस में यह भी है कि मैं तमाम ख़ल्क़ की तरफ़ रसूल बनाया गया और मेरे साथ अम्बिया ख़त्म किये गए। (फ़ा304) यानी हक़ से (फ़ा305) तीह में (फ़ा306) हर गरोह के लिए एक चश्मा (फ़ा307) ताकि धूप से अमन में रहें।

(बक़िया सफ़हा 289 का) साथ मारा गया और उसका सर रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के हुज़ूर में हाज़िर किया गया (फ़ा33) सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के साथ अदावत और हुज़ूर के साथ जंग करने से (फ़ा34) क्योंकि रसूल की इताअ़त और अल्लाह की इताअ़त एक ही चीज़ है जिसने रसूल की इताअ़त की उसने अल्लाह की इताअ़त की।

(बक़िया सफ़हा 281 का) तो कहता था कि यह गुनाह बख़्श दिया जाएगा उसके ज़माना में दूसरे इस पर तअ्न करते थे लेकिन जब वह मर जाता या मअ्ज़ूल कर दिया जाता और वही तअ्न करने वाले उसकी जगह हाकिम व क़ाज़ी होते तो वह भी उसी तरह रिश्वत लेते (फ़ा330) लेकिन बावजूद इसके उन्होंने उसके ख़िलाफ़ किया तौरेत में गुनाह पर इसरार करने वाले के लिए मग़फ़िरत का वादा न था तो उनका गुनाह किये जाना तौबा न करना और उस पर यह कहना कि हम से मुवाख़ज़ा न होगा यह अल्लाह पर इफ़्तरा है (फ़ा331) जो अल्लाह के अ़ज़ाब से डरें और रिश्वत व हराम से बचें और उसकी फ़रमांबरदारी करें (फ़ा332) और उसके मुताबिक़ अमल करते हैं और उसके तमाम अहकाम को मानते हैं और उसमें तग़य्युर व तबदील रवा नहीं रखते। **शाने नुज़ूलः** यह आयत अहले किताब में से हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने सलाम वग़ैरह ऐसे असहाब के हक़ में नाज़िल हुई जिन्होंने पहली किताब का इत्तेबाअ् किया उसकी तहरीफ़ न की उसके मज़ामीन को न छुपाया और उस किताब के इत्तेबाअ की बदौलत उन्हें कुरआन पाक पर ईमान नसीब हुआ। (ख़ाज़िन व मदारिक)

(बक़िया सफ़हा 282 का) हमें कोई तम्बीह नहीं की गई थी, (फ़ा338) जैसा उन्हें देखा उनके इत्तेबाअ् व इक़्तेदा में वैसा ही करते रहे (फ़ा339) यह उज़्र करने का मौक़ा न रहा जब कि उनसे अहद लिया गया और उनके पास रसूल आये और उन्होंने इस अहद को याद दिलाया और तौहीद पर दलायल क़ायम हुए (फ़ा340) ताकि बन्दे तदब्बुर व तफ़क्कुर करके हक़ व ईमान क़बूल करें (फ़ा341) शिर्क व कुफ़्र से तौहीद व ईमान की तरफ़ और नबी साहबे मोअ्जेज़ात के बताने से अपने अहद व मीसाक़ को याद करें और उसके मुताबिक़ अमल करें (फ़ा342) यानी बलअ़म बाऊर जिसका वाक़िआ़ मुफ़स्सिरीन ने इस तरह बयान किया है कि जब हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम ने जब्बारीन से जंग का क़स्द किया और सरज़मीने शाम में नुज़ूल फ़रमाया तो बलअ़म बाऊर की क़ौम उसके पास आई और उससे कहने लगी कि हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम बहुत तेज़ मिज़ाज हैं और उनके साथ कसीर लश्कर है वह यहां आये हैं हमें हमारे बिलाद से निकालेंगे और क़त्ल करेंगे और बजाए हमारे बनी इसराईल को इस सर ज़मीन में आबाद करेंगे तेरे पास इस्मे आज़म है और तेरी दुआ़ क़बूल होती है तू निकल और अल्लाह तआ़ला से दुआ़ कर कि अल्लाह तआ़ला उन्हें यहां से हटा दे बलअ़म बाऊर ने कहा तुम्हारा बुरा हो हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम नबी हैं और उनके साथ फ़रिश्ते हैं और ईमानदार लोग हैं मैं कैसे उन पर दुआ़ करूं मैं जानता हूं जो अल्लाह तआ़ला के नज़दीक उनका मर्तबा है अगर मैं ऐसा करूं तो मेरी दुनिया व आख़िरत बरबाद हो जाएगी मगर क़ौम उससे इसरार करती रही और बहुत इल्हाह व ज़ारी के साथ उन्होंने अपना यह सवाल जारी रखा तो बलअ़म बाऊर ने कहा कि मैं अपने रब की मर्ज़ी मालूम कर लूं और उसका यही तरीक़ा था कि जब कभी कोई दुआ़ करता पहले मर्ज़ीए इलाही मालूम कर लेता और ख़्वाब में उसका जवाब मिल जाता चुनांचे इस मर्तबा भी उसको यही जवाब मिला कि हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम और उनके हमराहियों के ख़िलाफ़ दुआ़ न करना उस ने क़ौम से कह दिया कि मैं ने अपने रब से इजाज़त चाही थी मगर मेरे रब ने उन पर दुआ़ करने की मुमानअ़त फ़रमा दी तब क़ौम ने उसको हदिये और नज़राने दिये जो उसने क़बूल किये और क़ौम ने अपना सवाल जारी रखा तो फिर दूसरी मर्तबा बलअ़म बाऊर ने रब तबारक व तआ़ला से इजाज़त चाही उसका कुछ जवाब न मिला उसने क़ौम से कह दिया कि मुझे इस मर्तबा कुछ जवाब नमिला तो क़ौम के लोग कहने लगे कि अगर अल्लाह को मंजूर न होता तो वह पहले की तरह दोबारा भी मना फ़रमाता और क़ौम का इल्हाह व इसरार और भी ज़्यादा हुआ हत्ता कि उन्होंने उसको फ़ित्ना में डाल दिया और आख़िरकार वह बद दुआ़ करने के लिए पहाड़ पर चढ़ा तो जो बद दुआ़ करता था अल्लाह तआ़ला उसकी ज़बान को उसकी क़ौम की तरफ़ फेर देता था और अपनी क़ौम के लिए जो दुआए ख़ैर करता था बजाए क़ौम के बनी इसराईल का नाम उसकी ज़बान पर आता था। क़ौम ने कहा ऐ बलअ़म यह क्या कर रहे हो बनी इसराईल के लिए दुआ़ करता है हमारे लिए बद दुआ़ कहा यह मेरे इख़्तियार की बात नहीं मेरी ज़बान मेरे क़ब्ज़ा में नहीं है और उसकी ज़बान बाहर निकल पड़ी तो उसने अपनी क़ौम से कहा मेरी दुनिया व आख़िरत दोनों बरबाद हो गईं इस आयत में इस का बयान है (फ़ा343) और इनका इत्तेबाअ़ न किया। (फ़ा344) और बुलन्द दर्जा अ़ता फ़रमा कर अबरार की मनाज़िल में पहुंचाते (फ़ा345) और दुनिया का मफ़्तून हो गया।

(बक़िया सफ़हा 283 का) जहल ने कहा था कि मुहम्मद (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) का दावा तो यह है कि वह एक परवरदिगार की इबादत करते हैं फिर वह अल्लाह और रहमान दो को क्यों पुकारते हैं इस पर यह आयते करीमा नाज़िल हुई और उस जाहिल बे ख़िरद को बताया गया कि मअ़्बूद तो एक ही है नाम उसके बहुत हैं (फ़ा354) उसके नामों में हक़ व इस्तिक़ामत से निकलना कई तरह पर है **मसायलः** एक तो यह कि उसके नामों को कुछ बिगाड़ कर ग़ैरों पर इतलाक़ करना जैसे कि मुशरिकीन इलाह का लात और अ़ज़ीज़ का उज़्ज़ा और मन्नान का मनात करके अपने बुतों के नाम रखे थे यह नामों में हक़ से तजावुज़ और नाजायज़ है दूसरे यह कि अल्लाह तआ़ला के लिए ऐसा नाम मुक़र्रर किया जाये जो क़ुरआन व हदीस में न आया हो यह भी जायज़ नहीं जैसे कि सख़ी या रफ़ीक़ कहना क्योंकि अल्लाह तआ़ला के अस्मा तो तौफ़ीक़िया हैं तीसरे हुसने अदब की रिआ़यत करना तो फ़क़त या ज़ार या मानेअ़् या ख़ालिक़ुल क़िरदत कहना जायज़ नहीं बल्कि दूसरे अस्मा के साथ मिला कर कहा जाएगा या ज़ार या नाफ़ेअ़् और या मुअ़्ती या ख़ालिक़ुल ख़ल्क़। चौथे यह कि अल्लाह तआ़ला के लिए कोई ऐसा नाम मुक़र्रर किया जाये जिसके माना फ़ासिद हों यह भी बहुत सख़्त नाजायज़ है जैसे लफ़्ज़ राम और परमात्मा वग़ैरह पंजुम ऐसे अस्मा का इतलाक़ जिनके माना मालूम नहीं हैं और यह नहीं जाना जा सकता कि वह जलाले इलाही के लायक़ हैं या नहीं (फ़ा355) यह गरोह हक़ पज़दा उलमा और हादियाने दीन का है इस आयत से यह मसला साबित हुआ कि हर ज़माना के अहले हक़ का इज्माअ़ हुज्जत है और यह भी साबित हुआ कि कोई ज़माना हक़ परस्तों और दीन के हादियों से ख़ाली न होगा जैसा कि हदीस शरीफ़ में है कि एक गरोह मेरी उम्मत का ता क़ियामत दीने हक़ पर क़ाइम रहेगा उसको किसी की अ़दावत व मुख़ालफ़त ज़रर न पहुंचा सकेगी। (फ़ा356) यानी तदरीजी।

(बक़िया सफ़हा 284 का) क्योंकि आप ख़ातिमुल अम्बिया हैं। (फ़ा363) **शाने नुज़ूलः** हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा से मरवी है कि यहूदियों ने नबीए करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से कहा था कि अगर आप नबी हैं तो हमें बताईये कि क़ियामत कब क़ाइम होगी क्योंकि हमें इसका वक़्त मालूम है इस पर यह आयते करीमा नाज़िल हुई (फ़ा364) क़ियामत के वक़्त का बताना रिसालत के लवाज़िम से नहीं है जैसा कि तुमने क़रार दिया और ऐ यहूद तुम ने जो उसका वक़्त जानने का दावा किया यह भी ग़लत है अल्लाह तआ़ला ने उसको मख़फ़ी किया है और इसमें उसकी हिकमत है (फ़ा365) उसके इख़्फ़ा की हिकमत तफ़सीर रूहुल बयान में है कि बाज़ मशाइख़ इस तरफ़ गए हैं कि नबीए करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को बइअ़्लामे इलाही वक़्ते क़ियामत का इल्म है और यह हस्र आयत के मनाफ़ी नहीं (फ़ा366) **शाने नुज़ूलः** ग़ज़वए बनी मुस्तलक़ से वापसी के वक़्त राह में तेज़ हवा चली चौपाए भागे तो नबीए करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने ख़बर दी कि मदीना तय्येबा में रिफ़ाआ़ का इन्तेक़ाल हो गया और यह भी फ़रमाया कि देखो मेरा नाक़ा कहां है अ़ब्दुल्लाह इब्ने उबय मुनाफ़िक़ अपनी क़ौम से कहने लगा इनका कैसा अ़जीब हाल है कि मदीना में मरने वाले की तो ख़बर दे रहे हैं और अपना नाक़ा मालूम ही नहीं कि कहां है सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम पर उसका यह क़ौल भी मख़्फ़ी न रहा हुज़ूर ने फ़रमाया मुनाफ़िक़ लोग ऐसा ऐसा कहते हैं और मेरा नाक़ा उस घाटी में है उसकी नकेल एक दरख़्त में उलझ गई है चुनान्चे जैसा फ़रमाया था उसी शान से वह नाक़ा पाया गया इस पर यह आयते करीमा नाज़िल हुई (तफ़सीर कबीर) (फ़ा367) वह मालिके हक़ीक़ी है जो कुछ है उसकी अ़ता से है (फ़ा368) यह कलाम बराहे अदब व तवाज़ोअ़् है माना यह हैं कि मैं अपनी ज़ात से ग़ैब नहीं जानता जो जानता हूं वह अल्लाह तआ़ला की इत्तेलाअ़् और उसकी अ़ता से (ख़ाज़िन) हज़रत मुतर्जिम क़ुद्देस सिर्रुहू ने फ़रमाया भलाई जमा करना और बुराई न पहुंचना उसी के इख़्तियार में हो सकता है जो ज़ाती क़ुदरत रखे और ज़ाती क़ुदरत वही रखेगा जिसका इल्म भी ज़ाती हो क्योंकि जिसकी एक सिफ़त ज़ाती होती है उसके तमाम सिफ़ात ज़ाती तो माना यह हुए कि अगर मुझे ग़ैब का इल्म ज़ाती होता तो क़ुदरत भी ज़ाती होती और मैं भलाई जमा कर लेता और बुराई न पहुंचने देता भलाई से मुराद राहतें और कामयाबियां और दुश्मनों पर ग़लबा है और बुराईयों से तंगी व तकलीफ़ और दुश्मनों का ग़ालिब आना है। यह भी हो सकता है कि भलाई से मुराद सरकशों का मुतीअ़ और नाफ़रमानों का फ़रमांबरदार और काफ़िरों का मोमिन कर लेना हो और बुराई से बदबख़्त लोगों का बावजूद दावत के महरूम रह जाना तो हासिले कलाम यह होगा कि अगर मैं नफ़ा व ज़रर का ज़ाती इख़्तियार रखता तो ऐ मुनाफ़िक़ीन व काफ़िरीन तुम्हें सब को मोमिन कर डालता और तुम्हारे कुफ़्री हालत देखने की तकलीफ़ मुझे न पहुंचती (फ़ा369) सुनाने वाला हूं काफ़िरों को

(बक़िया सफ़हा 285 का) मुनाफ़, अ़ब्दुल उज़्ज़ा, अ़ब्दे कुसइ, और अ़ब्दुद्दार रखा (फ़ा374) यानी बुतों को जिन्होंने कुछ नहीं बनाया (फ़ा375) इसमें बुतों की बे-क़द्री और बुतलाने शिर्क का बयान और मुशरिकीन के कमाले जेहल का इज़हार है और बताया गया है कि इबादत का मुस्तहिक़ वही हो सकता है जो आबिद को नफ़ा पहुंचाने और उसका ज़रर दफ़ा करने की क़ुदरत रखता हो मुशरिकीन जिन बुतों को पूजते हैं उनकी बे क़ुदरती इस दर्जा की है कि वह किसी चीज़ के बनाने वाले तो क्या होते ख़ुद अपनी ज़ात में दूसरे से बेनियाज़ नहीं आप मख़्लूक़ हैं बनाने वाले के मोहताज हैं इससे बढ़ कर बे इख़्तियारी यह है कि वह किसी की मदद नहीं कर सकते और किसी की क्या मदद करें ख़ुद उन्हें ज़रर पहुंचे तो दफ़ा नहीं कर सकते कोई उन्हें तोड़ दे गिरा दे जो चाहे करे वह उससे अपनी हिफ़ाज़त नहीं कर सकते ऐसे मजबूर बे इख़्तियार को पूजना इन्तेहा दर्जा का जहल है (फ़ा376) यानी बुतों को (फ़ा377) क्योंकि वह न सुन सकते हैं न समझ सकते हैं (फ़ा378) वह बहरहाल आ़जिज़ हैं ऐसे को पूजना और मअ़बूद बनाना बड़ी बेख़ेरदी है (फ़ा379) और अल्लाह के ममलूक व मख़्लूक़ किसी तरह पूजने के क़ाबिल नहीं इस पर भी अगर तुम उन्हें मअ़बूद कहते हो? (फ़ा380) यह कुछ भी नहीं तो फिर अपने से कमतर को पूज कर क्यों ज़लील होते हो (फ़ा381) **शाने नुज़ूलः** सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने जब बुत परस्ती की मज़म्मत की और बुतों की आ़जिज़ी और बेइख़्तियारी का बयान फ़रमाया तो मुशरिकीन ने धमकाया और कहा कि बुतों को बुरा कहने वाले तबाह हो जाते हैं बरबाद हो जाते हैं यह बुत उन्हें हलाक कर देते हैं इस पर यह आयते करीमा नाज़िल हुई कि अगर बुतों में कुछ क़ुदरत समझते हो तो उन्हें पुकारो और मेरी नक़सान रसानी में उन से मदद लो और तुम भी जो मक्र व फ़रेब कर सकते हो वह मेरे मुक़ाबला में करो और इस में देर न करो मुझे तुम्हारी और तुम्हारे मअ़्बूदों की कुछ भी परवाह नहीं और तुम सब मेरा कुछ भी नहीं बिगाड़ सकते।

(बक़िया सफ़हा 286 का) पर भरोसा रखने वालों को मुशरिकीन वग़ैरह का क्या अन्देशा तुम और तुम्हारे मअ़बूद मुझे कुछ नक़सान नहीं पहुंचा सकते। (फ़ा384) तो मेरा क्या बिगाड़ सकेंगे (फ़ा385) क्योंकि बुतों की तस्वीरें इस शक्ल की बनाई जाती थीं जैसे कोई देख रहा है (फ़ा386) कोई वसवसा डाले (फ़ा387) और वह उस वसवसे को दूर कर देते हैं और अल्लाह तआ़ला की तरफ़ रुजूअ़ करते हैं (फ़ा388) यानी कुफ़्फ़ार (फ़ा389) **मसलाः** इस आयत से साबित हुआ कि जिस वक़्त क़ुरआने करीम पढ़ा जाये ख़्वाह नमाज़ में या ख़ारिजे नमाज़ उस वक़्त सुनना और ख़ामोश रहना वाजिब है जम्हूर सहाबा रज़ियल्लाहु अ़न्हुम इस तरफ़ हैं कि यह आयत मुक़तदी के सुनने और ख़ामोश रहने और सुनने के बाब में और एक क़ौल यह है कि इस में ख़ुतबा सुनने के लिए गोश बर आवाज़ होने और ख़ामोश रहने का हुक्म है और एक क़ौल यह है कि इससे नमाज़ व ख़ुतबा दोनों में बग़ैर सुनना और ख़ामोश रहना वाजिब साबित होता है हज़रत इब्ने मसऊद रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा की हदीस में है आपने कुछ लोगों को सुना कि वह नमाज़ में इमाम के साथ क़िराअत करते हैं तो नमाज़ से फ़ारिग़ होकर फ़रमाया क्या अभी वक़्त नहीं आया कि तुम इस आयत के मानी समझो ग़र्ज़ इस आयत से क़िराअत ख़ल्फ़ुल इमाम की मुमानअ़त साबित होती है और हदीस कोई ऐसी नहीं है जिसको इसके मुक़ाबिल हुज्जत क़रार दिया जा सके क़िराअत ख़ल्फ़ुल इमाम की ताईद में सब से ज़्यादा एतेमाद जिस हदीस पर किया जाता है वह यह है *ला सला-त इल्ला बिफ़ातिि-हतिल् किताब* मगर इस हदीस से क़िराअत ख़ल्फ़ुल इमाम का वुजूब तो साबित नहीं होता सिर्फ़ इतना साबित होता है कि बग़ैर फ़ातिहा के नमाज़ कामिल नहीं होती तो जब कि हदीस क़िराअतुल-इमाम लहू क़िराअतुन से साबित है कि इमाम का क़िराअत करना ही मुक़तदी का क़िराअत करना है तो जब इमाम ने क़िराअत की और मुक़तदी साकित रहा तो उसकी क़िराअते हुक्मिया हुई, उसकी नमाज़ बे क़िराअत कहां रही यह क़िराअते हुक्मिया है तो इमाम के पीछे क़िराअत न करने से क़ुरआन व हदीस दोनों पर अ़मल हो जाता है और क़िराअत करने से आयत का इत्तेबाअ़ तर्क होता है लिहाज़ा ज़रूरी है कि इमाम के पीछे फ़ातिहा वग़ैरह कुछ न पढे (फ़ा390) ऊपर की आयत के बाद इस आयत के देखने से मालूम होता है कि क़ुरआन शरीफ़ सुनने वाले को ख़ामोश रहना और बे आवाज़ निकाले दिल में ज़िक्र करना यानी अ़ज़मत व जलाले इलाही का इस्तेहज़ार लाज़िम है कज़ाफ़ी तफ़सीरे इब्ने जुरैर। इससे इमाम के पीछे बुलन्द या पस्त आवाज़ से क़िराअत की मुमानअ़त साबित होती है और दिल में अ़ज़मत व जलाले हक़ का इस्तेहज़ार ज़िक्रे क़ल्बी है। **मसलाः** ज़िक्र बिलजिहर और ज़िक्र बिलइख़्फ़ा दोनों में नुसूस वारिद हैं जिस शख़्स को जिस क़िस्म के ज़िक्र में ज़ौक़ व शौक़ ताम व इख़लास कामिल मुयस्सर हो उसके लिए वही अफ़ज़ल है कज़ाफ़ी रद्दुल मुहतार वग़ैरह। (फ़ा391) शाम अस्र व मग़रिब के दर्मियान का वक़्त है इन दोनों वक़्तों में ज़िक्र अफ़ज़ल है। क्योंकि नमाज़े फ़ज्र के बाद तुलूअ़े आफ़ताब तक और इसी तरह नमाज़े अस्र के बाद .ग़ुरूबे आफ़ताब तक नमाज़ ममनूअ़. है इस लिए इन वक़्तों में ज़िक्र मुस्तहब हुआ ताकि बन्दे के तमाम औक़ात क़ुरबत व ताअ़त में मश्ग़ूल रहें (फ़ा392) यानी मलायका मुक़र्रबीन (फ़ा393) यह आयत आयाते सजदा में से है इनके पढ़ने और सुनने वाले दोनों पर सजदा लाज़िम हो जाता है। मुस्लिम शरीफ़ की हदीस में है जब आदमी आयते सजदा पढ़कर सजदा करता है तो शैतान रोता है और कहता है अफ़सोस बनी आदम को सजदे का हुक्म दिया गया और वह सजदा करके जन्नती हुआ और मुझे सजदा का हुक्म दिया गया तो मैं इंकार करके जहन्नमी हो गया।

(बक़िया सफ़हा 287 का) इब्ने सामित रज़ियल्लाहु अ़न्हु से मरवी है उन्होंने फ़रमाया कि यह आयत हम अहले बद्र के हक़ में नाज़िल हुई। जब ग़नीमत के मुआ़मला में हमारे दर्मियान इख़्तिलाफ़ पैदा हुआ और बदमज़गी की नौबत आगई तो अल्लाह तआ़ला ने मुआ़मला हमारे हाथ से निकाल कर अपने रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के सपुर्द किया आपने वह माल बराबर तक़सीम कर दिया (फ़ा3) जैसे चाहें तक़सीम फ़रमायें (फ़ा4) और बाहम इख़्तिलाफ़ न करो (फ़ा5) तो उसके अज़मत व जलाल से (फ़ा6) और अपने तमाम कामों को उसके सपुर्द कर दें (फ़ा7) बक़द्र उनके आमाल के क्योंकि मोमिनीन के अहवाल इन औसाफ़ में मुतफ़ावित हैं इस लिए उनके मरातिब भी जुदागाना हैं (फ़ा8) जो हमेशा इकराम व ताज़ीम के साथ बे मेहनत व मशक़्क़त अता की जाये (फ़ा9) यानी मदीना तय्येबा से बदर की तरफ़ (फ़ा10) क्यों कि वह देख रहे थे कि उनकी तादाद कम है हथियार थोड़े हैं दुश्मन की तादाद भी ज़्यादा है और वह अस्लहा वग़ैरह का बड़ा सामान रखता है मुख़्तसर वाक़िआ़ यह है कि अबू सुफ़ियान के मुल्के शाम से एक क़ाफ़िला के साथ आने की ख़बर पाकर सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम अपने असहाब के साथ उनके मुक़ाबाला के लिए रवाना हुए। मक्का मुकर्रमा से अबू जहल क़ुरैश का एक लश्करे गिराँ लेकर क़ाफ़िला की इमदाद के लिए रवाना हुआ अबू सुफ़ियान तो रस्ता से कतरा कर मअ़ अपने क़ाफ़िला के साहिले बहर की राह चल पड़े और अबू जहल से उसके रफ़ीक़ों ने कहा कि क़ाफ़िला तो बच गया अब मक्का मुकर्रमा वापस चल तो उसने इन्कार कर दिया और वह सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से जंग करने के क़स्द से बदर की तरफ़ चल पड़ा सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने अपने असहाब से मशवरा किया और फ़रमाया कि अल्लाह तआ़ला ने मुझ से वादा फ़रमाया है कि अल्लाह तआ़ला कुफ़्फ़ार के दोनों गरोहों में से एक पर मुसलमानों को फ़तह मन्द करेगा ख़्वाह क़ाफ़िला हो या क़ुरैश का लश्कर। सहाबा ने इस में मुवाफ़क़त की मगर बाज़ को यह उज़्र हुआ कि हम इस तैयारी से नहीं चले थे और न हमारी तादाद इतनी है, न हमारे पास काफ़ी सामान व असलहा है यह रसूले करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को गिरां गुज़रा और हुज़ूर ने फ़रमाया कि क़ाफ़िला तो साहिल की तरफ़ निकल गया और अबू जहल सामने आ रहा है इस पर उन लोगों ने फिर अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह क़ाफ़िले ही का तआ़क़ुब कीजिये और लश्करे दुश्मन को छोड़ दीजिये यह बात नागवारे ख़ातिरे अक़दस हुई तो हज़रत सिद्दीक़े अकबर व हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा ने खड़े होकर अपने इख़्लास व फ़रमांबरदारी और रज़ाजूई व जांनिसारी का इज़हार किया और बड़ी क़ुव्वत व इस्तेहकाम के साथ अ़र्ज़ की कि वह किसी तरह मर्ज़ीए मुबारक के ख़िलाफ़ सुस्ती करने वाले नहीं हैं फिर और सहाबा ने भी अ़र्ज़ किया कि अल्लाह तआ़ला ने हुज़ूर को जो अम्र फ़रमाया उसके मुताबिक़ तशरीफ़ ले चलें हम साथ हैं। कभी तख़ल्लुफ़ न करेंगे हम आप पर ईमान लाये हम ने आपकी तस्दीक़ की हमें आपके इत्तेबाअ़ में समुन्दर के अन्दर कूद जाने से भी उज़्र नहीं है। हुज़ूर ने फ़रमाया चलो अल्लाह की बरकत पर भरोसा करो उसने मुझे वादा दिया है मैं तुम्हें बशारत देता हूं मुझे दुश्मनों के गिरने की जगह नज़र आ रही हैं और हुज़ूर ने कुफ़्फ़ार के मरने और गिरने की जगह नाम बनाम बता दीं और एक एक की जगह पर निशानात लगा दिये और यह मोअ्जेज़ा देखा गया कि उनमें से जो मर कर गिरा उसी निशान पर गिरा उससे ख़ता न की (फ़ा11) और कहते थे कि हमें लश्करे क़ुरैश का हाल ही मालूम न था कि हम उनके मुक़ाबला की तैयारी करके चलते (फ़ा12) यह बात कि हज़रत सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम जो कुछ करते हैं हुक्मे इलाही से करते हैं और आपने एलान फ़रमा दिया है कि मुसलमानों को ग़ैबी मदद पहुंचेगी (फ़ा13) यानी क़ुरैश से मुक़ाबला उन्हें ऐसा मुहीब मालूम होता है (फ़ा14) यानी अबू सुफ़ियान के क़ाफ़िले और अबू जहल के लश्कर। (फ़ा15) यानी अबू सुफ़ियान का क़ाफ़िला (फ़ा16) दीने हक़ को ग़लबा दे उसको बुलन्द व बाला करे (फ़ा17) और उन्हें इस तरह हलाक करे कि उनमें से कोई बाक़ी न बचे।

(बक़िया सफ़हा 288 का) अबू जहल ने हज़रत इब्ने मसऊद रज़ियल्लाहु अ़न्हु से कहा कि कहां से ज़र्ब आती थी मारने वाला तो हमको नज़र नहीं आता था आपने फ़रमाया फ़रिश्तों की तरफ़ से तो कहने लगा फिर वही तो ग़ालिब हुए तुम तो ग़ालिब नहीं हुए (फ़ा21) तो बन्दे को चाहिए कि उसी पर भरोसा करे और अपने ज़ोरे क़ुव्वत असबाब और जमाअ़त पर नाज़ न करे। (फ़ा22) हज़रत इब्ने मसऊद रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने फ़रमाया कि ग़ुनूदगी अगर जंग में हो तो अमन है और अल्लाह की तरफ़ से है और नमाज़ में हो तो शैतान की तरफ़ से है जंग में ग़ुनूदगी का अमन होना इससे ज़ाहिर है कि जिसे जान का अन्देशा हो उसे नींद और ऊंघ नहीं आती वह ख़तरे और इज़्तेराब में रहता है ख़ौफ़े शदीद के वक़्त ग़ुनूदगी का आना हुसूले अमन और ज़वाले ख़ौफ़ की दलील है बाज़ मुफ़स्सिरीन ने कहा है कि जब मुसलमानों को दुश्मनों की कसरत और मुसलमानों की क़िल्लत से जानों का ख़ौफ़ हुआ और बहुत ज़्यादा प्यास लगी तो उनपर ग़ुनूदगी डाल दी गई जिससे उन्हें राहत हासिल हुई और तकान और प्यास रफ़ा हुई और वह दुश्मन से जंग करने पर क़ादिर हुए यह ऊंघ उनके हक़ में निअ्मत थी और यकबारगी सबको आई जमाअ़ते कसीर का ख़ौफ़े शदीद की हालत में इसी तरह यकबारगी ऊंघ जाना ख़िलाफ़े आदत है इसी लिए बाज़ उलमा ने फ़रमाया कि यह ऊंघ मोअ्जेज़ा के हुक्म में है (ख़ाज़िन) (फ़ा23) रोज़े बदर मुसलमान रेगिस्तान में उतरे उनके और उनके जानवरों के पांव रेत में धंसे जाते थे और मुशरिकीन उनसे पहले लबे आब क़ब्ज़ा कर चुके थे, सहाबा में बाज़ हज़रात को वुज़ू की बाज़ को ग़ुस्ल की ज़रूरत थी और प्यास की शिद्दत थी तो शैतान ने वसवसा डाला कि तुम गुमान करते हो कि तुम हक़ पर हो तुम में अल्लाह के नबी हैं और तुम अल्लाह वाले हो और हाल यह है कि मुशरिकीन ग़ालिब होकर पानी पर पहुंच गए तुम बग़ैर वुज़ू और ग़ुस्ल किये नमाज़ पढ़ते हो तो तुम्हें दुश्मनपर फ़तहयाब होने की किस तरह उम्मीद है तो अल्लाह तआ़ला ने मेंह भेजा जिससे जंगल सैराब हो गया और मुसलमानों ने उससे पानी पिया और ग़ुस्ल किये

और वुज़ू किये और अपनी सवारियों को पिलाया और अपने बर्तनों को भरा और ग़ुबार बैठ गया और ज़मीन इस क़ाबिल हो गई कि उस पर क़दम जमने लगे और शैतान का वसवसा ज़ायल हुआ और सहाबा के दिल ख़ुश हुए और यह निअ्मत फ़तह व ज़फ़र हासिल होने की दलील हुई (फ़ा24) उनकी इआनत करके और उन्हें बशारत देकर (फ़ा25) अबू दाऊद माज़नी जो बदर में हाज़िर हुए थे फ़रमाते हैं कि मैं मुशरिक की गर्दन मारने के लिए उस के दरपै हुआ उसका सर मेरी तलवार पहुंचने से पहले ही कट कर गिर गया तो मैंने जान लिया कि इसको किसी और ने क़त्ल किया सहल इब्ने हुनैफ़ फ़रमाते हैं कि रोज़े बदर हम में से कोई तलवार से इशारा करता था तो उसकी तलवार पहुंचने से पहले ही मुशरिक का सर जिस्म से जुदा होकर गिर जाता था सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने यक मुश्त संग रेज़े कुफ़्फ़ार पर फेंक कर मारे तो कोई काफ़िर ऐसा न बचा जिसकी आंखों में उस में से कुछ पड़ा न हो बदर का यह वाक़िआ सुबह जुमअः १७ रमज़ान मुबारक सन् २ हिजरी में पेश आया। (फ़ा26) जो बदर में पेश आया और कुफ़्फ़ार मक़्तूल और मुक़य्यद हुए यह तो अ़ज़ाबे दुनिया है।

(बक़िया सफ़हा 290 का) हज़रत उबय बिन कअ्ब नमाज़ पढ़ते थे हुज़ूर ने उन्हें पुकारा उन्होंने जल्दी नमाज़ तमाम करके सलाम अ़र्ज़ किया हुज़ूर ने फ़रमाया तुम्हें जवाब देने से क्या बात मानेअ् हुई अ़र्ज़ किया हुज़ूर मैं नमाज़ में था हुज़ूर ने फ़रमाया क्या तुम ने क़ुरआन पाक में यह नहीं पाया कि अल्लाह और रसूल के बुलाने पर हाज़िर हो अर्ज़ किया बेशक आईन्दा ऐसा न होगा (फ़ा41) इस चीज़ से या ईमान मुराद है क्योंकि काफ़िर मुर्दा होता है ईमान से उसको ज़िन्दगी हासिल होती है क़तादा ने कहा कि वह चीज़ क़ुरआन है क्योंकि उससे दिलों की ज़िन्दगी है और उसमें नजात है और इस्मते दारैन है मुहम्मद बिन इसहाक़ ने कहा कि वह चीज़ जिहाद है क्योंकि उसकी बदौलत अल्लाह तआ़ला ज़िल्लत के बाद इज़्ज़त अता फ़रमाता है। मुफ़स्सिरीन ने फ़रमाया कि वह शहादत है इस लिए कि शोहदा अपने रब के नज़दीक ज़िन्दा हैं (फ़ा42) बल्कि अगर तुम उससे न डरे और उसके असबाब यानी ममनूआ़त को तर्क न किया और वह फ़ित्ना नाज़िल हुआ तो यह न होगा कि कि उसमें ख़ास ज़ालिम और बदकार ही मुब्तला हों बल्कि वह नेक और बद सब को पहुंच जाएगा हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा ने फ़रमाया कि अल्लाह तआ़ला ने मोमिनीन को हुक्म फ़रमाया कि वह अपने दर्मियान ममनूआ़त न होने दें यानी अपने मक़दूर तक बुराईयों को रोकें और गुनाह करने वालों को गुनाह से मना करें अगर उन्हों ने ऐसा न किया तो अ़ज़ाब उन सबको आम होगा ख़ताकार और ग़ैर ख़ताकार सबको पहुंचेगा। हदीस शरीफ़ में है सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि अल्लाह तआ़ला मख़्सूस लोगों के अमल पर अ़ज़ाब आम नहीं करता जब तक कि आम तौर पर लोग ऐसा न करें कि ममनूआ़त को अपने दर्मियान होता देखते रहें और उसके रोकने और मना करने पर क़ादिर हों बावजूद इसके न रोकें न मना करें जब ऐसा होता है तो अल्लाह तआ़ला अ़ज़ाब में आम व ख़ास सबको मुब्तला करता है। अबू दाऊद की हदीस में है कि जो शख़्स किसी क़ौम में सरगरमे मआ़सी हो और वह लोग बावजूद क़ुदरत के उसको न रोकें तो अल्लाह तआ़ला मरने से पहले उन्हें अ़ज़ाब में मुब्तला करता है इससे मालूम हुआ कि जो क़ौम नही अनिल मुन्कर तर्क करती है और लोगों को गुनाहों से नहीं रोकती वह अपने इस तर्के फ़र्ज़ की शामत में मुब्तलाए अ़ज़ाब होती है (फ़ा43) ऐ मोमिनीन मुहाजरीन इब्तेदाए इस्लाम में हिजरत करने से पहले मक्का मुकर्रमा में (फ़ा44) क़ुरैश तुमपर ग़ालिब थे और तुम (फ़ा45) मदीना तय्येबा में (फ़ा46) यानी अमवाले ग़नीमत जो तुम से पहले किसी उम्मत के लिए हलाल नहीं किये गए थे (फ़ा47) फ़रायज़ का छोड़ देना अल्लाह तआ़ला से ख़ियानत करना है और सुन्नत का तर्क करना रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से शाने नुज़ूल यह आयत अबूलुबाबा हारून बिन अब्दुल मुन्ज़िर अन्सारी के हक़ में नाज़िल हुई वाक़िआ़ यह था कि रसूले करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने यहूद बनी क़ुरैज़ा का दो हफ़्ते से ज़्यादा अर्सा तक मुहासरा फ़रमाया वह इस मुहासरा से तंग आ गए और उनके दिल ख़ायफ़ हो गए तो उनसे उनके सरदार कअ्ब बिन असद ने यह कहा कि अब तीन शक्लें हैं या तो उस शख़्स यानी सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की तस्दीक़ करो और उनकी बैअ़त कर लो क्योंकि क़समें बख़ुदा वह नबीए मुरसल हैं। यह ज़ाहिर हो चुका और यह वही रसूल हैं जिनका ज़िक्र तुम्हारी किताब में है उन पर ईमान ले आये तो जान माल अहल व औलाद सब महफ़ूज़ रहेंगे मगर इस बात को क़ौम ने न माना तो कअ्ब ने दूसरी शक्ल पेश की और कहा कि तुम अगर इसे नहीं मानते तो आओ पहले हम अपने बीबी बच्चों को क़त्ल करदें फिर तलवारें खींच कर मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम और उनके असहाब के मुक़ाबिल आयें कि अगर हम इस मुक़ाबला में हलाक भी हो जायें तो हमारे साथ अपने अहल व औलाद का ग़म तो न रहे इसपर क़ौम ने कहा कि अहल व औलाद के बाद जीना ही किस काम का तो कअ्ब ने कहा कि यह भी मन्ज़ूर नहीं तो सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से सुलह की दरख़्वास्त करो शायद इसमें कोई बेहतरी की सूरत निकले तो उन्होंने हुज़ूर से सुलह की दरख़्वास्त की लेकिन हुज़ूर ने मंज़ूर न फ़रमाया सिवाए इसके कि वह अपने हक़ में सअ्द बिन मआ़ज़ के फ़ैसला को मन्ज़ूर करें इस पर उन्होंने कहा कि हमारे पास अबूलुबाबा को भेज दीजिये क्योंकि अबूलुबाबा से उनके तअ़ल्लुक़ात थे और अबूलुबाबा का माल और उनकी औलाद और उनके अ़याल सब बनी क़ुरैज़ा के पास थे हुज़ूर ने अबूलुबाबा को भेज दिया बनी क़ुरैज़ा ने उनसे राये दरियाफ़्त की कि क्या हम सअ्द बिन मआ़ज़ का फ़ैसला मंज़ूर कर लें कि जो कुछ वह हमारे हक़ में फ़ैसला दें वह हमें क़बूल हो अबुल बाबा ने अपनी गर्दन पर हाथ फेर कर इशारा किया कि यह तो गले कटवाने की बात है अबूलुबाबा कहते हैं कि मेरे क़दम अपनी जगह से हटने न पाये थे कि मेरे दिल में यह बात जम गई कि मुझ से अल्लाह और उसके रसूल की ख़ियानत वाक़ेअ् हुई यह सोच कर वह हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की ख़िदमत में तो न आये सीधे मस्जिद शरीफ़ पहुंचे और मस्जिद शरीफ़ के एक सुतून से अपने आपको बंधवा लिया और अल्लाह की क़सम खाई कि न कुछ खायेंगे न पियेंगे यहां

तक कि मर जायें या अल्लाह तआला उनकी तौबा क़बूल करे वक़्तन फ़वक़्तन उनकी बीबी आकर उन्हें नमाज़ों के लिए और इन्सानी हाजतों के लिए खोल दिया करती थीं और फिर बांध दिये जाते थे हुज़ूर को जब यह ख़बर पहुंची तो फ़रमाया कि अबूलुबाबा मेरे पास आते तो मैं उनके लिए मग़फ़िरत की दुआ करता लेकिन जब उन्होंने यह किया है तो मैं उन्हें न खोलूंगा जब तक अल्लाह उनकी तौबा क़बूल करे वह सात रोज़ बंधे रहे न कुछ खाया न पिया यहां तक कि बेहोश होकर गिर गए फिर अल्लाह तआला ने उनकी तौबा क़बूल की सहाबा ने उन्हें तौबा क़बूल होने की बशारत दी तो उन्होंने कहा मैं ख़ुदा की क़सम न खुलूंगा जब तक कि रसूले करीम मुझे ख़ुद न खोलें। हज़रत ने उन्हें अपने दस्ते मुबारक से खोल दिया अबूलुबाबा ने कहा मेरी तौबा उस वक़्त पूरी होगी जब मैं अपनी क़ौम की बस्ती छोड़ दूं जिस में मुझ से यह ख़ता सरज़द हुई और मैं अपने कुल माल को अपने मिल्क से निकाल दूं सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया तिहाई माल का सदक़ा करना काफ़ी है उनके हक़ में यह आयत नाज़िल हुई। (फ़ा48) कि आख़िरत के कामों सद्दे राह होता है।

(बक़िया सफ़हा 291 का) जो कुछ भी करें उससे तुम्हें कुछ ज़रर नहीं इबलीस ने इसराय को भी नापसंद किया और कहा जिस शख़्स ने तुम्हारे होश उड़ा दिये और तुम्हारे दानिशमन्दों को हैरान बना दिया उसको तुम दूसरों की तरफ़ भेजते हो तुमने उसकी शीरीं कलामी सैफ़ ज़बानी दिल कशी नहीं देखी है अगर तुमने ऐसा किया तो वह दूसरी क़ौम के क़ुलूब तस्ख़ीर करके उन लोगों के साथ तुम पर चढ़ाई करेंगे अहले मजमा ने कहा शैख़ नज्दी की राय ठीक है इस पर अबू जहल खड़ा हुआ और उसने यह राय दी कि क़ुरैश के हर हर ख़ानदान से एक एक आली नस्ब जवान मुन्तख़ब किया जाये और उनको तेज़ तलवारें दी जायें वह सब यकबारगी हज़रत पर हमला आवर होकर क़त्ल करदें तो बनी हाशिम .क़ुरैश के तमाम क़बाइल से न लड़ सकेंगे ग़ायत यह है कि ख़ून का मुआवज़ा देना पड़े वह दे दिया जाएगा इबलीस लईन ने इस तजवीज़ को पसन्द किया और अबू जहल की बहुत तारीफ़ की और इसी पर सबका इत्तेफ़ाक़ हो गया। हज़रत जिबरील अ़लैहिस्सलाम ने सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर होकर वाक़िआ़ गुज़ारिश किया और अर्ज़ किया कि हुज़ूर अपनी ख़्वाबगाह में शब को न रहें अल्लाह तआला ने इज़्न दिया है मदीना तय्येबा का अ़ज़्म फ़रमाएं। हुज़ूर ने हज़रत अली मुर्तज़ा को शब में अपनी ख़्वाबगाह पर रहने का हुक्म दिया और फ़रमाया कि हमारी चादर शरीफ़ ओढ़ो तुम्हें कोई नागवार बात पेश न आएगी और हुज़ूर दौलत सराए अक़दस से बाहर तशरीफ़ लाये और एक मुश्त ख़ाक दस्ते मुबारक में ली और आयत *इन्ना ज-अ़ल्ना फ़ी अअ़्नाक़िहिम् अग़्लालन्* पढ़ कर मुहासरा करने वालों पर मारी सब की आंखों और सरों पर पहुंची सब अन्धे हो गए और हुज़ूर को न देख सके और हुज़ूर मअ़ अबू बकर सिद्दीक़ के ग़ारे सूर में तशरीफ़ ले गए और हज़रत अली मुर्तज़ा को लोगों की अमानतें पहुंचाने के लिए मक्का मुकर्रमा में छोड़ा मुशरिकीन रात भर सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की दौलत सराय का पहरा देते रहे सुबह को जब क़त्ल के इरादे से हमला-आवर हुए तो देखा कि हज़रत अली हैं उनसे हुज़ूर को दरियाफ़्त किया कि कहां हैं उन्होंने फ़रमाया हमें मालूम नहीं तो तलाश के लिए निकले जब ग़ार पर पहुंचे तो मकड़ी के जाले देख कर कहने लगे कि अगर इसमें दाख़िल होते तो यह जाले बाक़ी न रहते। हुज़ूर उस ग़ार में तीन रोज़ ठहरे फिर मदीना तय्येबा रवाना हुए।(फ़ा52)**शाने नुज़ूलः** यह आयत नज़र बिन हारिस के हक़ में नाज़िल हुई जिसने सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से क़ुरआन पाक सुन कर कहा था कि हम चाहते तो हम भी ऐसी ही किताब कह लेते अल्लाह तआला ने उनका यह मक़ूला नक़्ल किया कि इसमें उनकी कमाले बेशर्मी व बेहयाई है कि क़ुरआन पाक की तहद्दी फ़रमाने और फ़ुसहाए अरब को क़ुरआने करीम के मिस्ल एक सूरह बना लाने की दावतें देने और उन सब के आ़जिज़ व दरमाँदा रह जाने के बाद यह कलिमा कहना और ऐसा इद्दआए बातिल करना निहायत ज़लील हरकत है। (फ़ा53) कुफ़्फ़ार और उनमें यह कहने वाला या नज़र बिन हारिस था या अबू जहल जैसा कि बुख़ारी व मुस्लिम की हदीस में है। (फ़ा54) क्योंकि रहमतुल लिलआलमीन बना कर भेजे गए हो और सुन्नते इलाहिया यह है कि जब तक किसी क़ौम में उसके नबी मौजूद हों उन पर आम बरबादी का अ़ज़ाब नहीं भेजता जिससे सब हलाक हो जायें और कोई न बचे एक जमाअ़ते मुफ़स्सिरीन का क़ौल है कि यह आयत सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम पर उस वक़्त नाज़िल हुई जब आप मक्का मुकर्रमा में मुक़ीम थे फिर जब आपने हिजरत फ़रमाई और कुछ मुसलमान रह गए जो इस्तिग़फ़ार किया करते थे तो *व मा का-नल्लाहु मुअ़ज़्ज़ि-बहुम्* नाज़िल हुआ जिस में बताया गया कि जब तक इस्तिग़फ़ार करने वाले ईमानदार मौजूद हैं उस वक़्त तक भी अ़ज़ाब न आएगा फिर जब वह हज़रात भी मदीना तय्येबा को रवाना हो गए तो अल्लाह तआला ने फ़तहे मक्का का इज़्न दिया और यह अ़ज़ाबे मौऊद आ गया जिसकी निस्बत इस आयत में फ़रमाया *व मा लहुम् अल्ला युअ़ज़्ज़ि-बहुमुल्लाहु* मुहम्मद बिन इसहाक़ ने कहा कि *मा का-नल्लाहु लियु-अ़ज़्ज़ि-बहुम्* भी कुफ़्फ़ार का मक़ूला है जो उनसे हिकायतन नक़्ल किया गया अल्लाह अ़ज़्ज़ व जल्ल ने उनकी जहालत का ज़िक्र फ़रमाया कि इस क़दर अहमक़ हैं आप ही तो यह कहते हैं कि या रब अगर यह तेरी तरफ़ से हक़ है तो हम पर नाज़िल कर और आप ही यह कहते हैं कि या मुहम्मद (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) जब तक आप हैं अ़ज़ाब नाज़िल न होगा क्योंकि कोई उम्मत अपने नबी की मौजूदगी में हलाक नहीं की जाती किस क़दर मआ़रिज़ अक़वाल हैं (फ़ा55) इस आयत से साबित हुआ कि इस्तिग़फ़ार अ़ज़ाब से अमन में रहने का ज़रीआ़ है हदीस शरीफ़ में है कि अल्लाह तआला ने मेरी उम्मत के लिए दो अमाने उतारीं एक मेरा उनमें तशरीफ़ फ़रमा होना एक उनका इस्तिग़फ़ार करना (फ़ा56) और मोमिनीन को तवाफ़े कअ़्बा के लिए नहीं आने देते जैसा कि वाक़िआ़ हुदैबिया के साल सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम और आपके असहाब को रोका (फ़ा57) और कअ़्बा के उमूर में तसर्रुफ़ व इन्तेज़ाम का कोई इख़्तियार नहीं रखते क्योंकि मुशरिक हैं।

وَاعْلَمُوٓا اَنَّمَا غَنِمْتُمْ مِّنْ شَیْءٍ فَاَنَّ لِلّٰهِ خُمُسَهٗ وَلِلرَّسُوْلِ وَلِذِی الْقُرْبٰی وَالْیَتٰمٰی وَالْمَسٰكِیْنِ وَابْنِ السَّبِیْلِ اِنْ كُنْتُمْ اٰمَنْتُمْ بِاللّٰهِ وَمَآ اَنْزَلْنَا

عَلٰی عَبْدِنَا یَوْمَ الْفُرْقَانِ یَوْمَ الْتَقَی الْجَمْعٰنِ وَاللّٰهُ عَلٰی كُلِّ شَیْءٍ قَدِیْرٌ ﴿۴۱﴾ اِذْ اَنْتُمْ بِالْعُدْوَةِ الدُّنْیَا وَهُمْ بِالْعُدْوَةِ الْقُصْوٰی وَالرَّكْبُ اَسْفَلَ

مِنْكُمْ وَلَوْ تَوَاعَدْتُّمْ لَاخْتَلَفْتُمْ فِی الْمِیْعٰدِ وَلٰكِنْ لِّیَقْضِیَ اللّٰهُ اَمْرًا كَانَ مَفْعُوْلًا لِّیَهْلِكَ مَنْ هَلَكَ عَنْۢ بَیِّنَةٍ وَّیَحْیٰی مَنْ حَیَّ عَنْۢ

بَیِّنَةٍ وَاِنَّ اللّٰهَ لَسَمِیْعٌ عَلِیْمٌ ﴿۴۲﴾ اِذْ یُرِیْكَهُمُ اللّٰهُ فِیْ مَنَامِكَ قَلِیْلًا وَلَوْ اَرٰىكَهُمْ كَثِیْرًا لَّفَشِلْتُمْ وَلَتَنَازَعْتُمْ فِی الْاَمْرِ وَلٰكِنَّ اللّٰهَ سَلَّمَ اِنَّهٗ

عَلِیْمٌۢ بِذَاتِ الصُّدُوْرِ ﴿۴۳﴾ وَاِذْ یُرِیْكُمُوْهُمْ اِذِ الْتَقَیْتُمْ فِیْٓ اَعْیُنِكُمْ قَلِیْلًا وَّیُقَلِّلُكُمْ فِیْٓ اَعْیُنِهِمْ لِیَقْضِیَ اللّٰهُ اَمْرًا كَانَ مَفْعُوْلًا وَاِلَی اللّٰهِ

वअ्लमू अन्नमा ग़निम्तुम् मिन् शैइन् फ़-अन्-न लिल्लाहि ख़ुमु-सहू व लिर्रसूलि व लिज़िल्क़ुरबा वल्यतामा वल्मसाकीनि वब्निस्सबीलि इन् कुन्तुम् आमन्तुम् बिल्लाहि व मा अन्ज़ल्ना अ़ला अ़ब्दिना यौमल्फ़ुर-क़ानि यौमल् त-क़ल्-जम्आ़नि वल्लाहु अ़ला कुल्लि शैइन् क़दीर(41)इज़् अन्तुम् बिल् अ़ुद-वतिद्-दुन्या व हुम् बिल्-अ़ुद-वतिल् क़ुस्वा वर्रक्बु अस्फ़-ल मिन्कुम् व लौ तवा-अ़त्तुम् लख़्त-लफ़्तुम् फ़िल्मीआ़दि व लाकिल् लियक़्-ज़ि-यल्लाहु अम्रन् का-न मफ़्-अ़ूलल् लि-यह्लि-क मन् ह-ल-क अ़म् बय्यि-नतिंव्- व यह्या मन् हय्-य अ़म् बय्यि-नतिन् व इन्नल्ला-ह ल-समीअ़ुन् अ़लीम(42)इज़् युरी-कहुमुल्लाहु फ़ी मनामि-क क़लीलन् व लौ अरा-कहुम् कसीरल् ल-फ़शिल्तुम् व ल-तनाज़अ़्तुम् फ़िल्अम्रि व लाकिन्नल्ला-ह सल्ल-म इन्नहू अ़लीमुम् बिज़ातिस्सुदूर(43)व इज़् युरीकुमूहुम् इज़िल्तक़ैतुम् फ़ी अअ़्युनिकुम् क़लीलंव्-व युक़ल्लिलुकुम् फ़ी अअ़्युनिहिम् लि-यक़्ज़ि-यल्लाहु अम्रन् का-न मफ़्अ़ूलन् व इलल्लाहि

और जान लो कि जो कुछ ग़नीमत लो (फ़ा69) तो उसका पांचवां हिस्सा ख़ास अल्लाह और रसूल और क़राबत वालों और यतीमों और मुहताजों और मुसाफ़िरों का है (फ़ा70) अगर तुम ईमान लाये हो अल्लाह पर और उस पर जो हमने अपने बन्दे पर फ़ैसला के दिन उतारा जिस दिन दोनों फ़ौजें मिली थीं (फ़ा71) और अल्लाह सब कुछ कर सकता है। (41) जब तुम नाले के इस कनारे थे (फ़ा72) और काफ़िर परले कनारे और क़ाफ़िला (फ़ा73) तुम से तराई में (फ़ा74) और अगर तुम आपस में कोई वादा करते तो ज़रूर वक़्त पर बराबर न पहुंचते (फ़ा75) लेकिन यह इस लिए कि अल्लाह पूरा करे जो काम होना है (फ़ा76) कि जो हलाक हो दलील से हलाक हो (फ़ा77) और जो जिये दलील से जिये (फ़ा78) और बेशक अल्लाह ज़रूर सुनता जानता है।(42) जब कि ऐ महबूब अल्लाह तुम्हें काफ़िरों को तुम्हारे ख़्वाब में थोड़ा दिखाता था (फ़ा79) और ऐ मुसलमानों अगर वह तुम्हें बहुत करके दिखाता तो ज़रूर तुम बुज़दिली करते और मुआ़मले में झगड़ा डालते (फ़ा80) मगर अल्लाह ने बचा लिया (फ़ा81) बेशक वह दिलों की बात जानता है।(43) और जब लड़ते वक़्त (फ़ा82) तुम्हें काफ़िर थोड़े करके दिखाए (फ़ा83) और तुम्हें उनकी निगाहों में थोड़ा किया (फ़ा84) कि अल्लाह पूरा करे जो काम होना है (फ़ा85) और अल्लाह की

(फ़ा69) ख़्वाह क़लील या कसीर ग़नीमत वह माल है जो मुसलमानों को कुफ़्फ़ार से जंग में बतरीक़े क़हर व ग़लबा हासिल हो मसलाः माले ग़नीमत पांच हिस्सों पर तक़सीम किया जाये उस में से चार हिस्से ग़ानिमीन के (फ़ा70) मसलाः ग़नीमत का पांचवां हिस्सा फिर पांच हिस्सों पर तक़सीम होगा उन में से एक हिस्सा जो कुल माल का पचीसवां हिस्सा हुआ वह रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के लिए है और एक हिस्सा आपके अहले क़राबत के लिए और तीन हिस्से यतीमों और मिस्कीनों मुसाफ़िरों के लिए मसला रसूले करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के बाद हुज़ूर और आपके अहले क़राबत के हिस्से भी यतीमों मिस्कीनों और मुसाफ़िरों को मिलेंगे और यह पांचवां हिस्सा इन्हीं तीन पर तक़सीम हो जाएगा यही क़ौल है इमामे अबू हनीफ़ा रज़ियल्लाहु अ़न्हु का (फ़ा71) उस दिन से रोज़े बदर मुराद है और दोनों फ़ौजों से मुसलमानों और काफ़िरों की फ़ौजें और यह वाक़िआ़ सतरह या उन्नीस रमज़ान को पेश आया असहाबे रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की तादाद तीन सौ दस से कुछ ज़्यादा थी और मुशरिकीन हज़ार के क़रीब थे अल्लाह तआ़ला ने उन्हें हज़ीमत दी उनमें से सत्तर से ज़्यादा मारे गए और इतने ही गिरफ़्तार हुए (फ़ा72) जो मदीना तय्येबा की तरफ़ है (फ़ा73) क़ुरैश का जिसमें अबू सुफ़ियान वग़ैरह थे (फ़ा74) तीन मील के फ़ासिला पर साहिल की तरफ़ (फ़ा75) यानी अगर तुम और वह बाहम जंग का कोई वक़्त मुअ़य्यन करते फिर **(बक़िया सफ़हा 327 पर)**

تُرْجَعُ الْاُمُوْرُ ۝ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اِذَا لَقِيْتُمْ فِئَةً فَاثْبُتُوْا وَاذْكُرُوا اللّٰهَ كَثِيْرًا لَّعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ ۝ وَاَطِيْعُوا اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ وَلَا تَنَازَعُوْا فَتَفْشَلُوْا
وَتَذْهَبَ رِيْحُكُمْ وَاصْبِرُوْا ؕ اِنَّ اللّٰهَ مَعَ الصّٰبِرِيْنَ ۝ وَلَا تَكُوْنُوْا كَالَّذِيْنَ خَرَجُوْا مِنْ دِيَارِهِمْ بَطَرًا وَّرِئَآءَ النَّاسِ وَيَصُدُّوْنَ عَنْ سَبِيْلِ
اللّٰهِ ؕ وَاللّٰهُ بِمَا يَعْمَلُوْنَ مُحِيْطٌ ۝ وَاِذْ زَيَّنَ لَهُمُ الشَّيْطٰنُ اَعْمَالَهُمْ وَقَالَ لَا غَالِبَ لَكُمُ الْيَوْمَ مِنَ النَّاسِ وَاِنِّيْ جَارٌ لَّكُمْ ۚ فَلَمَّا تَرَآءَتِ
الْفِئَتٰنِ نَكَصَ عَلٰى عَقِبَيْهِ وَقَالَ اِنِّيْ بَرِيْٓءٌ مِّنْكُمْ اِنِّيْۤ اَرٰى مَا لَا تَرَوْنَ اِنِّيْۤ اَخَافُ اللّٰهَ ؕ وَاللّٰهُ شَدِيْدُ الْعِقَابِ ۝ اِذْ يَقُوْلُ الْمُنٰفِقُوْنَ
وَالَّذِيْنَ فِيْ قُلُوْبِهِمْ مَّرَضٌ غَرَّ هٰۤؤُلَآءِ دِيْنُهُمْ ؕ وَمَنْ يَّتَوَكَّلْ عَلَى اللّٰهِ فَاِنَّ اللّٰهَ عَزِيْزٌ حَكِيْمٌ ۝ وَلَوْ تَرٰۤى اِذْ يَتَوَفَّى الَّذِيْنَ كَفَرُوا ۙ الْمَلٰٓئِكَةُ

तुरजअुल् उमूर(44)या अय्युहल्लज़ी–न आ–मनू इज़ा लक़ीतुम् फ़ि–अ–तन् फ़स्बुतू वज़्कुरुल्ला–ह कसीरल् ल–अ़ल्लकुम् तुफ़्लिहू न(45)व अती–उुल्ला–ह व रसू–लहू व ला तना–ज़अू फ़–तफ़्शलू व तज़्–ह–ब रीहु– कुम् वस्बिरू इन्नल्ला–ह म–अ़स्साबिरीन(46)व ला तकूनू कल्लज़ी–न ख़–रजू मिन् दियारिहिम् ब–तरंव् व रिआअन्नासि व यसुद्दू–न अ़न् सबीलिल्लाहि वल्लाहु बिमा यअ़्मलू–न मुहीत़(47)व इज़् ज़य्य–न लहुमुश्शैतानु अअ़्मा–लहुम् व क़ा–ल ला ग़ालि–ब लकुमुल्यौ–म मिनन्नासि व इन्नी जारुल् लकुम् फ़–लम्मा तरा–अतिल् फ़ि–अतानि न–क–स अ़ला अक़ि–बैहि व क़ा–ल इन्नी बरीउम् मिन्कुम् इन्नी अरा मा ला तरौ–न इन्नी अख़ाफ़ुल्ला–ह वल्लाहु शदीदुल् अ़िक़ाब(48)इज़् युक़ूलुल् मुनाफ़िक़ू–न वल्लज़ी–न फ़ी क़ुलूबिहिम् म–रजुन् ग़र्–र हाउलाइ दीनुहुम् व मंय्य–त–वक्कल् अ़–लल्लाहि फ़– इन्नल्ला–ह अ़ज़ीज़ुन् हकीम(49)व लौ तरा इज़् य–त–वफ़्फ़ल्लज़ी–न क–फ़रू–ल्मलाइ–कतु

तरफ़ सब कामों की रुजूअ़ है।(44) (रुकूअ़ 1) ऐ ईमान वालो जब किसी फ़ौज से तुम्हारा मुक़ाबला हो तो साबित क़दम रहो और अल्लाह की याद बहुत करो (फ़ा86) कि तुम मुराद को पहुंचो।(45) और अल्लाह और उसके रसूल का हुक्म मानो और आपस में झगड़ो नहीं कि फिर बुज़दिली करोगे और तुम्हारी बंधी हुई हवा जाती रहेगी (फ़ा87) और सब्र करो बेशक अल्लाह सब्र करने वालों के साथ है।(46) (फ़ा88) और उन जैसे न होना जो अपने घर से निकले इतराते और लोगों के दिखाने को और अल्लाह की राह से रोकते (फ़ा89) और उनके सब काम अल्लाह के क़ाबू में हैं।(47) और जब कि शैतान ने उनकी निगाह में उनके काम भले कर दिखाए (फ़ा90) और बोला आज तुम पर कोई शख़्स ग़ालिब आने वाला नहीं और तुम मेरी पनाह में हो तो जब दोनों लश्कर आमने सामने हुए उल्टे पांव भागा और बोला मैं तुम से अलग हूं (फ़ा91) मैं वह देखता हूं जो तुम्हें नज़र नहीं आता (फ़ा92) मैं अल्लाह से डरता हूं (फ़ा93) और अल्लाह का अ़ज़ाब सख़्त है।(48)(रुकूअ़ 2) जब कहते थे मुनाफ़िक़ (फ़ा94) और वह जिनके दिलों में आज़ार (बीमारी) है (फ़ा95) कि यह मुसलमान अपने दीन पर मग़रूर हैं (फ़ा96) और जो अल्लाह पर भरोसा करे (फ़ा97) तो बेशक अल्लाह (फ़ा98) ग़ालिब हिकमत वाला है।(49) और कभी तू देखे जब फ़रिश्ते काफ़िरों की जान निकालते हैं मार रहे हैं

(फ़ा86) उससे मदद चाहो और कुफ़्फ़ार पर ग़ालिब होने की दुआयें करो। मसलाः इससे मालूम हुआ कि इन्सान को हर हाल में लाज़िम है कि वह अपने क़ल्ब व ज़बान को ज़िक्रे इलाही में मशग़ूल रखे और किसी सख़्ती व परेशानी में भी इससे ग़ाफ़िल न हो (फ़ा87) इस आयत से मालूम हुआ कि बाहमी तनाज़ा ज़ोअ़फ़ व कमज़ोरी और बे वक़ारी का सबब है और यह भी मालूम हुआ कि बाहमी तनाज़ा से महफ़ूज़ रहने की तदबीर ख़ुदा और रसूल की फ़रमांबरदारी और दीन का इत्तेबाअ़ है (फ़ा88) उनका मुईन व मददगार (फ़ा89) शाने नुज़ूलः यह आयत कुफ़्फ़ारे क़ुरैश के हक़ में नाज़िल हुई जो बदर में बहुत इतराते और तकब्बुर करते आये थे। सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने दुआ की या रब यह क़ुरैश आगए तकब्बुर व ग़ुरूर में सरशार और जंग के लिए तैयार तेरे रसूल को झुठलाते हैं या रब अब वह मदद इनायत हो जिसका तूने वादा किया था हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा ने फ़रमाया कि जब अबू सुफ़ियान ने देखा कि क़ाफ़िला को कोई ख़तरा नहीं रहा तो उन्होंने क़ुरैश के पास पयाम भेजा कि तुम क़ाफ़िला की मदद के लिए आये थे अब उसके लिए कोई ख़तरा नहीं है लिहाज़ा वापस जाओ उस पर अबू जहल ने कहा कि ख़ुदा की क़सम हम वापस न होंगे यहां तक कि हम बदर में उतरें तीन रोज़ क़ियाम करें ऊंट ज़िबह करें बहुत से खाने पकायें शराबें पियें कनीज़ों का गाना बजाना सुनें, अ़रब में हमारी शोहरत हो, **(बक़िया सफ़हा 327 पर)**

يَضْرِبُوْنَ وُجُوْهَهُمْ وَاَدْبَارَهُمْ ۚ وَذُوْقُوْا عَذَابَ الْحَرِيْقِ ۝٥٠ ذٰلِكَ بِمَا قَدَّمَتْ اَيْدِيْكُمْ وَاَنَّ اللّٰهَ لَيْسَ بِظَلَّامٍ لِّلْعَبِيْدِ ۝٥١ كَدَاْبِ اٰلِ
فِرْعَوْنَ ۙ وَالَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ ؕ كَفَرُوْا بِاٰيٰتِ اللّٰهِ فَاَخَذَهُمُ اللّٰهُ بِذُنُوْبِهِمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ قَوِيٌّ شَدِيْدُ الْعِقَابِ ۝٥٢ ذٰلِكَ بِاَنَّ اللّٰهَ لَمْ يَكُ مُغَيِّرًا نِّعْمَةً
اَنْعَمَهَا عَلٰى قَوْمٍ حَتّٰى يُغَيِّرُوْا مَا بِاَنْفُسِهِمْ ۙ وَاَنَّ اللّٰهَ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ۝٥٣ كَدَاْبِ اٰلِ فِرْعَوْنَ ۙ وَالَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ ؕ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِ رَبِّهِمْ
فَاَهْلَكْنٰهُمْ بِذُنُوْبِهِمْ وَاَغْرَقْنَآ اٰلَ فِرْعَوْنَ ۚ وَكُلٌّ كَانُوْا ظٰلِمِيْنَ ۝٥٤ اِنَّ شَرَّ الدَّوَآبِّ عِنْدَ اللّٰهِ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا فَهُمْ لَا يُؤْمِنُوْنَ ۝٥٥ اَلَّذِيْنَ
عٰهَدْتَّ مِنْهُمْ ثُمَّ يَنْقُضُوْنَ عَهْدَهُمْ فِيْ كُلِّ مَرَّةٍ وَّهُمْ لَا يَتَّقُوْنَ ۝٥٦ فَاِمَّا تَثْقَفَنَّهُمْ فِي الْحَرْبِ فَشَرِّدْ بِهِمْ مَّنْ خَلْفَهُمْ لَعَلَّهُمْ يَذَّكَّرُوْنَ ۝٥٧

यज़्रिबू–न वुजू–हहुम् व अद्बा–रहुम् व ज़ूकू अ़ज़ाबल्–ह़रीक़(50)ज़ालि–क बिमा क़द्–द–मत् ऐदीकुम् व अन्नल्ला–ह लै–स बि–ज़ल्लामिल् लिल्अ़बीद(51)क–दअ्बि आलि फ़िर्औ़–न वल्लज़ी–न मिन् क़ब्लिहिम् क–फ़रू बिआया–तिल्लाहि फ़–अ–ख़–ज़ हुमुल्लाहु बिज़ुनूबिहिम् इन्नल्ला–ह क़विय्युन् शदीदुल् अ़िक़ाब(52)ज़ालि–क बिअन्नल्ला–ह लम् यकु मुग़य्यिरन् निअ्–मतन् अन्–अ़–महा अ़ला क़ौमिन् ह़त्ता युग़य्यिरू मा बि–अन्फ़ुसिहिम् व अन्नल्ला–ह समी–अुन् अ़लीम(53)कदअ्बि आलि फ़िर्औ़–न वल्लज़ी–न मिन् क़ब्लि–हिम् कज़्ज़बू बिआयाति रब्बिहिम् फ़–अह्लक्नाहुम् बिज़ुनूबिहिम् व अग़्रक़्ना आ–ल फ़िर्औ़–न व कुल्लुन् कानू ज़ालिमीन(54)इन्–न शर्रद्–दवाब्बि अ़िन्दल्लाहिल् लज़ी–न क–फ़रू फ़हुम् ला युअ्–मिनून(55)अल्लज़ी–न आ़हत्–त मिन्हुम् सुम्–म यन्क़ुज़ू–न अ़हदहुम् फ़ी कुल्लि मर्रतिंव्–व हुम् ला यत्तक़ून(56)फ़–इम्मा तस्क़–फ़न्नहुम् फ़िल्ह़र्बि फ़–शर्रिद् बिहिम् मन् ख़ल्फ़हुम् ल–अ़ल्लहुम् यज़्ज़क्करून(57)

उनके मुंह पर और उनकी पीठ पर (फ़ा99) और चखो आग का अ़ज़ाब।(50) यह (फ़ा100) बदला है उसका जो तुम्हारे हाथों ने आगे भेजा (फ़ा101) और अल्लाह बन्दों पर ज़ुल्म नहीं करता।(51) (फ़ा102) जैसे फ़िरऔ़न वालों और उनसे अगलों का दस्तूर (फ़ा103) वह अल्लाह की आयतों से मुनकिर हुए तो अल्लाह ने उन्हें उनके गुनाहों पर पकड़ा बेशक अल्लाह कुव्वत वाला सख़्त अ़ज़ाब वाला है।(52) यह इसलिए कि अल्लाह किसी क़ौम से जो नेअ़्मत उन्हें दी थी बदलता नहीं जब तक वह ख़ुद न बदल जायें (फ़ा104) और बेशक अल्लाह सुनता जानता है।(53) जैसे फ़िरऔ़न वालों और उनसे अगलों का दस्तूर उन्होंने अपने रब की आयतें झुठलाईं तो हमने उनको उनके गुनाहों के सबब हलाक किया और हमने फ़िरऔ़न वालों को डुबो दिया (फ़ा105) और वह सब ज़ालिम थे।(54) बेशक सब जानवरों में बदतर अल्लाह के नज़दीक वह हैं जिन्होंने कुफ़्र किया और ईमान नहीं लाते।(55) वह जिनसे तुमने मुआ़हदा किया था फिर हर बार अपना अ़हद तोड़ देते हैं (फ़ा106) और डरते नहीं।(56) (फ़ा107) तो अगर तुम कहीं उन्हें लड़ाई में पाओ तो उन्हें ऐसा क़त्ल करो जिससे उनके पसमान्दों को भगाओ (फ़ा108) इस उम्मीद पर कि शायद उन्हें इबरत हो।(57) (फ़ा109)

(फ़ा99) लोहे के गुर्ज़ जो आग में लाल किये हुए हैं और उनसे जो ज़ख़्म लगता है उसमें आग पड़ती है और सोज़िश होती है उन से मार कर फ़रिश्ते काफ़िरों से कहते हैं (फ़ा100) मुसीबतें और अ़ज़ाब (फ़ा101) यानी जो तुमने कस्ब किया कुफ़्र और इसियां (फ़ा102) किसी पर बे जुर्म अ़ज़ाब नहीं करता और काफ़िर पर अ़ज़ाब करना अ़दूल है (फ़ा103) यानी उन काफ़िरों की आ़दत कुफ़्र व सरकशी में फ़िरऔ़नी और उनसे पहलों की मिस्ल है तो जिस तरह वह हलाक किये गए यह भी रोज़े बदर क़त्ल व क़ैद में मुब्तला किये गए। हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा ने फ़रमाया कि जिस तरह फ़िरऔ़नियों ने हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम की नबुव्वत को ब-यक़ीन जानकर उनकी तकज़ीब की, यही हाल उन लोगों का है कि रसूले करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की रिसालत को जान पहचान कर तकज़ीब करते हैं (फ़ा104) और ज़्यादा बदतर हाल में मुब्तला न हों जैसे कि अल्लाह तआ़ला ने कुफ़्फ़ार को रोज़ी देकर भूख की तकलीफ़ रफ़ा की अमन देकर ख़ौफ़ से नजात दी और उनकी तरफ़ अपने हबीब सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को नबी बना कर मबऊस किया उन्होंने इन नेअ़्मतों पर शुक्र तो न किया बजाए इसके यह सरकशी की कि नबी अ़लैहिस्सलातु वस्सलाम की तकज़ीब की उनकी ख़ूंरेज़ी के दरपै हुए और लोगों को राहे हक़ से रोका सुद्दी ने कहा कि अल्लाह की नेअ़्मत हज़रत सय्यदे अम्बिया मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम हैं। (फ़ा105) ऐसे ही यह कुफ़्फ़ारे क़ुरैश हैं जिन्हें बदर में हलाक किया गया (फ़ा106) **शाने नुज़ूलः** *इन्–न शर्रद्–दवाब्बि* और इसके बाद की आयतें **(बक़िया सफ़हा 328 पर)**

وَ اِمَّا تَخَافَنَّ مِنْ قَوْمٍ خِيَانَةً فَانْۢبِذْ اِلَيْهِمْ عَلٰى سَوَآءٍ ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَا يُحِبُّ الْخَآئِنِيْنَ ۟ وَ لَا يَحْسَبَنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا سَبَقُوْا ؕ اِنَّهُمْ لَا يُعْجِزُوْنَ ۟
وَ اَعِدُّوْا لَهُمْ مَّا اسْتَطَعْتُمْ مِّنْ قُوَّةٍ وَّ مِنْ رِّبَاطِ الْخَيْلِ تُرْهِبُوْنَ بِهٖ عَدُوَّ اللّٰهِ وَ عَدُوَّكُمْ وَ اٰخَرِيْنَ مِنْ دُوْنِهِمْ ۚ لَا تَعْلَمُوْنَهُمْ ۚ اَللّٰهُ
يَعْلَمُهُمْ ؕ وَ مَا تُنْفِقُوْا مِنْ شَيْءٍ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ يُوَفَّ اِلَيْكُمْ وَ اَنْتُمْ لَا تُظْلَمُوْنَ ۟ وَ اِنْ جَنَحُوْا لِلسَّلْمِ فَاجْنَحْ لَهَا وَ تَوَكَّلْ عَلَى اللّٰهِ ؕ اِنَّهٗ هُوَ
السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ۟ وَ اِنْ يُّرِيْدُوْۤا اَنْ يَّخْدَعُوْكَ فَاِنَّ حَسْبَكَ اللّٰهُ ؕ هُوَ الَّذِيْۤ اَيَّدَكَ بِنَصْرِهٖ وَ بِالْمُؤْمِنِيْنَ ۟ۙ وَ اَلَّفَ بَيْنَ قُلُوْبِهِمْ ؕ لَوْ اَنْفَقْتَ
مَا فِي الْاَرْضِ جَمِيْعًا مَّاۤ اَلَّفْتَ بَيْنَ قُلُوْبِهِمْ وَ لٰكِنَّ اللّٰهَ اَلَّفَ بَيْنَهُمْ ؕ اِنَّهٗ عَزِيْزٌ حَكِيْمٌ ۟ يٰۤاَيُّهَا النَّبِيُّ حَسْبُكَ اللّٰهُ وَ مَنِ اتَّبَعَكَ مِنَ

व इम्मा तख़ा–फ़न्–न मिन् क़ौमिन् ख़िया–न–तन् फ़म्बिज़् इलैहिम् अ़ला सवाइन् इन्नल्ला–ह ला युहिब्बुल् ख़ाइनीन(58)व ला यह्सबन्नल्लज़ी–न क–फ़रू स–बक़ू इन्नहुम् ला युअ़्जिज़ून(59)व अअ़िद्दू लहुम् मस्त–तअ़्तुम् मिन् क़ुव्वतिंव्–व मिंर्रिबा–तिल्ख़ैलि तुर्हिबू–न बिही अ़दुव्वल्लाहि व अ़दुव्वकुम् व आ–ख़री–न मिन् दूनिहिम् ला तअ़्लमू–नहुम् अल्लाहु यअ़्–लमुहुम् व मा तुन्फ़िक़ू मिन् शैइन् फ़ी सबी–लिल्लाहि युवफ़्–फ़ इलैकुम् व अन्तुम् ला तुज़्लमून(60)व इन् ज–नहू लिस्सल्मि फ़ज्नह् लहा व त–वक्कल् अ़–लल्लाहि इन्नहू हुवस्समीअुल् अ़लीम(61)व इंय्युरीदू अंय्यख़्–द–अू–क फ़इन्–न ह़स्बकल्लाहु हुवल्लज़ी अय्य–द–क बिनस्रिही व बिल्–मुअ़्मिनीन(62)व अल्ल–फ़ बै–न क़ुलूबिहिम् लौ अन्फ़क़्–त मा फ़िल् अर्ज़ि जमीअ़म् मा अल्लफ़्–त बै–न क़ुलूबिहिम् व लाकिन्नल्ला–ह अल्ल–फ़ बै–नहुम् इन्नहू अ़ज़ीज़ुन् ह़कीम(63)या अय्युहन्नबिय्यु ह़स्बुकल्लाहु व मनित्त–ब–अ़–क मिनल्

और अगर तुम किसी क़ौम से दग़ा का अन्देशा करो (फ़ा110) तो उनका अ़हद उनकी तरफ़ फेंक दो बराबरी पर (फ़ा111) बेशक दग़ा वाले अल्लाह को पसन्द नहीं।(58) (रुकूअ़ 3) और हरगिज़ काफ़िर इस घमण्ड में न रहें कि वह (फ़ा112) हाथ से निकल गए बेशक वह आजिज़ नहीं करते।(59) (फ़ा113) और उनके लिए तैयार रखो जो क़ुव्वत तुम्हें बन पड़े (फ़ा114) और जितने घोड़े बांध सको कि उनसे कि उनके दिलों में धाक बिठाओ जो अल्लाह के दुश्मन और तुम्हारे दुश्मन हैं (फ़ा115) और उनके सिवा कुछ औरों के दिलों में जिन्हें तुम नहीं जानते (फ़ा116) अल्लाह उन्हें जानता है और अल्लाह की राह में जो कुछ ख़र्च करोगे तुम्हें पूरा दिया जाएगा (फ़ा117) और किसी तरह घाटे में न रहोगे।(60) और अगर वह सुलह की तरफ़ झुकें तो तुम भी झुको (फ़ा118) और अल्लाह पर भरोसा रखो बेशक वही है सुनता जानता।(61) और अगर वह तुम्हें फ़रेब दिया चाहें (फ़ा119) तो बेशक अल्लाह तुम्हें काफ़ी है वही है जिसने तुम्हें ज़ोर दिया अपनी मदद का और मुसलमानों का।(62) और उनके दिलों में मेल कर दिया (फ़ा120) अगर तुम ज़मीन में जो कुछ है सब ख़र्च कर देते उनके दिल न मिला सकते (फ़ा121) लेकिन अल्लाह ने उनके दिल मिला दिये बेशक वही है ग़ालिब हिकमत वाला।(63) ऐ ग़ैब की ख़बरें बताने वाले अल्लाह तुम्हें काफ़ी है और यह जितने मुसलमान

(फ़ा110) और ऐसे आसार व क़राइन पाए जायें जिन से साबित हो कि वह उज़्र करेंगे और अहद पर क़ायम न रहेंगे। (फ़ा111) यानी उन्हें उस अहद की मुख़ालफ़त करने से पहले आगाह कर दो कि तुम्हारी बद–अहदी के क़राइन पाये गए लिहाज़ा वह अहद क़ाबिले ऐतबार न रहा उसकी पाबन्दी न की जायेगी (फ़ा112) जंगे बदर से भाग कर क़त्ल व क़ैद से बच गए और मुसलमानों के (फ़ा113) अपने गिरिफ़्तार करने वाले को उसके बाद मुसलमानों को ख़िताब होता है (फ़ा114) ख़्वाह वह हथियार हों या किले या तीर अन्दाज़ी मुस्लिम शरीफ़ की हदीस में है कि सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने इस आयत की तफ़सीर में क़ुव्वत के मानी रमी यानी तीर अन्दाज़ी बताये (फ़ा115) यानी कुफ़्फ़ार अहले मक्का हों या दूसरे (फ़ा116) इब्ने ज़ैद का क़ौल है कि यहां औरों से मुनाफ़िक़ीन मुराद हैं हसन का क़ौल है कि काफ़िर जिन्न (फ़ा117) उसकी जज़ा वाफ़िर मिलेगी (फ़ा118) उनसे सुलह क़बूल कर लो (फ़ा119) और सुलह का इज़हार मक्र के लिए करें (फ़ा120) जैसा कि क़बीला औस व ख़ज़रज में मुहब्बत व उलफ़त पैदा कर दी बावजूदे कि उन में सौ बरस से ज़्यादा की अ़दावतें थीं और बड़ी बड़ी लड़ाईयां होती रहती थीं यह महज़ अल्लाह का करम है (फ़ा121) यानी उनकी बाहमी अ़दावत इस हद तक पहुंच गई थी कि उन्हें मिला देने के लिए तमाम सामान बेकार हो चुके थे और कोई सूरत बाक़ी न रही थी ज़रा ज़रा सी बात में बिगड़ जाते और सदियों तक जंग बाक़ी रहती किसी तरह दो दिल न मिल सकते जब रसूले करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम मबऊस हुए और अरब लोग **(बक़िया सफ़हा 328 पर)**

الْمُؤْمِنِينَ ﴿٦٤﴾ يَا أَيُّهَا النَّبِيُّ حَرِّضِ الْمُؤْمِنِينَ عَلَى الْقِتَالِ ۚ إِن يَكُن مِّنكُمْ عِشْرُونَ صَابِرُونَ يَغْلِبُوا مِائَتَيْنِ ۚ وَإِن يَكُن مِّنكُم مِّائَةٌ
يَغْلِبُوا أَلْفًا مِّنَ الَّذِينَ كَفَرُوا بِأَنَّهُمْ قَوْمٌ لَّا يَفْقَهُونَ ﴿٦٥﴾ الْآنَ خَفَّفَ اللَّهُ عَنكُمْ وَعَلِمَ أَنَّ فِيكُمْ ضَعْفًا ۚ فَإِن يَكُن مِّنكُم مِّائَةٌ صَابِرَةٌ
يَغْلِبُوا مِائَتَيْنِ ۚ وَإِن يَكُن مِّنكُمْ أَلْفٌ يَغْلِبُوا أَلْفَيْنِ بِإِذْنِ اللَّهِ ۗ وَاللَّهُ مَعَ الصَّابِرِينَ ﴿٦٦﴾ مَا كَانَ لِنَبِيٍّ أَن يَكُونَ لَهُ أَسْرَىٰ حَتَّىٰ يُثْخِنَ فِي
الْأَرْضِ ۚ تُرِيدُونَ عَرَضَ الدُّنْيَا وَاللَّهُ يُرِيدُ الْآخِرَةَ ۗ وَاللَّهُ عَزِيزٌ حَكِيمٌ ﴿٦٧﴾ لَّوْلَا كِتَابٌ مِّنَ اللَّهِ سَبَقَ لَمَسَّكُمْ فِيمَا أَخَذْتُمْ عَذَابٌ عَظِيمٌ ﴿٦٨﴾
فَكُلُوا مِمَّا غَنِمْتُمْ حَلَالًا طَيِّبًا ۚ وَاتَّقُوا اللَّهَ ۚ إِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ﴿٦٩﴾ يَا أَيُّهَا النَّبِيُّ قُل لِّمَن فِي أَيْدِيكُم مِّنَ الْأَسْرَىٰ إِن يَعْلَمِ اللَّهُ فِي قُلُوبِكُمْ

मुअ्मिनीन(64)या अय्यु–हन्नबिय्यु हर्रिज़िल् मुअ्मिनी–न अ़लल् क़िताालि इंय्यकुम् मिन्कुम् अ़िश्रू–न साबिरू–न यग़्लिबू मि–अतैनि व इंय्यकुम् मिन्कुम् मि–अतुंय्यग़्लिबू अल्फ़म् मिनल्लज़ी–न क–फ़रू बिअन्नहुम् क़ौमुल्ला यफ़्क़हून(65)अल्आ–न ख़फ़्फ़–फ़ल्लाहु अ़न्कुम् व अ़लि–म अन्–न फ़ीकुम् ज़अ्फ़न् फ़–इंय्यकुम् मिन्कुम् मि–अतुन् साबि–रतुंय्यग़्लिबू मि–अतैनि व इंय्यकुम् मिन्कुम् अल्फ़ुंय्यग़्लिबू अल्फ़ैनि बि–इज़्निल्लाहि वल्लाहु म–अ़स्साबिरीन(66)मा का–न लि–नबिय्यिन् अंय्यकू–न लहू अस्रा हत्ता युस्ख़ि–न फ़िल्–अर्ज़ि तुरीदू–न अ़–रज़द्दुन्या वल्लाहु युरीदुल् आख़ि–र–त वल्लाहु अ़ज़ीज़ुन् हकीम(67)लौला किताबुम् मिनल्लाहि स–ब–क़ ल–मस्सकुम् फ़ीमा अ–ख़ज़्तुम् अ़ज़ाबुन् अ़ज़ीम (68)फ़कुलू मिम्मा ग़निम्तुम् हलालन् तय्यिबंव्–वत्तक़ुल्ला–ह इन्नल्ला–ह ग़फ़ूरुर्रहीम(69)या अय्युहन्नबिय्यु क़ुल् लिमन् फ़ी ऐदीकुम् मिनलअस्रा इंय्यअ्–लमिल्लाहु फ़ी क़ुलूबिकुम्

तुम्हारे पैरू हुए(64)(फ़ा122)ऐ ग़ैब की ख़बर बताने वाले मुसलमानों को जिहाद की तरग़ीब दो अगर तुम में के बीस सब्र वाले होंगे दो सौ पर ग़ालिब होंगे और अगर तुम में के सौ हों तो काफ़िरों के हज़ार पर ग़ालिब आयेंगे इस लिए कि वह समझ नहीं रखते।(65)(फ़ा123)अब अल्लाह ने तुम पर से तख़्फ़ीफ़ फ़रमा दी और उसे मालूम है कि तुम कमज़ोर हो तो अगर तुम में सौ सब्र वाले हों दो सौ पर ग़ालिब आयेंगे और अगर तुम में के हज़ार हों तो दो हज़ार पर ग़ालिब होंगे अल्लाह के हुक्म से और अल्लाह सब्र वालों के साथ है।(66)किसी नबी को लायक़ नहीं कि काफ़िरों को ज़िन्दा क़ैद करे जब तक ज़मीन में उनका ख़ून ख़ूब न बहाए(फ़ा124)तुम लोग दुनिया का माल चाहते हो(फ़ा125)और अल्लाह आख़िरत चाहता है(फ़ा126)और अल्लाह ग़ालिब हिकमत वाला है।(67)अगर अल्लाह पहले एक बात लिख न चुका होता(फ़ा127) तो ऐ मुसलमानों तुमने जो काफ़िरों से बदले का माल ले लिया उसमें तुम पर बड़ा अ़ज़ाब आता।(68) तो खाओ जो ग़नीमत तुम्हें मिली, हलाल पाकीज़ा (फ़ा128) और अल्लाह से डरते रहो बेशक अल्लाह बख़्शने वाला मेहरबान है।(69) (रुकूअ़ 5) ऐ ग़ैब की ख़बरें बताने वाले जो क़ैदी तुम्हारे हाथ में हैं उनसे फ़रमाओ (फ़ा129) अगर अल्लाह ने तुम्हारे दिल में भलाई जानी (फ़ा130)

(फ़ा122) **शाने नुज़ूलः** सईद बिन जुबैर हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा से रिवायत करते हैं कि यह आयत हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अ़न्हु के ईमान लाने के बारे में नाज़िल हुई ईमान से सिर्फ़ तैंतीस मर्द और छः औरतें मुशर्रफ़ हो चुके थे तब हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अ़न्हु इस्लाम लाये इस क़ौल की बिना पर आयत मक्की है। नबीए करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के हुक्म से मदनी सूरत में लिखी गई। एक क़ौल यह है कि यह आयत ग़ज़वए बदर में क़ब्ले क़िताल नाज़िल हुई इस तक़दीर पर आयत मदनी है और मोमिनीन से यहां एक क़ौल में अंसार एक में तमाम मुहाजरीन व अंसार मुराद हैं। (फ़ा123) यह अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से वादा और बशारत है कि मुसलमानों की जमाअ़त साबिर रहे तो बमदद इलाही दस गुने काफ़िरों पर ग़ालिब रहेगी क्योंकि कुफ़्फ़ार जाहिल हैं और उनकी ग़रज़ जंग से न हुसूले सवाब है न ख़ौफ़े अ़ज़ाब, जानवरों की तरह लड़ते भिड़ते हैं तो लिल्लाहियत के साथ लड़ने के मुक़ाबिल क्या ठहर सकेंगे बुख़ारी शरीफ़ की हदीस है कि जब यह आयत नाज़िल हुई तो मुसलमानों पर फ़र्ज़ कर दिया गया कि मुसलमानों का एक दस के मुक़ाबला से न भागे फिर आयत *अल्आ–न ख़फ़्फ़–फ़ल्लाहु* नाज़िल हुई तो यह लाज़िम किया गया कि एक सौ दो सौ के मुक़ाबिल क़ायम रहें यानी दस गुने से मुक़ाबला की फ़र्ज़ियत मन्सूख़ हुई और दूने के मुक़ाबला से भागना ममनूअ़ रखा गया। (फ़ा124) और क़त्ले कुफ़्फ़ार में मुबालग़ा करके कुफ़्र की ज़िल्लत और इस्लाम की शौकत का इज़हार न करे। **शाने नुज़ूलः** मुस्लिम शरीफ़ वग़ैरह की अहादीस में है कि जंगे बदर में सत्तर काफ़िर क़ैद करके सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के हुज़ूर में लाये गए थे हुज़ूर ने उनके मुतअ़ल्लिक़ सहाबा से मशवरा तलब फ़रमाया **(बक़िया सफ़हा 328 पर)**

خَيْرًا يُّؤْتِكُمْ خَيْرًا مِّمَّآ أُخِذَ مِنكُمْ وَيَغْفِرْ لَكُمْ ۗ وَاللَّهُ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ﴿٧٠﴾ وَإِن يُرِيدُوا خِيَانَتَكَ فَقَدْ خَانُوا اللَّهَ مِن قَبْلُ فَأَمْكَنَ مِنْهُمْ ۗ
وَاللَّهُ عَلِيمٌ حَكِيمٌ ﴿٧١﴾ إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَهَاجَرُوا وَجَاهَدُوا بِأَمْوَالِهِمْ وَأَنفُسِهِمْ فِي سَبِيلِ اللَّهِ وَالَّذِينَ آوَوا وَّنَصَرُوا
أُولَٰئِكَ بَعْضُهُمْ أَوْلِيَاءُ بَعْضٍ ۚ وَالَّذِينَ آمَنُوا وَلَمْ يُهَاجِرُوا مَا لَكُم مِّن وَلَايَتِهِم مِّن شَيْءٍ حَتَّىٰ يُهَاجِرُوا ۚ وَإِنِ اسْتَنصَرُوكُمْ
فِي الدِّينِ فَعَلَيْكُمُ النَّصْرُ إِلَّا عَلَىٰ قَوْمٍ بَيْنَكُمْ وَبَيْنَهُم مِّيثَاقٌ ۗ وَاللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ بَصِيرٌ ﴿٧٢﴾ وَالَّذِينَ كَفَرُوا بَعْضُهُمْ أَوْلِيَاءُ بَعْضٍ ۚ إِلَّا
تَفْعَلُوهُ تَكُن فِتْنَةٌ فِي الْأَرْضِ وَفَسَادٌ كَبِيرٌ ﴿٧٣﴾ وَالَّذِينَ آمَنُوا وَهَاجَرُوا وَجَاهَدُوا فِي سَبِيلِ اللَّهِ وَالَّذِينَ آوَوا وَّنَصَرُوا أُولَٰئِكَ
هُمُ الْمُؤْمِنُونَ حَقًّا ۚ لَّهُم مَّغْفِرَةٌ وَرِزْقٌ كَرِيمٌ ﴿٧٤﴾ وَالَّذِينَ آمَنُوا مِن بَعْدُ وَهَاجَرُوا وَجَاهَدُوا مَعَكُمْ فَأُولَٰئِكَ مِنكُمْ ۚ وَأُولُو الْأَرْحَامِ بَعْضُهُمْ أَوْلَىٰ
بِبَعْضٍ فِي كِتَابِ اللَّهِ ۗ إِنَّ اللَّهَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ ﴿٧٥﴾

ख़ैरंय्यु–अतिकुम् ख़ैरम् मिम्मा उख़ि–ज़ मिन्कुम् व यग़्फ़िर् लकुम् वल्लाहु ग़फ़ूरुर्रहीम(70)व इंय्युरीदू ख़िया–न–त–क फ़–क़द् ख़ानुल्ला–ह मिन् क़ब्लु फ़–अम्क–न मिन्हुम् वल्लाहु अ़लीमुन् ह़कीम (71)इन्नल्लज़ी–न आ–मनू व हा–जरू व जा–हदू बि–अम्वालिहिम् व अन्फ़ु–सिहिम् फ़ी सबीलिल्लाहि वल्लज़ी–न आवव्–व न–स़रू उलाइ–क बअ्ज़ुहुम् औलिया–उ बअ्ज़िन् वल्लज़ी–न आ–मनू व लम् युहाजिरू मा लकुम् मिंव्वला यतिहिम् मिन् शैइन् ह़त्ता युहाजिरू व इनिस्तन्–स़रूकुम् फ़िद्दीनि फ़अ़लैकुमुन नस्रु इल्ला अ़ला क़ौमिम् बै–नकुम् व बै–नहुम् मीसाक़ुन् वल्लाहु बिमा तअ्–मलू–न बस़ीर(72)वल्लज़ी–न क–फ़रू बअ्ज़ुहुम् औलियाउ बअ्ज़िन् इल्ला तफ़्अ़लूहु तकुन् फ़ित्–न–तुन् फ़िल्अर्ज़ि व फ़सादुन् कबीर(73)वल्लज़ी–न आ–मनू व हा–जरू व जा–हदू फ़ी सबीलिल्लाहि वल्लज़ी–न आवव्–व न–सरू उलाइ–क हुमुल् मुअ्मिनू–न ह़क़्क़न् लहुम् मग़्फ़ि–रतुंव् व रिज़्क़ुन् करीम(74) वल्लज़ी–न आ–मनू मिम् बअ्दु व हा–जरू व जा–हदू म–अ़कुम् फ़उलाइ–क मिन्कुम् व उलुल् अर्हामि बअ्ज़ुहुम् औला बि–बअ्जिन् फ़ी किताबिल्लाहि इन्नल्ला–ह बिकुल्लि शैइन् अ़लीम(75)

तो जो तुम से लिया गया (फ़ा131) उससे बेहतर तुम्हें अता फ़रमाएगा और तुम्हें बख़्श देगा और अल्लाह बख़्शने वाला मेहरबान है।(70) (फ़ा132) और ऐ महबूब अगर वह (फ़ा133) तुम से दग़ा चाहेंगे (फ़ा134) तो इस से पहले अल्लाह ही की ख़यानत कर चुके हैं जिस पर उसने इतने तुम्हारे क़ाबू में दे दिये(71) (फ़ा135) और अल्लाह जानने वाला हिकमत वाला है। बेशक जो ईमान लाए और अल्लाह के लिए (फ़ा136) घर बार छोड़े और अल्लाह की राह में अपने मालों और जानों से लड़े (फ़ा137) और वह जिन्होंने जगह दी और मदद की (फ़ा138) वह एक दूसरे के वारिस हैं (फ़ा139) और वह जो ईमान लाए (फ़ा140) और हिजरत न की तुम्हें उनका तरका कुछ नहीं पहुंचता जब तक हिजरत न करें और अगर वह दीन में तुम से मदद चाहें तो तुम पर मदद देना वाजिब है मगर ऐसी क़ौम पर कि तुम में उनमें मुआ़हदा है और अल्लाह तुम्हारे काम देख रहा है।(72) और काफ़िर आपस में एक दूसरे के वारिस हैं(फ़ा141) ऐसा न करोगे तो ज़मीन में फ़ितना और बड़ा फ़साद होगा।(73)(फ़ा142) और वह जो ईमान लाए और हिजरत की और अल्लाह की राह में लड़े और जिन्होंने जगह दी और मदद की वही सच्चे ईमान वाले हैं उनके लिए बख़्शिश है और इ़ज़्ज़त की रोज़ी।(74) (फ़ा143) और जो बाद को ईमान लाए और हिजरत की और तुम्हारे साथ जिहाद किया वह भी तुम्हीं में से हैं। (फ़ा144) और रिश्ते वाले एक से दूसरे ज़्यादा नज़दीक हैं अल्लाह की किताब में (फ़ा145) बेशक अल्लाह सब कुछ जानता है।(75)(रुकूअ़ 6)

(फ़ा131) यानी फ़िदया (फ़ा132) जब रसूले करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के पास बहरैन का माल आया जिसकी मिक़दार अस्सी हज़ार थी तो हुज़ूर ने नमाज़े ज़ुहर के लिए वुज़ू किया और नमाज़ से पहले पहले कुल का कुल तक़सीम कर दिया और हज़रत अब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुम को हुक्म दिया कि इस में से ले लो तो जितना उनसे उठ सका उतना उन्होंने ले लिया वह फ़रमाते थे कि यह उससे बेहतर है कि जो अल्लाह ने मुझ से लिया और मैं उसकी मग़फ़िरत की उम्मीद रखता **(बक़िया सफ़हा 329 पर)**

سُوْرَةُ التَّوْبَةِ مَدَنِيَّةٌ

بَرَآءَةٌ مِّنَ اللّٰهِ وَ رَسُوْلِهٖۤ اِلَى الَّذِيْنَ عٰهَدْتُّمْ مِّنَ الْمُشْرِكِيْنَ ؕ فَسِيْحُوْا فِي الْاَرْضِ اَرْبَعَةَ اَشْهُرٍ وَّ اعْلَمُوْۤا اَنَّكُمْ غَيْرُ مُعْجِزِي اللّٰهِ ۙ وَ اَنَّ اللّٰهَ مُخْزِي الْكٰفِرِيْنَ ۝ وَ اَذَانٌ مِّنَ اللّٰهِ وَ رَسُوْلِهٖۤ اِلَى النَّاسِ يَوْمَ الْحَجِّ الْاَكْبَرِ اَنَّ اللّٰهَ بَرِیْٓءٌ مِّنَ الْمُشْرِكِيْنَ ۙ۬ وَ رَسُوْلُهٗ ؕ فَاِنْ تُبْتُمْ فَهُوَ خَيْرٌ لَّكُمْ ۚ وَ اِنْ تَوَلَّيْتُمْ فَاعْلَمُوْۤا اَنَّكُمْ غَيْرُ مُعْجِزِي اللّٰهِ ؕ وَ بَشِّرِ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِعَذَابٍ اَلِيْمٍ ۙ۝ اِلَّا الَّذِيْنَ عٰهَدْتُّمْ مِّنَ الْمُشْرِكِيْنَ ثُمَّ لَمْ يَنْقُصُوْكُمْ شَيْـًٔا وَّ لَمْ يُظَاهِرُوْا عَلَيْكُمْ اَحَدًا فَاَتِمُّوْۤا اِلَيْهِمْ عَهْدَهُمْ اِلٰى مُدَّتِهِمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ الْمُتَّقِيْنَ ۝ فَاِذَا انْسَلَخَ الْاَشْهُرُ

सूरतुत्तौबति

(मदनी है इस सूरह में 129 आयतें और 16 रुकूअ़ हैं)(फ़1)

बरा–अतुम् मिनल्लाहि व रसूलिही इलल्लज़ी–न आ़हत्तुम् मिनल् मुश्रिकीन(1)फ़सीहू फ़िल्अर्ज़ि अर्ब–अ़–त अश्हुरिंव वअ़्–लमू अन्नकुम् ग़ैरु मुअ़्–जिज़िल्लाहि व अन्नल्ला–ह मुख़्ज़िल् काफ़िरीन(2)व अज़ानुम् मिनल्लाहि व रसूलिही इलन्नासि यौमल् हज्जिल् अक्बरि अन्नल्ला–ह बरीउम् मिनल्–मुश्रिकी–न व रसूलुहू फ़–इन् तुब्तुम् फ़हु–व ख़ैरुल्–लकुम् व इन् तवल्लैतुम् फ़अ़्–लमू अन्नकुम् ग़ैरु मुअ़्जिज़िल्लाहि व बश्शिरिल् लज़ी–न क–फ़रू बि–अ़ज़ाबिन् अलीम(3) इल्लल्–लज़ी–न आ़–हत्तुम् मिनल् मुश्रिकी–न सुम्–म लम् यन्कुसूकुम् शैअंव्–व लम् युज़ाहिरू अ़लैकुम् अ–ह़–दन् फ़–अतिम्मू इलैहिम् अ़ह्दहुम् इला मुद्–दतिहिम् इन्नल्ला–ह युहिब्बुल् मुत्तक़ीन(4)फ़–इज़न् स–ल–ख़ल् अश्हुरुल्

बेज़ारी का हुक्म सुनाना है अल्लाह और उसके रसूल की तरफ़ से उन मुशरिकों को जिनसे तुम्हारा मुआ़हदा था और वह क़ायम न रहे।(1)(फ़ा2) तो चार महीने ज़मीन पर चलो फिरो और जान रखो कि तुम अल्लाह को थका नहीं सकते (फ़ा3) और यह कि अल्लाह काफ़िरों को रुसवा करने वाला है।(2)(फ़ा4) और मुनादी पुकार देना है अल्लाह और उसके रसूल की तरफ़ से सब लोगों में बड़े हज के दिन (फ़ा5) कि अल्लाह बेज़ार है मुशरिकों से और उसका रसूल तो अगर तुम तौबा करो (फ़ा6) तो तुम्हारा भला है और अगर मुंह फेरो (फ़ा7) तो जान लो कि तुम अल्लाह को न थका सकोगे (फ़ा8) और काफ़िरों को ख़ुशख़बरी सुनाओ दर्दनाक अ़ज़ाब की।(3) मगर वह मुशरिक जिन से तुम्हारा मुआ़हदा था फिर उन्होंने तुम्हारे अ़हद में कुछ कमी न की(फ़ा9) और तुम्हारे मुक़ाबिल किसी को मदद न दी तो उनका अ़हद ठहरी हुई मुद्दत तक पूरा करो बेशक अल्लाह परहेज़गारों को दोस्त रखता है।(4) फिर जब हुरमत वाले महीने निकल

(फ़ा1) सूरह तौबा मदनिया है मगर इसके अख़ीर की आयतें लक़द जाअकुम् रसूलुन् से आख़िर तक इनको बाज़ उलमा मक्की कहते हैं। इस सूरत में 16 रुकूअ़ 129 आयतें 4078 कलिमे 10488 हरफ़ हैं। इस सूरत के दस नाम हैं, उनमें से तौबा व बराअ़त दो नाम मशहूर हैं इस सूरत के अव्वल में बिस्मिल्लाह नहीं लिखी गई इसकी असल वजह यह है कि जिबरील अ़लैहिस्सलाम इस सूरत के साथ बिस्मिल्लाह लेकर नाज़िल ही नहीं हुए थे और नबीए करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने बिस्मिल्लाह लिखने का हुक्म नहीं फ़रमाया हज़रत अली मुर्तज़ा से मरवी है कि बिस्मिल्लाह अमान है और यह सूरत तलवार के साथ अमन उठा देने के लिए नाज़िल हुई बुख़ारी ने हज़रत बरा से रिवायत किया कि क़ुरआने करीम की सूरतों में सब से आख़िर यही सूरत नाज़िल हुई (फ़ा2) मुशरिकीने अरब और मुसलमानों के दर्मियान अहद था उनमें से चन्द के सिवा सब ने अहद शिकनी की तो उन अहद शिकनों का अहद साक़ित कर दिया गया और हुक्म दिया गया कि चार महीने वह अमन के साथ जहां चाहें गुज़ारें उनसे कोई तअर्रुज़ न किया जाएगा इस अर्सा में उन्हें मौक़ा है ख़ूब सोच समझ लें कि उनके लिए क्या बेहतर है और अपनी इहतियातें करलें और जान लें कि इस मुद्दत के बाद इस्लाम मन्ज़ूर करना होगा या क़त्ल यह सूरत सन् ९ हिजरी में फ़तहे मक्का से एक साल बाद नाज़िल हुई रसूले करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने इस सन् में हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अ़न्हु को अमीरे हज मुक़र्रर फ़रमाया था और उनके बाद अली मुर्तज़ा को मजमए हुज्जाज में यह सूरत सुनाने के लिए भेजा चुनान्चे हज़रत अली मुर्तज़ा ने दस ज़िलहिज्जा को जमरए अ़क़बा के पास खड़े होकर निदा की या अय्युहन्नासु मैं तुम्हारी तरफ़ रसूले करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम का फ़रिस्तादा आया हूं लोगों ने कहा आप क्या पयाम लाये हैं **(बक़िया सफ़हा 329 पर)**

الْحُرُمُ فَاقْتُلُوا الْمُشْرِكِينَ حَيْثُ وَجَدْتُّمُوهُمْ وَخُذُوهُمْ وَاحْصُرُوهُمْ وَاقْعُدُوا لَهُمْ كُلَّ مَرْصَدٍ ۚ فَإِنْ تَابُوا وَأَقَامُوا الصَّلٰوةَ وَاٰتَوُا الزَّكٰوةَ

فَخَلُّوا سَبِيلَهُمْ ۚ إِنَّ اللّٰهَ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ۝ وَإِنْ أَحَدٌ مِّنَ الْمُشْرِكِينَ اسْتَجَارَكَ فَأَجِرْهُ حَتّٰى يَسْمَعَ كَلٰمَ اللّٰهِ ثُمَّ أَبْلِغْهُ مَأْمَنَهُ ۚ ذٰلِكَ بِأَنَّهُمْ

قَوْمٌ لَّا يَعْلَمُونَ ۝ كَيْفَ يَكُونُ لِلْمُشْرِكِينَ عَهْدٌ عِنْدَ اللّٰهِ وَعِنْدَ رَسُولِهِ إِلَّا الَّذِينَ عٰهَدْتُّمْ عِنْدَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ ۚ فَمَا اسْتَقَامُوا

لَكُمْ فَاسْتَقِيمُوا لَهُمْ ۚ إِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ الْمُتَّقِينَ ۝ كَيْفَ وَإِنْ يَّظْهَرُوا عَلَيْكُمْ لَا يَرْقُبُوا فِيكُمْ إِلًّا وَّلَا ذِمَّةً ۚ يُرْضُونَكُمْ بِأَفْوَاهِهِمْ وَتَأْبٰى

قُلُوبُهُمْ ۚ وَأَكْثَرُهُمْ فٰسِقُونَ ۝ اشْتَرَوْا بِاٰيٰتِ اللّٰهِ ثَمَنًا قَلِيلًا فَصَدُّوا عَنْ سَبِيلِهِ ۚ إِنَّهُمْ سَاءَ مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ۝ لَا يَرْقُبُونَ فِي

हुरुमु फ़क़्तुलुल् मुश्रिकी–न हैसु वजत्तमूहुम् व ख़ुज़ूहुम् वह्सुरूहुम् वक़्अुदू लहुम् कुल्–ल मर्–सदिन् फ़इन् ताबू व अक़ामुस्सला–त व आ–तवुज़्ज़–का–त फ़–ख़ल्लू सबी–लहुम् इन्नल्ला–ह ग़फ़ूरुर्रहीम(5)व इन् अ–हदुम् मिनल् मुश्रिकी–नस्तजा–र–क फ़–अजिर्हु हत्ता यस्म–अ कलामल्लाहि सुम्–म अब्लिग्हु मअ्–म–नहू ज़ालि–क बि–अन्नहुम् क़ौमुल् ला यअ्लमून(6)कै–फ़ यकूनु लिल्मुश्रिकी–न अह्दुन् अिन्दल्लाहि व अिन्–द रसूलिही इल्लल्–लज़ी–न आहत्तुम् अिन्दल् मस्जिदिल् हरामि फ़–मस्तक़ामू लकुम् फ़स्तक़ीमू लहुम् इन्नल्ला–ह युहिब्बुल् मुत्तक़ीन(7)कै–फ़ व इंय्यज़्हरू अलैकुम् ला यर्क़ुबू फ़ीकुम् इल्लंव् व ला ज़िम्म–तन् युर्ज़ू–नकुम् बि–अफ़्वाहिहिम् व तअ्बा क़ुलूबुहुम् व अक्सरुहुम् फ़ासिक़ून(8)इश्तरौ बि–आया–तिल्लाहि स–म–नन् क़लीलन् फ़–सद्दू अन् सबीलिही इन्नहुम् सा–अ मा कानू यअ्मलून(9)ला यर्क़ुबू–न फ़ी

जायें तो मुशरिकों को मारो (फ़ा10) जहां पाओ (फ़ा11) और उन्हें पकड़ो और क़ैद करो और हर जगह उनकी ताक में बैठो, फिर अगर वह तौबा करें (फ़ा12) और नमाज़ क़ायम रखें और ज़कात दें तो उनकी राह छोड़ दो (फ़ा13) बेशक अल्लाह बख़्शने वाला मेहरबान है।(5) और ऐ महबूब अगर कोई मुशरिक तुम से पनाह मांगे (फ़ा14) तो उसे पनाह दो कि वह अल्लाह का कलाम सुने फिर उसे उसकी अमन की जगह पहुंचा दो (फ़ा15) यह इस लिए कि वह नादान लोग हैं।(6) (फ़ा16) (रुकूअ् 7) मुशरिकों के लिए अल्लाह और उसके रसूल के पास कोई अहद क्योंकर होगा (फ़ा17) मगर वह जिनसे तुम्हारा मुआहदा मस्जिदे हराम के पास हुआ (फ़ा18) तो जब तक वह तुम्हारे लिए अहद पर क़ाइम रहें तुम उनके लिए क़ाइम रहो बेशक परहेज़गार अल्लाह को ख़ुश आते हैं।(7) भला क्यों कर (फ़ा19) उनका हाल तो यह है कि तुम पर क़ाबू पायें तो न क़राबत का लिहाज़ करें न अहद का अपने मुंह से तुम्हें राज़ी करते हैं (फ़ा20) और उनके दिलों में इन्कार है और उनमें अकसर बे हुक्म हैं।(8) (फ़ा21) अल्लाह की आयतों के बदले थोड़े दाम मोल लिये (फ़ा22) तो उसकी राह से रोका (फ़ा23) बेशक वह बहुत ही बुरे काम करते हैं।(9) किसी मुसलमान में

(फ़ा10) जिन्होंने अहद शिकनी की (फ़ा11) हिल में ख़्वाह हरम में किसी वक़्त व मकान की तख़्सीस नहीं। (फ़ा12) शिर्क व कुफ़्र से और ईमान क़बूल करें (फ़ा13) और क़ैद से रिहा कर दो और उनसे तअर्रुज़ न करो (फ़ा14) मोहलत के महीने गुज़रने के बाद ताकि आप से तौहीद के मसायल और क़ुरआन पाक सुनें जिसकी आप दावत देते हैं (फ़ा15) अगर ईमान न लाये। मसला: इससे साबित हुआ कि मुस्तअ–मन को ईज़ा न दी जाए और मुद्दत गुज़रने के बाद इसको दारुल इस्लाम में इक़ामत का हक़ नहीं (फ़ा16) इस्लाम और इसकी हक़ीक़त को नहीं जानते तो उन्हें अमन देनी ऐन हिकमत है ताकि कलामुल्लाह सुनें और समझें। (फ़ा17) कि वह उज़्र व अहद शिकनी किया करते हैं (फ़ा18) और उनसे कोई अहद शिकनी ज़ुहूर में न आई मिस्ल बनी किनाना व बनी ज़मुरा के (फ़ा19) अहद पूरा करेंगे और कैसे क़ौल पर क़ायम रहेंगे (फ़ा20) ईमान और वफ़ाए अहद के वादे करके (फ़ा21) अहद शिकन कुफ़्र में सरकश व बे मुरव्वत झूठ से न शर्माने वाले उन्होंने (फ़ा22) और दुनिया के थोड़े से नफ़ा के पीछे ईमान व क़ुरआन छोड़ बैठे और जो अहद रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से किया था वह अबू सुफ़ियान के थोड़े से लालच देने से तोड़ दिया (फ़ा23) और लोगों को दीने इलाही में दाख़िल होने से मानेअ् हुए।

مُؤْمِنٍ إِلًّا وَّلَا ذِمَّةً ۚ وَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُعْتَدُوْنَ ⑩ فَاِنْ تَابُوْا وَاَقَامُوا الصَّلٰوةَ وَاٰتَوُا الزَّكٰوةَ فَاِخْوَانُكُمْ فِى الدِّيْنِ ۗ وَنُفَصِّلُ الْاٰيٰتِ لِقَوْمٍ

يَّعْلَمُوْنَ ⑪ وَاِنْ نَّكَثُوْٓا اَيْمَانَهُمْ مِّنْۢ بَعْدِ عَهْدِهِمْ وَطَعَنُوْا فِىْ دِيْنِكُمْ فَقَاتِلُوْٓا اَئِمَّةَ الْكُفْرِ ۙ اِنَّهُمْ لَآ اَيْمَانَ لَهُمْ لَعَلَّهُمْ يَنْتَهُوْنَ ⑫

اَلَا تُقَاتِلُوْنَ قَوْمًا نَّكَثُوْٓا اَيْمَانَهُمْ وَهَمُّوْا بِاِخْرَاجِ الرَّسُوْلِ وَهُمْ بَدَءُوْكُمْ اَوَّلَ مَرَّةٍ ۗ اَتَخْشَوْنَهُمْ ۚ فَاللّٰهُ اَحَقُّ اَنْ تَخْشَوْهُ اِنْ كُنْتُمْ

مُّؤْمِنِيْنَ ⑬ قَاتِلُوْهُمْ يُعَذِّبْهُمُ اللّٰهُ بِاَيْدِيْكُمْ وَيُخْزِهِمْ وَيَنْصُرْكُمْ عَلَيْهِمْ وَيَشْفِ صُدُوْرَ قَوْمٍ مُّؤْمِنِيْنَ ⑭ وَيُذْهِبْ غَيْظَ قُلُوْبِهِمْ ۗ

وَيَتُوْبُ اللّٰهُ عَلٰى مَنْ يَّشَآءُ ۗ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ ⑮ اَمْ حَسِبْتُمْ اَنْ تُتْرَكُوْا وَلَمَّا يَعْلَمِ اللّٰهُ الَّذِيْنَ جٰهَدُوْا مِنْكُمْ وَلَمْ يَتَّخِذُوْا مِنْ

मुअ्मिनिन् इल्लंव्–व ला ज़िम्म–तन् व उलाइ–क हुमुल्मुअ्–तदून(10)फ़इन् ताबू व अक़ा–मुस्सला–त व आ–तवुज़्ज़का–त फ़इख़्वानुकुम् फ़िद्दीनि व नु–फ़स्सिलुल् आयाति लिक़ौमिंय्यअ्–लमून(11)व इन्–न–कसू ऐमा–नहुम् मिम्बअ्दि अह्दिहिम् व त–अ़नू फ़ी दीनिकुम् फ़क़ातिलू अइम्म–तल्कुफ़्रि इन्नहुम् ला ऐमा–न लहुम् ल–अ़ल्लहुम् यन्तहून(12)अला तुक़ातिलू–न क़ौमन् न–कसू ऐमा–नहुम् व हम्मू बि–इख़्राजिर् रसूलि व हुम् ब–दऊकुम् अव्व–ल मर्रतिन् अ–तख़्शौ– नहुम् फ़ल्लाहु अ–हक़्क़ु अन् तख़्शौहु इन् कुन्तुम् मुअ्मिनीन(13)क़ातिलूहुम् युअ़ज़्ज़िब्हुमुल्लाहु बिऐदीकुम् व युख़्ज़िहिम् व यन्सुर्–कुम् अ़लैहिम् व यश्फ़ि सुदू–र क़ौमिम् मुअ्मिनीन(14)व युज़्हिब् ग़ै–ज़ क़ुलूबिहिम् व यतूबुल्लाहु अ़ला मंय्यशाउ वल्लाहु अ़लीमुन् हकीम(15)अम् ह़सिब्तुम् अन् तुत्रकू व लम्मा यअ्–लमिल्लाहुल् लज़ी–न जा–हदू मिन्कुम् व लम् यत्तख़िज़ू मिन्

न क़राबत का लिहाज़ करें न अ़हद का (फ़ा24) और वही सरकश हैं।(10) फिर अगर वह (फ़ा25) तौबा करें और नमाज़ क़ायम रखें और ज़कात दें तो वह तुम्हारे दीनी भाई हैं (फ़ा26) और हम आयतें मुफ़स्सल बयान करते हैं जानने वालों के लिए।(11) (फ़ा27) और अगर अहद करके अपनी क़समें तोड़ें और तुम्हारे दीन पर मुंह आयें तो कुफ़्र के सरग़नों से लड़ो (फ़ा28) बेशक उनकी क़समें कुछ नहीं इस उम्मीद पर कि शायद वह बाज़ आयें।(12) (फ़ा29) क्या उस क़ौम से न लड़ोगे जिन्होंने अपनी क़समें तोड़ीं (फ़ा30) और रसूल के निकालने का इरादा किया (फ़ा31) हालांकि उन्हीं की तरफ़ से पहल हुई है क्या उनसे डरते हो तो अल्लाह इसका ज़्यादा मुस्तहिक़ है कि उससे डरो अगर ईमान रखते हो।(13) तो उनसे लड़ो अल्लाह उन्हें अ़ज़ाब देगा तुम्हारे हाथों और उन्हें रुसवा करेगा (फ़ा32) और तुम्हें उन पर मदद देगा (फ़ा33) और ईमान वालों का जी ठंडा करेगा।(14)और उनके दिलों की घुटन दूर फ़रमाएगा (फ़ा34) और अल्लाह जिसकी चाहे तौबा क़बूल फ़रमाए (फ़ा35) और अल्लाह इल्म व हिकमत वाला है।(15) क्या इस गुमान में हो कि यूंही छोड़ दिए जाओगे और अभी अल्लाह ने पहचान न कराई उनकी जो तुम में से जिहाद करेंगे (फ़ा36) और अल्लाह और उसके रसूल

(फ़ा24) जब मौक़ा पायें क़त्ल कर डालें तो मुसलमानों को भी चाहिए कि जब मुशरिकीन पर दस्त-रस हो पायें तो दर गुज़र न करें (फ़ा25) कुफ़्र व अहद शिकनी से बाज़ आयें और ईमान क़बूल करके (फ़ा26) हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा ने फ़रमाया कि इस आयत से साबित हुआ कि अहले क़िब्ला के ख़ून हराम हैं। (फ़ा27) इससे साबित हुआ कि तफ़सीले आयात पर जिसको नज़र हो वह आलिम है (फ़ा28) मसलाः इस आयत से साबित हुआ कि जो काफ़िर ज़िम्मी दीने इस्लाम पर ज़ाहिर तअ़न करे उसका अहद बाक़ी नहीं रहता और वह ज़िम्मा से ख़ारिज हो जाता है उसको क़त्ल करना जायज़ है (फ़ा29) इस आयत से साबित हुआ कि कुफ़्फ़ार के साथ जंग करने से मुसलमानों की ग़रज़ उन्हें कुफ़्र व बद आमाली से रोक देना है (फ़ा30) और सुलह हुदैबिया का अहद तोड़ा और मुसलमानों के हलीफ़ ख़ुज़ा के मुक़ाबिल बनी बिकर की मदद की (फ़ा31) मक्का मुकर्रमा से दारुन्नदवा में मशवरा करके (फ़ा32) क़त्ल व क़ैद से (फ़ा33) और उन पर ग़लबा अता फ़रमाएगा (फ़ा34) यह तमाम मवाईद पूरे हुए और नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की ख़बरें सादिक़ हुईं और नबुव्वत का सुबूत वाज़ेह तर हो गया (फ़ा35) इस में इशआ़र है कि बाज़ अहले मक्का कुफ़्र से बाज़ आकर ताइब होंगे यह ख़बर भी ऐसी ही वाक़ेअ़् हो गई चुनांचे अबू सुफ़ियान और इकरमा बिन अबू जहल और सुहैल बिन अ़म्र ईमान से मुशर्रफ़ हुए। (फ़ा36) इख़्लास के साथ अल्लाह की राह में।

دُوۡنِ اللّٰهِ وَلَا رَسُوۡلِهٖ وَلَا الۡمُؤۡمِنِيۡنَ وَلِيۡجَةً ؕ وَاللّٰهُ خَبِيۡرٌۢ بِمَا تَعۡمَلُوۡنَ ۝ مَا كَانَ لِلۡمُشۡرِكِيۡنَ اَنۡ يَّعۡمُرُوۡا مَسٰجِدَ اللّٰهِ شٰهِدِيۡنَ عَلٰٓى اَنۡفُسِهِمۡ

بِالۡكُفۡرِ ؕ اُولٰٓـئِكَ حَبِطَتۡ اَعۡمَالُهُمۡ ۖۚ وَفِى النَّارِ هُمۡ خٰلِدُوۡنَ ۝ اِنَّمَا يَعۡمُرُ مَسٰجِدَ اللّٰهِ مَنۡ اٰمَنَ بِاللّٰهِ وَالۡيَوۡمِ الۡاٰخِرِ وَاَقَامَ الصَّلٰوةَ وَاٰتَى الزَّكٰوةَ

وَلَمۡ يَخۡشَ اِلَّا اللّٰهَ فَعَسٰٓى اُولٰٓـئِكَ اَنۡ يَّكُوۡنُوۡا مِنَ الۡمُهۡتَدِيۡنَ ۝ اَجَعَلۡتُمۡ سِقَايَةَ الۡحَـآجِّ وَعِمَارَةَ الۡمَسۡجِدِ الۡحَـرَامِ كَمَنۡ اٰمَنَ بِاللّٰهِ وَالۡيَوۡمِ

الۡاٰخِرِ وَجَاهَدَ فِىۡ سَبِيۡلِ اللّٰهِ ؕ لَا يَسۡتَوٗنَ عِنۡدَ اللّٰهِ ؕ وَاللّٰهُ لَا يَهۡدِى الۡقَوۡمَ الظّٰلِمِيۡنَ ۝ اَلَّذِيۡنَ اٰمَنُوۡا وَهَاجَرُوۡا وَجَاهَدُوۡا فِىۡ سَبِيۡلِ اللّٰهِ

بِاَمۡوَالِهِمۡ وَاَنۡفُسِهِمۡ ۙ اَعۡظَمُ دَرَجَةً عِنۡدَ اللّٰهِ ؕ وَاُولٰٓـئِكَ هُمُ الۡفَآئِزُوۡنَ ۝ يُبَشِّرُهُمۡ رَبُّهُمۡ بِرَحۡمَةٍ مِّنۡهُ وَرِضۡوَانٍ وَّجَنّٰتٍ لَّهُمۡ فِيۡهَا نَعِيۡمٌ

दूनिल्लाहि व ला रसूलिही व लल्मुअ्मिनी–न वली–ज–तन् वल्लाहु ख़बीरुम् बिमा तअ्मलून(16)मा का–न लिल्मुश्रिकी–न अंय्य–अ्मुरु मसाजिदल्लाहि शाहिदी–न अ़ला अन्फ़ुसिहिम् बिल्कुफ़्रि उलाइ–क हबितत् अअ्–मालुहुम् व फ़िन्नारि हुम् ख़ालिदून(17)इन्नमा यअ्मुरु मसाजिदल्लाहि मन् आ–म–न बिल्लाहि वल्– यौमिल् आख़िरि व अक़ामस्सला–त व आतज़्ज़का–त व लम् यख़्–श इल्लल्ला–ह फ़–असा उलाइ–क अंय्यकूनू मिनल् मुह्तदीन(18)अ–ज–अ़ल्तुम् सिक़ा–य–तल् हाज्जि व अ़िमा–र–तल् मस्जिदिल् हरामि क–मन् आ–म–न बिल्लाहि वल्यौमिल् आख़िरि व जा–ह–द फ़ी सबी–लिल्लाहि ला यस्तवू–न अ़िन्दल्लाहि वल्लाहु ला यह्दिल् क़ौमज़् ज़ालिमीन (19)अल्लज़ी–न आ–मनू व हा–जरू व जा–हदू फ़ी सबीलिल्लाहि बि–अम्वालिहिम् व अन्फ़ुसिहिम् अअ्–जमु द–र–ज–तन् अ़िन्दल्लाहि व उलाइ–क हुमु–ल्फ़ाइजू़न(20)युबश्शिरु हुम् रब्बुहुम् बि–रह्मतिम् मिन्हु व रिज़्वानिंव् व जन्नातिल् लहुम् फ़ीहा नअ़ीमुम्

और मुसलमानों के सिवा किसी को अपना महरमे-राज़ न बनायेंगे (फ़ा37) और अल्लाह तुम्हारे कामों से ख़बरदार है। (16) (रुकूअ़ 8) मुशरिकों को नहीं पहुंचता कि अल्लाह की मस्जिदें आबाद करें (फ़ा38) ख़ुद अपने कुफ़्र की गवाही देकर (फ़ा39) उनका तो सब किया धरा अकारत है और वह हमेशा आग में रहेंगे।(17) (फ़ा40) अल्लाह की मस्जिदें वही आबाद करते हैं जो अल्लाह और क़ियामत पर ईमान लाते और नमाज़ क़ायम रखते हैं और ज़कात देते हैं (फ़ा41) और अल्लाह के सिवा किसी से नहीं डरते(फ़ा42)तो क़रीब है कि यह लोग हिदायत वालों में हों।(18) तो क्या तुमने हाजियों की सबील और मस्जिदे हराम की ख़िदमत उसके बराबर ठहरा ली जो अल्लाह और क़ियामत पर ईमान लाया और अल्लाह की राह में जिहाद किया वह अल्लाह के नज़दीक बराबर नहीं और अल्लाह ज़ालिमों को राह नहीं देता।(19)(फ़ा43)वह जो ईमान लाए और हिजरत की और अपने माल जान से अल्लाह की राह में लड़े अल्लाह के यहां उनका दर्जा बड़ा है(फ़ा44)और वही मुराद को पहुंचे।(20)(फ़ा45) उनका रब उन्हें ख़ुशी सुनता है अपनी रहमत और अपनी रज़ा(फ़ा46)और उन बाग़ों की जिनमें उन्हें दायमी

(फ़ा37) इससे मालूम हुआ कि मुख़लिस और ग़ैर-मुख़लिस में इम्तियाज़ कर दिया जाएगा और मक़सूद इससे मुसलमानों को मुशरिकीन के मवालात और उनके पास मुसलमानों के राज़ पहुंचाने से मुमानअ़त करना है (फ़ा38) मस्जिदों से मस्जिदे हराम कअ़बा मुअ़ज़्ज़मा मुराद है इसको जमा के सीग़े से इस लिए ज़िक्र फ़रमाया कि वह तमाम मस्जिदों का क़िबला और इमाम है इसका आबाद करने वाला ऐसा है जैसे तमाम मस्जिदों को आबाद करने वाला और जमा का सीग़ा लाने की वजह यह भी हो सकती है कि हर बुक़्आ़ मस्जिदे हराम का मस्जिद है और यह भी हो सकता है कि मस्जिदों से जिन्स मुराद हो और कअ़बा मुअ़ज़्ज़मा उसमें दाख़िल हो क्योंकि वह इस जिन्स का सद्र है। शाने नुज़ूलः कुफ़्फ़ारे क़ुरैश के रुऊसा की एक जमाअ़त जो बदर में गिरिफ़्तार हुई और उनमें हुज़ूर के चचा हज़रत अब्बास भी थे उनको असहाबे किराम ने शिर्क पर आ़र दिलाई और हज़रत अली मुर्तज़ा ने तो ख़ास हज़रत अब्बास को सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के मुक़ाबिल आने पर बहुत सख़्त सुस्त कहा हज़रत अब्बास कहने लगे कि तुम हमारी बुराईयां तो बयान करते हो और हमारी ख़ूबियां छुपाते हो उनसे कहा गया क्या आपकी कुछ ख़ूबियां भी हैं उन्होंने कहा हां हम तुम से अफ़ज़ल हैं हम मस्जिदे हराम को आबाद करते हैं ख़ाना कअ़बा की ख़िदमत करते हैं हाजियों को सैराब करते हैं असीरों को रिहा कराते हैं इस पर यह आयत नाज़िल हुई कि मस्जिदों का आबाद करना काफ़िरों को नहीं पहुंचता क्योंकि मस्जिद आबाद की जाती है अल्लाह की इबादत के लिए तो जो ख़ुदा ही का मुन्किर हो उसी के साथ कुफ़्र करे वह क्या मस्जिद आबाद करेगा और आबाद करने के माना **(बक़िया सफ़हा 329 पर)**

مُقِيمٌ ﴿٢١﴾ خٰلِدِينَ فِيهَآ أَبَدًا ۚ إِنَّ اللّٰهَ عِندَهُۥٓ أَجْرٌ عَظِيمٌ ﴿٢٢﴾ يٰٓأَيُّهَا الَّذِينَ ءَامَنُوا لَا تَتَّخِذُوٓا ءَابَآءَكُمْ وَإِخْوٰنَكُمْ أَوْلِيَآءَ إِنِ اسْتَحَبُّوا الْكُفْرَ
عَلَى الْإِيمٰنِ ۚ وَمَن يَتَوَلَّهُم مِّنكُمْ فَأُولٰٓئِكَ هُمُ الظّٰلِمُونَ ﴿٢٣﴾ قُلْ إِن كَانَ ءَابَآؤُكُمْ وَأَبْنَآؤُكُمْ وَإِخْوٰنُكُمْ وَأَزْوٰجُكُمْ وَعَشِيرَتُكُمْ وَأَمْوٰلٌ
اقْتَرَفْتُمُوهَا وَتِجٰرَةٌ تَخْشَوْنَ كَسَادَهَا وَمَسٰكِنُ تَرْضَوْنَهَآ أَحَبَّ إِلَيْكُم مِّنَ اللّٰهِ وَرَسُولِهِۦ وَجِهَادٍ فِى سَبِيلِهِۦ فَتَرَبَّصُوا حَتّٰى يَأْتِىَ
اللّٰهُ بِأَمْرِهِۦ ۗ وَاللّٰهُ لَا يَهْدِى الْقَوْمَ الْفٰسِقِينَ ﴿٢٤﴾ لَقَدْ نَصَرَكُمُ اللّٰهُ فِى مَوَاطِنَ كَثِيرَةٍ ۙ وَيَوْمَ حُنَيْنٍ ۙ إِذْ أَعْجَبَتْكُمْ كَثْرَتُكُمْ فَلَمْ تُغْنِ عَنكُمْ
شَيْـًٔا وَضَاقَتْ عَلَيْكُمُ الْأَرْضُ بِمَا رَحُبَتْ ثُمَّ وَلَّيْتُم مُّدْبِرِينَ ﴿٢٥﴾ ثُمَّ أَنزَلَ اللّٰهُ سَكِينَتَهُۥ عَلٰى رَسُولِهِۦ وَعَلَى الْمُؤْمِنِينَ وَأَنزَلَ جُنُودًا لَّمْ

मुक़ीम(21)ख़ालिदी–न फ़ीहा अ–ब–दन् इन्नल्ला–ह अिन्दहू अज्रुन् अज़ीम(22)या अय्युहल् लज़ी–न आ–मनू ला तत्तख़िज़ू आबा–अकुम् व इख़्वा–नकुम् औलिया–अ इनिस्त–हब्बुल्कुफ़्–र अ़लल् ईमानि व मंय्य–त–वल्लहुम् मिन्कुम् फ़–उलाइ–क हुमुज़्ज़ालिमून(23)कुल् इन् का–न आबाउकुम् व अब्नाउकुम् व इख़्वानुकुम् व अज़्वाजुकुम् व अ़शी–र–तुकुम् व अम्वालु निक़्त–रफ़्तुमूहा व तिजा–रतुन् तख़्शौ–न कसा–दहा व मसाकिनु तर्ज़ौ–नहा अ–हब्–ब इलैकुम् मिनल्लाहि व रसूलिही व जिहादिन् फ़ी सबीलिही फ़–त–रब्बसू हत्ता यअ्ति–यल्लाहु बि–अम्रिही वल्लाहु ला यह्दिल् क़ौमल् फ़ासिक़ीन(24)ल–क़द न–स–रकुमुल्लाहु फ़ी मवाति–न कसी–रतिंव् व यौ–म हुनैनिन् इज् अअ्–ज–बत्कुम् कस्–रतुकुम् फ़–लम् तुग़्नि अ़न्कुम् शैअंव् व ज़ाक़त् अ़लैकुमुल् अरज़ु बिमा रहुबत् सुम्–म वल्लैतुम् मुदबिरीन(25)सुम्–म अन्ज़–लल्लाहु सकी–न–तहू अ़ला रसूलिही व अ़लल्–मुअ्–मिनीन–न व अन्ज़–ल जुनूदल् लम्

निअ्मत है।(21) हमेशा हमेशा उनमें रहेंगे। बेशक अल्लाह के पास बड़ा सवाब है।(22) ऐ ईमान वालों अपने बाप और अपने भाईयों को दोस्त न समझो अगर वह ईमान पर कुफ़्र पसन्द करें और तुम में जो कोई उन से दोस्ती करेगा तो वही ज़ालिम हैं।(23) (फ़ा47) तुम फ़रमाओ अगर तुम्हारे बाप और तुम्हारे बेटे और तुम्हारे भाई और तुम्हारी औरतें और तुम्हारा कुम्बा और तुम्हारी कमाई के माल और वह सौदा जिसके नक़्सान का तुम्हें डर है और तुम्हारे पसन्द के मकान यह चीज़ें अल्लाह और उसके रसूल और उसकी राह में लड़ने से ज़्यादा प्यारी हों तो रास्ता देखो यहां तक कि अल्लाह अपना हुक्म लाए (फ़ा48) और अल्लाह फ़ासिकों को राह नहीं देता।(24) (रुकूअ् 9) बेशक अल्लाह ने बहुत जगह तुम्हारी मदद की (फ़ा49) और हुनैन के दिन जब तुम अपनी कसरत पर इतरा गए थे तो वह तुम्हारे कुछ काम न आई (फ़ा50) और ज़मीन इतनी वसीअ् होकर तुम पर तंग हो गई (फ़ा51) फिर तुम पीठ देकर फिर गए।(25) फिर अल्लाह ने अपनी तस्कीन उतारी अपने रसूल पर (फ़ा52) और मुसलमानों पर (फ़ा53) और वह लश्कर उतारे जो तुमने

(फ़ा47) जब मुसलमानों को मुशरिकीन से तर्के मवालात का हुक्म दिया गया तो बाज़ लोगों ने कहा यह कैसे मुमकिन है कि आदमी अपने बाप भाई वग़ैरह क़राबतदारों से तर्के तअ़ल्लुक़ करे इस पर यह आयत नाज़िल हुई और बताया गया कि कुफ़्फ़ार से मवालात जायज़ नहीं, चाहे उनसे कोई भी रिश्ता हो चुनांचे आगे इरशाद फ़रमाया। (फ़ा48) और जल्दी आने वाले अ़ज़ाब में मुब्तला करे या देर में आने वाले में इस आयत से साबित हुआ कि दीन के महफ़ूज़ रखने के लिए दुनिया की मशक़्क़त बरदाश्त करना मुसलमान पर लाज़िम है और अल्लाह और उसके रसूल की ताअ़त के मुक़ाबिल दुनियवी तअ़ल्लुक़ात कुछ क़ाबिले इल्तफ़ात नहीं और ख़ुदा और रसूल की मुहब्बत ईमान की दलील है (फ़ा49) यानी रसूले करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के ग़ज़वात में तो मुसलमानों को काफ़िरों पर ग़लबा अता फ़रमाया जैसा कि वाक़िअ़ए बदर और क़ुरैज़ा और नुज़ैर और हुदैबिया और ख़ैबर और फ़तहे मक्का में (फ़ा50) हुनैन एक वादी है ताइफ़ के करीब मक्का मुकर्रमा से चन्द मील के फ़ासिला पर यहां फ़तहे मक्का से थोड़े ही रोज़ बाद क़बीला हवाज़िन व सक़ीफ़ से जंग हुई इस जंग में मुसलमानों की तादाद बहुत कसीर बारह हज़ार या उससे ज़ायद थी और मुशरिकीन चार हज़ार थे जब दोनों लश्कर मुक़ाबिल हुए तो मुसलमानों में से किसी शख़्स ने अपनी कसरत पर नज़र करके यह कहा कि अब हम हरगिज़ मग़लूब न होंगे यह कलिमा रसूले करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को बहुत गिरां गुज़रा क्योंकि हुज़ूर हर हाल में अल्लाह तआ़ला पर तवक्कुल फ़रमाते थे और तादाद की क़िल्लत व कसरत पर नज़र न रखते थे। जंग शुरू हुई और क़िताल शदीद हुआ मुशरिकीन भागे और मुसलमान माले ग़नीमत लेने में **(बक़िया सफ़हा 330 पर)**

تَرَوْهَا وَعَذَّبَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَذٰلِكَ جَزَآءُ الْكٰفِرِيْنَ ۝ ثُمَّ يَتُوْبُ اللّٰهُ مِنْۢ بَعْدِ ذٰلِكَ عَلٰى مَنْ يَّشَآءُ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۝ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ
اٰمَنُوْۤا اِنَّمَا الْمُشْرِكُوْنَ نَجَسٌ فَلَا يَقْرَبُوا الْمَسْجِدَ الْحَرَامَ بَعْدَ عَامِهِمْ هٰذَا وَاِنْ خِفْتُمْ عَيْلَةً فَسَوْفَ يُغْنِيْكُمُ اللّٰهُ مِنْ فَضْلِهٖۤ اِنْ شَآءَ اِنَّ
اللّٰهَ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ ۝ قَاتِلُوا الَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَلَا بِالْيَوْمِ الْاٰخِرِ وَلَا يُحَرِّمُوْنَ مَا حَرَّمَ اللّٰهُ وَرَسُوْلُهٗ وَلَا يَدِيْنُوْنَ دِيْنَ الْحَقِّ مِنَ الَّذِيْنَ
اُوْتُوا الْكِتٰبَ حَتّٰى يُعْطُوا الْجِزْيَةَ عَنْ يَّدٍ وَّهُمْ صٰغِرُوْنَ ۝ وَقَالَتِ الْيَهُوْدُ عُزَيْرُ ابْنُ اللّٰهِ وَقَالَتِ النَّصٰرَى الْمَسِيْحُ ابْنُ اللّٰهِ ذٰلِكَ قَوْلُهُمْ
بِاَفْوَاهِهِمْ يُضَاهِـُٔوْنَ قَوْلَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ قَبْلُ قَاتَلَهُمُ اللّٰهُ اَنّٰى يُؤْفَكُوْنَ ۝ اِتَّخَذُوْۤا اَحْبَارَهُمْ وَرُهْبَانَهُمْ اَرْبَابًا مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ

तरौहा व अ़ज़्–ज–बल्लज़ी–न क–फ़रू व ज़ालि–क जज़ाउल्का–फ़िरीन(26)सुम्–म यतूबुल्लाहु मिम् बअ़्दि ज़ालि–क अ़ला मंय्यशा–उ वल्लाहु ग़फ़ूरुर्रहीम(27)या अय्यु–हल्लज़ी–न आ–मनू इन्नमल् मुश्रिकू–न न–जसुन् फ़ला यक़्रबुल् मस्जिदल् ह़रा–म बअ़्–द आ़मिहिम् हाज़ा व इन् ख़िफ़्तुम् अै–ल–तन् फ़सौ–फ़ युग़्नी–कुमुल्लाहु मिन् फ़ज़्लिही इन् शा–अ इन्नल्ला–ह अ़लीमुन् ह़कीम(28) क़ातिलुल् लज़ी–न ला युअ्मिनू–न बिल्लाहि व ला बिल्यौमिल् आख़िरि व ला युह़र्–रिमू–न मा ह़र्रमल्लाहु व रसूलुहू व ला यदीनू–न दीनलह़क़्क़ि मिनल्लज़ी–न ऊतुल्किता–ब ह़त्ता युअ़्तुल् जिज़्–य–त अंय्यदिंव् व हुम् साग़िरून(29)व क़ा–लतिल्–यहूदु उ़ज़ैरु निब्नुल्लाहि व क़ा–लतिन्नसारल् मसीहुब्–नुल्लाहि ज़ालि–क क़ौलुहुम् बि–अफ़्वाहिहिम् युज़ाहिऊ–न क़ौलल्–लज़ी–न क–फ़रू मिन् क़ब्लु क़ा–त–लहुमुल्लाहु अन्ना युअ्–फ़कून(30)इत्त–ख़ज़ू अह़्बा–रहुम् व रुह़्बा–नहुम् अर्बाबम् मिन् दूनिल्लाहि

न देखे (फ़ा54) और काफ़िरों को अ़ज़ाब दिया (फ़ा55) और मुन्किरों की यही सज़ा है।(26) फिर इसके बाद अल्लाह जिसे चाहेगा तौबा देगा (फ़ा56) और अल्लाह बख़्शने वाला मेहरबान है।(27) ऐ ईमान वालो मुशरिक निरे नापाक हैं (फ़ा57) तो इस बरस के बाद वह मस्जिदे हराम के पास न आने पायें (फ़ा58) और अगर तुम्हें मुहताजी का डर है (फ़ा59) तो अ़न्क़रीब अल्लाह तुम्हें दौलतमन्द कर देगा अपने फ़ज़्ल से अगर चाहे (फ़ा60) बेशक अल्लाह इल्मो हिकमत वाला है।(28) लड़ो उनसे जो ईमान नहीं लाते अल्लाह पर और क़ियामत पर (फ़ा61) और हराम नहीं मानते उस चीज़ को जिसको हराम किया अल्लाह और उसके रसूल ने (फ़ा62) और सच्चे दीन (फ़ा63) के ताबेअ़. नहीं होते यानी वह जो किताब दिये गए जब तक अपने हाथ से जिज़्या न दें ज़लील होकर।(29) (फ़ा64) (रुकूअ़ 10) और यहूदी बोले उज़ैर अल्लाह का बेटा है (फ़ा65) और नसरानी बोले मसीह अल्लाह का बेटा है यह बातें वह अपने मुंह से बकते हैं (फ़ा66) अगले काफ़िरों की सी बात बनाते हैं अल्लाह उन्हें मारे कहां औंधे जाते हैं।(30) (फ़ा67) उन्होंने अपने पादरियों और जोगियों को अल्लाह के सिवा

(फ़ा54) यानी फ़रिश्ते जिन्हें कुफ़्फ़ार ने अबलक़ घोड़ों पर सफ़ेद लिबास पहने अ़मामे बांधे देखा यह फ़रिश्ते मुसलमानों की शौकत बढ़ाने के लिए आये थे उस जंग में उन्होंने क़िताल नहीं किया क़िताल सिर्फ़ बदर में किया था (फ़ा55) कि पकड़े गए मारे गए उनके अ़याल व अमवाल मुसलमानों के हाथ आए (फ़ा56) और तौफ़ीक़े इस्लाम अ़ता फ़रमायेगा चुनांचे हवाज़िन के बाक़ी लोगों को तौफ़ीक़ दी और वह मुसलमान होकर रसूले करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुए और हुज़ूर ने उनके असीरों को रिहा फ़रमा दिया। (फ़ा57) कि उनका बातिन ख़बीस है और वह न तहारत करते हैं न नजासतों से बचते हैं (फ़ा58) न हज के लिए न उमरा के लिए और इस साल से मुराद सन् ९ हिजरी है और मुशरिकीन के मना करने के मानी यह हैं कि मुसलमान उनको रोकें (फ़ा59) कि मुशरिकीन को हज से रोक देने से तिजारतों को नुक़सान पहुंचेगा और अहले मक्का को तंगी पेश आएगी (फ़ा60) इकरमा ने कहा ऐसा ही हुआ अल्लाह तआ़ला ने उन्हें ग़नी कर दिया बारिशें ख़ूब हुईं पैदावार कसरत से हुई मक़ातिल ने कहा कि ख़ित्ताहाए यमन के लोग मुसलमान हुए और उन्होंने अहले मक्का पर अपनी क़सीर दौलतें ख़र्च कीं (अगर चाहे) फ़रमाने में तालीम है कि बन्दे को चाहिये कि तलबे ख़ैर और दफ़ए़ आफ़ात के लिए हमेशा अल्लाह की तरफ़ मुतवज्जह रहे और तमाम उमूर को उसी की मशीयत से मुतअ़ल्लिक़ जाने (फ़ा61) अल्लाह पर ईमान लाना यह है कि उसकी ज़ात और जुमला सिफ़ात व तन्ज़ीहात को माने और जो उसकी शान के लायक़ न हो उसकी तरफ़ निस्बत न करे और बाज़ मुफ़स्सिरीन ने रसूलों पर ईमान लाना भी अल्लाह पर ईमान लाने में दाख़िल क़रार दिया है तो यहूद व नसारा अगरचे अल्लाह पर ईमान लाने के मुद्दई हैं लेकिन उनका यह दावा बातिल है क्योंकि यहूद तजसीम व **(बक़िया सफ़हा 330 पर)**

وَالْمَسِيْحَ ابْنَ مَرْيَمَ ۚ وَمَآ اُمِرُوْٓا اِلَّا لِيَعْبُدُوْٓا اِلٰهًا وَّاحِدًا ۚ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۭ سُبْحٰنَهٗ عَمَّا يُشْرِكُوْنَ ﴿۳۱﴾ يُرِيْدُوْنَ اَنْ يُّطْفِـُٔـوْا نُوْرَ اللّٰهِ بِاَفْوَاهِهِمْ وَيَاْبَى

اللّٰهُ اِلَّآ اَنْ يُّتِمَّ نُوْرَهٗ وَلَوْ كَرِهَ الْكٰفِرُوْنَ ﴿۳۲﴾ هُوَ الَّذِيْٓ اَرْسَلَ رَسُوْلَهٗ بِالْهُدٰى وَدِيْنِ الْحَقِّ لِيُظْهِرَهٗ عَلَى الدِّيْنِ كُلِّهٖ ۙ وَلَوْ كَرِهَ الْمُشْرِكُوْنَ ﴿۳۳﴾

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِنَّ كَثِيْرًا مِّنَ الْاَحْبَارِ وَالرُّهْبَانِ لَيَاْكُلُوْنَ اَمْوَالَ النَّاسِ بِالْبَاطِلِ وَيَصُدُّوْنَ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ۭ وَالَّذِيْنَ يَكْنِزُوْنَ

الذَّهَبَ وَالْفِضَّةَ وَلَا يُنْفِقُوْنَهَا فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ۙ فَبَشِّرْهُمْ بِعَذَابٍ اَلِيْمٍ ﴿۳۴﴾ يَّوْمَ يُحْمٰى عَلَيْهَا فِيْ نَارِ جَهَنَّمَ فَتُكْوٰى بِهَا جِبَاهُهُمْ وَجُنُوْبُهُمْ

مَا كُنْتُمْ تَكْنِزُوْنَ ﴿۳۵﴾ اِنَّ عِدَّةَ الشُّهُوْرِ عِنْدَ اللّٰهِ اثْنَا عَشَرَ شَهْرًا فِيْ كِتٰبِ اللّٰهِ يَوْمَ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ مِنْهَآ اَرْبَعَةٌ حُرُمٌ ۭ ذٰلِكَ

वल्मसीहब्–न मर्–य–म व मा उमिरू इल्ला लियअ्बुदू इलाहंव् वाहिदन् ला इला–ह इल्ला हु–व सुब्हा–नहू अम्मा युश्रिकून(31)युरीदू–न अंय्युत्फ़िऊ नूरल्लाहि बि–अफ़्वाहिहिम् व यअ्बल्लाहु इल्ला अंय्युतिम्–म नू–रहू व लौ करिहल् काफ़िरून(32)हुवल्लज़ी अर्स–ल रसू–लहू बिल्हुदा व दीनिल्हक़्क़ि लियुज़्हि–रहू अ़लद्दीनि कुल्लिही व लौ करिहल् मुश्रिकून(33)या अय्यु–हल्लज़ी–न आ–मनू इन्–न कसीरम् मिनल् अह्बारि वर्रुह्बानि लयअ्–कुलू–न अम्वालन् नासि बिल्बातिलि व यसुद्दू–न अ़न् सबीलिल्लाहि वल्लज़ी–न यक्निज़ू–नज़् ज़–ह–ब वल्फ़िज़्ज़–त व ला युन्फ़िक़ू–नहा फ़ी सबीलिल्लाहि फ़–बश्शिर्हुम् बि–अ़ज़ाबिन् अलीम(34)यौ–म युह्मा अ़लैहा फ़ी नारि जहन्न–म फ़तुक्वा बिहा जिबाहुहुम् व जुनूबुहुम् व ज़ुहूरुहुम् हाज़ा मा क–नज़्तुम् लि–अन्फ़ुसिकुम् फ़ज़ूक़ू मा कुन्तुम् तक्निज़ून(35)इन्–न अ़िद्द–तश्शुहूरि अ़िन्दल्लाहिस्ना अ़–श–र शह्रन् फ़ी किताबिल्लाहि यौ–म ख़–ल–क़स्समावाति वल्अर्–ज़ मिन्हा अर्ब–अ़तुन् हुरुमुन् ज़ालि–क

ख़ुदा बना लिया (फ़ा68) और मसीह इब्न मरयम को (फ़ा69) और उन्हें हुक्म न था (फ़ा70) मगर यह कि एक अल्लाह को पूजें उसके सिवा किसी की बन्दगी नहीं उसे पाकी है उनके शिर्क से।(31) चाहते हैं कि अल्लाह का नूर (फ़ा71) अपने मुंह से बुझा दें और अल्लाह न मानेगा मगर अपने नूर का पूरा करना (फ़ा72) पड़े (चाहे) बुरा माने काफ़िर।(32) वही है जिसने अपना रसूल (फ़ा73) हिदायत और सच्चे दीन के साथ भेजा कि उसे सब दीनों पर ग़ालिब करे (फ़ा74) पड़े (चाहे) बुरा माने मुशरिक।(33) ऐ ईमान वालो बेशक बहुत पादरी और जोगी लोगों का माल नाहक़ खा जाते हैं (फ़ा75) और अल्लाह की राह से (फ़ा76) रोकते हैं और वह कि जोड़ कर रखते हैं सोना और चांदी और उसे अल्लाह की राह में ख़र्च नहीं करते (फ़ा77) उन्हें ख़ुशख़बरी सुनाओ दर्दनाक अ़ज़ाब की।(34) जिस दिन वह तपाया जाएगा जहन्नम की आग में (फ़ा78) फिर उससे दाग़ेंगे उनकी पेशानियां और करवटें और पीठें (फ़ा79) यह है वह जो तुमने अपने लिए जोड़ कर रखा था अब चखो मज़ा उस जोड़ने का।(35) बेशक महीनों की गिन्ती अल्लाह के नज़दीक बारह महीने हैं (फ़ा80) अल्लाह की किताब में (फ़ा81) जब से उसने असामान और ज़मीन बनाए उनमें से चार हुरमत वाले हैं (फ़ा82) यह सीधा

(फ़ा68) हुक्मे इलाही छोड़ कर उनके हुक्म के पाबन्द हुए (फ़ा69) कि उन्हें भी ख़ुदा बनाया और उनकी निसबत यह एतेक़ाद बातिल किया कि वह ख़ुदा या ख़ुदा के बेटे हैं या ख़ुदा ने उनमें हुलूल किया है (फ़ा70) उन की किताबों में न उनके अम्बिया की तरफ़ से। (फ़ा71) यानी दीने इस्लाम या सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की नबुव्वत के दलायल (फ़ा72) और अपने दीन को ग़लबा देना (फ़ा73) मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम (फ़ा74) और उसकी हुज्जत क़वी करे और दूसरे दीनों को उससे मंसूख़ करे चुनांचे अल्हम्दु लिल्लाह ऐसा ही हुआ ज़हहाक का क़ौल है कि यह हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम के नुज़ूल के वक़्त ज़ाहिर होगा जबकि कोई दीन वाला ऐसा न होगा जो इस्लाम में दाख़िल न हो जाये। हज़रत अबू हुरैरा की हदीस में है सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम के ज़माना में इस्लाम के सिवा हर मिल्लत हलाक हो जाएगी (फ़ा75) इस तरह कि दीन के अहकाम बदल कर लोगों से रिशवतें लेते हैं और अपनी किताबों में तमअ़े ज़र के लिए तहरीफ़ व तब्दील करते हैं और कुतुबे साबिक़ा की जिन आयात में सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की नअ़्त व सिफ़त मज़कूर है माल हासिल करने के लिए उनमें फ़ासिद तावीलें और तहरीफ़ें करते हैं (फ़ा76) इस्लाम से और सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम पर ईमान लाने से (फ़ा77) बुख़्ल करते हैं और माल के हुक़ूक़ अदा नहीं करते ज़कात नहीं देते। **शाने नुज़ूलः** सुद्दी का क़ौल है कि यह आयत मानेअ़ीने ज़कात के हक़ में नाज़िल हुई **(बक़िया सफ़हा 330 पर)**

الدِّيْنُ الْقَيِّمُ ۙ فَلَا تَظْلِمُوْا فِيْهِنَّ اَنْفُسَكُمْ وَ قَاتِلُوا الْمُشْرِكِيْنَ كَآفَّةً كَمَا يُقَاتِلُوْنَكُمْ كَآفَّةً ؕ وَ اعْلَمُوْۤا اَنَّ اللّٰهَ مَعَ الْمُتَّقِيْنَ ﴿۳۶﴾ اِنَّمَا
النَّسِیْٓءُ زِيَادَةٌ فِي الْكُفْرِ يُضَلُّ بِهِ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا يُحِلُّوْنَهٗ عَامًا وَّ يُحَرِّمُوْنَهٗ عَامًا لِّيُوَاطِـُٔوْا عِدَّةَ مَا حَرَّمَ اللّٰهُ فَيُحِلُّوْا مَا حَرَّمَ اللّٰهُ ؕ زُيِّنَ لَهُمْ سُوْٓءُ
اَعْمَالِهِمْ ؕ وَ اللّٰهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الْكٰفِرِيْنَ ﴿۳۷﴾ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مَا لَكُمْ اِذَا قِيْلَ لَكُمُ انْفِرُوْا فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ اثَّاقَلْتُمْ اِلَى الْاَرْضِ ؕ
اَرَضِيْتُمْ بِالْحَيٰوةِ الدُّنْيَا مِنَ الْاٰخِرَةِ ۚ فَمَا مَتَاعُ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا فِي الْاٰخِرَةِ اِلَّا قَلِيْلٌ ﴿۳۸﴾ اِلَّا تَنْفِرُوْا يُعَذِّبْكُمْ عَذَابًا اَلِيْمًا ۙ وَّ يَسْتَبْدِلْ قَوْمًا غَيْرَكُمْ
وَ لَا تَضُرُّوْهُ شَيْـًٔا ؕ وَ اللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ﴿۳۹﴾ اِلَّا تَنْصُرُوْهُ فَقَدْ نَصَرَهُ اللّٰهُ اِذْ اَخْرَجَهُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا ثَانِيَ اثْنَيْنِ اِذْ هُمَا فِي الْغَارِ اِذْ يَقُوْلُ

दद़ीनुल् क़य्यिमु फ़ला तज़्लिमू फ़ी–हिन्–न अन्फ़ु–सकुम् व क़ातिलुल् मुश्रिकी–न काफ़्फ़–तन् कमा युक़ा–तिलू–नकुम् काफ़्फ़–तन् वअ़्–लमू अन्नल्ला–ह म–अ़ल्मुत्तक़ीन(36)इन्–न–मन्नसीउ ज़िया–दतुन् फ़िल्कुफ़्रि युज़ल्लु बिहिल्लज़ी–न क–फ़रू युहिल्लू–नहू आ़मंव् व युहर्रिमू–नहू आ़मंल्–लियुवातिऊ इद्–द–त मा ह़र्रमल्लाहु फ़युहिल्लू मा ह़र्र–मल्लाहु ज़ुय्यि–न लहुम् सूउ अअ़्–मालिहिम् वल्लाहु ला यह्दिल् क़ौमल् काफ़िरीन(37)या अय्युहल्लज़ी–न आ–मनू मा लकुम् इज़ा क़ी–ल लकुमुन्फ़िरू फ़ी सबीलिल्लाहिस्सा क़ल्तुम् इलल्–अर्ज़ि अ–रज़ीतुम् बिल् ह़यातिद्दुन्या मिनल् आख़ि–रति फ़मा मताअ़ुल् ह़यातिद्दुन्या फ़िल् आख़ि–रति इल्ला क़लील(38)इल्ला तन्फ़िरू युअ़ज़्ज़िब्कुम् अ़ज़ाबन् अलीमंव् व यस्तब्दिल् क़ौमन् ग़ै–रकुम् व ला तज़ुर्रूहु शैअन् वल्लाहु अ़ला कुल्लि शैइन् क़दीर(39)इल्ला तन्सुरूहु फ़–क़द् न–स–रहुल्लाहु इज़् अख़्–र–जहुल्लज़ी–न क–फ़रू सानि–यस्नैनि इज़् हुमा फ़िल्ग़ारि इज़् यक़ूलु

दीन है तो इन महीनों में (फ़ा83) अपनी जान पर ज़ुल्म न करो और मुशरिकों से हर वक़्त लड़ो जैसा वह तुम से हर वक़्त लड़ते हैं और जान लो कि अल्लाह परहेज़गारों के साथ है।(36) (फ़ा84) उनका महीने पीछे हटाना नहीं मगर और कुफ़्र में बढ़ना (फ़ा85) इससे काफ़िर बहकाए जाते हैं एक बरस उसे (फ़ा86) हलाल ठहराते हैं और दूसरे बरस उसे हराम मानते हैं कि उस गिनती के बराबर हो जायें जो अल्लाह ने हराम फ़रमाई (फ़ा87) और अल्लाह के हराम किये हुए हलाल कर लें उनके बुरे काम उनकी आंखों में भले लगते हैं और अल्लाह काफ़िरों को राह नहीं देता।(37) (रुकूअ़ 11) ऐ ईमान वालो तुम्हें क्या हुआ जब तुम से कहा जाए कि ख़ुदा की राह में कूच करो तो बोझ के मारे ज़मीन पर बैठ जाते हो (फ़ा88) क्या तुमने दुनिया की ज़िन्दगी आख़िरत के बदले पसन्द कर ली और जीती दुनिया का असबाब आख़िरत के सामने नहीं मगर थोड़ा।(38) (फ़ा89) अगर न कूच करोगे तो (फ़ा90) तुम्हें सख़्त सज़ा देगा और तुम्हारी जगह और लोग ले आएगा (फ़ा91) और तुम उसका कुछ न बिगाड़ सकोगे और अल्लाह सब कुछ कर सकता है।(39) अगर तुम महबूब की मदद न करो तो बेशक अल्लाह ने उनकी मदद फ़रमाई जब काफ़िरों की शरारत से उन्हें बाहर तशरीफ़ ले जाना हुआ (फ़ा92) सिर्फ़ दो जान से जब वह दोनों (फ़ा93)

(फ़ा83) गुनाह व नाफ़रमानी से। (फ़ा84) उनकी नुसरत व मदद फ़रमाएगा (फ़ा85) नसी लुग़त में वक़्त के मुअख़्ख़र करने को कहते हैं और यहां शहरे हराम की हुरमत का दूसरे महीने की तरहफ़ हटा देना मुराद है ज़माना जाहिलियत में अ़रब अशहुरे हुरम (यानी ज़ीक़अ़दा ज़िलहिज्जा मुहर्रम रजब) की हुरमत व अज़मत के मोअ़तक़िद थे तो जब कभी लड़ाई के ज़माने में यह हुरमत वाले महीने आ जाते तो उनको बहुत शाक़ गुज़रते इस लिए उन्होंने यह किया कि एक महीने की हुरमत दूसरे महीने की तरफ़ हटाने लगे मुहर्रम की हुरमत सफ़र की तरफ़ हटा कर मुहर्रम में जंग जारी रखते और बजाए उसके सफ़र को माहे हराम बना लेते और जब उससे भी तहरीम हटाने की हाजत समझते तो उसमें भी जंग हलाल कर लेते और रबीउल अव्वल को माहे हराम क़रार देते इस तरह तहरीम साल के तमाम महीनों में घूमती और उनके इस तर्ज़े अमल से माह-हाए हराम की तख़्सीस ही बाक़ी न रही इसी तरह हज को मुख़्तलिफ़ महीनों में घुमाते फिरते थे सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने हज्जतुल विदाअ़ में एलान फ़रमाया कि नसी के महीने गए गुज़रे हुए अब महीनों के औक़ात की वज़्अ़े इलाही के मुताबिक़ हिफ़ाज़त की जाये और कोई महीना अपनी जगह से न हटाया जाये और इस आयत में नसी को ममनूअ़ क़रार दिया गया और कुफ़्र पर कुफ़्र की ज़्यादती बताया गया क्योंकि इस में माह-हाए हराम में तहरीमे क़िताल को **(बक़िया सफ़हा 331 पर)**

لِصَاحِبِهٖ لَا تَحْزَنْ اِنَّ اللّٰهَ مَعَنَا ۚ فَاَنْزَلَ اللّٰهُ سَكِيْنَتَهٗ عَلَيْهِ وَاَيَّدَهٗ بِجُنُوْدٍ لَّمْ تَرَوْهَا وَجَعَلَ كَلِمَةَ الَّذِيْنَ كَفَرُوا السُّفْلٰى ؕ وَكَلِمَةُ
اللّٰهِ هِيَ الْعُلْيَا ؕ وَاللّٰهُ عَزِيْزٌ حَكِيْمٌ ۝ اِنْفِرُوْا خِفَافًا وَّثِقَالًا وَّجَاهِدُوْا بِاَمْوَالِكُمْ وَاَنْفُسِكُمْ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ؕ ذٰلِكُمْ خَيْرٌ لَّكُمْ اِنْ كُنْتُمْ
تَعْلَمُوْنَ ۝ لَوْ كَانَ عَرَضًا قَرِيْبًا وَّسَفَرًا قَاصِدًا لَّاتَّبَعُوْكَ وَلٰكِنْۢ بَعُدَتْ عَلَيْهِمُ الشُّقَّةُ ؕ وَسَيَحْلِفُوْنَ بِاللّٰهِ لَوِ اسْتَطَعْنَا لَخَرَجْنَا مَعَكُمْ ۚ
يُهْلِكُوْنَ اَنْفُسَهُمْ ۚ وَاللّٰهُ يَعْلَمُ اِنَّهُمْ لَكٰذِبُوْنَ ۝ عَفَا اللّٰهُ عَنْكَ ۚ لِمَ اَذِنْتَ لَهُمْ حَتّٰى يَتَبَيَّنَ لَكَ الَّذِيْنَ صَدَقُوْا وَتَعْلَمَ الْكٰذِبِيْنَ ۝ لَا
يَسْتَاْذِنُكَ الَّذِيْنَ يُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ اَنْ يُّجَاهِدُوْا بِاَمْوَالِهِمْ وَاَنْفُسِهِمْ ؕ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌۢ بِالْمُتَّقِيْنَ ۝ اِنَّمَا يَسْتَاْذِنُكَ الَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ

लिसाहिबिही ला तह्–ज़न् इन्नल्ला–ह म–अ़ना फ़–अन्ज़–लल्लाहु सकी–न–तहू अ़लैहि व अय्य–दहू बिजु–नूदिल् लम् तरौहा व ज–अ़–ल कलि–मतल् लज़ी–न क–फ़रुस् सुफ़्ला व कलि–मतुल्लाहि हियल् अुल्या वल्लाहु अ़ज़ीज़ुन् हकीम(40)इन्फ़िरू ख़िफ़ाफंव् व सिक़ालंव् व जाहिदू बि–अम्वालि–कुम् व अन्फ़ुसिकुम् फ़ी सबी–लिल्लाहि ज़ालिकुम् ख़ैरुल् लकुम् इन् कुन्तुम् तअ़लमून(41)लौ का–न अ़–र–ज़न् क़रीबंव् व स–फ़–रन् क़ासिदल् लत्तबअू–क व लाकिम् बअुदत् अ़लैहिमुश्शुक़्–क़तु व स–यह्लिफ़ू–न बिल्लाहि लविस्त–तअ़ना ल–ख़–रज्ना म–अ़कुम् युह्लिकू–न अन्फ़ु–सहुम् वल्लाहु यअ़्लमु इन्नहुम् लकाज़िबून(42)अ–फ़ल्लाहु अ़न्–क लि–म अज़िन्–त लहुम् हत्ता य–त–बय्य–न ल–कल्लज़ी–न स़–दक़ू व तअ़्–ल–मल्काज़िबीन(43)ला यस्तअ्–ज़िनु–कल्लज़ी–न युअ्मिनू–न बिल्लाहि वल्यौमिल् आख़िरि अंय्युजाहिदू बि–अम्वालिहिम् व अन्फ़ुसिहिम् वल्लाहु अ़लीमुम् बिल्मुत्तक़ीन(44)इन्नमा यस्तअ्–ज़िनुकल्लज़ी–न ला युअ्मिनू–न

ग़ार में थे जब अपने यार से (फ़ा94) फ़रमाते थे ग़म न खा बेशक अल्लाह हमारे साथ है तो अल्लाह ने उस पर अपना सकीना उतारा (फ़ा95) और उन फ़ौजों से उसकी मदद की जो तुमने न देखीं (फ़ा96) और काफ़िरों की बात नीचे डाली (फ़ा97) अल्लाह ही का बोल–बाला है और अल्लाह ग़ालिब हिकमत वाला है।(40) कूच करो हल्की जान से चाहे भारी दिल से (फ़ा98) और अल्लाह की राह में लड़ो अपने माल और जान से यह तुम्हारे लिए बेहतर है अगर जानो।(41) (फ़ा99) अगर कोई क़रीब माल या मुतवस्सित सफ़र होता (फ़ा100) तो ज़रूर तुम्हारे साथ जाते (फ़ा101) मगर उन पर तो मशक़्क़त का रास्ता दूर पड़ गया और अब अल्लाह की क़सम खायेंगे (फ़ा102) कि हम से बन पड़ता तो ज़रूर तुम्हारे साथ चलते (फ़ा103) अपनी जानों को हलाक करते हैं (फ़ा104) और अल्लाह जानता है कि वह बेशक ज़रूर झूठे हैं। (42) (रुकूअ़ 12) अल्लाह तुम्हें माफ़ करे (फ़ा105) तुमने उन्हें क्यों इज़्न (इजाज़त) दे दिया जब तक न खुले थे तुम पर सच्चे और ज़ाहिर न हुए थे झूठे।(43) और वह जो अल्लाह और क़ियामत पर

(फ़ा94) यानी सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अ़न्हु से। **मसलाः** हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अ़न्हु की सहाबियत इस आयत से साबित है हसन बिन फ़ज़्ल ने फ़रमाया जो शख़्स हज़रत सिद्दीक़े अकबर की सहाबियत का इंकार करे वह नस्से क़ुरआनी का मुनकिर होकर काफ़िर हुआ। (फ़ा95) और क़ल्ब को इत्मीनान अ़ता फ़रमाया (फ़ा96) उनसे मुराद मलाइका की फ़ौजें हैं जिन्होंने कुफ़्फ़ार के रुख़ फेर दिये और वह उनको देख न सके और बद्र व अहज़ाब व हुनैन में भी उन्हें ग़ैबी फ़ौजों से मदद फ़रमाई (फ़ा97) दावते कुफ़्र व शिर्क को पस्त फ़रमाया (फ़ा98) यानी ख़ुशी से या गिरानी से और एक क़ौल यह है कि क़ुव्वत के साथ या ज़ोअ़्फ़ के साथ और बे–सामानी से या सरो सामान से (फ़ा99) कि जिहाद का सवाब बैठ रहने से बेहतर है तो मुस्तअ़ेदी के साथ तैयार हो और काहिली न करो (फ़ा100) और दुनियवी नफ़ा की उम्मीद होती और शदीद मेहनत व मशक़्क़त का अन्देशा न होता (फ़ा101) **शाने नुज़ूलः** यह आयत उन मुनाफ़िक़ीन की शान में नाज़िल हुई जिन्होंने ग़ज़वए तबूक में जाने से तख़ल्लुफ़ किया था (फ़ा102) यह मुनाफ़िक़ीन और इस तरह मअ़ज़रत करेंगे (फ़ा103) मुनाफ़िक़ीन की इस मअ़्ज़रत से पहले ख़बर दे देना ग़ैबी ख़बर और दलायले नबुव्वत में से है चुनांचे जैसा फ़रमाया था वैसा ही पेश आया और उन्होंने यही मअ़्ज़रत की और झूठी क़समें खाईं (फ़ा104) झूठी क़सम खाकर। **मसलाः** इस आयत से साबित हुआ कि झूठी क़समें खाना सबबे हलाकत है (फ़ा105) *अफ़ल्लाहु अ़न्–क* से इब्तेदाए कलाम व इफ़्तेताहे ख़ेताब मुख़ातब की ताज़ीम व तौक़ीर में मुबालग़ा के लिए है और ज़बाने अरब में यह उर्फ़ शायेअ़ है कि मुख़ातब की **(बक़िया सफ़्हा 331 पर)**

بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ وَارْتَابَتْ قُلُوْبُهُمْ فَهُمْ فِيْ رَيْبِهِمْ يَتَرَدَّدُوْنَ ۝ وَلَوْ اَرَادُوا الْخُرُوْجَ لَاَعَدُّوْا لَهٗ عُدَّةً وَّلٰكِنْ كَرِهَ اللّٰهُ انْۢبِعَاثَهُمْ

فَثَبَّطَهُمْ وَقِيْلَ اقْعُدُوْا مَعَ الْقٰعِدِيْنَ ۝ لَوْ خَرَجُوْا فِيْكُمْ مَّا زَادُوْكُمْ اِلَّا خَبَالًا وَّلَاۡاَوْضَعُوْا خِلٰلَكُمْ يَبْغُوْنَكُمُ الْفِتْنَةَ ۚ وَفِيْكُمْ سَمّٰعُوْنَ

لَهُمْ ؕ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌۢ بِالظّٰلِمِيْنَ ۝ لَقَدِ ابْتَغَوُا الْفِتْنَةَ مِنْ قَبْلُ وَقَلَّبُوْا لَكَ الْاُمُوْرَ حَتّٰى جَآءَ الْحَقُّ وَظَهَرَ اَمْرُ اللّٰهِ وَهُمْ كٰرِهُوْنَ ۝ وَمِنْهُمْ

مَّنْ يَّقُوْلُ ائْذَنْ لِّيْ وَلَا تَفْتِنِّيْ ؕ اَلَا فِي الْفِتْنَةِ سَقَطُوْا ؕ وَاِنَّ جَهَنَّمَ لَمُحِيْطَةٌۢ بِالْكٰفِرِيْنَ ۝ اِنْ تُصِبْكَ حَسَنَةٌ تَسُؤْهُمْ ۚ وَاِنْ تُصِبْكَ مُصِيْبَةٌ

يَّقُوْلُوْا قَدْ اَخَذْنَاۤ اَمْرَنَا مِنْ قَبْلُ وَيَتَوَلَّوْا وَّهُمْ فَرِحُوْنَ ۝ قُلْ لَّنْ يُّصِيْبَنَاۤ اِلَّا مَا كَتَبَ اللّٰهُ لَنَا ۚ هُوَ مَوْلٰىنَا ۚ وَعَلَى اللّٰهِ فَلْيَتَوَكَّلِ

बिल्लाहि वल्यौमिल् आख़िरि वरताबत् कुलूबुहुम् फ़हुम् फ़ी रैबि–हिम् य–त–रद–ददून(45)व लौ अरादुल्ख़ुरू–ज ल–अ–अ़दद्दू लहू अुद–दतंव् व लाकिन् करि–हल्ला–हुम्बिआ़–सहुम् फ़–सब्–ब–तहुम् व क़ीलक़्अुदू मअ़ल्क़ाअ़िदीन(46)लौ ख़–रजू फ़ीकुम् मा ज़ादूकुम् इल्ला ख़बालंव् व लऔ–ज़अू. ख़िला–लकुम् यब्ग़ू.–नकुमुल् फ़ित्न–त व फ़ीकुम् सम्माअू–न लहुम् वल्लाहु अ़लीमुम् बिज़्ज़ालि–मीन(47)ल–क़दिब्त–ग़वुल् फ़ित्न–त मिन् क़ब्लु व क़ल्लबू ल–कल् उमू–र हत्ता जाअल्हक़्क़ु व ज़–ह–र अम्रुल्लाहि व हुम् कारिहून(48)व मिन्हुम् मंय्यक़ूलुअ्–ज़ल्ली व ला तफ़्तिन्नी अला फ़िल् फ़ित्नति स–क़तू व इन्–न जहन्न–म लमुही–ततुम् बिल्काफ़िरीन(49) इन् तुसिब्–क ह–स–नतुन् तसूअहुम् व इन् तुसिब्–क मुसी–बतुंय्–यक़ूलू क़द अ–ख़ज़्ना अम्रना मिन् क़ब्लु व य–त–वल्लौ व हुम् फ़रिहून(50)क़ुल् लंय्युसी–बना इल्ला मा क–त–बल्लाहु लना हु–व मौलाना व अ़–लल्लाहि फ़ल्–य–त–वक्क–लिल्

ईमान रखते हैं तुम से छुट्टी न मांगेंगे इस से कि अपने माल और जान से जिहाद करें और अल्लाह ख़ूब जानता है परहेज़गारों को।(44) तुम से यह छुट्टी वही मांगते हैं जो अल्लाह और क़ियामत पर ईमान नहीं रखते (फ़ा106) और उनके दिल शक में पड़े हैं तो वह अपने शक में डांवाडोल हैं।(45) (फ़ा107) उन्हें निकलना मंजूर होता (फ़ा108) तो उसका सामान करते मगर ख़ुदा ही को उनका उठना ना–पसन्द हुआ तो उन में काहिली भर दी और (फ़ा109) फ़रमाया गया कि बैठ रहो बैठ रहने वालों के साथ।(46) (फ़ा110) अगर वह तुम में निकलते तो उन से सिवा नक़्सान के तुम्हें कुछ न बढ़ता और तुम में फ़ित्ना डालने को तुम्हारे बीच में गुराबें दौड़ाते (फ़साद डालते) (फ़ा111) और तुम में उनके जासूस मौजूद हैं (फ़ा112) और अल्लाह ख़ूब जानता है ज़ालिमों को।(47) बेशक उन्होंने पहले ही फ़ित्ना चाहा था (फ़ा113) और ऐ महबूब तुम्हारे लिए तदबीरें उल्टी पलटीं (फ़ा114) यहां तक कि हक़ आया (फ़ा115) और अल्लाह का हुक्म ज़ाहिर हुआ (फ़ा116) और उन्हें नागवार था।(48) और उनमें कोई तुम से यूं अ़र्ज़ करता है कि मुझे रुख़सत दीजिये और फ़ित्ने में न डालिये (फ़ा117) सुन लो वह फ़ित्ना ही में पड़े (फ़ा118) और बेशक जहन्नम घेरे हुए है काफ़िरों को।(49) अगर तुम्हें भलाई पहुंचे (फ़ा119) तो उन्हें बुरा लगे और अगर तुम्हें कोई मुसीबत पहुंचे (फ़ा120) तो कहें (फ़ा121) हमने अपना काम पहले ही ठीक कर लिया था और ख़ुशियां मनाते फिर जायें।(50) तुम फ़रमाओ हमें न पहुंचेगा मगर जो अल्लाह ने हमारे लिए लिख दिया वह हमारा मौला है और मुसलमानों को अल्लाह ही पर

(फ़ा106) यानी मुनाफ़िक़ीन (फ़ा107) न इधर के हुए न उधर के हुए न कुफ़्फ़ार के साथ रह सके न मोमिनीन का साथ दे सके (फ़ा108) और जिहाद का इरादा रखते (फ़ा109) उनके इजाज़त चाहने पर (फ़ा110) बैठ रहने वालों से औरतें बच्चे बीमार और अपाहिज लोग मुराद हैं (फ़ा111) और झूठी झूठी बातें बना कर फ़साद अंगेज़ियां करते (फ़ा112) जो तुम्हारी बातें उन तक पहुंचायें। (फ़ा113) और वह आपके असहाब को दीन से रोकने की कोशिश करते जैसा कि अ़ब्दुल्लाह बिन उबय बिन सलूल मुनाफ़िक़ ने रोज़े उहद किया कि मुसलमानों को इग़वा करने के लिए अपनी जमाअ़त लेकर वापस हुआ (फ़ा114) और उन्होंने तुम्हारा काम बिगाड़ने और दीन में फ़साद डालने के लिए बहुत मक्र व हीले किये (फ़ा115) यानी अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से ताईद व नुसरत (फ़ा116) और उसका दीन ग़ालिब हुआ (फ़ा117) **शाने नुज़ूलः** यह आयत जद बिन क़ैस मुनाफ़िक़ के हक़ में नाज़िल हुई जब नबीए करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने ग़ज़वए तबूक के लिए तैयारी फ़रमाई तो जद **(बक़िया सफ़हा 331 पर)**

الْمُؤْمِنُونَ ﴿٥١﴾ قُلْ هَلْ تَرَبَّصُونَ بِنَا إِلَّا إِحْدَى الْحُسْنَيَيْنِ ۖ وَنَحْنُ نَتَرَبَّصُ بِكُمْ أَنْ يُصِيبَكُمُ اللَّهُ بِعَذَابٍ مِنْ عِنْدِهِ أَوْ بِأَيْدِينَا ۖ فَتَرَبَّصُوا

إِنَّا مَعَكُمْ مُتَرَبِّصُونَ ﴿٥٢﴾ قُلْ أَنْفِقُوا طَوْعًا أَوْ كَرْهًا لَنْ يُتَقَبَّلَ مِنْكُمْ ۖ إِنَّكُمْ كُنْتُمْ قَوْمًا فَاسِقِينَ ﴿٥٣﴾ وَمَا مَنَعَهُمْ أَنْ تُقْبَلَ مِنْهُمْ نَفَقَاتُهُمْ

إِلَّا أَنَّهُمْ كَفَرُوا بِاللَّهِ وَبِرَسُولِهِ وَلَا يَأْتُونَ الصَّلَاةَ إِلَّا وَهُمْ كُسَالَىٰ وَلَا يُنْفِقُونَ إِلَّا وَهُمْ كَارِهُونَ ﴿٥٤﴾ فَلَا تُعْجِبْكَ أَمْوَالُهُمْ وَلَا أَوْلَادُهُمْ ۚ

إِنَّمَا يُرِيدُ اللَّهُ لِيُعَذِّبَهُمْ بِهَا فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا وَتَزْهَقَ أَنْفُسُهُمْ وَهُمْ كَافِرُونَ ﴿٥٥﴾ وَيَحْلِفُونَ بِاللَّهِ إِنَّهُمْ لَمِنْكُمْ وَمَا هُمْ مِنْكُمْ وَلَٰكِنَّهُمْ

قَوْمٌ يَفْرَقُونَ ﴿٥٦﴾ لَوْ يَجِدُونَ مَلْجَأً أَوْ مَغَارَاتٍ أَوْ مُدَّخَلًا لَوَلَّوْا إِلَيْهِ وَهُمْ يَجْمَحُونَ ﴿٥٧﴾ وَمِنْهُمْ مَنْ يَلْمِزُكَ فِي الصَّدَقَاتِ فَإِنْ أُعْطُوا مِنْهَا

मुअ्मिनून(51)कुल् हल् त–रब्बसू–न बिना इल्ला इह्दल् हुस्–न–यय्नि व नह्नु न–त–रब्बसु बिकुम् अंय्युसी–बकुमुल्लाहु बिअ़ज़ाबिम् मिन् अ़िन्दिही औ बिऐ–दीना फ़–त–रब्बसू इन्ना म–अ़कुम् मु–त–रब्बिसून(52)कुल् अन्फ़िकू तौअ़न् औ करहल् लंय्यु–त–क़ब्ब–ल मिन्कुम् इन्नकुम् कुन्तुम् क़ौमन् फ़ासिक़ीन(53)व मा म–न–अ़हुम् अन् तुक़्ब–ल मिन्हुम् न–फ़क़ातुहुम् इल्ला अन्नहुम् क–फ़रू बिल्लाहि व बि–रसूलिही व ला यअ्तूनस्सला–त इल्ला व हुम् कुसाला व ला युन्फ़िक़ू–न इल्ला व हुम् कारिहून(54)फ़ला तुअ्जिब्–क अम्वालुहुम् व ला औलादुहुम् इन्नमा युरीदुल्लाहु लियु–अ़ज़्ज़ि–बहुम् बिहा फ़िल्हया–तिद्दुन्या व तज़्–ह–क़ अन्फ़ुसुहुम् व हुम् काफ़िरून (55)व यह्लिफ़ू–न बिल्लाहि इन्नहुम् लमिन्कुम् व मा हुम् मिन्कुम् व लाकिन्नहुम् क़ौमुंय्यफ़रक़ून (56)लौ यजिदू–न मल्ज–अन् औ मग़ारातिन् औ मुद्द–ख़–लल् ल–वल्लौ इलैहि व हुम् यज्मह़ून(57) व मिन्हुम् मंय्यल्–मिज़ु–क फ़िस्स–दक़ाति फ़–इन् उअ़्तू मिन्हा

भरोसा चाहिए।(51) तुम फ़रमाओ तुम हम पर किस चीज़ का इन्तेज़ार करते हो मगर दो ख़ूबियों में से एक का (फ़ा122) और हम तुम पर इस इन्तेज़ार में हैं कि अल्लाह तुम पर अ़ज़ाब डाले अपने पास से (फ़ा123) या हमारे हाथों (फ़ा124) तो अब राह देखो हम भी तुम्हारे साथ राह देख रहे हैं।(52) (फ़ा125) तुम फ़रमाओ कि दिल से ख़र्च करो या नागवारी से तुम से हरगिज़ क़बूल न होगा (फ़ा126) बेशक तुम बे हुक्म लोग हो।(52) और वह जो ख़र्च करते हैं उसका क़बूल होना बन्द न हुआ मगर इसी लिए कि वह अल्लाह और रसूल से मुन्किर हुए और नमाज़ को नहीं आते मगर जी हारे और ख़र्च नहीं करते मगर नागवारी से।(54) (फ़ा127) तो तुम्हें उनके माल और उनकी औलाद का तअ़ज्जुब न आए अल्लाह यही चाहता है कि दुनिया की ज़िन्दगी में उन चीज़ों से उन पर वबाल डाले और अगर कुफ़्र ही पर उनका दम निकल जाए।(55) (फ़ा128) और अल्लाह की क़समें खाते हैं (फ़ा129) कि वह तुम में से हैं (फ़ा130) और तुम में से हैं नहीं(फ़ा131)हां वह लोग डरते हैं।(56)(फ़ा132)अगर पाएं कोई पनाह या ग़ार या समा जाने की जगह तो रस्सियां तोड़ाते उधर फिर जायेंगे।(57)(फ़ा133) और उनमें कोई वह है कि सदक़े बांटने में तुम पर तअ़्न करता है(फ़ा134)तो अगर उन(फ़ा135)में से कुछ मिले

(फ़ा122) या तो फ़तह व ग़नीमत मिलेगी या शहादत व मग़फ़िरत क्योंकि मुसलमान जब जिहाद में जाता है तो वह अगर ग़ालिब हो जब तो फ़तह व ग़नीमत और अजूरे अ़ज़ीम पाता है और अगर राहे ख़ुदा में मारा जाये तो उसको शहादत हासिल होती है जो उसकी आला मुराद है (फ़ा123) और तुम्हें आ़द समूद वग़ैरह की तरह हलाक करे (फ़ा124) तुम को क़त्ल व असीरी के अ़ज़ाब में गिरिफ़्तार करे (फ़ा125) कि तुम्हारा क्या अंजाम होता है (फ़ा126) **शाने नुज़ूलः** यह आयत जद बिन क़ैस मुनाफ़िक़ के जवाब में नाज़िल हुई जिसने जिहाद में जाने की इजाज़त तलब करने के साथ यह कहा था कि मैं अपने माल से मदद करूंगा इस पर हज़रत हक़ तबारक व तआ़ला ने अपने हबीब सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से फ़रमाया कि तुम ख़ुशी से दो या ना–ख़ुशी से तुम्हारा माल क़बूल न किया जाएगा यानी रसूले करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम उसको न लेंगे क्योंकि यह देना अल्लाह के लिए नहीं है। (फ़ा127) क्योंकि उन्हें रज़ाए इलाही मक़सूद नहीं। (फ़ा128) तो वह माल उनके हक़ में सबबे राहत न हुआ बल्कि वबाल हुआ (फ़ा129) मुनाफ़िक़ीन इस पर (फ़ा130) यानी तुम्हारे दीन व मिल्लत पर हैं मुसलमान हैं (फ़ा131) तुम्हें धोखा देते और झूठ बोलते हैं (फ़ा132) कि अगर उनका निफ़ाक़ ज़ाहिर हो जाये तो मुसलमान उनके साथ वही मुआ़मला करेंगे जो मुशरिकीन के साथ करते हैं इस लिए वह बराहे तक़य्या अपने आपको मुसलमान ज़ाहिर करते हैं (फ़ा133) क्योंकि उन्हें रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम और मुसलमानों से इन्तेहा दर्जे का बुग़्ज़ है (फ़ा134) **(बक़िया सफ़हा 332 पर)**

رَضُوْا وَاِنْ لَّمْ يُعْطَوْا مِنْهَآ اِذَا هُمْ يَسْخَطُوْنَ ﴿٥٨﴾ وَلَوْ اَنَّهُمْ رَضُوْا مَآ اٰتٰىهُمُ اللّٰهُ وَرَسُوْلُهٗ ۙ وَقَالُوْا حَسْبُنَا اللّٰهُ سَيُؤْتِيْنَا اللّٰهُ مِنْ فَضْلِهٖ
وَرَسُوْلُهٗٓ ۙ اِنَّآ اِلَى اللّٰهِ رٰغِبُوْنَ ﴿٥٩﴾ اِنَّمَا الصَّدَقٰتُ لِلْفُقَرَآءِ وَالْمَسٰكِيْنِ وَالْعٰمِلِيْنَ عَلَيْهَا وَالْمُؤَلَّفَةِ قُلُوْبُهُمْ وَفِى الرِّقَابِ وَالْغٰرِمِيْنَ
وَفِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَابْنِ السَّبِيْلِ ؕ فَرِيْضَةً مِّنَ اللّٰهِ ؕ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ ﴿٦٠﴾ وَمِنْهُمُ الَّذِيْنَ يُؤْذُوْنَ النَّبِىَّ وَيَقُوْلُوْنَ هُوَ اُذُنٌ ؕ قُلْ اُذُنُ
خَيْرٍ لَّكُمْ يُؤْمِنُ بِاللّٰهِ وَيُؤْمِنُ لِلْمُؤْمِنِيْنَ وَرَحْمَةٌ لِّلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مِنْكُمْ ؕ وَالَّذِيْنَ يُؤْذُوْنَ رَسُوْلَ اللّٰهِ لَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿٦١﴾
يَحْلِفُوْنَ بِاللّٰهِ لَكُمْ لِيُرْضُوْكُمْ ۚ وَاللّٰهُ وَرَسُوْلُهٗٓ اَحَقُّ اَنْ يُّرْضُوْهُ اِنْ كَانُوْا مُؤْمِنِيْنَ ﴿٦٢﴾ اَلَمْ يَعْلَمُوْٓا اَنَّهٗ مَنْ يُّحَادِدِ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ فَاَنَّ

रज़ू व इल्लम् युअ़्तौ मिन्हा इज़ा हुम् यस्ख़तून(58)व लौ अन्नहुम् रज़ू मा आताहु–मुल्लाहु व रसूलुहू व क़ालू ह़स्बु–नल्लाहु सयुअ़्तीनल्लाहु मिन् फ़ज़्लिही व रसूलुहू इन्ना इलल्लाहि राग़िबून (59)इन्नमस्स–दक़ातु लिल्फ़ु–क़राइ वल्मसाकीनि वल्आ़–मिली–न अ़लैहा वल्मुअल्ल–फ़ति क़ुलूबुहुम् व फ़िर्रिक़ाबि वल्ग़ारिमी–न व फ़ी सबीलिल्लाहि वब्निस्स–बीलि फ़री–ज़–तम् मिनल्लाहि वल्लाहु अ़लीमुन् ह़कीम(60)व मिन्हुमुल्लज़ी–न युअ्ज़ूनन्नबिय्–य व यक़ूलू–न हु–व उज़ुनुन् क़ुल् उज़ुनु ख़ैरिल् लकुम् युअ्मिनु बिल्लाहि व युअ्मिनु लिल्–मुअ्मिनी–न व रह़्मतुल् लिल्लज़ी–न आ–मनू मिन्कुम् वल्लज़ी–न युअ्ज़ू–न रसू–लल्लाहि लहुम् अ़ज़ाबुन् अलीम(61)यह़्लिफ़ू–न बिल्लाहि लकुम् लियुर्ज़ूकुम् वल्लाहु व रसूलुहू अ–ह़क़्क़ु अंय्युर्ज़ूहु इन् कानू मुअ्मि–नीन(62) अ–लम् यअ़्–लमू अन्नहू मंय्युह़ादिदिल्ला–ह व रसू–लहू फ़–अन्–न

तो राज़ी हो जायें और न मिले तो जभी वह नाराज़ हैं।(58) और क्या अच्छा होता अगर वह उस पर राज़ी होते जो अल्लाह व रसूल ने उनको दिया और कहते हमें अल्लाह काफ़ी है अब देता है हमें अल्लाह अपने फ़ज़्ल से और अल्लाह का रसूल हमें अल्लाह ही की तरफ़ रग़बत है।(59) (फ़ा136) (रुकूअ़ 13) ज़कात तो उन्हीं लोगों के लिए है (फ़ा137) मोहताज और निरे नादार और जो उसे तहसील करके लायें और जिनके दिलों को इस्लाम से उलफ़त दी जाए और गर्दनें छुड़ाने में और क़र्ज़दारों को और अल्लाह की राह में और मुसाफ़िर को यह ठहराया हुआ है अल्लाह का और अल्लाह इल्म व हिकमत वाला है।(60)और उनमें कोई वह हैं कि इन ग़ैब की ख़बरें देने वाले को सताते हैं (फ़ा138) और कहते हैं वह तो कान हैं तुम फ़रमाओ तुम्हारे भले के लिए कान हैं अल्लाह पर ईमान लाते हैं और मुसलमानों की बात पर यक़ीन करते हैं (फ़ा139) और जो तुम में मुसलमान हैं उनके वास्ते रहमत हैं और जो रसूलुल्लाह को ईज़ा देते हैं उनके लिए दर्दनाक अ़ज़ाब है।(61) तुम्हारे सामने अल्लाह की क़सम खाते हैं (फ़ा140) कि तुम्हें राज़ी कर लें (फ़ा141) और अल्लाह व रसूल का हक़ ज़ायद था कि उसे राज़ी करते अगर ईमान रखते थे।(62) क्या उन्हें ख़बर नहीं कि जो ख़िलाफ़ करे अल्लाह और उसके रसूल का तो उसके

(फ़ा136) कि हम पर अपना फ़ज़्ल वसीअ़ करे और हमें ख़ल्क़ के अमवाल से ग़नी और बे नियाज़ कर दे। (फ़ा137) जब मुनाफ़िक़ीन ने तक़सीमे सदक़ात में सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम पर तअ़्न किया तो अल्लाह अ़ज़्ज़ व जल्ल ने इस आयत में बयान फ़रमा दिया कि सदक़ात के मुस्तहिक़ सिर्फ़ यही आठ क़िस्म के लोग हैं उन्हीं पर सदक़ात सर्फ़ किये जायेंगे उनके सिवा कोई मुस्तहिक़ नहीं और रसूले करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को अमवाले सदक़ा से कोई वास्ता ही नहीं आप पर और आपकी औलाद पर सदक़ात हराम हैं तो तअ़्न करने वालों को ऐतराज़ का क्या मौक़ा सदक़ा से इस आयत में ज़कात मुराद है। **मसलाः** ज़कात के मुस्तहिक़ आठ क़िस्म के लोग क़रार दिये गए हैं उन में से मुअल्लिफ़तुल क़ुलूब ब-इज्माअ़े सहाबा साक़ित हो गए क्योंकि जब अल्लाह तबारक व तआ़ला ने इस्लाम को ग़लबा दिया तो अब इसकी हाजत न रही यह इज्माअ़ ज़मानए सिद्दीक़ में मुनअ़क़िद हुआ मसला फ़क़ीर वह है जिसके पास अदना चीज़ हो और जब तक उसके पास एक वक़्त के लिए कुछ हो उसको सवाल हलाल नहीं मिस्कीन वह है जिसके पास कुछ न हो वह सवाल कर सकता है आ़मिलीन वह लोग हैं जिनको इमाम ने सदक़े तहसील करने पर मुक़र्रर किया हो उन्हें इमाम इतना दे जो उनके और उनके मुतअ़ल्लिक़ीन के लिए काफ़ी हो **मसलाः** अगर आमिल ग़नी हो तो भी उसको लेना जायज़ है **मसलाः** आमिल सय्यद या हाशमी हो तो वह ज़कात में से न ले गर्दनें छुड़ाने से मुराद यह है कि जिन ग़ुलामों को उनके मालिकों ने मुकातिब कर दिया **(बक़िया सफ़हा 332 पर)**

لَهٗ نَارَ جَهَنَّمَ خَالِدًا فِيْهَا ۚ ذٰلِكَ الْخِزْيُ الْعَظِيْمُ ﴿٦٣﴾ يَحْذَرُ الْمُنٰفِقُوْنَ اَنْ تُنَزَّلَ عَلَيْهِمْ سُوْرَةٌ تُنَبِّئُهُمْ بِمَا فِيْ قُلُوْبِهِمْ ۚ قُلِ اسْتَهْزِءُوْا ۚ اِنَّ اللّٰهَ مُخْرِجٌ مَّا تَحْذَرُوْنَ ﴿٦٤﴾ وَلَئِنْ سَاَلْتَهُمْ لَيَقُوْلُنَّ اِنَّمَا كُنَّا نَخُوْضُ وَنَلْعَبُ ۚ قُلْ اَبِاللّٰهِ وَاٰيٰتِهٖ وَرَسُوْلِهٖ كُنْتُمْ تَسْتَهْزِءُوْنَ ﴿٦٥﴾ لَا تَعْتَذِرُوْا قَدْ كَفَرْتُمْ بَعْدَ اِيْمَانِكُمْ ۚ اِنْ نَّعْفُ عَنْ طَآئِفَةٍ مِّنْكُمْ نُعَذِّبْ طَآئِفَةًۢ بِاَنَّهُمْ كَانُوْا مُجْرِمِيْنَ ﴿٦٦﴾ اَلْمُنٰفِقُوْنَ وَالْمُنٰفِقٰتُ بَعْضُهُمْ مِّنْۢ بَعْضٍ ۘ يَاْمُرُوْنَ بِالْمُنْكَرِ وَيَنْهَوْنَ عَنِ الْمَعْرُوْفِ وَيَقْبِضُوْنَ اَيْدِيَهُمْ ۚ نَسُوا اللّٰهَ فَنَسِيَهُمْ ۚ اِنَّ الْمُنٰفِقِيْنَ هُمُ الْفٰسِقُوْنَ ﴿٦٧﴾ وَعَدَ اللّٰهُ الْمُنٰفِقِيْنَ وَالْمُنٰفِقٰتِ وَالْكُفَّارَ نَارَ جَهَنَّمَ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ۚ هِيَ حَسْبُهُمْ ۚ وَلَعَنَهُمُ اللّٰهُ ۚ وَلَهُمْ عَذَابٌ مُّقِيْمٌ ﴿٦٨﴾ كَالَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِكُمْ

लहू ना–र जहन्न–म ख़ालि–दन् फ़ीहा ज़ालिकल् ख़िज़्युल् अ़ज़ीम(63)यह्ज़रुल् मुनाफ़िक़ू–न अन् तुनज़्ज़–ल अ़लैहिम् सू–रतुन् तु–नब्बिउहुम् बिमा फ़ी क़ुलूबिहिम् क़ुलिस्तह्ज़िऊ इन्नल्ला–ह मुख़्रिजुम् मा तह्ज़रून(64)व लइन् स–अल्तहुम् ल–यक़ूलुन्–न इन्नमा कुन्ना नख़ूजु व नल्–अ़बु क़ुल् अबिल्लाहि व आयातिही व रसूलिही कुन्तुम् तस्त–ह्ज़िऊन(65)ला तअ़्–तज़िरु क़द् क–फ़र्तुम् बअ़्–द ईमानिकुम् इन् नअ़्फ़ु अ़न् ताइ–फ़तिम् मिन्कुम् नुअ़ज़्ज़िब् ताइ–फ़–तम् बि–अन्नहुम् कानू मुज्रिमीन(66)अल्मुनाफ़िक़ू–न वल्मुनाफ़िक़ातु बअ़्ज़ुहुम् मिम् बअ़्ज़िन् यअ्मुरू–न बिल्मुन्करि व यन्हौ–न अ़निल् मअ़्रूफ़ि व यक़्बिज़ू–न ऐदि–यहुम् नसुल्ला–ह फ़–नसि–यहुम् इन्नल् मुनाफ़िक़ी–न हुमुल् फ़ासिक़ू–न(67)व अ़दल्ला–हुल् मुनाफ़िक़ी–न वल्मुनाफ़िक़ाते वल्कुफ़्फ़ा–र ना–र जहन्न–म ख़ालिदी–न फ़ीहा हि–य ह़स्बुहुम् व ल–अ़–नहुमुल्लाहु व लहुम् अ़ज़ाबुम् मुक़ीम(68) कल्लज़ी–न मिन् क़ब्लिकुम्

लिए जहन्नम की आग है कि हमेशा उसमें रहेगा यही बड़ी रुसवाई है।(63) मुनाफ़िक़ डरते हैं कि इन (फ़ा142) पर कोई सूरत ऐसी उतरे जो उन (फ़ा143) के दिलों की छुपी (फ़ा144) जता दे तुम फ़रमाओ हंसे जाओ अल्लाह को ज़रूर ज़ाहिर करना है जिसका तुम्हें डर है।(64) और ऐ महबूब अगर तुम उनसे पूछो तो कहेंगे कि हम तो यूंही हंसी खेल में थे (फ़ा145) तुम फ़रमाओ क्या अल्लाह और उसकी आयतों और उसके रसूल से हंसते हो।(65)बहाने न बनाओ तुम काफ़िर हो चुके मुसलमान होकर (फ़ा146) अगर हम तुम में से किसी को माफ़ करें (फ़ा147) तो औरों को अ़ज़ाब देंगे इस लिए कि वह मुजरिम थे।(66) (फ़ा148) (रुकूअ़ 14) मुनाफ़िक़ मर्द और मुनाफ़िक़ औरतें एक थैली के चट्टे बट्टे हैं (फ़ा149) बुराई का हुक्म दें (फ़ा150) और भलाई से मना करें (फ़ा151) और अपनी मुट्ठी बन्द रखें (फ़ा152) वह अल्लाह को छोड़ बैठे (फ़ा153) तो अल्लाह ने उन्हें छोड़ दिया (फ़ा154) बेशक मुनाफ़िक़ वही पक्के बे हुक्म हैं।(67) अल्लाह ने मुनाफ़िक़ मर्दों और मुनाफ़िक़ औरतों और काफ़िरों को जहन्नम की आग का वादा दिया है जिसमें हमेशा रहेंगे वह उन्हें बस है और अल्लाह की उन पर लानत है और उनके लिए क़ायम रहने वाला अ़ज़ाब है।(68) जैसे वह जो तुम से पहले थे

(फ़ा142) मुसलमानों (फ़ा143) मुनाफ़िक़ों (फ़ा144) दिलों की छुपी चीज़ उनका निफ़ाक़ है और वह बुग़ज़ व अ़दावत जो वह मुसलमानों के साथ रखते थे और उसको छुपाया करते थे सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के मोअ़्जेज़ात देखने और आपकी ग़ैबी ख़बरें सुनने और उनको वाक़ेअ़ के मुताबिक़ पाने के बाद मुनाफ़िक़ों को अन्देशा हो गया कि कहीं अल्लाह तआ़ला कोई ऐसी सूरत नाज़िल न फ़रमाए जिससे उनके असरार ज़ाहिर कर दिये जायें और उनकी रुसवाई हो इस आयत में इसी का बयान है। (फ़ा145) **शाने नुज़ूलः** ग़ज़वए तबूक में जाते हुए मुनाफ़िक़ीन के तीन नफ़रों में से दो रसूले करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की निस्बत तमस्ख़ुरन कहते थे कि उनका ख़्याल यह है कि रोम पर ग़ालिब आजायेंगे कितना बईद ख़्याल है और एक नफ़र बोलता तो न था मगर इन बातों को सुन कर हंसता था हुज़ूर ने उनको तलब फ़रमा कर इरशाद फ़रमाया कि तुम ऐसा ऐसा कह रहे थे उन्होंने कहा हम रास्ता काटने के लिए हंसी खेल के तौर पर दिल लगी की बातें कर रहे थे इस पर यह आयते करीमा नाज़िल हुई और उनका यह उज़्र व हीला क़बूल न किया गया और उनके लिए यह फ़रमाया गया जो आगे इरशाद होता है (फ़ा146) **मसलाः** इस आयत से साबित हुआ कि रसूले करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की शान में गुस्ताख़ी कुफ़्र है जिस तरह भी हो इसमें उज़्र क़बूल नहीं (फ़ा147) उसके ताइब होने और ब–इख़्लास ईमान लाने से **(बक़िया सफ़हा 332 पर)**

كَانُوٓا۟ أَشَدَّ مِنكُمْ قُوَّةً وَأَكْثَرَ أَمْوَٰلًا وَأَوْلَٰدًا فَٱسْتَمْتَعُوا۟ بِخَلَٰقِهِمْ فَٱسْتَمْتَعْتُم بِخَلَٰقِكُمْ كَمَا ٱسْتَمْتَعَ ٱلَّذِينَ مِن قَبْلِكُم بِخَلَٰقِهِمْ
وَخُضْتُمْ كَٱلَّذِى خَاضُوٓا۟ ۚ أُو۟لَٰٓئِكَ حَبِطَتْ أَعْمَٰلُهُمْ فِى ٱلدُّنْيَا وَٱلْءَاخِرَةِ ۖ وَأُو۟لَٰٓئِكَ هُمُ ٱلْخَٰسِرُونَ ﴿٦٩﴾ أَلَمْ يَأْتِهِمْ نَبَأُ ٱلَّذِينَ مِن قَبْلِهِمْ
قَوْمِ نُوحٍ وَعَادٍ وَثَمُودَ وَقَوْمِ إِبْرَٰهِيمَ وَأَصْحَٰبِ مَدْيَنَ وَٱلْمُؤْتَفِكَٰتِ ۚ أَتَتْهُمْ رُسُلُهُم بِٱلْبَيِّنَٰتِ ۖ فَمَا كَانَ ٱللَّهُ لِيَظْلِمَهُمْ وَلَٰكِن كَانُوٓا۟
أَنفُسَهُمْ يَظْلِمُونَ ﴿٧٠﴾ وَٱلْمُؤْمِنُونَ وَٱلْمُؤْمِنَٰتُ بَعْضُهُمْ أَوْلِيَآءُ بَعْضٍ ۚ يَأْمُرُونَ بِٱلْمَعْرُوفِ وَيَنْهَوْنَ عَنِ ٱلْمُنكَرِ وَيُقِيمُونَ ٱلصَّلَوٰةَ
وَيُؤْتُونَ ٱلزَّكَوٰةَ وَيُطِيعُونَ ٱللَّهَ وَرَسُولَهُۥٓ ۚ أُو۟لَٰٓئِكَ سَيَرْحَمُهُمُ ٱللَّهُ ۗ إِنَّ ٱللَّهَ عَزِيزٌ حَكِيمٌ ﴿٧١﴾ وَعَدَ ٱللَّهُ ٱلْمُؤْمِنِينَ وَٱلْمُؤْمِنَٰتِ جَنَّٰتٍ

कानू अशद्-द मिन्कुम् कुव्वतंव् व अक्स-र अम्वालंव् व औलादन् फ़स्तम्तअू बि-ख़लाक़िहिम् फ़स्तम्तअ़्तुम् बि-ख़लाक़िकुम् क-मस्तम्-त-अल्लज़ी-न मिन् क़ब्लिकुम् बि-ख़लाक़िहिम् व ख़ुज़्तुम् कल्लज़ी ख़ाज़ू उलाइ-क हबितत् अअ़्मालुहुम् फ़िद्दुन्या वल्आख़ि-रति व उलाइ-क हुमुल्ख़ासिरून(69) अलम् यअ्ति-हिम् न-बउल्लज़ी-न मिन् क़ब्लि-हिम् क़ौमि नूहिंव् व आदिंव् व समू-द व क़ौमि इब्राही-म व अस्हाबि मदय-न वल्मुअ्-तफ़िकाति अ-ततहुम् रुसुलुहुम् बिल्बय्यिनाति फ़मा कानल्लाहु लियज़्लि-महुम् व लाकिन् कानू अन्फ़ु-सहुम् यज़्लिमून(70)वल्मुअ्मिनू-न वल्मुअ्मिनातु बअ़्ज़ुहुम् औलियाउ बअ़्ज़िन् यअ्-मुरू-न बिल्मअ़्रूफ़ि व यन्हौ-न अ़निल्मुन्करि व युक़ीमूनस्सला-त व युअ्तूनज़्ज़का-त व युतीअू.नल्ला-ह व रसू-लहू उलाइ-क स-यर्-हमुहुमुल्लाहु इन्नल्ला-ह अ़ज़ीज़ुन् हकीम(71)व-अ़-दल्लाहुल् मुअ्मिनी-न वल्मुअ्मिनाति जन्नातिन्

तुम से ज़ोर में बढ़ कर थे और उनके माल और औलाद तुम से ज़्यादा तो वह अपना हिस्सा (फ़ा155) बरत गए तो तुमने अपना हिस्सा बरता जैसे अगले अपना हिस्सा बरत गए और तुम बेहूदगी में पड़े जैसे वह पड़े थे (फ़ा156) उनके अ़मल अकारत गए दुनिया और आख़िरत में और वही लोग घाटे में हैं।(69) (फ़ा157) क्या उन्हें (फ़ा158) अपने से अगलों की ख़बर न आई (फ़ा159) नूह की क़ौम (फ़ा160) और आ़द (फ़ा161) और समूद (फ़ा162) और इब्राहीम की क़ौम (फ़ा163) और मदयन वाले (फ़ा164) और वह बस्तियां कि उलट दी गईं (फ़ा165) उनके रसूल रौशन दलीलें उनके पास लाये थे (फ़ा166) तो अल्लाह की शान न थी कि उन पर ज़ुल्म करता (फ़ा167) बल्कि वह ख़ुद ही अपनी जानों पर ज़ालिम थे।(70) (फ़ा168)और मुसलमान मर्द और मुसलमान औरतें एक दूसरे के रफ़ीक़ हैं। (फ़ा169) भलाई का हुक्म दें (फ़ा170) और बुराई से मना करें और नमाज़ क़ायम रखें और ज़कात दें और अल्लाह व रसूल का हुक्म मानें यह हैं जिन पर अ़न्क़रीब अल्लाह रहम करेगा बेशक अल्लाह ग़ालिब हिकमत वाला है।(71)अल्लाह ने मुसलमान मर्दों और मुसलमान औरतों को बाग़ों का

(फ़ा155) लज़्ज़ात व शह्वाते दुनियविया का (फ़ा156) और तुम ने इत्तेबाअ़े बातिल और तकज़ीबे ख़ुदा व रसूल और मोमिनीन के साथ इस्तेहज़ा करने में उनकी राह इख़्तियार की (फ़ा157) उन्हीं कुफ़्फ़ार की तरह ऐ मुनाफ़िक़ीन तुम टोटे में हो और तुम्हारे अ़मल बातिल हैं (फ़ा158) यानी मुनाफ़िक़ों को (फ़ा159) गुज़री हुई उम्मतों का हाल मालूम न हुआ कि हम ने उन्हें अपने हुक्म की मुख़ालफ़त और अपने रसूलों की ना-फ़रमानी करने पर किस तरह हलाक किया (फ़ा160) जो तूफ़ान से हलाक की गई (फ़ा161) जो हवा से हलाक किये गए (फ़ा162) जो ज़लज़ला से हलाक किये गए (फ़ा163) जो सलबे निअ़मत से हलाक की गई और नमरूद मच्छर से हलाक किया गया (फ़ा164) यानी हज़रत शुऐब अ़लैहिस्सलाम की क़ौम जो रोज़े अब्र के अ़ज़ाब से हलाक की गई (फ़ा165) और ज़ेरो ज़बर कर डाली गईं वह क़ौमे लूत की बस्तियां थीं अल्लाह तआ़ला ने इन छः का ज़िक्र फ़रमाया इस लिए कि बिलादे शाम व इराक़ व यमन जो सर-ज़मीने अ़रब के बिल्कुल क़रीब हैं इनमें उन हलाक शुदा क़ौमों के निशान बाक़ी हैं और अ़रब लोग उन मक़ामात पर अक्सर गुज़रते रहते हैं। (फ़ा166) उन लोगों ने बजाए तस्दीक़ करने के अपने रसूलों की तकज़ीब की जैसा कि ऐ मुनाफ़िक़ीन कुफ़्फ़ार तुम कर रहे हो डरो कि उन्हीं की तरह मुब्तलाए अ़ज़ाब न किये जाओ (फ़ा167) क्योंकि वह हकीम है बग़ैर जुर्म के सज़ा नहीं फ़रमाता (फ़ा168) कि कुफ़्र और तकज़ीबे अम्बिया करके अ़ज़ाब के मुस्तहिक़ बने। (फ़ा169) और बाहम दीनी मुहब्बत व मवालात रखते हैं और एक दूसरे के मुईन व मददगार हैं (फ़ा170) यानी अल्लाह और रसूल पर ईमान लाने और शरीअ़त का इत्तेबाअ़ करने का।

تَجْرِیْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِیْنَ فِیْهَا وَمَسٰكِنَ طَیِّبَةً فِیْ جَنّٰتِ عَدْنٍ ؕ وَرِضْوَانٌ مِّنَ اللّٰهِ اَكْبَرُ ؕ ذٰلِكَ هُوَ الْفَوْزُ الْعَظِیْمُ ۟
یٰۤاَیُّهَا النَّبِیُّ جَاهِدِ الْكُفَّارَ وَالْمُنٰفِقِیْنَ وَاغْلُظْ عَلَیْهِمْ ؕ وَمَاْوٰىهُمْ جَهَنَّمُ ؕ وَبِئْسَ الْمَصِیْرُ ۟ یَحْلِفُوْنَ بِاللّٰهِ مَا قَالُوْا ؕ وَلَقَدْ قَالُوْا
كَلِمَةَ الْكُفْرِ وَكَفَرُوْا بَعْدَ اِسْلَامِهِمْ وَهَمُّوْا بِمَا لَمْ یَنَالُوْا ۚ وَمَا نَقَمُوْۤا اِلَّاۤ اَنْ اَغْنٰىهُمُ اللّٰهُ وَرَسُوْلُهٗ مِنْ فَضْلِهٖ ۚ فَاِنْ یَّتُوْبُوْا یَكُ
خَیْرًا لَّهُمْ ۚ وَاِنْ یَّتَوَلَّوْا یُعَذِّبْهُمُ اللّٰهُ عَذَابًا اَلِیْمًا ۙ فِی الدُّنْیَا وَالْاٰخِرَةِ ۚ وَمَا لَهُمْ فِی الْاَرْضِ مِنْ وَّلِیٍّ وَّلَا نَصِیْرٍ ۟ وَمِنْهُمْ
مَّنْ عٰهَدَ اللّٰهَ لَىِٕنْ اٰتٰىنَا مِنْ فَضْلِهٖ لَنَصَّدَّقَنَّ وَلَنَكُوْنَنَّ مِنَ الصّٰلِحِیْنَ ۟ فَلَمَّاۤ اٰتٰىهُمْ مِّنْ فَضْلِهٖ بَخِلُوْا بِهٖ وَتَوَلَّوْا وَّهُمْ

तजरी मिन् तह्तिहल् अन्हारु ख़ालिदी–न फ़ीहा व मसाकि–न तय्यि–बतन् फ़ी जन्नाति अ़दनिन् व रिज़्वानुम् मिनल्लाहि अक्बरु ज़ालि–क हुवल् फ़ौज़ुल् अ़ज़ीम(72)या अय्यु–हन्नबिय्यु जाहिदिल् कुफ़्फ़ा–र वल्मुनाफ़िक़ी–न वग़्लुज़् अ़लैहिम् व मअ्वाहुम् जहन्नमु व बिअ्–सल्मसीर(73) यह्लिफू–न बिल्ला–हि मा क़ालू व ल–क़द् क़ालू कलि–म–तल्कुफ़्रि व क–फ़रू बअ्–द इस्लामिहिम् व हम्मू बिमा लम् यनालू व मा न–क़मू इल्ला अन् अग़्नाहुमुल्लाहु व रसूलुहू मिन् फ़ज़्लिही फ़–इंय्यतूबू यकु ख़ैरल्लहुम् व इंय्य–तवल्लौ युअ़ज़्ज़िब्हुमुल्लाहु अ़ज़ाबन् अलीमन् फ़िद्दुन्या वल्आख़ि–रति व मा लहुम् फ़िल्अर्ज़ि मिंव्वलिय्यिंव् व ला नसीर(74)व मिन्हुम् मन् आ़–ह–दल्ला–ह लइन् आताना मिन् फ़ज़्लिही ल–नस्सद्–द क़न्–न व ल–नकू–नन्–न मिनस्–सालिहीन(75) फ़–लम्मा आताहुम् मिन् फ़ज़्लिही बख़िलू बिही व त–वल्लव्–व हुम्

वादा दिया है जिनके नीचे नहरें रवां उन में हमेशा रहेंगे और पाकीज़ा मकानों का (फ़ा171) बसने के बाग़ों में और अल्लाह की रज़ा सबसे बड़ी (फ़ा172) यही है बड़ी मुराद पानी।(72) (रुकूअ़ 15) ऐ ग़ैब की ख़बरें देने वाले (नबी) जिहाद फ़रमाओ काफ़िरों और मुनाफ़िक़ों पर (फ़ा173) और उन पर सख़्ती करो और उनका ठिकाना दोज़ख़ है और क्या ही बुरी जगह पलटने की।(73) अल्लाह की क़सम खाते हैं कि उन्होंने न कहा (फ़ा174) और बेशक ज़रूर उन्होंने कुफ़्र की बात कही और इस्लाम में आकर काफ़िर हो गए और वह चाहा था जो उन्हें न मिला (फ़ा175) और उन्हें क्या बुरा लगा यही ना कि अल्लाह व रसूल ने उन्हें अपने फ़ज़्ल से ग़नी कर दिया (फ़ा176) तो अगर वह तौबा करें तो उनका भला है और अगर मुंह फेरें (फ़ा177) तो अल्लाइ उनहें सख़्त अ़ज़ाब करेगा दुनिया और आख़िरत में और ज़मीन में कोई न उनका हिमायती होगा न मददगार।(74) (फ़ा178) और उनमें कोई वह हैं जिन्हों ने अल्लाह से अहद किया था कि अगर हमें अपने फ़ज़्ल से देगा तो हम ज़रूर ख़ैरात करेंगे और हम ज़रूर भले आदमी हो जायेंगे।(75) (फ़ा179) तो जब अल्लाह ने उन्हें अपने फ़ज़्ल से दिया उसमें बुख़्ल करने लगे और मुंह फेर कर

(फ़ा171) हसन रज़ियल्लाहु अ़न्हु से मरवी है कि जन्नत में मोती और याक़ूत सुर्ख़ और ज़बर्जद के महल मोमिनीन को अ़ता होंगे (फ़ा172) और तमाम नेअ़मतों से आला और आ़शिक़ाने इलाही की सब से बड़ी तमन्ना *र–ज़–क–नल्लाहु तआ़ला* बजाहे हबीबिही सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम (फ़ा173) काफ़िरों पर तो तलवार और हरब से और मुनाफ़िक़ों पर इक़ामते हुज्जत से (फ़ा174) **शाने नुज़ूलः** इमाम बग़वी ने कलबी से नक़ल किया कि यह आयत जलास बिन सुवैद के हक़ में नाज़िल हुई वाक़िआ़ यह था कि एक रोज़ सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने तबूक में खुतबा फ़रमाया इसमें मुनाफ़िक़ीन का ज़िक्र किया और उनकी बदहाली व बद मआली का ज़िक्र फ़रमाया यह सुनकर जलास ने कहा कि अगर मुहम्मद (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) सच्चे हैं तो हम लोग गधों से बदतर जब हुज़ूर मदीना वापस तशरीफ़ लाये तो आमिर बिन क़ैस ने हुज़ूर से जलास का मक़ूला बयान किया जलास ने इंकार किया और कहा कि या रसूलल्लाह आ़मिर ने मुझ पर झूठ बोला हुज़ूर ने दोनों को हुक्म फ़रमाया कि मिम्बर के पास क़सम खायें जलास ने बादे अ़स्र मिम्बर के पास खड़े होकर अल्लाह की क़सम खाई कि यह बात उसने नहीं कही और आ़मिर ने इस पर झूठ बोला फिर आमिर ने खड़े होकर क़सम खाई कि बेशक यह मक़ूला जलास ने कहा और मैंने इस पर झूठ नहीं बोला फिर आ़मिर ने हाथ उठा कर अल्लाह के हुज़ूर में दुआ़ की या रब अपने नबी पर सच्चे की तस्दीक़ नाज़िल फ़रमा इन दोनों के जुदा होने से पहले ही हज़रत जिबरील यह आयत लेकर नाज़िल हुए आयत में *फ़–इंय्यतूबु यकु ख़ैरल्लहुम्* सुनकर जलास खड़े हो गए और अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह सुनिये अल्लाह ने मुझे **(बक़िया सफ़हा 332 पर)**

مُّعْرِضُوْنَ ۝ فَاَعْقَبَهُمْ نِفَاقًا فِىْ قُلُوْبِهِمْ اِلٰى يَوْمِ يَلْقَوْنَهٗ بِمَآ اَخْلَفُوا اللّٰهَ مَا وَعَدُوْهُ وَبِمَا كَانُوْا يَكْذِبُوْنَ ۝ اَلَمْ يَعْلَمُوْٓا
اَنَّ اللّٰهَ يَعْلَمُ سِرَّهُمْ وَنَجْوٰىهُمْ وَاَنَّ اللّٰهَ عَلَّامُ الْغُيُوْبِ ۝ اَلَّذِيْنَ يَلْمِزُوْنَ الْمُطَّوِّعِيْنَ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ فِى الصَّدَقٰتِ وَالَّذِيْنَ لَا يَجِدُوْنَ
اِلَّا جُهْدَهُمْ فَيَسْخَرُوْنَ مِنْهُمْ ؕ سَخِرَ اللّٰهُ مِنْهُمْ ؗ وَلَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ۝ اِسْتَغْفِرْ لَهُمْ اَوْ لَا تَسْتَغْفِرْ لَهُمْ ؕ اِنْ تَسْتَغْفِرْ لَهُمْ سَبْعِيْنَ
مَرَّةً فَلَنْ يَّغْفِرَ اللّٰهُ لَهُمْ ؕ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ كَفَرُوْا بِاللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ ؕ وَاللّٰهُ لَا يَهْدِى الْقَوْمَ الْفٰسِقِيْنَ ۝ فَرِحَ الْمُخَلَّفُوْنَ بِمَقْعَدِهِمْ خِلٰفَ
رَسُوْلِ اللّٰهِ وَكَرِهُوْٓا اَنْ يُّجَاهِدُوْا بِاَمْوَالِهِمْ وَاَنْفُسِهِمْ فِىْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَقَالُوْا لَا تَنْفِرُوْا فِى الْحَرِّ ؕ قُلْ نَارُ جَهَنَّمَ اَشَدُّ حَرًّا ؕ لَوْ كَانُوْا يَفْقَهُوْنَ ۝

मुअ्रिज़ून(76)फ़–अअ्–क़–बहुम् निफ़ाक़न् फ़ी कुलूबिहिम् इला यौमि यल्क़ौ–नहू बिमा अख़्–लफ़ुल्ला–ह मा व–अ्दूहु व बिमा कानू यक्ज़िबून(77)अ–लम् यअ्–लमू अन्नल्ला–ह यअ्लमु सिर्रहुम् व नज्वाहुम् व अन्नल्ला–ह अ़ल्ला–मुल्गुयूब(78)अल्लज़ी–न यल्मि–ज़ूनल् मुत्तव्विई–न मिनल् मुअ्–मिनी–न फ़िस्स–दक़ाति वल्लज़ी–न ला यजिदू–न इल्ला जुह्–दहुम् फ़–यस्ख़रू–न मिन्हुम् सख़िरल्लाहु मिन्हुम् व लहुम् अ़ज़ाबुन् अलीम(79)इस्तग़्फ़िर्–लहुम् औ ला तस्तग़्फ़िर् लहुम् इन् तस्तग़्फ़िर् लहुम् सब्ई–न मर्रतन् फ़–लंय्यग्फ़िरल्लाहु लहुम् ज़ालि–क बि–अन्नहुम् क–फ़रू बिल्लाहि व रसूलिही वल्लाहु ला यह्दिल्क़ौमल् फ़ासिक़ीन(80)फ़रिहल् मुख़ल्ल–फ़ू–न बि–मक्अ़दिहिम् ख़िला–फ़ रसूलिल्लाहि व करिहू अंय्युजाहिदू बिअम्वालिहिम् व अन्फ़ुसिहिम् फ़ी सबीलिल्लाहि व क़ालू ला तन्फ़िरू फ़िल्हर्रि क़ुल् नारु जहन्न–म अश–द्दु हर्रन् लौ कानू यफ़्क़हून(81)

पलट गए।(76) तो उसके पीछे अल्लाह ने उनके दिलों में निफ़ाक़ रख दिया उस दिन तक कि उससे मिलेंगे बदला इसका कि उन्होंने अल्लाह से वादा झूठा किया और बदला इसका कि झूठ बोलते थे।(77) (फ़ा180) क्या उन्हें ख़बर नहीं कि अल्लाह उनके दिल की छुपी और उनकी सरगोशी को जानता है और यह कि अल्लाह सब ग़ैबों का बहुत जानने वाला है।(78) (फ़ा181) वह जो ऐब लगाते हैं उन मुसलमानों को कि दिल से ख़ैरात करते हैं (फ़ा182) और उनको जो नहीं पाते मगर अपनी मेहनत से (फ़ा183) तो उनसे हंसते हैं (फ़ा184) अल्लाह उनकी हंसी की सज़ा देगा और उनके लिए दर्दनाक अज़ाब है।(79) तुम उनकी माफ़ी चाहो या न चाहो अगर तुम सत्तर बार उनकी माफ़ी चाहोगे तो अल्लाह हरगिज़ उन्हें नहीं बख़्शेगा (फ़ा185) यह इस लिए कि वह अल्लाह और उसके रसूल से मुनकिर हुए और अल्लाह फ़ासिक़ों को राह नहीं देता।(80) (फ़ा186) (रुकूअ़ 16) पीछे रह जाने वाले इस पर खुश हुए कि वह रसूल के पीछे बैठ रहे (फ़ा187) और उन्हें गवारा न हुआ कि अपने माल और जान से अल्लाह की राह में लड़ें और बोले इस गर्मी में न निकलो तुम फ़रमाओ जहन्नम की आग सबसे सख़्त गर्म है किसी तरह उन्हें समझ होती।(81)(फ़ा188)

(फ़ा180) इमाम फ़ख़रुद्दीन राज़ी ने फ़रमाया कि इस आयत से साबित होता है कि अहद शिकनी और वादा ख़िलाफ़ी से निफ़ाक़ पैदा होता है तो मुसलमान पर लाज़िम है कि इन बातों से एहतेराज़ करे और अहद पूरा करने और वादा वफ़ा करने में पूरी कोशिश करे हदीस शरीफ़ में है मुनाफ़िक़ की तीन निशानियां हैं जब बात करे झूठ बोले, जब वादा करे ख़िलाफ़ करे, जब उसके पास अमानत रखी जाये ख़यानत करे (फ़ा181) उस पर कुछ मख़्फ़ी नहीं मुनाफ़िक़ीन के दिलों की बात भी जानता है और जो आपस में वह एक दूसरे से कहें वह भी। (फ़ा182) शाने नुज़ूलः जब आयते सदक़ा नाज़िल हुई तो लोग सदक़ा लाये उनमें कोई बहुत कसीर लाये उन्हें तो मुनाफ़िक़ीन ने रियाकार कहा और कोई एक साअ़ (3 सेर) लाए तो उन्हें कहा अल्लाह को इसकी क्या परवाह इस पर यह आयत नाज़िल हुई हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हु से मरवी है कि जब रसूले करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने लोगों को सदक़ा की रग़बत दिलाई तो हज़रत अ़ब्दुर्रहमान बिन औफ़ चार हज़ार दिरहम लाये और अर्ज़ किया या रसूलल्लाह मेरा कुल माल आठ हज़ार दिरहम था चार हज़ार तो राहे खुदा में हाज़िर है और चार हज़ार मैंने घर वालों के लिए रोक लिए हैं हुज़ूर ने फ़रमाया जो तुम ने दिया अल्लाह उसमें भी बरकत फ़रमाए और जो रोक लिया उसमें भी बरकत फ़रमाए। हुज़ूर की दुआ का यह असर हुआ कि उनका माल बहुत बढ़ा यहां तक कि जब उनकी वफ़ात हुई तो उन्होंने दो बीबियां छोड़ीं उन्हें आठवां हिस्सा मिला जिसकी मिक़दार एक लाख साठ हज़ार दिरहम थी। (फ़ा183) अबू अ़क़ील अंसारी एक साअ़ खजूरें लेकर हाज़िर हुए और उन्होंने बारगाहे रिसालत में अ़र्ज़ किया कि मैंने **(बक़िया सफ़हा 333 पर)**

فَلْيَضْحَكُوْا قَلِيْلًا وَّلْيَبْكُوْا كَثِيْرًا ۚ جَزَآءًۢ بِمَا كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ ﴿٨٢﴾ فَاِنْ رَّجَعَكَ اللّٰهُ اِلٰى طَآئِفَةٍ مِّنْهُمْ فَاسْتَاْذَنُوْكَ لِلْخُرُوْجِ فَقُلْ لَّنْ
تَخْرُجُوْا مَعِيَ اَبَدًا وَّلَنْ تُقَاتِلُوْا مَعِيَ عَدُوًّا ؕ اِنَّكُمْ رَضِيْتُمْ بِالْقُعُوْدِ اَوَّلَ مَرَّةٍ فَاقْعُدُوْا مَعَ الْخٰلِفِيْنَ ﴿٨٣﴾ وَلَا تُصَلِّ عَلٰٓى اَحَدٍ مِّنْهُمْ مَّاتَ
اَبَدًا وَّلَا تَقُمْ عَلٰى قَبْرِهٖ ؕ اِنَّهُمْ كَفَرُوْا بِاللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ وَمَاتُوْا وَهُمْ فٰسِقُوْنَ ﴿٨٤﴾ وَلَا تُعْجِبْكَ اَمْوَالُهُمْ وَاَوْلَادُهُمْ ؕ اِنَّمَا يُرِيْدُ اللّٰهُ اَنْ يُّعَذِّبَهُمْ
بِهَا فِي الدُّنْيَا وَتَزْهَقَ اَنْفُسُهُمْ وَهُمْ كٰفِرُوْنَ ﴿٨٥﴾ وَاِذَآ اُنْزِلَتْ سُوْرَةٌ اَنْ اٰمِنُوْا بِاللّٰهِ وَجَاهِدُوْا مَعَ رَسُوْلِهِ اسْتَاْذَنَكَ اُولُوا الطَّوْلِ مِنْهُمْ وَقَالُوْا
ذَرْنَا نَكُنْ مَّعَ الْقٰعِدِيْنَ ﴿٨٦﴾ رَضُوْا بِاَنْ يَّكُوْنُوْا مَعَ الْخَوَالِفِ وَطُبِعَ عَلٰى قُلُوْبِهِمْ فَهُمْ لَا يَفْقَهُوْنَ ﴿٨٧﴾ لٰكِنِ الرَّسُوْلُ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مَعَهٗ جٰهَدُوْا

फ़ल्–यज़्हकू क़लीलंव् वल्यब्कू कसीरन् जज़ाअम् बिमा कानू यक्सि–बून(82)फ़इर्–र–ज अ़–कल्लाहु इला ताइ–फ़तिम् मिन्हुम् फ़स्तअ्–ज़नू–क लिल्ख़ुरूजि फ़कुल् लन् तख़्रुजू मअि़–य अ–ब–दंव् व लन् तुक़ातिलू मअि़–य अ़दुव्वन् इन्नकुम् रज़ीतुम् बिल्क़ुअूदि अव्व–ल मर्रतिन् फ़क़्अुदू म–अ़ल् ख़ालिफ़ीन(83)व ला तुसल्लि अ़ला अ–ह़दिम् मिन्हुम् मा–त अ–ब–दंव् व ला तक़ुम् अ़ला क़ब्रिही इन्नहुम् क–फ़रू बिल्लाहि व रसूलिही व मातू व हुम् फ़ासिकून(84)व ला तुअ्जिब्–क अम्वालुहुम् व औलादुहुम् इन्नमा युरीदुल्लाहु अंय्यु–अ़ज़्ज़ि–बहुम् बिहा फ़िद्दुन्या व तज़्–ह–क़ अन्फ़ुसुहुम् व हुम् काफ़िरून(85)व इज़ा उन्ज़िलत् सू–रतुन् अन् आमिनू बिल्लाहि व जाहिदू म–अ़ रसूलि हिस्तअ्–ज़–न–क उलुत्तौलि मिन्हुम् व क़ालू ज़र्ना नकुम् म–अ़ल् क़ाअि़दीन(86) रज़ू बि–अंय्यकूनू मअ़ल्ख़वा–लिफ़ि व तुबि–अ़ अ़ला क़ुलूबिहिम् फ़हुम् ला यफ़्क़हून(87) लाकिनि –र्रसूलु वल्लज़ी–न आ–मनू म–अ़हू जा–हदू

तो उन्हें चाहिये कि थोड़ा हंसें और बहुत रोयें (फ़ा189) बदला उसका जो कमाते थे।(82)(फ़ा190) फिर ऐ महबूब (फ़ा191) अगर अल्लाह तुम्हें उन (फ़ा192) में से किसी गिरोह की तरफ़ वापस ले जाए और वह (फ़ा193) तुम से जिहाद की निकलने की इजाज़त मांगें तो तुम फ़रमाना कि तुम कभी मेरे साथ न चलो और हरगिज़ मेरे साथ किसी दुश्मन से न लड़ो तुम ने पहली दफ़ा बैठ रहना पसन्द किया तो बैठ रहो पीछे रह जाने वालों के साथ।(83)(फ़ा194) और उनमें से किसी की मय्यत पर कभी नमाज़ न पढ़ना और न उसकी क़ब्र पर खड़े होना बेशक अल्लाह और रसूल से मुन्किर हुए और फ़िस्क़ ही में मर गए।(84) (फ़ा195) और उनके माल या औलाद पर तअ़ज्जुब न करना अल्लाह यही चाहता है कि उसे दुनिया में उन पर वबाल करे और कुफ़्र ही पर उनका दम निकल जाए।(85) और जब कोई सूरत उतरे कि अल्लाह पर ईमान लाओ और उसके रसूल के हमराह जिहाद करो तो उनके मक़दूर वाले तुम से रुख़सत मांगते हैं और कहते हैं हमें छोड़ दीजिये कि बैठ रहने वालों के साथ हो लें।(86) उन्हें पसन्द आया कि पीछे रहने वाली औरतों के साथ हो जायें और उनके दिलों पर मोहर कर दी गई (फ़ा196) तो वह कुछ नहीं समझते।(87) (फ़ा197) लेकिन रसूल और जो उनके साथ ईमान लाये उन्होंने

(फ़ा189) यानी दुनिया में खुश होना और हंसना चाहे कितनी ही दराज़ मुद्दत के लिए हो मगर वह आख़िरत के रोने के मुक़ाबिल थोड़ा है क्योंकि दुनिया फ़ानी है और आख़िरत दायम और बाक़ी है (फ़ा190) यानी आख़िरत का रोना दुनिया में हंसने और ख़बीस अमल करने का बदला है हदीस शरीफ़ में है सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि अगर तुम जानते वह जो मैं जानता हूं तो थोड़ा हंसते और बहुत रोते (फ़ा191) ग़ज़वए तबूक के बाद (फ़ा192) मुतख़ल्लिफ़ीन (फ़ा193) अगर वह मुनाफ़िक़ जो तबूक में जाने से बैठ रहा था। (फ़ा194) औरतों बच्चों बीमारों और अपाहिजों के। **मसलाः** इससे साबित हुआ कि जिस शख़्स से मक्र व ख़दअ़ ज़ाहिर हो उससे इन्क़िताअ़ और अलाहदगी करना चाहिए और महज़ इस्लाम के मुद्दई होने से मुसाहबत व मुवाफ़क़त जायज़ नहीं होती इसी लिए अल्लाह तआ़ला ने अपने नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के साथ मुनाफ़िक़ीन के जिहाद में जाने को मना फ़रमा दिया आज कल जो लोग कहते हैं कि हर कलिमा गो को मिला लो और उसके साथ इत्तेहाद व इत्तेफ़ाक़ करो यह इस हुक्मे क़ुरआनी के बिल्कुल ख़िलाफ़ है (फ़ा195) इस आयत में सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को मुनाफ़िक़ीन के जनाज़े की नमाज़ और उनके दफ़न में शिरकत करने से मना फ़रमाया गया **मसलाः** इस आयत से साबित हुआ कि काफ़िर के जनाज़े की नमाज़ किसी हाल में जायज़ नहीं और काफ़िर की क़ब्र पर दफ़न व **(बक़िया सफ़हा 333 पर)**

بِاَمْوَالِهِمْ وَاَنْفُسِهِمْ ۭ وَاُولٰۗىِٕكَ لَهُمُ الْخَيْرٰتُ ۡ وَاُولٰۗىِٕكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ۝ اَعَدَّ اللّٰهُ لَهُمْ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ۭ ذٰلِكَ الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ ۝ وَجَاۗءَ الْمُعَذِّرُوْنَ مِنَ الْاَعْرَابِ لِيُؤْذَنَ لَهُمْ وَقَعَدَ الَّذِيْنَ كَذَبُوا اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ ۭ سَيُصِيْبُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ۝ لَيْسَ عَلَي الضُّعَفَاۗءِ وَلَا عَلَي الْمَرْضٰى وَلَا عَلَي الَّذِيْنَ لَا يَجِدُوْنَ مَا يُنْفِقُوْنَ حَرَجٌ اِذَا نَصَحُوْا لِلّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ ۭ مَا عَلَي الْمُحْسِنِيْنَ مِنْ سَبِيْلٍ ۭ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۝ وَّلَا عَلَي الَّذِيْنَ اِذَا مَآ اَتَوْكَ لِتَحْمِلَهُمْ قُلْتَ لَآ اَجِدُ مَآ اَحْمِلُكُمْ عَلَيْهِ ۠ تَوَلَّوْا وَّاَعْيُنُهُمْ تَفِيْضُ مِنَ الدَّمْعِ حَزَنًا اَلَّا يَجِدُوْا مَا يُنْفِقُوْنَ ۝ اِنَّمَا السَّبِيْلُ عَلَي الَّذِيْنَ يَسْتَاْذِنُوْنَكَ وَهُمْ اَغْنِيَاۗءُ ۚ رَضُوْا بِاَنْ يَّكُوْنُوْا مَعَ الْخَوَالِفِ ۙ وَطَبَعَ اللّٰهُ عَلٰي قُلُوْبِهِمْ فَهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ۝

बिअम्वालिहिम् व अन्फुसि–हिम् व उलाइ–क लहुमुल्ख़ैरातु व उलाइ–क हुमुल् मुफ़्लिहू न(88)अ–अ़द्दल्लाहु लहुम् जन्नातिन् तज्री मिन् तह़्तिहल् अन्हारु ख़ालि–दी–न फ़ीहा ज़ालिकल् फ़ौज़ुल् अ़ज़ीम(89)व जाअल् मुअ़ज़्ज़िरू–न मिनल् अअ़्राबि लियुअ्–ज़–न लहुम् व क़–अ–दल्लज़ी–न क–ज़बुल्ला–ह व रसू–लहू सयुसीबुल् लज़ी–न क–फ़रू मिन्हुम् अ़ज़ाबुन् अलीम(90)लै–स अ़–लज़्–ज़ु–अ़फ़ाइ व ला अ़–लल्मर्ज़ा व ला अ़–लल्लज़ी–न ला यजिदू–न मा युन्फ़िक़ू–न ह़–रजुन् इज़ा न–स़हू.लिल्लाहि व रसूलिही मा अ़लल्–मुह़्सिनी–न मिन् सबीलिन् वल्लाहु ग़फ़ूरुर्रह़ीम(91) व ला अ़–लल्ल–ज़ी–न इज़ा मा अतौ–क लि–तह़्मि–लहुम् क़ुल्–त ला अजिदु मा अह़्मि–लुकुम् अ़लैहि त–वल्लव्–व अअ़्–युनुहुम् तफ़ीज़ु मिनद्दम्अ़ि ह–ज़–नन् अल्ला यजिदू मा युन्फ़िक़ून(92)इन्–न मस्सबीलु अ–लल्लज़ी–न यस्तअ्ज़िनू–न–क व हुम् अग़्निया–उ रज़ू बि–अंय्यकूनू म–अ़ल्ख़वालिफ़ि व त़–ब–अ़ल्लाहु अ़ला क़ुलूबिहिम् फ़हुम् ला यअ़्–लमून(93)

अपने मालों जानों से जिहाद किया और उन्हीं के लिए भलाईयां हैं (फ़ा198) और यही मुराद को पहुंचे।(88) अल्लाह ने उनके लिए तैयार कर रखी हैं बहिश्तें जिनके नीचे नहरें रवां हमेशा उनमें रहेंगे यही बड़ी मुराद मिलनी है।(89) (रुकूअ. 17) और बहाने बनाने वाले गंवार आए (फ़ा199) कि उन्हें रुख़्सत दी जाए और बैठ रहे वह जिन्होंने अल्लाह व रसूल से झूठ बोला था (फ़ा200) जल्द उनमें के काफ़िरों को दर्दनाक अ़ज़ाब पहुंचेगा।(90) (फ़ा201) ज़ईफ़ों पर कुछ हरज नहीं (फ़ा202) और न बीमारों पर (फ़ा203) और न उन पर जिन्हें ख़र्च का मक़दूर न हो (फ़ा204) जब कि अल्लाह और रसूल के ख़ैर-ख़्वाह रहें (फ़ा205) नेकी वालों पर कोई राह नहीं (फ़ा206) और अल्लाह बख़्शने वाला मेहरबान है।(91) और न उन पर जो तुम्हारे हुज़ूर हाज़िर हों कि तुम उन्हें सवारी अता फ़रमाओ (फ़ा207) तुम से यह जवाब पायें कि मेरे पास कोई चीज़ नहीं जिस पर तुम्हें सवार करूं इस पर यूं वापस जायें कि उनकी आंखों से आंसू उबलते हों इस ग़म से कि ख़र्च का मक़दूर न पाया।(92)मुआख़ज़ा तो उनसे है जो तुम से रुख़्सत मांगते हैं और वह दौलतमन्द हैं(फ़ा208)उन्हें पसन्द आया कि औरतों के साथ पीछे बैठ रहें और अल्लाह ने उनके दिलों पर मुहर कर दी तो वह कुछ नहीं जानते।(93)(फ़ा209)

(फ़ा198) दोनों जहान की (फ़ा199) सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की ख़िदमत में जिहाद से रह जाने का उज़्र करने ज़ह्हाक का क़ौल है कि यह आ़मिर बिन तुफ़ैल की जमाअ़त थी उन्होंने सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से अ़र्ज़ किया कि या नबीयल्लाह अगर हम आप के साथ जिहाद में जायें तो क़बीला तय के अ़रब हमारी बीबियों बच्चों और जानवरों को लूट लेंगे। हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया मुझे अल्लाह ने तुम्हारे हाल से ख़बरदार किया है और वह मुझे तुम से बे नियाज़ करेगा अ़म्र बिन अ़ला ने कहा कि उन लोगों ने उज़्रे बातिल बना कर पेश किया था। (फ़ा200) यह दूसरे गरोह का हाल है जो बग़ैर किसी उज़्र के बैठ रहे यह मुनाफ़िक़ीन थे इन्होंने ईमान का दावा झूठा किया था (फ़ा201) दुनिया में क़त्ल होने का और आख़िरत में जहन्नम का (फ़ा202) बातिल वालों का ज़िक्र फ़रमाने के बाद सच्चे उज़्र वालों के मुतअ़ल्लिक़ फ़रमाया कि इन पर से जिहाद की फ़र्ज़ियत साक़ित है। यह कौन लोग हैं उनके चन्द तबक़े बयान फ़रमाये पहले ज़ईफ़ जैसे कि बूढ़े बच्चे औरतें और वह शख़्स भी उन्हीं में दाख़िल है जो पैदाईशी कमज़ोर व ज़ईफ़ नहीफ़ नाकारा हो (फ़ा203) यह दूसरा तबक़ा है जिसमें अन्धे लंगड़े अपाहिज भी दाख़िल हैं। (फ़ा204) और सामाने जिहाद न कर सकें यह लोग **(बक़िया सफ़हा 333 पर)**

(बक़िया सफ़्हा 303 का) तुम्हें अपनी क़िल्लत व बे सामानी और उनकी कसरत और सामान का हाल मालूम होता तो ज़रूर तुम हैबत व अन्देशा से मीआ़द में इख़्तिलाफ़ करते (फ़ा76) यानी इस्लाम और मुस्लिमीन की नुसरत और दीन का एज़ाज़ और दुश्मनाने दीन की हलाकत इस लिए तुम्हें उसने बे मीआ़द ही जमा कर दिया (फ़ा77) यानी हुज्जते ज़ाहिरा क़ायम होने और इबरत का मुआ़इना कर लेने के बाद (फ़ा78) मुहम्मद बिन इसहाक़ ने कहा कि हलाक से कुफ़्र हयात से ईमान मुराद है माना यह हैं कि जो कोई काफ़िर हो उसको चाहिये कि पहले हुज्जत क़ायम करे और ऐसे ही जो ईमान लाये वह यक़ीन के साथ ईमान लाये और हुज्जत व बुरहान से जान ले कि यह दीने हक़ है और बदर का वाक़िआ़ आयाते वाज़ेहा में से है उसके बाद जिसने कुफ़्र इख़्तियार किया वह मुकाबिर है अपने नफ़्स को मुग़ालता देता है (फ़ा79) यह अल्लाह तआ़ला की निअ़मत थी कि नबीए करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को कुफ़्फ़ार की तादाद थोड़ी दिखाई गई और आपने अपना यह ख़्वाब असहाब से बयान किया इससे उनकी हिम्मतें बढ़ीं और अपने ज़ोअ़्फ़ व कमज़ोरी का अन्देशा न रहा और उन्हें दुश्मन पर जुरअत पैदा हुई और क़ल्ब क़वी हुए अम्बिया का ख़्वाब हक़ होता है आपको कुफ़्फ़ार दिखाये गए थे और ऐसे कुफ़्फ़ार जो दुनिया से बे-ईमान जायें और कुफ़्र ही पर उनका ख़ातमा हो वह थोड़े ही थे क्योंकि जो लश्कर मुक़ाबिल आया था उसमें कसीर लोग वह थे जिन्हें अपनी ज़िन्दगी में ईमान नसीब हुआ और ख़्वाब में क़िल्लत की तअ़बीर ज़ोअ़्फ़ से है चुनांचे अल्लाह तआ़ला ने मुसलमानों को ग़ालिब फ़रमा कर कुफ़्फ़ार का ज़ोअ़्फ़ ज़ाहिर कर दिया (फ़ा80) और सिबात व फ़रार में मुतरद्दिद रहते (फ़ा81) तुम को बुज़दिली और तरद्दुद और बाहमी इख़्तिलाफ़ से (फ़ा82) ऐ मुसलमानो (फ़ा83) हज़रत इब्ने मसऊद रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने फ़रमाया कि वह हमारी निगाहों में इतने कम जचे कि मैंने अपने बराबर वाले एक शख़्स से कहा क्या तुम्हारे गुमान में काफ़िर सत्तर होंगे उसने कहा कि मेरे ख़्याल में सौ हैं और थे हज़ार (फ़ा84) यहां तक कि अबू जहल ने कहा कि उन्हें रस्सियों में बांध लो गोया कि वह मुसलमानों की जमाअ़त को इतना क़लील देख रहा था कि मुक़ाबला करने और जंग आज़मा होने के लाइक़ भी ख़्याल नहीं करता था और मुशरिकीन को मुसलमानों की तादाद थोड़ी दिखाने में यह हिकमत थी कि मुशरिकीन मुक़ाबला पर जम जायें भाग न पड़ें और यह बात इब्तेदा में थी मुक़ाबला होने के बाद उन्हें मुसलमान बहुत ज़्यादा नज़र आने लगे (फ़ा85) यानी इस्लाम का ग़लबा और मुसलमानों की नुसरत और शिर्क का इबताल और मुशरिकीन की ज़िल्लत और रसूले करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के मोअ़जेज़े का इज़्हार कि जो फ़रमाया था वह हुआ कि जमाअ़ते क़लीला लश्करे गिरां पर फ़तहयाब हुई।

(बक़िया सफ़्हा 304 का) और हमारी हैबत हमेशा बाक़ी रहे लेकिन ख़ुदा को कुछ और ही मंज़ूर था जब वह बदर में पहुंचे तो जामे शराब की जगह उन्हें साग़रे मौत पीना पड़ा और कनीज़ों की साज़ो नवा की जगह रोने वालियां उन्हें रोईं अल्लाह तआ़ला मोमिनीन को हुक्म फ़रमाता है कि इस वाक़िआ़ से इबरत हासिल करें और समझ लें कि फ़ख़्र व रिया और ग़ुरूर व तकब्बुर का अन्जाम ख़राब है बन्दे को इख़्लास और इताअ़ते ख़ुदा व रसूल चाहिये। (फ़ा90) और रसूले करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की अ़दावत और मुसलमानों की मुख़ालफ़त में जो कुछ उन्होंने किया था उस पर उनकी तारीफ़ें कीं और उन्हें ख़बीस आमाल पर क़ाइम रहने की रग़बत दिलाई और जब क़ुरैश ने बदर में जाने पर इत्तेफ़ाक़ कर लिया तो उन्हें याद आया कि उनके और क़बीला बनी बिकर के दर्मियान अ़दावत है मुमकिन था कि वह यह ख़्याल करके वापसी का क़स्द करते यह शैतान को मंजूर न था इस लिए उसने यह फ़रेब किया कि वह सुराक़ा बिन मालिक बिन जअ़शिम बनी कनाना के सरदार की सूरत में नुमूदार हुआ और एक लश्कर और एक झन्डा साथ लेकर मुशरिकीन से आ मिला और उनसे कहने लगा कि मैं तुम्हारा ज़िम्मेदार हूं आज तुम पर कोई ग़ालिब आने याला नहीं जब मुसलमानों और काफ़िरों के दोनों लश्कर सफ़ आरा हुए और रसूले करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने एक मुश्त ख़ाक मुशरिकीन के मुंह पर मारी और वह पीठ फेर कर भागे और हज़रत जिबरील इबलीस लईन की तरफ़ बढ़े जो सुराक़ा की शक्ल में हारिस बिन हश्शाम का हाथ पकड़े हुए था वह हाथ छुड़ा कर मअ़ अपने गरोह के भागा हारिस पुकारता रह गया सुराक़ा सुराक़ा तुम तो हमारे ज़ामिन हुए थे कहां जाते हो कहने लगा मुझे वह नज़र आता है जो तुम्हें नज़र नहीं आता इस आयत में इस वाक़िआ़ का बयान है (फ़ा91) और अमन की जो ज़िम्मेदारी ली थी उससे सुबुक-दोश होता हूं इस पर हारिस बिन हश्शाम ने कहा कि हम तेरे भरोसा पर आये थे तू इस हालत में हमें रुसवा करेगा कहने लगा (फ़ा92) यानी लश्करे मलायका (फ़ा93) कहीं वह मुझे हलाक न करदे जब कुफ़्फ़ार को हज़ीमत हुई और वह शिकस्त खाकर मक्का मुकर्रमा पहुंचे तो उन्होंने यह मशहूर किया कि हमारी शिकस्त व हज़ीमत का बाइस सुराक़ा हुआ। सुराक़ा को यह ख़बर पहुंची तो उसे हैरत हुई और उसने कहा यह लोग क्या कहते हैं न मुझे इनके आने की ख़बर न जाने की हज़ीमत हो गई जब मैंने सुना है तो क़ुरैश ने कहा कि तू फ़लां फ़लां रोज़ हमारे पास आया था उसने क़सम खाई कि यह ग़लत है तब उन्हें मालूम हुआ कि वह शैतान था (फ़ा94) मदीना के (फ़ा95) यह मक्का मुकर्रमा के कुछ लोग थे जिन्होंने कलिमए इस्लाम तो पढ़ लिया था मगर अभी तक उनके दिलों में शक व तरद्दुद बाक़ी था जब कुफ़्फ़ारे क़ुरैश सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से जंग के लिए निकले यह भी उनके साथ बदर में पहुंचे वहां जाकर मुसलमानों को क़लील देखा तो शक और बढ़ा और मुरतद हो गए और कहने लगे (फ़ा96) कि बावजूद अपनी ऐसी क़लील तादाद के ऐसे लश्करे गिराँ के मुक़ाबिल हो गए अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है (फ़ा97) और अपना काम उसके सपुर्द करदे और उसके फ़ज़्ल व एहसान पर मुतमईन हो (फ़ा98) उसका हाफ़िज़ व नासिर है।

(बक़िया सफ़हा 305 का) बनी कुरैज़ा के यहूदियों के हक़ में नाज़िल हुईं जिनका रसूले करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से अहद था कि वह आप से न लड़ेंगे न आपके दुश्मनों की मदद करेंगे उन्होंने अहद तोड़ा और मुशरिकीने मक्का ने जब रसूले करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से जंग की तो उन्होंने हथियारों से उनकी मदद की फिर हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से मअ़ज़रत की कि हम भूल गए थे और हम से कुसूर हुआ फिर दोबारा अहद किया और उसको भी तोड़ा अल्लाह तआ़ला ने उन्हें सब जानवरों से बदतर बताया क्योंकि कुफ़्फ़ार सब जानवरों से बदतर हैं और बावजूद कुफ़्र के अहद शिकन भी हों तो और भी ख़राब। (फ़ा107) ख़ुदा से न अहद शिकनी के ख़राब नतीजे से और न उससे शरमाते हैं बावजूदेकि अहद शिकनी हर आ़क़िल के नज़दीक शर्मनाक जुर्म है और अहद शिकनी करने वाला सब के नज़दीक बे ऐतबार हो जाता है जब उनकी बे ग़ैरती इस दर्जा पहुंच गई तो यक़ीनन वह जानवरों से बदतर हैं। (फ़ा108) और उनकी हिम्मतें तोड़ दो और उनकी जमाअ़तें मुन्तशिर कर दो। (फ़ा109) और वह पन्द पज़ीर हों।

(बक़िया सफ़हा 306 का) आप पर ईमान लाये और उन्होंने आपका इत्तेबाअ़ किया तो यह हालत बदल गई और दिलों से देरीना अ़दावतें और कीने दूर हुए और ईमानी मुहब्बतें पैदा हुईं यह रसूले करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम का रौशन मोअ़जेज़ा है

(बक़िया सफ़हा 307 का) हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ ने अर्ज़ किया कि यह आपकी क़ौम व क़बीले के लोग हैं मेरी राय में इन्हें फ़िदया लेकर छोड़ दिया जाए इससे मुसलमानों को क़ुव्वत भी पहुंचेगी और क्या अ़जब है कि अल्लाह तआ़ला इन लोगों को इस्लाम नसीब करे। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने फ़रमाया कि इन लोगों ने आपकी तकज़ीब की आपको मक्का मुकर्रमा में न रहने दिया यह कुफ़्र के सरदार व सरपरस्त हैं इनकी गर्दनें उड़ाइये अल्लाह तआ़ला ने आपको फ़िदया से ग़नी किया है अली मुर्तज़ा को अ़क़ील पर और हज़रत हमज़ा को अ़ब्बास पर और मुझे मेरे क़राबती पर मुक़र्रर कीजिये कि उनकी गर्दनें मार दें आख़िरकार फ़िदया ही लेने की राय क़रार पाई और जब फ़िदया लिया गया तो यह आयत नाज़िल हुई (फ़ा125) यह ख़िताब मोमिनीन को है और माल से फ़िदया मुराद है (फ़ा126) यानी तुम्हारे लिए आख़िरत का सवाब जो क़त्ले कुफ़्फ़ार व एज़ाज़े इस्लाम पर मुरत्तब है। हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा ने फ़रमाया कि यह हुक्म बदर में था जब कि मुसलमान थोड़े थे फिर जब मुसलमानों की तादाद ज़्यादा हुई और वह फ़ज़्ले इलाही से क़वी हुए तो क़ैदियों के हक़ में नाज़िल हुई *फ़इम्मा मन्नम् बअ़्दु व इम्मा फ़िदाअन्* और अल्लाह तआ़ला ने अपने नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम और मोमिनीन को इख़्तियार दिया कि चाहे काफ़िरों को क़त्ल करें चाहे उन्हें ग़ुलाम बनायें चाहे फ़िदया लें चाहे आज़ाद करें बदर के क़ैदियों का फ़िदया चालीस औक़िया सोना फ़ी कस था जिसके सोलह सौ दिरहम हुए (फ़ा127) यह कि इज्तेहाद पर अमल करने वाले से मुआख़ज़ा न फ़रमाएगा और यहां सहाबा ने इज्तेहाद ही किया था और उनकी फ़िक्र में यही बात आई थी कि काफ़िरों को ज़िन्दा छोड़ देने में उनके इस्लाम लाने की उम्मीद है और फ़िदया लेने में दीन को तक़वियत होती है और इस पर नज़र नहीं की गई कि क़त्ल में इज़्ज़ते इस्लाम और तहदीदे कुफ़्फ़ार है। **मसलाः** सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम का इस दीनी मुआ़मला में सहाबा की राय दरियाफ़्त फ़रमाना मशरूईयते इज्तेहाद की दलील है या किताबुम-मिनल्लाह सबक़ से वह मुराद है जो उसने लौहे महफ़ूज़ में लिखा कि अहले बदर पर अ़ज़ाब न किया जाएगा (फ़ा128) जब ऊपर की आयत नाज़िल हुई तो असहाबे नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने जो फ़िदया लिए थे उनसे हाथ रोक लिए इस पर यह आयते करीमा नाज़िल हुई और बयान फ़रमाया गया कि तुम्हारी ग़नीमतें हलाल की गईं उन्हें खाओ सहीहैन की हदीस में है कि अल्लाह तआ़ला ने हमारे लिए ग़नीमतें हलाल कीं हम से पहले किसी के लिए हलाल न की गई थीं (फ़ा129) **शाने नुज़ूलः** यह आयत हज़रत अब्बास बिन अब्दुल मुत्तलिब रज़ियल्लाहु अ़न्हु के बारे में नाज़िल हुई है जो सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के चचा हैं यह कुफ़्फ़ारे क़ुरैश के उन दस सरदारों में से थे जिन्होंने जंगे बदर में लश्करे कुफ़्फ़ार के खाने की ज़िम्मेदारी ली थी और यह उस ख़र्च के लिए बीस औक़िया सोना साथ लेकर चले थे (एक औक़िया चालीस दिरहम का होता है) लेकिन उनके ज़िम्मे जिस दिन खिलाना तजवीज़ हुआ था ख़ास उसी रोज़ जंग का वाक़िआ़ पेश आया और क़िताल में खाने खिलाने की फ़ुरसत व मोहलत न मिली तो यह बीस औक़िया सोना उनके पास बच रहा जब वह गिरिफ़्तार हुए और यह सोना उनसे ले लिया गया तो उन्होंने दरख़्वास्त की कि यह सोना उनके फ़िदया में महसूब कर लिया जाए मगर रसूले करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने इन्कार फ़रमाया इरशाद किया जो चीज़ हमारी मुख़ालफ़त में सर्फ़ करने के लिये लाए थे वह न छोड़ी जाएगी और हज़रत अ़ब्बास पर उनके दोनों भतीजों अ़क़ील बिन अबू तालिब और नौफ़ल बिन हारिस के फ़िदये का बार भी डाला गया तो हज़रत अ़ब्बास ने अ़र्ज़ किया या मुहम्मद (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) तुम मुझे इस हाल में छोड़ोगे कि मैं बाक़ी उम्र क़ुरैश से मांग मांग कर बसर किया करूं तो हुज़ूर ने फ़रमाया कि फिर वह सोना कहां है जिसको तुम्हारे मक्का मुकर्रमा से चलते वक़्त तुम्हारी बीबी उम्मुल फ़ज़्ल ने दफ़न किया है और तुम उनसे कह कर आये हो कि ख़बर नहीं है मुझे क्या हादसा पेश आये, अगर मैं जंग में काम आ जाऊं तो यह तेरा है और अब्दुल्लाह और उबैदुल्लाह का और फ़ज़्ल और क़ुसम का (सब उनके बेटे थे) हज़रत अ़ब्बास ने अ़र्ज़ किया कि आपको कैसे मालूम हुआ हुज़ूर ने फ़रमाया कि मुझे मेरे रब ने ख़बरदार किया है इस पर हज़रत अब्बास ने अर्ज़ किया मैं गवाही देता हूं बेशक आप सच्चे हैं और मैं गवाही देता हूं कि अल्लाह के सिवा कोई मअ़बूद नहीं और बेशक आप उसके बन्दे और रसूल हैं। मेरे इस राज़ पर अल्लाह के सिवा कोई मुत्तलअ़ न था और हज़रत अ़ब्बास ने अपने भतीजों अक़ील व नौफ़ल को हुक्म दिया व ह भी इस्लाम लायें (फ़ा130) ख़ुलूसे ईमान और सेहते नीयत से।

(बक़िया सफ़हा 308 का) हूं और उनके तमव्वुल का यह हाल हुआ कि उनके बीस ़गुलाम थे सब के सब ताजिर और उन में सब से कम सरमाया जिस का था उसका बीस हज़ार का था (फ़ा133) वह क़ैदी (फ़ा134) तुम्हारी बैअ़त से फिर कर और कुफ़्र इख़्तियार करके। (फ़ा135) जैसा कि वह बदर में देख चुके हैं कि क़त्ल हुए गिरिफ़्तार हुए आईन्दा भी अगर उनके अतवार वही रहे तो उन्हें उसी का उम्मीदवार रहना चाहिए (फ़ा136) और उसी के रसूल की मुहब्बत में उन्होंने अपने (फ़ा137) यह मुहाजिरीन अव्वलीन हैं (फ़ा138) मुसलमानों की और उन्हें अपने मकानों में ठहराया यह अंसार हैं उन मुहाजरीन और अन्सार दोनों के लिए इरशाद होता है। (फ़ा139) मुहाजिर अंसार के और अन्सार मुहाजिर के यह वरासत आयत *व उलुवल अरहामि बअ़्ज़िनन् औला बि-बअ़्कज़न्* से मन्सूख़ हो गई (फ़ा140) और मक्का मुकर्रमा ही में मुक़ीम रहे (फ़ा141) उनके और मोमिनीन के दर्मियान वरासत नहीं इस आयत से साबित हुआ कि मुसलमानों को कुफ़्फ़ार की मवालात व मवारेसत से मना किया गया और उन से जुदा रहने का हुक्म दिया गया और मुसलमानों पर बाहम मेल जोल रखना लाज़िम किया गया (फ़ा142) यानी अगर मुसलमानों में बाहम तआ़वुन व तनासुर न हो और वह एक दूसरे के मददगार होकर एक कुव्वत न बन जायें तो कुफ़्फ़ार क़वी होंगे और मुसलमान ज़ईफ़ और यह बड़ा फ़ित्ना व फ़साद है (फ़ा143) पहली आयत में मुहाजिरीन व अंसार के बाहमी तअ़ल्लुक़ात और उन में से हर एक के दूसरे के मुईन व नासिर होने का बयान था इस आयत में इन दोनों के ईमान की तस्दीक़ और उनके मौरिदे रहमते इलाही होने का ज़िक्र है। (फ़ा144) और तुम्हारे ही हुक्म में हैं ऐ मुहाजरीन व अंसार मुहाजरीन के कई तबक़े हैं एक वह हैं जिन्होंने पहली मर्तबा मदीना तय्येबा को हिजरत की उन्हें मुहाजरीने अव्वलीन कहते हैं कुछ वह हज़रात हैं जिन्होंने पहले हब्शा की तरफ़ हिजरत की फिर मदीना तय्येबा की तरफ़ उन्हें असहाबुल हिजरतैन कहते हैं बाज़ हज़रात वह हैं जिन्होंने सुलह हुदैबिया के बाद फ़तहे मक्का से क़बल हिजरत की यह असहाबे हिजरते सानिया कहलाते हैं पहली आयत में मुहाजरीन अव्वलीन का ज़िक्र है और इस आयत में असहाबे हिजरते सानिया का (फ़ा145) इस आयत से तवारुस बिलहिजरत मन्सूख़ किया गया और ज़विल अरहाम की वरासत साबित हुई।

(बक़िया सफ़हा 309 का) तो आपने तीस या चालीस आयतें इस सूरते मुबारका की तिलावत फ़रमाईं फिर फ़रमाया मैं चार हुक्म लाया हूं (1) इस साल के बाद कोई मुशरिक कअ़्बा मुअ़ज़्ज़मा के पास न आये (2) कोई शख़्स बरहना होकर कअ़्बा मुअ़ज़्ज़मा का तवाफ़ न करे (3) जन्नत में मोमिन के सिवा कोई दाख़िल न होगा (4) जिसका रसूले करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के साथ अहद है वह अहद अपनी मुद्दत तक रहेगा और जिसकी मुद्दत मुअ़य्यन नहीं है उसकी मीआ़द चार माह पर तमाम हो जाएगी। मुशरिकीन ने यह सुनकर कहा कि ऐ अली अपने चचा के फ़रज़न्द (यानी सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) को ख़बर दे दीजिये कि हमने अहद पसे पुश्त फेंक दिया हमारे उनके दर्मियान कोई अहद नहीं है बजुज़ नेज़ा बाज़ी और तैग़ ज़नी के इस वाक़िआ़ में ख़िलाफ़त हज़रत सिद्दीक़ की तरफ़ एक लतीफ़ इशारा है कि हुज़ूर ने हज़रत अबू बकर को तो अमीरे हज बनाया और हज़रत अ़ली मुर्तज़ा को उनके पीछे सूरह बराअ़त पढ़ने के लिए भेजा तो हज़रत अबू बकर इमाम हुए और हज़रत अ़ली मुर्तज़ा मुक़तदी इससे हज़रत अबू बकर की तक़दीम हज़रत अली मुर्तज़ा पर साबित हुई (फ़ा3) और बावजूद इस मोहलत के उसकी गिरिफ़्त से नहीं बच सकते (फ़ा4) दुनिया में क़त्ल के साथ और आख़िरत में अ़ज़ाब के साथ (फ़ा5) हज को हज्जे अकबर फ़रमाया इस लिए कि उस ज़माना में उमरा को हज्जे असग़र कहा जाता था और एक क़ौल यह है कि उस हज को हज्जे अकबर इस लिए कहा गया कि उस साल रसूले करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने हज फ़रमाया था और चूंकि यह जुमअ़ः को वाक़ेअ़् हुआ था इस लिए मुसलमान उस हज को जो रोज़े जुमअ़ः हो हज्जे विदाअ़् का मुज़क्किर जान कर हज्जे अकबर कहते हैं (फ़ा6) कुफ़्र व उज़्र से (फ़ा7) ईमान लाने और तौबा करने से (फ़ा8) यह वईद अ़ज़ीम है और इस में यह एअ़्लाम है कि अल्लाह तआ़ला अ़ज़ाब नाज़िल करने पर क़ादिर है (फ़ा9) और इसको उसकी शर्तों के साथ पूरा किया यह लोग बनी ज़मुरा थे जो किनाना का एक क़बीला है और उनकी मुद्दत के नौ महीने बाक़ी रहे थे।

(बक़िया सफ़हा 312 का) में भी कई क़ौल हैं एक तो यह कि आबाद करने से मस्जिद का बनाना बुलन्द करना मरम्मत करना मुराद है काफ़िर को इससे मना किया जायेगा दूसरा क़ौल यह है कि मस्जिद आबाद करने से इस में दाख़िल होना बैठना मुराद है। (फ़ा39) और बुत परस्ती का इक़रार करके यानी यह दोनों बातें किस तरह जमा हो सकती हैं कि आदमी काफ़िर भी हो और ख़ास इस्लामी और तौहीद के इबादत ख़ाना को आबाद भी करे। (फ़ा40) क्योंकि हालते कुफ़्र के आमाल मक़बूल नहीं न मेहमानदारी न हाजियों की ख़िदमत न क़ैदियों का रिहा कराना इस लिए कि काफ़िर का कोई फ़ेअ़्ल अल्लाह के लिए तो होता नहीं लिहाज़ा उसका अ़मल सब अकारत है और अगर वह उसी कुफ़्र पर मर जाये तो जहन्नम में उनके लिए हमेशगी का अ़ज़ाब है (फ़ा41) इस आयत में यह बयान किया गया कि मस्जिदों के आबाद करने के मुस्तहिक़ मोमिनीन हैं मस्जिदों के आबाद करने में यह उमूर भी दाख़िल हैं झाडू देना सफ़ाई करना रौशनी करना और मस्जिदों को दुनिया की बातों से और ऐसी चीज़ों से महफ़ूज़ रखना जिनके लिए वह नहीं बनाई गईं। मस्जिदें इबादत करने और ज़िक्र करने के लिए बनाई गई हैं और इल्म का दर्स भी ज़िक्र में दाख़िल है (फ़ा42) यानी किसी की रज़ा को रज़ाए इलाही पर किसी अन्देशा से भी मुक़द्दम नहीं करते यही मानी हैं अल्लाह से डरने और ग़ैर से न डरने के। (फ़ा43) मुराद यह है कि कुफ़्फ़ार को मोमिनीन से कुछ निस्बत नहीं न उनके आमाल को इनके आमाल से क्योंकि काफ़िर के आमाल रायगां हैं ख़्वाह वह हाजियों के लिए सबील लगायें या मस्जिदे हराम की ख़िदमत करें उनके आमाल को मोमिन के आमाल के बराबर क़रार देना ज़ुल्म है। **शाने नुज़ूलः** रोज़े बदर जब हज़रत अ़ब्बास गिरिफ़्तार होकर आए तो उन्होंने असहाबे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से कहा कि तुम को इस्लाम और हिजरत व जिहाद में सबक़त हासिल है तो हम को भी मस्जिदे हराम की ख़िदमत और हाजियों के लिए सबीलें लगाने का शरफ़ हासिल है इस पर यह आयत

नाज़िल हुई और आगाह किया गया कि जो अ़मल ईमान के साथ न हों वह बेकार हैं। (फ़ा44) दूसरों से (फ़ा45) और उन्हीं को दुनिया व आख़िरत की सआ़दत मिली (फ़ा46) और यह आला तरीन बशारत है क्योंकि मालिक की रहमत व रज़ा बन्दे का सबसे बड़ा मक़सद और प्यारी मुराद है।

(बक़िया सफ़हा 313 का) मसरूफ़ हो गए तो भागे हुए लश्कर ने उसको ग़नीमत समझा और तीरों की बारिश शुरू कर दी और तीर-अन्दाज़ी में वह बहुत महारत रखते थे नतीजा यह हुआ कि इस हंगामा में मुसलमानों के क़दम उखड़ गए लश्कर भाग पड़ा और सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के पास सिवाए हुज़ूर के चचा हज़रत अ़ब्बास और आप के इब्ने अ़म अबू सुफ़ियान बिन हरब के और कोई बाक़ी न रहा हुज़ूर ने उस वक़्त अपनी सवारी को कुफ़्फ़ार की तरफ़ आगे बढ़ाया और हज़रत अब्बास को हुक्म दिया कि वह बुलन्द आवाज़ से अपने असहाब को पुकारें उनके पुकारने से वह लोग लब्बैक लब्बैक कहते हुए पलट आये और कुफ़्फ़ार से जंग शुरू हो गई जब लड़ाई ख़ूब गर्म हुई हुज़ूर ने अपने दस्ते मुबारक में संग रेज़े लेकर कुफ़्फ़ार के मुंहों पर मारे और फ़रमाया रब्बे मुहम्मद की क़सम भाग निकले संगरेज़ों का मारना था कि कुफ़्फ़ार भाग पड़े और रसूले करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने उनकी ग़नीमतें मुसलमानों को तक़सीम फ़रमा दीं। इन आयतों में इस वाक़िआ़ का बयान है। (फ़ा51) और तुम वहां न ठहर सके (फ़ा52) कि इत्मीनान के साथ अपनी जगह क़ायम रहे (फ़ा53) कि हज़रत अब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हु के पुकारने से नबीए करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की ख़िदमत में वापस आये

(बक़िया सफ़हा 314 का) तश्बीह के और नसारा हुलूल के मोअ़्तक़िद हैं तो वह किस तरह अल्लाह पर ईमान लाने वाले हो सकते हैं ऐसे ही यहूद में से जो हज़रत उज़ैर को और नसारा हज़रत मसीह को ख़ुदा का बेटा कहते हैं तो इनमें से कोई भी अल्लाह पर ईमान लाने वाला न हुआ। इसी तरह जो एक रसूल की तकज़ीब करे वह अल्लाह पर ईमान लाने वाला नहीं यहूद व नसारा बहुत अम्बिया की तकज़ीब करते हैं लिहाज़ा वह अल्लाह पर ईमान लाने वालों में नहीं। **शाने नुज़ूलः** मुजाहिद का क़ौल है कि यह आयत उस वक़्त नाज़िल हुई जबकि नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को रोम से क़िताल करने का हुक्म दिया गया और इसी के नाज़िल होने के बाद ग़ज़वए तबूक हुआ कलबी का क़ौल है कि यह आयत यहूद के क़बीला क़ुरैज़ा और नुज़ैर के हक़ में नाज़िल हुई सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने उनसे सुलहमन्ज़ूर फ़रमाई और यही पहला जिज़्या है जो अहले इस्लाम को मिला और पहली ज़िल्लत है जो कुफ़्फ़ार को मुसलमानों के हाथ से पहुंची। (फ़ा62) क़ुरआन व हदीस में और बाज़ मुफ़स्सिरीन का क़ौल है कि मानी यह हैं कि तौरेत व इन्जील के मुताबिक़ अमल नहीं करते उनकी तहरीफ़ करते हैं और अहकाम अपने दिल से गढ़ते हैं (फ़ा63) इस्लाम दीने इलाही (फ़ा64) मुआ़हिद अहले किताब से जो ख़िराज लिया जाता है उसका नाम जिज़्या है मसाइल यह जिज़्या नक़्द लिया जाता है इसमें उधार नहीं मसला जिज़्या देने वाले को ख़ुद हाज़िर होकर देना चाहिए। **मसलाः** पयादा पालेकर हाज़िर हो खड़े होकर पेश करे **मसलाः** क़बूले जिज़्या में तुर्क व हिन्दू वग़ैरह अहले किताब के साथ मुलहिक़ हैं सिवाए मुशरिकीने अ़रब के कि उनसे जिज़्या क़बूल नहीं। **मसलाः** इस्लाम लाने से जिज़्या साक़ित हो जाता है हिकमत जिज़्या मुक़र्रर करने की यह है कि कुफ़्फ़ार को मोहलत दी जाये कि ताकि वह इस्लाम के महासिन और दलायल की कुव्वत देखें और कुतुबे क़दीमा में सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की ख़बर और हुज़ूर की नअ़त व सिफ़त देख कर मुशर्रफ़ ब-इस्लाम होने का मौक़ा पायें (फ़ा65) अहले किताब की बे दीनी का जो ऊपर ज़िक्र फ़रमाया गया यह उसकी तफ़सील है कि वह अल्लाह की जनाब में ऐसे फ़ासिद एतेक़ाद रखते हैं और मख़्लूक़ को अल्लाह का बेटा बना कर पूजते हैं। **शाने नुज़ूलः** रसूले करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की ख़िदमत में यहूद की एक जमाअ़त आई वह लोग कहने लगे कि हम आपका किस तरह इत्तेबाअ़ करें आपने हमारा क़िबला छोड़ दिया और आप हज़रत उज़ैर को ख़ुदा का बेटा नहीं समझते इस पर यह आयत नाज़िल हुई (फ़ा66) जिन पर न कोई दलील न बुरहान और फिर अपने जहल से इस बातिल सरीह के मोअ़्तक़िद भी हैं (फ़ा67) और अल्लाह तआ़ला की वहदानियत पर हुज्जतें क़ायम होने और दलीलें वाज़ेह होने के बावजूद इस कुफ़्र में मुब्तला होते हैं।

(बक़िया सफ़हा 315 का) जबकि अल्लाह तआ़ला ने अहबार और रहबान की हिर्से माल का ज़िक्र फ़रमाया तो मुसलमानों को माल जमा करने और उसके हुक़ूक़ न अदा करने से हज़्र दिलाया हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अ़न्हु से मरवी है कि जिस माल की ज़कात दी गई वह कन्ज़ नहीं ख़्वाह दफ़ीना ही हो और जिस की ज़कात न दी गई वह कन्ज़ है जिसका ज़िक्र क़ुरआन में हुआ कि उसके मालिक को उससे दाग़ दिया जायेगा रसूले करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से असहाब ने अर्ज़ किया कि सोने चांदी का तो यह हाल मालूम हुआ फिर कौनसा माल बेहतर है जिसको जमा किया जाये फ़रमाया ज़िक्र करने वाली ज़बान और शुक्र करने वाला दिल और नेक बीबी जो ईमानदार की उसके ईमान पर मदद करे यानी परहेज़गार हो कि उसकी सोहबत से ताअ़त व इबादत का शौक़ बढ़े। (रिवायते तिर्मिज़ी) **मसलाः** माल का जमा करना मुबाह है मज़मूम नहीं जब कि उसके हुक़ूक़ अदा किये जायें हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ और हज़रत तलहा वग़ैरह असहाब मालदार थे और जो असहाब कि जमा माल से नफ़रत रखते थे वह उन पर ऐतराज़ न करते थे (फ़ा78) और शिद्दते हरारत से सफ़ेद हो जाएगा (फ़ा79) जिस्म के तमाम अतराफ़ व जवानिब और कहा जाएगा (फ़ा80) यहां यह बयान फ़रमाया गया कि अहकामे शरअ़ की बिना क़मरी महीनों पर है जिन का हिसाब चांद से है (फ़ा81) यहां अल्लाह की किताब से या लौहे महफ़ूज़ मुराद है या क़ुरआन या वह हुक्म जो उसने अपने बन्दों पर लाज़िम किया (फ़ा82) तीन मुत्तसिल ज़ीक़अ़दा ज़िलहिज्जा मुहर्रम और एक जुदा रजब अरब लोग ज़मानए जाहिलियत में भी इन महीनों की ताज़ीम करते थे और इनमें क़िताल हराम जानते थे इस्लाम में इन महीनों की हुरमत व अज़मत और ज़्यादा की गई।

(बक़िया सफ़हा 316 का) हलाल जानना और ख़ुदा के हराम किये हुए को हलाल कर लेना पाया जाता है (फ़ा86) यानी माहे हराम को या इस हटाने को (फ़ा87) यानी माहे हराम चार ही रहें इसकी तो पाबन्दी करते हैं और इनकी तख़्सीस तोड़ कर हुक्मे इलाही की मुख़ालफ़त जो महीना हराम था उसे हलाल कर लिया उसकी जगह दूसरे को हराम क़रार दिया। (फ़ा88) और सफ़र से घबराते हो। **शाने नुज़ूलः** यह आयत ग़ज़वए तबूक की तरग़ीब में नाज़िल हुई तबूक एक मक़ाम है अतराफ़े शाम में मदीना तय्येबा से चौदह मंज़िल फ़ासिला पर रजब सन् ९ हिजरी में ताइफ़ से वापसी के बाद सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को ख़बर पहुंची कि अ़रब के नसरानियों की तहरीक से हिरक़ल शाहे रोम ने रोमियों और शामियों की फ़ौजे गिराँ जमा की है और वह मुसलमानों पर हमले का इरादा रखता है तो हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने मुसलमानों को जिहाद का हुक्म दिया यह ज़माना निहायत तंगी क़हत साली और शिद्दते गर्मी का था यहां तक कि दो दो आदमी एक एक खजूर पर बसर करते थे सफ़र दूर का था दुश्मन कसीर और क़वी थे इस लिए बाज़ क़बीले बैठ रहे और उन्हें उस वक़्त जिहाद में जाना गिराँ मालूम हुआ और इस ग़ज़वा में बहुत से मुनाफ़िक़ीन का पर्दा फ़ाश और हाल ज़ाहिर हो गया। हज़रत उस्मान ग़नी रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने इस ग़ज़वा में बड़ी आली हिम्मती से ख़र्च किया दस हज़ार मुजाहिदीन को सामान दिया और दस हज़ार दीनार इस ग़ज़वे पर ख़र्च किये नौ सौ ऊँट और सौ घोड़े मअ़ साज़ो सामान के इसके इलावा हैं और असहाब ने भी ख़ूब ख़र्च किया उनमें सब से पहले हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ हैं जिन्होंने अपना कुल माल हाज़िर कर दिया जिसकी मिक़दार चार हज़ार दिरहम थी और हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने अपना निस्फ़ माल हाज़िर किया और सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम तीस हज़ार लश्कर लेकर रवाना हुए हज़रत अली मुर्तज़ा को मदीना तय्येबा में छोड़ा अब्दुल्लाह बिन उबय और उसके हमराही मुनाफ़िक़ीन सनीयतुल विदाअ़ तक चलकर रह गए जब लश्करे इस्लाम तबूक में उतरा तो उन्होंने देखा कि चश्मे में पानी बहुत थोड़ा है रसूले करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने उसके पानी से इसमें कुल्ली फ़रमाई जिसकी बरकत से पानी जोश में आया और चश्मा भर गया लश्कर और उसके तमाम जानवर अच्छी तरह सैराब हुए हज़रत ने काफ़ी अ़र्सा क़ियाम फ़रमाया। हिरक़ल अपने दिल में आपको सच्चा नबी जानता था इस लिए उसे ख़ौफ़ हुआ और उसने आप से मुक़ाबला न किया हज़रत ने अतराफ़ में लश्कर भेजे चुनान्चे हज़रत ख़ालिद को चार सौ से ज़ाइद सवारों के साथ अकीदर हाकिम दौमतुल जन्दल के मुक़ाबिल भेजा और फ़रमाया कि तुम उसको नील गाय के शिकार में पकड़ लो चुनांचे ऐसा ही हुआ जब वह नील गाय के शिकार के लिए अपने क़िले से उतरा और हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ियल्लाहु अ़न्हु उसको गिरिफ़्तार करके ख़िदमते अक़दस में लाये हुज़ूर ने जिज़्या मुक़र्रर फ़रमा कर उसको छोड़ दिया इसी तरह हाकिमे ऐला पर इस्लाम पेश किया और जिज़्या पर सुलह फ़रमाई वापसी के वक़्त जब हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम मदीना के क़रीब तशरीफ़ लाये तो जो लोग जिहाद में साथ होने से रह गए थे वह हाज़िर हुए हुज़ूर ने असहाब से फ़रमाया कि इनमें से किसी से कलाम न करें और अपने पास न बिठायें जब तक हम इजाज़त न दें तो मुसलमानों ने उनसे एअ़राज़ किया यहां तक कि बाप और भाई की तरफ़ भी इल्तिफ़ात न किया इसी बाब में यह आयतें नाज़िल हुईं (फ़ा89) कि दुनिया और उसकी तमाम मताअ़ फ़ानी है और आख़िरत और उसकी तमाम निअ़मतें बाक़ी हैं (फ़ा90) ऐ मुसलमानों रसूले करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के हस्बे हुक्म अल्लाह तआ़ला (फ़ा91) जो तुम से बेहतर और फ़रमांबरदार होंगे मुराद यह है कि अल्लाह तआ़ला अपने नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की नुसरत और उनके दीन को इज़्ज़त देने का खुद कफ़ील है तो अगर तुम इताअ़त फ़रमाने रसूल में जल्दी करोगे तो यह सआ़दत तुम्हें नसीब होगी और अगर तुम ने सुस्ती की तो अल्लाह तआ़ला दूसरों को अपने नबी के शरफ़े ख़िदमत से सरफ़राज़ फ़रमाएगा (फ़ा92) यानी वक़्ते हिजरत मक्का मुकर्रमा से जबकि कुफ़्फ़ार ने दारुन्नदवा में हुज़ूर के लिए क़त्ल व क़ैद वग़ैरह के बुरे बुरे मशवरे किये थे (फ़ा93) सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम और हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अ़न्हु

(बक़िया सफ़हा 317 का) ताज़ीम के मौक़ा पर ऐसे कलिमे इस्तेमाल किये जाते हैं क़ाज़ी अ़याज़ रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने शिफ़ा में फ़रमाया जिस किसी ने इस सवाल को अ़ताब क़रार दिया उसने ग़लती की क्योंकि ग़ज़वए तबूक में हाज़िर न होने और घर रह जाने की इजाज़त मांगने वालों को इजाज़त देना न देना दोनों हज़रत के इख़्तियार में थे और आप इसमें मुख़्तार थे चुनांचे अल्लाह तबारक व तआ़ला ने फ़रमाया *फ़-अज़िन् लिमन् शिअ्-त मिन्हुम्* आप उनमें से जिसे चाहें इजाज़त दीजिये तो *लि-म अज़िन्त लहुम्* फ़रमाना एताब के लिए नहीं है बल्कि यह इज़्हार है कि अगर आप उन्हें इजाज़त न देते तो भी वह जिहाद में जाने वाले न थे और *अफ़ल्लाहु अ़न क* के मानी यह हैं कि अल्लाह तुम्हें माफ़ करे गुनाह से तो तुम्हें वास्ता ही नहीं इस में सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की कमाले तकरीम व तौक़ीर और तस्कीन व तसल्ली है कि क़ल्बे मुबारक पर *लि-म अज़िनत लहुम्* फ़रमाने से कोई बार न हो।

(बक़िया सफ़हा 318 का) बिन क़ैस ने कहा या रसूलल्लाह मेरी क़ौम जानती है कि मैं औरतों का बड़ा शैदाई हूं मुझे अन्देशा है कि मैं रोमी औरतों को देखूंगा तो मुझ से सब्र न हो सकेगा इस लिए आप मुझे यहीं ठहर जाने की इजाज़त दीजिये और उन औरतों के फ़ित्ना में न डालिये मैं आपकी अपने माल से मदद करूंगा हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा फ़रमाते हैं कि यह उस का हीला था और उसमें सिवाए निफ़ाक़ के और कोई इल्लत न थी रसूले करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने उसकी तरफ़ से मुंह फेर लिया और उसे इजाज़त दे दी उसके हक़ में यह आयत नाज़िल हुई (फ़ा118) क्योंकि जिहाद से रुक रहना और रसूले करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के हुक्म की मुख़ालफ़त करना बहुत बड़ा फ़ित्ना है (फ़ा119) और तुम दुश्मन पर फ़तह याब हो और ग़नीमत तुम्हारे हाथ आये (फ़ा120) और किसी तरह की शिद्दत पेश आये (फ़ा121) मुनाफ़िक़ीन कि चालाकी से जिहाद में न जाकर।

(बक़िया सफ़हा 319 का) शाने नुज़ूलः यहआयत ज़ुलखुवेसरा तमीमी के हक़ में नाज़िल हुई इस शख़्स का नाम हरकूस बिन ज़ुहैर है और यही ख़्वारिज की असल व बुनियाद है बुख़ारी व मुस्लिम की रिवायत में है कि रसूले करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम माले ग़नीमत तक़सीम फ़रमा रहे थे तो ज़ुलखुवेसरा ने कहा या रसूलल्लाह अ़द्ल कीजिये हुज़ूर ने फ़रमाया तुझे ख़राबी हो मैं न अ़द्ल करूंगा तो अ़द्ल कौन करेगा। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने अ़र्ज़ किया मुझे इजाज़त दीजिये कि इस मुनाफ़िक़ की गर्दन मार दूं हुज़ूर ने फ़रमाया कि इसे छोड़ दो इसके और भी हमराही हैं कि तुम उनकी नमाज़ों के सामने अपनी नमाज़ों को और उनके रोज़ों के सामने अपने रोज़ों को हक़ीर देखोगे वह क़ुरआन पढ़ेंगे और उनके गलों से न उतरेगा वह दीन से ऐसे निकल जायेंगे जैसे तीर शिकार से (फ़ा135) सदक़ात

(बक़िया सफ़हा 320 का) हो और एक मिक़दार माल की मुक़र्रर कर दी हो कि इस क़द्र वह अदा कर दें तो आज़ाद हैं वह भी मुस्तहिक़ हैं उनको आज़ाद कराने के लिए माले ज़कात दिया जाये क़र्ज़दार जो बग़ैर किसी गुनाह के मुब्तलाए क़र्ज़ हुए हों और इतना माल न रखते हों जिससे क़र्ज़ अदा करें उन्हें अदाए क़र्ज़ में माले ज़कात से मदद दी जाये अल्लाहकी राह में ख़र्च करने से बे सामान मुजाहिदीन और नादार हाजियों पर सर्फ़ करना मुराद है इब्ने सबील से वह मुसाफ़िर मुराद हैं जिसके पास माल न हो **मसलाः** ज़कात देने वाले को यह भी जायज़ है कि वह इन तमाम अक़साम के लोगों को ज़कात दे और यह भी जायज़ है कि इन में से किसी एक ही क़िस्म को दे **मसलाः** ज़कात उन्हीं लोगों के साथ ख़ास की गई है तो उनके अलावा और दूसरे मसरफ़ में ख़र्च न की जाएगी न मस्जिद की तामीर में न मुर्दे के कफ़न में न उसके क़र्ज़ की अदा में मसला ज़कात बनी हाशिम और ग़नी और उनके ग़ुलामों को न दी जाये और न आदमी अपनी बीबी और औलाद और ग़ुलामों को दे (तफ़सीर अहमदी व मदारिक) (फ़ा138) यानी सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को **शाने नुज़ूलः** मुनाफ़िक़ीन अपने जलसों में सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की शान में नाशाइस्ता बातें बका करते थे उनमें से बाज़ों ने कहा कि अगर हुज़ूर को ख़बर हो गई तो हमारे हक़ में अच्छा न होगा जलास बिन सुवैद मुनाफ़िक़ ने कहा हम जो चाहें कहें हुज़ूर के सामने मुकर जायेंगे और क़सम खा लेंगे वह तो कान हैं उन से जो कह दिया जाये सुन कर मान लेते हैं इस पर अल्लाह तआ़ला ने यह आयत नाज़िल फ़रमाई और यह फ़रमाया कि अगर वह सुनने वाले भी हैं तो ख़ैर और सलाह के सुनने और मानने वाले हैं शर और फ़साद के नहीं (फ़ा139) न मुनाफ़िक़ों की बात पर (फ़ा140) मुनाफ़िक़ीन इस लिए (फ़ा141) **शाने नुज़ूलः** मुनाफ़िक़ीन अपनी मजलिसों में सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम पर तअ़्न किया करते थे और मुसलमानों के पास आकर उससे मुकर जाते थे और क़समें खा खा कर अपनी बराअत साबित करते थे इस पर यह आयत नाज़िल हुई और फ़रमाया गया कि मुसलमानों को राज़ी करने के लिए क़समें खाने से ज़्यादा अहम अल्लाह और उसके रसूल को राज़ी करना था अगर ईमान रखते थे तो ऐसी हरकतें क्यों कीं जो ख़ुदा और रसूल की नाराज़ी का सबब हों।

(बक़िया सफ़हा 321 का) मुहम्मद बिन इसहाक़ का क़ौल है कि इस से वही शख़्स मुराद है जो हंसता था मगर उसने अपनी ज़बान से कोई कलिमए गुस्ताख़ी न कहा था जब यह आयत नाज़िल हुई तो वह तायब हुआ और इख़्लास के साथ ईमान लाया और उसने दुआ़ की कि या रब मुझे अपनी राह में मक़तूल करके ऐसी मौत दे कि कोई यह कहने वाला न हो कि मैंने गुस्ल दिया मैंने कफ़न दिया मैंने दफ़न किया चुनांचे ऐसा ही हुआ कि वह जंगे यमामा में शहीद हुए और उनका पता ही न चला उनका नाम यहया बिन हुमैर अशजई था और चूंकि उन्होंने हुज़ूर की बदगोई से ज़बान रोकी थी इस लिए उन्हें तौबा व ईमान की तौफ़ीक़ मिली (फ़ा148) और अपने जुर्म पर क़ायम रहे और तायब न हुए (फ़ा149) वह सब निफ़ाक़ और आमाले ख़बीसा में यकसां हैं उनका हाल यह है कि (फ़ा150) यानी कुफ़्र व मअ़सियत और रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की तकज़ीब का (ख़ाज़िन) (फ़ा151) यानी ईमान व ताअ़त व तस्दीक़े रसूल से (फ़ा152) राहे ख़ुदा में ख़र्च करने से (फ़ा153) और उन्होंने उसकी इताअ़त व रज़ा तलबी न की (फ़ा154) और सवाब व फ़ज़्ल से महरूम कर दिया।

(बक़िया सफ़हा 323 का) तौबा का मौक़ा दिया आ़मिर बिन क़ैस ने जो कुछ कहा सच कहा मैंने वह कलिमा कहा था और अब मैं तौबा व इस्तिग़फ़ार करता हूं हुज़ूर ने उनकी तौबा क़बूल फ़रमाई और वह तौबा पर साबित रहे (फ़ा175) मुजाहिद ने कहा कि जलास ने इफ़शाए राज़ के अन्देशा से आ़मिर के क़त्ल का इरादा किया था इसकी निस्बत अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है कि वह पूरा न हुआ (फ़ा176) ऐसी हालत में उन पर शुक्र वाजिब था न कि ना-सिपासी (फ़ा177) तौबा व ईमान से और कुफ़्र व निफ़ाक़ पर मुसिर रहें (फ़ा178) कि उन्हें अ़ज़ाबे इलाही से बचा सके (फ़ा179) **शाने नुज़ूलः** सअ़्लबा बिन हातिब ने सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से दरख़्वास्त की कि उसके लिए मालदार होने की दुआ़ फ़रमायें हुज़ूर ने फ़रमाया ऐ सअ़्लबा थोड़ा माल जिस का शुक्र अदा करे उस बहुत से बेहतर है जिसका तू शुक्र अदा न कर सके दोबारा फिर सअ़्लबा ने हाज़िर होकर यही दरख़्वास्त की और कहा उसी की क़सम जिसने आपको सच्चा नबी बना कर भेजा कि अगर वह मुझे माल देगा तो मैं हर हक़ वाले का हक़ अदा करूंगा हुज़ूर ने दुआ़ फ़रमाई अल्लाह तआ़ला ने उसकी बकरियों में बरकत फ़रमाई और इतनी बढ़ीं कि मदीना में उनकी गुंजाईश न हुई तो सअ़्लबा उनको लेकर जंगल में चला गया और जुमअ़ः व जमाअ़त की हाज़िरी से भी महरूम हो गया। हुज़ूर ने उसका हाल दरियाफ़्त फ़रमाया तो सहाबा ने अ़र्ज़ किया कि उसका माल बहुत कसीर हो गया है और अब जंगल में भी उसके माल की गुंजाईश न रही। हुज़ूर ने फ़रमाया कि सअ़्लबा पर अफ़सोस फिर जब हुज़ूरे अक़दस सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने ज़कात के तहसील करने वाले भेजे लोगों ने उन्हें अपने अपने सदक़ात दिये जब सअ़्लबा से जाकर उन्होंने सदक़ा मांगा उसने कहा कि यह तो टैक्स हो गया जाओ मैं सोच लूं जब यह लोग रसूले करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम

की ख़िदमत में वापस आये तो हुज़ूर ने उनके कुछ अ़र्ज़ करने से क़ब्ल दो मर्तबा फ़रमाया सअ़लबा पर अफ़्सोस! तो यह आयत नाज़िल हुई फिर सअ़लबा सदक़ा लेकर हाज़िर हुआ तो सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि अल्लाह तआ़ला ने मुझे इसके क़बूल फ़रमाने की मुमानअ़त फ़रमा दी वह अपने सर पर ख़ाक डाल कर वापस हुआ फिर उस सदक़ा को ख़िलाफ़ते सिद्दीक़ी में हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अ़न्हु के पास लाया उन्होंने भी उसे क़बूल न फ़रमाया फिर ख़िलाफ़ते फ़ारूक़ी में हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अ़न्हु के पास लाया उन्होंने भी क़बूल न फ़रमाया और ख़िलाफ़ते उसमानी में यह शख़्स हलाक हो गया। (मदारिक)

(बक़िया सफ़हा 324 का) आज रात पानी खींचने की मज़दूरी की उसकी उजरत दो साअ़ खजूरें मिलीं एक साअ़ तो मैं घर वालों के लिए छोड़ आया और एक साअ़ राहे ख़ुदा में हाज़िर हैं हुज़ूर ने यह सदक़ा क़बूल फ़रमाया और उसकी क़द्र की। (फ़ा184) मुनाफ़िक़ीन और सदक़ा की क़िल्लत पर आ़र दिलाते हैं। (फ़ा185) **शाने नुज़ूलः** ऊपर की आयतें जब नाज़िल हुईं और मुनाफ़िक़ीन का निफ़ाक़ खुल गया और मुसलमानों पर ज़ाहिर हो गया तो मुनाफ़िक़ीन सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुए और आप से मअ़ज़िरत करके कहने लगे कि आप हमारे लिए इस्तिग़फ़ार कीजिये इस पर यह आयत नाज़िल हुई और फ़रमाया गया कि अल्लाह तआ़ला हरगिज़ उनकी मग़फ़िरत न फ़रमाएगा चाहे आप इस्तिग़फ़ार में मुबालग़ा करें (फ़ा186) जो ईमान से ख़ारिज हों जब तक कि वह कुफ़्र पर रहें। (मदारिक) (फ़ा187) और ग़ज़वए तबूक में न गए (फ़ा188) तो थोड़ी देर की गर्मी बरदाश्त करते और हमेशा की आग में जलने से अपने आप को बचाते।

(बक़िया सफ़हा 325 का) ज़ियारत के लिए खड़े होना भी ममनूअ़.है और यह जो फ़रमाया (और फ़िस्क़ ही में मर गए) यहां फ़िस्क़ से कुफ़्र मुराद है क़ुरआने करीम में और जगह भी फ़िस्क़ बमानी कुफ़्र वारिद हुआ है जैसे कि आयत *अ-फ-मन् का-न मूअ्मिनन् क-मन् का-न फ़ासिक़न्* में। **मसलाः** फ़ासिक़ के जनाज़े की नमाज़ नाजायज़ है इस पर सहाबा और ताबेईन का इज्माअ. है और इस पर उलमाए सालिहीन का अमल और यही अहले सुन्नत व जमाअ़त का मज़हब है **मसलाः** इस आयत से मुसलमानों के जनाज़े की नमाज़ का जवाज़ भी साबित होता है और इसका फ़र्ज़े किफ़ाया होना हदीसे मशहूर से साबित है जिस शख़्स के मोमिन या काफ़िर होने में शुबहा हो उसके जनाज़े की नमाज़ न पढ़ी जाये **मसलाः** जब कोई काफ़िर मर जाये और उसका वली मुसलमान हो तो उसको चाहिए कि बतरीक़े मस्नून गुस्ल न दे बल्कि नजासत की तरह उस पर पानी बहा दे और न कफ़न मस्नून दे बल्कि इतने कपड़े में लपेट दे जिससे सत्र छुप जाये और न सुन्नत तरीक़ा पर दफ़न करे न बतरीक़े सुन्नत क़ब्र बनाये सिर्फ़ गढ़ा खोद कर दबा दे। **शाने नुज़ूलः** अ़ब्दुल्लाह बिन उबय सलूल मुनाफ़िक़ों का सरदार था जब वह मर गया तो उसके बेटे अ़ब्दुल्लाह ने जो मुसलमान सालेह मुख़लिस सहाबी और कसीरुल इबादत थे उन्होंने यह ख़्वाहिश की कि सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम उनके बाप अ़ब्दुल्लाह बिन उबय सलूल को कफ़न के लिए अपना क़मीस मुबारक इनायत फ़रमा दें और उसकी नमाज़े जनाज़ा पढ़ा दें हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अ़न्हु की राय इसके ख़िलाफ़ थी लेकिन चूंकि उस वक़्त तक मुमानअ़त नहीं हुई थी और हुज़ूर को मालूम था कि हुज़ूर का यह अमल एक हज़ार आदमियों के ईमान लाने का बाइस होगा इस लिए हुज़ूर ने अपनी क़मीस भी इनायत फ़रमाई और जनाज़ा की शिरकत भी की क़मीस देने की एक वजह यह भी थी कि सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के चचा हज़रत अ़ब्बास जो बदर में असीर होकर आये थे तो अ़ब्दुल्लाह बिन उबय ने अपना कुर्ता उन्हें पहनाया था हुज़ूर को उसका बदला कर देना भी मंज़ूर था इस पर यह आयत नाज़िल हुई और इसके बाद फिर कभी सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने किसी मुनाफ़िक़ के जनाज़ा की शिरकत न फ़रमाई और हुज़ूर की वह मसलेहत भी पूरी हुई चुनांचे जब कुफ़्फ़ार ने देखा कि ऐसा शदीदुल अ़दावत शख़्स भी जब सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के कुर्ते से बरकत हासलि करना चाहता है तो उसके अ़क़ीदे में भी आप अल्लाह के हबीब और उसके सच्चे रसूल हैं यह सोच कर हज़ार काफ़िर मुसलमान हो गए। (फ़ा196) उनके कुफ़्र व निफ़ाक़ इख़्तियार करने के बाइस (फ़ा197) कि जिहाद में क्या फ़ौज़ व सआ़दत और बैठ रहने में कैसी हलाकत व शक़ावत है।

(बक़िया सफ़हा 326 का) रह जायें तो इन पर कोई गुनाह नहीं (फ़ा205) उनकी इताअ़त करें और मुजाहिदीन के घर वालों की ख़बरगीरी रखें (फ़ा206) मुआख़ज़ा की (फ़ा207) **शाने नुज़ूलः** असहाबे रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम में से चन्द हज़रात जिहाद में जाने के लिए हाज़िर हुए उन्होंने हुज़ूर से सवारी की दरख़्वास्त की हुज़ूर ने फ़रमाया कि मेरे पास कुछ नहीं जिस पर तुम्हें सवार करूं तो वह रोते वापस हुए उनके हक़ में यह आयत नाज़िल हुई (फ़ा208) जिहाद में जाने की क़ुदरत रखते हैं बावजूद इसके (फ़ा209) कि जिहाद में क्या नफ़ा व सवाब है।

يَعْتَذِرُونَ إِلَيْكُمْ إِذَا رَجَعْتُمْ إِلَيْهِمْ ۚ قُل لَّا تَعْتَذِرُوا لَن نُّؤْمِنَ لَكُمْ قَدْ نَبَّأَنَا اللَّهُ مِنْ أَخْبَارِكُمْ ۚ وَسَيَرَى اللَّهُ عَمَلَكُمْ وَرَسُولُهُ ثُمَّ تُرَدُّونَ إِلَىٰ
عَالِمِ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ فَيُنَبِّئُكُم بِمَا كُنتُمْ تَعْمَلُونَ ۝ سَيَحْلِفُونَ بِاللَّهِ لَكُمْ إِذَا انقَلَبْتُمْ إِلَيْهِمْ لِتُعْرِضُوا عَنْهُمْ ۖ فَأَعْرِضُوا عَنْهُمْ ۖ إِنَّهُمْ
رِجْسٌ ۖ وَمَأْوَاهُمْ جَهَنَّمُ جَزَاءً بِمَا كَانُوا يَكْسِبُونَ ۝ يَحْلِفُونَ لَكُمْ لِتَرْضَوْا عَنْهُمْ ۖ فَإِن تَرْضَوْا عَنْهُمْ فَإِنَّ اللَّهَ لَا يَرْضَىٰ عَنِ الْقَوْمِ الْفَاسِقِينَ ۝ الْأَعْرَابُ
أَشَدُّ كُفْرًا وَنِفَاقًا وَأَجْدَرُ أَلَّا يَعْلَمُوا حُدُودَ مَا أَنزَلَ اللَّهُ عَلَىٰ رَسُولِهِ ۗ وَاللَّهُ عَلِيمٌ حَكِيمٌ ۝ وَمِنَ الْأَعْرَابِ مَن يَتَّخِذُ مَا يُنفِقُ مَغْرَمًا وَيَتَرَبَّصُ
بِكُمُ الدَّوَائِرَ ۚ عَلَيْهِمْ دَائِرَةُ السَّوْءِ ۗ وَاللَّهُ سَمِيعٌ عَلِيمٌ ۝ وَمِنَ الْأَعْرَابِ مَن يُؤْمِنُ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ وَيَتَّخِذُ مَا يُنفِقُ قُرُبَاتٍ عِندَ اللَّهِ وَصَلَوَاتِ

यअ्–तज़िरु–न इलैकुम् इज़ा र–जअ्तुम् इलैहिम् कुल् ला तअ्–तज़िरू लन् नुअ्मि–न लकुम् क़द् नब्ब–अ–नल्लाहु मिन् अख़्बारिकुम् व स–य–रल्लाहु अ्–म–लकुम् व रसूलुहू सुम्–म तुरद्दू–न इला आ–लिमिल्ग़ैबि वश्शहा–दति फ़यु–नब्बिउकुम् बिमा कुन्तुम् तअ्–मलून(94)स–यह्लिफ़ू–न बिल्लाहि लकुम् इज़न्–क़– लब्तुम् इलैहिम् लितुअ्रिज़ू अ़न्हुम् फ़–अअ्रिज़ू अ़न्हुम् इन्नहुम् रिज्सुंव्–व मअ्वा–हुम् जहन्नमु जज़ाअम् बिमा कानू यक्सिबून(95)यह्लिफ़ू–न लकुम् लि–तरज़ौ अ़न्हुम् फ़इन् तरज़ौ अ़न्हुम् फ़इन्नल्ला–ह ला यरज़ा अ़निल्–क़ौमिल् फ़ासिक़ीन(96)अलअअ्राबु अशद्दु कुफ़रंव् व निफ़ाक़ंव् व अज्दरु अल्ला यअ्–लमू हुदू–द मा अन्ज़लल्लाहु अ़ला रसूलिही वल्लाहु अ़लीमुन् हकीम(97)व मिनल् अअ्–राबि मंय्यत्त–ख़िज़ु मा युन्फ़िक़ु मग्–रमंव् व य–त–रब्बसु बिकुमुद्–दवाइ–र अ़लैहिम् दाइ–रतुस्सौइ वल्लाहु समीअुन् अ़लीम(98)व मिनल् अअ्राबि मंय्युअ्मिनु बिल्लाहि वल्यौमिल् आख़िरि व यत्तख़िज़ु मा युन्फ़िक़ु कुरुबातिन् अ़िन्दल्लाहि व स–लवातिर्रसूलि

तुम से बहाने बनायेंगे (फ़ा210) जब तुम उनकी तरफ़ लौट कर जाओगे तुम फ़रमाना बहाने न बनाओ हम हरगिज़ तुम्हारा यक़ीन न करेंगे अल्लाह ने हमें तुम्हारी ख़बरें दे दी हैं और अब अल्लाह व रसूल तुम्हारे काम देखेंगे (फ़ा211) फिर उसकी तरफ़ पलट कर जाओगे जो छुपे और ज़ाहिर सबको जानता है वह तुम्हें जता देगा जो कुछ तुम करते थे।(94) अब तुम्हारे आगे अल्लाह की क़सम खायेंगे जब (फ़ा212) तुम उनकी तरफ़ पलट कर जाओगे इस लिए कि तुम उनके ख़्याल में न पड़ो (फ़ा213) तो हां तुम उनका ख़्याल छोड़ दो (फ़ा214) तो वह निरे पलीद हैं (फ़ा215) और उनका ठिकाना जहन्नम है बदला उसका जो कमाते थे।(95) (फ़ा216) तुम्हारे आगे क़समें खाते हैं कि तुम उनसे राज़ी हो जाओ तो अगर तुम उनसे राज़ी हो जाओ (फ़ा217) तो बेशक अल्लाह तो फ़ासिक़ लोगों से राज़ी न होगा।(96) (फ़ा218) गंवार (फ़ा219) कुफ़्र और निफ़ाक़ में ज़्यादा सख़्त हैं (फ़ा220) और इसी क़ाबिल हैं कि अल्लाह ने जो हुक्म अपने रसूल पर उतारे उससे जाहिल रहें और अल्लाह इल्म व हिकमत वाला है।(97) और कुछ गंवार वह हैं कि जो अल्लाह की राह में ख़र्च करें तो उसे तावान समझें (फ़ा221) और तुम पर गर्दिशें आने के इन्तेज़ार में रहें (फ़ा222) उन्हीं पर है बुरी गर्दिश (फ़ा223) और अल्लाह सुनता जानता है। (98) और कुछ गांव वाले वह हैं जो अल्लाह और क़ियामत पर ईमान रखते हैं (फ़ा224) और वह ख़र्च करें उसे अल्लाह के नज़दीकियों और रसूल से दुआयें लेने का ज़रिया समझें (फ़ा225)

(फ़ा210) और बातिल उज़्र पेश करेंगे यह जिहाद से रह जाने वाले मुनाफ़िक़ तुम्हारे इस सफ़र से वापस होने के वक़्त (फ़ा211) कि तुम निफ़ाक़ से तौबा करते हो या उस पर क़ायम रहते हो बाज़ मुफ़स्सिरीन ने कहा कि उन्होंने वादा किया था कि ज़मानए मुस्तक़बिल में वह मोमिनीन की मदद करेंगे हो सकता है कि इसी की निस्बत फ़रमाया गया हो कि अल्लाह व रसूल तुम्हारे काम देखेंगे कि तुम अपने इस अहद को भी वफ़ा करते हो या नहीं। (फ़ा212) अपने इस सफ़र से वापस होकर मदीना तय्येबा में (फ़ा213) और उन पर मलामत व अ़ताब न करो (फ़ा214) और उनसे इज्तेनाब करो बाज़ मुफ़स्सिरीन ने फ़रमाया मुराद यह है कि उनके साथ बैठना उनसे बोलना, तर्क कर दो चुनांचे जब नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम मदीना तशरीफ़ लाये तो हुज़ूर ने मुसलमानों को हुक्म दिया कि मुनाफ़िक़ीन के पास न बैठें उन से बात न करें क्योंकि उनके बातिन ख़बीस और आमाल क़बीह हैं और मलामत व अ़ताब से उनकी इस्लाह न होगी इस लिए कि (फ़ा215) और पलीदी के पाक होने का कोई तरीक़ा नहीं (फ़ा216) दुनिया में ख़बीस अ़मल। **शाने नुज़ूलः** हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा ने फ़रमाया यह **(बक़िया सफ़हा 359 पर)**

اَلرَّسُوْلِ ۭ اَلَآ اِنَّهَا قُرْبَةٌ لَّهُمْ ۭ سَيُدْخِلُهُمُ اللّٰهُ فِيْ رَحْمَتِهٖ ۭ اِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿٩٩﴾ وَالسّٰبِقُوْنَ الْاَوَّلُوْنَ مِنَ الْمُهٰجِرِيْنَ وَالْاَنْصَارِ وَالَّذِيْنَ اتَّبَعُوْهُمْ بِاِحْسَانٍ ۙ رَّضِيَ اللّٰهُ عَنْهُمْ وَرَضُوْا عَنْهُ وَاَعَدَّ لَهُمْ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ تَحْتَهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَآ اَبَدًا ۭ ذٰلِكَ الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ ﴿١٠٠﴾ وَمِمَّنْ حَوْلَكُمْ مِّنَ الْاَعْرَابِ مُنٰفِقُوْنَ ڔ وَمِنْ اَهْلِ الْمَدِيْنَةِ ڀ مَرَدُوْا عَلَى النِّفَاقِ ۣ لَا تَعْلَمُهُمْ ۭ نَحْنُ نَعْلَمُهُمْ ۭ سَنُعَذِّبُهُمْ مَّرَّتَيْنِ ثُمَّ يُرَدُّوْنَ اِلٰى عَذَابٍ عَظِيْمٍ ﴿١٠١﴾ وَاٰخَرُوْنَ اعْتَرَفُوْا بِذُنُوْبِهِمْ خَلَطُوْا عَمَلًا صَالِحًا وَّاٰخَرَ سَيِّئًا ۭ عَسَى اللّٰهُ اَنْ يَّتُوْبَ عَلَيْهِمْ ۭ اِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿١٠٢﴾ خُذْ مِنْ اَمْوَالِهِمْ صَدَقَةً تُطَهِّرُهُمْ وَتُزَكِّيْهِمْ بِهَا وَصَلِّ عَلَيْهِمْ ۭ اِنَّ صَلٰوتَكَ سَكَنٌ لَّهُمْ ۭ وَاللّٰهُ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ﴿١٠٣﴾ اَلَمْ يَعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ هُوَ يَقْبَلُ التَّوْبَةَ عَنْ عِبَادِهٖ وَيَاْخُذُ الصَّدَقٰتِ

अला इन्नहा कुर्बतुल् लहुम् सयुद–ख़िलुहुमुल्लाहु फ़ी रह़्मतिही इन्नल्ला–ह ग़फ़ूरुर्रहीम(99) वस्साबिकूनल् अव्वलू–न मिनल् मुहाजिरी–न वल्अन्सारि वल्लज़ीनत् त–बअ़ूहुम् बिइह़्सानिर्–रज़ि–यल्लाहु अ़न्हुम् व रज़ू अ़न्हु व अ–अ़द्–द लहुम् जन्नातिन् तजरी तह़्त–हल् अन्हारु ख़ालिदी–न फ़ीहा अ–ब–दन् ज़ालिकल् फ़ौज़ुल् अ़ज़ीम(100)व मिम्मन् हौ–लकुम् मिनल् अअ़्राबि मुनाफ़िकू–न व मिन् अह्लिल् मदी–नति म–रदू अ़लन् निफ़ाकि़ ला तअ़्लमुहुम् नह़्नु नअ़्लमुहुम् सनु–अ़ज़्ज़िबुहुम् मर्रतैनि सुम्–म युरद्दू–न इला अ़ज़ाबिन् अ़ज़ीम(101)व आ–ख़रू नअ़्–त–रफ़ू बिज़ुनूबिहिम् ख़–लतू अ़–म–लन् सालिहंव्–व आ–ख़–र सय्यिअन् अ़–सल्लाहु अंय्यतू–ब अ़लैहिम् इन्नल्ला–ह ग़फ़ूरुर्रहीम (102) ख़ुज़् मिन् अम्वालिहिम् स–द–क़–तन् तु–तह्हिरुहुम् व तुज़क्की–हिम् बिहा व सल्लि अ़लैहिम् इन्–न सला–त–क स–कनुल् लहुम् वल्लाहु समीअ़ुन् अ़लीम(103)अ–लम् यअ़्लमू अन्नल्ला–ह हु–व यक़्बलुत् तौ–ब–त अ़न् अ़िबादिही व यअ़्ख़ुज़ुस् स–दक़ाति

हां हां वह उनके लिए बाइसे कुर्ब है अल्लाह जल्द उन्हें अपनी रहमत में दाख़िल करेगा बेशक अल्लाह बख़्शने वाला मेहरबान है।(99)(रुकूअ़ 1) और सबमें अगले पहले मुहाजिर (फ़ा226) और अंसार (फ़ा227) और जो भलाई के साथ उनके पैरो हुए (फ़ा228) अल्लाह उनसे राज़ी (फ़ा229) और वह अल्लाह से राज़ी (फ़ा230) और उनके लिए तैयार कर रखे हैं बाग़ जिनके नीचे नहरें बहें हमेशा हमेशा उनमें रहें यही बड़ी कामयाबी है।(100) और तुम्हारे आसपास (फ़ा231) के कुछ गंवार मुनाफ़िक़ हैं और कुछ मदीना वाले उनकी ख़ू (आदत) हो गई है निफ़ाक़ तुम उन्हें नहीं जानते हम उन्हें जानते हैं (फ़ा232) जल्द हम उन्हें दो बार (फ़ा233) अ़ज़ाब करेंगे फिर बड़े अ़ज़ाब की तारीफ़ फेरे जायेंगे। (101) (फ़ा234) और कुछ और हैं जो अपने गुनाहों के मुक़िर हुए (फ़ा235) और मिलाया एक काम अच्छा (फ़ा236) और दूसरा बुरा (फ़ा237) क़रीब है कि अल्लाह उनकी तौबा क़बूल करे बेशक अल्लाह बख़्शने वाला मेहरबान है।(102) ऐ महबूब उनके माल में से ज़कात तहसील करो जिससे तुम उन्हें सुथरा और पाकीज़ा कर दो और उनके हक़ में दुआ़ए ख़ैर करो (फ़ा238) बेशक तुम्हारी दुआ़ उनके दिलों का चैन है और अल्लाह सुनता जानता है।(103) क्या उन्हें ख़बर नहीं कि अल्लाह ही अपने बन्दों की तौबा क़बूल करता और सदक़े ख़ुद अपने दस्ते क़ुदरत में

(फ़ा226) वह हज़रात जिन्होंने दोनों क़िबलों की तरफ़ नमाज़ें पढ़ीं या अहले बदर या अहले बैअ़त रिज़वां। (फ़ा227) असहाबे बैअ़ते अ़क़बा ऊला जो छः हज़रात थे और असहाबे बैअ़ते अ़क़बा सानिया जो बारह थे और असहाबे बैअ़त अ़क़बा सालिसा जो सत्तर असहाब हैं यह हज़रात साबिक़ीन अंसार कहलाते हैं (ख़ाज़िन) (फ़ा228) कहा गया है कि इनसे बाक़ी मुहाजरीन व अंसार मुराद हैं तो अब तमाम असहाब इस में आ गए और एक क़ौल यह है कि पैरो होने वालों से क़ियामत के वह ईमानदार मुराद हैं जो ईमान व ताअ़त व नेकी में अन्सार व मुहाजरीन की राह चलें (फ़ा229) इसको उनके नेक अ़मल क़बूल (फ़ा230) इसके सवाब व अ़ता से ख़ुश। (फ़ा231) यानी मदीना तय्येबा के क़ुर्बो जवार। (फ़ा232) इसके मानी या तो यह हैं कि ऐसा जानना जिस का असर उन्हें मालूम हो वह हमारा जानना है कि हम उन्हें अ़ज़ाब करेंगे या हुज़ूर से मुनाफ़िक़ीन के हाल जानने की नफ़ी बएतेबार मासबक़ है और इसका इल्म बाद को अता हुआ जैसा कि दूसरी आयत में फ़रमाया *व ल–तअ़्रिफ़न्नहुम् फ़ी लह़्निल् क़ौल* (जुमल) कलबी व सुद्दी ने कहा कि नबीए करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने रोज़े जुमअ़ः ख़ुतबा के लिए क़ियाम करके नाम बनाम फ़रमाया निकल ऐ फ़लां तू मुनाफ़िक़ है, निकल ऐ फ़लां तू मुनाफ़िक़ है तो मस्जिद से चन्द लोगों को रुसवा करके निकाला इससे भी मालूम होता है कि हुज़ूर को इसके बाद मुनाफ़िक़ीन के हाल का इल्म अता फ़रमाया **(बक़िया सफ़हा 359 पर)**

وَاَنَّ اللّٰهَ هُوَ التَّوَّابُ الرَّحِيْمُ ۞ وَقُلِ اعْمَلُوْا فَسَيَرَى اللّٰهُ عَمَلَكُمْ وَرَسُوْلُهٗ وَالْمُؤْمِنُوْنَ ۭ وَسَتُرَدُّوْنَ اِلٰى عٰلِمِ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ فَيُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ۞ وَاٰخَرُوْنَ مُرْجَوْنَ لِاَمْرِ اللّٰهِ اِمَّا يُعَذِّبُهُمْ وَاِمَّا يَتُوْبُ عَلَيْهِمْ ۭ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ ۞ وَالَّذِيْنَ اتَّخَذُوْا مَسْجِدًا ضِرَارًا وَّكُفْرًا وَّتَفْرِيْقًا ۢ بَيْنَ الْمُؤْمِنِيْنَ وَاِرْصَادًا لِّمَنْ حَارَبَ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ مِنْ قَبْلُ ۭ وَلَيَحْلِفُنَّ اِنْ اَرَدْنَآ اِلَّا الْحُسْنٰى ۭ وَاللّٰهُ يَشْهَدُ اِنَّهُمْ لَكٰذِبُوْنَ ۞ لَا تَقُمْ فِيْهِ اَبَدًا ۭ لَمَسْجِدٌ اُسِّسَ عَلَى التَّقْوٰى مِنْ اَوَّلِ يَوْمٍ اَحَقُّ اَنْ تَقُوْمَ فِيْهِ ۭ فِيْهِ رِجَالٌ يُّحِبُّوْنَ اَنْ يَّتَطَهَّرُوْا ۭ وَاللّٰهُ يُحِبُّ الْمُطَّهِّرِيْنَ ۞ اَفَمَنْ اَسَّسَ بُنْيَانَهٗ عَلٰى تَقْوٰى مِنَ اللّٰهِ وَرِضْوَانٍ خَيْرٌ اَمْ مَّنْ اَسَّسَ بُنْيَانَهٗ عَلٰى شَفَا جُرُفٍ هَارٍ فَانْهَارَ بِهٖ فِيْ نَارِ جَهَنَّمَ ۭ وَاللّٰهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الظّٰلِمِيْنَ ۞

व अन्नल्ला–ह हुवत्–तव्वाबुर्रहीम(104)व कुलिअ्–मलू फ–स–यरल्लाहु अ्–म–लकुम् व रसूलुहू वल्मुअ्मिनू–न व सतुरद्दू–न इला आ़लिमिल्ग़ैबि वश्शहा–दति फ–युनब्बिउकुम् बिमा कुन्तुम् तअ्–मलून(105)व आ–ख़रू–न मुरजौ–न लिअम्रिल्लाहि इम्मा युअ़ज़्ज़िबुहुम् व इम्मा यतूबु अ़लैहिम् वल्लाहु अ़लीमुन् ह़कीम(106)वल्लज़ीनत्त–ख़जू मस्जिदन् ज़िरारंव्–व कुफ़्रंव्–व तफ़्रीक़म् बैनल्मुअ्मिनी–न व इर्सादल् लिमन् हा–र–बल्ला–ह व रसू–लहू मिन् क़ब्लु व ल–यह्लिफुन्–न इन् अरदना इल्लल् हुस्ना वल्लाहु यश्–हदु इन्नहुम् लकाज़िबून(107)ला तक़ुम् फ़ीहि अ–बदन् ल–मस्जिदुन् उस्सि–स अ्–लत्तक़्वा मिन् अव्वलि यौमिन् अह़क़्क़ु अन् तक़ू–म फ़ीहि फ़ीहि रिजालुंय्युहिब्बू–न अंय्य–त–तह्हरू वल्लाहु युहिब्बुल् मुत्तह्–हिरीन(108)अ–फ़मन् अस्स–स बुन्या–नहू अ़ला तक़्वा मिनल्लाहि व रिज़्वानिन् ख़ैरुन् अम् मन् अस्स–स बुन्या–नहू अ़ला शफ़ा जुरुफ़िन् हारिन् फ़न्हा–र बिही फ़ी नारि जहन्न–म वल्लाहु ला यह्दिल्–क़ौमज़्ज़ालिमीन(109)

लेता है और यह कि अल्लाह ही क़बूल करने वाला मेहरबान है।(104) (फ़ा239) और तुम फ़रमाओ काम करो अब तुम्हारे काम देखेगा अल्लाह और उसके रसूल और मुसलमान और जल्द उसकी तरफ़ पलटोगे जो छुपा और खुला सब जानता है तो वह तुम्हारे काम तुम्हें जता देगा।(105) और कुछ (फ़ा240) मौक़ूफ़ रखे गए हैं अल्लाह के हुक्म पर या उन पर अ़ज़ाब करे या उनकी तौबा क़बूल करे (फ़ा241) और अल्लाह इल्म व हिकमत वाला है।(106)और जिन्होंने मस्जिद बनाई (फ़ा242) नक़सान पहुंचाने को (फ़ा243) कुफ़्र के सबब (फ़ा244) और मुसलमानों में तफ़रक़ा डालने को (फ़ा245) और इसके इन्तेज़ार में जो पहले से अल्लाह और उसके रसूल का मुख़ालिफ़ है (फ़ा246) और वह ज़रूर क़समें खायेंगे हमने तो भलाई चाही और अल्लाह गवाह है कि वह बेशक झूठे हैं।(107) उस मस्जिद में तुम कभी खड़े न होना (फ़ा247) बेशक वह मस्जिद कि पहले ही दिन से जिसकी बुनियाद परहेज़गारी पर रखी गई है (फ़ा248) वह इस क़ाबिल है कि तुम इसमें खड़े हो उसमें वह लोग हैं कि ख़ूब, सुथरा होना चाहते हैं (फ़ा249) और सुथरे अल्लाह को प्यारे हैं।(108)तो क्या जिसने अपनी बुनियाद रखी अल्लाह से डर और उसकी रज़ा पर (फ़ा250) वह भला या वह जिसने अपनी नीव चुनी एक गिराऊ गढ़े के किनारे (फ़ा251) तो वह उसे लेकर जहन्नम की आग में ढहे पड़ा (फ़ा252) और अल्लाह ज़ालिमों को राह नहीं देता।(109)

(फ़ा239) इस में तौबा करने वालों को बशारत दी गई कि उनकी तौबा और उनके सदक़ात मक़बूल हैं बाज़ मुफ़स्सिरीन का क़ौल है कि जिन लोगों ने अब तक तौबा नहीं की इस आयत में उन्हें तौबा और सदक़ा की तरग़ीब दी गई (फ़ा240) मुतख़ल्लफ़ीन में से (फ़ा241) मुतख़ल्लफ़ीन यानी ग़ज़वए तबूक से रह जाने वाले तीन क़िस्म के थे एक मुनाफ़िक़ीन जो निफ़ाक़ के ख़ूगर और आदी थे दूसरे वह लोग जिन्होंने क़ुसूर के एतेराफ़ और तौबा में जल्दी की जिनका ऊपर ज़िक्र हो चुका तीसरे वह जिन्होंने तवक़्.क़ुफ़ किया और जल्दी तौबा न की यही इस आयत से मुराद हैं। (फ़ा242) शाने नुज़ूलः यह आयत एक जमाअ़त मुनाफ़िक़ीन के हक़ में नाज़िल हुई जिन्होंने मस्जिदे क़ुबा को नक़सान पहुंचाने और उसकी जमाअ़त मुतफ़र्रिक़ करने के लिए उसके क़रीब एक मस्जिद बनाई थी उसमें एक बड़ी चाल थी वह यह कि अबू आ़मिर जो ज़माने जाहिलियत में नसरानी राहिब हो गया था सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के मदीना तय्येबा तशरीफ़ लाने पर हुज़ूर से कहने लगा यह कौन सा दीन है जो आप लाये हैं हुज़ूर ने फ़रमाया कि मैं मिल्लते हनीफ़िया दीने इब्राहीम लाया हूं कहने लगा मैं उसी दीन पर हूं हुज़ूर ने फ़रमाया नहीं, उसने कहा कि आपने उसमें कुछ और मिला दिया है हुज़ूर ने फ़रमाया कि नहीं, मैं ख़ालिस साफ़ मिल्लत लाया हूं। अबू आ़मिर ने कहा हम में से जो झूठा हो अल्लाह उसको मुसाफ़रत में तन्हा और बेकस करके हलाक करे हुज़ूर ने आमीन **(बक़िया सफ़हा 359 पर)**

لَا يَزَالُ بُنْيَانُهُمُ الَّذِي بَنَوْا رِيبَةً فِي قُلُوبِهِمْ إِلَّا أَنْ تَقَطَّعَ قُلُوبُهُمْ ۗ وَاللَّهُ عَلِيمٌ حَكِيمٌ ﴿١١٠﴾ إِنَّ اللَّهَ اشْتَرَىٰ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ أَنْفُسَهُمْ وَأَمْوَالَهُمْ بِأَنَّ لَهُمُ الْجَنَّةَ ۚ يُقَاتِلُونَ فِي سَبِيلِ اللَّهِ فَيَقْتُلُونَ وَيُقْتَلُونَ ۖ وَعْدًا عَلَيْهِ حَقًّا فِي التَّوْرَاةِ وَالْإِنْجِيلِ وَالْقُرْآنِ ۚ وَمَنْ أَوْفَىٰ بِعَهْدِهِ مِنَ اللَّهِ ۚ فَاسْتَبْشِرُوا بِبَيْعِكُمُ الَّذِي بَايَعْتُمْ بِهِ ۚ وَذَٰلِكَ هُوَ الْفَوْزُ الْعَظِيمُ ﴿١١١﴾ التَّائِبُونَ الْعَابِدُونَ الْحَامِدُونَ السَّائِحُونَ الرَّاكِعُونَ السَّاجِدُونَ الْآمِرُونَ بِالْمَعْرُوفِ وَالنَّاهُونَ عَنِ الْمُنْكَرِ وَالْحَافِظُونَ لِحُدُودِ اللَّهِ ۗ وَبَشِّرِ الْمُؤْمِنِينَ ﴿١١٢﴾ مَا كَانَ لِلنَّبِيِّ وَالَّذِينَ آمَنُوا أَنْ يَسْتَغْفِرُوا لِلْمُشْرِكِينَ وَلَوْ كَانُوا أُولِي قُرْبَىٰ مِنْ بَعْدِ مَا تَبَيَّنَ لَهُمْ أَنَّهُمْ أَصْحَابُ الْجَحِيمِ ﴿١١٣﴾ وَمَا كَانَ اسْتِغْفَارُ إِبْرَاهِيمَ لِأَبِيهِ إِلَّا عَنْ مَوْعِدَةٍ وَعَدَهَا إِيَّاهُ فَلَمَّا تَبَيَّنَ لَهُ أَنَّهُ

ला यज़ालु बुन्यानुहुमुल्लज़ी बनौ री–ब–तन् फ़ी कुलूबिहिम् इल्ला अन् त–क़त्त–अ कुलूबुहुम् वल्लाहु अ़ली–मुन् ह़कीम(110)इन्नल्ला–हश्तरा मिनल्मुअ्मिनी–न अन्फ़ु–सहुम् व अम्वा–लहुम् बिअन्–न लहु–मुल्जन्न–त युक़ातिलू–न फ़ी सबी–लिल्लाहि फ़–यक़्तुलू–न व युक़्तलू–न वअ्दन् अ़लैहि हक़्क़न् फ़ित्तौ–राति वल्इन्जीलि वल्कुरआनि व मन् औफ़ा बि–अ़ह्दिही मिनल्ला–हि फ़स्तब्शिरू बिबैअिकुमुल्लज़ी बा– यअ्तुम् बिही व ज़ालि–क हुवल्–फ़ौज़ुल अ़ज़ीम(111)अत्ताइबूनल् आ़बिदूनल् ह़ामिदूनस् साइ–हू–नर् राकिअूनस् साजिदूनल् आ–मिरू–न बिल्मअ्रूफ़ि वन्नाहू–न अ़निल् मुन्करि वल्हाफ़िज़ू–न लिहु–दू–दिल्लाहि व बश्शिरिल् मुअ्मिनीन(112)मा का–न लिन्नबिय्यि वल्लज़ी–न आ–मनू अंय्यस्तग्.फ़िरू लिल्मु–श्रिकी–न व लौ कानू उली कुर्बा मिम् बअ्दि मा त–बय्य–न लहुम् अन्नहुम् अस्हाबुल्जहीम(113)व मा कानस्तिग़्फ़ारु इब्राही–म लि–अबीहि इल्ला अ़म् मौअि़–दतिंव् व अ़–दहा इय्याहु फ़लम्मा त–बय्य–न लहू अन्नहू

वह तअ्.मीर जो चुनी हमेशा उनके दिलों में खटकती रहेगी (फ़ा253) मगर यह कि उनके दिल टुकड़े टुकड़े हो जायें (फ़ा254) और अल्लाह इल्म व हिकमत वाला है।(110) (रुकूअ्. 2) बेशक अल्लाह ने मुसलमानों से उनके माल और जान ख़रीद लिए हैं इस बदले पर कि उनके लिए जन्नत है (फ़ा255) अल्लाह की राह में लड़ें तो मारें (फ़ा256) और मरें (फ़ा257) उसके ज़िम्मए करम पर सच्चा वादा तौरेत और इन्जील और कुरआन में (फ़ा258) और अल्लाह से ज़्यादा क़ौल का पूरा कौन तो ख़ुशियां मनाओ अपने सौदे की जो तुमने उससे किया है और यही बड़ी कामयाबी है।(111) तौबा वाले (फ़ा259) इबादत वाले (फ़ा260) सराहने वाले (फ़ा261) रोज़े वाले रुकूअ्. वाले सजदा वाले (फ़ा262) भलाई के बताने वाले और बुराई से रोकने वाले और अल्लाह की हदें निगाह रखने वाले (फ़ा263) और ख़ुशी सुनाओ मुसलमानों को।(112) (फ़ा264) नबी और ईमान वालों को लायक़ नहीं कि मुश्रिकों की बख़्शिश चाहें अगरचे वह रिश्तेदार हों (फ़ा265) जब कि उन्हें खुल चुका कि वह दोज़ख़ी हैं।(113) (फ़ा266) और इब्राहीम का अपने बाप (फ़ा267) की ख़्वाहिश चाहना वह तो न था मगर एक वादे के सबब जो उससे कर चुका था (फ़ा268) फिर जब इब्राहीम को खुल गया कि वह

(फ़ा253) और उसके गिराये जाने का सदमा बाक़ी रहेगा (फ़ा254) ख़्वाह क़त्ल होकर या मर कर या क़ब्र में या जहन्नम में। माना यह हैं कि उनके दिलों का ग़म व गुस्सा ता मर्ग बाक़ी रहेगा -- बमीर ता ब-रही ऐ हुसूद कीं रन्जीस्त+कि अज़ मशक़्क़त ऊ जुज़ ब-मर्गे नतवां रस्त-- और यह माना भी हो सकते हैं कि जब तक उनके दिल अपने क़ुसूर की नदामत और अफ़सोस से पारा पारा न हों और वह इख़्लास से तायब न हों उस वक़्त तक वह उसी रंज व ग़म में रहेंगे (मदारिक) (फ़ा255) राहे ख़ुदा में जानो माल ख़र्च करके जन्नत पाने वाले ईमानदारों की एक तमसील है जिससे कमाले लुत्फ़ व करम का इज़हार होता है कि परवरदिगारे आलम ने उन्हें जन्नत अ़ता फ़रमाना उनके जान व माल का एवज़ क़रार दिया और अपने आपको ख़रीदार फ़रमाया यह कमाले इज़्ज़त अफ़ज़ाई है कि वह हमारा ख़रीदार बने और हम से ख़रीदे किस चीज़ को जो न हमारी बनाई हुई न हमारी पैदा की हुई जान से है तो उसकी पैदा की हुई माल है तो उसका अता फ़रमाया हुआ। **शाने नुज़ूलः** जब अंसार ने रसूले करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से शबे अ़क़बा बैअ़त की तो अब्दुल्लाह बिन रवाहा रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने अ़र्ज़ की कि या रसूलल्लाह अपने रब के लिए और अपने लिये कुछ शर्त फ़रमा लीजिये जो आप चाहें फ़रमाया मैं अपने रब के लिए तो यह शर्त करता हूं कि तुम उसकी इबादत करो और किसी को उसका शरीक न ठहराओ और अपने लिए यह कि जिन चीज़ों से तुम अपने जान व माल को बचाते और महफ़ूज़ रखते हो उसको मेरे लिए भी गवारा न करो उन्होंने **(बक़िया सफ़हा 360 पर)**

عَدُوٌّ لِّلّٰهِ تَبَرَّاَ مِنْهُ ؕ اِنَّ اِبْرٰهِیْمَ لَاَوَّاهٌ حَلِیْمٌ ﴿۱۱۴﴾ وَ مَا كَانَ اللّٰهُ لِیُضِلَّ قَوْمًۢا بَعْدَ اِذْ هَدٰىهُمْ حَتّٰى یُبَیِّنَ لَهُمْ مَّا یَتَّقُوْنَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ بِكُلِّ شَیْءٍ عَلِیْمٌ ﴿۱۱۵﴾

اِنَّ اللّٰهَ لَهٗ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ ؕ یُحْیٖ وَ یُمِیْتُ ؕ وَ مَا لَكُمْ مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ مِنْ وَّلِیٍّ وَّ لَا نَصِیْرٍ ﴿۱۱۶﴾ لَقَدْ تَّابَ اللّٰهُ عَلَى النَّبِیِّ وَ الْمُهٰجِرِیْنَ وَ الْاَنْصَارِ الَّذِیْنَ

اتَّبَعُوْهُ فِیْ سَاعَةِ الْعُسْرَةِ مِنْۢ بَعْدِ مَا كَادَ یَزِیْغُ قُلُوْبُ فَرِیْقٍ مِّنْهُمْ ثُمَّ تَابَ عَلَیْهِمْ ؕ اِنَّهٗ بِهِمْ رَءُوْفٌ رَّحِیْمٌ ﴿۱۱۷﴾ وَّ عَلَى الثَّلٰثَةِ الَّذِیْنَ خُلِّفُوْا ؕ حَتّٰۤى

اِذَا ضَاقَتْ عَلَیْهِمُ الْاَرْضُ بِمَا رَحُبَتْ وَ ضَاقَتْ عَلَیْهِمْ اَنْفُسُهُمْ وَ ظَنُّوْۤا اَنْ لَّا مَلْجَاَ مِنَ اللّٰهِ اِلَّاۤ اِلَیْهِ ؕ ثُمَّ تَابَ عَلَیْهِمْ لِیَتُوْبُوْا ؕ اِنَّ اللّٰهَ هُوَ التَّوَّابُ

الرَّحِیْمُ ﴿۱۱۸﴾ یٰۤاَیُّهَا الَّذِیْنَ اٰمَنُوا اتَّقُوا اللّٰهَ وَ كُوْنُوْا مَعَ الصّٰدِقِیْنَ ﴿۱۱۹﴾ مَا كَانَ لِاَهْلِ الْمَدِیْنَةِ وَ مَنْ حَوْلَهُمْ مِّنَ الْاَعْرَابِ اَنْ یَّتَخَلَّفُوْا عَنْ رَّسُوْلِ اللّٰهِ

अ़दुव्वुल् लिल्लाहि तबर्-र-अ मिन्हु इन्-न इब्राही-म ल-अव्वाहुन् ह़लीम(114)व मा कानल्लाहु लियुज़िल्-ल क़ौमम् बअ्-द इज् हदाहुम् ह़त्ता युबय्यि-न लहुम् मा यत्तकू न इन्नल्ला-ह बिकुल्लि शैइन् अ़लीम(115)इन्नल्ला-ह लहू मुल्कुस्समावाति वल्अर्ज़ि युह़्यी व युमीतु व मा लकुम् मिन् दूनिल्लाहि मिंव् वलिय्यिंव् व ला नसीर(116)ल-क़त्ताबल्लाहु अ़लन्नबिय्यि वल्मुहाजिरी-न वल्-अन्सारिल् लज़ीनत्त-बअ़ूहु फ़ी सा-अ़तिल् अ़ुस्रति मिम् बअ़्दि मा का-द यज़ीगु क़ुलूबु फ़रीक़िम् मिन्हुम् सुम्-म ता-ब अ़लैहिम् इन्नहू बिहिम् रऊफ़ुर्रह़ीम(117)व अ़-लस्सला-सतिल् लज़ी-न ख़ुल्लिफ़ू ह़त्ता इज़ा ज़ाक़त् अ़लैहिमुल् अर्ज़ु बिमा रहुबत् व ज़ाक़त् अ़लैहिम् अन्फ़ुसुहुम् व ज़न्नू अंल्ला मल्ज-अ मिनल्लाहि इल्ला इलैहि सुम्-म ता-ब अ़लैहिम् लि-यतूबू इन्नल्ला-ह हुवत्तव्वा-बुर्रह़ीम(118)या अय्युहल्लज़ी-न आ-मनुत्त-क़ुल्ला-ह व कूनू म-अ़स्-सादि-क़ीन(119)मा का-न लि-अह्लिल् मदी-नति व मन् ह़ौ-लहुम् मिनल्-अअ़्राबि अंय्य-त-ख़ल्लफ़ू अ़र्रसू-लिल्लाहि

अल्लाह का दुश्मन है उससे तिनका तोड़ दिया (फ़ा269) बेशक इब्राहीम ज़रूर बहुत आहें करने वाला(114) (फ़ा270) मुतहम्मिल है। और अल्लाह की शान नहीं कि किसी क़ौम को हिदायत करके गुमराह फ़रमाए (फ़ा271) जब तक उन्हें साफ़ न बता दे कि किस चीज़ से उन्हें बचना चाहिए (फ़ा272) बेशक अल्लाह सब कुछ जानता है।(115) बेशक अल्लाह ही के लिए है आसमानों और ज़मीन की सल्तनत जिलाता है और मारता है और अल्लाह के सिवा तुम्हारा कोई वाली और न मददगार।(116) बेशक अल्लाह की रहमतें मुतवज्जह हुईं उन ग़ैब की ख़बरें बताने वाले और उन मुहाजरीन और अंसार पर जिन्होंने मुश्किल की घड़ी में उनका साथ दिया (फ़ा273) बाद इसके कि क़रीब था कि उनमें कुछ लोगों के दिल फिर जायें (फ़ा274) फिर उन पर रहमत से मुतवज्जह हुआ (फ़ा275) बेशक वह उन पर निहायत मेहरबान रहम वाला है।(117) और उन तीन पर जो मौक़ूफ़ रखे गए थे (फ़ा276) यहां तक कि जब ज़मीन इतनी वसीअ़ होकर उन पर तंग हो गई (फ़ा277) और वह अपनी जान से तंग आए (फ़ा278) और उन्हें यक़ीन हुआ कि अल्लाह से पनाह नहीं मगर उसी के पास फिर (फ़ा279) उनकी तौबा क़बूल की कि तायब रहें बेशक अल्लाह ही तौबा क़बूल करने वाला मेहरबान है।(118)(रुकूअ़ 3) ऐ ईमान वालो अल्लाह से डरो (फ़ा280) और सच्चों के साथ हो।(119) (फ़ा281) मदीने वालों (फ़ा282) और उनके गिर्द देहात वालों को लायक़ न था कि रसूलुल्लाह से पीछे बैठ रहें (फ़ा283)

(फ़ा269) और इस्तिग़फ़ार करना तर्क फ़रमा दिया (फ़ा270) कसीरुद्दुआ मुतज़र्रअ़ (फ़ा271) यानी उन पर गुमराही का हुक्म करे और उन्हें गुमराहों में दाख़िल फ़रमाये (फ़ा272) माना यह हैं कि जो चीज़ ममनूअ़ है और उससे इज्तेनाब वाजिब है उस पर अल्लाह तबारक व तआ़ला उस वक़्त तक अपने बन्दों की गिरिफ़्त नहीं फ़रमाता जब तक कि उसकी मुमानअ़त का साफ़बयान अल्लाह की तरफ़ से न आ जाये लिहाज़ा क़बल मुमानअ़त इस फ़ेअ़ल के करने में हर्ज नहीं (मदारिक व ख़ाज़िन) मसला: इस से मालूम हुआ कि जिस चीज़ की जानिब शरअ़ से मुमानअ़त नहो वह जायज़ है। शाने नुज़ूल: जब मोमिनीन को मुशरिकीन के लिए इस्तिग़फ़ार करने से मना फ़रमाया गया तो उन्हें अन्देशा हुआ कि हम पहले जो इस्तिग़फ़ार कर चुके हैं कहीं उस पर गिरिफ़्त न हो इस आयत से उन्हें तस्कीन दी गई और बताया गया कि मुमानअ़त का बयान होने के बाद इस पर अ़मल करने से मुआख़ज़ा होता है (फ़ा273) यानी ग़ज़वए तबूक में जिसको ग़ज़वए उसरत भी कहते हैं उस ग़ज़वा में उसरत का यह हाल था कि दस दस आदमियों में सवारी के लिए एक एक ऊंट था नौबत ब-नौबत उसी पर सवार हो लेते थे और खाने की क़िल्लत का यह **(बक़िया सफ़हा 361 पर)**

وَلَا يَرْغَبُوا بِأَنفُسِهِمْ عَن نَّفْسِهِ ۚ ذَٰلِكَ بِأَنَّهُمْ لَا يُصِيبُهُمْ ظَمَأٌ وَلَا نَصَبٌ وَلَا مَخْمَصَةٌ فِي سَبِيلِ اللَّهِ وَلَا يَطَئُونَ مَوْطِئًا يَغِيظُ الْكُفَّارَ وَلَا يَنَالُونَ

مِنْ عَدُوٍّ نَّيْلًا إِلَّا كُتِبَ لَهُم بِهِ عَمَلٌ صَالِحٌ ۚ إِنَّ اللَّهَ لَا يُضِيعُ أَجْرَ الْمُحْسِنِينَ ﴿١٢٠﴾ وَلَا يُنفِقُونَ نَفَقَةً صَغِيرَةً وَلَا كَبِيرَةً وَلَا يَقْطَعُونَ وَادِيًا

إِلَّا كُتِبَ لَهُمْ لِيَجْزِيَهُمُ اللَّهُ أَحْسَنَ مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿١٢١﴾ وَمَا كَانَ الْمُؤْمِنُونَ لِيَنفِرُوا كَافَّةً ۚ فَلَوْلَا نَفَرَ مِن كُلِّ فِرْقَةٍ مِّنْهُمْ طَائِفَةٌ لِّيَتَفَقَّهُوا فِي الدِّينِ

وَلِيُنذِرُوا قَوْمَهُمْ إِذَا رَجَعُوا إِلَيْهِمْ لَعَلَّهُمْ يَحْذَرُونَ ﴿١٢٢﴾ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا قَاتِلُوا الَّذِينَ يَلُونَكُم مِّنَ الْكُفَّارِ وَلْيَجِدُوا فِيكُمْ غِلْظَةً ۚ وَاعْلَمُوا

أَنَّ اللَّهَ مَعَ الْمُتَّقِينَ ﴿١٢٣﴾ وَإِذَا مَا أُنزِلَتْ سُورَةٌ فَمِنْهُم مَّن يَقُولُ أَيُّكُمْ زَادَتْهُ هَٰذِهِ إِيمَانًا ۚ فَأَمَّا الَّذِينَ آمَنُوا فَزَادَتْهُمْ إِيمَانًا وَهُمْ يَسْتَبْشِرُونَ ﴿١٢٤﴾

व ला यरग़बू बिअन्फुसि–हिम् अ़न् नफ़्सिही ज़ालि–क बि–अन्नहुम् ला युसीबुहुम् ज़–मउंव् व ला न–सबुंव् व ला मख़्म–सतुन् फ़ी सबीलिल्लाहि व ला य–तऊ–न मौतिअंय्यग़ीज़ुल् कुफ़्फ़ा–र व ला यनालू–न मिन् अ़दुव्विन् नैलन् इल्ला कुति–ब लहुम् बिही अ़–मलुन् सालिहुन् इन्नल्ला–ह ला युज़ीउ अज्रल् मुह्सिनीन(120)व ला युन्फ़िक़ू–न न–फ़–क़तन् स़ग़ी–र–तंव् व ला कबी–रतंव् व ला यक़्तअू–न वादियन् इल्ला कुति–ब लहुम् लियज्ज़ि–यहुमुल्लाहु अह्–स–न मा कानू यअ़्मलून(121)व मा कानल् मुअ्मिनू–न लियन्फ़िरू काफ़्फ़तन् फ़लौला न–फ़–र मिन् कुल्लि फ़िर्–क़तिम् मिन्हुम् ताइ–फ़तुल् लिय–त–फ़क़्क़हू फ़िद्दीनि व लियुन्ज़िरू क़ौ–महुम् इज़ा र–जअू इलैहिम् ल–अ़ल्लहुम् यह्ज़रून(122)या अय्युहल्लज़ी–न आ–मनू क़ातिलुल् लज़ी–न यलू–नकुम् मिनल् कुफ़्फ़ारि वल्यजिदू फ़ीकुम् ग़िल्ज़–तन् वअ़्लमू अन्नल्ला–ह मअ़ल्मुत्तक़ीन(123)व इज़ा मा उन्ज़िलत् सू–रतुन् फ़मिन्हुम् मंय्यक़ूलु अय्युकुम् ज़ादतहु हाज़िही ईमानन् फ़–अम्मल्लज़ी–न आ–मनू फ़ज़ादतहुम् ईमानंव् व हुम् यस्तब्शिरून(124)

और न यह कि उनकी जान से अपनी जान प्यारी समझें (फ़ा284) यह इस लिए कि उन्हें जो प्यास या तकलीफ़ या भूक अल्लाह की राह में पहुंचती है और जहां ऐसी जगह क़दम रखते हैं (फ़ा285) जिससे काफ़िरों को ग़ैज़ आये और जो कुछ किसी दुश्मन का बिगाड़ते हैं (फ़ा286) उस सबके बदले उनके लिए नेक अ़मल लिखा जाता है (फ़ा287) बेशक अल्लाह नेकों का नेग (बदला) ज़ाया नहीं करता।(120)और जो कुछ ख़र्च करते हैं छोटा (फ़ा288) या बड़ा (फ़ा289) और जो नाला तय करते हैं सब उनके लिए लिखा जाता है ताकि अल्लाह उनके सब से बेहतर कामों का उन्हें सिला दे। (121) (फ़ा290) और मुसलमानों से यह तो हो नहीं सकता कि सब के सब निकलें (फ़ा291) तो क्यों न हुआ कि उनके हर गरोह में से (फ़ा292) एक जमाअ़त निकले कि दीन की समझ हासिल करें और वापस आकर अपनी क़ौम को डर सुनायें (फ़ा293) इस उम्मीद पर कि वह बचें।(122) (फ़ा294)(रुकूअ़ 4) ऐ ईमान वालों जिहाद करो उन काफ़िरों से जो तुम्हारे क़रीब हैं (फ़ा295) और चाहिये कि वह तुम में सख़्ती पायें और जान रखो कि अल्लाह परहेज़गारों के साथ है।(123) (फ़ा296) और जब कोई सूरत उतरती है तो उनमें कोई कहने लगता है कि उसने तुम में किसके ईमान को तरक़्क़ी दी (फ़ा297) तो वह जो ईमान वाले हैं उनके ईमान को उसने तरक़्क़ी दी और वह ख़ुशियां मना रहे हैं। (124)

(फ़ा284) बल्कि उन्हें हुक्म था कि शिद्दत व तकलीफ़द में हुज़ूर का साथ न छोड़ें और सख़्ती के मौक़ा पर अपनी जानें आप पर फ़िदा करें (फ़ा285) और कुफ़्फ़ार की ज़मीन को अपने घोड़ों के सुमों से रौंदते हैं। (फ़ा286) क़ैद करके या क़त्ल करके या हज़ीमत देकर (फ़ा287) इससे साबित हुआ कि जो शख़्स इताअ़ते इलाही का क़स्द करे उसका उठना बैठना चलना हरकत करना साकिन रहना सब नेकियां हैं अल्लाह के यहां लिखी जाती हैं (फ़ा288) यानी क़लील मसलन एक खजूर (फ़ा289) जैसा कि हज़रत उसमान ग़नी रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु ने जैश उसरत में ख़र्च किया (फ़ा290) इस आयत से जिहाद की फ़ज़ीलत और उसका अहसनुल आमाल होना साबित हुआ (फ़ा291) और एक दम अपने वतन ख़ाली कर दें (फ़ा292) एक जमाअ़त वतन में रहे और (फ़ा293) हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा से मरवी है कि क़बाइले अरब में से हर हर क़बीला से जमाअ़तें सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के हुज़ूर में हाज़िर होतीं और वह हुज़ूर से दीन के मसाइल सीखते और तफ़क़्क़ुह हासिल करते और अपने लिए अहकाम दरियाफ़्त करते और अपनी क़ौम के लिए हुज़ूर उन्हें अल्लाह व रसूल की फ़रमांबरदारी का हुक्म देते और नमाज़ (बक़िया सफ़हा 361 पर)

وَاَمَّا الَّذِيْنَ فِيْ قُلُوْبِهِمْ مَّرَضٌ فَزَادَتْهُمْ رِجْسًا اِلٰى رِجْسِهِمْ وَمَاتُوْا وَهُمْ كٰفِرُوْنَ ﴿۱۲۵﴾ اَوَلَا يَرَوْنَ اَنَّهُمْ يُفْتَنُوْنَ فِيْ كُلِّ عَامٍ مَّرَّةً اَوْ مَرَّتَيْنِ ثُمَّ لَا
يَتُوْبُوْنَ وَلَا هُمْ يَذَّكَّرُوْنَ ﴿۱۲۶﴾ وَاِذَا مَاۤ اُنْزِلَتْ سُوْرَةٌ نَّظَرَ بَعْضُهُمْ اِلٰى بَعْضٍ هَلْ يَرٰىكُمْ مِّنْ اَحَدٍ ثُمَّ انْصَرَفُوْا صَرَفَ اللّٰهُ قُلُوْبَهُمْ بِاَنَّهُمْ قَوْمٌ لَّا
يَفْقَهُوْنَ ﴿۱۲۷﴾ لَقَدْ جَآءَكُمْ رَسُوْلٌ مِّنْ اَنْفُسِكُمْ عَزِيْزٌ عَلَيْهِ مَا عَنِتُّمْ حَرِيْصٌ عَلَيْكُمْ بِالْمُؤْمِنِيْنَ رَءُوْفٌ رَّحِيْمٌ ﴿۱۲۸﴾ فَاِنْ تَوَلَّوْا فَقُلْ حَسْبِيَ اللّٰهُ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا
هُوَ عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ وَهُوَ رَبُّ الْعَرْشِ الْعَظِيْمِ ﴿۱۲۹﴾

व अम्मल्लज़ी–न फ़ी क़ुलूबिहिम् म–रज़ुन् फ़ज़ादतहुम् रिज्सन् इला रिज्सिहिम् व मातू व हुम् काफ़िरून(125)अ–व ला यरौ–न अन्नहुम् युफ़्तनू–न फ़ी कुल्लि आमिम् मर्रतन् औ मर्रतैनि सुम्–म ला यतूबू–न व ला हुम् यज़्ज़क्करून(126)व इज़ा मा उन्ज़िलत् सू–रतुन् न–ज़–र बअ्–ज़ुहुम् इला बअ्ज़िन् हल् यराकुम् मिन् अ–हदिन् सुम्मन्स–रफ़ू स–र–फ़ल्लाहु क़ुलू–बहुम् बि–अन्नहुम् क़ौमुल् ला यफ़्क़हून(127)लक़द् जा–अकुम् रसूलुम् मिन् अन्फ़ुसिकुम् अ़ज़ीज़ुन् अ़लैहि मा अ़नित्तुम् ह़री–सुन् अ़लैकुम् बिल्मुअमिनी–न रऊफ़ुर् रह़ीम(128)फ़इन् तवल्लौ फ़क़ुल् ह़स्बियल्लाहु ला इला–ह इल्ला हु–व अ़लैहि त–वक्कल्तु व हु–व रब्बुल् अ़र्शिल् अ़ज़ीम(129)

और जिनके दिलों में आज़ार है (फ़ा298) उन्हें और पलीदी पर पलीदी बढ़ाई (फ़ा299) और वह कुफ़्र ही पर मर गए।(125) क्या उन्हें (फ़ा300) नहीं सूझता कि हर साल एक या दो बार आज़माए जाते हैं (फ़ा301) फिर न तो तौबा करते हैं न नसीहत मानते हैं।(126) और जब कोई सूरत उतरती है उनमें एक दूसरे को देखने लगता है(फ़ा302) कि कोई तुम्हें देखता तो नहीं (फ़ा303) फिर पलट जाते हैं (फ़ा304) अल्लाह ने उनके दिल पलट दिये (फ़ा305) कि वह नासमझ लोग हैं।(127) (फ़ा306) बेशक तुम्हारे पास तशरीफ़ लाए तुम में से वह रसूल (फ़ा307) जिन पर तुम्हारा मशक़्क़त में पड़ना गिरां है तुम्हारी भलाई के निहायत चाहने वाले मुसलमानों पर कमाले मेहरबान मेहरबान।(128) (फ़ा308) फिर अगर वह मुंह फेरें (फ़ा309) तो तुम फ़रमा दो कि मुझे अल्लाह काफ़ी है उसके सिवा किसी की बन्दगी नहीं मैंने उसी पर भरोसा किया और वह बड़े अर्श का मालिक है।(129) (रुकूअ़ 5) (फ़ा310)

(फ़ा298) शक व निफ़ाक़ का (फ़ा299) कि पहले जितना नाज़िल हुआ था उसी के इंकार के वबाल में गिरिफ़्तार थे अब जो और नाज़िल हुआ उसके इंकार की ख़बासत में भी मुब्तला हुए (फ़ा300) यानी मुनाफ़िक़ीन को (फ़ा301) अमराज़ व शदायद और क़हत वग़ैरह के साथ (फ़ा302) और आंखों से निकल भागने के इशारे करता है और कहता है (फ़ा303) अगर देखता हुआ तो बैठ गए वरना निकल गए (फ़ा304) कुफ़्र की तरफ़ (फ़ा305) इस सबब से (फ़ा306) अपने नफ़ा व ज़रर को नहीं सोचते। (फ़ा307) मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम अरबी क़रशी जिनके हसब नसब को तुम ख़ूब पहचानते हो कि तुम में सब से आली नसब हैं और तुम उनके सिद्क़ व अमानत ज़ुह्द व तक़्वा तहारत व तक़द्दुस और अख़्लाक़े हमीदा को भी ख़ूब जानते हो और एक क़िराअत में *अन्फ़सिकुम्* बफ़तह फ़ा आया है इसके माना हैं कि तुम में सबसे नफ़ीस तर और अशरफ़ व अफ़ज़ल इस आयते करीमा में सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की तशरीफ़ आवरी यानी आपके मीलादे मुबारक का बयान है तिर्मिज़ी की हदीस से भी साबित है कि सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने अपनी पैदाईश का बयान क़ियाम करके फ़रमाया मसला इससे मालूम हुआ कि महफ़िले मीलाद मुबारक की असल क़ुरआन व हदीस से साबित है (फ़ा308) इस आयत में अल्लाह तबारक व तआ़ला ने अपने हबीब सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को अपने दो नामों से मुशर्रफ़ फ़रमाया यह कमाले तकरीम है इस सरवरे अनवर सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की (फ़ा309) यानी मुनाफ़िक़ीन व कुफ़्फ़ार आप पर ईमान लाने से एराज़ करें। (फ़ा310) हाकिम ने मुस्तदरिक में उबय इब्ने कअ़ब से एक हदीस रिवायत की है कि *लक़द् जा–अकुम्* से आख़िर सूरत तक दोनों आयतें क़ुरआने करीम में सबके बाद नाज़िल हुईं।

(बक़िया सफ़हा 341 का) सिवा कोई नहीं करेगा और माज़ून सिर्फ़ उसके मक़बूल बन्दे होंगे। (फ़ा6) जो आसमान व ज़मीन का ख़ालिक़ और तमाम उमूर का मुदब्बिर है उसके सिवा कोई मअ़बूद नहीं फ़क़त वही मुस्तहिक़े इबादत है। (फ़ा7) रोज़े क़ियामत और यही है (फ़ा8) इस आयत में हश्र व नश्र व मआ़द का बयान और मुनकरीन का रद्द है और इस पर निहायत लतीफ़ पैराया में दलील क़ायम फ़रमाई गई है कि वह पहली बार बनाता है और आज़ाए मुरक्कबा को पैदा करता और तर्कीब देता है तो मौत के साथ मुतफ़र्रिक़ व मुन्तशिर होने के बाद उनको दोबारा फिर तर्कीब देना और बने हुए इन्सान को फ़ना के बाद फिर दोबारा बना देना और वही जान जो उस बदन से मुतअ़ल्लिक़ थी उसको उस बदन की दुरुस्ती के बाद फिर उसी बदन से मुतअ़ल्लिक़ कर देना उसकी क़ुदरत से क्या बईद है और उस दोबारा पैदा करने का मक़सूद जज़ाए आमाल यानी मुतीअ़ को सवाब और आ़सी को अ़ज़ाब देना है।

سُوْرَةُ يُوْنُسَ مَكِّيَّةٌ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝

الٓرٰ ۚ تِلْكَ اٰيٰتُ الْكِتٰبِ الْحَكِيْمِ ۝ اَكَانَ لِلنَّاسِ عَجَبًا اَنْ اَوْحَيْنَآ اِلٰى رَجُلٍ مِّنْهُمْ اَنْ اَنْذِرِ النَّاسَ وَبَشِّرِ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اَنَّ لَهُمْ قَدَمَ صِدْقٍ عِنْدَ رَبِّهِمْ ۗؔ قَالَ الْكٰفِرُوْنَ اِنَّ هٰذَا لَسٰحِرٌ مُّبِيْنٌ ۝ اِنَّ رَبَّكُمُ اللّٰهُ الَّذِيْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ فِيْ سِتَّةِ اَيَّامٍ ثُمَّ اسْتَوٰى عَلَى الْعَرْشِ يُدَبِّرُ الْاَمْرَ ۭ مَا مِنْ شَفِيْعٍ اِلَّا مِنْۢ بَعْدِ اِذْنِهٖ ۭ ذٰلِكُمُ اللّٰهُ رَبُّكُمْ فَاعْبُدُوْهُ ۭ اَفَلَا تَذَكَّرُوْنَ ۝ اِلَيْهِ مَرْجِعُكُمْ جَمِيْعًا ۭ وَعْدَ اللّٰهِ حَقًّا ۭ اِنَّهٗ يَبْدَؤُا الْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيْدُهٗ لِيَجْزِيَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ بِالْقِسْطِ ۭ وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَهُمْ شَرَابٌ مِّنْ حَمِيْمٍ وَّعَذَابٌ اَلِيْمٌۢ بِمَا كَانُوْا يَكْفُرُوْنَ ۝ هُوَ الَّذِيْ جَعَلَ الشَّمْسَ ضِيَاۗءً وَّالْقَمَرَ

सूरतु यूनुस

(मक्की है इसमें 109 आयतें और 11 रुकूअ़ हैं)

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम

अलिफ़्–लाम्–रा तिल्–क आयातुल् किताबिल् ह़कीम(1)अका–न लिन्नासि अ़–ज–बन् अन् औहैना इला रजुलिम् मिन्हुम् अन् अन्ज़ि–रिन्ना–स व बश्शिरिल्लज़ी–न आ–मनू अन्–न लहुम् क़–द–म सिद्क़िन् अ़िन्–द रब्बिहिम् क़ालल्–का–फ़िरू–न इन्–न हाज़ा लसाह़िरुम् मुबीन(2)इन्–न रब्बकुमुल्लाहुल् लज़ी ख़–ल–क़स्समावाति वल्–अर्–ज़ फ़ी सित्तति अय्यामिन् सुम्मस्तवा अ़–लल्अ़र्शि युदब्बिरुल् अम्–र मा मिन् शफ़ीअ़िन् इल्ला मिम् बअ़्दि इज़्निही जालिकुमुल्लाहु रब्बुकुम् फ़अ़्–बुदूहु अ–फ़ला त–ज़क्करून(3)इलैहि मर्जिअ़ुकुम् जमीअ़न् वअ़्दल्लाहि ह़क़्क़न् इन्नहू यब्दउल् ख़ल्–क़ सुम्–म युअ़ीदुहू लियज्ज़ि–यल्लज़ी–न आ–मनू व अ़मिलुस्सालिहाति बिल्क़िस्ति वल्लज़ी–न क–फ़रू लहुम् शराबुम् मिन् ह़मीमिंव् व अ़ज़ाबुन् अलीमुम् बिमा कानू यक्फ़ुरून(4) हुवल्लज़ी ज–अ़लश्शम्–स ज़िया–अंव् वल्क़–म–र

अल्लाह के नाम से शुरू जो निहायत मेहरबान रहम वाला। (फ़ा1)

यह हिकमत वाली किताब की आयतें हैं।(1) क्या लोगों को इसका अचंभा हुआ कि हमने उनमें से एक मर्द को 'वही' भेजी कि लोगों को डर सुनाओ (फ़ा2) और ईमान वालों को खुशख़बरी दो कि उनके लिए उनके रब के पास सच का मक़ाम है काफ़िर बोले बेशक यह तो खुला जादूगर है।(2) (फ़ा3) बेशक तुम्हारा रब अल्लाह है जिसने आसमान और ज़मीन छः दिन में बनाए फिर अ़र्श पर इस्तिवा फ़रमाया जैसा उसकी शान के लायक़ है काम की तदबीर फ़रमाता है (फ़ा4) कोई सिफ़ारशी नहीं मगर उसकी इजाज़त के बाद (फ़ा5) यह है अल्लाह तुम्हारा रब (फ़ा6) तो उसकी बन्दगी करो तो क्या तुम ध्यान नहीं करते।(3) उसी की तरफ़ तुम सब को फिरना है (फ़ा7) अल्लाह का सच्चा वादा बेशक वह पहली बार बनाता है फिर फ़ना के बाद दोबारा बनाएगा कि उनको जो ईमान लाए और अच्छे काम किये इंसाफ़ का सिला दे (फ़ा8) और काफ़िरों के लिए पीने को खौलता पानी और दर्दनाक अ़ज़ाब बदला उनके कुफ़्र का।(4) वही है जिसने सूरज को जगमगाता बनाया और चांद

सूरह यूनुस (फ़ा1) मक्की है सिवाए तीन आयतों के *फ़इन् कुन्–त फ़ी शक्किन्* से इस में ग्यारह रुकूअ़ और एक सौ नौ आयतें और एक हज़ार आठ सौ बत्तीस कलिमे और नौ हज़ार निन्नानवे हरफ़ हैं। (फ़ा2) **शाने नुज़ूलः** हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा ने फ़रमाया जब अल्लाह तबारक व तआ़ला ने सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को रिसालत से मुशर्रफ़ फ़रमाया और आपने इसका इज़्हार किया तो अरब मुन्किर हो गए और उन में से बाज़ों ने यह कहा कि अल्लाह इससे बरतर है कि किसी बशर को रसूल बनाए इस पर यह आयात नाज़िल हुईं (फ़ा3) कुफ़्फ़ार ने पहले तो बशर का रसूल होना क़ाबिले तअ़ज्जुब व इन्कार क़रार दिया और फिर जब हुज़ूर के मोअ़्जेज़ात देखे और यक़ीन हुआ कि यह बशर के मुक़द्दरत से बालातर हैं तो आप को साहिर बताया उनका यह दावा तो किज़्ब व बातिल है मगर इस में भी हुज़ूर के कमाल और अपने इज्ज़ का एतेराफ़ पाया जाता है (फ़ा4) यानी तमाम ख़ल्क़ के उमूर का हसबे इक़्तेज़ा हिकमत सर अंजाम फ़रमाता है (फ़ा5) इस में बुत परस्तों के इस क़ौल का रद्द है कि बुत उनकी शफ़ाअ़त करेंगे उन्हें बताया गया कि शफ़ाअ़त माज़ूनीन के **(बक़िया सफ़हा 340 पर)**

نُوْرًا وَّقَدَّرَهٗ مَنَازِلَ لِتَعْلَمُوْا عَدَدَ السِّنِيْنَ وَالْحِسَابَ ؕ مَا خَلَقَ اللّٰهُ ذٰلِكَ اِلَّا بِالْحَقِّ ۚ يُفَصِّلُ الْاٰيٰتِ لِقَوْمٍ يَّعْلَمُوْنَ ۝ اِنَّ فِی اخْتِلَافِ الَّيْلِ

وَالنَّهَارِ وَمَا خَلَقَ اللّٰهُ فِی السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يَّتَّقُوْنَ ۝ اِنَّ الَّذِيْنَ لَا يَرْجُوْنَ لِقَآءَنَا وَرَضُوْا بِالْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَاطْمَاَنُّوْا بِهَا وَالَّذِيْنَ هُمْ عَنْ اٰيٰتِنَا

غٰفِلُوْنَ ۝ اُولٰٓئِكَ مَاْوٰىهُمُ النَّارُ بِمَا كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ ۝ اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ يَهْدِيْهِمْ رَبُّهُمْ بِاِيْمَانِهِمْ ۚ تَجْرِیْ مِنْ تَحْتِهِمُ الْاَنْهٰرُ فِیْ جَنّٰتِ

النَّعِيْمِ ۝ دَعْوٰىهُمْ فِيْهَا سُبْحٰنَكَ اللّٰهُمَّ وَتَحِيَّتُهُمْ فِيْهَا سَلٰمٌ ۚ وَاٰخِرُ دَعْوٰىهُمْ اَنِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ۝ وَلَوْ يُعَجِّلُ اللّٰهُ لِلنَّاسِ الشَّرَّ اسْتِعْجَالَهُمْ

بِالْخَيْرِ لَقُضِیَ اِلَيْهِمْ اَجَلُهُمْ ؕ فَنَذَرُ الَّذِيْنَ لَا يَرْجُوْنَ لِقَآءَنَا فِیْ طُغْيَانِهِمْ يَعْمَهُوْنَ ۝ وَاِذَا مَسَّ الْاِنْسَانَ الضُّرُّ دَعَانَا لِجَنْۢبِهٖۤ اَوْ قَاعِدًا اَوْ قَآئِمًا

नूरंव्–व क़द्–द–रहू मनाज़ि–ल लितअ्लमू अ्–द–दस्सिनी–न वल्हिसा–ब मा ख़–ल–क़ल्लाहु ज़ालि–क इल्ला बिल्हक़्क़ि युफ़स्सिलुल् आयाति लिक़ौ–मिंय्यअ्–लमून(5)इन्–न फ़िख़्ति–लाफ़िल्लैलि वन्नहारि व मा ख़–ल–क़ल्लाहु फ़िस्समावाति वल्अर्ज़ि लआयातिल् लिक़ौमिंय्यत्तक़ून(6)इन्नल्लज़ी–न ला यरजू–न लिक़ा–अना व रज़ू बिल्हयातिद्दुन्या वत्म–अन्नू बिहा वल्लज़ी–न हुम् अन् आयातिना ग़ाफ़िलून(7)उलाइ–क मअ्वाहुमुन्नारु बिमा कानू यक्सिबून(8)इन्नल्लज़ी–न आ–मनू व अमि–लुस्सालिहाति यह्दीहिम् रब्बुहुम् बि–ईमानिहिम् तजरी मिन् तह्तिहि–मुल् अन्हारु फ़ी जन्नातिन् नअीम(9) दअ्वाहुम् फ़ीहा सुब्हा–न–कल्लाहुम्–म व तहिय्यतुहुम् फ़ीहा सलामुन् व आख़िरु दअ्वाहुम् अनिल्हम्दु लिल्लाहि रब्बिल् आ–लमीन(10)व लौ युअ़ज्जिलुल्लाहु लिन्नासिश्शर्रस्तिअ्जा लहुम् बिल्ख़ैरि लक़ुज़ि–य इलैहिम् अ–जलुहुम् फ–न–ज़रुल् लज़ी–न ला यरजू–न लिक़ाअना फ़ी तुग़्यानिहिम् यअ्महून(11)व इज़ा मस्सल् इन्सानज़्ज़ुर्रु द–आना लिजम्बिही औ क़ाअिदन् औ क़ाइमन्

चमकता और उसके लिए मन्ज़िलें ठहराईं (फ़ा9) कि तुम बरसों की गिनती और (फ़ा10) हिसाब जानो अल्लाह ने उसे न बनाया मगर हक़ (फ़ा11) निशानियां मुफ़स्सल बयान फ़रमाता है इल्म वालों के लिए।(5) (फ़ा12) बेशक रात और दिन का बदलता आना और जो कुछ अल्लाह ने आसमानों और ज़मीन में पैदा किया उनमें निशानियां हैं डर वालों के लिए।(6) बेशक वह जो हमारे मिलने की उम्मीद नहीं रखते (फ़ा13) और दुनिया की ज़िन्दगी पसन्द कर बैठे और उस पर मुतमइन्न हो गए (फ़ा14) और वह जो हमारी आयतों से ग़फ़लत करते हैं।(7) (फ़ा15) उन लोगों का ठिकाना दोज़ख़ है बदला उनकी कमाई का।(8) बेशक जो ईमान लाए और अच्छे काम किये उनका रब उनके ईमान के सबब उन्हें राह देगा (फ़ा16) उनके नीचे नहरें बहती होंगी निअ्मत के बाग़ों में।(9) उनकी दुआ उसमें यह होगी कि अल्लाह तुझे पाकी है (फ़ा17) और उनके मिलते वक़्त खुशी का पहला बोल सलाम है (फ़ा18) और उनकी दुआ का ख़ात्मा यह है कि सब ख़ूबियों सराहा अल्लाह जो रब है सारे जहान का।(10) (फ़ा19) (रुकूअ् 6) और अगर अल्लाह लोगों पर बुराई ऐसी जल्द भेजता जैसी वह भलाई की जल्दी करते हैं तो उनका वादा पूरा हो चुका होता (फ़ा20) तो हम छोड़ते उन्हें जो हम से मिलने की उम्मीद नहीं रखते कि अपनी सरकशी में भटका करें।(11) (फ़ा21)और जब आदमी को (फ़ा22) तकलीफ़ पहुंचती है हमें पुकारता है लेटे और बैठे

(फ़ा9) अट्ठाईस मंज़िलें जो बारह बुर्जों पर मुन्क़सिम हैं हर बुर्ज के लिए 2 1/3 मन्ज़िलें हैं चांद हर शब एक मंज़िल में रहता है और महीना तीस दिन का हो तो दो शब वरना एक शब छुपता है (फ़ा10) महीनों दिनों साअ़तों का (फ़ा11) कि उससे उसकी क़ुदरत और उसकी वहदानियत के दलायल ज़ाहिर हों (फ़ा12) कि उनमें ग़ौर करके नफ़ा उठाएं (फ़ा13) रोज़े क़ियामत और सवाब व अ़ज़ाब के क़ायल नहीं (फ़ा14) और इस फ़ानी को जाविदानी पर तरजीह दी और उम्र उसकी तलब में गुज़ारी (फ़ा15) हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा से मरवी है कि यहां आयात से सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ज़ाते पाक और क़ुरआन शरीफ़ मुराद है और ग़फ़लत करने से मुराद उनसे एराज़ करना है (फ़ा16) जन्नतों की तरफ़ क़तादा का क़ौल है कि मोमिन जब अपनी क़ब्र से निकलेगा तो उसका अ़मल ख़ूबसूरत शक्ल में उसके सामने आएगा यह शख़्स कहेगा तू कौन है?वह कहेगा मैं तेरा अ़मल हूं और उसके लिए नूर होगा और जन्नत तक पहुंचाएगा और काफ़िर का मुआमला बर–अक्स होगा कि उसका अ़मल बुरी शक्ल में नुमूदार होकर उसे जहन्नम में पहुंचाएगा (फ़ा17) यानी अहले जन्नत (बक़िया सफ़हा 361 पर)

فَلَمَّا كَشَفْنَا عَنْهُ ضُرَّهٗ مَرَّ كَاَنْ لَّمْ يَدْعُنَآ اِلٰى ضُرٍّ مَّسَّهٗ ؕ كَذٰلِكَ زُيِّنَ لِلْمُسْرِفِيْنَ مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿۱۲﴾ وَلَقَدْ اَهْلَكْنَا الْقُرُوْنَ مِنْ قَبْلِكُمْ لَمَّا ظَلَمُوْا ۙ

وَجَآءَتْهُمْ رُسُلُهُمْ بِالْبَيِّنٰتِ وَمَا كَانُوْا لِيُؤْمِنُوْا ؕ كَذٰلِكَ نَجْزِى الْقَوْمَ الْمُجْرِمِيْنَ ﴿۱۳﴾ ثُمَّ جَعَلْنٰكُمْ خَلٰٓئِفَ فِى الْاَرْضِ مِنْۢ بَعْدِهِمْ لِنَنْظُرَ كَيْفَ

تَعْمَلُوْنَ ﴿۱۴﴾ وَاِذَا تُتْلٰى عَلَيْهِمْ اٰيَاتُنَا بَيِّنٰتٍ ۙ قَالَ الَّذِيْنَ لَا يَرْجُوْنَ لِقَآءَنَا ائْتِ بِقُرْاٰنٍ غَيْرِ هٰذَآ اَوْ بَدِّلْهُ ؕ قُلْ مَا يَكُوْنُ لِىْٓ اَنْ اُبَدِّلَهٗ مِنْ تِلْقَآئِ

نَفْسِىْ ۚ اِنْ اَتَّبِعُ اِلَّا مَا يُوْحٰٓى اِلَىَّ ۚ اِنِّىْٓ اَخَافُ اِنْ عَصَيْتُ رَبِّىْ عَذَابَ يَوْمٍ عَظِيْمٍ ﴿۱۵﴾ قُلْ لَّوْ شَآءَ اللّٰهُ مَا تَلَوْتُهٗ عَلَيْكُمْ وَلَآ اَدْرٰىكُمْ بِهٖ ۖ فَقَدْ

لَبِثْتُ فِيْكُمْ عُمُرًا مِّنْ قَبْلِهٖ ؕ اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ ﴿۱۶﴾ فَمَنْ اَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرٰى عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا اَوْ كَذَّبَ بِاٰيٰتِهٖ ؕ اِنَّهٗ لَا يُفْلِحُ الْمُجْرِمُوْنَ ﴿۱۷﴾ وَيَعْبُدُوْنَ مِنْ

फ़लम्मा कशफ़्ना अन्हु जुर्रहू मर्–र क–अल्लम् यद्अुना इला ज़ुर्रिम् मस्सहू कज़ालि–क ज़ुय्यि–न लिल्–मुस्रिफ़ी–न मा कानू यअ्मलून(12)व लक़द् अह्लक्नल्क़ुरू–न मिन् क़ब्लिकुम् लम्मा ज़–लमू व जा–अत्हुम् रुसुलुहुम् बिल्बय्यिनाति वमा कानू लियुअ्मिनू कज़ालि–क नज्–ज़िल् क़ौमल् मुज्रिमीन(13) सुम्–म ज–अ़ल्नाकुम् ख़लाइ–फ़ फ़िल्–अर्ज़ि मिम् बअ्दिहिम् लिनन्जु–र कै–फ़ तअ्मलून(14)व इज़ा तुत्ला अ़लैहिम् आयातुना बय्यिनातिन् क़ा–लल्लज़ी–न ला यर्जू–न लिक़ा–अ–नअ्ति बिक़ुर्–आनिन् ग़ैरि हाज़ा औ बद्दिल्हु क़ुल् मा यकूनु ली अन् उबद्दि–लहू मिन् तिल्क़ाइ नफ़्सी इन् अत्तबिअु इल्ला मा यूहा इलय्–य इन्नी अख़ाफ़ु इन् अ़सैतु रब्बी अ़ज़ा–ब यौमिन् अ़ज़ीम(15)क़ुल् लौ शाअल्लाहु मा तलौ–तुहू अ़लैकुम् व ला अद्राकुम् बिही फ़–क़द् लबिस्तु फ़ीकुम् अुमुरम् मिन् क़ब्लिही अ–फ़ला तअ्क़िलून(16)फ़–मन् अज़्लमु मिम्मनिफ़्तरा अ़लल्लाहि कज़िबन् औ कज़्ज़–ब बि–आयातिही इन्नहू ला युफ़्लिहुल् मुज्रिमून(17)व यअ्बुदू–न मिन्

और खड़े (फ़ा23) फिर जब हम उसकी तकलीफ़ दूर कर देते हैं चल देता है (फ़ा24) गोया कभी किसी तकलीफ़ के पहुंचने पर हमें पुकारा ही न था यूं ही भले कर दिखाए हैं हद से बढ़ने वाले को (फ़ा25) उनके काम(12)(फ़ा26) और बेशक हमने तुम से पहली संगतें (फ़ा27) हलाक फ़रमा दी जब वह हद से बढ़े (फ़ा28) और उनके रसूल उनके पास रौशन दलीलें लेकर आए (फ़ा29) और वह ऐसे थे ही नहीं कि ईमान लाते हम यूं ही बदला देते हैं मुजरिमों को(13)फिर हमने उनके बाद तुम्हें ज़मीन में जानशीन किया कि देखें तुम कैसे काम करते हो।(14) (फ़ा30) और जब उन पर हमारी रौशन आयतें (फ़ा31) पढ़ी जाती हैं वह कहने लगते हैं जिन्हें हम से मिलने की उम्मीद नहीं (फ़ा32) कि इसके सिवा और क़ुरआन ले आईये (फ़ा33) या इसी को बदल दीजिये (फ़ा34) तुम फ़रमाओ मुझे नहीं पहुंचता कि मैं इसे अपनी तरफ़ से बदल दूं मैं तो उसीका ताबेअ् हूं जो मेरी तरफ़ 'वही' होती है (फ़ा35) मैं अगर अपने रब की नाफ़रमानी करूं (फ़ा36) तो मुझे बड़े दिन के अ़ज़ाब का डर है।(15) (फ़ा37) तुम फ़रमाओ अगर अल्लाह चाहता तो मैं इसे तुम पर न पढ़ता न वह तुमको इससे ख़बरदार करता (फ़ा38) तो मैं इससे पहले तुममें अपनी एक उम्र गुज़ार चुका हूं (फ़ा39) तो क्या तुम्हें अ़क़्ल नहीं।(16)(फ़ा40) तो उससे बढ़कर ज़ालिम कौन जो अल्लाह पर झूट बांधे (फ़ा41) या उसकी आयतें झुटलाए बेशक मुजरिमों का भला न होगा।(17) और अल्लाह के सिवा ऐसी चीज़ (फ़ा42)

(फ़ा3) हर हाल में और जब तक उसकी तकलीफ़ ज़ायल न हो दुआ में मश्गूल रहता है (फ़ा24) अपने पहले तरीक़ा पर और वही कुफ़्र की राह इख़्तियार करता है और तकलीफ़ के वक़्त को भूल जाता है (फ़ा25) यानी काफ़िरों को (फ़ा26) मक़सद यह है कि इन्सान बला के वक़्त बहुत ही बेसब्रा है और राहत के वक़्त निहायत नाशुक्रा जब तकलीफ़ पहुंचती है तो खड़े लेटे बैठे हर हालमें दुआ करता है जब अल्लाह तकलीफ़ दूर करदे तो शुक्र बजा नहीं लाता और अपनी हालते साबिक़ा की तरफ़ लौट जाता है यह हाल ग़ाफ़िल का है मोमिन आक़िल का हाल इसके ख़िलाफ़ है वह मुसीबत व बला पर सब्र करता है राहत व आसाईश में शुक्र करता है तकलीफ़ व राहत के जुमला अहवाल में अल्लाह तआ़ला के हुज़ूर तज़र्रुअ् व ज़ारी और दुआ करता है और एक मक़ाम इससे भी आला है जो मोमिनों में भी मख़्सूस बन्दों को हासिल है कि जब कोई मुसीबत व बला आती है उस पर सब्र करते हैं क़ज़ाए इलाही पर दिल से राज़ी रहते हैं और जमीअ् अहवाल पर शुक्र करते हैं। (फ़ा27) यानी उम्मतें (फ़ा28) और कुफ़्र में मुब्तला हुए (फ़ा29) जो उनके सिद्क़ की बहुत वाज़ेह दलीलें थीं लेकिन उन्होंने न माना और अम्बिया की तस्दीक़ न की (फ़ा30) ताकि तुम्हारे साथ तुम्हारे अ़मल के लायक़ मुआमला फ़रमायें (फ़ा31) जिनमें हमारी **(बक़िया सफ़हा 362 पर)**

دُوْنِ اللّٰهِ مَا لَا يَضُرُّهُمْ وَلَا يَنْفَعُهُمْ وَيَقُوْلُوْنَ هٰٓؤُلَآءِ شُفَعَآؤُنَا عِنْدَ اللّٰهِ ؕ قُلْ اَتُنَبِّـُٔوْنَ اللّٰهَ بِمَا لَا يَعْلَمُ فِى السَّمٰوٰتِ وَلَا فِى الْاَرْضِ ؕ سُبْحٰنَهٗ وَتَعٰلٰى
عَمَّا يُشْرِكُوْنَ ﴿۱۸﴾ وَمَا كَانَ النَّاسُ اِلَّآ اُمَّةً وَّاحِدَةً فَاخْتَلَفُوْا ؕ وَلَوْلَا كَلِمَةٌ سَبَقَتْ مِنْ رَّبِّكَ لَقُضِىَ بَيْنَهُمْ فِيْمَا فِيْهِ يَخْتَلِفُوْنَ ﴿۱۹﴾ وَيَقُوْلُوْنَ لَوْلَآ
اُنْزِلَ عَلَيْهِ اٰيَةٌ مِّنْ رَّبِّهٖ ۚ فَقُلْ اِنَّمَا الْغَيْبُ لِلّٰهِ فَانْتَظِرُوْا ۚ اِنِّىْ مَعَكُمْ مِّنَ الْمُنْتَظِرِيْنَ ﴿۲۰﴾ وَاِذَآ اَذَقْنَا النَّاسَ رَحْمَةً مِّنْۢ بَعْدِ ضَرَّآءَ مَسَّتْهُمْ اِذَا
لَهُمْ مَّكْرٌ فِىْٓ اٰيَاتِنَا ؕ قُلِ اللّٰهُ اَسْرَعُ مَكْرًا ؕ اِنَّ رُسُلَنَا يَكْتُبُوْنَ مَا تَمْكُرُوْنَ ﴿۲۱﴾ هُوَ الَّذِىْ يُسَيِّرُكُمْ فِى الْبَرِّ وَالْبَحْرِ ؕ حَتّٰٓى اِذَا كُنْتُمْ فِى
الْفُلْكِ ۚ وَجَرَيْنَ بِهِمْ بِرِيْحٍ طَيِّبَةٍ وَّفَرِحُوْا بِهَا جَآءَتْهَا رِيْحٌ عَاصِفٌ وَّجَآءَهُمُ الْمَوْجُ مِنْ كُلِّ مَكَانٍ وَّظَنُّوْٓا اَنَّهُمْ اُحِيْطَ بِهِمْ ۙ دَعَوُا اللّٰهَ مُخْلِصِيْنَ

दूनिल्लाहि मा ला यजुर्रुहुम् व ला यन्फ़अुहुम् व यकूलू–न हाउलाइ शु–फ़आउना अिन्दल्लाहि कुल् अतुनब्बिऊनल्ला–ह बिमा ला यअ्–लमु फ़िस्समावाति व ला फ़िल्अर्ज़ि सुब्हा–नहू व तआ़ला अ़म्मा युश्रि–कून(18)व मा कानन्नासु इल्ला उम्मतंव् वाहि–द–तन् फ़ख़्ता–लफ़ू. व लौला कलि–मतुन् स–ब–क़त् मिर् रब्बि–क ल–कुज़ि–य बै–नहुम् फ़ीमा फ़ीहि यख़्–तलिफ़ू न(19)व यकूलू–न लौला उन्ज़ि–ल अ़लैहि आ–यतुम् मिर्रब्बिही फ़कुल् इन्नम–ल्ग़ैबु लिल्लाहि फ़न्तज़िरू इन्नी म–अ़कुम् मिनल् मुन्तज़िरीन(20)व इज़ा अज़क्नन्ना–स रह्मतम् मिम् बअ्दि ज़र्रा–अ मस्सत्हुम् इज़ा लहुम् मक्रुन् फ़ी आयातिना कुलिल्लाहु अस्–रअु मक्रन् इन्–न रुसु–लना यक्तुबू–न मा तम्कुरून (21)हुवल्लज़ी युसय्यिरुकुम् फ़िल्बर्रि वल्बह्रि हत्ता इज़ा कुन्तुम् फ़िल्फ़ुल्कि व जरै–न बिहिम् बिरी–हिन् तय्यि–बतिंव् व फ़रिहू बिहा जाअत्हा रीहुन् आ़सिफ़ुंव् व जा–अ हुमुल्मौजु मिन् कुल्लि मकानिंव् व ज़न्नू अन्नहुम् उहीत बिहिम् द–अ़वुल्ला–ह मुख़्लिसी–न

को पूजते हैं जो उनका कुछ भला न करे और कहते हैं कि यह अल्लाह के यहां हमारे सिफ़ारशी हैं (फ़ा43) तुम फ़रमाओ क्या अल्लाह को वह बात जताते हो जो उसके इल्म में न आसमानों में है न ज़मीन में (फ़ा44) उसे पाकी और बरतरी है उनके शिर्क से।(18) और लोग एक ही उम्मत थे(फ़ा45) फिर मुख़्तलिफ़ हुए और अगर तेरे रब की तरफ़ से एक बात पहले न हो चुकी होती (फ़ा46) तो यहीं उनके इख़्तिलाफ़ों का उन पर फ़ैसला हो गया होता।(19) (फ़ा47) और कहते हैं उन पर उनके रब की तरफ़ से कोई निशानी क्यों नहीं उतरी (फ़ा48) तुम फ़रमाओ ग़ैब तो अल्लाह के लिए है अब रास्ता देखो मैं भी तुम्हारे साथ राह देख रहा हूं।(20) (रुकूअ़ 7) और जब हम आदमियों को रहमत का मज़ा देते हैं किसी तकलीफ़ के बाद जो उन्हें पहुंची थी जभी वह हमारी आयतों के साथ दाँव चलते हैं (फ़ा49) तुम फ़रमा दो अल्लाह की ख़ुफ़िया तदबीर सबसे जल्द हो जाती है (फ़ा50) बेशक हमारे फ़रिश्ते तुम्हारे मक्र लिख रहे हैं।(21) (फ़ा51) वही है कि तुम्हें ख़ुश्की और तरी में चलाता है (फ़ा52) यहां तक कि जब तुम कश्ती में हो और वह (फ़ा53) अच्छी हवा से उन्हें लेकर चलें और उस पर ख़ुश हुए (फ़ा54) उन पर आंधी का झोंका आया और हर तरफ़ से लहरों ने उन्हें आ लिया और समझ लिए कि हम घिर गए उस वक़्त अल्लाह को पुकारते हैं निरे

(फ़ा43) यानी दुनियवी उमूर में क्योंकि आख़िरत और मरने के बाद उठने का तो वह एतेक़ाद ही नहीं रखते (फ़ा44) यानी उसका वुजूद ही नहीं क्योंकि जो चीज़ मौजूद है वह ज़रूर इल्मे इलाही में है (फ़ा45) एक दीने इस्लाम पर जैसा कि ज़मानए आदम अ़लैहिस्सलाम में क़ाबील के हाबील को क़त्ल करने के वक़्त तक हज़रत आदम अ़लैहिस्सलाम और उनकी ज़ुर्रियत एक ही दीन पर थे इसके बाद उन में इख़्तिलाफ़ हुआ और एक क़ौल यह है कि ज़मानए नूह अ़लैहिस्सलाम तक एक दीन पर रहे फिर इख़्तिलाफ़ हुआ तो हज़रत नूह अ़लैहिस्सलाम मबऊस फ़रमाए गए एक क़ौल यह है कि हज़रत नूह अ़लैहिस्सलातु वस्सलाम के कश्ती से उतरने के वक़्त सब लोग एक दीने इस्लाम पर थे एक क़ौल यह है कि अहदे हज़रत इब्राहीम से सब लोग एक दीन पर थे यहां तक कि अ़मूर बिन लुहा ने दीन को मुतग़य्यर किया इस तक़दीर पर *अन्नासु* से मुराद ख़ास अ़रब होंगे एक क़ौल यह है कि लोग एक दीन पर थे यानी कुफ़्र पर फिर अल्लाह तआ़ला ने अम्बिया को भेजा तो बाज़ उनमें से ईमान लाये और बाज़ उलमा ने कहा कि माना यह हैं कि लोग अव्वल ख़िलक़त में फ़ितरते सलीमा पर थे फिर उनमें इख़्तिलाफ़ात हुए हदीस शरीफ़ में है हर बच्चा फ़ितरत पर पैदा होता है फिर उसके मां बाप उसको यहूदी बनाते हैं या नसरानी बनाते हैं या मजूसी बनाते हैं और हदीस में फ़ितरत से फ़ितरते इस्लाम मुराद है। (फ़ा46) और हर उम्मत के लिए एक **(बक़िया सफ़हा 362 पर)**

لَهُ الدِّيْنَ ۚ لَئِنْ اَنْجَيْتَنَا مِنْ هٰذِهٖ لَنَكُوْنَنَّ مِنَ الشّٰكِرِيْنَ ﴿۲۲﴾ فَلَمَّاۤ اَنْجٰىهُمْ اِذَا هُمْ يَبْغُوْنَ فِى الْاَرْضِ بِغَيْرِ الْحَقِّ ؕ يٰۤاَيُّهَا النَّاسُ اِنَّمَا بَغْيُكُمْ عَلٰٓى اَنْفُسِكُمْ ۙ

مَّتَاعَ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۫ ثُمَّ اِلَيْنَا مَرْجِعُكُمْ فَنُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿۲۳﴾ اِنَّمَا مَثَلُ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا كَمَآءٍ اَنْزَلْنٰهُ مِنَ السَّمَآءِ فَاخْتَلَطَ بِهٖ نَبَاتُ

الْاَرْضِ مِمَّا يَاْكُلُ النَّاسُ وَالْاَنْعَامُ ؕ حَتّٰۤى اِذَاۤ اَخَذَتِ الْاَرْضُ زُخْرُفَهَا وَازَّيَّنَتْ وَظَنَّ اَهْلُهَاۤ اَنَّهُمْ قٰدِرُوْنَ عَلَيْهَاۤ ۙ اَتٰىهَاۤ اَمْرُنَا لَيْلًا اَوْ نَهَارًا

فَجَعَلْنٰهَا حَصِيْدًا كَاَنْ لَّمْ تَغْنَ بِالْاَمْسِ ؕ كَذٰلِكَ نُفَصِّلُ الْاٰيٰتِ لِقَوْمٍ يَّتَفَكَّرُوْنَ ﴿۲۴﴾ وَاللّٰهُ يَدْعُوْۤا اِلٰى دَارِ السَّلٰمِ ؕ وَيَهْدِىْ مَنْ يَّشَآءُ اِلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ﴿۲۵﴾

لِلَّذِيْنَ اَحْسَنُوا الْحُسْنٰى وَزِيَادَةٌ ؕ وَلَا يَرْهَقُ وُجُوْهَهُمْ قَتَرٌ وَّلَا ذِلَّةٌ ؕ اُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ الْجَنَّةِ ۚ هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ﴿۲۶﴾ وَالَّذِيْنَ كَسَبُوا السَّيِّاٰتِ جَزَآءُ سَيِّئَةٍۭ

लहुद्दी–न लइन् अन्जै–तना मिन् हाज़िही ल–नकूनन्–न मिनश्शाकिरीन(22)फ़–लम्मा अन्जाहुम् इज़ाहुम् यब्गू–न फ़िल्अर्ज़ि बिग़ैरिल् हक़्क़ि या अय्युहन्नासु इन्नमा बग़्युकुम् अ़ला अन्फ़ुसिकुम् मताअ़ल् हयातिद्दुन्या सुम्–म इलैना मर्जिअ़ुकुम् फ़नु–नब्बिउकुम् बिमा कुन्तुम् तअ़्–मलून(23) इन्नमा म–सलुल् हयातिद्दुन्या कमाइन् अन्ज़ल्नाहु मिनस्समाइ फ़ख़्त–ल–त बिही नबातुल्अर्ज़ि मिम्मा यअ्कुलुन्नासु वल्–अन्आमु हत्ता इज़ा अ–ख़–ज़तिल् अर्ज़ु ज़ुख़्रु–फ़हा वज़्ज़य्यनत् व ज़न्–न अह्लुहा अन्नहुम् क़ादिरू–न अ़लैहा अताहा अम्रुना लैलन् औ नहारन् फ़–जअ़ल्नाहा हसीदन् क–अल्लम् तग़्–न बिल्–अम्सि कज़ालि–क नुफ़स्सिलुल् आयाति लिक़ौमिंय्य–त–फ़क्करून (24)वल्लाहु यद्अू. इला दारिस्सलामि व यह्दी मंय्यशाउ इला सिरातिम् मुस्तक़ीम(25)लिल्लज़ी–न अह्–सनुल्हुस्ना व ज़िया–दतुन् व ला यर्–हक़ु वुजू–हहुम् क़–त–रुंव् व ला ज़िल्लतुन् उलाइ–क अस्हाबुल् जन्नति हुम् फ़ीहा ख़ालिदून(26)वल्लज़ी–न क–सबुस्सय्यिआति जज़ाउ सय्यिअतिम्

उसके बन्दे होकर कि अगर तू इससे हमें बचा लेगा तो हम ज़रूर शुक्र गुज़ार होंगे।(22) (फ़ा55) फिर अल्लाह जब उन्हें बचा लेता है जभी वह ज़मीन में नाहक़ ज़्यादती करने लगते हैं। (फ़ा56) ऐ लोगो तुम्हारी ज़्यादती तुम्हारे ही जानों का वबाल है दुनिया के जीते जी बरत लो फिर तुम्हें हमारी तरफ़ फिरना है उस वक़्त हम तुम्हें जता देंगे जो तुम्हारे कोतक थे।(23) (फ़ा57) दुनिया की ज़िन्दगी की कहावत तो ऐसी ही है जैसे वह पानी कि हमने आसमान से उतारा तो उसके सबब ज़मीन से उगने वाली चीज़ें घनी होकर निकलीं जो कुछ आदमी और चौपाए खाते हैं (फ़ा58) यहां तक कि जब ज़मीन ने अपना सिंगार ले लिया (फ़ा59) और ख़ूब आरास्ता हो गई और उसके मालिक समझे कि यह हमारे बस में आ गई (फ़ा60) हमारा हुक्म उस पर आया रात में या दिन में (फ़ा61) तो हमने उसे कर दिया काटी हुई गोया कल थी ही नहीं (फ़ा62) हम यूं ही आयतें मुफ़स्सल बयान करते हैं ग़ौर करने वालों के लिए।(24) (फ़ा63) और अल्लाह सलामती के घर की तरफ़ पुकारता है (फ़ा64) और जिसे चाहे सीधी राह चलाता है।(25) (फ़ा65) भलाई वालों के लिए भलाई है और उससे भी ज़ायद (फ़ा66) और उनके मुंह पर न चढ़ेगी सियाही और न ख़्वारी (फ़ा67) वही जन्नत वाले हैं वह उसमें हमेशा रहेंगे।(26) और जिन्होंने बुराईयां कमाईं (फ़ा68) तो बुराई का बदला

(फ़ा55) तेरी नेअ़्मतों के तुझ पर ईमान लाकर और ख़ास तेरी इबादत करके (फ़ा56) और वादा के ख़िलाफ़ करके कुफ़्र व मअ़सियत में मुब्तला होते हैं (फ़ा57) और उनकी तुम्हें जज़ा देंगे (फ़ा58) गल्ले और फल और सब्ज़ा (फ़ा59) ख़ूब फूली फली सरसब्ज़ व शादाब हुई (फ़ा60) कि खेतियां तैयार हो गईं फल रसीदा हो गए ऐसे वक़्त (फ़ा61) यानी अचानक हमारा अ़ज़ाब आया ख़्वाह बिजली गिरने की शक्ल में या ओले बरसने या आंधी चलने की सूरत में (फ़ा62) यह उन लोगों के हाल की एक तमसील है जो दुनिया के शैफ़्ता हैं और आख़िरत की उन्हें कुछ परवाह नहीं इसमें बहुत दिल पज़ीर तरीक़ा पर ख़ातिर गुज़ीं किया गया है कि दुनियवी ज़िन्दगानी उम्मीदों का सब्ज़ बाग़ है उस में उम्र खोकर जब आदमी इस ग़ायत पर पहुंचता है जहां उसको हुसूले मुराद का इत्मीनान हो और वह कामयाबी के नशा में मस्त हो अचानक उसको मौत पहुंचती है और वह तमाम नेअ़्मतों और लज़्ज़तों से महरूम हो जाता है। क़तादा ने कहा कि दुनिया का तलबगार जब बिल्कुल बेफ़िक्र होता है उस वक़्त उस पर अ़ज़ाबे इलाही आता है और उसका तमाम सरो–सामान जिससे उसकी उम्मीदें वाबस्ता थीं ग़ारत हो जाता है (फ़ा63) ताकि वह नफ़ा हासिल करें और ज़ुलमात शुकूक व औहाम से नजात पायें और दुनियाए नापाइदार की बेसबाती से बाख़बर हों। (फ़ा64) दुनिया की बे सबाती बयान फ़रमाने के बाद दारे बाक़ी की तरफ़ दावत दी क़तादा ने कहा कि दारुस्सलाम **(बक़िया सफ़हा 363 पर)**

بِمِثْلِهَا ۙ وَتَرْهَقُهُمْ ذِلَّةٌ ؕ مَا لَهُمْ مِّنَ اللّٰهِ مِنْ عَاصِمٍ ۚ كَاَنَّمَاۤ اُغْشِيَتْ وُجُوْهُهُمْ قِطَعًا مِّنَ الَّيْلِ مُظْلِمًا ؕ اُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ النَّارِ ۚ هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ﴿۲۷﴾ وَيَوْمَ نَحْشُرُهُمْ جَمِيْعًا ثُمَّ نَقُوْلُ لِلَّذِيْنَ اَشْرَكُوْا مَكَانَكُمْ اَنْتُمْ وَشُرَكَآؤُكُمْ ۚ فَزَيَّلْنَا بَيْنَهُمْ وَقَالَ شُرَكَآؤُهُمْ مَّا كُنْتُمْ اِيَّانَا تَعْبُدُوْنَ ﴿۲۸﴾ فَكَفٰى بِاللّٰهِ شَهِيْدًۢا بَيْنَنَا وَبَيْنَكُمْ اِنْ كُنَّا عَنْ عِبَادَتِكُمْ لَغٰفِلِيْنَ ﴿۲۹﴾ هُنَالِكَ تَبْلُوْا كُلُّ نَفْسٍ مَّاۤ اَسْلَفَتْ وَرُدُّوْۤا اِلَى اللّٰهِ مَوْلٰىهُمُ الْحَقِّ وَضَلَّ عَنْهُمْ مَّا كَانُوْا يَفْتَرُوْنَ ﴿۳۰﴾ قُلْ مَنْ يَّرْزُقُكُمْ مِّنَ السَّمَآءِ وَالْاَرْضِ اَمَّنْ يَّمْلِكُ السَّمْعَ وَالْاَبْصَارَ وَمَنْ يُّخْرِجُ الْحَیَّ مِنَ الْمَيِّتِ وَيُخْرِجُ الْمَيِّتَ مِنَ الْحَیِّ وَمَنْ يُّدَبِّرُ الْاَمْرَ ؕ فَسَيَقُوْلُوْنَ اللّٰهُ ۚ فَقُلْ اَفَلَا تَتَّقُوْنَ ﴿۳۱﴾ فَذٰلِكُمُ اللّٰهُ رَبُّكُمُ الْحَقُّ ۚ فَمَا ذَا بَعْدَ الْحَقِّ اِلَّا الضَّلٰلُ ۚۖ فَاَنّٰى تُصْرَفُوْنَ ﴿۳۲﴾ كَذٰلِكَ حَقَّتْ

बिमिस्लिहा व तर्–हकुहुम् ज़िल्लतुन् मा लहुम् मि–नल्लाहि मिन् आसिमिन् क–अन्नमा उग़्शियत् वुजूहुहुम् कि–त–अ़म् मिनल्लैलि मुज़्लिमन् उलाइ–क अस्हाबुन्नारि हुम् फ़ीहा ख़ालिदून(27)व यौ–म नह्शुरुहुम् जमीअ़न् सुम्–म नकूलु लिल्लज़ी–न अश्रकू मका–नकुम् अन्तुम् व शु–रकाउकुम् फ़–ज़य्यल्ना बै–नहुम् व का–ल शु–रकाउहुम् मा कुन्तुम् इय्याना तअ़्बुदून(28) फ़–कफ़ा बिल्लाहि शहीदम् बै–नना व बै–नकुम् इन् कुन्ना अ़न् अ़िबा–दतिकुम् लग़ाफ़ि–लीन (29)हुनालि–क तब्लू कुल्लु नफ़्सिम् मा अस्–लफ़त् व रुद्दू इलल्लाहि मौलाहुमुल् हक़्क़ि व ज़ल्–ल अ़न्हुम् मा कानू यफ़्तरून(30)कुल् मंय्यर् ज़ुकुकुम् मिनस्समाइ वल्अर्ज़ि अम्मंय्यम् लिकुस्– सम्–अ़ वल्अब्सा–र व मंय्युख़्रिजुल्–हय्–य मिनल्मय्यिति व युख़्रिजुल् मय्यि–त मिनल्हय्यि व मंय्यु– दब्बिरुल् अम्–र फ़–स–यकूलू–नल्लाहु फ़कुल् अ–फ़ला तत्तकून(31)फ़ज़ालिकुमुल्लाहु रब्बुकुमुल् हक़्क़ु फ़माज़ा बअ़्दल् हक़्क़ि इल्लज़्ज़लालु फ़–अन्ना तुस्–रफ़ून(32)कज़ालि–क हक़्क़त्

उसी जैसा (फ़ा69) और उन पर ज़िल्लत चढ़ेगी उन्हें अल्लाह से बचाने वाला कोई न होगा गोया उनके चेहरों पर अंधेरी रात के टुकड़े चढ़ा दिये हैं (फ़ा70) वही दोज़ख़ वाले हैं वह उसमें हमेशा रहेंगे।(27)और जिस दिन हम उन सबको उठायेंगे (फ़ा71) फिर मुश्रिकों से फ़रमायेंगे अपनी जगह रहो तुम और तुम्हारे शरीक (फ़ा72) तो हम उन्हें मुसलमानों से जुदा कर देंगे और उनके शरीक उनसे कहेंगे तुम हमें कब पूजते थे।(28) (फ़ा73) तो अल्लाह गवाह काफ़ी है हम में और तुम में कि हमें तुम्हारे पूजने की ख़बर भी न थी।(29) यहां हर जान जांच लेगी जो आगे भेजा (फ़ा74) और अल्लाह की तरफ़ फेरे जायेंगे जो उनका सच्चा मौला है और उनकी सारी बनावटें (फ़ा75) उनसे गुम जायेंगी।(30) (फ़ा76) (रुकूअ़ 8) तुम फ़रमाओ तुम्हें कौन रोज़ी देता है आसमान और ज़मीन से (फ़ा77) या कौन मालिक है कान और आँखों का (फ़ा78) और कौन निकालता है ज़िन्दा को मुर्दे से और निकालता है मुर्दा को ज़िन्दे से (फ़ा79) और कौन तमाम कामों की तदबीर करता है तो अब कहेंगे कि अल्लाह (फ़ा80) तो तुम फ़रमाओ तो क्यों नहीं डरते।(31)(फ़ा81) तो यह अल्लाह है तुम्हारा सच्चा रब (फ़ा82) फिर हक़ के बाद क्या है मगर गुमराही (फ़ा83) फिर कहां फिरे जाते हो।(32) यूं ही साबित हो चुकी है

(फ़ा69) ऐसा नहीं कि जैसे नेकियों का सवाब दस गुना और सात सौ गुना किया जाता है ऐसे ही बदियों का अ़ज़ाब भी बढ़ा दिया जाये बल्कि जितनी बदी होगी उतना ही अ़ज़ाब किया जाएगा। (फ़ा70) यह हाल होगा उनकी रू सियाही का ख़ुदा की पनाह (फ़ा71) और तमाम ख़ल्क़ को मौक़िफ़े हिसाब में जमा करेंगे (फ़ा72) यानी वह बुत जिनको तुम पूजते थे (फ़ा73) रोज़े क़ियामत एक साअ़त ऐसी शिद्दत की होगी कि बुत अपने पुजारियों की पूजा का इंकार कर देंगे और अल्लाह की क़सम खा कर कहेंगे कि हम न सुनते थे न जानते थे न समझते थे कि तुम हमें पूजते हो इस पर बुत परस्त कहेंगे कि अल्लाह की क़सम हम तुम्हीं को पूजते थे तो बुत कहेंगे। (फ़ा74) यानी इस मौक़िफ़ में सब को मालूम हो जाएगा कि उन्होंने पहले जो अ़मल किये थे वह कैसे थे अच्छे या बुरे मुज़िर या मुफ़ीद। (फ़ा75) बुतों को ख़ुदा का शरीक बताना और मअ़्बूद ठहराना। (फ़ा76) और बातिल व बे हक़ीक़त साबित होंगी (फ़ा77) आसमान से मेंह बरसा कर और ज़मीन से सब्ज़ा उगा कर (फ़ा78) और यह हवास तुम्हें किसने दिये हैं किसने यह अ़जायब तुम्हें इनायत किये हैं इन्हें मुद्दतों कौन महफ़ूज़ रखता है। (फ़ा79) इन्सान को नुत्फ़ा से और नुत्फ़ा को इन्सान से परिन्द को अन्डे से और अन्डे को परिन्द से मोमिन को काफ़िर से और काफ़िर **(बक़िया सफ़हा 363 पर)**

كَلِمَتُ رَبِّكَ عَلَى الَّذِينَ فَسَقُوا أَنَّهُمْ لَا يُؤْمِنُونَ ۝٣٣ قُلْ هَلْ مِنْ شُرَكَائِكُمْ مَنْ يَبْدَأُ الْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيدُهُ ۚ قُلِ اللَّهُ يَبْدَأُ الْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيدُهُ فَأَنَّىٰ

تُؤْفَكُونَ ۝٣٤ قُلْ هَلْ مِنْ شُرَكَائِكُمْ مَنْ يَهْدِي إِلَى الْحَقِّ ۚ قُلِ اللَّهُ يَهْدِي لِلْحَقِّ ۗ أَفَمَنْ يَهْدِي إِلَى الْحَقِّ أَحَقُّ أَنْ يُتَّبَعَ أَمَّنْ لَا يَهِدِّي إِلَّا أَنْ يُهْدَىٰ

فَمَا لَكُمْ كَيْفَ تَحْكُمُونَ ۝٣٥ وَمَا يَتَّبِعُ أَكْثَرُهُمْ إِلَّا ظَنًّا ۚ إِنَّ الظَّنَّ لَا يُغْنِي مِنَ الْحَقِّ شَيْئًا ۚ إِنَّ اللَّهَ عَلِيمٌ بِمَا يَفْعَلُونَ ۝٣٦ وَمَا كَانَ هَٰذَا الْقُرْآنُ أَنْ

يُفْتَرَىٰ مِنْ دُونِ اللَّهِ وَلَٰكِنْ تَصْدِيقَ الَّذِي بَيْنَ يَدَيْهِ وَتَفْصِيلَ الْكِتَابِ لَا رَيْبَ فِيهِ مِنْ رَبِّ الْعَالَمِينَ ۝٣٧ أَمْ يَقُولُونَ افْتَرَاهُ ۖ قُلْ فَأْتُوا بِسُورَةٍ

مِثْلِهِ وَادْعُوا مَنِ اسْتَطَعْتُمْ مِنْ دُونِ اللَّهِ إِنْ كُنْتُمْ صَادِقِينَ ۝٣٨ بَلْ كَذَّبُوا بِمَا لَمْ يُحِيطُوا بِعِلْمِهِ وَلَمَّا يَأْتِهِمْ تَأْوِيلُهُ ۚ كَذَٰلِكَ كَذَّبَ الَّذِينَ مِنْ

कलि–मतु रब्बि–क अ़–लल्लज़ी–न फ़–सक़ू अन्नहुम् ला युअ्मिनून(33)कुल् हल् मिन् शु–रकाइकुम् मंय्यब्–दउल् ख़ल्–क़ सुम्–म युई़दुहू क़ुलिल्लाहु यब्दउल् ख़ल्–क़ सुम्–म युई़दुहू फ़–अन्ना तुअ्–फ़कून(34)क़ुल् हल् मिन् शु–रकाइकुम् मंय्यह्दी इलल्ह़क़्क़ि क़ुलिल्लाहु यह्दी लिल्ह़क़्क़ि अ–फ़–मंय्यह्दी इलल्ह़क़्क़ि अह़क़्क़ु अंय्युत्त–ब–अ़ अम्मल् ला यहिद्दी इल्ला अंय्युह्दा फ़मा लकुम् कै–फ़ तह़्कुमून(35)व मा यत्तबिअ़ु अक्सरुहुम् इल्ला ज़न्नन् इन्नज़्ज़न्–न ला युग़्नी मिन–ल्ह़क़्क़ि शैअन् इन्नल्ला–ह अ़ली–मुम् बिमा यफ़्–अ़लून(36)व मा का–न हाज़ल् क़ुर्आनु अंय्युफ़्तरा मिन् दूनिल्लाहि व लाकिन् तस्दीक़ल्लज़ी बै–न यदैहि व तफ़्सीलल् किताबि लारै–ब फ़ीहि मिर्रब्बिल् आ़–लमीन(37)अम् यक़ूलूनफ़्तराहु क़ुल् फ़अ्तू बिसू–रतिम् मिस्लिही वद्अ़ू मनिस्त–तअ़्–तुम् मिन् दूनिल्लाहि इन् कुन्तुम् सादिक़ीन(38)बल् कज़्ज़बू बिमा लम् युह़ीतू बिअ़िल्मिही व लम्मा यअ्तिहिम् तअ्वीलुहू कज़ालि–क कज़्ज़ बल्लज़ी–न मिन्

तेरे रब की बात फ़ासिक़ों पर (फ़ा84) तो वह ईमान नहीं लायेंगे।(33) तुम फ़रमाओ तुम्हारे शरीकों में (फ़ा85) कोई ऐसा है कि अव्वल बनाए फिर फ़ना के बाद दोबारा बनाए (फ़ा86) तुम फ़रमाओ अल्लाह अव्वल बनाता है फिर फ़ना के बाद दोबारा बनाएगा तो कहां औंधे जाते हो।(34) (फ़ा87) तुम फ़रमाओ तुम्हारे शरीकों में कोई ऐसा है कि हक़ की राह दिखाए (फ़ा88) तुम फ़रमाओ कि अल्लाह हक़ की राह दिखाता है तो क्या जो हक़ की राह दिखाए उसके हुक्म पर चलना चाहिये या उसके जो ख़ुद ही राह न पाए जब तक राह न दिखाया जाए (फ़ा89) तो तुम्हें क्या हुआ कैसा हुक्म लगाते हो।(35)और उन (फ़ा90) में अक्सर तो नहीं चलते मगर गुमान पर (फ़ा91) बेशक गुमान हक़ का कुछ काम नहीं देता बेशक अल्लाह उनके कामों को जानता है।(36) और इस क़ुरआन की यह शान नहीं कि कोई अपनी तरफ़ से बना ले बे अल्लाह के उतारे (फ़ा92) हां वह अगली किताबों की तस्दीक़ है (फ़ा93) और लौह में जो कुछ लिखा है सबकी तफ़सील है इसमें कुछ शक नहीं परवरदिगारे आलम की तरफ़ से है। क्या यह कहते हैं(37) (फ़ा94) कि उन्होंने उसे बना लिया है तुम फ़रमाओ (फ़ा95) तो उस जैसी एक सूरत ले आओ और अल्लाह को छोड़ कर जो मिल सकें सबको बुला लाओ (फ़ा96) अगर तुम सच्चे हो।(38) बल्कि उसे झुटलाया जिसके इल्म पर क़ाबू न पाया (फ़ा97) और अभी उन्होंने उसका अन्जाम नहीं देखा है (फ़ा98) ऐसे ही उनसे अगलों ने

(फ़ा84) जो कुफ़्र में रासिख़ हो गए और रब की बात से मुराद या क़ज़ाए इलाही है या अल्लाह तआ़ला का इरशाद *ल–अम्लअन्–न जहन्न–म* अलआयत (फ़ा85) जिन्हें ऐ मुशरिकीन तुम मअ़्बूद ठहराते हो (फ़ा86) उसका जवाब ज़ाहिर है कि कोई ऐसा नहीं क्योंकि मुशरिकीन भी यह जानते हैं कि पैदा करने वाला अल्लाह ही है लिहाज़ा ऐ मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम (फ़ा87) और ऐसी रौशन दलीलें क़ायम होने के बाद राहे रास्त से मुनहरिफ़ होते हो (फ़ा88) हुज्जतें और दलाइल क़ायम करके रसूल भेज कर किताबें नाज़िल फ़रमा कर मुकल्लिफ़ीन को अक़्ल व नज़र अता फ़रमा कर उसका वाज़ेह जवाब यह है कि कोई नहीं तो ऐ हबीब (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) (फ़ा89) जैसे कि तुम्हारे बुत हैं कि किसी जगह जा नहीं सकते जब तक कि कोई उठा ले जाने वाला उन्हें उठा कर ले न जाये और न किसी चीज़ की हक़ीक़त को समझें और राहे हक़ को पहचानें बग़ैर इसके कि अल्लाह तआ़ला उन्हें ज़िन्दगी अक़्ल और इदराक दे तो जब उनकी मजबूरी का यह आलम है तो वह दूसरों को क्या राह बता सकें ऐसों को मअ़्बूद बनाना उनका मुतीअ़् बनना कितना बातिल और बेहूदा है (फ़ा90) मुशरिकीन (फ़ा91) जिसकी उनके पास कोई दलील नहीं न उसकी सेहत का जज़्म व यक़ीन शक में पड़े हुए हैं और यह गुमान करते **(बक़िया सफ़हा 363 पर)**

قَبْلِهِمْ فَانْظُرْ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الظّٰلِمِيْنَ ﴿٣٩﴾ وَمِنْهُمْ مَّنْ يُّؤْمِنُ بِهٖ وَمِنْهُمْ مَّنْ لَّا يُؤْمِنُ بِهٖ وَرَبُّكَ اَعْلَمُ بِالْمُفْسِدِيْنَ ﴿٤٠﴾ وَاِنْ كَذَّبُوْكَ فَقُلْ
لِّيْ عَمَلِيْ وَلَكُمْ عَمَلُكُمْ ۚ اَنْتُمْ بَرِيْٓـُٔوْنَ مِمَّآ اَعْمَلُ وَاَنَا بَرِيْٓءٌ مِّمَّا تَعْمَلُوْنَ ﴿٤١﴾ وَمِنْهُمْ مَّنْ يَّسْتَمِعُوْنَ اِلَيْكَ ۭ اَفَاَنْتَ تُسْمِعُ الصُّمَّ وَلَوْ كَانُوْا لَا يَعْقِلُوْنَ ﴿٤٢﴾
وَمِنْهُمْ مَّنْ يَّنْظُرُ اِلَيْكَ ۭ اَفَاَنْتَ تَهْدِي الْعُمْيَ وَلَوْ كَانُوْا لَا يُبْصِرُوْنَ ﴿٤٣﴾ اِنَّ اللّٰهَ لَا يَظْلِمُ النَّاسَ شَيْـًٔا وَّلٰكِنَّ النَّاسَ اَنْفُسَهُمْ يَظْلِمُوْنَ ﴿٤٤﴾ وَيَوْمَ
يَحْشُرُهُمْ كَاَنْ لَّمْ يَلْبَثُوْٓا اِلَّا سَاعَةً مِّنَ النَّهَارِ يَتَعَارَفُوْنَ بَيْنَهُمْ ۭ قَدْ خَسِرَ الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِلِقَاۗءِ اللّٰهِ وَمَا كَانُوْا مُهْتَدِيْنَ ﴿٤٥﴾ وَاِمَّا نُرِيَنَّكَ بَعْضَ
الَّذِيْ نَعِدُهُمْ اَوْ نَتَوَفَّيَنَّكَ فَاِلَيْنَا مَرْجِعُهُمْ ثُمَّ اللّٰهُ شَهِيْدٌ عَلٰي مَا يَفْعَلُوْنَ ﴿٤٦﴾ وَلِكُلِّ اُمَّةٍ رَّسُوْلٌ ۚ فَاِذَا جَاۗءَ رَسُوْلُهُمْ قُضِيَ بَيْنَهُمْ بِالْقِسْطِ

क़ब्लिहिम् फ़न्जुर् कै–फ़ का–न आक़ि–ब–तुज़्ज़ालिमीन(39)व मिन्हुम् मंय्यु–अमिनु बिही व मिन्हुम् मल्ला युअमिनु बिही व रब्बु–क अअ्लमु बिल्मुफ़्सिदीन(40)व इन् कज़्ज़बू–क फ़क़ुल् ली अ–मली व लकुम् अ–मलुकुम् अन्तुम् बरीऊ–न मिम्मा अअ्–मलु व अना बरीउम् मिम्मा तअ्मलून(41) व मिन्हुम् मंय्यस्त–मिऊ–न इलै–क अ–फ़ अन्–त तुस्मिउस् सुम्–म व लौ कानू ला यअ्क़िलून(42) व मिन्हुम् मंय्यन्जुरु इलै–क अ–फ़–अन्–त तह्दिल् उम्–य व लौ कानू ला युब्सिरून(43)इन्नल्ला–ह ला यज़्लिमुन्ना–स शैअंव् व लाकिन्नन्ना–स अन्फ़ु–सहुम् यज़्लिमून(44)व यौ–म यह्शुरुहुम् क–अल्लम् यल्बसू इल्ला साअ–तम् मिनन्नहारि य–तआ–रफ़ू–न बै–नहुम् क़द् ख़सिरल्–लज़ी–न कज़्ज़बू बिलि–क़ाइल्लाहि व मा कानू मुह्तदीन(45)व इम्मा नुरियन्न–क बअ्–ज़ल्लज़ी नअिदुहुम् औ न–त–वफ़्फ़–यन्न–क फ़इलैना मर्जिउ–हुम् सुम्मल्लाहु शहीदुन् अ़ला मा यफ़्अ़लून(46)व लिकुल्लि उम्म–तिर्रसूलुन् फ़इज़ा जा–अ रसूलुहुम् क़ुज़ि–य बै–नहुम् बिल्क़िस्ति

झुठलाया था (फ़ा99) तो देखो ज़ालिमों का कैसा अंजाम हुआ।(39) (फ़ा100) और उन (फ़ा101) में कोई उस (फ़ा102) पर ईमान लाता है और उनमें कोई उस पर ईमान नहीं लाता है और तुम्हारा रब मुफ़्सिदों को ख़ूब जानता है।(40) (फ़ा103) (रुकूअ़ 9) और अगर वह तुम्हें झुटलायें (फ़ा104) तो फ़रमा दो कि मेरे लिए मेरी करनी और तुम्हारे लिए तुम्हारी करनी (फ़ा105) तुम्हें मेरे काम से इलाक़ा नहीं और मुझे तुम्हारे काम से तअ़ल्लुक़ नहीं।(41) (फ़ा106) और उनमें कोई वह हैं जो तुम्हारी तरफ़ कान लगाते हैं (फ़ा107) तो क्या तुम बहरों को सुना दोगे अगरचे उन्हें अक़्ल न हो। (42) (फ़ा108) और उनमें कोई तुम्हारी तरफ़ तकता है (फ़ा109) क्या तुम अन्धों को राह दिखा दोगे अगरचे वह न सूझें। (43) बेशक अल्लाह लोगों पर कुछ ज़ुल्म नहीं करता (फ़ा110) हां लोग ही अपनी जानों पर ज़ुल्म करते हैं।(44) (फ़ा111) और जिस दिन उन्हें उठाएगा (फ़ा112) गोया दुनिया में न रहे थे मगर इस दिन की एक घड़ी (फ़ा113) आपस में पहचान करेंगे (फ़ा114) पूरे घाटे में रहे वह जिन्होंने अल्लाह से मिलने को झुठलाया और हिदायत पर न थे।(45) (फ़ा115) और अगर हम तुम्हें दिखा दें कुछ (फ़ा116) उसमें से जो उन्हें वादा दे रहे हैं (फ़ा117) या तुम्हें पहले ही अपने पास बुला लें (फ़ा118) बहरहाल उन्हें हमारी तरफ़ पलट कर आना है फिर अल्लाह गवाह है(46) (फ़ा119) उनके कामों पर। और हर उम्मत में एक रसूल हुआ (फ़ा120) जब उनका रसूल उनके पास आता (फ़ा121) उन पर इंसाफ़ का फ़ैसला

(फ़ा99) एनाद से अपने रसूलों को बग़ैर इसके कि उनके मोअ़जेज़ात और आयात देख कर नज़र व तदब्बुर से काम लेते (फ़ा100) और पहली उम्मतें अपने अम्बिया को झुठला कर कैसे कैसे अ़ज़ाबों में मुब्तला हुईं तो ऐ सय्यदे अम्बिया (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) आपकी तकज़ीब करने वालों को डरना चाहिए (फ़ा101) अह्ले मक्का (फ़ा102) नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम या क़ुरआने करीम (फ़ा103) जो एनाद से ईमान नहीं लाते और कुफ़्र पर मुसिर रहते हैं (फ़ा104) ऐ मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम और उनकी राह पर आने और हक़ व हिदायत क़बूल करने की उम्मीद मुन्क़तअ़ हो जाये (फ़ा105) हर एक अपने अ़मल की जज़ा पाएगा। (फ़ा106) किसी के अ़मल पर दूसरा माख़ूज़ न होगा जो पकड़ा जाएगा ख़ुद अपने अ़मल पर पकड़ा जाएगा। यह फ़रमाना बतौर ज़ज्र के है कि तुम नसीहत नहीं मानते और हिदायत क़बूल नहीं करते तो उसका वबाल ख़ुद तुम पर होगा किसी दूसरे का उससे ज़रर नहीं (फ़ा107) और आप से क़ुरआन पाक और अहकामे दीन सुनते हैं और बुग़्ज़ व अ़दावत की वजह से दिल में जगह नहीं देते और क़बूल नहीं करते तो यह सुनना बेकार है और वह हिदायत **(बक़िया सफ़हा 363 पर)**

وَهُمْ لَا يُظْلَمُونَ ۝ وَيَقُولُونَ مَتَىٰ هَٰذَا الْوَعْدُ إِنْ كُنْتُمْ صَادِقِينَ ۝ قُلْ لَا أَمْلِكُ لِنَفْسِي ضَرًّا وَلَا نَفْعًا إِلَّا مَا شَاءَ اللَّهُ ۗ لِكُلِّ أُمَّةٍ أَجَلٌ ۚ إِذَا جَاءَ
أَجَلُهُمْ فَلَا يَسْتَأْخِرُونَ سَاعَةً ۖ وَلَا يَسْتَقْدِمُونَ ۝ قُلْ أَرَأَيْتُمْ إِنْ أَتَاكُمْ عَذَابُهُ بَيَاتًا أَوْ نَهَارًا مَاذَا يَسْتَعْجِلُ مِنْهُ الْمُجْرِمُونَ ۝ أَثُمَّ إِذَا مَا وَقَعَ
آمَنْتُمْ بِهِ ۚ آلْآنَ وَقَدْ كُنْتُمْ بِهِ تَسْتَعْجِلُونَ ۝ ثُمَّ قِيلَ لِلَّذِينَ ظَلَمُوا ذُوقُوا عَذَابَ الْخُلْدِ هَلْ تُجْزَوْنَ إِلَّا بِمَا كُنْتُمْ تَكْسِبُونَ ۝ وَيَسْتَنْبِئُونَكَ
أَحَقٌّ هُوَ ۖ قُلْ إِي وَرَبِّي إِنَّهُ لَحَقٌّ ۖ وَمَا أَنْتُمْ بِمُعْجِزِينَ ۝ وَلَوْ أَنَّ لِكُلِّ نَفْسٍ ظَلَمَتْ مَا فِي الْأَرْضِ لَافْتَدَتْ بِهِ ۗ وَأَسَرُّوا النَّدَامَةَ لَمَّا
رَأَوُا الْعَذَابَ ۖ وَقُضِيَ بَيْنَهُمْ بِالْقِسْطِ ۚ وَهُمْ لَا يُظْلَمُونَ ۝ أَلَا إِنَّ لِلَّهِ مَا فِي السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ ۗ أَلَا إِنَّ وَعْدَ اللَّهِ حَقٌّ وَلَٰكِنَّ أَكْثَرَهُمْ لَا

व हुम् ला युज़्लमून(47)व यकूलू–न मता हाज़ल् वअ्दु इन् कुन्तुम् सादिक़ीन(48)कुल् ला अम्लिकु लिनफ़्सी ज़र–रंव् व ला नफ़्अन् इल्ला मा शाअल्लाहु लिकुल्लि उम्मतिन् अ–जलुन् इज़ा जा–अ अ–जलुहुम् फ़ला यस्तअ्ख़िरू–न सा–अतंव् व ला यस्तक़्दिमून(49)कुल् अ–रऐतुम् इन् अताकुम् अज़ाबुहू बयातन् औ नहारम् माज़ा यस्तअ्जिलु मिन्हुल् मुज्रिमून(50)असुम्–म इज़ा मा व–क़–अ आमन्तुम् बिही आल्आ–न व क़द् कुन्तुम् बिही तस्तअ्जिलून(51)सुम्–म क़ी–ल लिल्लज़ी–न ज़–लमू ज़ूकू अज़ाबल् ख़ुल्दि हल् तुज्ज़ौ–न इल्ला बिमा कुन्तुम् तक्सिबून(52)व यस्तम्बिऊ–न–क अहक़्क़ुन् हु–व कुल् ई व रब्बी इन्नहू लहक़्क़ुन् व मा अन्तुम् बिमुअ्जिज़ीन(53)व लौ अन्–न लिकुल्लि नफ़्सिन् ज़–ल–मत् मा फ़िल्अर्ज़ि लफ़्–तदत् बिही व असर्रुन्नदा–म–त लम्मा र–अवुल् अज़ा–ब व कुज़ि–य बै–नहुम् बिल्क़िस्ति व हुम् ला युज़्लमून(54)अला इन्–न लिल्लाहि मा फ़िस्स–मावाति वल्अर्ज़ि अला इन्–न वअ्–दल्लाहि हक़्क़ुंव् व लाकिन्–न अक्स–रहुम् ला

कर दिया जाता (फ़ा122) और उन पर ज़ुल्म न होता।(47) और कहते हैं यह वादा कब आएगा अगर तुम सच्चे हो। (48) (फ़ा123) तुम फ़रमाओ मैं अपनी जान के भले बुरे का ज़ाती इख़्तियार नहीं रखता मगर जो अल्लाह चाहे (फ़ा124) हर गरोह का एक वादा है (फ़ा125) जब उनका वादा आएगा तो एक घड़ी न पीछे हटें न आगे बढ़ें।(49) तुम फ़रमाओ भला बताओ तो अगर उसका अ़ज़ाब (फ़ा126) तुम पर रात को आए (फ़ा127) या दिन को (फ़ा128) तो उसमें वह कौनसी चीज़ है कि मुजरिमों को जिसकी जल्दी है।(50) तो क्या जब (फ़ा129) हो पड़ेगा उस वक़्त उसका यक़ीन करोगे (फ़ा130) क्या अब मानते हो पहले तो (फ़ा131) उसकी जल्दी मचा रहे थे।(51)फिर ज़ालिमों से कहा जाएगा हमेशा का अ़ज़ाब चखो तुम्हें कुछ और बदला न मिलेगा मगर वही जो कमाते थे।(52) (फ़ा132) और तुम से पूछते हैं क्या वह (फ़ा133) हक़ है तुम फ़रमाओ हां मेरे रब की क़सम बेशक वह ज़रूर हक़ है और तुम कुछ थका न सकोगे। (53) (फ़ा134) (रुकूअ़ 10) और अगर हर ज़ालिम जान ज़मीन में जो कुछ है (फ़ा135) सबकी मालिक होती ज़रूर अपनी जान छुड़ाने में देती (फ़ा136) और दिल में चुपके-चुपके पशीमान हुए जब अ़ज़ाब देखा और उनमें इन्साफ़ से फ़ैसला कर दिया गया और उन पर ज़ुल्म न होगा।(54) सुन लो बेशक अल्लाह ही का है जो कुछ आसमानों में है और ज़मीन में (फ़ा137) सुन लो बेशक अल्लाह का वादा सच्चा है मगर उनमें अक्सर को

(फ़ा122) कि रसूल को और उन पर ईमान लाने वालों को नजात दी जाती और तकज़ीब करने वालों को अ़ज़ाब से हलाक कर दिया जाता आयत की तफ़सीर में दूसरा क़ौल यह है कि इस में आख़िरत का बयान है और माना यह हैं कि रोज़े क़ियामत हर उम्मत के लिए एक रसूल होगा जिसकी तरफ़ वह मन्सूब होगी जब वह रसूल मौक़िफ़ में आएगा और मोमिन व काफ़िर पर शहादत देगा तब उनमें फ़ैसला किया जाएगा कि मोमिनो को नजात होगी और काफ़िर गिरिफ़्तारे अ़ज़ाब होंगे (फ़ा123) **शाने नुज़ूलः** जब आयत *इम्मा नु-रियन्न-क* में अ़ज़ाब की वईद दी गई तो काफ़िरों ने बराहे सरकशी यह कहा कि ऐ मुहम्मद (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) जिस अ़ज़ाब का आप वादा देते हैं वह कब आएगा उसमें क्या ताख़ीर है उस अ़ज़ाब को जल्द लाइये इस पर यह आयत नाज़िल हुई (फ़ा124) यानी दुश्मनों पर अ़ज़ाब नाज़िल करना और दोस्तों की मदद करना और उन्हें ग़लबा देना यह सब ब मशीयते इलाही है और मशीयत इलाही में (फ़ा125) उसके हलाक व अ़ज़ाब का एक वक़्त मुअ़य्यन है लौहे महफ़ूज़ में मकतूब है (फ़ा126) जिस की तुम जल्दी करते हो (फ़ा127) जब तुम ग़ाफ़िल पड़े सोते हो (फ़ा128) जब तुम मआ़श के कामों में मश्ग़ूल हो। (फ़ा129) वह अ़ज़ाब तुम पर नाज़िल (फ़ा130) उस वक़्त का यक़ीन कुछ फ़ायदा न देगा और कहा **(बक़िया सफ़हा 364 पर)**

يَعْلَمُونَ ﴿٥٥﴾ هُوَ يُحْيٖ وَيُمِيتُ وَإِلَيْهِ تُرْجَعُونَ ﴿٥٦﴾ يٰٓاَيُّهَا النَّاسُ قَدْ جَآءَتْكُمْ مَّوْعِظَةٌ مِّنْ رَّبِّكُمْ وَشِفَآءٌ لِّمَا فِى الصُّدُوْرِ ۙ وَهُدًى وَّرَحْمَةٌ

لِّلْمُؤْمِنِيْنَ ﴿٥٧﴾ قُلْ بِفَضْلِ اللّٰهِ وَبِرَحْمَتِهٖ فَبِذٰلِكَ فَلْيَفْرَحُوْا ؕ هُوَ خَيْرٌ مِّمَّا يَجْمَعُوْنَ ﴿٥٨﴾ قُلْ اَرَءَيْتُمْ مَّآ اَنْزَلَ اللّٰهُ لَكُمْ مِّنْ رِّزْقٍ فَجَعَلْتُمْ مِّنْهُ

حَرَامًا وَّحَلٰلًا ؕ قُلْ آٰللّٰهُ اَذِنَ لَكُمْ اَمْ عَلَى اللّٰهِ تَفْتَرُوْنَ ﴿٥٩﴾ وَمَا ظَنُّ الَّذِيْنَ يَفْتَرُوْنَ عَلَى اللّٰهِ الْكَذِبَ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَذُوْ

فَضْلٍ عَلَى النَّاسِ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَهُمْ لَا يَشْكُرُوْنَ ﴿٦٠﴾ وَمَا تَكُوْنُ فِىْ شَاْنٍ وَّمَا تَتْلُوْا مِنْهُ مِنْ قُرْاٰنٍ وَّلَا تَعْمَلُوْنَ مِنْ عَمَلٍ اِلَّا كُنَّا عَلَيْكُمْ

شُهُوْدًا اِذْ تُفِيْضُوْنَ فِيْهِ ؕ وَمَا يَعْزُبُ عَنْ رَّبِّكَ مِنْ مِّثْقَالِ ذَرَّةٍ فِى الْاَرْضِ وَلَا فِى السَّمَآءِ وَلَآ اَصْغَرَ مِنْ ذٰلِكَ وَلَآ اَكْبَرَ اِلَّا

यअ्–लमून(55)हु–व युह्यी व युमीतु व इलैहि तुर्–जअून(56)या अय्युहन्नासु क़द् जाअत्कुम् मौअि–जतुम् मिर्रब्बिकुम् व शिफ़ाउल् लिमा फ़िस्सुदूरि व हुदंव् व रह्–मतुल् लिल्मुअ्मिनीन(57) कुल् बि–फ़ज़्लिल्लाहि व बि–रह्मतिही फ़बिज़ालि–क फ़ल्यफ़्–रहू हु–व ख़ैरुम् मिम्मा यज्मअून (58)कुल् अ–रऐतुम् मा अन्ज़–लल्लाहु लकुम् मिर् रिज़्किन् फ़–ज–अल्तुम् मिन्हु ह़रामंव् व ह़लालन् कुल् आल्लाहु अज़ि–न लकुम् अम् अ़लल्लाहि तफ़्तरून(59)व मा ज़न्नुल्लज़ी–न यफ़्तरू–न अ़लल्लाहिल्कज़ि–ब यौमल् क़िया–मति इन्नल्ला–ह लज़ू फ़ज़्लिन् अ–लन्नासि व लाकिन्–न अक्स–रहुम् ला यश्कुरून(60)व मा तकूनु फ़ी शअ्निंव् व मा तत्लू मिन्हु मिन् कुरआनिंव् व ला तअ्मलू–न मिन् अ–मलिन् इल्ला कुन्ना अ़लैकुम् शुहूदन् इज़् तुफ़ीज़ू–न फ़ीहि व मा यअ्ज़ुबु अ़र्–रब्बि–क मिम् मिस्क़ालि ज़र्रतिन् फ़िल् अर्ज़ि व ला फ़िस्समाइ व ला अस्ग़–र मिन् ज़ालि–क व ला अक्ब–र इल्ला

ख़बर नहीं।(55) वह जिलाता और मारता है और उसी की तरफ़ फिरोगे।(56) ऐ लोगो तुम्हारे पास तुम्हारे रब की तरफ़ से नसीह़त आई (फ़138) और दिलों की सेह़त और हिदायत और रह़मत ईमान वालों के लिए।(57) तुम फ़रमाओ अल्लाह ही के फ़ज़्ल और उसी की रह़मत उसी पर चाहिये कि ख़ुशी करें (फ़139) वह उनके सब धन दौलत से बेहतर है।(58) तुम फ़रमाओ भला बताओ तो वह जो अल्लाह ने तुम्हारे लिए रिज़्क़ उतारा उसमें तुमने अपनी तरफ़ से ह़राम और ह़लाल ठहरा लिया (फ़140) तुम फ़रमाओ क्या अल्लाह ने उसकी तुम्हें इजाज़त दी या अल्लाह पर झूठ बांधते हो।(59) (फ़141)और क्या गुमान है उनका जो अल्लाह पर झूठ बांधते हैं कि क़ियामत में उनका क्या हाल होगा बेशक अल्लाह लोगों पर फ़ज़्ल करता है (फ़142) मगर अक्सर लोग शुक्र नहीं करते।(60) (रुकूअ़ 11)और तुम किसी काम में हो (फ़143) और उसकी तरफ़ से कुछ कुरआन पढ़ो और तुम लोग (फ़144) कोई काम करो हम तुम पर गवाह होते हैं जब तुम उसको शुरू करते हो और तुम्हारे रब से ज़र्रा भर कोई चीज़ ग़ायब नहीं ज़मीन में न आसमान में और न उससे छोटी और न उससे बड़ी कोई चीज़ नहीं जो एक

(फ़138) इस आयत में कुरआने करीम के आने और उसके मौअ़ेज़त व शिफ़ा व हिदायत व रहमत होने का बयान है कि यह किताब उन फ़वायदे अ़ज़ीमा की जामेअ़ है मौअ़ेज़त के माना हैं वह चीज़ जो इंसान को मरग़ूब की तरफ़ बुलाये और ख़तरे से बचाए ख़लील ने कहा कि मौअ़ेज़त नेकी की नसीहत करना है जिस से दिल में नर्मी पैदा हो शिफ़ा से मुराद यह है कि कुरआन पाक क़ल्बी अमराज़ को दूर करता है, दिल के अमराज़ अख़्लाक़े ज़मीमा अ़क़ाइदे फ़ासिदा और जहालते मुहलिका हैं कुरआन पाक उन तमाम अमराज़ को दूर करता है कुरआने करीम की सिफ़त में हिदायत भी फ़रमाया क्योंकि वह गुमराही से बचाता और राहे हक़ दिखाता है और ईमान वालों के लिए रहमत इस लिए फ़रमाया कि वही इससे फ़ायदा उठाते हैं (फ़139) फ़रह किसी प्यारी और महबूब चीज़ के पाने से दिल को जो लज़्ज़त हासिल होती है उसको फ़रह कहते हैं माना यह हैं कि ईमान वालों को अल्लाह के फ़ज़्ल व रहमत पर ख़ुश होना चाहिए कि उसने उन्हें मवाइज़ और शिफ़ा सुदूर और ईमान के साथ दिल की राहत व सुकून अ़ता फ़रमाये हज़रत इब्ने अब्बास व हसन व क़तादा ने कहा कि अल्लाह के फ़ज़्ल से इस्लाम और रहमत से कुरआन मुराद है एक क़ौल यह है कि फ़ज़्लिल्लाह से कुरआन और रहमत से अहादीस मुराद हैं (फ़140) जैसे कि अहले जाहिलियत ने बहीरा सायबा वग़ैरह को अपनी तरफ़ से हराम क़रार दे लिया था (फ़141) मसलाः इस आयत से साबित हुआ कि किसी चीज़ को अपनी तरफ़ से हलाल या हराम करना ममनूअ़ और ख़ुदा पर इफ़्तेरा है (अल्लाह की पनाह) आजकल बहुत लोग इसमें मुब्तला हैं ममनूआ़त को हलाल कहते हैं और मुबाहात को हराम बाज़ सूद को हलाल करने पर मुसिर हैं बाज़ तस्वीरों को बाज़ खेल तमाशों को बाज़ औरतों की बे क़ैदियों और बे–पर्दगियों को बाज़ भूख हड़ताल को जो ख़ुद कुशी है, मुबाह समझते हैं और हलाल ठहराते हैं और बाज़ लोग हलाल चीज़ों को हराम ठहराने पर मुसिर हैं **(बक़िया सफ़हा 364 पर)**

فِیْ كِتٰبٍ مُّبِیْنٍ ۝٦١ اَلَاۤ اِنَّ اَوْلِیَآءَ اللّٰهِ لَا خَوْفٌ عَلَیْهِمْ وَ لَا هُمْ یَحْزَنُوْنَ ۝٦٢ اَلَّذِیْنَ اٰمَنُوْا وَ كَانُوْا یَتَّقُوْنَ ۝٦٣ لَهُمُ الْبُشْرٰى فِی الْحَیٰوةِ الدُّنْیَا
وَ فِی الْاٰخِرَةِ ؕ لَا تَبْدِیْلَ لِكَلِمٰتِ اللّٰهِ ؕ ذٰلِكَ هُوَ الْفَوْزُ الْعَظِیْمُ ۝٦٤ وَ لَا یَحْزُنْكَ قَوْلُهُمْ ۘ اِنَّ الْعِزَّةَ لِلّٰهِ جَمِیْعًا ؕ هُوَ السَّمِیْعُ الْعَلِیْمُ ۝٦٥
اَلَاۤ اِنَّ لِلّٰهِ مَنْ فِی السَّمٰوٰتِ وَ مَنْ فِی الْاَرْضِ ؕ وَ مَا یَتَّبِعُ الَّذِیْنَ یَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ شُرَكَآءَ ؕ اِنْ یَّتَّبِعُوْنَ اِلَّا الظَّنَّ وَ اِنْ هُمْ اِلَّا
یَخْرُصُوْنَ ۝٦٦ هُوَ الَّذِیْ جَعَلَ لَكُمُ الَّیْلَ لِتَسْكُنُوْا فِیْهِ وَ النَّهَارَ مُبْصِرًا ؕ اِنَّ فِیْ ذٰلِكَ لَاٰیٰتٍ لِّقَوْمٍ یَّسْمَعُوْنَ ۝٦٧ قَالُوا اتَّخَذَ اللّٰهُ وَلَدًا سُبْحٰنَهٗ ؕ
هُوَ الْغَنِیُّ ؕ لَهٗ مَا فِی السَّمٰوٰتِ وَ مَا فِی الْاَرْضِ ؕ اِنْ عِنْدَكُمْ مِّنْ سُلْطٰنٍۭ بِهٰذَا ؕ اَتَقُوْلُوْنَ عَلَی اللّٰهِ مَا لَا تَعْلَمُوْنَ ۝٦٨ قُلْ اِنَّ الَّذِیْنَ یَفْتَرُوْنَ

फ़ी किताबिम् मुबीन(61)अला इन्–न औलिया–अल्लाहि ला ख़ौफ़ुन् अ़लैहिम् व ला हुम् यह्ज़नून(62) अ़ल्लज़ी–न आ–मनू व कानू यत्तकून(63)लहुमुल्बुश्रा फ़िल्ह़–यातिद्दुन्या व फ़िल्आख़िरति ला तब्दी–ल लि–कलिमा–तिल्लाहि ज़ालि–क हुवल्फ़ौज़ुल् अ़ज़ीम(64)व ला यह्ज़ुन्–क क़ौलुहुम् इन्नल्–अ़िज़्ज़–त लिल्लाहि जमीअ़न् हुवस्समीअ़ुल् अ़लीम(65)अला इन्–न लिल्लाहि मन् फ़िस्स–मावाति व मन् फ़िल्अर्ज़ि व मा यत्तबिअ़ुल् लज़ी–न यदअ़ू–न मिन् दूनिल्लाहि शु–रका–अ इंय्यत्तबिअ़ू–न इल्लज़्–ज़न्–न व इन् हुम् इल्ला यख़्रुसून(66)हुवल्लज़ी ज–अ़–ल लकुमुल्लै–ल लितस्कुनू फ़ीहि वन्नहा–र मुब्सिरन् इन्–न फ़ी ज़ालि–क लआयातिल् लिक़ौ–मिंय्यस्मअ़ून(67)क़ालुत्त–ख़–ज़ल्लाहु व–लदन् सुब्हा–नहू हुवल् ग़निय्यु लहू मा फ़िस्समावाति व मा फ़िल्अर्ज़ि इन् अ़िन्द कुम् मिन् सुल्तानिम् बिहाज़ा अ–तक़ूलू–न अ़लल्लाहि मा ला तअ़्लमून(68)क़ुल् इन्नल्लज़ी–न यफ़्तरू–न

रौशन किताब में न हो।(61) (फ़्र145) सुन लो बेशक अल्लाह के वलियों पर कुछ ख़ौफ़ है न कुछ ग़म।(62) (फ़्र146) वह जो ईमान लाए और परहेज़गारी करते हैं।(63) उन्हें ख़ुशख़बरी है दुनिया की ज़िन्दगी में (फ़्र147) और आख़िरत में अल्लाह की बातें बदल नहीं सकतीं (फ़्र148) यही बड़ी कामयाबी है।(64)और तुम उनकी बातों का ग़म न करो (फ़्र149) बेशक इज़्ज़त सारी अल्लाह के लिए है (फ़्र150) वही सुनता जानता है।(65) सुन लो बेशक अल्लाह ही की मिल्क हैं जितने आसमानों में हैं और जितने ज़मीनों में (फ़्र151) और काहे के पीछे जा रहे हैं (फ़्र152) वह जो अल्लाह के सिवा शरीक पुकार रहे हैं वह तो पीछे नहीं जाते मगर गुमान के और वह तो नहीं मगर अटकलें दौड़ाते।(66) (फ़्र153) वही है जिसने तुम्हारे लिए रात बनाई कि उसमें चैन पाओ (फ़्र154) और दिन बनाया तुम्हारी आँखें खोलता (फ़्र155) बेशक उसमें निशानियां हैं सुनने वालों के लिए।(67) (फ़्र156) बोले अल्लाह ने अपने लिए औलाद बनाई (फ़्र157) पाकी उसको वही बे नियाज़ है उसी का है जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ ज़मीन में (फ़्र158) तुम्हारे पास इसकी कोई भी सनद नहीं क्या अल्लाह पर वह बात बताते हो जिसका तुम्हें इल्म नहीं।(68) तुम फ़रमाओ वह जो अल्लाह पर

(फ़्र145) किताबे मुबीन से लौहे महफ़ूज़ मुराद है। (फ़्र146) वली की असल विला से है जो कुर्ब व नुसरत के माना में है वलीअल्लाह वह है जो फ़रायज़ से कुर्बे इलाही हासिल करे और इताअ़ते इलाही में मश्ग़ूल रहे और उसका दिल नूरे जलाले इलाही की मअ़रेफ़त में मुस्तग़रक़ हो जब देखे दलाइल क़ुदरते इलाही को देखे और जब सुने अल्लाह की आयतें ही सुने और जब बोले तो अपने रब की सना ही के साथ बोले और जब हरकत करे ताअ़ते इलाही में हरकत करे और जब कोशिश करे उसी अमर में कोशिश करे जो ज़रीआ़ कुर्बे इलाही हो अल्लाह के ज़िक्र से न थके और चश्मे दिल से ख़ुदा के सिवा ग़ैर को न देखे यह सिफ़त औलिया की है बन्दा जब इस हाल पर पहुंचता है तो अल्लाह उसका वली व नासिर और मुईन व मददगार होता है मुतकल्लिमीन कहते हैं वली वह है जो एतेक़ाद सही मबनी बर दलील रखता हो और आमाले सालेहा शरीअ़त के मुताबिक़ बजा लाता हो बाज़ आ़रेफ़ीन ने फ़रमाया कि विलायत नाम है कुर्बे इलाही और हमेशा अल्लाह के साथ मश्ग़ूल रहने का जब बन्दा उस मक़ाम पर पहुंचता है तो उसको किसी चीज़ का ख़ौफ़ नहीं रहता और न किसी शय के फ़ौत होने का ग़म होता है हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा ने फ़रमाया कि वली वह है जिसको देखने से अल्लाह याद आये यही तिबरी की हदीस में भी है इब्ने ज़ैद ने कहा कि वली वही है जिसमें वह सिफ़त हो जो इस आयत में मज़कूर है *अल्लज़ी-न आ-मनू व कानू यत्तक़.न* यानी ईमान व तक़्वा दोनों का जामेअ. हो बाज़ उलमा ने फ़रमाया कि वली वह हैं जो ख़ालिस अल्लाह के लिए मुहब्बत करें औलिया की यह सिफ़त अहादीसे कसीरा में वारिद हुई है बाज़ अकाबिर ने फ़रमाया वली वह **(बक़िया सफ़हा 364 पर)**

عَلَى اللّٰهِ الْكَذِبَ لَا يُفْلِحُوْنَ ۝ مَتَاعٌ فِي الدُّنْيَا ثُمَّ اِلَيْنَا مَرْجِعُهُمْ ثُمَّ نُذِيْقُهُمُ الْعَذَابَ الشَّدِيْدَ بِمَا كَانُوْا يَكْفُرُوْنَ ۝ وَاتْلُ عَلَيْهِمْ نَبَاَ نُوْحٍ ۘ اِذْ قَالَ
لِقَوْمِهٖ يٰقَوْمِ اِنْ كَانَ كَبُرَ عَلَيْكُمْ مَّقَامِيْ وَتَذْكِيْرِيْ بِاٰيٰتِ اللّٰهِ فَعَلَى اللّٰهِ تَوَكَّلْتُ فَاَجْمِعُوْٓا اَمْرَكُمْ وَشُرَكَآءَكُمْ ثُمَّ لَا يَكُنْ اَمْرُكُمْ عَلَيْكُمْ
غُمَّةً ثُمَّ اقْضُوْٓا اِلَيَّ وَلَا تُنْظِرُوْنِ ۝ فَاِنْ تَوَلَّيْتُمْ فَمَا سَاَلْتُكُمْ مِّنْ اَجْرٍ ۭ اِنْ اَجْرِيَ اِلَّا عَلَى اللّٰهِ ۙ وَاُمِرْتُ اَنْ اَكُوْنَ مِنَ الْمُسْلِمِيْنَ ۝ فَكَذَّبُوْهُ
فَنَجَّيْنٰهُ وَمَنْ مَّعَهٗ فِي الْفُلْكِ وَجَعَلْنٰهُمْ خَلٰٓئِفَ وَاَغْرَقْنَا الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا ۚ فَانْظُرْ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُنْذَرِيْنَ ۝ ثُمَّ بَعَثْنَا مِنْ ۢ بَعْدِهٖ رُسُلًا اِلٰى
قَوْمِهِمْ فَجَآءُوْهُمْ بِالْبَيِّنٰتِ فَمَا كَانُوْا لِيُؤْمِنُوْا بِمَا كَذَّبُوْا بِهٖ مِنْ قَبْلُ ۭ كَذٰلِكَ نَطْبَعُ عَلٰي قُلُوْبِ الْمُعْتَدِيْنَ ۝ ثُمَّ بَعَثْنَا مِنْ ۢ بَعْدِهِمْ مُّوْسٰى وَهٰرُوْنَ

अ़लल्लाहिल् कज़ि–ब ला युफ़्लिहू न(69)मताअुन् फ़िद्दुन्या सुम्–म इलैना मर्जिअुहुम् सुम्–म नुज़ीकु–हुमुल् अ़ज़ाबश्शदी–द बिमा कानू यक्फुरून(70)वत्लु अ़लैहिम् न–ब–अ नूहिन् इज़् क़ा–ल लिक़ौमिही या क़ौमि इन् का–न कबु–र अ़लैकुम् मक़ामी व तज़्कीरी बिआयातिल्लाहि फ़–अ़लल्लाहि त–वक्कल्तु फ़–अज्मिअू. अम्र कुम् व शु–रका–अकुम् सुम्–म ला यकुन् अम्रु कुम् अ़लैकुम् गुम्म–तन् सुम्–मक्ज़ू. इलय्–य व ला तुन्ज़िरून(71)फ़इन् तवल्लैतुम् फ़मा स–अल्तुकुम् मिन् अज्रिन् इन् अज्रि–य इल्ला अ़लल्लाहि व उमिर्तु अन् अकू–न मिनल् मुस्लिमीन(72)फ़कज़्ज़बूहु फ़–नज्जैनाहु व मम्–अ़हू फ़िल्फ़ुल्कि व जअ़ल्नाहुम् ख़लाइ–फ़ व अग्रक़्नल्लज़ी–न कज़्ज़बू बि–आयातिना फ़न्ज़ुर् कै–फ़ का–न आ़क़ि–बतुल् मुन्ज़रीन(73)सुम्–म ब–अ़स्ना मिम् बअ़्दिही रुसुलन् इला क़ौमिहिम् फ़जाऊहुम् बिल्बय्यिनाति फ़मा कानू लियुअ्मिनू बिमा कज़्ज़बू बिही मिन् क़ब्लु कज़ालि–क नत्बअु अ़ला क़ुलूबिल् मुअ़्–तदीन(74)सुम्–म ब–अ़स्ना मिम् बअ़्दिहिम् मूसा व हारू–न

झूठ बांधते हैं उनका भला न होगा।(69) दुनिया में कुछ बरत लेना है फिर उन्हें हमारी तरफ़ वापस आना फिर हम उन्हें सख़्त अज़ाब चखायेंगे बदला उनके कुफ़्र का।(70) (रुकूअ़् 12) और उन्हें नूह की ख़बर पढ़ कर सुनाओ जब उसने अपनी क़ौम से कहा ऐ मेरी क़ौम अगर तुम पर शाक़ गुज़रा है मेरा खड़ा होना (फ़ा159) और अल्लाह की निशानियां याद दिलाना (फ़ा160) तो मैंने अल्लाह ही पर भरोसा किया (फ़ा161) तो मिल कर काम करो और अपने झूठे मअ़्बूदों समेत अपना काम पक्का कर लो फिर तुम्हारे काम में तुम पर कुछ गुन्जलक (उलझन) न रहे फिर जो हो सके मेरा कर लो और मुझे मुहलत न दो।(71) (फ़ा162) फिर अगर तुम मुंह फेरो (फ़ा163) तो मैं तुम से कुछ उजरत नहीं मांगता (फ़ा164) मेरा अज्र तो नहीं मगर अल्लाह पर (फ़ा165) और मुझे हुक्म है कि मैं मुसलमानों से हूं।(72) तो उन्होंने उसे(फ़ा166) झुठलाया तो हमने उसे और जो उसके साथ कश्ती में थे उनको नजात दी और उन्हें हमने नायब किया (फ़ा167) और जिन्होंने हमारी आयतें झुठलाईं उनको हमने डुबो दिया तो देखो डराए हुओं का अंजाम कैसा हुआ।(73) फिर उसके बाद और रसूल (फ़ा168) हमने उनकी क़ौमों की तरफ़ भेजे तो वह उनके पास रौशन दलीलें लाए तो वह ऐसे न थे कि ईमान लाते उस पर जिसे पहले झुठला चुके थे हम यूं ही मुहर लगा देते हैं सरकशों के दिल पर।(74) फिर उनके बाद हमने मूसा और हारून को

(फ़ा159) और मुद्दत दराज़ तक तुम में ठहरना (फ़ा160) और उस पर तुमने मेरे क़त्ल करने और निकाल देने का इरादा किया है (फ़ा161) और अपना मुआ़मला उस वाहिद लाशरीक लहू के सपुर्द किया (फ़ा162) मुझे कुछ परवाह नहीं है हज़रत नूह अ़लैहिस्सलातु वस्सलाम का यह कलाम बतरीक़े तअ़्जीज़ है मुद्दआ यह है कि मुझे अपने क़वी व क़ादिर परवरदिगार पर कामिल भरोसा है तुम और तुम्हारे बे इख़्तियार मअ़्बूद मुझे कुछ भी ज़रर नहीं पहुंचा सकते (फ़ा163) मेरी नसीहत से (फ़ा164) जिस के फ़ौत होने का मुझे अफ़सोस है (फ़ा165) वही मुझे जज़ा देगा मुद्दआ यह है कि मेरा वअ़्ज़ व नसीहत ख़ास अल्लाह के लिए है किसी दुनियवी ग़रज़ से नहीं। (फ़ा166) यानी हज़रत नूह अ़लैहिस्सलाम को (फ़ा167) और हलाक होने वालों के बाद ज़मीन में साकिन किया (फ़ा168) हूद सालेह इब्राहीम लूत शोऐब वग़ैरहुम अ़लैहिमुस्सलाम

(बक़िया सफ़हा 354 का) साबित हुआ कि आमीन दुआ है लिहाज़ा इसके लिए इख़फ़ा ही मुनासिब है (मदारिक) हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम की दुआ और उसकी मक़बूलियत के दर्मियान चालीस बरस का फ़ासिला हुआ (फ़ा189) दावत व तबलीग़ पर (फ़ा190) जो क़बूले दुआ में देर होने की हिकमत नहीं जानते (फ़ा191) तब फ़िरऔन।

إِلَىٰ فِرْعَوْنَ وَمَلَإِيهِ بِآيَاتِنَا فَاسْتَكْبَرُوا وَكَانُوا قَوْمًا مُّجْرِمِينَ ﴿٧٥﴾ فَلَمَّا جَاءَهُمُ الْحَقُّ مِنْ عِندِنَا قَالُوا إِنَّ هَٰذَا لَسِحْرٌ مُّبِينٌ ﴿٧٦﴾ قَالَ مُوسَىٰ
أَتَقُولُونَ لِلْحَقِّ لَمَّا جَاءَكُمْ ۖ أَسِحْرٌ هَٰذَا وَلَا يُفْلِحُ السَّاحِرُونَ ﴿٧٧﴾ قَالُوا أَجِئْتَنَا لِتَلْفِتَنَا عَمَّا وَجَدْنَا عَلَيْهِ آبَاءَنَا وَتَكُونَ لَكُمَا الْكِبْرِيَاءُ فِي الْأَرْضِ وَمَا
نَحْنُ لَكُمَا بِمُؤْمِنِينَ ﴿٧٨﴾ وَقَالَ فِرْعَوْنُ ائْتُونِي بِكُلِّ سَاحِرٍ عَلِيمٍ ﴿٧٩﴾ فَلَمَّا جَاءَ السَّحَرَةُ قَالَ لَهُم مُّوسَىٰ أَلْقُوا مَا أَنتُم مُّلْقُونَ ﴿٨٠﴾ فَلَمَّا أَلْقَوْا
قَالَ مُوسَىٰ مَا جِئْتُم بِهِ السِّحْرُ ۖ إِنَّ اللَّهَ سَيُبْطِلُهُ ۖ إِنَّ اللَّهَ لَا يُصْلِحُ عَمَلَ الْمُفْسِدِينَ ﴿٨١﴾ وَيُحِقُّ اللَّهُ الْحَقَّ بِكَلِمَاتِهِ وَلَوْ كَرِهَ الْمُجْرِمُونَ ﴿٨٢﴾
فَمَا آمَنَ لِمُوسَىٰ إِلَّا ذُرِّيَّةٌ مِّن قَوْمِهِ عَلَىٰ خَوْفٍ مِّن فِرْعَوْنَ وَمَلَإِيهِمْ أَن يَفْتِنَهُمْ ۚ وَإِنَّ فِرْعَوْنَ لَعَالٍ فِي الْأَرْضِ وَإِنَّهُ لَمِنَ الْمُسْرِفِينَ ﴿٨٣﴾ وَقَالَ

इला फ़िरऔ़-न व म-लइही बि-आया-तिना फ़स्तक्बरू व कानू क़ौमम् मुजि़्रमीन(75)फ़-लम्मा जा-अ हुमुल् ह़क़्क़ु मिन् अि़न्दिना क़ालू इन्-न हाज़ा लसिह़्रुम् मुबीन(76)क़ा-ल मूसा अ-तक़ूलू-न लिल्-ह़क़्क़ि लम्मा जा-अकुम् असिह़्रुन् हाज़ा व ला युफ़्लिहुस् साह़िरून(77)क़ालू अजिअ्-तना लितल्फ़ि-तना अ़म्मा व-जद्ना अ़लैहि आबा-अना व तकू-न लकुमल् किब्रियाउ फ़िल्अर्ज़ि व मा नह़्नु लकुमा बिमुअ्मिनीन(78)व क़ा-ल फ़िर्-औनुअ्तूनी बिकुल्लि साह़िरिन् अ़लीम(79)फ़लम्मा जा-अस् स-ह़-रतु क़ा-ल लहुम् मूसा अल्क़ू मा अन्तुम् मुल्क़ून(80)फ़लम्मा अल्क़ौ क़ा-ल मूसा मा जिअ्तुम् बिहिस् सिह़्रु इन्नल्ला-ह सयुब्ति-लुहू इन्नल्ला-ह ला युस्लिहु अ़-म-लल्मुफ़्सिदीन (81)व यु-ह़िक़्क़ुल्लाहुल्-हक़्-क़ बि-कलि-मातिही व लौ करिहल् मुजि़्रमून(82)फ़मा आ-म-न लिमूसा इल्ला ज़ुर्रिय्यतुम् मिन् क़ौमिही अ़ला ख़ौफ़िम् मिन् फ़िर्औ़-न व म-लइहिम् अंय्यफ़्ति-नहुम् व इन्-न फ़िर्औ़-न ल-आ़लिन् फ़िल्अर्ज़ि व इन्नहू लमिनल् मुस्रिफ़ीन(83)व क़ा-ल

फ़िरऔ़न और उसके दरबारियों की तरफ़ अपनी निशानियां लेकर भेजा तो उन्होंने तकब्बुर किया और वह मुजरिम लोग थे।(75) तो जब उनके पास हमारी तरफ़ से ह़क़ आया (फ़ा169) बोले यह तो ज़रूर खुला जादू है।(76) मूसा ने कहा क्या ह़क़ की निस्बत ऐसा कहते हो जब वह तुम्हारे पास आया क्या यह जादू है (फ़ा170) और जादूगर मुराद को नहीं पहुंचते।(77) बोले (फ़ा171) क्या तुम हमारे पास इस लिए आए हो कि हमें उस (फ़ा172) से फेर दो जिस पर हमने अपने बाप दादा को पाया और ज़मीन में तुम्हीं दोनों की बड़ाई रहे और हम तुम पर ईमान लाने के नहीं।(78) और फ़िरऔ़न बोला (फ़ा173) हर जादूगर इल्म वाले को मेरे पास ले आओ।(79) फिर जब जादूगर आए उनसे मूसा ने कहा डालो जो तुम्हें डालना है।(80) (फ़ा174) फिर जब उन्होंने डाला मूसा ने कहा यह जो तुम लाए जादू है (फ़ा175) अब अल्लाह इसे बातिल कर देगा अल्लाह मुफ़्सिदों का काम नहीं बनाता।(81) और अल्लाह अपनी बातों से (फ़ा176) हक़ को हक़ कर दिखाता है पड़े बुरा माने मुजरिम।(82) (रुकूअ़13) तो मूसा पर ईमान न लाए मगर उसकी क़ौम की औलाद से कुछ लोग (फ़ा177) फ़िरऔ़न और उसके दरबारियों से डरते हुए कि कहीं उन्हें (फ़ा178) हटने पर मजबूर न कर दें और बेशक फ़िरऔ़न ज़मीन पर सर उठाने वाला था और बेशक वह हद से गुज़र गया।(83) (फ़ा179) और मूसा ने कहा

(फ़ा169) हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम के वास्ता से और फ़िरऔ़नियों ने पहचान लिया कि यह हक़ है अल्लाह की तरफ़ से है तो बराहे नफ़सानियत (फ़ा170) हरगिज़ नहीं (फ़ा171) फ़िरऔ़नी हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम से (फ़ा172) दीन व मिल्लत और बुत परस्ती व फ़िरऔ़न परस्ती (फ़ा173) सरकश व मुतकब्बिर ने चाहा कि हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलातु वस्सलाम के मोअ्‌जेज़ा का मुक़ाबला बातिल से करे और दुनिया को इस मुग़ालता में डाले कि हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलातु वस्सलाम के मोअ्‌जेज़ात (मआ़ज़ल्लाह) जादू की क़िस्म से हैं इस लिए वह (फ़ा174) रस्से शहतीर वग़ैरह और जो तुम्हें जादू करना है करो यह आपने इस लिए फ़रमाया कि हक़ व बातिल ज़ाहिर हो जाये और जादू के करिश्मे जो वह करने वाले हैं उनका फ़साद वाज़ेह हो (फ़ा175) न कि वह आयाते इलाहिया जिनको फ़िरऔ़न ने अपनी बे ईमानी से जादू बताया (फ़ा176) यानी अपने हुक्म अपनी क़ज़ा व क़द्र और अपने इस वादे से कि हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलातु वस्सलाम को जादूगरों पर ग़ालिब करेगा (फ़ा177) इसमें नबीए करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की तसल्ली है कि आप अपनी उम्मत के ईमान लाने का निहायत एहतेमाम फ़रमाते थे और उनके एराज़ करने से मग़मूम होते थे आप की तस्कीन फ़रमाई गई कि बावजूदेकि हज़रत मूसा **(बक़िया सफ़हा 365 पर)**

مُوْسٰى يٰقَوْمِ اِنْ كُنْتُمْ اٰمَنْتُمْ بِاللّٰهِ فَعَلَيْهِ تَوَكَّلُوْٓا اِنْ كُنْتُمْ مُّسْلِمِيْنَ ۝٨٤ فَقَالُوْا عَلَى اللّٰهِ تَوَكَّلْنَا ۚ رَبَّنَا لَا تَجْعَلْنَا فِتْنَةً لِّلْقَوْمِ الظّٰلِمِيْنَ ۝٨٥ وَنَجِّنَا
بِرَحْمَتِكَ مِنَ الْقَوْمِ الْكٰفِرِيْنَ ۝٨٦ وَاَوْحَيْنَآ اِلٰى مُوْسٰى وَاَخِيْهِ اَنْ تَبَوَّاٰ لِقَوْمِكُمَا بِمِصْرَ بُيُوْتًا وَّاجْعَلُوْا بُيُوْتَكُمْ قِبْلَةً وَّاَقِيْمُوا
الصَّلٰوةَ ۗ وَبَشِّرِ الْمُؤْمِنِيْنَ ۝٨٧ وَقَالَ مُوْسٰى رَبَّنَآ اِنَّكَ اٰتَيْتَ فِرْعَوْنَ وَمَلَاَهٗ زِيْنَةً وَّاَمْوَالًا فِى الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۙ رَبَّنَا لِيُضِلُّوْا عَنْ سَبِيْلِكَ ۚ
رَبَّنَا اطْمِسْ عَلٰٓى اَمْوَالِهِمْ وَاشْدُدْ عَلٰى قُلُوْبِهِمْ فَلَا يُؤْمِنُوْا حَتّٰى يَرَوُا الْعَذَابَ الْاَلِيْمَ ۝٨٨ قَالَ قَدْ اُجِيْبَتْ دَّعْوَتُكُمَا فَاسْتَقِيْمَا وَلَا
تَتَّبِعٰٓنِّ سَبِيْلَ الَّذِيْنَ لَا يَعْلَمُوْنَ ۝٨٩ وَجٰوَزْنَا بِبَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ الْبَحْرَ فَاَتْبَعَهُمْ فِرْعَوْنُ وَجُنُوْدُهٗ بَغْيًا وَّعَدْوًا ۗ حَتّٰٓى اِذَآ اَدْرَكَهُ الْغَرَقُ ۙ

मूसा या क़ौमि इन् कुन्तुम् आमन्तुम् बिल्लाहि फ़–अ़लैहि तवक्कलू इन् कुन्तुम् मुस्लिमीन(84)फ़क़ालू अ़लल्लाहि तवक्कल्ना रब्बना ला तज्अ़ल्ना फ़ित्–न–तल् लिल्क़ौमिज़्ज़ालिमीन(85)व नज्जिना बि–रह्मति–क मिनल् क़ौमिल् काफ़िरीन(86)व औहैना इला मूसा व अख़ीहि अन्–त–बव्वआ लिक़ौमिकुमा बिमिस्–र बुयूतंव् वज्अ़लू बुयू–तकुम् क़िब्लतंव् व अक़ीमुस्सला–त व बश्शिरिल् मुअ्मिनीन(87)व क़ा–ल मूसा रब्बना इन्न–क आतै–त फ़िर्औ़–न व म–ल–अहू ज़ी–नतंव् व अम्वालन् फ़िल् हयातिद्दुन्या रब्बना लियुज़िल्लू अ़न् सबीलि–क रब्बनत्मिस् अ़ला अम्वालिहिम् वश्दुद् अ़ला कुलूबिहिम् फ़ला युअ्मिनू हत्ता य–रवुल् अ़ज़ाबल् अलीम(88)क़ा–ल क़द् उजीबद्–दअ़्– वतुकुमा फ़स्तक़ीमा व ला तत्तबिआ़न्नि सबीलल्लज़ी–न ला यअ्लमून(89)व जावज़्ना बि–बनी इस्राईलल् बह्–र फ़–अत्ब–अ़हुम् फ़िर्औ़नु व जुनूदुहू बग़्यंव्–व अ़द्वन् हत्ता इज़ा अद्र–कहुल् ग़–रक़ु

ऐ मेरी क़ौम अगर तुम अल्लाह पर ईमान लाए तो उसी पर भरोसा करो (फ़ा180) अगर तुम इस्लाम रखते हो।(84) बोले हमने अल्लाह ही पर भरोसा किया इलाही हमको ज़ालिम लोगों के लिए आज़माईश न बना।(85) (फ़ा181) और अपनी रहमत फ़रमा कर हमें काफ़िरों से नजात दे।(86) (फ़ा182) और हमने मूसा और उसके भाई को 'वह़ी' भेजी कि मिस्र में अपनी क़ौम के लिए मकानात बनाओ और अपने घरों को नमाज़ की जगह करो (फ़ा183) और नमाज़ क़ायम रखो और मुसलमानों को ख़ुशख़बरी सुना।(87) (फ़ा184) और मूसा ने अ़र्ज़ की ऐ रब हमारे तूने फ़िरऔ़न और उसके सरदारों को आराईश (फ़ा185) और माल दुनिया की ज़िन्दगी में दिये ऐ रब हमारे इस लिए कि तेरी राह से बहका दें, ऐ रब हमारे उनके माल बरबाद कर दे (फ़ा186) और उनके दिल सख़्त करदे कि ईमान न लायें जब तक दर्दनाक अ़ज़ाब न देख लें।(88) (फ़ा187) फ़रमाया तुम दोनों की दुआ़ क़बूल हुई (फ़ा188) तो साबित क़दम रहो (फ़ा189) और नादानों की राह न चलो।(89) (फ़ा190) और हम बनी इसराईल को दरिया पार ले गए तो फ़िरऔ़न और उसके लश्करों ने उनका पीछा किया सरकशी और ज़ुल्म से यहां तक कि जब उसे डूबने ने आ लिया (फ़ा191)

(फ़ा180) वह अपने फ़रमांबरदारों की मदद करता और दुश्मनों को हलाक फ़रमाता है मसलाः इस आयत से साबित हुआ कि अल्लाह पर भरोसा करना कमाले ईमान का मुक़तज़ा है। (फ़ा181) यानी उन्हें हम पर ग़ालिब न कर ताकि वह यह गुमान न करें कि वह हक़ पर हैं (फ़ा182) और उनके ज़ुल्म व सितम से बचा। (फ़ा183) कि क़िबला रू हो हज़रत मूसा व हारून अ़लैहिमुस्सलाम का क़िबला कअ़्बा शरीफ़ था और इब्तदा में बनी इसराईल को यही हुक्म था कि वह घरों में छुप कर नमाज़ पढ़ें ताकि फ़िरऔ़नियों की शर व ईज़ा से महफ़ूज़ रहें (फ़ा184) मददे इलाही की और जन्नत की (फ़ा185) ऊमदा लिबास नफ़ीस फ़र्श क़ीमती ज़ेवर तरह तरह के सामान (फ़ा186) कि वह तेरी नेअ़्मतों पर बजाए शुक्र के जुरी होकर मअ़्सियत करते हैं हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम की यह दुआ़ क़बूल हुई और फ़िरऔ़नियों के दिरहम व दीनार वग़ैरह पत्थर होकर रह गए हत्ता कि फल और खाने की चीज़ें भी और यह उन नौ निशानियों मेंसे एक है जो हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलातु वस्सलाम को दी गई थीं (फ़ा187) जब हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलातु वस्सलाम उन लोगों के ईमान लाने से मायूस हो गए तब आपने उनके लिए यह दुआ़ की और ऐसा ही हुआ कि वह ग़र्क़ होने के वक़्त तक ईमान न लाये मसलाः इससे मालूम हुआ कि किसी शख़्स के लिए कुफ़्र पर मरने की दुआ़ करना कुफ़्र नहीं है (मदारिक) (फ़ा188) दुआ़ की निस्बत हज़रत मूसा व हारून अ़लैहिमस्सलाम दोनों की तरफ़ की गई बावजूदेकि हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम दुआ़ करते थे और हज़रत हारून अ़लैहिस्सलाम आमीन कहते थे इससे मालूम हुआ कि आमीन कहने वाला भी दुआ़ करने वालों में शुमार किया जाता है मसलाः यह भी **(बक़िया सफ़हा 352 पर)**

قَالَ اٰمَنْتُ اَنَّهٗ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا الَّذِیْۤ اٰمَنَتْ بِهٖ بَنُوْۤا اِسْرَآءِیْلَ وَ اَنَا مِنَ الْمُسْلِمِیْنَ ﴿۹۰﴾ آٰلْـٰٔنَ وَ قَدْ عَصَیْتَ قَبْلُ وَ كُنْتَ مِنَ الْمُفْسِدِیْنَ ﴿۹۱﴾
فَالْیَوْمَ نُنَجِّیْكَ بِبَدَنِكَ لِتَكُوْنَ لِمَنْ خَلْفَكَ اٰیَةً ؕ وَ اِنَّ كَثِیْرًا مِّنَ النَّاسِ عَنْ اٰیٰتِنَا لَغٰفِلُوْنَ ﴿۹۲﴾ وَ لَقَدْ بَوَّاْنَا بَنِیْۤ اِسْرَآءِیْلَ مُبَوَّاَ
صِدْقٍ وَّ رَزَقْنٰهُمْ مِّنَ الطَّیِّبٰتِ ۚ فَمَا اخْتَلَفُوْا حَتّٰى جَآءَهُمُ الْعِلْمُ ؕ اِنَّ رَبَّكَ یَقْضِیْ بَیْنَهُمْ یَوْمَ الْقِیٰمَةِ فِیْمَا كَانُوْا فِیْهِ یَخْتَلِفُوْنَ ﴿۹۳﴾ فَاِنْ
كُنْتَ فِیْ شَكٍّ مِّمَّاۤ اَنْزَلْنَاۤ اِلَیْكَ فَسْـَٔلِ الَّذِیْنَ یَقْرَءُوْنَ الْكِتٰبَ مِنْ قَبْلِكَ ۚ لَقَدْ جَآءَكَ الْحَقُّ مِنْ رَّبِّكَ فَلَا تَكُوْنَنَّ مِنَ الْمُمْتَرِیْنَ ﴿۹۴﴾
وَ لَا تَكُوْنَنَّ مِنَ الَّذِیْنَ كَذَّبُوْا بِاٰیٰتِ اللّٰهِ فَتَكُوْنَ مِنَ الْخٰسِرِیْنَ ﴿۹۵﴾ اِنَّ الَّذِیْنَ حَقَّتْ عَلَیْهِمْ كَلِمَتُ رَبِّكَ لَا یُؤْمِنُوْنَ ﴿۹۶﴾ وَ لَوْ جَآءَتْهُمْ

क़ा–ल आमन्तु अन्नहू ला इला–ह इल्लल्लज़ी आ–म–नत् बिही बनू इस्राई–ल व अना मिनल् मुस्लिमीन(90)आल्आ–न व क़द् असै–त क़ब्लु व कुन्–त मिनल् मुफ़्सिदीन(91)फ़ल्यौ–म नुनज्जी –क बि–ब–दनि–क लि–तकू–न लि–मन् ख़ल्फ़–क आ–यतन् व इन्–न कसीरम् मिनन्नासि अ़न् आयातिना लग़ाफ़िलून(92)व लक़द् बव्वअ्ना बनी इस्राई–ल मुबव्व–अ सिद्क़िंव् व र–ज़क़्नाहुम् मिनत्तय्यिबाति फ़–मख़्त–लफ़ू ह़त्ता जा–अहुमुल् अ़िल्मु इन्–न रब्ब–क यक़्ज़ी बै–नहुम् यौमल् क़िया–मति फ़ीमा कानू फ़ीहि यख़्तलिफ़ू न(93)फ़–इन् कुन्–त फ़ी शक्किम् मिम्मा अन्ज़ल्ना इलै–क फ़स्अलिल् लज़ी–न यक़्–रऊनल् किता–ब मिन् क़ब्लि–क ल–क़द् जा–अकल् ह़क़्क़ु मिर्रब्बि–क फ़ला तकूनन्–न मिनल्–मुम्तरीन(94)व ला तकूनन्–न मिनल्लज़ी–न कज़्ज़बू बिआया–तिल्लाहि फ़–तकू–न मिनल्ख़ासिरीन(95)इन्नल्लज़ी–न ह़क़्क़त् अ़लैहिम् कलि–मतु रब्बि–क ला युअ्मिनून(96)व लौ जाअत्हुम्

बोला मैं ईमान लाया कि कोई सच्चा मअ्बूद नहीं सिवा उसके जिस पर बनी इसराईल ईमान लाए और मैं मुसलमान हूं।(90) (फ़ा192) क्या अब (फ़ा193) और पहले से नाफ़रमान रहा और तू फ़सादी था।(91) (फ़ा194) आज हम तेरी लाश को उतरा देंगे (बाक़ी रखेंगे) कि तू अपने पिछलों के लिए निशानी हो (फ़ा195) और बेशक लोग हमारी आयतों से ग़ाफ़िल हैं।(92) (रुकूअ.14)और बेशक हमने बनी इसराईल को इ़ज़्ज़त की जगह दी (फ़ा196) और उन्हें सुथरी रोज़ी अ़ता की तो इख़्तिलाफ़ में न पड़े (फ़ा197) मगर इल्म आने के बाद (फ़ा198) बेशक तुम्हारा रब क़ियामत के दिन उन में फ़ैसला कर देगा जिस बात में झगड़ते थे।(93) (फ़ा199) और ऐ सुनने वाले अगर तुझे कुछ शुबहा हो उसमें जो हमने तेरी तरफ़ उतारा (फ़ा200) तो उनसे पूछ देख जो तुझ से पहले किताब पढ़ने वाले हैं (फ़ा201) बेशक तेरे पास तेरे रब की तरफ़ से हक़ आया (फ़ा202) तो तू हरगिज़ शक वालों में न हो।(94) और हरगिज़ उनमें न होना जिन्होंने अल्लाह की आयतें झुठलाईं कि तू ख़सारे वालों में हो जाएगा।(95) बेशक वह जिन पर तेरे रब की बात ठीक पड़ चुकी है (फ़ा203) ईमान न लायेंगे।(96) अगरचे सब निशानियां

(फ़ा192) फ़िरऔ़न ने बतमन्नाए क़बूले ईमान का मज़मून तीन मर्तबा तकरार के साथ अदा किया लेकिन यह ईमान क़बूल न हुआ क्योंकि मलायका और अ़ज़ाब के देखने के बाद ईमान मक़बूल नहीं अगर हालते इख़्तियार में वह एक मर्तबा भी यह कलिमा कहता तो उसका ईमान क़बूल कर लिया जाता लेकिन उसने वक़्त खो दिया इस लिए उससे यह कहा गया जो आयत में आगे मज़कूर है।(फ़ा193) हालते इज़्तेरार में जबकि ग़र्क़ में मुब्तला हो चुका है और ज़िन्दगानी की उम्मीद बाक़ी नहीं रही उस वक़्त ईमान लाता है (फ़ा194) ख़ुद गुमराह था दूसरों को गुमराह करता था, मरवी है कि एक मर्तबा ह़ज़रत जिबरील अ़लैहिस्सलाम फ़िरऔ़न के पास एक इस्तिफ़्ता लाये जिसका मज़मून यह था कि बादशाह का क्या हुक्म है ऐसे ग़ुलाम के हक़ में जिसने एक शख़्स के माल व नेअ़मत में परवरिश पाई फिर उसकी नाशुक्री की और उसके हक़ का मुनिकर हो गया और अपने आप मौला होने का मुद्दई बन गया इस पर फ़िरऔ़न ने यह जवाब लिखा कि जो ग़ुलाम अपने आक़ा की नेअ़मतों का इन्कार करे और उसके मुक़ाबिल आए उसकी सज़ा यह है कि उसको दरिया में डूबा दिया जाये जब फ़िरऔ़न डूबने लगा तो ह़ज़रत जिबरील ने उसका वही फ़तवा उसके सामने कर दिया और उसको उसने पहचान लिया (सुबहानल्लाह) (फ़ा195) उलमाए तफ़सीर कहते हैं कि जब अल्लाह तआ़ला ने फ़िरऔ़न और उसकी क़ौम को ग़र्क़ किया और मूसा अ़लैहिस्सलातु वस्सलाम ने अपनी क़ौम को उनके हलाकत की ख़बर दी तो बाज़ बनी इसराईल को शुबहा रहा और उसकी अ़ज़मत व हैबत जो उनके क़ुलूब में थी उसके बाइस उन्हें उसकी हलाकत का यक़ीन न आया बअमरे इलाही दरिया ने फ़िरऔ़न की लाश साहिल **(बक़िया सफ़हा 365 पर)**

كُلُّ اٰيَةٍ حَتّٰى يَرَوُا الْعَذَابَ الْاَلِيْمَ ۝ فَلَوْلَا كَانَتْ قَرْيَةٌ اٰمَنَتْ فَنَفَعَهَآ اِيْمَانُهَآ اِلَّا قَوْمَ يُوْنُسَ ؕ لَمَّآ اٰمَنُوْا كَشَفْنَا عَنْهُمْ عَذَابَ الْخِزْيِ

فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَمَتَّعْنٰهُمْ اِلٰى حِيْنٍ ۝ وَلَوْ شَآءَ رَبُّكَ لَاٰمَنَ مَنْ فِي الْاَرْضِ كُلُّهُمْ جَمِيْعًا ؕ اَفَاَنْتَ تُكْرِهُ النَّاسَ حَتّٰى يَكُوْنُوْا مُؤْمِنِيْنَ ۝

وَمَا كَانَ لِنَفْسٍ اَنْ تُؤْمِنَ اِلَّا بِاِذْنِ اللّٰهِ ؕ وَيَجْعَلُ الرِّجْسَ عَلَى الَّذِيْنَ لَا يَعْقِلُوْنَ ۝ قُلِ انْظُرُوْا مَاذَا فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ وَمَا

تُغْنِي الْاٰيٰتُ وَالنُّذُرُ عَنْ قَوْمٍ لَّا يُؤْمِنُوْنَ ۝ فَهَلْ يَنْتَظِرُوْنَ اِلَّا مِثْلَ اَيَّامِ الَّذِيْنَ خَلَوْا مِنْ قَبْلِهِمْ ؕ قُلْ فَانْتَظِرُوْٓا اِنِّيْ مَعَكُمْ مِّنَ

الْمُنْتَظِرِيْنَ ۝ ثُمَّ نُنَجِّيْ رُسُلَنَا وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا كَذٰلِكَ ۚ حَقًّا عَلَيْنَا نُنْجِ الْمُؤْمِنِيْنَ ۝ قُلْ يٰٓاَيُّهَا النَّاسُ اِنْ كُنْتُمْ فِيْ شَكٍّ مِّنْ دِيْنِيْ فَلَآ اَعْبُدُ الَّذِيْنَ

कुल्लु आ—यतिन् ह़त्ता य—रवुल् अ़ज़ाबल् अलीम(97)फ़लौला कानत् क़र्—यतुन् आ—मनत् फ़—न—फ़—अ़हा ईमानुहा इल्ला क़ौ—म यूनु—स लम्मा आ—मनू क—शफ़्ना अ़न्हुम् अ़ज़ाबल् ख़िज़्यि फ़िल् ह़यातिद्दुन्या व मत्तअ़्—नाहुम् इला ह़ीन(98)व लौ शा—अ रब्बु—क लआ—म—न मन् फ़िल्अर्ज़ि कुल्लुहुम् जमीअ़न् अ—फ़—अन्—त तुक्रिहुन्ना—स ह़त्ता यकूनू मुअ्मिनीन(99)व मा का—न लि—नफ़्सिन् अन् तुअ्मि—न इल्ला बिइज़्निल्लाहि व यज्अ़लुर्—रिज्—स अ़—लल्लज़ी—न ला यअ़्क़िलून(100)कुलिन्ज़ुरू माज़ा फ़िस्समावाति वल्अर्ज़ि व मा तुग़्निल् आयातु वन्नुज़ुरु अ़न् क़ौमिल् ला युअ्मिनून(101)फ़—हल् यन्त—ज़िरू—न इल्ला मिस्—ल अय्यामिल् लज़ी—न ख़लौ मिन् क़ब्लिहिम् कुल् फ़न्तज़िरू इन्नी म—अ़कुम् मिनल् मुन्तज़िरीन(102) सुम्—म नु—नज्जी रुसु—लना वल्लज़ी—न आ—मनू कज़ालि—क ह़क़्क़न् अ़लैना नुन्जिल् मुअ्मिनीन(103)कुल् या अय्यु—हन्नासु इन् कुन्तुम् फ़ी शक्किम् मिन् दीनी फ़ला अअ़्बुदुल् लज़ी—न

उनके पास आईं जब तक दर्दनाक अ़ज़ाब न देख लें(97) (फ़ा204) तो हुई होती न कोई बस्ती (फ़ा205) कि ईमान लाती (फ़ा206) तो उसका ईमान काम आता हां यूनुस की क़ौम जब ईमान लाए हमने उनसे रुसवाई का अ़ज़ाब दुनिया की ज़िन्दगी में हटा दिया और एक वक़्त तक उन्हें बरतने दिया।(98) (फ़ा207) और अगर तुम्हारा रब चाहता ज़मीन में जितने हैं सब के सब ईमान ले आते (फ़ा208) तो क्या तुम लोगों को ज़बरदस्ती करोगे यहां तक कि मुसलमान हो जायें।(99) (फ़ा209) और किसी जान की क़ुदरत नहीं कि ईमान ले आए मगर अल्लाह के हुक्म से (फ़ा210) और अ़ज़ाब उन पर डालता है जिन्हें अ़क़्ल नहीं।(100) तुम फ़रमाओ देखो (फ़ा211) आसमानों और ज़मीन में क्या क्या है (फ़ा212) और आयतें और रसूल उन्हें कुछ नहीं देते जिनके नसीब में ईमान नहीं।(101) तो उन्हें काहे का इन्तेज़ार है मगर उन्हीं लोगों के से दिनों का जो उनसे पहले हो गुज़रे (फ़ा213) तुम फ़रमाओ तो इन्तेज़ार करो मैं भी तुम्हारे साथ इन्तेज़ार में हूं।(102) (फ़ा214) फिर हम अपने रसूलों और ईमान वालों को नजात देंगे बात यही है हमारे ज़िम्मे करम पर हक़ है मुसलमानों को नजात देना। (103) (रुकूअ़ 15) तुम फ़रमाओ ऐ लोगों अगर तुम मेरे दीन की तरफ़ से किसी शुबहा में हो तो मैं ता

(फ़ा204) और उस वक़्त का ईमान नाफ़ेअ़ नहीं (फ़ा205) उन बस्तियों में से जिनको हमने हलाक किया (फ़ा206) और इख़्लास के साथ तौबा करती अ़ज़ाब नाज़िल होने से पहले (मदारिक)। (फ़ा207) क़ौमे यूनुस का वाक़िआ़ यह है कि नैनवा इलाक़ए मूसिल में यह लोग रहते थे और कुफ़्र व शिर्क में मुब्तला थे अल्लाह तआ़ला ने हज़रत यूनुस अ़लैहिस्सलातु वस्सलाम को उनकी तरफ़ भेजा आपने बुत परस्ती छोड़ने और ईमान लाने का उनको हुक्म दिया उन लोगों ने इन्कार किया हज़रत यूनुस अ़लैहिस्सलातु वस्सलाम की तकज़ीब की आपने उन्हें बहुक्मे इलाही नुज़ूले अ़ज़ाब की ख़बर दी उन लोगों ने आपस में कहा कि हज़रत यूनुस अ़लैहिस्सलातु वस्सलाम ने कभी कोई बात ग़लत नहीं कही है देखो अगर वह रात को यहां रहे जब तो कोई अन्देशा नहीं और अगर उन्होंने रात यहां न गुज़ारी तो समझ लेना चाहिए कि अ़ज़ाब आएगा शब में हज़रत यूनुस अ़लैहिस्सलाम वहां से तशरीफ़ ले गए सुबह को आसारे अ़ज़ाब नुमूदार हो गए आसमान पर सियाह हैबतनाक अब्र आया और धुवाँ कसीर जमा हुआ तमाम शहर पर छा गया यह देख कर उन्हें यक़ीन हुआ कि अ़ज़ाब आने वाला है तो उन्होंने हज़रत यूनुस अ़लैहिस्सलाम की जुस्तजू की और आपको न पाया अब उन्हें और ज़्यादा अन्देशा हुआ तो वह मअ़ अपनी औरतों बच्चों और जानवरों के जंगल को निकल गए मोटे कपड़े पहने और तौबा व इस्लाम का इज़्हार किया शौहर से बीबी और मां से बच्चे जुदा हो गए और सबने बारगाहे इलाही में गिरया व ज़ारी शुरू की और कहा कि जो यूनुस अ़लैहिस्सलाम लाये उसपर हम **(बक़िया सफ़हा 365 पर)**

تَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ وَلٰكِنْ اَعْبُدُ اللّٰهَ الَّذِيْ يَتَوَفّٰىكُمْ ۚۖ وَاُمِرْتُ اَنْ اَكُوْنَ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ ۝١٠٤ وَاَنْ اَقِمْ وَجْهَكَ لِلدِّيْنِ حَنِيْفًا ۚ وَلَا تَكُوْنَنَّ

مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ ۝١٠٥ وَلَا تَدْعُ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ مَا لَا يَنْفَعُكَ وَلَا يَضُرُّكَ ۚ فَاِنْ فَعَلْتَ فَاِنَّكَ اِذًا مِّنَ الظّٰلِمِيْنَ ۝١٠٦ وَاِنْ يَّمْسَسْكَ اللّٰهُ بِضُرٍّ فَلَا

كَاشِفَ لَهٗٓ اِلَّا هُوَ ۚ وَاِنْ يُّرِدْكَ بِخَيْرٍ فَلَا رَآدَّ لِفَضْلِهٖ ۭ يُصِيْبُ بِهٖ مَنْ يَّشَآءُ مِنْ عِبَادِهٖ ۭ وَهُوَ الْغَفُوْرُ الرَّحِيْمُ ۝١٠٧ قُلْ يٰٓاَيُّهَا النَّاسُ قَدْ جَآءَكُمُ

الْحَقُّ مِنْ رَّبِّكُمْ ۚ فَمَنِ اهْتَدٰى فَاِنَّمَا يَهْتَدِيْ لِنَفْسِهٖ ۚ وَمَنْ ضَلَّ فَاِنَّمَا يَضِلُّ عَلَيْهَا ۚ وَمَآ اَنَا عَلَيْكُمْ بِوَكِيْلٍ ۝١٠٨ وَاتَّبِعْ مَا يُوْحٰٓى اِلَيْكَ

وَاصْبِرْ حَتّٰى يَحْكُمَ اللّٰهُ ۚۖ وَهُوَ خَيْرُ الْحٰكِمِيْنَ ۝١٠٩

तअ्बुदू–न मिन् दूनिल्लाहि व लाकिन् अअ्बुदुल्लाहल् लज़ी य–त–वफ़्फ़ाकुम् व उमिर्तु अन् अकू–न मिनल् मुअ्मिनीन(104)व अन् अक़िम् वज्ह–क लिद्दीनि ह़नीफ़न् व ला तकूनन्–न मिनल् मुश्रिकीन(105)व ला तद्अु मिन् दूनिल्लाहि मा ला यन्फ़अु–क व ला यजुर्रु–क फ़इन् फ़–अल्–त फ़–इन्न–क इज़म् मिनज़्–ज़ालिमीन(106)व इंय्यम्सस्कल्लाहु बिज़ुर्रिन् फ़ला काशि–फ़ लहू इल्ला हु–व व इंय्युरिद्–क बिख़ैरिन् फ़ला राद्–द लि–फ़ज़्लिही युसीबु बिही मंय्यशाउ मिन् अ़िबादिही व हुवल् ग़फ़ूरुर्रह़ीम(107)कुल् या अय्युहन्नासु क़द् जा–अकुमुलह़क़्क़ु मिर् रब्बिकुम् फ़–मनिह्तदा फ़इन्नमा यह्तदी लिनफ़्सिही व मन् ज़ल्–ल फ़इन्नमा यज़िल्लु अ़लैहा व मा अना अ़लैकुम् बि–वकील(108)वत्तबिअ् मा यूह़ा इलै–क वस्बिर् ह़त्ता यह़्कुमल्लाहु व हु–व ख़ैरुल्ह़ाकिमीन(109)

उसे न पूजूंगा जिसे तुम अल्लाह के सिवा पूजते हो (फ़ा215) हां उस अल्लाह को पूजता हूं जो तुम्हारी जान निकालेगा (फ़ा216) और मुझे हुक्म है कि ईमान वालों में हूं।(104) और यह कि अपना मुंह दीन के लिए सीधा रख सब से अलग होकर (फ़ा217) और हरगिज़ शिर्क वालों में न होना।(105) और अल्लाह के सिवा उसकी बन्दगी न कर जो न तेरा भला कर सके न बुरा फिर अगर ऐसा करे तो उस वक़्त तू ज़ालिमों से होगा।(106) और अगर तुझे अल्लाह कोई तकलीफ़ पहुंचाए तो उसका कोई टालने वाला नहीं उसके सिवा और अगर तेरा भला चाहे तो उसके फ़ज़्ल का रद करने वाला कोई नहीं (फ़ा218) उसे पहुंचाता है अपने बन्दों में जिसे चाहे और वही बख़्शने वाला मेहरबान है।(107) तुम फ़रमाओ ऐ लोगो तुम्हारे पास तुम्हारे रब की तरफ़ से हक़ आया (फ़ा219) तो जो राह पर आया वह अपने भले को राह पर आया (फ़ा220) और जो बहका वह अपने बुरे को बहका (फ़ा221) और कुछ मैं कड़ोड़ा (हाकिमे आला) नहीं।(108) (फ़ा222) और उस पर चलो जो तुम पर 'वह़ी' होती है और सब्र करो (फ़ा223) यहां तक कि अल्लाह हुक्म फ़रमाए (फ़ा224) और वह सबसे बेहतर हुक्म फ़रमाने वाला है।(109) (रुकूअ् 16) (फ़ा225)

(फ़ा215) क्योंकि वह मख़्लूक़ है इबादत के लायक़ नहीं (फ़ा216) क्योंकि वह क़ादिरे मुख़्तार इलाह बरहक़ मुस्तहिक़े इबादत है (फ़ा217) यानी मुख़लिस मोमिन रहो। (फ़ा218) वही नफ़ा व ज़रर का मालिक है तमाम कायनात उसी की मुहताज है वही हर चीज़ पर क़ादिर और जूदो करम वाला है बन्दों को उसकी तरफ़ रग़बत और उसका ख़ौफ़ और उसी पर भरोसा और उसी पर एतेमाद चाहिये और नफ़ा व ज़रर जो कुछ भी है वही। (फ़ा219) हक़ से यहां क़ुरआन मुराद है या इस्लाम या सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम (फ़ा220) क्योंकि उसका नफ़ा उसी को पहुंचेगा (फ़ा221) क्योंकि उसका वबाल उसी पर है (फ़ा222) कि तुम पर जब्र करूं (फ़ा223) कुफ़्फ़ार की तकज़ीब और उन की ईज़ा पर (फ़ा223) मुशरिकीन से क़िताल करने और किताबियों से जिज़्या लेने का (फ़ा225) कि उसके हुक्म में ख़ता व ग़लत का एहतेमाल नहीं और वह बन्दों के असरार व मख़्फ़ी हालात सबका जानने वाला है उसका फ़ैसला दलील व गवाह का मुहताज नहीं

سُوْرَةُ هُوْدٍ مَكِّيَّةٌ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

الٓرٰ كِتٰبٌ اُحْكِمَتْ اٰيٰتُهٗ ثُمَّ فُصِّلَتْ مِنْ لَّدُنْ حَكِيْمٍ خَبِيْرٍ ۙ اَلَّا تَعْبُدُوْٓا اِلَّا اللّٰهَ ؕ اِنَّنِيْ لَكُمْ مِّنْهُ نَذِيْرٌ وَّبَشِيْرٌ ۙ وَّاَنِ اسْتَغْفِرُوْا رَبَّكُمْ ثُمَّ تُوْبُوْٓا اِلَيْهِ يُمَتِّعْكُمْ مَّتَاعًا حَسَنًا اِلٰٓى اَجَلٍ مُّسَمًّى وَّيُؤْتِ كُلَّ ذِيْ فَضْلٍ فَضْلَهٗ ؕ وَاِنْ تَوَلَّوْا فَاِنِّيْٓ اَخَافُ عَلَيْكُمْ عَذَابَ يَوْمٍ كَبِيْرٍ ۝ اِلَى اللّٰهِ مَرْجِعُكُمْ ۚ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ۝ اَلَآ اِنَّهُمْ يَثْنُوْنَ صُدُوْرَهُمْ لِيَسْتَخْفُوْا مِنْهُ ؕ اَلَا حِيْنَ يَسْتَغْشُوْنَ ثِيَابَهُمْ ۙ يَعْلَمُ مَا يُسِرُّوْنَ وَمَا يُعْلِنُوْنَ ۚ اِنَّهٗ عَلِيْمٌۢ بِذَاتِ الصُّدُوْرِ ۝

सूरतु हूदिन

(मक्की है इसमें 123 आयतें और 10 रुकूअ़ हैं)

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम

अलिफ़् लाम्–रा किताबुन् उह्किमत् आयातुहू सुम्–म फ़ुस्सिलत् मिल् लदुन् हकीमिन् ख़बीर (1)अल्ला तअ़्बुदू इल्लल्ला–ह इन्ननी लकुम् मिन्हु नज़ीरुंव् व बशीरुंव्(2)व अनिस्तग़्फ़िरू रब्बकुम् सुम्–म तूबू इलैहि युमत्तिअ़्कुम् मताअ़न् ह–स–नन् इला अ–जलिम् मुसम्मंव् व युअ़्ति कुल्–ल ज़ी फ़ज़्लिन् फ़ज़्लहू व इन् त–वल्लौ फ़इन्नी अख़ाफ़ु अ़लैकुम् अ़ज़ा–ब यौमिन् कबीर(3)इलल्लाहि मर्जिअ़ुकुम् व हु–व अ़ला कुल्लि शैइन् क़दीर(4)अला इन्नहुम् यस्नू–न सुदू–रहुम् लि–यस्तख़्फ़ू मिन्हु अला ही–न यस्तग़्शू–न सिया–बहुम् यअ़्लमु मा युसिर्रू–न व मा युअ़्लिनू–न इन्नहू अ़लीमुम् बिज़ातिस्सुदूर(5)

अल्लाह के नाम से शुरू जो बहुत मेहरबान रहम वाला।(फ़ा1)

यह एक किताब है जिसकी आयतें हिकमत भरी हैं (फ़ा2) फिर तफ़सील की गईं (फ़ा3) हिकमत वाले ख़बरदार की तरफ़ से।(1) कि बन्दगी न करो मगर अल्लाह की बेशक मैं तुम्हारे लिए उसकी तरफ़ से डर और ख़ुशी सुनाने वाला हूं।(2) और यह कि अपने रब से माफ़ी मांगो फिर उसकी तरफ़ तौबा करो तुम्हें बहुत अच्छा बरतना (फ़ायदा उठाना) देगा (फ़ा4) एक ठहराए वादा तक और हर फ़ज़ीलत वाले को (फ़ा5)उसका फ़ज़्ल पहुंचाएगा (फ़ा6) और अगर मुंह फेरो तो मैं तुम पर बड़े दिन (फ़ा7) के अ़ज़ाब का ख़ौफ़ करता हूं।(3) तुम्हें अल्लाह ही की तरफ़ फिरना है (फ़ा8) और वह हर शय पर क़ादिर है।(4) (फ़ा9) सुनो वह अपने सीने दोहरे करते हैं कि अल्लाह से पर्दा करें (फ़ा10) सुनो जिस वक़्त वह अपने कपड़ों से सारा बदन ढांप लेते हैं उस वक़्त भी अल्लाह उनका छुपा और ज़ाहिर सब कुछ जानता है बेशक वह दिलों की बात जानने वाला है।(5)

(फ़ा1) सूरह हूद मक्की है हसन व इकरमा वग़ैरहुम मुफ़स्सिरीन ने फ़रमाया कि आयत *व अक़िमिस्सला–त त–रफ़यिन्नहारि* के सिवा बाक़ी तमाम सूरत मक्की है मक़ातिल ने कहा कि आयत *फ़–ल–अल्ल–क तारिकुन्* और *उलाइ–क युअ़्मिनू–न बिही* और *इन्नल् ह–सना–ति युज़्हिब्– नस्सय्यिआति* के अलावा तमाम सूरत मक्की है इस में दस रुकूअ़ और एक सौ तेईस आयतें और एक हज़ार छः सौ कलिमे और 9567 हरफ़ हैं हदीस शरीफ़ में है सहाबा ने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम हुज़ूर पर पीरी के आसार नुमूदार हो गए फ़रमाया मुझे सूरह हूद सूरह वाक़िआ़ सूरह *अ़म्म यतसा–अलून* और सूरह *इज़श्शम्स कुव्विरत* ने बूढ़ा कर दिया (तिर्मिज़ी) ग़ालेबन यह इस वजह से फ़रमाया कि इन सूरतों में क़ियामत व बअस व हिसाब व जन्नत व दोज़ख़ का ज़िक्र है (फ़ा2) जैसा कि दूसरी आयत में इरशाद हुआ *तिल्–क आयातुल् किताबिल् हकीम* बाज़ मुफ़स्सिरीन ने फ़रमाया कि उहकिमत के माना यह हैं कि उनकी नज़्म मुहकम व उस्तुवार की गई इस सूरत में माना यह होंगे कि उसमें नक़्स व ख़लल राह नहीं पा सकता वह बिनाए मुहकम है हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा ने फ़रमाया कि कोई किताब उनकी नासिख़ नहीं जैसा कि यह दूसरी किताबों और शरीअ़तों की नासिख़ हैं। (फ़ा3) और सूरत सूरत और आयत आयत जुदा जुदा ज़िक्र की गईं या अलाहिदा अलाहिदा नाज़िल हुईं या अक़ायद व अहकाम व मवायज़ व क़सस और ग़ैबी ख़बरें उनमें ब तफ़सील बयान फ़रमाई गईं (फ़ा4) उम्रदराज़ और ऐश वसीअ़ व रिज़्क़ कसीर फ़ाइदा इससे मालूम हुआ कि इख़्लास के साथ तौबा व इस्तिग़फ़ार करना दराज़ीए उम्र व कशाईशे रिज़्क़ के लिए बेहतर अ़मल है। (फ़ा5) जिसने दुनिया (बक़िया सफ़हा 366 पर)

(बक़िया सफ़्हा 334 का) आयत जद बिन क़ैस और मोअ्तिब बिन कुशैर और उनके साथियों के हक़ में नाज़िल हुई यह अस्सी मुनाफ़िक़ थे। नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि उनके पास न बैठो उन से कलाम न करो मक़ातिल ने कहा कि यह आयत अब्दुल्लाह बिन उबय के हक़ में नाज़िल हुई उसने नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के सामने क़सम खाई थी कि अब कभी वह जिहाद में जाने से सुस्ती न करेगा और सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से दरख़्वास्त की थी कि हुज़ूर उससे राज़ी हो जायें इस पर यह आयत और इसके बाद वाली आयत नाज़िल हुई। (फ़ा217) और उनके उज़्र क़बूल कर लो तो उससे उन्हें कुछ नफ़ा न होगा क्योंकि तुम अगर उनकी क़समों का ऐतबार भी कर लो। (फ़ा218) इस लिए कि वह उनके दिल के कुफ़्र व निफ़ाक़ को जानता है (फ़ा219) जंगल के रहने वाले (फ़ा220) क्योंकि वह मजालिसे इल्म और सोहबते उलमा से दूर रहते हैं। (फ़ा221) क्योंकि वह जो कुछ ख़र्च करते हैं रज़ाए इलाही और तलबे सवाब के लिए तो करते नहीं रियाकारी और मुसलमानों के ख़ौफ़ से ख़र्च करते हैं (फ़ा222) और यह राह देखते हैं कि कब मुसलमानों का ज़ोर कम हो और कब वह मग़लूब हों उन्हें ख़बर नहीं कि अल्लाह को क्या मंज़ूर है वह बतला दिया जाता है (फ़ा223) और वही रन्ज व बला और बदहाली में गिरिफ़्तार होंगे। **शाने नुज़ूलः** यह क़बीला असद व ग़तफ़ान व तमीम के अ़ेराबियों के हक़ में नाज़िल हुई फिर अल्लाह तबारक व तआ़ला ने उनमें से जिनको मुस्तसना किया उनका ज़िक्र अगली आयत में है (ख़ाज़िन)। (फ़ा224) मुजाहिद ने कहा कि यह लोग क़बीला मुज़ैना में से बनी मक़रून हैं कलबी ने कहा वह असलम और ग़फ़्फ़ार और जुहैना के क़बीला हैं बुख़ारी और मुस्लिम की हदीस में है कि रसूले करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि क़ुरैश और अंसार और जुहैना और मुज़ैना और असलम और शुजाअ् और ग़फ़्फ़ार मवाली हैं अल्लाह और रसूल के सिवा उनका कोई मौला नहीं। (फ़ा225) कि जब रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के हुज़ूर में सदक़ा लायें तो हुज़ूर उनके लिए ख़ैरो बरकत व मग़फ़िरत की दुआ़ फ़रमायें यही रसूले करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम का तरीक़ा था। **मसलाः** यही फ़ातिहा की असल है कि सदक़ा के साथ दुआ़ए मग़फ़िरत की जाती है लिहाज़ा फ़ातिहा को बिदअ़त व ना-रवा बताना क़ुरआन व हदीस के ख़िलाफ़ है।

(बक़िया सफ़्हा 335 का) गया (फ़ा233) एक बार तो दुनिया में रुसवाई और क़त्ल के साथ और दूसरी मर्तबा क़ब्र में (फ़ा234) यानी अ़ज़ाबे दोज़ख़ की तरफ़ जिस में हमेशा गिरिफ़्तार रहेंगे (फ़ा235) और उन्होंने दूसरों की तरह झूठे उज़्र न किये और अपने फ़ेअ्ल पर नादिम हुए। **शाने नुज़ूलः** जम्हूर मुफ़स्सिरीन का क़ौल है कि यह आयत मदीना तय्येबा के मुसलमानों की एक जमाअ़त के हक़ में नाज़िल हुई जो ग़ज़वए तबूक में हाज़िर न हुए थे उसके बाद नादिम हुए और तौबा की और कहा अफ़सोस हम गुमराहों के साथ या औरतों के साथ रह गए और रसूले करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम और आपके असहाब जिहाद में हैं जब हुज़ूर अपने सफ़र से वापस हुए और क़रीब मदीना पहुंचे तो उन लोगों ने क़सम खाई कि हम अपने आपको मस्जिद के सुतूनों से बांध देंगे और हरगिज़ न खोलेंगे यहां तक कि रसूले करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ही खोलें यह क़समें खाकर वह मस्जिद के सुतूनों से बंध गए जब हुज़ूर तशरीफ़ लाये और उन्हें मुलाहिज़ा किया तो फ़रमाया यह कौन हैं अ़र्ज़ किया गया यह वह लोग हैं जो जिहाद में हाज़िर होने से रह गए थे इन्होंने अल्लाह से अहद किया है कि यह अपने आपको न खोलेंगे जब तक हुज़ूर उनसे राज़ी होकर उन्हें खुद न खोलें हुज़ूर ने फ़रमाया और मैं अल्लाह की क़सम खाता हूं कि मैं उन्हें न खोलूंगा न उनका उज़्र क़बूल करूं जब तक कि मुझे अल्लाह की तरफ़ से उनके खोलनें का हुक्म दिया जाये तब यह आयत नाज़िल हुई और रसूले करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने उन्हें खोला तो उन्होंने अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह! यह माल हमारे रह जाने के बाइस हुए इन्हें लीजिये और सदक़ा कीजिये और हमें पाक कर दीजिये और हमारे लिए दुआ़ए मग़फ़िरत फ़रमाईये हुज़ूर ने फ़रमाया मुझे तुम्हारे माल लेने का हुक्म नहीं दिया गया इस पर अगली आयत नाज़िल हुई *ख़ुज़् मिन अम्वालिहिम्* (फ़ा236) यहां अ़मले सालेह से या एतेराफ़े क़ुसूर और तौबा मुराद है या इस तख़ल्लुफ़ से पहले ग़ज़वात में नबीए करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के साथ हाज़िर होना या ताअ़त व तक़वा के तमाम आमाल इस तक़दीर पर आयत तमाम मुसलमानों के हक़ में होगी (फ़ा237) इस से तख़ल्लुफ़ यानी जिहाद से रह जाना मुराद है (फ़ा238) आयत में जो सदक़ा वारिद हुआ है उसके माना में मुफ़स्सिरीन के कई क़ौल हैं एक तो यह कि वह सदक़ा ग़ैर वाजिबा था जो बतौरे कफ़्फ़ारा के उन साहिबों ने दिया था जिनका ज़िक्र ऊपर की आयत में है दूसरा क़ौल यह है कि इस सदक़ा से मुराद वह ज़कात है जो उनके ज़िम्मा वाजिब थी वह तायब हुए और उन्होंने ज़कात अदा करनी चाही तो अल्लाह तआ़ला ने उसके लेने का हुक्म दिया इमाम अबू बकर राज़ी जसास ने इस क़ौल को तरजीह दी है कि सदक़ा से ज़कात मुराद है (ख़ाज़िन व अहकामुल क़ुरआन) मदारिक में है कि सुन्नत यह है कि सदक़ा लेने वाला सदक़ा देने वाले के लिए दुआ़ करे और बुख़ारी व मुस्लिम में हज़रत अब्दुल्लाह बिन अबी औफ़ा की हदीस है कि जब कोई नबीए करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के पास सदक़ा लाता आप उसके हक़ में दुआ़ करते मेरे बाप ने सदक़ा हाज़िर किया तो हुज़ूर ने दुआ़ फ़रमाई *अल्लाहुम्म सल्लि अ़ला अबी औफ़ा* **मसलाः** इस आयत से साबित हुआ कि फ़ातिहा में जो सदक़ा लेने वाले सदक़ा पा कर दुआ़ करते हैं यह क़ुरआन व हदीस के मुताबिक़ है।

(बक़िया सफ़्हा 336 का) फ़रमाया लोगों ने उसका नाम अबू आमिर फ़ासिक़ रख दिया रोज़े उहद अबू आ़मिर फ़ासिक़ ने हुज़ूर से कहा कि जहां कहीं कोई क़ौम आप से जंग करने वाली मिलेगी मैं उसके साथ होकर आपसे जंग करूंगा चुनांचे जंगे हुनैन तक उसका यही मामूल रहा और वह हुज़ूर के साथ मसरूफ़े जंग रहा जब हवाज़िन को शिकस्त हुई और वह मायूस होकर मुल्क शाम की तरफ़ भागा तो उसने मुनाफ़िक़ीन को ख़बर भेजी कि तुम से जो सामाने जंग हो सके क़ुव्वत व सलाह सब जमा करो और मेरे लिए एक मस्जिद बनाओ मैं शाह रोम के पास जाता हूं वहां से रोमी लश्कर लेकर आऊंगा और (सय्यदे आलम) मुहम्मद (सल्लल्लाहु

अ़लैहि वसल्लम) और उनके असहाब को निकालूंगा यह ख़बर पाकर उन लोगों ने मस्जिदे ज़र्रार बनाई थी और सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से अर्ज़ किया था यह मस्जिद हम ने आसानी के लिए बना दी है कि जो लोग बूढ़े ज़ईफ़ कमज़ोर हैं वह इसमें बफ़राग़त नमाज़ पढ़ लिया करें आप इसमें एक नमाज़ पढ़ दीजिये और बरकत की दुआ़ फ़रमा दीजिये हुज़ूर ने फ़रमाया अब तो मैं सफ़र तबूक के लिए पा-बरकाब हूं वापसी पर अल्लाह की मर्ज़ी होगी तो वहां नमाज़ पढ़ लूंगा जब नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ग़ज़वए तबूक से वापस होकर मदीना शरीफ़ के क़रीब एक मौज़ा में ठहरे तो मुनाफ़िक़ीन ने आपसे दरख़्वास्त की कि उनकी मस्जिद में तशरीफ़ ले चलें इस पर यह आयत नाज़िल हुई और उनके फ़ासिद इरादों का इज़्हार फ़रमाया गया तब रसूले करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने बाज़ असहाब को हुक्म दिया कि उस मस्जिद को जाकर ढा दें और जला दें चुनान्चे ऐसा ही किया गया और अबू आ़मिर राहिब मुल्के शाम में बहालते सफ़र बेकसी व तन्हाई में हलाक हुआ (फ़ा243) मस्जिदे क़ुबा वालों के (फ़ा244) कि वहां ख़ुदा और रसूल के साथ कुफ़्र करें और निफ़ाक़ को क़ुव्वत दें (फ़ा245) जो मस्जिदे क़ुबा में नमाज़ के लिए मुजतमअ़ होते हैं (फ़ा246) यानी अबू आ़मिर राहिब (फ़ा247) उसमें सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को मस्जिदे ज़र्रार में नमाज़ पढ़ने की मुमानअ़त फ़रमाई गई मसला जो मस्जिद फ़ख़्र व रिया और नुमूद व नुमाईश या रज़ाए इलाही के सिवा और किसी ग़रज़ के लिए या ग़ैर तय्यब माल से बनाई गई हो वह मस्जिद ज़र्रार के साथ लाहिक़ है (मदारिक) (फ़ा248) इससे मुराद मस्जिदे .क़ुबा है जिस की बुनियाद रसूले करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने रखी और जब तक हुज़ूर ने क़ुबा में क़ियाम फ़रमाया उसमें नमाज़ पढ़ी बुख़ारी शरीफ़ की हदीस में है कि रसूले करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम हर हफ़्ता मस्दिजे क़ुबा में तशरीफ़ लाते थे। दूसरी हदीस में है कि मस्जिदे क़ुबा में नमाज़ पढ़ने का सवाब उमरा के बराबर है मुफ़स्सिरीन का एक क़ौल यह भी है कि इससे मस्जिदे मदीना मुराद है और इसमें भी हदीसें वारिद हैं इन दोनों बातों में कुछ तआ़रुज़ नहीं क्योंक आयत का मस्जिदे .क़ुबा के हक़ में नाज़िल होना उसको मुस्तलज़िम नहीं है कि मस्जिद मदीना में यह औसाफ़ न हों (फ़ा249) तमाम नजासतों से या गुनाहों से **शाने नुज़ूलः** यह आयत अहले मस्जिद .क़ुबा के हक़ में नाज़िल हुई सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने उनसे फ़रमाया, ऐ गरोहे अंसार अल्लाह अ़ज़्ज़ व जल्ल ने तुम्हारी सना फ़रमाई तुम वुज़ू और इस्तिन्जे के वक़्त क्या अ़मल करते हो उन्होंने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह! सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम हम बड़ा इस्तिन्जा तीन ढेलों से करते हैं उसके बाद फिर पानी से तहारत करते हैं **मसलाः** नजासत अगर जाए ख़ुरूज से मुतजावुज़ हो जाये तो पानी से इस्तिन्जा वाजिब है वरना मुस्तहब। **मसलाः** ढेलों से इस्तिन्जा सुन्नत है नबीए करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने इस पर मुवाज़बत फ़रमाई और कभी तर्क भी किया (फ़ा250) जैसे मस्जिदे .क़ुबा और मस्जिदे मदीना (फ़ा251) जैसे कि मस्जिदे ज़र्रार वाले (फ़ा252) मुराद यह है कि जिस शख़्स ने अपने दीन की बिना तक़्वा और रज़ाए इलाही की मज़बूत सतह पर रखी वह बेहतर है न कि वह जिसने अपने दीन की बिना बातिल व निफ़ाक़ के गिराव गड्ढे पर रखी।

(बक़िया सफ़हा 337 का) अ़र्ज़ किया कि हम ऐसा करें तो हमें क्या मिलेगा फ़रमाया जन्नत (फ़ा256) ख़ुदा के दुश्मनों को (फ़ा257) राहे ख़ुदा में (फ़ा258) इससे साबित हुआ कि तमाम शरीअ़तों और मिल्लतों में जिहाद का हुक्म था (फ़ा259) तमाम गुनाहों से (फ़ा260) अल्लाह के फ़रमांबरदार बन्दे जो इख़्लास के साथ उसकी इबादत करते हैं और इबादत को अपने ऊपर लाज़िम जानते हैं (फ़ा261) जो हर हाल में अल्लाह की हम्द करते हैं (फ़ा261) यानी नमाज़ों के पाबन्द और उनको ख़ूबी से अदा करने वाले (फ़ा263) और उसके अहकाम बजा लाने वाले यह लोग जन्नती हैं (फ़ा264) कि वह अल्लाह का अहद वफ़ा करेंगे तो अल्लाह तआ़ला उन्हें जन्नत में दाख़िल फ़रमाएगा (फ़ा265) **शाने नुज़ूलः** इस आयत की शान नुज़ूल में मुफ़स्सिरीन के चन्द क़ौल हैं (1) नबीए करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने अपने चचा अबू तालिब से फ़रमाया था कि मैं तुम्हारे लिए इस्तिग़फ़ार करूंगा जब तक कि मुझे मुमानअ़त न की जाये तो अल्लाह तआ़ला ने यह आयत नाज़िल फ़रमा कर मुमानअ़त फ़रमा दी। (2) सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि मैं ने अपने रब से अपनी वालिदा की ज़ियारते क़ब्र की इजाज़त चाही उसने मुझे इजाज़त दी फिर मैंने उनके लिए इस्तिग़फ़ार की इजाज़त चाही तो मुझे इजाज़त न दी और मुझ पर यह आयत नाज़िल हुई *मा का-न लिन्नबिय्यि* अक्वल यह वजह शाने नुज़ूल की सही नहीं है क्योंकि यह हदीस हाकिम ने रिवायत की और इसको सही बताया और ज़हबी ने हाकिम पर एतेमाद करके मीज़ान में इसकी तस्हीह की लेकिन मुख़्तसरुल मुस्तदरिक में ज़हबी ने इस हदीस की तज़ईफ़ की और कहा कि अय्यूब बिन हानी को इब्ने मुईन ने ज़ईफ़ बताया है इलावा बरीं यह हदीस बुख़ारी की हदीस के मुख़ालिफ़ भी है जिसमें इस आयत के नुज़ूल का सबब आप का वालिदा के लिए इस्तिग़फ़ार करना नहीं बताया गया बल्कि बुख़ारी की हदीस से यही साबित है कि अबू तालिब के लिए इस्तिग़फ़ार करने के बाब में यह हदीस वारिद हुई इसके अलावा और हदीसें जो इस मज़मून की हैं जिनको तिबरानी और इब्ने सअ़्द और इब्ने शाहीन वग़ैरह ने रिवायत किया है वह सब ज़ईफ़ हैं इब्ने सअ़्द तबक़ात में हदीस की तख़रीज के बाद इसको ग़लत बताया और सनदुल मुहद्दसीन इमाम जलालुद्दीन सुयूती ने अपने रिसाला अत्ताज़ीम वलमिन्नतः में इस मज़मून की तमाम अहादीस को मअ़लूल बताया लिहाज़ा यह वजह शाने नुज़ूल में सही नहीं और यह साबित है इस पर बहुत दलाइल क़ाइम हैं कि सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की वालिदा माजिदा मुवह्हिदा और दीने इब्राहीमी पर थीं (3) बाज़ असहाब ने सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से अपने आबा के लिए इस्तिग़फ़ार करने की दरख़्वास्त की थी इस पर यह आयत नाज़िल हुई (फ़ा266) शिर्क पर मरे (फ़ा267) यानी आज़र (फ़ा268) इससे या तो वह वादा मुराद है जो हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम ने आज़र से किया था कि मैं अपने रब से तेरी मग़फ़िरत की दुआ़ करूंगा या वह वादा मुराद है जो आज़र ने हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम से इस्लाम लाने का किया था **शाने नुज़ूलः**

हज़रत अली मुर्तज़ा रज़ियल्लाहु अ़न्हु से मरवी है कि जब यह आयत नाज़िल हुई *स-अस्तग़्फ़िरु ल-क रब्बी* तो मैंने सुना कि एक शख़्स अपने वालिदैन के लिए दुआए मग़फ़िरत कर रहा है बावजूदेकि वह दोनों मुशरिक थे तो मैंने सुना कि एक शख़्स अपने वालिदैन के लिए दुआए मग़फ़िरत कर रहा है बावजूदेकि वह दोनों मुशरिक थे तो मैंने कहा कि तू मुशरिकों के लिए दुआए मग़फ़िरत करता है, उसने कहा क्या इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम ने आज़र के लिए दुआ न की थी वह भी तो मुशरिक था यह वाक़िआ़ मैंने सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से अख़्ज़ किया इस पर यह आयत नाज़िल हुई और बताया गया कि हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलातु वस्सलाम का इस्तिग़फ़ार ब उम्मीदे इस्लाम था जिसका आज़र आपसे वादा कर चुका था और आप आज़र से इस्तिग़फ़ार का वादा कर चुके थे जब वह उम्मीद मुन्क़तअ़ हो गई तो आपने उससे अपना इलाक़ा क़तअ़ कर दिया।

(बक़िया सफ़हा 338 का) हाल था कि एक एक खजूर पर कई कई आदमी बसर करते थे इस तरह कि हर एक ने थोड़ी थोड़ी चूस कर एक घूंट पानी पी लिया पानी की भी निहायत क़िल्लत थी गर्मी शिद्दत की थी प्यास का ग़लबा और पानी नापैद इस हाल में सहाबा अपने सिदक़ व यक़ीन और ईमान व इख़्लास के साथ हु.जूर की जां निसारी में साबित क़दम रहे हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ ने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह! अल्लाह तआ़ला से दुआ फ़रमाईये फ़रमाया क्या तुम्हें यह ख़्वाहिश है अर्ज़ किया जी हां तो हुजूर ने दस्ते मुबारक उठा कर दुआ फ़रमाई और अभी दस्ते मुबारक उठे हुए थे कि अल्लाह तआ़ला ने अब्र भेजा बारिश हुई लश्कर सैराब हुआ लश्कर वालों ने अपने बर्तन भर लिये उसके बाद जब आगे चले तो ज़मीन ख़ुश्क थी अब्र ने लश्कर के बाहर बारिश ही नहीं की वह ख़ास उसी लश्कर को सैराब करने के लिए भेजा गया था (फ़274) और वह इस शिद्दत व सख़्ती में रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से जुदा होना गवारा करें। (फ़275) और वह साबिर व साबित रहे और उनका इख़्लास महफ़ूज़ रहा और जो ख़तरा दिल में गुज़रा था उस पर नादिम हुए। (फ़276) तौबा से जिन का ज़िक्र आयत *व आ-ख़रू-न मुरजौ-न लि-अम्रिल्लाह* में है और यह तीन साहब कअ़्ब बिन मालिक और हलाल बिन उमय्या और मरारत बिन रबीअ़् हैं यह सब अंसारी थे रसूले करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने तबूक से वापस होकर उनसे जिहाद में हाज़िर न होने की वजह दरियाफ़्त फ़रमाई और फ़रमाया ठहरो जब तक अल्लाह तआ़ला तुम्हारे लिए कोई फ़ैसला फ़रमाए और मुसलमानों को उन लोगों से मिलने जुलने कलाम करने से मुमानअ़त फ़रमा दी हत्ता कि उनके रिश्तेदारों और दोस्तों ने उनसे कलाम तर्क कर दिया यहां तक कि ऐसा मालूम होता था कि उनको कोई पहचानता ही नहीं और उनकी किसी से शनासाई ही नहीं इस हाल में उन्हें पचास रोज़ गुज़रे (फ़277) और उन्हें कोई ऐसी जगह न मिल सकी जहां एक लम्हा के लिए उन्हें क़रार होता हर वक़्त परेशानी और रन्ज व ग़म बेचैनी व इज़्तेराब में मुब्तला थे। (फ़278) शिद्दते रंज व ग़म से न कोई अनीस है जिससे बात करें न कोई ग़मख़्वार जिसे हाले दिल सुनायें वहशत व तन्हाई है और शब व रोज़ की गिरया व ज़ारी (फ़279) अल्लाह तआ़ला ने उन पर रहम फ़रमाया और (फ़280) मआ़सी तर्क करो (फ़281) जो सादिक़ुल ईमान हैं मुख़लिस हैं रसूले करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की इख़्लास के साथ तस्दीक़ करते हैं सईद बिन जुबैर का क़ौल है कि सादिक़ीन से हज़रत अबू बकर व उमर मुराद हैं रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा इब्ने जुरैर कहते हैं कि मुहाजरीन हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा ने फ़रमाया कि वह लोग जिनकी नीयतें साबित रहीं और क़ल्ब व आमाल मुस्तक़ीम और वह इख़्लास के साथ ग़ज़वए तबूक में हाज़िर हुए **मसलाः** इस आयत से साबित हुआ कि इज्माअ़् हुज्जत है क्योंकि सादिक़ीन के साथ रहने का हुक्म फ़रमाया इससे उनके क़ौल का क़बूल करना लाज़िम आता है (फ़282) यहां अहले मदीना से मदीना तय्येबा में सुकूनत रखने वाले मुराद हैं ख़्वाह वह मुहाजरीन हों या अंसार (फ़283) और जिहाद में हाज़िर न हों।

(बक़िया सफ़हा 339 का) ज़कात वग़ैरह की तालीम के लिए उन्हें उनकी क़ौम पर मामूर फ़रमाते जब वह लोग अपनी क़ौम पर पहुंचते तो एलान कर देते कि जो इस्लाम लाये वह हम में से है और लोगों को ख़ुदा का ख़ौफ़ दिलाते और दीन की मुख़ालफ़त से डराते यहां तक कि लोग अपने वालिदैन को छोड़ देते और रसूले करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम उन्हें दीन के तमाम ज़रूरी उलूम तालीम फ़रमा देते (ख़ाज़िन) यह रसूले करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम का मोअ़्जेज़ए अ़ज़ीमा है कि बिल्कुल बे पढ़े लोगों को बहुत थोड़ी देर में दीन के अहकाम का आ़लिम और क़ौम का हादी बना देते थे इस आयत से चन्द मसायल मालूम हुए। **मसलाः** इल्मे दीन हासिल करना फ़र्ज़ है जो चीज़ें बन्दे पर फ़र्ज़ व वाजिब हैं और जो उसके लिए ममनूअ़् व हराम हैं उसका सीखना फ़र्ज़े ऐन है और इससे ज़ायद इल्म हासिल करना फ़र्ज़े किफ़ाया, हदीस शरीफ़ में है इल्म सीखना हर मुसलमान पर फ़र्ज़ है इमाम शाफ़ेई रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने फ़रमाया कि इल्म सीखना नफ़्ल नमाज़ से अफ़ज़ल है। **मसलाः** तलबे इल्म के लिए सफ़र का हुक्म हदीस शरीफ़ में है जो शख़्स तलबे इल्म के लिए राह चले अल्लाह उसके लिए जन्नत की राह आसान करता है (तिर्मिज़ी) **मसलाः** फ़िक़्ह अफ़ज़ल तरीन उलूम है हदीस शरीफ़ में सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया अल्लाह तआ़ला जिसके लिए बेहतरी चाहता है उसको दीन में फ़क़ीह बनाता है। मैं तक़सीम करने वाला हूं और अल्लाह तआ़ला देने वाला (बुख़ारी व मुस्लिम) हदीस में है एक फ़क़ीह शैतान पर हज़ार आबिदों से ज़्यादा सख़्त है (तिर्मिज़ी) फ़िक़्ह अहकामे दीन के इल्म को कहते हैं फ़िक़्ह मुस्तलह इसका सही मिस्दाक़ है (फ़294) अ़ज़ाबे इलाही से अहकामे दीन का इत्तेबाअ़् करके (फ़295) क़िताल तमाम काफ़िरों से वाजिब है क़रीब के हों या दूर के लेकिन क़रीब वाले मुक़द्दम हैं फिर जो उनसे मुत्तसिल हों ऐसे ही दर्जा बदर्जा (फ़296) उन्हें ग़लबा देता है और उनकी नुसरत फ़रमाता है (फ़297) यानी मुनाफ़िक़ीन आपस में बतरीक़े इस्तेहज़ा ऐसी बातें कहते हैं उनके जवाब में इरशाद होता है।

(बक़िया सफ़हा 342 का) अल्लाह तआ़ला की तस्बीह तहमीद तक़दीस में मशग़ूल रहेंगे और उसके ज़िक्र से उन्हें फ़रहत व सुरूर और इन्तेहा दर्जा की लज़्ज़त हासिल होगी सुबहानल्लाह (फ़18) यानी अहले जन्नत आपस में एक दूसरे की तहिय्यत व तकरीम सलाम से करेंगे या मलायका उन्हें बतौरे तहिय्यत सलाम अ़र्ज़ करेंगे या मलायका रब्बे अज़्ज़ व जल्ल की तरफ़ से

उनके पास सलाम लायेंगे। (फ़ा19) उनके कलाम की इब्तेदा अल्लाह की ताज़ीम व तन्ज़ीया से होगी और कलाम का इख़्तेताम उसकी हम्दो सना पर होगा। (फ़ा20) यानी अगर अल्लाह तआ़ला लोगों की बद दुआयें जैसे कि वह ग़ज़ब के वक़्त अपने लिए और अपने अहल औलाद व माल के लिए करते हैं और कहते हैं हम हलाक हो जायें ख़ुदा हमें ग़ारत करे, बरबाद करे और ऐसे कलिमे ही अपनी औलाद व अक़ारिब के लिए कह गुज़रते हैं जिसे हिन्दी में कोसना कहते हैं अगर वह दुआ ऐसी जल्दी क़बूल कर ली जाती जैसी जल्दी वह दुआए ख़ैर के क़बूल होने में चाहते हैं तो उन लोगों का ख़ात्मा हो चुका होता और वह कब के हलाक हो गए होते लेकिन अल्लाह तबारक व तआ़ला अपने करम से दुआए ख़ैर क़बूल फ़रमाने में जल्दी करता है दुआए बद के क़बूल में नहीं यह उसकी रहमत है। **शाने नुज़ूलः** नज़र बिन हारिस ने कहा था या रब यह दीने इस्लाम अगर तेरे नज़दीक हक़ है तो हमारे ऊपर आसमान से पत्थर बरसा इस पर यह आयते करीमा नाज़िल हुई और बताया गया कि अगर अल्लाह तआ़ला काफ़िरों के लिए अ़ज़ाब में जल्दी फ़रमाता जैसा कि उनके लिए माल व औलाद वग़ैरह दुनिया की भलाई देने में जल्दी फ़रमाई तो वह सब हलाक हो चुके होते (फ़ा21) और हम उन्हें मोहलत देते हैं और उनके अ़ज़ाब में जल्दी नहीं फ़रमाते (फ़ा22) यहां आदमी से काफ़िर मुराद है।

(बक़िया सफ़हा 343 का) तौहीद और बुत परस्ती की बुराई और बुत परस्तों की सज़ा का बयान है (फ़ा32) और आख़िरत पर ईमान नहीं रखते (फ़ा33) जिस में बुतों की बुराई न हो (फ़ा34) **शाने नुज़ूलः** कुफ़्फ़ार की एक जमाअ़त ने नबीए करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर होकर कहा कि अगर आप चाहते हैं कि हम पर आप ईमान ले आयें तो आप इस क़ुरआन के सिवा दूसरा क़ुरआन लाइये जिस में लात व उज़्ज़ा मनात वग़ैरह बुतों की बुराई और उनकी इबादत छोड़ने का हुक्म न हो और अगर अल्लाह ऐसा क़ुरआन नाज़िल न करे तो आप अपनी तरफ़ से बना लीजिये या इसी क़ुरआन को बदल कर हमारी मर्ज़ी के मुताबिक़ कर दीजिये तो हम ईमान ले आयेंगे उनका यह कलाम या तो बतरीक़े तमस्ख़ुर व इस्तेहज़ा था या उन्होंने तजर्बा व इम्तेहान के लिए ऐसा कहा था कि अगर यह दूसरा क़ुरआन बना लायें या उसको बदल दें तो साबित हो जाएगा कि क़ुरआन कलामे रब्बानी नहीं है अल्लाह तआ़ला ने अपने हबीब सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को हुक्म दिया कि इसका यह जवाब दें जो आयत में मज़कूर होता है (फ़ा35) मैं इसमें कोई तग़य्युर तबद्दुल कमी बेशी नहीं कर सकता यह मेरा कलाम नहीं कलामे इलाही है (फ़ा36) या उस की किताब के अहकाम को बदलूं (फ़ा37) और दूसरा क़ुरआन बनाना इन्सान की मुक़द्दरत ही से बाहर है और ख़ल्क़ का इससे आ़जिज़ होना ख़ूब ज़ाहिर हो चुका। (फ़ा38) यानी उसकी तिलावत महज़ अल्लाह की मर्ज़ी से है (फ़ा39) और चालीस साल तुम में रहा हूं उस ज़माना मैं तुम्हारे पास कुछ नहीं लाया और मैंने तुम्हें कुछ नहीं सुनाया तुमने मेरे अहवाल का ख़ूब मुशाहिदा किया है मैने किसी से एक हरफ़ नहीं पढ़ा किसी किताब का मुताला न किया इसके बाद यह किताबे अज़ीम लाया जिसके हुज़ूर हर एक कलाम फ़सीह पस्त और बे हक़ीक़त हो गया इस किताब में नफ़ीस उलूम हैं उसूल व फ़ुरुअ़ का बयान है अहकाम व आदाब में मकारिम अख़्लाक़ की तालीम है ग़ैबी ख़बरें हैं उसकी फ़साहत व बलाग़त ने मुल्क भर के फ़ुसहा व बुलग़ा को आ़जिज़ कर दिया है हर साहबे अक़्ले सलीम के लिए यह बात अज़्हर मिनश्शम्स हो गई है कि यह बग़ैर वहीए इलाही के मुमकिन ही नहीं (फ़ा40) कि इतना समझ सको कि यह क़ुरआन अल्लाह की रतफ़ से है मख़्लूक़ की क़ुदरत में नहीं कि इसकी मिस्ल बना सके (फ़ा41) उसके लिए शरीक बताये (फ़ा42) बुत।

(बक़िया सफ़हा 344 का) मीआ़द मुअ़य्यन न कर दी गई होती या जज़ाए आमाल क़ियामत तक मुअख़्ख़र न फ़रमाई गई होती। (फ़ा47) नुज़ूले अ़ज़ाब से (फ़ा48) अहले बातिल का तरीक़ा है कि जब उनके ख़िलाफ़ बुरहान क़वी क़ाइम होती है और वह जवाब से आ़जिज़ हो जाते हैं तो उस बुरहान का ज़िक्र इस तरह छोड़ देते हैं जैसे कि वह पेश ही नहीं हुई और यह कहा करते हैं कि दलील लाओ दलील लाओ ताकि सुनने वाले इस मुग़ालता में पड़ जायें कि उनके मुक़ाबिल अब तक कोई दलील ही नहीं क़ायम की गई है इस तरह कुफ़्फ़ार ने हुज़ूर के मोअ़्जेज़ात और बिलख़ुसूस क़ुरआने करीम मोअ़्जेज़ा अज़ीमा है उसकी तरफ़ से आंखें बन्द करके यह कहना शुरू किया कि कोई निशानी क्यों नहीं उतरी गोया कि मोअ़्जेज़ात उन्होंने देखे ही नहीं और क़ुरआन पाक को वह निशानी शुमार ही नहीं करते अल्लाह तआ़ला ने अपने रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से फ़रमाया कि आप फ़रमा दीजिये कि ग़ैब तो अल्लाह के लिए है अब रास्ता देखो मैं भी तुम्हारे साथ राह देख रहा हूं तक़रीर का जवाब यह है कि दलालते क़ाहिरा इस पर क़ायम है कि सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम पर .क़ुरआन पाक का ज़ाहिर होना बहुत ही अज़ीमुश्शान मोअ़्जेज़ा है क्योंकि हुज़ूर उनमें पैदा हुए उनके दर्मियान हु.ज़ूर बढ़े तमाम ज़माने हुज़ूर के उनकी आंखों के सामने गुज़रे वह ख़ूब जानते हैं कि आपने न किसी किताब का मुताला किया न किसी उस्ताद की शागिर्दी की यकबारगी क़ुरआने करीम आप पर ज़ाहिर हुआ और ऐसी बे मिसाल आला तरीन किताब का ऐसी शान के साथ नुज़ूल बग़ैर वही के मुमकिन ही नहीं यह .क़ुरआने करीम के मोअ़्जेज़ए क़ाहरा होने की बुरहान है और जब ऐसी क़वी बुरहान क़ायम है तो इस्बाते नबुव्वत के लिए किसी दूसरी निशानी का तलब करना क़तअ़न ग़ैर ज़रूरी है ऐसी हालत में उस निशानी का नाज़िल करना न करना अल्लाह तआ़ला की मशीयत पर है चाहे करे चाहे न करे तो यह अमर ग़ैब हुआ और इसके लिए इन्तेज़ार लाज़िम आया कि अल्लाह क्या करता है लेकिन वह यह ग़ैर ज़रूरी निशानी जो कुफ़्फ़ार ने तलब की है नाज़िल फ़रमाये या न फ़रमाये नबुव्वत साबित हो चुकी और रिसालत का सुबूत क़ाहिरा मोअ़्जेज़ात से कमाल को पहुंचा चुका (फ़ा49) अहले मक्का पर अल्लाह तआ़ला ने क़हत मुसल्लत किया जिसकी मुसीबत में वह सात बरस गिरिफ़्तार रहे यहां तक कि क़रीब हलाकत के पहुंचे फिर उसने रहम फ़रमाया बारिश हुई ज़मीनें सरसब्ज़ हुईं तो अगरचे उस तकलीफ़ व राहत दोनों में क़ुदरत की निशानियां थीं और तकलीफ़ के

बाद राहत बड़ी अज़ीम निअ़्मत थी उस पर शुक्र लाज़िम था मगर बजाए इसके वह पन्द पज़ीर न हुए और फ़साद व कुफ़्र की तरफ़ पलटे (फ़ा50) और उसका अ़ज़ाब देर नहीं करता (फ़ा51) और तुम्हारी खुफ़िया तदबीरें कातिबे आमाल फ़रिश्तों पर भी मख़्फ़ी नहीं हैं तो अल्लाह अ़लीम व ख़बीर से कैसे छुप सकती हैं। (फ़ा52) और तुम्हें क़तअ़े मुसाफ़त की क़ुदरत देता है ख़ुश्की में तुम पयादा और सवार मन्ज़िलें तय करते हो और दरियाओं में कश्तियों और जहाज़ों से सफ़र करते हो वह तुम्हें ख़ुश्की और तरी दोनों में असबाबे सैर अ़ता फ़रमाता है। (फ़ा53) यानी कश्तियां (फ़ा54) कि हवा मुवाफ़िक़ है अचानक।

(बक़िया सफ़्हा 345 का) जन्नत है यह अल्लाह का कमाले रहमत व करम है कि अपने बन्दों को जन्नत की दावत दी (फ़ा65) सीधी राह दीने इस्लाम है बुख़ारी की हदीस में है नबीए करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की ख़िदमत में फ़रिश्ते हाज़िर हुए आप ख़्वाब में थे उनमें से बाज़ ने कहा कि आप ख़्वाब में हैं और बाज़ों ने कहा आंखें ख़्वाब में हैं दिल बेदार है बाज़ कहने लगे कि उनकी कोई मिसाल बयान करो तो उन्होंने कहा जिस तरह किसी शख़्स ने एक मकान बनाया और उसमें तरह तरह की नेअ़्मतें मुहैया कीं और एक बुलाने वाले को भेजा कि लोगों को बुलाये जिसने उस बुलाने वाले की इताअ़त की उस मकान में दाख़िल हुआ और उन निअ़्मतों को खाया पिया और जिसने बुलाने वाले की इताअ़त न की वह न मकान में दाख़िल हो सका न कुछ खा सका फिर वह कहने लगे कि इस मिसाल की ततबीक़ करो कि समझ में आये ततबीक़ यह है कि मकान जन्नत है दाई मुहम्मद हैं (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) जिसने उनकी इताअ़त की उसने अल्लाह की इताअ़त की जिसने उनकी नाफ़रमानी की उसने अल्लाह की नाफ़रमानी की। (फ़ा66) भलाई वालों से अल्लाह के फ़रमांबरदार बन्दे मोमिनीन मुराद हैं और यह जो फ़रमाया कि उन के लिए भलाई है उस भलाई से जन्नत मुराद है और ज़ियारत उस पर दीदारे इलाही है मुस्लिम शरीफ़ की हदीस में है कि जन्नतियों के जन्नत में दाख़िल होने के बाद अल्लाह तआ़ला फ़रमाएगा क्या तुम चाहते हो कि तुम पर और ज़्यादा इनायत करूं वह अर्ज़ करेंगे या रब क्या तूने हमारे चेहरे सफ़ेद नहीं किये क्या तूने हमें जन्नत मं दाख़िल नहीं फ़रमाया क्या तूने हमें दोज़ख़ से नजात नहीं दी हुज़ूर ने फ़रमाया फिर पर्दा उठा दिया जाएगा तो दीदारे इलाही उन्हें हर नेअ़्मत से ज़्यादा प्यारा होगा सिहाह की बहुत हदीसें यह साबित करती हैं कि ज़ियादत से आयत में दीदारे इलाही मुराद है (फ़ा67) कि यह बात जहन्नम वालों के लिए है (फ़ा68) यानी कुफ़्र व मआ़सी में मुबतला हुए।

(बक़िया सफ़्हा 346 का) को मोमिन से आ़लिम को जाहिल से और जाहिल को आ़लिम से। (फ़ा80) और उसकी क़ुदरते कामिला का एतेराफ़ करेंगे और इसके सिवा कुछ चारा न होगा (फ़ा81) उसके अ़ज़ाब से और क्यों बुतों को पूजते और उनको मअ़्बूद बनाते हो बावजूदेकि वह कुछ क़ुदरत नहीं रखते (फ़ा82) जिसकी ऐसी क़ुदरते कामिला है (फ़ा83) यानी जब ऐसे बराहीन वाज़ेहा और दलायल क़तअ़ईया से साबित हो गया कि मुस्तहिक़े इबादत सिर्फ़ अल्लाह है तो मा सिवा उसके सब बातिल व ज़लाल है और जब तुम ने उसकी क़ुदरत को पहचान लिया और उसकी कारसाज़ी का एतेराफ़ कर लिया तो।

(बक़िया सफ़्हा 347 का) हैं कि पहले लोग भी बुत परस्ती करते थे उन्होंने कुछ तो समझा होगा (फ़ा92) कुफ़्फ़ारे मक्का ने यह वहम किया था कि क़ुरआने करीम सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने खुद बना लिया है इस आयत में उनका यह वहम दफ़ा फ़रमाया गया कि क़ुरआने करीम ऐसी किताब ही नहीं जिसकी निस्बत तरद्दुद हो सके इसकी मिसाल बनाने से सारी मख़्लूक़ आ़जिज़ है तो यक़ीनन वह अल्लाह की नाज़िल फ़रमाई हुई किताब है। (फ़ा93) तौरेत व इन्जील वग़ैरह की (फ़ा94) कुफ़्फ़ार सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की निस्बत (फ़ा95) कि अगर तुम्हारा यह ख़्याल है तो तुम भी अरब हो फ़साहत व बलाग़त के दावेदार हो दुनिया में कोई इन्सान ऐसा नहीं है जिसके कलाम के मुक़ाबिल कलाम बनाने को तुम नामुमकिन समझते हो अगर तुम्हारे गुमान में यह इन्सानी कलाम है (फ़ा96) और उन से मददें लो और सब मिल कर क़ुरआन जैसी एक सूरत तो बनाओ। (फ़ा97) यानी क़ुरआन पाक को समझने और जानने के बग़ैर उन्होंने उसकी तकज़ीब की और यह कमाले जहल है कि किसी शय को जाने बग़ैर उसका इन्कार किया जाये क़ुरआने करीम का ऐसे उलूम पर मुश्तमिल होना जिनका मुद्दइयाने इल्मो ख़िरद इहाता न कर सकें इस किताब की अज़्मत व जलालत ज़ाहिर करता है तो ऐसी आला उलूम वाली किताब को मानना चाहिए था न कि इसका इंकार करना (फ़ा98) यानी उस अ़ज़ाब को जिसकी क़ुरआन पाक में वईदें हैं।

(बक़िया सफ़्हा 348 का) से नफ़ा न पाने में बहरों के मिस्ल हैं (फ़ा108) और वह न हवास से काम लें न अक़्ल से (फ़ा109) और दलाइले सिद्क़ व एअ़लामे नबुव्वत को देखता हे लेकिन तस्दीक़ नहीं करता और उस देखने से नतीजा नहीं निकालता फ़ायदा नहीं उठाता दिल की बीनाई से महरूम और बातिन का अन्धा है (फ़ा110) बल्कि उन्हें हिदायत और राह पाने के तमाम सामान अता फ़रमाता है और रौशन दलायल क़ायम फ़रमाता है (फ़ा111) कि इन दलायल में ग़ौर नहीं करते और हक़ वाज़ेह हो जाने के बावजूद खुद गुमराही में मुब्तला होते हैं (फ़ा112) क़ब्रों से मौक़िफ़ हिसाब में हाज़िर करने के लिए तो उस रोज़ की हैबत व वहशत से यह हाल होगा कि वह दुनिया में रहने की मुद्दत को बहुत थोड़ा समझेंगे और यह ख़्याल करेंगे कि (फ़ा113) और इसकी वजह यह है कि चूंकि कुफ़्फ़ार ने तलबे दुनिया में उम्रें ज़ाया कर दीं और अल्लाह की ताअ़त जो आज कारआमद होती बजा न लाते तो उनकी ज़िन्दगानी का वक़्त उनके काम न आया इस लिए वह उसे बहुत ही कम समझेंगे। (फ़ा114) क़ब्रों से निकलते वक़्त तो एक दूसरे को पहचानेंगे जैसा दुनिया में पहचानते थे फिर रोज़े क़ियामत के अहवाल और दहशतनाक मनाज़िर देख कर यह मअ़्रेफ़त बाक़ी न रहेगी और एक क़ौल यह है कि रोज़े क़ियामत दम बदम हाल बदलेंगे कभी ऐसा होगा कि एक दूसरे को पहचानेंगे कभी ऐसा कि न पहचानेंगे और जब पहचानेंगे तो कहेंगे (फ़ा115) जो उन्हें घाटे से बचाती (फ़ा116) अ़ज़ाब (फ़ा117) दुनिया ही में आप के ज़मानए हयात में तो वह मुलाहज़ा कीजिये (फ़ा118) तो आख़िरत में आपको उनका अ़ज़ाब दिखायेंगे

इस आयत से साबित हुआ कि अल्लाह तआला अपने रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को काफ़िरों के बहुत से अ़ज़ाब और उनकी ज़िल्लत व रुसवाईयां आपकी हयात दुनिया ही में आपको दिखाएगा चुनांचे बदर वग़ैरह में दिखाई गईं और जो अ़ज़ाब काफ़िरों के लिए बसबबे कुफ़्र व तकज़ीब के आख़िरत में मुक़र्रर फ़रमाया है वह आख़िरत में दिखायेगा (फ़ा119) मुत्तलअ़् है अ़ज़ाब देने वाला है (फ़ा120) जो उन्हें दीने हक़ की दावत देता और ताअ़त व ईमान का हुक्म करता (फ़ा121) और अहकामे इलाही की तबलीग़ करता तो कुछ लोग ईमान लाते और कुछ तकज़ीब करते और मुन्किर हो जाते तो

(बक़िया सफ़हा 349 का) जाएगा (फ़ा131) बतरीक़े तकज़ीब व इस्तेहज़ा (फ़ा132) यानी दुनिया में जो अ़मल करते थे और कुफ़्र व तकज़ीबे अम्बिया में मसरूफ़ रहते थे उसी का बदला (फ़ा133) बअ्स और अ़ज़ाब जिसके नाज़िल होने की आपने हमें ख़बर दी (फ़ा134) यानी वह अ़ज़ाब तुम्हें ज़रूर पहुंचेगा (फ़ा135) माल व मताअ. ख़ज़ाना दफ़ीना (फ़ा136) और रोज़े क़ियामत उसको अपनी रिहाई के लिए फ़िदया कर डालती मगर यह फ़िदया क़बूल नहीं और तमाम दुनिया की दौलत ख़र्च करके भी अब रिहाई मुमकिन नहीं जब क़ियामत में यह मन्ज़र पेश आया और कुफ़्फ़ार की उम्मीदें टूटीं (फ़ा137) तो काफ़िर किसी चीज़ का मालिक ही नहीं बल्कि वह खुद भी अल्लाह का ममलूक है उसका फ़िदया मुमकिन ही नहीं।

(बक़िया सफ़हा 350 का) जैसे महफ़िले मीलाद को फ़ातिहा को ग्यारहवीं को और दीगर तरीक़हाए ईसाले सवाब को बाज़ मीलाद शरीफ़ व फ़ातिहा व तोशा की शीरीनी व तबर्रुक को जो सब हलाल व तय्यब चीज़ें हैं नाजायज़ व ममनूअ़् बताते हैं इसी को क़ुरआन पाक ने खुदा पर इफ़्तेरा करना बताया है (फ़ा142) कि रसूल भेजता है किताबें नाज़िल फ़रमाता है और हलाल व हराम से बाख़बर फ़रमाता है (फ़ा143) ऐ हबीबे अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम (फ़ा144) ऐ मुसलमानो

(बक़िया सफ़हा 351 का) हैं जो ताअ़त से क़ुर्बे इलाही तलब करते हैं और अल्लाह तआला करामत से उनकी कारसाज़ी फ़रमाता है। या वह जिनकी हिदायत का बुरहान के साथ अल्लाह कफ़ील हो और वह उसका हक़्क़े बन्दगी अदा करने और उसकी ख़ल्क़ पर रहम करने के लिए वक़्फ़ हो गए यह मानी और इबारात अगरचे जुदागाना हैं लेकिन इनमें इख़्तिलाफ़ कुछ भी नहीं है क्योंकि हर एक इबारत में वली की एक एक सिफ़त बयान कर दी गई है जिसे क़ुर्बे इलाही हासिल होता है यह तमाम सिफ़ात उसमें होते हैं विलायत के दर्जे और मरातिब में हर एक बक़द्र अपने दर्जे के फ़ज़्ल व शरफ़ रखता है (फ़ा147) इस ख़ुशख़बरी से या तो वह मुराद है जो परहेज़गार ईमानदारों को क़ुरआने करीम में जा बजा दी गई है या बेहतरीन ख़्वाब मुराद है जो मोमिन देखता है या उसके लिए देखा जाता है जैसा कि कसीर अहादीस में वारिद हुआ है और इसका सबब यह है कि वली का क़ल्ब और उसकी रूह दोनों ज़िक्रे इलाही में मुस्तग़रक़ रहते हैं तो वक़्ते ख़्वाब उसके दिल में सिवाए ज़िक्र व मअ़्रेफ़ते इलाही के और कुछ नहीं होता इस लिए जब वली ख़्वाब देखता है तो उसकी ख़्वाब हक़ और अल्लाह तआला की तरफ़ से उसके हक़ में बशारत होती है बाज़ मुफ़स्सिरीन ने इस बशारत से दुनिया की नेक नामी भी मुराद ली है मुस्लिम शरीफ़ की हदीस में है कि सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से अर्ज़ किया गया उस शख़्स के लिए क्या इरशाद फ़रमाते हैं जो नेक अ़मल करता है और लोग उसकी तारीफ़ करते हैं फ़रमाया यह मोमिन के लिए बशारते आजला है उलमा फ़रमाते हैं कि यह बशारते आजला रज़ाए इलाही और अल्लाह की मुहब्बत फ़रमाने और ख़ल्क़ के दिल में मुहब्बत डाल देने की दलील है जैसा कि हदीस शरीफ़ में आया है कि उसको ज़मीन में मक़बूल कर दिया जाता है क़तादा ने कहा कि मलायका वक़्ते मौत अल्लाह तआला की तरफ़ से बशारत देते हैं अ़ता का क़ौल है कि दुनिया की बशारत तो वह है जो मलायका वक़्ते मौत सुनाते हैं और आख़िरत की बशारत वह है जो मोमिन को जान निकलने के बाद सुनाई जाती है कि उससे अल्लाह राज़ी है (फ़ा148) उसके वादे ख़िलाफ़ नहीं हो सकते जो उसने अपनी किताब में और अपने रसूलों की ज़बान से अपने औलिया और अपने फ़रमांबरदार बन्दों से फ़रमाये (फ़ा149) इसमें सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की तस्कीन फ़रमाई गई कि कुफ़्फ़ार नाबकार जो आपकी तकज़ीब करते हैं और आपके ख़िलाफ़ बुरे बुरे मश्वरे करते हैं आप उसका कुछ ग़म न फ़रमायें (फ़ा150) वह जिसे चाहे इज़्ज़त दे और जिसे चाहे ज़लील करे ऐ सय्यदे अम्बिया वह आपका नासिर व मददगार है उसने आपको और आपके सदक़ा में आपके फ़रमांबरदारों को इज़्ज़त दी जैसा कि दूसरी आयत में फ़रमाया कि अल्लाह के लिए इज़्ज़त है और उसके रसूल के लिए और ईमानदारों के लिए (फ़ा151) सब उसके ममलूक हैं उसके तहत क़ुदरत व इख़्तियार और ममलूक रब नहीं हो सकता इस लिए अल्लाह के सिवा हर एक की परस्तिश बातिल है यह तौहीद की एक उमदा बुरहान है (फ़ा152) यानी किस दलील का इत्तेबाअ़् करते हैं मुराद यह है कि उनके पास कोई दलील नहीं (फ़ा153) और बे दलील महज़ गुमाने फ़ासिद से अपने बातिल मअ़्बूदों को खुदा का शरीक ठहराते हैं उसके बाद अल्लाह तआला अपनी क़ुदरत व निअ़मत का इज़्हार फ़रमाता है। (फ़ा154) और आराम करके दिन की थकान दूर करो (फ़ा155) रौशन ताकि तुम अपने हवायज व असबाबे मआ़श का सर अंजाम कर सको (फ़ा156) जो सुनें और समझें कि जिसने उन चीज़ों को पैदा किया वही मअ़बूद है उसका कोई शरीक नहीं उसके बाद मुशरिकीन का एक मक़ूला ज़िक्र फ़रमाता है (फ़ा157) कुफ़्फ़ार का यह कलिमा निहायत क़बीह और इन्तेहा दर्जा के जहल का है अल्लाह तआला उसका रद्द फ़रमाता है (फ़ा158) यहां मुशरिकीन के इस मक़ूला के तीन रद्द फ़रमाये पहला रद्द तो कलिमए सुबहानहू में है जिसमें बताया गया कि उसकी ज़ात वलद से मुनज़्ज़ा है कि वह वाहिदे हक़ीक़ी है दूसरा रद्द *हुवल्ग़नीयु* फ़रमाने में है कि वह तमाम ख़ल्क़ से बेनियाज़ है तो औलाद उसके लिए कैसे हो सकती है औलाद तो या कमज़ोर चाहता है जो उससे .क़ुव्वत हासिल करे या फ़क़ीर चाहता है जो उससे मदद ले या ज़लील चाहता है जो उसके ज़रीआ से इज़्ज़त हासिल करे ग़रज़ जो चाहता है वह हाजत रखता है तो जो ग़नी हो या ग़ैर मुहताज हो उसके लिए वलद किस तरह हो सकता

है नीज़ वलद वालिद का एक जुज़्व होता है तो वालिद होना मुरक्कब होने को मुस्तलज़िम और मुरक्कब होना मुमकिन होने को और हर मुमकिन ग़ैर का मोहताज है तो हादिस हुआ लिहाज़ा मुहाल हुआ कि ग़नी क़दीम के वलद हो तीसरा रद्द लहू मा फ़िस्समावाति वमाफ़िल अर्ज़ि में है कि तमाम ख़ल्क़ उसकी ममलूक है और ममलूक होना बेटा होने के साथ नहीं जमा होता लिहाज़ा उनमें से कोई उसकी औलाद नहीं हो सकता।

(बक़िया सफ़हा 353 का) अ़लैहिस्सलाम ने इतना बड़ा मोअ़्जेज़ा दिखाया फिर भी थोड़े लोगों ने ईमान क़बूल किया ऐसी हालतें अम्बिया को पेश आती रही हैं आप अपनी उम्मत के एराज़ से रन्जीदा न हों *मिन् क़ौमिही* में जो ज़मीर है वह या तो हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलातु वस्सलाम की तरफ़ राजेअ़् है इस सूरत में क़ौम की ज़ुर्रियत से बनी इसराईल मुराद होंगे जिनकी औलाद मिस्र में आपके साथ थी और एक क़ौल यह है कि इससे वह लोग मुराद हैं जो फ़िरऔ़न के क़त्ल से बच रहे थे क्योंकि जब बनी इसराईल के लड़के बहुक्मे फ़िरऔ़न क़त्ल किये जाते थे तो बनी इसराईल की बाज़ औरतें जो क़ौमे फ़िरऔ़न की औरतों के साथ कुछ रस्मो राह रखती थीं वह जब बच्चा जनतीं तो उसकी जान के अन्देशा से वह बच्चा फ़िरऔ़नी क़ौम की औरतों को दे डालतीं ऐसे बच्चे जो फ़िरऔ़नियों के घरों में पले थे उस रोज़ हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलातु वस्सलाम पर ईमान ले आये जिस दिन अल्लाह तआ़ला ने आपको जादूगरों पर ग़लबा दिया था और एक क़ौल यह है कि यह ज़मीर फ़िरऔ़न की तरफ़ राजेअ़् है और क़ौमे फ़िरऔ़न की ज़ुर्रियत मुराद है हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा से मरवी है कि वह क़ौमे फ़िरऔ़न के थोड़े लोग थे जो ईमान लाये। (फ़ा178) दीन से (फ़ा179) कि बन्दा होकर ख़ुदाई का मुद्दई हुआ।

(बक़िया सफ़हा 355 का) पर फेंक दी बनी इसराईल ने उसको देख कर पहचाना (फ़ा196) इज़्ज़त की जगह से या तो मुल्के मिस्र और फ़िरऔ़न व फ़िरऔ़नियों के अमलाक मुराद हैं या सरज़मीने शाम व क़ुद्स व उर्दुन जो निहायत सरसब्ज़ व शादाब और ज़रख़ेज़ बिलाद हैं (फ़ा197) बनी इसराईल जिनके साथ यह वाक़िआ़त हो चुके (फ़ा198) इल्म से मुराद यहां या तो तौरेत है जिसके माना में यहूद बाहम इख़्तिलाफ़ करते थे या सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की तशरीफ़ आवरी है कि उससे पहले तो यहूद आपके मुक़िर और आपकी नबुव्वत पर मुत्तफ़िक़ थे और तौरेत में जो आप के सिफ़ात मज़कूर थे उनको मानते थे लेकिन तशरीफ़ आवरी के बाद इख़्तिलाफ़ करने लगे कुछ ईमान ले आये और कुछ लोगों ने हसद व अ़दावत से कुफ़्र किया एक क़ौल यह है कि इल्म से मुराद क़ुरआन है (फ़ा199) इस तरह कि ऐ सय्यदे अम्बिया आप पर ईमान लाने वालों को जन्नत में दाख़िल फ़रमाएगा और आपके इंकार करने वालों को जहन्नम में अ़ज़ाब फ़रमाएगा (फ़ा200) बवास्ता अपने रसूल मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के (फ़ा201) यानी उलमाए अहले किताब मिस्ल हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन सलाम और उनके अस्हाब के ताकि वह तुझको सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की नबुव्वत का इत्मीनान दिलायें और आपकी नअ़्त व सिफ़त जो तौरेत में मज़कूर है वह सुना कर शक रफ़्अ़ करें फ़ाइदा }ाक इन्सान के नज़दीक किसी अम्र में दोनों तरफ़ों का बराबर होना है ख़्वाह वह इस तरह हो कि दोनों जानिब बराबर क़रीने पाये जायें ख़्वाह इस तरह कि किसी तरफ़ भी कोई क़रीना न हो मुहक़्क़िक़ीन के नज़दीक शक अक़सामे जहल से है और जहल व शक में आम व ख़ास मुतलक़ की निस्बत है कि हर एक शक जहल है और हर जहल शक नहीं (फ़ा202) जो बराहीन लाएहा व आयाते वाज़ेहा से इतना रौशन है कि उसमें शक की मजाल नहीं (ख़ाज़िन)। (फ़ा203) यानी वह क़ौल उन पर साबित हो चुका जो लौहे महफ़ूज़ में लिख दिया गया है और जिसकी मलायका ने ख़बर दी है कि यह लोग काफ़िर मरेंगे वह

(बक़िया सफ़हा 356 का) ईमान लाये और तौबा सादिक़ा की जो मज़ालिम उनसे हुए थे उनको दफ़ा किया पराए माल वापस किये हत्ता कि अगर एक पत्थर दूसरे का किसी की बुनियाद में लग गया था तो बुनियाद उखाड़ कर पत्थर निकाल दिया और वापस कर दिया और अल्लाह तआ़ला से इख़्लास के साथ मग़फ़िरत की दुआ़यें कीं परवरदिगारे आलम ने उनपर रहम किया दुआ़ क़बूल फ़रमाई अ़ज़ाब उठा दिया गया यहां यह सवाल पैदा होता है कि जब नुज़ूले अ़ज़ाब के बाद फ़िरऔ़न का ईमान और उसकी तौबा क़बूल न हुई तो क़ौमे युनूस की तौबा क़बूल फ़रमाने और अ़ज़ाब उठा देने में क्या हिकमत है उलमा ने इसके कई जवाब दिये हैं एक तो यह करमे ख़ास था क़ौमे हज़रत यूनुस के साथ दूसरा जवाब यह है कि फ़िरऔ़न अ़ज़ाब में मुब्तला होने के बाद ईमान लाया जब उम्मीदे ज़िन्दगानी बाक़ी ही न रही और क़ौमे यूनुस अ़लैहिस्सलाम से जब अ़ज़ाब क़रीब हुआ तो वह उसमें मुब्तला होने से पहले ईमान ले आये और अल्लाह क़ुलूब का जानने वाला है इख़्लास मन्दों के सिदक़ व इख़्लास का उसको इल्म है (फ़ा208) यानी ईमान लाना सआ़दते अज़ली पर मौक़ूफ़ है ईमान वही लायेंगे जिनके लिए तौफ़ीक़े इलाही मुसाइद हो उसमें सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की तसल्ली है कि आप चाहते हैं कि सब ईमान ले आयें और राहे रास्त इख़्तियार करें फिर जो ईमान से महरूम रह जाते हैं उनका आपको ग़म होता है इसका आपको ग़म न होना चाहिए क्योंकि अज़ल से जो शक़ी है वह ईमान न लाएगा (फ़ा209) और ईमान में ज़बरदस्ती नहीं हो सकती क्योंकि ईमान होता है तस्दीक़ व इक़रार से और जब्र व इकराह से तस्दीक़े क़लबी हासिल नहीं होती (फ़ा210) उसकी मशियत से (फ़ा211) दिल की आंखों से और ग़ौर करो कि (फ़ा212) जो अल्लाह तआ़ला की तौहीद पर दलालत करता है (फ़ा213) मिस्ल नूह व आ़द व समूद वग़ैरह (फ़ा214) तुम्हारी हलाकत और अ़ज़ाब के रबीअ़. बिन अनस ने कहा कि अ़ज़ाब का ख़ौफ़ दिलाने के बाद अगली आयत में यह बयान फ़रमाया कि जब अ़ज़ाब वाक़ेअ़ होता है तो अल्लाह तआ़ला रसूल को और उनके साथ ईमान लाने वालों को नजात अता फ़रमाता है।

(बक़िया सफ़हा 358 का) में आमाले फ़ाज़िला किये हों और उसके ताआ़त व हसनात ज़्यादा हों (फ़ा6)उसको जन्नत में बक़्द्रे आमाल दर्जात अता फ़रमाएगा बाज़ मुफ़स्सिरीन ने फ़रमाया आयत के माना यह हैं कि जिसने अल्लाह के लिए अ़मल किया अल्लाह तआ़ला आइन्दा के लिए उसे अ़मले नेक व ताअ़त की तौफ़ीक़ देता है (फ़ा7) यानी रोज़े क़ियामत (फ़ा8) आख़िरत में वहां नेकियों और बदियों की जज़ा व सज़ा मिलेगी (फ़ा9) दुनिया में रोज़ी देने पर भी मौत देने पर भी मौत के बाद ज़िन्दा करने और सवाब व अ़ज़ाब पर भी (फ़ा10) **शाने नुज़ूलः** इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा ने फ़रमाया यह आयत अख़नस बिन शरीक़ के हक़ में नाज़िल हुई यह बहुत शीरीं गुफ़्तार शख़्स था रसूले करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के सामने आता तो बहुत खुशमाद की बातें करता और दिल में बुग़्ज़ व अ़दावत छुपाये रखता इस पर यह आयत नाज़िल हुई माना यह हैं कि वह अपने सीनों में अ़दावत छुपाये रखते हैं जैसे कपड़े की तह में कोई चीज़ छुपाई जाती है एक क़ौल यह है कि बाज़े मुनाफ़िक़ीन की आ़दत थी कि जब रसूले करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम का सामना होता तो सीना और पीठ झुकाते और सर नीचा करते चेहरा छुपा लेते ताकि उन्हें रसूले करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम देख न पायें इस पर यह आयत नाज़िल हुई बुख़ारी ने इफ़राद में एक हदीस रिवायत की कि मुसलमान बोल व बराज़ व मुजामअ़त के वक़्त अपने बदन खोलने से शरमाते थे उनके हक़ में यह आयत नाज़िल हुई कि अल्लाह से बन्दे का कोई हाल छुपा नहीं है लिहाज़ा चाहिए कि वह शरीअ़त की इजाज़तों पर आ़मिल रहे।

وَمَا مِنْ دَآبَّةٍ فِي الْأَرْضِ إِلَّا عَلَى اللَّهِ رِزْقُهَا وَيَعْلَمُ مُسْتَقَرَّهَا وَمُسْتَوْدَعَهَا ۚ كُلٌّ فِي كِتَابٍ مُّبِينٍ ۝ وَهُوَ الَّذِي خَلَقَ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضَ فِي سِتَّةِ أَيَّامٍ وَكَانَ عَرْشُهُ عَلَى الْمَاءِ لِيَبْلُوَكُمْ أَيُّكُمْ أَحْسَنُ عَمَلًا ۗ وَلَئِن قُلْتَ إِنَّكُم مَّبْعُوثُونَ مِن بَعْدِ الْمَوْتِ لَيَقُولَنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا إِنْ هَٰذَا إِلَّا سِحْرٌ مُّبِينٌ ۝ وَلَئِنْ أَخَّرْنَا عَنْهُمُ الْعَذَابَ إِلَىٰ أُمَّةٍ مَّعْدُودَةٍ لَّيَقُولُنَّ مَا يَحْبِسُهُ ۗ أَلَا يَوْمَ يَأْتِيهِمْ لَيْسَ مَصْرُوفًا عَنْهُمْ وَحَاقَ بِهِم مَّا كَانُوا بِهِ يَسْتَهْزِئُونَ ۝ وَلَئِنْ أَذَقْنَا الْإِنسَانَ مِنَّا رَحْمَةً ثُمَّ نَزَعْنَاهَا مِنْهُ إِنَّهُ لَيَئُوسٌ كَفُورٌ ۝ وَلَئِنْ أَذَقْنَاهُ نَعْمَاءَ بَعْدَ ضَرَّاءَ مَسَّتْهُ لَيَقُولَنَّ ذَهَبَ السَّيِّئَاتُ عَنِّي ۚ إِنَّهُ لَفَرِحٌ فَخُورٌ ۝ إِلَّا الَّذِينَ صَبَرُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ أُولَٰئِكَ لَهُم مَّغْفِرَةٌ وَأَجْرٌ كَبِيرٌ ۝ فَلَعَلَّكَ تَارِكٌ بَعْضَ مَا يُوحَىٰ

व मा मिन् दाब्बतिन् फ़िल्अर्ज़ि इल्ला अ़–लल्लाहि रिज़्कुहा व यअ़्लमु मुस्तक़र्रहा व मुस्तौ–द अ़हा कुल्लुन् फ़ी किताबिम् मुबीन(6)व हुवल्लज़ी ख़–ल–क़स्समावाति वल्अर्–ज़ फ़ी सित्तति अय्यामिंव् व का–न अ़र्शुहू अ़–लल्माइ लि–यब्लु–वकुम् अय्युकुम् अह्सनु अ़–म–लन् व लइन् कुल्–त इन्नकुम् मब्अूसू–न मिम् बअ़्दिल् मौति ल–यक़ू लन्नल्लज़ी–न क–फ़रू इन् हाज़ा इल्ला सिह्रुम् मुबीन(7)व लइन् अख़्ख़र्ना अ़न्हुमुल् अ़ज़ा–ब इला उम्मतिम् मअ़्दू–दतिल् ल–यक़ूलुन्–न मा यह्बिसुहू अला यौ–म यअ्तीहिम् लै–स मस्रूफ़न् अ़न्हुम् व हा–क़ बिहिम् मा कानू बिही यस्तह्ज़िऊन(8)व लइन् अ–ज़क़्नल् इन्सा–न मिन्ना रह्– मतन् सुम्–म नज़अ़्नाहा मिन्हु इन्नहू ल–यऊसुन् कफ़ूर(9)व लइन् अजक़्नाहु नअ़्मा–अ बअ़्–द ज़र्रा–अ मस्सत्हु ल–यक़ू लन्–न ज–ह–बस्सय्यिआतु अ़न्नी इन्नहू ल–फ़रिहुन् फ़ख़ूर(10)इल्लल्लज़ी–न स–बरू व अ़मि–लुस्सालिहाति उलाइ–क लहुम् मग़्फ़ि–रतुंव् व अज्रुन् कबीर(11)फ़–ल–अ़ल्ल–क तारिकुम् बअ़्–ज़ मा यूहा

और ज़मीन पर चलने वाला कोई (फ़ा11) ऐसा नहीं जिसका रिज़्क़ अल्लाह के ज़िम्मए करम पर न हो (फ़ा12) और जानता है कि कहां ठहरेगा (फ़ा13) और कहां सुपुर्द होगा (फ़ा14) सब कुछ एक साफ़ बयान करने वाली किताब(6) (फ़ा15) में है। और वही है जिसने आसमानों और ज़मीन को छः दिन में बनाया और उसका अ़र्श पानी पर था (फ़ा16) कि तुम्हें आज़माए (फ़ा17) तुम में किसका काम अच्छा है और अगर तुम फ़रमाओ कि बेशक तुम मरने के बाद उठाए जाओगे तो काफ़िर ज़रूर कहेंगे कि यह (फ़ा18) तो नहीं मगर खुला जादू।(7) (फ़ा19) और अगर हम उनसे अ़ज़ाब (फ़ा20) कुछ गिनती की मुद्दत तक हटा दें तो ज़रूर कहेंगे किस चीज़ ने रोका है(फ़ा21)सुन लो जिस दिन उन पर आएगा उनसे फेरा न जायेगा और उन्हें घेर लेगा वही अ़ज़ाब जिसकी हंसी उड़ाते थे।(8)(रुकूअ़ 1) और अगर हम आदमी को अपनी किसी रहमत का मज़ा दें (फ़ा22) फिर उसे उससे छीन लें ज़रूर वह बड़ा ना–उम्मीद नाशुक्रा है।(9) (फ़ा23) और अगर हम उसे नेअ़मत का मज़ा दें उस मुसीबत के बाद जो उसे पहुंचती तो ज़रूर कहेगा कि बुराईयां मुझ से दूर हुईं बेशक वह खुश होने वाला बड़ाई मारने वाला है।(10) (फ़ा24) मगर जिन्होंने सब्र किया और अच्छे काम किये (फ़ा25) उनके लिए बख़्शिश और बड़ा सवाब है।(11) तो क्या जो 'वही' तुम्हारी तरफ़ होती है

(फ़ा11) जानदार हो (फ़ा12) यानी वह अपने फ़ज़्ल से हर जानदार के रिज़्क़ का कफ़ील है। (फ़ा13) यानी उसके जाए सुकूनत को जानता है। (फ़ा14) सुपुर्द होने की जगह से या मदफ़न मुराद है या मकान या मौत या क़ब्र। (फ़ा15) यानी लौहे महफ़ूज़ (फ़ा16) यानी अर्श के नीचे पानी के सिवा और कोई मख़्लूक़ न थी इससे यह भी मालूम हुआ कि अ़र्श और पानी आसमानों और ज़मीनों की पैदाईश से क़ब्ल पैदा फ़रमाए गए। (फ़ा17) यानी आसमान व ज़मीन और उनकी दर्मियानी कायनात को पैदा किया जिस में तुम्हारे मुनाफ़ा व मसालेह हैं ताकि तुम्हें आज़माईश में डाले और ज़ाहिर हो कि कौन शुक्रगुज़ार मुत्तक़ी फ़रमांबरदार है और (फ़ा18) यानी क़ुरआन शरीफ़ जिस में मरने के बाद उठाये जाने का बयान है यह (फ़ा19) यानी बातिल और धोखा (फ़ा20) जिस का वादा किया है। (फ़ा21) वह अ़ज़ाब क्यों नाज़िल नहीं होता क्या देर है कुफ़्फ़ार का यह जल्दी करना बराहे तकज़ीब व इस्तेहज़ा है। (फ़ा22) सेहत व अमन का या वुसअ़ते रिज़्क़ व दौलत का। (फ़ा23) कि दोबारा इस नेअ़मत के पाने से मायूस हो जाता है और अल्लाह के फ़ज़्ल से अपनी उम्मीद क़तअ़ कर लेता है और सब्र व रज़ा पर साबित नहीं रहता और गुज़श्ता नेअ़मत की नाशुक्री करता है। (फ़ा24) बजाए शुक्रगुज़ार होने और हक़ नेअ़मत अदा करने के। (फ़ा25) मुसीबत पर साबिर और नेअ़मत पर शाकिर रहे।

إِلَيْكَ وَضَآئِقٌۢ بِهٖ صَدْرُكَ أَنْ يَّقُوْلُوْا لَوْلَآ أُنْزِلَ عَلَيْهِ كَنْزٌ أَوْ جَآءَ مَعَهٗ مَلَكٌ ۚ إِنَّمَآ أَنْتَ نَذِيْرٌ ۚ وَاللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ وَّكِيْلٌ ﴿١٢﴾ أَمْ يَقُوْلُوْنَ افْتَرٰىهُ ۚ
قُلْ فَأْتُوْا بِعَشْرِ سُوَرٍ مِّثْلِهٖ مُفْتَرَيٰتٍ وَّادْعُوْا مَنِ اسْتَطَعْتُمْ مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ إِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿١٣﴾ فَإِلَّمْ يَسْتَجِيْبُوْا لَكُمْ فَاعْلَمُوْآ أَنَّمَآ أُنْزِلَ بِعِلْمِ
اللّٰهِ وَأَنْ لَّآ إِلٰهَ إِلَّا هُوَ ۚ فَهَلْ أَنْتُمْ مُّسْلِمُوْنَ ﴿١٤﴾ مَنْ كَانَ يُرِيْدُ الْحَيٰوةَ الدُّنْيَا وَزِيْنَتَهَا نُوَفِّ إِلَيْهِمْ أَعْمَالَهُمْ فِيْهَا وَهُمْ فِيْهَا لَا يُبْخَسُوْنَ ﴿١٥﴾
أُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ لَيْسَ لَهُمْ فِي الْأٰخِرَةِ إِلَّا النَّارُ ۖ وَحَبِطَ مَا صَنَعُوْا فِيْهَا وَبٰطِلٌ مَّا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿١٦﴾ أَفَمَنْ كَانَ عَلٰى بَيِّنَةٍ مِّنْ رَّبِّهٖ وَيَتْلُوْهُ
شَاهِدٌ مِّنْهُ وَمِنْ قَبْلِهٖ كِتٰبُ مُوْسٰٓى إِمَامًا وَّرَحْمَةً ۚ أُولٰٓئِكَ يُؤْمِنُوْنَ بِهٖ ۚ وَمَنْ يَّكْفُرْ بِهٖ مِنَ الْأَحْزَابِ فَالنَّارُ مَوْعِدُهٗ ۚ فَلَا تَكُ فِيْ مِرْيَةٍ مِّنْهُ ۚ إِنَّهُ

इलै–क व ज़ाइकुम् बिही सदरु–क अंय्यक़ूलू लौला उन्ज़ि–ल अ़लैहि कन्जुन् औ जा–अ म–अ़हू म–लकुन् इन्नमा अन्–त नज़ीरुन् वल्लाहु अ़ला कुल्लि शैइंव् वकील(12)अम् यक़ूलूनफ़्तराहु क़ुल् फ़अ्तू बि–अ़शरि सु–वरिम् मिस्लिही मुफ़्त–रयातिंव् वदअू मनिस्त–तअ़्तुम् मिन् दूनिल्लाहि इन् कुन्तुम् सादिक़ीन(13)इल्लम् यस्तजीबू लकुम् फ़अ़्लमू अन्नमा उन्ज़ि–ल बिअ़िल्मिल्लाहि व अल् ला इला–ह इल्ला हु–व फ़–हल् अन्तुम् मुस्लिमून(14)मन् का–न युरीदुल् ह़यातद्दुन्या व ज़ी–न–तहा नुवफ़्फ़ि इलैहिम् अअ़्मा–लहुम् फ़ीहा व हुम् फ़ीहा ला युब्ख़सून(15)उलाइ–कल्लज़ी–न लै–स लहुम् फ़िल् आख़ि–रति इल्लन्नारु व ह़बि–त़ मा स–नअू फ़ीहा व बातिलुम् मा कानू यअ़्मलून(16)अ–फ़–मन् का–न अ़ला बय्यि–नतिम् मिर्रब्बिही व यत्लूहु शाहिदुम् मिन्हु व मिन् क़ब्लिही किताबु मूसा इमामंव् व रह्–मतन् उलाइ–क युअ्मिनू–न बिही व मंय्यक्फ़ुर् बिही मिनल् अह़्ज़ाबि फ़न्नारु मौअ़िदुहू फ़ला–तकु फ़ी मिर्–यतिम् मिन्हु इन्नहुल्

उसमें से कुछ तुम छोड़ दोगे और उस पर दिल तंग होगे (फ़ा26) इस बिना पर कि वह कहते हैं उनके साथ कोई ख़ज़ाना क्यों न उतरा या उनके साथ कोई फ़रिश्ता आता तुम तो डर सुनाने वाले हो (फ़ा27) और अल्लाह हर चीज़ पर मुहाफ़िज़ है।(12) क्या (फ़ा28) यह कहते हैं कि उन्होंने इसे जी से बना लिया तुम फ़रमाओ कि ऐसी बनाई हुई दस सूरतें ले आओ (फ़ा29) और अल्लाह के सिवा जो मिल सकें (फ़ा30) सबको बुलालो अगर सच्चे हो।(13) (फ़ा31) तो ऐ मुसलमानो अगर वह तुम्हारी इस बात का जवाब न दे सकें तो समझ लो कि वह अल्लाह के इल्म ही से उतरा है और यह कि उसके सिवा कोई सच्चा मअ़बूद नहीं तो क्या अब तुम मानोगे।(14) (फ़ा32) जो दुनिया की ज़िन्दगी और उसकी आराईश चाहता हो (फ़ा33) हम उसमें उनका पूरा फल दे देंगे (फ़ा34) और उसमें कमी न देंगे।(15) यह हैं वह जिनके लिए आख़िरत में कुछ नहीं मगर आग और अकारत गया जो कुछ वहां करते थे और नाबूद हुए जो उनके अ़मल थे।(16) (फ़ा35) तो क्या वह जो अपने रब की तरफ़ से रौशन दलील पर हो (फ़ा36) और उस पर अल्लाह की तरफ़ से गवाह आए (फ़ा37) और इससे पहले मूसा की किताब (फ़ा38) पेशवा और रहमत वह उस पर (फ़ा39) ईमान लाते हैं और जो उसका मुनकिर हो सारे गरहों में (फ़ा40) तो आग उसका वादा है तो ऐ सुनने वाले तुझे कुछ इसमें शक न हो बेशक वह हक़ है

(फ़ा26) तिर्मिज़ी ने कहा कि इस्तेफ़हाम नही के माना में है यानी आपकी तरफ़ जो वह़ी होती है वह सब आप उन्हें पहुंचायें और दिल तंग न हों यह तबलीग़े रिसालत की ताकीद है बावजूदे कि अल्लाह तआ़ला जानता है कि उसके रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम अदाए रिसालत में कमी करने वाले नहीं और उसने उनको इससे मअ़्सूम फ़रमाया है इस ताकीद में नबी सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम की तस्कीन ख़ातिर भी है और कुफ़्फ़ार की मायूसी भी कि उनका इस्तेहज़ा तबलीग़ के काम में मुख़िल नहीं हो सकता। शाने नुज़ूलः अब्दुल्लाह इब्ने उमैया मख़्ज़ूमी ने रसूले करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से कहा था कि अगर आप सच्चे रसूल हैं और आपका ख़ुदा हर चीज़ पर क़ादिर है तो उसने आप पर ख़ज़ाना क्यों नहीं उतारा या आपके साथ कोई फ़रिश्ता क्यों नहीं भेजा जो आपकी रिसालत की गवाही देता इस पर यह आयते करीमा नाज़िल हुई। (फ़ा27) तुम्हें क्या परवाह अगर कुफ़्फ़ार न मानें या तमस्ख़ुर करें। (फ़ा28) कुफ़्फ़ारे मक्का क़ुरआने करीम की निस्बत। (फ़ा29) क्योंकि इन्सान अगर ऐसा कलाम बना सकता है तो उसके मिस्ल बनाना तुम्हारे मक़दूर से बाहर न होगा तुम भी अ़रब हो फ़सीह व बलीग़ हो कोशिश करो। (फ़ा30) अपनी मदद के लिए। (फ़ा31) इसमें कि यह कलाम इन्सान का बनाया हुआ है। (फ़ा32) और यक़ीन रखोगे कि यह अल्लाह की तरफ़ से है यानी एजाज़े क़ुरआन देख लेने के बाद ईमान व इस्लाम पर **(बक़िया सफ़हा 392 पर)**

الْحَقُّ مِن رَّبِّكَ وَلٰكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ لَا يُؤْمِنُونَ ﴿١٧﴾ وَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرٰى عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا ۚ أُولٰٓئِكَ يُعْرَضُونَ عَلٰى رَبِّهِمْ وَيَقُولُ الْأَشْهَادُ هٰٓؤُلَآءِ

الَّذِينَ كَذَبُوا عَلٰى رَبِّهِمْ ۚ أَلَا لَعْنَةُ اللّٰهِ عَلَى الظّٰلِمِينَ ﴿١٨﴾ الَّذِينَ يَصُدُّونَ عَن سَبِيلِ اللّٰهِ وَيَبْغُونَهَا عِوَجًا ۚ وَهُم بِالْآخِرَةِ هُمْ كٰفِرُونَ ﴿١٩﴾

أُولٰٓئِكَ لَمْ يَكُونُوا مُعْجِزِينَ فِي الْأَرْضِ وَمَا كَانَ لَهُم مِّن دُونِ اللّٰهِ مِنْ أَوْلِيَآءَ ۘ يُضٰعَفُ لَهُمُ الْعَذَابُ ۚ مَا كَانُوا يَسْتَطِيعُونَ السَّمْعَ وَمَا

كَانُوا يُبْصِرُونَ ﴿٢٠﴾ أُولٰٓئِكَ الَّذِينَ خَسِرُوا أَنفُسَهُمْ وَضَلَّ عَنْهُم مَّا كَانُوا يَفْتَرُونَ ﴿٢١﴾ لَا جَرَمَ أَنَّهُمْ فِي الْآخِرَةِ هُمُ الْأَخْسَرُونَ ﴿٢٢﴾ إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا

وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ وَأَخْبَتُوا إِلٰى رَبِّهِمْ ۙ أُولٰٓئِكَ أَصْحٰبُ الْجَنَّةِ ۖ هُمْ فِيهَا خٰلِدُونَ ﴿٢٣﴾ مَثَلُ الْفَرِيقَيْنِ كَالْأَعْمٰى وَالْأَصَمِّ وَالْبَصِيرِ وَالسَّمِيعِ ۚ هَلْ يَسْتَوِيٰنِ

हक़्क़ु मिर्रब्बि–क व लाकिन्–न अक्स़–रन्नासि ला युअ्मिनून(17)व मन् अज़्लमु मिम्–मनिफ़्तरा अ़–लल्लाहि कज़िबन् उलाइ–क युअ्–रज़ू–न अ़ला रब्बिहिम् व यक़ूलुल् अश्हादु हाउला–इल्लज़ी–न क–ज़बू अ़ला रब्बिहिम् अला लअ्–नतुल्लाहि अ़–लज़्ज़ालिमीन(18)अल्लज़ी–न यसुद्दू–न अ़न् सबीलिल्लाहि व यब्ग़ू–नहा अ़ि–वजन् व हुम् बिल्–आख़ि–रति हुम् काफ़िरून(19)उलाइ–क लम् यकूनू मुअ़्जिज़ी–न फ़िल्अर्ज़ि व मा का–न लहुम् मिन् दूनिल्लाहि मिन् औलिया–अ युज़ा–अ़फ़ु लहुमुल् अ़ज़ाबु मा कानू यस्ततीअू़नस् सम्–अ़ व मा कानू युब्सिरून(20)उलाइ–कल्लज़ी–न ख़सिरू अन्फ़ु–सहुम् व ज़ल्–ल अ़न्हुम् मा कानू यफ़्तरून(21)ला ज–र–म अन्नहुम् फ़िल्आख़ि–रति हुमुल् अख़्सरून(22)इन्नल्लज़ी–न आ–मनू व अ़मि–लुस्सालिहाति व अख़्–बतू इला रब्बिहिम् उलाइ–क अस्हाबुल् जन्नति हुम् फ़ीहा ख़ालिदून(23)म–स़लुल् फ़रीक़ैनि कल्–अअ्मा वल् अ–सम्मि वल्बसीरि वस्समी–अ़ि हल् यस्तवियानि

तेरे रब की तरफ़ से लेकिन बहुत आदमी ईमान नहीं रखते।(17) और उससे बढ़ कर ज़ालिम कौन जो अल्लाह पर झूठ बांधे (फ़ा41) वह अपने रब के हुजूर पेश किये जायेंगे (फ़ा42) और गवाह कहेंगे यह हैं जिन्होंने अपने रब पर झूठ बोला था अरे ज़ालिमों पर ख़ुदा की लानत।(18) (फ़ा43) जो अल्लाह की राह से रोकते हैं और उसमें कजी चाहते हैं और वही आख़िरत के मुनकिर हैं।(19) वह थकाने वाले नहीं ज़मीन में (फ़ा44) और न अल्लाह से जुदा उनके कोई ह़िमायती (फ़ा45) उन्हें अ़ज़ाब पर अ़ज़ाब होगा (फ़ा46) वह न सुन सकते थे और न देखते।(20) (फ़ा47) वही हैं जिन्होंने अपनी जान घाटे में डाली और उनसे खोई गईं जो बातें जोड़ते थे।(21) ख़्वाह न ख़्वाह वही आख़िरत में सबसे ज़्यादा नक़सान में हैं।(22) (फ़ा48) बेशक जो ईमान लाए और अच्छे काम किये और अपने रब की तरफ़ रुजूअ़ लाए वह जन्नत वाले हैं वह उसमें हमेशा रहेंगे।(23) दोनों फ़रीक़ (फ़ा49) का हाल ऐसा है जैसे एक अन्धा और बहरा और दूसरा देखता और सुनता (फ़ा50) क्या इन दोनों का हाल एक

(फ़ा41) और उसके लिए शरीक व औलाद बताए इस आयत से साबित होता है कि अल्लाह तआ़ला पर झूठ बोलना बद तरीन जुल्म है। (फ़ा42) रोज़े क़ियामत और उनसे उनके आमाल दरियाफ़्त किये जायेंगे और अम्बिया व मलाइका उन पर गवाही देंगे। (फ़ा43) बुख़ारी व मुस्लिम की हदीस में है कि रोज़े क़ियामत कुफ़्फ़ार और मुनाफ़िक़ीन को तमाम ख़ल्क़ के सामने कहा जाएगा कि यह वह हैं जिन्होंने अपने रब पर झूठ बोला ज़ालिमों पर ख़ुदा की लानत इस तरह वह तमाम ख़ल्क़ के सामने रुसवा किये जायेंगे। (फ़ा44) अल्लाह को अगर वह उन पर अ़ज़ाब करना चाहे क्योंकि वह उसके क़ब्ज़ा और उसकी मिल्क में हैं न उससे भाग सकते हैं न बच सकते हैं (फ़ा45) कि उनकी मदद करें और उन्हें उसके अ़ज़ाब से बचायें (फ़ा46) क्योंकि उन्होंने लोगों को राहे ख़ुदा से रोका और मरने के बाद उठने का इंकार किया। (फ़ा47) क़तादा ने कहा कि वह हक़ सुनने से बहरे हो गए तो कोई ख़ैर की बात सुनकर नफ़ा नहीं उठाते और न वह आयाते क़ुदरत को देख कर फ़ायदा उठाते हैं। (फ़ा48) कि उन्होंने बजाए जन्नत के जहन्नम को इख़्तियार किया। (फ़ा49) यानी काफ़िर और मोमिन। (फ़ा50) काफ़िर उसकी मिस्ल है जो न देखे न सुने यह नाक़िस है और मोमिन उसकी मिस्ल है जो देखता भी है और सुनता भी है वह कामिल है हक़ व बातिल में इम्तियाज़ रखता है।

مَثَلًا ؕ اَفَلَا تَذَكَّرُوْنَ ﴿۲۴﴾ وَلَقَدْ اَرْسَلْنَا نُوْحًا اِلٰى قَوْمِهٖۤ ۫ اِنِّیْ لَكُمْ نَذِیْرٌ مُّبِیْنٌ ﴿۲۵﴾ اَنْ لَّا تَعْبُدُوْۤا اِلَّا اللّٰهَ ؕ اِنِّیْۤ اَخَافُ عَلَیْكُمْ عَذَابَ یَوْمٍ اَلِیْمٍ ﴿۲۶﴾ فَقَالَ

الْمَلَاُ الَّذِیْنَ كَفَرُوْا مِنْ قَوْمِهٖ مَا نَرٰىكَ اِلَّا بَشَرًا مِّثْلَنَا وَمَا نَرٰىكَ اتَّبَعَكَ اِلَّا الَّذِیْنَ هُمْ اَرَاذِلُنَا بَادِیَ الرَّاْیِ ۚ وَمَا نَرٰى لَكُمْ عَلَیْنَا مِنْ

فَضْلٍۭ بَلْ نَظُنُّكُمْ كٰذِبِیْنَ ﴿۲۷﴾ قَالَ یٰقَوْمِ اَرَءَیْتُمْ اِنْ كُنْتُ عَلٰى بَیِّنَةٍ مِّنْ رَّبِّیْ وَاٰتٰىنِیْ رَحْمَةً مِّنْ عِنْدِهٖ فَعُمِّیَتْ عَلَیْكُمْ ؕ اَنُلْزِمُكُمُوْهَا وَاَنْتُمْ

لَهَا كٰرِهُوْنَ ﴿۲۸﴾ وَیٰقَوْمِ لَاۤ اَسْـَٔلُكُمْ عَلَیْهِ مَالًا ؕ اِنْ اَجْرِیَ اِلَّا عَلَى اللّٰهِ وَمَاۤ اَنَا بِطَارِدِ الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا ؕ اِنَّهُمْ مُّلٰقُوْا رَبِّهِمْ وَلٰكِنِّیْۤ اَرٰىكُمْ قَوْمًا

تَجْهَلُوْنَ ﴿۲۹﴾ وَیٰقَوْمِ مَنْ یَّنْصُرُنِیْ مِنَ اللّٰهِ اِنْ طَرَدْتُّهُمْ ؕ اَفَلَا تَذَكَّرُوْنَ ﴿۳۰﴾ وَلَاۤ اَقُوْلُ لَكُمْ عِنْدِیْ خَزَآىِٕنُ اللّٰهِ وَلَاۤ اَعْلَمُ الْغَیْبَ وَلَاۤ اَقُوْلُ اِنِّیْ

म–स़–लन् अ–फ़ला तज़क्करून(24)व ल–क़द अर्सल्ना नूहन् इला क़ौमिही इन्नी लकुम् नज़ीरुम् मुबीन(25)अंल् ला तअ्बुदू इल्लल्ला–ह इन्नी अख़ाफ़ु अ़लैकुम् अ़ज़ा–ब यौमिन् अलीम(26) फ़–क़ालल् म–ल–उल्लज़ी–न क–फ़रू मिन् क़ौमिही मा नरा–क इल्ला ब–श–रम् मिस्लना व मा नराकत् त–ब–अ़–क इल्लल्लज़ी–न हुम् अराज़िलुना बादि–यर्रअ्यि व मा नरा लकुम् अ़लैना मिन् फ़ज़्लिम् बल् नज़ुन्नुकुम् काज़िबीन(27)क़ा–ल या क़ौमि अ–रऐतुम् इन् कुन्तु अ़ला बय्यि–नतिम् मिर्रब्बी व आतानी रह्म–तम् मिन् अ़िन्दिही फ़अुम्मियत् अ़लैकुम् अनुल्ज़ि मुकुमूहा व अन्तुम् लहा कारिहून(28)व या क़ौमि ला अस्–अलुकुम् अ़लैहि मालन् इन् अज्रि–य इल्ला अ़लल्लाहि व मा अना बितारिदिल्लज़ी–न आ–मनू इन्नहुम् मुलाकू रब्बिहिम् व लाकिन्नी अराकुम् क़ौ–मन् तज्–हलून(29)व या क़ौमि मंय्यन्सुरुनी मिनल्लाहि इन् तरत्तुहुम् अ–फ़ला त–ज़क्करून (30)व ला अक़ूलु लकुम् अ़िन्दी ख़ज़ाइनुल्लाहि व ला अअ्–लमुल्ग़ै–ब व ला अक़ूलु इन्नी

सा है (फ़ा51) तो क्या तुम ध्यान नहीं करते।(24) (रुकूअ. 2) और बेशक हमने नूह को उसकी क़ौम की तरफ़ भेजा (फ़ा52) कि मैं तुम्हारे लिए सरीह डर सुनाने वाला हूं।(25) कि अल्लाह के सिवा किसी को न पूजो बेशक मैं तुम पर एक मुसीबत वाले दिन के अज़ाब से डरता हूं।(26) (फ़ा53) तो उसकी क़ौम के सरदार जो काफ़िर हुए थे बोले हम तो तुम्हें अपने ही जैसा आदमी देखते हैं (फ़ा54) और हम नहीं देखते कि तुम्हारी पैरवी किसी ने की हो मगर हमारे कमीनों ने (फ़ा55) सरसरी नज़र से (फ़ा56) और हम तुम में अपने ऊपर कोई बड़ाई नहीं पाते (फ़ा57) बल्कि हम तुम्हें (फ़ा58) झूठा ख़्याल करते हैं।(27) बोला ऐ मेरी क़ौम भला बताओ तो अगर मैं अपने रब की तरफ़ से रौशन दलील पर हूं (फ़ा59) और उसने मुझे अपने पास से रहमत बख़्शी (फ़ा60) तो तुम इससे अन्धे रहे क्या हम इसे तुम्हारे गले चपेट दें और तुम बेज़ार हो।(28) (फ़ा61) और ऐ क़ौम मैं तुम से कुछ इस पर (फ़ा62) माल नहीं मांगता (फ़ा63) मेरा अज्र तो अल्लाह ही पर है और मैं मुसलमानों को दूर करने वाला नहीं (फ़ा64) बेशक वह अपने रब से मिलने वाले हैं (फ़ा65) लेकिन मैं तुमको निरे जाहिल लोग पाता हूं।(29) (फ़ा66)और ऐ क़ौम मुझे अल्लाह से कौन बचा लेगा अगर मैं उन्हें दूर करूंगा तो क्या तुम्हें ध्यान नहीं।(30) और मैं तुम से नहीं कहता कि मेरे पास अल्लाह के ख़ज़ाने हैं और न यह कि मैं ग़ैब जान लेता हूं और न यह कहता हूं कि मैं

(फ़ा51) हरगिज़ नहीं। (फ़ा52) उन्होंने क़ौम से फ़रमाया। (फ़ा53) हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा ने फ़रमाया कि हज़रत नूह अ़लैहिस्सलाम चालीस साल के बाद मबऊस हुए और नौ सौ पचास साल अपनी क़ौम को दावत फ़रमाते रहे और तूफ़ान के बाद साठ बरस दुनिया में रहे तो आप की उम्र एक हज़ार पचास साल की हुई इसके अलावा उम्र शरीफ़ के मुतअ़ल्लिक़ और भी क़ौल हैं। (ख़ाज़िन) (फ़ा54) इस गुमराही में बहुत सी उम्मतें मुब्तला होकर इस्लाम से महरूम रहीं क़ुरआन पाक में जा बजा उनके तज़किरे हैं इस उम्मत में भी बहुत से बदनसीब सय्यदे अम्बिया सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को बशर कहते और हमसरी का ख़्याल फ़ासिद रखते हैं अल्लाह तआ़ला उन्हें गुमराही से बचाए। (फ़ा55) कमीनों से मुराद उनकी वह लोग थे जो उनकी नज़र में ख़सीस पेशे रखते थे और हक़ीक़त यह है कि उनका यह क़ौल जहले ख़ालिस था क्योंकि इन्सान का मर्तबा दीन के इत्तेबाअ़् और रसूल की फ़रमांबरदारी से है माल व मन्सब व पेशे को इसमें दख़ल नहीं दीनदार नेक सीरत पेशावर को नज़रे हिक़ारत से देखना और हक़ीर जानना जाहिलाना फ़ेअ़्ल है (फ़ा56) यानी बग़ैर ग़ौर व **(बक़िया सफ़हा 392 पर)**

مَلَكٌ وَلَآ أَقُولُ لِلَّذِينَ تَزْدَرِىٓ أَعْيُنُكُمْ لَن يُؤْتِيَهُمُ ٱللَّهُ خَيْرًا ۖ ٱللَّهُ أَعْلَمُ بِمَا فِىٓ أَنفُسِهِمْ ۖ إِنِّىٓ إِذًا لَّمِنَ ٱلظَّٰلِمِينَ ﴿٣١﴾ قَالُوا۟ يَٰنُوحُ قَدْ جَٰدَلْتَنَا
فَأَكْثَرْتَ جِدَٰلَنَا فَأْتِنَا بِمَا تَعِدُنَآ إِن كُنتَ مِنَ ٱلصَّٰدِقِينَ ﴿٣٢﴾ قَالَ إِنَّمَا يَأْتِيكُم بِهِ ٱللَّهُ إِن شَآءَ وَمَآ أَنتُم بِمُعْجِزِينَ ﴿٣٣﴾ وَلَا يَنفَعُكُمْ نُصْحِىٓ
إِنْ أَرَدتُّ أَنْ أَنصَحَ لَكُمْ إِن كَانَ ٱللَّهُ يُرِيدُ أَن يُغْوِيَكُمْ ۚ هُوَ رَبُّكُمْ وَإِلَيْهِ تُرْجَعُونَ ﴿٣٤﴾ أَمْ يَقُولُونَ ٱفْتَرَىٰهُ ۖ قُلْ إِنِ ٱفْتَرَيْتُهُۥ فَعَلَىَّ إِجْرَامِى
وَأَنَا۠ بَرِىٓءٌ مِّمَّا تُجْرِمُونَ ﴿٣٥﴾ وَأُوحِىَ إِلَىٰ نُوحٍ أَنَّهُۥ لَن يُؤْمِنَ مِن قَوْمِكَ إِلَّا مَن قَدْ ءَامَنَ فَلَا تَبْتَئِسْ بِمَا كَانُوا۟ يَفْعَلُونَ ﴿٣٦﴾ وَٱصْنَعِ ٱلْفُلْكَ
بِأَعْيُنِنَا وَوَحْيِنَا وَلَا تُخَٰطِبْنِى فِى ٱلَّذِينَ ظَلَمُوٓا۟ ۚ إِنَّهُم مُّغْرَقُونَ ﴿٣٧﴾ وَيَصْنَعُ ٱلْفُلْكَ وَكُلَّمَا مَرَّ عَلَيْهِ مَلَأٌ مِّن قَوْمِهِۦ سَخِرُوا۟ مِنْهُ ۚ قَالَ

म–लकुंव् व ला अकूलु लिल्लज़ी–न तज़्दरी अअ्युनुकुम् लंय्युअति–यहुमुल्लाहु ख़ैरन् अल्लाहु अअ्लमु बिमा फ़ी अन्फ़ु– सिहिम् इन्नी इज़ल् लमिनज़् ज़ालिमीन(31)क़ालू या नूहु क़द् जादल्– तना फ़–अक्सर्–त जिदा–लना फ़अ्तिना बिमा तअ्दुना इन् कुन्–त मिनस्सादिक़ीन(32)क़ा–ल इन्नमा यअ्तीकुम् बिहिल्लाहु इन् शा–अ व मा अन्तुम् बिमुअ्जिज़ीन(33)व ला यन्फ़अुकुम् नुस्ही इन् अरत्तु अन् अन्स–ह लकुम् इन् कानल्लाहु युरीदु अंय्युग़्वि–यकुम् हु–व रब्बुकुम् व इलैहि तुर्–जअू न(34)अम् यक़ूलूनफ़्तराहु क़ुल् इनिफ़्–तरैतुहू फ़–अलय्–य इज्रामी व अना बरीउम् मिम्मा तुज्रिमून(35)व ऊहि–य इला नूहिन् अन्नहू लंय्यु–अ्मि–न मिन् क़ौमि–क इल्ला मन् क़द् आ–म–न फ़ला तब्तइस् बिमा कानू यफ़्अलून(36)वस्नअिल्–फ़ुल्–क बिअअ्युनिना व वह्यिना व ला तुख़ातिब्नी फ़िल् लज़ी–न ज़–लमू इन्नहुम् मुग़् –रक़ून(37)व यस्–नअुल्फ़ुल्–क व कुल्लमा मर्–र अलैहि म–ल–उम् मिन् क़ौमिही सख़िरू मिन्हु क़ा–ल

फ़रिश्ता हूं (फ़ा67) और मैं उन्हें नहीं कहता जिनको तुम्हारी निगाहें हक़ीर समझती हैं कि हरगिज़ उन्हें अल्लाह कोई भलाई न देगा अल्लाह ख़ूब जानता है जो उनके दिलों में है (फ़ा68) ऐसा करूं (फ़ा69) तो ज़रूर मैं ज़ालिमों में से हूं।(31) (फ़ा70) बोले ऐ नूह तुम हमसे झगड़े और बहुत ही झगड़े तो ले आओ जिस (फ़ा71) का हमें वादा दे रहे हो अगर सच्चे हो।(32) बोला वह तो अल्लाह तुम पर लाएगा अगर चाहे और तुम थका न सकोगे।(33) (फ़ा72) और तुम्हें मेरी नसीहत नफ़ा न देगी अगर मैं तुम्हारा भला चाहूं जब कि अल्लाह तुम्हारी गुमराही चाहे वह तुम्हारा रब है और उसी की तरफ़ फिरोगे।(34) (फ़ा73) क्या यह कहते हैं कि उन्होंने इसे अपने जी से बना लिया (फ़ा74) तुम फ़रमाओ अगर मैंने बना लिया होगा तो मेरा गुनाह मुझ पर है (फ़ा75) और मैं तुम्हारे गुनाह से अलग हूं।(35) (रुकूअ् 3) और नूह को 'वही' हुई कि तुम्हारी क़ौम से मुसलमान न होंगे मगर जितने ईमान ला चुके तू ग़म न खा उस पर जो वह करते हैं।(36) (फ़ा76) और कश्ती बना हमारे सामने (फ़ा77) और हमारे हुक्म से और ज़ालिमों के बारे में मुझ से बात न करना (फ़ा78) वह ज़रूर डुबाए जायेंगे।(37) (फ़ा79) और नूह कश्ती बनाता है और सब उसकी क़ौम के सरदार उस पर गुज़रते उस पर हंसते (फ़ा80) बोला

(फ़ा67) हज़रत नूह अलैहिस्सलातु वत्तस्लीमात की क़ौम ने आपकी नबुव्वत में तीन शुबहे किये थे एक शुबहा तो यह कि *मा नरा लकुम् अलैना मिन् फ़ज़्लिन्* कि हम तुम में अपने ऊपर कोई बड़ाई नहीं पाते यानी तुम माल व दौलत में हम से ज़्यादा नहीं हो इसके जवाब में हज़रत नूह अलैहिस्सलातु वत्तस्लीमात ने फ़रमाया *ला अक़ूलु ल–कुम् इन्दी ख़ज़ाइनुल्लाह* यानी मैं तुम से नहीं कहता कि मेरे पास अल्लाह के ख़ज़ाने हैं तो तुम्हारा यह एतेराज़ बिल्कुल बे महल है, मैंने कभी माल की फ़ज़ीलत नहीं जताई और दुनियवी दौलत का तुम को मुतवक़्क़ा नहीं किया और अपनी दावत को माल के साथ वाबस्ता नहीं किया फिर तुम यह कहने के कैसे मुस्तहिक़ हो कि हम तुम में कोई माली फ़ज़ीलत नहीं पाते और तुम्हारा यह एतेराज़ महज़ बेहूदा है दूसरा शुबहा क़ौमे नूह ने यह किया था *मा नराकत्त–ब–अ–क इल्लल्लज़ी–न हुम् अराज़िलुना बादियर्राय़ि* यानी हम नहीं देखते कि तुम्हारी किसी ने पैरवी की हो मगर हमारे कमीनों ने सरसरी नज़र से मतलब यह था कि वह भी सिर्फ़ ज़ाहिर में मोमिन हैं बातिन में नहीं इसके जवाब में हज़रत नूह अलैहिस्सलाम ने यह फ़रमाया कि मैं नहीं कहता कि मैं ग़ैब जानता हूं तो मेरे अहकाम ग़ैब पर मबनी हैं ताकि तुम्हें यह एतेराज़ करने का मौक़ा होता जब मैं ने यह कहा ही नहीं तो एतेराज़ बेमहल है और शरअ में ज़ाहिर ही का एतेबार है लिहाज़ा तुम्हारा एतेराज़ बिल्कुल बेजा है नीज़ *ला अअ्लमुल् ग़ै–ब* फ़रमाने में क़ौम पर एक लतीफ़ तअ्रीज़ भी है कि किसी के बातिन पर हुक्म करना उसका काम है जो ग़ैब का इल्म रखता हो मैंने तो इसका दावा नहीं किया बावजूदेकि **(बक़िया सफ़हा 392 पर)**

اِنْ تَسْخَرُوْا مِنَّا فَاِنَّا نَسْخَرُ مِنْكُمْ كَمَا تَسْخَرُوْنَ ﴿۳۸﴾ فَسَوْفَ تَعْلَمُوْنَ مَنْ يَّاْتِيْهِ عَذَابٌ يُّخْزِيْهِ وَيَحِلُّ عَلَيْهِ عَذَابٌ مُّقِيْمٌ ﴿۳۹﴾ حَتّٰۤى اِذَا

جَآءَ اَمْرُنَا وَفَارَ التَّنُّوْرُ قُلْنَا احْمِلْ فِيْهَا مِنْ كُلٍّ زَوْجَيْنِ اثْنَيْنِ وَاَهْلَكَ اِلَّا مَنْ سَبَقَ عَلَيْهِ الْقَوْلُ وَمَنْ اٰمَنَ وَمَاۤ اٰمَنَ مَعَهٗۤ اِلَّا قَلِيْلٌ ﴿۴۰﴾

وَقَالَ ارْكَبُوْا فِيْهَا بِسْمِ اللّٰهِ مَجْرٖىهَا وَمُرْسٰىهَا اِنَّ رَبِّيْ لَغَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿۴۱﴾ وَهِيَ تَجْرِيْ بِهِمْ فِيْ مَوْجٍ كَالْجِبَالِ وَنَادٰى نُوْحُ ابْنَهٗ وَكَانَ فِيْ مَعْزِلٍ

يّٰبُنَيَّ ارْكَبْ مَّعَنَا وَلَا تَكُنْ مَّعَ الْكٰفِرِيْنَ ﴿۴۲﴾ قَالَ سَاٰوِيْۤ اِلٰى جَبَلٍ يَّعْصِمُنِيْ مِنَ الْمَآءِ قَالَ لَا عَاصِمَ الْيَوْمَ مِنْ اَمْرِ اللّٰهِ اِلَّا مَنْ رَّحِمَ وَحَالَ

بَيْنَهُمَا الْمَوْجُ فَكَانَ مِنَ الْمُغْرَقِيْنَ ﴿۴۳﴾ وَقِيْلَ يٰۤاَرْضُ ابْلَعِيْ مَآءَكِ وَيٰسَمَآءُ اَقْلِعِيْ وَغِيْضَ الْمَآءُ وَقُضِيَ الْاَمْرُ وَاسْتَوَتْ عَلَى الْجُوْدِيِّ وَقِيْلَ بُعْدًا لِّلْقَوْمِ

इन् तस्ख़रू मिन्ना फ़इन्ना नस्ख़रु मिन्कुम् कमा तस्ख़रून(38)फ़सौ–फ़ तअ़्लमू–न मंय्यअ्तीहि अ़ज़ाबुंय्युख़्ज़ीहि व यहिल्लु अ़लैहि अ़ज़ाबुम् मुक़ीम(39)हत्ता इज़ा जा–अ अम्रुना व फ़ारत्–तन्नूरु कुल्नह्मिल् फ़ीहा मिन् कुल्लिन् ज़ौजैनिस्नैनि व अह्ल–क इल्ला मन् स–ब–क़ अ़लैहिल् क़ौलु व मन् आ–म–न व मा आ–म–न म–अ़हू इल्ला क़लील(40)व क़ालर् कबू फ़ीहा बिस्मिल्लाहि मज्रेहा व मुर्साहा इन्–न रब्बी ल–ग़फ़ूरुर्रहीम(41)व हि–य तज्री बिहिम् फ़ी मौजिन् कल्जिबालि व नादा नूहु निब्नहू. व का–न फ़ी मअ़्ज़ि–लिंय्याबु–नय्यर् कम्–म–अ़ना व ला तकुम् म–अ़ल्काफ़िरीन(42)क़ा–ल स–आवी इला ज–बलिंय्–अ़्सिमुनी मिनल्माइ क़ा–ल ला आ़सिमल्यौ–म मिन् अम्रिल्लाहि इल्ला मर्रहि–म व हा़–ल बै–नहुमल् मौजु फ़का–न मिनल् मुग़्रक़ीन(43)व क़ी–ल या अर्ज़ुब्लअ़ी मा–अकि व या–समाउ अक़्लिअ़ी व ग़ीज़ल्–माउ व क़ुज़ियल् अम्रु वस्तवत् अ़–लल्जूदिय्यि व क़ी–ल बुअ़्दल् लिल् क़ौमिज़

अगर तुम हम पर हंसते हो तो एक वक़्त हम तुम पर हंसेंगे (फ़ा81) जैसा तुम हंसते हो।(38) (फ़ा82) तो अब जान जाओगे किस पर आता है वह अ़ज़ाब कि उसे रुसवा करे (फ़ा83) और उतरता है वह अ़ज़ाब जो हमेशा रहे।(39) (फ़ा84) यहां तक कि जब हमारा हुक्म आया (फ़ा85) और तन्नूर उबला (फ़ा86) हमने फ़रमाया कश्ती में सवार कर ले हर जिन्स में से एक जोड़ा नर व मादा और जिन पर बात पड़ चुकी है (फ़ा87) उन के सिवा अपने घर वालों और बाक़ी मुसलमानों को और उसके साथ मुसलमान न थे मगर थोड़े।(40) (फ़ा88) और बोला इसमें सवार हो (फ़ा89) अल्लाह के नाम पर इसका चलना और इसका ठहरना (फ़ा90) बेशक मेरा रब ज़रूर बख़्शने वाला मेहरबान है।(41) और वह उन्हें लिए जा रही है ऐसी मौजों में जैसे पहाड़ (फ़ा91) और नूह ने अपने बेटे को पुकारा और वह उससे किनारे था (फ़ा92) ऐ मेरे बच्चे हमारे साथ सवार होजा और काफ़िरों के साथ न हो।(42) (फ़ा93) बोला अब मैं किसी पहाड़ की पनाह लेता हूं वह मुझे पानी से बचा लेगा। कहा आज अल्लाह के अ़ज़ाब से कोई बचाने वाला नहीं मगर जिस पर वह रहम करे और उनके बीच में मौज आड़े आई तो वह डूबतों में रह गया।(43) (फ़ा94) और हुक्म फ़रमाया गया कि ऐ ज़मीन अपना पानी निगल ले और ऐ आसमान थम जा और पानी ख़ुश्क कर दिया गया और काम तमाम हुआ और कश्ती (फ़ा95) कोहे जूदी पर ठहरी (फ़ा96) और फ़रमाया गया कि दूर हों

(फ़ा81) तुम्हें हलाक होता देख कर। (फ़ा82) कश्ती देख कर मरवी है कि यह कश्ती दो साल में तैयार हुई उसकी लम्बाई तीन सौ गज़ चौड़ाई पचास गज़ और ऊंचाई तीस गज़ थी (इसमें और भी अक़्वाल हैं) उस कश्ती में तीन दर्जे बनाए गए थे तबक़ए ज़ेरीं में वुहूश और दरिन्दे और हवाम और दर्मियानी तबक़ा में चौपाए वग़ैरह और तबक़ए आला में ख़ुद हज़रत नूह अ़लैहिस्सलाम और आपके साथी और हज़रत आदम अ़लैहिस्सलाम का जसदे मुबारक जो औरतों और मर्दों के दर्मियान हायल था और खाने वग़ैरह का सामान था परिन्दे भी ऊपर ही के तबक़ा में थे (ख़ाज़िन व मदारिक) वग़ैरह। (फ़ा83) दुनिया में और वह अ़ज़ाबे ग़र्क़ है। (फ़ा84) यानी अ़ज़ाबे आख़िरत (फ़ा85) अ़ज़ाब व हलाक का (फ़ा86) और पानी ने उसमें से जोश मारा तन्नूर से या रूए ज़मीन मुराद है या यही तन्नूर जिस में रोटी पकाई जाती है इसमें भी चन्द क़ौल हैं एक क़ौल यह है कि वह तन्नूर पत्थर का था हज़रत हव्वा का जो आपको तर्का में पहुंचा था और वह या शाम में था या हिन्द में और तन्नूर का जोश मारना अ़ज़ाब आने की अ़लामत थी। (फ़ा87) यानी उनके हलाक का हुक्म हो चुका है और उन से मुराद आप की बीबी वाअ़ेला जो ईमान **(बक़िया सफ़हा 392 पर)**

الظّٰلِمِيْنَ ﴿٤٤﴾ وَنَادٰى نُوْحٌ رَّبَّهٗ فَقَالَ رَبِّ اِنَّ ابْنِىْ مِنْ اَهْلِىْ وَاِنَّ وَعْدَكَ الْحَقُّ وَاَنْتَ اَحْكَمُ الْحٰكِمِيْنَ ﴿٤٥﴾ قَالَ يٰنُوْحُ اِنَّهٗ لَيْسَ مِنْ اَهْلِكَ ۚ اِنَّهٗ
عَمَلٌ غَيْرُ صَالِحٍ ۖ فَلَا تَسْـَٔلْنِ مَا لَيْسَ لَكَ بِهٖ عِلْمٌ ؕ اِنِّىْۤ اَعِظُكَ اَنْ تَكُوْنَ مِنَ الْجٰهِلِيْنَ ﴿٤٦﴾ قَالَ رَبِّ اِنِّىْۤ اَعُوْذُ بِكَ اَنْ اَسْـَٔلَكَ مَا لَيْسَ لِىْ بِهٖ عِلْمٌ ؕ
وَاِلَّا تَغْفِرْ لِىْ وَتَرْحَمْنِىْۤ اَكُنْ مِّنَ الْخٰسِرِيْنَ ﴿٤٧﴾ قِيْلَ يٰنُوْحُ اهْبِطْ بِسَلٰمٍ مِّنَّا وَبَرَكٰتٍ عَلَيْكَ وَعَلٰۤى اُمَمٍ مِّمَّنْ مَّعَكَ ؕ وَاُمَمٌ سَنُمَتِّعُهُمْ ثُمَّ
يَمَسُّهُمْ مِّنَّا عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿٤٨﴾ تِلْكَ مِنْ اَنْۢبَآءِ الْغَيْبِ نُوْحِيْهَاۤ اِلَيْكَ ۚ مَا كُنْتَ تَعْلَمُهَاۤ اَنْتَ وَلَا قَوْمُكَ مِنْ قَبْلِ هٰذَا ۛؕ فَاصْبِرْ ۛؕ اِنَّ الْعَاقِبَةَ
لِلْمُتَّقِيْنَ ﴿٤٩﴾ وَاِلٰى عَادٍ اَخَاهُمْ هُوْدًا ؕ قَالَ يٰقَوْمِ اعْبُدُوا اللّٰهَ مَا لَكُمْ مِّنْ اِلٰهٍ غَيْرُهٗ ؕ اِنْ اَنْتُمْ اِلَّا مُفْتَرُوْنَ ﴿٥٠﴾ يٰقَوْمِ لَاۤ اَسْـَٔلُكُمْ عَلَيْهِ اَجْرًا ؕ اِنْ اَجْرِىَ

ज़ालिमीन(44)व नादा नूहुर् रब्बहू फ़क़ा–ल रब्बि इन्नब्नी मिन् अह्ली व इन्–न वअ्द–कल् हक़्क़ु व अन्–त अह्कमुल् हाकिमीन(45)क़ा–ल या नूहु इन्नहू लै–स मिन् अह्लि–क इन्नहू अ–मलुन् ग़ैरु सालिहिन् फ़ला तस्अलि मा लै–स ल–क बिही अिल्मुन् इन्नी अअिज़ु–क अन् तकू–न मिनल् जाहिलीन(46)क़ा–ल रब्बि इन्नी अअूज़ुबि–क अन् अस्अ–ल–क मा लै–स ली बिही अिल्मुन् व इल्ला तग़्फ़िर्ली व तर्हम्नी अकुम् मिनल् ख़ासिरीन(47)क़ी–ल या नूहुह्–बित् बि–सलामिम् मिन्ना व ब–रकातिन् अ़लै–क व अ़ला उ–ममिम् मिम्मम् म–अ़–क व उ–ममुन् सनुमत्तिअुहुम् सुम्–म य–मस्सुहुम् मिन्ना अ़ज़ाबुन् अलीम(48)तिल्–क मिन् अम्बाइल्ग़ैबि नूहीहा इलै–क मा कुन्–त तअ्–लमुहा अन्–त व ला क़ौमु–क मिन् क़ब्लि हाज़ा फ़स्बिर् इन्नल् आक़ि–ब–त लिल्मुत्तक़ीन(49)व इला आ़दिन् अख़ाहुम् हूदन् क़ा–ल या क़ौमि–अ़्बुदुल्ला–ह मा लकुम् मिन् इलाहिन् ग़ैरुहू इन् अन्तुम् इल्ला मुफ़्तरून(50)या क़ौमि ला अस्अलुकुम् अ़लैहि अज्रन् इन् अजि्र–य

बे इंसाफ़ लोग।(44) और नूह ने अपने रब को पुकारा अर्ज़ की ऐ मेरे रब मेरा बेटा भी तो मेरा घर वाला है (फ़ा97) और बेशक तेरा वादा सच्चा है और तू सबसे बढ़कर हुक्म वाला।(45) (फ़ा98) फ़रमाया ऐ नूह वह तेरे घर वालों में नहीं (फ़ा99) बेशक उसके काम बड़े नालाइक़ हैं तो मुझ से वह बात न मांग जिसका तुझे इल्म नहीं (फ़ा100) मैं तुझे नसीहत फ़रमाता हूं कि नादान न बन।(46) अ़र्ज़ की ऐ रब मेरे मैं तेरी पनाह चाहता हूं कि तुझ से वह चीज़ मांगू जिसका मुझे इल्म नहीं और अगर तू मुझे न बख़्शे और रहम न करे तो मैं ज़ियांकार हो जाऊं।(47) फ़रमाया गया ऐ नूह कश्ती से उतर हमारी तरफ़ से सलाम और बरकतों के साथ (फ़ा101) जो तुझ पर हैं और तेरे साथ के कुछ गरोहों पर (फ़ा102) और कुछ गरोह हैं जिन्हें हम दुनिया बरतने देंगे (फ़ा103) फिर उन्हें हमारी तरफ़ से दर्दनाक अ़ज़ाब पहुंचेगा।(48) (फ़ा104) यह ग़ैब की ख़बरें है कि हम तुम्हारी तरफ़ 'वह्यी' करते हैं (फ़ा105) इन्हें न तुम जानते थे न तुम्हारी क़ौम इस (फ़ा106) से पहले तो सब्र करो (फ़ा107) बेशक भला अंजाम परहेज़गारों का।(49) (फ़ा108) (रुकूअ़ 4) और आ़द की तरफ़ उनके हम क़ौम हूद को (फ़ा109) कहा ऐ मेरी क़ौम अल्लाह को पूजो (फ़ा110) उसके सिवा तुम्हारा कोई मअ़बूद नहीं तुम तो निरे मुफ़्तरी हो।(50) (फ़ा111) ऐ क़ौम मैं इस पर तुम से कुछ उजरत नहीं मांगता मेरी मज़दूरी

(फ़ा97) और तूने मुझ से मेरे और मेरे घर वालों की नजात का वादा फ़रमाया है (फ़ा98) तो इस में क्या हिकमत है शैख़ अबू मन्सूर मातुरीदी रहमतुल्लाह अ़लैह ने फ़रमाया कि हज़रत नूह अ़लैहिस्सलाम का बेटा कनआ़न मुनाफ़िक़ था और आप के सामने अपने आपको मोमिन ज़ाहिर करता था अगर वह अपना कुफ़्र ज़ाहिर कर देता तो आप अल्लाह तआ़ला से उसके नजात की दुआ़ न करते। (मदारिक) (फ़ा99) इससे साबित हुआ कि नस्बी क़राबत से दीनी क़राबत ज़्यादा क़वी है। (फ़ा100) कि वह मांगने के क़ाबिल है या नहीं। (फ़ा101) इन बरकतों से आपकी ज़ुर्रियत और आपके मुत्तबेईन की कसरत मुराद है कि बकसरत अम्बिया और अइम्मए दीन आपकी नस्ले पाक से हुए उनकी निस्बत फ़रमाया कि यह बरकात (फ़ा102) मुहम्मद इब्ने कअ़ब क़ुरज़ी ने कहा कि इन गरोहो में क़ियामत तक होने वाला हर एक मोमिन दाख़िल है। (फ़ा103) इससे हज़रत नूह अ़लैहिस्सलाम के बाद पैदा होने वाले काफ़िर गरोह मुराद हैं जिन्हें अल्लाह तआ़ला उनकी मीआ़दों तक फ़राख़ीए ऐश और वुसअ़ते रिज़्क़ अता फ़रमाएगा। (फ़ा104) आख़िरत में (फ़ा105) यह ख़िताब सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को फ़रमाया। (फ़ा106) ख़बर देने (फ़ा107) अपनी क़ौम की ईज़ाओं पर जैसा कि नूह अ़लैहिस्सलातु वस्सलाम ने अपनी क़ौम की **(बक़िया सफ़हा 393 पर)**

إِلَّا عَلَى الَّذِي فَطَرَنِي ۚ أَفَلَا تَعْقِلُونَ ﴿٥١﴾ وَيَا قَوْمِ اسْتَغْفِرُوا رَبَّكُمْ ثُمَّ تُوبُوا إِلَيْهِ يُرْسِلِ السَّمَاءَ عَلَيْكُم مِّدْرَارًا وَيَزِدْكُمْ قُوَّةً إِلَىٰ قُوَّتِكُمْ وَلَا تَتَوَلَّوْا
مُجْرِمِينَ ﴿٥٢﴾ قَالُوا يَا هُودُ مَا جِئْتَنَا بِبَيِّنَةٍ وَمَا نَحْنُ بِتَارِكِي آلِهَتِنَا عَن قَوْلِكَ وَمَا نَحْنُ لَكَ بِمُؤْمِنِينَ ﴿٥٣﴾ إِن نَّقُولُ إِلَّا اعْتَرَاكَ بَعْضُ آلِهَتِنَا بِسُوءٍ ۗ
قَالَ إِنِّي أُشْهِدُ اللَّهَ وَاشْهَدُوا أَنِّي بَرِيءٌ مِّمَّا تُشْرِكُونَ ﴿٥٤﴾ مِن دُونِهِ ۖ فَكِيدُونِي جَمِيعًا ثُمَّ لَا تُنظِرُونِ ﴿٥٥﴾ إِنِّي تَوَكَّلْتُ عَلَى اللَّهِ رَبِّي وَرَبِّكُم ۚ
مَّا مِن دَابَّةٍ إِلَّا هُوَ آخِذٌ بِنَاصِيَتِهَا ۚ إِنَّ رَبِّي عَلَىٰ صِرَاطٍ مُّسْتَقِيمٍ ﴿٥٦﴾ فَإِن تَوَلَّوْا فَقَدْ أَبْلَغْتُكُم مَّا أُرْسِلْتُ بِهِ إِلَيْكُمْ ۚ وَيَسْتَخْلِفُ رَبِّي قَوْمًا غَيْرَكُمْ
وَلَا تَضُرُّونَهُ شَيْئًا ۚ إِنَّ رَبِّي عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ حَفِيظٌ ﴿٥٧﴾ وَلَمَّا جَاءَ أَمْرُنَا نَجَّيْنَا هُودًا وَالَّذِينَ آمَنُوا مَعَهُ بِرَحْمَةٍ مِّنَّا وَنَجَّيْنَاهُم مِّنْ عَذَابٍ غَلِيظٍ ﴿٥٨﴾

इल्ला अ़लल्लज़ी फ़-त-रनी अ-फ़ला तअ़्क़िलून(51)व या क़ौमिस्तग़्फ़िरू रब्बकुम् सुम्-म तूबू इलैहि युरसिलिस् समा-अ अ़लैकुम् मिद्रारंव् व यज़िद्कुम् क़ुव्वतन् इला क़ुव्वतिकुम् व ला त-त-वल्लौ मुज्रिमीन(52)क़ालू या हूदु मा जिअ्तना बि-बय्यि-नतिंव् व मा नह्नु बितारिकी आलि-हतिना अ़न् क़ौलि-क व मा नह्नु ल-क बिमुअ्मिनीन(53)इन् नक़ूलु इल्लाअ्-तरा-क बअ़्जु आलि-हतिना बिसूइन् क़ा-ल इन्नी उश्हिदुल्ला-ह वश्हदू अन्नी बरीउम् मिम्मा तुश्रिकून (54)मिन् दूनिही फ़कीदूनी जमीअ़न् सुम्-म ला तुन्ज़िरून(55)इन्नी त-वक्कल्तु अ़लल्लाहि रब्बी व रब्बिकुम् मा मिन् दाब्बतिन् इल्ला हु-व आख़िज़ुम् बिना सि-यतिहा इन्-न रब्बी अ़ला सिरातिम् मुस्तक़ीम(56)फ़इन् तवल्लौ फ़-क़द् अब्लग़्तुकुम् मा उर्सिल्तु बिही इलैकुम् व यस्तख़्लिफ़ु रब्बी क़ौमन् ग़ै-रकुम् व ला तज़ुर्रू-नहू शैअन् इन-न रब्बी अ़ला कुल्लि शैइन् ह़फ़ीज़(57)व लम्मा जा-अ अम्रुना नज्जैना हूदंव् वल्लज़ी-न आ-मनू म-अ़हू बि-रह्मतिम् मिन्ना व नज्जैनाहुम् मिन् अ़ज़ाबिन् ग़लीज़(58)

तो उसी के ज़िम्मे है जिसने मुझे पैदा किया (फ़ा112) तो क्या तुम्हें अ़क़्ल नहीं।(51) (फ़ा113) और ऐ मेरी क़ौम अपने रब से माफ़ी चाहो (फ़ा114) फिर उसकी तरफ़ रुजूअ़ ला वह तुम पर ज़ोर का पानी भेजेगा और तुम में जितनी क़ुव्वत है उससे और ज़्यादा देगा (फ़ा115) और जुर्म करते हुए रूगरदानी न करो।(52) (फ़ा116) बोले ऐ हूद तुम कोई दलील लेकर हमारे पास न आए (फ़ा117) और हम ख़ाली तुम्हारे कहे से अपने ख़ुदाओं को छोड़ने के नहीं न तुम्हारी बात पर यक़ीन लायें।(53) हम तो यही कहते हैं कि हमारे किसी ख़ुदा की तुम्हें बुरी झपट पहुंची (फ़ा118) कहा मैं अल्लाह को गवाह करता हूं और तुम सब गवाह हो जाओ कि मैं बेज़ार हूं इन सबसे जिन्हें तुम अल्लाह के सिवा उसका शरीक ठहराते हो।(54) तुम सब मिलकर मेरा बुरा चाहो (फ़ा119) फिर मुझे मुहलत न दो।(55) (फ़ा120) मैंने अल्लाह पर भरोसा किया जो मेरा रब है और तुम्हारा रब कोई चलने वाला नहीं(फ़ा121) जिसकी चोटी उसके क़ब्ज़ए क़ुदरत में न हो (फ़ा122) बेशक मेरा रब सीधे रास्ते पर मिलता है।(56) फिर अगर तुम मुंह फेरो तो मैं तुम्हें पहुंचा चुका जो तुम्हारी तरफ़ लेकर भेजा गया (फ़ा123) और मेरा रब तुम्हारी जगह औरों को ले आएगा (फ़ा124)और तुम उसका कुछ न बिगाड़ सकोगे(फ़ा125)बेशक मेरा रब हर शय पर निगहबान है।(57) (फ़ा126) और जब हमारा हुक्म आया हमने हूद और उसके साथ के मुसलमानों को (फ़ा127) अपनी रहमत फ़रमा कर बचा लिया (फ़ा129) और उन्हें (फ़ा129) सख़्त अ़ज़ाब से नजात दी।(58)

(फ़ा112) जितने रसूल तशरीफ़ लाये सब ने अपनी क़ौमों से यही फ़रमाया और नसीहतें ख़ालिसा वही है जो किसी तमअ़ से न हो (फ़ा113) इतना समझ सको कि जो महज़ बे ग़रज़ नसीहत करता है वह यक़ीनन ख़ैर ख़्वाह और सच्चा है बातिल कार जो किसी को गुमराह करता है ज़रूर किसी न किसी ग़रज़ और किसी न किसी मक़सद से करता है उससे हक़ व बातिल में ब-आसानी तमीज़ की जा सकती है। (फ़ा114) ईमान लाकर जब क़ौमे आ़द ने हज़रत हूद अ़लैहिस्सलाम की दावत क़बूल न की तो अल्लाह ने उनके कुफ़्र के सबब तीन साल तक बारिश मौक़ूफ़ कर दी और निहायत शदीद क़हत नुमूदार हुआ और उनकी औरतों को बांझ कर दिया जब यह लोग बहुत परेशान हुए तो हज़रत हूद अ़लैहिस्सलाम ने वादा फ़रमाया कि अगर वह अल्लाह पर ईमान लायें और उसके रसूल की तस्दीक़ करें और उसके हुज़ूर तौबा व इस्तिग़फ़ार करें तो अल्लाह तआ़ला बारिश भेजेगा और उनकी ज़मीनों को सरसब्ज़ व शादाब करके ताज़ा ज़िन्दगी अता फ़रमाएगा और क़ुव्वत **(बक़िया सफ़हा 393 पर)**

وَتِلْكَ عَادٌ ۟ جَحَدُوْا بِاٰيٰتِ رَبِّهِمْ وَعَصَوْا رُسُلَهٗ وَاتَّبَعُوْٓا اَمْرَ كُلِّ جَبَّارٍ عَنِيْدٍ ۝ وَاُتْبِعُوْا فِيْ هٰذِهِ الدُّنْيَا لَعْنَةً وَّيَوْمَ الْقِيٰمَةِ ؕ اَلَآ اِنَّ عَادًا كَفَرُوْا
رَبَّهُمْ ؕ اَلَا بُعْدًا لِّعَادٍ قَوْمِ هُوْدٍ ۝ وَاِلٰى ثَمُوْدَ اَخَاهُمْ صٰلِحًا ۘ قَالَ يٰقَوْمِ اعْبُدُوا اللّٰهَ مَا لَكُمْ مِّنْ اِلٰهٍ غَيْرُهٗ ؕ هُوَ اَنْشَاَكُمْ مِّنَ الْاَرْضِ
وَاسْتَعْمَرَكُمْ فِيْهَا فَاسْتَغْفِرُوْهُ ثُمَّ تُوْبُوْٓا اِلَيْهِ ؕ اِنَّ رَبِّيْ قَرِيْبٌ مُّجِيْبٌ ۝ قَالُوْا يٰصٰلِحُ قَدْ كُنْتَ فِيْنَا مَرْجُوًّا قَبْلَ هٰذَآ اَتَنْهٰىنَآ اَنْ نَّعْبُدَ مَا يَعْبُدُ
اٰبَآؤُنَا وَاِنَّنَا لَفِيْ شَكٍّ مِّمَّا تَدْعُوْنَآ اِلَيْهِ مُرِيْبٍ ۝ قَالَ يٰقَوْمِ اَرَءَيْتُمْ اِنْ كُنْتُ عَلٰى بَيِّنَةٍ مِّنْ رَّبِّيْ وَاٰتٰىنِيْ مِنْهُ رَحْمَةً فَمَنْ
يَّنْصُرُنِيْ مِنَ اللّٰهِ اِنْ عَصَيْتُهٗ ۫ فَمَا تَزِيْدُوْنَنِيْ غَيْرَ تَخْسِيْرٍ ۝ وَيٰقَوْمِ هٰذِهٖ نَاقَةُ اللّٰهِ لَكُمْ اٰيَةً فَذَرُوْهَا تَاْكُلْ فِيْٓ اَرْضِ اللّٰهِ وَلَا تَمَسُّوْهَا

व तिल्–क आ़दुन् ज–ह़दू बि–आयाति रब्बिहिम् व अ़सौ रुसु–लहू वत्त–बअू अम्–र कुल्लि जब्बारिन् अ़नीद(59)व उत्बिअू फ़ी हाज़िहिद्दुन्या लअ्–नतंव् व यौमल् क़िया–मति अला इन्–न आ़दन् क–फ़रू रब्बहुम् अला बुअ्दल् लिआ़दिन् क़ौमि हूद(60)व इला समू–द अख़ाहुम् सालिहन् क़ा–ल या क़ौमि–अ्बुदुल्ला–ह मा लकुम् मिन् इलाहिन् ग़ैरुहू हु–व अन्श–अकुम् मिनल् अर्ज़ि वस्तअ्म–रकुम् फ़ीहा फ़स्तग़्फ़िरूहु सुम्–म तूबू इलैहि इन्–न रब्बी क़रीबुम् मुजीब (61)क़ालू या सालिहु क़द् कुन्–त फ़ीना मर्जुव्वन् क़ब्–ल हाज़ा अ–तन्हाना अन् नअ्बु–द मा यअ्बुदु आबाउना व इन्नना लफ़ी शक्किम् मिम्मा तद्अूना इलैहि मुरीब(62)क़ा–ल या क़ौमि अ–रऐतुम् इन् कुन्तु अ़ला बय्यि–नतिम् मिर्रब्बी व आतानी मिन्हु रह्–मतन् फ़मंय्यन्सुरुनी मिनल्लाहि इन् अ़सैतुहू फ़मा तज़ीदू–ननी ग़ै–र तख़्सीर(63)व या क़ौमि हाज़िही ना–क़तुल्लाहि लकुम् आ–यतन् फ़–ज़रूहा तअ्कुल् फ़ी अर्ज़िल्लाहि व ला त–मस्सूहा

और यह आ़द हैं (फ़ा130) कि अपने रब की आयतों से मुन्किर हुए और उसके रसूलों की नाफ़रमानी की और हर बड़े सरकश हटधर्म के कहने पर चले।(59) और उनके पीछे लगी इस दुनिया में लानत और क़ियामत के दिन सुन लो बेशक आ़द अपने रब से मुनकिर हुए अरे दूर हों आ़द हूद की क़ौम।(60) (रुकूअ़ 5) और समूद की तरफ़ उनकी हम क़ौम सालेह को (फ़ा131) कहा ऐ मेरी क़ौम अल्लाह को पूजो (फ़ा132) उसके सिवा तुम्हारा कोई मअ़बूद नहीं (फ़ा133) उसने तुम्हें ज़मीन से पैदा किया (फ़ा134) और उसमें तुम्हें बसाया (फ़ा135) तो उससे माफ़ी चाहो फिर उसकी तरफ़ रुजूअ़ लाओ बेशक मेरा रब क़रीब है दुआ़ सुनने वाला।(61) बोले ऐ सालेह इससे पहले तो तुम हममें होनहार मालूम होते थे (फ़ा136) क्या तुम हमें इससे मना करते हो कि अपने बाप दादा के मअ़बूदों को पूजें और बेशक जिस बात की तरफ़ हमें बुलाते हो हम उससे एक बड़े धोखा डालने वाले शक में हैं।(62) बोला ऐ मेरी क़ौम भला बताओ तो अगर मैं अपने रब की तरफ़ से रौशन दलील पर हूं और उसने मुझे अपने पास से रहमत बख़्शी (फ़ा137) तो मुझे उस से कौन बचाएगा अगर मैं उसकी नाफ़रमानी करूं (फ़ा138) तो तुम मुझे सिवा नक़सान के कुछ न बढ़ाओगे।(63) (फ़ा139) और ऐ मेरी क़ौम यह अल्लाह का नाक़ा है तुम्हारे लिए निशानी तो उसे छोड़ दो कि अल्लाह की ज़मीन में खाए और उसे बुरी तरह हाथ

(फ़ा130) यह ख़िताब है सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की उम्मत को और *तिल्–क* इशारा है क़ौमे आ़द की क़ुबूर व आसार की तरफ़। मक़सद यह है कि ज़मीन में चलो उन्हें देखो और इबरत हासिल करो। (फ़ा131) भेजा तो हज़रत सालेह अ़लैहिस्सलाम ने उन से। (फ़ा132) और उसकी वहदानियत मानो। (फ़ा133) सिर्फ़ वही मुस्तहिक़े इबादत है क्योंकि (फ़ा134) तुम्हारे जद् हज़रत आदम अ़लैहिस्सलाम को उससे पैदा करके और तुम्हारी नस्ल की असल नुत्फ़ों के माद्दों को इससे बना कर। (फ़ा135) और ज़मीन को तुम से आबाद किया ज़ह्हाक ने *इस्तअ्–म–र कुम्* के माना यह बयान किये हैं कि तुम्हें तवील उम्रें दीं हत्ता कि उनकी उम्रें तीन सौ बरस से लेकर हज़ार बरस तक की हुईं (फ़ा136) और हम उम्मीद करते थे कि तुम हमारे सरदार बनोगे क्योंकि आप कमज़ोरों की मदद करते थे फ़क़ीरों पर सख़ावत फ़रमाते थे जब आपने तौहीद की दावत दी और बुतों की बुराईयां बयान कीं तो क़ौम की उम्मीदें आप से मुन्क़तअ़ हो गईं और कहने लगे। (फ़ा137) हिकमत व नबुव्वत अता की। (फ़ा138) रिसालत की तबलीग़ और बुत परस्ती से रोकने में। (फ़ा139) यानी मुझे तुम्हारे ख़सारे का तजर्बा और ज़्यादा होगा।

بِسُوٓءٍ فَيَاْخُذَكُمْ عَذَابٌ قَرِيْبٌ ﴿٦٤﴾ فَعَقَرُوْهَا فَقَالَ تَمَتَّعُوْا فِيْ دَارِكُمْ ثَلٰثَةَ اَيَّامٍ ۭ ذٰلِكَ وَعْدٌ غَيْرُ مَكْذُوْبٍ ﴿٦٥﴾ فَلَمَّا جَآءَ اَمْرُنَا نَجَّيْنَا صٰلِحًا وَّالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مَعَهٗ بِرَحْمَةٍ مِّنَّا وَمِنْ خِزْيِ يَوْمِىِٕذٍ ۭ اِنَّ رَبَّكَ هُوَ الْقَوِيُّ الْعَزِيْزُ ﴿٦٦﴾ وَاَخَذَ الَّذِيْنَ ظَلَمُوا الصَّيْحَةُ فَاَصْبَحُوْا فِيْ دِيَارِهِمْ جٰثِمِيْنَ ﴿٦٧﴾ كَاَنْ لَّمْ يَغْنَوْا فِيْهَا ۭ اَلَآ اِنَّ ثَمُوْدَا۟ كَفَرُوْا رَبَّهُمْ ۭ اَلَا بُعْدًا لِّثَمُوْدَ ﴿٦٨﴾ وَلَقَدْ جَآءَتْ رُسُلُنَآ اِبْرٰهِيْمَ بِالْبُشْرٰى قَالُوْا سَلٰمًا ۭ قَالَ سَلٰمٌ فَمَا لَبِثَ اَنْ جَآءَ بِعِجْلٍ حَنِيْذٍ ﴿٦٩﴾ فَلَمَّا رَآ اَيْدِيَهُمْ لَا تَصِلُ اِلَيْهِ نَكِرَهُمْ وَاَوْجَسَ مِنْهُمْ خِيْفَةً ۭ قَالُوْا لَا تَخَفْ اِنَّآ اُرْسِلْنَآ اِلٰى قَوْمِ لُوْطٍ ﴿٧٠﴾ وَامْرَاَتُهٗ قَآىِٕمَةٌ فَضَحِكَتْ فَبَشَّرْنٰهَا بِاِسْحٰقَ ۙ وَمِنْ وَّرَآءِ اِسْحٰقَ يَعْقُوْبَ ﴿٧١﴾ قَالَتْ يٰوَيْلَتٰٓى ءَاَلِدُ وَاَنَا عَجُوْزٌ وَّهٰذَا بَعْلِيْ شَيْخًا ۭ

बिसूइन् फ़—यअ्खु—ज़कुम् अ़ज़ाबुन् क़रीब(64)फ़—अ़—क़रूहा फ़क़ा—ल त—मत्तअू फ़ी दारिकुम् सला—स़—त अय्यामिन् ज़ालि—क वअ्दुन् गै़रु मक्जूब(65)फ़—लम्मा जा—अ अम्रुना नज्जैना सालिहंव् वल्लज़ी—न आ—मनू म—अ़हू बिरह्मतिम् मिन्ना व मिन् ख़िज़्यि यौमिइज़िन् इन्—न रब्ब—क हुवल्क़विय्युल् अ़ज़ीज़(66)व अ—ख़ज़ल्लज़ी—न ज़—लमुस्सै—हतु फ़—अस्बहू फ़ी दियारिहिम् जासिमीन(67)क—अल्लम् यग़्नौ फ़ीहा अला इन्—न समू—द क—फ़रू रब्बहुम् अला बुअ्दल् लि—समूद(68)व ल—क़द् जाअत् रुसुलुना इब्राही—म बिल्बुश्रा क़ालू सलामन् क़ा—ल सलामुन् फ़मा लबि—स़ अन् जा—अ बि—अ़िज्लिन् हनीज़(69)फ़—लम्मा रआ ऐदि—यहुम् ला तसिलु इलैहि नकि—रहुम् व औ—ज—स मिन्हुम् ख़ी—फ़तन् क़ालू ला त—ख़फ़् इन्ना उर्सिल्ना इला क़ौमि लूत(70)वम्र—अतुहू क़ाइ—मतुन् फ़—ज़हिकत् फ़—बश्शर्नाहा बिइस्हा—क़ व मिंव् वराइ इस्हा—क़ यअ्कूब(71)क़ालत् यावै—लता अ—अलिदु व अना अ़जूज़ुंव् व हाज़ा बअ्ली शैख़न्

न लगाना कि तुम को नज़दीक अ़ज़ाब पहुंचेगा।(64) (फ़ा140) तो उन्होंने (फ़ा141) उसकी कोचें (पांव) काटीं तो सालेह ने कहा अपने घरों में तीन दिन और बरत लो (फ़ा142) यह वादा है कि झूठा न होगा।(65) (फ़ा143) फिर जब हमारा हुक्म आया हमने सालेह और उसके साथ के मुसलमानों को अपनी रहमत फ़रमा कर (फ़ा144) बचा लिया और उस दिन की रुसवाई से बेशक तुम्हारा रब क़वी इ़ज़्ज़त वाला है।(66) और ज़ालिमों को चिंघाड़ ने आ लिया (फ़ा145) तो सुबह अपने घरों में घुटने के बल पड़े रह गए।(67)गोया कभी यहां बसे ही न थे। सुन लो बेशक समूद अपने रब से मुनकिर हुए अरे लानत हो समूद पर।(68) (रुकूअ. 6) और बेशक हमारे फ़रिश्ते इब्राहीम के पास (फ़ा146) मुज़दा लेकर आए बोले सलाम कहा (फ़ा147) सलाम फिर कुछ देर न की कि एक बछड़ा भुना ले आए।(69) (फ़ा148) फिर जब देखा कि उनके हाथ खाने की तरफ़ नहीं पहुंचते उनको ऊपरी (ग़ैर) समझा और जी ही जी में उनसे डरने लगा बोले डरिये नहीं हम क़ौमे लूत की तरफ़ (फ़ा149) भेजे गए हैं।(70) और उसकी बीवी (फ़ा150) खड़ी थी वह हंसने लगी तो हमने उसे (फ़ा151) इसहाक़ की ख़ुशख़बरी दी और इसहाक़ के पीछे (फ़ा152) याक़ूब की।(71) (फ़ा153) बोली हाए ख़राबी क्या मेरे बच्चा होगा और मैं बूढ़ी हूं (फ़ा154) और यह हैं मेरे शौहर बूढ़े (फ़ा155)

(फ़ा140) क़ौमे समूद ने हज़रत सालेह अ़लैहिस्सलातु वस्सलाम से मोअ्जेज़ा तलब किया था (जिसका बयान सूरह अेअ्राफ़ में हो चुका है) आपने अल्लाह तआ़ला से दुआ़ की तो पत्थर से बहुक्मे इलाही नाक़ा (ऊंटनी) पैदा हुआ यह नाक़ा उनके लिए आयत व मोअ्जेज़ा था इस आयत में उस नाक़ा के मुतअ़ल्लिक़ अहकाम इरशाद फ़रमाये गए कि उसे ज़मीन में चरने दो और कोई आज़ार न पहुंचाओ वरना दुनिया ही में गिरिफ़्तारे अ़ज़ाब होगे और मोहलत न पाओगे। (फ़ा141) हुक्मे इलाही की मुख़ालफ़त की और चहार शम्बा को। (फ़ा142) यानी जुमअ़ः तक जो कुछ दुनिया का ऐश करना है कर लो शम्बा (सनीचर) को तुम पर अ़ज़ाब आएगा पहले रोज़ तुम्हारे चेहरे ज़र्द हो जायेंगे दूसरे रोज़ सुर्ख़ और तीसरे रोज़ यानी जुमअ़ः को सियाह और शम्बा (सनीचर) को अ़ज़ाब नाज़िल होगा। (फ़ा143) चुनांचे ऐसा ही हुआ।(फ़ा144) उन बलाओं से। (फ़ा145) यानी हौलनाक आवाज़ ने जिस की हैबत से उनके दिल फट गए और वह सब के सब मर गए। (फ़ा146) सादा रौ नौजवानों की हसीन शक्लों में हज़रत इसहाक़ व हज़रत याकूब अ़लैहिमुस्सलाम की पैदाईश का (फ़ा147) हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम ने (फ़ा148) मुफ़स्सिरीन ने कहा है कि हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम बहुत ही मेहमान नवाज़ थे बग़ैर मेहमान के खाना तनावुल **(बक़िया सफ़हा 393 पर)**

إِنَّ هَٰذَا لَشَيْءٌ عَجِيبٌ ۝ قَالُوا أَتَعْجَبِينَ مِنْ أَمْرِ اللَّهِ ۖ رَحْمَتُ اللَّهِ وَبَرَكَاتُهُ عَلَيْكُمْ أَهْلَ الْبَيْتِ ۚ إِنَّهُ حَمِيدٌ مَّجِيدٌ ۝ فَلَمَّا ذَهَبَ عَنْ إِبْرَاهِيمَ الرَّوْعُ وَجَاءَتْهُ الْبُشْرَىٰ يُجَادِلُنَا فِي قَوْمِ لُوطٍ ۝ إِنَّ إِبْرَاهِيمَ لَحَلِيمٌ أَوَّاهٌ مُّنِيبٌ ۝ يَا إِبْرَاهِيمُ أَعْرِضْ عَنْ هَٰذَا ۖ إِنَّهُ قَدْ جَاءَ أَمْرُ رَبِّكَ ۖ وَإِنَّهُمْ آتِيهِمْ عَذَابٌ غَيْرُ مَرْدُودٍ ۝ وَلَمَّا جَاءَتْ رُسُلُنَا لُوطًا سِيءَ بِهِمْ وَضَاقَ بِهِمْ ذَرْعًا وَقَالَ هَٰذَا يَوْمٌ عَصِيبٌ ۝ وَجَاءَهُ قَوْمُهُ يُهْرَعُونَ إِلَيْهِ وَمِن قَبْلُ كَانُوا يَعْمَلُونَ السَّيِّئَاتِ ۚ قَالَ يَا قَوْمِ هَٰؤُلَاءِ بَنَاتِي هُنَّ أَطْهَرُ لَكُمْ ۖ فَاتَّقُوا اللَّهَ وَلَا تُخْزُونِ فِي ضَيْفِي ۖ أَلَيْسَ مِنكُمْ رَجُلٌ رَّشِيدٌ ۝ قَالُوا لَقَدْ عَلِمْتَ مَا لَنَا فِي بَنَاتِكَ مِنْ حَقٍّ وَإِنَّكَ لَتَعْلَمُ مَا نُرِيدُ ۝ قَالَ لَوْ أَنَّ لِي بِكُمْ قُوَّةً أَوْ آوِي إِلَىٰ رُكْنٍ

इन्–न हाज़ा लशैउन् अ़जीब(72)क़ालू अ–तअ़्जबी–न मिन् अम्रिल्लाहि रह्मतुल्लाहि व ब–रकातुहू अ़लैकुम् अह्लल्बैति इन्नहू ह़मीदुम् मजीद(73)फ़–लम्मा ज़–ह–ब अ़न् इब्राहीमर् रौअु व जाअत्हुल् बुश्रा युजादिलुना फ़ी क़ौमि लूत़(74)इन्–न इब्राही–म ल–ह़लीमुन् अव्वाहुम् मुनीब(75)या इब्राहीमु अअ़्रिज़् अ़न् हाज़ा इन्नहू क़द् जा–अ अम्रु रब्बि–क व इन्नहुम् आती– हिम् अ़ज़ाबुन् ग़ैरु मर्दूद(76)व लम्मा जाअत् रुसुलुना लूतन् सी–अ बिहिम् व ज़ा–क़ बिहिम् ज़रअ़ंव् व क़ा–ल हाज़ा यौमुन् अ़सीब(77)व जा–अहू क़ौमुहू युह्रअ़ू–न इलैहि व मिन् क़ब्लु कानू यअ़्मलूनस्–सय्यिआति क़ा–ल या क़ौमि हाउलाइ बनाती हुन्–न अत़्हरु लकुम् फ़त्त– क़ुल्ला–ह व ला तुख़्ज़ूनि फ़ी ज़ैफ़ी अलै–स मिन्कुम् रजुलुर् रशीद(78)क़ालू लक़द् अ़लिम्–त मा लना फ़ी बनाति–क मिन् ह़क़्क़िन् व इन्न–क ल–तअ़्लमु मा नुरीद(79)क़ा–ल लौ अन्–न ली बिकुम् क़ुव्वतन् औ आवी इला रुक्निन्

बेशक यह तो अचम्भे की बात है।(72) फ़रिश्ते बोले क्या अल्लाह के काम का अचम्भा करती हो अल्लाह की रहमत और उसकी बरकतें तुम पर ऐ इस घर वालो बेशक (फ़ा156) वही है सब ख़ूबियों वाला इ़ज़्ज़त वाला।(73) फिर जब इब्राहीम का ख़ौफ़ ज़ायल हुआ और उसे ख़ुशख़बरी मिली हमसे क़ौमे लूत के बारे में झगड़ने लगा।(74) (फ़ा157) बेशक इब्राहीम तह़म्मुल वाला बहुत आहें करने वाला रुजूअ़ लाने वाला है(75) (फ़ा158) ऐ इब्राहीम इस ख़्याल में न पड़ बेशक तेरे रब का हुक्म आ चुका और बेशक उन पर अ़ज़ाब आने वाला है कि फेरा न जाएगा।(76) और जब लूत के पास हमारे फ़रिश्ते आए (फ़ा159) उसे इन का ग़म हुआ और इनके सबब दिल तंग हुआ और बोला यह बड़ी सख़्ती का दिन है।(77) (फ़ा160) और उसके पास उसकी क़ौम दौड़ती आई और उन्हें आगे ही से बुरे कामों की आदत पड़ी थी (फ़ा161) कहा ऐ क़ौम यह मेरी क़ौम की बेटियां हैं यह तुम्हारे लिए सुथरी हैं तो अल्लाह से डरो (फ़ा162) और मुझे मेरे मेहमानों में रुसवा न करो क्या तुम में एक आदमी भी नेक चलन नहीं।(78) बोले तुम्हें मालूम है कि तुम्हारी क़ौम की बेटियों में हमारा कोई हक़ नहीं (फ़ा163) और तुम ज़रूर जानते हो जो हमारी ख़्वाहिश है। (79) बोला ऐ काश मुझे तुम्हारे मुक़ाबिल ज़ोर होता या किसी मज़बूत पाए की

(फ़ा156) फ़रिश्तों के कलाम के माना यह हैं कि तुम्हारे लिए क्या जाये तअ़ज्जुब है तुम उस घर में हो जो मोअ़जेज़ात और ख़वारिके आदात और अल्लाह तआ़ला की रहमतों और बरकतों का मूरिद बना हुआ है। मसलाः इस आयत से साबित हुआ कि बीबियां अहले बैत में दाख़िल हैं (फ़ा157) यानी कलाम व सवाल करने लगा और हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलातु वस्सलाम का मुजादला यह था कि आपने फ़रिश्तों से फ़रमाया कि क़ौमे लूत की बस्तियों में अगर पचास ईमानदार हों तो भी उन्हें हलाक करोगे फ़रिश्तों ने कहा नहीं फ़रमाया अगर चालीस हों, उन्होंने कहा जब भी नहीं, आपने फ़रमाया अगर तीस हों उन्होंने कहा जब भी नहीं आप इस तरह फ़रमाते रहे यहां तक कि आप ने फ़रमाया अगर एक मर्द मुसलमान मौजूद हो तब हलाक कर दोगे उन्होंने कहा नहीं तो आपने फ़रमाया उस में लूत अ़लैहिस्सलाम हैं, इस पर फ़रिश्तों ने कहा हमें मालूम है जो वहां हैं हम हज़रत लूत अ़लैहिस्सलाम और उनके घर वालों को बचायेंगे सिवाए उनकी औरत के हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम का मक़सद यह था कि आप अ़ज़ाब में ताख़ीर चाहते थे ताकि उस बस्ती वालों को कुफ़्र व मआ़सी से बाज़ आने के लिए एक फ़ुरसत और मिल जाये चुनांचे हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम की सिफ़त में इरशाद होता है। (फ़ा158) उन सिफ़ात **(बक़िया सफ़ह़ा 393 पर)**

شَدِيْدٍ ﴿٨٠﴾ قَالُوْا يٰلُوْطُ اِنَّا رُسُلُ رَبِّكَ لَنْ يَّصِلُوْٓا اِلَيْكَ فَاَسْرِ بِاَهْلِكَ بِقِطْعٍ مِّنَ الَّيْلِ وَلَا يَلْتَفِتْ مِنْكُمْ اَحَدٌ اِلَّا امْرَاَتَكَ ؕ اِنَّهٗ مُصِيْبُهَا
مَآ اَصَابَهُمْ ؕ اِنَّ مَوْعِدَهُمُ الصُّبْحُ ؕ اَلَيْسَ الصُّبْحُ بِقَرِيْبٍ ﴿٨١﴾ فَلَمَّا جَآءَ اَمْرُنَا جَعَلْنَا عَالِيَهَا سَافِلَهَا وَاَمْطَرْنَا عَلَيْهَا حِجَارَةً مِّنْ سِجِّيْلٍ ۙ مَّنْضُوْدٍ ﴿٨٢﴾
مُّسَوَّمَةً عِنْدَ رَبِّكَ ؕ وَمَا هِيَ مِنَ الظّٰلِمِيْنَ بِبَعِيْدٍ ﴿٨٣﴾ وَاِلٰى مَدْيَنَ اَخَاهُمْ شُعَيْبًا ؕ قَالَ يٰقَوْمِ اعْبُدُوا اللّٰهَ مَا لَكُمْ مِّنْ اِلٰهٍ غَيْرُهٗ ؕ وَلَا
تَنْقُصُوا الْمِكْيَالَ وَالْمِيْزَانَ اِنِّيْٓ اَرٰىكُمْ بِخَيْرٍ وَّاِنِّيْٓ اَخَافُ عَلَيْكُمْ عَذَابَ يَوْمٍ مُّحِيْطٍ ﴿٨٤﴾ وَيٰقَوْمِ اَوْفُوا الْمِكْيَالَ وَالْمِيْزَانَ بِالْقِسْطِ وَلَا تَبْخَسُوا
النَّاسَ اَشْيَآءَهُمْ وَلَا تَعْثَوْا فِي الْاَرْضِ مُفْسِدِيْنَ ﴿٨٥﴾ بَقِيَّتُ اللّٰهِ خَيْرٌ لَّكُمْ اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ۚ وَمَآ اَنَا عَلَيْكُمْ بِحَفِيْظٍ ﴿٨٦﴾ قَالُوْا يٰشُعَيْبُ اَصَلٰوتُكَ

शदीद(80)क़ालू या लूतु इन्ना रुसुलु रब्बि–क लंय्यसिलू इलै–क फ़–अस्रि बि–अह्लि–क बिक़ित्अिम् मिनल्लैलि व ला यल्तफ़ित् मिन्कुम् अ–हदुन् इल्लम्र–अ–त–क इन्नहू मुसीबुहा मा असा–बहुम् इन्–न मौअि–द हुमुस्सुबहु अलै–सस्सुबहु बि–क़रीब(81)फ़–लम्मा जा–अ अम्रुना ज–अल्ना आलि–यहा साफ़ि–लहा व अम्तरना अलैहा हिजा–रतम् मिन् सिज्जीलिम् मन्जूद (82)मुसव्व–म–तन् अिन्–द रब्बि–क व मा हि–य मिनज़्ज़ालिमी–न बि–बअीद(83)व इला मदय–न अख़ाहुम् शुअैबन् क़ा–ल या क़ौमिअ्बुदुल्ला–ह मा लकुम् मिन् इलाहिन् ग़ैरुहू व ला तन्क़ुसुल् मिक्या–ल वल्मीज़ा–न इन्नी अराकुम् बिख़ैरिंव् व इन्नी अख़ाफ़ु अलैकुम् अज़ा–ब यौमिम् मुहीत(84)व या क़ौमि औफ़ुल् मिक्या–ल वल्मीज़ा–न बिल्क़िस्ति व ला तब्ख़सुन्ना–स अश्या–अहुम् व ला तअ्सौ फ़िल्अर्ज़ि मुफ़्सिदीन(85)बक़िय्यतुल्लाहि ख़ैरुल् लकुम् इन् कुन्तुम् मुअमिनी–न व मा अना अलैकुम् बि–हफ़ीज़(86)क़ालू या शुअैबु अ–सलातु–क

पनाह लेता।(80) (फ़ा164) फ़रिश्ते बोले ऐ लूत हम तुम्हारे रब के भेजे हुए हैं (फ़ा165) वह तुम तक नहीं पहुंच सकते (फ़ा166) तो अपने घर वालों को रातों रात ले जाओ और तुम में कोई पीठ फेर कर न देखे (फ़ा167) सिवाए तुम्हारी औरत के उसे भी वहीं पहुंचना है जो उन्हें पहुंचेगा (फ़ा168) बेशक उनका वादा सुबह के वक़्त है (फ़ा169) क्या सुबह क़रीब नहीं।(81) फिर जब हमारा हुक्म आया हमने उस बस्ती के ऊपर को उसका नीचा कर दिया (फ़ा170) और उस पर कंकर के पत्थर लगातार बरसाये।(82)जो निशान किये हुए तेरे रब के पास हैं (फ़ा171) और वह पत्थर कुछ ज़ालिमों से दूर नहीं।(83) (फ़ा172) (रुकूअ़ 7) और (फ़ा173) मदयन की तरफ़ उन के हम-क़ौम शुऐब को (फ़ा174) कहा ऐ मेरी क़ौम अल्लाह को पूजो उसके सिवा तुम्हारा कोई मअ्बूद नहीं (फ़ा175) और नाप और तौल में कमी न करो बेशक मैं तुम्हें आसूदा हाल देखता हूं (फ़ा176) और मुझे तुम पर घेर लेने वाले दिन के अ़ज़ाब का डर है।(84) (फ़ा177) और ऐ मेरी क़ौम नाप और तौल इंसाफ़ के साथ पूरी करो और लोगों को उनकी चीज़ें घटा कर न दो और ज़मीन में फ़साद मचाते न फिरो।(85) अल्लाह का दिया जो बच रहे वह तुम्हारे लिए बेहतर है अगर तुम्हें यक़ीन हो (फ़ा178) और मैं कुछ तुम पर निगहबान नहीं।(86) (फ़ा179) बोले ऐ शुऐब क्या तुम्हारी नमाज़ तुम्हें

(फ़ा164) यानी मुझे अगर तुम्हारे मुक़ाबला की ताक़त होती या ऐसा क़बीला रखता जो मेरी मदद करता तो तुम से मुक़ाबला व मुक़ातला करता। हज़रत लूत अ़लैहिस्सलाम ने अपने मकान का दरवाज़ा बन्द कर लिया था और अन्दर से यह गुफ़्तगू फ़रमा रहे थे क़ौम ने चाहा कि दीवार तोड़े फ़रिश्तों ने आपका रन्ज व इज़्तेराब देखा तो (फ़ा165) तुम्हारा पाया मज़बूत है हम उन लोगों को अ़ज़ाब करने के लिए आये हैं तुम दरवाज़ा खोल दो और हमें और उन्हें छोड़ दो (फ़ा166) और तुम्हें कुछ ज़रर नहीं पहुंचा सकते, हज़रत ने दरवाज़ा खोल दिया क़ौम के लोग मकान में घुस आये हज़रत जिबरील ने बहुक्मे इलाही अपना बाज़ू उनके मुंह पर मारा सब अन्धे हो गए और हज़रत लूत अ़लैहिस्सलाम के मकान से निकल कर भागे उन्हें रास्ता नज़र नहीं आता था और यह कहते जाते थे हाए हाए लूत के घर में बड़े जादूगर हैं उन्होंने हमें जादू कर दिया फ़रिश्तों ने हज़रत लूत अ़लैहिस्सलातु वस्सलाम से कहा (फ़ा167) इस तरह आपके घर के तमाम लोग चले जायें (फ़ा168) हज़रत लूत अ़लैहिस्सलाम ने कहा यह अ़ज़ाब कब होगा हज़रत जिबरील ने कहा। (फ़ा169) हज़रत लूत अ़लैहिस्सलाम ने कहा कि मैं तो इससे जल्दी चाहता हूं हज़रत जिबरील अ़लैहिस्सलाम ने कहा (फ़ा170) यानी उलट दिया इस तरह कि हज़रत जिबरील अ़लैहिस्सलाम ने क़ौमे लूत के शहर जिस तबक़ए ज़मीन पर थे उसके नीचे अपना बाज़ू डाला और उन पांचों शहरों को जिन **(बक़िया सफ़हा 394 पर)**

تَأْمُرُكَ أَنْ نَتْرُكَ مَا يَعْبُدُ آبَاؤُنَا أَوْ أَنْ نَفْعَلَ فِي أَمْوَالِنَا مَا نَشَاءُ ۖ إِنَّكَ لَأَنْتَ الْحَلِيمُ الرَّشِيدُ ﴿87﴾ قَالَ يَا قَوْمِ أَرَأَيْتُمْ إِنْ كُنْتُ عَلَىٰ بَيِّنَةٍ مِنْ رَبِّي

وَرَزَقَنِي مِنْهُ رِزْقًا حَسَنًا ۚ وَمَا أُرِيدُ أَنْ أُخَالِفَكُمْ إِلَىٰ مَا أَنْهَاكُمْ عَنْهُ ۚ إِنْ أُرِيدُ إِلَّا الْإِصْلَاحَ مَا اسْتَطَعْتُ ۚ وَمَا تَوْفِيقِي إِلَّا بِاللَّهِ ۚ عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ

وَإِلَيْهِ أُنِيبُ ﴿88﴾ وَيَا قَوْمِ لَا يَجْرِمَنَّكُمْ شِقَاقِي أَنْ يُصِيبَكُمْ مِثْلُ مَا أَصَابَ قَوْمَ نُوحٍ أَوْ قَوْمَ هُودٍ أَوْ قَوْمَ صَالِحٍ ۚ وَمَا قَوْمُ لُوطٍ مِنْكُمْ بِبَعِيدٍ ﴿89﴾ وَاسْتَغْفِرُوا

رَبَّكُمْ ثُمَّ تُوبُوا إِلَيْهِ ۚ إِنَّ رَبِّي رَحِيمٌ وَدُودٌ ﴿90﴾ قَالُوا يَا شُعَيْبُ مَا نَفْقَهُ كَثِيرًا مِمَّا تَقُولُ وَإِنَّا لَنَرَاكَ فِينَا ضَعِيفًا ۖ وَلَوْلَا رَهْطُكَ لَرَجَمْنَاكَ ۖ وَمَا أَنْتَ

عَلَيْنَا بِعَزِيزٍ ﴿91﴾ قَالَ يَا قَوْمِ أَرَهْطِي أَعَزُّ عَلَيْكُمْ مِنَ اللَّهِ وَاتَّخَذْتُمُوهُ وَرَاءَكُمْ ظِهْرِيًّا ۖ إِنَّ رَبِّي بِمَا تَعْمَلُونَ مُحِيطٌ ﴿92﴾ وَيَا قَوْمِ اعْمَلُوا عَلَىٰ مَكَانَتِكُمْ

तअ्मुरु–क अन् नत्रु–क मा यअ्बुदु आबाउना औ अन् नफ़्–अ़–ल फ़ी अम्वालिना मा नशाउ इन्न–क ल–अन्तल् ह़लीमुर् रशीद(87)क़ा–ल या क़ौमि अ–रऐतुम् इन् कुन्तु अ़ला बय्यि– नतिम् मिर्रब्बी व र–ज़–क़नी मिन्हु रिज़्क़न् ह़–स–नन् व मा उरीदु अन् उख़ालि–फ़कुम् इला मा अन्हाकुम् अ़न्हु इन् उरीदु इल्लल् इस्ला–ह मस्त–तअ़्तु व मा तौफ़ीक़ी इल्ला बिल्लाहि अ़लैहि तवक्कल्तु व इलैहि उनीब(88)व या क़ौमि ला यज्रिमन्नकुम् शिक़ाक़ी अंय्युसी–बकुम् मिस्लु मा असा–ब क़ौ–म नूहिन् औ क़ौ–म हूदिन् औ क़ौ–म सालिहिन् व मा क़ौमु लूतिम्– मिन्कुम् बि–बअ़ीद(89)वस्तग़्फ़िरु रब्बकुम् सुम्–म तूबू इलैहि इन्–न रब्बी रह़ीमुंव् वदूद(90)क़ालू या शुअ़ैबु मा नफ़्क़हु कसीरम् मिम्मा तक़ूलु व इन्ना ल–नरा–क फ़ीना ज़अ़ीफ़न् व लौला रह्तु–क ल–र–जम्ना–क व मा अन्–त अ़लैना बि–अ़ज़ीज़(91)क़ा–ल या क़ौमि अ–रह्ती अ–अ़ज़्ज़ु अ़लैकुम् मिनल्लाहि वत्तख़ज़्तुमूहु वरा–अकुम् ज़िह्रिय्यन् इन्–न रब्बी बिमा तअ़्मलू–न मुह़ीत(92)व या क़ौमिअ़्–मलू अ़ला मका–नतिकुम्

यह हुक्म देती है कि हम अपने बाप दादा के ख़ुदाओं को छोड़ दें (फ़ा180) या अपने माल में जो चाहें न करें (फ़ा181) हां जी तुम्हीं बड़े अक़्लमन्द नेक चलन हो।(87) कहा ऐ मेरी क़ौम भला बताओ तो अगर मैं अपने रब की तरफ़ से एक रौशन दलील पर हूं (फ़ा182) और उसने मुझे अपने पास से अच्छी रोज़ी दी (फ़ा183) और मैं नहीं चाहता हूं कि जिस बात से तुम्हें मना करता हूं आप उसका ख़िलाफ़ करने लगूं (फ़ा184) मैं तो जहां तक बने संवारना ही चाहता हूं और मेरी तौफ़ीक़ अल्लाह ही की तरफ़ से है मैंने उसी पर भरोसा किया और उसी की तरफ़ रुजूअ़् होता हूं।(88) और ऐ मेरी क़ौम तुम्हें मेरी ज़िद यह न कमवा दे कि तुम पर पड़े जो पड़ा था नूह की क़ौम या हूद की क़ौम या सालेह़ की क़ौम पर और लूत की क़ौम तो कुछ तुम से दूर नहीं।(89) (फ़ा185) और अपने रब से माफ़ी चाहो फिर उसकी तरफ़ रुजूअ़् लाओ बेशक मेरा रब मेहरबान मुहब्बत वाला है।(90) बोले ऐ शुऐब हमारी समझ में नही आतीं तुम्हारी बहुत सी बातें और बेशक हम तुम्हें अपने में कमज़ोर देखते हैं (फ़ा186) और अगर तुम्हारा कुम्बा न होता (फ़ा187) तो हमने तुम्हें पथराव कर दिया होता और कुछ हमारी निगाह में तुम्हें इज़्ज़त नहीं।(91) कहा ऐ मेरी क़ौम क्या तुम पर मेरे कुम्बा का दबाव अल्लाह से ज़्यादा है (फ़ा188) और उसे तुमने अपनी पीठ के पीछे डाल रखा (फ़ा189) बेशक जो कुछ तुम करते हो सब मेरे रब के बस में है।(92) और ऐ क़ौम तुम अपनी जगह अपना काम किये जाओ

(फ़ा180) बुत परस्ती न करें। (फ़ा181) मतलब यह था कि हम अपने माल के मुख़्तार हैं चाहे कम नापें चाहे कम तौलें। (फ़ा182) बसीरत व हिदायत पर (फ़ा183) यानी नबुव्वत व रिसालत या माल हलाल और हिदायत व मअ़्रेफ़त तो यह कैसे हो सकता है कि मैं तुम्हें बुत परस्ती और गुनाहों से मना न करूं क्योंकि अम्बिया इसी लिए भेजे जाते हैं। (फ़ा184) इमाम फ़ख़रुद्दीन राज़ी अ़लैहिर्रहमा ने फ़रमाया कि क़ौम ने हज़रत शुऐब अ़लैहिस्सलाम के हलीम व रशीद होने का एतेराफ़ किया था और उनका यह कलाम इस्तेहज़ा न था बल्कि मुद्दआ़ यह था कि आप बावजूद हिल्म व कमाले अक़्ल के हम को अपने माल में अपने हस्बे मर्ज़ी तसर्रुफ़ करने से क्यों मना फ़रमाते हैं इसका जवाब जो हज़रत शुऐब अ़लैहिस्सलाम ने फ़रमाया उसका हासिल यह है कि जब तुम मेरे कमाले अक़्ल के मोअ़्तरिफ़ हो तो तुम्हें यह समझ लेना चाहिए कि मैंने अपने लिए जो बात पसन्द की है वह वही होगी जो सब से बेहतर हो और वह ख़ुदा की तौहीद और नाप तौल में तर्के ख़ियानत है मैं इसका पाबन्दी **(बक़िया सफ़हा 383 पर)**

اِنِّیْ عَامِلٌ ؕ سَوْفَ تَعْلَمُوْنَ ۙ مَنْ یَّاْتِیْهِ عَذَابٌ یُّخْزِیْهِ وَ مَنْ هُوَ كَاذِبٌ ؕ وَ ارْتَقِبُوْۤا اِنِّیْ مَعَكُمْ رَقِیْبٌ ﴿۹۳﴾ وَ لَمَّا جَآءَ اَمْرُنَا نَجَّیْنَا شُعَیْبًا وَّ الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا مَعَهٗ بِرَحْمَةٍ مِّنَّا وَ اَخَذَتِ الَّذِیْنَ ظَلَمُوا الصَّیْحَةُ فَاَصْبَحُوْا فِیْ دِیَارِهِمْ جٰثِمِیْنَ ﴿۹۴﴾ كَاَنْ لَّمْ یَغْنَوْا فِیْهَا ؕ اَلَا بُعْدًا لِّمَدْیَنَ كَمَا بَعِدَتْ ثَمُوْدُ ﴿۹۵﴾ وَ لَقَدْ اَرْسَلْنَا مُوْسٰى بِاٰیٰتِنَا وَ سُلْطٰنٍ مُّبِیْنٍ ﴿۹۶﴾ اِلٰى فِرْعَوْنَ وَ مَلَاۡئِهٖ فَاتَّبَعُوْۤا اَمْرَ فِرْعَوْنَ ۚ وَ مَاۤ اَمْرُ فِرْعَوْنَ بِرَشِیْدٍ ﴿۹۷﴾ یَقْدُمُ قَوْمَهٗ یَوْمَ الْقِیٰمَةِ فَاَوْرَدَهُمُ النَّارَ ؕ وَ بِئْسَ الْوِرْدُ الْمَوْرُوْدُ ﴿۹۸﴾ وَ اُتْبِعُوْا فِیْ هٰذِهٖ لَعْنَةً وَّ یَوْمَ الْقِیٰمَةِ ؕ بِئْسَ الرِّفْدُ الْمَرْفُوْدُ ﴿۹۹﴾ ذٰلِكَ مِنْ اَنْۢبَآءِ الْقُرٰى نَقُصُّهٗ عَلَیْكَ مِنْهَا قَآىٕمٌ وَّ حَصِیْدٌ ﴿۱۰۰﴾ وَ مَا ظَلَمْنٰهُمْ وَ لٰكِنْ ظَلَمُوْۤا اَنْفُسَهُمْ فَمَاۤ اَغْنَتْ عَنْهُمْ اٰلِهَتُهُمُ الَّتِیْ یَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ مِنْ شَیْءٍ لَّمَّا جَآءَ اَمْرُ

इन्नी आमिलुन् सौ–फ़ तअ्–लमू–न मंय्यअ्तीहि अ़ज़ाबुंय्युख़्ज़ीहि व मन् हु–व काज़िबुन् वर्तक़िबू इन्नी म–अ़कुम् रक़ीब(93)व लम्मा जा–अ अम्रुना नज्जैना शुअ़ैबंव् वल्लज़ी–न आ–मनू म–अ़हू बिरह्मतिम् मिन्ना व अ–ख़–ज़ तिल्लज़ी–न ज़–लमुस् सै–हतु फ़–अस्बहू. फ़ी दियारिहिम् जासिमीन(94)क–अल्लम् यग़्नौ फ़ीहा अला बुअ्दल् लि–मदय–न कमा बअ़िदत् समूद(95)व ल–क़द् अर्सल्ना मूसा बिआया–तिना व सुल्तानिम् मुबीन(96)इला फ़िर्औ–न व म–लइही फ़त्त–बअू अम्–र फ़िर्औ–न व मा अम्रु फ़िर्औ–न बि–रशीद(97)यक़्दुमु क़ौ–महू यौमल् क़िया–मति फ़औ–र–द हुमुन्ना–र व बिअ्सल् विर्दुल् मौरूद(98)व उत्बिअू फ़ी हाज़िही लअ्– नतंव् व यौमल् क़िया–मति बिअ्–सर्रिफ़्दुल् मर्फ़ूद(99)ज़ालि–क मिन् अम्बाइल्क़ुरा नक़ुस्सुहू अ़लै–क मिन्हा क़ाइमुंव् व हसीद(100)व मा ज़–लम्नाहुम् व लाकिन् ज़–लमू अन्फ़ु–सहुम् फ़मा अग़्नत् अ़न्हुम् आलि–हतुहुमुल् लती यदअू–न मिन् दूनिल्लाहि मिन् शैइल् लम्मा जा–अ अम्रु

मैं अपना काम करता हूं अब जानना चाहते हो किस पर आता है वह अ़ज़ाब कि उसे रुसवा करेगा और कौन झूठा है(फ़ा190)और इन्तेज़ार करो(फ़ा191)मैं भी तुम्हारे साथ इन्तेज़ार में हूं।(93)और जब (फ़ा192)हमारा हुक्म आया हमने शुऐब और उसके साथ के मुसलमानों को अपनी रहमत फ़रमा कर बचा लिया और ज़ालिमों को चिंघाड़ ने आ लिया(फ़ा193)तो सुबह अपने घरों में घुटनों के बल पड़े रह गए।(94) गोया कभी वहां बसे ही न थे अरे दूर हो मदयन जैसे दूर हुए समूद।(95)(फ़ा194) (रुकूअ़ 8) और बेशक हमने मूसा को अपनी आयतों (फ़ा195) और सरीह ग़लबे के साथ।(96) फ़िरऔन और उसके दरबारियों की तरफ़ भेजा तो वह फ़िरऔन के कहने पर चले (फ़ा196) और फ़िरऔन का काम रास्ती का न था।(97) (फ़ा197) अपनी क़ौम के आगे होगा क़ियामत के दिन तो उन्हें दोज़ख़ में ला उतारेगा (फ़ा198) और वह क्या ही बुरा घाट उतरने का।(98) और उनके पीछे पड़ी इस जहान में लानत और क़ियामत के दिन (फ़ा199) क्या ही बुरा इनाम जो उन्हें मिला।(99) यह बस्तियों (फ़ा200) की ख़बरें हैं तुम्हें सुनाते हैं (फ़ा201) उन में कोई खड़ी है (फ़ा202) और कोई कट गई।(100) (फ़ा203) और हमने उन पर ज़ुल्म न किया बल्कि ख़ुद उन्होंने (फ़ा204) अपना बुरा किया तो उनके मअ़्बूद जिन्हें (फ़ा205) अल्लाह के सिवा पूजते थे उनके कुछ काम न आए (फ़ा206) जब तुम्हारे रब का

(फ़ा190) अपने दआवी में यानी तुम्हें जल्द मालूम हो जाएगा कि मैं हक़ पर हूं या तुम और अ़ज़ाबे इलाही से शक़ी की शक़ावत ज़ाहिर हो जाएगी। (फ़ा191) आ़क़िबत अमूर और अन्जाम-कार का। (फ़ा192) उनके अ़ज़ाब और हलाक के लिए (फ़ा193) हज़रत जिबरील अ़लैहिस्सलाम ने हैबतनाक आवाज़ से कहा *मू तू जमीअ़न्* सब मर जाओ इस आवाज़ से दहशत से उनके दम निकल गए और सब मर गए। (फ़ा194) अल्लाह की रहमत से हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा ने फ़रमाया कि कभी दो उम्मतें एक ही अ़ज़ाब में मुब्तला नहीं की गईं बजुज़ हज़रत शुऐब व सालेह अ़लैहिमुस्सलाम की उम्मतों के लेकिन क़ौमे सालेह को उनके नीचे से हौलनाक आवाज़ ने हलाक किया और क़ौमे शुऐब को ऊपर से। (फ़ा195) यानी मोअजेज़ात (फ़ा196) और कुफ़्र में मुब्तला हुए और हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम पर ईमान न लाये। (फ़ा197) वह खुली गुमराही में था क्योंकि बावजूद बशर होने के ख़ुदाई का दावा करता था और एलानिया ऐसे .ज़ुल्म और ऐसी सितमगारियां करता था जिसका शैतानी काम होना ज़ाहिर और यक़ीनी है वह कहां और ख़ुदाई कहां और हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलातु वस्सलाम के साथ रुश्द व हक़्क़ानियत थी आपकी सच्चाई की दलीलें आयाते ज़ाहिरा व मोअ.्जेज़ाते बाहरा वह लोग मुआ़इना कर चुके थे फिर भी उन्होंने आप **(बक़िया सफ़हा 391 पर)**

رَبِّكَ ۭ وَمَا زَادُوْهُمْ غَيْرَ تَتْبِيْبٍ ﴿١٠١﴾ وَكَذٰلِكَ اَخْذُ رَبِّكَ اِذَآ اَخَذَ الْقُرٰى وَهِىَ ظَالِمَةٌ ۭ اِنَّ اَخْذَهٗٓ اَلِيْمٌ شَدِيْدٌ ﴿١٠٢﴾ اِنَّ فِىْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً لِّمَنْ خَافَ
عَذَابَ الْاٰخِرَةِ ۭ ذٰلِكَ يَوْمٌ مَّجْمُوْعٌ ۙ لَّهُ النَّاسُ وَذٰلِكَ يَوْمٌ مَّشْهُوْدٌ ﴿١٠٣﴾ وَمَا نُؤَخِّرُهٗٓ اِلَّا لِاَجَلٍ مَّعْدُوْدٍ ﴿١٠٤﴾ يَوْمَ يَاْتِ لَا تَكَلَّمُ نَفْسٌ اِلَّا بِاِذْنِهٖ ۚ
فَمِنْهُمْ شَقِيٌّ وَّسَعِيْدٌ ﴿١٠٥﴾ فَاَمَّا الَّذِيْنَ شَقُوْا فَفِى النَّارِ لَهُمْ فِيْهَا زَفِيْرٌ وَّشَهِيْقٌ ﴿١٠٦﴾ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا مَا دَامَتِ السَّمٰوٰتُ وَالْاَرْضُ اِلَّا مَا شَآءَ رَبُّكَ ۭ
اِنَّ رَبَّكَ فَعَّالٌ لِّمَا يُرِيْدُ ﴿١٠٧﴾ وَاَمَّا الَّذِيْنَ سُعِدُوْا فَفِى الْجَنَّةِ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا مَا دَامَتِ السَّمٰوٰتُ وَالْاَرْضُ اِلَّا مَا شَآءَ رَبُّكَ ۭ عَطَآءً غَيْرَ مَجْذُوْذٍ ﴿١٠٨﴾
فَلَا تَكُ فِىْ مِرْيَةٍ مِّمَّا يَعْبُدُ هٰٓؤُلَاۗءِ ۭ مَا يَعْبُدُوْنَ اِلَّا كَمَا يَعْبُدُ اٰبَاۗؤُهُمْ مِّنْ قَبْلُ ۭ وَاِنَّا لَمُوَفُّوْهُمْ نَصِيْبَهُمْ غَيْرَ مَنْقُوْصٍ ﴿١٠٩﴾ وَلَقَدْ اٰتَيْنَا مُوْسَى

रब्बि–क व मा ज़ादूहुम् गै़–र तत्बीब(101)व कज़ालि–क अख़्ज़ु रब्बि–क इज़ा अ–ख़–ज़ल्कुरा व हि–य ज़ालि–मतुन् इन्–न अख़्–ज़हू अलीमुन् शदीद(102)इन्–न फ़ी ज़ालि–क ल–आय–तल् लिमन् ख़ा–फ़ अ़ज़ाबल् आख़ि–रति ज़ालि–क यौमुम् मज्मूउ़ल् लहुन्नासु व ज़ालि–क यौमुम् मश्हूद(103)व मा नुअख़्ख़िरुहू इल्ला लि–अ–जलिम् मअ़्दूद(104)यौ–म यअ्ति ला त–कल्लमु नफ़्सुन् इल्ला बि–इज़्निही फ़मिन्हुम् शक़िय्युंव् व सई़द(105)फ़–अम्मल्लज़ी–न शक़ू फ़फ़िन्नारि लहुम् फ़ीहा ज़फ़ीरुंव् व शहीक़्(106)ख़ालिदी–न फ़ीहा मा दा–मतिस्समावातु वल्अर्ज़ु इल्ला मा शा–अ रब्बु–क इन्–न रब्ब–क फ़अ़्–आलुल् लिमा युरीद(107)व अम्मल् लज़ी–न सुइ़दू फ़फ़िल् जन्नति ख़ालिदी–न फ़ीहा मा दा–मतिस् समावातु वल्अर्ज़ु इल्ला मा शा–अ रब्बु–क अ़ताअन् गै़–र मज्ज़ूज़(108)फ़ला तकु फ़ी मिर्यतिम् मिम्मा यअ़्बुदु हाउलाइ मा यअ़्बुदू–न इल्ला कमा यअ़्बुदु आबाउहुम् मिन् क़ब्लु व इन्ना लमुवफ़्फ़ूहुम् नसी–बहुम् गै़–र मन्क़ूस (109)व ल–क़द् आतैना मूसल्

हुक्म आया और उन (फ़ा207) से उन्हें हलाक के सिवा कुछ न बढ़ा।(101) और ऐसी ही पकड़ है तेरे रब की जब बस्तियों को पकड़ता है उनके ज़ुल्म पर बेशक उसकी पकड़ दर्दनाक करी है।(102) (फ़ा208) बेशक उसमें निशानी (फ़ा209) है उसके लिए जो आख़िरत के अ़ज़ाब से डरे वह दिन है जिस में सब लोग (फ़ा210) इकट्ठे होंगे और वह दिन हाज़िरी का है।(103) (फ़ा211) और हम उसे (फ़ा212) पीछे नहीं हटाते मगर एक गिनी हुई मुद्दत के लिए।(104) (फ़ा213) जब वह दिन आएगा कोई बे हुक्मे ख़ुदा बात न करेगा (फ़ा214) तो उनमें कोई बदबख़्त है और कोई ख़ुश नसीब।(105) (फ़ा215) तो वह जो बदबख़्त हैं वह तो दोज़ख़ में है वह उसमें गधे की तरह रेंकेंगे।(106) वह उसमें रहेंगे जब तक आसमान व ज़मीन रहें मगर जितना तुम्हारे रब ने चाहा (फ़ा216) बेशक तुम्हारा रब जब जो चाहे करे।(107) और वह जो ख़ुश नसीब हुए वह जन्नत में हैं हमेशा उसमें रहेंगे जब तक आसमान व ज़मीन रहें मगर जितना तुम्हारे रब ने चाहा (फ़ा217) यह बख़्शिश है कभी ख़त्म न होगी।(108) तो ऐ सुनने वाले धोखा में न पड़ उससे जिसे यह काफ़िर पूजते हैं (फ़ा218) यह वैसा ही पूजते हैं जैसा पहले उन के बाप दादा पूजते थे (फ़ा219) और बेशक हम उनका हिस्सा उन्हें पूरा फेर देंगे जिस में कमी न होगी।(109) (रुकूअ़ 9) और बेशक हमने मूसा को

(फ़ा207) बुतों और झूठे मअ़्बूदों। (फ़ा208) तो हर ज़ालिम को चाहिये कि इन वाक़िआ़त से इबरत पकड़े और तौबा में जल्दी करे। (फ़ा209) इबरत व नसीहत। (फ़ा210) अगले पिछले हिसाब के लिए (फ़ा211) जिस में आसमान वाले और ज़मीन वाले सब हाज़िर होंगे। (फ़ा212) यानी रोज़े क़ियामत को। (फ़ा213) यानी जो मुद्दत हमने बक़ाए दुनिया के लिए मुक़र्रर फ़रमाई है उसके तमाम होने तक। (फ़ा214) तमाम ख़ल्क़ साकित होगी क़ियामत का दिन बहुत तवील होगा इसमें अहवाल मुख़्तलिफ़ होंगे बाज़ अहवाल में तो शिद्दते हैबत से किसी को बे इज़्ने इलाही बात ज़बान पर लाने की क़ुदरत न होगी और बाज़ अहवाल में इज़्न दिया जाएगा कि लोग इज़्न से कलाम करेंगे और बाज़ अहवाल में हौल व दहशत कम होगी उस वक़्त लोग अपने मुआ़मलात में झगड़ेंगे और अपने मुक़द्दमात पेश करेंगे। (फ़ा215) शफ़ीक़ बलख़ी क़द्देस सिर्रुहू ने फ़रमाया सआ़दत की पांच अ़लामतें हैं (1) दिल की नर्मी (2) कसरते गिरया (3) दुनिया से नफ़रत (4) उम्मीदों का कोताह होना (5) हया। और बदबख़्ती की अ़लामत भी पांच चीज़ें हैं (1) दिल की सख़्ती (2) आंख की ख़ुश्की यानी अ़दमे गिरया (3) दुनिया की रग़बत (4) दराज़ उम्मीदें (5) बे हयाई। (फ़ा216) इतना और ज़्यादा रहेंगे और इस ज़्यादती की कोई इन्तेहा नहीं तो माना यह हुए कि हमेशा रहेंगे कभी उससे रिहाई न **(बक़िया सफ़हा 383 पर)**

الْكِتَٰبَ فَاخْتُلِفَ فِيهِ ۚ وَلَوْلَا كَلِمَةٌ سَبَقَتْ مِن رَّبِّكَ لَقُضِيَ بَيْنَهُمْ ۚ وَإِنَّهُمْ لَفِي شَكٍّ مِّنْهُ مُرِيبٍ ﴿١١٠﴾ وَإِنَّ كُلًّا لَّمَّا لَيُوَفِّيَنَّهُمْ رَبُّكَ
أَعْمَالَهُمْ ۚ إِنَّهُ بِمَا يَعْمَلُونَ خَبِيرٌ ﴿١١١﴾ فَاسْتَقِمْ كَمَا أُمِرْتَ وَمَن تَابَ مَعَكَ وَلَا تَطْغَوْا ۚ إِنَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ بَصِيرٌ ﴿١١٢﴾ وَلَا تَرْكَنُوا إِلَى الَّذِينَ
ظَلَمُوا فَتَمَسَّكُمُ النَّارُ وَمَا لَكُم مِّن دُونِ اللَّهِ مِنْ أَوْلِيَاءَ ثُمَّ لَا تُنصَرُونَ ﴿١١٣﴾ وَأَقِمِ الصَّلَاةَ طَرَفَيِ النَّهَارِ وَزُلَفًا مِّنَ اللَّيْلِ ۚ إِنَّ الْحَسَنَاتِ يُذْهِبْنَ
السَّيِّئَاتِ ۚ ذَٰلِكَ ذِكْرَىٰ لِلذَّاكِرِينَ ﴿١١٤﴾ وَاصْبِرْ فَإِنَّ اللَّهَ لَا يُضِيعُ أَجْرَ الْمُحْسِنِينَ ﴿١١٥﴾ فَلَوْلَا كَانَ مِنَ الْقُرُونِ مِن قَبْلِكُمْ أُولُو بَقِيَّةٍ
يَنْهَوْنَ عَنِ الْفَسَادِ فِي الْأَرْضِ إِلَّا قَلِيلًا مِّمَّنْ أَنجَيْنَا مِنْهُمْ ۗ وَاتَّبَعَ الَّذِينَ ظَلَمُوا مَا أُتْرِفُوا فِيهِ وَكَانُوا مُجْرِمِينَ ﴿١١٦﴾ وَمَا كَانَ رَبُّكَ لِيُهْلِكَ

किता–ब फ़ख़्तुलि–फ़ फ़ीहि व लौला कलि–मतुन् स–ब–क़त् मिर्रब्बि–क लक़ुज़ि–य बै–नहुम् व इन्नहुम् लफ़ी शक्किम् मिन्हु मुरीब(110)व इन्–न कुल्लल् लम्मा लयुवफ़्फ़ियन्नहुम् रब्बु–क अअ़्मा–लहुम् इन्नहू बिमा यअ़्मलू–न ख़बीर(111)फ़स्तक़िम् कमा उमिर्–त व मन् ता–ब म–अ़–क व ला तत्ग़ौ इन्नहू बिमा तअ़्मलू–न बसीर(112)व ला तर्–कनू इलल्लज़ी–न ज़–लमू फ़–त–मस्सकुमुन्नारु व मा लकुम् मिन् दूनिल्लाहि मिन् औलिया–अ सुम्–म ला तुन्सरून (113)व अक़िमिस्सला–त त़–र–फ़यिन्नहारि व ज़ु–ल–फ़म् मिनल्लैलि इन्नल् ह़–सनाति युज़्हिब्नस् –सय्यिआति ज़ालि–क ज़िक्रा लिज़्ज़ाकिरीन(114)वस्बिर् फ़–इन्नल्ला–ह ला युज़ीउ अज्रल् मुह़्सिनीन(115)फ़लौला का–न मिनल्क़ुरूनि मिन् क़ब्लिकुम् उलू बक़िय्यतिंय्यन्हौ–न अ़निल्फ़सादि फ़िल्अर्ज़ि इल्ला क़लीलम् मिम्मन् अन्जैना मिन्हुम् वत्त–ब–अ़ल्लज़ी–न ज़–लमू मा उतरिफ़ू फ़ीहि व कानू मुज्रिमीन(116)व मा का–न रब्बु–क लियुह्लिकल्

किताब दी (फ़ा220) तो उस में फूट पड़ गई (फ़ा221) अगर तुम्हारे रब की एक बात (फ़ा222) पहले न हो चुकी होती तो जभी उनका फ़ैसला कर दिया जाता (फ़ा223) और बेशक वह उस की तरफ़ से (फ़ा224) धोखा डालने वाले शक में हैं।(110) (फ़ा225) और बेशक जितने हैं (फ़ा226) एक एक को तुम्हारा रब उसका अमल पूरा भर देगा उसे उन के कामों की ख़बर है।(111) (फ़ा227) तो क़ायम रहो (फ़ा228) जैसा तुम्हें हुक्म है और जो तुम्हारे साथ रुजूअ़ लाया है (फ़ा229) और ऐ लोगों सरकशी न करो बेशक वह तुम्हारे काम देख रहा है।(112) और ज़ालिमों की तरफ़ न झुको कि तुम्हें आग छुएगी (फ़ा230) और अल्लाह के सिवा तुम्हारा कोई हिमायती नहीं (फ़ा231) फिर मदद न पाओगे।(113) और नमाज़ क़ायम रखो दिन के दोनों किनारों (फ़ा232) और कुछ रात के हिस्सों में (फ़ा233) बेशक नेकियां बुराईयों को मिटा देती हैं (फ़ा234) यह नसीहत है नसीहत मानने वालों को।(114) और सब्र करो कि अल्लाह नेकों का नेग ज़ाया नहीं करता।(115) तो क्यों न हुए तुम से अगली संगतों में (फ़ा 235) ऐसे जिन में भलाई का कुछ हिस्सा लगा रहा होता कि ज़मीन में फ़साद से रोकते (फ़ा236) हां उन में थोड़े थे वही जिन को हमने नजात दी (फ़ा237) और ज़ालिम उसी ऐश के पीछे पड़े रहे जो उन्हें दिया गया (फ़ा238) और वह गुनहगार थे।(116) और तुम्हारा रब ऐसा नहीं कि बस्तियों को बे वजह

(फ़ा220) यानी तौरेत। (फ़ा221) बाज़े इस पर ईमान लाए और बाज़ ने कुफ़्र किया। (फ़ा222) कि उनके हिसाब में जल्दी न फ़रमाएगा मख़लूक़ के हिसाब व जज़ा का दिन रोज़े क़ियामत है। (फ़ा223) और दुनिया ही में गिरिफ़्तारे अ़ज़ाब किये जाते। (फ़ा224) यानी आपकी उम्मत के कुफ़्फ़ार क़ुरआने करीम की तरफ़ से। (फ़ा225) जिसने उनकी अक़्लों को हैरान कर दिया है। (फ़ा226) तमाम ख़ल्क़ तस्दीक़ करने वाले हों या तकज़ीब करने वाले रोज़े क़ियामत। (फ़ा227) उस पर कुछ मख़्फ़ी नहीं इसमें नेकों और तस्दीक़ करने वालों के लिए तो बशारत है कि वह नेकी की जज़ा पायेंगे और काफ़िरों और तकज़ीब करने वालों के लिए वईद है कि वह अपने अ़मल की सज़ा में गिरिफ़्तार होंगे। (फ़ा228) अपने रब के हुक्म और उसके दीन की दावत पर। (फ़ा229) और उसने तुम्हारा दीन क़बूल किया है वह दीन व ताअ़त पर क़ाइम रहे मुस्लिम शरीफ़ की हदीस में है सुफ़ियान बिन अब्दुल्लाह सक़फ़ी ने रसूले करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से अर्ज़ किया कि मुझे दीन में एक ऐसी बात बता दीजिये कि फिर किसी से दरियाफ़्त करने की हाजत न रहे फ़रमाया *आमन्तु बिल्लाहि* कह और क़ायम रह। (फ़ा230) किसी की तरफ़ झुकना उसके साथ मेल मुहब्बत रखने को कहते हैं। अबुल आ़लिया ने कहा कि माना यह हैं कि ज़ालिमों के आमाल से राज़ी न हो सुद्दी ने कहा कि उनके साथ मुदाहनत न करो। क़तादा ने कहा कि मुशरिकीन से न मिलो। मसलाः इससे मालूम हुआ कि ख़ुदा **(बक़िया सफ़हा 394 पर)**

الْقُرٰى بِظُلْمٍ وَّاَهْلُهَا مُصْلِحُوْنَ ﴿۱۱۷﴾ وَلَوْ شَآءَ رَبُّكَ لَجَعَلَ النَّاسَ اُمَّةً وَّاحِدَةً وَّلَا يَزَالُوْنَ مُخْتَلِفِيْنَ ﴿۱۱۸﴾ اِلَّا مَنْ رَّحِمَ رَبُّكَ ؕ وَلِذٰلِكَ خَلَقَهُمْ ؕ
وَتَمَّتْ كَلِمَةُ رَبِّكَ لَاَمْلَـَٔنَّ جَهَنَّمَ مِنَ الْجِنَّةِ وَالنَّاسِ اَجْمَعِيْنَ ﴿۱۱۹﴾ وَكُلًّا نَّقُصُّ عَلَيْكَ مِنْ اَنْۢبَآءِ الرُّسُلِ مَا نُثَبِّتُ بِهٖ فُؤَادَكَ ۚ وَجَآءَكَ فِيْ
هٰذِهِ الْحَقُّ وَمَوْعِظَةٌ وَّذِكْرٰى لِلْمُؤْمِنِيْنَ ﴿۱۲۰﴾ وَقُلْ لِّلَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ اعْمَلُوْا عَلٰى مَكَانَتِكُمْ ؕ اِنَّا عٰمِلُوْنَ ﴿۱۲۱﴾ وَانْتَظِرُوْا ۚ اِنَّا مُنْتَظِرُوْنَ ﴿۱۲۲﴾ وَلِلّٰهِ غَيْبُ
السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَاِلَيْهِ يُرْجَعُ الْاَمْرُ كُلُّهٗ فَاعْبُدْهُ وَتَوَكَّلْ عَلَيْهِ ؕ وَمَا رَبُّكَ بِغَافِلٍ عَمَّا تَعْمَلُوْنَ ﴿۱۲۳﴾

कुरा बिजुल्मिंव् व अह्लुहा मुस्लिहून(117)व लौ शा-अ रब्बु-क ल-ज-अलन्ना-स उम्मतंव् वाहि-द-तंव् व ला यज़ालू-न मुख़्तलिफ़ीन(118)इल्ला मंर् रहि-म रब्बु-क व लिज़ालि-क ख़-ल-क़हुम् व तम्मत् कलि-मतु रब्बि-क ल-अम्-ल अन्-न जहन्न-म मिनल् जिन्नति वन्नासि अज्मओन(119)व कुल्लन् नकुस्सु अ़लै-क मिन् अम्बाइर् रुसुलि मा नुसब्बितु बिही फुआ-द-क व जा-अ-क फ़ी हाज़िहिल् हक़्कु व मौअि-ज़तुंव् व ज़िक्रा लिल्मु-अमिनीन (120)व कुल् लिल्लज़ी-न ला युअमिनूनअ्-मलू अ़ला मका-नतिकुम् इन्ना आ़मिलून(121) वन्तज़िरू इन्ना मुन्तज़िरून(122)व लिल्लाहि ग़ैबुस् समावाति वल्अर्जि व इलैहि युर्जअुल् अम्रु कुल्लुहू फ़अ्बुद्हु व त-वक्कल् अ़लैहि व मा रब्बु-क बिग़ाफ़िलिन् अ़म्मा तअ्मलून(123)

हलाक कर दे और उनके लोग अच्छे हों।(117) और अगर तुम्हारा रब चाहता तो सब आदमियों को एक ही उम्मत कर देता (फ़ा239) और वह हमेशा इख़्तिलाफ़ में रहेंगे।(118) (फ़ा240) मगर जिन पर तुम्हारे रब ने रहम किया (फ़ा241) और लोग इसी लिए बनाए हैं (फ़ा242) और तुम्हारे रब की बात पूरी हो चुकी कि बेशक ज़रूर जहन्नम भर दूंगा जिन्नों और आदमियों को मिला कर।(119) (फ़ा243) और सब कुछ हम तुम्हें रसूलों की ख़बरें सुनाते हैं जिससे तुम्हारा दिल ठहरायें (फ़ा244) और इस सूरत में तुम्हारे पास हक़ आया (फ़ा245) और मुसलमानों को पन्द व नसीहत।(120) (फ़ा246) और काफ़िरों से फ़रमाओ तुम अपनी जगह काम किये जाओ (फ़ा247) हम अपना काम करते हैं।(121) (फ़ा248) और राह देखो हम भी राह देखते हैं।(122) (फ़ा249) और अल्लाह ही के लिए हैं आसमानों और ज़मीन के ग़ैब (फ़ा250) और उसी की तरफ़ सब कामों की रुजूअ़ है तो उसकी बन्दगी करो और उस पर भरोसा रखो और तुम्हारा रब तुम्हारे कामों से ग़ाफ़िल नहीं।(123) (रुकूअ़ 10)

(फ़ा239) तो सब एक दीन पर होते (फ़ा240) कोई किसी दीन पर कोई किसी दीन पर (फ़ा241) वह दीने हक़ पर मुत्तफ़िक़ रहेंगे और उसमें इख़्तिलाफ़ न करेंगे (फ़ा242) यानी इख़्तिलाफ़ वाले इख़्तिलाफ़ के लिए और रहमत वाले इत्तेफ़ाक़ के लिए (फ़ा243) क्योंकि उसको इल्म है कि बातिल के इख़्तियार करने वाले बहुत होंगे। (फ़ा244) और अम्बिया के हाल और उनकी उम्मतों के सुलूक देख कर आपको अपनी क़ौम की ईज़ा का बरदाश्त करना और उस पर सब्र फ़रमाना आसान हो। (फ़ा245) और अम्बिया और उनकी उम्मतों के तज़किरे वाक़ेअ़ के मुताबिक़ बयान हुए जो दूसरी किताबों और दूसरे लोगों को हासिल नहीं यानी जो वाक़िआत बयान फ़रमाए गए वह हक़ भी हैं (फ़ा246) भी कि गुज़री हुई उम्मतों के हालात और उनके अंजाम से इबरत हासिल करें। (फ़ा247) अंक़रीब इसका नतीजा पा लोगे। (फ़ा248) जिस का हमें हमारे रब ने हुक्म दिया। (फ़ा249) तुम्हारे अंजाम कार की (फ़ा250) उस से कुछ छुप नहीं सकता।

(बक़िया सफ़हा 379 का) से आमिल हूं तो तुम्हें समझ लेना चाहिए कि यही तरीक़ा बेहतर है। (फ़ा185) उन्हें कुछ ज़्यादा ज़माना नहीं गुज़रा है न वह कुछ दूर के रहने वाले थे तो उनके हाल से इबरत हासिल करो। (फ़ा186) कि अगर हम आपके साथ कुछ ज़्यादती करें तो आप में मुदाफ़अ़त की ताक़त नहीं। (फ़ा187) जो दीन में हमारा मुवाफ़िक़ है और जिस को हम अज़ीज़ रखते हैं। (फ़ा188) कि अल्लाह के लिए तो तुम मेरे क़त्ल से बाज़ न रहे और मेरे कुम्बा की वजह से बाज़ रहे और तुम ने अल्लाह के नबी का तो एहतेराम न किया और कुम्बे का एहतेराम किया (फ़ा189) और उसके हुक्म की कुछ परवाह न की।

(बक़िया सफ़हा 381 का) पायेंगे। (जलालैन) (फ़ा217) इतना और ज़्यादा रहेंगे इस ज़्यादती की कुछ इन्तेहा नहीं इससे हमेशगी मुराद है चुनांचे इरशाद फ़रमाता है। (फ़ा218) बेशक यह उस बुत परस्ती पर अ़ज़ाब दिये जायेंगे जैसे कि पहली उम्मतें मुब्तलाए अ़ज़ाब हुईं। (फ़ा219) और तुम्हें मालूम हो चुका कि उनका क्या अंजाम होगा।

سُوْرَةُ يُوْسُفَ مَكِّيَّةٌ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

الٓرٰ تِلْكَ اٰيٰتُ الْكِتٰبِ الْمُبِيْنِ ۝ اِنَّآ اَنْزَلْنٰهُ قُرْءٰنًا عَرَبِيًّا لَّعَلَّكُمْ تَعْقِلُوْنَ ۝ نَحْنُ نَقُصُّ عَلَيْكَ اَحْسَنَ الْقَصَصِ بِمَآ اَوْحَيْنَآ اِلَيْكَ هٰذَا الْقُرْاٰنَ ۖ وَاِنْ كُنْتَ مِنْ قَبْلِهٖ لَمِنَ الْغٰفِلِيْنَ ۝ اِذْ قَالَ يُوْسُفُ لِاَبِيْهِ يٰٓاَبَتِ اِنِّيْ رَاَيْتُ اَحَدَ عَشَرَ كَوْكَبًا وَّالشَّمْسَ وَالْقَمَرَ رَاَيْتُهُمْ لِيْ سٰجِدِيْنَ ۝ قَالَ يٰبُنَيَّ لَا تَقْصُصْ رُءْيَاكَ عَلٰٓى اِخْوَتِكَ فَيَكِيْدُوْا لَكَ كَيْدًا ۭ اِنَّ الشَّيْطٰنَ لِلْاِنْسَانِ عَدُوٌّ مُّبِيْنٌ ۝ وَكَذٰلِكَ يَجْتَبِيْكَ رَبُّكَ وَيُعَلِّمُكَ مِنْ تَاْوِيْلِ الْاَحَادِيْثِ وَيُتِمُّ نِعْمَتَهٗ عَلَيْكَ وَعَلٰٓى اٰلِ يَعْقُوْبَ كَمَآ اَتَمَّهَا عَلٰٓى اَبَوَيْكَ مِنْ قَبْلُ اِبْرٰهِيْمَ وَاِسْحٰقَ ۭ اِنَّ رَبَّكَ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ ۝

सूरतु यूसु–फ़

(मक्की है इसमें 111 आयतें और 12 रुकूअ हैं)

बिस्मिल्लाहिर्रह़्मानिर्रह़ीम

अलिफ़्–लाम्–रा तिल्–क आया–तुल् किताबिल् मुबीन(1)इन्ना अन्ज़ल्नाहु क़ुरआनन् अ़–रबिय्यल् ल–अ़ल्लकुम् तअ्क़िलून(2)नह़्नु नक़ुस्सु अ़लै–क अह़्स–नल्–क़–ससि बिमा औह़ैना इलै–क हाज़ल् क़ुरआ–न व इन् कुन्–त मिन् क़ब्लिही लमिनल्ग़ाफ़िलीन(3)इज़् क़ा–ल यूसुफ़ु लि–अबीहि या अ–बति इन्नी रऐतु अ–ह़–द अ़–श–र कौ–कबंव् वश्शम्–स वल्क़–म–र रऐतुहुम् ली साजिदीन(4)क़ा–ल या बुनय्–य ला तक़्सुस् रुअ्या–क अ़ला इख़्वति–क फ़–यकीदू ल–क कैदन् इन्नश्शैता–न लिलइन्सानि अ़दुव्वुम् मुबीन(5)व कज़ालि–क यज्तबी–क रब्बु–क व यु–अ़ल्लिमु–क मिन् तअ्वीलिल् अह़ादीसि व युतिम्मु निअ़्–मतहू अ़लै–क व अ़ला आलि यअ़्क़ू–ब कमा अ–तम्महा अ़ला अ–बवै–क मिन् क़ब्लु इब्राही–म व इस्ह़ा–क़ इन्–न रब्ब–क अ़लीमुन् ह़कीम(6)

अल्लाह के नाम से शुरू जो बहुत रहम वाला मेहरबान (फ़1)

यह रौशन किताब की आयतें हैं।(1) (फ़2) बेशक हमने इसे अ़रबी क़ुरआन उतारा कि तुम समझो।(2) हम तुम्हें सब से अच्छा बयान सुनाते हैं (फ़3) इस लिए कि हमने तुम्हारी तरफ़ इस क़ुरआन की 'वही' भेजी अगरचे बेशक इससे पहले तुम्हें ख़बर न थी।(3) याद करो जब यूसुफ़ ने अपने बाप (फ़4) से कहा ऐ मेरे बाप मैं ने ग्यारह तारे और सूरज और चांद देखे उन्हें अपने लिए सजदा करते देखा।(4) (फ़5) कहा ऐ मेरे बच्चे अपना ख़्वाब अपने भाईयों से न कहना (फ़6) कि वह तेरे साथ कोई चाल चलेंगे (फ़7) बेशक शैतान आदमी का खुला दुश्मन है।(5) (फ़8) और इसी तरह तुझे तेरा रब चुन लेगा (फ़9) और तुझे बातों का अंजाम निकालना सिखाएगा (फ़10) और तुझ पर अपनी निअ़्मत पूरी करेगा और याक़ूब के घर वालों पर (फ़11) जिस तरह तेरे पहले दोनों बाप दादा इब्राहीम और इसहाक़ पर पूरी की (फ़12) बेशक तेरा रब इल्म व हिकमत वाला है।(6) (रुकूअ़ 11)

(फ़1) सूरह यूसुफ़ मक्की है इसमें 12 रुकूअ़ और 111 आयतें और 1600 कलिमे और 7166 हरफ़ हैं **शाने नुज़ूलः** उलमाए यहूद ने अशराफ़े अरब से कहा था कि सय्यदे आलम मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से दरियाफ़्त करो कि औलादे हज़रते याक़ूब मुल्के शाम से मिस्र में किस तरह पहुंची और उनके वहां जाकर आबाद होने का क्या सबब हुआ और हज़रत यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम का वाक़िआ़ क्या है इस पर यह सूरते मुबारका नाज़िल हुई। (फ़2) जिसका एजाज़ ज़ाहिर और मिन इन्दल्लाह होना वाज़ेह और मआ़नी अहले इल्म के नज़दीक ग़ैर मुश्तबह हैं और इसमे हलाल व हराम हुदूद व अहकाम साफ़ बयान फ़रमाए गए हैं और एक क़ौल यह है कि इसमें मोतक़द्देमीन के अहवाल रौशन तौर पर मज़कूर हैं और हक़ व बातिल को मुमताज़ कर दिया गया है। (फ़3) जो बहुत से अ़जायब व ग़रायब और हिकमतों और इबरतों पर मुश्तमिल है और उसमें दीन व दुनिया के बहुत फ़वायद और सलातीन व रिआ़या और उलमा के अहवाल और औरतों के ख़सायस और दुश्मनों की ईज़ाओं पर सब्र और उन पर क़ाबू पाने के बाद उन से तजावुज़ करने का नफ़ीस बयान है जिससे सुनने वाले में नेक सीरती और पाकीज़ा ख़सायल पैदा होते हैं। साहबे बहरुलहक़ायक़ ने कहा कि इस बयान का अहसन होना इस सबब से है कि यह क़िस्सा इन्सान के अहवाल के साथ कमाले मुशाबहत रखता है अगर यूसुफ़ से दिल को और याक़ूब से रूह को और राहील से नफ़्स को बिरादराने यूसुफ़ से क़वी हवास को तअ़्बीर किया जाये और तमाम क़िस्सा को **(बक़िया सफ़हा 394 पर)**

لَقَدْ كَانَ فِي يُوسُفَ وَإِخْوَتِهِ آيَاتٌ لِلسَّائِلِينَ ۝ إِذْ قَالُوا لَيُوسُفُ وَأَخُوهُ أَحَبُّ إِلَىٰ أَبِينَا مِنَّا وَنَحْنُ عُصْبَةٌ إِنَّ أَبَانَا لَفِي ضَلَالٍ مُبِينٍ ۝ اقْتُلُوا
يُوسُفَ أَوِ اطْرَحُوهُ أَرْضًا يَخْلُ لَكُمْ وَجْهُ أَبِيكُمْ وَتَكُونُوا مِنْ بَعْدِهِ قَوْمًا صَالِحِينَ ۝ قَالَ قَائِلٌ مِنْهُمْ لَا تَقْتُلُوا يُوسُفَ وَأَلْقُوهُ فِي غَيَابَتِ الْجُبِّ
يَلْتَقِطْهُ بَعْضُ السَّيَّارَةِ إِنْ كُنْتُمْ فَاعِلِينَ ۝ قَالُوا يَا أَبَانَا مَا لَكَ لَا تَأْمَنَّا عَلَىٰ يُوسُفَ وَإِنَّا لَهُ لَنَاصِحُونَ ۝ أَرْسِلْهُ مَعَنَا غَدًا يَرْتَعْ وَيَلْعَبْ
وَإِنَّا لَهُ لَحَافِظُونَ ۝ قَالَ إِنِّي لَيَحْزُنُنِي أَنْ تَذْهَبُوا بِهِ وَأَخَافُ أَنْ يَأْكُلَهُ الذِّئْبُ وَأَنْتُمْ عَنْهُ غَافِلُونَ ۝ قَالُوا لَئِنْ أَكَلَهُ الذِّئْبُ وَنَحْنُ عُصْبَةٌ إِنَّا
إِذًا لَخَاسِرُونَ ۝ فَلَمَّا ذَهَبُوا بِهِ وَأَجْمَعُوا أَنْ يَجْعَلُوهُ فِي غَيَابَتِ الْجُبِّ وَأَوْحَيْنَا إِلَيْهِ لَتُنَبِّئَنَّهُمْ بِأَمْرِهِمْ هَٰذَا وَهُمْ لَا يَشْعُرُونَ ۝ وَجَاءُوا أَبَاهُمْ عِشَاءً

ल–क़द् का–न फ़ी यूसु–फ़ व इख़्वतिही आयातुल् लिस्साइलीन(7)इज़् क़ालू ल–यूसुफ़ु व अख़ूहु अहब्बु इला अबीना मिन्ना व नह्नु अुस्बतुन् इन्–न अबाना लफ़ी ज़लालिम् मुबीन(8)निक़्तुलू यूसु–फ़ अविऩ्रहूहु अर्ज़ंय्यख़्लु लकुम् वज्हु अबीकुम् व तकूनू मिम् बअ्–दिही क़ौमन् सालिहीन (9)क़ा–ल क़ाइलुम् मिन्हुम् ला तक़्तुलू युसु–फ़ व अल्क़ूहु फ़ी ग़या–बतिल् जुब्बि यल्तक़ित्हु बअ्ज़ुस् सय्या–रति इन् कुन्तुम् फ़ाअ़िलीन(10)क़ालू या अबाना मा–ल–क ला तअ्मन्ना अ़ला यूसु–फ़ व इन्ना लहू लना–सिहून(11)अर्सिल्हु म–अ़ना ग़–दंय्यर्–तअ् व यल्अब् व इन्ना लहू लहाफ़िज़ून(12)क़ा–ल इन्नी ल–यह्ज़ुनुनी अन् तज़्हबू बिही व अख़ाफ़ु अंय्यअ्कु–लहुज़्ज़िअ्बु व अन्तुम् अ़न्हु ग़ाफ़िलून(13)क़ालू लइन् अ–क–लहुज़्ज़िअ्बु व नह्नु अुस्बतुन् इन्ना इज़ल् लख़ासिरून(14)फ़–लम्मा ज़–हबू बिही व अज्मअू अंय्यज्–अ़ हु फ़ी ग़या–बतिल्जुब्बि व औहैना इलैहि लतु–नब्बि–अन्नहुम् बि–अम्रिहिम् हाज़ा व हुम् ला यश्अुरून(15)व जाऊ अबाहुम्

बेशक यूसुफ़ और उसके भाईयों में (फ़ा13) पूछने वालों के लिए निशानियां हैं।(7) (फ़ा14) जब बोले (फ़ा15) कि ज़रूर यूसुफ़ और उसका भाई (फ़ा16) हमारे बाप को हम से ज़्यादा प्यारे हैं और हम एक जमाअ़त हैं (फ़ा17) बेशक हमारे बाप सराहतन उनकी मुहब्बत में डूबे हुए हैं।(8) (फ़ा18) यूसुफ़ को मार डालो या कहीं ज़मीन में फेंक आओ (फ़ा19) कि तुम्हारे बाप का मुंह सिर्फ़ तुम्हारी ही तरफ़ रहे (फ़ा20) और उसके बाद फिर नेक हो जाना।(9) (फ़ा21) उनमें एक कहने वाला (फ़ा22) बोला यूसुफ़ को मारो नहीं (फ़ा23) और उसे अन्धे कुंएं में डाल दो कि कोई राह चलता उसे आकर ले जाए (फ़ा24) अगर तुम्हें करना है।(10) (फ़ा25) बोले ऐ हमारे बाप आप को क्या हुआ कि यूसुफ़ के मुआ़मले में हमारा ऐतबार नहीं करते और हम तो उसके ख़ैरख़्वाह हैं।(11) कल उसे हमारे साथ भेज दीजिये कि मेवे खाए और खेले (फ़ा26) और बेशक हम उसके निगहबान हैं।(12) (फ़ा27)बोला बेशक मुझे रंज देगा कि तुम उसे ले जाओ (फ़ा28) और डरता हूं कि उसे भेड़िया खा ले (फ़ा29) और तुम उससे बेख़बर रहो।(13) (फ़ा30) बोले अगर उसे भेड़िया खा जाए और हम एक जमाअ़त हैं जब तो हम किसी मसरफ़ के नहीं।(14) (फ़ा31) फिर जब उसे ले गए (फ़ा32) और सब की राय यही ठहरी कि उसे अन्धे कुंएं में डाल दें (फ़ा33) और हमने उसे 'वही' भेजी (फ़ा34) कि ज़रूर तू उन्हें इन का यह काम जता देगा (फ़ा35) ऐसे वक़्त कि वह न जानते होंगे।(15)(फ़ा36)और रात हुए अपने बाप के पास

(फ़ा13) हज़रत याक़ूब अ़लैहिस्सलाम की पहली बीबी लिया बिन्त लियान आपके मामूं की बेटी हैं उन से आपके छः फ़रज़न्द हुए रोबील, शमऊन, लादी, यहूदा, ज़बूलून, यश्जर और चार बेट हरम से हुए दान नफ़ताली, जाऊ आशर उनकी मांयें ज़लफ़ा और बलहा लिया के इन्तेक़ाल के बाद हज़रत याक़ूब अ़लैहिस्सलाम ने उनकी बहन राहील से निकाह फ़रमाया उन से दो फ़रज़न्द हुए यूसुफ़, बुनियामीन, यह हज़रत याक़ूब अ़लैहिस्सलाम के बारह साहबज़ादे हैं उन्हीं को अस्बात कहते हैं। (फ़ा14) पूछने वालों से यहूद मुराद हैं जिन्होंने रसूले करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से हज़रत यूसुफ़ अ़लैहिस्सलातु वस्सलाम का हाल और औलादे हज़रत याक़ूब अ़लैहिस्सलाम के ख़ित्तए कनआ़न से सरज़मीने मिस्र की तरफ़ मुंतक़िल होने का सबब दरियाफ़्त किया था जब सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम हज़रत यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम के हालात बयान फ़रमाये और यहूद ने उनको तौरेत के मुताबिक़ पाया तो उन्हें हैरत हुई कि सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने किताबें पढ़ने और उलमा और अहबार की मजलिस में बैठने और किसी से कुछ सीखने के बग़ैर इस क़द्र सही वाक़िआ़त कैसे बयान फ़रमाए **(बक़िया सफ़्हा 395 पर)**

يَبْكُونَ ⑯ قَالُوا يٰٓأَبَانَآ إِنَّا ذَهَبْنَا نَسْتَبِقُ وَتَرَكْنَا يُوسُفَ عِنْدَ مَتَاعِنَا فَأَكَلَهُ الذِّئْبُ ۚ وَمَآ أَنْتَ بِمُؤْمِنٍ لَّنَا وَلَوْ كُنَّا صٰدِقِينَ ⑰ وَجَآءُو عَلٰى قَمِيصِهٖ بِدَمٍ

كَذِبٍ ۚ قَالَ بَلْ سَوَّلَتْ لَكُمْ أَنْفُسُكُمْ أَمْرًا ۚ فَصَبْرٌ جَمِيلٌ ۚ وَاللّٰهُ الْمُسْتَعَانُ عَلٰى مَا تَصِفُونَ ⑱ وَجَآءَتْ سَيَّارَةٌ فَأَرْسَلُوا وَارِدَهُمْ فَأَدْلٰى دَلْوَهٗ ۚ قَالَ يٰبُشْرٰى

هٰذَا غُلٰمٌ ۚ وَأَسَرُّوهُ بِضٰعَةً ۚ وَاللّٰهُ عَلِيمٌۢ بِمَا يَعْمَلُونَ ⑲ وَشَرَوْهُ بِثَمَنٍۢ بَخْسٍ دَرٰهِمَ مَعْدُودَةٍ ۚ وَكَانُوا فِيهِ مِنَ الزّٰهِدِينَ ⑳ وَقَالَ الَّذِى اشْتَرٰىهُ مِنْ مِّصْرَ

لِامْرَأَتِهٖٓ أَكْرِمِى مَثْوٰىهُ عَسٰىٓ أَنْ يَّنْفَعَنَآ أَوْ نَتَّخِذَهٗ وَلَدًا ۚ وَكَذٰلِكَ مَكَّنَّا لِيُوسُفَ فِى الْأَرْضِ ۡ وَلِنُعَلِّمَهٗ مِنْ تَأْوِيلِ الْأَحَادِيثِ ۚ وَاللّٰهُ غَالِبٌ عَلٰٓى

أَمْرِهٖ وَلٰكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُونَ ㉑ وَلَمَّا بَلَغَ أَشُدَّهٗٓ اٰتَيْنٰهُ حُكْمًا وَّعِلْمًا ۚ وَكَذٰلِكَ نَجْزِى الْمُحْسِنِينَ ㉒ وَرَاوَدَتْهُ الَّتِى هُوَ فِى بَيْتِهَا عَنْ نَّفْسِهٖ وَغَلَّقَتِ

अ़िशाअंय्यब्कून(16)क़ालू या अबाना इन्ना ज़–हब्ना नस्तबिक़ु व त–रक्ना यूसु–फ़ अ़िन्–द मताअ़िना फ़–अ–क–लहुज़् ज़िअ्बु व मा अन्–त बि–मुअ्मिनिल् लना व लौ कुन्ना सादिक़ीन (17)व जाऊ अ़ला क़मीसिही बि–दमिन् कज़िबिन् का–ल बल् सव्व–लत् लकुम् अन्फ़ुसुकुम् अम्–रन् फ़–सब्रुन् जमीलुन् वल्लाहुल् मुस्तआ़नु अ़ला मा तसिफ़ून(18)व जाअत् सय्या–रतुन् फ़–अर्–सलू वारि–दहुम् फ़–अद्ला दल्–वहू का–ल या बुश्रा हाज़ा गुलामुन् व अ–सर्रुहु बिज़ा–अ़तन् वल्लाहु अ़लीमुम् बिमा यअ्मलून(19)व शरौहु बि–स–मनिम् बख़्सिन् दराहि–म मअ्दू–दतिन् व कानू फ़ीहि मिनज़् ज़ाहिदीन(20)व क़ालल् लज़िश्तराहु मिम् मिस्–र लिम्–र–अतिही अक्रिमी मस्वाहु अ़सा अंय्यन्फ़–अ़ना औ नत्तख़ि–ज़हू व–लदन् व कज़ालि–क मक्कन्ना लियूसु–फ़ फ़िल् अर्ज़ि व लिनु–अ़ल्लि–महू मिन् तअ्वीलिल् अहादीसि वल्लाहु ग़ालिबुन् अ़ला अम्रिही व लाकिन्–न अक्सरन्नासि ला यअ्लमून(21)व लम्मा ब–ल–ग़ अशुद्–दहू आतैनाहु हुक्मंव् व अ़िल्मन् व कज़ालि–क नज्ज़िल् मुह्सिनीन(22)व रा–व–दत्– हुल्लती हु–व फ़ी बैतिहा अ़न् नफ़्सिही व ग़ल्ल–क़तिल्

रोते आए।(16) (फ़ा37) बोले ऐ हमारे बाप हम दौड़ करते निकल गए (फ़ा38) और यूसुफ़ को अपने असबाब के पास छोड़ा तो उसे भेड़िया खा गया और आप किसी तरह हमारा यक़ीन न करेंगे अगरचे हम सच्चे हों।(17) (फ़ा39) और उसके कुर्ते पर एक झूटा ख़ून लगा लाए (फ़ा40) कहा बल्कि तुम्हारे दिलों ने एक बात तुम्हारे वास्ते बना ली है (फ़ा41) तो सब्र अच्छा और अल्लाह ही से मदद चाहता हूं उन बातों पर जो तुम बता रहे हो।(18) (फ़ा42) और एक क़ाफ़िला आया (फ़ा43) उन्होंने अपना पानी लाने वाला भेजा (फ़ा44) तो उसने अपना डोल डाला (फ़ा45) बोला आहा कैसी ख़ुशी की बात है यह तो एक लड़का है और उसे एक पूंजी बना कर छुपा लिया (फ़ा46) और अल्लाह जानता है जो वह करते हैं।(19) और भाईयों ने उसे खोटे दामों गिनती के रूपों पर बेच डाला (फ़ा47) और उन्हें इसमें कुछ रग़बत न थी।(20) (फ़ा48) (रुकूअ़ 12) और मिस्र के जिस शख़्स ने उसे ख़रीदा वह अपनी औरत से बोला (फ़ा49) इन्हें इज़्ज़त से रख (फ़ा50) शायद इनसे हमें नफ़ा पहुंचे (फ़ा51) या इन को हम बेटा बना लें (फ़ा52) और इसी तरह हमने यूसुफ़ को उस ज़मीन में जमाव दिया और इस लिए कि उसे बातों का अंजाम सिखायें (फ़ा53) और अल्लाह अपने काम पर ग़ालिब है मगर अक्सर आदमी नहीं जानते।(21) और जब अपनी पूरी कुव्वत को पहुंचा (फ़ा54) हमने उसे हुक्म और इल्म अता फ़रमाया (फ़ा55) और हम ऐसा ही सिला देते हैं नेकों को।(22) और वह जिस औ़रत (फ़ा56) के घर में था उसने उसे लुभाया कि अपना आपा न रोके (फ़ा57) और दरवाज़े सब

(फ़ा37) जब मकान के क़रीब पहुंचे उनके चीख़ने की आवाज़ हज़रत याक़ूब अ़लैहिस्सलाम ने सुनी तो घबरा कर बाहर तशरीफ़ लाये और फ़रमाया ऐ मेरे फ़रज़न्द क्या तुम्हें बकरियों में कुछ नक़सान हुआ उन्होंने कहा नहीं फ़रमाया क्या मुसीबत पहुंची और यूसुफ़ कहां हैं (फ़ा38) यानी हम आपस में एक दूसरे से दौड़ करते थे कि कौन आगे निकले उस दौड़ में हम दूर निकल गए। (फ़ा39) क्योंकि न हमारे साथ कोई गवाह है न कोई ऐसी दलील व अ़लामत है जिससे हमारी रास्त गोई साबित हो। (फ़ा40) और क़मीस को फाड़ना भूल गए हज़रत याक़ूब अ़लैहिस्सलाम वह क़मीस अपने चेहरए मुबारक **(बक़िया सफ़हा 396 पर)**

الْاَبْوَابَ وَقَالَتْ هَيْتَ لَكَ ۚ قَالَ مَعَاذَ اللّٰهِ اِنَّهٗ رَبِّيْٓ اَحْسَنَ مَثْوَايَ ۚ اِنَّهٗ لَا يُفْلِحُ الظّٰلِمُوْنَ ۝ وَلَقَدْ هَمَّتْ بِهٖ ۚ وَهَمَّ بِهَا لَوْلَآ اَنْ رَّاٰ بُرْهَانَ رَبِّهٖ ۚ
كَذٰلِكَ لِنَصْرِفَ عَنْهُ السُّوْٓءَ وَالْفَحْشَآءَ ۚ اِنَّهٗ مِنْ عِبَادِنَا الْمُخْلَصِيْنَ ۝ وَاسْتَبَقَا الْبَابَ وَقَدَّتْ قَمِيْصَهٗ مِنْ دُبُرٍ وَّاَلْفَيَا سَيِّدَهَا لَدَا الْبَابِ ۚ قَالَتْ مَا جَزَآءُ
مَنْ اَرَادَ بِاَهْلِكَ سُوْٓءًا اِلَّآ اَنْ يُّسْجَنَ اَوْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ۝ قَالَ هِيَ رَاوَدَتْنِيْ عَنْ نَّفْسِيْ وَشَهِدَ شَاهِدٌ مِّنْ اَهْلِهَا ۚ اِنْ كَانَ قَمِيْصُهٗ قُدَّ مِنْ قُبُلٍ فَصَدَقَتْ
وَهُوَ مِنَ الْكٰذِبِيْنَ ۝ وَاِنْ كَانَ قَمِيْصُهٗ قُدَّ مِنْ دُبُرٍ فَكَذَبَتْ وَهُوَ مِنَ الصّٰدِقِيْنَ ۝ فَلَمَّا رَاٰ قَمِيْصَهٗ قُدَّ مِنْ دُبُرٍ قَالَ اِنَّهٗ مِنْ كَيْدِكُنَّ ۚ اِنَّ كَيْدَكُنَّ
عَظِيْمٌ ۝ يُوْسُفُ اَعْرِضْ عَنْ هٰذَا ٚ وَاسْتَغْفِرِيْ لِذَنْۢبِكِ ۚ اِنَّكِ كُنْتِ مِنَ الْخٰطِـِٕيْنَ ۝ وَقَالَ نِسْوَةٌ فِي الْمَدِيْنَةِ امْرَاَتُ الْعَزِيْزِ تُرَاوِدُ فَتٰىهَا عَنْ نَّفْسِهٖ ۚ

अब्वा–ब व क़ालत् है–त ल–क क़ा–ल मआ़जल्लाहि इन्नहू रब्बी अह़स–न मस्वा–य इन्नहू ला युफ़लिहुज़् ज़ालिमून(23)व ल–क़द् हम्मत् बिही व हम्–म बिहा लौला अंर्–रआ बुर्हा–न रब्बिही कज़ालि–क लिनस्रि–फ़ अन्हुस् सू–अ वल्–फ़ह़्शा–अ इन्नहू मिन् अ़िबादिनल् मुख़्–लसीन (24)वस्त–ब–क़ल्बा–ब व क़द्–दत् क़मी–सहू मिन् दुबुरिंव् व अल्फ़या सय्यि–दहा ल–दल्बाबि क़ालत् मा जज़ाउ मन् अरा–द बि–अह्लि–क सूअन् इल्ला अंय्युस्ज–न औ अ़ज़ाबुन् अलीम(25) क़ा–ल हि–य रा–व दत्नी अ़न् नफ़्सी व शहि–द शाहिदुम् मिन् अह्लिहा इन् का–न क़मीसुहू क़ुद्–द मिन क़ुबुलिन् फ़–स–द क़त् व हु–व मिनल्काज़िबी–न(26)व इन् का–न क़मीसुहू क़ुद्–द मिन् दुबुरिन् फ़–क–ज़–बत् व हु–व मिनस् सादिक़ीन(27)फ़–लम्मा रआ क़मी–सहू क़ुद्–द मिन् दुबुरिन् क़ा–ल इन्नहू मिन् कैदि कुन्–न इन्–न कै–द कुन्–न अ़ज़ीम(28)यूसुफ़ु अअ़्रिज़् अ़न् हाज़ा वस्तग़्फ़िरी लिज़म्–बिकि इन्नकि कुन्ति मिनल्ख़ातिईन(29)व क़ा–ल निस्–वतुन् फ़िल्–मदी–नतिम्–र अतुल् अ़ज़ीज़ि तुराविदु फ़ताहा अ़न् नफ़्सिही

बन्द कर दिये (फ़ा58) और बोली आओ तुम्हीं से कहती हूं (फ़ा59) कहा अल्लाह की पनाह (फ़ा60) वह अज़ीज़ तो मेरा रब यानी परवरिश करने वाला है उसने मुझे अच्छी तरह रखा (फ़ा61) बेशक ज़ालिमों का भला नहीं होता।(23) और बेशक औ़रत ने उसका इरादा किया और वह भी औ़रत का इरादा करता अगर अपने रब की दलील न देख लेता (फ़ा62) हमने यूं ही किया कि उससे बुराई और बेहयाई को फेर दें (फ़ा63) बेशक वह हमारे चुने हुए बन्दों में है।(24) (फ़ा64) और दोनों दरवाज़े की तरफ़ दौड़े (फ़ा65) और औ़रत ने उसका कुर्ता पीछे से चीर लिया और दोनों को औ़रत का मियां (फ़ा66) दरवाज़े के पास मिला (फ़ा67) बोली क्या सज़ा है उसकी जिसने तेरी घर वाली से बदी चाही (फ़ा68) मगर यह कि क़ैद किया जाए या दुख की मार।(25) (फ़ा69) कहा उसने मुझ को लुभाया कि मैं अपनी हिफ़ाज़त न करूं (फ़ा70) और औ़रत के घर वालों में से एक गवाह ने (फ़ा71) गवाही दी अगर उनका कुर्ता आगे से चिरा है तो औ़रत सच्ची है और उन्होंने ग़लत कहा।(26) (फ़ा72) और अगर उनका कुर्ता पीछे से चाक हुआ तो औरत झूठी है और यह सच्चे।(27) (फ़ा73) फिर जब अ़ज़ीज़ ने उसका कुर्ता पीछे से चिरा देखा (फ़ा74) बोला बेशक यह तुम औरतों का चरित्तर चालबाज़ी है बेशक तुम्हारा चरित्तर बड़ा है।(28) (फ़ा75) ऐ यूसुफ़ तुम इसका ख़्याल न करो (फ़ा76) और ऐ औ़रत तू अपने गुनाह की माफ़ी मांग(फ़ा77)बेशक तू ख़तावारों में है।(29)(फ़ा78) (रुकूअ़ 13) और शहर में कुछ औ़रतें बोलीं (फ़ा79)कि अज़ीज़ की बीबी अपने नौजवान का दिल लुभाती है बेशक उन की मुहब्बत

(फ़ा58) मुक़फ़्फ़ल कर डाले (फ़ा59) हज़रत यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम ने (फ़ा60) वह मुझे इस क़बाहत से बचाए जिसकी तू तलबगार है मुद्दआ़ यह था कि यह फ़ेअ़्ल हराम है मैं उसके पास जाने वाला नहीं (फ़ा61) इस का बदला यह नहीं कि मैं उसके अहल में ख़यानत करूं जो ऐसा करे वह ज़ालिम है। (फ़ा62) मगर हज़रत यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम ने अपने रब की बुरहान देखी और इस इरादा फ़ासिदा से मह़फ़ूज़ रहे और बुरहाने इस्मत नबुव्वत है अल्लाह तआ़ला ने अम्बिया अ़लैहिमुस्सलात वस्सलाम के नुफ़ूसे ताहिरा को अख़्लाक़े ज़मीमा व अफ़आ़ले रज़ीला से पाक पैदा किया है और अख़्लाक़े शरीफ़ा ताहिरा मुक़द्देसा पर उनकी ख़िलक़त फ़रमाई है इस लिए वह हर ना करदनी फ़ेअ़्ल से बाज़ रहते हैं एक रिवायत यह भी है कि जिस वक़्त ज़ुलैख़ा आपके दरपै हुई उस वक़्त आपने अपने वालिद माजिद हज़रत याक़ूब अ़लैहिस्सलाम को देखा कि अंगुश्त मुबारक **(बक़िया सफ़हा 397 पर)**

قَدْ شَغَفَهَا حُبًّا ۖ إِنَّا لَنَرَاهَا فِي ضَلَالٍ مُّبِينٍ ﴿٣٠﴾ فَلَمَّا سَمِعَتْ بِمَكْرِهِنَّ أَرْسَلَتْ إِلَيْهِنَّ وَأَعْتَدَتْ لَهُنَّ مُتَّكَأً وَآتَتْ كُلَّ وَاحِدَةٍ مِّنْهُنَّ سِكِّينًا
وَقَالَتِ اخْرُجْ عَلَيْهِنَّ ۖ فَلَمَّا رَأَيْنَهُ أَكْبَرْنَهُ وَقَطَّعْنَ أَيْدِيَهُنَّ وَقُلْنَ حَاشَ لِلَّهِ مَا هَٰذَا بَشَرًا إِنْ هَٰذَا إِلَّا مَلَكٌ كَرِيمٌ ﴿٣١﴾ قَالَتْ فَذَٰلِكُنَّ الَّذِي لُمْتُنَّنِي فِيهِ ۖ
وَلَقَدْ رَاوَدتُّهُ عَن نَّفْسِهِ فَاسْتَعْصَمَ ۖ وَلَئِن لَّمْ يَفْعَلْ مَا آمُرُهُ لَيُسْجَنَنَّ وَلَيَكُونًا مِّنَ الصَّاغِرِينَ ﴿٣٢﴾ قَالَ رَبِّ السِّجْنُ أَحَبُّ إِلَيَّ مِمَّا يَدْعُونَنِي إِلَيْهِ ۖ
وَإِلَّا تَصْرِفْ عَنِّي كَيْدَهُنَّ أَصْبُ إِلَيْهِنَّ وَأَكُن مِّنَ الْجَاهِلِينَ ﴿٣٣﴾ فَاسْتَجَابَ لَهُ رَبُّهُ فَصَرَفَ عَنْهُ كَيْدَهُنَّ ۚ إِنَّهُ هُوَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ ﴿٣٤﴾ ثُمَّ بَدَا لَهُم مِّن بَعْدِ مَا رَأَوُا
الْآيَاتِ لَيَسْجُنُنَّهُ حَتَّىٰ حِينٍ ﴿٣٥﴾ وَدَخَلَ مَعَهُ السِّجْنَ فَتَيَانِ ۖ قَالَ أَحَدُهُمَا إِنِّي أَرَانِي أَعْصِرُ خَمْرًا ۖ وَقَالَ الْآخَرُ إِنِّي أَرَانِي أَحْمِلُ فَوْقَ رَأْسِي خُبْزًا تَأْكُلُ

क़द् श–ग़–फ़हा हुब्बन् इन्ना ल–नराहा फ़ी ज़लालिम् मुबीन(30)फ़–लम्मा समिअत् बि–मक्रिहिन्–न अरस–लत् इलैहिन्–न व अअ्–त–दत् लहुन्–न मुत्त–क–अंव् व आतत् कुल्–ल वाहि–दतिम् मिन्हुन्–न सिक्कीनंव् व क़ा–लतिख़्रुज् अ़लैहिन्–न फ़–लम्मा रऐ–नहू अक्बर्–नहू व क़त्तअ्–न ऐदि–यहुन्–न व क़ुल्–न हा–श लिल्लाहि मा हाज़ा ब–शरन् इन् हाज़ा इल्ला म–लकुन् करीम (31)क़ालत् फ़ज़ालिकुन् नल्लज़ी लुम्तुन्ननी फ़ीहि व ल–क़द् रावत्तुहू अ़न् नफ़्सिही फ़स्तअ्–स–म व लइल्लम् यफ़्अ़ल् मा आमुरुहू लयुस्ज–नन्–न व ल–यकूनम् मिनस्साग़िरीन(32)क़ा–ल रब्बिस्सिज्नु अहब्बु इलय्–य मिम्मा यदऊ–ननी इलैहि व इल्ला तस्रिफ़् अ़न्नी कै–द हुन्–न अस्बु इलैहिन्–न व अकुम् मिनल् जाहिलीन(33)फ़स्तजा–ब लहू रब्बुहू फ़–स–र–फ़ अ़न्हु कै–द हुन्–न इन्नहू हु–वस्समीअुल् अ़लीम(34)सुम्–म बदा–लहुम् मिम् बअ्दि मा र–अवुल् आयाति ल–यस्जुनुन्नहू हत्ता हीन(35)व द–ख़–ल म–अ़हुस् सिज्–न फ़–तयानि क़ा–ल अ–हदुहुमा इन्नी अरानी अअ्सिरु ख़म्रन् व क़ालल् आ–ख़रु इन्नी अरानी अह्मिलु फ़ौ–क़ रअ्सी ख़ुबज़न् तअ्कुलुत्तैरु

उसके दिल में पैर गई हैं हम तो उसे सरीह खुद रफ़्ता पाते हैं।(30) (फ़ा80) तो जब ज़ुलैख़ा ने उनका चकरबा (कानाफूसी) सुना तो उन औ़रतों को बुला भेजा (फ़ा81) और उनके लिए मसनदें तैयार कीं (फ़ा82) और उनमें हर एक को एक छुरी दे दी (फ़ा83) और यूसुफ़ (फ़ा84) से कहा उन पर निकल आओ (फ़ा85) जब औरतों ने यूसुफ़ को देखा उसकी बड़ाई बोलने लगीं (फ़ा86) और अपने हाथ काट लिए (फ़ा87) और बोली अल्लाह को पाकी है यह तो जिन्से बशर से नहीं (फ़ा88) यह तो नहीं मगर कोई मोअ़ज़्ज़ज़ फ़रिश्ता(31) ज़ुलैख़ा ने कहा तो यह है वह जिन पर तुम मुझे तअ़्ना देती थीं (फ़ा89) और बेशक मैंने उनका जी लुभाना चाहा तो उन्होंने अपने आप को बचाया (फ़ा90) और बेशक अगर वह यह काम न करेंगे जो मैं उनसे कहती हूं तो ज़रूर क़ैद में पड़ेंगे और वह ज़रूर ज़िल्लत उठायेंगे।(32) (फ़ा91) यूसुफ़ ने अ़र्ज़ की ऐ मेरे रब मुझे क़ैद-ख़ाना ज़्यादा पसन्द है उस काम से जिसकी तरफ़ यह मुझे बुलाती है और अगर तू मुझसे उनका मक्र न फेरेगा (फ़ा92) तो मैं उनकी तरफ़ माइल होऊंगा और नादान बनूंगा।(33) तो उसके रब ने उसकी सुन ली और उससे औरतों का मक्र फेर दिया बेशक वही है सुनता जानता।(34) (फ़ा93) फिर सब कुछ निशानियां देख दिखा कर पिछली मत उन्हें यही आई कि ज़रूर एक मुद्दत तक उसे क़ैद ख़ाना में डालें।(35) (फ़ा94) (रुकूअ़ 14) और उसके साथ क़ैद ख़ाना में दो जवान दाख़िल हुए (फ़ा95) उनमें एक (फ़ा96) बोला कि मैंने ख़्वाब देखा कि (फ़ा97) शराब निचोड़ता हूं और दूसरा बोला (फ़ा98) मैं ने ख़्वाब देखा कि मेरे सर पर कुछ रोटियां हैं जिनमें से परिन्द खाते हैं

(फ़ा80) कि उस आशुफ़्तगी में उसको अपने नंगो नामूस और पर्दे व इफ़्फ़त का लिहाज़ भी न रहा (फ़ा८१) यानी जब उसने सुना कि अशराफ़े मिस्र की औरतें उसको हज़रत यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम की मुहब्बत पर मलामत करती हैं तो उसने चाहा कि वह अपना उज़्र उन्हें ज़ाहिर कर दे इस लिए उसने उनकी दावत की और अशराफ़े मिस्र की चालीस औरतों को मदऊ कर दिया उन में वह सब भी थीं जिन्होंने उस पर मलामत की थी, ज़ुलैख़ा ने उन औरतों को बहुत इज़्ज़त व एहतेराम के साथ मेहमान बनाया (फ़ा82) निहायत पुर तकल्लुफ़ जिन पर वह बहुत इज़्ज़त व आराम से तकिये लगा कर बैठीं और दस्तरख़्वान बिछाये गए और क़िस्म क़िस्म के खाने और मेवे चुने गए (फ़ा83) ताकि खाने के लिए उससे गोश्त काटें **(बक़िया सफ़हा 397 पर)**

الطَّيْرُ مِنْهُ ۚ نَبِّئْنَا بِتَأْوِيلِهِ ۖ إِنَّا نَرَاكَ مِنَ الْمُحْسِنِينَ ﴿٣٦﴾ قَالَ لَا يَأْتِيكُمَا طَعَامٌ تُرْزَقَانِهِ إِلَّا نَبَّأْتُكُمَا بِتَأْوِيلِهِ قَبْلَ أَنْ يَأْتِيَكُمَا ۚ ذَٰلِكُمَا مِمَّا عَلَّمَنِي رَبِّي ۚ إِنِّي
تَرَكْتُ مِلَّةَ قَوْمٍ لَا يُؤْمِنُونَ بِاللَّهِ وَهُمْ بِالْآخِرَةِ هُمْ كَافِرُونَ ﴿٣٧﴾ وَاتَّبَعْتُ مِلَّةَ آبَائِي إِبْرَاهِيمَ وَإِسْحَاقَ وَيَعْقُوبَ ۚ مَا كَانَ لَنَا أَنْ نُشْرِكَ بِاللَّهِ مِنْ شَيْءٍ ۚ
ذَٰلِكَ مِنْ فَضْلِ اللَّهِ عَلَيْنَا وَعَلَى النَّاسِ وَلَٰكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَشْكُرُونَ ﴿٣٨﴾ يَا صَاحِبَيِ السِّجْنِ أَأَرْبَابٌ مُتَفَرِّقُونَ خَيْرٌ أَمِ اللَّهُ الْوَاحِدُ الْقَهَّارُ ﴿٣٩﴾ مَا تَعْبُدُونَ
مِنْ دُونِهِ إِلَّا أَسْمَاءً سَمَّيْتُمُوهَا أَنْتُمْ وَآبَاؤُكُمْ مَا أَنْزَلَ اللَّهُ بِهَا مِنْ سُلْطَانٍ ۚ إِنِ الْحُكْمُ إِلَّا لِلَّهِ ۚ أَمَرَ أَلَّا تَعْبُدُوا إِلَّا إِيَّاهُ ۚ ذَٰلِكَ الدِّينُ الْقَيِّمُ وَلَٰكِنَّ أَكْثَرَ
النَّاسِ لَا يَعْلَمُونَ ﴿٤٠﴾ يَا صَاحِبَيِ السِّجْنِ أَمَّا أَحَدُكُمَا فَيَسْقِي رَبَّهُ خَمْرًا ۖ وَأَمَّا الْآخَرُ فَيُصْلَبُ فَتَأْكُلُ الطَّيْرُ مِنْ رَأْسِهِ ۚ قُضِيَ الْأَمْرُ الَّذِي فِيهِ تَسْتَفْتِيَانِ ﴿٤١﴾

मिन्हु नब्बिअ्–ना बि–तअ्वीलिही इन्ना नरा–क मिनल्मु–ह्सिनीन(36)क़ा–ल ला यअ्ती–कुमा तआमुन् तुर्–ज़क़ानिही इल्ला नब्बअ्तुकुमा बि–तअ्वीलिही क़ब्–ल अंय्यअ्ति–यकुमा ज़ालिकुमा मिम्मा अ़ल्ल–मनी रब्बी इन्नी तरक्तु मिल्ल–त क़ौमिल् ला युअ्मिनू–न बिल्लाहि व हुम् बिल्–आख़ि–रति हुम् काफ़िरून(37)वत्तबअ्तु मिल्ल–त आबाई इब्राही–म व इस्हा–क़ व यअ्क़ू–ब मा का–न लना अन् नुश्रि–क बिल्लाहि मिन् शैइन् ज़ालि–क मिन् फ़ज़्लिल्लाहि अ़लैना व अ़–लन्नासि व लाकिन्–न अक्सरन्नासि ला यश्कुरून(38)या साहि–बयिस्–सिज्नि अ–अरबाबुम् मु–त–फ़र्रिकू–न ख़ैरुन् अमिल्लाहुल् वाहिदुल् क़ह्हार(39)मा तअ्बुदू–न मिन् दूनिही इल्ला अस्माअन् सम्मैतुमूहा अन्तुम् व आबाउकुम् मा अन्ज़–लल्लाहु बिहा मिन् सुल्तानिन् इनिल्हुक्मु इल्ला लिल्लाहि अ–म–र अल्ला तअ्बुदू इल्ला इय्याहु ज़ालिकद्–दीनुल् क़य्यिमु व लाकिन्–न अक्सरन्नासि ला यअ्लमून (40)या साहि–बयिस् सिज्नि अम्मा अ–हदुकुमा फ़–यस्क़ी रब्बहू ख़म्–रन् व अम्मल् आ–ख़रु फ़युस्–लबु फ़–तअ्कुलुत्तैरु मिर्रासिही क़ुज़ियल् अम्रुल्लज़ी फ़ीहि तस्तफ़्तियान(41)

हमें इसकी तअ्बीर बताईये बेशक हम आपको नेकोकार देखते हैं।(36) (फ़ा99) यूसुफ़ ने कहा जो खाना तुम्हें मिला करता है वह तुम्हारे पास न आने पाएगा कि मैं उसकी तअ्‌बीर उसके आने से पहले तुम्हें बता दूंगा (फ़ा100) यह उन इल्मों में से है जो मुझे मेरे रब ने सिखाया है बेशक मैंने उन लोगों का दीन न माना जो अल्लाह पर ईमान नहीं लाते और वह आख़िरत से मुन्किर हैं।(37) और मैंने अपने बाप दादा इब्राहीम और इसहाक़ और याक़ूब का दीन इख़्तियार किया (फ़ा101) हमें नहीं पहुंचता कि किसी चीज़ को अल्लाह का शरीक ठहरायें यह (फ़ा102) अल्लाह का एक फ़ज़्ल है हम पर और लोगों पर मगर अक्सर लोग शुक्र नहीं करते।(38) (फ़ा103) ऐ मेरे क़ैदख़ाने के दोनों साथियो क्या जुदा जुदा रब (फ़ा104) अच्छे या एक अल्लाह जो सब पर ग़ालिब।(39) (फ़ा105) तुम उसके सिवा नहीं पूजते मगर निरे नाम जो तुमने और तुम्हारे बाप दादा ने तराश लिए हैं (फ़ा106) अल्लाह ने उनकी कोई सनद न उतारी हुक्म नहीं मगर अल्लाह का उसने फ़रमाया है कि उसके सिवा किसी को न पूजो (फ़ा107) यह सीधा दीन है (फ़ा108) लेकिन अक्सर लोग नहीं जानते।(40) (फ़ा109) ऐ क़ैदख़ाना के दोनों साथियो तुम में एक तो अपने रब (बादशाह) को शराब पिलाएगा (फ़ा110) रहा दूसरा (फ़ा111) वह सूली दिया जाएगा तो परिन्दे उसका सर खायेंगे(फ़ा112)हुक्म हो चुका इस बात का जिस का तुम सवाल करते थे।(41) (फ़ा113)

(फ़ा99) कि आप दिन में रोज़ादार रहते हैं रात तमाम नमाज़ में गुज़ारते हैं जब कोई जेल में बीमार होता है उसकी अ़यादत करते हैं उसकी ख़बरगीरी रखते हैं जब किसी पर तंगी होती है उसके लिए कशाईश की राह निकालते हैं हज़रत यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम ने उनके तअ्बीर देने से पहले अपने मोअ्‌जेज़े का इज़हार और तौहीद की दावत शुरू कर दी और यह ज़ाहिर फ़रमा दिया कि इल्म में आप का दर्जा इससे ज़्यादा है जितना वह लोग आपकी निस्बत एतेक़ाद रखते हैं क्योंकि इल्मे तअ्बीर ज़न पर मबनी है इस लिए आपने चाहा कि उन्हें ज़ाहिर फ़रमा दें कि आप ग़ैब की यक़ीनी ख़बरें देने पर क़ुदरत रखते हैं और उससे मख़्लूक़ आ़जिज़ है जिसको अल्लाह ने ग़ैबी उलूम अता फ़रमाये हों उसके नज़दीक ख़्वाब की तअ्‌बीर क्या बड़ी बात है उस वक़्त मोअ्‌जेज़े का इज़हार आपने इस लिए फ़रमाया कि आप जानते हैं कि उन दोनों में एक अंक़रीब सूली दिया जाएगा तो आपने चाहा कि उसको कुफ़्र से निकाल कर इस्लाम में दाख़िल करें और जहन्नम से **(बक़िया सफ़हा 398 पर)**

وَقَالَ لِلَّذِي ظَنَّ أَنَّهُ نَاجٍ مِّنْهُمَا اذْكُرْنِي عِندَ رَبِّكَ فَأَنسَاهُ الشَّيْطَانُ ذِكْرَ رَبِّهِ فَلَبِثَ فِي السِّجْنِ بِضْعَ سِنِينَ ۝٤٢ وَقَالَ الْمَلِكُ إِنِّي أَرَىٰ سَبْعَ بَقَرَاتٍ
سِمَانٍ يَأْكُلُهُنَّ سَبْعٌ عِجَافٌ وَسَبْعَ سُنبُلَاتٍ خُضْرٍ وَأُخَرَ يَابِسَاتٍ يَا أَيُّهَا الْمَلَأُ أَفْتُونِي فِي رُؤْيَايَ إِن كُنتُمْ لِلرُّؤْيَا تَعْبُرُونَ ۝٤٣ قَالُوا أَضْغَاثُ أَحْلَامٍ
وَمَا نَحْنُ بِتَأْوِيلِ الْأَحْلَامِ بِعَالِمِينَ ۝٤٤ وَقَالَ الَّذِي نَجَا مِنْهُمَا وَادَّكَرَ بَعْدَ أُمَّةٍ أَنَا أُنَبِّئُكُم بِتَأْوِيلِهِ فَأَرْسِلُونِ ۝٤٥ يُوسُفُ أَيُّهَا الصِّدِّيقُ أَفْتِنَا فِي سَبْعِ
بَقَرَاتٍ سِمَانٍ يَأْكُلُهُنَّ سَبْعٌ عِجَافٌ وَسَبْعِ سُنبُلَاتٍ خُضْرٍ وَأُخَرَ يَابِسَاتٍ لَّعَلِّي أَرْجِعُ إِلَى النَّاسِ لَعَلَّهُمْ يَعْلَمُونَ ۝٤٦ قَالَ تَزْرَعُونَ سَبْعَ سِنِينَ دَأَبًا
فَمَا حَصَدتُّمْ فَذَرُوهُ فِي سُنبُلِهِ إِلَّا قَلِيلًا مِّمَّا تَأْكُلُونَ ۝٤٧ ثُمَّ يَأْتِي مِن بَعْدِ ذَٰلِكَ سَبْعٌ شِدَادٌ يَأْكُلْنَ مَا قَدَّمْتُمْ لَهُنَّ إِلَّا قَلِيلًا مِّمَّا تُحْصِنُونَ ۝٤٨

व क़ा—ल लिल्लज़ी ज़न्—न अन्नहू नाजिम् मिन्हुमज़् कुर्नी अिन्—द रब्बि—क फ़—अन्साहुश्शैतानु ज़िक्—र रब्बिही फ़—लबि—स फ़िस्सिज्नि बिज़्—अ सिनीन(42)व क़ालल्मलिकु इन्नी अरा सब्—अ ब—क़रातिन् सिमानिंय्यअ्कुलुहुन्—न सब्अुन् अिजाफ़ुंव् व सब्—अ सुम्बुलातिन् खुज़्रिंव् व उ—ख़्—र याबिसातिन् या अय्युहल् म—लउ अफ़्तूनी फ़ी रुअ्या—य इन् कुन्तुम् लिर्रुअ्या तअ्बुरून(43) क़ालू अज़्ग़ासु अह्लामिन् व मा नह्नु बितअ्वीलिल् अह्लामि बि—आलिमीन(44)व क़ालल्लज़ी नजा मिन्हुमा वद्द—क—र बअ्—द उम्मतिन् अना उनब्बिउकुम् बि—तअ्वीलिही फ़—अर्सिलून (45)यूसुफ़ु अय्युहस्सिद्दीक़ु अफ़्तिना फ़ी सब्अि ब—क़रातिन् सिमानिंय्यअ्—कुलुहुन्—न सब्अुन् अिजाफ़ुंव् व सब्अि सुम्बुलातिन् खुज़्रिंव् व उ—ख़्—र या बिसातिल् लअ़ल्ली अर्जिअु इलन्नासि ल—अ़ल्लहुम् यअ्लमून(46)क़ा—ल तज़्—रअू—न सब्—अ सिनी—न द—अ—बन् फ़मा हसत्तुम् फ़—ज़रूहु फ़ी सुम्बुलिही इल्ला क़लीलम् मिम्मा तअ्कुलून(47)सुम्—म यअ्ती मिम् बअ्दि ज़ालि—क सब्अुन् शिदादुंय्— अ्कुल्—न मा क़द्दम्तुम् लहुन्—न इल्ला क़लीलम् मिम्मा तुह्सिनून(48)

और यूसुफ़ ने उन दोनों में से जिसे बचता समझा (फ़ा114) उस से कहा अपने रब (बादशाह) के पास मेरा ज़िक्र करना (फ़ा115) तो शैतान ने उसे भुला दिया कि अपने रब (बादशाह) के सामने यूसुफ़ का ज़िक्र करे तो यूसुफ़ कई बरस और जेलख़ाना में रहा।(42) (फ़ा116) (रुकूअ़ 15) और बादशाह ने कहा मैंने ख़्वाब में देखी सात गायें फ़रबा कि उन्हें सात दुबली गायें खा रही हैं और सात बालें हरी और दूसरी सात सूखी (फ़ा117) ऐ दरबारियो मेरी ख़्वाब का जवाब दो अगर तुम्हें ख़्वाब की ताबीर आती हो।(43) बोले परेशान ख़्वाबें हैं और हम ख़्वाब की ताबीर नहीं जानते।(44) और बोला वह जो उन दोनों में से बचा था (फ़ा118) और एक मुद्दत बाद उसे याद आया (फ़ा119) मैं तुम्हें इसकी ताबीर बताऊंगा मुझे भेजो।(45) (फ़ा120) ऐ यूसुफ़ ऐ सिद्दीक़ हमें ताबीर दीजिये सात फ़रबा गायों की जिन्हें सात दुबली खाती हैं और सात हरी बालें और दूसरी सात सूखी (फ़ा121) शायद मैं लोगों की तरफ़ लौट कर जाऊँ शायद वह आगाह हों।(46) (फ़ा122) कहा तुम खेती करोगे सात बरस लगातार (फ़ा123) तो जो काटो उसे उसकी बाल में रहने दो (फ़ा124) मगर थोड़ा जितना खा लो।(47) (फ़ा125) फिर उसके बाद सात करें बरस (सख़्त तंगी वाले) आयेंगे (फ़ा126) कि खा जायेंगे जो तुमने उनके लिए पहले जमा कर रखा था (फ़ा127) मगर थोड़ा जो बचा लो।(48) (फ़ा128)

(फ़ा114) यानी साक़ी को (फ़ा115) और मेरा हाल बयान करना कि क़ैद ख़ाना में एक मज़लूम बे गुनाह क़ैद है और उसकी क़ैद को एक ज़माना गुज़र चुका है (फ़ा116) अक्सर मुफ़स्सिरीन इस तरफ़ हैं कि इस वाक़िआ के बाद हज़रत यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम सात बरस और क़ैद में रहे और पांच बरस पहले रह चुके थे इस मुद्दत के गुज़रने के बाद जब अल्लाह तआ़ला को हज़रत यूसुफ़ का क़ैद से निकालना मंज़ूर हुआ तो मिस्र के शाहे आज़म रैयान बिन वलीद ने एक अ़जीब ख़्वाब देखा जिससे उसको बहुत परेशानी हुई और उसने मुल्क के साहिरों और काहिनों और तअ़बीर देने वालों को जमा करके उनसे अपना ख़्वाब बयान किया। (फ़ा117) जो हरी पर लिपटीं और उन्होंने हरी को सुखा दिया। (फ़ा118) यानी साक़ी (फ़ा119) हज़रत यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम ने उससे फ़रमाया था कि अपने आक़ा के सामने मेरा ज़िक्र करना साक़ी ने कहा कि। (फ़ा120) क़ैद ख़ाना में वहां तअ़बीरे ख़्वाब के एक आलिम हैं बस बादशाह ने उसको भेज दिया वह क़ैद ख़ाना में पहुंच कर हज़रत यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम की ख़िदमत में अ़र्ज़ करने लगा। (फ़ा121) यह ख़्वाब बादशाह ने देखा है और मुल्क के तमाम उलमा व हुकमा **(बक़िया सफ़हा 398 पर)**

ثُمَّ يَأْتِيْ مِنْۢ بَعْدِ ذٰلِكَ عَامٌ فِيْهِ يُغَاثُ النَّاسُ وَفِيْهِ يَعْصِرُوْنَ ﴿٤٩﴾ وَقَالَ الْمَلِكُ ائْتُوْنِيْ بِهٖ ۚ فَلَمَّا جَآءَهُ الرَّسُوْلُ قَالَ ارْجِعْ اِلٰى رَبِّكَ فَسْـَٔلْهُ مَا بَالُ النِّسْوَةِ الّٰتِيْ قَطَّعْنَ اَيْدِيَهُنَّ ؕ اِنَّ رَبِّيْ بِكَيْدِهِنَّ عَلِيْمٌ ﴿٥٠﴾ قَالَ مَا خَطْبُكُنَّ اِذْ رَاوَدْتُّنَّ يُوْسُفَ عَنْ نَّفْسِهٖ ؕ قُلْنَ حَاشَ لِلّٰهِ مَا عَلِمْنَا عَلَيْهِ مِنْ سُوْٓءٍ ؕ قَالَتِ امْرَاَتُ الْعَزِيْزِ الْـٰٔنَ حَصْحَصَ الْحَقُّ ۫ اَنَا رَاوَدْتُّهٗ عَنْ نَّفْسِهٖ وَاِنَّهٗ لَمِنَ الصّٰدِقِيْنَ ﴿٥١﴾ ذٰلِكَ لِيَعْلَمَ اَنِّيْ لَمْ اَخُنْهُ بِالْغَيْبِ وَاَنَّ اللّٰهَ لَا يَهْدِيْ كَيْدَ الْخَآئِنِيْنَ ﴿٥٢﴾

सुम्–म यअ्ती मिम् बअ्दि ज़ालि–क आमुन् फ़ीहि युग़ासुन्नासु व फ़ीहि यअ्सिरून(49)व क़ालल् मलिकुअ्–तूनी बिही फ़–लम्मा जा–अहुर् रसूलु क़ालरजिअ् इला रब्बि–क फ़स्अल्हु मा बालुन्–निस्वतिल्लाती क़त्तअ्–न ऐदि–यहुन्–न इन्–न रब्बी बिकैदिहिन्–न अ़लीम(50)क़ा–ल मा ख़त्बुकुन्–न इज़् रावत्तुन्–न यूसु–फ़ अ़न् नफ़्सिही क़ुल्–न हा–श लिल्लाहि मा अ़लिम्ना अ़लैहि मिन् सूइन् क़ा–लतिम्–र–अतुल् अ़ज़ीज़िल् आ–न ह़स्–ह़–सल् ह़क़्क़ु अना रावत्तुहू अ़न् नफ़्सिही व इन्नहू लमिनस्सा–दिक़ीन(51)ज़ालि–क लि–यअ्–ल–म अन्नी लम् अख़ुन्हु बिल्ग़ैबि व अन्नल्ला–ह ला यह्दी कैदल् ख़ाइनीन(52)

फिर उनके बाद एक बरस आएगा जिसमें लोगों को मेंह दिया जाएगा और उसमें रस निचोड़ेंगे।(49) (फ़ा129) (रुकूअ़ 16) और बादशाह बोला कि उन्हें मेरे पास ले आओ तो जब उसके पास एलची आया (फ़ा130) कहा अपने रब (बादशाह) के पास पलट जा फिर उससे पूछ (फ़ा131) क्या हाल है उन औरतों का जिन्होंने अपने हाथ काटे थे बेशक मेरा रब उनका फ़रेब जानता है।(50) (फ़ा132) बादशाह ने कहा ऐ औरतो तुम्हारा क्या काम था जब तुमने यूसुफ़ का जी लुभाना चाहा बोलीं अल्लाह को पाकी है हमने उनमें कोई बदी न पाई अ़ज़ीज़ की औरत (फ़ा133) बोली अब असली बात खुल गई मैंने उनका जी लुभाना चाहा था और वह बेशक सच्चे हैं।(51) (फ़ा134) यूसुफ़ ने कहा यह मैंने इस लिए किया कि अ़ज़ीज़ को मालूम हो जाए कि मैंने पीठ पीछे उसकी ख़यानत न की और अल्लाह दग़ाबाज़ों का मक्र नहीं चलने देता।(52)

(फ़ा129) अंगूर का और तिल ज़ैतून के तेल निकालेंगे यह साल कसीरुलख़ैर होगा ज़मीन सर सब्ज़ व शादाब होगी दरख़्त ख़ूब फलेंगे हज़रत यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम से यह तअ़्बीर सुनकर वापस हुआ और बादशाह की ख़िदमत में जाकर यह तअ़्बीर बयान की बादशाह को यह तअ़्बीर बहुत पसन्द आई और उसे यक़ीन हुआ कि जैसा हज़रत यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम ने फ़रमाया है ज़रूर वैसा ही होगा बादशाह को शौक़ पैदा हुआ कि इस ख़्वाब की तअ़्बीर ख़ुद हज़रत यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम की ज़बाने मुबारक से सुने। (फ़ा130) और उसने हज़रत यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम की ख़िदमत में बादशाह का प्याम अ़र्ज़ किया तो आपने (फ़ा131) यानी उससे दरख़्वास्त कर कि वह पूछे तफ़्तीश करे। (फ़ा132) यह आपने इस लिए फ़रमाया ताकि बादशाह के सामने आप की बराअत और बे गुनाही मालूम हो जाये और यह उसको मालूम हो कि यह क़ैदे तवील बे वजह हुई ताकि आईन्दा हासिदों को नेश ज़नी का मौक़ा न मिले। मसलाः इससे मालूम हुआ कि दफ़अ़े तोहमत में कोशिश करना ज़रूरी है अब क़ासिद हज़रत यूसुफ़ अ़लैहिस्सलातु वस्सलाम के पास से यह प्याम लेकर बादशाह की ख़िदमत में पहुंचा बादशाह ने सुन कर औरतों को जमा किया और उनके साथ अज़ीज़ की औरत को भी।(फ़ा133) ज़ुलैख़ा (फ़ा134) बादशाह ने हज़रत यूसुफ़ अ़लैहिस्सलातु वस्सलाम के पास प्याम भेजा कि औरतों ने आपकी पाकी बयान की और अ़ज़ीज़ की औरत ने अपने गुनाह का इक़रार कर लिया इस पर हज़रत।

(बक़िया सफ़्हा 380 का) की इत्तेबाअ़ से मुंह फेरा और ऐसे गुमराह की इताअ़त की तो जब वह दुनिया में कुफ़्र व ज़लाल में अपनी क़ौम का पेशवा था ऐसे ही जहन्नम में उनका इमाम होगा और। (फ़ा198) जैसा कि उन्हें दरियाए नील में ला डाला था (फ़ा199) यानी दुनिया में भी मलऊन और आख़िरत में भी मलऊन (फ़ा200) यानी गुज़री हुई उम्मतों (फ़ा201) कि तुम अपनी उम्मत को उनकी ख़बरें दो ताकि वह उन से इबरत हासिल करें उन बस्तियों की हालत खेतियों की तरह है कि। (फ़ा202) उसके मकानों की दीवारें मौजूद हैं खन्डर पाये जाते हैं निशान बाक़ी हैं जैसे कि आ़द व समूद के दयार। (फ़ा203) यानी कटी हुई खेती की तरह बिल्कुल बे नाम व निशान हो गई और उसका कोई असर बाक़ी न रहा जैसे कि क़ौमे नूह अ़लैहिस्सलाम के दयार। (फ़ा204) कुफ़्र व मआ़सी का इरतेकाब करके। (फ़ा205) जहल व गुमराही से। (फ़ा206) और एक शिम्मा अ़ज़ाब दफ़ा न कर सके।

(बक़िया सफ़हा 368 का) साबित रहो। (फ़ा33) और अपनी दून हिम्मती से आख़िरत पर नज़र न रखता हो। (फ़ा34) और जो आमाल उन्होंने तलबे दुनिया के लिए किये हैं उसका अज्र सेहत दौलत वुसअ़ते रिज़्क़ कसरते औलाद वग़ैरह से दुनिया ही में पूरा कर देंगे। (फ़ा35) **शाने नुज़ूलः** ज़हहाक ने कहा कि यह आयत मुशरिकीन के हक़ में है कि वह अगर सिला रहमी करें या मुहताजों को दें या किसी परेशान हाल की मदद करें या इस तरह की कोई और नेकी करें तो अल्लाह तआ़ला वुसअ़ते रिज़्क़ वग़ैरह से उनके अ़मल की जज़ा दुनिया ही में दे देता है और आख़िरत में उनके लिए कोई हिस्सा नहीं एक क़ौल यह है कि यह आयत मुनाफ़िक़ीन के हक़ में नाज़िल हुई जो सवाबे आख़िरत के तो मोअ़्तक़िद न थे और जिहादों में माले ग़नीमत हासिल करने के लिए शामिल होते थे। (फ़ा36) वह उसकी मिस्ल हो सकता है जो दुनिया की ज़िन्दगी और उसकी आराईश चाहता हो ऐसा नहीं उन दोनों में अ़ज़ीम फ़र्क़ है रौशन दलील से वह दलील अ़क़ली मुराद है जो इस्लाम की हक़्क़ानियत पर दलालत करे और उस शख़्स से जो अपने रब की तरफ़ से रौशन दलील पर हो वह यहूद मुराद हैं जो इस्लाम से मुशर्रफ़ हुए जैसे कि हज़रत अब्दुल्लाह बिन सलाम (फ़ा37) और उसकी सेहत की गवाही दे यह गवाह क़ुरआन मजीद है। (फ़ा38) यानी तौरेत (फ़ा39) यानी क़ुरआन पर (फ़ा40) ख़्वाह कोई भी हों हदीस शरीफ़ सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया उसकी क़सम जिसके दस्ते क़ुदरत में मुहम्मद (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) की जान है इस उम्मत में जो कोई भी है यहूदी हो या नसरानी जिसको भी मेरी ख़बर पहुंचे और वह मेरे दीन पर ईमान लाये बग़ैर मर जाये वह ज़रूर जहन्नमी है।

(बक़िया सफ़हा 370 का) फ़िक्र के (फ़ा57) माल और रियासत में उनका यह क़ौल भी जहल था क्योंकि अल्लाह के नज़दीक बन्दे के लिए ईमान व ताअ़त सबबे फ़ज़ीलत है न कि माल व रियासत (फ़ा58) नबुव्वत के दावा में और तुम्हारे मुत्तबेईन को इसकी तस्दीक़ में। (फ़ा59) जो मेरे दावा के सिदक़ पर गवाह हो। (फ़ा60) यानी नबुव्वत अ़ता की (फ़ा61) और इस हुज्जत को ना-पसन्द रखते हो (फ़ा62) यानी तबलीग़े रिसालत पर (फ़ा63) कि तुम पर इसका अदा करना गिरां हो। (फ़ा64) यह हज़रत नूह अ़लैहिस्सलाम ने उनकी इस बात के जवाब में फ़रमाया था जो वह लोग कहते थे कि ऐ नूह रज़ील लोगों को अपनी मजलिस से निकाल दीजिये ताकि हमें आपकी मजलिस में बैठने से शर्म न आये। (फ़ा65) और उसके क़ुर्ब से फ़ायज़ होंगे तो मैं उन्हें कैसे निकाल दूं। (फ़ा66) ईमानदारों को रज़ील कहते हो और उनकी क़द्र नहीं करते और नहीं जानते कि वह तुम से बेहतर हैं।

(बक़िया सफ़हा 371 का) नबी हूं तुम किस तरह कहते हो कि वह दिल से ईमान नहीं लाये तीसरा शुबहा इस क़ौम का यह था कि *मा नरा-क इल्ला बशरम्-मिस्लना* यानी हम तुम्हें अपना ही जैसा आदमी देखते हैं इसके जवाब में फ़रमाया कि मैं तुम से यह नहीं कहता कि मैं फ़रिश्ता हूं यानी मैंने अपनी दावत को अपने फ़रिश्ता होने पर मौक़ूफ़ नहीं किया था कि तुम्हें यह एतेराज़ का मौक़ा मिलता कि जताते तो थे वह अपने आपको फ़रिश्ता और थे बशर लिहाज़ा तुम्हारा यह एतेराज़ भी बातिल है। (फ़ा68) नेकी या बदी इख़्लास या निफ़ाक़ (फ़ा69) यानी अगर मैं उनके ईमान ज़ाहिर को झुठला कर उनके बातिन पर इलज़ाम लगाऊं और उन्हें निकाल दूं (फ़ा70) और बेहम्दिल्लाह मैं ज़ालिमों में से हरगिज़ नहीं हूं तो ऐसा कभी न करूंगा। (फ़ा71) अ़ज़ाब। (फ़ा72) उसको अ़ज़ाब करने से यानी न उस अ़ज़ाब को रोक सकोगे न उससे बच सकोगे (फ़ा73) आख़िरत में वही तुम्हारे आमाल का बदला देगा (फ़ा74) और इस तरह ख़ुदा के कलाम और उसके अहकाम मानने से गुरेज़ करते हैं और उसके रसूल पर बुहतान उठाते हैं और उनकी तरफ़ इफ़्तेरा की निस्बत करते हैं जिनका सिद्क़ बराहीने बय्यना और हुज्जते क़विय्या से साबित हो चुका है लिहाज़ा अब उनसे। (फ़ा75) ज़रूर इसका वबाल आएगा लेकिन बेहम्दिल्लाह मैं सादिक़ हूं तो तुम समझ लो कि तुम्हारी तकज़ीब का वबाल तुम पर पड़ेगा। (फ़ा76) यानी कुफ़्र और आपकी तकज़ीब और आप की ईज़ा क्योंकि अब आपके आदा से इन्तेक़ाम लेने का वक़्त आ गया। ((फ़ा77) हमारी हिफ़ाज़त में हमारी तालीम से (फ़ा78) यानी उनकी शफ़ाअ़त और दफ़्ए़ अ़ज़ाब की दुआ़ न करना क्योंकि उन का ग़र्क़ मुक़द्दर हो चुका है। (फ़ा79) हदीस शरीफ़ में है कि हज़रत नूह अ़लैहिस्सलाम ने बहुक्मे इलाही साल के दरख़्त बोए बीस साल में यह दरख़्त तैयार हुए इस अर्सा में मुतलक़न कोई बच्चा पैदा न हुआ इससे पहले जो बच्चे पैदा हो चुके थे वह बालिग़ हो गए और उन्होंने भी हज़रत नूह अ़लैहिस्सलाम की दावत क़बूल करने से इन्कार कर दिया और हज़रत नूह अ़लैहिस्सलाम कश्ती बनाने में मशग़ूल हो गए। (फ़ा80) और कहते ऐ नूह क्या करते हो आप फ़रमाते ऐसा मकान बनाता हूं जो पानी पर चले यह सुन कर हंसते क्योंकि आप कश्ती जंगल में बनाते थे जहां दूर दूर तक पानी न था और वह लोग तमस्ख़ुर से यह भी कहते थे कि पहले तो आप नबी थे अब बढ़ई हो गए।

(बक़िया सफ़हा 372 का) न लाई थी और आपका बेटा कनआ़न है चुनांचे हज़रत नूह अ़लैहिस्सलाम ने उन सबको सवार किया जानवर आपके पास आते थे और आपका दाहिना हाथ नर पर और बायां हाथ मादा पर पड़ता था और आप सवार करते जाते थे। (फ़ा88) मक़ातिल ने कहा कि कुल मर्द व औरत बहत्तर थे और इसमें और अक़वाल भी हैं सही तादाद अल्लाह जानता है उनकी तादाद किसी सही हदीस में वारिद नहीं है। (फ़ा89) यह कहते हुए कि (फ़ा90) इसमें तालीम है कि बन्दे को चाहिए जब कोई काम करना चाहे तो उसको बिस्मिल्लाह पढ़ कर शुरू करे ताकि उस काम में बरकत हो और वह सबबे फ़लाह हो ज़हहाक ने कहा कि जब हज़रत नूह अ़लैहिस्सलाम चाहते थे कि कश्ती चले तो बिस्मिल्लाह फ़रमाते थे कश्ती चलने लगती थी और जब चाहते थे कि ठहर जाये बिस्मिल्लाह फ़रमाते थे ठहर जाती थी। (फ़ा91) चालीस शब व रोज़ आसमान से मेंह बरसता रहा और ज़मीन से पानी उबलता रहा यहां तक कि तमाम पहाड़ ग़र्क़ हो गए। (फ़ा92) यानी हज़रत नूह अ़लैहिस्सलाम से जुदा था आपके साथ सवार न हुआ था। (फ़ा93) कि हलाक हो जाएगा यह लड़का मुनाफ़िक़ था अपने वालिद पर अपने आपको मुसलमान ज़ाहिर करता था और बातिन में काफ़िरों के साथ मुत्तफ़िक़ था। (हुसैनी) (फ़ा94) जब तूफ़ान अपनी निहायत पर पहुंचा और कुफ़्फ़ार ग़र्क़ हो चुके तो हुक्मे इलाही आया। (फ़ा95)

छः महीने तमाम ज़मीन का तवाफ़ करके (फ़ा96) जो मूसिल या शाम के हुदूद में वाक़ेअ़ है हज़रत नूह अ़लैहिस्सलाम कश्ती में दसवीं रजब को बैठे और दसवीं मुहर्रम को कश्ती कोहे जूदी पर ठहरी तो आपने उसके शुक्र का रोज़ा रखा और अपने तमाम साथियों को भी रोज़े का हुक्म फ़रमाया।

(बक़िया सफ़हा 373 का) ईज़ाओं पर सब्र किया (फ़ा108) कि दुनिया में मुज़फ़्फ़र व मन्सूर और आख़िरत में मुसाब व माजूर। (फ़ा109) नबी बनाकर भेजा हज़रत हूद अ़लैहिस्सलाम को अख़ ब-ऐतबारे नसब फ़रमाया गया इसी लिए हज़रत मुतरजिम कुद्देस सिर्रुहू ने इस लफ़्ज़ का तर्जमा हम क़ौम किया *अअ़्लल्लाहु मक़ामहू* (फ़ा110) उसकी तौहीद के मोअ़्तक़िद रहो उसके साथ किसी को शरीक न करो (फ़ा111) जो बुतों को ख़ुदा का शरीक बताते हो

(बक़िया सफ़हा 374 का) व औलाद देगा हज़रत इमाम हसन रज़ियल्लाहु अ़न्हु एक मर्तबा अमीर मुआ़विया के पास तशरीफ़ ले गए तो आप से अमीर मुआ़विया के एक मुलाज़िम ने कहा कि मैं मालदार आदमी हूं मगर मेरे कोई औलाद नहीं मुझे कोई ऐसी चीज़ बताइये जिससे अल्लाह मुझे औलाद दे आप ने फ़रमाया इस्तिग़फ़ार पढ़ा करो उसने इस्तिग़फ़ार की यहां तक कसरत की कि रोज़ाना सात सौ मर्तबा इस्तिग़फ़ार पढ़ने लगा उसकी बरकत से उस शख़्स के दस बेटे हुए यह ख़बर हज़रत मुआ़विया को हुई तो उन्होंने उस शख़्स से फ़रमाया कि तूने हज़रत इमाम से यह क्यों न दरियाफ़्त किया कि यह अ़मल हुज़ूर ने कहां से फ़रमाया। दूसरी मर्तबा जब उस शख़्स को इमाम से नियाज़ हासिल हुआ तो उसने यह दरियाफ़्त किया इमाम ने फ़रमाया कि तूने हज़रत हूद का क़ौल नहीं सुना जो उन्होंने फ़रमाया *यज़िद् कुम् .कुव्वतन् इला कुव्वतिकुम्* और हज़रत नूह अ़लैहिस्सलाम का यह इरशाद *युम्दिद्कुम् बिअम्वालिंव्व बनीन* **फ़ायदाः** कसरते रिज़्क़ और हुसूले औलाद के लिए इस्तिग़फ़ार का बकसरत पढ़ना क़ुरआनी अ़मल है। (फ़ा115) माल व औलाद के साथ (फ़ा116) मेरी औलाद से (फ़ा117) जो तुम्हारे दावे के सेहत पर दलालत करती और यह बात उन्होंने बिल्कुल ग़लत और झूठ कही थी। हज़रत हूद अ़लैहिस्सलाम ने उन्हें जो मोअ़्जेज़ात दिखाये थे उन सब से मुकर गए (फ़ा118) यानी तुम जो बुतों को बुरा कहते हो इस लिए उन्होंने तुम्हें दीवाना कर दिया मुराद यह है कि अब जो कुछ कहते हो यह दीवानगी की बातें हैं (मआज़ल्लाह) (फ़ा119) यानी तुम और वह जिन्हें तुम मअ़्बूद समझते हो सब मिल कर मुझे ज़रर पहुंचाने की कोशिश करो (फ़ा120) मुझे तुम्हारी और तुम्हारे मअ़्बूदों की और तुम्हारी मक्कारियों की कुछ परवाह नहीं और मुझे तुम्हारी शौकत व कुव्वत से कुछ अन्देशा नहीं जिनको तुम मअ़्बूद कहते हो वह जमाद व बेजान हैं न किसी को नफ़ा पहुंचा सकते हैं न ज़रर उनकी क्या हक़ीक़त कि वह मुझे दीवाना कर सकते यह हज़रत हूद अ़लैहिस्सलाम का मोअ़्जेज़ा है कि आपने एक ज़बरदस्त जब्बार साहबे कुव्वत व शौकते क़ौम से जो आपके ख़ून की प्यासी और जान की दुश्मन थी इस तरह के कलिमात फ़रमाये और असलन ख़ौफ़ न किया (फ़ा121)और वह क़ौम बावजूद इन्तेहाई अ़दावत और दुश्मनी के आपको ज़रर पहुंचाने से आ़जिज़ रही इसी में बनीए आदम और हैवान सब आ गए। (फ़ा122) यानी वह सब का मालिक है और सब पर ग़ालिब और क़ादिर व मुतसर्रिफ़ है। (फ़ा123) और हुज्जत साबित हो चुकी। (फ़ा124) यानी अगर तुम ने ईमान से एअ़्राज़ किया और जो अहकाम मैं तुम्हारी तरफ़ लाया हूं उन्हें क़बूल न किया तो अल्लाह तुम्हें हलाक करेगा और बजाए तुम्हारे एक दूसरी क़ौम को तुम्हारे दयार व अमवाल का वाली बनाएगा जो उसकी तौहीद के मोअ़्तक़िद हों और उसकी इबादत करें। (फ़ा125) क्यों कि वह इससे पाक है कि उसे कोई ज़रर पहुंच सके लिहाज़ा तुम्हारे एअ़्राज़ का जो ज़रर है वह तुम्हीं पहुंचेगा। (फ़ा126) और किसी का क़ौल फ़ेअ़्ल उससे मख़्फ़ी नहीं जब क़ौमे हूद नसीहत पज़ीर न हुई तो बारगाहे क़दीरे बरहक़ से उनके अ़ज़ाब का हुक्म नाफ़िज़ हुआ। (फ़ा127) जिनकी तादाद चार हज़ार थी। (फ़ा128) और क़ौमे आ़द को हवा के अ़ज़ाब से हलाक कर दिया। (फ़ा129) यानी जैसे मुसलमानों को अ़ज़ाबे दुनिया से बचाया ऐसे ही आख़िरत के।

(बक़िया सफ़हा 376 का) न फ़रमाते उस वक़्त ऐसा इत्तेफ़ाक़ हुआ कि पन्द्रह रोज़ से कोई मेहमान न आया था आप इस ग़म में थे उन मेहमानों को देखते ही आपने उनके लिए खाना लाने में जल्दी फ़रमाई चूंकि आपके यहां गायें बकसरत थीं इस लिए बछड़े का भुना हुआ गोश्त सामने लाया गया। फ़ाइदा इससे मालूम हुआ कि गाय का गोश्त हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम के दस्तर ख़्वान पर ज़्यादा आता था और आप उसको पसन्द फ़रमाते थे गाय का गोश्त खाने वाले अगर सुन्नते इब्राहीमी अदा करने की नीयत करें तो मज़ीद सवाब पायें। (फ़ा149) अ़ज़ाब करने के लिए। (फ़ा150) हज़रत सारह पसे पर्दा। (फ़ा151) उसके फ़रज़न्द (फ़ा152) हज़रत इसहाक़ के फ़रज़न्द। (फ़ा153) हज़रत सारह को ख़ुशख़बरी देने की वजह यह थी कि औलाद की ख़ुशी औरतों को मर्दों से ज़्यादा होती है और नीज़ यह भी सबब था कि हज़रत सारह के कोई औलाद न थी और हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम के फ़रज़न्द हज़रत इस्माईल अ़लैहिस्सलाम मौजूद थे इस बशारत के ज़िम्न एक बशारत यह भी थी कि हज़रत सारह की उम्र इतनी दराज़ होगी कि वह पोते को भी देखेंगी। (फ़ा155) मेरी उम्र नव्वे से मुतजावुज़ हो चुकी है। (फ़ा155) जिनकी उम्र एक सौ बीस साल की हो गई है।

(बक़िया सफ़हा 377 का) से आपकी रिक़्क़ते क़ल्ब और आपकी राफ़्त व रहमत मालूम होती है जो इस मुबाहसा का सबब हुई फ़रिश्तों ने कहा। (फ़ा159) हसीन सूरतों में और हज़रत लूत अ़लैहिस्सलाम ने उनकी हैयत और जमाल को देखा तो क़ौम की ख़बासत व बदे अ़मली का ख़्याल करके (फ़ा160) मरवी है कि मलायका को हुक्मे इलाही यह था कि वह क़ौमे लूत को उस वक़्त तक हलाक न करें जब तक कि हज़रत लूत अ़लैहिस्सलाम ख़ुद उस क़ौम की बद-अमली पर चार मर्तबा गवाही न दें। चुनांचे जब यह फ़रिश्ते हज़रत लूत अ़लैहिस्सलाम से मिले तो आपने उन से फ़रमाया कि क्या तुम्हें इस बस्ती वालों का हाल

मालूम न था फ़रिश्तों ने कहा उन का क्या हाल है आपने फ़रमाया मैं गवाही देता हूं कि अमल के ऐतबार से रूए ज़मीन पर यह बदतरीन बस्ती है और यह बात आपने चार मर्तबा फ़रमाई हज़रत लूत अ़लैहिस्सलाम की औरत जो काफ़िरा थी निकली और उसने अपनी क़ौम को जाकर ख़बर दी कि हज़रत लूत अ़लैहिस्सलाम के यहां ऐसे ख़ूबरू और हसीन मेहमान आये हैं जिनकी मिस्ल अब तक कोई शख़्स नज़र नहीं आया। (फ़ा161)और कुछ शर्म व हया बाक़ी न रही थी, हज़रत लूत अ़लैहिस्सलाम ने। (फ़ा162) और अपनी बीबियों से तमत्तुअ़ करो कि यह तुम्हारे लिए हलाल है हज़रत लूत अ़लैहिस्सलातु वस्सलाम ने उनकी औरतों को जो क़ौम की बेटियां थीं बु.जुर्गाना शफ़क़त से अपनी बेटियां फ़रमाया ताकि इस हुस्नो अख़्लाक़ से वह फ़ायदा उठायें और हमिय्यत सीखें। (फ़ा163) यानी हमें उनकी तरफ़ रग़बत नहीं।

(बक़िया सफ़हा 378 का) में सब से बड़ा सिद्दूम था और उन में चार लाख आदमी बस्ते थे इतना ऊंचा उठाया कि वहां के कुत्तों और मुर्गों की आवाज़ें आसमान पर पहुंचने लगीं और इस आहिस्तगी से उठाया कि किसी बर्तन का पानी न गिरा और कोई सोने वाला बेदार न हुआ, फिर उस बुलन्दी से उसको औंधा करके पलटा। (फ़ा171) उन पत्थरों पर ऐसा निशान था जिस से वह दूसरों से मुमताज़ थे क़तादा ने कहा कि उन पर सुर्ख़ ख़ुतूत थे हसन व सुद्दी का क़ौल है कि उन पर मुहरें लगी हुई थीं और एक क़ौल यह है कि जिस पत्थर से जिस शख़्स की हलाकत मंज़ूर थी उसका नाम उस पत्थर पर लिखा था। (फ़ा172) यानी अहले मक्का से (फ़ा173) हम ने भेजा बाशिन्दगाने शहर (फ़ा174) आपने अपनी क़ौम से (फ़ा175) पहले तो आपने तौहीद व इबादत की हिदायत फ़रमाई कि वह तमाम उमूर में सब से अहम है उसके बाद जिन आदाते क़बीहा में वह मुब्तला थे उससे मना फ़रमाया और इरशाद किया। (फ़ा176) ऐसे हाल में आदमी को चाहिए कि निअ़मत की शुक्रगुज़ारी करे और दूसरों को अपने माल से फ़ायदा पहुंचाये न कि उनके हुक़ूक़ में कमी करे ऐसी हालत में इस ख़ियानत की निअ़मत से अन्देशा है कि कहीं इस आदत से महरूम न कर दिये जाओ (फ़ा177) कि जिससे किसी को रिहाई मुयस्सर न हो और सबके सब हलाक हो जायें यह भी हो सकता है कि उस दिन के अ़ज़ाब से अ़ज़ाबे आख़िरत मुराद हो। (फ़ा178) यानी माले हराम तर्क करने के बाद हलाल जिस क़द्र बचे वही तुम्हारे लिए बेहतर है हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा ने फ़रमाया कि पूरा तोलने और नापने के बाद जो बचे वह बेहतर है। (फ़ा179) कि तुम्हारे अफ़आ़ल पर दारोगीर करूं उलमा ने फ़रमाया है कि बाज़ अम्बिया को हरब की इजाज़त थी जैसे हज़रत मूसा हज़रत दाऊद हज़रत सुलैमान अ़लैहिमुस्सलाम वग़ैरहुम बाज़ वह थे जिन्हें हरब का हुक्म न था हज़रत शुऐब अ़लैहिस्सलाम उन्हीं में से हैं तमाम दिन वअ़ज़ फ़रमाते और शब तमाम नमाज़ में गुज़ारते क़ौम आप से कहती कि इस नमाज़ से आप को क्या फ़ायदा आप फ़रमाते नमाज़ ख़ूबियों का हुक्म देती है बुराईयों से मना करती है तो इस पर वह तमस्ख़ुर से यह कहते जो अगली आयत में मज़कूर है।

(बक़िया सफ़हा 382 का) के नाफ़रमानों के साथ यानी काफ़िरों और बे दीनों और गुमराहों के साथ मेल जोल रस्मो राह मवद्दत व मुहब्बत उनकी हां में हां मिलाना उनकी ख़ुशामद में रहना ममनूअ़ है। (फ़ा231) कि तुम्हें उसके अ़ज़ाब से बचा सके यह हाल तो उनका है जो ज़ालिमों से रस्म व राह मेल व मुहब्बत रखें और उसी से उनका हाल क़ियास करना चाहिए जो ख़ुद ज़ालिम हैं। (फ़ा232) दिन के दो कनारों से सुबह व शाम मुराद हैं ज़वाल से क़ब्ल का वक़्त सुबह में और बाद का शाम में दाख़िल है सुबह की नमाज़ फ़ज्र और शाम की नमाज़ ज़ुहर व अस्र हैं। (फ़ा233) और रात के हिस्सों की नमाज़ें मग़रिब व इशा हैं। (फ़ा234) नेकियों से मुराद या यही पंजगाना नमाज़ें हैं जो आयत में ज़िक्र हुईं या मुतलक़ ताअ़तें या *सुब्हानल्लाहि वल्हम्दु लिल्लाहि व ला इला-ह इल्लल्लाहु वल्लाहु अक्बर* पढ़ना। **मसलाः** आयत से मालूम हुआ कि नेकियां सग़ीरा गुनाहों के लिए कफ़्फ़ारा होती हैं ख़्वाह वह नेकियां नमाज़ हों या सदक़ा या ज़िक्र व इस्तिग़फ़ार या और कुछ मुस्लिम शरीफ़ की हदीस में है कि पांचों नमाज़ें और जुमअ़ः दूसरे जुमअ़ः तक और एक रिवायत में है कि रमज़ान दूसरे रमज़ान तक यह सब कफ़्फ़ारा हैं इन गुनाहों के लिए जो उनके दर्मियान वाक़ेअ़ हों जबकि आदमी कबीरा गुनाहों से बचे। **शाने नुज़ूलः** एक शख़्स ने किसी औरत को देखा और उससे कोई ख़फ़ीफ़ सी हरकत बे हिजाबी की सरज़द हुई इस पर वह नादिम हुआ और रसूले करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर होकर अपना हाल अर्ज़ किया इस पर यह आयत नाज़िल हुई उस शख़्स ने अर्ज़ किया कि सग़ीरा गुनाहों के लिए नेकियों का कफ़्फ़ारा होना क्या ख़ास मेरे लिए है फ़रमाया नहीं सब के लिए। (फ़ा235) यानी पहली उम्मतों में जो हलाक की गईं (फ़ा236) माना यह हैं कि उन उम्मतों में ऐसे अहले ख़ैर नहीं हुए जो लोगों को ज़मीन में फ़साद करने से रोकते और गुनाहों से मना करते इसी लिए हम ने उन्हे हलाक कर दिया। (फ़ा237) वह अम्बिया पर ईमान लाये उनके अहकाम पर फ़रमांबरदार रहे और लोगों को फ़साद से रोकते रहे। (फ़ा238) और तनइम व तलज़्ज़ुज़ और ख़्वाहिशात व शह्वात के आ़दी हो गए और कुफ़्र व मआ़सी में डूबे रहे।

(बक़िया सफ़हा 384 का) इन्सानों के हालात से मुताबक़त दी जाये चुनांचे उन्होंने वह मुताबक़त बयान भी की है जो यहां ब-नज़रे इख़्तेसार दर्ज नहीं की जा सकती। (फ़ा4) हज़रत याक़ूब बिन इसहाक़ बिन इब्राहीम अ़लैहिमुस्सलाम (फ़ा5) हज़रत यूसुफ़ अ़लैहिस्सलातु वस्सलाम ने ख़्वाब देखा कि आसमान से ग्यारह सितारे उतरे और उनके साथ सूरज और चांद भी हैं उन सब ने आपको सजदा किया यह ख़्वाब शबे जुमअ़ः को देखा यह रात शबे क़द्र थी। सितारों की तअ़बीर आपके ग्यारह भाई हैं और सूरज आपके वालिद और चांद आपकी वालिदा या ख़ाला आपकी वालिदा माजिदा का नाम राहील है। सुद्दी का क़ौल है कि चूंकि राहील का इन्तेक़ाल हो चुका था इस लिए क़मर से आपकी ख़ाला मुराद हैं और सजदा करने से तवाज़ोअ़ करना

और मुतीअ़ होना मुराद है और एक कौल यह है कि हकीकतन सजदा मुराद है क्योंकि उस ज़माना में सलाम की तरह सजदा तहिय्यत था। हज़रत यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम की उम्र शरीफ़ उस वक़्त बारह साल की थी और सात और सत्तरह के कौल भी आये हैं। हज़रत याकूब अ़लैहिस्सलाम को हज़रत यूसुफ़ अ़लैहिस्सलातु वस्सलाम से बहुत ज़्यादा मुहब्बत थी इसलिए उनके साथ उनके भाई हसद करते थे और हज़रत याकूब अ़लैहिस्सलाम इस पर मुत्तलअ़ थे इस लिए जब हज़रत यूसुफ़ अ़लैहिस्सलातु वस्सलाम ने यह ख़्वाब देखा तो हज़रत याकूब अ़लैहिस्सलाम ने। (फ़ा6) क्योंकि वह इसकी तअ़बीर को समझ लेंगे हज़रत याकूब अ़लैहिस्सलाम जानते थे कि अल्लाह तआ़ला हज़रत यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम को नबुव्वत के लिए बरगुज़ीदा फ़रमाएगा और दारैन की नेअ़मतें और शरफ़ इनायत करेगा इस लिए आपको भाईयों के हसद का अन्देशा हुआ और आपने फ़रमाया। (फ़ा7) और तुम्हारी हलाकत की कोई तदबीर सोचेंगे (फ़ा8) उनको कैद व हसद पर उभारेगा, इसमें ईमा है कि बिरादराने यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम अगर हज़रत यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम के लिए ईज़ा व ज़रर पर इक़दाम करेंगे तो उसका सबब वसवसए शैतान होगा (ख़ाज़िन) बुख़ारी व मुस्लिम की हदीस में है रसूले करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया अच्छा ख़्वाब अल्लाह की तरफ़ से है चाहिए कि उसको मुहिब से बयान किया जाये और बुरा ख़्वाब शैतान की तरफ़ से है जब कोई देखने वाला वह ख़्वाब देखे तो चाहिए कि अपनी बायें तरफ़ तीन मर्तबा थुतकारे और यह पढ़े *अऊज़ु बिल्लाहि मिनश्शैतानिर्रजीम व मिन शर्रि हाज़िहिर्रोया* (फ़ा9) *इज्तिबा* यानी अल्लाह तआ़ला का किसी बन्दे को बरगुज़ीदा कर लेना यानी चुन लेना इसके माना यह हैं कि किसी बन्दे को फ़ैज़े रब्बानी के साथ मख़्सूस करे जिससे उसको तरह तरह के करामात व कमालात बे सई व मेहनत हासिल हों यह मर्तबा अम्बिया के साथ ख़ास है और उनकी बदौलत उनके मुकर्रबीन सिद्दीक़ीन व शोहदा व सालेहीन भी इस नेअ़मत से सरफ़राज़ किये जाते हैं। (फ़ा10) इल्म व हिकमत अता करेगा और कुतुबे साबिक़ा और अहादीसे अम्बिया के ग़वामिस कश्फ़ फ़रमाएगा और मुफ़स्सिरीन ने इससे तअ़बीरे ख़्वाब भी मुराद ली है हज़रत यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम तअ़बीरे ख़्वाब के बड़े माहिर थे। (फ़ा11) नबुव्वत अता फ़रमा कर जो आला मनासिब में से है और ख़ल्क़ के तमाम मन्सब इससे फ़रो तर हैं और सल्तनतें देकर दीन व दुनिया की नेअ़मतों से सरफ़राज़ करके (फ़ा12) कि उन्हें नबुव्वत अता फ़रमाई बाज़ मुफ़स्सिरीन ने फ़रमाया इस निअ़मत से मुराद यह है कि हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम को नारे नमरूद से ख़लासी दी और अपना ख़लील बनाया और हज़रत इसहाक़ अ़लैहिस्सलाम को हज़रत याकूब और अस्बात इनायत किये।

(बक़िया सफ़हा 385 का) यह दलील है कि आप ज़रूर नबी हैं और कुरआन पाक ज़रूर वहीए इलाही है और अल्लाह तआ़ला ने आपको इल्मे कुदुस से मुशर्रफ़ फ़रमाया अलावा बरीं इस वाक़िआ़ में बहुत सी इबरतें और नसीहतें और हिकमतें हैं (फ़ा15) बिरादराने हज़रत यूसुफ़ (फ़ा16) हक़ीक़ी बुनियामीन (फ़ा17) क़वी हैं ज़्यादा काम आ सकते हैं ज़्यादा फ़ायदा पहुंचा सकते हैं। हज़रत यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम छोटे हैं क्या काम कर सकते हैं (फ़ा18) और यह बात उनके ख़्याल में न आई कि हज़रत यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम की वालिदा का उनकी सिग़र सिनी में इन्तेक़ाल हो गया इस लिए वह मज़ीद शफ़क़त व मुहब्बत के मूरिद हुए और उन में रुश्द व नजाबत की वह निशानियां पाई जाती हैं जो दूसरे भाईयों में नहीं हैं यह सबब है कि हज़रत याकूब अ़लैहिस्सलाम को हज़रत यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम के साथ ज़्यादा मुहब्बत है यह सब बातें ख़्याल में न लाकर उन्हें अपने वालिद माजिद का हज़रत यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम से ज़्यादा मुहब्बत फ़रमाना शाक़ गुज़रा और उन्होंने बाहम मिल कर यह मशवरा किया कि कोई ऐसी तदबीर सोचनी चाहिए जिससे हमारे वालिद साहब को हमारी तरफ़ ज़्यादा इल्तेफ़ात हो बाज़ मुफ़स्सिरीन ने कहा है कि शैतान भी उस मजलिसे मशवरा में शरीक हुआ और उसने हज़रत यूसुफ़ अ़लैहिस्सलातु वस्सलाम के क़त्ल की राय दी और गुफ़्तगूए मशवरा इस तरह हुई (फ़ा19) आबादियों से दूर बस यही सूरतें हैं जिन से (फ़ा20) और उन्हें फ़क़त तुम्हारी ही मुहब्बत हो और की नहीं (फ़ा21) और तौबा कर लेना (फ़ा22) यानी यहूदा या रोबील (फ़ा23) क्योंकि क़त्ल गुनाहे अ़ज़ीम है (फ़ा24) यानी कोई मुसाफ़िर वहां गुज़रे और किसी मुल्क को उन्हें ले जाये उससे भी ग़रज़ हासिल है कि न वह यहां रहेंगे न वालिद साहब की नज़रे इनायत इस तरह उन पर होगी। (फ़ा25) इस में इशारा है कि चाहिये तो यह कि कुछ भी न करो लेकिन अगर तुम ने इरादा ही कर लिया है तो बस इतने ही पर इक्तेफ़ा करो चुनांचे सब इस पर मुत्तफ़िक़ हो गए और अपने वालिद से (फ़ा26) यानी तफ़रीह के हलाल मशाग़िल से लुत्फ़ अन्दोज़ हों मिस्ल शिकार और तीर अन्दाज़ी वग़ैरह के (फ़ा27) उनकी पूरी निगहदाश्त रखेंगे। (फ़ा28) क्योंकि उनकी एक साअ़त की जुदाई गवारा नहीं है (फ़ा29) क्योंकि उस सरज़मीन में भेड़िये और दरिन्दे बहुत हैं। (फ़ा30) और अपनी सैर व तफ़रीह में मश्गूल हो जाओ। (फ़ा31) लिहाज़ा उन्हें हमारे साथ भेज दीजिये तक़दीरे इलाही यूंही थी हज़रत याकूब अ़लैहिस्सलाम ने इजाज़त दी और वक़्ते रवानगी हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलातु वस्सलाम की क़मीस जो हरीरे जन्नत की थी और जिस वक़्त कि हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम को कपड़े उतार कर आग में डाला गया था हज़रत जिबरील अ़लैहिस्सलाम ने वह क़मीस आपको पहनाई थी वह क़मीसे मुबारक हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम से हज़रत इसहाक़ अ़लैहिस्सलाम को और उनसे उनके फ़रज़न्द हज़रत याकूब अ़लैहिस्सलाम को पहुंची थी वह क़मीस हज़रत याकूब अ़लैहिस्लाम ने तावीज़ बना कर हज़रत यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम के गले में डाल दी। (फ़ा32) इस तरह कि जब तक हज़रत याकूब अ़लैहिस्सलाम उन्हें देखते रहे वहां तक तो वह हज़रत यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम को अपने कन्धों पर सवार किये हुए इज़्ज़त व एहतेराम के साथ ले गए जब दूर निकल गए और हज़रत याकूब अ़लैहिस्सलाम की नज़रों से ग़ायब हो गए तो उन्होंने हज़रत यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम को ज़मीन पर दे पटका और दिलों में जो अ़दावत थी वह ज़ाहिर हुई जिस की तरफ़ जाते थे वह मारता था और तअ़ने देता था और ख़्वाब जो किसी तरह उन्होंने सुन पाया था उस पर तश्नीअ़ करते थे और कहते थे अपने ख़्वाब को बुला वह अब तुझे हमारे

हाथों से छुटाये जब सख़्तियां हद को पहुंचीं तो हज़रत यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम ने यहूदा से कहा ख़ुदा से डर और उन लोगों को इन ज़्यादतियों से रोक यहूदा ने अपने भाईयों से कहा कि तुम ने मुझ से क्या अहद किया था याद करो क़त्ल की नहीं ठहरी थी तब वह उन हरकतों से बाज़ आए (फ़ा33) चुनांचे उन्होंने ऐसा किया यह कुंवा कनआ़न से तीन फ़रसंग के फ़ासिला पर हवाली बैतुल मक़दिस या सरज़मीने उर्दुन में वाक़ेअ़ था ऊपर से उसका मुंह तंग था और अन्दर से फ़राख़ हज़रत यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम के हाथ पांव बांध कर क़मीस उतार कर कुंवे में छोड़ा जब वह उसकी निस्फ़ गहराई तक पहुंचे तो रस्सी छोड़ दी ताकि आप पानी में गिर कर हलाक हो जायें। हज़रत जिबरील अमीन बहुक्मे इलाही पहुंचे और उन्होंने आपको एक पत्थर पर बिठा दिया जो कुंवें में था और आपके हाथ खोल दिये और रवानगी के वक़्त हज़रत याक़ूब अ़लैहिस्सलाम ने हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम का क़मीस जो तावीज़ बना कर आपके गले में डाल दिया था वह खोल कर आपको पहना दिया उससे अंधेरे में रौशनी हो गई सुबहानल्लाह अम्बिया अ़लैहिमुस्सलातु वस्सलाम के मुबारक अजसादे शरीफ़ा में क्या बरकत है कि एक क़मीस जो इस बाबरकत बदन से मस हुआ उसने अंधेरे कुंवे को रौशन कर दिया। मसलाः इससे मालूम हुआ कि मलबूसात और आसारे मक़बूलाने हक़ से बरकत हासिल करना शरअ़ में साबित और अम्बिया की सुन्नत है। (फ़ा34) बवास्ता हज़रत जिबरील अ़लैहिस्सलाम के या बतरीक़े इलहाम कि आप ग़मगीन न हों हम आपको अ़मीक़ चाह से बुलन्द जाह पर पहुंचायेंगे और तुम्हारे भाईयों को हाजतमन्द बना कर तुम्हारे पास लायेंगे और उन्हें तुम्हारे ज़ेरे फ़रमान करेंगे और ऐसा होगा (फ़ा35) जो उन्होंने उस वक़्त तुम्हारे साथ किया (फ़ा36) कि तुम यूसुफ़ हो क्योंकि उस वक़्त आपकी शान ऐसी रफ़ीअ़ होगी आप उस मसनदे सलतनत व हुकूमत पर होंगे कि वह आपको न पहचानेंगे अलहासिल बिरादराने यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम हज़रत यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम को कुंवे में डाल कर वापस हुए और हज़रत यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम का क़मीस जो उतार लिया था उसको एक बकरी के बच्चा के ख़ून में रंग कर साथ ले लिया।

(बक़िया सफ़हा 386 का) पर रखकर बहुत रोये और फ़रमाया अ़जब तरह का होशियार भेड़िया था जो मेरे बेटे को खा तो गया और क़मीस को फाड़ा तक नहीं। एक रिवायत में यह भी है कि वह एक भेड़िया पकड़ लाये और हज़रत याक़ूब अ़लैहिस्सलाम से कहने लगे कि यह भेड़िया है जिसने हज़रत यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम को खाया है आपने उस भेड़िये से दरियाफ़्त फ़रमाया। वह बहुक्मे इलाही गोया होकर कहने लगा हुज़ूर न मैंने आपके फ़रज़न्द को खाया और न अम्बिया के साथ कोई भेड़िया ऐसा कर सकता है। हज़रत ने उस भेड़िये को छोड़ दिया और बेटों से। (फ़ा41) और वाक़िआ़ इसके ख़िलाफ़ है। (फ़ा42) हज़रत यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम तीन रोज़ कुंवें में रहे उसके बाद अल्लाह ने उन्हें उससे नजात अता फ़रमाई। (फ़ा43) जो मदयन से मिस्र की तरफ़ जा रहा था वह रास्ता बहक कर उस जंगल में आ पड़ा जहां आबादी से बहुत दूर यह कुंवां था और उसका पानी खारी था मगर हज़रत यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम की बरकत से मीठा हो गया जब वह क़ाफ़िला वाले उस कुंवें के क़रीब उतरे तो (फ़ा44) जिसका नाम मालिक बिन ज़अ़र ख़ुज़ाई था यह शख़्स मदयन का रहने वाला था जब वह कुंवें पर पहुंचा (फ़ा45) हज़रत यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम ने वह डोल पकड़ लिया और उसमें लटक गए मालिक ने डोल खींचा आप बाहर तशरीफ़ लाए उसने आपका हुस्न आ़लमे अफ़रोज़ देखा तो निहायत ख़ुशी में आकर अपने यारों को मुज़दा दिया। (फ़ा46) हज़रत यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम के भाई जो उस जंगल में अपनी बकरियां चराते थे वह देख भाल रखते थे आज जो उन्होंने यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम को कुंवें में न देखा तो उन्हें तलाश हुई और क़ाफ़िला में पहुंचे वहां उन्होंने मालिक बिन ज़अ़र के पास हज़रत यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम को देखा तो वह उससे कहने लगे कि यह .ग़ुलाम है हमारे पास से भाग आया है किसी काम का नहीं है नाफ़रमान है अगर ख़रीदो तो हम इसे सस्ता बेच देंगे फिर इसे कहीं इतनी दूर ले जाना कि इसकी ख़बर भी हमारे सुनने में न आये हज़रत यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम उनके ख़ौफ़ से ख़ामोश खड़े रहे और आपने कुछ न फ़रमाया (फ़ा47) जिनकी तादाद बक़ौल क़तादा बीस दिरहम थी (फ़ा48) फिर मालिक बिन ज़अ़र और उसके साथी हज़रत यूसुफ़ अ़लैहिस्सलातु वस्सलाम को मिस्र में लाये उस ज़माना में मिस्र का बादशाह रैयान बिन वलीद बिन नज़दान अ़मलीक़ी था और उसने अपनी अ़न्नाने सल्तनत क़तफ़ीर मिस्र के हाथ में दे रखी थी तमाम ख़ज़ाइन उसी के तहत तसर्रुफ़ थे उसको अज़ीज़े मिस्र कहते थे और वह बादशाह का वज़ीरे आज़म था जब हज़रत यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम मिस्र के बाज़ार में बेचने के लिए लाए गए तो हर शख़्स के दिल में आपकी तलब पैदा हुई और ख़रीदारों ने क़ीमत बढ़ाना शुरू की ता आंकि आपके वज़न के बराबर सोना इतनी ही चांदी इतना ही मुश्क इतना ही हरीर क़ीमत मुक़र्रर हुई और आपका वज़न चार सौ रतल था और उम्र शरीफ़ उस वक़्त तेरह या सत्तरह साल की थी अ़ज़ीज़े मिस्र ने इस क़ीमत पर आप को ख़रीद लिया और अपने घर ले आया दूसरे ख़रीदार उसके मुक़ाबला में ख़ामोश हो गए (फ़ा49) जिसका नाम ज़ुलेख़ा था (फ़ा50) क़ियाम गाह नफ़ीस हो लिबास व ख़ुराक आला क़िस्म की हो। (फ़ा51) और वह हमारे कामों में अपने तदब्बुर व दानाई से हमारे लिए नाफ़ेअ़ और बेहतर मददगार हों और उमूरे सल्तनत व मुल्कदारी के सर अंजाम में हमारे काम आयें क्योंकि रुश्द के आसार उनके चेहरे से नुमूदार हैं। (फ़ा52) यह क़तफ़ीर ने इस लिए कहा कि उसके कोई औलाद न थी। (फ़ा53) यानी ख़्वाबों की तअ़बीर। (फ़ा54) शबाब अपनी निहायत पर आया और उम्र शरीफ़ बक़ौल ज़हहाक बीस साल की और बक़ौल सुद्दी तीस की और बक़ौल कलबी अट्ठारह और तीस के दर्मियान हुई (फ़ा55) यानी इल्म बाअ़मल और फ़क़ाहत फ़िद्दीन इनायत की बाज़ उलमा ने कहा कि हुक्म से क़ौले सवाब और इल्म से तअ़बीरे ख़्वाब मुराद है बाज़ ने फ़रमाया इल्म हक़ायक़े अश्या का जानना और हिकमते इल्म के मुताबिक़ अ़मल करना है। (फ़ा56) यानी ज़ुलैख़ा (फ़ा57) और उसके साथ मश्ग़ूल होकर उसकी नाजायज़ ख़्वाहिश को पूरा करें ज़ुलैख़ा के मकान में यके बाद दीगरे सात दरवाज़े थे उसने हज़रत यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम पर तो यह ख़्वाहिश पेश की।

(बक़िया सफ़हा 387 का) दन्दाने अक़दस के नीचे दबा कर इज्तेनाब का इशारा फ़रमाते हैं (फ़ा63) और ख़यानत व ज़ेना से महफू.ज़ रखें (फ़ा64) जिन्हें हम ने बरगुज़ीदा किया है और जो हमारी ताअ़त में इख़्लास रखते हैं अलहासिल जब ज़ुलैख़ा आपके दरपै हुई तो हज़रत यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम भागे और ज़ुलैख़ा उनके पीछे उन्हें पकड़ने भागी हज़रत जिस जिस दरवाज़े पर पहुंचते जाते थे उसका क़ुफ़्ल खुल कर गिरता चला जाता था। (फ़ा65) आख़िरकार ज़ुलैख़ा हज़रत तक पहुंची और उसने आप का कुर्ता पीछे से पकड़ कर आपको खींचा कि आप निकलने न पायें मगर आप ग़ालिब आए (फ़ा66) यानी अ़ज़ीज़े मिस्र (फ़ा67) फ़ौरन ही ज़ुलैख़ा ने अपनी बराअत ज़ाहिर करने और हज़रत यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम को अपने मकर से ख़ायफ़ करने के लिए हीला तराशा और शौहर से (फ़ा68) इतना कह कर उसे अन्देशा हुआ कि कहीं अ़ज़ीज़ तैश में आकर हज़रत यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम के क़त्ल के दरपै न हो जाये और यह ज़ुलैख़ा की शिद्दते मुहब्बत कब गवारा कर सकती थी इस लिए उसने यह कहा (फ़ा69) यानी उसको कोड़े लगाए जायें जब हज़रत यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम ने देखा कि ज़ुलैख़ा उलटा आप पर इल्ज़ाम लगाती है और आपके लिए क़ैद व सज़ा की सूरत पैदा करती है तो आपने अपनी बराअत का इज़्हार और हक़ीक़ते हाल का बयान ज़रूरी समझा और (फ़ा70) यानी यह मुझ से फ़ेअ.्ले क़बीह की तलबगार हुई मैंने उससे इंकार किया और मैं भागा अज़ीज़ ने कहा यह बात किस तरह बावर की जाये। हज़रत यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि घर में एक चार महीने का बच्चा पालने में था जो ज़ुलैख़ा के मामूं का लड़का है उससे दरियाफ़्त करना चाहिए अज़ीज़ ने कहा चार महीने का बच्चा क्या जाने और कैसे बोले हज़रत यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि अल्लाह तआ़ला उसको गोयाई देने और उससे मेरी बेगुनाही की शहादत अदा करा देने पर क़ादिर है। अज़ीज़ ने उस बच्चा से दरियाफ़्त किया क़ुदरते इलाही से वह बच्चा गोया हुआ और उसने हज़रत यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम की तस्दीक़ की और ज़ुलैख़ा के क़ौल को बातिल बताया चुनांचे अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है। (फ़ा71) यानी उस बच्चे ने (फ़ा72) क्योंकि यह सूरत बताती है कि हज़रत यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम आगे बढ़े और ज़ुलैख़ा ने उनको दफ़ा किया तो कुर्ता आगे से फटा (फ़ा73) इस लिए कि यह हाल साफ़ बताता है कि हज़रत यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम इससे भागते थे और ज़ुलैख़ा पीछे से पकड़ती थी इस लिए कुर्ता पीछे से फटा (फ़ा74) और जान लिया कि हज़रत यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम सच्चे हैं और ज़ुलैख़ा झूठी है (फ़ा75) फिर हज़रत यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम की तरफ़ मुतवज्जह होकर अ़ज़ीज़ ने इस तरह मअ.्ज़रत की (फ़ा76) और इस पर मग़मूम न हो बेशक तुम पाक हो और इस कलाम से यह भी मतलब था कि इसका किसी से ज़िक्र न करो ताकि चर्चा न हो और शोहरा आम न हो जाए फ़ायदा इसके अलावा भी हज़रत यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम की बराअत की बहुत सी अ़लामतें मौजूद थीं एक तो यह कि कोई शरीफ़ तबीअ़त इन्सान अपने मुहसिन के साथ इस तरह की ख़यानत रवा नहीं रखता हज़रत यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम बईं करामत अख़्लाक़ किस तरह ऐसा कर सकते थे दोयम यह कि देखने वालों ने आपको भागते आते देखा और तालिब की यह शान नहीं होती वह दरपै होता है भागता नहीं भागता वही है जो किसी बात पर मजबूर किया जाये और वह उसे गवारा न करे सोम यह कि औरत ने इन्तेहा दर्जा का सिंगार किया था और वह ग़ैर मामूली ज़ेबो ज़ीनत की हालत में थी इससे मालूम होता है कि रग़बत व एहतेमाम महज़ उस की तरफ़ से था। चहारुम हज़रत यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम का तक़वा व तहारत जो एक दराज़ मुद्दत तक देखा जा चुका था उससे आपकी तरफ़ ऐसे अमरे क़बीह की निस्बत किसी तरह क़ाबिले एतेबार नहीं हो सकती थी फिर अज़ीज़े मिस्र ज़ुलैख़ा की तरफ़ मुतवज्जह होकर कहने लगा। (फ़ा77) कि तूने बेगुनाह पर तोहमत लगाई (फ़ा78) अज़ीज़े मिस्र ने अगरचे इस क़िस्सा को बहुत दबाया लेकिन यह ख़बर छुप न सकी और इसका चर्चा और शोहरा हो ही गया (फ़ा79) यानी शुरफ़ाए मिस्र की औरतें।

(बक़िया सफ़हा 388 का) और मेवे तराशें (फ़ा84) को उम्दा लिबास पहना कर उन (फ़ा85) पहले तो आपने उससे इन्कार किया लेकिन जब इसरार व ताकीद ज़्यादा हुई तो उसकी मुख़ालफ़त के अन्देशा से आपको आना ही पड़ा (फ़ा86) क्योंकि उन्होंने उस जमाले आलमे अफ़रोज़ के साथ नबुव्वत व रिसालत के अनवार और तवाज़ोअ़ व इन्केसार के आसार और शाहाना हैबत व इक़्तेदार और लज़ाइज़ा तअ़मा और सौरे जमीला की तरफ़ से बे नियाज़ी की शान देखी तअ़ज्जुब में आ गईं और आपकी अ़ज़मत व हैबत दिलों में भर गई और हुस्नो जमाल ने ऐसा वारफ़्ता किया कि उन औरतों को खुद फ़रामोशी हो गइ (फ़ा87) बजाए लेमूं के और दिल हज़रत यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम के साथ ऐसे मश्ग़ूल हुए कि हाथ काटने की तकलीफ़ का असलन एहसास न हुआ (फ़ा88) कि ऐसा हुस्न व जमाल बशर में देखा ही नहीं गया और इसके साथ नफ़्स की यह तहारत कि मिस्र की आली ख़ानदाने जमीला महज़रात तरह तरह के नफ़ीस लिबासों और ज़ेवरों से आरास्ता पैरास्ता सामने मौजूद हैं और आप किसी की तरफ़ नज़र नहीं फ़रमाते और क़तअ़न इलतेफ़ात नहीं करते (फ़ा89) अब तुम ने देख लिया और तुम्हें मालूम हो गया कि मेरी शेफ़्तगी कुछ क़ाबिले तअ़ज्जुब और मालमत नहीं। (फ़ा90) और किसी तरह मेरी तरफ़ माइल न हुए इस पर मिस्री औरतों ने हज़रत यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम से कहा कि आप ज़ुलैख़ा का कहना मान लीजिये .ज़ुलैख़ा बोली। (फ़ा91) और चोरों और क़ातिलों और नाफ़रमानों के साथ जेल में रहेंगे क्योंकि उन्होंने मेरा दिल लिया और मेरी नाफ़रमानी की और फ़िराक़ की तलवार से मेरा ख़ून बहाया तो यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम को भी ख़ुशगवार खाना पीना और आराम की नींद सोना मुयस्सर न होगा जैसा मैं जुदाई की तकलीफ़ों में मुसीबतें झेलती और सदमों में परेशानी के साथ वक़्त काटती हूं यह भी तो कुछ तकलीफ़ उठायें मेरे साथ हरीर में शाहाना सरीर पर ऐश गवारा नहीं है तो क़ैद ख़ाना के चुभने वाले बोरिये पर नंगे जस्म को दुखाना गवारा करें हज़रत यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम यह सुनकर मजलिस से उठ गए और मिस्री औरतें मलामत करने के बहाने से बाहर आईं और एक एक ने आप से अपनी तमन्नाओं और मुरादों का इज़्हार किया आपको उनकी गुफ़्तगू बहुत नागवार हुई तो बारगाहे इलाही में (ख़ाज़िन व मदारिक व हुसैनी) (फ़ा92) और अपनी इस्मत की पनाह

में न लेगा (फ़ा93) जब हज़रत यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम से उम्मीद पूरी होने की कोई शक्ल न देखी तो मिस्री औरतों ने जुलैख़ा से कहा कि अब मुनासिब यह मालूम होता है कि अब दो तीन रोज़ हज़रत यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम को क़ैद ख़ाना में रखा जाये ताकि वहां की मेहनत व मशक़्क़त देख कर उन्हें निअ़मत व राहत की क़द्र हो और वह तेरी दरख़्वास्त क़बूल करें .जुलैख़ा ने इस राय को माना और अ़ज़ीज़े मिस्र से कहा कि मैं इस अबरी गुलाम की वजह से बदनाम हो गई हूं और मेरी तबीअ़त इससे नफ़रत करने लगी है मुनासिब यह है कि इनको क़ैद किया जाये ताकि लोग समझ लें कि वह ख़तावार हैं और मैं मलामत से बरी हूं यह बात अ़ज़ीज़ के ख़्याल में आ गई। (फ़ा94) चुनांचे उन्होंने ऐसा किया और आपको क़ैद ख़ाना में भेज दिया। (फ़ा95) उनमें से एक तो मिस्र के शाहे आज़म वलीद बिन नरवान अ़मलीक़ी का मोहतमिम मतबख़ था और दूसरा उसका साक़ी उन दोनों पर यह इलज़ाम था कि उन्होंने बादशाह को ज़हर देना चाहा इस जुर्म में दोनों क़ैद किये गए और हज़रत यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम जब क़ैद ख़ाना में दाख़िल हुए तो आपने अपने इल्म का इज़हार शुरू कर दिया और फ़रमाया कि मैं ख़्वाबों की तअ़.बीर का इल्म रखता हूं। (फ़ा96) जो बादशाह का साक़ी था (फ़ा97) मैं एक बाग़ में हूं वहां एक अंगूर के दरख़्त में तीन ख़ोशे रसीदा लगे हुए हैं बादशाह का कासा मेरे हाथ में है मैं उन ख़ोशों से (फ़ा98) यानी मोहतमिम मतबख़

(बक़िया सफ़हा 389 का) बचावें। मसलाः इससे मालूम हुआ कि अगर आलिम अपनी इल्मी मन्ज़िलत का इस लिए इज़हार करे कि लोग उससे नफ़ा उठायें तो यह जायज़ है (मदारिक व ख़ाज़िन) (फ़ा100) इसकी मिक़दार और उसका रंग और उसके आने का वक़्त और यह कि तुम ने क्या खाया या कितना खाया कब खाया। (फ़ा101) हज़रत यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम ने अपने मोअ़.जेज़ा का इज़हार फ़रमाने के बाद यह भी ज़ाहिर फ़रमा दिया कि आप ख़ानदाने नबुव्वत से हैं और आप के आबा व अजदाद अम्बिया हैं जिन का मर्तबा उलिया दुनिया में मशहूर है इससे आपका मक़सद यह था कि सुनने वाले आपकी दावत क़बूल करें और आपकी हिदायत को मानें (फ़ा102) तौहीद इख़्तियार करना और शिर्क से बचना। (फ़ा103) उसकी इबादत बजा नहीं लाते और मख़्लूक़ परस्ती करते हैं। (फ़ा104) जैसे कि बुत परस्तों ने बना रखे हैं कोई सोने का कोई चांदी का कोई तांबे का कोई लोहे का कोई लकड़ी का कोई पत्थर का कोई और किसी चीज़ का कोई छोटा कोई बड़ा मगर सब के सब निकम्मे बेकार न नफ़ा दे सकें न ज़रर पहुंचा सकें ऐसे झूठे मअ़.बूद। (फ़ा105) कि न कोई उसका मुक़ाबिल हो सकता है न उसके हुक्म में दख़ल दे सकता है न उसका कोई शरीक है न नज़ीर सब पर उसका हुक्म जारी और सब उसके ममलूक। (फ़ा106) और उनका नाम मअ़.बूद रख लिया है बावजूदे कि वह बे हक़ीक़त पत्थर हैं। (फ़ा107) क्योंकि सिर्फ़ वही मुस्तहिक़े इबादत है। (फ़ा108) जिस पर दलायल व बराहीन क़ायम हैं। (फ़ा109) तौहीद व इबादते इलाही की दावत देने के बाद हज़रत यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम ने तअ़बीरे ख़्वाब की तरफ़ तवज्जोह फ़रमाई और इरशाद किया (फ़ा110) यानी बादशाह का साक़ी तो अपने ओहदा पर बहाल किया जाएगा और पहले की तरह बादशाह को शराब पिलाएगा और तीन ख़ोशे जो ख़्वाब में बयान किये गए हैं यह तीन दिन हैं इतने ही अय्याम क़ैद ख़ाना में रहेगा फिर बादशाह उसको बुला लेगा (फ़ा111) यानी मोहतमिम मतबख़ व तआ़म (फ़ा112) हज़रत इब्ने मसऊद रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने फ़रमाया कि तअ़बीर सुनकर इन दोनों ने हज़रत यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम से कहा कि ख़्वाब तो हमने कुछ भी नहीं देखा हमतो हंसी कर रहे थे हज़रत यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम ने फ़रमाया। (फ़ा113) जो मैंने कह दिया यह ज़रूर वाक़ेअ़ होगा तुम ने ख़्वाब देखा हो या न देखा हो अब यह हुक्म टल नहीं सकता।

(बक़िया सफ़हा 390 का) इसकी तअ़.बीर से आ़जिज़ रहे हैं हज़रत इसकी ताबीर इरशाद फ़रमायें। (फ़ा122) ख़्वाब की तअ़बीर से और आपके इल्म व फ़ज़्ल और मर्तबत व मन्ज़िलत को जानें और आपको इस मेहनत से रिहा करके अपने पास बुलायें हज़रत यूसुफ़ अ़लैहिस्सलातु वस्सलाम ने ताबीर दी और (फ़ा123) इस ज़माना में ख़ूब पैदावार होगी सात मोटी गायों और सात सब्ज़ बालों से इसी की तरफ़ इशारा है। (फ़ा124) ताकि ख़राब न हो और आफ़ात से महफ़ूज़ रहे। (फ़ा125) इस पर से भूसी उतार लो और उसे साफ़ कर लो बाक़ी को ज़ख़ीरा बना कर महफ़ूज़ कर लो। (फ़ा126) जिनकी तरफ़ दुबली गायों और सूखी बालों में इशारा है। (फ़ा127) और ज़ख़ीरा कर लिया था। (फ़ा128) बीज के लिए ताकि उससे काश्त करो।

وَمَآ اُبَرِّئُ نَفۡسِیۡ ۚ اِنَّ النَّفۡسَ لَاَمَّارَةٌۢ بِالسُّوۡٓءِ اِلَّا مَا رَحِمَ رَبِّیۡ ؕ اِنَّ رَبِّیۡ غَفُوۡرٌ رَّحِیۡمٌ ﴿۵۳﴾ وَقَالَ الۡمَلِکُ ائۡتُوۡنِیۡ بِہٖۤ اَسۡتَخۡلِصۡہُ لِنَفۡسِیۡ ۚ فَلَمَّا کَلَّمَہٗ قَالَ اِنَّکَ الۡیَوۡمَ لَدَیۡنَا مَکِیۡنٌ اَمِیۡنٌ ﴿۵۴﴾ قَالَ اجۡعَلۡنِیۡ عَلٰی خَزَآئِنِ الۡاَرۡضِ ۚ اِنِّیۡ حَفِیۡظٌ عَلِیۡمٌ ﴿۵۵﴾ وَکَذٰلِکَ مَکَّنَّا لِیُوۡسُفَ فِی الۡاَرۡضِ ۚ یَتَبَوَّاُ مِنۡہَا حَیۡثُ یَشَآءُ ؕ نُصِیۡبُ بِرَحۡمَتِنَا مَنۡ نَّشَآءُ وَلَا نُضِیۡعُ اَجۡرَ الۡمُحۡسِنِیۡنَ ﴿۵۶﴾ وَلَاَجۡرُ الۡاٰخِرَۃِ خَیۡرٌ لِّلَّذِیۡنَ اٰمَنُوۡا وَکَانُوۡا یَتَّقُوۡنَ ﴿۵۷﴾ وَجَآءَ اِخۡوَۃُ یُوۡسُفَ فَدَخَلُوۡا عَلَیۡہِ فَعَرَفَہُمۡ وَہُمۡ لَہٗ مُنۡکِرُوۡنَ ﴿۵۸﴾ وَلَمَّا جَہَّزَہُمۡ بِجَہَازِہِمۡ قَالَ ائۡتُوۡنِیۡ بِاَخٍ لَّکُمۡ مِّنۡ اَبِیۡکُمۡ ۚ اَلَا تَرَوۡنَ اَنِّیۡۤ اُوۡفِی الۡکَیۡلَ وَاَنَا خَیۡرُ الۡمُنۡزِلِیۡنَ ﴿۵۹﴾ فَاِنۡ لَّمۡ تَاۡتُوۡنِیۡ بِہٖ فَلَا کَیۡلَ لَکُمۡ عِنۡدِیۡ وَلَا تَقۡرَبُوۡنِ ﴿۶۰﴾ قَالُوۡا سَنُرَاوِدُ عَنۡہُ اَبَاہُ وَاِنَّا لَفٰعِلُوۡنَ ﴿۶۱﴾ وَقَالَ لِفِتۡیٰنِہِ اجۡعَلُوۡا بِضَاعَتَہُمۡ

व मा उबर्रिउ नफ़्सी इन्नन्नफ़्–स ल–अम्मा–रतुम् बिस्सू–इ इल्ला मा रहि–म रब्बी इन्–न रब्बी ग़फ़ूरुर्रहीम(53)व क़ालल् मलिकुअ्तूनी बिही अस्तख़्लिस्हु लिनफ़्सी फ़–लम्मा कल्ल–महू क़ा–ल इन्नकल् यौ–म लदैना मकीनुन् अमीन(54)क़ाल–जअ़ल्नी अ़ला ख़ज़ाइनिल् अर्ज़ि इन्नी हफ़ीज़ुन् अ़लीम(55)व कज़ालि–क मक्कन्ना लियूसु–फ़ फ़िल् अर्ज़ि य–तबव्वउ मिन्हा हैसु यशाउ नुसीबु बिरह्मतिना मन् नशाउ व ला नुज़ीअु अज्रल् मुह्सिनीन(56)व ल–अज्रुल् आख़ि–रति ख़ैरुल् लिल्लज़ी–न आ–मनू व कानू यत्तकून(57)व जा–अ इख़्वतु यूसु–फ़फ़–द–ख़लू अ़लैहि फ़–अ–र–फ़हुम् व हुम् लहू मुन्किरून(58)व लम्मा जह्–ह–ज़हुम् बि–जहाज़िहिम् क़ालअ्तूनी बि–अख़िल्लकुम् मिन् अबीकुम् अला तरौ–न अन्नी ऊफ़िल् कै–ल व अना ख़ैरुल् मुन्ज़िलीन(59)फ़इल्लम् तअ्तूनी बिही फ़ला कै–ल लकुम् अ़िन्दी व ला तक़्रबून(60)क़ालू सनुराविदु अ़न्हु अबाहु व इन्ना लफ़ाअ़िलून(61)व क़ा–ल लि–फ़ित्यानिहिज्–अ़लू बिज़ा–अ–तहुम्

और मैं अपने नफ़्स को बे क़ुसूर नहीं बताता (फ़ा135) बेशक नफ़्स तो बुराई का बड़ा हुक्म देने वाला है मगर जिस पर मेरा रब रहम करे (फ़ा136) बेशक मेरा रब बख़्शने वाला मेहरबान है।(53) (फ़ा137) और बादशाह बोला उन्हें मेरे पास ले आओ कि मैं उन्हें ख़ास अपने लिए चुन लूं (फ़ा138) फिर जब उससे बात की कहा बेशक आज आप हमारे यहां मोअ़ज़्ज़ज़ मोअ्तमद हैं।(54) (फ़ा139) यूसुफ़ ने कहा मुझे ज़मीन के ख़ज़ानों पर कर दे बेशक मैं हिफ़ाज़त वाला इल्म वाला हूं।(55) (फ़ा140) और यूंही हमने यूसुफ़ को उस मुल्क पर क़ुदरत बख़्शी उसमें जहां चाहे रहे (फ़ा141) हम अपनी रहमत (फ़ा142) जिसे चाहें पहुंचायें और हम नेको का नेग ज़ाया नहीं करते।(56) और बेशक आख़िरत का सवाब उनके लिए बेहतर जो ईमान लाए और परहेज़गार रहे।(57) (फ़ा143) (रुकूअ़ 1) और यूसुफ़ के भाई आए तो उसके पास हाज़िर हुए तो यूसुफ़ ने उन्हें (फ़ा144) पहचान लिया और वह उससे अनजान रहे।(58) (फ़ा145) और जब उनका सामान मुहय्या कर दिया (फ़ा146) कहा अपना सौतेला भाई (फ़ा147) मेरे पास ले आओ क्या नहीं देखते कि मैं पूरा मापता हूं (फ़ा148) और मैं सबसे बेहतर मेहमान नवाज़ हूं।(59) फिर अगर उसे लेकर मेरे पास न आओ तो तुम्हारे लिए मेरे यहां माप नहीं और मेरे पास न फटकना।(60) बोले हम उसकी ख़्वाहिश करेंगे उसके बाप से और हमें यह ज़रूर करना।(61) और यूसुफ़ ने अपने ग़ुलामों से कहा उनकी पूंजी उनकी खररजियों (थैलों)

(फ़ा135) ज़ुलैख़ा के इक़रार व एतेराफ़ के बाद हज़रत यूसुफ़ अ़लैहिस्सलातु वस्सलाम ने जो यह फ़रमाया था कि मैं ने अपनी बरअत का इज़्हार इस लिए चाहा था ताकि अ़ज़ीज़ को यह मालूम हो जाये कि मैं ने उस की ग़ैबत में उसकी ख़ियानत नहीं की है और मैं उसके अहल की हुरमत ख़राब करने से मुजतनिब रहा हूं और जो इल्ज़ाम मुझ पर लगाये गए हैं मैं उनसे पाक हूं उसके बाद आपका ख़्याल मुबारक इस तरफ़ गया कि उसमें अपनी तरफ़ पाकी की निस्बत और अपनी नेकी का बयान है ऐसा न हो कि उसमें शाने ख़ुद बीनी और ख़ुद पसन्दी का शायबा भी आए इसी लिए अल्लाह तआ़ला की जनाब में तवाज़ोअ़ व इन्केसार से अ़र्ज़ किया कि मैं अपने नफ़्स को बेक़ुसूर नहीं बताता मुझे अपनी बेगुनाही पर नाज़ नहीं है और मैं गुनाह से बचने को अपने नफ़्स की ख़ूबी क़रार नहीं देता नफ़्स की जिन्स का यह हाल है कि (फ़ा136) यानी अपने जिस मख़्सूस बन्दे को अपने करम से मअ़्सूम करे तो उसका बुराईयों से बचना अल्लाह के फ़ज़्ल व रहमत से है और मअ़्सूम करना उसी का करम है। (फ़ा137) जब बादशाह को हज़रत यूसुफ़ अ़लैहिस्सलातु वस्सलाम के इल्म और अमानत का हाल मालूम हुआ और

वह आपके हुस्ने सब्र हुस्ने अदब क़ैद ख़ाने वालों के साथ एहसान मेहनतों व तकलीफ़ों पर सबात व इस्तेक़लाल रखने पर मुत्तलअ़ हुआ तो उसके दिल में आपका बहुत ही अ़ज़ीम एतेक़ाद पैदा हुआ। (फ़138) और अपना मख़्सूस बना लूं चुनांचे उसने मुअ़ज़्ज़ीन की एक जमाअ़त बेहतरीन सवारियां और शाहाना साज़ो सामान और नफ़ीस लिबास लेकर क़ैद ख़ाना भेजी ताकि हज़रत यूसुफ़ अ़लैहिस्सलातु वस्सलाम को निहायत ताज़ीम व तकरीम के साथ ऐवाने शाही में लायें उन लोगों ने हज़रत यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम की ख़िदमत में हाज़िर होकर बादशाह का प्याम अ़र्ज़ किया आपने क़बूल फ़रमाया और क़ैद ख़ाना से निकलते वक़्त क़ैदियों के लिए दुआ़ फ़रमाई जब क़ैद ख़ाना से बाहर तशरीफ़ लाये तो उसके दरवाज़े पर लिखा यह बला का घर ज़िन्दों की क़ब्र और दुश्मनों की बदगोई और सच्चों के इम्तेहान की जगह है फिर गुस्ल फ़रमाया और पोशाक पहन ऐवाने शाही की तरफ़ रवाना हुए जब किला के दरवाज़े पर पहुंचे तो फ़रमाया मेरा रब मुझे काफ़ी है उसकी पनाह बड़ी और उसकी सना बरतर और उसके सिवा कोई मअ़बूद नहीं फिर किला में दाख़िल हुए बादशाह के सामने पहुंचे तो यह दुआ़ की कि या रब मेरे तेरे फ़ज़्ल से उसकी भलाई तलब करता हूं और उसकी और दूसरों की बुराई से तेरी पनाह चाहता हूं जब बादशाह से नज़र मिली तो आपने अ़रबी में सलाम फ़रमाया बादशाह ने दरियाफ़्त किया यह क्या ज़बान है फ़रमाया यह मेरे अ़म हज़रत इस्माईल अ़लैहिस्सलाम की ज़बान है फिर आपने उसको इबरानी ज़बान में दुआ़ की उसने दरियाफ़्त किया यह कौन ज़बान है, फ़रमाया यह मेरे अब्बा की ज़बान है। बादशाह यह दोनों ज़बानें न समझ सका बावजूदेकि वह सत्तर ज़बानें जानता था फिर उसने जिस ज़बान में गुफ़्तगू की आपने उसी ज़बान में उसको जवाब दिया उस वक़्त आपकी उम्र शरीफ़ तीस साल की थी इस उम्र में यह वुसअ़ते उलूम देख कर बादशाह को बहुत हैरत हुई और उसने आपको अपने बराबर जगह दी। (फ़139) बादशाह ने दरख़्वास्त की कि हज़रत उसके ख़्वाब की ताबीर अपने ज़बाने मुबारक से सुनावें हज़रत ने उस ख़्वाब की पूरी तफ़सील भी सुना दी जिस जिस शान से कि उसने देखा था बावजूदेकि आप से यह ख़्वाब पहले मुजमलन बयान किया गया था इस पर बादशाह को बहुत तअ़ज्जुब हुआ कहने लगा कि आपने मेरा ख़्वाब हू बहू बयान फ़रमा दिया ख़्वाब तो अ़जीब था ही मगर आपका इस तरह बयान फ़रमा देना इससे भी ज़्यादा अ़जीब तर है अब ताबीर इरशाद हो जाये आपने ताबीर बयान फ़रमाने के बाद इरशाद फ़रमाया कि अब लाज़िम यह है कि ग़ल्ले जमा किये जायें और उन फ़राख़ी के सालों में कसरत से काश्त कराई जाये और ग़ल्ले मअ़ बालों के महफ़ूज़ रखे जायें और रिआ़या की पैदावार में से ख़ुमस लिया जाये उससे जो जमा होगा वह मिस्र व हवालीए मिस्र के बाशिन्दों के लिए काफ़ी होगा और फिर ख़ल्क़े ख़ुदा हर हर तरफ़ से तेरे पास ग़ल्ला ख़रीदने आएगी और तेरे यहां इतने ख़ज़ाइन व अमवाल जमा होंगे जो तुझ से पहलों के लिए जमा न हुए बादशाह ने कहा यह इन्तेज़ाम कौन करेगा। (फ़140) यानी अपनी क़लमरौ के तमाम ख़ज़ाने मेरे सपुर्द कर दे बादशाह ने कहा आप से ज़ाइद इसका मुस्तहिक़ और कौन हो सकता है और उसने उसको मंज़ूर किया। मसायलः अहादीस में तलबे इमारत की मुमानअ़त आई है उसके यह माना हैं कि जब मुल्क में अहल मौजूद हों और इक़ामते अहकामे इलाही किसी एक शख़्स के साथ ख़ास न हो उस वक़्त इमारत तलब करना मकरूह है लेकिन जब एक ही शख़्स अहल हो तो उसको अहकामे इलाहिया की इक़ामत के लिए इमारत तलब करना जायज़ बल्कि वाजिब है और हज़रत यूसुफ़ अ़लैहिस्सलातु वस्सलाम इसी हाल में थे आप रसूल थे उम्मत के मसालेह के आ़लिम थे यह जानते थे कि क़हत शदीद होने वाला है जिस में ख़ल्क़ को राहत और आसाईश पहुंचाने की यही सबील है कि अ़न्नाने हुकूमत को आप अपने हाथ में लें इस लिए आपने इमारत तलब फ़रमाई। मसलाः ज़ालिम बादशाह की तरफ़ से ओ़हदे क़बूल करना ब-नीयते इक़ामत अ़द्ल जाइज़ है मसलाः अगर अहकामे दीन का इजरा काफ़िर या फ़ासिक़ बादशाह की तमकीन के बग़ैर न हो सके तो उस में उससे मदद लेना जाइज़ है। मसलाः अपनी ख़ूबियों का बयान तफ़ाख़ुर व तकब्बुर के लिए नाजाइज़ है मगर दूसरों को नफ़ा पहुंचाने या ख़ल्क़ के हुक़ूक़ की हिफ़ाज़त करने के लिए अगर इज़हार की ज़रूरत पेश आए तो ममनूअ़ नहीं इसी लिए हज़रत यूसुफ़ अ़लैहिस्सलातु वस्सलाम ने बादशाह से फ़रमाया कि मैं हिफ़ाज़त व इल्म वाला हूं। (फ़141) सब उनके तहत तसर्रुफ़ है इमारत तलब करने के एक साल बाद बादशाह ने हज़रत यूसुफ़ अ़लैहिस्सलातु वस्सलाम को बुला कर आपकी ताजपोशी की और तलवार और मुहर आपके सामने पेश की और आपको तलाई तख़्त पर तख़्त नशीन किया जो जवाहरात से मुरस्सअ़ था और अपना मुल्क आपको तफ़वीज़ किया और क़तफ़ीर (अ़ज़ीज़े मिस्र) को मअ़ज़ूल करके आपको उसी जगह वाली बनाया और तमाम ख़ज़ाइन आपको तफ़वीज़ किये और सल्तनत के तमाम उमूर आपके हाथ में दे दिये और ख़ुद मिस्ल ताबेअ़ के हो गया कि आपकी राय में दख़ल न देता और आपके हर हुक्म को मानता उसी ज़माना में अ़ज़ीज़े मिस्र का इन्तेक़ाल हो गया बादशाह ने उसके इन्तेक़ाल के बाद ज़ुलैख़ा का निकाह हज़रत यूसुफ़ अ़लैहिस्सलातु वस्सलाम के साथ कर दिया जब यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम ज़ुलैख़ा के पास पहुंचे और उससे फ़रमाया। क्या यह उससे बेहतर नहीं है जो तू चाहती थी ज़ुलैख़ा ने अ़र्ज़ किया ऐ सिद्दीक़ मुझे मलामत न कीजिये मैं ख़ूबरू थी नौजवान थी ऐश में थी और अ़ज़ीज़े मिस्र औरतों से सरोकार ही न रखता था और आपको अल्लाह तआ़ला ने यह हुस्न व जमाल अ़ता किया है मेरा दिल इख़्तियार से बाहर हो गया और अल्लाह तआ़ला ने आपको मअ़सूम किया है आप महफ़ूज़ रहे हज़रत यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम ने ज़ुलैख़ा को बाकरा पाया और उससे आपके दो फ़रज़न्द हुए। अफ़रासीम और मीसा और मिस्र में आपकी हुकूमत मज़बूत हुई आपने अ़द्ल की बुनियादें क़ायम कीं हर ज़न व मर्द के दिल में आपकी मुहब्बत पैदा हुई और आपने क़हत साली के अय्याम के ग़ल्लों के ज़ख़ीरे जमा करने की तदबीर फ़रमाई उसके लिए बहुत वसीअ़ और आ़लीशान अम्बार ख़ाने तामीर फ़रमाये और बहुत कसीर ज़ख़ायर जमा किये जब फ़राख़ी के साल गुज़र गए और क़हत का ज़माना आया तो आपने बादशाह और उसके ख़दम के लिए रोज़ाना सिर्फ़ एक वक़्त का खाना मुक़र्रर फ़रमा

दिया एक रोज़ दोपहर के वक़्त बादशाह ने हज़रत से भूख की शिकायत की आपने फ़रमाया यह क़हत की इब्तेदा का वक़्त है पहले साल में लोगों के पास जो ज़ख़ीरे थे सब ख़त्म हो गए बाज़ार ख़ाली रह गए अहले मिस्र हज़रत यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम से जिन्स ख़रीदने लगे और उनके तमाम दिरहम दीनार आपके पास आगए दूसरे साल ज़ेवर... और जवाहरात से ग़ल्ला ख़रीदे और वह तमाम आपके पास आगए लोगों के पास ज़ेवर व जवाहर की क़िस्म से कोई चीज़ न रही तीसरे साल चौपाये और जानवर देकर ग़ल्ले ख़रीदे और मुल्क में कोई किसी जानवर का मालिक न रहा चौथे साल में ग़ल्ले के लिए तमाम .ग़ुलाम और बांदियां बेच डालीं पांचवें साल तमाम अराज़ी व अ़मला व जागीरें फ़रोख़्त करके हज़रत से ग़ल्ला ख़रीदा और यह तमाम चीज़ें हज़रत यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम के पास पहुंच गईं छठे साल जब कुछ न रहा तो उन्होंने अपनी औलादें बेचीं इस तरह ग़ल्ले ख़रीद कर वक़्त गुज़ारा सातवें साल वह लोग खुद बिक गए और .ग़ुलाम बन गए और मिस्र में कोई आज़ाद मर्द व औरत बाक़ी न रहा। जो मर्द था वह हज़रत यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम का ग़ुलाम था जो औरत थी वह आपकी कनीज़ थी और लोगों की ज़बान पर था कि हज़रत यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम की सी अ़ज़मत व जलालत कभी किसी बादशाह को मुयस्सर न आई हज़रत यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम ने बादशाह से कहा कि तूने देखा अल्लाह का मुझ पर कैसा करम है उसने मुझ पर ऐसा एहसाने अ़ज़ीम फ़रमाया अब उनके हक़ में तेरी क्या राय है बादशाह ने कहा जो हज़रत की राय और हम आपके ताबेअ़ हैं आपने फ़रमाया मैं अल्लाह को गवाह करता हूं और तुझको गवाह करता हूं कि मैंने तमाम अहले मिस्र को आज़ाद किया और उनके तमाम अमलाक और कुल जागीरें वापस कीं उस ज़माना में हज़रत ने कभी शिकम सैर होकर खाना नहीं मुलाहज़ा फ़रमाया। आपसे अर्ज़ किया गया कि इतने अ़ज़ीम ख़ज़ानों के मालिक होकर आपके भूखे रहते हैं फ़रमाया इस अन्देशा से कि सैर होजाऊं तो कहीं भूखों को न भूल जाऊं सुबहानल्लाह क्या पाकीज़ा अख़्लाक़ हैं मुफ़स्सिरीन फ़रमाते हैं कि मिस्र के तमाम ज़न व मर्द को हज़रत यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम के ख़रीदे हुए ग़ुलाम और कनीज़ें बनाने में अल्लाह तआ़ला की यह हिकमत थी कि किसी को यह कहने का मौक़ा न हो कि हज़रत यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम ग़ुलाम की शान में आये थे और मिस्र के एक शख़्स के ख़रीदे हुए हैं बल्कि सब मिस्री उनके ख़रीदे और आज़ाद किये हुए ग़ुलाम हों और हज़रत यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम से जो उस हालत में सब्र किया उसकी यह जज़ा दी गई (फ़ा142) यानी मुल्क व दौलत व नबुव्वत (फ़ा143) इससे साबित हुआ कि हज़रत यूसुफ़ अ़लैहिस्सलातु वस्सलाम के लिए आख़िरत का अज्रो सवाब इससे बहुत ज़्यादा अफ़ज़ल व आला है जो अल्लाह तआ़ला ने उन्हें दुनिया में अ़ता फ़रमाया इब्ने ऐनिया ने कहा कि मोमिन अपनी नेकियों का समरा दुनिया व आख़िरत दोनों में पाता है और काफ़िर जो कुछ पाता है दुनिया ही में पाता है आख़िरत में उसको कोई हिस्सा नहीं मुफ़स्सिरीन ने बयान किया है कि जब क़हत की शिद्दत हुई और बलाए अ़ज़ीम आ़म हो गई तमाम बलाद व अमसार क़हत की सख़्त तर मुसीबत में मुब्तला हुए और हर जानिब से लोग ग़ल्ला ख़रीदने के लिए मिस्र पहुंचने लगे हज़रत यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम किसी को एक ऊंट के बार से ज़्यादा ग़ल्ला नहीं देते ताकि मुसावात रहे और सब की मुसीबत रफ़अ़ हो क़हत की जैसी मुसीबत मिस्र और तमाम बिलाद में आई ऐसी ही कनआ़न में भी आई उस वक़्त हज़रत याक़ूब अ़लैहिस्सलाम ने बुनियामीन के साथ अपने दसों बेटों को ग़ल्ला ख़रीदने मिस्र भेजा (फ़ा144) देखते ही (फ़ा145) क्योंकि हज़रत यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम को कुंएं में डालने से अब तक चालीस साल का तवील ज़माना गुज़र चुका था और उनका ख़्याल यह था कि हज़रत यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम का इन्तेक़ाल हो चुका होगा और यहां आप तख़्ते सल्तनत पर शाहाना लिबास में शौकतो शान के साथ जलवा फ़रमा थे, इसलिए उन्होंने आपको न पहचाना और आपसे इबरानी ज़बान में गुफ़्तगू की आपने भी उसी ज़बान में जवाब दिया आपने फ़रमाया तुम कौन लोग हो उन्होंने अर्ज़ किया हम शाम के रहने वाले हैं जिस मुसीबत में दुनिया मुब्तला है उसी में हम भी हैं आप से ग़ल्ला ख़रीदने आये हैं आपने फ़रमाया कहीं तुम जासूस तो नहीं हो उन्होंने कहा हम अल्लाह की क़सम खाते हैं हम जासूस नहीं हैं, हम सब भाई हैं, एक बाप की औलाद हैं हमारे वालिद बहुत बुज़ुर्ग मुअ़म्मर सिद्दीक़ हैं और उनका नामे नामी हज़रत याक़ूब है, वह अल्लाह के नबी हैं। आपने फ़रमाया तुम कितने भाई हो, कहने लगे, थे तो हम बारह मगर एक भाई हमारा हमारे साथ जंगल गया था हलाक हो गया और वह वालिद साहब को हम सब से ज़्यादा प्यारा था। फ़रमाया अब तुम कितने हो, अर्ज़ किया दस, फ़रमाया ग्यारहवां कहां है कहा वह वालिद साहब के पास है, क्योंकि जो हलाक हो गया वह उसी का हक़ीक़ी भाई था अब वालिद साहब की उसी से कुछ तसल्ली होती है हज़रत यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम ने उन भाईयों की बहुत इ़ज़्ज़त की और बहुत ख़ातिर व मदारात से उनकी मेज़बानी फ़रमाई (फ़ा146) हर एक का ऊंट भर दिया और ज़ादे सफ़र दे दिया (फ़ा147) यानी बुनियामीन (फ़ा148) उसको ले आओगे तो एक ऊंट ग़ल्ला उसके हिस्सा का और ज़्यादा दूंगा।

(बक़िया सफ़हा 403 का) उन्हें और ज़्यादा ग़म होगा अलावा बरीं रोकने की बजुज़ इसके और कोई सबील भी नहीं है कि तुम्हारी तरफ़ कोई ग़ैर-पसन्दीदा बात मन्सूब हो बुनियामीन ने कहा इसमें कोई मुज़ायक़ा नहीं। (फ़ा167) और हर एक को एक बार शुतर ग़ल्ला दे दिया और एक बार शुतर बुनियामीन के नाम का ख़ास कर दिया। (फ़ा168) जो बादशाह के पानी पीने का सोने का जवाहरात से मुरस्सअ़ किया हुआ था और उस वक़्त उससे ग़ल्ला नापने का काम लिया जाता था यह प्याला बुनियामीन के कजावे में रख दिया गया और क़ाफ़िला कनआ़न के क़स्द से रवाना हो गया जब शहर के बाहर जा चुका तो अम्बार ख़ाना के कारकुनों को मालूम हुआ कि प्याला नहीं है उनके ख़्याल में यही आया कि यह क़ाफ़िला वाले ले गए उन्होंने उसकी जुस्तजू के लिए आदमी भेजे (फ़ा169) इस बात में और प्याला तुम्हारे पास निकले (फ़ा170) और शरीअ़ते हज़रत यअ़क़ूब अ़लैहिस्सलाम में चोरी की यही सज़ा मुक़र्रर थी चुनांचे उन्होंने कहा कि

فِيْ رِحَالِهِمْ لَعَلَّهُمْ يَعْرِفُوْنَهَآ اِذَا انْقَلَبُوْٓا اِلٰٓى اَهْلِهِمْ لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُوْنَ ﴿٦٢﴾ فَلَمَّا رَجَعُوْٓا اِلٰٓى اَبِيْهِمْ قَالُوْا يٰٓاَبَانَا مُنِعَ مِنَّا الْكَيْلُ فَاَرْسِلْ

مَعَنَآ اَخَانَا نَكْتَلْ وَاِنَّا لَهٗ لَحٰفِظُوْنَ ﴿٦٣﴾ قَالَ هَلْ اٰمَنُكُمْ عَلَيْهِ اِلَّا كَمَآ اَمِنْتُكُمْ عَلٰٓى اَخِيْهِ مِنْ قَبْلُ ؕ فَاللّٰهُ خَيْرٌ حٰفِظًا ۪ وَّهُوَ اَرْحَمُ الرّٰحِمِيْنَ ﴿٦٤﴾ وَلَمَّا

فَتَحُوْا مَتَاعَهُمْ وَجَدُوْا بِضَاعَتَهُمْ رُدَّتْ اِلَيْهِمْ ؕ قَالُوْا يٰٓاَبَانَا مَا نَبْغِيْ ؕ هٰذِهٖ بِضَاعَتُنَا رُدَّتْ اِلَيْنَا ۚ وَنَمِيْرُ اَهْلَنَا وَنَحْفَظُ اَخَانَا وَنَزْدَادُ كَيْلَ بَعِيْرٍ ؕ

ذٰلِكَ كَيْلٌ يَّسِيْرٌ ﴿٦٥﴾ قَالَ لَنْ اُرْسِلَهٗ مَعَكُمْ حَتّٰى تُؤْتُوْنِ مَوْثِقًا مِّنَ اللّٰهِ لَتَاْتُنَّنِيْ بِهٖٓ اِلَّآ اَنْ يُّحَاطَ بِكُمْ ۚ فَلَمَّآ اٰتَوْهُ مَوْثِقَهُمْ قَالَ اللّٰهُ عَلٰى

مَا نَقُوْلُ وَكِيْلٌ ﴿٦٦﴾ وَقَالَ يٰبَنِيَّ لَا تَدْخُلُوْا مِنْ بَابٍ وَّاحِدٍ وَّادْخُلُوْا مِنْ اَبْوَابٍ مُّتَفَرِّقَةٍ ؕ وَمَآ اُغْنِيْ عَنْكُمْ مِّنَ اللّٰهِ مِنْ شَيْءٍ ؕ اِنِ الْحُكْمُ اِلَّا

फ़ी रिहालिहिम् ल–अ़ल्लहुम् यअ्रिफू–नहा इज़न्–क़–लबू इला अह्लिहिम् ल–अ़ल्लहुम् यर्जिअू़न (62)फ़–लम्मा र–जअू इला अबीहिम् क़ालू या अबाना मुनि–अ़ मिन्नल्कैलु फ़–अर्सिल् म–अ़ना अख़ाना नक्तल् व इन्ना लहू लहाफ़िज़ून(63)क़ा–ल हल् आ–मनुकुम् अ़लैहि इल्ला कमा अमिन्तुकुम् अ़ला अख़ीहि मिन् क़ब्लु फ़ल्लाहु ख़ैरुन् हाफ़िज़ंव् व हु–व अर्हमुर् राहिमीन(64)व लम्मा फ़–तहू मता–अ़हुम् व–जदू बिज़ा–अ़–तहुम् रुद्दत् इलैहिम् क़ालू या अबाना मा नब्ग़ी हाज़िही बिज़ा–अ़तुना रुद्दत् इलैना व नमीरु अह्–लना व नह्फ़ज़ु अख़ाना व नज़्दादु कै–ल बअ़ीरिन् ज़ालि–क कैलुंय्यसीर(65)क़ा–ल लन् उर्सि–लहू म–अ़कुम् हत्ता तुअ्तूनि मौसिक़म् मिनल्लाहि ल–तअ्तुन्ननी बिही इल्ला अंय्युहा–त बिकुम् फ़–लम्मा आतौहु मौसि–क़हुम् क़ा–लल्लाहु अ़ला मा नक़ूलु वकील(66)व क़ा–ल या बनिय्–य ला तद्ख़ुलू मिम् बाबिंव् वाहिदिंव् वद्ख़ुलू मिन् अब्वाबिम् मु–त–फ़र्रि–क़तिन् व मा उग़्नी अ़न्कुम् मिनल्लाहि मिन् शैइन् इनिल्हुक्मु इल्ला

में रख दो (फ़ा149) शायद वह उसे पहचानें जब अपने घर की तरफ़ लौटकर जायें (फ़ा150) शायद वह वापस आयें।(62) फिर जब वह अपने बाप की तरफ़ लौट कर गए (फ़ा151) बोले ऐ हमारे बाप हमसे ग़ल्ला रोक दिया गया है (फ़ा152) तो हमारे भाई को हमारे साथ भेज दीजिये कि गल्ला लाए और हम ज़रूर उसकी हिफ़ाज़त करेंगे।(63) कहा क्या इसके बारे में तुम पर वैसा ही ऐतबार कर लूं जैसा पहले इसके भाई के बारे में किया था (फ़ा153) तो अल्लाह सब से बेहतर निगहबान और वह हर मेहरबान से बढ़कर मेहरबान।(64) और जब उन्होंने अपना असबाब खोला अपनी पूंजी पाई कि उनको फेर दी गई है बोले ऐ हमारे बाप अब हम और क्या चाहें यह है हमारी पूंजी कि हमें वापस कर दी गई और हम अपने घर के लिए गल्ला लायें और अपने भाई की हिफ़ाज़त करें और एक ऊंट का बोझ और ज़्यादा पायें यह देना बादशाह के सामने कुछ नहीं।(65) (फ़ा154) कहा मैं हरगिज़ इसे तुम्हारे साथ न भेजूंगा जब तक तुम मुझे अल्लाह का यह अहद न दे दो (फ़ा155) कि ज़रूर उसे लेकर आओगे मगर यह कि तुम घिर जाओ (फ़ा156) फिर जब उन्होंने याक़ूब को अहद दे दिया कहा (फ़ा157) अल्लाह का ज़िम्मा है उन बातों पर जो हम कह रहें हैं।(66) और कहा ऐ मेरे बेटो (फ़ा158) एक दरवाज़े से न दाख़िल होना और जुदा जुदा दरवाज़ों से जाना (फ़ा159) मैं तुम्हें अल्लाह से बचा नहीं सकता (फ़ा160) हुक्म तो सब अल्लाह ही

(फ़ा149) जो उन्होंने क़ीमत में दी थी ताकि जब वह अपना सामान खोलें तो अपनी पूंजी उन्हें मिल जाये और क़हत के ज़माना में काम आये और मख़्फ़ी तौर पर उनके पास पहुंचे ताकि उन्हें लेने में शर्म भी न आये और यह करम व एहसान दोबारा आने के लिए उनकी रग़बत का बाइस भी हो (फ़ा150) और उसका वापस करना ज़रूरी समझें (फ़ा151) और बादशाह के हुस्ने सुलूक और उसके एहसान का ज़िक्र किया कहा कि उसने हमारी वह इज़्ज़त व तकरीम की कि अगर आपकी औलाद में से कोई होता तो भी ऐसा न कर सकता फ़रमाया अब अगर तुम बादशाहे मिस्र के पास जाओ तो मेरी तरफ़ से सलाम पहुंचाना और कहना कि हमारे वालिद तेरे हक़ में तेरे इस सुलूक की वजह से दुआ करते हैं। (फ़ा152) अगर आप हमारे भाई बुनियामीन को न भेजेंगे तो ग़ल्ला न मिलेगा (फ़ा153) उस वक़्त भी तुम ने हिफ़ाज़त का ज़िम्मा लिया था। (फ़ा154) क्योंकि उसने उससे ज़्यादा एहसान किये हैं (फ़ा155) यानी अल्लाह की क़सम न खाओ (फ़ा156) और उसको लेकर आना तुम्हारी ताक़त से बाहर हो जाये (फ़ा157) हज़रत यअ़क़ूब अ़लैहिस्सलाम ने (फ़ा158) मिस्र में (फ़ा159) ताकि नज़रे बद से महफ़ूज़ रहो बुख़ारी व मुस्लिम की हदीस में है कि नज़र हक़ है पहली मर्तबा हज़रत यअ़क़ूब अ़लैहिस्सलातु वस्सलाम ने यह नहीं फ़रमाया **(बक़िया सफ़हा 426 पर)**

لِلّٰهِ ؕ عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ ۚ وَعَلَيْهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُتَوَكِّلُوْنَ ﴿67﴾ وَلَمَّا دَخَلُوْا مِنْ حَيْثُ اَمَرَهُمْ اَبُوْهُمْ ؕ مَا كَانَ يُغْنِىْ عَنْهُمْ مِّنَ اللّٰهِ مِنْ شَىْءٍ اِلَّا حَاجَةً فِىْ

نَفْسِ يَعْقُوْبَ قَضٰىهَا ؕ وَاِنَّهٗ لَذُوْ عِلْمٍ لِّمَا عَلَّمْنٰهُ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿68﴾ وَلَمَّا دَخَلُوْا عَلٰى يُوْسُفَ اٰوٰۤى اِلَيْهِ اَخَاهُ قَالَ اِنِّىْۤ اَنَا

اَخُوْكَ فَلَا تَبْتَىِٕسْ بِمَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿69﴾ فَلَمَّا جَهَّزَهُمْ بِجَهَازِهِمْ جَعَلَ السِّقَايَةَ فِىْ رَحْلِ اَخِيْهِ ثُمَّ اَذَّنَ مُؤَذِّنٌ اَيَّتُهَا الْعِيْرُ اِنَّكُمْ

لَسٰرِقُوْنَ ﴿70﴾ قَالُوْا وَاَقْبَلُوْا عَلَيْهِمْ مَّاذَا تَفْقِدُوْنَ ﴿71﴾ قَالُوْا نَفْقِدُ صُوَاعَ الْمَلِكِ وَلِمَنْ جَآءَ بِهٖ حِمْلُ بَعِيْرٍ وَّاَنَا بِهٖ زَعِيْمٌ ﴿72﴾ قَالُوْا تَاللّٰهِ لَقَدْ عَلِمْتُمْ مَّا

جِئْنَا لِنُفْسِدَ فِى الْاَرْضِ وَمَا كُنَّا سٰرِقِيْنَ ﴿73﴾ قَالُوْا فَمَا جَزَآؤُهٗۤ اِنْ كُنْتُمْ كٰذِبِيْنَ ﴿74﴾ قَالُوْا جَزَآؤُهٗ مَنْ وُّجِدَ فِىْ رَحْلِهٖ فَهُوَ جَزَآؤُهٗ ؕ كَذٰلِكَ

लिल्लाहि अ़लैहि तवक्कल्तु व अ़लैहि फ़ल्–य–त–वक्कलिल् मु–त–वक्किलून(67)व लम्मा द–ख़लू मिन् हैसु अ–म–रहुम् अबूहुम् मा का–न युग़्नी अ़न्हुम् मिनल्लाहि मिन् शैइन् इल्ला हा–ज–तन् फ़ी नफ़्सि यअ़्कू–ब क़ज़ाहा व इन्नहू लज़ूअ़िल्मिल् लिमा अ़ल्लम्नाहु व लाकिन्–न अक्स़–रन्नासि ला यअ़्–लमून(68)व लम्मा द–ख़लू अ़ला यूसु–फ़ आवा इलैहि अख़ाहु क़ा–ल इन्नी अना अख़ू–क फ़ला तब्तइस् बिमा कानू यअ़्–मलून(69)फ़–लम्मा जह्–ह–ज़हुम् बि–जहाज़िहिम् ज–अ़–लस्सिक़ाय–त फ़ी रह़्लि अख़ीहि सुम्–म अज़्ज़–न मुअज़्ज़िनुन् अय्यतुहल्–औरु इन्नकुम् लसारिक़ून(70) क़ालू व अक़्बलू अ़लैहिम् माज़ा तफ़्क़िदून(71)क़ालू नफ़्क़िदु सुवाअ़ल् मलिकि व लिमन् जा–अ बिही ह़िम्लु बओ़रिंव् व अना बिही ज़अ़ीम(72)क़ालू तल्लाहि ल–क़द् अ़लिम्तुम् मा जिअ्ना लिनुफ़्सि–द फ़िल्अर्ज़ि व मा कुन्ना सारिक़ीन(73)क़ालू फ़मा जज़ाउहू इन् कुन्तुम् काज़िबीन(74) क़ालू जज़ाउहू मंव्वुजि–द फ़ी रह़्लिही फ़हु–व जज़ाउहू कज़ालि–क

का है मैंने उसी पर भरोसा किया और भरोसा करने वालों को उसी पर भरोसा चाहिये।(67) और जब वह दाख़िल हुए जहां से उनके बाप ने हुक्म दिया था (फ़ा161) वह कुछ उन्हें अल्लाह से बचा न सकता हां याकूब के जी की एक ख़्वाहिश थी जो उसने पूरी कर ली और बेशक वह साहबे इल्म है हमारे सिखाए से मगर अक्सर लोग नहीं जानते।(68) (फ़ा162) (रुकूअ़ 2) और जब वह यूसुफ़ के पास गए (फ़ा163) उसने अपने भाई को अपने पास जगह दी (फ़164) कहा यक़ीन जान मैं ही तेरा भाई (फ़ा165) हूं तो यह जो कुछ करते हैं उसका ग़म न खा(69) (फ़ा166) फिर जब उनका सामान मुहय्या कर दिया (फ़ा167) प्याला अपने भाई के कजावे में रख दिया (फ़ा168) फिर एक मुनादी ने निदा की ऐ क़ाफ़िला वालो बेशक तुम चोर हो।(70) बोले और उनकी तरफ़ मुतवज्जह हुए तुम क्या नहीं पाते।(71) बोले बादशाह का पैमाना नहीं मिलता और जो उसे लाएगा उसके लिए एक ऊंट का बोझ है और मैं उसका ज़ामिन हूं।(72) बोले ख़ुदा की क़सम तुम्हें ख़ूब मालूम है कि हम ज़मीन में फ़साद करने न आए और न हम चोर।(73) बोले फिर क्या सज़ा है उसकी अगर तुम झूठे हो।(74) (फ़ा169) बोले उसकी सज़ा यह है कि जिसके असबाब में मिले वही उसके बदले में ग़ुलाम बने (फ़ा170) हमारे यहां

(फ़ा161) यानी शहर के मुख़्तलिफ़ दरवाज़ों से तो उनका मुतफ़र्रिक़ होकर दाख़िल होना (फ़ा162) जो अल्लाह तआ़ला अपने असफ़िया को इल्म देता है (फ़ा163) और उन्होंने कहा कि हम आपके पास अपने भाई बुनियामीन को ले आये तो हज़रत यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम ने फ़रमाया तुम ने बहुत अच्छा किया। फिर उन्हें इज़्ज़त के साथ मेहमान बनाया और जाबजा दस्तरख़्वान लगाये गए और हर दस्तरख़्वान पर दो दो साहबों को बिठाया गया बुनियामीन अकेले रह गए तो वह रो पड़े और कहने लगे कि आज अगर मेरे भाई यूसुफ़ (अ़लैहिस्सलाम) ज़िन्दा होते तो मुझे अपने साथ बिठाते। हज़रत यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि तुम्हारा एक भाई अकेला रह गया और आपने बुनियामीन को अपने दस्तरख़्वान पर बिठाया। (फ़ा164) और फ़रमाया कि तुम्हारे हलाकशुदा भाई की जगह मैं तुम्हारा भाई हो जाऊं तो क्या तुम पसन्द करोगे। बुनियामीन ने कहा कि आप जैसा भाई किस को मुयस्सर आये। लेकिन यअ़्कूब (अ़लैहिस्सलाम) का फ़रज़न्द और राहील (मादर हज़रत यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम) का नूरे नज़र होना तुम्हें कैसे हासिल हो सकता है। हज़रत यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम रो पड़े और बुनियामीन को गले से लगाया और (फ़ा165) यूसुफ़ (अ़लैहिस्सलाम) (फ़ा166) बेशक अल्लाह ने हम पर एहसान किया और हमें ख़ैर के साथ जमा फ़रमाया और अभी इस राज़ की भाईयों को इत्तलाअ़ न देना यह सुनकर बुनियामीन फ़र्ते मुसर्रत से बेखुद हो गए और हज़रत यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम से कहने लगे अब मैं आप से जुदा न हूंगा आपने फ़रमाया वालिद साहब को मेरी जुदाई का बहुत ग़म पहुंचा चुका है अगर मैंने तुम्हें भी रोक लिया तो **(बक़िया सफ़्हा 401 पर)**

نَجْزِى الظّٰلِمِيْنَ ﴿٧٥﴾ فَبَدَاَ بِاَوْعِيَتِهِمْ قَبْلَ وِعَآءِ اَخِيْهِ ثُمَّ اسْتَخْرَجَهَا مِنْ وِّعَآءِ اَخِيْهِ ؕ كَذٰلِكَ كِدْنَا لِيُوْسُفَ ؕ مَا كَانَ لِيَاْخُذَ اَخَاهُ فِىْ دِيْنِ
الْمَلِكِ اِلَّآ اَنْ يَّشَآءَ اللّٰهُ ؕ نَرْفَعُ دَرَجٰتٍ مَّنْ نَّشَآءُ ؕ وَفَوْقَ كُلِّ ذِىْ عِلْمٍ عَلِيْمٌ ﴿٧٦﴾ قَالُوْۤا اِنْ يَّسْرِقْ فَقَدْ سَرَقَ اَخٌ لَّهٗ مِنْ قَبْلُ ۚ فَاَسَرَّهَا يُوْسُفُ
فِىْ نَفْسِهٖ وَلَمْ يُبْدِهَا لَهُمْ ۚ قَالَ اَنْتُمْ شَرٌّ مَّكَانًا ۚ وَاللّٰهُ اَعْلَمُ بِمَا تَصِفُوْنَ ﴿٧٧﴾ قَالُوْا يٰۤاَيُّهَا الْعَزِيْزُ اِنَّ لَهٗۤ اَبًا شَيْخًا كَبِيْرًا فَخُذْ اَحَدَنَا
مَكَانَهٗ ۚ اِنَّا نَرٰىكَ مِنَ الْمُحْسِنِيْنَ ﴿٧٨﴾ قَالَ مَعَاذَ اللّٰهِ اَنْ نَّاْخُذَ اِلَّا مَنْ وَّجَدْنَا مَتَاعَنَا عِنْدَهٗۤ ۙ اِنَّاۤ اِذًا لَّظٰلِمُوْنَ ﴿٧٩﴾ فَلَمَّا اسْتَيْـَٔسُوْا مِنْهُ خَلَصُوْا
نَجِيًّا ؕ قَالَ كَبِيْرُهُمْ اَلَمْ تَعْلَمُوْۤا اَنَّ اَبَاكُمْ قَدْ اَخَذَ عَلَيْكُمْ مَّوْثِقًا مِّنَ اللّٰهِ وَمِنْ قَبْلُ مَا فَرَّطْتُّمْ فِىْ يُوْسُفَ ۚ فَلَنْ اَبْرَحَ الْاَرْضَ حَتّٰى

नज्ज़िज़्ज़ालिमीन(75)फ़—ब—द—अ बिऔअ़ि—यतिहिम् क़ब्—ल विआइ अख़ीहि सुम्मस्तख़्—र—जहा मिंव् विआइ अख़ीहि कज़ालि—क किद्ना लियूसु—फ़ मा का—न लिय—अ्ख़ु—ज़ अख़ाहु फ़ी दीनिल्मलिकि इल्ला अंय्यशा—अल्लाहु नरफ़उ द—रजातिम् मन् नशाउ व फ़ौ—क़ कुल्लि ज़ी अ़िल्मिन् अ़लीम(76) क़ालू इंय्यस्रिक़् फ़—क़द स—र—क़ अख़ुल् लहू मिन् क़ब्लु फ़—असर्—रहा यूसुफ़ु फ़ी नफ़्सिही व लम् युब्दिहा लहुम् क़ा—ल अन्तुम् शर्रुम् मकानन् वल्लाहु अअ्—लमु बिमा तसिफ़ून(77)क़ालू या अय्युहल् अ़ज़ीज़ु इन्—न लहू अ—बन् शैख़न् कबीरन् फ़ख़ुज़् अ—ह—दना मका—नहू इन्ना नरा—क मिनल् मुह्सिनीन(78)क़ा—ल मआ़ज़ल्लाहि अन्नअ्ख़ु—ज़ इल्ला मंव्व—जद्ना मता—अ़ना अ़िन्दहू इन्ना इ—ज़ल्ल—ज़ालिमून(79)फ़—लम्मस्तै—असू मिन्हु ख़—लसू नजिय्यन् क़ा—ल कबीरुहुम् अ—लम् तअ्लमू अन्—न अबाकुम् क़द अ—ख़—ज़ अ़लैकुम् मौसिक़म् मिनल्लाहि व मिन् क़ब्लु मा फ़र्रत्तुम् फ़ी यूसु—फ़ फ़—लन् अब्—रहल् अर्—ज़ हत्ता

ज़ालिमों की यही सज़ा है।(75) (फ़ा171) तो अव्वल उनकी ख़ुरजियों से तलाशी शुरू की अपने भाई (फ़ा172) की ख़ुरजी से पहले फिर उसे अपने भाई की ख़ुरजी से निकाल लिया (फ़ा173) हमने यूसुफ़ को यही तदबीर बताई। (फ़ा174) बादशाही क़ानून में उसे नहीं पहुंचता था कि अपने भाई को ले ले (फ़ा175) मगर यह कि ख़ुदा चाहे (फ़ा176) हम जिसे चाहें दर्जों बुलन्द करें (फ़ा177) और हर इल्म वाले से ऊपर एक इल्म वाला है।(76) (फ़ा178) भाई बोले अगर यह चोरी करे (फ़ा179) तो बेशक इससे पहले एक भाई चोरी कर चुका है (फ़ा180) तो यूसुफ़ ने यह बात अपने दिल में रखी और उन पर ज़ाहिर न की। जी में कहा तुम बदतर जगह हो (फ़ा181) और अल्लाह ख़ूब जानता है जो बातें बनाते हो।(77) बोले ऐ अ़ज़ीज़ इसके एक बाप हैं बूढ़े बड़े (फ़ा182) तो हम में इसकी जगह किसी को ले लो बेशक हम तुम्हारे एहसान देख रहे हैं।(78) कहा (फ़ा183) ख़ुदा की पनाह कि हम लें मगर उसी को जिसके पास हमारा माल मिला (फ़ा184) जब तो हम ज़ालिम होंगे।(79) (रुकूअ़ 3) फिर जब उससे ना-उम्मीद हुए अलग जाकर सरगोशी करने लगे इनका बड़ा भाई बोला क्या तुम्हें ख़बर नहीं कि तुम्हारे बाप ने तुम से अल्लाह का अ़हद ले लिया था और इससे पहले यूसुफ़ के हक़ में तुम ने कैसी तक़सीर की तो मैं यहां से न टलूंगा यहां तक कि

(फ़ा171) फिर यह क़ाफ़िला मिस्र लाया गया और उन साहेबों को हज़रत यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम के दरबार में हाज़िर किया गया। (फ़ा172) यानी बुनियामीन (फ़ा173) यानी बुनियामीन की ख़रजी से प्याला बरआमद किया (फ़ा174) अपने भाई के लेने की कि इस मुआ़मला में भाईयों से इस्तिफ़सार करें ताकि वह शरीअ़ते हज़रत याक़ूब अ़लैहिस्सलाम का हुक्म बतायें जिससे भाई मिल सके। (फ़ा175) क्योंकि बादशाहे मिस्र के क़ानून में चोरी की सज़ा मारना और दूना माल ले लेना मुक़र्रर थी (फ़ा176) यानी यह बात ख़ुदा की मशीयत से हुई कि उनके दिल में डाल दिया कि सज़ा भाईयों से दरियाफ़्त करें और उनके दिल में डाल दिया कि वह अपनी सुन्नत के मुताबिक़ जवाब दें। (फ़ा177) इल्म में जैसे कि हज़रत यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम के दर्जे बुलन्द फ़रमाए (फ़ा178) हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा ने फ़रमाया कि हर आ़लिम के ऊपर उससे ज़्यादा इल्म रखने वाला आ़लिम होता है, यहां तक कि यह सिलसिला अल्लाह तआ़ला तक पहुंचता है उसका इल्म सबके इल्म से बरतर है। **मसलाः** इस आयत से साबित हुआ कि हज़रत यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम के भाई उलमा थे और हज़रत यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम उनसे अअ्लम थे जब प्याला बुनियामीन के सामान से निकला तो भाई शर्मिन्दा हुए और उन्होंने सर झुकाये और (फ़ा179) यानी सामान में प्याला निकलने से सामान वाले का चोरी करना तो यक़ीनी नहीं लेकिन अगर यह फ़ेअ्ल उसका हो (फ़ा180) यानी **(बक़िया सफ़हा 426 पर)**

يَأْذَنَ لِي أَبِي أَوْ يَحْكُمَ اللّٰهُ لِي ۚ وَهُوَ خَيْرُ الْحٰكِمِينَ ﴿٨٠﴾ اِرْجِعُوا إِلَى أَبِيكُمْ فَقُولُوا يٰأَبَانَا إِنَّ ابْنَكَ سَرَقَ ۚ وَمَا شَهِدْنَا إِلَّا بِمَا عَلِمْنَا

وَمَا كُنَّا لِلْغَيْبِ حٰفِظِينَ ﴿٨١﴾ وَسْئَلِ الْقَرْيَةَ الَّتِي كُنَّا فِيهَا وَالْعِيرَ الَّتِي أَقْبَلْنَا فِيهَا ۖ وَإِنَّا لَصٰدِقُونَ ﴿٨٢﴾ قَالَ بَلْ سَوَّلَتْ لَكُمْ أَنْفُسُكُمْ أَمْرًا

فَصَبْرٌ جَمِيلٌ ۖ عَسَى اللّٰهُ أَنْ يَأْتِيَنِي بِهِمْ جَمِيعًا ۚ إِنَّهُ هُوَ الْعَلِيمُ الْحَكِيمُ ﴿٨٣﴾ وَتَوَلّٰى عَنْهُمْ وَقَالَ يٰأَسَفٰى عَلٰى يُوسُفَ وَابْيَضَّتْ عَيْنٰهُ مِنَ الْحُزْنِ

فَهُوَ كَظِيمٌ ﴿٨٤﴾ قَالُوا تَاللّٰهِ تَفْتَؤُا تَذْكُرُ يُوسُفَ حَتّٰى تَكُونَ حَرَضًا أَوْ تَكُونَ مِنَ الْهٰلِكِينَ ﴿٨٥﴾ قَالَ إِنَّمَا أَشْكُوا بَثِّي وَحُزْنِي إِلَى اللّٰهِ وَأَعْلَمُ مِنَ

اللّٰهِ مَا لَا تَعْلَمُونَ ﴿٨٦﴾ يٰبَنِيَّ اذْهَبُوا فَتَحَسَّسُوا مِنْ يُوسُفَ وَأَخِيهِ وَلَا تَايْئَسُوا مِنْ رَّوْحِ اللّٰهِ ۖ إِنَّهُ لَا يَايْئَسُ مِنْ رَّوْحِ اللّٰهِ إِلَّا الْقَوْمُ الْكٰفِرُونَ ﴿٨٧﴾ فَلَمَّا

यअ्ज़-न ली अबी औ यह्कुमल्लाहु ली व हु-व ख़ैरुल् हाकिमीन(80)इर्जिअू इला अबीकुम् फ़कूलू या अबाना इन्नब्न-क स-र-क़ व मा शहिद्ना इल्ला बिमा अ़लिम्ना व मा कुन्ना लिल्ग़ैबि हाफ़िज़ीन(81)वस्-अलिल् क़र्-यतल्लती कुन्ना फ़ीहा वल्-ओ़रल्लती अक़्बल्ना फ़ीहा व इन्ना लसादिकून(82)क़ा-ल बल् सव्व-लत् लकुम् अन्फ़ुसुकुम् अम्रन् फ़-स़ब्रुन् जमीलुन् अ़-सल्लाहु अय्यअ्ति-यनी बिहिम् जमीअ़न् इन्नहू हुवल् अ़लीमुल् हकीम(83)व त-वल्ला अ़न्हुम् व क़ा-ल या अ-सफ़ा अ़ला यूसु-फ़ वब्यज़्ज़त् अ़ैनाहु मिनल्हुज़्नि फ़हु-व कज़ीम(84)क़ालू तल्लाहि तफ़्-तउ तज़्कुरु यूसु-फ़ हत्ता तकू-न ह़-र-ज़न् औ तकू-न मिनल् हालिकीन(85)क़ा-ल इन्नमा अश्कू बस्सी व हुज़्नी इलल्लाहि व अअ्-लमु मिनल्लाहि मा ला तअ्-लमून(86)या बनिय्यज़्हबू फ़ त-हस्ससू मिंय्यूसु-फ़ व अख़ीहि व ला तै-असू मिर्-रौहिल्लाहि इन्नहू ला यय्-असु मिर्- रौहिल्लाहि इल्लल् क़ौमुल् काफ़िरून(87)फ़-लम्मा

मेरे बाप (फ़ा185) मुझे इजाज़त दें या अल्लाह मुझे हुक्म फ़रमाए (फ़ा186) और उसका हुक्म सबसे बेहतर।(80) अपने बाप के पास लौट कर जाओ फिर अ़र्ज़ करो कि ऐ हमारे बाप बेशक आप के बेटे ने चोरी की (फ़ा187) और हम तो उतनी ही बात के गवाह हुए थे जितनी हमारे इल्म में थी (फ़ा188) और हम ग़ैब के निगहबान न थे।(81) (फ़ा189) और उस बस्ती से पूछ देखिये जिसमें हम थे और उस क़ाफ़िले से जिस में हम आए और हम बेशक सच्चे हैं।(82) (फ़ा190) कहा (फ़ा191) तुम्हारे नफ़्स ने तुम्हें कुछ हीला बना दिया तो अच्छा सब्र है क़रीब है कि अल्लाह उन सबको मुझ से ला मिलाए (फ़ा192) बेशक वही इल्म व हिक्मत वाला है।(83) और उनसे मुंह फेरा (फ़ा193) और कहा हाय अफ़सोस यूसुफ़ की जुदाई पर और उसकी आंखें ग़म से सफ़ेद हो गईं (फ़ा194) तो वह गुस्सा खाता रहा।(84) बोले (फ़ा195) खुदा की क़सम आप हमेशा यूसुफ़ की याद करते रहेंगे यहां तक कि गोर कनारे जा लगें या जान से गुज़र जायें।(85) कहा मैं तो अपनी परेशानी और ग़म की फ़रियाद अल्लाह ही से करता हूं (फ़ा196) और मुझे अल्लाह की वह शानें मालूम हैं जो तुम नहीं जानते।(86) (फ़ा197) ऐ बेटो जाओ यूसुफ़ और उसके भाई का सुराग़ लगाओ और अल्लाह की रहमत से ना-उम्मीद न हो बेशक अल्लाह की रहमत से ना-उम्मीद नहीं होते मगर काफ़िर लोग।(87) (फ़ा198) फिर जब

(फ़ा185) मेरे वापस आने की (फ़ा186) मेरे भाई को ख़लासी देकर या उसको छोड़ कर तुम्हारे साथ चलने का। (फ़ा187) यानी उनकी तरफ़ चोरी की निस्बत की गई (फ़ा188) कि प्याला उनके कजावा में निकला (फ़ा189) और हमें ख़बर न थी कि यह सूरत पेश आएगी हक़ीक़त हाल अल्लाह ही जाने कि क्या है और प्याला किस तरह बुनियामीन के सामान से बरआमद हुआ (फ़ा190) फिर यह लोग अपने वालिद के पास वापस आये और सफ़र में जो कुछ पेश आया था, उसकी ख़बर दी और बड़े भाई ने जो कुछ बता दिया था वह सब वालिद से अ़र्ज़ किया (फ़ा191) हज़रत याक़ूब अ़लैहिस्सलाम ने कि चोरी की निस्बत बुनियामीन की तरफ़ ग़लत है और चोरी की सज़ा ग़ुलाम बनाना यह भी कोई क्या जाने अगर तुम फ़तवा न देते और तुम्हीं न बताते तो (फ़ा192) यानी हज़रत यूसुफ़ को और उनके दोनों भाईयों को (फ़ा193) हज़रत याक़ूब अ़लैहिस्सलाम ने बुनियामीन की ख़बर सुन कर और आपका अन्दोह व ग़म इन्तेहा को पहुंच गया। (फ़ा194) रोते-रोते आंख की सियाही का रंग जाता रहा और बीनाई ज़ईफ़ हो गई। हसन रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु ने कहा कि हज़रत यूसुफ़ अ़लैहिस्सलातु वस्सलाम की जुदाई में हज़रत याक़ूब अ़लैहिस्सलाम अस्सी बरस रोते रहे और अह़िब्बा के ग़म में रोना जो तकल्लुफ़ व नुमाईश से न हो और उसके साथ अल्लाह की शिकायत **(बक़िया सफ़हा 426 पर)**

دَخَلُوا عَلَيْهِ قَالُوا يَا أَيُّهَا الْعَزِيزُ مَسَّنَا وَأَهْلَنَا الضُّرُّ وَجِئْنَا بِبِضَاعَةٍ مُّزْجَاةٍ فَأَوْفِ لَنَا الْكَيْلَ وَتَصَدَّقْ عَلَيْنَا ۖ إِنَّ اللَّهَ يَجْزِي الْمُتَصَدِّقِينَ ﴿٨٨﴾
قَالَ هَلْ عَلِمْتُم مَّا فَعَلْتُم بِيُوسُفَ وَأَخِيهِ إِذْ أَنتُمْ جَاهِلُونَ ﴿٨٩﴾ قَالُوا أَإِنَّكَ لَأَنتَ يُوسُفُ ۖ قَالَ أَنَا يُوسُفُ وَهَٰذَا أَخِي ۖ قَدْ مَنَّ اللَّهُ عَلَيْنَا ۖ إِنَّهُ مَن
يَتَّقِ وَيَصْبِرْ فَإِنَّ اللَّهَ لَا يُضِيعُ أَجْرَ الْمُحْسِنِينَ ﴿٩٠﴾ قَالُوا تَاللَّهِ لَقَدْ آثَرَكَ اللَّهُ عَلَيْنَا وَإِن كُنَّا لَخَاطِئِينَ ﴿٩١﴾ قَالَ لَا تَثْرِيبَ عَلَيْكُمُ الْيَوْمَ ۖ يَغْفِرُ اللَّهُ لَكُمْ ۖ
وَهُوَ أَرْحَمُ الرَّاحِمِينَ ﴿٩٢﴾ اذْهَبُوا بِقَمِيصِي هَٰذَا فَأَلْقُوهُ عَلَىٰ وَجْهِ أَبِي يَأْتِ بَصِيرًا وَأْتُونِي بِأَهْلِكُمْ أَجْمَعِينَ ﴿٩٣﴾ وَلَمَّا فَصَلَتِ الْعِيرُ قَالَ أَبُوهُمْ
إِنِّي لَأَجِدُ رِيحَ يُوسُفَ ۖ لَوْلَا أَن تُفَنِّدُونِ ﴿٩٤﴾ قَالُوا تَاللَّهِ إِنَّكَ لَفِي ضَلَالِكَ الْقَدِيمِ ﴿٩٥﴾ فَلَمَّا أَن جَاءَ الْبَشِيرُ أَلْقَاهُ عَلَىٰ وَجْهِهِ فَارْتَدَّ بَصِيرًا ۖ

द–ख़लू अ़लैहि क़ालू या अय्युहल् अ़ज़ीज़ु मस्सना व अह–ल–नज़्ज़ुर्रु व जिअ्ना बिबिज़ा–अ़तिम् मुज़्जातिन् फ़औफ़ि लनल्कै–ल व त–स़द्दक् अ़लैना इन्नल्ला–ह यज्ज़िल् मु–त–सद्दिक़ीन(88) क़ा–ल हल् अ़लिम्तुम् मा फ़–अ़ल्तुम् बियूसु–फ़ व अख़ीहि इज़् अन्तुम् जाहिलून(89)क़ालू अइन्न–क ल–अन्–त यूसुफ़ु क़ा–ल अना यूसुफ़ु व हाज़ा अख़ी क़द् मन्नल्लाहु अ़लैना इन्नहू मंय्यत्तक़ि व यस्बिर् फ़इन्नल्ला–ह ला युज़ीअ़ु अज्रल् मुह्सिनीन(90)क़ालू तल्लाहि ल–क़द् आ–स–र–कल्लाहु अ़लैना व इन् कुन्ना ल–ख़ातिईन(91)क़ा–ल ला तस्री–ब अ़लैकुमुल् यौ–म यग़्फ़िरुल्लाहु लकुम् व हु–व अर्–हमुर्राहिमीन(92)इज़् हबू बि–क़मीसी हाज़ा फ़–अल्क़ूहु अ़ला वज्हि अबी यअ्ति बसीरन् वअ्तूनी बि–अह्लिकुम् अज्मईन(93)व लम्मा फ़–स–लतिल्अ़ीरु क़ा–ल अबूहुम् इन्नी ल–अजिदु री–ह़ यूसु–फ़ लौला अन् तुफ़न्निदून(94)क़ालू तल्लाहि इन्न–क लफ़ी ज़लालिकल् क़दीम(95)फ़–लम्मा अन् जा–अल्बशीरु अल्क़ाहु अ़ला वज्हिही फ़र्तद्–द बसीरन्

वह यूसुफ़ के पास पहुंचे बोले ऐ अ़ज़ीज़ हमें और हमारे घर वालों को मुसीबत पहुंची (फ़ा199) और हम बे क़द्र पूंजी लेकर आए हैं (फ़ा200) तो आप हमें पूरा माप दीजिये (फ़ा201) और हम पर ख़ैरात कीजिये (फ़ा202) बेशक अल्लाह ख़ैरात वालों को सिला देता है।(88) (फ़ा203) बोले कुछ ख़बर है तुम ने यूसुफ़ और उसके भाई के साथ क्या किया था जब तुम नादान थे।(89) (फ़ा204) बोले क्या सचमुच आप ही यूसुफ़ हैं कहा मैं यूसुफ़ हूं और यह मेरा भाई बेशक अल्लाह ने हम पर एहसान किया (फ़ा205) बेशक जो परहेज़गारी और सब्र करे तो अल्लाह नेकों का नेग ज़ाया नहीं करता।(90) (फ़ा206) बोले ख़ुदा की क़सम बेशक अल्लाह ने आपको हम पर फ़ज़ीलत दी और बेशक हम ख़तावार थे।(91) (फ़ा207) कहा आज (फ़ा208) तुम पर कुछ मलामत नहीं अल्लाह तुम्हें माफ़ करे और वह सब मेहरबानों से बढ़ कर मेहरबान है।(92) (फ़ा209) मेरा यह कुर्ता ले जाओ। (फ़ा210) इसे मेरे बाप के मुंह पर डालो उनकी आंखें खुल जायेंगी और अपने सब घर भर को मेरे पास ले आओ।(93) (रुकूअ़ 4) जब क़ाफ़िला मिस्र से जुदा हुआ (फ़ा211) यहां उनके बाप ने (फ़ा212) कहा बेशक मैं यूसुफ़ की ख़ुश्बू पाता हूं अगर मुझे यह न कहो कि सठ (बहक) गया(94) बेटे बोले ख़ुदा की क़सम आप अपनी उसी पुरानी ख़ुद रफ़्तगी में हैं।(95) (फ़ा213) फिर जब ख़ुशी सुनाने वाला आया (फ़ा214) उसने वह क़ुर्ता याक़ूब के मुंह पर डाला। उसी वक़्त उसकी आंखें फिर आईं

(फ़ा199) यानी तंगी और भूख की सख़्ती और जिस्मों का दुबला हो जाना। (फ़ा200) रद्दी खोटी जिसे कोई सौदागर माल की क़ीमत मे क़बूल न करे वह चन्द खोटे दिरहम थे और असासुलबैत की चन्द पुरानी बोसीदा चीज़ें। (फ़ा201) जैसा खरे दामों से देते थे (फ़ा202) यह नाक़िस पूंजी क़बूल करके (फ़ा203) उनका यह हाल सुनकर हज़रत यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम पर गिरया तारी हुआ और चश्मे गौहर फ़शां से अश्क रवां हो गए और (फ़ा204) यानी हज़रत यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम को मारना कुंएं में गिराना बेचना वालिद से जुदा करना और उनके बाद उनके भाई को तंग रखना परेशान करना तुम्हें याद है और यह फ़रमाते हुए हज़रत यूसुफ़ अ़लैहिस्सलातु वस्सलाम को तबस्सुम आ गया और उन्होंने आपके गौहरे दन्दां का हुस्न देख कर पहचाना कि यह तो जमाले यूसुफ़ी की शान है। (फ़ा205) हमें जुदाई के बाद सलामती के साथ मिलाया और दुनिया और दीन की निअ़्मतों से सरफ़राज़ फ़रमाया। (फ़ा206) बिरादराने हज़रत यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम ब–तरीक़े उज़्र ख़्वाही। (फ़ा207) इसी का नतीजा है कि अल्लाह ने आपको इज़्ज़त दी बादशाह बनाया और हमें मिस्कीन बना कर आपके सामने लाया (फ़ा208) अगरचे मलामत करने का दिन है मगर मेरी जानिब से **(बक़िया सफ़हा 426 पर)**

قَالَ اَلَمْ اَقُلْ لَّكُمْ ۚۙ اِنِّیْۤ اَعْلَمُ مِنَ اللّٰهِ مَا لَا تَعْلَمُوْنَ ﴿۹۶﴾ قَالُوْا یٰۤاَبَانَا اسْتَغْفِرْ لَنَا ذُنُوْبَنَاۤ اِنَّا كُنَّا خٰطِـیْنَ ﴿۹۷﴾ قَالَ سَوْفَ اَسْتَغْفِرُ لَكُمْ رَبِّیْ ؕ اِنَّهٗ هُوَ
الْغَفُوْرُ الرَّحِیْمُ ﴿۹۸﴾ فَلَمَّا دَخَلُوْا عَلٰى یُوْسُفَ اٰوٰۤى اِلَیْهِ اَبَوَیْهِ وَ قَالَ ادْخُلُوْا مِصْرَ اِنْ شَآءَ اللّٰهُ اٰمِنِیْنَ ﴿۹۹﴾ وَ رَفَعَ اَبَوَیْهِ عَلَى الْعَرْشِ وَ خَرُّوْا لَهٗ
سُجَّدًا ۚ وَ قَالَ یٰۤاَبَتِ هٰذَا تَاْوِیْلُ رُءْیَایَ مِنْ قَبْلُ ؗ قَدْ جَعَلَهَا رَبِّیْ حَقًّا ؕ وَ قَدْ اَحْسَنَ بِیْۤ اِذْ اَخْرَجَنِیْ مِنَ السِّجْنِ وَ جَآءَ بِكُمْ مِّنَ الْبَدْوِ مِنْۢ
بَعْدِ اَنْ نَّزَغَ الشَّیْطٰنُ بَیْنِیْ وَ بَیْنَ اِخْوَتِیْ ؕ اِنَّ رَبِّیْ لَطِیْفٌ لِّمَا یَشَآءُ ؕ اِنَّهٗ هُوَ الْعَلِیْمُ الْحَكِیْمُ ﴿۱۰۰﴾ رَبِّ قَدْ اٰتَیْتَنِیْ مِنَ الْمُلْكِ وَ عَلَّمْتَنِیْ مِنْ
تَاْوِیْلِ الْاَحَادِیْثِ ۚ فَاطِرَ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ ۫ اَنْتَ وَلِیّٖ فِی الدُّنْیَا وَ الْاٰخِرَةِ ۚ تَوَفَّنِیْ مُسْلِمًا وَّ اَلْحِقْنِیْ بِالصّٰلِحِیْنَ ﴿۱۰۱﴾ ذٰلِكَ مِنْ اَنْۢبَآءِ الْغَیْبِ

क़ा–ल अ–लम् अकुल् लकुम् इन्नी अअ्–लमु मिनल्लाहि मा ला तअ्–लमून(96)क़ालू या अबानस्तग़्फ़िर्–लना जुनू–बना इन्ना कुन्ना ख़ातिईन(97)क़ा–ल सौ–फ़ अस्तग़्फ़िरु लकुम् रब्बी इन्नहू हुवल् ग़फ़ूरुर्रहीम(98)फ़–लम्मा द–ख़लू अ़ला यूसु–फ़ आवा इलैहि अ–बवैहि व क़ालदख़ुलू मिस्–र इन्शा–अल्लाहु आमिनीन(99)व र–फ़–अ अ–बवैहि अ़–लल्अ़र्शि व ख़र्–रू लहू सुज्जदन् व क़ा–ल या अ–बति हाज़ा तअ्वीलु रुअ्या–य मिन् क़ब्लु क़द् ज–अ़–लहा रब्बी ह़क़्क़न् व क़द् अह्–स–न बी इज् अख़्र–जनी मिन सिसज्नि व जा–अ बिकुम् मिनल्बदवि मिम् बअ्दि अन् न–ज़–ग़श्शैतानु बैनी व बै–न इख़्वती इन्–न रब्बी लतीफ़ुल् लिमा यशाउ इन्नहू हुवल् अ़लीमुल् ह़कीम(100)रब्बि क़द् आतै–तनी मिनल्मुल्कि व अ़ल्लम्तनी मिन् तअ्वीलिल् अहा–दीसि फ़ातिरस्–समावाति वल्अर्ज़ि अन्–त वलिय्यी फ़िद्दुन्या वल्–आख़ि–रति त–वफ़्फ़नी मुस्लिमंव् व अल्–ह़िक़्नी बिस्सालिहीन(101)ज़ालि–क मिन् अम्बाइल्ग़ैबि

कहा मैं न कहता था कि मुझे अल्लाह की वह शानें मालूम हैं जो तुम नहीं जानते।(96) (फ़ा215) बोले ऐ हमारे बाप हमारे गुनाहों की माफ़ी मांगिये बेशक हम ख़तावार हैं।(97) कहा जल्द मैं तुम्हारी बख़्शिश अपने रब से चाहूंगा, बेशक वही बख़्शने वाला मेहरबान है।(98) (फ़ा216) फिर जब वह सब यूसुफ़ के पास पहुंचे, उसने अपने मां (फ़ा217) बाप को अपने पास जगह दी और कहा मिस्र में (फ़ा218) दाख़िल हो अल्लाह चाहे तो अमान के साथ।(99) (फ़ा219) और अपने माँ बाप को तख़्त पर बिठाया और वह सब (फ़ा220) उसके लिए सजदे में गिरे (फ़ा221) और यूसुफ़ ने कहा ऐ मेरे बाप यह मेरे पहले ख़्वाब की तअ्बीर है (फ़ा222) बेशक उसे मेरे रब ने सच्चा किया और बेशक उसने मुझ पर एहसान किया कि मुझे क़ैद से निकाला (फ़ा223) और आप सब को गाँव से ले आया बाद उसके कि शैतान ने मुझ में और मेरे भाईयों में नाचाक़ी करा दी थी बेशक मेरा रब जिस बात को चाहे आसान कर दे बेशक वही इल्म व हिकमत वाला है।(100) (फ़ा224) ऐ मेरे रब बेशक तूने मुझे एक सल्तनत दी और मुझे कुछ बातों का अंजाम निकालना सिखाया ऐ आसमानों और ज़मीन के बनाने वाले तू मेरा काम बनाने वाला है दुनिया और आख़िरत में मुझे मुसलमान उठा और उनसे मिला जो तेरे क़ुर्बे ख़ास के लायक़ हैं।(101)(फ़ा225) यह कुछ ग़ैब की ख़बरें हैं

(फ़ा215) हज़रत याक़ूब अ़लैहिस्सलाम ने दरियाफ़्त फ़रमाया यूसुफ़ कैसे हैं यहूदा ने अर्ज़ किया हुज़ूर वह मिस्र के बादशाह हैं। फ़रमाया मैं बादशाही को क्या करूं यह बताओ किस दीन पर हैं अर्ज़ किया दीने इस्लाम पर, फ़रमाया अल्हम्दु लिल्लाह अल्लाह की निअ्मत पूरी हुई बिरादराने हज़रत यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम। (फ़ा216) हज़रत याक़ूब अ़लैहिस्सलाम ने वक़्ते सहर बाद नमाज़ हाथ उठा कर अल्लाह तआ़ला के दरबार में अपने साहबज़ादों के लिए दुआ़ की वह क़बूल हुई और हज़रत याक़ूब अ़लैहिस्सलाम को वही फ़रमाई गई कि साहबज़ादों की ख़ता बख़्श दी गई। हज़रत यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम ने अपने वालिद माजिद को मअ़ उनके अहल व औलाद के बुलाने के लिए अपने भाईयों के साथ दो सौ सवारियां और कसीर सामान भेजा था हज़रत याक़ूब अ़लैहिस्सलाम ने मिस्र का इरादा फ़रमाया और अपने अहल को जमा किया कुल मर्द व ज़न बहत्तर या तिहत्तर तन थे अल्लाह तआ़ला ने उनमें यह बरकत फ़रमाई कि उनकी नस्ल इतनी बढ़ी कि जब हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलातु वस्सलाम के साथ बनी इसराईल मिस्र से निकले तो छः लाख से ज़्यादा थे बावजूदेकि हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम का ज़माना इससे सिर्फ़ चार सौ साल बाद है अलहासिल जब हज़रत याक़ूब अ़लैहिस्सलाम मिस्र के क़रीब पहुंचे तो हज़रत यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम ने मिस्र के बादशाहे आज़म को अपने वालिद माजिद की तशरीफ़ आवरी की इत्तेलाअ़ दी और चार हज़ार लश्करी **(बक़िया सफ़्हा 426 पर)**

نُوحِيهِ إِلَيْكَ ۖ وَمَا كُنتَ لَدَيْهِمْ إِذْ أَجْمَعُوا أَمْرَهُمْ وَهُمْ يَمْكُرُونَ ۝ وَمَا أَكْثَرُ النَّاسِ وَلَوْ حَرَصْتَ بِمُؤْمِنِينَ ۝ وَمَا تَسْأَلُهُمْ عَلَيْهِ مِنْ أَجْرٍ ۚ إِنْ
هُوَ إِلَّا ذِكْرٌ لِّلْعَالَمِينَ ۝ وَكَأَيِّن مِّنْ آيَةٍ فِي السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ يَمُرُّونَ عَلَيْهَا وَهُمْ عَنْهَا مُعْرِضُونَ ۝ وَمَا يُؤْمِنُ أَكْثَرُهُم بِاللَّهِ إِلَّا وَهُم
مُّشْرِكُونَ ۝ أَفَأَمِنُوا أَن تَأْتِيَهُمْ غَاشِيَةٌ مِّنْ عَذَابِ اللَّهِ أَوْ تَأْتِيَهُمُ السَّاعَةُ بَغْتَةً وَهُمْ لَا يَشْعُرُونَ ۝ قُلْ هَٰذِهِ سَبِيلِي أَدْعُو إِلَى اللَّهِ ۚ
عَلَىٰ بَصِيرَةٍ أَنَا وَمَنِ اتَّبَعَنِي ۖ وَسُبْحَانَ اللَّهِ وَمَا أَنَا مِنَ الْمُشْرِكِينَ ۝ وَمَا أَرْسَلْنَا مِن قَبْلِكَ إِلَّا رِجَالًا نُّوحِي إِلَيْهِم مِّنْ أَهْلِ الْقُرَىٰ ۗ أَفَلَمْ يَسِيرُوا
فِي الْأَرْضِ فَيَنظُرُوا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الَّذِينَ مِن قَبْلِهِمْ ۗ وَلَدَارُ الْآخِرَةِ خَيْرٌ لِّلَّذِينَ اتَّقَوْا ۗ أَفَلَا تَعْقِلُونَ ۝ حَتَّىٰ إِذَا اسْتَيْأَسَ الرُّسُلُ
وَظَنُّوا أَنَّهُمْ قَدْ كُذِبُوا جَاءَهُمْ نَصْرُنَا فَنُجِّيَ مَن نَّشَاءُ ۖ وَلَا يُرَدُّ بَأْسُنَا عَنِ الْقَوْمِ الْمُجْرِمِينَ ۝ لَقَدْ كَانَ فِي قَصَصِهِمْ عِبْرَةٌ لِّأُولِي الْأَلْبَابِ ۗ
مَا كَانَ حَدِيثًا يُفْتَرَىٰ وَلَٰكِن تَصْدِيقَ الَّذِي بَيْنَ يَدَيْهِ وَتَفْصِيلَ كُلِّ شَيْءٍ وَهُدًى وَرَحْمَةً لِّقَوْمٍ يُؤْمِنُونَ ۝

नूहीहि इलै–क व मा कुन्–त लदैहिम् इज़् अज्–मअू अम्–रहुम् व हुम् यम्कुरून(102)व मा अक्सरुन्नासि व लौ ह–रस्–त बिमुअ्मिनीन(103)व मा तस्–अलुहुम् अलैहि मिन् अज्रिन् इन् हु–व इल्ला ज़िक्रुल् लिल् आ–लमीन(104)व क–अय्यिम् मिन् आ–यतिन् फ़िस्समावाति वल्अर्ज़ि यमुर्रू–न अलैहा व हुम् अन्हा मुअ्रिज़ू–न(105)व मा युअ्मिनु अक्सरुहुम् बिल्लाहि इल्ला व हुम् मुश्रिकून(106) अ–फ़–अमिनू अन् तअ्ति– यहुम् ग़ाशि–यतुम् मिन् अज़ाबिल्लाहि औ तअ्ति–य–हुमुस्सा–अतु बग़त –तंव् व हुम् ला यश्अुरून(107)कुल् हाज़िही सबीली अदअू इलल्लाहि अ़ला बसी–रतिन् अना व मनित्त–ब–अ़नी व सुब्हानल्लाहि व मा अना मिनल् मुश्रिकीन(108)व मा अर्सल्ना मिन् क़ब्लि–क इल्ला रिजालन् नूही इलैहिम् मिन् अह्लिल्कुरा अ–फ़–लम् यसीरू फ़िल्अर्ज़ि फ़–यन्ज़ुरू कै–फ़ का–न आ़कि–बतुल्लज़ी–न मिन् क़ब्लिहिम् व लदारुल् आख़ि–रति ख़ैरुल् लिल्लज़ीनत्तक़ौ अ–फ़ला तअ्क़िलून(109)हत्ता इज़स्तै–असर् रसुलु व ज़न्नू अन्नहुम् क़द् कुज़िबू जा–अहुम् नस्रुना फ़नुज्जि–य मन् नशाउ व ला युरद्दु बअ्सुना अ़निल् क़ौमिल् मुज्रिमीन(110) ल–क़द् का–न फ़ी क़–सससिहिम् अिब्रतुल् लिउलिल् अल्बाबि मा का–न हदीसंय्युफ़्तरा व लाकिन् तस्दीक़ल्लज़ी बै–न यदैहि व तफ़्सी–ल कुल्लि शैइंव् व हुदंव् व रह्–मतल् लिक़ौमिंय्युअ्मिनून(111)

जो हम तुम्हारी तरफ़ 'वही' करते हैं और तुम उनके पास न थे (फ़ा226) जब उन्होंने अपना काम पक्का किया था और वह दांव चल रहे थे।(102) (फ़ा227) और अक्सर आदमी तुम कितना ही चाहो ईमान न लायेंगे।(103) और तुम उस पर उनसे कुछ उजरत नहीं मांगते यह (फ़ा228) तो नहीं मगर सारे जहान को नसीहत।(104) (रुकूअ़ 5) और कितनी निशानियां हैं (फ़ा229) आसमानों और ज़मीन में कि लोग उन पर गुज़रते हैं (फ़ा230) और उनसे बेख़बर रहते हैं।(105) और उनमें अक्सर वह हैं कि अल्लाह पर यक़ीन नहीं लाते मगर शिर्क करते हुए।(106) (फ़ा231) क्या उस से निडर हो बैठे कि अल्लाह का अ़ज़ाब उन्हें आकर घेर ले या क़ियामत उन पर अचानक आजाए और उन्हें ख़बर न हो।(107) तुम फ़रमाओ (फ़ा232) यह मेरी राह है मैं अल्लाह की तरफ़ बुलाता हूं। मैं और जो मेरे क़दमों पर चलें दिल की आंखें रखते हैं (फ़ा233) और अल्लाह को पाकी है (फ़ा234) और मैं शरीक करने वाला नहीं।(108) और हमने तुम से पहले जितने रसूल भेजे सब मर्द ही थे (फ़ा235) जिन्हें हम 'वही' करते और सब शहर के साकिन थे (फ़ा236) तो क्या यह लोग ज़मीन में चले नहीं तो देखते उनसे पहलों का क्या अंजाम हुआ (फ़ा237) और बेशक आख़िरत का घर परहेज़गारों के लिए बेहतर तो क्या तुम्हें अ़क्ल नहीं।(109) यहां तक कि जब रसूलों को ज़ाहिरी असबाब की उम्मीद न रही (फ़ा238) और लोग समझे कि रसूलों ने उनसे ग़लत कहा था (फ़ा239) उस वक़्त हमारी मदद आई तो जिसे हमने चाहा बचा लिया गया (फ़ा240) और हमारा अ़ज़ाब मुजरिम लोगों से फेरा नहीं जाता।(110) बेशक उनकी ख़बरों से (फ़ा241) अक़्लमन्दों की आंखें खुलती हैं (फ़ा242) यह कोई बनावट की बात नहीं (फ़ा243) लेकिन अपने से **(बक़िया सफ़हा 427 पर)**

سُوْرَةُ الرَّعْدِ مَدَنِيَّةٌ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ۝

الٓمّٓرٰ ۚ تِلْكَ اٰیٰتُ الْكِتٰبِ ؕ وَ الَّذِیْۤ اُنْزِلَ اِلَیْكَ مِنْ رَّبِّكَ الْحَقُّ وَ لٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا یُؤْمِنُوْنَ ۝ اَللّٰهُ الَّذِیْ رَفَعَ السَّمٰوٰتِ بِغَیْرِ عَمَدٍ تَرَوْنَهَا ثُمَّ
اسْتَوٰى عَلَى الْعَرْشِ وَ سَخَّرَ الشَّمْسَ وَ الْقَمَرَ ؕ كُلٌّ یَّجْرِیْ لِاَجَلٍ مُّسَمًّى ؕ یُدَبِّرُ الْاَمْرَ یُفَصِّلُ الْاٰیٰتِ لَعَلَّكُمْ بِلِقَآءِ رَبِّكُمْ تُوْقِنُوْنَ ۝ وَ هُوَ الَّذِیْ
مَدَّ الْاَرْضَ وَ جَعَلَ فِیْهَا رَوَاسِیَ وَ اَنْهٰرًا ؕ وَ مِنْ كُلِّ الثَّمَرٰتِ جَعَلَ فِیْهَا زَوْجَیْنِ اثْنَیْنِ یُغْشِی الَّیْلَ النَّهَارَ ؕ اِنَّ فِیْ ذٰلِكَ لَاٰیٰتٍ لِّقَوْمٍ یَّتَفَكَّرُوْنَ ۝

सूरतुर्रअ़्दि

(मदनी है इसमें 43 आयतें और 6 रुकूअ़ हैं)

बिस्मिल्लाहिर्रह़्मानिर्रह़ीम

अलिफ़् लाम् मीम् रा तिल्–क आयातुल किताबि वल्लज़ी उन्ज़ि–ल इलै–क मिर्रब्बिकल् ह़क्कु व लाकिन्–न अक्सरन्नासि ला युअ्–मिनून(1)अल्लाहुल्लज़ी र–फ–अस् समावाति बिग़ैरि अ–मदिन् तरौ–नहा सुम्मस्तवा अ़–लल्अ़र्शि व सख़्ख़रश् शम्–स वल्क़–म–र कुल्लुंय्यजरी लिअ–जलिम् मुसम्मन् युदब्बिरुल् अम्–र युफ़स्सिलुल् आयाति ल–अ़ल्लकुम् बिलिक़ाइ रब्बिकुम् तूक़िनून(2)व हुवल्लज़ी मददल् अर्–ज़ व ज–अ़–ल फ़ीहा रवासि–य व अन्हारन् व मिन् कुल्लिस् स–मराति ज–अ़–ल फ़ीहा ज़ौजैनिस्नैनि युग़्शिल् लैलन्नहा–र इन्–न फ़ी ज़ालि–क ल–आयातिल् लिक़ौमिंय्य–त–फ़क्करून(3)

अल्लाह के नाम से शुरू जो निहायत मेहरबान रहमवाला। (फ़ा1)

यह किताब की आयतें हैं (फ़ा2) और वह जो तुम्हारी तरफ़ तुम्हारे रब के पास से उतरा (फ़ा3) हक़ है (फ़ा4) मगर अक्सर आदमी ईमान नहीं लाते।(1) (फ़ा5) अल्लाह है जिसने आसमानों को बुलन्द किया बे सुतूनों के कि तुम देखो (फ़ा6) फिर अ़र्श पर इस्तिवा फ़रमाया जैसा उसकी शान के लाइक़ है और सूरज और चाँद को मुसख़्ख़र किया (फ़ा7) हर एक एक ठहराए हुए वादा तक चलता है (फ़ा8) अल्लाह काम की तदबीर फ़रमाता और मुफ़स्सल निशानियां बताता है (फ़ा9) कहीं तुम अपने रब का मिलना यक़ीन करो।(2) (फ़ा10) और वही है जिसने ज़मीन को फैलाया और उसमें लंगर (फ़ा11) और नहरें बनाईं और ज़मीन में हर क़िस्म के फल दो दो तरह के बनाए (फ़ा12) रात से दिन को छुपा लेता है बेशक उसमें निशानियां हैं ध्यान करने वालों को।(3) (फ़ा13)

(फ़ा1) सूरह रअ़्द मक्की है और एक रिवायत हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा से यह है कि दो आयतों ला यज़ालुल्लज़ी–न कफ़रू तुसी–बहुम् और यक़ूलुल्लज़ी–न कफ़रू लस्–त मुर्सलन् के सिवा बाक़ी सब मक्की हैं और दूसरा क़ौल यह है कि यह सूरत मदनी है इस में छः रुकूअ़ तैंतालीस या पैंतालीस आयतें और 855 कलिमे और 3506 हीफ़ हैं। (फ़ा2) यानी क़ुरआन शरीफ़ की (फ़ा3) यानी क़ुरआन शरीफ़ (फ़ा4) कि इसमें कुछ शुबहा नहीं (फ़ा5) यानी मुशरिकीने मक्का जो यह कहते हैं कि यह कलाम मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम का है उन्होंने खुद बनाया इस आयत में उनका रद्द फ़रमाया और उसके बाद अल्लाह तआ़ला ने अपनी रबूबियत के दलायल और अपने अ़जायबे क़ुदरत बयान फ़रमाए जो उसकी वहदानियत पर दलालत करते हैं (फ़ा6) इसके दो माने हो सकते हैं एक यह कि आसमानों को बग़ैर सुतूनों के बुलन्द किया जैसा कि तुम उनको देखते हो यानी हक़ीक़त में कोई सुतून ही नहीं है और यह माना भी हो सकते हैं कि तुम्हारे देखने में आने वाले सुतूनों के बग़ैर बुलन्द किया इस तक़दीर पर माना यह होंगे कि सुतून तो हैं मगर तुम्हारे देखने में नहीं आते और क़ौले अव्वल सही तर है इसी पर जम्हूर हैं। (ख़ाज़िन व जुमल) (फ़ा7) अपने बन्दों के मुनाफ़ा और अपने बिलाद के मुसालेह के लिए वह हस्बे हुक्म गर्दिश में हैं। (फ़ा8) यानी फ़नाए दुनिया के वक़्त तक हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा ने फ़रमाया कि अजल मुसम्मा से उनके दर्जात व मनाज़िल मुराद हैं यानी वह अपने मनाज़िल व दर्जात मे एक ग़ायत तक गर्दिश करते हैं जिस से तजावुज़ नहीं कर सकते शम्सो क़मर में से हर एक के लिए सैर ख़ास जेहते ख़ास की तरफ़ सुरअ़त व बुतो व हरकत की मिक़दार ख़ास से मुक़र्रर फ़रमाई है। (फ़ा9) अपने वहदानियत व कमाले क़ुदरत की (फ़ा10) और जानो कि जो इन्सान को नेस्ती के बाद हस्त करने पर क़ादिर है वह उसको मौत के बाद भी ज़िन्दा करने पर क़ादिर है। (फ़ा11) यानी मज़बूत पहाड़ (फ़ा12) सियाह व सफ़ेद तुर्श व शीरीं सग़ीर व कबीर बरी व बस्तानी गरम व सर्द तर व ख़ुश्क वग़ैरह (फ़ा13) जो समझें कि यह तमाम आसार सानेअ़ हकीम के वजूद पर दलालत करते हैं।

وَفِي الْأَرْضِ قِطَعٌ مُتَجَاوِرَاتٌ وَجَنَّاتٌ مِنْ أَعْنَابٍ وَزَرْعٌ وَنَخِيلٌ صِنْوَانٌ وَغَيْرُ صِنْوَانٍ يُسْقَىٰ بِمَاءٍ وَاحِدٍ وَنُفَضِّلُ بَعْضَهَا عَلَىٰ بَعْضٍ فِي الْأُكُلِ
إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَاتٍ لِقَوْمٍ يَعْقِلُونَ ۝ وَإِنْ تَعْجَبْ فَعَجَبٌ قَوْلُهُمْ أَإِذَا كُنَّا تُرَابًا أَإِنَّا لَفِي خَلْقٍ جَدِيدٍ ۗ أُولَٰئِكَ الَّذِينَ كَفَرُوا بِرَبِّهِمْ ۖ وَأُولَٰئِكَ
الْأَغْلَالُ فِي أَعْنَاقِهِمْ ۖ وَأُولَٰئِكَ أَصْحَابُ النَّارِ ۖ هُمْ فِيهَا خَالِدُونَ ۝ وَيَسْتَعْجِلُونَكَ بِالسَّيِّئَةِ قَبْلَ الْحَسَنَةِ وَقَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِهِمُ الْمَثُلَاتُ ۗ
وَإِنَّ رَبَّكَ لَذُو مَغْفِرَةٍ لِلنَّاسِ عَلَىٰ ظُلْمِهِمْ ۖ وَإِنَّ رَبَّكَ لَشَدِيدُ الْعِقَابِ ۝ وَيَقُولُ الَّذِينَ كَفَرُوا لَوْلَا أُنْزِلَ عَلَيْهِ آيَةٌ مِنْ رَبِّهِ ۗ إِنَّمَا
أَنْتَ مُنْذِرٌ ۖ وَلِكُلِّ قَوْمٍ هَادٍ ۝ اللَّهُ يَعْلَمُ مَا تَحْمِلُ كُلُّ أُنْثَىٰ وَمَا تَغِيضُ الْأَرْحَامُ وَمَا تَزْدَادُ ۖ وَكُلُّ شَيْءٍ عِنْدَهُ بِمِقْدَارٍ ۝ عَالِمُ الْغَيْبِ وَ

व फ़िल्अर्ज़ि क़ि–तअुम् मु–तजावि–रातुंव् व जन्नातुम् मिन् अअ्नाबिंव् व ज़र्अुंव् व नख़ीलुन् सिन्वानुंव् व ग़ैरु सिन्वानिंय्युस्क़ा बिमाइंव् वाहिदिन् व नुफ़ज़्ज़िलु बअ्ज़हा अ़ला बअ्ज़िन् फ़िल्–उकुलि इन्–न फ़ी ज़ालि–क लआयातिल् लिक़ौमिंय्यअ्क़िलून(4)व इन् तअ्–जब् फ़–अ–जबुन् क़ौलुहुम् अ–इज़ा कुन्ना तुराबन् अ–इन्ना लफ़ी ख़ल्क़िन् जदीदिन् उलाइ– कल्लज़ी–न क–फ़रू बि–रब्बिहिम् व उलाइकल् अग़्लालु फ़ी अअ्नाक़िहिम् व उलाइ–क अस्हा–बुन्नारि हुम् फ़ीहा ख़ालिदून(5)व यस्तअ्जिलू–न–क बिस्सय्यि–अति क़ब्लल् ह–स–नति व क़द् ख़–लत् मिन् क़ब्लिहिमुल् मसुलातु व इन्–न रब्ब–क लज़ू मग़्फ़ि–रतिल् लिन्नासि अ़ला ज़ुल्मिहिम् व इन्–न रब्ब–क ल–शदीदुल् अ़िक़ाब(6)व यक़ूलुल् लज़ी–न क–फ़रू लौला उन्ज़ि–ल अ़लैहि आ–यतुम् मिर्रब्बिही इन्नमा अन्–त मुन्ज़िरुंव् व लिकुल्लि क़ौमिन् हाद(7)अल्लाहु यअ्–लमु मा तह्मिलु कुल्लु उन्सा व मा तग़ीज़ुल् अर्हामु व मा तज़्दादु व कुल्लु शैइन् अ़िन्दहू बिमिक़्दार(8)आ़लिमुल् ग़ैबि वश्शहा–

और ज़मीन के मुख़्तलिफ़ क़तअ़े हैं और हैं पास पास (फ़ा14) और बाग़ हैं अंगूरों के और खेती और खजूर के पेड़ एक थाले से उगे और अलग अलग सबको एक ही पानी दिया जाता है और फलों में हम एक को दूसरे से बेहतर करते हैं बेशक उसमें निशानियाँ हैं अक़्लमन्दों के लिए।(4) (फ़ा15) और अगर तुम तअ़ज्जुब करो (फ़ा16) तो अचम्भा तो उनके इस कहने का है कि क्या हम मिट्टी होकर फिर नए बनेंगे (फ़ा17) वह हैं जो अपने रब से मुन्किर हुए और वह हैं जिनकी गर्दनों में तौक़ होंगे (फ़ा18) और वह दोज़ख़ वाले हैं उन्हें उसी में रहना।(5) और तुम से अ़ज़ाब की जल्दी करते हैं रहमत से पहले (फ़ा19) और उनसे अगलों की सज़ायें हो चुकीं (फ़ा20) और बेशक तुम्हारा रब तो लोगों के ज़ुल्म पर भी उन्हें एक तरह की माफ़ी देता है (फ़ा21) और बेशक तुम्हारे रब का अ़ज़ाब सख़्त है।(6) (फ़ा22) और काफ़िर कहते हैं उन पर उनके रब की तरफ़ से कोई निशानी क्यों नहीं उतरी (फ़ा23) तुम तो डर सुनाने वाले हो और हर क़ौम के हादी। (7) (फ़ा24)(रुकूअ़ 7) अल्लाह जानता है जो कुछ किसी मादा के पेट में है (फ़ा25) और पेट जो कुछ घटते और बढ़ते हैं (फ़ा26) और हर चीज़ उसके पास एक अन्दाज़े से है।(8) (फ़ा27) हर छुपे और खुले का जानने वाला

(फ़ा14) एक दूसरे से मिले हुए इन में से कोई क़ाबिले ज़राअ़त है कोई नाक़ाबिले ज़राअ़त कोई पथरीला कोई रेतीला (फ़ा15) हसन बसरी रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने फ़रमाया इस में बनी आदम के क़ुलूब की एक तम्सील है कि जिस तरह ज़मीन एक थी उसके मुख़्तलिफ़ क़तआ़त हुए उन पर आसमान से एक ही पानी बरसा इससे मुख़्तलिफ़ क़िस्म के फल फूल बेल बूटे अच्छे बुरे पैदा हुए इसी तरह आदमी हज़रत आदम से पैदा किये गए उन पर आसमान से हिदायत उतरी इससे बाज़ दिल नर्म हुए उनमें ख़ुशूअ़ ख़ुज़ूअ़ पैदा हुआ बाज़ सख़्त हो गए वह लह्व व लग़्व में मुब्तला हुए तो जिस तरह ज़मीन के क़तआ़त अपने फूल फल में मुख़्तलिफ़ हैं उसी तरह इन्सानी क़ुलूब अपने आसार व अनवार व असरार में मुख़्तलिफ़ हैं (फ़ा16) ऐ मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम कुफ़्फ़ार की तकज़ीब करने से बावजूदेकि आप उन में सादिक़ व अमीन मअ़रूफ़ थे (फ़ा17) और उन्होंने कुछ न समझा कि जिसने इब्तेदाअ़न बग़ैर मिसाल के पैदा कर दिया उसको दोबारा पैदा करना क्या मुश्किल है। (फ़ा18) रोज़े क़ियामत (फ़ा19) मुशरिकीने मक्का और यह जल्दी करना बतरीक़े तमस्ख़ुर था और रहमत से सलामत व आ़फ़ियत मुराद है। (फ़ा20) वह भी रसूलों की तकज़ीब और अ़ज़ाब का तमस्ख़ुर किया करते थे उनका हाल देख कर इबरत **(बक़िया सफ़हा 428 पर)**

الشَّهَادَةِ الْكَبِيْرُ الْمُتَعَالِ ۝ سَوَآءٌ مِّنْكُمْ مَّنْ اَسَرَّ الْقَوْلَ وَمَنْ جَهَرَ بِهٖ وَمَنْ هُوَ مُسْتَخْفٍۢ بِالَّيْلِ وَسَارِبٌۢ بِالنَّهَارِ ۝ لَهٗ مُعَقِّبٰتٌ مِّنْۢ بَيْنِ يَدَيْهِ

وَمِنْ خَلْفِهٖ يَحْفَظُوْنَهٗ مِنْ اَمْرِ اللّٰهِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَا يُغَيِّرُ مَا بِقَوْمٍ حَتّٰى يُغَيِّرُوْا مَا بِاَنْفُسِهِمْ ؕ وَاِذَآ اَرَادَ اللّٰهُ بِقَوْمٍ سُوْٓءًا فَلَا مَرَدَّ لَهٗ ۚ وَمَا لَهُمْ

مِّنْ دُوْنِهٖ مِنْ وَّالٍ ۝ هُوَ الَّذِيْ يُرِيْكُمُ الْبَرْقَ خَوْفًا وَّطَمَعًا وَّيُنْشِئُ السَّحَابَ الثِّقَالَ ۝ وَيُسَبِّحُ الرَّعْدُ بِحَمْدِهٖ وَالْمَلٰٓئِكَةُ مِنْ خِيْفَتِهٖ ۚ وَيُرْسِلُ

الصَّوَاعِقَ فَيُصِيْبُ بِهَا مَنْ يَّشَآءُ وَهُمْ يُجَادِلُوْنَ فِي اللّٰهِ ۚ وَهُوَ شَدِيْدُ الْمِحَالِ ۝ لَهٗ دَعْوَةُ الْحَقِّ ؕ وَالَّذِيْنَ يَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِهٖ لَا يَسْتَجِيْبُوْنَ لَهُمْ

بِشَيْءٍ اِلَّا كَبَاسِطِ كَفَّيْهِ اِلَى الْمَآءِ لِيَبْلُغَ فَاهُ وَمَا هُوَ بِبَالِغِهٖ ؕ وَمَا دُعَآءُ الْكٰفِرِيْنَ اِلَّا فِيْ ضَلٰلٍ ۝ وَلِلّٰهِ يَسْجُدُ مَنْ فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ طَوْعًا وَّكَرْهًا

दतिल् कबीरुल् मु–तआ़ल(9)सवाउम् मिन्कुम् मन् अ–सर्रल् क़ौ–ल व मन् ज–ह–र बिही व मन् हु–व मुस्तख़्फ़िम् बिल्लैलि व सारिबुम् बिन्नहार(10)लहू मुअ़क़्क़िबातुम् मिम् बैनि यदैहि व मिन् ख़ल्फ़िही यह़्फ़ज़ू–नहू मिन् अम्रिल्लाहि इन्नल्ला–ह ला युग़य्यिरु मा बिक़ौमिन् ह़त्ता युग़य्यिरु मा बि–अन्फ़ुसिहिम् व इज़ा अरा–दल्लाहु बिक़ौमिन् सूअन् फ़ला म–रद्–द लहू व मा लहुम् मिन् दूनिही मिंव्वाल(11)हुवल्लज़ी युरीकु–मुल्बर्–क़ ख़ौफ़ंव् व त–म–अंव् व युन्शिउस् सह़ाबस् सिक़ाल(12)व युसब्बिहुर्–रअ़्दु बिह़म्दिही वल्मलाइ–कतु मिन् ख़ी–फ़तिही व युर्सिलुस् सवाअ़ि–क फ़युसीबु बिहा मंय्यशाउ व हुम् युजादिलू–न फ़िल्लाहि व हु–व शदीदुल् मिह़ाल(13) लहू दअ़्–वतुल् ह़क़्क़ि वल्लज़ी–न यदअ़ू–न मिन् दूनिही ला यस्तजीबू–न लहुम् बिशैइन् इल्ला कबासिति कफ़्फ़ैहि इलल् माइ लि–यब्लु–ग़ फ़ाहु व मा हु–व बिबालि–ग़िही व मा दुआउल् काफ़िरी–न इल्ला फ़ी ज़लाल(14)व लिल्लाहि यस्जुदु मन् फ़िस्समावाति वल्अर्ज़ि तौअंव् व करहंव्

सबसे बड़ा बुलन्दी वाला।(9) (फ़ा28) बराबर हैं जो तुम में बात आहिस्ता कहे और जो आवाज़ से और जो रात में छुपा है और जो दिन में राह चलता है।(10) (फ़ा29) आदमी के लिए बदली वाले फ़रिश्ते हैं उसके आगे और पीछे (फ़ा30) कि बहुक्मे खुदा उसकी हिफ़ज़ात करते हैं (फ़ा31) बेशक अल्लाह किसी क़ौम से अपनी निअ़मत नहीं बदलता जब तक वह ख़ुद (फ़ा32) अपनी हालत न बदल दें और जब अल्लाह किसी क़ौम से बुराई चाहे (फ़ा33) तो वह फिर नहीं सकती और उसके सिवा उनका कोई ह़िमायती नहीं।(11) (फ़ा34) वही है कि तुम्हें बिजली दिखाता है डर को और उम्मीद को (फ़ा35) और भारी बदलियां उठाता है।(12) और गरज उसे सराहती हुई उसकी पाकी बोलती है (फ़ा36) और फ़रिश्ते उसके डर से (फ़ा37) और कड़क भेजता है (फ़ा38) तो उसे डालता है जिस पर चाहे और वह अल्लाह में झगड़ते होते हैं (फ़ा39) और उसकी पकड़ सख़्त है।(13) उसी का पुकारना सच्चा है (फ़ा40) और उसके सिवा जिनको पुकारते हैं (फ़ा41) वह उनकी कुछ भी नहीं सुनते मगर उसकी तरह जो पानी के सामने अपनी हथेलियाँ फैलाए बैठा है कि उसके मुंह में पहुंच जाए (फ़ा42) और वह हरगिज़ न पहुंचेगा और काफ़िरों की हर दुआ भटकती फिरती है।(14) और अल्लाह ही को सजदा करते हैं जितने आसमानों और ज़मीन में हैं ख़ुशी से (फ़ा43) ख़्वाह मजबूरी से (फ़ा44)

(फ़ा28) हर नफ़्स से मुनज़्ज़ा (फ़ा29) यानी दिल की छुपी बातें और ज़बान से बएलान कही हुई और रात को छुप कर किये हुए अ़मल और दिन को ज़ाहिर तौर पर किये हुए काम सब अल्लाह तआ़ला जानता है कोई उसके इल्म से बाहर नहीं (फ़ा30) बुख़ारी व मुस्लिम की हदीस में है कि तुम में फ़रिश्ते नौबत ब–नौबत आते हैं रात और दिन में और नमाज़े फ़ज्र और नमाज़े अ़स्र में जमा होते हैं नये फ़रिश्ते रह जाते हैं और जो फ़रिश्ते रह चुके हैं वह चले जाते हैं अल्लाह तआ़ला उनसे दरियाफ़्त फ़रमाता है कि तुम ने मेरे बन्दे को किस हाल में छोड़ा वह अ़र्ज़ करते हैं कि नमाज़ पढ़ते पाया और नमाज़ पढ़ते छोड़ा (फ़ा31) मुजाहिद ने कहा हर बन्दे के साथ एक फ़रिश्ता हिफ़ाज़त पर मामूर है जो सोते जागते जिन्न व इन्स और मूज़ी जानवरों से उसकी हिफ़ाज़त करता है और हर सताने वाली चीज़ को उससे रोक देता है बजुज़ उसके जिसका पहुंचना मशीयत में हो। (फ़ा32) मआ़सी में मुब्तला होकर (फ़ा33) उसके अ़ज़ाब व हलाक का इरादा फ़रमाए (फ़ा34) जो उसके अ़ज़ाब को रोक सके (फ़ा35) कि उससे गिर कर नुक़सान पहुंचाने का ख़ौफ़ होता है और बारिश से नफ़ा उठाने की उम्मीद या बाज़ों को ख़ौफ़ होता है जैसे मुसाफ़िरों को जो सफ़र में हों और बाज़ों को फ़ायदा की उम्मीद जैसे कि काश्तकार वग़ैरह। (फ़ा36) गरज यानी बादल से जो आवाज़ होती है उसके तस्बीह करने के माना यह हैं कि उस आवाज़ का पैदा होना ख़ालिक़ क़ादिर **(बक़िया सफ़हा 428 पर)**

وَظِلٰلُهُمْ بِالْغُدُوِّ وَالْاٰصَالِ ۩ ⑮ قُلْ مَنْ رَّبُّ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ قُلِ اللّٰهُ ؕ قُلْ اَفَاتَّخَذْتُمْ مِّنْ دُوْنِهٖۤ اَوْلِيَآءَ لَا يَمْلِكُوْنَ لِاَنْفُسِهِمْ نَفْعًا وَّلَا ضَرًّا ؕ
قُلْ هَلْ يَسْتَوِي الْاَعْمٰى وَالْبَصِيْرُ ۙ اَمْ هَلْ تَسْتَوِي الظُّلُمٰتُ وَالنُّوْرُ ۚ اَمْ جَعَلُوْا لِلّٰهِ شُرَكَآءَ خَلَقُوْا كَخَلْقِهٖ فَتَشَابَهَ الْخَلْقُ عَلَيْهِمْ ؕ قُلِ اللّٰهُ خَالِقُ
كُلِّ شَيْءٍ وَّهُوَ الْوَاحِدُ الْقَهَّارُ ⑯ اَنْزَلَ مِنَ السَّمَآءِ مَآءً فَسَالَتْ اَوْدِيَةٌۢ بِقَدَرِهَا فَاحْتَمَلَ السَّيْلُ زَبَدًا رَّابِيًا ؕ وَمِمَّا يُوْقِدُوْنَ عَلَيْهِ فِي النَّارِ
ابْتِغَآءَ حِلْيَةٍ اَوْ مَتَاعٍ زَبَدٌ مِّثْلُهٗ ؕ كَذٰلِكَ يَضْرِبُ اللّٰهُ الْحَقَّ وَالْبَاطِلَ ؕ فَاَمَّا الزَّبَدُ فَيَذْهَبُ جُفَآءً ۚ وَاَمَّا مَا يَنْفَعُ النَّاسَ فَيَمْكُثُ فِي الْاَرْضِ ؕ كَذٰلِكَ
يَضْرِبُ اللّٰهُ الْاَمْثَالَ ⑰ لِلَّذِيْنَ اسْتَجَابُوْا لِرَبِّهِمُ الْحُسْنٰى ؔ وَالَّذِيْنَ لَمْ يَسْتَجِيْبُوْا لَهٗ لَوْ اَنَّ لَهُمْ مَّا فِي الْاَرْضِ جَمِيْعًا وَّمِثْلَهٗ مَعَهٗ لَافْتَدَوْا بِهٖ ؕ

व ज़िलालुहुम् बिल्गुदुव्वि वल् आसाल(15)कुल् मंर्-रब्बुस्समावाति वल्अर्ज़ि कुलिल्लाहु कुल् अ-फत्त-ख़ज़्तुम् मिन् दूनिही औलिया-अ ला यम्लिकू-न लिअन्फ़ुसिहिम् नफ़्अंव् व ला ज़र्रन् कुल् हल् यस्तविल् अअ्मा वल्बसीरु अम् हल् तस्त-विज़्ज़ुलुमातु वन्नूरु अम् ज-अलू लिल्लाहि शु-रका-अ ख़-लकू क-ख़ल्किही फ़-तशा-बहल् ख़ल्कु अ़लैहिम् कुलिल्लाहु ख़ालिकु कुल्लि शैइंव् व हुवल् वाहिदुल् कह्हार(16)अन्ज़-ल मिनस्समाइ माअन् फ़सालत् औदि-यतुम् बि-क़-दरिहा फ़ह्त-म-लस्सैलु ज़-ब-दर् राबियन् व मिम्मा यूकिदू-न अ़लैहि फ़िन्नारिब्तिग़ा-अ हिल्यतिन् औ मताअ़िन् ज़-बदुम् मिस्लुहू कज़ालि-क यज़्रिबुल्लाहुल् हक़्-क़ वल्बाति-ल फ़-अम्मज़् ज़-बदु फ़-यज़्-हबु जुफ़ाअन् व अम्मा मा यन्फ़अुन्ना-स फ़-यम्कुसु फ़िल्अर्ज़ि कज़ालि-क यज़्रिबुल्लाहुल् अम्साल(17)लिल्लज़ीनस्तजाबू लि-रब्बिहिमुल् हुस्ना वल्लज़ी-न लम् यस्तजीबू लहू लौ अन्-न लहुम् मा फ़िल्अर्ज़ि जमीअ़ंव् व मिस्लहू म-अ़हू लफ़्तदौ बिही

और उनकी परछाईयां हर सुबह व शाम।(15) (फ़ा45) तुम फ़रमाओ कौन रब है आसमानों और ज़मीन का तुम खुद ही फ़रमाओ अल्लाह (फ़ा46) तुम फ़रमाओ तो क्या उसके सिवा तुमने वह हिमायती बना लिए हैं जो अपना भला बुरा नहीं कर सकते हैं (फ़ा47) तुम फ़रमाओ क्या बराबर हो जायेंगे अन्धा और अंखियारा (फ़ा48) या क्या बराबर हो जायेंगे अन्धेरियाँ और उजाला (फ़ा49) क्या अल्लाह के लिए ऐसे शरीक ठहराए हैं जिन्होंने अल्लाह की तरह कुछ बनाया तो उन्हें उनका और उसका बनाना एक सा मालूम हुआ (फ़ा50) तुम फ़रमाओ अल्लाह हर चीज़ का बनाने वाला है (फ़ा51) और वह अकेला सब पर ग़ालिब है।(16) (फ़ा52) उसने आसमान से पानी उतारा तो नाले अपने अपने लाइक़ बह निकले तो पानी की रौ उस पर उभरे हुए झाग उठा लाई और जिस पर आग दहकाते हैं (फ़ा53) गहना या और असबाब (फ़ा54) बनाने को उससे भी वैसे ही झाग उठते हैं अल्लाह बताता है कि हक़ और बातिल की यही मिसाल है तो झाग तो फुंक (जल) कर दूर हो जाता है और वह जो लोगों के काम आये ज़मीन में रहता है (फ़ा55) अल्लाह यूं ही मिसालें बयान फ़रमाता है।(17) जिन लोगों ने अपने रब का हुक्म माना उन्हीं के लिए भलाई है (फ़ा56) और जिन्होंने उसका हुक्म न माना (फ़ा57) अगर ज़मीन में जो कुछ है वह सब और उस जैसा और उनकी मिल्क में होता तो

(फ़ा45) उनकी तबअ़ीयत में अल्लाह को सजदा करती हैं ज़जाज ने कहा कि काफ़िर ग़ैरुल्लाह को सज्दा करता है और उसका साया अल्लाह को। इब्ने अम्बारी ने कहा कि कुछ बईद नहीं कि अल्लाह तआ़ला परछाईयों में ऐसी फ़हम पैदा करे कि वह उसको सजदा करें। बाज़ का क़ौल है सज्दे से साया का एक तरफ़ से दूसरी तरफ़ माइल होना और आफ़ताब के इरतफ़ा व नुज़ूल के साथ दराज़ व कोताह होना मुराद है (ख़ाज़िन) (फ़ा46) क्योंकि इस सवाल का इसके सिवा और कोई जवाब ही नहीं और मुशरिकीन बावजूद ग़ैरुल्लाह की इबादत करने के उसके मुक़िर हैं कि आसमान व ज़मीन का ख़ालिक़ अल्लाह है जब यह अमर मुसल्लम है तो (फ़ा47) यानी बुत जब उनकी यह बे क़ुदरती व बेचारगी है तो वह दूसरे को क्या नफ़ा व ज़रर पहुंचा सकते हैं ऐसों को मअ़्बूद बनाना और ख़ालिक़ राज़िक़ क़वी व क़ादिर को छोड़ना इन्तेहा दर्जे की गुमराही है (फ़ा48) यानी काफ़िर व मोमिन (फ़ा49) यानी कुफ़्र व ईमान (फ़ा50) और इस वजह से कि हक़ उनपर मुश्तबह हो गया और वह बुत परस्ती करने लगे ऐसा तो नहीं है बल्कि जिन बुतों को वह पूजते हैं अल्लाह की मख़्लूक़ की तरह कुछ बनाना तो कुजा वह बन्दों के मसनूआ़त के मिस्ल भी नहीं बना सकते आ़जिज़ महज़ हैं ऐसे पत्थरों का पूजना अ़क़्ल व दानिश के बिल्कुल ख़िलाफ़ है (फ़ा51) जो मख़्लूक़ होने की सलाहियत रखे उस सब का ख़ालिक़ अल्लाह ही है और कोई नहीं तो दूसरे **(बक़िया सफ़हा 429 पर)**

اُولٰٓئِكَ لَهُمْ سُوْٓءُ الْحِسَابِ ۙ وَمَاْوٰىهُمْ جَهَنَّمُ ۚ وَبِئْسَ الْمِهَادُ ﴿۱۸﴾ اَفَمَنْ يَّعْلَمُ اَنَّمَآ اُنْزِلَ اِلَيْكَ مِنْ رَّبِّكَ الْحَقُّ كَمَنْ هُوَ اَعْمٰى ؕ اِنَّمَا يَتَذَكَّرُ

اُولُوا الْاَلْبَابِ ﴿۱۹﴾ الَّذِيْنَ يُوْفُوْنَ بِعَهْدِ اللّٰهِ وَلَا يَنْقُضُوْنَ الْمِيْثَاقَ ﴿۲۰﴾ وَالَّذِيْنَ يَصِلُوْنَ مَآ اَمَرَ اللّٰهُ بِهٖٓ اَنْ يُّوْصَلَ وَيَخْشَوْنَ رَبَّهُمْ وَيَخَافُوْنَ سُوْٓءَ

الْحِسَابِ ﴿۲۱﴾ وَالَّذِيْنَ صَبَرُوا ابْتِغَآءَ وَجْهِ رَبِّهِمْ وَاَقَامُوا الصَّلٰوةَ وَاَنْفَقُوْا مِمَّا رَزَقْنٰهُمْ سِرًّا وَّعَلَانِيَةً وَّيَدْرَءُوْنَ بِالْحَسَنَةِ السَّيِّئَةَ اُولٰٓئِكَ لَهُمْ عُقْبَى

الدَّارِ ﴿۲۲﴾ جَنّٰتُ عَدْنٍ يَّدْخُلُوْنَهَا وَمَنْ صَلَحَ مِنْ اٰبَآئِهِمْ وَاَزْوَاجِهِمْ وَذُرِّيّٰتِهِمْ وَالْمَلٰٓئِكَةُ يَدْخُلُوْنَ عَلَيْهِمْ مِّنْ كُلِّ بَابٍ ﴿۲۳﴾ سَلٰمٌ عَلَيْكُمْ بِمَا صَبَرْتُمْ فَنِعْمَ

عُقْبَى الدَّارِ ﴿۲۴﴾ وَالَّذِيْنَ يَنْقُضُوْنَ عَهْدَ اللّٰهِ مِنْۢ بَعْدِ مِيْثَاقِهٖ وَيَقْطَعُوْنَ مَآ اَمَرَ اللّٰهُ بِهٖٓ اَنْ يُّوْصَلَ وَيُفْسِدُوْنَ فِى الْاَرْضِ ۙ اُولٰٓئِكَ لَهُمُ اللَّعْنَةُ وَلَهُمْ

उलाइ–क लहुम् सूउल् ह़िसाबि व मअ्वाहुम् ज–हन्नमु व बिअ्सल्–मिहाद(18)अ–फ़–मंय्यअ्–लमु अन्नमा उन्ज़ि–ल इलै–क मिर्रब्बिकल् ह़क़्क़ु क–मन् हु–व अअ्–मा इन्नमा य–त–ज़क्करु उलुल् अल्बाब(19)अ्ल्लज़ी–न यूफ़ू–न बिअ़ह्दिल्लाहि व ला यन्क़ुज़ू.नल् मीसा़क़(20)वल्लज़ी–न यसि़लू–न मा अ–म–रल्लाहु बिही अंय्यू–स–ल व यख़्शौ–न रब्बहुम् व यख़ाफ़ू–न सूअल् ह़िसाब(21)वल्लज़ी–न स–बरुब्तिग़ा–अ वज्हि रब्बिहिम् व अक़ामुस़्सला–त व अन्फ़क़ू मिम्मा र–ज़क़्नाहुम् सिर्–रंव् व अ़लानिय–तंव् व यदरऊ–न बिल् ह़–स–नतिस् सय्यि–अ–त उलाइ–क लहुम् अ़ुक़्बद्दार(22)जन्नातु अ़दनिंय्–दख़ुलू–नहा व मन् स़–ल–ह़ मिन् आबाइहिम् व अज़्वाजिहिम् व ज़ुर्रि–यातिहिम् वल्मलाइ–कतु यदख़ुलू–न अ़लैहिम् मिन् कुल्लि बाब(23) सलामुन् अ़लैकुम बिमा स–बर्तुम् फ़निअ्–म अ़ुक़्बद्दार(24)वल्लज़ी–न यन्क़ुज़ू–न अ़ह्–दल्लाहि मिम् बअ्दि मीसाक़िही व यक़्तअ़ू–न मा अ–म–रल्लाहु बिही अंय्यू–स–ल व युफ़्सिदू–न फ़िल्–अर्ज़ि उलाइ–क लहुमुल्लअ्नतु व लहुम्

अपनी जान छुड़ाने को दे देते यही हैं जिनका बुरा हिसाब होगा (फ़ा58) और उनका ठिकाना जहन्नम है और क्या ही बुरा बिछौना।(18) (रुकूअ् 8) तो क्या वह जो जानता है जो कुछ तुम्हारी तरफ़ तुम्हारे रब के पास से उतरा हक़ है (फ़ा59) वह उस जैसा होगा जो अन्धा है (फ़ा60) नसीहत वही मानते हैं जिन्हें अक़्ल है।(19) वह जो अल्लाह का अ़हद पूरा करते हैं (फ़ा61) और क़ौल बांध कर फिरते नहीं।(20) और वह कि जोड़ते हैं उसे जिस के जोड़ने का अल्लाह ने हुक्म दिया (फ़ा62) और अपने रब से डरते हैं और हिसाब की बुराई से अन्देशा रखते हैं।(21) (फ़ा63) और वह जिन्होंने सब्र किया (फ़ा64) अपने रब की रज़ा चाहने को और नमाज़ क़ाइम रखी और हमारे दिये से हमारी राह में छुपे और ज़ाहिर कुछ ख़र्च किया (फ़ा65) और बुराई के बदले भलाई करके टालते हैं (फ़ा66) उन्हीं के लिए पिछले घर का नफ़ा है।(22) बसने के बाग़ जिन में वह दाख़िल होंगे और जो लाइक़ हों (फ़ा67) उनके बाप दादा और बीबियों और औलाद में (फ़ा68) और फ़रिश्ते (फ़ा69) हर दरवाज़े से उन पर (फ़ा70) यह कहते आयेंगे।(23) सलामती हो तुम पर तुम्हारे सब्र का बदला तो पिछला घर क्या ही ख़ूब मिला।(24) और वह जो अल्लाह का अ़हद उसके पक्के होने (फ़ा71)के बाद तोड़ते और जिसके जोड़ने को अल्लाह ने फ़रमाया उसे क़तअ़् करते और ज़मीन में फ़साद फैलाते हैं (फ़ा72)उनका हिस्सा लानत ही है और उनका

(फ़ा58) कि हर अमर पर मुआख़ज़ा किया जाएगा और उसमें से कुछ न बख़्शा जाएगा (जलालैन व ख़ाज़िन) (फ़ा59) और उस पर ईमान लाता है और उसके मुताबिक़ अ़मल करता है। (फ़ा60) हक़ को नहीं जानता क़ुरआन पर ईमान नहीं लाता उसके मुताबिक़ अ़मल नहीं करता यह आयत हज़रत हमज़ा इब्ने अ़ब्दुल मुत्तलिब और अबू जहल के हक़ में नाज़िल हुई। (फ़ा61) उसकी रुबूबियत की शहादत देते हैं और उसका हुक्म मानते हैं (फ़ा62) यानी अल्लाह की तमाम किताबों और उसके कुल रसूलों पर ईमान लाते हैं और बाज़ को मानकर बाज़ से मुन्किर होकर उनमें तफ़रीक़ नहीं करते या यह माना हैं कि हुक़ूक़े क़राबत की रिआ़यत रखते हैं और रिश्ता क़तअ़् नहीं करते इसी में रसूले करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की क़राबतें और ईमानी क़राबतें भी दाख़िल हैं सादाते किराम का एहतेराम और मुसलमानों के साथ मवद्दत व एहसान और उनकी मदद और उनकी तरफ़ से मुदाफ़अ़त और उनके साथ शफ़क़त और सलाम व दुआ़ और मुसलमान मरीज़ों की अ़यादत और अपने दोस्तों ख़ादिमों हमसायों सफ़र के साथियों के हुक़ूक़ की रिआ़यत भी इसमें दाख़िल है और शरीअ़त में इस का **(बक़िया सफ़हा 428 पर)**

سُوْٓءُ الدَّارِ ﴿٢٥﴾ اَللّٰهُ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَّشَآءُ وَيَقْدِرُ ۭ وَفَرِحُوْا بِالْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۭ وَمَا الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا فِي الْاٰخِرَةِ اِلَّا مَتَاعٌ ﴿٢٦﴾ وَيَقُوْلُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَوْلَآ
اُنْزِلَ عَلَيْهِ اٰيَةٌ مِّنْ رَّبِّهٖ ۭ قُلْ اِنَّ اللّٰهَ يُضِلُّ مَنْ يَّشَآءُ وَيَهْدِيْٓ اِلَيْهِ مَنْ اَنَابَ ﴿٢٧﴾ اَلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَتَطْمَىِٕنُّ قُلُوْبُهُمْ بِذِكْرِ اللّٰهِ ۭ اَلَا بِذِكْرِ اللّٰهِ
تَطْمَىِٕنُّ الْقُلُوْبُ ﴿٢٨﴾ اَلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ طُوْبٰى لَهُمْ وَحُسْنُ مَاٰبٍ ﴿٢٩﴾ كَذٰلِكَ اَرْسَلْنٰكَ فِيْٓ اُمَّةٍ قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِهَآ اُمَمٌ لِّتَتْلُوَا۟ عَلَيْهِمُ
الَّذِيْٓ اَوْحَيْنَآ اِلَيْكَ وَهُمْ يَكْفُرُوْنَ بِالرَّحْمٰنِ ۭ قُلْ هُوَ رَبِّيْ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۚ عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ وَاِلَيْهِ مَتَابِ ﴿٣٠﴾ وَلَوْ اَنَّ قُرْاٰنًا سُيِّرَتْ بِهِ الْجِبَالُ اَوْ
قُطِّعَتْ بِهِ الْاَرْضُ اَوْ كُلِّمَ بِهِ الْمَوْتٰى ۭ بَلْ لِّلّٰهِ الْاَمْرُ جَمِيْعًا ۭ اَفَلَمْ يَايْــــَٔسِ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اَنْ لَّوْ يَشَآءُ اللّٰهُ لَهَدَى النَّاسَ جَمِيْعًا ۭ وَلَا يَزَالُ

सूउद्दार(25)अल्लाहु यब्सुतुर्रिज़्–क लिमंय्यशाउ व यक़्दिरु व फ़रिहू. बिल्हया–तिद्दुन्या व मल्हयातुद्दुन्या फ़िल् आख़ि–रति इल्ला मता–अ़(26)व यक़ूलुल्लज़ी–न क–फ़रू लौला उन्ज़ि–ल अ़लैहि आ–यतुम् मिर्रब्बिही क़ुल् इन्नल्ला–ह युज़िल्लु मंय्यशाउ व यह्दी इलैहि मन् अनाब(27)अल्लज़ी–न आ–मनू व तत्मइन्नु क़ुलूबुहुम् बिज़िक्रिल्लाहि अला बिज़िक्रिल्लाहि तत्मइन्नुल् क़ुलूब(28)अल्लज़ी–न आ–मनू व अ़मिलुस्सालिहाति तूबा लहुम् व हुस्नु मआब(29) कज़ालि–क अर्सल्ना–क फ़ी उम्मतिन् क़द् ख़–लत् मिन् क़ब्लिहा उ–ममुल् लि–तत्लु–व अ़लैहिमुल्लज़ी औहैना इलै–क व हुम् यक्फ़ुरू–न बिर्रह्मानि क़ुल् हु–व रब्बी ला इला–ह इल्ला हु–व अ़लैहि तवक्कल्तु व इलैहि मताब(30) व लौ अन्–न क़ुरआनन् सुय्यिरत् बिहिल् जिबालु औ क़ुत्तिअ़त् बिहिल् अर्ज़ु औ कुल्लि–म बिहिल्मौता बल् लिल्लाहिल् अम्रु जमीअ़न् अ–फ़– लम् यै–असिल् लज़ी–न आ–मनू अल्लौ यशा–उल्लाहु ल–ह–दन्ना–स जमीअ़न् व ला यज़ालुल्लज़ी–न

नसीबा बुरा घर।(25) (फ़ा73) अल्लाह जिस के लिए चाहे रिज़्क़ कुशादा और (फ़ा74) तंग करता है और काफ़िर दुनिया की ज़िन्दगी पर इतरा गए (फ़ा75) और दुनिया की ज़िन्दगी आख़िरत के मुक़ाबिल नहीं मगर कुछ दिन बरत लेना।(26) (रुकूअ़ 9) और काफ़िर कहते उन पर कोई निशानी उनके रब की तरफ़ से क्यों न उतरी तुम फ़रमाओ बेशक अल्लाह जिसे चाहे गुमराह करता है (फ़ा76) और अपनी राह उसे देता है जो उसकी तरफ़ रुजूअ़ लाए।(27) वह जो ईमान लाए और उनके दिल अल्लाह की याद से चैन पाते हैं सुन लो अल्लाह की याद ही में दिलों का चैन है।(28) (फ़ा77) वह जो ईमान लाए और अच्छे काम किये उन को ख़ुशी है और अच्छा अन्जाम।(29) (फ़ा78) इसी तरह हमने तुम को इस उम्मत में भेजा जिससे पहले उम्मतें हो गुज़रीं (फ़ा79) कि तुम उन्हें पढ़ कर सुनाओ (फ़ा80) जो हमने तुम्हारी तरफ़ 'वही' की और वह रहमान के मुनकिर हो रहे हैं (फ़ा81) तुम फ़रमाओ वह मेरा रब है उसके सिवा किसी की बन्दगी नहीं मैंने उसी पर भरोसा किया और उसी की तरफ़ मेरी रुजूअ़ है।(30) और अगर कोई ऐसा क़ुरआन आता जिस से पहाड़ टल जाते (फ़ा82) या ज़मीन फट जाती या मुर्दे बातें करते जब भी यह काफ़िर न मानते (फ़ा83) बल्कि सब काम अल्लाह ही के इख़्तियार में हैं (फ़ा84) तो क्या मुसलमान उससे नाउम्मीद न हुए (फ़ा85) कि अल्लाह चाहता तो सब आदमियों को हिदायत कर देता (फ़ा86) और काफ़िरों को हमेशा

(फ़ा73) यानी जहन्नम (फ़ा74) जिसके लिए चाहे (फ़ा75) और शुक्रगुज़ार न हुए मसलाः दौलते दुनिया पर इतराना और मग़रूर होना हराम है। (फ़ा76) कि वह आयात व मोअ़्जेज़ात नाज़िल होने के बाद भी यह कहता रहता है कि कोई निशानी क्यों नहीं उतरी कोई मोअ़्जेज़ा क्यों नहीं आया मोअ़्जेज़ाते कसीरा के बावजूद गुमराह रहता है (फ़ा77) उसके रहमत व फ़ज़्ल और उसके एहसान व करम को याद करके बेक़रार दिलों को क़रार व इत्मीनान हासिल होता है अगरचे उसके अ़द्ल व अताब की याद दिलों को ख़ाइफ़ कर देती है जैसा कि दूसरी आयत में फ़रमाया इन्नमल् मुअ़्मिनू–नल्लज़ी–न इज़ा ज़ुकिरल्लाहु वजिलत् क़ुलूबुहुम् हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा ने इस आयत की तफ़सीर में फ़रमाया कि मुसलमान जब अल्लाह का नाम लेकर क़सम खाता है दूसरे मुसलमान उसका ऐतबार कर लेते हैं और उनके दिलों को इत्मीनान हो जाता है (फ़ा78) तूबा बशारत है राहत व निअ़्मत और ख़ुर्रमी व ख़ुशहाली की सईद बिन ज़ुबैर ने कहा कि तूबा ज़बाने हबशी में जन्नत का नाम है। हज़रत अबू हुरैरा और दीगर असहाब से मरवी है कि तूबा जन्नत के एक दरख़्त का नाम है जिसका **(बक़िया सफ़हा 429 पर)**

الَّذِينَ كَفَرُوا تُصِيبُهُم بِمَا صَنَعُوا قَارِعَةٌ أَوْ تَحُلُّ قَرِيبًا مِّن دَارِهِمْ حَتَّىٰ يَأْتِيَ وَعْدُ اللَّهِ ۚ إِنَّ اللَّهَ لَا يُخْلِفُ الْمِيعَادَ ﴿٣١﴾ وَلَقَدِ اسْتُهْزِئَ بِرُسُلٍ مِّن
قَبْلِكَ فَأَمْلَيْتُ لِلَّذِينَ كَفَرُوا ثُمَّ أَخَذْتُهُمْ ۖ فَكَيْفَ كَانَ عِقَابِ ﴿٣٢﴾ أَفَمَنْ هُوَ قَائِمٌ عَلَىٰ كُلِّ نَفْسٍ بِمَا كَسَبَتْ ۗ وَجَعَلُوا لِلَّهِ شُرَكَاءَ قُلْ سَمُّوهُمْ ۚ
أَمْ تُنَبِّئُونَهُ بِمَا لَا يَعْلَمُ فِي الْأَرْضِ أَم بِظَاهِرٍ مِّنَ الْقَوْلِ ۗ بَلْ زُيِّنَ لِلَّذِينَ كَفَرُوا مَكْرُهُمْ وَصُدُّوا عَنِ السَّبِيلِ ۗ وَمَن يُضْلِلِ اللَّهُ فَمَا لَهُ مِنْ هَادٍ ﴿٣٣﴾
لَّهُمْ عَذَابٌ فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا ۖ وَلَعَذَابُ الْآخِرَةِ أَشَقُّ ۖ وَمَا لَهُم مِّنَ اللَّهِ مِن وَاقٍ ﴿٣٤﴾ مَّثَلُ الْجَنَّةِ الَّتِي وُعِدَ الْمُتَّقُونَ ۖ تَجْرِي مِن تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ ۖ أُكُلُهَا
دَائِمٌ وَظِلُّهَا ۚ تِلْكَ عُقْبَى الَّذِينَ اتَّقَوا ۖ وَّعُقْبَى الْكَافِرِينَ النَّارُ ﴿٣٥﴾ وَالَّذِينَ آتَيْنَاهُمُ الْكِتَابَ يَفْرَحُونَ بِمَا أُنزِلَ إِلَيْكَ ۖ وَمِنَ الْأَحْزَابِ مَن يُنكِرُ بَعْضَهُ ۚ

क–फ़रू तुसी–बुहुम् बिमा स–नअू क़ारि–अतुन् औ तहुल्लु क़रीबम् मिन् दारिहिम् हत्ता यअ्ति–य वअ्दुल्लाहि इन्नल्ला–ह ला युख़्लिफुल मीआद(31)व ल–क़दिस्तुह्ज़ि–अ बिरुसुलिम् मिन् क़ब्लि–क फ़–अम्लैतु लिल्लज़ी–न क–फ़रू सुम्–म अ–ख़ज़्तुहुम् फ़कै–फ़ का–न अिक़ाब(32)अ–फ़–मन् हु–व क़ाइमुन् अ़ला कुल्लि नफ़्सिम् बिमा क–स–बत् व ज–अ़लू लिल्लाहि शु–रका–अ क़ुल् सम्मूहुम् अम् तुनब्बिऊ–नहू बिमा ला यअ्–लमु फ़िल्अर्ज़ि अम् बिज़ाहिरिम् मिनल्क़ौलि बल् ज़ुय्यि–न लिल्लज़ी–न क–फ़रू मक्रुहुम् व सुद्दू अ़निस्सबीलि व मंय्युज़्लि–लिल्लाहु फ़मा लहू मिन् हाद(33)लहुम् अ़ज़ाबुन् फ़िल् ह़यातिद्दुन्या व ल–अ़ज़ाबुल् आख़ि–रति अशक़्क़ु व मा लहुम् मिनल्लाहि मिंव्वाक़(34)म–स़लुल् जन्नतिल्लती वुअ़िदल् मुत्तक़ू–न तजरी मिन् तह़्तिहल् अन्हारु उकुलुहा दाइमुंव् व ज़िल्लुहा तिल्–क अुक़्बल् लज़ीनत् तक़व् व उक़्बल् काफ़िरीनन्नार(35)वल्लज़ी–न आतैनाहुमुल् किता–ब यफ़रहू–न बिमा उन्ज़ि–ल इलै–क व मिनल् अह़्ज़ाबि मंय्युन्किरु बअ़्ज़हू

उनके किये पर यह सख़्त धमक पहुंचती रहेगी (फ़ा87) या उनके घरों के नज़दीक उतरेगी (फ़ा88) यहां तक कि अल्लाह का वादा आए (फ़ा89) बेशक अल्लाह वादा ख़िलाफ़ नहीं करता।(31) (फ़ा90) (रुकूअ़ 10) और बेशक तुमसे अगले रसूलों से भी हंसी की गई तो मैं ने काफ़िरों को कुछ दिनों ढील दी फिर उन्हें पकड़ा (फ़ा91) तो मेरा अ़ज़ाब कैसा था।(32) तो क्या वह हर जान पर उसके आमाल की निगहदाश्त रखता है (फ़ा92) और वह अल्लाह के शरीक ठहराते हैं तुम फ़रमाओ उनका नाम तो लो (फ़ा93) या उसे वह बताते हो जो उसके इल्म में सारी ज़मीन में नहीं (फ़ा94) या यूं ही ऊपरी बात (फ़ा95) बल्कि काफ़िरों की निगाह में उनका फ़रेब अच्छा ठहरा है और राह से रोके गए (फ़ा96) और जिसे अल्लाह गुमराह करे उसे कोई हिदायत करने वाला नहीं।(33) उन्हें दुनिया के जीते अ़ज़ाब होगा (फ़ा97) और बेशक आख़िरत का अ़ज़ाब सब से सख़्त है और उन्हें अल्लाह से बचाने वाला कोई नहीं।(34) अहवाल उस जन्नत का कि डर वालों के लिए जिस का वादा है उसके नीचे नहरें बहती हैं उसके मेवे हमेशा और उसका साया (फ़ा98) डर वालों का तो यह अन्जाम है (फ़ा99) और काफ़िरों का अन्जाम आग।(35) और जिनको हमने किताब दी (फ़ा100) वह उस पर ख़ुश होते जो तुम्हारी तरफ़ उतरा और उन गरोहों में (फ़ा101) कुछ वह हैं कि उसके बाज़ से मुनकिर हैं

(फ़ा87) यानी वह इस तकज़ीब व इनाद की वजह से तरह तरह के हवादिस व मसाइब और आफ़तों और बलाओं में मुब्तला रहेंगे कभी कहत में कभी लुटने में कभी मारे जाने में कभी क़ैद में (फ़ा88) और उनके इज़्तेराब व परेशानी का बाइस होगी और उन तक इन मसाइब के ज़रर पहुंचेंगे (फ़ा89) अल्लाह की तरफ़ से फ़तह व नुसरत अल्लाह और रसूले करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम और उनका दीन ग़ालिब हो और मक्का मुकर्रमा फ़तह किया जाये बाज़ मुफ़स्सिरीन ने कहा कि इस वादा से रोज़े क़ियामत मुराद है जिस में आमाल की जज़ा दी जायेगी (फ़ा90) उसके बाद अल्लाह तबारक व तआ़ला अपने नबीए करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की तस्कीन ख़ातिर फ़रमाता है कि इस क़िस्म के बेहूदा सवाल और ऐसे तमस्ख़ुर व इस्तेहज़ा से आप रन्जीदा न हों क्योंकि हादियों को ऐसे वाक़िआत पेश आया ही करते हैं चुनान्चे इरशाद फ़रमाता है (फ़ा91) और दुनिया में उन्हें क़हत व क़त्लो क़ैद में मुब्तला किया और आख़िरत में उनके लिए अ़ज़ाबे जहन्नम है (फ़ा92) नेक की भी बद की भी यानी अल्लाह तआ़ला क्या वह उन बुतों की मिस्ल हो सकता है जो ऐसे नहीं न उन्हें इल्म है न क़ुदरत आ़जिज़ बेशुऊर हैं (फ़ा93) वह हैं कौन (फ़ा94) और जो उसके इल्म में न हो वह बातिल महज़ है हो ही नहीं सकता क्योंकि उसका **(बक़िया सफ़हा 430 पर)**

قُلْ اِنَّمَآ اُمِرْتُ اَنْ اَعْبُدَ اللّٰهَ وَلَآ اُشْرِكَ بِهٖ ؕ اِلَیْهِ اَدْعُوْا وَ اِلَیْهِ مَاٰبِ ۝ وَكَذٰلِكَ اَنْزَلْنٰهُ حُكْمًا عَرَبِیًّا ؕ وَلَىِٕنِ اتَّبَعْتَ اَهْوَآءَهُمْ بَعْدَ مَا
جَآءَكَ مِنَ الْعِلْمِ ۙ مَا لَكَ مِنَ اللّٰهِ مِنْ وَّلِیٍّ وَّلَا وَاقٍ ۝ وَلَقَدْ اَرْسَلْنَا رُسُلًا مِّنْ قَبْلِكَ وَجَعَلْنَا لَهُمْ اَزْوَاجًا وَّذُرِّیَّةً ؕ وَمَا كَانَ لِرَسُوْلٍ اَنْ
یَّاْتِیَ بِاٰیَةٍ اِلَّا بِاِذْنِ اللّٰهِ ؕ لِكُلِّ اَجَلٍ كِتَابٌ ۝ یَمْحُوا اللّٰهُ مَا یَشَآءُ وَیُثْبِتُ ۖۚ وَعِنْدَهٗۤ اُمُّ الْكِتٰبِ ۝ وَاِنْ مَّا نُرِیَنَّكَ بَعْضَ الَّذِیْ
نَعِدُهُمْ اَوْ نَتَوَفَّیَنَّكَ فَاِنَّمَا عَلَیْكَ الْبَلٰغُ وَعَلَیْنَا الْحِسَابُ ۝ اَوَلَمْ یَرَوْا اَنَّا نَاْتِی الْاَرْضَ نَنْقُصُهَا مِنْ اَطْرَافِهَا ؕ وَاللّٰهُ یَحْكُمُ لَا مُعَقِّبَ لِحُكْمِهٖ ؕ
وَهُوَ سَرِیْعُ الْحِسَابِ ۝ وَقَدْ مَكَرَ الَّذِیْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ فَلِلّٰهِ الْمَكْرُ جَمِیْعًا ؕ یَعْلَمُ مَا تَكْسِبُ كُلُّ نَفْسٍ ؕ وَسَیَعْلَمُ الْكُفّٰرُ لِمَنْ عُقْبَى الدَّارِ ۝ وَیَقُوْلُ
الَّذِیْنَ كَفَرُوْا لَسْتَ مُرْسَلًا ؕ قُلْ كَفٰی بِاللّٰهِ شَهِیْدًۢا بَیْنِیْ وَبَیْنَكُمْ ۙ وَمَنْ عِنْدَهٗ عِلْمُ الْكِتٰبِ ۝

कुल् इन्नमा उमिर्तु अन् अअ्बुदल्ला–ह व ला उश्रि–क बिही इलैहि अद्अू व इलैहि मआब(36) व कज़ालि–क अन्ज़ल्नाहु हुक्मन् अ़–रबिय्यन् व ल–इनित्तबअ्–त अह्वा–अहुम् बअ्–द मा जा–अ–क मिनल् अ़िल्मि मा ल–क मिनल्लाहि मिंव्वलिय्यिंव् व ला वाक़(37)व ल–क़द् अर्सल्ना रुसुलम् मिन् क़ब्लि–क व ज–अ़ल्ना लहुम् अज़्वाजंव् व ज़ुर्रिय्य–तन् व मा का–न लि–रसूलिन् अंय्यअ्ति–य बिआय–तिन् इल्ला बि–इज़्निल्लाहि लिकुल्लि अ–जलिन् किताब(38)यम्हुल्लाहु मा यशाउ व युस्बितु व अ़िन्दहू उम्मुल् किताब(39)व इम्मा नुरियन्न–क बअ्–ज़ल्लज़ी नअ़िदुहुम् औ न–त–वफ़्फ़–यन्न–क फ़–इन्नमा अ़लैकल् बलागु व अ़लैनल् हिसाब(40)अ–व लम् यरौ अन्ना नअ्तिल् अर्–ज़ नन्क़ुसुहा मिन् अत्राफ़िहा वल्लाहु यह्कुमु ला मुअ़क़्क़ि–ब लिहुक्मिही व हु–व सरीअुल् हिसाब(41)व क़द् म–क–रल्लज़ी–न मिन् क़ब्लिहिम् फ़लिल्लाहिल् मक्रु जमीअ़न् यअ्–लमु मा तक्सिबु कुल्लु नफ़्सिन् व स–यअ्–लमुल् कुफ़्फ़ारु लिमन् अ़ुक़्बद्दार(42)व यक़ूलुल्लज़ी–न क–फ़रू लस्–त मुर्सलन् क़ुल् कफ़ा बिल्लाहि शहीदम् बैनी व बै–नकुम् व मन् अ़िन्दहू अ़िल्मुल् किताब(43)

तुम फ़रमाओ मुझे तो यही हुक्म है कि अल्लाह की बन्दगी करूं और उसका शरीक न ठहराऊं मैं उसी की तरफ़ बुलाता हूं और उसी की तरफ़ मुझे फिरना।(36)(फ़ा102)और इसी तरह हमने इसे अरबी फ़ैसला उतारा (फ़ा103)और ऐ सुनने वाले अगर तू उनकी ख़्वाहिशों पर चलेगा(फ़ा104)बाद इसके कि तुझे इल्म आ चुका तो अल्लाह के आगे न तेरा कोई हिमायती होगा न बचाने वाला।(37)(रुकूअ़ 11)और बेशक हमने तुम से पहले रसूल भेजे और उनके लिए बीबियाँ (फ़ा105) और बच्चे किये और किसी रसूल का काम नहीं कि कोई निशानी ले आए मगर अल्लाह के हुक्म से हर वादा की एक लिखत है।(38)(फ़ा106) अल्लाह जो चाहे मिटाता और साबित करता है(फ़ा107) और अस्ल लिखा हुआ उसी के पास है।(39) (फ़ा108)और अगर हमीं तुम्हें दिखा दें कोई वादा (फ़ा109) जो उन्हें दिया जाता है या पहले ही (फ़ा110) अपने पास बुला लें तो बहरहाल तुम पर तो सिर्फ़ पहुंचाना है और हिसाब लेना(40) (फ़ा111) हमारा ज़िम्मा।(फ़ा112)क्या उन्हें नहीं सूझता कि हम हर तरफ़ से उनकी आबादी घटाते आ रहे हैं (फ़ा113) और अल्लाह हुक्म फ़रमाता है उसका हुक्म पीछे डालने वाला कोई नहीं (फ़ा114) और उसे हिसाब लेते देर नहीं लगती।(41) और उनसे अगले (फ़ा115) फ़रेब कर चुके हैं तो सारी ख़ुफ़िया तदबीर का मालिक तो अल्लाह ही है (फ़ा116) जानता है जो कुछ कोई जान कमाए (फ़ा117) और अब जानना चाहते हैं काफ़िर किसे मिलता है पिछला घर।(42) (फ़ा118) और काफ़िर कहते हैं तुम रसूल नहीं तुम फ़रमाओ अल्लाह गवाह काफ़ी है मुझ में और तुम में(फ़ा119)और वह जिसे किताब का इल्म है।(43) (फ़ा120) (रुकूअ़ 12)

(फ़ा102) इसमें क्या बात क़ाबिले इन्कार है क्यों नहीं मानते (फ़ा103) यानी जिस तरह पहले अम्बिया को उनकी ज़बानों में अहकाम दिये थे उसी तरह हम ने यह क़ुरआन ऐ सय्यदे अम्बिया सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम आपकी ज़बान अ़रबी में नाज़िल फ़रमाया क़ुरआने करीम को हिकम इस लिये फ़रमाया कि इसमें अल्लाह की इबादत और उसकी तौहीद और उसके दीन की तरफ़ दावत और तमाम तकालीफ़ व अहकाम और हलाल व हराम का बयान है बाज़ उलमा ने फ़रमाया चूंकि **(बक़िया सफ़हा 430 पर)**

سُوْرَةُ اِبْرٰهِيْمَ مَكِّيَّةٌ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝

الٓرٰ كِتٰبٌ اَنْزَلْنٰهُ اِلَيْكَ لِتُخْرِجَ النَّاسَ مِنَ الظُّلُمٰتِ اِلَى النُّوْرِ ۙ بِاِذْنِ رَبِّهِمْ اِلٰى صِرَاطِ الْعَزِيْزِ الْحَمِيْدِ ۝ اللّٰهِ الَّذِيْ لَهٗ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي
الْاَرْضِ ؕ وَوَيْلٌ لِّلْكٰفِرِيْنَ مِنْ عَذَابٍ شَدِيْدِ ۝ الَّذِيْنَ يَسْتَحِبُّوْنَ الْحَيٰوةَ الدُّنْيَا عَلَى الْاٰخِرَةِ وَيَصُدُّوْنَ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَيَبْغُوْنَهَا عِوَجًا ؕ
اُولٰٓئِكَ فِيْ ضَلٰلٍ بَعِيْدٍ ۝ وَمَآ اَرْسَلْنَا مِنْ رَّسُوْلٍ اِلَّا بِلِسَانِ قَوْمِهٖ لِيُبَيِّنَ لَهُمْ ؕ فَيُضِلُّ اللّٰهُ مَنْ يَّشَآءُ وَيَهْدِيْ مَنْ يَّشَآءُ ؕ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ۝ وَلَقَدْ
اَرْسَلْنَا مُوْسٰى بِاٰيٰتِنَآ اَنْ اَخْرِجْ قَوْمَكَ مِنَ الظُّلُمٰتِ اِلَى النُّوْرِ ۙ وَذَكِّرْهُمْ بِاَيّٰىمِ اللّٰهِ ؕ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّكُلِّ صَبَّارٍ شَكُوْرٍ ۝ وَاِذْ قَالَ مُوْسٰى لِقَوْمِهِ

सूरतु इब्राहीम

(मदनी है इसमें 52 आयतें और 7 रुकूअ़ हैं)

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम

अलिफ़्–लाम्–रा किताबुन् अन्ज़ल्नाहु इलै–क लितुख़्रिजन्ना–स मिनज़्ज़ुलुमाति इलन्नूरि बि–इज़्नि रब्बिहिम् इला सिरातिल् अज़ीज़िल् हमीद(1)अल्लाहिल्लज़ी लहू मा फ़िस्समावाति व मा फ़िल्अर्ज़ि व वैलुल् लिल् काफ़िरी–न मिन् अ़ज़ाबिन् शदीद(2)अल्लज़ी–न यस्तहिब्बूनल् हयातद्दुन्या अ़–लल् आख़ि–रति व यसुद्दू–न अ़न् सबी–लिल्लाहि व यब्ग़ू–नहा अि–व–जन् उलाइ–क फ़ी ज़लालिम् बअ़ीद(3)व मा अर्सल्ना मिर्रसूलिन् इल्ला बिलिसानि क़ौमिही लियुबय्यि–न लहुम् फ़युज़िल्लुल्लाहु मंय्यशाउ व यह्दी मंय्यशाउ व हुवल् अ़ज़ीज़ुल् हकीम(4)व ल–क़द् अर्सल्ना मूसा बिआयातिना अन् अख़्रिज् क़ौ–म–क मिनज़्–ज़ुलुमाति इलन्नूरि व ज़क्किरहुम् बि–अय्यामिल्लाहि इन्–न फ़ी ज़ालि–क लआयातिल् लिकुल्लि सब्बारिन् शकूर(5)व इज़् क़ा–ल मूसा लिक़ौमिहिज़्कुरू

अल्लाह के नाम से शुरू जो निहायत मेहरबान रहमवाला। (फ़ा1)

एक किताब है (फ़ा2) कि हमने तुम्हारी तरफ़ उतारी कि तुम लोगों को (फ़ा3) अंधेरियों से (फ़ा4) उजाले में लाओ (फ़ा5) उनके रब के हुक्म से उसकी राह (फ़ा6) की तरफ़ जो इज़्ज़त वाला सब ख़ूबियों वाला है।(1) अल्लाह के उसी का है जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ ज़मीन में (फ़ा7) और काफ़िरों की ख़राबी है एक सख़्त अ़ज़ाब से(2) जिन्हें आख़िरत से दुनिया की ज़िन्दगी प्यारी है और अल्लाह की राह से रोकते (फ़ा8) और उसमें कजी चाहते हैं वह दूर की गुमराही में हैं।(3) (फ़ा9) और हमने हर रसूल उस की क़ौम ही की ज़बान में भेजा (फ़ा10) कि वह उन्हें साफ़ बताए (फ़ा11) फिर अल्लाह गुमराह करता है जिसे चाहे और वह राह दिखाता है जिसे चाहे और वही इज़्ज़त हिकमत वाला है।(4) और बेशक हमने मूसा को अपनी निशानियाँ (फ़ा12) लेकर भेजा कि अपनी क़ौम को अंधेरियों से (फ़ा13)उजाले में ला और उन्हें अल्लाह के दिन याद दिला (फ़ा14) बेशक उस में निशानियाँ हैं हर बड़े सब्र वाले शुक्र गुज़ार को।(5)और जब मूसा ने अपनी क़ौम से कहा(फ़ा15)याद करो अपने ऊपर

(फ़ा1) सूरह इब्राहीम मक्की है सिवाए आयत अलम् त–र इलल्लज़ी–न बद्दलू निअ़्–मतल्लाहि कुफ़्रन और इसके बाद वाली आयत के, इस सूरत में सात रुकूअ़ 52 आयतें 861 कलिमे 3434 हरफ़ हैं। (फ़ा2) यह क़ुरआन शरीफ़ (फ़ा3) कुफ़्र व ज़लालत व जहल व ग़वायत की (फ़ा4) ईमान के (फ़ा5) ज़ुल्मात को जमा और नूर को वाहिद सीग़े से ज़िक्र फ़रमाने में ईमा है कि दीने हक़ की राह एक है और कुफ़्र व ज़लालत के तरीक़े कसीर (फ़ा6) यानी दीने इस्लाम (फ़ा7) वह सबका ख़ालिक़ व मालिक है सब उसके बन्दे और ममलूक तो उसकी इबादत सब पर लाज़िम और उसके सिवा किसी की इबादत रवा नहीं (फ़ा8) और लोगों को दीने इलाही क़बूल करने से मानेअ़ होते हैं। (फ़ा9) कि हक़ से बहुत दूर हो गए हैं। (फ़ा10) जिसमें वह रसूल मबऊस हुआ ख़्वाह उसकी दावत आ़म हो और दूसरी क़ौमों और दूसरे मुल्कों पर भी उसका इत्तेबाअ़ लाज़िम हो जैसा कि सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की रिसालत तमाम आदमियों और जिन्नों बल्कि सारी ख़ल्क़ की तरफ़ है और आप सब के नबी हैं जैसा कि क़ुरआने करीम में फ़रमाया गया लि–यकू–न लिलआ़–लमी–न नज़ीरा (फ़ा11) और जब **(बक़िया सफ़हा 430 पर)**

اذْكُرُوا نِعْمَةَ اللَّهِ عَلَيْكُمْ إِذْ أَنجَاكُم مِّنْ آلِ فِرْعَوْنَ يَسُومُونَكُمْ سُوءَ الْعَذَابِ وَيُذَبِّحُونَ أَبْنَاءَكُمْ وَيَسْتَحْيُونَ نِسَاءَكُمْ وَفِي ذَٰلِكُم بَلَاءٌ مِّن

رَّبِّكُمْ عَظِيمٌ ۝ وَإِذْ تَأَذَّنَ رَبُّكُمْ لَئِن شَكَرْتُمْ لَأَزِيدَنَّكُمْ وَلَئِن كَفَرْتُمْ إِنَّ عَذَابِي لَشَدِيدٌ ۝ وَقَالَ مُوسَىٰ إِن تَكْفُرُوا أَنتُمْ وَمَن فِي الْأَرْضِ

جَمِيعًا فَإِنَّ اللَّهَ لَغَنِيٌّ حَمِيدٌ ۝ أَلَمْ يَأْتِكُمْ نَبَأُ الَّذِينَ مِن قَبْلِكُمْ قَوْمِ نُوحٍ وَعَادٍ وَثَمُودَ وَالَّذِينَ مِن بَعْدِهِمْ لَا يَعْلَمُهُمْ إِلَّا اللَّهُ

جَاءَتْهُمْ رُسُلُهُم بِالْبَيِّنَاتِ فَرَدُّوا أَيْدِيَهُمْ فِي أَفْوَاهِهِمْ وَقَالُوا إِنَّا كَفَرْنَا بِمَا أُرْسِلْتُم بِهِ وَإِنَّا لَفِي شَكٍّ مِّمَّا تَدْعُونَنَا إِلَيْهِ مُرِيبٍ ۝ قَالَتْ

رُسُلُهُمْ أَفِي اللَّهِ شَكٌّ فَاطِرِ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ يَدْعُوكُمْ لِيَغْفِرَ لَكُم مِّن ذُنُوبِكُمْ وَيُؤَخِّرَكُمْ إِلَىٰ أَجَلٍ مُّسَمًّى قَالُوا إِنْ أَنتُمْ إِلَّا بَشَرٌ مِّثْلُنَا

निअ्—म—तल्लाहि अ़लैकुम् इज् अन्जाकुम् मिन् आलि फ़िरऔ—न यसूमू—नकुम् सूअल् अ़ज़ाबि व युज़ब्बिहू.—न अब्ना—अकुम् व यस्तह्यू—न निसा—अकुम् व फ़ी ज़ालिकुम् बलाउम् मिर्रब्बिकुम् अ़ज़ीम(6)व इज़् त—अज़्ज़—न रब्बुकुम् लइन् श—करतुम् ल—अज़ीदन्नकुम् व लइन् क—फ़रतुम् इन्—न अ़ज़ाबी ल—शदीद(7)व क़ा—ल मूसा इन् तक्फुरू अन्तुम् व मन् फ़िल्अर्ज़ि जमीअ़न् फ़—इन्नल्ला—ह लग़निय्युन् हमीद(8)अ—लम् यअ्तिकुम् न—बउल्लज़ी—न मिन् क़ब्लिकुम् क़ौमि नूहिंव् व आ़दिंव् व समू—द वल्लज़ी—न मिम् बअ्दिहिम् ला यअ्— लमुहुम् इल्लल्लाहु जाअत्हुम् रुसुलुहुम् बिल्बय्यिनाति फ़रद्दू ऐदि—यहुम् फ़ी अफ़्वाहिहिम् व क़ालू इन्ना क—फ़रना बिमा उर्सिल्तुम् बिही व इन्ना लफ़ी शक्किम् मिम्मा तदअू—नना इलैहि मुरीब(9)क़ालत् रुसुलुहुम् अफ़िल्लाहि शक्कुन् फ़ातिरिस्समावाति वल्अर्ज़ि यदअूकुम् लियग्फ़ि—र लकुम् मिन् ज़ुनूबिकुम् व यु—अख़्ख़ि—रकुम् इला अ—जलिम् मुसम्मन् क़ालू इन् अन्तुम् इल्ला ब—शरुम् मिस्लुना

अल्लाह का एहसान जब उसने तुम्हें फ़िरऔन वालों से नजात दी जो तुमको बुरी मार देते थे और तुम्हारे बेटों को ज़बह करते और तुम्हारी बेटियाँ ज़िन्दा रखते और उसमें (फ़ा16) तुम्हारे रब का बड़ा फ़ज़्ल हुआ।(6) (रुकूअ़ 13) और याद करो जब तुम्हारे रब ने सुना दिया कि अगर एहसान मानोगे तो मैं तुम्हें और दूंगा (फ़ा17) और अगर नाशुक्री करो तो मेरा अ़ज़ाब सख़्त है।(7) और मूसा ने कहा अगर तुम और ज़मीन में जितने हैं सब काफ़िर हो जाओ (फ़ा18) तो बेशक अल्लाह बेपरवाह सब ख़ूबियों वाला है।(8) क्या तुम्हें उनकी ख़बरें न आईं जो तुमसे पहले थी नूह की क़ौम और आ़द और समूद और जो उनके बाद हुए उन्हें अल्लाह ही जाने (फ़ा19) उनके रसूल उनके पास रौशन दलीलें लेकर आए (फ़ा20) तो वह अपने हाथ (फ़ा21) अपने मुंह की तरफ़ ले गए (फ़ा22) और बोले हम मुनकिर हैं उसके जो तुम्हारे हाथ भेजा गया और जिस राह (फ़ा23) की तरफ़ हमें बुलाते हो उसमें हमें वह शक है कि बात खुलने नहीं देता।(9) उनके रसूलों ने कहा क्या अल्लाह में शक है (फ़ा24) आसमान और ज़मीन का बनाने वाला तुम्हें बुलाता है (फ़ा25) कि तुम्हारे कुछ गुनाह बख़्शे (फ़ा26) और मौत के मुक़र्रर वक़्त तक तुम्हारी ज़िन्दगी बे अ़ज़ाब काट दे बोले तुम तो हम ही जैसे आदमी हो (फ़ा27)

(फ़ा16) यानी नजात देने में (फ़ा17) इस आयत से मालूम हुआ कि शुक्र से नेअ़्मत ज़्यादा होती है शुक्र की असल यह है कि आदमी नेअ़्मत का तसव्वुर और उसका इज़्हार करे और हक़ीक़ते शुक्र यह है कि मुनइम की नेअ़्मत का उसकी ताज़ीम के साथ एतेराफ़ करे और नफ़्स को उसका ख़ूगर बनाये यहां एक बारीकी है वह यह कि बन्दा जब अल्लाह तआ़ला की नेअ़्मतों और उसके तरह तरह के फ़ज़्लो करम व एहसान का मुताला करता है तो उसके शुक्र में मश्ग़ूल होता है इससे नेअ़्मतें ज़्यादा होती हैं और बन्दे के दिल में अल्लाह तआ़ला की मुहब्बत बढ़ती चली जाती है यह मक़ाम बहुत बरतर है और इससे आला मक़ाम यह है कि मुनइम की मुहब्बत यहां तक ग़ालिब हो कि क़ल्ब को निअ़्मतों की तरफ़ इल्तेफ़ात बाक़ी न रहे यह मक़ाम सिद्दीक़ों का है अल्लाह तआ़ला अपने फ़ज़्ल से हमें शुक्र की तौफ़ीक़ अ़ता फरमाए (फ़ा18) तो तुम ही ज़रर पाओगे और तुम ही निअ़्मतों से महरूम रहोगे (फ़ा19) कितने थे (फ़ा20) और उन्होंने मोअ्जेज़ात दिखाये। (फ़ा21) शिद्दते ग़ैज़ से (फ़ा22) हज़रत इब्ने मसऊद रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने फ़रमाया कि वह ग़ुस्सा में आकर अपने हाथ काटने लगे हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा ने फ़रमाया कि उन्होंने किताबुल्लाह सुनकर तअ़ज्जुब से अपने मुंह पर हाथ रखे ग़रज़ यह कोई न कोई इन्कार की अदा थी। (फ़ा23) **(बक़िया सफ़हा 425 पर)**

تُرِيْدُوْنَ اَنْ تَصُدُّوْنَا عَمَّا كَانَ يَعْبُدُ اٰبَآؤُنَا فَاْتُوْنَا بِسُلْطٰنٍ مُّبِيْنٍ ۝ قَالَتْ لَهُمْ رُسُلُهُمْ اِنْ نَّحْنُ اِلَّا بَشَرٌ مِّثْلُكُمْ وَلٰكِنَّ اللّٰهَ يَمُنُّ عَلٰى مَنْ يَّشَآءُ
مِنْ عِبَادِهٖ ؕ وَمَا كَانَ لَنَآ اَنْ نَّاْتِيَكُمْ بِسُلْطٰنٍ اِلَّا بِاِذْنِ اللّٰهِ ؕ وَعَلَى اللّٰهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُؤْمِنُوْنَ ۝ وَمَا لَنَآ اَلَّا نَتَوَكَّلَ عَلَى اللّٰهِ وَقَدْ هَدٰىنَا سُبُلَنَا ؕ
وَلَنَصْبِرَنَّ عَلٰى مَآ اٰذَيْتُمُوْنَا ؕ وَعَلَى اللّٰهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُتَوَكِّلُوْنَ ۝ وَقَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لِرُسُلِهِمْ لَنُخْرِجَنَّكُمْ مِّنْ اَرْضِنَآ اَوْ لَتَعُوْدُنَّ فِىْ مِلَّتِنَا ؕ
فَاَوْحٰٓى اِلَيْهِمْ رَبُّهُمْ لَنُهْلِكَنَّ الظّٰلِمِيْنَ ۝ ۙ وَلَنُسْكِنَنَّكُمُ الْاَرْضَ مِنْ بَعْدِهِمْ ؕ ذٰلِكَ لِمَنْ خَافَ مَقَامِىْ وَخَافَ وَعِيْدِ ۝ وَاسْتَفْتَحُوْا وَخَابَ كُلُّ
جَبَّارٍ عَنِيْدٍ ۝ ۙ مِّنْ وَّرَآئِهٖ جَهَنَّمُ وَيُسْقٰى مِنْ مَّآءٍ صَدِيْدٍ ۝ ۙ يَّتَجَرَّعُهٗ وَلَا يَكَادُ يُسِيْغُهٗ وَيَاْتِيْهِ الْمَوْتُ مِنْ كُلِّ مَكَانٍ وَّمَا هُوَ بِمَيِّتٍ ؕ وَمِنْ

तुरीदू–न अन् तसुद्दूना अ़म्मा का–न यअ़्बुदु आबाउना फ़अ्तूना बिसुल्तानिम् मुबीन(10)क़ालत् लहुम् रुसुलुहुम् इन् नह़्नु इल्ला ब–शरुम् मिस्लुकुम् व लाकिन्नल्ला–ह यमुन्नु अ़ला मंय्यशाउ मिन् अ़िबादिही व मा का–न लना अन् नअ्ति–यकुम् बिसुल्ता–निन् इल्ला बिइज़्निल्लाहि व अ़–लल्लाहि फ़ल्य–त–वक्कलिल् मुअ्मिनून(11)व मा लना अल्ला न–त–वक्क–ल अ़–लल्लाहि व क़द् हदाना सुबु–लना व ल–नस्बिरन्–न अ़ला मा आज़ैतुमूना व अ़लल्लाहि फ़ल्य–त–वक्–कलिल् मु–तवक्किलून(12)व क़ालल्लज़ी–न क–फ़रू लिरुसुलि–हिम् लनुख़्रिजन्नकुम् मिन् अर्ज़िना औ ल–तअ़ूदुन्–न फ़ी मिल्लतिना फ़औह़ा इलैहिम् रब्बुहुम् लनुह्लि–कन्नज़् ज़ालिमीन(13)व लनुस्कि–नन्नकुमुल् अर्–ज़ मिम् बअ़्दिहिम् ज़ालि–क लिमन् ख़ा–फ़ मक़ामी व ख़ा–फ़ वअ़ीद(14) वस्तफ़्तहू व ख़ा–ब कुल्लु जब्बारिन् अ़नीदिम्(15)मिंव् व[illegible]ही जहन्नमु व युस्क़ा मिम् माइन् सदीदिंय्(16)य–त–जर्रअ़ुहू व ला यकादु युसीग़ुहू व यअ्तीहिल् मौतु मिन् कुल्लि मकानिंव् व मा हु–व बि–मय्यितिन् व मिंव्

तुम चाहते हो कि हमें उससे बाज़ रखो जो हमारे बाप दादा पूजते थे (फ़ा28) अब कोई रौशन सनद हमारे पास ले आओ।(10) (फ़ा29) उनके रसूलों ने उनसे कहा (फ़ा30) हम हैं तो तुम्हारी तरह इन्सान मगर अल्लाह अपने बन्दों में जिस पर चाहे एहसान फ़रमाता है (फ़ा31) और हमारा काम नहीं कि हम तुम्हारे पास कुछ सनद ले आयें मगर अल्लाह के हुक्म से और मुसलमानों को अल्लाह ही पर भरोसा चाहिये।(11) (फ़ा32) और हमें क्या हुआ कि अल्लाह पर भरोसा न करें (फ़ा33) उसने तो हमारी राहें हमें दिखा दीं (फ़ा34) और तुम जो हमें सता रहे हो हम ज़रूर उस पर सब्र करेंगे और भरोसा करने वालों को अल्लाह ही पर भरोसा चाहिये।(12) (रुकूअ़ 14) और काफ़िरों ने अपने रसूलों से कहा हम ज़रूर तुम्हें अपनी ज़मीन (फ़ा35) से निकाल देंगे या तुम हमारे दीन पर हो जाओ तो उन्हें उन के रब ने 'वह़ी' भेजी कि हम ज़रूर ज़ालिमों को हलाक करेंगे।(13) और ज़रूर हम तुम को उनके बाद ज़मीन में बसायेंगे (फ़ा36) यह उसके लिए है (फ़ा37) जो मेरे हुज़ूर खड़े होने से डरे और मैंने जो अ़ज़ाब का हुक्म सुनाया है उससे ख़ौफ़ करे।(14) और उन्होंने (फ़ा38) फ़ैसला मांगा और हर सरकश हटधर्म नामुराद हुआ।(15) (फ़ा39) जहन्नम उसके पीछे लगी और उसे पीप का पानी पिलाया जाएगा।(16) ब–मुश्किल उसका थोड़ा थोड़ा घूंट लेगा और गले से नीचे उतारने की उम्मीद न होगी (फ़ा40) और उसे हर तरफ़ से मौत आएगी और मरेगा नहीं और उसके पीछे

(फ़ा28) यानी बुत परस्ती से। (फ़ा29) जिससे तुम्हारे दावे की सेहत साबित हो यह कलाम उनका एनाद व सरकशी से था और बावजूदे कि अम्बिया आयात ला चुके थे मोअ़जेज़ात दिखा चुके थे फिर भी उन्होंने नई सनद मांगी और पेश किये हुए मोअ़जेज़ात को कलअ़दम क़रार दिया। (फ़ा30) अच्छा यही मानो कि (फ़ा31) और नबुव्वत व रिसालत के साथ बरगुज़ीदा करता है और इस मन्सबे अ़ज़ीम के साथ मुशर्रफ़ फ़रमाता है। (फ़ा32) वही अज़ूदा का शर दफ़अ़ करता और उससे महफ़ूज़ रखता है। (फ़ा33) हम से ऐसा हो नहीं सकता क्योंकि हम जानते हैं कि जो कुछ क़ज़ाए इलाही में है वही होगा हमें उस पर पूरा भरोसा और कामिल एतेमाद है अबू तुराब रज़ियल्लाहु अ़न्हु का क़ौल है कि तवक्कुल बदन को उबूदियत में डालना क़ल्ब को रबूबियत के साथ मुतअ़ल्लिक़ रखना अ़ता पर शुक्र बला पर सब्र का नाम है। (फ़ा34) और रुश्दो नजात के तरीक़े हम पर वाज़ेह फ़रमा दिये और हम जानते हैं कि तमाम उमूर उसके क़ुदरत व इख़्तियार में हैं। (फ़ा35) **(बक़िया सफ़हा 425 पर)**

وَرَآئِهٖ عَذَابٌ غَلِيْظٌ ﴿١٧﴾ مَثَلُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِرَبِّهِمْ اَعْمَالُهُمْ كَرَمَادِ ۣاشْتَدَّتْ بِهِ الرِّيْحُ فِيْ يَوْمٍ عَاصِفٍ ؕ لَا يَقْدِرُوْنَ مِمَّا كَسَبُوْا عَلٰى شَيْءٍ ؕ
ذٰلِكَ هُوَ الضَّلٰلُ الْبَعِيْدُ ﴿١٨﴾ اَلَمْ تَرَ اَنَّ اللّٰهَ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ بِالْحَقِّ ؕ اِنْ يَّشَاْ يُذْهِبْكُمْ وَيَاْتِ بِخَلْقٍ جَدِيْدٍ ﴿١٩﴾ وَّمَا ذٰلِكَ عَلَى اللّٰهِ
بِعَزِيْزٍ ﴿٢٠﴾ وَبَرَزُوْا لِلّٰهِ جَمِيْعًا فَقَالَ الضُّعَفٰٓؤُا لِلَّذِيْنَ اسْتَكْبَرُوْٓا اِنَّا كُنَّا لَكُمْ تَبَعًا فَهَلْ اَنْتُمْ مُّغْنُوْنَ عَنَّا مِنْ عَذَابِ اللّٰهِ مِنْ شَيْءٍ ؕ قَالُوْا لَوْ هَدٰىنَا
اللّٰهُ لَهَدَيْنٰكُمْ ؕ سَوَآءٌ عَلَيْنَآ اَجَزِعْنَآ اَمْ صَبَرْنَا مَا لَنَا مِنْ مَّحِيْصٍ ﴿٢١﴾ وَقَالَ الشَّيْطٰنُ لَمَّا قُضِيَ الْاَمْرُ اِنَّ اللّٰهَ وَعَدَكُمْ وَعْدَ الْحَقِّ وَوَعَدْتُّكُمْ
فَاَخْلَفْتُكُمْ ؕ وَمَا كَانَ لِيَ عَلَيْكُمْ مِّنْ سُلْطٰنٍ اِلَّآ اَنْ دَعَوْتُكُمْ فَاسْتَجَبْتُمْ لِيْ ۚ فَلَا تَلُوْمُوْنِيْ وَلُوْمُوْٓا اَنْفُسَكُمْ ؕ مَآ اَنَا بِمُصْرِخِكُمْ وَمَآ اَنْتُمْ بِمُصْرِخِيَّ ؕ اِنِّيْ

वराइही अ़जाबुन् ग़लीज़(17)म–स़लुल् लज़ी–न क–फ़रू बि–रब्बिहिम् अअ़्मालुहुम् क–रमादि निश्तद्दत् बिहिर्रीहु फ़ी यौमिन् आ़सिफ़िन् ला यक़्दिरू–न मिम्मा क–सबू अ़ला शैइन् ज़ालि–क हुवज़् ज़लालुल् बई़द(18)अलम् त–र अन्नल्ला–ह ख़–लक़स्समावाति वलअर्–ज़ बिल्हक़्क़ि इंय्यशअ् युज़्हिब्कुम् व यअ्ति बि– ख़ल्क़िन् जदीद(19)व मा ज़ालि–क अ़–लल्लाहि बि–अ़ज़ीज़(20)व ब–रज़ू लिल्लाहि जमीअ़न् फ़–क़ालज़्ज़ु–अ़फ़ाउ लिल्लज़ीनस्तक्बरू इन्ना कुन्ना लकुम् त–ब–अ़न् फ़–हल् अन्तुम् मुग़्नू–न अ़न्ना मिन् अ़ज़ाबिल्लाहि मिन् शैइन् क़ालू लौ हदानल्लाहु ल–हदैनाकुम् सवाउन् अ़लैना अ–जज़िअ़्ना अम् स–बर्ना मा लना मिम् महीस़(21)व क़ालश्शैतानु लम्मा क़ुज़ियल् अम्रु इन्नल्ला–ह व–अ़–दकुम् वअ़्दल्हक़्क़ि व वअ़त्तुकुम् फ़–अख़्लफ़्तुकुम् व मा का–न लि–य अ़लैकुम् मिन् सुल्तानिन् इल्ला अन् दऔतुकुम् फ़स्तजब्तुम् ली फ़ला तलूमूनी व लूमू अन्फ़ु–सकुम् मा अना बिमुस्रिख़िकुम् व मा अन्तुम् बिमुस्रिख़िय्–य इन्नी

एक गाढ़ा अ़ज़ाब।(17) (फ़41) अपने रब से मुन्किरों का हाल ऐसा है कि उन के काम हैं (फ़42) जैसे राख कि उस पर हवा का सख़्त झोंका आया आंधी के दिन में (फ़43) सारी कमाई में से कुछ हाथ न लगा यही है दूर की गुमराही।(18) क्या तूने न देखा कि अल्लाह ने आसमान व ज़मीन हक़ के साथ बनाए (फ़44) अगर चाहे तो तुम्हें ले जाए (फ़45) और एक नई मख़्लूक़ ले आए।(19) (फ़46) और यह (फ़47) अल्लाह पर कुछ दुश्वार नहीं।(20) और सब अल्लाह के हुज़ूर (फ़48) एलानिया हाज़िर होंगे तो जो कमज़ोर थे वह (फ़49) बड़ाई वालों से कहेंगे (फ़50) हम तुम्हारे ताबेअ़. थे क्या तुम से हो सकता है कि अल्लाह के अ़ज़ाब में से कुछ हम पर से टाल दो (फ़51) कहेंगे अल्लाह हमें हिदायत करता तो हम तुम्हें करते (फ़52) हम पर एकसा है चाहे बेक़रारी करें या सब्र से रहें हमें कहीं पनाह नहीं।(21) (रुकूअ़. 15) और शैतान कहेगा जब फ़ैसला हो चुकेगा (फ़53) बेशक अल्लाह ने तुमको सच्चा वादा दिया था (फ़54) और मैं ने जो तुम को वादा दिया था (फ़55) वह मैं ने तुम से झूठा किया और मेरा तुम पर कुछ क़ाबू न था (फ़56) मगर यही कि मैंने तुम को (फ़57) बुलाया तुम ने मेरी मान ली (फ़58) तो अब मुझ पर इलज़ाम न रखो (फ़59) ख़ुद अपने ऊपर इलज़ाम रखो न मैं तुम्हारी फ़रियाद को पहुंच सकूं न तुम मेरी फ़रियाद को पहुंच सको वह जो

(फ़41) यानी हर अ़ज़ाब के बाद उससे ज़्यादा शदीद व ग़लीज़ अ़ज़ाब होगा (नऊज़ुबिल्लाहि मिन अ़ज़ाबिन्नारि व मिन् ग़ज़बिल्जब्बार) (फ़42) जिनको वह नेक अ़मल समझते थे जैसे कि मुहताजों की इमदाद मुसाफ़िरों की इआ़नत और बीमारों की ख़बर गीरी वग़ैरह चूंकि ईमान पर मबनी नहीं इस लिए वह सब बेकार हैं और उनकी ऐसी मिसाल है। (फ़43) और वह सब उड़ गई और उसके अजज़ा मुन्तशिर हो गए और उसमें कुछ बाक़ी न रहा यही हाल है कुफ़्फ़ार के आमाल का कि उनके शिर्क व कुफ़्र की वजह से सब बरबाद और बातिल हो गए। (फ़44) इनमें बड़ी हिकमतें हैं और उनकी पैदाइश अ़बस नहीं है (फ़45) मादूम कर दे (फ़46) बजाए तुम्हारे जो फ़रमांबरदार हो उसकी क़ुदरत से यह क्या बईद है जो आसमान व ज़मीन पैदा करने पर क़ादिर है (फ़47) मअ़्दूम करना और मौजूद फ़रमाना (फ़48) रोज़े क़ियामत (फ़49) और दौलतमन्दों और बा-असर लोगों की इत्तेबाअ़. में उन्होंने कुफ़्र इख़्तियार किया था। (फ़50) कि दीनो एतेक़ाद में (फ़51) यह कलाम उनका तौबीख़ व इनाद के तौर पर होगा कि दुनिया में तुम ने गुमराह किया था और राहे हक़ से रोका था और बढ़ बढ़ कर बातें किया करते थे अब वह दावे क्या हुए अब इस अ़ज़ाब में से ज़रा सा तो टालो काफ़िरों के सरदार उसके जवाब **(बक़िया सफ़हा 425 पर)**

كَفَرْتُ بِمَآ اَشْرَكْتُمُوْنِ مِنْ قَبْلُ ۭ اِنَّ الظّٰلِمِيْنَ لَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿٢٢﴾ وَاُدْخِلَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا بِاِذْنِ رَبِّهِمْ ۭ تَحِيَّتُهُمْ فِيْهَا سَلٰمٌ ﴿٢٣﴾ اَلَمْ تَرَ كَيْفَ ضَرَبَ اللّٰهُ مَثَلًا كَلِمَةً طَيِّبَةً كَشَجَرَةٍ طَيِّبَةٍ اَصْلُهَا ثَابِتٌ وَّفَرْعُهَا فِي السَّمَاۗءِ ﴿٢٤﴾ تُؤْتِيْٓ اُكُلَهَا كُلَّ حِيْنٍۢ بِاِذْنِ رَبِّهَا ۭ وَيَضْرِبُ اللّٰهُ الْاَمْثَالَ لِلنَّاسِ لَعَلَّهُمْ يَتَذَكَّرُوْنَ ﴿٢٥﴾ وَمَثَلُ كَلِمَةٍ خَبِيْثَةٍ كَشَجَرَةٍ خَبِيْثَةِۨ اجْتُثَّتْ مِنْ فَوْقِ الْاَرْضِ مَا لَهَا مِنْ قَرَارٍ ﴿٢٦﴾ يُثَبِّتُ اللّٰهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا بِالْقَوْلِ الثَّابِتِ فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَفِي الْاٰخِرَةِ ۚ وَيُضِلُّ اللّٰهُ الظّٰلِمِيْنَ ڐ وَيَفْعَلُ اللّٰهُ مَا يَشَاۗءُ ﴿٢٧﴾ اَلَمْ تَرَ اِلَى الَّذِيْنَ بَدَّلُوْا نِعْمَتَ اللّٰهِ كُفْرًا وَّاَحَلُّوْا قَوْمَهُمْ دَارَ الْبَوَارِ ﴿٢٨﴾ جَهَنَّمَ ۚ يَصْلَوْنَهَا ۭ وَبِئْسَ الْقَرَارُ ﴿٢٩﴾ وَجَعَلُوْا لِلّٰهِ اَنْدَادًا لِّيُضِلُّوْا عَنْ

क–फ़र्तु बिमा अश्–रक्तुमूनि मिन् क़ब्लु इन्नज़्ज़ा–लिमी–न लहुम् अ़ज़ाबुन् अलीम(22)व उद्ख़िलल्लज़ी–न आ–मनू व अ़मिलुस्सालिहाति जन्नातिन् तज्री मिन् तह़्ति–हल् अन्हारु ख़ालिदी–न फ़ीहा बि–इज़्नि रब्बिहिम् तहिय्य–तुहुम् फ़ीहा सलाम(23)अ–लम् त–र कै–फ़ ज़–रबल्लाहु म–स–लन् कलि–म–तन् तय्यि–ब–तन् क–श–ज–रतिन् तय्यि–बतिन् अस्लुहा साबितुंव् व फ़र्अुहा फ़िस्समाइ(24)तुअ्ती उकु–लहा कुल्–ल ह़ीनिम् बिइज़्नि रब्बिहा व यज़्रिबुल्लाहुल् अम्सा–ल लिन्नासि ल–अ़ल्लहुम् य–त–ज़क्करून(25)व म–सलु कलि–मतिन् ख़बी–सतिन् क–श–ज–रतिन् ख़बी–सति निज्तुस्सत् मिन् फ़ौक़िल्अर्ज़ि मा लहा मिन् क़रार(26) युसब्बितुल्लाहुल् लजी–न आ–मनू बिल्क़ौलिस् साबिति फ़िल् ह़या–तिद्दुन्या व फ़िल् आख़ि–रति व युज़िल्लुल्लाहुज़् ज़ालिमी–न व यफ़्–अ़लुल्लाहु मा यशाउ(27)अ–लम् त–र इलल्लज़ी–न बद्–दलू निअ्–म–तल्लाहि कुफ़्रंव् व अ–हल्लू क़ौ–महुम् दारल्बवार(28)जहन्न–म यस्लौ–नहा व बिअ्–सल्क़रार(29)व ज–अ़लू लिल्लाहि अन्दादल् लियुज़िल्लू अ़न्

पहले तुमने मुझे शरीक ठहराया था (फ़ा60) मैं उससे सख़्त बेज़ार हूं बेशक ज़ालिमों के लिए दर्दनाक अ़ज़ाब है।(22) और वह जो ईमान लाए और अच्छे काम किये वह बाग़ों में दाख़िल किये जायेंगे जिन के नीचे नहरें रवाँ हमेशा उनमें रहें अपने रब के हुक्म से उसमें उनके मिलते वक़्त का इकराम सलाम है।(23) (फ़ा61) क्या तुमने न देखा अल्लाह ने कैसी मिसाल बयान फ़रमाई पाकीज़ा बात की (फ़ा62) जैसे पाकीज़ा दरख़्त जिस की जड़ क़ाइम और शाख़ें आसमान में।(24) हर वक़्त अपना फल देता है अपने रब के हुक्म से (फ़ा63) और अल्लाह लोगों के लिए मिसालें बयान फ़रमाता है कि कहीं वह समझे।(25) (फ़ा64) और गन्दी बात (फ़ा65) की मिसाल जैसे एक गन्दा पेड़ (फ़ा66) कि ज़मीन के ऊपर से काट दिया गया अब उसे कोई क़ियाम नहीं।(26) (फ़ा67) अल्लाह साबित रखता है ईमान वालों को हक़ बात (फ़ा68) पर दुनिया की ज़िन्दगी में (फ़ा69) और आख़िरत में (फ़ा70) और अल्लाह ज़ालिमों को गुमराह करता है (फ़ा71) और अल्लाह जो चाहे करे।(27) (रुकूअ़ 16) क्या तुम ने उन्हें न देखा जिन्होंने अल्लाह की निअ़मत नाशुक्री से बदल दी (फ़ा72) और अपनी क़ौम को तबाही के घर ला उतारा।(28) वह जो दोज़ख़ है उसके अन्दर जायेंगे और क्या ही बुरी ठहरने की जगह।(29) और अल्लाह के लिए बराबर वाले ठहराए (फ़ा73) कि उसकी राह से

(फ़ा60) अल्लाह का उसकी इबादत में (ख़ाज़िन) (फ़ा61) अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से और फ़रिश्तों की तरफ़ से और आपस में एक दूसरे की तरफ़ से (फ़ा62) यानी कलिमए तौहीद की (फ़ा63) ऐसे ही कलिमए ईमान है कि उसकी जड़ क़ल्बे मोमिन की ज़मीन में साबित और मज़बूत होती है और उसकी शाख़ें यानी अ़मल आसमान में पहुंचते हैं और उसके समरात बरकत व सवाब हर वक़्त हासिल होते हैं हदीस शरीफ़ में है सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने असहाबे किराम से फ़रमाया वह दरख़्त बताओ जो मोमिन के मिस्ल है उसके पत्ते नहीं गिरते और वह हर वक़्त फल देता है (यानी जिस तरह मोमिन के अमल अकारत नहीं होते और उसकी बरकतें हर वक़्त हासिल रहती हैं) सहाबा ने फ़िक्रें कीं कि ऐसा कौन दरख़्त है जिसके पत्ते न गिरते हों और उसका फल हर वक़्त मौजूद रहता हो चुनान्चे जंगल के दरख़्तों के नाम लिए जब ऐसा कोई दरख़्त ख़्याल में न आया तो हुज़ूर से दरियाफ़्त किया फ़रमाया वह खजूर का दरख़्त है। हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु तआ़ला **(बक़िया सफ़हा 431 पर)**

سَبِيلِهٖ ۚ قُلْ تَمَتَّعُوْا فَاِنَّ مَصِيْرَكُمْ اِلَى النَّارِ ﴿۳۰﴾ قُلْ لِّعِبَادِيَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا يُقِيْمُوا الصَّلٰوةَ وَيُنْفِقُوْا مِمَّا رَزَقْنٰهُمْ سِرًّا وَّعَلَانِيَةً مِّنْ قَبْلِ اَنْ يَّاْتِيَ
يَوْمٌ لَّا بَيْعٌ فِيْهِ وَلَا خِلٰلٌ ﴿۳۱﴾ اَللّٰهُ الَّذِيْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ وَاَنْزَلَ مِنَ السَّمَآءِ مَآءً فَاَخْرَجَ بِهٖ مِنَ الثَّمَرٰتِ رِزْقًا لَّكُمْ ۚ وَسَخَّرَ لَكُمُ الْفُلْكَ
لِتَجْرِيَ فِي الْبَحْرِ بِاَمْرِهٖ ۚ وَسَخَّرَ لَكُمُ الْاَنْهٰرَ ﴿۳۲﴾ وَسَخَّرَ لَكُمُ الشَّمْسَ وَالْقَمَرَ دَآئِبَيْنِ ۚ وَسَخَّرَ لَكُمُ الَّيْلَ وَالنَّهَارَ ﴿۳۳﴾ وَاٰتٰىكُمْ مِّنْ كُلِّ مَا سَاَلْتُمُوْهُ ۚ وَاِنْ
تَعُدُّوْا نِعْمَتَ اللّٰهِ لَا تُحْصُوْهَا ۚ اِنَّ الْاِنْسَانَ لَظَلُوْمٌ كَفَّارٌ ﴿۳۴﴾ وَاِذْ قَالَ اِبْرٰهِيْمُ رَبِّ اجْعَلْ هٰذَا الْبَلَدَ اٰمِنًا وَّاجْنُبْنِيْ وَبَنِيَّ اَنْ نَّعْبُدَ الْاَصْنَامَ ﴿۳۵﴾ رَبِّ
اِنَّهُنَّ اَضْلَلْنَ كَثِيْرًا مِّنَ النَّاسِ ۚ فَمَنْ تَبِعَنِيْ فَاِنَّهٗ مِنِّيْ ۚ وَمَنْ عَصَانِيْ فَاِنَّكَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿۳۶﴾ رَبَّنَآ اِنِّيْۤ اَسْكَنْتُ مِنْ ذُرِّيَّتِيْ بِوَادٍ غَيْرِ ذِيْ زَرْعٍ

सबीलिही कुल् त–मत्तअू फ़–इन्–न मसी–रकुम् इलन्नार(30)कुल् लि–अिबादि–यल् लज़ी–न आ–मनू युक़ीमुस्सला–त व युन्फ़िक़ू मिम्मा र–ज़क़्नाहुम् सिर्–रंव् व अलानि–य–तम् मिन् क़ब्लि अंय्यअति–य यौमुल् ला बैअुन् फ़ीहि व ला ख़िलाल(31)अल्लाहुल् लज़ी ख़–ल– क़स्समावाति वलअर्–ज़ व अन्ज़–ल मिनस्समाइ माअन् फ़–अख़्र–ज बिही मिनस् स–मराति रिज़्क़ल्लकुम् व सख़्ख़–र लकु–मुल्फ़ुल्–क लि–तज्रि–य फ़िल्बह्रि बि–अम्रिही व सख़्ख़–र लकुमुल् अन्हार(32)व सख़्ख़–र लकु–मुश्शम्स वल्क़–म–र दाइबैनि व सख़्ख़–र लकुमुल् लै–ल वन्नहार(33)व आताकुम् मिन् कुल्लि मा स–अल्तुमूहु व इन् तअुद्दू निअ्म–तल्लाहि ला तुह्सूहा इन्नल् इन्सा–न ल–ज़लूमुन् कफ़्फ़ार(34)व इज़् क़ा–ल इब्राहीमु रब्बिज् अ़ल् हाज़ल् ब–ल–द आमिनंव् वज्नुब्नी व बनिय्–य अन् नअ्बुदल् अस्नाम(35)रब्बि इन्नहुन्–न अज़्लल्–न कसीरम् मिनन्नासि फ़–मन् तबि–अनी फ़–इन्नहू मिन्नी व मन् असानी फ़इन्न–क ग़फ़ूरुर्रहीम(36)रब्बना इन्नी अस्कन्तु मिन् ज़ुर्रिय्यती बिवादिन् ग़ैरि ज़ी ज़रअिन्

बहकावें तुम फ़रमाओ (फ़ा74) कुछ बरत लो कि तुम्हारा अंजाम आग है।(30) (फ़ा75) मेरे उन बन्दों से फ़रमाओ जो ईमान लाए कि नमाज़ क़ाइम रखें और हमारे दिये में से कुछ हमारी राह में छुपे और ज़ाहिर ख़र्च करें उस दिन के आने से पहले जिसमें न सौदागरी होगी (फ़ा76) न याराना(31) (फ़ा77) अल्लाह है जिसने आसमान और ज़मीन बनाए और आसमान से पानी उतारा तो उससे कुछ फल तुम्हारे खाने को पैदा किये और तुम्हारे लिए कश्ती को मुसख़्ख़र किया कि उसके हुक्म से दरिया में चले (फ़ा78) और तुम्हारे लिए नदियाँ मुसख़्ख़र कीं(32) (फ़ा79) और तुम्हारे लिए सूरज और चाँद मुसख़्ख़र किये जो बराबर चल रहे हैं (फ़ा80) और तुम्हारे लिए रात और दिन मुसख़्ख़र किये।(33)(फ़ा81)और तुम्हें बहुत कुछ मुंह मांगा दिया और अगर अल्लाह की निअ्.मतें गिनो तो शुमार न कर सकोगे बेशक आदमी बड़ा ज़ालिम बड़ा नाशुक्रा है।(34) (फ़ा82) (रुकूअ़ 17) और याद करो जब इब्राहीम ने अ़र्ज़ की ऐ मेरे रब इस शहर (फ़ा83) को अमान वाला कर दे (फ़ा84) और मुझे और मेरे बेटों को बुतों के पूजने से बचा।(35) (फ़ा85) ऐ मेरे रब बेशक बुतों ने बहुत लोग बहका दिये (फ़ा86) तो जिसने मेरा साथ दिया (फ़ा87) वह तो मेरा है और जिसने मेरा कहा न माना तो बेशक तू बख़्शने वाला मेहरबान है।(36) (फ़ा88) ऐ मेरे रब मैंने अपनी कुछ औलाद एक नाले में बसाई जिसमें खेती नहीं होती

(फ़ा74) ऐ मुस्तफ़ा (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) उन कुफ़्फ़ार से कि थोड़े दिन दुनिया की ख़्वाहिशात को (फ़ा75) आख़िरत में। (फ़ा76) कि ख़रीदो फ़रोख़्त यानी माली मुआवज़े व फ़िदये ही से कुछ नफ़ा उठाया जासके। (फ़ा77) कि उससे नफ़ा उठाया जाये बल्कि बहुत से दोस्त एक दूसरे के दुश्मन हो जायेंगे इस आयत में नफ़्सानी व तबई दोस्ती की नफ़ी है और ईमानी दोस्ती जो मुहब्बते इलाही के सबब से हो वह बाक़ी रहेगी जैसा कि सूरह ज़ुख़रुफ़ में फ़रमाया अल्–अख़िल्लाउ यौ–मएज़िम् बअ्ज़ुहुम् लिबअ्ज़िन् अ़दुव्वुन् इल्ललमुत्तक़ीन (फ़ा78) और उससे तुम फ़ाइदे उठाओ (फ़ा79) कि उन से काम लो (फ़ा80) न थकें न रुकें तुम उनसे नफ़ा उठाते हो (फ़ा81) आराम और काम के लिए (फ़ा82) कि कुफ़्र व मअ्.सियत का इरतेकाब करके अपने ऊपर ज़ुल्म करता है और अपने रब की निअ्मत और उसके एहसान का हक़ नहीं मानता हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा ने फ़रमाया कि इन्सान से यहां अबू जहल मुराद है ज़जाज का क़ौल है कि इन्सान इस्मे जिन्स है **(बक़िया सफ़हा 425 पर)**

عِنْدَ بَيْتِكَ الْمُحَرَّمِ رَبَّنَا لِيُقِيمُوا الصَّلٰوةَ فَاجْعَلْ اَفْـِٕدَةً مِّنَ النَّاسِ تَهْوِيْ اِلَيْهِمْ وَارْزُقْهُمْ مِّنَ الثَّمَرٰتِ لَعَلَّهُمْ يَشْكُرُوْنَ ۝ رَبَّنَآ اِنَّكَ تَعْلَمُ

مَا نُخْفِيْ وَمَا نُعْلِنُ وَمَا يَخْفٰى عَلَى اللّٰهِ مِنْ شَيْءٍ فِي الْاَرْضِ وَلَا فِي السَّمَآءِ ۝ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِيْ وَهَبَ لِيْ عَلَى الْكِبَرِ اِسْمٰعِيْلَ وَاِسْحٰقَ اِنَّ رَبِّيْ

لَسَمِيْعُ الدُّعَآءِ ۝ رَبِّ اجْعَلْنِيْ مُقِيْمَ الصَّلٰوةِ وَمِنْ ذُرِّيَّتِيْ رَبَّنَا وَتَقَبَّلْ دُعَآءِ ۝ رَبَّنَا اغْفِرْ لِيْ وَلِوَالِدَيَّ وَلِلْمُؤْمِنِيْنَ يَوْمَ يَقُوْمُ الْحِسَابُ ۝

وَلَا تَحْسَبَنَّ اللّٰهَ غَافِلًا عَمَّا يَعْمَلُ الظّٰلِمُوْنَ اِنَّمَا يُؤَخِّرُهُمْ لِيَوْمٍ تَشْخَصُ فِيْهِ الْاَبْصَارُ ۝ مُهْطِعِيْنَ مُقْنِعِيْ رُءُوْسِهِمْ لَا يَرْتَدُّ اِلَيْهِمْ طَرْفُهُمْ وَاَفْـِٕدَتُهُمْ

هَوَآءٌ ۝ وَاَنْذِرِ النَّاسَ يَوْمَ يَاْتِيْهِمُ الْعَذَابُ فَيَقُوْلُ الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا رَبَّنَآ اَخِّرْنَآ اِلٰٓى اَجَلٍ قَرِيْبٍ نُّجِبْ دَعْوَتَكَ وَنَتَّبِعِ الرُّسُلَ اَوَلَمْ تَكُوْنُوْٓا

अ़िन्–द बैतिकल् मुहर्रमि रब्बना लियुक़ी–मुस्सला–त फ़ज्–अ़ल् अफ़्इ–द–तम् मिनन्नासि तह्वी इलैहिम् वर्–ज़ुक़्हुम् मि–नस् स–मराति ल–अ़ल्लहुम् यश्कुरून(37)रब्बना इन्न–क तअ़्–लमु मा नुख़्फ़ी व मा नुअ़्लिनु व मा यख़्फ़ा अ़–लल्लाहि मिन् शैइन् फ़िल्अर्ज़ि व ला फ़िस्समाइ(38) अल्हम्दु लिल्ला–हिल्लज़ी व–ह–ब ली अ़–लल्कि–बरि इस्माओ़–ल व इस्हा–क़ इन्–न रब्बी ल–समीअ़ुद् दुआ़इ(39)रब्बिज्–अ़ल्नी मुक़ीमस्सलाति व मिन् ज़ुर्रिय्यती रब्बना व त–क़ब्बल् दुआ़इ(40)रब्बनग्–फ़िर्ली व लिवालिदय्–य व लिल्मुअ़्मिनी–न यौ–म यक़ूमुल् हिसाब(41)व ला तह्स–बन्नल्ला–ह ग़ाफ़िलन् अ़म्मा यअ़्–मलुज़्ज़ालिमू–न इन्नमा युअख़्ख़िरुहुम् लियौमिन् तश्ख़सु फ़ीहिल् अब्सार(42)मुह्तिओ़–न मुक़्निओ़ रुऊसिहिम् ला यर्तद्दु इलैहिम् तर्फ़ुहुम् व अफ़्इ–दतुहुम् हवाअ(43)व अन्ज़िरिन्ना–स यौ–म यअ्तीहिमुल् अ़ज़ाबु फ़–यक़ूलुल् लज़ी–न ज़–लमू रब्बना अख़्ख़िर्ना इला अ–जलिन् क़रीबिन् नुजिब् दअ़्–व–त–क व नत्तबिअ़िर् रुसु–ल अ–व लम् तकूनू

तेरे हुरमत वाले घर के पास (फ़ा89) ऐ हमारे रब इस लिए कि वह (फ़ा90) नमाज़ क़ाइम रखें तो तू लोगों के कुछ दिल उनकी तरफ़ माइल कर दे (फ़ा91) और उन्हें कुछ फल खाने को दे (फ़ा92) शायद वह एहसान मानें।(37) ऐ हमारे रब तू जानता है जो हम छुपाते हैं और जो ज़ाहिर करते और अल्लाह पर कुछ छुपा नहीं ज़मीन में और न आसमान में।(38) (फ़ा93) सब ख़ूबियाँ अल्लाह को जिसने मुझे बुढ़ापे में इसमाईल व इसहाक़ दिये बेशक मेरा रब दुआ़ सुनने वाला है।(39) ऐ मेरे रब मुझे नमाज़ का क़ाइम करने वाला रख और कुछ मेरी औलाद को (फ़ा94) ऐ हमारे रब और मेरी दुआ़ सुन ले।(40) ऐ हमारे रब मुझे बख़्श दे और मेरे माँ बाप को (फ़ा95) और सब मुसलमानों को जिस दिन हिसाब क़ायम होगा।(41) (रुकूअ़ 18) और हरगिज़ अल्लाह को बे ख़बर न जानना ज़ालिमों के काम से (फ़ा96) उन्हें ढील नहीं दे रहा है मगर ऐसे दिन के लिए जिसमें (फ़ा97) आंखें खुली की खुली रह जायेंगी।(42) बे तहाशा दौड़ते निकलेंगे (फ़ा98) अपने सर उठाए हुए कि उनकी पलक उनकी तरफ़ लौटती नहीं (फ़ा99) और उनके दिलों में कुछ सकत न होगी।(43) (फ़ा100) और लोगों को उस दिन से डराओ (फ़ा101) जब उन पर अ़ज़ाब आएगा तो ज़ालिम (फ़ा102) कहेंगे ऐ हमारे रब थोड़ी देर हमें (फ़ा103) मोहलत दे कि हम तेरा बुलाना मानें (फ़ा104) और रसूलों की ग़ुलामी करें (फ़ा105) तो क्या तुम पहले (फ़ा106)

(फ़ा89) यानी उस वादी में जहां अब मक्का मुकर्रमा है और ज़ुर्रियत से मुराद हज़रत इसमाईल अ़लैहिस्सलाम हैं आप सरज़मीने शाम में हाजरा के बतने पाक से पैदा हुए। हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलातु वस्सलाम की बीवी हज़रत सारा के कोई औलाद न थी इस वज़ह से उन्हें रश्क पैदा हुआ और उन्होंने हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलातु वस्सलाम से कहा कि आप हाजरा और उनके बेटे को मेरे पास से जुदा कर दीजिये हिकमते इलाही ने यह एक सबब पैदा किया था चुनान्चे वही आई कि आप हज़रत हाजरा व इसमाईल को उस सरज़मीन में ले जायें (जहां अब मक्का मुकर्रमा है) आप उन दोनों को अपने साथ बुर्राक़ पर सवार करके शाम से सरज़मीने हरम में लाये और कअ़्बा मुक़द्दसा के नज़दीक उतारा यहां उस वक़्त न कोई आबादी थी न कोई चश्मा न पानी एक तोशादान में खजूरें और एक बर्तन में पानी उन्हें देकर आप वापस हुए और मुड़ कर उनकी तरफ़ न देखा हज़रत हाजरा वालदा इसमाईल ने अर्ज़ किया कि आप कहां जाते हैं और हमें इस वादी में बे अनीस व रफ़ीक़ छोड़े जाते हैं लेकिन आपने उसका कुछ जवाब न दिया और उनकी तरफ़ इल्तेफ़ात न फ़रमाया। हज़रत हाजरा ने चन्द **(बक़िया सफ़हा 431 पर)**

أَقْسَمْتُم مِّن قَبْلُ مَا لَكُم مِّن زَوَالٍ ﴿٤٤﴾ وَسَكَنتُمْ فِي مَسَاكِنِ الَّذِينَ ظَلَمُوا أَنفُسَهُمْ وَتَبَيَّنَ لَكُمْ كَيْفَ فَعَلْنَا بِهِمْ وَضَرَبْنَا لَكُمُ الْأَمْثَالَ ﴿٤٥﴾ وَقَدْ مَكَرُوا
مَكْرَهُمْ وَعِندَ اللَّهِ مَكْرُهُمْ وَإِن كَانَ مَكْرُهُمْ لِتَزُولَ مِنْهُ الْجِبَالُ ﴿٤٦﴾ فَلَا تَحْسَبَنَّ اللَّهَ مُخْلِفَ وَعْدِهِ رُسُلَهُ إِنَّ اللَّهَ عَزِيزٌ ذُو انتِقَامٍ ﴿٤٧﴾ يَوْمَ
تُبَدَّلُ الْأَرْضُ غَيْرَ الْأَرْضِ وَالسَّمَاوَاتُ وَبَرَزُوا لِلَّهِ الْوَاحِدِ الْقَهَّارِ ﴿٤٨﴾ وَتَرَى الْمُجْرِمِينَ يَوْمَئِذٍ مُّقَرَّنِينَ فِي الْأَصْفَادِ ﴿٤٩﴾ سَرَابِيلُهُم مِّن قَطِرَانٍ
وَتَغْشَىٰ وُجُوهَهُمُ النَّارُ ﴿٥٠﴾ لِيَجْزِيَ اللَّهُ كُلَّ نَفْسٍ مَّا كَسَبَتْ إِنَّ اللَّهَ سَرِيعُ الْحِسَابِ ﴿٥١﴾ هَٰذَا بَلَاغٌ لِّلنَّاسِ وَلِيُنذَرُوا بِهِ وَلِيَعْلَمُوا أَنَّمَا
هُوَ إِلَٰهٌ وَاحِدٌ وَلِيَذَّكَّرَ أُولُو الْأَلْبَابِ ﴿٥٢﴾

अक़सम्तुम् मिन् क़ब्लु मा लकुम् मिन् ज़वालिंव्(44)व स–कन्तुम् फ़ी मसाकिनिल्लज़ी–न ज़–लमू अन्फ़ु–सहुम् व त–बय्य–न लकुम् कै–फ़ फ़–अ़ल्ना बिहिम् व ज़–रब्ना लकुमुल् अम्साल(45)व क़द म–करू मक्रहुम् व अ़िन्दल्लाहि मक्रुहुम् व इन् का–न मक्रुहुम् लि–तज़ू–ल मिन्हुल् जिबाल(46) फ़ला तह्–स–बन्नल्ला–ह मुख़्लि–फ़ वअ़्दिही रुसु–लहू इन्नल्ला–ह अ़ज़ीज़ुन् ज़ुन्तिक़ाम(47)यौ–म तुबद्–दलुल् अर्ज़ु ग़ैरल्अर्ज़ि वस्समावातु व ब–रज़ू लिल्लाहिल् वाहिदिल् क़ह्हार(48)व त–रल्मुज्रिमी–न यौ–मइज़िम् मुक़र्रनी–न फ़िल्–अस्फ़ाद(49)सराबी–लहुम् मिन् क़तिरानिंव् व तग़्शा वुजू–हहुमुन्नार(50)लि–यज्ज़ि–यल्लाहु कुल्–ल नफ़्सिम् मा क–स–बत् इन्नल्ला–ह सरीअ़ुल् हिसाब(51)हाज़ा बलाग़ुल् लिन्नासि व लियुन्ज़रू बिही व लियअ़्–लमू अन्नमा हु–व इलाहुंव् वाहिदुंव् व लि–यज़्ज़क्क–र उलुल् अल्बाब(52)

क़सम न खा चुके थे कि हमें दुनिया से कहीं हट कर जाना नहीं।(44) (फ़ा107) और तुम उनके घरों में बसे जिन्होंने अपना बुरा किया था (फ़ा108) और तुम पर ख़ूब खुल गया हमने उनके साथ कैसा किया (फ़ा109) और हमने तुम्हें मिसालें देदे कर बता दिया।(45) (फ़ा110) और बेशक वह (फ़ा111) अपना सा दांव चले (फ़ा112) और उनका दांव अल्लाह के क़ाबू में है और उनका दाँव कुछ ऐसा न था जिससे यह पहाड़ टल जायें।(46) (फ़ा113) तो हरगिज़ ख़्याल न करना कि अल्लाह अपने रसूलों से वादा ख़िलाफ़ करेगा (फ़ा114) बेशक अल्लाह ग़ालिब है बदला लेने वाला।(47) जिस दिन (फ़ा115) बदल दी जाएगी ज़मीन इस ज़मीन के सिवा और आसमान(फ़ा116)और लोग सब निकल खड़े होंगे (फ़ा117) एक अल्लाह के सामने जो सब पर ग़ालिब है।(48) और उस दिन तुम मुजरिमों को (फ़ा118) देखोगे कि बेड़ियों में एक दूसरे से जुड़े होंगे।(49) (फ़ा119) उनके कुर्ते राल के होंगे (फ़ा120) और उन के चेहरे आग ढांप लेगी।(50) इस लिए कि अल्लाह हर जान को उसकी कमाई का बदला दे बेशक अल्लाह को हिसाब करते कुछ देर नहीं लगती।(51) यह (फ़ा121) लोगों को हुक्म पहुंचाना है और इस लिए कि वह इस से डराए जायें और इस लिए कि वह जान लें कि वह एक ही मअ़्बूद है (फ़ा122) और इस लिए कि अक़्ल वाले नसीहत मानें।(52) (रुकूअ़ 19)

(फ़ा107) और क्या तुम ने बअ़्स व आख़िरत का इन्कार न किया था। (फ़ा108) कुफ़्र व मआसी का इरतेकाब करके जैसे कि क़ौमे नूह व आ़द व समूद वग़ैरह (फ़ा109) और तुम ने अपनी आंखों से उनके मनाज़िल में अ़ज़ाब के आसार और निशान देखे और तुम्हें उनकी हलाकत व बरबादी की ख़बरें मिलीं यह सब कुछ देख कर और जान कर तुम ने इबरत न हासिल की और तुम कुफ़्र से बाज़ न आये (फ़ा110) ताकि तुम तदबीर करो और समझो और अ़ज़ाब व हलाक से अपने आपको बचाओ (फ़ा111) इस्लाम के मिटाने और कुफ़्र की ताईद करने के लिए नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के साथ (फ़ा112) कि उन्होंने सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के क़त्ल करने या क़ैद करने या निकाल देने का इरादा किया। (फ़ा113) यानी आयाते इलाही और अहकामे शरअ़े मुस्तफ़ाई जो अपने क़ुव्वत व सबात में ब-मन्ज़िला मज़बूत पहाड़ों के हैं मुहाल है कि काफ़िरों के मक्र और उनकी हीला अंगेज़ियों से अपनी जगह से टल सकें (फ़ा114) यह तो मुमकिन ही नहीं वह ज़रूर वादा पूरा करेगा और अपने रसूल की नुसरत फ़रमाएगा उनके दीन को ग़ालिब करेगा उनके दुश्मनों को हलाक करेगा (फ़ा115) उस दिन से रोज़े क़ियामत मुराद है (फ़ा116) ज़मीन व आसमान की तब्दीली में मुफ़स्सिरीन के दो क़ौल हैं एक यह कि उन के औसाफ़ बदल दिये जायेंगे मसलन ज़मीन एक सतह हो जाएगी न उस पर पहाड़ बाक़ी रहेंगे न बुलन्द टीले न गहरे ग़ार न दरख़्त न इमारत न किसी बस्ती और अक़लीम का निशान और आसमान पर कोई सितारा न रहेगा और आफ़ताब माहताब की रौशनियां (बक़िया सफ़हा 432 पर)

سُوْرَۃُ الْحِجْرِ مَکِّیَّۃٌ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ○

الٓرٰ تِلْكَ اٰیٰتُ الْكِتٰبِ وَ قُرْاٰنٍ مُّبِیْنٍ ○

सूरतुल हिज्र

(मदनी है इसमें 99 आयतें और 7 रुकूअ़ हैं)

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम

अलिफ़–लाम–रा तिल–क आयातुल किताबि व कुरआनिम मुबीन(1)

यह आयतें हैं किताब और रौशन कुरआन की (1)

(फ़ा1) सूरह हिज्र मक्की है इसमें छः रुकूअ़ 99 आयतें 654 कलिमे 2760 हरफ़ हैं।

(बक़िया सफ़हा 418 का) यानी तौहीद व ईमान (फ़ा24) क्या उसकी तौहीद में तरद्दुद है यह कैसे हो सकता है उसकी दलीलें तो निहायत ज़ाहिर हैं (फ़ा25) अपनी ताअ़त व ईमान की तरफ़ (फ़ा26) जब तुम ईमान ले आओ इस लिए कि इस्लाम लाने के बाद पहले के गुनाह बख़्श दिये जाते हैं सिवाए हुकूके इबाद के और इसी लिए कुछ गुनाह फ़रमाया। (फ़ा27) ज़ाहिर में हमें अपनी मिस्ल मालूम होते हो फिर कैसे माना जाये कि हम तो नबी न हुए और तुम्हें यह फ़ज़ीलत मिल गई

(बक़िया सफ़हा 419 का) यानी अपने दयार (फ़ा36) हदीस शरीफ़ में है जो अपने हमसाए को ईज़ा देता है अल्लाह उसके घर का उसी का हमसाए को मालिक बनाता है (फ़ा37) क़ियामत के दिन (फ़ा38) यानी अम्बिया ने अल्लाह तआ़ला से मदद तलब की या उम्मतों ने अपने और रसूलों के दर्मियान अल्लाह तआ़ला से (फ़ा39) माना यह हैं कि अम्बिया की नुसरत फ़रमाई गई और उन्हें फ़तह दी गई और हक़ के मुआ़निद सरकश काफ़िर नामुराद हुए और उनके ख़लास की कोई सबील न रही (फ़ा40) हदीस शरीफ़ में है कि जहन्नमी को पीप का पानी पिलाया जाएगा जब वह मुंह के पास आएगा तो उसको बहुत नागवार मालूम होगा जब और क़रीब होगा तो उससे चेहरा भुन जाएगा और सर तक की खाल जल कर गिर पड़ेगी जब पियेगा तो आंतें कट कर निकल जायेंगी (अल्लाह की पनाह)

(बक़िया सफ़हा 420 का) में (फ़ा52) जब खुद ही गुमराह हो रहे थे तो तुम्हें क्या राह दिखाते अब ख़लासी की कोई राह नहीं न काफ़िरों के लिए शफ़ाअ़त आओ रोयें और फ़रियाद करें पांच सौ बरस फ़रियाद व ज़ारी करेंगे और कुछ काम न आएगी तो कहेंगे कि अब सब्र कर के देखो शायद्र इससे कुछ काम निकले पांच सौ बरस सब्र करेंगे वह भी काम न आएगा तो कहेंगे कि। (फ़ा53) और हिसाब से फ़राग़त हो जाएगी जन्नती जन्नत का और दोज़ख़ी दोज़ख़ का हुक्म पाकर जन्नत व दोज़ख़ में दाख़िल हो जायेंगे और दोज़ख़ी शैतान पर मलामत करेंगे और उसको बुरा कहेंगे कि बदनसीब तू ने हमें गुमराह करके इस मुसीबत में गिरिफ़्तार किया तो वह जवाब देगा (फ़ा54) कि मरने के बाद फिर उठना है और आख़िरत में नेकियों और बदियों का बदला मिलेगा अल्लाह का वादा सच्चा था सच्चा हुआ (फ़ा55) कि न मरने के बाद उठना न जज़ा न जन्नत न दोज़ख़ (फ़ा56) न मैंने तुम्हें अपने इत्तेबाअ़ पर मजबूर किया था या यह कि मैंने अपने वादे पर तुम्हारे सामने कोई हुज्जत व बुरहान पेश नहीं की थी (फ़ा57) वसवसे डाल कर गुमराही की तरफ़ (फ़ा58) और बग़ैर हुज्जत व बुरहान के तुम मेरे बहकाये में आगए बावजूदेकि अल्लाह तआ़ला ने तुम से वादा फ़रमा दिया था कि शैतान के बहकावे में न आना और उसके रसूल उसकी तरफ़ से दलाइल लेकर तुम्हारे पास आये और उन्होंने हुज्जतें पेश कीं और बुरहानें क़ाइम कीं तो तुम पर खुद लाज़िम था कि तुम उनका इत्तेबाअ़ करते और उनके रौशन दलाइल और ज़ाहिर मोअ़जेज़ात से मुंह न फेरते और मेरी बात न मानते और मेरी तरफ़ इल्तेफ़ात न करते मगर तुम ने ऐसा न किया (फ़ा59) क्योंकि मैं दुश्मन हूं और मेरी दुश्मनी ज़ाहिर है और दुश्मन से ख़ैर ख़्वाही की उम्मीद रखना ही हिमाक़त है तो

(बक़िया सफ़हा 422 का) और यहां इससे काफ़िर मुराद है (फ़ा83) मक्कए मुकर्रमा (फ़ा84) कि क़ुर्बे क़ियामत दुनिया के वीरान होने के वक़्त तक यह वीरानी से महफ़ूज़ रहे या उस शहर वाले अमन में हों। हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलातु वस्सलाम की यह दुआ़ मुस्तजाब हुई अल्लाह तआ़ला ने मक्का मुकर्रमा को वीरान होने से अमन दी और कोई भी उसके वीरान करने पर क़ादिर न हो सका और उसको अल्लाह तआ़ला ने हरम बनाया कि उस में न किसी इन्सान का ख़ून बहाया जाये न किसी पर ज़ुल्म किया जाये न वहां शिकार मारा जाये न सब्ज़ा काटा जाये (फ़ा85) अम्बिया अ़लैहिमुस्सलाम बुत परस्ती और तमाम गुनाहों से मअ़सूम हैं हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलातु वस्सलाम का यह दुआ़ करना बारगाहे इलाही में तवाज़ोअ़ व इज़हारे एहतियाज के लिए है कि बावजूदेकि तूने अपने करम से मअ़सूम किया लेकिन हम तेरे फ़ज़्लो रहमत की तरफ़ दस्ते एहतियाज दराज़ रखते हैं। (फ़ा86) यानी उनकी गुमराही का सबब हुए कि वह उन्हें पूजने लगे (फ़ा87) और मेरे अ़क़ीदे व दीन पर रहा (फ़ा88) चाहे तो उसे हिदायत करे और तौफ़ीके तौबा अ़ता फ़रमाए।

(बक़िया सफ़हा 402 का) था इस लिए कि उस वक़्त तक कोई यह न जानता था कि यह सब भाई और एक बाप की औलाद हैं लेकिन अब चूंकि जान चुके थे इस लिए नज़र हो जाने का एहतेमाल था इस वास्ते अपने अलाहिदा अलाहिदा होकर दाख़िल होने का हुक्म दिया इससे मालूम हुआ कि आफ़तों और मुसीबतों से दफ़अ़ की तदबीर और मुनासिब एहतियातें अम्बिया का तरीक़ा हैं और उसके साथ ही आपने अमूर अल्लाह को तफ़वीज़ कर दिया कि बावजूद एहतियातों के तवक्कुल व एतेमाद अल्लाह पर है अपनी तदबीर पर भरोसा नहीं (फ़ा160) यानी जो मुक़द्दर है वह तदबीर से टाला नहीं जा सकता।

(बक़िया सफ़हा 404 का) हज़रत यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम और जिसको उन्होंने चोरी क़रार देकर हज़रत यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम की तरफ़ निस्बत किया वह वाक़िआ यह था कि हज़रत यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम के नाना का एक बुत था जिसको वह पूजते थे हज़रत यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम ने चुपके से वह बुत लिया और तोड़ कर रास्ता में नजासत के अन्दर डाल दिया यह हक़ीक़त में चोरी न थी बुत परस्ती का मिटाना था, भाईयों का इस ज़िक्र से यह मुद्दआ था कि हम लोग बुनियामीन के सौतेले भाई हैं यह फ़ेअ़्ल हो तो शायद बुनियामीन का हो न हमारी इस में शिरकत न हमें इसकी इत्तेलाअ़। (फ़ा181) उससे जिस की तरफ़ चोरी की निस्बत करते हो क्योंकि चोरी की निस्बत हज़रत यूसुफ़ की तरफ़ तो ग़लत है वह फ़ेअ़्ल तो शिर्क का अबताल और इबादत था और तुम ने जो यूसुफ़ के साथ किया वह बड़ी ज़्यादतियां हैं। (फ़ा182) उनसे मुहब्बत रखते हैं और उन्हीं से उनके दिल की तसल्ली है। (फ़ा183) हज़रत यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम ने (फ़ा184) क्योंकि तुम्हारे फ़ैसले से हम उसी को लेने के मुस्तहिक़ हैं जिस के कजावे में हमारा माल मिला अगर हम बजाये उसके दूसरे को लें।

(बक़िया सफ़हा 405 का) व बे-सब्री न पाई जाये रहमत है उन ग़म के अय्याम में हज़रत याक़ूब अ़लैहिस्सलाम की ज़बाने मुबारक पर कभी कोई कलिमा बे-सब्री का न आया (फ़ा195) बिरादराने यूसुफ़ अपने वालिद से। (फ़ा196) तुम से या और किसी से नहीं। (फ़ा197) इससे मालूम होता है कि हज़रत याक़ूब अ़लैहिस्सलाम जानते थे कि यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम ज़िन्दा हैं और उनसे मिलने की तवक़्क़ोअ़ रखते थे और यह भी जानते थे कि उनका ख़्वाब हक़ है ज़रूर वाक़ेअ़ होगा। एक रिवायत यह भी है कि आपने हज़रत मलकुलमौत से दरियाफ़्त किया कि तुम ने मेरे बेटे यूसुफ़ की रूह क़ब्ज़ की है, उन्होंने अर्ज़ किया नहीं। इससे भी आपको उनकी ज़िन्दगानी का इत्मीनान हुआ और आपने अपने फ़रज़न्दों से फ़रमाया। (फ़ा198) यह सुनकर बिरादराने हज़रत यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम फिर मिस्र की तरफ़ रवाना हुए।

(बक़िया सफ़हा 406 का) (फ़ा209) उसके बाद हज़रत यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम ने उन से अपने वालिद माजिद का हाल दरियाफ़्त किया उन्होंने कहा आपकी जुदाई के ग़म में रोते रोते उनकी बीनाई बहाल नहीं रही आपने फ़रमाया। (फ़ा210) जो मेरे वालिद माजिद ने तावीज़ बना कर मेरे गले में डाल दिया था (फ़ा211) और कनआ़न की तरफ़ रवाना हुआ (फ़ा212) अपने पोतों और पास वालों से (फ़ा213) क्योंकि वह इस गुमान में थे कि अब हज़रत यूसुफ़ (अ़लैहिस्सलाम) कहां उनकी वफ़ात भी हो चुकी होगी। (फ़ा214) लश्कर के आगे आगे वह हज़रत यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम के भाई यहूदा थे उन्होंने कहा कि हज़रत याक़ूब अ़लैहिस्सलाम के पास ख़ून आलूदा क़मीस भी मैं ही लेकर गया था मैंने ही कहा था कि यूसुफ़ (अ़लैहिस्सलाम) को भेड़िया खा गया मैंने ही उन्हें ग़मगीन किया था आज कुर्ता भी मैं ही लेकर जाऊँगा और हज़रत यूसुफ़ (अ़लैहिस्सलाम) की ज़िन्दगानी की फ़रहत अंगेज़ ख़बर भी मैं ही सुनाऊंगा तो यहूदा बरहना सर बरहना पा कुर्ता लेकर अस्सी फ़रसंग दौड़ते आये रास्ते में खाने के लिए सात रोटियां साथ लाये थे फ़र्ते शौक़ का यह आ़लम था कि उनको भी रास्ते में खाकर तमाम न कर सके

(बक़िया सफ़हा 407 का) और बहुत से मिस्री सवारों को हमराह लेकर आप अपने वालिद साहब के इस्क़िबाल के लिए सदहा रेशमी फरेरे उड़ाते क़तारें बांधे रवाना हुए हज़रत याक़ूब अ़लैहिस्सलाम अपने फ़रज़न्द यहूदा के हाथ पर टेक लगाये तशरीफ़ ला रहे थे जब आपकी नज़र लश्कर पर पड़ी और आपने देखा कि ज़र्क़ बर्क़ सवारों से पुर हो रहा है फ़रमाया ऐ यहूदा क्या यह फ़िरऔ़ने मिस्र है जिसका लश्कर इस शौकतो शिकोह से आ रहा है अ़र्ज़ किया नहीं यह हुज़ूर के फ़रज़न्द यूसुफ़ हैं अ़लैहिस्सलाम, हज़रत जिबरील ने आपको मुतअ़ज्जिब देख कर अर्ज़ किया हवा की तरफ़ नज़र फ़रमाइये आपके सुरूर में शिरकत के लिए मलाइका हाज़िर हुए हैं जो मुद्दतों आपके ग़म के सबब रोते रहे हैं मलाइका की तस्बीह ने और घोड़ों के हिनहिनाने ने और तबल व बूक़ की आवाज़ों ने अ़जीब कैफ़ियत पैदा कर दी थी यह मुहर्रम की दसवीं तारीख़ थी जब दोनों हज़रात वालिद व वल्द व पिदर व पिसर क़रीब हुए हज़रत यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम ने सलाम अ़र्ज़ करने का इरादा किया जिबरील अ़लैहिस्सलाम ने अर्ज़ किया कि आप तवक़्क़ुफ़ कीजिये और वालिद साहब को इब्तेदा बसलाम का मौक़ा दीजिये चुनान्चे हज़रत याक़ूब अ़लैहिस्सलाम ने अस्सलामु अ़लै-क या मुज़्हबल् अह्ज़ान (यानी ऐ ग़मो अन्दोह के दूर करने वाले सलाम) और दोनों साहबों ने उतर कर मुआनक़ा किया और मिलकर ख़ूब रोये फिर उस मुज़य्यन फ़रोदगाह में दाख़िल हुए जो पहले से आपके इस्तिक़बाल के लिए नफ़ीस ख़ेमे वग़ैरह नस्ब करके आरास्ता की गई थी यह दख़ूल हुदूदे मिस्र में था उसके बाद दूसरा दख़ूल ख़ास शहर में है जिसका बयान अगली आयत में है। (फ़ा217) मां से या ख़ास वालिदा मुराद हैं अगर इस वक़्त तक ज़िन्दा हों या ख़ाला मुफ़स्सिरीन के इस बाब में कई अक़वाल हैं (फ़ा218) यानी ख़ास शहर में (फ़ा219) जब मिस्र में दाख़िल हुए और हज़रत यूसुफ़ अपने तख़्त पर जलवा अफ़रोज़ हुए आपने अपने वालिदैन का इकराम फ़रमाया (फ़ा220) यानी वालिदैन और सब भाई (फ़ा221) यह सज्दा तहिय्यत व तवाज़ोअ़ का था जो उनकी शरीअ़त में जाइज़ था जैसे कि हमारी शरीअ़त में किसी मुअ़ज़्ज़म की ताज़ीम के लिए क़ियाम और मुसाफ़हा और दस्त बोसी जाइज़ है सज्दए इबादत अल्लाह तआ़ला के सिवा और किसी के लिए कभी

जाइज़ नहीं हुआ न हो सकता है क्योंकि यह शिर्क है और सज्दए तहिय्यत व ताज़ीम भी हमारी शरीअ़त में जाइज़ नहीं। (फ़ा222) जो मैंने सिग़र सिनी यानी बचपन की हालत में देखा था (फ़ा223) इस मौक़ा पर आपने कुंएं का ज़िक्र न किया ताकि भाईयों को शर्मिन्दगी न हो। (फ़ा224) असहाबे तवारीख़ का बयान है कि हज़रत याक़ूब अ़लैहिस्सलाम अपने फ़रज़न्द हज़रत यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम के पास मिस्र में चौबीस साल बेहतरीन ऐशो आराम में ख़ुशहाली के साथ रहे क़रीब वफ़ात आपने हज़रत यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम को वसीयत की कि आपका जनाज़ा मुल्के शाम में लेजा कर अर्ज़े मुक़द्दसा में आपके वालिद हज़रत इसहाक़ अ़लैहिस्सलाम की क़ब्र शरीफ़ के पास दफ़न किया जाये इस वसीयत की तअ़मील की गई और बाद वफ़ात साल की लकड़ी के ताबूत में आपका जस्दे अतहर शाम में लाया गया उसी वक़्त आपके भाई ऐ़स की वफ़ात हुई और आप दोनों भाईयों की विलादत भी साथ हुई थी और दफ़न भी एक ही क़ब्र में किये गए और दोनों साहबों की उम्र एक सौ पैंतालीस साल थी जब हज़रत यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम अपने वालिद और चचा को दफ़न करके मिस्र की तरफ़ वापस हुए तो आपने यह दुआ़ की जो अगली आयत में मज़कूर है। (फ़ा225) यानी हज़रत इब्राहीम व हज़रत इसहाक़ व हज़रत याक़ूब अ़लैहिमुस्सलाम अम्बिया सब मअ़सूम हैं हज़रत यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम की यह दुआ़ तालीमे उम्मत के लिए है कि वह हुस्ने ख़ात्मा की दुआ़ मांगते रहें। हज़रत यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम अपने वालिद माजिद के बाद तेईस साल रहे उसके बाद आपकी वफ़ात हुई आपके मक़ामे दफ़न में अहले मिस्र के अन्दर सख़्त इख़्तिलाफ़ वाक़ेअ़ हुआ हर मुहल्ला वाले हुसूले बरकत के लिए अपने ही मुहल्ले में दफ़न करने पर मुसिर थे आख़िर यह राय क़रार पाई कि आपको दरियाए नील में दफ़न किया जाये ताकि पानी आपकी क़ब्र से छूता हुआ गुज़रे और उसकी बरकत से तमाम अहले मिस्र फ़ैज़याब हों चुनान्चे आपको संगे रख़ाम या संगे मरमर के सन्दूक़ में दरियाए नील के अन्दर दफ़न किया गया और आप वहीं रहे यहां तक कि चार सौ बरस के बाद हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम ने आपका ताबूत शरीफ़ निकाला और आपको आपके आबाए किराम के पास मुल्के शाम में दफ़न किया।

(बक़िया सफ़हा 408 का) अगले कामों की (फ़ा244) तस्दीक़ है और हर चीज़ का मुफ़स्सल बयान और मुसलमानों के लिए हिदायत और रहमत।(111) (रुकूअ़ 6)

(फ़ा226) यानी बिरादराने यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम के (फ़ा227) बावजूद इसके ऐ सय्यदे अम्बिया सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम आपका इन तमाम वाक़िआ़त को इस तफ़सील से बयान फ़रमाना ग़ैबी ख़बर और मोअ़जेज़ा है। (फ़ा228) क़ुरआन शरीफ़ (फ़ा229) ख़ालिक़ और उसकी तौहीद व सिफ़ात पर दलालत करने वाली उन निशानियों से हलाक शुदा उम्मतों के आसार मुराद हैं। (मदारिक) (फ़ा230) और उनका मुशहिदा करते हैं लेकिन तफ़क्कुर नहीं करते इबरत नहीं हासिल करते। (फ़ा231) जम्हूर मुफ़स्सिरीन के नज़दीक यह आयत मुशरिकीन के रद्द में नाज़िल हुई जो अल्लाह तआ़ला की ख़ालक़ियत व रज़्ज़ाक़ियत का इक़रार करने के साथ बुत परस्ती करके ग़ैरों को इबादत में उसका शरीक करते थे (फ़ा232) ऐ मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम उन मुशरिकीन से कि तौहीदे इलाही और दीने इस्लाम की दावत देना (फ़ा233) इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा ने फ़रमाया मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम और उनके असहाब अहसन तरीक़ और अफ़ज़ल हिदायत पर हैं यह इल्म के मअ़दन ईमान के ख़ज़ाने रहमान के लश्कर हैं इब्ने मसऊद रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने फ़रमाया तरीक़ा इख़्तियार करने वालों को चाहिए कि गुज़रे हुओं का तरीक़ इख़्तियार करें वह सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के असहाब हैं जिनके दिल उम्मत में सब से ज़्यादा पाक इल्म में सबसे अ़मीक़ तकल्लुफ़ में सब से कम ऐसे हज़रात हैं जिन्हें अल्लाह तआ़ला ने अपने नबी अ़लैहिस्सलातु वस्सलाम की सुहबत और उनके दीन की इशाअ़त के लिए बरगुज़ीदा किया (फ़ा234) तमाम उयूब व नक़ाइस और शरका व अज़दाद व अन्दाद से। (फ़ा235) न फ़रिश्ते न किसी औरत को नबी बनाया गया यह अहले मक्का का जवाब है जिन्होंने कहा था कि अल्लाह ने फ़रिश्तों को क्यों न नबी बना कर भेजा उन्हें बताया गया कि यह क्या तअ़ज्जुब की बात है पहले ही से कभी फ़रिश्ते नबी होकर न आये (फ़ा236) हसन रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने फ़रमाया कि अहले बादिया और जिन्नात और औरतों में से कभी कोई नबी नहीं किया गया (फ़ा237) अम्बिया के झुठलाने से किस तरह हलाक किये गए। (फ़ा238) यानी लोगों को चाहिये कि अ़ज़ाबे इलाही में ताख़ीर होने और ऐश व आसाइश के देर तक रहने पर मग़रूर न हो जायें क्योंकि पहली उम्मतों को भी बहुत मुहलतें दी जा चुकी हैं यहां तक कि जब उनके अ़ज़ाबों में बहुत ताख़ीर हुई और ब-अस्बाबे ज़ाहिर रसूलों को क़ौम पर दुनिया में ज़ाहिर अ़ज़ाब आने की उम्मीद न रही। (अबुस्सऊद) (फ़ा239) यानी क़ौमों ने गुमान किया कि रसूलों ने उन्हें जो अ़ज़ाब के वादे दिये थे वह पूरे होने वाले नहीं (मदारिक वग़ैरह) (फ़ा240) अपने बन्दों में से यानी इताअ़त करने वाले ईमानदारों को बचा लिया। (फ़ा241) यानी अम्बिया की और उनकी क़ौमों की (फ़ा242) जैसे कि हज़रत यूसुफ़ अ़लैहिस्सलातु वस्सलाम के वाक़िआ़ से बड़े बड़े नताइज निकलते हैं और मालूम होता है कि सब्र का नतीजा सलामत व करामत है और ईज़ा रेसानी व बद-ख़्वाही का अंजाम नदामत और अल्लाह पर भरोसा रखने वाला कामयाब होता है और बन्दे को सख़्तियों के पेश आने से मायूस न होना चाहिए रहमते इलाही दस्तगीरी करे तो किसी की बदख़्वाही कुछ नहीं कर सकती उसके बाद क़ुरआन पाक की निस्बत इरशाद होता है। (फ़ा243) जिसको किसी इन्सान ने अपनी तरफ़ से बना लिया हो क्योंकि उस का एजाज़ उसके मिनल्लाह होने को क़तई तौर पर साबित करता है (फ़ा244) तौरेत इन्जील वग़ैरह क़ुतुबे इलाहिया की।

(बक़िया सफ़हा 410 का) हासिल करना चाहिए (फ़ा21) कि उनके अ़ज़ाब में जल्दी नहीं फ़रमाता और उन्हें मुहलत देता है (फ़ा22) जब अ़ज़ाब फ़रमाए (फ़ा23) काफ़िरों का यह क़ौल निहायत बेईमानी का क़ौल था जितनी आयात नाज़िल हो चुकी थीं और मोअ्.जेज़ात दिखाये जा चुके थे सब को उन्होंने कलअ़दम क़रार दे दिया यह इन्तेहा दर्जा की ना-इन्साफ़ी और हक़ दुश्मनी है जब हुज्जत क़ाइम हो चुके और नाक़ाबिले इन्कार बराहीन पेश कर दिये जायें और ऐसे दलाइल से मुद्दआ साबित कर दिया जाये जिसके जवाब से मुख़ालिफ़ीन के तमाम अहले इल्मो हुनर आ़जिज़ व मुतहय्यर रहें और उन्हें लब हिलाना और ज़बान खोलना मुहाल हो जाये ऐसे आयाते बय्यिना और बराहीने वाज़िहा व मोअ्जेज़ात ज़ाहिरा देख कर यह कह देना कि कोई निशानी क्यों नहीं उतरती रोज़े रौशन में दिन का इन्कार कर देने से भी ज़्यादा बदतर और बातिल तर है और हक़ीक़त में यह हक़ को पहचान कर उससे अ़ेनाद व फ़रार है किसी मुद्दआ पर जब बुरहान क़वी क़ाइम हो जाये फिर उस पर दोबारा दलील क़ाइम करनी ज़रूरी नहीं रहती और ऐसी हालत में तलबे दलील अ़ेनाद व मकाबिरा होता है जब तक कि दलील को मजरूह न कर दिया जाये कोई शख़्स दूसरी दलील के तलब करने का हक़ नहीं रखता और अगर यह सिलसिला क़ाइम कर दिया जाये कि हर शख़्स के लिए नई बुरहान क़ाइम की जाये जिसको वह तलब करे और वही निशानी लाई जाये जो वह मांगे तो निशानियों का सिलसिला कभी ख़त्म न होगा इस लिए हिकमते इलाहिया यह है कि अम्बिया को ऐसे मोअ्.जेज़ात दिये जाते हैं जिन से हर शख़्स उनके सिद्क़ व नबुव्वत का यक़ीन कर सके और बेश्तर वह उस क़बील से होते हैं जिस में उनकी उम्मत और उनके अ़हद के लोग ज़्यादा मश्क़ व महारत रखते हैं जैसे कि हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलातु वस्सलाम के ज़माना में इल्मे सहर अपने कमाल को पहुंचा हुआ था और उस ज़माना के लोग सहर के बड़े माहिर कामिल थे तो हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलातु वस्सलाम को वह मोअ्.जेज़ा अ़ता हुआ जिसने सहर को बातिल कर दिया और साहिरों को यक़ीन दिला दिया कि जो कमाल हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम ने दिखाया वह रब्बानी निशान है सहर से उसका मुक़ाबला मुमकिन नहीं इसी तरह हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलातु वस्सलाम के ज़माना में तिब इन्तेहाए उरूज पर थी हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम को शिफ़ाए अमराज़ व अहयाए अमवात का वह मोअ्जेज़ा अ़ता फ़रमाया गया जिससे तिब के माहिर आ़जिज़ हो गए और वह इस यक़ीन पर मजबूर थे कि यह काम तिब से नामुमकिन है ज़रूर यह क़ुदरते इलाही का ज़बरदस्त निशान है। इसी तरह सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के ज़मानए मुबारक में अ़रब की फ़साहत व बलाग़त औजे कमाल पर पहुंची हुई थी और वह लोग खुश बयानी में आ़लम पर फ़ाइक़ थे सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को वह मोअ्जेज़ा अता फ़रमाया जिसने उन्हें आ़जिज़ व हैरान कर दिया और उनके बड़े से बड़े लोग और उनके अहले कमाल की जमाअ़तें क़ुरआने करीम के मुक़ाबिल एक छोटी सी इबारत पेश करने से भी आ़जिज़ व क़ासिर रहीं और क़ुरआन के इस कमाल ने यह साबित कर दिया कि बेशक यह रब्बानी अ़ज़ीम निशान है और इसका मिस्ल बना लाना बशरी क़ुव्वत के इमकान में नहीं इसके अलावा और सदहा मोअ्जेज़ात सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने पेश फ़रमाये जिन्होंने हर तबक़ा के इन्सानों को आपके सिद्क़े रिसालत का यक़ीन दिला दिया। इन मोअ्जेज़ात के होते हुए यह कह देना कि कोई निशानी क्यों नहीं उतरी किस क़दर अ़ेनाद और हक़ से मुकरना है (फ़ा24) अपनी नबुव्वत के दलाइल पेश करने और इत्मीनान बख़्श मोअ्जेज़ात दिखा कर अपनी रिसालत साबित कर देने के बाद अहकामे इलाहिया पहुंचाने और ख़ुदा का ख़ौफ़ दिलाने के सिवा आप पर कुछ लाज़िम नहीं और हर हर शख़्स के लिए इसकी तलबीदा जुदा जुदा निशानियां पेश करना आप पर ज़रूरी नहीं जैसा कि आप से पहले हादियों (अम्बिया अ़लैहिमुस्सलाम) का तरीक़ा रहा है। (फ़ा25) नर मादा एक या ज़्यादा व ग़ैर ज़ालिक (फ़ा26) यानी मुद्दत में किस का हमल जल्द वज़अ़ होगा किस का देर में, हमल की कम से कम मुद्दत जिस में बच्चा पैदा होकर ज़िन्दा रह सके छः माह है और ज़्यादा से ज़्यादा दो साल यही हज़रत आ़इशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा ने फ़रमाया और इसी के हज़रत इमाम अबू हनीफ़ा रहमतुल्लाह अ़लैह क़ाइल हैं। बाज़ मुफ़स्सिरीन ने यह भी कहा है कि पेट के घटने बढ़ने से बच्चा का क़वी तामुलख़िलक़त और नाक़िसुल ख़िलक़त होना मुराद है (फ़ा27) कि इससे घट बढ़ नहीं सकती

(बक़िया सफ़हा 411 का) हर नक़्स से मुनज़्ज़ा के वजूद की दलील है। बाज़ मुफ़स्सिरीन ने फ़रमाया कि तस्बीह रअ़द से वह मुराद है कि उस आवाज़ को सुन कर अल्लाह के बन्दे उसकी तस्बीह करते हैं। बाज़ मुफ़स्सिरीन का क़ौल है कि रअ़्द एक फ़रिश्ता का नाम है जो बादल पर मामूर है उसको चलाता है। (फ़ा37) यानी उसकी हैबत व जलाल से उसकी तस्बीह करते हैं (फ़ा38) साअ़ेक़ा वह शदीद आवाज़ है जो आसमान व ज़मीन के दर्मियान से उतरती है फिर उसके आग पैदा हो जाती है या अ़ज़ाब या मौत और वह अपनी ज़ात में एक ही चीज़ है और यह तीनों चीज़ें उसी से पैदा होती हैं। (ख़ाज़िन) (फ़ा39) **शाने नुज़ूलः** हसन रज़ियल्लाहु अ़न्हु से मरवी है कि नबीए करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने अ़रब के एक निहायत सरकश काफ़िर को इस्लाम की दावत देने के लिए अपने अस्हाब की एक जमाअ़त भेजी उन्होंने उसको दावत दी कहने लगा मुहम्मद (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) का रब कौन है जिस की तुम मुझे दावत देते हो क्या वह सोने का है या चाँदी का या लोहे का या तांबे का मुसलमानों को यह बात बहुत गिराँ गुज़री और उन्होंने वापस होकर सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से अ़र्ज़ किया कि ऐसा अकफ़र सियाह दिल सरकश देखने में नहीं आया। हुज़ूर ने फ़रमाया उसके पास फिर जाओ उसने फिर वही गुफ़्तगू की और इतना और कहा कि मैं मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की दावत क़बूल करके ऐसे रब को मान लूं जिसे न मैंने देखा है न पहचाना यह हज़रात फिर वापस हुए और उन्होंने अ़र्ज़ किया कि हुज़ूर उसका ख़ब्स तो और तरक़्क़ी पर है। फ़रमाया फिर जाओ ब-तअ़मीले इरशाद फिर गए। जिस वक़्त उससे गुफ़्तगू कर रहे थे और वह ऐसी ही सियाह दिली की बातें बक रहा था एक अब्र आया उससे बिजली चमकी और कड़क हुई और बिजली गिरी और उस काफ़िर को जला

दिया। यह हज़रात उसके पास बैठे रहे जब वहां से वापस हुए तो राह में उन्हें अस्हाबे किराम की एक और जमाअ़त मिली वह कहने लगे कहिये वह शख़्स जल गया उन हज़रात ने कहा आप साहबों को कैसे मालूम हो गया उन्होंने फ़रमाया सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के पास वही आई है व युर्सिलुस्सवाइ-क़ फ़युसीबु बिहा मंय्यशाउ व हुम् युजादिलू-न फ़िल्लाहि (ख़ाज़िन)। बाज़ मुफ़स्सिरीन ने ज़िक्र किया है कि आ़मिर बिन तुफ़ैल ने अरबद बिन रबीआ़ से कहा कि मुहम्मद मुस्तफ़ा (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) के पास चलो मैं उन्हें बातों में लगाऊँगा तो पीछे से तलवार से हमला करना यह मशवरा करके वह हुजू.र के पास आए और आ़मिर ने हुजू.र से गुफ़्तगू शुरू की बहुत तवील गुफ़्तगू के बाद कहने लगा कि अब हम जाते हैं और एक बड़ा जर्रार लश्कर आप पर लायेंगे। यह कह कर चला आया बाहर आकर अरबद से कहने लगा कि तूने तलवार क्यों नहीं मारी उसने कहा जब मैं तलवार मारने का इरादा करता था तो तू दर्मियान में आ जाता था। सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने उन लोगों के निकलते वक़्त यह दुआ़ फ़रमाई अल्लाहुम्मक्फ़िहिमा बिमा शिअ्-त जब यह दोनों मदीना शरीफ़ से बाहर आये तो उन पर बिजली गिरी अरबद जल गया और आ़मिर भी उसी राह में बहुत बदतर हालत में मरा। (हुसैनी) (फ़ा40) यानी उसकी तौहीद की शहादत देना और ला इला-ह इल्लल्लाह कहना या यह माना हैं कि वह दुआ़ क़बूल करता है और उसी से दुआ़ करना सज़ावार है। (फ़ा41) मअ़.बूद जानकर यानी कुफ़्फ़ार जो बुतों की इबादत करते हैं और उन से मुरादें मांगते हैं। (फ़ा42) तो हथेलियां फैलाने और बुलाने से पानी कुंएं से निकल कर उसके मुंह में न आएगा क्योंकि पानी को न इल्म है न शुऊर जो उसकी हाजत और प्यास को जाने और उसके बुलाने को समझे और पहचाने न उस में यह क़ुदरत है कि अपनी जगह से हरकत करे और अपने मुक़तज़ाए तबीअ़त के ख़िलाफ़ ऊपर चढ़कर बुलाने वाले के मुंह में पहुंच जाये यही हाल बुतों का है कि न उन्हें बुत परस्तों के पुकारने की ख़बर है न उनकी हाजत का शुऊर न वह उनके नफ़ा पर कुछ क़ुदरत रखते हैं (फ़ा43) जैसे कि मोमिन (फ़ा44) जैसे कि मुनाफ़िक़ व काफ़िर

(बक़िया सफ़हा 412 का) को शरीके इबादत करना आ़क़िल किस तरह गवारा कर सकता है (फ़ा52) सब उसके तहते क़ुदरत व इख़्तियार हैं (फ़ा53) जैसे कि सोना चांदी तांबा वग़ैरह (फ़ा54) बर्तन वग़ैरह (फ़ा55) ऐसे ही बातिल अगरचे कितना ही उभर जाये और बाज़ औक़ात व अहवाल में झाग की तरह हद से ऊँचा हो जाये मगर अन्जामकार मिट जाता है और हक़ असल शय और जौहर साफ़ की तरह बाक़ी व साबित रहता है (फ़ा56) यानी जन्नत (फ़ा57) और कुफ़्र किया

(बक़िया सफ़हा 413 का) लिहाज़ रखने की बहुत ताकीदें आई हैं बकसरत अहादीसे सहीहा इस बाब में वारिद हैं। (फ़ा63) और वक़्ते हिसाब से पहले खुद अपने नफ़्सों से मुहासबा करते हैं। (फ़ा64) ताअ़तों और मुसीबतों पर और मअ़.सियत से बाज़ रहे। (फ़ा65) नवाफ़िल का छुपाना और फ़राइज़ का ज़ाहिर करना अफ़ज़ल है। (फ़ा66) बद-कलामी का जवाब शीरीं सुख़नी से देते हैं और जो उन्हें महरूम करता है उस पर अ़ता करते हैं जब उन पर ज़ुल्म किया जाता है माफ़ करते हैं जब उन से पैवन्द क़तअ़. किया जाता है मिलाते हैं और जब गुनाह करते हैं तौबा करते हैं जब नाजाइज़ काम देखते हैं उसे बदलते हैं जहल के बदले हिल्म और ईज़ा के बदले सब्र करते हैं (फ़ा67) यानी मोमिन हों (फ़ा68) अगरचे लोगों ने उनके से अ़मल न किये हों जब भी अल्लाह तआ़ला उनके इकराम के लिए इनको उनके दर्जे में दाख़िल फ़रमाएगा। (फ़ा69) हर एक रोज़ व शब में हिदाया और रज़ा की बशारतें लेकर जन्नत के (फ़ा70) बतरीक़े तहिय्यत व तकरीम (फ़ा71) और उसको क़बूल कर लेने (फ़ा72) कुफ़्र व मआ़सी का इरतेकाब करके

(बक़िया सफ़हा 414 का) साया हर जन्नत में पहुंचेगा यह दरख़्त जन्नते अ़दन में है और इसकी असल (बीख़) सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के ऐवाने मुअ़ल्ला में और उसकी शाख़ें जन्नत के हर ग़रफ़ा और क़िसूर में इसमें सिवा सियाही के हर क़िस्म के रंग और ख़ुशनुमाईयां हैं हर तरह के फल और मेवा इसमें फले हैं इसकी बीख़ से काफ़ू.र सलसबील की नहरें रवाँ हैं (फ़ा79) तो तुम्हारी उम्मत सबसे पिछली उम्मत है और तुम ख़ातमुल-अम्बिया हो तुम्हें बड़े शानो शिकोह से रिसालत अ़ता की (फ़ा80) वह किताबे अ़ज़ीम। (फ़ा81) **शाने नुज़ू.लः** क़तादा व मक़ातिल वग़ैरह का क़ौल है कि यह आयत सुलह हुदैबिया में नाज़िल हुई जिस का मुख़्तसर वाक़िआ़ यह है कि सुहैल बिन अ़मर जब सुलह के लिए आया और सुलह नामा लिखने पर इत्तेफ़ाक़ हो गया तो सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने हज़रत अ़ली मुर्तज़ा रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से फ़रमाया लिखो बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम कुफ़्फ़ार ने इसमें झगड़ा किया और कहा कि आप हमारे दस्तूर के मुताबिक़ बिइस्मिकल्लाहुम्म लिखवाइये इसके मुतअ़ल्लिक़ आयत में इरशाद होता है कि वह रहमान के मुन्किर हो रहे हैं। (फ़ा82) अपनी जगह से (फ़ा83) **शाने नुज़ूलः** कुफ़्फ़ारे क़ुरैश ने सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से कहा था कि अगर आप यह चाहें कि आप हमारी नबुव्वत मानें और आपका इत्तेबाअ़. करें तो आप क़ुरआन शरीफ़ पढ़कर उसकी तासीर से मक्का मुकर्रमा के पहाड़ हटा दीजिये ताकि हमें खेतियां करने के लिए वसीअ़. मैदान मिल जायें और ज़मीन फाड़ कर चश्मा जारी कीजिये ताकि हम खेतों और बाग़ों को उन से सैराब करें और क़ुसई बिन क़ुलाब वग़ैरह हमारे मरे हुए बाप दादा को ज़िन्दा कर दीजिये वह हम से कह जायें कि आप नबी हैं इसके जवाब में यह आयत नाज़िल हुई और बता दिया गया कि यह हीले हवाले करने वाले किसी हाल में भी ईमान लाने वाले नहीं। (फ़ा84) तो ईमान वही लाएगा जिसको अल्लाह चाहे और तौफ़ीक़ दे उसके सिवा और कोई ईमान लाने वाला नहीं अगरचे उन्हें वही निशान दिखा दिये जायें जो वह तलब करें (फ़ा85) यानी कुफ़्फ़ार के ईमान लाने से ख़्वाह उन्हें कितनी ही निशानियां दिखला दी जायें और क्या मुसलमानों को इसका यक़ीनी इल्म नहीं (फ़ा86) बग़ैर किसी निशानी के लेकिन वह जो चाहता है करता है और वही हिकमत

है यह जवाब है उन मुसलमानों का जिन्होंने कुफ़्फ़ार के नई नई निशानियां तलब करने पर यह चाहा था कि जो काफ़िर भी कोई निशानी तलब करे वही उसको दिखा दी जाये, उसमें उन्हें बता दिया गया कि जब ज़बरदस्त निशान आ चुके और शुकूक व औहाम की तमाम राहें बन्द कर दी गईं, दीन की हक़्क़ानियत रोज़े रौशन से ज़्यादा वाज़ेह हो चुकी उन जली बुरहानों के बावजूद जो लोग मुकर गए हक़ के मुअ़्तरिफ़ न हुए ज़ाहिर हो गया कि वह मुआनिद हैं और मुआनिद किसी दलील से भी माना नहीं करता तो मुसलमानों को अब उन से क़बूले हक़ की क्या उम्मीद किया अब तक उनका इनाद देख कर और आयात व बय्यनाते वाज़ेहा से एअ़्राज़ मुशाहिदा करके भी उन से क़बूले हक़ की उम्मीद रखी जा सकती है अलबत्ता अब उनके ईमान लाने और मान जाने की यही सूरत है कि अल्लाह तआ़ला उन्हें मजबूर करे और उनका इख़्तियार सल्ब फ़रमा ले इस तरह की हिदायत चाहता तो तमाम आदमियों को हिदायत फ़रमा देता और कोई काफ़िर न रहता मगर दारुल इब्तेला वलइम्तेहान की हिकमत उसकी मुक़्तज़ी नहीं

(बक़िया सफ़हा 415 का) इल्म हर चीज़ को मुहीत है लिहाज़ा उसके लिए शरीक होना बातिल व ग़लत (फ़ा95) के दरपै होते हो जिस की कुछ असल व हक़ीक़त नहीं (फ़ा96) यानी रुश्दो हिदायात और दीन की राह से (फ़ा97) क़त्ल व क़ैद का (फ़ा98) यानी उसके मेवे और उसका साया दाइमी है उन में से कोई मुन्क़तअ़् और ज़ाइल होने वाला नहीं जन्नत का हाल अ़जीब है उस में न सूरज है न चाँद न तारीकी बावजूद इसके ग़ैर मुन्क़तअ़् दाइमी साया है। (फ़ा99) यानी तक़वा वालों के लिए जन्नत है (फ़ा100) यानी वह यहूद व नसारा जो इस्लाम से मुशर्रफ़ हुए जैसे कि अ़ब्दुल्लाह बिन सलाम वग़ैरह और हब्शा व नजरान के नसरानी। (फ़ा101) यहूदो नसारा व मुशरिकीन के जो आपकी अ़दावत में सरशार हैं और आप पर उन्होंने चढ़ाईयां की हैं।

(बक़िया सफ़हा 416 का) अल्लाह तआ़ला ने तमाम ख़ल्क़ पर क़ुरआन शरीफ़ के क़बूल करने और उसके मुताबिक़ अमल करने का हुक्म फ़रमाया इस लिए उसका नाम हेकम रखा (फ़ा104) यानी काफ़िरों की जो अपने दीन की तरफ़ बुलाते हैं। (फ़ा105) शाने नुज़ूलः काफ़िरों ने सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अ़लैहि पर ऐब लगाया था कि वह निकाह करते हैं अगर नबी होते तो दुनिया तर्क कर देते बीबी बच्चे से कुछ वास्ता न रखते इस पर यह आयते करीमा नाज़िल हुई और उन्हें बताया गया कि बीबी बच्चे होना नबुव्वत के मुनाफ़ी नहीं लिहाज़ा यह एतेराज़ महज़ बेजा है और पहले जो रसूल आ चुके हैं वह भी निकाह करते थे उनके भी बीबियां और बच्चे थे। (फ़ा106) इससे मुक़द्दम व मुअख़्ख़र नहीं हो सकता ख़्वाह वह वादा अ़ज़ाब का हो या कोई और। (फ़ा107) सईद बिन जुबैर और क़तादा ने इस आयत की तफ़सीर में कहा कि अल्लाह जिन अहकाम को चाहता है मन्सूख़ फ़रमाता है जिन्हें चाहता है बाक़ी रखता है उन्हीं इब्ने जुबैर का एक क़ौल यह है कि बन्दों के गुनाहों में से अल्लाह जो चाहता है मग़फ़िरत फ़रमा कर मिटा देता है और जो चाहता है साबित रखता है इकरमा का क़ौल है कि अल्लाह तआ़ला तौबा से जिस गुनाह को चाहता है मिटाता है और उसकी जगह नेकियां क़ाइम फ़रमाता है और इसकी तफ़सीर में और भी बहुत अक़वाल हैं। (फ़ा108) जिसको उसने अज़ल में लिखा यह इल्मे इलाही है या उम्मुलकिताब से लौहे महफ़ूज़ मुराद है जिस में तमाम कायनात और आलम में होने वाले जुमला हवादिस व वाक़िआत और तमाम अशिया मकतूब हैं और उसमें तग़य्युर व तबद्दुल नहीं होता (फ़ा109) अ़ज़ाब का (फ़ा110) हम तुम्हें (फ़ा111) और आमाल की जज़ा देना (फ़ा112) तो आप काफ़िरों के एअ़्राज़ करने से रन्जीदा न हों और अ़ज़ाब की जल्दी न करें (फ़ा113) और ज़मीन शिर्क की वुसअ़त दम बदम कम कर रहे हैं और सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के लिए कुफ़्फ़ार के गिर्द व पेश की अराज़ी यके बाद दीगरे फ़तह होती चली जाती है और यह सरीह दलील है कि अल्लाह तआ़ला अपने हबीब की मदद फ़रमाता है और उनके लश्कर को फ़तहमन्द करता है और उनके दीन को ग़लबा देता है (फ़ा114) उसका हुक्म नाफ़िज़ है किसी की मजाल नहीं कि उस में चूं व चरा या तग़य्युर व तबद्दुल कर सके जब वह इस्लाम को ग़लबा देना चाहे और कुफ़्र को पस्त करना तो किस की ताब व मजाल कि उसके हुक्म में दख़ल दे सके (फ़ा115) यानी गुज़री हुई उम्मतों के कुफ़्फ़ार अपने अम्बिया के साथ (फ़ा116) फिर बग़ैर उसकी मशीयत के किसी की क्या चल सकती है और जब हक़ीक़त यह है तो मख़्लूक़ का क्या अन्देशा (फ़ा117) हर एक का कसब अल्लाह तआ़ला को मालूम है और उसके नज़दीक उनकी जज़ा मुक़र्रर है (फ़ा118) यानी काफ़िर अ़न्क़रीब जान लेंगे कि राहते आख़िरत मोमिनीन के लिए है और वहां की ज़िल्लत व ख़्वारी कुफ़्फ़ार के लिए है। (फ़ा119) जिसने मेरे हाथों में मोअ़्जेज़ाते बाहरा व आयाते क़ाहरा ज़ाहिर फ़रमा कर मेरे नबीए मुरसल होने की शहादत दी (फ़ा120) ख़्वाह वह उलमाए यहूद में से तौरेत का जानने वाला हो या नसारा में से इन्जील का आ़लिम वह सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की रिसालत को अपनी किताबों में देख कर जानता है उन उलमा में से अक्सर आपकी रिसालत की शहादत देते हैं।

(बक़िया सफ़हा 417 का) उसकी क़ौम अच्छी तरह समझ ले तो दूसरी क़ौमों को तर्जुमों के ज़रीआ़ से वह अहकाम पहुंचा दिये जायें और उनके माना समझा दिये जायें बाज़ मुफ़स्सिरीन ने इस आयत की तफ़सीर में यह भी फ़रमाया है कि क़ौमेही की ज़मीर सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की तरफ़ राजेअ़् है और माना यह हैं कि हमने हर रसूल को सय्यदे अम्बिया मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की ज़बान यानी अ़रबी में वही फ़रमाई और यह माना एक रिवायत में भी आये हैं कि वही हमेशा अ़रबी ज़बान ही में नाज़िल हुई फिर अम्बिया अ़लैहिमुस्सलाम ने अपनी क़ौमों के लिए उनकी ज़बानों में तर्जुमा फ़रमा दिया (अतक़ाने हुसैनी) मसला इससे मालूम होता है कि अ़रबी तमाम ज़बानों में सब से अफ़ज़ल है (फ़ा12) मिस्ले अ़सा व यदे बैज़ा वग़ैरह मोअ़्जेज़ाते बाहिरा के (फ़ा13) कुफ़्र की निकाल कर ईमान के (फ़ा14) क़ामूस में है कि अय्यामुल्लाह से अल्लाह की नेअ़्मतें मुराद हैं। हज़रत इब्ने अ़ब्बास व उबय बिन कअ़्ब व मुजाहिद व क़तादा ने भी अय्यामुल्लाह की तफ़सीर (अल्लाह की नेअ़्मतें) फ़रमाईं मक़ातिल का क़ौल है कि अय्यामुल्लाह से वह बड़े बड़े वक़ाएअ़् मुराद हैं जो अल्लाह के अमर

से वाक़ेअ़ हुए बाज़ मुफ़स्सिरीन ने फ़रमाया कि अय्यामुल्लाह से वह दिन मुराद हैं जिन में अल्लाह ने अपने बन्दों पर इनाम किये जैसे कि बनी इसराईल के लिए मन व सलवा उतारने का दिन हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम के लिए दरिया में रास्ता बनाने का दिन (ख़ाज़िन व मदारिक व मुफ़र्रदात राग़िब) इन अय्यामुल्लाह में सबसे बड़ी निअ़मत के दिन सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की विलादत व मेअ़्राज के दिन हैं उनकी याद क़ाइम करना भी इस आयत के हुक्म में दाख़िल है इसी तरह और बुज़ुर्गों पर जो अल्लाह तआ़ला की निअ़मतें हुईं या जिन अय्याम में वाक़िआ़ते अ़ज़ीमा पेश आये जैसा कि दसवीं मुहर्रम को करबला का वाक़िआ़ हायला उनकी यादगार में क़ाइम करना भी तज़कीर बअय्यामुल्लाह में दाख़िल है बाज़ लोग मीलाद शरीफ़ मेअ़्राज शरीफ़ और ज़िक्रे शहादत के अय्याम की तख़्सीस में कलाम करते हैं उन्हें इसे आयत से नसीहत पज़ीर होना चाहिए। (फ़ा15) हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलातु वत्तस्लीमात का अपनी क़ौम को यह इरशाद फ़रमाना तज़कीर बअय्यामुल्लाह की तअ़्मील है

(बक़िया सफ़हा 421 का) अ़न्हुमा ने अपने वालिद माजिद हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अ़न्हु से अ़र्ज़ किया कि जब हुज़ूर ने दरियाफ़्त फ़रमाया था तो मेरे दिल में आया था कि यह खजूर का दरख़्त है लेकिन बड़े-बड़े सहाबा तशरीफ़ फ़रमा थे मैं छोटा था इस लिए मैं अदबन ख़ामोश रहा। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने फ़रमाया कि अगर तुम बता देते तो मुझे बहुत खुशी होती। (फ़ा64) और ईमान लायें क्योंकि मिसालों से माना अच्छी तरह ख़ातिर गुज़ीं हो जाते हैं। (फ़ा65) यानी कुफ़्री कलाम (फ़ा66) मिस्ल इन्द्राइन के जिसका मज़ा कड़वा बू नागवार या मिस्ल लहसुन के बदबूदार। (फ़ा67) क्योंकि जड़ उसकी ज़मीन में साबित व मुस्तहकम नहीं शाख़ें उसकी बुलन्द नहीं होतीं यही हाल है कुफ़्री कलाम का कि उसकी कोई असल साबित नहीं और कोई हुज्जत व बुरहान नहीं रखता जिससे इस्तेहकाम हो न उसमें कोई ख़ैरो बरकत कि वह बुलन्दीए क़बूल पर पहुंच सके। (फ़ा68) यानी कलिमए ईमान (फ़ा69) कि वह इब्तेला और मुसीबत के वक़्तों में भी साबिर व क़ाइम रहते हैं और राहे हक़ व दीने क़वीम से नहीं हटते हत्ता कि उनकी हयात का ख़ात्मा ईमान पर होता है। (फ़ा70) यानी क़ब्र में कि अव्वल मनाज़िल आख़िरत है जब मुन्कर नकीर आकर उन से पूछते हैं कि तुम्हारा रब कौन है तुम्हारा दीन क्या है और सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के बारे में दरियाफ़्त करते हैं कि उनकी निस्बत तू क्या कहता है तो मोमिन इस मन्ज़िल में बफ़ज़्ले इलाही साबित रहता है और कह देता है कि मेरा रब अल्लाह है मेरा दीन इस्लाम और यह मेरे नबी हैं मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम अल्लाह के बन्दे और उसके रसूल फिर उसकी क़ब्र वसीअ़ कर दी जाती है और उसमें जन्नत की हवायें और खुश्बूयें आती हैं और वह मुनव्वर कर दी जाती है और आसमान से निदा होती है कि मेरे बन्दे ने सच कहा (फ़ा71) वह क़ब्र में मुन्कर व नकीर को जवाब सही नहीं दे सकते और हर सवाल के जवाब में यही कहते हैं हाय हाय मैं नहीं जानता आसमान से निदा होती है मेरा बन्दा झूठा है इसके लिए आग का फ़र्श बिछाओ दोज़ख़ का लिबास पहनाओ दोज़ख़ की तरफ़ दरवाज़ा खोल दो उसको दोज़ख़ की गर्मी और दोज़ख़ की लपट पहुंचती है और क़ब्र इतनी तंग हो जाती है कि एक तरफ़ की पसलियां दूसरी तरफ़ आ जाती हैं अ़ज़ाब करने वाले फ़रिश्ते उस पर मुक़र्रर किये जाते हैं जो उसे लोहे के गुरज़ों से मारते हैं (अआ़ज़नल्लाह तआ़ला मिन अ़ज़ाबिल् क़ब्र व सब्बितुना अ़लल्ईमान) (फ़ा72) बुख़ारी शरीफ़ की हदीस में है कि उन लोगों से मुराद कुफ़्फ़ारे मक्का हैं और वह निअ़मत जिसकी शुक्रगुज़ारी उन्होंने न की वह अल्लाह के हबीब हैं सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम कि अल्लाह तआ़ला ने उनके वजूद से इस उम्मत को नवाज़ा और उनकी ज़ियारत सरापा करामत की सआ़दत से मुशर्रफ़ किया लाज़िम था कि इस निअ़मते जलीला का शुक्र बजा लाते और उनका इत्तेबाअ़ करके मज़ीद करम के मूरिद होते बजाए इसके उन्होंने नाशुक्री की और सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम का इन्कार किया और अपनी क़ौम को जो दीन में उनके मुवाफ़िक़ थे दारुलहलाक में पहुंचाया (फ़ा73) यानी बुतों को उसका शरीक किया

(बक़िया सफ़हा 423 का) मर्तबा यही अर्ज़ किया और जवाब न पाया तो कहा कि क्या अल्लाह ने आपको इसका हुक्म दिया है आपने फ़रमाया हां, उस वक़्त उन्हें इत्मीनान हुआ हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम चले गए और उन्होंने बारगाहे इलाही में हाथ उठा कर यह दुआ़ की जो आयत में मज़कूर है। हज़रत हाजरा अपने फ़रज़न्द हज़रत इसमाईल अ़लैहिस्सलाम को दूध पिलाने लगीं जब वह पानी ख़त्म हो गया और प्यास की शिद्दत हुई और साहबज़ादे का हलक़ शरीफ़ भी प्यास से खुश्क हो गया तो आप पानी की जुस्तजू या आबादी की तलाश में सफ़ा व मरवा के दर्मियान दौड़ीं ऐसा सात मर्तबा हुआ यहां तक कि फ़रिश्ते के पर मारने से या हज़रत इसमाईल अ़लैहिस्सलाम के क़दमे मुबारक से उस खुश्क ज़मीन में एक चश्मा (ज़मज़म) नुमूदार हुआ आयत में हुरमत वाले घर से बैतुल्लाह मुराद है जो तूफ़ाने नूह से पहले कअ़बा मुक़द्दसा की जगह था और तूफ़ान के वक़्त आसमान पर उठा लिया गया। हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम का यह वाक़िआ़ आप के आग में डाले जाने के बाद हुआ। आग के वाक़िआ़ में आपने दुआ़ न फ़रमाई थी और इस वाक़िआ़ में दुआ़ की और तज़र्रुअ़ किया अल्लाह तआ़ला की कारसाज़ी पर एतेमाद करके दुआ़ न करना भी तवक्कुल और बेहतर है लेकिन मक़ामे दुआ़ इससे भी अफ़ज़ल है तो हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम का इस आख़िर वाक़िआ़ में दुआ़ फ़रमाना इस लिए है कि आप मदारिजे कमाल में दम बदम तरक़्क़ी पर हैं (फ़ा90) यानी हज़रत इसमाईल और उनकी औलाद उस वादी बे ज़राअ़त में तेरे ज़िक्र व इबादत में मश्ग़ूल हों और तेरे बैते हराम के पास (फ़ा91) अतराफ़ व बलाद से यहां आयें और उनके क़ुलूब उस मकाने ताहिर की शौक़े ज़ियारत में खिंचें इसमें ईमानदारों के लिए यह दुआ़ है कि उन्हें बैतुल्लाह का हज मुयस्सर आये और अपनी यहां रहने वाली ज़ुर्रियत के लिए यह कि वह ज़ियारत के लिए आने वालों से मुन्तफ़अ़ होते रहें ग़रज़ यह दुआ़ दीनी दुनियवी बरकात पर मुश्तमिल है हज़रत की दुआ़ क़बूल हुई और क़बीला जरहम ने उस तरफ़ से गुज़रते हुए एक परिन्द देखा तो उन्हें तअ़ज्जुब हुआ कि बयाबान में परिन्द कैसा शायद

कहीं चश्मा नुमूदार हुआ जुस्तजू की तो देखा कि ज़मज़म शरीफ़ में पानी है यह देख कर उन लोगों ने हज़रत हाजरा से वहां बसने की इजाज़त चाही उन्होंने इस शर्त से इजाज़त दी कि पानी में तुम्हारा हक़ न होगा वह लोग वहां बसे और हज़रत इसमाईल अलैहिस्सलाम जवान हुए तो उन लोगों ने आपके सलाह व तक़वा को देख कर अपने ख़ानदान में आपकी शादी कर दी और हज़रत हाजरा का विसाल हो गया इस तरह हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलातु वस्सलाम की यह दुआ पूरी हुई और आपने दुआ में यह भी फ़रमाया (फ़ा92) उसी का समरा है कि फ़ुसूल मुख़्तलिफ़ा रबीअ व ख़रीफ़ व सैफ़ व शता के मेवे वहां बयक वक़्त मौजूद मिलते हैं (फ़ा93) हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने एक और फ़रज़न्द की दुआ की थी अल्लाह ने क़बूल फ़रमाई तो आपने उसका शुक्र अदा किया और बारगाहे इलाही में अर्ज़ किया (फ़ा94) क्योंकि बाज़ की निस्बत तो आपको बएलामे इलाही मालूम था कि काफ़िर होंगे इस लिए बाज़ ज़ुर्रियत के वास्ते नमाज़ों की पाबन्दी व मुहाफ़ज़त की दुआ की (फ़ा95) बशर्ते ईमान या मां बाप से हज़रत आदम व हव्वा मुराद हैं। (फ़ा96) इसमें मज़लूम को तसल्ली दी गई कि अल्लाह तआला ज़ालिम से उसका इन्तेक़ाम लेगा। (फ़ा97) हौलो दहशत से (फ़ा98) हज़रत इसराफ़ील अलैहिस्सलाम की तरफ़ जो उनहें अर्सए महशर की तरफ़ बुलायेंगे। (फ़ा99) कि अपने आपको देख सकें (फ़ा100) शिद्दते हैरत व दहशत से क़तादा ने कहा कि दिल सीनों से निकल कर गलों में आ फंसेंगे न बाहर निकल सकेंगे न अपनी जगह वापस जा सकेंगे माना यह हैं कि उस दिन की शिद्दते हौल व दहशत का यह आलम होगा कि सर ऊपर उठे होंगे आंखें खुली की खुली रह जायेंगी दिल अपनी जगह पर क़रार न पा सकेंगे (फ़ा101) यानी कुफ़्फ़ार को क़ियामत के दिन का ख़ौफ़ दिलाओ (फ़ा102) यानी काफ़िर (फ़ा103) दुनिया में वापस भेज दे और (फ़ा104) और तेरी तौहीद पर ईमान लायें (फ़ा105) और हम से जो क़ुसूर हो चुके उसकी तलाफ़ी करें उस पर उन्हें ज़जूर व तौबीख़ की जाएगी और फ़रमाया जाएगा (फ़ा106) दुनिया में

(बक़िया सफ़हा 424 का) मअ़्दूम होंगी यह तब्दीली औसाफ़ की है ज़ात की नहीं। दूसरा क़ौल यह है कि आसमान व ज़मीन की ज़ात ही बदल दी जाएगी इस ज़मीन की जगह एक दूसरी चांदी की ज़मीन होगी सफ़ेद व साफ़ जिस पर न कभी ख़ून बहाया गया हो न गुनाह किया गया हो और आसमान सोने का होगा यह दो क़ौल अगरचे बज़ाहिर बाहम मुख़ालिफ़ मालूम होते हैं मगर उन में से हर एक सही है और वजहे जमा यह है कि अव्वल तब्दीले सिफ़ात होगी और दूसरी मर्तबा बाद हिसाब तब्दीले सानी होगी इसमें ज़मीन व आसमान की ज़ातें ही बदल जायेंगी (फ़ा117) अपनी क़ब्रों से (फ़ा118) यानी काफ़िरों (फ़ा119) अपने शयातीन के साथ बंधे हुए (फ़ा120) सियाह रंग बदबूदार जिन से आग के शोअ़्ले और ज़्यादा तेज़ हो जायें (मदारिक व ख़ाज़िन) तफ़सीर बैज़ावी में है कि उनके बदनों पर राल लीप दी जायेगी वह मिस्ल कुर्ते के हो जायेगी उसकी सोज़िश और उसके रंग की वहशत व बदबू से तकलीफ़ पायेंगे (फ़ा121) क़ुरआन शरीफ़ (फ़ा122) यानी इन आयात से अल्लाह तआला की तौहीद की दलीलें पायें।

رُبَمَا يَوَدُّ الَّذِينَ كَفَرُوا لَوْ كَانُوا مُسْلِمِينَ ۝ ذَرْهُمْ يَأْكُلُوا وَيَتَمَتَّعُوا وَيُلْهِهِمُ الْأَمَلُ فَسَوْفَ يَعْلَمُونَ ۝ وَمَا أَهْلَكْنَا مِنْ قَرْيَةٍ إِلَّا وَلَهَا كِتَابٌ مَعْلُومٌ ۝ مَا تَسْبِقُ مِنْ أُمَّةٍ أَجَلَهَا وَمَا يَسْتَأْخِرُونَ ۝ وَقَالُوا يَا أَيُّهَا الَّذِي نُزِّلَ عَلَيْهِ الذِّكْرُ إِنَّكَ لَمَجْنُونٌ ۝ لَوْ مَا تَأْتِينَا بِالْمَلَائِكَةِ إِنْ كُنْتَ مِنَ الصَّادِقِينَ ۝ مَا نُنَزِّلُ الْمَلَائِكَةَ إِلَّا بِالْحَقِّ وَمَا كَانُوا إِذًا مُنْظَرِينَ ۝ إِنَّا نَحْنُ نَزَّلْنَا الذِّكْرَ وَإِنَّا لَهُ لَحَافِظُونَ ۝ وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ فِي شِيَعِ الْأَوَّلِينَ ۝ وَمَا يَأْتِيهِمْ مِنْ رَسُولٍ إِلَّا كَانُوا بِهِ يَسْتَهْزِئُونَ ۝ كَذَٰلِكَ نَسْلُكُهُ فِي قُلُوبِ الْمُجْرِمِينَ ۝ لَا يُؤْمِنُونَ بِهِ وَقَدْ خَلَتْ سُنَّةُ الْأَوَّلِينَ ۝ وَلَوْ فَتَحْنَا عَلَيْهِمْ بَابًا مِنَ السَّمَاءِ فَظَلُّوا فِيهِ يَعْرُجُونَ ۝ لَقَالُوا إِنَّمَا سُكِّرَتْ أَبْصَارُنَا بَلْ نَحْنُ قَوْمٌ مَسْحُورُونَ ۝ وَلَقَدْ

रु–बमा य–वद्दुल्लज़ी–न क–फ़रू लौ कानू मुस्लिमीन(2)ज़र्हुम् यअ्कुलू व य–त–मत्तअू व युल्हिहिमुल् अ–मलु फ़सौ–फ़ यअ्–लमून(3)व मा अह्–लक्ना मिन् क़र्–यतिन् इल्ला व लहा किताबुम् मअ्लूम(4)मा तस्बिक़ु मिन् उम्मतिन् अ–ज–लहा व मा यस्तअ्ख़िरून(5)व क़ालू या अय्युहल्लज़ी नुज़्ज़ि–ल अ़लैहिज़् ज़िक्रु इन्न–क ल–मज्नून(6)लौ मा तअ्तीना बिल्मलाइ–कति इन् कुन्–त मिनस्सादिक़ीन(7)मा नुनज़्ज़िलुल् मलाइ–क–त इल्ला बिल्हक़्क़ि व मा कानू इज़म् मुन्ज़रीन(8)इन्ना नह्नु नज़्ज़ल्नज़् ज़िक्–र व इन्ना लहू लहाफ़िज़ून(9)व लक़द् अर्सल्ना मिन् क़ब्लि–क फ़ी शि–यअ़िल् अव्वलीन(10)व मा यअ्तीहिम् मिर् रसूलिन् इल्ला कानू बिही यस्तह्ज़िऊन(11)कज़ालि–क नस्लुकुहू फ़ी क़ुलूबिल् मुज्रिमीन(12)ला युअ्मिनू–न बिही व क़द् ख़–लत् सुन्नतुल्–अव्वलीन(13)व लौ फ़–तह्ना अ़लैहिम् बाबम् मिनस्समाइ फ़–ज़ल्लू फ़ीहि यअ्–रुजून(14)लक़ालू इन्नमा सुक्किरत् अब्सारुना बल् नह्नु क़ौमुम् मस्हूरून(15)व ल–क़द्

बहुत आरज़ूएं करेंगे काफ़िर (फ़ा2) काश मुसलमान होते(2) उन्हें छोड़ो (फ़ा3) कि खायें और बरतें (फ़ा4) और उम्मीद (फ़ा5) उन्हें खेल में डाले तो अब जाना चाहते हैं।(3) (फ़ा6) और जो बस्ती हमने हलाक की उस का एक जाना हुआ नविश्ता था।(4) (फ़ा7) कोई गरोह अपने वादा से आगे न बढ़े न पीछे हटे।(5) और बोले (फ़ा8) कि ऐ वह जिन पर क़ुरआन उतरा बेशक तुम मजनून हो।(6) (फ़ा9) हमारे पास फ़रिश्ते क्यों नहीं लाते (फ़ा10) अगर तुम सच्चे हो।(7) (फ़ा11) हम फ़रिश्ते बेकार नहीं उतारते और वह उतरें तो उन्हें मुहलत न मिले।(8) (फ़ा12) बेशक हमने उतारा है यह क़ुरआन और बेशक हम ख़ुद इसके निगहबान हैं।(9) (फ़ा13) और बेशक हमने तुम से पहले अगली उम्मतों में रसूल भेजे।(10) और उनके पास कोई रसूल नहीं आता मगर उससे हंसी करते हैं।(11) (फ़ा14) ऐसे ही हम उसे हंसी को उन मुजरिमों (फ़ा15) के दिलों मे राह देते हैं।(12) वह उस पर (फ़ा16) ईमान नहीं लाते और अगलों की राह पड़ चुकी है।(13) (फ़ा17) और अगर हम उनके लिए आसमान में कोई दरवाज़ा खोल दें कि दिन को उस में चढ़ते।(14) जब भी यही कहते कि हमारी निगाह बांध दी गई है बल्कि हम पर जादू हुआ।(15) (फ़ा18) (रुकूअ़ 1) और बेशक

(फ़ा2) यह आरज़ूएं या वक़्ते नज़अ़ अ़ज़ाब देख कर होंगी जब काफ़िर को मालूम हो जाएगा कि वह गुमराही में था या आख़िरत में रोज़े क़ियामत के शदाइद और अहवाल और अपना अन्जाम व मआल देखकर ज़जाज का क़ौल है कि काफ़िर जब कभी अपने अहवाले अ़ज़ाब और मुसलमानों पर अल्लाह की रहमत देखेंगे हर मर्तबा आरज़ूएं करेंगे कि (फ़ा3) ऐ मुस्तफ़ा (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) (फ़ा4) दुनिया की लज़्ज़तें (फ़ा5) तनइम व तलज़्ज़ुज़ व तूले हयात की जिस के सबब वह ईमान से महरूम हैं। (फ़ा6) अपना अन्जाम-कार इसमें तम्बीह है कि लम्बी उम्मीदों में गिरिफ़्तार होना और लज़्ज़ाते दुनिया की तलब में ग़र्क़ हो जाना ईमानदार की शान नहीं। हज़रत अली मुर्तज़ा रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने फ़रमाया लम्बी उम्मीदें आख़िरत को भुलाती हैं और ख़्वाहिशात का इत्तेबाअ़ हक़ से रोकता है (फ़ा7) लौहे महफ़ूज़ में इसी मुअ़य्यन वक़्त पर वह हलाक हुई (फ़ा8) कुफ़्फ़ारे मक्का हज़रत नबीए करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से। (फ़ा9) उनका यह क़ौले तमस्ख़ुर और इस्तेहज़ा के तौर पर था जैसा कि फ़िरऔन ने हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलातु वस्सलाम की निस्बत कहा था इन्–न रसू–लकुमुल्लज़ी उर्सि–ल इलैकुम् ल–मज्नून (फ़ा10) जो तुम्हारे रसूल होने और क़ुरआन शरीफ़ के किताबे इलाही होने की गवाही दें। (फ़ा11) अल्लाह तआ़ला इसके जवाब में फ़रमाता है (फ़ा12) फ़िलहाल अ़ज़ाब में गिरिफ़्तार कर दिये जायें (फ़ा13) कि तहरीफ़ व तब्दील व ज़्यादती व कमी से इसकी हिफ़ाज़त फ़रमाते हैं तमाम जिन्न व इन्स और सारी ख़ल्क़ के मक़दूर में नहीं है कि इसमें एक हरफ़ की कमी बेशी करे या तग़य्युर व **(बक़िया सफ़हा 458 पर)**

جَعَلْنَا فِي السَّمَآءِ بُرُوْجًا وَّ زَيَّنّٰهَا لِلنّٰظِرِيْنَ ۝ وَ حَفِظْنٰهَا مِنْ كُلِّ شَيْطٰنٍ رَّجِيْمٍ ۝ اِلَّا مَنِ اسْتَرَقَ السَّمْعَ فَاَتْبَعَهٗ شِهَابٌ مُّبِيْنٌ ۝ وَ الْاَرْضَ مَدَدْنٰهَا وَ اَلْقَيْنَا فِيْهَا رَوَاسِيَ وَ اَنْۢبَتْنَا فِيْهَا مِنْ كُلِّ شَيْءٍ مَّوْزُوْنٍ ۝ وَ جَعَلْنَا لَكُمْ فِيْهَا مَعَايِشَ وَ مَنْ لَّسْتُمْ لَهٗ بِرٰزِقِيْنَ ۝ وَ اِنْ مِّنْ شَيْءٍ اِلَّا عِنْدَنَا خَزَآىِٕنُهٗ ؗ وَ مَا نُنَزِّلُهٗۤ اِلَّا بِقَدَرٍ مَّعْلُوْمٍ ۝ وَ اَرْسَلْنَا الرِّيٰحَ لَوَاقِحَ فَاَنْزَلْنَا مِنَ السَّمَآءِ مَآءً فَاَسْقَيْنٰكُمُوْهُ ۚ وَ مَاۤ اَنْتُمْ لَهٗ بِخٰزِنِيْنَ ۝ وَ اِنَّا لَنَحْنُ نُحْيٖ وَ نُمِيْتُ وَ نَحْنُ الْوٰرِثُوْنَ ۝ وَ لَقَدْ عَلِمْنَا الْمُسْتَقْدِمِيْنَ مِنْكُمْ وَ لَقَدْ عَلِمْنَا الْمُسْتَاْخِرِيْنَ ۝ وَ اِنَّ رَبَّكَ هُوَ يَحْشُرُهُمْ ؕ اِنَّهٗ حَكِيْمٌ عَلِيْمٌ ۝ وَ لَقَدْ خَلَقْنَا الْاِنْسَانَ مِنْ صَلْصَالٍ مِّنْ حَمَاٍ مَّسْنُوْنٍ ۝ وَ الْجَآنَّ خَلَقْنٰهُ مِنْ قَبْلُ مِنْ نَّارِ السَّمُوْمِ ۝ وَ اِذْ قَالَ رَبُّكَ لِلْمَلٰٓىِٕكَةِ اِنِّيْ خَالِقٌۢ بَشَرًا مِّنْ

ज–अ्ला फ़िस्समाइ बुरूजंव् व ज़य्यन्नाहा लिन्नाज़िरीन(16)व हफ़िज़्नाहा मिन् कुल्लि शैतानिर् रजीम(17)इल्ला मनिस्त–र–कस् सम्–अ फ़–अतब–अ़हू शिहाबुम् मुबीन(18)वल्–अर्–ज़ म–ददनाहा व अल्क़ैना फ़ीहा रवासि–य व अम्बत्ना फ़ीहा मिन् कुल्लि शैइम् मौज़ू न(19)व ज–अ्ला लकुम् फ़ीहा मआयि–श व मल्लस्तुम् लहू बिराज़िक़ीन(20)व इम्मिन् शैइन् इल्ला अ़िन्–दना ख़ज़ाइनुहू व मा नुनज़्ज़िलुहू इल्ला बि–क़्–दरिम् मअ़लूम(21)व अर्सल्नर् रिया–ह् लवाक़ि–ह् फ़–अन्ज़ल्ना मिनस्समाइ माअन् फ़–अस्क़ैना–कुमूहु व मा अन्तुम् लहू बिख़ाज़िनीन(22)व इन्ना ल–नह़्नु नुह़्यी व नुमीतु व नह़्नुल् वारिसून(23)व ल–क़द् अ़लिम्नल् मुस्तक़्दिमी–न मिन्कुम् व ल–क़द् अ़लिम्नल् मुस्तअख़िरीन(24)व इन्–न रब्ब–क हु–व यह़्शुरुहुम् इन्नहू ह़कीमुन् अ़लीम(25)व ल–क़द् ख़–लक़्नल् इन्सा–न मिन् स़ल्स़ालिम् मिन् ह़–मइम् मस्नून(26)वल्जान्–न ख़–लक़्नाहु मिन् क़ब्लु मिन्नारिस् समूम(27)व इज़् क़ा–ल रब्बु–क लिल्मलाइ–कति इन्नी ख़ालिक़ुम् ब–श–रम् मिन्

हमने आसमान में बुर्ज बनाए (फ़ा19) और उसे देखने वालों के लिए आरास्ता किया।(16) (फ़ा20) और उसे हमने हर शैतान मरदूद से महफ़ूज़ रखा।(17) (फ़ा21) मगर जो चोरी छुपे सुनने जाए तो उसके पीछे पड़ता है रौशन शोअ़्ला।(18) (फ़ा22) और हमने ज़मीन फैलाई और उसमें लंगर डाले (फ़ा23) और उसमें हर चीज़ अंदाज़े से उगाई। (19) और तुम्हारे लिए उसमें रोज़ियाँ कर दीं (फ़ा24) और वह कर दिये जिन्हें तुम रिज़्क़ नहीं देते। (20) (फ़ा25) और कोई चीज़ नहीं जिसके हमारे पास ख़ज़ाने न हों (फ़ा26) और हम उसे नहीं उतारते मगर एक मालूम अंदाज़े से।(21) और हमने हवायें भेजीं बादलों को बारवर करने वालियां (फ़ा27) तो हमने आसमान से पानी उतारा फिर वह तुम्हें पीने को दिया और तुम कुछ उसके ख़ज़ान्ची नहीं।(22) (फ़ा28) और बेशक हमीं जिलायें और हमीं मारें और हमीं वारिस हैं।(23) (फ़ा29) और बेशक हमें मालूम हैं जो तुम में आगे बढ़े और बेशक हमें मालूम हैं जो तुम में पीछे रहे।(24) (फ़ा30) और बेशक तुम्हारा रब ही उन्हें क़ियामत में उठाएगा (फ़ा31) बेशक वही इल्म व हिकमत वाला है।(25)(रुकूअ़ 2)और बेशक हमने आदमी को(फ़ा32)बजती हुई मिट्टी से बनाया जो अस्ल में एक सियाह बू दार गारा थी।(26)(फ़ा33)और जिन्न को उससे पहले बनाया बे धुयें की आग से।(27)(फ़ा34)और याद करो जब तुम्हारे रब ने फ़रिश्तों से फ़रमाया कि मैं आदमी को बनाने वाला हूं

(फ़ा19) जो कवाकिब सय्यारा के मनाज़िल हैं वह बारह हैं हमल, सौर, जौज़ा, सरतान, असद, सुंबुला, मीज़ान, अ़क़रब, क़ौस, जदी, दलू, हूत (फ़ा20) सितारों से (फ़ा21) हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा ने फ़रमाया शयातीन आसमानों में दाख़िल होते थे और वहां की ख़बरें काहिनों के पास लाते थे जब हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम पैदा हुए तो शयातीन तीन आसमानों से रोक दिये गए जब सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की विलादत हुई तो तमाम आसमानों से मना कर दिये गए। (फ़ा22) शहाब उस सितारा को कहते हैं जो शोअ़्ला के मिस्ल रौशन होता है और फ़रिश्ते उससे शयातीन को मारते हैं (फ़ा23) पहाड़ों के ताकि साबित व क़ाइम रहे और जुम्बिश न करे। (फ़ा24) ग़ल्ले फल वग़ैरह (फ़ा25) बांदी ग़ुलाम चौपाए और ख़ुद्दाम वग़ैरह (फ़ा26) ख़ज़ाने होना इबारत है इक़्तेदार व इख़्तियार से माना यह हैं कि हम हर चीज़ के पैदा करने पर क़ादिर हैं जितनी चाहें और जो अन्दाज़ा मुक़्तज़ाए हिकमत हो। (फ़ा27) जो आबादियों को पानी से भरती और सैराब करती हैं। (फ़ा28) कि पानी तुम्हारे इख़्तियार में हो बावजूदेकि तुम्हें इसकी हाजत है इसमें अल्लाह तआ़ला की क़ुदरत और बन्दों के इज्ज़ पर दलालते अ़ज़ीमा है (फ़ा29) यानी तमाम ख़ल्क़ फ़ना होने वाली है और हमीं बाक़ी रहने वाले हैं और मुद्दईए मुल्क की मिल्क ज़ाया हो जाएगी और सब मालिकों का मालिक बाक़ी रहेगा। (फ़ा30) यानी पहली उम्मतें और उम्मते मुहम्मदिया जो **(बक़िया सफ़हा 458 पर)**

صَلْصَالٍ مِّنْ حَمَاٍ مَّسْنُوْنٍ ۝ فَاِذَا سَوَّيْتُهٗ وَنَفَخْتُ فِيْهِ مِنْ رُّوْحِيْ فَقَعُوْا لَهٗ سٰجِدِيْنَ ۝ فَسَجَدَ الْمَلٰٓئِكَةُ كُلُّهُمْ اَجْمَعُوْنَ ۝ اِلَّآ اِبْلِيْسَ ؕ اَبٰٓى اَنْ يَّكُوْنَ مَعَ
السّٰجِدِيْنَ ۝ قَالَ يٰٓاِبْلِيْسُ مَا لَكَ اَلَّا تَكُوْنَ مَعَ السّٰجِدِيْنَ ۝ قَالَ لَمْ اَكُنْ لِّاَسْجُدَ لِبَشَرٍ خَلَقْتَهٗ مِنْ صَلْصَالٍ مِّنْ حَمَاٍ مَّسْنُوْنٍ ۝ قَالَ فَاخْرُجْ مِنْهَا
فَاِنَّكَ رَجِيْمٌ ۝ وَّاِنَّ عَلَيْكَ اللَّعْنَةَ اِلٰى يَوْمِ الدِّيْنِ ۝ قَالَ رَبِّ فَاَنْظِرْنِيْٓ اِلٰى يَوْمِ يُبْعَثُوْنَ ۝ قَالَ فَاِنَّكَ مِنَ الْمُنْظَرِيْنَ ۝ اِلٰى يَوْمِ الْوَقْتِ
الْمَعْلُوْمِ ۝ قَالَ رَبِّ بِمَآ اَغْوَيْتَنِيْ لَاُزَيِّنَنَّ لَهُمْ فِي الْاَرْضِ وَلَاُغْوِيَنَّهُمْ اَجْمَعِيْنَ ۝ اِلَّا عِبَادَكَ مِنْهُمُ الْمُخْلَصِيْنَ ۝ قَالَ هٰذَا صِرَاطٌ عَلَيَّ مُسْتَقِيْمٌ ۝
اِنَّ عِبَادِيْ لَيْسَ لَكَ عَلَيْهِمْ سُلْطٰنٌ اِلَّا مَنِ اتَّبَعَكَ مِنَ الْغٰوِيْنَ ۝ وَاِنَّ جَهَنَّمَ لَمَوْعِدُهُمْ اَجْمَعِيْنَ ۝ لَهَا سَبْعَةُ اَبْوَابٍ ؕ لِكُلِّ بَابٍ مِّنْهُمْ

सल्सालिम् मिन् ह–मइम् मस्नून(28)फ़–इज़ा सव्वैतुहू व न–फ़ख़्तु फ़ीहि मिर्–रूही फ़–क़ऊ लहू साजिदीन(29)फ़–स–ज–दल् मलाइ–कतु कुल्लुहुम् अज्मऊन(30)इल्ला इब्ली–स अबा अंय्यकू–न म–अ़स्साजिदीन(31)क़ा–ल या इब्लीसु मा–ल–क अल्ला तकू–न म–अ़स्साजिदीन(32)क़ा–ल लम् अ–कुल् लि–अस्जु–द लि–ब–शरिन् ख़–लक़्तहू मिन् स़ल्स़ालिम् मिन् ह–मइम् मस्नून(33)क़ा–ल फ़ख़्रुज् मिन्हा फ़इन्न–क रजीमुंव्(34)व इन्–न अ़लैकल् लअ्–न–त इला यौमिद्दीन(35)क़ा–ल रब्बि फ़–अन्ज़िरनी इला यौमि युब्–असून(36) क़ा–ल फ़इन्न–क मिनल् मुन्ज़रीन(37)इला यौमिल् वक़्तिल् मअ़्लूम(38)क़ा–ल रब्बि बिमा अ़ग्वै–तनी लउ–ज़य्यिनन्–न लहुम् फ़िल् अर्ज़ि व ल– उग्वियन्नहुम् अज्मईन(39) इल्ला अ़िबा–द–क मिन्हुमुल् मुख़्–लसीन(40)क़ा–ल हाज़ा सिरातुन् अ़लय्–य मुस्तक़ीम(41)इन्–न अ़िबादी लै–स ल–क अ़लैहिम् सुल्तानुन् इल्ला मनित्त–ब–अ़–क मिनल् ग़ावीन(42)व इन्–न जहन्न–म लमौअ़िदुहुम् अज्–मअ़ीन(43)हा सब्–अ़तु अब्वाबिन् लिकुल्लि बाबिम् मिन्हुम्

बजती मिट्टी से जो बदबूदार सियाह गारे से है।(28) तो जब मैं उसे ठीक कर लूं और उसमें अपनी तरफ़ की ख़ास मुअ़ज़्ज़ज़ रूह फूंक दूं(29) (फ़ा35) तो उस (फ़ा36) के लिए सज्दे में गिर पड़ना। तो जितने फ़रिश्ते थे सबके सब सज्दे में गिरे।(30) सिवा इबलीस के उसने सजदा वालों का साथ न माना।(31) (फ़ा37) फ़रमाया ऐ इबलीस तुझे क्या हुआ कि सजदा करने वालों से अलग रहा।(32) बोला मुझे ज़ेबा नहीं कि बशर को सजदा करूं जिसे तूने बजती मिट्टी से बनाया जो सियाह बूदार गारे से थी।(33) फ़रमाया तू जन्नत से निकल जा कि तू मरदूद है।(34) और बेशक क़ियामत तक तुझ पर लानत है।(35) (फ़ा38) बोला ऐ मेरे रब तू मुझे मोहलत दे उस दिन तक कि वह उठाए जायें।(36) (फ़ा39) फ़रमाया तू उनमें है जिनका(37) उस मालूम वक़्त के दिन तक मोहलत है।(38) (फ़ा40) बोला ऐ रब मेरे क़सम इसकी कि तूने मुझे गुमराह किया मैं उन्हें ज़मीन में भुलावे दूंगा (फ़ा41) और ज़रूर मैं उन सब को (फ़ा42) बे राह कर दूंगा।(39) मगर जो उनमें तेरे चुने हुए बन्दे हैं।(40) (फ़ा43) फ़रमाया यह रास्ता सीधा मेरी तरफ़ आता है।(41) बेशक मेरे (फ़ा44) बन्दों पर तेरा कुछ क़ाबू नहीं सिवा उन गुमराहों के जो तेरा साथ दें।(42) (फ़ा45) और बेशक जहन्नम उन सबका वादा है।(43) (फ़ा46) उसके सात दरवाज़े हैं (फ़ा47) हर दरवाज़े के लिए उनमे से

(फ़ा35) और उसको हयात अ़ता फ़रमा दूं (फ़ा36) की तहिय्यत व ताज़ीम (फ़ा37) और हज़रत आदम अ़लैहिस्सलाम को सजदा न किया तो अल्लाह तआ़ला ने (फ़ा38) कि आसमान व ज़मीन वाले तुझ पर लानत करेंगे और जब क़ियामत का दिन आएगा तो उस लानत के साथ हमेशगी के अ़ज़ाब में गिरिफ़्तार किया जाएगा जिससे कभी रिहाई न होगी यह सुन कर शैतान (फ़ा39) यानी क़ियामत के दिन तक इससे शैतान का मतलब यह था कि वह कभी न मरे क्योंकि क़ियामत के बाद कोई न मरेगा और क़ियामत तक की उसने मुहलत मांग ही ली लेकिन उसकी इस दुआ़ को अल्लाह तआ़ला ने इस तरह क़बूल किया कि (फ़ा40) जिस में तमाम ख़ल्क़ मर जाएगी और वह नफ़ख़ए औला है तो शैतान के मुर्दा रहने की मुद्दत नफ़ख़ए औला से नफ़ख़ए सानिया तक चालीस बरस है और उसको इस क़दर मुहलत देना उस के इकराम के लिए नहीं बल्कि उसकी बला व शक़ावत और अ़ज़ाब की ज़्यादती के लिए है यह सुन कर शैतान (फ़ा41) यानी दुनिया में गुनाहों की रग़बत दिलाऊंगा। (फ़ा42) दिलों में वसवसा डाल कर (फ़ा43) जिन्हें तूने अपनी तौहीद व इबादत के लिए बरगुज़ीदा फ़रमा लिया उन पर शैतान का वसवसा और **(बक़िया सफ़हा 458 पर)**

جُزْءٌ مَّقْسُومٌ ﴿٤٤﴾ إِنَّ الْمُتَّقِينَ فِي جَنّٰتٍ وَّعُيُونٍ ﴿٤٥﴾ اُدْخُلُوهَا بِسَلٰمٍ اٰمِنِينَ ﴿٤٦﴾ وَنَزَعْنَا مَا فِي صُدُورِهِم مِّنْ غِلٍّ إِخْوَانًا عَلٰى سُرُرٍ مُّتَقٰبِلِينَ ﴿٤٧﴾ لَا يَمَسُّهُمْ
فِيهَا نَصَبٌ وَّمَا هُم مِّنْهَا بِمُخْرَجِينَ ﴿٤٨﴾ نَبِّئْ عِبَادِي أَنِّي أَنَا الْغَفُورُ الرَّحِيمُ ﴿٤٩﴾ وَأَنَّ عَذَابِي هُوَ الْعَذَابُ الْأَلِيمُ ﴿٥٠﴾ وَنَبِّئْهُمْ عَن ضَيْفِ إِبْرٰهِيمَ ﴿٥١﴾ إِذْ دَخَلُوا
عَلَيْهِ فَقَالُوا سَلٰمًا قَالَ إِنَّا مِنكُمْ وَجِلُونَ ﴿٥٢﴾ قَالُوا لَا تَوْجَلْ إِنَّا نُبَشِّرُكَ بِغُلٰمٍ عَلِيمٍ ﴿٥٣﴾ قَالَ أَبَشَّرْتُمُونِي عَلٰى أَن مَّسَّنِيَ الْكِبَرُ فَبِمَ تُبَشِّرُونَ ﴿٥٤﴾ قَالُوا
بَشَّرْنٰكَ بِالْحَقِّ فَلَا تَكُن مِّنَ الْقٰنِطِينَ ﴿٥٥﴾ قَالَ وَمَن يَّقْنَطُ مِن رَّحْمَةِ رَبِّهِ إِلَّا الضَّالُّونَ ﴿٥٦﴾ قَالَ فَمَا خَطْبُكُمْ أَيُّهَا الْمُرْسَلُونَ ﴿٥٧﴾ قَالُوا إِنَّا أُرْسِلْنَا
إِلٰى قَوْمٍ مُّجْرِمِينَ ﴿٥٨﴾ إِلَّا اٰلَ لُوطٍ إِنَّا لَمُنَجُّوهُمْ أَجْمَعِينَ ﴿٥٩﴾ إِلَّا امْرَأَتَهُ قَدَّرْنَا إِنَّهَا لَمِنَ الْغٰبِرِينَ ﴿٦٠﴾ فَلَمَّا جَاءَ اٰلَ لُوطٍ الْمُرْسَلُونَ ﴿٦١﴾ قَالَ إِنَّكُمْ قَوْمٌ

जुज़्उम् मक़्सूम(44)इन्नल् मुत्तक़ी–न फ़ी जन्नातिंव् व अुयून(45)उद्ख़ुलूहा बि–सलामिन् आमिनीन (46)व न–ज़अ्ना मा फ़ी सुदूरिहिम् मिन् ग़िल्लिन् इख़्वानन् अ़ला सुरुरिम् मु–तक़ाबिलीन(47)ला यमस्सुहुम् फ़ीहा न–स–बुंव् व मा हुम् मिन्हा बिमुख़्–रजीन(48)नब्बिअ् अ़िबादी अन्नी अ–नल् ग़फ़ूरुर्रहीम(49)व अन्–न अ़ज़ाबी हुवल्अ़ज़ाबुल् अलीम(50)व नब्बिअ्हुम् अ़न् ज़ैफ़ि इब्राहीम (51)इज़् द–ख़लू अ़लैहि फ़–क़ालू सलामन् क़ा–ल इन्ना मिन्कुम् वजिलून(52)क़ालू ला तौजल् इन्ना नुबश्शिरु–क बिगुलामिन् अ़लीम(53)क़ा–ल अ–बश्शर् तुमूनी अ़ला अम्मस्सनियल् कि–बरु फ़बि–म तुबश्शिरून(54)क़ालू बश्शर्ना–क बिल्हक़्क़ि फ़ला तकुम् मिनल् क़ानितीन(55)क़ा–ल व मंय्यक़्–नतु मिर्रह्मति रब्बिही इल्लज़्ज़ाल्लून(56)क़ा–ल फ़मा ख़त्बुकुम् अय्युहल् मुर्–सलून (57)क़ालू इन्ना उर्सिल्ना इला क़ौमिम् मुज्रिमीन(58)इल्ला आ–ल लूतिन्इन्ना लमुनज्जूहुम् अज्–मअ़ीन(59) इल्लम्–र–अ–तहू क़द्दर्ना इन्नहा लमिनल् ग़ाबिरीन(60)फ़–लम्मा जा–अ आ–ल लूतिनिल् मुर्–सलू(61)क़ा–ल इन्नकुम् क़ौमुम्

एक हिस्सा बटा हुआ है।(44) (फ़ा48) (रुकूअ़ 3) बेशक डर वाले बाग़ों और चश्मों में है।(45)(फ़ा49) उनमें दाख़िल हो सलामती के साथ अमान में।(46) (फ़ा50) और हमने उनके सीनों में जो कुछ (फ़ा51) कीने थे सब खींच लिये (फ़ा52) आपस में भाई हैं (फ़ा53) तख़्तों पर रू बरू बैठें।(47) न उन्हें उसमें कुछ तकलीफ़ पहुंचे न वह उसमें से निकाले जायें।(48) ख़बर दो (फ़ा54) मेरे बन्दों को कि बेशक मैं ही हूं बख़्शने वाला मेहरबान।(49) और मेरा ही अ़ज़ाब दर्दनाक अ़ज़ाब है।(50) और उन्हें अहवाल सुनाओ इब्राहीम के मेहमानों का।(51) (फ़ा55) जब वह उसके पास आए तो बोले सलाम (फ़ा56) कहा हमें तुम से डर मालूम होता है।(52) (फ़ा57) उन्होंने कहा डरिये नहीं हम आपको एक इल्म वाले लड़के की बशारत देते हैं।(53) (फ़ा58) कहा क्या इस पर मुझे बशारत देते हो कि मुझे बुढ़ापा पहुंच गया अब काहे पर बशारत देते हो।(54) (फ़ा59) कहा हमने आपको सच्ची बशारत दी है (फ़ा60) आप ना–उम्मीद न हों।(55) कहा अपने रब की रहमत से कौन ना–उम्मीद हो मगर वही जो गुमराह हुए।(56) (फ़ा61) कहा फिर तुम्हारा क्या काम है ऐ फ़रिश्तो।(57) (फ़ा62) बोले हम एक मुजरिम क़ौम की तरफ़ भेजे गए हैं।(58) (फ़ा63) मगर लूत के घर वाले उन सबको हम बचा लेंगे।(59) (फ़ा64) मगर उसकी औरत हम ठहरा चुके हैं कि वह पीछे रह जाने वालों में है। (60) (फ़ा65) (रुकूअ़ 4) तो जब लूत के घर फ़रिश्ते आए।(61) (फ़ा66) कहा तुम तो कुछ

(फ़ा48) यानी शैतान की पैरवी करने वाले भी सात हिस्सों में मुनक़सिम हैं उन में से हर एक के लिए जहन्नम का एक दरका मुअ़य्यन है। (फ़ा49) उन से कहा जाएगा कि (फ़ा50) यानी जन्नत में दाख़िल हो अमन व सलामती के साथ न यहां से निकाले जाओ न मौत आये न कोई आफ़त रोनुमा हो न कोई ख़ौफ़ न परेशानी (फ़ा51) दुनिया में (फ़ा52) और उनके नुफ़ूस को हक़्द व हसद व अ़ेनाद व अ़दावत वग़ैरह मज़मूम ख़सलतों से पाक कर दिया वह (फ़ा53) एक दूसरे के साथ मुहब्बत करने वाले हज़रत अली मुर्तज़ा रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने फ़रमाया कि मुझे उम्मीद है कि मैं और उसमान और तलहा और ज़ुबैर इन्हीं में से हैं यानी हमारे सीनों से इनाद व अ़दावत और बुग़्ज़ व हसद निकाल दिया गया है हम आपस में ख़ालिस मुहब्बत रखने वाले हैं इसमें रवाफ़िज़ का रद है। (फ़ा54) ऐ मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम (फ़ा55) जिन्हें अल्लाह तआ़ला ने इस लिए भेजा था कि हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम को फ़रज़न्द की बशारत दें और हज़रत लूत अ़लैहिस्सलाम (**बक़िया सफ़हा 458 पर**)

مُّنكَرُوْنَ ۝٦٢ قَالُوْا بَلْ جِئْنٰكَ بِمَا كَانُوْا فِيْهِ يَمْتَرُوْنَ ۝٦٣ وَاَتَيْنٰكَ بِالْحَقِّ وَاِنَّا لَصٰدِقُوْنَ ۝٦٤ فَاَسْرِ بِاَهْلِكَ بِقِطْعٍ مِّنَ الَّيْلِ وَاتَّبِعْ اَدْبَارَهُمْ وَلَا
يَلْتَفِتْ مِنْكُمْ اَحَدٌ وَّامْضُوْا حَيْثُ تُؤْمَرُوْنَ ۝٦٥ وَقَضَيْنَآ اِلَيْهِ ذٰلِكَ الْاَمْرَ اَنَّ دَابِرَ هٰٓؤُلَآءِ مَقْطُوْعٌ مُّصْبِحِيْنَ ۝٦٦ وَجَآءَ اَهْلُ الْمَدِيْنَةِ
يَسْتَبْشِرُوْنَ ۝٦٧ قَالَ اِنَّ هٰٓؤُلَآءِ ضَيْفِيْ فَلَا تَفْضَحُوْنِ ۝٦٨ وَاتَّقُوا اللّٰهَ وَلَا تُخْزُوْنِ ۝٦٩ قَالُوْٓا اَوَلَمْ نَنْهَكَ عَنِ الْعٰلَمِيْنَ ۝٧٠ قَالَ هٰٓؤُلَآءِ بَنٰتِيْٓ اِنْ كُنْتُمْ
فٰعِلِيْنَ ۝٧١ لَعَمْرُكَ اِنَّهُمْ لَفِيْ سَكْرَتِهِمْ يَعْمَهُوْنَ ۝٧٢ فَاَخَذَتْهُمُ الصَّيْحَةُ مُشْرِقِيْنَ ۝٧٣ فَجَعَلْنَا عَالِيَهَا سَافِلَهَا وَاَمْطَرْنَا عَلَيْهِمْ حِجَارَةً مِّنْ سِجِّيْلٍ ۝٧٤
اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّلْمُتَوَسِّمِيْنَ ۝٧٥ وَاِنَّهَا لَبِسَبِيْلٍ مُّقِيْمٍ ۝٧٦ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً لِّلْمُؤْمِنِيْنَ ۝٧٧ وَاِنْ كَانَ اَصْحٰبُ الْاَيْكَةِ لَظٰلِمِيْنَ ۝٧٨ فَانْتَقَمْنَا

मुन्करून(62)क़ालू बल् जिअ्ना–क बिमा कानू फ़ीहि यम्तरून(63)व अतैना–क बिल्हक़्क़ि व इन्ना लसादिकून(64)फ़–अस्रि बि–अह्लि–क बिक़ित्अिम् मिनल्लैलि वत्तबिअ् अदबा–रहुम् व ला यल्तफ़ित् मिन्कुम् अ–हदुंव् वम्ज़ू हैसु तुअ्–मरून(65)व क़ज़ैना इलैहि ज़ालिकल् अम्–र अन्–न दाबि–र हाउलाइ मक़्तूअुम् मुस्बिहीन(66)व जा–अ अह्लुल् मदी–नति यस्तब्शिरून (67)क़ा–ल इन्–न हाउलाइ ज़ैफ़ी फ़ला तफ़्ज़हून(68)वत्तकुल्ला–ह वला तुख़्ज़ू न(69)क़ालू अ–व लम् नन्–ह–क अनिल् आ–लमीन(70)क़ा–ल हाउलाइ बनाती इन् कुन्तुम् फ़ाअिलीन(71) ल–अम्रु–क इन्नहुम् लफ़ी सक्–रतिहिम् यअ्–महून(72)फ़–अ–ख़–ज़त्हुमुस् सै–हतु मुश्रिक़ीन(73) फ़–ज–अल्ना आलि–यहा साफ़ि–लहा व अम्तरना अलैहिम् हिजा–र–तम् मिन् सिज्जील(74)इन्–न फ़ी ज़ालि–क लआया–तिल् लिल्मु–त–वस्सिमीन(75)व इन्नहा लबि–सबीलिम् मुक़ीम(76)इन्–न फ़ी ज़ालि–क लआ–यतल् लिल् मुअ्मिनीन(77)व इन् का–न अस्हाबुल् ऐ–कति लज़ालिमीन (78)फ़न्त–क़म्ना

बेगाना लोग हो।(62) (फ़ा67) कहा बल्कि हम तो आपके पास वह (फ़ा68) लाए हैं जिसमें यह लोग शक करते थे।(63) (फ़ा69) और हम आपके पास सच्चा हुक्म लाए हैं और हम बेशक सच्चे हैं।(64) तो अपने घर वालों को कुछ रात रहे लेकर बाहर जाईये और आप उनके पीछे चलिये और तुम में कोई पीछे फिर कर न देखे (फ़ा70) और जहां को हुक्म है सीधे चले जाईये।(65) (फ़ा71) और हमने उसे उस हुक्म का फ़ैसला सुना दिया कि सुबह होते उन काफ़िरों की जड़ कट जाएगी।(66) (फ़ा72) और शहर वाले (फ़ा73) खुशियाँ मनाते आए।(67) लूत ने कहा यह मेरे मेहमान हैं (फ़ा74) मुझे फ़ज़ीहत न करो।(68) (फ़ा75) और अल्लाह से डरो और मुझे रुसवा न करो।(69) (फ़ा76) बोले क्या हमने तुम्हें मना न किया था कि औरों के मुआमला में दख़ल न दो।(70) कहा यह क़ौम की औरतें मेरी बेटियां हैं अगर तुम्हें करना है।(71) (फ़ा77) ऐ महबूब तुम्हारी जान की क़सम (फ़ा78) बेशक वह अपने नशा में भटक रहे हैं।(72) तो दिन निकलते उन्हें चिंघाड़ ने आ लिया।(73) (फ़ा79) तो हमने उस बस्ती का ऊपर का हिस्सा उसके नीचे का हिस्सा कर दिया (फ़ा80) और उन पर कंकर के पत्थर बरसाए।(74) बेशक इसमें निशानियाँ हैं फ़रासत वालों के लिए।(75) और बेशक वह बस्ती उस राह पर है जो अब तक चलती है।(76) (फ़ा81) बेशक उसमे निशानियां हैं ईमान वालों को।(77) और बेशक झाड़ी वाले ज़रूर ज़ालिम थे।(78) (फ़ा82) तो हमने

(फ़ा67) न तो यहां के बाशिन्दे हो न कोई मुसाफ़रत की अलामत तुम में पाई जाती है क्यों आये हो फ़रिश्तों ने। (फ़ा68) अ़ज़ाब जिसके नाज़िल होने का आप अपनी क़ौम को ख़ौफ़ दिलाया करते थे। (फ़ा69) और आप को झुठलाते थे (फ़ा70) कि क़ौम पर क्या बला नाज़िल हुई और वह किस अ़ज़ाब में मुब्तला किये गए। (फ़ा71) हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा ने फ़रमाया कि हुक्म मुल्के शाम को जाने का था। (फ़ा72) और तमाम क़ौम अ़ज़ाब से हलाक कर दी जाएगी (फ़ा73) यानी शहर सुदूम के रहने वाले हज़रत लूत अ़लैहिस्सलातु वस्सलाम की क़ौम के लोग हज़रत लूत अ़लैहिस्सलातु वस्सलाम के यहां ख़ूबसूरत नौजवानों के आने की ख़बर सुनकर ब-इरादए फ़ासिद व ब-नीयते नापाक। (फ़ा74) और मेहमान का इकराम लाज़िम होता है तुम उनकी बेहुरमती का क़स्द करके। (फ़ा75) कि मेहमान की रुसवाई मेज़बान के लिए ख़जालत व शर्मिन्दगी का सबब होती है। (फ़ा76) उनके साथ बुरा इरादा करके उस पर क़ौम के लोग हज़रत लूत अ़लैहिस्सलाम से (फ़ा77) तो उन से निकाह करो और हराम से बाज़ रहो अब अल्लाह तआ़ला अपने हबीबे अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से ख़िताब फ़रमाता है (फ़ा78) और मख़्लूक़े इलाही में से कोई जान बारगाहे इलाही में आपकी जाने पाक की तरह इ़ज़्ज़त व हुरमत नहीं **(बक़िया सफ़हा 458 पर)**

مِنْهُمْ ۘ وَإِنَّهُمَا لَبِإِمَامٍ مُّبِينٍ ﴿٧٩﴾ وَلَقَدْ كَذَّبَ أَصْحَابُ الْحِجْرِ الْمُرْسَلِينَ ﴿٨٠﴾ وَآتَيْنَاهُمْ آيَاتِنَا فَكَانُوا عَنْهَا مُعْرِضِينَ ﴿٨١﴾ وَكَانُوا يَنْحِتُونَ

مِنَ الْجِبَالِ بُيُوتًا آمِنِينَ ﴿٨٢﴾ فَأَخَذَتْهُمُ الصَّيْحَةُ مُصْبِحِينَ ﴿٨٣﴾ فَمَا أَغْنَىٰ عَنْهُم مَّا كَانُوا يَكْسِبُونَ ﴿٨٤﴾ وَمَا خَلَقْنَا السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَا إِلَّا

بِالْحَقِّ ۗ وَإِنَّ السَّاعَةَ لَآتِيَةٌ ۖ فَاصْفَحِ الصَّفْحَ الْجَمِيلَ ﴿٨٥﴾ إِنَّ رَبَّكَ هُوَ الْخَلَّاقُ الْعَلِيمُ ﴿٨٦﴾ وَلَقَدْ آتَيْنَاكَ سَبْعًا مِّنَ الْمَثَانِي وَالْقُرْآنَ الْعَظِيمَ ﴿٨٧﴾

لَا تَمُدَّنَّ عَيْنَيْكَ إِلَىٰ مَا مَتَّعْنَا بِهِ أَزْوَاجًا مِّنْهُمْ وَلَا تَحْزَنْ عَلَيْهِمْ وَاخْفِضْ جَنَاحَكَ لِلْمُؤْمِنِينَ ﴿٨٨﴾ وَقُلْ إِنِّي أَنَا النَّذِيرُ الْمُبِينُ ﴿٨٩﴾ كَمَا أَنزَلْنَا

عَلَى الْمُقْتَسِمِينَ ﴿٩٠﴾ الَّذِينَ جَعَلُوا الْقُرْآنَ عِضِينَ ﴿٩١﴾ فَوَرَبِّكَ لَنَسْأَلَنَّهُمْ أَجْمَعِينَ ﴿٩٢﴾ عَمَّا كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿٩٣﴾ فَاصْدَعْ بِمَا تُؤْمَرُ وَأَعْرِضْ عَنِ

الْمُشْرِكِينَ ﴿٩٤﴾ إِنَّا كَفَيْنَاكَ الْمُسْتَهْزِئِينَ ﴿٩٥﴾ الَّذِينَ يَجْعَلُونَ مَعَ اللَّهِ إِلَٰهًا آخَرَ ۚ فَسَوْفَ يَعْلَمُونَ ﴿٩٦﴾ وَلَقَدْ نَعْلَمُ أَنَّكَ يَضِيقُ صَدْرُكَ بِمَا يَقُولُونَ ﴿٩٧﴾

فَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ وَكُن مِّنَ السَّاجِدِينَ ﴿٩٨﴾ وَاعْبُدْ رَبَّكَ حَتَّىٰ يَأْتِيَكَ الْيَقِينُ ﴿٩٩﴾

मिन्हुम् व इन्नहुमा लबि–इमामिम् मुबीन(79)व ल–क़द् कज़्ज़–ब अस्हाबुल् हिज्रिल् मुर्– सलीन (80)व आतैनाहुम् आयातिना फ़कानू अ़न्हा मुअ़रिज़ीन(81)व कानू यन्हितू–न मिनल्–जिबालि बुयूतन् आमिनीन(82)फ़–अ–ख़–ज़त्हुमुस् सै–हतु मुस्बिहीन(83)फ़मा अग़्ना अ़न्हुम् मा कानू यक्सिबून(84)व मा ख़–लक़्नस् समावाति वल्अर्–ज़ व मा बै–नहुमा इल्ला बिल् हक़्क़ि व इन्नस्सा–अ़–त लआति–यतुन् फ़स्फ़हिस् सफ़्हल् जमील(85)इन्–न रब्ब–क हुवल्ख़ल्लाकुल् अ़लीम(86)व ल–क़द् आतैना–क सबअ़म् मिनल्मसानी वल्क़ुरआनल् अ़ज़ीम(87)ला तमुददन्–न अ़ैनै–क इला मा मत्तअ़्ना बिही अज़्वाजम् मिन्हुम् व ला तह्ज़न् अ़लैहिम् वख़्फ़िज़् जना–ह–क लिल्–मुअ्मिनीन(88)व क़ुल् इन्नी अ–नन्नज़ीरुल् मुबीन(89)कमा अन्ज़ल्ना अ़–ललमुक़्तसिमीन(90)अल्लज़ी–न ज–अ़लुल् क़ुरआ–न अ़िज़ीन(91)फ़–व रब्बि–क ल–नस्अ–लन्नहुम् अज्मअ़ीन (92)अ़म्मा कानू यअ़्–मलून(93) फ़स्दअ़् बिमा तुअ्मरु व अअ़्रिज़् अ़निल् मुश्रिकीन(94)इन्ना कफ़ैनाकल् मुस्तह्ज़िईन(95) अल्लज़ी–न यज्अ़लू–न म–अ़ल्लाहि इलाहन् आ–ख़–र फ़सौ–फ़ यअ़्–लमून(96)व ल–क़द् नअ़्लमु अन्न–क युज़ीक़ु सद्रु–क बिमा यक़ूलून(97)फ़सब्बिह् बि–हम्दि रब्बि–क व कुम् मिनस्साजिदीन(98) वअ़्बुद् रब्ब–क हत्ता यअ्ति–य–कल् यक़ीन(99)

उनसे बदला लिया (फ़ा83) और बेशक यह दोनों बस्तियां (फ़ा84) खुले रास्ता पर पड़ती हैं।(79) (फ़ा85) (रुकूअ़ 5) और बेशक हिज्र वालों ने रसूलों को झुठलाया।(80) (फ़ा86) और हमने उनको अपनी निशानियाँ दीं (फ़ा87) तो वह उनसे मुंह फेरे रहे।(81) (फ़ा88) और वह पहाड़ों में घर तराशते थे बे-ख़ौफ़।(82) (फ़ा89) तो उन्हें सुबह होते चिंघाड़ ने आ लिया।(83) (फ़ा90) तो उनकी कमाई कुछ उनके काम न आई।(84) (फ़ा91) और हमने आसमान और ज़मीन और जो कुछ उनके दर्मियान हैं अ़बस न बनाया और बेशक क़ियामत आने वाली है (फ़ा92) तो तुम अच्छी तरह दरगुज़र करो।(85) (फ़ा93) बेशक तुम्हारा रब ही बहुत पैदा करने वाला जानने वाला है।(86) (फ़ा94) और बेशक हमने तुमको सात आयतें दीं जो दोहराई जाती हैं (फ़ा95) और अ़ज़मत वाला क़ुरआन।(87) अपनी आंख उठा कर उस चीज़ को न देखो जो हमने उनके कुछ जोड़ों को बरतने को दी (फ़ा96) और उनका कुछ ग़म न खाओ (फ़ा97) और मुसलमानों को अपने रहमत के परों में ले लो।(88) (फ़ा98) और फ़रमाओ कि मैं ही हूं साफ़ डर सुनाने वाला (उस अ़ज़ाब से)।(89) जैसा हमने बांटने वालों पर उतारा।(90) जिन्होंने कलामे इलाही को तिक्के बोटी कर लिया।(91) (फ़ा99) तो तुम्हारे रब की क़सम हम ज़रूर उन सब से पूछेंगे।(92) (फ़ा100) जो कुछ वह करते थे।(93) (फ़ा101) तो एलानिया कह दो जिस बात का तुम्हें हुक्म है (फ़ा102) और मुश्रिकों से मुंह फेर लो।(94) (फ़ा103) बेशक इन हंसने वालों पर हम तुम्हें किफ़ायत करते हैं।(95)(फ़ा104)जो अल्लाह के साथ दूसरा मअ़बूद ठहराते हैं तो अब जान जायेंगे।(96)(फ़ा105)और बेशक हमें मालूम है कि उनकी बातों से तुम दिल तंग होते हो।(97) (फ़ा106) तो अपने रब को सराहते हुए उसकी पाकी बोलो और सजदा वालों में हो।(98)(फ़ा107)और मरते दम तक अपने रब की इबादत में रहो।(99)(रुकूअ़ 6)

(फ़ा83)यानी अ़ज़ाब भेज कर हलाक किया (फ़ा84) यानी क़ौमे लूत के शहर और असहाबे ऐ-कता के (फ़ा85) जहां आदमी गुज़रते हैं और देखते हैं तो ऐ अहले मक्का तुम उनको देख कर क्यों इबरत हासिल नहीं करते। (फ़ा86) हिज्र एक वादी है मदीना और शाम के दर्मियान जिस में क़ौमे सुमूद रहते थे उन्होंने अपने पैग़म्बर हज़रत सालेह अ़लैहिस्सलाम की तकज़ीब की और एक नबी की तकज़ीब तमाम अम्बिया की तकज़ीब है क्योंकि हर रसूल तमाम अम्बिया पर ईमान लाने की दावत देता है (फ़ा87) कि पत्थर से नाक़ा पैदा किया जो बहुत से अ़जाइब पर मुश्तमिल था मसलन उसका अ़ज़ीमुलजस्सा होना और पैदा होते ही बच्चा जनना और कसरत से दूध देना कि तमाम क़ौम समूद को काफ़ी हो वग़ैरह यह सब हज़रत सालेह अ़लैहिस्सलाम के मोअ.जेज़ात और क़ौमे समूद के लिए हमारी निशानियां थीं। (फ़ा88) और ईमान न लाये (फ़ा89) कि उन्हें इसके गिरने और उसमें नक़्ब लगाये जाने का अन्देशा न था और वह समझते थे कि यह घर तबाह नहीं हो सकते उन पर कोई आफ़त नहीं आ सकती। (फ़ा90) और वह अ़ज़ाब में गिरिफ़्तार हुए। (फ़ा91) और उनके माल व मताअ. और उनके मज़बूत मकान उन्हें अ़ज़ाब से न बचा सके। (फ़ा92) और हर एक को उसके अ़मल की जज़ा मिलेगी। (फ़ा93) ऐ मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम और अपनी क़ौम की ईज़ाओं पर तहम्मुल करो यह हुक्म आयते क़िताल से मन्सूख़ हो गया। (फ़ा94) उसी ने सबको पैदा किया और वह अपनी मख़्लूक़ के तमाम हाल जानता है। (फ़ा95) नमाज़ की रकअ़तों में यानी हर रकअ़त में पढ़ी जाती हैं और इन सात आयतों से सूरत फ़ातिहा मुराद है जैसा कि बुख़ारी व मुस्लिम की हदीसों में वारिद हुआ। (फ़ा96) माना यह हैं कि ऐ सय्यदे अम्बिया सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम हम ने आपको ऐसी निअ़मतें अ़ता फ़रमाईं जिनके सामने दुनियवी नेअ़मतें हक़ीर हैं तो आप मताअ़े दुनिया से मुस्तग़नी रहें जो यहूदो नसारा वग़ैरह मुख़्तलिफ़ क़िस्म के काफ़िरों को दी गईं हदीस शरीफ़ में है सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि हम में से नहीं जो क़ुरआन की बदौलत हर चीज़ से मुस्तग़नी न हो गया यानी क़ुरआन ऐसी निअ़मत है जिसके सामने दुनियवी निअ़मतें हेच हैं। (फ़ा97) कि वह ईमान न लाये (फ़ा98) और उन्हें अपने करम से नवाज़ो (फ़ा99) हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा ने फ़रमाया कि बांटने वालों से यहूद व नसारा मुराद हैं चूंकि वह क़ुरआने करीम के कुछ हिस्सा पर ईमान लाये जो उनके ख़्याल में उन की किताबों के मुवाफ़िक़ था और कुछ के मुन्किर हो गए। क़तादा व इब्ने साइब का क़ौल है कि बांटने वालों से कुफ़्फ़ारे क़ुरैश मुराद हैं जिन में बाज़ क़ुरआन को सहर बाज़ कहानत बाज़ अफ़साना कहते थे इस तरह उन्होंने क़ुरआने करीम के हक़ में अपने अक़वाल तक़सीम कर रखे थे और एक क़ौल यह है कि बांटने वालों से वह बारह अश्ख़ास मुराद हैं जिन्हें कुफ़्फ़ार ने मक्का मुकर्रमा के रास्तों पर मुक़र्रर किया था हज के ज़माना में हर रास्ता पर उन में का एक एक शख़्स बैठ जाता था और वह आने वालों को बहकाने और सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से मुनहरिफ़ करने के लिए एक एक बात मुक़र्रर कर लेता था कोई आने वालों से यह कहता था कि उनकी बातों में न आना वह जादूगर हैं कोई कहता वह कज़्ज़ाब हैं कोई कहता कि वह मजनून हैं कोई कहता वह काहिन हैं कोई कहता वह शायर हैं यह सुन कर लोग जब ख़ाना कअ.बा के दरवाज़ा पर आते वहां वली बिन मुग़ीरा बैठा रहता उससे नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम का हाल दरियाफ़्त करते और कहते कि हम ने मक्का मुकर्रमा आते हुए शहर के किनारे उनकी निस्बत ऐसा सुना वह कह देता कि ठीक सुना इस तरह ख़ल्क़ को बहकाते और गुमराह करते उन लोगों को अल्लाह तआ़ला ने हलाक किया। (फ़ा100) रोज़े क़ियामत (फ़ा101) और जो कुछ वह सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम और .क़ुरआन की निस्बत कहते थे (फ़ा102) इस आयत में सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को रिसालत की तबलीग़ और इस्लाम की दावत के इज़्हार का हुक्म दिया गया अब्दुल्लाह बिन ओ़बैद का क़ौल है कि इस आयत के नु.ज़ूल के वक़्त तक दावते इस्लाम एलान के साथ नहीं की जाती थी। (फ़ा103) यानी अपना दीन ज़ाहिर करने पर मुश्रिकों की मलामत करने की परवाह न करो और उनकी तरफ़ मुल्तफ़ित न हो और उनके तमस्ख़ुर व इस्तेहज़ा का ग़म न करो। (फ़ा104) कुफ़्फ़ारे क़ुरैश के पांच सरदार आ़स बिन वाइल सहमी और असवद बिन मुत्तलिब और असवद बिन अ़ब्द यग़.स और हारिस बिन क़ैस और इन सबका अफ़सर वलीद बिन मुग़ीरा मख़्ज़ूमी यह लोग नबीए करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को बहुत ईज़ा देते और आपके साथ तमस्ख़ुर व इस्तेहज़ा करते थे। असवद बिन मुत्तलिब के लिए सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने दुआ़ की थी कि या रब इसको अंधा करदे एक रोज़ सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम मस्जिदे हराम में तशरीफ़ फ़रमा थे यह पांचों आये और उन्होंने हसबे दस्तूर तअ.न व तमस्ख़ुर के कलिमात कहे और तवाफ़ में मश्ग़.ल हो गए इसी हाल में हज़रत जिबरील अमीन हज़रत की ख़िदमत में पहुंचे और उन्होंने वलीद बिन मुग़ीरा की पिन्डली की तरफ़ और आ़स के कफ़े पा की तरफ़ और असवद बिन मुत्तलिब की आंखों की तरफ़ और असवद बिन अ़ब्द यग़.स के पेट की तरफ़ और हारिस बिन क़ैस के सर की तरफ़ इशारा किया और कहा मैं इनका शर दफ़ा करूंगा चुनान्चे थोड़े अ़र्सा में यह हलाक हो गए वलीद बिन मुग़ीरा तीर फ़रोश की दुकान के पास से गुज़रा उसके तहबन्द में एक पैकान चुभा मगर उसने तकब्बुर से उसको निकालने के लिए सर नीचा न किया इससे उसकी पिन्डली में ज़ख़्म आया और उसी में मर गया। आ़स बिन वाइल के पाँव में कांटा लगा और नज़र न आया उससे पाँव वरम कर गया और यह शख़्स भी मर गया। असवद बिन मुत्तलिब की आंखों में ऐसा दर्द हुआ कि दीवार में सर मारता था इसी में मर गया और यह कहता मरा कि मुझ को मुहम्मद (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) ने क़त्ल किया। और असवद बिन अ़ब्द यग़.स को इस्तिस्क़ा हुआ और कलबी की रिवायत में है कि उसको लू लगी और उसका मुंह इस क़दर काला हो गया कि घर वालों ने न पहचाना और निकाल दिया इसी हाल में यह कहता मर गया कि मुझको मुहम्मद (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) के रब ने क़त्ल किया और हारिस बिन क़ैस की नाक से ख़ून और पीप जारी हुआ इसी में हलाक हो गया। इन्हीं के हक़ में यह आयत नाज़िल हुई (ख़ाज़िन) (फ़ा105) अपना अन्जामकार (फ़ा106) और उनके तअ़न और इस्तेहज़ा और शिर्क व कुफ़्र की बातों से आपको मलाल होता है। (फ़ा107) कि ख़ुदा परस्तों के लिए तस्बीह व इबादत में मश्ग़.ल होना ग़म का बेहतरीन इलाज है हदीस शरीफ़ में है कि जब सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को कोई अहम वाक़िआ़ पेश आता तो नमाज़ में मश्ग़.ल हो जाते।

سُوْرَةُ النَّحْلِ مَكِّيَّةٌ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

اَتٰۤى اَمْرُ اللّٰهِ فَلَا تَسْتَعْجِلُوْهُ ؕ سُبْحٰنَهٗ وَتَعٰلٰى عَمَّا يُشْرِكُوْنَ ۝ يُنَزِّلُ الْمَلٰٓئِكَةَ بِالرُّوْحِ مِنْ اَمْرِهٖ عَلٰى مَنْ يَّشَآءُ مِنْ عِبَادِهٖۤ اَنْ اَنْذِرُوْۤا اَنَّهٗ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّاۤ اَنَا فَاتَّقُوْنِ ۝ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ بِالْحَقِّ ؕ تَعٰلٰى عَمَّا يُشْرِكُوْنَ ۝ خَلَقَ الْاِنْسَانَ مِنْ نُّطْفَةٍ فَاِذَا هُوَ خَصِيْمٌ مُّبِيْنٌ ۝ وَالْاَنْعَامَ خَلَقَهَا ۚ لَكُمْ فِيْهَا دِفْءٌ وَّمَنَافِعُ وَمِنْهَا تَاْكُلُوْنَ ۝ وَلَكُمْ فِيْهَا جَمَالٌ حِيْنَ تُرِيْحُوْنَ وَحِيْنَ تَسْرَحُوْنَ ۝ وَتَحْمِلُ اَثْقَالَكُمْ اِلٰى بَلَدٍ

सूरतुन्नह्लि

(मक्की है इसमें 128 आयतें और 16 रुकूअ़ हैं)

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम

अता अम्रुल्लाहि फ़ला तस्तअ़्जिलूहु सुब्हा–नहू व तआ़ला अ़म्मा युश्रिकून(1)युनज़्ज़िलुल् मलाइ–क–त बिर्रूहि मिन् अम्रिही अ़ला मंय्यशाउ मिन् अ़िबादिही अन् अन्ज़िरू अन्नहू ला इला–ह इल्ला अना फ़त्तकू़न(2)ख़–ल–क़स्समावाति वल्अर्–ज़ बिल्हक़्क़ि तआ़ला अ़म्मा युश्रिकून(3)ख़–ल–क़ल् इन्सा–न मिन् नुत्फ़तिन् फ़–इज़ा हु–व ख़सीमुम् मुबीन(4)वल्अन्आ़–म ख़–ल–क़हा लकुम् फ़ीहा दिफ़्उंव् व मनाफ़िअ़ु व मिन्हा तअ्कुलून(5)व लकुम् फ़ीहा जमालुन् ही–न तुरीहू–न व ही–न तस्रहू़न(6)व तह्मिलु अस्क़ा–लकुम् इला ब–लदिल्

अल्लाह के नाम से शुरू जो बहुत मेहरबान रहम वाला।(फ़ा1)

अब आता है अल्लाह का हुक्म तो उसकी जल्दी न करो (फ़ा2) पाकी और बरतरी है उसे उनके शरीकों से।(1) (फ़ा3) मलायका को ईमान की जान यानी 'वही' लेकर अपने जिन बन्दों पर चाहे उतारता है (फ़ा4) कि डर सुनाओ कि मेरे सिवा किसी की बन्दगी नहीं तो मुझ से डरो।(2) (फ़ा5) उसने आसमान और ज़मीन बजा बनाए (फ़ा6) वह उनके शिर्क से बरतर है।(3)(उसने) आदमी को एक निथरी बूंद से बनाया (फ़ा7) तो जभी खुला झगड़ालू है।(4) और चौपाए पैदा किये उनमें तुम्हारे लिए गरम लिबास और मनफ़अ़तें हैं(फ़ा8) और उनमें से खाते हो।(5) और तुम्हारा उनमें तजम्मुल है जब उन्हें शाम को वापस लाते हो और जब चरने को छोड़ते हो।(6) और वह तुम्हारे बोझ उठा कर ले जाते हैं ऐसे शहर

(फ़ा1) सूरह नहल मक्की है मगर आयत *फ़–आ़क़िबू बिमिस्लि माऊक़िब्तुम् बिही* से आख़िर सूरह तक जो आयात हैं वह मदीना तय्येबा में नाज़िल हुईं और इसमें और अक़वाल भी हैं इस सूरत में 16 रुकूअ़ और 128 आयतें और 2840 कलिमे और 7707 हरफ़ हैं (फ़ा2) शाने नुज़ूलः जब कुफ़्फ़ार ने अज़ाबे मौऊद के नुज़ूल और क़ियामत के क़ाइम होने की बतरीक़े तकज़ीब व इस्तेहज़ा जल्दी की इस पर यह आयत नाज़िल हुई और बता दिया गया कि जिस की तुम जल्दी करते हो वह कुछ दूर नहीं बहुत ही क़रीब है और अपने वक़्त पर बिलयक़ीन वाक़ेअ़ होगा और जब वाक़ेअ़ होगा तो तुम्हें इससे ख़लास की कोई राह न मिलेगी और वह बुत जिन्हें तुम पूजते हो तुम्हारे कुछ काम न आयेंगे। (फ़ा3) वह वाहिद लाशरीक लहू है उसका कोई शरीक नहीं (फ़ा4) और उन्हें नबुव्वत व रिसालत के साथ बरगुज़ीदा करता है (फ़ा5) और मेरी ही इबादत करो और मेरे सिवा किसी को न पूजो क्योंकि मैं वह हूं कि (फ़ा6) जिन में उसकी तौहीद के बेशुमार दलाइल हैं (फ़ा7) यानी मनी से जिस में न हिस है न हरकत फिर उसको अपनी क़ुदरते कामिला से इन्सान बनाया क़ुव्वत व ताक़त अ़ता की शाने नुज़ूल यह आयत उबय बिन ख़लफ़ के हक़ में नाज़िल हुई जो मरने के बाद ज़िन्दा होने का इन्कार करता था, एक मर्तबा वह किसी मुर्दे की गली हुई हड्डी उठा लाया और सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से कहने लगा कि आप का यह ख़्याल है कि अल्लाह तआ़ला इस हड्डी को ज़िन्दगी देगा इस पर यह आयते करीमा नाज़िल हुई और निहायत नफ़ीस जवाब दिया गया कि हड्डी तो कुछ न कुछ उज़्वी शकल रखती भी है अल्लाह तआ़ला तो मनी के एक छोटे से बे हिस व हरकत क़तरे से तुझ जैसा झगड़ालू इन्सान पैदा कर देता है। यह देख कर भी तू उसकी क़ुदरत पर ईमान नहीं लाता (फ़ा8) कि उनकी नस्ल से दौलत बढ़ाते हो उनके दूध पीते हो और उन पर सवारी करते हो।

لَمْ تَكُوْنُوْا بٰلِغِیْهِ اِلَّا بِشِقِّ الْاَنْفُسِ ؕ اِنَّ رَبَّكُمْ لَرَءُوْفٌ رَّحِیْمٌ ۟ۙ وَّالْخَیْلَ وَالْبِغَالَ وَالْحَمِیْرَ لِتَرْكَبُوْهَا وَزِیْنَةً ؕ وَیَخْلُقُ مَا لَا تَعْلَمُوْنَ ۟ وَعَلَی

اللّٰهِ قَصْدُ السَّبِیْلِ وَمِنْهَا جَآىِٕرٌ ؕ وَلَوْ شَآءَ لَهَدٰىكُمْ اَجْمَعِیْنَ ۟۠ هُوَ الَّذِیْۤ اَنْزَلَ مِنَ السَّمَآءِ مَآءً لَّكُمْ مِّنْهُ شَرَابٌ وَّمِنْهُ شَجَرٌ فِیْهِ تُسِیْمُوْنَ ۟

یُنْۢبِتُ لَكُمْ بِهِ الزَّرْعَ وَالزَّیْتُوْنَ وَالنَّخِیْلَ وَالْاَعْنَابَ وَمِنْ كُلِّ الثَّمَرٰتِ ؕ اِنَّ فِیْ ذٰلِكَ لَاٰیَةً لِّقَوْمٍ یَّتَفَكَّرُوْنَ ۟ وَسَخَّرَ لَكُمُ الَّیْلَ وَالنَّهَارَ ۙ

وَالشَّمْسَ وَالْقَمَرَ ؕ وَالنُّجُوْمُ مُسَخَّرٰتٌۢ بِاَمْرِهٖ ؕ اِنَّ فِیْ ذٰلِكَ لَاٰیٰتٍ لِّقَوْمٍ یَّعْقِلُوْنَ ۟ۙ وَمَا ذَرَاَ لَكُمْ فِی الْاَرْضِ مُخْتَلِفًا اَلْوَانُهٗ ؕ اِنَّ فِیْ ذٰلِكَ لَاٰیَةً

لِّقَوْمٍ یَّذَّكَّرُوْنَ ۟ وَهُوَ الَّذِیْ سَخَّرَ الْبَحْرَ لِتَاْكُلُوْا مِنْهُ لَحْمًا طَرِیًّا وَّتَسْتَخْرِجُوْا مِنْهُ حِلْیَةً تَلْبَسُوْنَهَا ۚ وَتَرَی الْفُلْكَ مَوَاخِرَ فِیْهِ

लम् तकूनू बालिग़ीहि इल्ला बिशिक़्क़िल् अन्फ़ुसि इन्–न रब्बकुम् ल–रऊफ़ुर् रहीम(7)वल्ख़ै–ल वल्बिग़ा–ल वल्हमी–र लितर्–कबूहा व ज़ी–न–तन् व यख़्लुक़ु मा ला तअ्लमून(8)व अ़–लल्लाहि क़स्दुस्सबीलि व मिन्हा जाइरुन् व लौ शा–अ ल–हदाकुम् अज्–मईन(9)हुवल्लज़ी अन्ज़–ल मिनस्–समाइ माअल् लकुम् मिन्हु शराबुंव् व मिन्हु श–जरुन् फ़ीहि तुसीमून(10)युम्बितु लकुम् बिहिज़्–ज़र्–अ वज़्ज़ैतू–न वन्नख़ी–ल वल्–अअ्ना–ब व मिन् कुल्लिस् स–मराति इन्–न फ़ी ज़ालि–क लआ–यतल् लिक़ौमिंय्य–त–फ़क्करून(11)व सख़्ख़–र लकुमुल्लै–ल वन्नहा–र वश्शम्–स वल्क़–म–र वन्नुजूमु मुसख़्ख़रातुम् बि–अम्रिही इन्–न फ़ी ज़ालि–क लआयातिल् लिक़ौमिंय्यअ्क़िलून(12)व मा ज़–र–अ लकुम् फ़िल्अर्ज़ि मुख़्तलिफ़न् अल्वानुहू इन्–न फ़ी ज़ालि–क लआ–यतल् लिक़ौमिंय्यज़् ज़क्करून(13)व हुवल्लज़ी सख़्ख़–रल् बह्–र लि–तअ्कुलू मिन्हु लह्मन् तरिय्यंव् व तस्तख़्रिजू मिन्हु हिल्य–तन् तल्बसू–नहा व त–रल्फ़ुल्–क मवाख़ि–र फ़ीहि

की तरफ़ कि तुम उस तक न पहुंचते मगर अध मरे होकर बेशक तुम्हारा रब निहायत मेहरबान रहम वाला है।(7) (फ़ा9) और घोड़े और ख़च्चर और गधे के उन पर सवार हो और ज़ीनत के लिए और वह पैदा करेगा (फ़ा10) जिसकी तुम्हें ख़बर नहीं।(8) (फ़ा11) और बीच की राह (फ़ा12) ठीक अल्लाह तक है और कोई राह टेढ़ी है (फ़ा13) और चाहता तो तुम सबको राह पर लाता।(9) (फ़ा14) (रुकूअ़ 7) वही है जिसने आसमान से पानी उतारा उससे तुम्हारा पीना है और उससे दरख़्त हैं जिनसे चराते हो।(10) (फ़ा15) इस पानी से तुम्हारे लिए खेती उगाता है और ज़ैतून और खजूर और अंगूर और हर क़िस्म के फल (फ़ा16) बेशक उसमें निशानी है(फ़ा17)ध्यान करने वालों को।(11) और उस में तुम्हारे लिए मुसख़्ख़र किये रात और दिन और सूरज और चांद और सितारे उसके हुक्म के बांधे हैं बेशक उसमें निशानियां हैं अक़्लमन्दों को। (12) (फ़ा18) और वह जो तुम्हारे लिए ज़मीन में पैदा किया रंग बिरंग (फ़ा19) बेशक उसमें निशानी है याद करने वालों को।(13) और वही है जिसने तुम्हारे लिए दरिया मुसख़्ख़र किया (फ़ा20) कि उस में से ताज़ा गोश्त खाते हो (फ़ा21) और उस में से गहना निकालते हो जिसे पहनते हो (फ़ा22) और तू उसमें कश्तियां देखे कि पानी चीर कर चलती हैं

(फ़ा9) कि उसने तुम्हारे नफ़ा और आराम के लिए यह चीज़ें पैदा कीं। (फ़ा10) ऐसी अ़जीब व ग़रीब चीज़ें। (फ़ा11) इसमें वह तमाम चीज़ें आ गईं जो आदमी के नफ़ा व राहत व आराम व आसाईश के काम आती हैं और उस वक़्त तक मौजूद नहीं हुई थीं अल्लाह तआ़ला को उनका आइन्दा पैदा करना मंज़ूर था जैसे कि दुख़ानी जहाज़ रेलें मोटर हवाई जहाज़ बरक़ी क़ुव्वतों से काम करने वाले आलात दुख़ानी और बरक़ी मशीनें ख़बर रसानी व नश्र सौत के सामान और ख़ुदा जाने इसके इलावा उसको क्या क्या पैदा करना मन्ज़ूर है। (फ़ा12) यानी सिराते मुस्तक़ीम और दीने इस्लाम क्योंकि दो मक़ामों के दर्मियान जितनी राहें निकाली जायें उनमें से जो बीच की राह होगी वही सीधी होगी। (फ़ा13) जिस पर चलने वाला मन्ज़िले मक़सूद को नहीं पहुंच सकता कुफ़्र की तमाम राहें ऐसी ही हैं। (फ़ा14) राहे रास्त पर। (फ़ा15) अपने जानवरों को और अल्लाह तआ़ला। (फ़ा16) मुख़्तलिफ़ सूरत व रंग मज़े बू ख़ासियत वाले कि सब एक ही पानी से पैदा होते हैं और हर एक के औसाफ़ दूसरे से जुदा हैं यह सब अल्लाह की निअ़मतें हैं। (फ़ा17) उस की क़ुदरत व हिकमत और वहदानियत की (फ़ा18) जो इन चीज़ों में ग़ौर करके समझें कि अल्लाह तआ़ला फ़ाअ़ेल मुख़्तार है और उलूयात व सिफ़लियात सब उसके तहते क़ुदरत व इख़्तियार। (फ़ा19) ख़्वाह हैवानों की क़िस्म से हो या दरख़्तों की या फलों की। (फ़ा20) कि इसमें कश्तियों पर सवार होकर सफ़र करो या ग़ोते लगा कर उसकी तह तक पहुंचो या उससे शिकार करो। (फ़ा21) यानी मछली (फ़ा22) यानी गौहर व मरजान

وَلِتَبْتَغُوا مِنْ فَضْلِهِ وَلَعَلَّكُمْ تَشْكُرُونَ ﴿١٤﴾ وَأَلْقَىٰ فِي الْأَرْضِ رَوَاسِيَ أَنْ تَمِيدَ بِكُمْ وَأَنْهَارًا وَسُبُلًا لَعَلَّكُمْ تَهْتَدُونَ ﴿١٥﴾ وَعَلَامَاتٍ ۚ وَبِالنَّجْمِ هُمْ
يَهْتَدُونَ ﴿١٦﴾ أَفَمَنْ يَخْلُقُ كَمَنْ لَا يَخْلُقُ ۗ أَفَلَا تَذَكَّرُونَ ﴿١٧﴾ وَإِنْ تَعُدُّوا نِعْمَةَ اللَّهِ لَا تُحْصُوهَا ۗ إِنَّ اللَّهَ لَغَفُورٌ رَحِيمٌ ﴿١٨﴾ وَاللَّهُ يَعْلَمُ مَا تُسِرُّونَ
وَمَا تُعْلِنُونَ ﴿١٩﴾ وَالَّذِينَ يَدْعُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ لَا يَخْلُقُونَ شَيْئًا وَهُمْ يُخْلَقُونَ ﴿٢٠﴾ أَمْوَاتٌ غَيْرُ أَحْيَاءٍ ۖ وَمَا يَشْعُرُونَ أَيَّانَ يُبْعَثُونَ ﴿٢١﴾
إِلَٰهُكُمْ إِلَٰهٌ وَاحِدٌ ۚ فَالَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِالْآخِرَةِ قُلُوبُهُمْ مُنْكِرَةٌ وَهُمْ مُسْتَكْبِرُونَ ﴿٢٢﴾ لَا جَرَمَ أَنَّ اللَّهَ يَعْلَمُ مَا يُسِرُّونَ وَمَا يُعْلِنُونَ ۚ إِنَّهُ لَا
يُحِبُّ الْمُسْتَكْبِرِينَ ﴿٢٣﴾ وَإِذَا قِيلَ لَهُمْ مَاذَا أَنْزَلَ رَبُّكُمْ ۙ قَالُوا أَسَاطِيرُ الْأَوَّلِينَ ﴿٢٤﴾ لِيَحْمِلُوا أَوْزَارَهُمْ كَامِلَةً يَوْمَ الْقِيَامَةِ ۙ وَمِنْ أَوْزَارِ

व लितब्तग़ू मिन् फ़ज़्लिही व ल–अल्लकुम् तश्कुरून(14)व अल्क़ा फ़िल्अर्ज़ि रवासि–य अन् तमी–द बिकुम् व अन्हारंव् व सुबुलल् ल–अल्लकुम् तह्–तदून(15)व अ़लामातिन् व बिन्नज्मि हुम् यह्तदून (16)अ–फ–मंय्यख़्लुकु क–मल्ला यख़्लुकु अ–फ़ला तज़क्करून(17)व इन् तअुद्दू निअ्–म–तल्लाहि ला तुह्सूहा इन्नल्ला–ह ल–ग़फ़ूरुर्रहीम(18)वल्लाहु यअ्–लमु मा तुसिर्रू–न व मा तुअ्लिनून(19) वल्लज़ी–न यदअू–न मिन् दूनिल्लाहि ला यख़्लुकू–न शैअंव् व हुम् युख़्–लकून(20)अम्वातुन् ग़ैरु अह्याइन् व मा यश्अुरू–न अय्या–न युब्–असून(21)इलाहुकुम् इलाहुंव् वाहिदुन् फ़ल्लज़ी –न ला युअ्मिनू–न बिल् आख़ि–रति क़ुलूबुहुम् मुन्कि–रतुंव् व हुम् मुस्तक्बिरून(22)ला ज–र–म अन्नल्ला–ह यअ्–लमु मा युसिर्रू–न व मा युअ्लिनू–न इन्नहू ला युहिब्बुल् मुस्तक्बिरीन (23)व इज़ा क़ी–ल लहुम् माज़ा अन्ज़–ल रब्बुकुम् क़ालू असातीरुल् अव्वलीन(24)लि–यह्मिलू औज़ा–रहुम् कामि–ल–तंय्यौमल् क़िया–मति व मिन् औज़ारिल्लज़ी–न

और इस लिए कि तुम उसका फ़ज़्ल तलाश करो और कहीं एहसान मानो।(14) और उसने ज़मीन में लंगर डाले (फ़ा23) कि कहीं तुम्हें लेकर न कांपे और नदियां और रस्ते कि तुम राह पाओ।(15) (फ़ा24) और अ़लामतें (फ़ा25) और सितारे से वह राह पाते हैं।(16) (फ़ा26) तो क्या जो बनाए (फ़ा27) वह ऐसा हो जाएगा जो न बनाए (फ़ा28) तो क्या तुम नसीहत नहीं मानते।(17) और अगर अल्लाह की निअ्मतें गिनो तो उन्हें शुमार न कर सकोगे (फ़ा29) बेशक अल्लाह बख़्शने वाला मेहरबान है।(18) (फ़ा30) और अल्लाह जानता है (फ़ा31) जो छुपाते और ज़ाहिर करते हो।(19) और अल्लाह के सिवा जिनको पूजते हैं (फ़ा32) वह कुछ भी नहीं बनाते और (फ़ा33) वह ख़ुद बनाए हुए हैं।(20) (फ़ा34) मुर्दे हैं (फ़ा35) ज़िन्दा नहीं और उन्हें ख़बर नहीं लोग कब उठाए जायेंगे।(21) (फ़ा36) (रुकूअ़ 8) तुम्हारा मअ्बूद एक मअ्बूद है (फ़ा37) तो वह जो आख़िरत पर ईमान नहीं लाते उनके दिल मुनकिर हैं (फ़ा38) और वह मग़रूर।(22) (फ़ा39) फ़िलहक़ीक़त अल्लाह जानता है जो छुपाते और जो ज़ाहिर करते हैं बेशक वह मग़रूरों को पसन्द नहीं फ़रमाता।(23) और जब उनसे कहा जाए (फ़ा40) तुम्हारे रब ने क्या उतारा (फ़ा41) कहें अगलों की कहानियां हैं।(24) (फ़ा42) कि क़ियामत के दिन अपने (फ़ा43) बोझ पूरे उठायें और कुछ बोझ उनके जिन्हें

(फ़ा23) भारी पहाड़ों के (फ़ा24) अपने मक़ासिद की तरफ़ (फ़ा25) बनाईं जिनसे तुम्हें रस्ते का पता चले। (फ़ा26) ख़ुश्की और तरी में और इससे उन्हें रस्ते और क़िबला की पहचान होती है (फ़ा27) इन तमाम चीज़ों को अपनी क़ुदरत व हिकमत से यानी अल्लाह तआ़ला। (फ़ा28) किसी चीज़ को और आ़जिज़ व बेक़ुदरत हो जैसे कि बुत तो आ़क़िल को कब सज़ावार है कि ऐसे ख़ालिक़ व मालिक की इबादत छोड़ कर आ़जिज़ व बे-इख़्तियार बुतों की परस्तिश करे या उन्हें इबादत में उसका शरीक ठहराये (फ़ा29) चे जाएकि उनके शुक्र से ओ़हदा बरआ हो सको। (फ़ा30) कि तुम्हारे अदाए शुक्र से क़ासिर होने के बावजूद अपनी निअ्मतों से तुम्हें महरूम नहीं फ़रमाता। (फ़ा31) तुम्हारे तमाम अक़वाल व अफ़आ़ल (फ़ा32) यानी बुतों को (फ़ा33) बनायें क्या कि (फ़ा34) और अपने वजूद में बनाने वाले के मुहताज और वह (फ़ा35) बेजान (फ़ा36) तो ऐसे मजबूर और बेजान, बेइल्म मअ्बूद कैसे हो सकते हैं इन दलाइले क़ातेआ़ से साबित हो गया कि (फ़ा37) अल्लाह अ़ज़्ज़ो जल्ल जो अपनी ज़ात व सिफ़ात में नज़ीर व शरीक से पाक है। (फ़ा38) वहदानियत के (फ़ा39) कि हक़ ज़ाहिर हो जाने के बावजूद उसका इत्तेबाअ़ नहीं करते (फ़ा40) यह लोग उन से दरियाफ़्त करें कि (फ़ा41) मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम पर तो (फ़ा42) यानी झूठे अफ़साने कोई मानने की बात नहीं शाने नुज़ूल यह आयत नज़र बिन हारिस की शान में नाज़िल हुई उसने **(बक़िया सफ़हा 459 पर)**

الَّذِيْنَ يُضِلُّوْنَهُمْ بِغَيْرِ عِلْمٍ ۗ اَلَا سَآءَ مَا يَزِرُوْنَ ﴿٢٥﴾ قَدْ مَكَرَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ فَاَتَى اللّٰهُ بُنْيَانَهُمْ مِّنَ الْقَوَاعِدِ فَخَرَّ عَلَيْهِمُ السَّقْفُ مِنْ فَوْقِهِمْ

وَاَتٰىهُمُ الْعَذَابُ مِنْ حَيْثُ لَا يَشْعُرُوْنَ ﴿٢٦﴾ ثُمَّ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ يُخْزِيْهِمْ وَيَقُوْلُ اَيْنَ شُرَكَآءِيَ الَّذِيْنَ كُنْتُمْ تُشَآقُّوْنَ فِيْهِمْ ۗ قَالَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْعِلْمَ

اِنَّ الْخِزْيَ الْيَوْمَ وَالسُّوْٓءَ عَلَى الْكٰفِرِيْنَ ﴿٢٧﴾ الَّذِيْنَ تَتَوَفّٰىهُمُ الْمَلٰٓئِكَةُ ظَالِمِيْٓ اَنْفُسِهِمْ ۖ فَاَلْقَوُا السَّلَمَ مَا كُنَّا نَعْمَلُ مِنْ سُوْٓءٍ ۗ بَلٰٓى

اِنَّ اللّٰهَ عَلِيْمٌ ۢبِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿٢٨﴾ فَادْخُلُوْٓا اَبْوَابَ جَهَنَّمَ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ۗ فَلَبِئْسَ مَثْوَى الْمُتَكَبِّرِيْنَ ﴿٢٩﴾ وَقِيْلَ لِلَّذِيْنَ اتَّقَوْا مَاذَآ اَنْزَلَ

رَبُّكُمْ ۗ قَالُوْا خَيْرًا ۗ لِلَّذِيْنَ اَحْسَنُوْا فِيْ هٰذِهِ الدُّنْيَا حَسَنَةٌ ۗ وَلَدَارُ الْاٰخِرَةِ خَيْرٌ ۗ وَلَنِعْمَ دَارُ الْمُتَّقِيْنَ ﴿٣٠﴾ جَنّٰتُ عَدْنٍ يَّدْخُلُوْنَهَا تَجْرِيْ مِنْ

युज़िल्लू–नहुम् बिग़ैरि अ़िल्मिन् अला सा–अ मा यज़िरून(25)क़द् म–क–रल्लज़ी–न मिन् क़ब्लिहिम् फ़–अ–तल्लाहु बुन्या–नहुम् मिनल् क़वाअ़िदि फ़–ख़र्–र अलैहिमुस् सक़्फ़ु मिन् फ़ौक़िहिम् व अताहुमुल् अ़ज़ाबु मिन् हैसु ला यश्अुरून(26)सुम्–म यौमल्क़िया–मति युख़्ज़ीहिम् व यक़ूलु ऐ–न शु–रकाइ यल्लज़ी–न कुन्तुम् तुशाक़्क़ू–न फ़ीहिम् क़ालल्लज़ी–न ऊतुल् अ़िल्–म इन्नल् ख़िज़्यल् यौ–म वस्सू–अ अ–लल्काफ़िरीन(27)अल्लज़ी–न त–त–वफ़्फ़ाहुमुल् मलाइ–कतु ज़ालिमी अन्फ़ुसिहिम् फ़–अल–क़ वुस्स–ल–म मा कुन्ना नअ्– मलु मिन् सूइन् बला इन्नल्ला–ह अ़लीमुम् बिमा कुन्तुम् तअ्मलून(28)फ़द्ख़ुलू अब्वा–ब जहन्न–म ख़ालिदी–न फ़ीहा फ़–लबिअ्–स मस्वल् मु–त–कब्बिरीन (29)व क़ी–ल लिल्लज़ी–नत्तक़ौ माज़ा अन्ज़–ल रब्बुकुम् क़ालू ख़ैरन् लिल्लज़ी–न अह्–सनू फ़ी हाज़िहिद्–दुन्या ह्–स–नतुन् व लदारुल् आख़ि–रति ख़ैरुन् व लनिअ्–म दारुल् मुत्तक़ीन(30) जन्नातु अ़द्निंय्यद्ख़ुलू–नहा तज्री मिन्

अपनी जहालत से गुमराह करते हैं सुन लो क्या ही बुरा बोझ उठाते हैं।(25) (रुकूअ़ 9) बेशक उनसे अगलों ने (फ़ा44) फ़रेब किया था तो अल्लाह ने उनकी चुनाई को नीव से लिया तो ऊपर से उन पर छत गिर पड़ी और अ़ज़ाब उन पर वहां से आया जहां की उन्हें ख़बर न थी।(26) (फ़ा45) फिर क़ियामत के दिन उन्हें रुसवा करेगा और फ़रमाएगा कहां हैं मेरे वह शरीक (फ़ा46) जिनमें तुम झगड़ते थे (फ़ा47) इल्म वाले (फ़ा48) कहेंगे आज सारी रुसवाई और बुराई (फ़ा49) काफ़िरों पर है।(27) वह कि फ़रिश्ते उनकी जान निकालते हैं इस हाल पर कि वह अपना बुरा कर रहे थे (फ़ा50) अब सुलह डालेंगे (फ़ा51) कि हम तो कुछ बुराई न करते थे (फ़ा52) हां क्यों नहीं बेशक अल्लाह ख़ूब जानता है जो तुम्हारे कोतक थे।(28) (फ़ा53) अब जहन्नम के दरवाज़ों में जाओ कि हमेशा उसमें रहो तो क्या ही बुरा ठिकाना मग़रूरों का।(29) और डर वालों (फ़ा54) से कहा गया तुम्हारे रब ने क्या उतारा बोले ख़ूबी (फ़ा55) जिन्होंने इस दुनिया में भलाई की (फ़ा56) उनके लिए भलाई है (फ़ा57) और बेशक पिछला घर सब से बेहतर और ज़रूर (फ़ा58) क्या ही अच्छा घर परहेज़गारों का।(30) बसने के बाग़ जिनमें जायेंगे उनके नीचे

(फ़ा44) यानी पहली उम्मतों ने अपने अम्बिया के साथ। (फ़ा45) यह एक तम्सील है कि पिछली उम्मतों ने अपने रसूलों के साथ मक्र करने के लिए कुछ मन्सूबे बनाये थे अल्लाह तआ़ला ने उन्हें ख़ुद उन्हीं के मन्सूबों में हलाक किया और उनका हाल ऐसा हुआ जैसे किसी क़ौम ने कोई बुलन्द इमारत बनाई फिर वह इमारत उन पर गिर पड़ी और वह हलाक हो गए इसी तरह कुफ़्फ़ार अपनी मक्कारियों से ख़ुद बरबाद हुए। मुफ़स्सिरीन ने यह भी ज़िक्र किया है कि इस आयत में अगले मक्र करने वालों से नमरूद बिन कनआ़न मुराद है जो ज़मानए इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम में रूए ज़मीन का सब से बड़ा बादशाह था उसने बाबुल में बहुत ऊँची एक इमारत बनाई थी जिसकी बुलन्दी पांच हज़ार गज़ थी और उसका मकर यह था कि उसने यह बुलन्द इमारत अपने ख़्याल में आसमान पर पहुंचने और आसमान वालों से लड़ने के लिए बनाई थी अल्लाह तआ़ला ने हवा चलाई और वह इमारत उन पर गिर पड़ी और वह लोग हलाक हो गए। (फ़ा46) जो तुम ने गढ़ लिये थे और (फ़ा47) मुसलमानों से (फ़ा48) यानी उन उम्मतों के अम्बिया व उलमा जो उन्हें दुनिया में ईमान की दावत देते और नसीहत करते थे और यह लोग उनकी बात न मानते थे। (फ़ा49) यानी अ़ज़ाब। (फ़ा50) यानी कुफ़्र में मुब्तला थे (फ़ा51) और वक़्ते मौत अपने कुफ़्र से मुकर जायेंगे और कहेंगे (फ़ा52) इस पर फ़रिश्ते कहेंगे (फ़ा53) लिहाज़ा यह इन्कार तुम्हें मुफ़ीद नहीं (फ़ा54) यानी ईमानदारों (फ़ा55) यानी क़ुरआन शरीफ़ जो तमाम ख़ूबियों का जामेअ़ और हसनात व बरकात का मम्बअ़ और दीनी व दुनियवी और ज़ाहिरी **(बक़िया सफ़हा 459 पर)**

تَحۡتِهَا الۡاَنۡهٰرُ لَهُمۡ فِيۡهَا مَا يَشَآءُوۡنَ ؕ كَذٰلِكَ يَجۡزِى اللّٰهُ الۡمُتَّقِيۡنَ ۙ﴿۳۱﴾ الَّذِيۡنَ تَتَوَفّٰٮهُمُ الۡمَلٰۤـئِكَةُ طَيِّبِيۡنَ ۙ يَقُوۡلُوۡنَ سَلٰمٌ عَلَيۡكُمُ ۙ ادۡخُلُوا الۡجَـنَّةَ

بِمَا كُنۡتُمۡ تَعۡمَلُوۡنَ ﴿۳۲﴾ هَلۡ يَنۡظُرُوۡنَ اِلَّاۤ اَنۡ تَاۡتِيَهُمُ الۡمَلٰۤـئِكَةُ اَوۡ يَاۡتِىَ اَمۡرُ رَبِّكَ ؕ كَذٰلِكَ فَعَلَ الَّذِيۡنَ مِنۡ قَبۡلِهِمۡ ؕ وَمَا ظَلَمَهُمُ اللّٰهُ وَلٰـكِنۡ

كَانُوۡۤا اَنۡفُسَهُمۡ يَظۡلِمُوۡنَ ﴿۳۳﴾ فَاَصَابَهُمۡ سَيِّاٰتُ مَا عَمِلُوۡا وَحَاقَ بِهِمۡ مَّا كَانُوۡا بِهٖ يَسۡتَهۡزِءُوۡنَ ﴿۳۴﴾ وَقَالَ الَّذِيۡنَ اَشۡرَكُوۡا لَوۡ شَآءَ اللّٰهُ مَا عَبَدۡنَا مِنۡ دُوۡنِهٖ

مِنۡ شَىۡءٍ نَّحۡنُ وَلَاۤ اٰبَآؤُنَا وَلَا حَرَّمۡنَا مِنۡ دُوۡنِهٖ مِنۡ شَىۡءٍ ؕ كَذٰلِكَ فَعَلَ الَّذِيۡنَ مِنۡ قَبۡلِهِمۡ ۚ فَهَلۡ عَلَى الرُّسُلِ اِلَّا الۡبَلٰغُ الۡمُبِيۡنُ ﴿۳۵﴾ وَلَقَدۡ بَعَثۡنَا

فِىۡ كُلِّ اُمَّةٍ رَّسُوۡلًا اَنِ اعۡبُدُوا اللّٰهَ وَاجۡتَنِبُوا الطَّاغُوۡتَ ۚ فَمِنۡهُمۡ مَّنۡ هَدَى اللّٰهُ وَمِنۡهُمۡ مَّنۡ حَقَّتۡ عَلَيۡهِ الضَّلٰلَةُ ؕ فَسِيۡرُوۡا فِى الۡاَرۡضِ

तह़्तिहल् अन्हारु लहुम् फ़ीहा मा यशाऊ–न कज़ालि–क यज्ज़िल्लाहुल् मुत्तक़ीन(31)अल्लज़ी–न त–त–वफ़्फ़ाहुमुल् मलाइ–कतु तय्यिबी–न यक़ूलू–न सलामुन् अ़लैकुमुद ख़ुलुल् जन्न–त बिमा कुन्तुम् तअ़्–मलून(32)हल् यन्ज़ुरू–न इल्ला अन् तअ्ति–यहुमुल् मलाइ–कतु औ यअ्ति–य अम्रु रब्बि–क कज़ालि–क फ़–अ़लल्लज़ी–न मिन् क़ब्लिहिम् व मा ज़–ल–महुमुल्लाहु व लाकिन् कानू अन्फु–सहुम् यज़्लिमून(33)फ़–असा–बहुम् सय्यिआतु मा अ़मिलू व ह़ा–क़ बिहिम् मा कानू बिही यस्तह्ज़िऊन (34)व क़ालल्लज़ी–न अश्रकू लौ शाअल्लाहु मा अ़–बद्ना मिन् दूनिही मिन् शैइन् नह़्नु व ला आबाउना व ला ह़र्रम्ना मिन् दूनिही मिन् शैइन् कज़ालि–क फ़–अ़–लल्लज़ी–न मिन् क़ब्लिहिम् फ़–हल् अ़–लर् रुसुलि इल्लल् बलाग़ुल् मुबीन(35)व ल–क़द् ब–अ़स्ना फ़ी कुल्लि उम्मतिर् रसूलन् अनिअ़्बुदुल्ला–ह वज्तनिबुत् ताग़ू–त फ़मिन्हुम् मन् ह–दल्लाहु व मिन्हुम् मन् ह़क़्क़त् अ़लैहिज़् ज़ला–लतु फ़सीरू फ़िल्अर्ज़ि

नहरें रवां उन्हें वहां मिलेगा जो चाहें (फ़ा59) अल्लाह ऐसा ही सिला देता है परहेज़गारों को।(31) वह जिनकी जान निकालते हैं फ़रिश्ते सुथरेपन में(फ़ा60) यह कहते हुए कि सलामती हो तुम पर (फ़ा61) जन्नत में जाओ बदला अपने किये का।(32) काहे के इन्तेज़ार में हैं (फ़ा62) मगर इसके कि फ़रिश्ते उन पर आयें (फ़ा63) या तुम्हारे रब का अ़ज़ाब आए (फ़ा64) इससे अगलों ने भी ऐसा ही किया (फ़ा65) और अल्लाह ने उन पर कुछ ज़ुल्म न किया, हाँ वह खुद ही (फ़ा66) अपनी जानों पर ज़ुल्म करते थे।(33) तो उनकी बुरी कमाईयाँ उन पर पड़ीं (फ़ा67) और उन्हें घेर लिया उस (फ़ा68) ने जिस पर हंसते थे।(34) (रुकूअ़ 10) और मुश्रिक बोले अल्लाह चाहता तो उसके सिवा कुछ न पूजते न हम और न हमारे बाप दादा और न उससे जुदा होकर हम कोई चीज़ हराम ठहराते (फ़ा69) ऐसा ही उनसे अगलों ने किया (फ़ा70) तो रसूलों पर क्या है मगर साफ़ पहुंचा देना।(35) (फ़ा71) और बेशक हर उम्मत में से हमने एक रसूल भेजा (फ़ा72) कि अल्लाह को पूजो और शैतान से बचो तो उन (फ़ा73) में किसी को अल्लाह ने राह दिखाई (फ़ा74) और किसी पर गुमराही ठीक उतरी (फ़ा75) तो ज़मीन में चल फिर कर देखो

(फ़ा59) और यह बात जन्नत के सिवा किसी को कहीं भी हासिल नहीं। (फ़ा60) कि वह शिर्क व कुफ़्र से पाक होते हैं और उनके अक़वाल व अफ़आल और अख़्लाक़ व ख़साल पाकीज़ा होते हैं ताअ़तें साथ होती हैं मुहर्रमात व ममनूआ़त के दाग़ों से उनका दामने अ़मल मैला नहीं होता क़ब्ज़े रूह के वक़्त उनको जन्नत व रिज़वान व रहमत व करामत की बशारतें दी जाती हैं इस हालत में मौत उन्हें खुशगवार मालूम होती है और जान फ़रहत व सुरूर के साथ जिस्म से निकलती है और मलाइका इज़्ज़त के साथ उसको क़ब्ज़ करते हैं।(ख़ाज़िन) (फ़ा61) मरवी है कि क़रीब मौत बन्दए मोमिन के पास फ़रिश्ता आकर कहता है, ऐ अल्लाह के दोस्त तुझ पर सलाम और अल्लाह तआ़ला तुझे सलाम फ़रमाता है और आख़िरत में उन से कहा जाएगा (फ़ा62) कुफ़्फ़ार क्यों ईमान नहीं लाते किस चीज़ के इन्तेज़ार में हैं (फ़ा63) उनकी अरवाह क़ब्ज़ करने (फ़ा64) दुनिया में या रोज़े क़ियामत (फ़ा65) यानी पहली उम्मतों के कुफ़्फ़ार ने भी कि कुफ़्र व तकज़ीब पर क़ाइम रहे। (फ़ा66) कुफ़्र इख़्तियार करके (फ़ा67) और उन्होंने अपने आमाले ख़बीसा की सज़ा पाई (फ़ा68) अ़ज़ाब। (फ़ा69) मिस्ल बहीरा व साइबा वग़ैरह के इससे उनकी मुराद यह थी कि उनका शिर्क करना और उन चीज़ों को हराम क़रार दे लेना अल्लाह की मशीयत व मर्ज़ी से है इस पर अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया। (फ़ा70) कि रसूलों की तकज़ीब की और हलाल को हराम किया और ऐसे ही तमस्ख़ुर **(बक़िया सफ़हा 459 पर)**

فَانْظُرُوْا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُكَذِّبِيْنَ ۝ اِنْ تَحْرِصْ عَلٰى هُدٰىهُمْ فَاِنَّ اللّٰهَ لَا يَهْدِيْ مَنْ يُّضِلُّ وَمَا لَهُمْ مِّنْ نّٰصِرِيْنَ ۝ وَاَقْسَمُوْا بِاللّٰهِ جَهْدَ
اَيْمَانِهِمْ لَا يَبْعَثُ اللّٰهُ مَنْ يَّمُوْتُ بَلٰى وَعْدًا عَلَيْهِ حَقًّا وَّلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُوْنَ ۝ لِيُبَيِّنَ لَهُمُ الَّذِيْ يَخْتَلِفُوْنَ فِيْهِ وَلِيَعْلَمَ الَّذِيْنَ
كَفَرُوْا اَنَّهُمْ كَانُوْا كٰذِبِيْنَ ۝ اِنَّمَا قَوْلُنَا لِشَيْءٍ اِذَا اَرَدْنٰهُ اَنْ نَّقُوْلَ لَهٗ كُنْ فَيَكُوْنُ ۝ وَالَّذِيْنَ هَاجَرُوْا فِي اللّٰهِ مِنْ بَعْدِ مَا ظُلِمُوْا لَنُبَوِّئَنَّهُمْ
فِي الدُّنْيَا حَسَنَةً وَلَاَجْرُ الْاٰخِرَةِ اَكْبَرُ لَوْ كَانُوْا يَعْلَمُوْنَ ۝ الَّذِيْنَ صَبَرُوْا وَعَلٰى رَبِّهِمْ يَتَوَكَّلُوْنَ ۝ وَمَا اَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ اِلَّا رِجَالًا نُّوْحِيْ اِلَيْهِمْ
فَسْئَلُوْا اَهْلَ الذِّكْرِ اِنْ كُنْتُمْ لَا تَعْلَمُوْنَ ۝ بِالْبَيِّنٰتِ وَالزُّبُرِ وَاَنْزَلْنَا اِلَيْكَ الذِّكْرَ لِتُبَيِّنَ لِلنَّاسِ مَا نُزِّلَ اِلَيْهِمْ وَلَعَلَّهُمْ يَتَفَكَّرُوْنَ ۝

फ़न्जुरू कै–फ़ का–न आक़ि–बतुल् मु–कज़्ज़िबीन(36)इन् तह़्रिस् अ़ला हुदाहुम् फ़–इन्नल्ला–ह ला यह्दी मंय्युज़िल्लु व मा लहुम् मिन्नासिरीन(37)व अक़्समू बिल्लाहि जह्–द ऐमानिहिम् ला यब्–अ़सुल्लाहु मंय्यमूतु बला वअ्दन् अ़लैहि ह़क़्क़ंव् व लाकिन्–न अक्स़रन्नासि ला यअ्–लमून (38)लियुबय्यि–न लहुमुल्लज़ी यख़्तलिफ़ू–न फ़ीहि व लियअ्–लमल् लज़ी–न क–फ़रू अन्नहुम् कानू काज़िबीन(39)इन्नमा क़ौलुना लिशैइन् इज़ा अ–रद्नाहु अन् नकू–ल लहू कुन् फ़–यकून (40)वल्लज़ी–न हा–जरू फ़िल्लाहि मिम्बअ़्दि मा ज़ुलिमू लनुबव्वि अन्नहुम् फ़िद्दुन्या ह़–स–न–तन् व ल–अज्रुल् आख़ि–रति अक्बरु लौ कानू यअ्–लमून(41)अल्लज़ी–न स–बरू व अ़ला रब्बिहिम् य–त–वक्कलून(42)व मा अर्सल्ना मिन् क़ब्लि–क इल्ला रिजालन् नूह़ी इलैहिम् फ़स्–अलू अह्लज़्ज़िक्रि इन् कुन्तुम् ला तअ्–लमून(43)बिल्बय्यिनाति वज़्ज़ुबुरि व अन्ज़ल्ना इलैकज़् ज़िक्–र लितुबय्यि–न लिन्नासि मा नुज़्ज़ि–ल इलैहिम् व ल–अ़ल्लहुम् य–त–फ़क्करून(44)

कैसा अंजाम हुआ झुठलाने वालों का।(36) (फ़ा76) अगर तुम उनकी हिदायत की हिर्स करो (फ़ा77) तो बेशक अल्लाह हिदायत नहीं देता जिसे गुमराह करे और उनका कोई मददगार नहीं।(37) और उन्होंने अल्लाह की क़सम खाई अपने हलफ़ में हद की कोशिश से कि अल्लाह मुर्दे न उठाएगा (फ़ा78) हाँ क्यों नहीं (फ़ा79) सच्चा वादा उसके ज़िम्मे पर लेकिन अक्सर लोग नहीं जानते।(38) (फ़ा80) इस लिए कि उन्हें साफ़ बता दे जिस बात में झगड़ते थे (फ़ा81) और इस लिए कि काफ़िर जान लें कि वह झूठे थे।(39) (फ़ा82) जो चीज़ हम चाहें उससे हमारा फ़रमाना यही होता है कि हम कहें होजा वह फ़ौरन हो जाती है।(40) (फ़ा83) (रुकूअ़ 11) और जिन्होंने अल्लाह की राह में (फ़ा84) अपने घर बार छोड़े मज़लूम होकर ज़रूर हम उन्हें दुनिया में अच्छी जगह देंगे (फ़ा85) और बेशक आख़िरत का सवाब बहुत बड़ा है किसी तरह लोग जानते।(41) (फ़ा86) वह जिन्होंने सब्र किया (फ़ा87) और अपने रब ही पर भरोसा करते हैं।(42) (फ़ा88) और हमने तुम से पहले न भेजे मगर मर्द (फ़ा89) जिनकी तरफ़ हम 'वह़ी' करते तो ऐ लोगों इल्म वालों से पूछो अगर तुम्हें इल्म नहीं।(43) (फ़ा90) रौशन दलीलें और किताबें लेकर (फ़ा91) और ऐ महबूब हमने तुम्हारी तरफ़ यह यादगार उतारी (फ़ा92) कि तुम लोगों से बयान कर दो जो (फ़ा93) उनकी तरफ़ उतरा और कहीं वह ध्यान करें।(44)

(फ़ा76) जिन्हें अल्लाह तआ़ला ने हलाक किया और उनके शहर वीरान किये उजड़ी हुई बस्तियां उनके हलाक की ख़बर देती हैं उसको देख कर समझो कि अगर तुम भी उनकी तरह कुफ़्र व तकज़ीब पर मुसिर रहे तो तुम्हारा भी ऐसा ही अंजाम होना है। (फ़ा77) ऐ मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम बहाले कि यह लोग उन में से हैं जिनकी गुमराही साबित हो चुकी और उनकी शक़ावत अज़ली है। (फ़ा78) **शाने नुज़ूल:** एक मुश्रिक एक मुसलमान का मक़रूज़ था मुसलमान ने मुश्रिक पर तक़ाज़ा किया दौराने गुफ़्तगू में उसने इस तरह अल्लाह की क़सम खाई कि उसकी क़सम जिससे मैं मरने के बाद मिलने की तमन्ना रखता हूं इस पर मुश्रिक ने कहा कि कया तेरा यह ख़्याल है कि तू मरने के बाद उठेगा और मुश्रिक ने क़सम खा कर कहा क़ि अल्लाह मुर्दे न उठाएगा इस पर यह आयत नाज़िल हुई और फ़रमाया गया। (फ़ा79) यानी ज़रूर उठाएगा। (फ़ा80) इस उठाने की हिकमत और उसकी क़ुदरत बेशक वह मुर्दों को उठाएगा (फ़ा81) यानी मुर्दों को उठाने में कि वह हक़ है। (फ़ा82) और मुर्दों के ज़िन्दा किये जाने का इन्कार ग़लत। (फ़ा83) तो हमें मुर्दों का ज़िन्दा कर देना क्या दुशवार। (फ़ा84) उसके दीन की ख़ातिर हिजरत की शाने नुज़ूल क़तादा ने कहा कि यह आयत असहाबे रसूल सल्लल्लाहु **(बक़िया सफ़हा 459 पर)**

أَفَأَمِنَ الَّذِينَ مَكَرُوا السَّيِّئَاتِ أَن يَخْسِفَ اللَّهُ بِهِمُ الْأَرْضَ أَوْ يَأْتِيَهُمُ الْعَذَابُ مِنْ حَيْثُ لَا يَشْعُرُونَ ﴿٤٥﴾ أَوْ يَأْخُذَهُمْ فِي تَقَلُّبِهِمْ فَمَا هُم
بِمُعْجِزِينَ ﴿٤٦﴾ أَوْ يَأْخُذَهُمْ عَلَىٰ تَخَوُّفٍ فَإِنَّ رَبَّكُمْ لَرَءُوفٌ رَّحِيمٌ ﴿٤٧﴾ أَوَلَمْ يَرَوْا إِلَىٰ مَا خَلَقَ اللَّهُ مِن شَيْءٍ يَتَفَيَّأُ ظِلَالُهُ عَنِ الْيَمِينِ وَالشَّمَائِلِ سُجَّدًا
لِّلَّهِ وَهُمْ دَاخِرُونَ ﴿٤٨﴾ وَلِلَّهِ يَسْجُدُ مَا فِي السَّمَاوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ مِن دَابَّةٍ وَالْمَلَائِكَةُ وَهُمْ لَا يَسْتَكْبِرُونَ ﴿٤٩﴾ يَخَافُونَ رَبَّهُم مِّن فَوْقِهِمْ وَيَفْعَلُونَ مَا يُؤْمَرُونَ ﴿٥٠﴾
وَقَالَ اللَّهُ لَا تَتَّخِذُوا إِلَٰهَيْنِ اثْنَيْنِ ۖ إِنَّمَا هُوَ إِلَٰهٌ وَاحِدٌ ۖ فَإِيَّايَ فَارْهَبُونِ ﴿٥١﴾ وَلَهُ مَا فِي السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ وَلَهُ الدِّينُ وَاصِبًا ۚ أَفَغَيْرَ اللَّهِ تَتَّقُونَ ﴿٥٢﴾
وَمَا بِكُم مِّن نِّعْمَةٍ فَمِنَ اللَّهِ ۖ ثُمَّ إِذَا مَسَّكُمُ الضُّرُّ فَإِلَيْهِ تَجْأَرُونَ ﴿٥٣﴾ ثُمَّ إِذَا كَشَفَ الضُّرَّ عَنكُمْ إِذَا فَرِيقٌ مِّنكُم بِرَبِّهِمْ يُشْرِكُونَ ﴿٥٤﴾ لِيَكْفُرُوا بِمَا

अ–फ़–अमिनल्लज़ी–न म–करुस् सय्यिआति अंय्यख़्सिफ़ल्लाहु बिहिमुल् अर्–ज़ औ यअ्ति–यहुमुल् अज़ाबु मिन् हैसु ला यश्अुरून(45)औ यअ्ख़ु–ज़हुम् फ़ी तक़ल्लुबिहिम् फ़मा हुम् बिमुअ्जिज़ीन (46)औ यअ्ख़ु–ज़हुम् अला तख़व्वुफ़िन् फ़इन्–न रब्बकुम् ल–रऊफ़ुर्रहीम(47)अ–व लम् यरौ इला मा ख़–ल–क़ल्लाहु मिन् शैइंय्–त–फ़य्यउ ज़िलालुहू अनिल् यमीनि वश्शमा–इलि सुज्जदल् –लिल्लाहि व हुम् दाख़िरून(48)व लिल्लाहि यस्जुदु मा फ़िस्समावाति व मा फ़िल्अर्ज़ि मिन् दाब्बतिंव् वल्मलाइ–कतु व हुम् ला यस्तक्बिरून(49)यख़ाफ़ू–न रब्बहुम् मिन् फ़ौक़िहिम् व यफ़्–अलू– न मा युअ्मरून(50)व क़ालल्लाहु ला तत्तख़िज़ू इलाहैनिस्नैनि इन्नमा हु–व इलाहुंव् वाहिदुन् फ़इय्या–य फ़र्–हबून(51)व लहू मा फ़िस्समावाति वल्अर्ज़ि व लहुद्दीनु वासिबन् अ–फ़ग़ैरल्लाहि तत्तकून(52)व मा बिकुम् मिन् निअ्–मतिन् फ़मिनल्लाहि सुम्–म इज़ा मस्सकुमुज़्ज़ुर्रु फ़इलैहि तज्अरून(53)सुम्–म इज़ा क–श–फ़ज़् ज़ुर्–र अन्कुम् इज़ा फ़रीक़ुम् मिन्कुम् बिरब्बिहिम् युश्रिकून (54)लियक्फ़ुरू बिमा

तो क्या जो लोग बुरे मक्र करते हैं (फ़ा94) इससे नहीं डरते कि अल्लाह उन्हें ज़मीन में धंसा दे (फ़ा95) या उन्हें वहां से अज़ाब आए जहां से उन्हें ख़बर न हो।(45) (फ़ा96) या उन्हें चलते फिरते (फ़ा97) पकड़ ले कि वह थका नहीं सकते।(46) (फ़ा98) या उन्हें नुक़सान देते देते गिरिफ़्तार कर ले कि बेशक तुम्हारा रब निहायत मेहरबान रहम वाला है। (47) (फ़ा99) और क्या उन्होंने न देखा कि जो (फ़ा100) चीज़ अल्लाह ने बनाई है उसकी परछाईयां दाहिने और बायें झुकती हैं (फ़ा101) अल्लाह को सजदा करती और वह उसके हुज़ूर ज़लील हैं।(48) (फ़ा102) और अल्लाह ही को सजदा करते हैं जो कुछ आसमानों और जो कुछ ज़मीन में चलने वाला है (फ़ा103) और फ़रिश्ते और वह ग़ुरूर नहीं करते।(49) अपने ऊपर अपने रब का ख़ौफ़ करते हैं और वही करते हैं जो उन्हें हुक्म हो।(50) (फ़ा104) (रुकूअ़ 12) और अल्लाह ने फ़रमाया दो ख़ुदा न ठहराओ (फ़ा105) वह तो एक ही माबूद है तो मुझी से डरो।(51) (फ़ा106) और उसी का है जो कुछ आसमानों और ज़मीन में है और उसी की फ़रमांबरदारी लाज़िम है तो क्या अल्लाह के सिवा किसी दूसरे से डरोगे।(52) (फ़ा107) और तुम्हारे पास जो नेअ़मत है सब अल्लाह की तरफ़ से है फिर जब तुम्हें तकलीफ़ पहुंचती है (फ़ा108) तो उसी की तरफ़ पनाह लेजाते हो।(53) (फ़ा109) फिर जब वह तुम से बुराई टाल देता है तो तुम में एक गरोह अपने रब का शरीक ठहराने लगता है।(54) (फ़ा110) कि हमारी दी नेअ़मतों की

(फ़ा94) रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और आपके असहाब के साथ और उनकी ईज़ा के दरपै रहते हैं और छुप छुप कर फ़साद अंगेज़ी की तदबीरें किया करते हैं जैसे कि कुफ़्फ़ारे मक्का (फ़ा95) जैसे क़ारून को धंसा दिया था। (फ़ा96) चुनांचे ऐसा ही हुआ कि बदर में हलाक किये गए बावजूदे कि वह यह नहीं समझते थे। (फ़ा97) सफ़र व हज़र में हर एक हाल में (फ़ा98) ख़ुदा को अज़ाब करने से (फ़ा99) कि हिल्म करता है और अज़ाब में जल्दी नहीं फ़रमाता। (फ़ा100) सायादार (फ़ा101) सुबह और शाम (फ़ा102) ख़्वार व आजिज़ व मुतीअ़ व मुसख़्ख़र (फ़ा103) सजदा दो तरह पर है एक सजदा ताअ़त व इबादत जैसा कि मुसलमानों का सज्दा अल्लाह के लिए दूसरा सजदा इन्क़याद व ख़ुज़ूअ़ जैसा कि साया वग़ैरह का सजदा हर चीज़ का सजदा उसके हस्बे हैसियत है मुसलमानों और फ़रिश्तों का सजदा, सजदए ताअ़त व इबादत है और उनके मासिवा का सजदा सजदए इन्क़याद व ख़ुज़ूअ़। (फ़ा104) इस आयत से साबित हुआ कि फ़रिश्ते मुकल्लफ़ हैं और **(बक़िया सफ़हा 459 पर)**

اٰتَیْنٰهُمْ ؕ فَتَمَتَّعُوْا ۫ فَسَوْفَ تَعْلَمُوْنَ ﴿۵۵﴾ وَ یَجْعَلُوْنَ لِمَا لَا یَعْلَمُوْنَ نَصِیْبًا مِّمَّا رَزَقْنٰهُمْ ؕ تَاللّٰهِ لَتُسْـَٔلُنَّ عَمَّا كُنْتُمْ تَفْتَرُوْنَ ﴿۵۶﴾ وَ یَجْعَلُوْنَ لِلّٰهِ الْبَنٰتِ
سُبْحٰنَهٗ ۙ وَ لَهُمْ مَّا یَشْتَهُوْنَ ﴿۵۷﴾ وَ اِذَا بُشِّرَ اَحَدُهُمْ بِالْاُنْثٰى ظَلَّ وَجْهُهٗ مُسْوَدًّا وَّ هُوَ كَظِیْمٌ ﴿۵۸﴾ یَتَوَارٰى مِنَ الْقَوْمِ مِنْ سُوْٓءِ مَا بُشِّرَ بِهٖ ؕ اَیُمْسِكُهٗ
عَلٰى هُوْنٍ اَمْ یَدُسُّهٗ فِی التُّرَابِ ؕ اَلَا سَآءَ مَا یَحْكُمُوْنَ ﴿۵۹﴾ لِلَّذِیْنَ لَا یُؤْمِنُوْنَ بِالْاٰخِرَةِ مَثَلُ السَّوْءِ ۚ وَ لِلّٰهِ الْمَثَلُ الْاَعْلٰى ؕ وَ هُوَ الْعَزِیْزُ
الْحَكِیْمُ ﴿۶۰﴾ وَ لَوْ یُؤَاخِذُ اللّٰهُ النَّاسَ بِظُلْمِهِمْ مَّا تَرَكَ عَلَیْهَا مِنْ دَآبَّةٍ وَّ لٰكِنْ یُّؤَخِّرُهُمْ اِلٰۤى اَجَلٍ مُّسَمًّى ۚ فَاِذَا جَآءَ اَجَلُهُمْ لَا
یَسْتَاْخِرُوْنَ سَاعَةً وَّ لَا یَسْتَقْدِمُوْنَ ﴿۶۱﴾ وَ یَجْعَلُوْنَ لِلّٰهِ مَا یَكْرَهُوْنَ وَ تَصِفُ اَلْسِنَتُهُمُ الْكَذِبَ اَنَّ لَهُمُ الْحُسْنٰى ؕ لَا جَرَمَ اَنَّ لَهُمُ النَّارَ وَ اَنَّهُمْ

आतैनाहुम् फ़–त–मत्तअू फ़सौ–फ़ तअ्लमून(55)व यज्अ़लू–न लिमा ला यअ्लमू–न नसीबम् मिम्मा र–ज़क्नाहुम् तल्लाहि ल–तुस्अलुन्–न अ़म्मा कुन्तुम् तफ़्तरून(56)व यज्अ़लू–न लिल्लाहिल् बनाति सुब्हा–नहू व लहुम् मा यश्तहून(57)व इज़ा बुश्शि–र अ–ह़दुहुम् बिल्उन्सा ज़ल्–ल वज्हुहू मुस्वद्दवं व हु–व कज़ीम(58)य–तवारा मिनल् क़ौमि मिन् सूइ मा बुश्शि–र बिही अयुम्सिकुहू अ़ला हूनिन् अम् यदुस्सुहू फ़ित्तुराबि अला सा–अ मा यह़्कुमून(59)लिल्लज़ी–न ला युअ्मिनू–न बिल्आख़ि–रति म–स़लुस्सौइ व लिल्लाहिल् म–स़लुल् अअ्ला व हुवल् अ़ज़ीज़ुल् ह़कीम(60)व लौ युआख़िज़ुल्लाहुन्–ना–स बिज़ुल्मिहिम् मा त–र–क अ़लैहा मिन् दाब्बतिंव् व लाकिंय्यु अख़्ख़िरुहुम् इला अ–जलिम् मुसम्मन् फ़इज़ा जा–अ अ–जलुहुम् ला यस्तअ्ख़िरू–न सा–अ़तंव् व ला यस्तक़्दिमून(61)व यज्अ़लू–न लिल्लाहि मा यक्–रहू–न व तसिफ़ु अल्सि–नतुहुमुल् कज़ि–ब अन्–न लहुमुल् हुस्ना ला ज–र–म अन्–न लहुमुन्ना–र व अन्नहुम्

नाशुक्री करें तो कुछ बरत लो (फ़ा111) कि अंक़रीब जान जाओगे।(55) (फ़ा112)और अनजानी चीज़ों के लिए (फ़ा113) हमारी दी हुई रोज़ी में से (फ़ा114) हिस्सा मुक़र्रर करते हैं खुदा की क़सम तुम से ज़रूर सवाल होना है जो कुछ झूठ बांधते थे।(56) (फ़ा115) और अल्लाह के लिए बेटियां ठहराते हैं (फ़ा116) पाकी है उसको (फ़ा117) और अपने लिए जो अपना जी चाहता है।(57) (फ़ा118) और जब उनमें किसी को बेटी होने की खुशख़बरी दी जाती है तो दिन भर उस का मुंह (फ़ा119) काला रहता है और वह गुस्सा खाता है।(58) (फ़ा120) लोगों से छुपता फिरता है उस बशारत की बुराई के सबब क्या उसे ज़िल्लत के साथ रखेगा या उसे मिट्टी में दबा देगा (फ़ा121) अरे बहुत ही बुरा हुक्म लगाते हैं(59) (फ़ा122) जो आख़िरत पर ईमान नहीं लाते उन्हीं का बुरा हाल है और अल्लाह की शान सब से बुलन्द (फ़ा123) और वही इ़ज़्ज़त व हिकमत वाला है।(60) (रुकूअ़ १३)और अगर अल्लाह लोगों को उनके ज़ुल्म पर गिरिफ़्त करता (फ़ा124) तो ज़मीन पर कोई चलने वाला नहीं छोड़ता (फ़ा125) लेकिन उन्हें एक ठहराए वादे तक मुहलत देता है (फ़ा126) फिर जब उनका वादा आएगा न एक घड़ी पीछे हटें न आगे बढ़ें।(61)और अल्लाह के लिए वह ठहराते हैं जो अपने लिए नागवार है (फ़ा127) और उनकी ज़ाबनें झूठों कहती हैं कि उनके लिए भलाई है (फ़ा128) तो आप ही हुआ कि उनके लिए आग है और वह हद से

(फ़ा111) और चन्द रोज़ इस हालत में ज़िन्दगी गुज़ार लो (फ़ा112) कि उसका क्या नतीजा हुआ (फ़ा113) यानी बुतों के लिए जिन का इलाह और मुस्तहिक़ और नाफ़ेअ़ व ज़ार होना उन्हें मालूम नहीं। (फ़ा114) यानी खेतियों और चौपायों वग़ैरह में से (फ़ा115) बुतों को मअ़बूद और अहले तक़र्रुब और बुत परस्ती को खुदा का हुक्म बता कर। (फ़ा116) जैसे कि ख़ज़ाआ व कनाना कहते थे कि फ़रिश्ते अल्लाह की बेटियां हैं (मआ़ज़ल्लाह) (फ़ा117) वह बरतर है औलाद से और उसकी शान में ऐसा कहना निहायत बे अदबी व कुफ़्र है। (फ़ा118) यानी कुफ़्र के साथ यह कमाले बद तमीज़ी भी है कि अपने लिए बेटे पसन्द करते हैं बेटियां नापसन्द करते हैं और अल्लाह तआ़ला के लिए जो मुतलक़न औलाद से मुनज़्ज़ा और पाक है और उसके लिए औलाद ही का साबित करना ऐब लगाना है उसके लिए औलाद में भी वह साबित करते हैं जिसको अपने लिए हक़ीर और सबबे आ़र जानते हैं। (फ़ा119) ग़म से (फ़ा120) शर्म के मारे (फ़ा121) जैसा कि कुफ़्फ़ारे मुज़र व ख़ुज़ाआ़ व तमीम लड़कियों को ज़िन्दा गाड़ देते थे। (फ़ा122) कि अल्लाह तआ़ला के लिए बेटियां साबित करते हैं जो अपने लिए उन्हें इस क़दर नागवार हैं। (फ़ा123) कि वह वालिद व वल्द सब से पाक और मुनज़्ज़ा कोई उसका शरीक नहीं तमाम सिफ़ात जलाल व कमाल से मुत्तसिफ़। (फ़ा124) यानी मआ़सी पर पकड़ता और अ़ज़ाब में जल्दी फ़रमाता (फ़ा125) सब को हलाक कर देता ज़मीन **(बक़िया सफ़्हा 459 पर)**

مُّفْرَطُوْنَ ﴿٦٢﴾ تَاللّٰهِ لَقَدْ اَرْسَلْنَآ اِلٰٓى اُمَمٍ مِّنْ قَبْلِكَ فَزَيَّنَ لَهُمُ الشَّيْطٰنُ اَعْمَالَهُمْ فَهُوَ وَلِيُّهُمُ الْيَوْمَ وَلَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿٦٣﴾ وَمَآ
اَنْزَلْنَا عَلَيْكَ الْكِتٰبَ اِلَّا لِتُبَيِّنَ لَهُمُ الَّذِى اخْتَلَفُوْا فِيْهِ ۙ وَهُدًى وَّرَحْمَةً لِّقَوْمٍ يُّؤْمِنُوْنَ ﴿٦٤﴾ وَاللّٰهُ اَنْزَلَ مِنَ السَّمَآءِ مَآءً فَاَحْيَا بِهِ الْاَرْضَ
بَعْدَ مَوْتِهَا ۭ اِنَّ فِىْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً لِّقَوْمٍ يَّسْمَعُوْنَ ﴿٦٥﴾ وَاِنَّ لَكُمْ فِى الْاَنْعَامِ لَعِبْرَةً ۭ نُسْقِيْكُمْ مِّمَّا فِىْ بُطُوْنِهٖ مِنْۢ بَيْنِ فَرْثٍ وَّدَمٍ
لَّبَنًا خَالِصًا سَآئِغًا لِّلشّٰرِبِيْنَ ﴿٦٦﴾ وَمِنْ ثَمَرٰتِ النَّخِيْلِ وَالْاَعْنَابِ تَتَّخِذُوْنَ مِنْهُ سَكَرًا وَّرِزْقًا حَسَنًا ۭ اِنَّ فِىْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً لِّقَوْمٍ يَّعْقِلُوْنَ ﴿٦٧﴾
وَاَوْحٰى رَبُّكَ اِلَى النَّحْلِ اَنِ اتَّخِذِىْ مِنَ الْجِبَالِ بُيُوْتًا وَّمِنَ الشَّجَرِ وَمِمَّا يَعْرِشُوْنَ ﴿٦٨﴾ ثُمَّ كُلِىْ مِنْ كُلِّ الثَّمَرٰتِ فَاسْلُكِىْ سُبُلَ

मुफ़्–रतून(62)तल्लाहि ल–क़द् अर्सल्ना इला उ–ममिम् मिन् क़ब्लि–क फ़–ज़य्य–न लहु–मुश्शैतानु अअ्मा–लहुम् फ़हु–व वलिय्युहुमुल् यौ–म व लहुम् अज़ाबुन् अलीम(63)व मा अन्ज़ल्ना अलैकल् किता–ब इल्ला लितुबय्यि–न लहुमुल् लज़िख़्–त–लफ़ू फ़ीहि व हुदंव् व रह्–म–तल् लिक़ौमिंय्युअ्मिनून (64)वल्लाहु अन्ज़–ल मिनस्समाइ मा–अन् फ़–अह्या बिहिल् अर्–ज़ बअ्–द मौतिहा इन्–न फ़ी जालि–क लआ–य–तल् लिक़ौमिंय्यस्मअू न(65)व इन्–न लकुम् फ़िल् अन्आमि लअिब्–र–तन् नुस्क़ीकुम् मिम्मा फ़ी बुतूनिही मिम्बैनि फ़र्सिंव् व दमिल् ल–ब–नन् ख़ालिसन् साइग़ल् लिश्शारिबीन (66)व मिन् स–मरातिन् नख़ीलि वल्अअ्नाबि तत्तख़िज़ू–न मिन्हु स–क–रंव् व रिज़्क़न् ह्–स–नन् इन्–न फ़ी ज़ालि–क लआ–यतल् लिक़ौमिंय्यअ्क़िलून(67)व औहा रब्बु–क इलन्नह़्लि अनित्तख़िज़ी मिनल्जिबालि बुयूतंव् व मिनश्श–जरि व मिम्मा यअ्रिशून(68)सुम्–म कुली मिन् कुल्लिस्स–मराति फ़स्लुकी सुबु–ल

गुज़ारे हुए हैं।(62)(फ़ा129)ख़ुदा की क़सम हमने तुम से पहले कितनी उम्मतों की तरफ़ रसूल भेजे तो शैतान ने उनके कोतक उनकी आंखों में भले कर दिखाए (फ़ा130) तो आज वही उनका रफ़ीक़ है (फ़ा131) और उनके लिए दर्दनाक अ़ज़ाब है।(63)(फ़ा132) और हमने तुम पर यह किताब न उतारी (फ़ा133) मगर इस लिए कि तुम लोगों पर रौशन कर दो जिस बात में इख़्तिलाफ़ करें(फ़ा134)और हिदायत और रहमत ईमान वालों के लिए। (64) और अल्लाह ने आसमान से पानी उतारा तो उससे ज़मीन को (फ़ा135) ज़िन्दा कर दिया उसके मरे पीछे (फ़ा136) बेशक उस में निशानी है उनको जो कान रखते हैं।(65)(फ़ा137)(रुकूअ़ 14)और बेशक तुम्हारे लिए चौपायों में निगाह हासिल होने की जगह है (फ़ा138) हम तुम्हें पिलाते हैं उस चीज़ में से जो उनके पेट में है गोबर और ख़ून के बीच में से ख़ालिस दूध गले से सहल उतरता पीने वालों के लिए।(66) (फ़ा139)और खजूर और अंगूर के फलों में से (फ़ा140)कि उससे नबीज़ बनाते हो और अच्छा रिज़्क़ (फ़ा141) बेशक इसमें निशानी है अ़क़्ल वालों को।(67)और तुम्हारे रब ने शहद की मक्खी को इलहाम किया कि पहाड़ों में घर बना और दरख़्तों में और छतों में।(68)फिर हर क़िस्म के फल में से खा (फ़ा142) और अपने रब की राहें चल कि

(फ़ा129) जहन्नम ही में छोड़ दिये जायेंगे (फ़ा130) और उन्होंने अपनी बदियों को नेकियां समझा (फ़ा131) दुनिया में उसी के कहे पर चलते हैं और जो शैतान को अपना रफ़ीक़ और मुख़्तार-कार बनाये वह ज़रूर ज़लील व ख़्वार हो या यह माना हैं कि रोज़े आख़िरत शैतान के सिवा उन्हें कोई रफ़ीक़ न मिलेगा और शैतान ख़ुद ही गिरिफ़्तारे अ़ज़ाब होगा उनकी क्या मदद कर सकेगा। (फ़ा132) आख़िरत में (फ़ा133) यानी क़ुरआन शरीफ़ (फ़ा134) उमूरे दीन से (फ़ा133) रोइदगी से सरसब्ज़ी व शादाबी बख़्श कर (फ़ा136) यानी ख़ुश्क और बे सब्ज़ा व बे गयाह होने के बाद (फ़ा137) और सुन कर समझते और ग़ौर करते हैं वह इस नतीजा पर पहुंचते हैं जो क़ादिरे बरहक़ ज़मीन को इसकी मौत यानी क़ुव्वते नामिया फ़ना हो जाने के बाद फिर ज़िन्दगी देता है वह इन्सान को उसके मरने के बाद बेशक ज़िन्दा करने पर क़ादिर है। (फ़ा138) अगर तुम इस में ग़ौर करो तो बेहतर नताइज हासिल कर सकते हो और हिकमते इलाहिया के अ़जाइब पर तुम्हें आगाही हासिल हो सकती है (फ़ा139) जिसमें कोई शाइबा किसी चीज़ की आमेज़िश का नहीं बावजूदेकि हैवान के जिस्म में ग़िज़ा का एक ही मक़ाम है जहां चारा घास भूसा वग़ैरह पहुंचता है और दूध ख़ून गोबर सब इसी ग़िज़ा से पैदा होते हैं उन में से एक दूसरे से मिलने नहीं पाता दूध में न ख़ून की रंगत का शाइबा होता है न गोबर की बू का निहायत साफ़ लतीफ़ बरआमद होता है इससे हिकमते इलाहिया की अ़जीबकारी जाहिर है ऊपर मसलए बअ़्स का बयान हो चुका है यानी मुर्दों को ज़िन्दा किये जाने का कुफ़्फ़ार उसके **(बक़िया सफ़हा 460 पर)**

رَبِّكِ ذُلُلًا ۚ يَخْرُجُ مِنْ بُطُونِهَا شَرَابٌ مُّخْتَلِفٌ أَلْوَانُهُ فِيهِ شِفَاءٌ لِّلنَّاسِ ۗ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَةً لِّقَوْمٍ يَتَفَكَّرُونَ ﴿٦٩﴾ وَاللَّهُ خَلَقَكُمْ ثُمَّ يَتَوَفَّاكُمْ ۚ

وَمِنكُم مَّن يُرَدُّ إِلَىٰ أَرْذَلِ الْعُمُرِ لِكَيْ لَا يَعْلَمَ بَعْدَ عِلْمٍ شَيْئًا ۚ إِنَّ اللَّهَ عَلِيمٌ قَدِيرٌ ﴿٧٠﴾ وَاللَّهُ فَضَّلَ بَعْضَكُمْ عَلَىٰ بَعْضٍ فِي الرِّزْقِ ۚ

فَمَا الَّذِينَ فُضِّلُوا بِرَادِّي رِزْقِهِمْ عَلَىٰ مَا مَلَكَتْ أَيْمَانُهُمْ فَهُمْ فِيهِ سَوَاءٌ ۚ أَفَبِنِعْمَةِ اللَّهِ يَجْحَدُونَ ﴿٧١﴾ وَاللَّهُ جَعَلَ لَكُم مِّنْ أَنفُسِكُمْ

أَزْوَاجًا وَجَعَلَ لَكُم مِّنْ أَزْوَاجِكُم بَنِينَ وَحَفَدَةً وَرَزَقَكُم مِّنَ الطَّيِّبَاتِ ۚ أَفَبِالْبَاطِلِ يُؤْمِنُونَ وَبِنِعْمَتِ اللَّهِ هُمْ يَكْفُرُونَ ﴿٧٢﴾

وَيَعْبُدُونَ مِن دُونِ اللَّهِ مَا لَا يَمْلِكُ لَهُمْ رِزْقًا مِّنَ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ شَيْئًا وَلَا يَسْتَطِيعُونَ ﴿٧٣﴾ فَلَا تَضْرِبُوا لِلَّهِ الْأَمْثَالَ ۚ إِنَّ اللَّهَ يَعْلَمُ

रब्बिकि जुलुलन् यख़्रुजु मिम् बुतूनिहा शराबुम् मुख़्तलिफुन् अल्वानुहू फ़ीहि शिफ़ाउल् लिन्नासि इन्–न फ़ी ज़ालि–क लआ–यतल् लिक़ौमिंय्य–त–फ़क्करून(69)वल्लाहु ख़–ल–क़कुम् सुम्–म य–त–वफ़्फ़ाकुम् व मिन्कुम् मंय्युरद्दु इला अर्–ज़लिल् अुमुरि लिकै ला यअ्–ल–म बअ्–द अिल्मिन् शैअन् इन्नल्ला–ह अलीमुन् क़दीर(70)वल्लाहु फ़ज़्ज़–ल बअ्–ज़कुम् अला बअ्ज़िन् फ़िर्रिज़्क़ि फ़–मल्लज़ी–न फ़ुज़्ज़िलू बिराद्दी रिज़्क़िहिम् अ़ला मा म–ल–कत् ऐमानुहुम् फ़हुम् फ़ीहि सवाउन् अ–फ़बिनिअ्–मतिल्लाहि यज्हदून(71)वल्लाहु ज–अ़–ल लकुम् मिन् अन्फ़ुसिकुम् अज़्वाजंव् व ज–अ़–ल लकुम् मिन् अज़्वाजिकुम् बनी–न व ह़–फ़–द–तंव् व र–ज़–क़कुम् मिनत् तय्यिबाति अ–फ़बिल्बातिलि युअ्मिनू–न व बिनिअ्–मतिल्लाहि हुम् यक्फ़ुरून(72)व यअ्बुदू–न मिन् दूनिल्लाहि मा ला यम्लिकु लहुम् रिज़्क़म् मिनस्समावाति वल्अर्ज़ि शैअंव् व ला यस्ततीअून (73)फ़ला तज़्रिबू लिल्लाहिल् अम्सा–ल इन्नल्ला–ह यअ्–लमु

तेरे लिए नर्म व आसान हैं (फ़ा143) उसके पेट से एक पीने की चीज़ (फ़ा144) रंग बिरंग निकलती है (फ़ा145) जिसमें लोगों की तंदुरुस्ती है (फ़ा146) बेशक उसमें निशानी (फ़ा147) है ध्यान करने वालों को।(69) (फ़ा148) और अल्लाह ने तुम्हें पैदा किया (फ़ा149) फिर तुम्हारी जान क़ब्ज़ करेगा (फ़ा150) और तुम में कोई सब से नाकिस उम्र की तरफ़ फेरा जाता है (फ़ा151) कि जानने के बाद कुछ न जाने (फ़ा152) बेशक अल्लाह सब कुछ जानता है सब कुछ कर सकता है।(70) (रुकूअ् 15) और अल्लाह ने तुम में एक को दूसरे पर रिज़्क़ में बड़ाई दी (फ़ा153) तो जिन्हें बड़ाई दी है वह अपना रिज़्क़ अपने बांदी गुलामों को न फेर देंगे कि वह सब उसमें बराबर हो जायें (फ़ा154) तो क्या अल्लाह की नेअ्मत से मुकरते हैं।(71) (फ़ा155) और अल्लाह ने तुम्हारे लिए तुम्हारी जिन्स से औरतें बनाईं और तुम्हारे लिए तुम्हारी औरतों से बेटे और पोते और नवासे पैदा किये और तुम्हें सुथरी चीज़ों से रोज़ी दी (फ़ा156) तो क्या झूठी बात (फ़ा157) पर यक़ीन लाते हैं और अल्लाह के फ़ज़्ल (फ़ा158) से मुनकिर होते हैं।(72) और अल्लाह के सिवा ऐसों को पूजते हैं (फ़ा159) जो उन्हें आसमान और ज़मीन से कुछ भी रोज़ी देने का इख़्तियार नहीं रखते न कुछ कर सकते हैं।(73) तो अल्लाह के लिए मानिन्द न ठहराओ (फ़ा160) बेशक अल्लाह जानता है

(फ़ा143) फ़ज़्ले इलाही से जिस का तुझे इलहाम किया गया है हत्ता कि तुझे चलना फिरना दुशवार नहीं और तू कितनी ही दूर निकल जाये राह नहीं बहकती और अपने मक़ाम पर वापस आ जाती है (फफ़ा144) यानी शहद (फ़ा145) सफ़ेद और ज़र्द और सुर्ख़ (फ़ा146) और नाफ़ेअ् तरीन दवाओं में से है और बकसरत मआजीन में शामिल किया जाता है (फ़ा147) अल्लाह तआ़ला की क़ुदरत व हिकमत पर (फ़ा148) कि उसने एक कमज़ोर नातवाँ मक्खी को ऐसी ज़ेरकी व दानाई अ़ता फ़रमाई और ऐसी दक़ीक़ सनअ़तें मरहमत कीं पाक है वह अपनी ज़ात व सिफ़ात में शरीक से मुनज़्ज़ा इससे फ़िक्र करने वालों को इस पर भी तम्बीह हो जाती है कि वह अपनी .क़ुदरते कामिला से एक अदना ज़ईफ़ सी मक्खी को यह सिफ़त अ़ता फ़रमाता है कि वह मुख़्तलिफ़ क़िस्म के फूलों और फलों से ऐसे लतीफ़ अजज़ा हासिल करे जिनसे नफ़ीस शहद बने जो निहायत ख़ुशगवार हो ताहिर व पाकीज़ा हो फ़ासिद होने और सड़ने की उस में क़ाबिलियत न हो तो जो क़ादिरे हकीम एक मक्खी को उस माद्दे के जमा करने की क़ुदरत देता है वह अगर मरे हुए इन्सान के मुन्तशिर अजज़ा को जमा कर दे तो उसकी .क़ुदरत से क्या बईद है मरने के बाद ज़िन्दा किये जाने को मुहाल समझने वाले किस क़दर अहमक़ हैं इसके बाद अल्लाह तआ़ला अपने बन्दों पर अपनी .क़ुदरत के वह आसार ज़ाहिर फ़रमाता है जो ख़ुद उन में और उन के अहवाल में नुमायां हैं। (बक़िया सफ़हा 460 पर)

وَ اَنْتُمْ لَا تَعْلَمُوْنَ ﴿۷۴﴾ ضَرَبَ اللّٰهُ مَثَلًا عَبْدًا مَّمْلُوْكًا لَّا يَقْدِرُ عَلٰى شَيْءٍ وَّ مَنْ رَّزَقْنٰهُ مِنَّا رِزْقًا حَسَنًا فَهُوَ يُنْفِقُ مِنْهُ سِرًّا وَّ جَهْرًا ؕ
هَلْ يَسْتَوٗنَ ؕ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ ؕ بَلْ اَكْثَرُهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿۷۵﴾ وَ ضَرَبَ اللّٰهُ مَثَلًا رَّجُلَيْنِ اَحَدُهُمَاۤ اَبْكَمُ لَا يَقْدِرُ عَلٰى شَيْءٍ وَّ هُوَ كَلٌّ عَلٰى مَوْلٰىهُ ۙ اَيْنَمَا
يُوَجِّهْهُّ لَا يَاْتِ بِخَيْرٍ ؕ هَلْ يَسْتَوِيْ هُوَ ۙ وَ مَنْ يَّاْمُرُ بِالْعَدْلِ ۙ وَ هُوَ عَلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ﴿۷۶﴾ وَ لِلّٰهِ غَيْبُ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ ؕ وَ مَاۤ اَمْرُ السَّاعَةِ اِلَّا
كَلَمْحِ الْبَصَرِ اَوْ هُوَ اَقْرَبُ ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ﴿۷۷﴾ وَ اللّٰهُ اَخْرَجَكُمْ مِّنْۢ بُطُوْنِ اُمَّهٰتِكُمْ لَا تَعْلَمُوْنَ شَيْـًٔا ۙ وَّ جَعَلَ لَكُمُ السَّمْعَ وَ الْاَبْصَارَ
وَ الْاَفْـِٕدَةَ ۙ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ ﴿۷۸﴾ اَلَمْ يَرَوْا اِلَى الطَّيْرِ مُسَخَّرٰتٍ فِيْ جَوِّ السَّمَآءِ ؕ مَا يُمْسِكُهُنَّ اِلَّا اللّٰهُ ؕ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يُّؤْمِنُوْنَ ﴿۷۹﴾ وَ اللّٰهُ

अन्तुम् ला तअ्-लमून(74)ज़-र-बल्लाहु म-स़-लन् अ़ब्दम् मम्लूकल् ला यक़्दिरु अ़ला शैइंव् व मर्-र-ज़क़्नाहु मिन्ना रिज़्क़न् ह़-स-नन् फ़हु-व युन्फ़िक़ु मिन्हु सिर्रंव् व जह्रन् हल् यस्तवू-न अलह़म्दु लिल्लाहि बल् अक्स़रुहुम् ला यअ्-लमून(75)व ज़-र-बल्लाहु म-स़-लर्-रजुलैनि अ-ह़दुहुमा अब्कमु ला यक़्दिरु अ़ला शैइंव् व हु-व कल्लुन् अ़ला मौलाहु ऐ-नमा युवज्जिह्हु ला यअ्ति बिख़ैरिन् हल् यस्तवी हु-व व मंय्यअ्मुरु बिल्अ़द्लि व हु-व अ़ला सिरातिम् मुस्तक़ीम(76)व लिल्लाहि ग़ैबुस्समावाति वल्अर्ज़ि व मा अम्रुस्सा-अ़ति इल्ला क-लम्ह़िल् ब-सरि औ हु-व अक़्रबु इन्नल्ला-ह अ़ला कुल्लि शैइन् क़दीर(77)वल्लाहु अख़्र-जकुम् मिम्बुतूनि उम्महातिकुम् ला तअ्-लमू-न शैअंव् व ज-अ़-ल लकुमुस्सम्-अ़ वल्अब्सा-र वल्अफ़्इ-द-त ल-अ़ल्लकुम् तश्कुरून (78)अलम् यरौ इलत्तैरि मुसख़्ख़रातिन् फ़ी जव्विस्समाइ मा युम्सिकुहुन्-न इल्लल्लाहु इन्-न फ़ी ज़ालि-क लआयातिल् लिक़ौमिंय्युअ्मिनून(79)वल्लाहु

और तुम नहीं जानते।(74) अल्लाह ने एक कहावत बयान फ़रमाई (फ़ा161) एक बन्दा है दूसरे की मिल्क आप कुछ मक़दूर नहीं रखता और एक वह जिसे हमने अपनी तरफ़ से अच्छी रोज़ी अ़ता फ़रमाई तो वह उसमें से ख़र्च करता है छुपे और ज़ाहिर (फ़ा162) क्या वह बराबर हो जायेंगे (फ़ा163) सब ख़ूबियाँ अल्लाह को हैं बल्कि उनमें अक्सर को ख़बर नहीं।(75) (फ़ा164) और अल्लाह ने कहावत बयान फ़रमाई दो मर्द एक गूंगा जो कुछ काम नहीं कर सकता (फ़ा165) और वह अपने आक़ा पर बोझ है जिधर भेजे कुछ भलाई न लाए (फ़ा166) क्या बराबर हो जाएगा यह और वह जो इन्साफ़ का हुक्म करता है और वह सीधी राह पर है।(76) (फ़ा167) (रुकूअ़ 16) और अल्लाह ही के लिए हैं आसमानों और ज़मीन की छुपी चीज़ें (फ़ा168) और क़ियामत का मुआ़मला नहीं मगर जैसे एक पलक का मारना बल्कि उससे भी क़रीब (फ़ा169) बेशक अल्लाह सब कुछ कर सकता है।(77) और अल्लाह ने तुम्हें तुम्हारी माओं के पेट से पैदा किया कि कुछ न जानते थे (फ़ा170) और तुम्हें कान और आँख और दिल दिये (फ़ा171) कि तुम एहसान मानो।(78) (फ़ा172) क्या उन्होंने परिन्दे न देखे हुक्म के बांधे आसमान की फ़ज़ा में उन्हें कोई नहीं रोकता (फ़ा173) सिवा अल्लाह के बेशक उसमें निशानियाँ हैं ईमान वालों को।(79) (फ़ा174) और अल्लाह ने

(फ़ा161) यह कि (फ़ा162) जैसे चाहता है तसर्रुफ़ करता है तो वह आ़जिज़ ममलूक ग़ुलाम और यह आज़ाद मालिक साहबे माल जो बफ़ज़्ले इलाही क़ुदरत व इख़्तियार रखता है (फ़ा163) हरगिज़ नहीं तो जब ग़ुलाम व आज़ाद बराबर नहीं हो सकते बावजूदे कि दोनों अल्लाह के बन्दे हैं तो अल्लाह ख़ालिक़ मालिक क़ादिर के साथ बे क़ुदरत व इख़्तियार बुत कैसे शरीक हो सकते हैं और उन को उसके मिस्ल क़रार देना कैसा बड़ा ज़ुल्म व जुहल है। (फ़ा164) कि ऐसे बराहीन बैयिना और हुज्जते वाज़िहा के होते हुए शिर्क करना कितने बड़े वबाल व अ़ज़ाब का सबब है। (फ़ा165) न अपनी किसी से कह सके न दूसरे की समझ सके (फ़ा166) और किसी काम न आये यह मिसाल काफ़िर की है। (फ़ा167) यह मिसाल मोमिन की है माना यह हैं कि काफ़िर नाकारा गूंगे ग़ुलाम की तरह है वह किसी तरह मुसलमान की मिस्ल नहीं हो सकता जो अ़द्ल का हुक्म करता है और सिराते मुस्तक़ीम पर क़ाइम है बाज़ मुफ़स्सिरीन का क़ौल है कि गूंगे नाकारा ग़ुलाम से बुतों को तम्सील दी गई और इन्साफ़ का हुक्म देना शाने इलाही का बयान हुआ इस सूरत में माना यह हैं कि अल्लाह तआ़ला के साथ बुतों को शरीक करना बातिल है क्योंकि इन्साफ़ क़ाइम करने वाले बादशाह के साथ गूंगे और नाकारा ग़ुलाम को क्या निस्बत। (फ़ा168) इसमें अल्लाह तआ़ला के कमाले इल्म का बयान है कि वह जमीअ़ ग़ुयूब का जानने वाला है उस पर कोई छुपने **(बक़िया सफ़हा 460 पर)**

جَعَلَ لَكُمْ مِّنْ بُيُوْتِكُمْ سَكَنًا وَّجَعَلَ لَكُمْ مِّنْ جُلُوْدِ الْاَنْعَامِ بُيُوْتًا تَسْتَخِفُّوْنَهَا يَوْمَ ظَعْنِكُمْ وَيَوْمَ اِقَامَتِكُمْ ۙ وَمِنْ اَصْوَافِهَا
وَاَوْبَارِهَا وَاَشْعَارِهَاۤ اَثَاثًا وَّمَتَاعًا اِلٰى حِيْنٍ ۝ وَاللّٰهُ جَعَلَ لَكُمْ مِّمَّا خَلَقَ ظِلٰلًا وَّجَعَلَ لَكُمْ مِّنَ الْجِبَالِ اَكْنَانًا وَّجَعَلَ لَكُمْ سَرَابِيْلَ تَقِيْكُمُ
الْحَرَّ وَسَرَابِيْلَ تَقِيْكُمْ بَاْسَكُمْ ؕ كَذٰلِكَ يُتِمُّ نِعْمَتَهٗ عَلَيْكُمْ لَعَلَّكُمْ تُسْلِمُوْنَ ۝ فَاِنْ تَوَلَّوْا فَاِنَّمَا عَلَيْكَ الْبَلٰغُ الْمُبِيْنُ ۝ يَعْرِفُوْنَ نِعْمَتَ
اللّٰهِ ثُمَّ يُنْكِرُوْنَهَا وَاَكْثَرُهُمُ الْكٰفِرُوْنَ ۝ وَيَوْمَ نَبْعَثُ مِنْ كُلِّ اُمَّةٍ شَهِيْدًا ثُمَّ لَا يُؤْذَنُ لِلَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَلَا هُمْ يُسْتَعْتَبُوْنَ ۝ وَاِذَا رَاَ الَّذِيْنَ ظَلَمُوا
الْعَذَابَ فَلَا يُخَفَّفُ عَنْهُمْ وَلَا هُمْ يُنْظَرُوْنَ ۝ وَاِذَا رَاَ الَّذِيْنَ اَشْرَكُوْا شُرَكَآءَهُمْ قَالُوْا رَبَّنَا هٰۤؤُلَآءِ شُرَكَآؤُنَا الَّذِيْنَ كُنَّا نَدْعُوْا مِنْ دُوْنِكَ ۚ

ज–अ–ल लकुम् मिम् बुयूतिकुम् स–क–नंव् व ज–अ–ल लकुम् मिन् जुलूदिल् अन्आमि बुयूतन् तस्तखिफ़्फ़ू–नहा यौ–म जअ्निकुम् व यौ–म इक़ा–मतिकुम् व मिन् अस्वाफ़िहा व औबारिहा व अश्आरिहा असासंव् व मताअन् इला हीन(80)वल्लाहु ज–अ–ल लकुम् मिम्मा ख़–ल–क़ ज़िलालंव् व ज–अ–ल लकुम् मिनल्जिबालि अक्नानंव् व ज–अ–ल लकुम् सराबी–ल तक़ीकुमुल् हर्–र व सराबी–ल तक़ीकुम् बअ्–सकुम् कज़ालि–क युतिम्मु निअ्–म–तहू अ़लैकुम् ल–अ़ल्लकुम् तुस्लिमून(81) फ़–इन् त–वल्लौ फ़–इन्नमा अ़लैकल् बलागुल् मुबीन(82)यअ्रिफ़ू–न निअ्–म–तल्लाहि सुम्–म युन्किरू–नहा व अक्सरु हुमुल् काफ़िरून(83)व यौ–म नब्–असु मिन् कुल्लि उम्मतिन् शहीदन् सुम्–म ला युअ्–ज़नु लिल्लज़ी–न क–फ़रू व ला हुम् युस्तअ्–तबून(84)व इज़ा र–अल्लज़ी–न ज़–लमुल् अ़ज़ा–ब फ़ला यु–ख़फ़्फ़फ़ु अ़न्हुम् व ला हुम् युन्ज़रून(85)व इज़ा र–अल्लज़ी–न अश्रकू शु–रका–अहुम् क़ालू रब्बना हाउलाइ शु–रकाउ नल्लज़ी–न कुन्ना नदअू मिन् दूनि–क

तुम्हें घर दिये बसने को (फ़175) और तुम्हारे लिए चौपायों की खालों से कुछ घर बनाए (फ़176) जो तुम्हें हलके पड़ते हैं तुम्हारे सफ़र के दिन और मंज़िलों पर ठहरने के दिन और उनकी ऊन और बबरी और बालों से कुछ गिरस्ती का सामान (फ़177) और बरतने की चीज़ें एक वक़्त तक।(80) और अल्लाह ने तुम्हें अपनी बनाई हुई चीज़ों (फ़178) से साए दिये (फ़179) और तुम्हारे लिए पहाड़ों में छुपने की जगह बनाई (फ़180) और तुम्हारे लिए कुछ पहनावे बनाए कि तुम्हें गरमी से बचायें और कुछ पहनावे (फ़181) कि लड़ाई में तुम्हारी हिफ़ाज़त करें (फ़182) यूहीं अपनी निअ्मत तुम पर पूरी करता है (फ़183) कि तुम फ़रमान मानो।(81) (फ़184) फिर अगर वह मुंह फेरें (फ़185) तो ऐ महबूब तुम पर नहीं मगर साफ़ पहुंचा देना।(82) (फ़186) अल्लाह की नेअ्मत पहचानते हैं (फ़187) फिर उससे मुन्किर होते हैं (फ़188) और उनमें अक्सर काफ़िर हैं।(83) (फ़189) (रुकूअ़ 17) और जिस दिन (फ़190) हम उठायेंगे हर उम्मत में से एक गवाह (फ़191) फिर काफ़िरों को न इजाज़त हो (फ़192) न वह मनाए जायें।(84) (फ़193) और ज़ुल्म करने वाले (फ़194) जब अ़ज़ाब देखेंगे उसी वक़्त से न वह उन पर से हलका हो न उन्हें मुहलत मिले।(85) और शिर्क करने वाले जब अपने शरीकों को देखेंगे (फ़195) कहेंगे ऐ हमारे रब यह हैं हमारे शरीक कि हम तेरे सिवा पूजते थे

(फ़175) जिन में तुम आराम करते हो। (फ़176) मिस्ले ख़ेमा वग़ैरह के (फ़177) बिछाने ओढ़ने की चीज़ें मसला यह आयत अल्लाह की निअ्मतों के बयान में है मगर इससे इशारतन ऊन और पश्मीने और बालों की तहारत और उनसे नफ़्अ़ उठाने की हिल्लत साबित होती है (फ़178) मकानों दीवारों छतों दरख़्तों और अब्र वग़ैरह। (फ़179) जिस में तुम आराम करते हो (फ़180) ग़ार वग़ैरह कि अमीर व ग़रीब सब आराम कर सकें। (फ़181) ज़िरह व जौशन वग़ैरह (फ़182) कि तीर तलवार नेज़े वग़ैरह से बचाव का सामान हो (फ़183) दुनिया में तुम्हारे हवाइज व ज़रूरियात का सामान पैदा फ़रमा कर (फ़184) और उसकी निअ्मतों का एतेराफ़ करके इस्लाम लाओ और दीने बरहक़ क़बूल करो। (फ़185) और ऐ सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम वह आप पर ईमान लाने और आपकी तस्दीक़ करने से एराज़ करें और अपने कुफ़्र पर जमे रहें। (फ़186) और जब आपने पयामे इलाही पहुंचा दिया तो आपका काम पूरा हो चुका और न मानने का वबाल उनकी गर्दन पर रहा। (फ़187) यानी जो निअ्मतें कि ज़िक्र की गईं उन सब को पहचानते हैं और जानते हैं कि यह सब अल्लाह की तरफ़ से हैं फिर भी उसका शुक्र बजा नहीं लाते सुद्दी का क़ौल है कि अल्लाह की निअ्मत से सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम मुराद हैं इस तक़दीर पर माना यह **(बक़िया सफ़हा 460 पर)**

فَأَلْقَوْا إِلَيْهِمُ الْقَوْلَ إِنَّكُمْ لَكَاذِبُونَ ۝ وَأَلْقَوْا إِلَى اللَّهِ يَوْمَئِذٍ السَّلَمَ وَضَلَّ عَنْهُم مَّا كَانُوا يَفْتَرُونَ ۝ الَّذِينَ كَفَرُوا وَصَدُّوا عَن سَبِيلِ
اللَّهِ زِدْنَاهُمْ عَذَابًا فَوْقَ الْعَذَابِ بِمَا كَانُوا يُفْسِدُونَ ۝ وَيَوْمَ نَبْعَثُ فِي كُلِّ أُمَّةٍ شَهِيدًا عَلَيْهِم مِّنْ أَنفُسِهِمْ وَجِئْنَا بِكَ شَهِيدًا عَلَىٰ
هَٰؤُلَاءِ وَنَزَّلْنَا عَلَيْكَ الْكِتَابَ تِبْيَانًا لِّكُلِّ شَيْءٍ وَهُدًى وَرَحْمَةً وَبُشْرَىٰ لِلْمُسْلِمِينَ ۝ إِنَّ اللَّهَ يَأْمُرُ بِالْعَدْلِ وَالْإِحْسَانِ وَإِيتَاءِ ذِي
الْقُرْبَىٰ وَيَنْهَىٰ عَنِ الْفَحْشَاءِ وَالْمُنكَرِ وَالْبَغْيِ يَعِظُكُمْ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُونَ ۝ وَأَوْفُوا بِعَهْدِ اللَّهِ إِذَا عَاهَدتُّمْ وَلَا تَنقُضُوا الْأَيْمَانَ بَعْدَ تَوْكِيدِهَا
وَقَدْ جَعَلْتُمُ اللَّهَ عَلَيْكُمْ كَفِيلًا إِنَّ اللَّهَ يَعْلَمُ مَا تَفْعَلُونَ ۝ وَلَا تَكُونُوا كَالَّتِي نَقَضَتْ غَزْلَهَا مِن بَعْدِ قُوَّةٍ أَنكَاثًا تَتَّخِذُونَ أَيْمَانَكُمْ دَخَلًا

फ़-अल्क़ौ इलैहिमुल्क़ौ-ल इन्नकुम् ल-काज़िबून(86)व अल्क़ौ इलल्लाहि यौ-मइज़िनिस्-स-ल-म व ज़ल्-ल अन्हुम् मा कानू यफ़्तरून(87)अल्लज़ी-न क-फ़रू व सद्दू अन् सबीलिल्लाहि ज़िद्नाहुम् अ़ज़ाबन् फ़ौक़ल् अ़ज़ाबि बिमा कानू युफ़्सिदून(88)व यौ-म नब्-असु फ़ी कुल्लि उम्मतिन् शहीदन् अ़लैहिम् मिन् अन्फ़ुसिहिम् व जिअ्ना बि-क शहीदन् अ़ला हाउलाइ व नज़्ज़ल्ना अ़लैकल् -किता-ब तिब्यानल् लिकुल्लि शैइंव् व हुदंव् व रह्मतंव् व बुश्रा लिल्मुस्लिमीन(89)इन्नल्ला-ह यअ्मुरु बिल्अ़द्लि वल्इह्सानि व ईताइ ज़िल्क़ुर्बा व यन्हा अ़निल् फ़ह्शाइ वल्मुन्करि वल्बग़यि यअ़िज़ुकुम् ल-अ़ल्लकुम् त-ज़क्करून(90)व औफ़ू बि-अ़ह्दिल्लाहि इज़ा आ़हत्तुम् व ला तन्क़ुज़ुल् ऐमा-न बअ्-द तौकीदिहा व क़द् ज-अ़ल्तुमुल्ला-ह अ़लैकुम् कफ़ीलन् इन्नल्ला-ह यअ्-लमु मा तफ़्-अ़लून(91)व ला तकूनू कल्लती न-क़-ज़त् ग़ज़्-लहा मिम्बअ़्दि क़ुव्वतिन् अन्कासन् तत्तख़िज़ू-न ऐमा-नकुम् द-ख़-लम्

तो वह उन पर बात फेकेंगे कि तुम बेशक झूठे हो।(86) (फ़196) और उस दिन (फ़197) अल्लाह की तरफ़ आ़जिज़ी से गिरेंगे (फ़198) और उनसे गुम हो जायेंगी जो बनावटें करते थे।(87) (फ़199) जिन्होंने कुफ़्र किया और अल्लाह की राह से रोका हमने अ़ज़ाब पर अ़ज़ाब बढ़ाया (फ़200) बदला उनके फ़साद का।(88) और जिस दिन हम हर गरोह में एक गवाह उन्हीं में से उठायेंगे कि उन पर गवाही दे (फ़201) और ऐ महबूब तुम्हें उन सब पर (फ़202) शाहिद बना कर लायेंगे और हमने तुम पर यह क़ुरआन उतारा कि हर चीज़ का रौशन बयान है (फ़203) और हिदायत और रहमत और बशारत मुसलमानों को।(89) (रुकूअ़ 18) बेशक अल्लाह हुक्म फ़रमाता है इन्साफ़ और नेकी (फ़204) और रिश्तेदारों को देने का (फ़205) और मना फ़रमाता है बे हयाई (फ़206) और बुरी बात (फ़207) और सरकशी से (फ़208) तुम्हें नसीहत फ़रमाता है कि तुम ध्यान करो।(90)और अल्लाह का अहद पूरा करो(फ़209) जब क़ौल बांधो और क़समें मज़बूत करके न तोड़ो और तुम अल्लाह को (फ़210) अपने ऊपर ज़ामिन कर चुके हो बेशक अल्लाह तुम्हारे काम जानता है।(91)और(फ़211)उस औरत की तरह न हो जिसने अपना सूत मज़बूती के बाद रेज़ा रेज़ा करके तोड़ दिया(फ़212)अपनी क़समें आपस में एक बे अस्ल बहाना बनाते हो कि

(फ़196) जो हमें मअ़बूद बताते हो हम ने तुम्हें अपनी इबादत की दावत नहीं दी। (फ़197) मुश्रिकीन (फ़198) और उसके फ़रमांबरदार होना चाहेंगे (फ़199) दुनिया में बुतों को ख़ुदा का शरीक बता कर (फ़200) उनके कुफ़्र का अ़ज़ाब और दूसरों को ख़ुदा की राह से रोकने और गुमराह करने का अ़ज़ाब। (फ़201) यह गवाह अम्बिया होंगे जो अपनी अपनी उम्मतों पर गवाही देंगे। (फ़202) उम्मतों और उनके शाहिदों पर जो अम्बिया होंगे जैसा कि दूसरी आयत में वारिद हुआ फ़कै-फ़ इज़ा जिअ्ना मिन् कुल्लि उम्मतिन् बि-शहीदिंव्-व जिअ्ना बि-क अ़ला हाउलाए शहीदन् (अबुस्सऊद वग़ैरह) (फ़203) जैसा कि दूसरी आयत में इरशाद फ़रमाया मा फ़र्रत्ना फ़िल्किताबि मिन् शय् और तिर्मिज़ी की हदीस में है सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने पेश आने वाले फ़ित्नों की ख़बर दी सहाबा ने उन से ख़लास का तरीक़ा दरियाफ़्त किया फ़रमाया किताबुल्लाह में तुम से पहले वाक़िआ़त की भी ख़बर है तुम से बाद के वाक़िआ़त की भी और तुम्हारे माबैन का इल्म भी हज़रत इब्ने मसऊद रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से मरवी है फ़रमाया जो इल्म चाहे वह क़ुरआन को लाज़िम कर ले उसमें अव्वलीन व आख़िरीन की ख़बरें हैं इमाम शाफ़ेई रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु ने फ़रमाया कि उम्मत के सारे उलूम हदीस की शरह हैं और हदीस क़ुरआन की और यह भी फ़रमाया कि नबीए करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने जो कोई हुक्म भी फ़रमाया वह वही था जो आपको क़ुरआन पाक से मफ़हूम हुआ अबू बकर बिन मुजाहिद से मन्क़ूल है उन्होंने एक रोज़ फ़रमाया कि आ़लम **(बक़िया सफ़हा 460 पर)**

بَيْنَكُمْ اَنْ تَكُوْنَ اُمَّةٌ هِيَ اَرْبٰى مِنْ اُمَّةٍ ؕ اِنَّمَا يَبْلُوْكُمُ اللّٰهُ بِهٖ ؕ وَلَيُبَيِّنَنَّ لَكُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ مَا كُنْتُمْ فِيْهِ تَخْتَلِفُوْنَ ۝ وَلَوْ شَآءَ اللّٰهُ
لَجَعَلَكُمْ اُمَّةً وَّاحِدَةً وَّلٰكِنْ يُّضِلُّ مَنْ يَّشَآءُ وَيَهْدِيْ مَنْ يَّشَآءُ ؕ وَلَتُسْئَلُنَّ عَمَّا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ۝ وَلَا تَتَّخِذُوْٓا اَيْمَانَكُمْ دَخَلًاۢ بَيْنَكُمْ فَتَزِلَّ قَدَمٌۢ
بَعْدَ ثُبُوْتِهَا وَتَذُوْقُوا السُّوْٓءَ بِمَا صَدَدْتُّمْ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ۚ وَلَكُمْ عَذَابٌ عَظِيْمٌ ۝ وَلَا تَشْتَرُوْا بِعَهْدِ اللّٰهِ ثَمَنًا قَلِيْلًا ؕ اِنَّمَا عِنْدَ اللّٰهِ هُوَ خَيْرٌ
لَّكُمْ اِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ۝ مَا عِنْدَكُمْ يَنْفَدُ وَمَا عِنْدَ اللّٰهِ بَاقٍ ؕ وَلَنَجْزِيَنَّ الَّذِيْنَ صَبَرُوْٓا اَجْرَهُمْ بِاَحْسَنِ مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ۝ مَنْ عَمِلَ
صَالِحًا مِّنْ ذَكَرٍ اَوْ اُنْثٰى وَهُوَ مُؤْمِنٌ فَلَنُحْيِيَنَّهٗ حَيٰوةً طَيِّبَةً ۚ وَلَنَجْزِيَنَّهُمْ اَجْرَهُمْ بِاَحْسَنِ مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ۝ فَاِذَا قَرَاْتَ الْقُرْاٰنَ فَاسْتَعِذْ

बै–नकुम् अन् तकू–न उम्मतुन् हि–य अर्बा मिन् उम्मतिन् इन्नमा यब्लूकुमुल्लाहु बिही व लयुबय्यिनन्–न लकुम् यौमल् किया–मति मा कुन्तुम् फ़ीहि तख़्तलिफून(92)व लौ शा–अल्लाहु ल–ज–अ–लकुम् उम्मतंव् वाहि–द–तंव् व लाकिंय्युज़िल्लु मंय्यशाउ व यह्दी मंय्यशाउ व ल–तुस्अलुन्–न अ़म्मा कुन्तुम् तअ्–मलून(93)व ला तत्तख़िज़ू ऐमा–नकुम् द–ख़–लम् बै–नकुम् फ़–तज़िल्–ल क़–दमुम् बअ्–द सुबूतिहा व तज़ूकुस्सू–अ बिमा स–दत्तुम् अन् सबीलिल्लाहि व लकुम् अ़ज़ाबुन् अ़ज़ीम(94)व ला तश्तरू बि–अ़ह्दिल्लाहि स–म–नन् क़लीलन् इन्नमा अ़िन्दल्लाहि हु–व ख़ैरुल् लकुम् इन् कुन्तुम् तअ्–लमून (95)मा अ़िन्दकुम् यन्फ़दु व मा अ़िन्दल्लाहि बाक़िन् व ल–नज्ज़ियन्नल्लज़ी–न स–बरू अज्रहुम् बि–अह्सनि मा कानू यअ्–मलून(96)मन् अ़मि–ल सालिहम् मिन् ज़–करिन् औ उन्सा व हु–व मुअ्मिनुन् फ़–लनुह्यि–यन्नहू हयातन् तय्यि–ब–तन् व–ल नज्–ज़ियन्नहुम् अज्रहुम् बि–अह्सनि मा कानू यअ्–मलून(97)फ़–इज़ा क़–रअ्तल् क़ुरआ–न फ़स्तअ़िज़्

कहीं एक गरोह दूसरे गरोह से ज़्यादा न हो (फ़ा213) अल्लाह तो उससे तुम्हें आज़माता है (फ़ा214) और ज़रूर तुम पर साफ़ ज़ाहिर कर देगा क़ियामत के दिन (फ़ा215) जिस बात में झगड़ते थे।(92) (फ़ा216) और अल्लाह चाहता तो तुम को एक ही उम्मत करता (फ़ा217) लेकिन अल्लाह गुमराह करता है (फ़ा218) जिसे चाहे और राह देता है (फ़ा219) जिसे चाहे और ज़रूर तुम से (फ़ा220) तुम्हारे काम पूछे जायेंगे।(93) (फ़ा221)और अपनी क़समें आपस में बे अस्ल बहाना न बना लो कि कहीं कोई पांव (फ़ा222) जमने के बाद लग़ज़िश न करे और तुम्हें बुराई चखनी हो (फ़ा223) बदला उसका कि अल्लाह की राह से रोकते थे और तुम्हें बड़ा अ़ज़ाब हो।(94) (फ़ा224) और अल्लाह के अहद पर थोड़े दाम मोल न लो (फ़ा225) बेशक वह (फ़ा226) जो अल्लाह के पास है तुम्हारे लिए बेहतर है अगर तुम जानते हो।(95) जो तुम्हारे पास है(फ़ा227) हो चुकेगा और जो अल्लाह के पास है (फ़ा228) हमेशा रहने वाला है और ज़रूर हम सब्र करने वालों को उनका वह सिला देंगे जो उनके सबसे अच्छे काम के क़ाबिल हो।(96) (फ़ा229) जो अच्छा काम करे मर्द हो या औ़रत और हो मुसलमान (फ़ा230) तो ज़रूर हम उसे अच्छी ज़िन्दगी जिलायेंगे (फ़ा231) और ज़रूर उन्हें उनका नेग देंगे जो उनके सबसे बेहतर काम के लायक़ हो।(97) तो जब तुम क़ुरआन पढ़ो तो अल्लाह की पनाह मांगो

(फ़ा213) मुजाहिद का क़ौल है कि लोगों का तरीक़ा यह था कि एक क़ौम से हल्फ़ करते और जब दूसरी क़ौम उससे ज़्यादा तादाद या माल या .क़ुव्वत में पाते तो पहलों से जो हल्फ़ किये थे तोड़ देते और अब दूसरे से हल्फ़ करते अल्लाह तआ़ला ने उसको मना फ़रमाया और अहद के वफ़ा करने का हुक्म दिया। (फ़ा214) कि मुतीअ़ और आ़सी ज़ाहिर हो जाये (फ़ा215) आमाल की जज़ा देकर (फ़ा216) दुनिया के अन्दर (फ़ा217) कि तुम सब एक दीन पर होते (फ़ा218) अपने अ़द्ल से (फ़ा219) अपने फ़ज़्ल से (फ़ा220) रोज़े क़ियामत (फ़ा221) जो तुमने दुनिया में किये (फ़ा222) राहे हक़ व तरीक़ए इस्लाम से (फ़ा223) यानी अ़ज़ाब (फ़ा224) आख़िरत में (फ़ा225) इस तरह कि दुनियाए ना पाइदार के क़लील नफ़ा पर इसको तोड़ दो (फ़ा226) जज़ा व सवाब (फ़ा227) सामाने दुनिया यह सब फ़ना हो जाएगा और ख़त्म (फ़ा228) उसका ख़ज़ानए रहमत व सवाबे आख़िरत (फ़ा229) यानी उनकी अदना सी अदना नेकी पर भी वह अज्र व सवाब दिया जाएगा जो वह अपनी आला नेकी पर पाते (अबुस्सऊद) (फ़ा230) यह ज़रूर शर्त है क्योंकि कुफ़्फ़ार के आमाल बेकार हैं अमले सालेह के मूजिब सवाब होने के लिए ईमान शर्त है। (फ़ा231) दुनिया में रिज़्क़े हलाल और क़नाअ़त अ़ता फ़रमा कर और आख़िरत में जन्नत **(बक़िया सफ़हा 461 पर)**

بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ۝ اِنَّهٗ لَيْسَ لَهٗ سُلْطٰنٌ عَلَى الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَلٰى رَبِّهِمْ يَتَوَكَّلُوْنَ ۝ اِنَّمَا سُلْطٰنُهٗ عَلَى الَّذِيْنَ يَتَوَلَّوْنَهٗ وَالَّذِيْنَ هُمْ
بِهٖ مُشْرِكُوْنَ ۝ وَاِذَا بَدَّلْنَآ اٰيَةً مَّكَانَ اٰيَةٍ ۙ وَّاللّٰهُ اَعْلَمُ بِمَا يُنَزِّلُ قَالُوْٓا اِنَّمَآ اَنْتَ مُفْتَرٍ ۭ بَلْ اَكْثَرُهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ۝ قُلْ نَزَّلَهٗ رُوْحُ
الْقُدُسِ مِنْ رَّبِّكَ بِالْحَقِّ لِيُثَبِّتَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَهُدًى وَّبُشْرٰى لِلْمُسْلِمِيْنَ ۝ وَلَقَدْ نَعْلَمُ اَنَّهُمْ يَقُوْلُوْنَ اِنَّمَا يُعَلِّمُهٗ بَشَرٌ ۭ لِسَانُ الَّذِيْ
يُلْحِدُوْنَ اِلَيْهِ اَعْجَمِيٌّ وَّهٰذَا لِسَانٌ عَرَبِيٌّ مُّبِيْنٌ ۝ اِنَّ الَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِاٰيٰتِ اللّٰهِ ۙ لَا يَهْدِيْهِمُ اللّٰهُ وَلَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ۝
اِنَّمَا يَفْتَرِي الْكَذِبَ الَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِاٰيٰتِ اللّٰهِ ۚ وَاُولٰۗىِٕكَ هُمُ الْكٰذِبُوْنَ ۝ مَنْ كَفَرَ بِاللّٰهِ مِنْ بَعْدِ اِيْمَانِهٖٓ اِلَّا مَنْ اُكْرِهَ

बिल्लाहि मिनश्शैतानिर्–रजीम(98)इन्नहू लै–स लहू सुल्तानुन् अ़–लल्लज़ी–न आ–मनू व अ़ला रब्बिहिम् य–त–वक्कलून(99)इन्नमा सुल्तानुहू अ़–लल्लज़ी–न य–त–वल्लौ–नहू वल्लज़ी–न हुम् बिही मुश्रिकून(100)व इज़ा बद्दल्ना आ–य–तम् मका–न आ–यतिंव् वल्लाहु अअ्–लमु बिमा युनज़्ज़िलु क़ालू इन्नमा अन्–त मुफ़्तरिन् बल् अक्सरुहुम् ला यअ्–लमून(101)क़ुल् नज़्ज़–लहू रूहुल् क़ुदुसि मिर्रब्बि–क बिलहक़्क़ि लियुसब्बि–तल् लज़ी–न आ–मनू व हुदंव् व बुश्रा लिल्–मुस्लिमीन(102)व ल–क़द नअ्–लमु अन्नहुम् यक़ूलू–न इन्नमा युअ़ल्लिमुहू ब–शरुन् लिसानुल् लज़ी युल्हिदू–न इलैहि अअ्जमिय्युंव् व हाज़ा लिसानुन् अ़–रबिय्युम् मुबीन(103) इन्नल्लज़ी–न ला युअ्मिनू–न बि–आयातिल्लाहि ला यह्दीहिमुल्लाहु व लहुम् अ़ज़ाबुन् अलीम (104)इन्नमा यफ़्तरिल् कज़िबल्लज़ी–न ला युअ्मिनू–न बि–आयातिल्लाहि व उलाइ–क हुमुल् काज़िबून(105)मन् क–फ़–र बिल्लाहि मिम् बअ्दि ईमानिही इल्ला मन् उक्रि–ह

शैतान मरदूद से।(98) (फ़ा232) बेशक उसका कोई क़ाबू उन पर नहीं जो ईमान लाए और अपने रब ही पर भरोसा रखते हैं।(99) (फ़ा233) उसका क़ाबू तो उन्हीं पर है जो उससे दोस्ती करते हैं और उसे शरीक ठहराते हैं।(100) (रुकूअ़ 19) और जब हम एक आयत की जगह दूसरी आयत बदलें (फ़ा234) और अल्लाह ख़ूब जानता है जो उतारता है (फ़ा235) काफ़िर कहें तुम तो दिल से बना लाते हो (फ़ा236) बल्कि उनमें अक्सर को इल्म नहीं।(101) (फ़ा237) तुम फ़रमाओ उसे पाकीज़गी की रूह (फ़ा238) ने उतारा तुम्हारे रब की तरफ़ से ठीक ठीक के उससे ईमान वालों को साबित क़दम करे और हिदायत और बशारत मुसलमानों को।(102) और बेशक हम जानते हैं कि वह कहते हैं यह तो कोई आदमी सिखाता है जिसकी तरफ़ ढालते हैं उस की ज़बान अ़जमी है और यह रौशन अ़रबी ज़बान।(103) (फ़ा239) बेशक वह जो अल्लाह की आयतों पर ईमान नहीं लाते (फ़ा240) अल्लाह उन्हें राह नहीं देता और उनके लिए दर्दनाक अ़ज़ाब है।(104) (फ़ा241) झूठ बुहतान वही बांधते हैं जो अल्लाह की आयतों पर ईमान नहीं रखते (फ़ा242) और वही झूठे हैं।(105) जो ईमान लाकर अल्लाह का मुन्किर हो (फ़ा243) सिवा उसके जो मजबूर किया जाए

(फ़ा232) यानी क़ुरआने करीम की तिलावत शुरू करते वक़्त अऊज़ुबिल्लाहि मिनश्शैता- निर्रजीम पढ़ो यह मुस्तहब है अऊज़ के मसाइल सूरह फ़ातिहा की तफ़सीर में मज़कूर हो चुके। (फ़ा233) वह शैतानी वसवसे क़बूल नहीं करते (फ़ा234) और अपनी हिकमत से एक हुक्म को मन्सूख़ करके दूसरा हुक्म दें। शाने नुज़ूल मुश्रिकीने मक्का अपनी जहालत से नस्ख़ पर एतेराज़ करते थे और उसकी हिकमतों से नावाक़िफ़ होने के बाइस इसको तमस्ख़ुर बनाते थे और कहते थे कि मुहम्मद (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) एक रोज़ एक हुक्म देते हैं दूसरे ही रोज़ और दूसरा ही हुक्म देते हैं और वह अपने दिल से बातें बनाते हैं इस पर यह आयत नाज़िल हुई (फ़ा235) कि इसमें क्या हिकमत और उसके बन्दों के लिए इसमें क्या मसलेहत है (फ़ा236) अल्लाह तआ़ला ने इस पर कुफ़्फ़ार की तजहील फ़रमाई और इरशाद किया (फ़ा237) और वह नस्ख़ व तब्दील की हिकमत व फ़वाइद से ख़बरदार नहीं और यह भी नहीं जानते कि क़ुरआने करीम की तरफ़ इफ़्तेरा की निस्बत हो ही नहीं सकती क्योंकि जिस कलाम के मिस्ल बनाना क़ुदरते बशरी से बाहर है वह किसी इन्सान का बनाया हुआ कैसे हो सकता है लिहाज़ा सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को ख़िताब हुआ। (फ़ा238) यानी हज़रत जिबरील अ़लैहिस्सलाम (फ़ा239) क़ुरआने करीम की हलावत और उसके उलूम की नूरानियत जब क़ुलूब की तस्ख़ीर करने लगी और कुफ़्फ़ार ने देखा कि दुनिया उसकी गिरवीदा (बक़िया सफ़्हा 461 पर)

وَقَلۡبُهٗ مُطۡمَئِنٌّۢ بِالۡاِيۡمَانِ وَلٰـكِنۡ مَّنۡ شَرَحَ بِالۡكُفۡرِ صَدۡرًا فَعَلَيۡهِمۡ غَضَبٌ مِّنَ اللّٰهِ‌ ۚ وَلَهُمۡ عَذَابٌ عَظِيۡمٌ ۞ ذٰ لِكَ بِاَنَّهُمُ اسۡتَحَبُّوا الۡحَيٰوةَ الدُّنۡيَا عَلَى الۡاٰخِرَةِ ۙ وَاَنَّ اللّٰهَ لَا يَهۡدِى الۡقَوۡمَ الۡـكٰفِرِيۡنَ ۞ اُولٰۤـئِكَ الَّذِيۡنَ طَبَعَ اللّٰهُ عَلٰى قُلُوۡبِهِمۡ وَسَمۡعِهِمۡ وَاَبۡصَارِهِمۡ‌ ۚ وَاُولٰۤـئِكَ هُمُ الۡغٰفِلُوۡنَ ۞ لَا جَرَمَ اَنَّهُمۡ فِى الۡاٰخِرَةِ هُمُ الۡخٰسِرُوۡنَ ۞ ثُمَّ اِنَّ رَبَّكَ لِلَّذِيۡنَ هَاجَرُوۡا مِنۡۢ بَعۡدِ مَا فُتِنُوۡا ثُمَّ جٰهَدُوۡا وَصَبَرُوۡۤا ۙ اِنَّ رَبَّكَ مِنۡۢ بَعۡدِهَا لَـغَفُوۡرٌ رَّحِيۡمٌ ۞ يَوۡمَ تَاۡتِىۡ كُلُّ نَفۡسٍ تُجَادِلُ عَنۡ نَّـفۡسِهَا وَتُوَفّٰى كُلُّ نَفۡسٍ مَّا عَمِلَتۡ وَهُمۡ لَا يُظۡلَمُوۡنَ ۞ وَضَرَبَ اللّٰهُ مَثَلًا قَرۡيَةً كَانَتۡ اٰمِنَةً مُّطۡمَئِنَّةً يَّاۡتِيۡهَا رِزۡقُهَا رَغَدًا مِّنۡ كُلِّ مَكَانٍ فَكَفَرَتۡ بِاَنۡعُمِ اللّٰهِ فَاَذَاقَهَا اللّٰهُ لِبَاسَ الۡجُـوۡعِ وَالۡخَـوۡفِ بِمَا

क़ल्बुहू मुत्–मइन्नुम् बिल्ईमानि व लाकिम् मन् श–र–ह् बिल्कुफ़्रि सद्रन् फ़–अलैहिम् ग़–ज़बुम् मिनल्लाहि व लहुम् अज़ाबुन् अज़ीम(106)ज़ालि–क बि–अन्नहुमुस्त–हब्बुल् हयातद्दुन्या अ–लल् आख़ि–रति व अन्नल्ला–ह ला यह्दिल् क़ौमल् काफ़िरीन(107)उलाइ–कल्लज़ी–न त–ब–अल्लाहु अ़ला कुलूबिहिम् व सम्अ़िहिम् व अब्सारिहिम् व उलाइ–क हुमुल्ग़ाफ़िलून(108)ला ज–र–म अन्नहुम् फ़िल्आख़ि–रति हुमुल्ख़ासिरून(109)सुम्–म इन्–न रब्ब–क लिल्लज़ी–न हा–जरू मिम् बअ़्दि मा फ़ुतिनू सुम्–म जा–हदू व स–बरू इन्–न रब्ब–क मिम् बअ़्दिहा ल–ग़फ़ूरुर्रहीम (110)यौ–म तअ्ती कचुल्लु नफ़्सिन् तुजादिलु अ़न् नफ़्सिहा व तुवफ़्फ़ा कुल्लु नफ़्सिम् मा अ़मिलत् व हुम् ला युज्–लमून(111)व ज़–र–बल्लाहु म–स–लन् क़र्–य–तन् कानत्आमि–न– तम् मुत्मइन्न–तंय्यअ्तीहा रिज़्क़ुहा र–ग़–दम् मिन् कुल्लि मकानिन् फ़–क–फ़–रत् बि–अन्अुमिल्लाहि फ़–अज़ा–क़–हल्लाहु लिबासल्जूअ़ि वल्ख़ौफ़ि बिमा

और उसका दिल ईमान पर जमा हुआ हो (फ़ा244) हां वह जो दिल खोल कर (फ़ा245) काफ़िर हो उन पर अल्लाह का ग़ज़ब है और उनको बड़ा अ़ज़ाब है।(106) यह इस लिए कि उन्होंने दुनिया की ज़िन्दगी आख़िरत से प्यारी जानी (फ़ा246) और इस लिए कि अल्लाह (ऐसे) काफ़िरों को राह नहीं देता।(107) यह हैं वह जिनके दिल और कान और आँखों पर अल्लाह ने मुहर कर दी है (फ़ा247) और वही ग़फ़लत में पड़े हैं।(108) (फ़ा248) आप ही हुआ कि आख़िरत में वही ख़राब हैं।(109) (फ़ा249) फिर बेशक तुम्हारा रब उनके लिए जिन्होंने अपने घर छोड़े (फ़ा250) बाद इसके कि सताए गए (फ़ा251) फिर उन्होंने (फ़ा252) जिहाद किया और साबिर रहे बेशक तुम्हारा रब उस (फ़ा253) के बाद ज़रूर बख़्शने वाला है मेहरबान।(110) (रुकूअ़ 20) जिस दिन हर जान अपनी ही तरफ़ झगड़ती आएगी (फ़ा254) और हर जान को उसका किया पूरा भर दिया जाएगा और उन पर ज़ुल्म न होगा।(111) (फ़ा255) और अल्लाह ने कहावत बयान फ़रमाई (फ़ा256) एक बस्ती (फ़ा257) कि अमान व इत्मीनान से थी (फ़ा258) हर तरफ़ से उसकी रोज़ी कसरत से आती तो वह अल्लाह की नेअ़मतों की नाशुक्री करने लगी (फ़ा259) तो अल्लाह ने उसे यह सज़ा चखाई कि उसे भूक और डर का पहनावा पहनाया (फ़ा260)

(फ़ा244) वह मग़ज़ूब नहीं शाने नुज़ूलः यह आयत अ़म्मार बिन यासिर के हक़ में नाज़िल हुई उन्हें और उनके वालिद यासिर और उनकी वालिदा सुमैया और सुहैब और बिलाल और ख़ब्बाब और सालिम रज़ियल्लाहु अ़न्हुम को पकड़ कर कुफ़्फ़ार ने सख़्त सख़्त ईज़ायें दीं ताकि वह इस्लाम से फिर जायें लेकिन यह हज़रात न फ़िरे तो कुफ़्फ़ार ने हज़रत अ़म्मार के वालिदैन को बहुत बे रहमियों से क़त्ल किया और अ़म्मार ज़ईफ़ थे भाग नहीं सकते थे उन्होंने मजबूर होकर जब देखा कि जान पर बन गई तो बा-दिल न-ख़्वास्ता कलिमए कुफ़्र का तलफ़्फ़ुज़ कर दिया रसूले करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को ख़बर दी गई कि अ़म्मार काफ़िर हो गए फ़रमाया हरगिज़ नहीं अ़म्मार सर से पांव तक ईमान से पुर हैं और उसके गोश्त व ख़ून में ज़ौक़े ईमानी सरायत कर गया है फिर हज़रत अ़म्मार रोते हुए ख़िदमते अक़्दस में हाज़िर हुए। हुज़ूर ने फ़रमाया क्या हुआ, अ़म्मार ने अ़र्ज़ किया ऐ ख़ुदा के रसूल बहुत ही बुरा हुआ और बहुत ही बुरे कलिमे मेरी ज़बान पर जारी हुए इरशाद फ़रमाया उस वक़्त तेरे दिल का क्या हाल था, अ़र्ज़ किया दिल ईमान पर ख़ूब जमा हुआ था नबीए करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने शफ़क़त व रहमत फ़रमाई और फ़रमाया कि अगर फिर ऐसा इत्तेफ़ाक़ हो तो यही करना चाहिए इस पर यह आयते (बक़िया सफ़हा 461 पर)

كَانُوا يَصْنَعُونَ ﴿١١٢﴾ وَلَقَدْ جَاءَهُمْ رَسُولٌ مِّنْهُمْ فَكَذَّبُوهُ فَأَخَذَهُمُ الْعَذَابُ وَهُمْ ظَالِمُونَ ﴿١١٣﴾ فَكُلُوا مِمَّا رَزَقَكُمُ اللَّهُ حَلَالًا طَيِّبًا وَاشْكُرُوا

نِعْمَتَ اللَّهِ إِن كُنتُمْ إِيَّاهُ تَعْبُدُونَ ﴿١١٤﴾ إِنَّمَا حَرَّمَ عَلَيْكُمُ الْمَيْتَةَ وَالدَّمَ وَلَحْمَ الْخِنزِيرِ وَمَا أُهِلَّ لِغَيْرِ اللَّهِ بِهِ ۖ فَمَنِ اضْطُرَّ غَيْرَ بَاغٍ

وَلَا عَادٍ فَإِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ﴿١١٥﴾ وَلَا تَقُولُوا لِمَا تَصِفُ أَلْسِنَتُكُمُ الْكَذِبَ هَٰذَا حَلَالٌ وَهَٰذَا حَرَامٌ لِّتَفْتَرُوا عَلَى اللَّهِ الْكَذِبَ ۚ

إِنَّ الَّذِينَ يَفْتَرُونَ عَلَى اللَّهِ الْكَذِبَ لَا يُفْلِحُونَ ﴿١١٦﴾ مَتَاعٌ قَلِيلٌ وَلَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ﴿١١٧﴾ وَعَلَى الَّذِينَ هَادُوا حَرَّمْنَا مَا

قَصَصْنَا عَلَيْكَ مِن قَبْلُ ۖ وَمَا ظَلَمْنَاهُمْ وَلَٰكِن كَانُوا أَنفُسَهُمْ يَظْلِمُونَ ﴿١١٨﴾ ثُمَّ إِنَّ رَبَّكَ لِلَّذِينَ عَمِلُوا السُّوءَ بِجَهَالَةٍ ثُمَّ تَابُوا مِن

कानू यस्–नअून(112)व ल–क़द् जा–अहुम् रसूलुम् मिन्हुम् फ़–कज़्ज़बूहु फ़–अ–ख़–ज़हुमुल् अ़ज़ाबु व हुम् ज़ालिमून(113)फ़कुलू मिम्मा र–ज़–क़कुमुल्लाहु ह़लालन् तय्यिबंव् वश्कुरू निअ्–म–तल्लाहि इन् कुन्तुम् इय्याहु तअ्बुदून(114)इन्नमा ह़र्र–म अ़लैकुमुल्मैत–त वद्–द–म व लह़्मल् ख़िन्ज़ीरि व मा उहिल्–ल लिग़ैरिल्लाहि बिही फ़–मनिज़्तुर्–र ग़ै–र बाग़िंव् व ला आदिन् फ़इन्नल्ला–ह ग़फ़ूरुर् –रह़ीम(115)व ला तक़ूलू लिमा तसिफ़ु अल्सि–नतुकुमुल् कज़ि–ब हाज़ा ह़लालुंव् व हाज़ा ह़रामुल् लि–तफ़्तरू अ़–लल्लाहिल् कज़ि–ब इन्नल्लज़ी–न यफ़्तरू–न अ़–लल्लाहिल् कज़ि–ब ला युफ़्लिहून(116)मताअुन् क़लीलुंव् व लहुम् अ़ज़ाबुन् अलीम(117)व अ़–लल्लज़ी–न हादू ह़र्रम्ना मा क़–सस्ना अ़लै–क मिन् क़ब्लु व मा ज़–लम्नाहुम् व लाकिन् कानू अन्फ़ु–सहुम् यज़्लिमून(118) सुम्–म इन्–न रब्ब–क लिल्लज़ी–न अ़मिलुस्सू–अ बि–जहा–लतिन् सुम्–म ताबू मिम् बअ्दि

बदला उनके किये का।(112) और बेशक उनके पास उन्हीं में से एक रसूल तशरीफ़ लाया (फ़ा261) तो उन्होंने उसे झुठलाया तो उन्हें अ़ज़ाब ने पकड़ा (फ़ा262) और वह बे-इन्साफ़ थे।(113) तो अल्लाह की दी हुई रोज़ी (फ़ा263) हलाल पाकीज़ा खाओ (फ़ा264) और अल्लाह की निअ़मत का शुक्र अदा करो अगर तुम उसे पूजते हो।(114) तुम पर तो यही हराम किया है मुरदार और ख़ून और सूअर का गोश्त और वह जिसके ज़बह करते वक़्त ग़ैरे ख़ुदा का नाम पुकारा गया (फ़ा265) फिर जो लाचार हो (फ़ा266) न ख़्वाहिश करता न हद से बढ़ता (फ़ा267) तो बेशक अल्लाह बख़्शने वाला मेहरबान है।(115) और न कहो उसे जो तुम्हारी ज़बानें झूठ बयान करती हैं यह हलाल हैं और यह हराम है कि अल्लाह पर झूट बांधो (फ़ा268) बेशक जो अल्लाह पर झूट बांधते हैं उन का भला न होगा।(116) थोड़ा बरतना है (फ़ा269) और उन के लिए दर्दनाक अ़ज़ाब।(117) (फ़ा270) और ख़ास यहूदियों पर हमने हराम फ़रमाई वह चीज़ें जो पहले तुम्हें सुनाईं (फ़ा271) और हमने उन पर ज़ुल्म न किया हां वही अपनी जानों पर ज़ुल्म करते थे।(118) (फ़ा272) फिर बेशक तुम्हारा रब उनके लिए जो नादानी से (फ़ा273) बुराई कर बैठें फिर उसके बाद तौबा

(फ़ा261) यानी सय्यदे अम्बिया मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम (फ़ा262) भूख और ख़ौफ़ के। (फ़ा263) जो उसने सय्यदे आ़लम मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के दस्ते मुबारक से अ़ता फ़रमाई (फ़ा264) बजाए उन हराम और ख़बीस अमवाल के जो खाया करते थे लूट ग़सब और ख़बीस मकासिब से हासिल किये हुए जम्हूर मुफ़स्सिरीन के नज़दीक इस आयत में मुख़ातिब मुसलमान हैं और एक क़ौल मुफ़स्सिरीन का यह भी है कि मुख़ातिब मुशरिकीने मक्का हैं। कलबी ने कहा जब अहले मक्का क़हत के सबब भूक से परेशान हुए और तकलीफ़ की बरदाश्त न रही तो उनके सरदारों ने सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से अ़र्ज़ किया कि आप से दुश्मनी तो मर्द करते हैं औरतों और बच्चों को जो तकलीफ़ पहुंच रही है उसका ख़्याल फ़रमाइये इस पर रसूले करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने इजाज़त दी कि उनके लिए तआ़म ले जाया जाये इस आयत में इसका बयान हुआ इन दोनों क़ौलों में अव्वल सही तर है। (ख़ाज़िन) (फ़ा265) यानी उसको बुतों के नाम पर ज़बह किया गया हो (फ़ा266) और उन हराम चीज़ों में से कुछ खाने पर मजबूर हो (फ़ा267) यानी क़द्रे ज़रूरत पर सब्र करके (फ़ा268) ज़मानए जाहिलियत के लोग अपनी तरफ़ से बाज़ चीज़ों को हलाल बाज़ चीज़ों को हराम कर लिया करते थे और उसकी निस्बत अल्लाह तआ़ला की तरफ़ कर दिया करते थे इसकी मुमानअ़त फ़रमाई गई और इसको अल्लाह पर इफ़्तेरा फ़रमाया गया आज कल भी जो लोग अपनी तरफ़ से हलाल चीज़ों को हराम बता देते हैं जैसे मीलाद शरीफ़ की शीरीनी फ़ातिहा ग्यारहवीं उर्स वग़ैरह ईसाले सवाब की चीज़ें जिनकी हुरमत शरीअ़त में वारिद नहीं हुई उन्हें इस आयत के हुक्म से डरना **(बक़िया सफ़हा 462 पर)**

بَعْدِ ذٰلِكَ وَاَصْلَحُوْۤا اِنَّ رَبَّكَ مِنْۢ بَعْدِهَا لَغَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۝ اِنَّ اِبْرٰهِيْمَ كَانَ اُمَّةً قَانِتًا لِّلّٰهِ حَنِيْفًا ؕ وَلَمْ يَكُ مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ ۝ شَاكِرًا
لِّاَنْعُمِهٖ ؕ اِجْتَبٰىهُ وَهَدٰىهُ اِلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ۝ وَاٰتَيْنٰهُ فِى الدُّنْيَا حَسَنَةً ؕ وَاِنَّهٗ فِى الْاٰخِرَةِ لَمِنَ الصّٰلِحِيْنَ ۝ ثُمَّ اَوْحَيْنَاۤ اِلَيْكَ اَنِ اتَّبِعْ
مِلَّةَ اِبْرٰهِيْمَ حَنِيْفًا ؕ وَمَا كَانَ مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ ۝ اِنَّمَا جُعِلَ السَّبْتُ عَلَى الَّذِيْنَ اخْتَلَفُوْا فِيْهِ ؕ وَاِنَّ رَبَّكَ لَيَحْكُمُ بَيْنَهُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ فِيْمَا
كَانُوْا فِيْهِ يَخْتَلِفُوْنَ ۝ اُدْعُ اِلٰى سَبِيْلِ رَبِّكَ بِالْحِكْمَةِ وَالْمَوْعِظَةِ الْحَسَنَةِ وَجَادِلْهُمْ بِالَّتِىْ هِىَ اَحْسَنُ ؕ اِنَّ رَبَّكَ هُوَ اَعْلَمُ بِمَنْ ضَلَّ عَنْ
سَبِيْلِهٖ وَهُوَ اَعْلَمُ بِالْمُهْتَدِيْنَ ۝ وَاِنْ عَاقَبْتُمْ فَعَاقِبُوْا بِمِثْلِ مَا عُوْقِبْتُمْ بِهٖ ؕ وَلَئِنْ صَبَرْتُمْ لَهُوَ خَيْرٌ لِّلصّٰبِرِيْنَ ۝ وَاصْبِرْ وَمَا صَبْرُكَ اِلَّا
بِاللّٰهِ وَلَا تَحْزَنْ عَلَيْهِمْ وَلَا تَكُ فِىْ ضَيْقٍ مِّمَّا يَمْكُرُوْنَ ۝ اِنَّ اللّٰهَ مَعَ الَّذِيْنَ اتَّقَوْا وَّالَّذِيْنَ هُمْ مُّحْسِنُوْنَ ۝

ज़ालि–क व अस्–लहू इन्–न रब्ब–क मिम् बअ्दिहा ल–ग़फ़ूरुर् रहीम(119)इन्–न इब्राही–म का–न उम्म–तन् क़ानितल् लिल्लाहि ह़नीफ़न् व लम् यकु मिनल् मुश्रिकीन(120)शाकिरल् लि–अन्अुमिही इज्तबाहु व हदाहु इला सिरातिम् मुस्तक़ीम(121)व आतैनाहु फ़िद्दुन्या ह़–स–न–तन् व इन्नहू फ़िल्–आख़ि–रति लमिनस् सालिह़ीन(122)सुम्–म औह़ैना इलै–क अनित्तबिअ् मिल्ल–त इब्राही–म ह़नीफ़न् व मा का–न मिनल् मुश्रिकीन(123)इन्नमा जुअ़िलस् सब्तु अ़–लल् लज़ीनख़्त–लफ़ू फ़ीहि व इन्–न रब्ब–क ल–यह़्कुमु बै–नहुम् यौमल् क़ियां–मति फ़ीमा कानू फ़ीहि यख़्तलिफ़ून (124)उद्अु इला सबीलि रब्बि–क बिल्ह़िक्मति वल्मौअ़ि–ज़तिल् ह़–स–नति व जादिल्हुम् बिल्लती हि–य अह़्सनु इन्–न रब्ब–क हु–व अअ्–लमु बिमन् ज़ल्–ल अ़न् सबीलिही व हु–व अअ्–लमु बिल्मुह्–तदीन(125)व इन् आ़क़ब्तुम् फ़आ़क़िबू बिमिस्लि मा ऊक़िब्तुम् बिही व लइन् स–बर्तुम् लहु–व ख़ैरुल् लिस्साबिरीन(126)वस्बिर् व मा सब्रु–क इल्ला बिल्लाहि व ला तह़्–ज़न् अ़लैहिम् व ला तकु फ़ी ज़ैक़िम् मिम्मा यम्कुरून(127)इन्नल्ला–ह म–अ़ल्लज़ीनत् त–क़व् वल्लज़ी–न हुम् मुह़्सिनून(128)

और संवर जायें बेशक तुम्हारा रब उसके बाद (फ़ा274) ज़रूर बख़्शने वाला मेहरबान है।(119) (रुकूअ़ 21) बेशक इब्राहीम एक इमाम था (फ़ा275) अल्लाह का फ़रमांबरदार और सबसे जुदा (फ़ा276) और मुश्रिक न था।(120) (फ़ा277) उसके एहसानों पर शुक्र करने वाला अल्लाह ने उसे चुन लिया (फ़ा278) और उसे सीधी राह दिखाई।(121) और हमने उसे दुनिया में भलाई दी (फ़ा279) और बेशक वह आख़िरत में शायाने क़ुर्ब है।(122) फिर हमने तुम्हें 'वही' भेजी कि दीने इब्राहीम की पैरवी करो जो हर बातिल से अलग था और मुश्रिक न था।(123) (फ़ा280) हफ़्ता तो उन्हीं पर रखा गया था जो उसमें मुख़्तलिफ़ हो गए (फ़ा281) और बेशक तुम्हारा रब क़ियामत के दिन उनमें फ़ैसला कर देगा जिस बात में इख़्तिलाफ़ करते थे।(124) (फ़ा282) अपने रब की राह की तरफ़ बुलाओ (फ़ा283) पक्की तदबीर और अच्छी नसीहत से (फ़ा284) और उनसे उस तरीक़ा पर बहस करो जो सबसे बेहतर हो (फ़ा285) बेशक तुम्हारा रब ख़ूब जानता है जो उसकी राह से बहका और वह ख़ूब जानता है राह वालों को।(125) और अगर तुम सज़ा दो तो वैसी ही सज़ा दो जैसी तुम्हें तकलीफ़ पहुंचाई थी(फ़ा286) और अगर तुम सब्र करो (फ़ा287) तो बेशक सब्र वालों को सब्र सबसे अच्छा।(126) और ऐ महबूब तुम सब्र करो और तुम्हारा सब्र अल्लाह ही की तौफ़ीक़ से है और उनका ग़म न खाओ (फ़ा288) और उनके फ़रेबों से दिल तंग न हो।(127) (फ़ा289) बेशक अल्लाह उनके साथ है जो डरते हैं और जो नेकियां करते हैं।(128) (रुकूअ़ 22)

(फ़ा274) यानी तौबा के (फ़ा275) नेक ख़सायल और पसन्दीदा अख़्लाक़ और हमीदा सिफ़ात का जामेअ़. (फ़ा276) दीने इस्लाम पर क़ाइम (फ़ा277) इस में कुफ़्फ़ारे क़ुरैश की तकज़ीब है जो अपने आप को दीने इब्राहीमी पर ख़्याल करते थे (फ़ा278) अपनी नबुव्वत व ख़ुल्लत के लिए (फ़ा279) रिसालत व अमवाल व औलाद व सनाए हसन व क़बूले आ़म कि तमाम अदयान वाले मुसलमान और यहूद और नसारा और अरब के मुश्रिकीन सब उनकी अ़ज़मत करते और उन से मुहब्बत रखते हैं **(बक़िया सफ़हा 462 पर)**

(**बक़िया सफ़हा 433 का**) तब्दील कर सके और चूंकि अल्लाह तआ़ला ने कुरआने करीम की हिफ़ाज़त का वादा फ़रमाया है इस लिए यह खुसूसियत सिर्फ़ कुरआन शरीफ़ ही की है दूसरी किसी किताब को यह बात मुयस्सर नहीं यह हिफ़ाज़त कई तरह पर है एक यह कि कुरआने करीम को मोअ्.जेज़ा बनाया कि बशर का कलाम इसमें मिल ही न सके एक यह कि उसको मआ़रज़े और मुक़ाबला से महफ़ूज़ किया कि कोई इसकी मिस्ल कलाम बनाने पर क़ादिर न हो एक यह कि सारी ख़ल्क़ को उसके नेस्त व नाबूद और मअ्दूम करने से आ़जिज़ कर दिया कि कुफ़्फ़ार बावजूद कमाले अ़दावत के इस किताबे मुक़द्दस को मअ्दूम करने से आ़जिज़ हैं। (फ़ा14) इस आयत में बताया गया कि जिस तरह कुफ़्फ़ारे मक्का ने सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से जाहिलाना बातें कीं और बे अदबी से आपको मजनून कहा क़दीम ज़माना से कुफ़्फ़ार की अम्बिया के साथ यही आदत रही है और वह रसूलों के साथ तमस्खुर करते रहे इस में नबीए करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की तस्कीने ख़ातिर है। (फ़ा15) यानी मुश्रिकीने मक्का (फ़ा16) यानी सय्यदे अम्बिया सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम या कुरआन पर (फ़ा17) कि वह अम्बिया की तकज़ीब करके अ़ज़ाबे इलाही से हलाक होते रहे हैं यही हाल उनका है तो उन्हें अ़ज़ाबे इलाही से डरते रहना चाहिए (फ़ा18) यानी उन कुफ़्फ़ार का इनाद इस दर्जा पहुंच गया है कि अगर उनके लिए आसमान में दरवाज़ा खोल दिया जाये और उन्हें उसमें चढ़ना मुयस्सर हो और दिन में उससे गुज़रें और आंखों से देखें जब भी न मानें और यह कह दें कि हमारी नज़र बन्दी की गई और हम पर जादू हुआ तो जब खुद अपने मुआ़इना से उन्हें यक़ीन हासिल न हुआ तो मलायका के आने और गवाही देने से जिसको यह तलब करते हैं उन्हें क्या फ़ायदा होगा।

(**बक़िया सफ़हा 434 का**) सब उम्मतों में पिछली है या वह जो ताअ़त व ख़ैर में सबक़त करने वाले हैं और जो सुस्ती से पीछे रह जाने वाले हैं या वह जो फ़ज़ीलत हासिल करने के लिए आगे बढ़ने वाले हैं और जो उज़्र से पीछे रह जाने वाले हैं। शाने नुज़ूल हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा से मरवी है कि नबीए करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने जमाअ़त नमाज़ की सफ़े अव्वल के फ़ज़ाइल बयान फ़रमाये तो सहाबा सफ़े अव्वल हासिल करने में निहायत कोशाँ हुए और उनका इज़्दहाम होने लगा और जिन हज़रात के मकान मस्जिद शरीफ़ से दूर थे वह अपने मकान बेचकर क़रीब मकान ख़रीदने पर आमादा हो गए ताकि सफ़े अव्वल में जगह मिलने से कभी महरूम न हों इस पर यह आयते करीमा नाज़िल हुई और उन्हें तसल्ली दी गई कि सवाब नीयतों पर है और अल्लाह तआ़ला अगलों को भी जानता है और जो उज़्र से पीछे रहे गए हैं उनको भी जानता है और उन की नीयतों से भी ख़बरदार है और उस पर कुछ मख़्फ़ी नहीं। (फ़ा31) जिस हाल पर वह मरे होंगे (फ़ा32) यानी हज़रत आदम अ़लैहिस्सलाम को सूखी (फ़ा33) अल्लाह तआ़ला ने जब हज़रत आदम अ़लैहिस्सलाम के पैदा करने का इरादा फ़रमाया तो ज़मीन से एक मुश्त ख़ाक ली उसको पानी में ख़मीर किया जब वह गारा सियाह हो गया और उसमें बू पैदा हुई तो उस में सूरते इन्सानी बनाई फिर वह सूख कर खुश्क हो गया तो जब हवा उस में जाती तो वह बजता और उसमें आवाज़ पैदा होती जब आफ़ताब की तमाज़त से वह पुख़्ता हो गया तो उसमें रूह फूंकी और वह इन्सान हो गया। (फ़ा34) जो अपनी हरारत व लताफ़त से मसामों में नुफ़ूज़ कर जाती है।

(**बक़िया सफ़हा 435 का**) उसका कैद न चलेगा। (फ़ा44) ईमानदार (फ़ा45) यानी जो काफ़िर कि तेरे मुतीअ्. व फ़रमांबरदार हो जायें और तेरे इत्तेबाअ्. का क़स्द करलें (फ़ा46) इबलीस का भी और उसके इत्तेबाअ्. करने वालो का भी (फ़ा47) यानी सात तबक़े इब्ने जरीज का क़ौल है कि दोज़ख़ के सात दरकात हैं अव्वल जहन्नम, लज़ा, हतमा, सईर, सक़र, जहीम, हाविया।

(**बक़िया सफ़हा 436 का**) की क़ौम को हलाक करें यह मेहमान हज़रत जिबरील अ़लैहिस्सलाम थे मअ़ कई फ़रिश्तों के (फ़ा56) यानी हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम को सलाम किया और आपकी तहिय्यत व तकरीम बजा लाये तो हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम ने उन से (फ़ा57) इस लिए कि बे इज़्न और बे वक़्त आये और खाना नहीं खाया। (फ़ा58) यानी हज़रत इसहाक़ अ़लैहिस्सलाम की इस पर हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम ने (फ़ा59) यानी ऐसी पीराना साली में औलाद होना अ़जीब व ग़रीब है किस तरह औलाद होगी क्या हमें फिर जवान किया जाएगा या इसी हालत में बेटा अ़ता फ़रमाया जाएगा फ़रिश्तों ने (फ़ा60) क़ज़ाए इलाही इस पर जारी हो चुकी कि आपके बेटा हो और उसकी ज़ुर्रियत बहुत फैले (फ़ा61) यानी मैं उसकी रहमत से ना-उम्मीद नहीं क्योंकि रहमत से ना-उम्मीद काफ़िर होते हैं हां उसकी सुन्नत जो आ़लम में जारी है उस से यह बात अ़जीब मालूम हुई और हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम ने फ़रिश्तों से (फ़ा62) यानी इस बशारत के सिवा और क्या काम है जिसके लिए तुम भेजे गए हो (फ़ा63) यानी क़ौमे लूत की तरफ़ कि हम उन्हें हलाक करें। (फ़ा64) क्योंकि वह ईमानदार हैं। (फ़ा65) अपने कुफ़्र के सबब। (फ़ा66) ख़ूबसूरत नौजवानों की शक्ल में और हज़रत लूत अ़लैहिस्सलाम को अन्देशा हुआ कि क़ौम उनके दरपै होगी तो आप ने फ़रिश्तों से

(**बक़िया सफ़हा 437 का**) रखती और अल्लाह तआ़ला ने सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की उम्र के सिवा किसी की उम्र व हयात की क़सम नहीं फ़रमाई यह मर्तबा सिर्फ़ हुज़ूर ही का है अब इस क़सम के बाद इरशाद फ़रमाता है। (फ़ा79) यानी हौलनाक आवाज़ ने (फ़ा80) इस तरह कि हज़रत जिबरील अ़लैहिस्सलाम इस ख़ित्ता को उठा कर आसमान के क़रीब ले गए और वहां से औंधा करके ज़मीन पर डाल दिया। (फ़ा81) और क़ाफ़िले उस पर गुज़रते हैं और ग़ज़बे इलाही के आसार उनके देखने में आते हैं (फ़ा82) यानी काफ़िर थे अइकह झाड़ी को कहते हैं उन लोगों का शहर सरसब्ज़ जंगलों और मरग़ज़ारों के दर्मियान था अल्लाह तआ़ला ने हज़रत शुऐब अ़लैहिस्सलाम को उन पर रसूल बना कर भेजा उन लोगों ने नाफ़रमानी की और हज़रत शुऐब अ़लैहिस्सलाम को झुठलाया

(बक़िया सफ़हा 442 का) बहुत सी कहानियां याद कर ली थीं उससे जब कोई क़ुरआने करीम की निस्बत दरियाफ़्त करता तो वह यह जानने के बावजूद कि क़ुरआन शरीफ़ किताबे मोअ्जिज़ और हक़ व हिदायत से ममलू है लोगों को गुमराह करने के लिए यह कह देता कि यह पहले लोगों की कहानियां हैं ऐसी कहानियां मुझे भी बहुत याद हैं अल्लाह तआला फ़रमाता है कि लोगों को इस तरह गुमराह करने का अंजाम यह है। (फ़ा143) गुनाहों और गुमराही व गुमराह-गरी के।

(बक़िया सफ़हा 443 का) व बातिनी कमालात का सरचश्मा है **शाने नुज़ूलः** क़बाइले अ़रब अय्यामे हज में हज़रत नबीए करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के तहक़ीक़े हाल के लिए मक्का मुकर्रमा को क़ासिद भेजते थे यह क़ासिद जब मक्का मुकर्रमा पहुंचते और शहर के किनारे रास्तों पर उन्हें कुफ़्फ़ार के कारिन्दे मिलते (जैसा कि साबिक़ में ज़िक्र हो चुका है) उन से यह क़ासिद नबीए करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम का हाल दरियाफ़्त करते तो वह बहकाने पर मामूर ही होते थे उन में से कोई हज़रत को साहिर कहता कोई काहिन कोई शायर कोई कज़्ज़ाब कोई मजनून और उसके साथ यह भी कह देते कि तुम उन से न मिलना यही तुम्हारे हक़ में बेहतर है इस पर क़ासिद कहते कि अगर हम मक्का मुकर्रमा पहुंच कर बग़ैर उन से मिले अपनी क़ौम की तरफ़ वापस हों तो हम बुरे क़ासिद होंगे और ऐसा करना क़ासिद के मन्सबी फ़राइज़ का तर्क और क़ौम की ख़ियानत होगी हमें तहक़ीक़ के लिए भेजा गया है हमारा फ़र्ज़ है कि हम उनके अपने और बेगानों सबसे उनके हाल की तहक़ीक़ करें और जो कुछ मालूम हो उससे बे कम व कास्त क़ौम को मुत्तलअ़ करें इस ख़्याल से वह लोग मक्का मुकर्रमा में दाख़िल होकर असहाबे रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से भी मिलते थे और उनसे आपके हाल की तहक़ीक़ करते थे असहाबे किराम उन्हें तमाम हाल बताते थे और नबीए करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के हालात व कमालात और क़ुरआने करीम के मज़ामीन से मुत्तलअ़ करते थे उनका ज़िक्र इस आयत में फ़रमाया गया (फ़ा156) यानी ईमान लाये और नेक अ़मल किये। (फ़ा157) यानी हयाते तय्येबा है और फ़तह व ज़फ़र व रिज़्क़ वसीअ़ वग़ैरह नेअ्मतें। (फ़ा158) दारे आख़िरत

(बक़िया सफ़हा 444 का) की बातें कहीं। (फ़ा171) हक़ का ज़ाहिर कर देना और शिर्क के बातिल व क़बीह होने पर मुत्तलअ़ कर देना। (फ़ा172) और हर रसूल को हुक्म दिया कि वह अपनी क़ौम से फ़रमायें (फ़ा173) उम्मतों (फ़ा174) वह ईमान से मुशर्रफ़ हुए (फ़ा175) वह अपनी अज़ली शक़ावत से कुफ़्र पर मरे और ईमान से महरूम रहे।

(बक़िया सफ़हा 445 का) अ़लैहि वसल्लम के हक़ में नाज़िल हुई जिन पर अहले मक्का ने बहुत ज़ुल्म किये और उन्हें दीन की ख़ातिर वतन छोड़ना ही पड़ा बाज़ उनमें से हबशा चले गए फिर वहां से मदीना तय्येबा आये और बाज़ मदीना शरीफ़ ही को हिजरत कर गए उन्होंने (फ़ा185) वह मदीना तय्येबा है जिसको अल्लाह तआला ने उनके लिए दारुलहिजरत बनाया। (फ़ा186) यानी कुफ़्फ़ार या वह लोग जो हिजरत करने से रह गए कि इसका अज्र कितना अ़ज़ीम है। (फ़ा187) वतन की मफ़ारक़त और कुफ़्फ़ार की ईज़ा और जान व माल के ख़र्च करने पर (फ़ा188) और उसके दीन की वजह से जो पेश आये उस पर राज़ी हैं और ख़ल्क़ से इन्क़ताअ़ करके बिल्कुल हक़ की तरफ़ मुतवज्जह हैं और सालिक के लिए यह इन्तेहाए सुलूक का मक़ाम है (फ़ा189) **शाने नुज़ूलः** यह आयत मुश्रिकीने मक्का के जवाब में नाज़िल हुई जिन्होंने सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की नबुव्वत का इस तरह इन्कार किया था कि अल्लाह तआला की शान इससे बर तर है कि वह किसी बशर को रसूल बनाये उन्हें बताया गया कि सुन्नते इलाही इस तरह जारी है हमेशा उसने इन्सानों में से मर्दों ही को रसूल बना कर भेजा (फ़ा190) हदीस शरीफ़ में है बीमारीए जहल की शिफ़ा उलमा से दरियाफ़्त करना है लिहाज़ा उलमा से दरियाफ़्त करो वह तुम्हें बतावेंगे कि सुन्नते इलाहिया यूंही जारी रही कि उसने मर्दों को रसूल बना कर भेजा (फ़ा191) मुफ़स्सिरीन का एक क़ौल यह है कि माना यह हैं कि रौशन दलीलों और किताबों के जानने वालों से पूछो अगर तुम को दलील व किताब का इल्म न हो मसला इस आयत से तक़लीदे अइम्मा का वुजूब साबित होता है (फ़ा192) यानी क़ुरआन शरीफ़ (फ़ा193) हुक्म।

(बक़िया सफ़हा 446 का) जब साबित कर दिया गया कि तमाम आसमान व ज़मीन की कायनात अल्लाह के हुज़ूर ख़ाज़ेअ़ व मुतवाज़ेअ़ और आ़बिद व मुतीअ़ है और सब उसके ममलूक और उसी के तहते क़ुदरत व तसर्रुफ़ हैं तो शिर्क से मुमानअ़त फ़रमाई। (फ़ा105) क्योंकि दो तो ख़ुदा हो ही नहीं सकते (फ़ा106) मैं ही वह मअ्बूदे बरहक़ हूं जिसका कोई शरीक नहीं है। (फ़ा107) बावजूदे कि मअ्बूदे बरहक़ सिर्फ़ वही है (फ़ा108) ख़्वाह फ़क़्र की या मर्ज़ की या और कोई (फ़ा109) उसी से दुआ़ मांगते हो उसी से फ़रियाद करते हो (फ़ा110) और उन लोगों का अंजाम यह होता है।

(बक़िया सफ़हा 447 का) पर चलने वाले से या काफ़िर मुराद हैं जैसा कि दूसरी आयत में वारिद है इन्-न शर्रद्दवाब्बि इन्दल्लाहिल्लज़ी-न क-फ़रू या यह माना हैं कि रूए ज़मीन पर किसी चलने वाले को बाक़ी नहीं छोड़ता जैसा कि नूह अ़लैहिस्सलाम के ज़माना में जो कोई ज़मीन पर था उन सब को हलाक कर दिया सिर्फ़ वही बाक़ी रहे जो ज़मीन पर न थे। हज़रत नूह अ़लैहिस्सलातु वस्सलाम के साथ कश्ती में थे और एक क़ौल यह भी है कि माना यह हैं कि ज़ालिमों को हलाक कर देता और उनकी नस्लें मुन्क़तअ़ हो जातीं फिर ज़मीन में कोई बाक़ी न रहता। (फ़ा126)अपने फ़ज़्ल व करम और हिल्म से ठहराए वादे से या इख़्तेतामे उम्र मुराद है या क़ियामत (फ़ा127) यानी बेटियां और शरीक (फ़ा128) यानी जन्नत कुफ़्फ़ार बावजूद अपने कुफ़्र व बुहतान के और ख़ुदा के लिए बेटियां बताने के भी अपने आप को हक़ पर गुमान करते थे और कहते थे कि अगर मुहम्मद (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) सच्चे हों और ख़िलक़त मरने के बाद फिर उठाई जाये तो जन्नत हमीं को मिलेगी क्योंकि हम हक़ पर हैं उनके हक़ में अल्लाह तआला फ़रमाता है।

(बक़िया सफ़हा 448 का) मुन्किर थे और उन्हें इसमें दो शुबहे दर पेश थे एक तो यह कि जो चीज़ फ़ासिद हो गई और उसकी हयात जाती रही उसमें दोबारा फिर ज़िन्दगी किस तरह लौटेगी इस शुबहा का इज़ाला तो इससे पहली आयत में फ़रमा दिया गया कि तुम देखते रहते हो कि हम मुर्दा ज़मीन को ख़ुश्क होने के बाद आसमान से पानी बरसा कर हयात अ़ता फ़रमा दिया करते हैं तो क़ुदरत का यह फ़ैज़ देखने के बाद किसी मख़्लूक़ का मरने के बाद ज़िन्दा होना ऐसे क़ादिरे मुतलक़ की .क़ुदरत से बईद नहीं दूसरा शुबहा कुफ़्फ़ार का यह था कि जब आदमी मर गया और उसके जिस्म के अजज़ा मुन्तशिर हो गए और ख़ाक में मिल गए वह अजज़ा किस तरह जमा किये जायेंगे और ख़ाक के ज़र्रों से उनको किस तरह मुमताज़ किया जाएगा इस आयते करीमा में जो साफ़ दूध का बयान फ़रमाया इस में ग़ौर करने से वह शुबहा बिल्कुल नेस्तो नाबूद हो जाता है कि क़ुदरते इलाही की यह शान तो रोज़ाना देखने में आती है कि वह ग़िज़ा के मख़्लूत अजज़ा में से ख़ालिस दूध निकालता है और उसके क़ुर्ब व जवार की चीज़ों की आमेज़िश का शाइबा भी इसमें नहीं आता उस हकीमे बरहक़ की क़ुदरत से क्या बईद कि इन्सानी जिस्म के अजज़ा को मुन्तशिर होने के बाद फिर मुज्तमअ़ फ़रमा दे शक़ीक़ बलख़ी रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने फ़रमाया कि निअ़मत का अतमाम यही है किदूध साफ़ ख़ालिस आये और उसमें ख़ून और गोबर के रंग और बू का नाम व निशान न हो वरना नेअ़मते ताम न होगी और तबअ़े सलीम इसको क़बूल न करेगी जैसी साफ़ निअ़मत परवरदिगार की तरफ़ से पहुंचती है बन्दे को लाज़िम है कि वह भी परवरदिगार के साथ इख़्लास से मुआ़मला करे और उसके अ़मल रिया और हवाए नफ़्स की आमेज़िशों से पाक व साफ़ हों ताकि शरफ़े क़बूल से मुशर्रफ़ हों। (फ़ा140) हम तुम्हें रस पिलाते हैं (फ़ा141) यानी सिरका और रुब और ख़ुरमा और मवीज़ मसला मवीज़ और अंगूर वग़ैरह का रस जब इस क़दर पका लिया जाये कि दो तिहाई जल जाये और एक तिहाई बाक़ी रहे और तेज़ हो जाये उसको नबीज़ कहते हैं यह हद सुकर तक न पहुंचे और नशा न लाये तो शैख़ैन के नज़दीक हलाल है और यही आयत और बहुत सी अहादीस उनकी दलील है। (फ़ा142) फलों की तलाश में

(बक़िया सफ़हा 449 का) (फ़ा149) अ़दम से और नेस्ती के बाद हस्ती अ़ता फ़रमाई कैसी अ़जीब क़ुदरत है (फ़ा150) और तुम्हें ज़िन्दगी के बाद मौत देगा जब तुम्हारी अजल पूरी हो जो उसने मुक़र्रर फ़रमाई है ख़्वाह बचपन में या जवानी में या बुढ़ापे में (फ़ा151) जिसका ज़माना उम्रे इन्सानी के मरातिब में साठ साल के बाद आता है कि क़वा और हवास सब नाकारा हो जाते हैं और इन्सान की यह हालत हो जाती है। (फ़ा152) और नादानी में बच्चों से ज़्यादा बदतर हो जाये इन तग़य्युरात में क़ुदरते इलाही के कैसे अ़जाइब मुशाहिदे में आते हैं हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा ने फ़रमाया कि मुसलमान बफ़ज़्ले इलाही इस से महफ़ूज़ हैं तूले उम्र व बक़ा से उन्हें अल्लाह के हुज़ूर में करामत और अक़्ल व मअ़रेफ़त की ज़्यादती हासिल होती है और हो सकता है कि तवज्जोह इलल्लाह का ऐसा ग़लबा हो कि इस आ़लम से इन्क़ेताअ़ हो जाये और बन्दा मक़बूले दुनिया की तरफ़ इल्तेफ़ात से मुजतनिब हो ईकरमा का क़ौल है कि जिसने क़ुरआन पाक पढ़ा वह इस अरज़ल उम्र की हालत को न पहुंचेगा कि इल्म बाद महज़ बे इल्म हो जाये। (फ़ा153) तो किसी को ग़नी किया किसी को फ़क़ीर किसी को मालदार किसी को नादार किसी को मालिक किसी को ममलूक (फ़ा154) और बांदी ग़ुलाम आक़ाओं के शरीक हो जायें जब तुम अपने ग़ुलामों को अपना शरीक बनाना गवारा नहीं करते तो अल्लाह के बन्दों और उसके ममलूकों को उसका शरीक ठहराना किस तरह गवारा करते हो सुबहानल्लाह यह बुत परस्ती का कैसा नफ़ीस दिल नशीन और ख़ातिर गुज़ीं रद है। (फ़ा155) कि उसको छोड़ कर मख़्लूक़ को पूजते हैं (फ़ा156) क़िस्म क़िस्म के ग़ल्लों फलों मेवों खाने पीने की चीज़ों से (फ़ा157) यानी शिर्क व बुत परस्ती (फ़ा158) अल्लाह के फ़ज़्ल व निअ़मत से सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की ज़ाते गिरामी या इस्लाम मुराद है (मदारिक)

(बक़िया सफ़हा 450 का) वाली चीज़ पोशीदा नहीं रह सकती बाज़ मुफ़स्सिरीन का क़ौल है कि इससे मुराद इल्मे क़ियामत है (फ़ा169) क्योंकि पलक मारना भी ज़माना चाहता है जिस में पलक की हरकत हासिल हो और अल्लाह तआ़ला जिस चीज़ का होना चाहे वह कुन फ़रमाते ही हो जाती है। (फ़ा170) और अपनी पैदाइश की इब्तेदा और अव्वल फ़ितरत में इल्म व मअ़रेफ़त से ख़ाली थे। (फ़ा171) कि उनसे अपना पैदाइशी जहल दूर करो (फ़ा172) और इल्मो अमल से फ़ैज़याब होकर मुनइम का शुक्र बजा लाओ और उसकी इबादत में मश्ग़ूल हो और उसके हुक़ूक़ के निअ़मत अदा करो। (फ़ा173) गिरने से बावजूदे कि जिस्म सक़ील बित्तबअ़ गिरना चाहता है (फ़ा174) कि उसने उन्हें ऐसा पैदा किया कि वह हवा में परवाज़ कर सकते हैं और अपने जिस्मे सक़ील की तबीअ़त के ख़िलाफ़ हवा में ठहरे रहते हैं गिरते नहीं और हवा को ऐसा पैदा किया कि उसमें उनकी परवाज़ मुमकिन है ईमानदार इस में ग़ौर करके क़ुदरते इलाही का एतेराफ़ करते है

(बक़िया सफ़हा 451 का) हैं कि वह हुज़ूर को पहचानते हैं और समझते हैं कि आप का वुजूद अल्लाह तआ़ला की बड़ी निअ़मत है और बावजूद इसके (फ़ा188) और दीने इस्लाम क़बूल नहीं करते (फ़ा189) मुआ़निद कि हसद व इनाद से कुफ़्र पर क़ाइम रहते हैं (फ़ा190) यानी रोज़े क़ियामत (फ़ा191) जो उनकी तस्दीक़ व तकज़ीब और ईमान व कुफ़्र की गवाही दें और यह गवाह अम्बिया हैं अ़लैहिमुस्सलाम (फ़ा192) मअ़ज़रत की या किसी कलाम की या दुनिया की तरफ़ लौटने की (फ़ा193) यानी न उन से अताब व मलामत दूर की जाये (फ़ा194) यानी कुफ़्फ़ार। (फ़ा195) बुतों वग़ैरह को जिन्हें पूजते थे

(बक़िया सफ़हा 452 का) में कोई चीज़ ऐसी नहीं जो किताबुल्लाह यानी क़ुरआन शरीफ़ में मज़कूर न हो उस पर किसी ने उन से कहा सराओं का ज़िक्र कहां है फ़रमाया इस आयत में लै-स अ़लैकुम् जुनाहुन् अन् तद् ख़ुलू बुयूतन् ग़ै-र मस्कू-नतिन् फ़ीहा मताउंल्-लकुम् इब्ने अबुल फ़ज़्ल मरसी ने कहा कि अव्वलीन व आख़िरीन के तमाम उलूम क़ुरआन पाक में हैं ग़रज़ यह किताब जामेअ़ है जमीअ़ उलूम की जिस किसी को उसका जितना इलम मिला है उतना ही जानता है। (फ़ा204) हज़रत

इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा ने फ़रमाया कि इन्साफ़ तो यह है कि आदमी ला इला-ह इल्लल्लाह की गवाही दे और नेकी और फ़राइज़ का अदा करना और आप ही से एक और रिवायत है कि इन्साफ़ शिर्क का तर्क करना और नेकी अल्लाह की इस तरह इबादत करना गोया वह तुम्हें देख रहा है और दूसरों के लिए वही पसन्द करना जो अपने लिए पसन्द करते हो अगर वह मोमिन हो तो उस के बरकाते ईमान की तरक़्क़ी तुम्हें पसन्द हो और अगर काफ़िर हो तो तुम्हें यह पसन्द आये कि वह तुम्हारा इस्लामी भाई हो जाये उन्हीं से एक और रिवायत है उसमें है कि इन्साफ़ तौहीद है और नेकी इख़्लास और इन तमाम रिवायतों का तर्ज़े बयान अगरचे जुदा जुदा है लेकिन मआल व मुद्दआ एक ही है (फ़ा205) और उनके साथ सिला रहमी और नेक सुलूक करने का (फ़ा206) यानी हर शरमनाक मज़मूम क़ौल व फ़ेअ़्ल (फ़ा207) यानी शिर्क व कुफ़्र व मआ़सी तमाम ममनूआ़ते शरइया (फ़ा208) यानी ज़ुल्म व तकब्बुर से इब्ने अ़ैनिया ने इस आयत की तफ़सीर में कहा कि अद्ल ज़ाहिर व बातिन दोनों में बराबर हक़ व ताअ़त बजा लाने को कहते हैं और एहसान यह है कि बातिन का हाल ज़ाहिर से बेहतर हो और फ़हशा मुन्किर व बग़ी यह है कि ज़ाहिर अच्छा हो और बातिन ऐसा न हो बाज़ मुफ़स्सिरीन ने फ़रमाया इस आयत में अल्लाह तआ़ला ने तीन चीज़ों का हुक्म दिया और तीन से मना फ़रमाया अद्ल का हुक्म दिया और वह इन्साफ़ व मुसावात है अक़्वाल व अफ़आ़ल में इसके मुक़ाबिल फ़हशा यानी बेहयाई है वह क़बीह अक़्वाल व अफ़आ़ल हैं और एहसान का हुक्म फ़रमाया वह यह है कि जिसने ज़ुल्म किया उसको माफ़ करो और जिसने बुराई की उसके साथ भलाई करो उसके मुक़ाबिल मुन्किर है यानी मुहसनि के एहसान का इन्कार करना और तीसरा हुक्म इस आयत में रिश्तादारों को देने और उनके साथ सिला रहमी और शफ़क़त व मुहब्बत का फ़रमाया उसके मुक़ाबिल बग़ी है और वह अपने आपको ऊँचा खींचना और अपने इलाक़ादारों के हुक़ूक़ तल्फ़ करना है इब्ने मसऊद रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने फ़रमाया कि यह आयत तमाम ख़ैर व शर के बयान को जामेअ़ है यही आयत हज़रत उसमान बिन मज़ऊन के इस्लाम का सबब हुई जो फ़रमाते हैं कि इस आयत के नुज़ूल से ईमान मेरे दिल में जगह पकड़ गया इस आयत का असर इतना ज़बरदस्त हुआ कि वलीद बिन मुग़ीरा और अबू जेहल जैसे सख़्त दिल कुफ़्फ़ार की ज़बानों पर भी उसकी तारीफ़ आ ही गई इस लिए यह आयत हर ख़ुतबा के आख़िर में पढ़ी जाती है। (फ़ा209) यह आयत उन लोगों के हक़ में नाज़िल हुई जिन्होंने रसूले करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से इस्लाम पर बैअ़त की थी उन्हें अपने अहद के वफ़ा करने का हुक्म दिया गया और यह हुक्म इन्सान के हर अहदे नेक और वादा को शामिल है। (फ़ा210) उसके नाम की क़सम खा कर (फ़ा211) तुम अहद और क़स्में तोड़ कर (फ़ा212) मक्का मुकर्रमा में रीता बिन्ते अ़मर एक औरत थी जिसकी तबीअ़त में बहुत वहम था और अक़्ल में फ़ुतूर वह दोपहर तक मेहनत करके सूत काता करती और अपनी बांदियों से भी कतवाती और दोपहर के वक़्त उस काते हुए को तोड़ कर रेज़ा रेज़ा कर डालती और बांदियों से भी तोड़वाती यही उसका मामूल था माना यह हैं कि अपने अहद को तोड़ कर उस औरत की तरह बेवक़ूफ़ न बनो।

(बक़िया सफ़हा 453 का) की नेअ़्मतें देकर बाज़ उ़लमा ने फ़रमाया कि अच्छी ज़िन्दगी से लज़्ज़त इबादत मुराद है हिकमत मोमिन अगरचे फ़क़ीर भी हो उसकी ज़िन्दगानी दौलतमन्द काफ़िर के ऐश से बेहतर और पाकीज़ा है क्योंकि मोमिन जानता है कि उस की रोज़ी अल्लाह की तरफ़ से है जो उसने मुक़द्दर किया उस पर राज़ी होता है और मोमिन का दिल हिर्स की परेशानियों से महफ़ूज़ और आराम में रहता है और काफ़िर जो अल्लाह पर नज़र नहीं रखता वह हरीस रहता है और हमेशा रंज व तअ़ब और तहसीले माल की फ़िक्र में परेशान रहता है

(बक़िया सफ़हा 454 का) होती चली जाती है और कोई तदबीर इस्लाम की मुख़ालफ़त में कामयाब नहीं होती तो उन्होंने तरह तरह के इफ़्तेरा उठाने शुरू किये कभी उसको सहर बताया कभी पहलों के क़िस्से और कहानियां कहा कभी यह कहा कि सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने यह ख़ुद बना लिया है और हर तरह कोशिश की कि किसी तरह लोग इस किताबे मुक़द्दस की तरफ़ से बदगुमान हों उन्हीं मक्कारियों में से एक मक्र यह भी था कि उन्होंने एक अ़जमी ग़ुलाम की निस्बत यह कहा कि वह सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को सिखाता है उसके रद्द में यह आयते करीमा नाज़िल हुई और इरशाद फ़रमाया गया कि ऐसी बातिल बातें दुनिया में कौन क़बूल कर सकता है जिस ग़ुलाम की तरफ़ कुफ़्फ़ार निस्बत करते हैं वह तो अ़जमी है ऐसा कलाम बनाना उसके तो क्या इमकान में होता तुम्हारे फ़ुसहा व बुलग़ा जिनकी ज़बान-दानी पर अहले अरब को फ़ख़्र व नाज़ है वह सब के सब हैरान हैं और चन्द जुमले क़ुरआन की मिस्ल बनाना उन्हें मुहाल और उनकी क़ुदरत से बाहर है तो एक अ़जमी की तरफ़ ऐसी निस्बत किस क़दर बातिल और बे शरमी का फ़ेअ़्ल है ख़ुदा की शान जिस ग़ुलाम की तरफ़ कुफ़्फ़ार यह निस्बत करते थे उसको भी इस कलाम के एजाज़ ने तस्ख़ीर किया और वह भी सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम का हलक़ा बगोश ताअ़त हुआ और सिदक़ व इख़्लास के साथ ईमान लाया (फ़ा240) और उसकी तस्दीक़ नहीं करते (फ़ा241) बसबबे इन्कार क़ुरआन व तकज़ीब रसूल अ़लैहिस्सलाम के (फ़ा242) यानी झूठ बोलना और इफ़्तेरा करना बे ईमानों ही का काम है मसला इस आयत से मालूम हुआ कि झूठ कबीरा गुनाहों में बदतरीन गुनाह है (फ़ा243) उस पर अल्लाह का ग़ज़ब

(बक़िया सफ़हा 455 का) करीमा नाज़िल हुई (ख़ाज़िन) मसलाः आयत से मालूम हुआ कि हालते इकराह में अगर दिल ईमान पर जमा हुआ हो तो कलिमए कुफ़्र का इजरा जाइज़ है जबकि आदमी को अपने जान या किसी उ़ज़्व के तलफ़ होने का ख़ौफ़ हो मसलाः अगर इस हालत में भी सब्र करे और क़त्ल कर डाला जाये तो वह माजूर और शहीद होगा जैसा कि हज़रत ख़ुबैब रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने सब्र किया और वह सूली पर चढ़ा कर शहीद कर डाले गए सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने उन्हें सय्येदुश्शोहदा फ़रमाया मसला जिस शख़्स को मजबूर किया जाये अगर उसका दिल ईमान पर जमा हुआ न हो वह कलिमए

कुफ़्र ज़बान पर लाने से काफ़िर हो जाएगा। मसला अगर कोई शख़्स बग़ैर मजबूरी के तमस्ख़ुर या जहल से कलिमए कुफ़्र ज़बान पर जारी करे काफ़िर हो जाएगा। (तफ़सीर अहमदी) (फ़ा245) रज़ामन्दी और एतेक़ाद के साथ (फ़ा246) और जब यह दुनिया इरतेदाद पर इक़दाम करने का सबब है। (फ़ा247) न वह तदब्बुर करते हैं न मवाइज़ व नसाएह पर कान रखते हैं न तरीक़े रुश्द व सवाब को देखते हैं (फ़ा248) कि अपनी आक़बत व अन्जामकार को नहीं सोचते (फ़ा249) कि उनके लिए दाइमी अ़ज़ाब है (फ़ा250) और मक्का मुर्रमा से मदीना तय्येबा को हिजरत की (फ़ा251) कुफ़्फ़ार ने उन पर सख़्तियां कीं और उन्हें कुफ़्र पर मजबूर किया (फ़ा252) हिजरत के बाद (फ़ा253) हिजरत व जिहाद व सब्र (फ़ा254) वह रोज़े क़ियामत है जब हर एक नफ़्सी नफ़्सी कहता होगा और सब को अपनी अपनी पड़ी होगी। (फ़ा255) हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा ने इस आयत की तफ़सीर में फ़रमाया कि रोज़े क़ियामत लोगों में ख़सूमत यहां तक बढ़ेगी कि रूह व जिस्म में झगड़ा होगा रूह कहेगी या रब न मेरे हाथ था कि मैं किसी को पकड़ती न पाँव था कि चलती न आंख कि देखती जिस्म कहेगा या रब मैं तो लकड़ी की तरह था न मेरा हाथ पकड़ सकता था न पाँव चल सकता था न आंख देख सकती थी जब यह रूह नूरी शुआअ़ की तरह आई तो उससे मेरी ज़बान बोलने लगी आंख बीना हो गई पाँव चलने लगे जो कुछ किया इसने किया अल्लाह तआ़ला एक मिसाल बयान फ़रमाएगा कि एक अन्धा और एक लूला दोनों एक बाग़ में गए अन्धे को तो फल नज़र नहीं आते थे और लूले का हाथ उन तक नहीं पहुंचता था तो अन्धे ने लूले को अपने ऊपर सवार कर लिया इस तरह उन्होंने फल तोड़े तो सज़ा के वह दोनों मुस्तहिक़ हुए इस लिए रूह और जिस्म दोनों मुलज़िम हैं (फ़ा256) ऐसे लोगों के लिए जिन पर अल्लाह तआ़ला ने इनाम किया और वह इस निअ़्मत पर मग़रूर होकर नाशुक्री करने लगे काफ़िर हो गए यह सबब अल्लाह तआ़ला की नाराज़ी का हुआ उनकी मिसाल ऐसी समझो जैसे कि (फ़ा257) मिस्ल मक्का के (फ़ा258) न इस पर ग़नीम चढ़ता न वहां के लोग क़त्ल व क़ैद की मुसीबत में गिरिफ़्तार किये जाते (फ़ा259) और उसने अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की तकज़ीब की (फ़ा260) कि सात बरस नबीए करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की बद दुआ़ से क़हत और ख़ुश्क साली की मुसीबत में गिरिफ़्तार रहे यहां तक कि मुर्दार खाते थे फिर अम्न व इत्मीनान के बजाए ख़ौफ़ व हरास उन पर मुसल्लत हुआ और हर वक़्त मुसलमानों के हमले और लश्कर कुशी का अन्देशा रहने लगा।

(बक़िया सफ़हा 456 का) चाहिए कि ऐसी चीज़ों की निस्बत यह कह देना कि यह शरअ़न हराम हैं अल्लाह तआ़ला पर इफ़्तेरा करना है। (फ़ा269) और दुनिया की चन्द रोज़ा आसाइश है जो बाक़ी रहने वाली नहीं। (फ़ा270) है आख़िरत में। (फ़ा271) सूरह अनूआ़म में आयत *व अ़लल्-लज़ी-न हादू हर्रम्ना कुल्-ल ज़ी ज़ुफ़ुरिन्* अलआयत में (फ़ा272) बग़ावत व मअ़सियत का इरतेकाब करके जिस की सज़ा में वह चीज़ें उन पर हराम हुईं जैसा कि आयत *फ़-बिज़ुल्मिम् मिनल्-लज़ी-न हादू हर्रम्ना अ़लैहिम् तय्यिबातिन् उहिल्लत् लहुम्* में इरशाद फ़रमाया गया (फ़ा273) बग़ैर अंजाम सोचे।

(बक़िया सफ़हा 457 का) (फ़ा280) इत्तेबाअ़ से मुराद यहां अ़क़ाइद व उसूले दीन में मुवाफ़क़त करना है सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को इस इत्तेबाअ़ का हुक्म किया गया इस में आपकी अ़ज़मत मन्ज़िलत और रिफ़अ़ते दर्जत का इज़हार है कि आप का दीने इब्राहीमी की मुवाफ़क़त फ़रमाना हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलातु वस्सलाम के लिए उनके तमाम फ़ज़ायल व कमालात में सब से आला फ़ज़्ल व शरफ़ है क्योंकि आप अकरमुल अव्वलीन व आख़िरीन हैं जैसा कि सही हदीस में वारिद हुआ और तमाम अम्बिया और कुल ख़ल्क़ से आपका मर्तबा अफ़ज़ल व आला है शेअ़र तू अस्ली व बाक़ी तुफ़ैल तू अन्द तू शाही व मजमूअ़ ख़ैल तू अन्द। (फ़ा281) यानी शम्बा की ताज़ीम और उस रोज़ शिकार तर्क करना और वक़्त को इबादत के लिए फ़ारिग़ करना यहूद पर फ़र्ज़ किया गया था और उस का वाक़िआ़ इस तरह हुआ था कि हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलातु वस्सलाम ने उन्हें रोज़े जुमा की ताज़ीम का हुक्म फ़रमाया था और इरशाद किया था कि हफ़्ता में एक दिन अल्लाह तआ़ला की इबादत के लिए ख़ास करो उस दिन में कुछ काम न करो इसमें उन्होंने इख़्तिलाफ़ किया और कहा वह दिन जुमा नहीं बल्कि सनीचर होना चाहिए बजुज़ एक छोटी से जमाअ़त के जो हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम के हुक्म की तामील में जुमा पर ही राज़ी हो गई थी अल्लाह तआ़ला ने यहूद को सनीचर की इजाज़त दे दी और शिकार हराम फ़रमा कर इब्तेला में डाल दिया तो जो लोग जुमा पर राज़ी हो गए थे वह तो मुतीअ़ रहे और उन्होंने इस हुक्म की फ़रमांबरदारी की बाक़ी लोग सब्र न कर सके उन्होंने शिकार किये और नतीजा यह हुआ कि मस्ख़ किये गए यह वाक़िआ़ तफ़सील के साथ सूरह अअ़राफ़ में बयान हो चुका है। (फ़ा282) इस तरह कि मुतीअ़ को सवाब देगा और आ़सी को अ़क़ाब फ़रमाएगा उसके बाद सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को ख़िताब फ़रमाया जाता है। (फ़ा283) यानी ख़ल्क़ को दीने इस्लाम की दावत दो (फ़ा284) पक्की तदबीर से वह दलील मुहकम मुराद है जो हक़ को वाज़ेह और शुबहात को ज़ाइल कर दे और अच्छी नसीहत से तरग़ीबात व तरहीबात मुराद हैं (फ़ा285) बेहतर तरीक़ से मुराद यह है कि अल्लाह तआ़ला की तरफ़ उसकी आयात और दलाइल से बुलायें मसला इससे मालूम हुआ कि दावते हक़ और इज़हारे हक़्क़ानियत दीन के लिए मुनाज़रा जाइज़ है (फ़ा286) यानी सज़ा बक़द्रे जनायत हो इससे ज़ाइद न हो **शाने नुज़ूलः** जंगे उहद में कुफ़्फ़ार ने मुसलमानों के शोहदा के चेहरों को ज़ख़्मी करके उनकी शक्लों को तब्दील किया था और उनके पेट चाक किये थे उनके आज़ा काटे थे उन शोहदा में हज़रत हमज़ा भी थे सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने जब उन्हें देखा तो हुज़ूर को बहुत सदमा हुआ और हुज़ूर ने क़सम खाई कि एक हज़रत हमज़ा रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु का बदला सत्तर काफ़िरों से लिया जाएगा और सत्तर का यही हाल किया जाएगा इस पर यह आयते करीमा नाज़िल हुई तो हुज़ूर ने वह इरादा तर्क फ़रमाया और अपनी क़सम का कफ़्फ़ारा दिया **मसलाः** मुसूला यानी नाक, कान वग़ैरह काट कर किसी की हैयत को तब्दील करना शरअ़ में हराम है। (मदारिक) (फ़ा287) और इन्तेक़ाम न लो (फ़ा288) अगर वह ईमान न लायें (फ़ा289) क्योंकि हम तुम्हारे मुईन व नासिर हैं।

سُورَةُ بَنِي إِسْرَاءِيلَ مَكِّيَّةٌ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝

سُبْحٰنَ الَّذِیْۤ اَسْرٰى بِعَبْدِهٖ لَیْلًا مِّنَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ اِلَى الْمَسْجِدِ الْاَقْصَا الَّذِیْ بٰرَكْنَا حَوْلَهٗ لِنُرِیَهٗ مِنْ اٰیٰتِنَا ؕ اِنَّهٗ هُوَ السَّمِیْعُ الْبَصِیْرُ ۝ وَ اٰتَیْنَا مُوْسَى الْكِتٰبَ
وَ جَعَلْنٰهُ هُدًى لِّبَنِیْۤ اِسْرَآءِیْلَ اَلَّا تَتَّخِذُوْا مِنْ دُوْنِیْ وَكِیْلًا ۝ ذُرِّیَّةَ مَنْ حَمَلْنَا مَعَ نُوْحٍ ؕ اِنَّهٗ كَانَ عَبْدًا شَكُوْرًا ۝ وَ قَضَیْنَاۤ اِلٰى بَنِیْۤ اِسْرَآءِیْلَ فِی
الْكِتٰبِ لَتُفْسِدُنَّ فِی الْاَرْضِ مَرَّتَیْنِ وَ لَتَعْلُنَّ عُلُوًّا كَبِیْرًا ۝ فَاِذَا جَآءَ وَعْدُ اُوْلٰىهُمَا بَعَثْنَا عَلَیْكُمْ عِبَادًا لَّنَاۤ اُولِیْ بَاْسٍ شَدِیْدٍ فَجَاسُوْا خِلٰلَ الدِّیَارِ

सूरह बनी इसराईल

(मक्की है इसमें 110 आयतें और 12 रुकूअ़ हैं)

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम

सुब्हानल्लज़ी अस्रा बि–अ़ब्दिही लैलम् मिनल् मस्जिदिल् ह़रामि इलल् मस्जिदिल् अक़्सल् लज़ी बारक्ना हौ–लहू लिनुरि–यहू मिन् आयातिना इन्नहू हुवस् समीअुल् बसीर(1)व आतैना मूसल्किता–ब व ज–अ़ल्नाहु हुदल् लि–बनी इस्राई–ल अल्ला तत्तख़िज़ू मिन् दूनी वकीला(2)ज़ुर्रिय्य–त मन् ह़–मल्ना म–अ़ नूह़िन् इन्नहू का–न अ़ब्दन् शकूरा(3)व क़ज़ैना इला बनी इस्राई–ल फ़िल्किताबि लतुफ़्सिदुन्–न फ़िल्अर्ज़ि मर्रतैनि व ल–तअ़्लुन्–न अुलुव्वन् कबीरा(4)फ़–इज़ा जा–अ वअ़्दु ऊलाहुमा ब–अ़स्ना अ़लैकुम् अ़िबादल् लना उली बअ्सिन् शदीदिन् फ़जासू ख़िलालद् दियारि

अल्लाह के नाम से शुरू जो बहुत मेहरबान रहम वाला। (फ़1)

पाकी है उसे (फ़2) जो रातों रात अपने बन्दे (फ़3) को ले गया (फ़4) मस्जिदे ह़राम से मस्जिदे अक़्सा तक (फ़5) जिसके गिर्दा गिर्द हमने बरकत रखी (फ़6) कि हम उसे अपनी अ़ज़ीम निशानियां दिखायें बेशक वह सुनता देखता है।(1) और हमने मूसा को किताब (फ़7) अ़ता फ़रमाई और उसे बनी इसराईल के लिए हिदायत किया कि मेरे सिवा किसी को कारसाज़ न ठहराओ।(2) ऐ उनकी औलाद जिनको हमने नूह के साथ (फ़8) सवार किया बेशक वह बड़ा शुक्रगुज़ार बन्दा था।(3) (फ़9) और हमने बनी इसराईल को किताब (फ़10) में 'वही' भेजी कि ज़रूर तुम ज़मीन में दोबार फ़साद मचाओगे (फ़11) और ज़रूर बड़ा ग़ुरूर करोगे।(4) (फ़12) फिर जब उन में पहली बार (फ़13) का वादा आया (फ़14) हमने तुम पर अपने कुछ बन्दे भेजे सख़्त लड़ाई वाले (फ़15) तो वह शहरों के अन्दर तुम्हारी तलाश को घुसे (फ़16)

(फ़1) सूरह बनी इसराईल इसका नाम सूरए इसरा और सूरए सुब्ह़ान भी है यह सूरत मक्की है मगर आठ आयतें व इन् कादू ल-यफ़्तिनू-न-क से नसीरन् तक यह क़ौल क़तादा का है बैज़ावी ने जज़्म किया है कि यह सूरत तमाम की तमाम मक्की है इस सूरत में बारह रुकूअ़ और एक सौ दस आयतें बसरी हैं और कूफ़ी एक सौ ग्यारह और 533 कलिमे और 3460 हरफ़ हैं (फ़2) मुनज़्ज़ा है उसकी ज़ात हर ऐब व नक़्स से (फ़3) महबूब मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम (फ़4) शबे मेअ़राज (फ़5) जिस का फ़ासला चालीस मन्ज़िल यानी सवा महीना से ज़्यादा की राह है **शाने नुज़ूलः** जब सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम शबे मेअ़राज दरजाते आलिया व मरातिबे रफ़ीआ पर फ़ाइज़ हुए तो रब्बे अ़ज़्ज़ो जल्ल ने ख़िताब फ़रमाया ऐ मुहम्मद (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) यह फ़ज़ीलत व शरफ़ मैंने तुम्हें क्यों अ़ता फ़रमाया हुज़ूर ने अर्ज़ किया इस लिए कि तूने मुझे अ़ब्दियत के साथ अपनी तरफ़ मन्सूब फ़रमाया इस पर यह आयते मुबारका नाज़िल हुई। (ख़ाज़िन) (फ़6) दीनी भी दुनियवी भी कि वह सरज़मीने पाक वही की जाये नुज़ूल और अम्बिया की इबादतगाह और उनका जाए क़ियाम व क़िबलए इबादत है और कसरते अन्हार व अशजार से वह ज़मीन सर सब्ज़ व शादाब और मेवों और फलों की कसरत से बेहतरीन ऐश व राहत का मक़ाम है। मेअ़राज शरीफ़ नबीए करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम का एक जलील मोअ़जेज़ा और अल्लाह तआ़ला की अ़ज़ीम निअ़मत है और इससे हुज़ूर का वह कमाले क़ुर्ब ज़ाहिर होता है जो मख़्लूक़े इलाही में आपके सिवा किसी को मुयस्सर नहीं नबुव्वत के बारहवें साल सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम मेअ़राज से नवाज़े गए महीना में इख़्तिलाफ़ है मगर अशहर यह है कि सताईसवीं रजब को मेअ़राज हुई मक्का मुकर्रमा से हुज़ूर पुरनूर का बैतुल मुक़द्दस तक शब के छोटे हिस्सा में तशरीफ़ ले जाना नस्से क़ुरआनी से साबित है इसका मुन्किर काफ़िर है और आसमानों की सैर और मनाज़िले क़ुर्ब में पहुंचना अहादीसे सहीहा मोअ़्तमदा मशहूरा से साबित है जो हद्दे तवातुर के क़रीब पहुंच गई **(बक़िया सफ़हा 488 पर)**

وَكَانَ وَعْدًا مَّفْعُوْلًا ۝ ثُمَّ رَدَدْنَا لَكُمُ الْكَرَّةَ عَلَيْهِمْ وَاَمْدَدْنٰكُمْ بِاَمْوَالٍ وَّبَنِيْنَ وَجَعَلْنٰكُمْ اَكْثَرَ نَفِيْرًا ۝ اِنْ اَحْسَنْتُمْ اَحْسَنْتُمْ لِاَنْفُسِكُمْ وَاِنْ اَسَاْتُمْ فَلَهَا
فَاِذَا جَآءَ وَعْدُ الْاٰخِرَةِ لِيَسُوْٓءٗا وُجُوْهَكُمْ وَلِيَدْخُلُوا الْمَسْجِدَ كَمَا دَخَلُوْهُ اَوَّلَ مَرَّةٍ وَّلِيُتَبِّرُوْا مَا عَلَوْا تَتْبِيْرًا ۝ عَسٰى رَبُّكُمْ اَنْ يَّرْحَمَكُمْ وَاِنْ عُدْتُّمْ
عُدْنَا وَجَعَلْنَا جَهَنَّمَ لِلْكٰفِرِيْنَ حَصِيْرًا ۝ اِنَّ هٰذَا الْقُرْاٰنَ يَهْدِيْ لِلَّتِيْ هِيَ اَقْوَمُ وَيُبَشِّرُ الْمُؤْمِنِيْنَ الَّذِيْنَ يَعْمَلُوْنَ الصّٰلِحٰتِ اَنَّ لَهُمْ اَجْرًا كَبِيْرًا ۝
وَّاَنَّ الَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِالْاٰخِرَةِ اَعْتَدْنَا لَهُمْ عَذَابًا اَلِيْمًا ۝ وَيَدْعُ الْاِنْسَانُ بِالشَّرِّ دُعَآءَهٗ بِالْخَيْرِ وَكَانَ الْاِنْسَانُ عَجُوْلًا ۝ وَجَعَلْنَا الَّيْلَ وَالنَّهَارَ
اٰيَتَيْنِ فَمَحَوْنَآ اٰيَةَ الَّيْلِ وَجَعَلْنَآ اٰيَةَ النَّهَارِ مُبْصِرَةً لِّتَبْتَغُوْا فَضْلًا مِّنْ رَّبِّكُمْ وَلِتَعْلَمُوْا عَدَدَ السِّنِيْنَ وَالْحِسَابَ وَكُلَّ شَيْءٍ فَصَّلْنٰهُ تَفْصِيْلًا ۝ وَكُلَّ

व का–न वअ़्दम् मफ़्अ़ूला(5)सुम्–म र–दद्ना लकुमुल् कर्र–त अ़लैहिम् व अम्दद्नाकुम् बि–अम्वालिंव् व बनी–न व ज–अ़ल्नाकुम् अक्स–र नफ़ीरा(6)इन् अह्सन्तुम् अह्सन्तुम् लि–अन्फ़ुसिकुम् व इन् असअ्तुम् फ़–लहा फ़–इज़ा जा–अ वअ़्दुल्–आख़ि–रति लि–यसूउ वुजू–हकुम् व लियद्ख़ुलुल् मस्जि–द कमा द–ख़लूहु अव्व–ल मर्रतिंव् व लियु–तब्बिरू मा अ़लौ तत्बीरा(7)अ़सा रब्बुकुम् अंय्यर् ह़–मकुम् व इन् अ़ुत्तुम् अ़ुद्ना व ज–अ़ल्ना जहन्न–म लिल्काफ़िरी–न ह़सीरा(8)इन्–न हाज़ल् क़ुरआ–न यह्दी लिल्लती हि–य अक़्वमु व युबश्शिरुल् मुअ्–मिनीनल्लज़ी–न यअ़्मलूनस् सालि–ह़ाति अन्–न लहुम् अज्रन् कबीरा(9)व अन्नल्लज़ी–न ला युअ्मिनू–न बिल्आख़ि–रति अअ्–तद्ना लहुम् अ़ज़ाबन् अलीमा(10)व यद्अ़ुल् इन्सानु बिश्शर्रि दुआ़–अहू बिल्ख़ैरि व कानल् इन्सानु अ़जूला(11)व ज–अ़ल्नल् लै–ल वन्नहा–र आ–यतैनि फ़–महौना आ–यतल् लैलि व ज–अ़ल्ना आ–यतन्नहारि मुब्सि–र–तल् लि–तब्तग़ू फ़ज़्लम् मिर् रब्बिकुम् व लि–तअ़्–लमू अ़–द–दस्सिनी–न वल्हिसा–ब व कुल्–ल शैइन् फ़स्सल्नाहु तफ़्सीला(12)व कुल्–ल

और यह एक वादा था (फ़17) जिसे पूरा होना।(5) फिर हमने उन पर उलट कर तुम्हारा हमला कर दिया (फ़18) और तुम को मालों और बेटों से मदद दी और तुम्हारा जत्था बढ़ा दिया।(6) अगर तुम भलाई करोगे अपना भला करोगे (फ़19) और अगर बुरा करोगे तो अपना फिर जब दूसरी बार का वादा आया (फ़20) कि दुश्मन तुम्हारा मुंह बिगाड़ दें (फ़21) और मस्जिद में दाख़िल हों (फ़22) जैसे पहली बार दाख़िल हुए थे (फ़23) और जिस चीज़ पर क़ाबू पायें (फ़24) तबाह करके बरबाद कर दें।(7) क़रीब है कि तुम्हारा रब तुम पर रहम करे (फ़25) और अगर तुम फिर शरारत करो (फ़26) तो हम फिर अ़ज़ाब करेंगे (फ़27) और हमने जहन्नम को काफ़िरों का क़ैदख़ाना बनाया है।(8) बेशक यह क़ुरआन वह राह दिखाता है जो सबसे सीधी है (फ़28) और ख़ुशी सुनाता है ईमान वालों को जो अच्छे काम करें कि उनके लिए बड़ा सवाब है।(9) और यह कि जो आख़िरत पर ईमान नहीं लाते हमने उनके लिए दर्दनाक अ़ज़ाब तैयार कर रखा है।(10) (रुकूअ़1) और आदमी बुराई की दुआ़ करता है (फ़29) जैसे भलाई मांगता है (फ़30) और आदमी बड़ा जल्दबाज़ है।(11) (फ़31) और हमने रात और दिन को दो निशानियां बनाया (फ़32) तो रात की निशानी मिटी हुई रखी (फ़33) और दिन की निशानियां दिखाने वाली की (फ़34) कि अपने रब का फ़ज़्ल तलाश करो (फ़35) और (फ़36) बरसों की गिनती और हिसाब जानो (फ़37) और हमने हर चीज़ ख़ूब जुदा जुदा ज़ाहिर फ़रमा दी।(12) (फ़38) और हर

(फ़ा17) अ़ज़ाब का कि लाज़िम था (फ़ा18) जब तुम ने तौबा की और तकब्बुर व फ़साद से बाज़ आये तो हमने तुम को दौलत दी और उन पर ग़लबा इनायत फ़रमाया जो तुम पर मुसल्लत हो चुके थे (फ़ा19) तुम्हें इस भलाई की जज़ा मिलेगी (फ़ा20) और तुमने फिर फ़साद बरपा किया, हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम के क़त्ल के दरपै हुए अल्लाह तआ़ला ने उन्हें बचाया और अपनी तरफ़ उठा लिया और तुम ने हज़रत ज़करिया और हज़रत यह्या अ़लैहिमुस्सलाम को क़त्ल किया तो अल्लाह तआ़ला ने तुम पर अहले फ़ारस और रोम को मुसल्लत किया कि तुम्हारे वह दुश्मन तुम्हें क़त्ल करें या क़ैद करें और तुम्हें इतना परेशान करें (फ़ा21) कि रंज व परेशानी के आसार तुम्हारे चेहरों से ज़ाहिर हों (फ़ा22) यानी बैतुल मुक़द्दस में और उसको वीरान करें (फ़ा23) और उसको वीरान किया था तुम्हारे पहले फ़साद के वक़्त (फ़ा24) बिलादे बनी इसराईल से उसको **(बक़िया सफ़हा 488 पर)**

إِنْسَانٍ أَلْزَمْنَٰهُ طَٰٓئِرَهُۥ فِى عُنُقِهِۦ ۖ وَنُخْرِجُ لَهُۥ يَوْمَ ٱلْقِيَٰمَةِ كِتَٰبًا يَلْقَىٰهُ مَنشُورًا ﴿١٣﴾ ٱقْرَأْ كِتَٰبَكَ كَفَىٰ بِنَفْسِكَ ٱلْيَوْمَ عَلَيْكَ حَسِيبًا ﴿١٤﴾ مَّنِ ٱهْتَدَىٰ فَإِنَّمَا

يَهْتَدِى لِنَفْسِهِۦ ۖ وَمَن ضَلَّ فَإِنَّمَا يَضِلُّ عَلَيْهَا ۚ وَلَا تَزِرُ وَازِرَةٌ وِزْرَ أُخْرَىٰ ۗ وَمَا كُنَّا مُعَذِّبِينَ حَتَّىٰ نَبْعَثَ رَسُولًا ﴿١٥﴾ وَإِذَآ أَرَدْنَآ أَن نُّهْلِكَ قَرْيَةً

أَمَرْنَا مُتْرَفِيهَا فَفَسَقُوا۟ فِيهَا فَحَقَّ عَلَيْهَا ٱلْقَوْلُ فَدَمَّرْنَٰهَا تَدْمِيرًا ﴿١٦﴾ وَكَمْ أَهْلَكْنَا مِنَ ٱلْقُرُونِ مِنۢ بَعْدِ نُوحٍ ۗ وَكَفَىٰ بِرَبِّكَ بِذُنُوبِ عِبَادِهِۦ خَبِيرًۢا

بَصِيرًا ﴿١٧﴾ مَّن كَانَ يُرِيدُ ٱلْعَاجِلَةَ عَجَّلْنَا لَهُۥ فِيهَا مَا نَشَآءُ لِمَن نُّرِيدُ ثُمَّ جَعَلْنَا لَهُۥ جَهَنَّمَ يَصْلَىٰهَا مَذْمُومًا مَّدْحُورًا ﴿١٨﴾ وَمَنْ أَرَادَ ٱلْءَاخِرَةَ وَ

سَعَىٰ لَهَا سَعْيَهَا وَهُوَ مُؤْمِنٌ فَأُو۟لَٰٓئِكَ كَانَ سَعْيُهُم مَّشْكُورًا ﴿١٩﴾ كُلًّا نُّمِدُّ هَٰٓؤُلَآءِ وَهَٰٓؤُلَآءِ مِنْ عَطَآءِ رَبِّكَ ۚ وَمَا كَانَ عَطَآءُ رَبِّكَ مَحْظُورًا ﴿٢٠﴾ ٱنظُرْ كَيْفَ فَضَّلْنَا

इन्सानिन् अल्ज़म्नाहु ताइ–रहू फ़ी अुनुकिही व नुख़्रिजु लहू यौमल् क़िया–मति किताबंय्यल्क़ाहु मन्शूरा(13)इक़्रअ् किता–ब–क कफ़ा बि–नफ़्सिकल् यौ–म अ़लै–क ह़सीबा(14)मनिह्तदा फ़इन्नमा यह्तदी लि–नफ़्सिही व मन् ज़ल्–ल फ़–इन्नमा यज़िल्लु अ़लैहा व ला तज़िरु वाज़ि–रतुंव् विज़्–र उख़्रा व मा कुन्ना मुअ़ज़्ज़िबी–न ह़त्ता नब्–अ़–स रसूला(15)व इज़ा अ–रद्ना अन् नुह्लि–क क़र्–यतन् अ–मर्ना मुत्–रफ़ीहा फ़–फ़–सक़ू फ़ीहा फ़–ह़क़्–क़ अ़लैहल् क़ौलु फ़–दम्मर्नाहा तद्मीरा(16)व कम् अह्–लक्ना मिनल्क़ुरूनि मिम् बअ़्दि नूहिन् व कफ़ा बि–रब्बि–क बिज़ुनूबि अ़िबादिही ख़बीरम् बसीरा(17)मन् का–न युरीदुल् आ़जि–ल–त अ़ज्जल्ना लहू फ़ीहा मा नशाउ लिमन् नुरीदु सुम्–म ज–अ़ल्ना लहू जहन्न–म यस्लाहा मज़्मूमम् मद्हूरा(18)व मन् अरादल् आख़ि–र–त व सआ़ लहा सअ़्–यहा व हु–व मुअ्मिनुन् फ़उलाइ–क का–न सअ़्युहुम् मश्कूरा(19)कुल्लन् नुमिद्दु हाउलाइ व हाउलाइ मिन् अ़ताइ रब्बि–क व मा का–न अ़ताउ रब्बि–क मह्ज़ूरा(20)उन्ज़ुर् कै–फ़ फ़ज़्ज़ल्ना

इन्सान की क़िस्मत हमने उसके गले से लगा दी है (फ़ा39) और उसके लिए क़ियामत के दिन एक नविश्ता निकालेंगे जिसे खुला हुआ पाएगा।(13) (फ़ा40) फ़रमाया जाएगा कि अपना नामा पढ़ आज तू खुद ही अपना हिसाब करने को बहुत है।(14) जो राह पर आया वह अपने ही भले को राह पर आया (फ़ा41) और जो बहका तो अपने ही बुरे को बहका (फ़ा42) और कोई बोझ उठाने वाली जान दूसरे का बोझ न उठाएगी (फ़ा43) और हम अ़ज़ाब करने वाले नहीं जब तक रसूल न भेज लें।(15) (फ़ा44) और जब हम किसी बस्ती को हलाक करना चाहते हैं उसके खुशहालों (फ़ा45) पर अहकाम भेजते हैं फिर वह उसमें बे हुक्मी करते हैं तो उस पर बात पूरी हो जाती है तो हम उसे तबाह करके बरबाद कर देते हैं।(16) और हमने कितनी ही संगतें (फ़ा46) नूह के बाद हलाक कर दीं (फ़ा47) और तुम्हारा रब काफ़ी है अपने बन्दों के गुनाहों से ख़बरदार देखने वाला।(17) (फ़ा48) जो यह जल्दी वाली चाहे (फ़ा49) हम उसे उसमें जल्द दे दें जो चाहें जिसे चाहें (फ़ा50) फिर उसके लिए जहन्नम कर दें कि उसमें जाए मज़म्मत किया हुआ धक्के खाता।(18) और जो आख़िरत चाहे और उसकी सी कोशिश करे (फ़ा51) और हो ईमान वाला तो उन्हीं की कोशिश ठिकाने लगी।(19) (फ़ा52) हम सबको मदद देते हैं उनको भी (फ़ा53) और उनको भी (फ़ा54) तुम्हारे रब की अ़ता से (फ़ा55) और तुम्हारे रब की अ़ता पर रोक नहीं।(20) (फ़ा56) देखो हमने उनमें एक को

(फ़ा39) यानी जो कुछ उसके लिए मुक़द्दर किया गया है ख़ैर या शर सआ़दत या शक़ावत वह उसको इस तरह लाज़िम है जैसे गले का हार जहां जाये साथ रहे कभी जुदा न हो मुजाहिद ने कहा कि हर इन्सान के गले में उसकी सआ़दत या शक़ावत का नविश्ता डाल दिया जाता है (फ़ा40) वह उसका आमाल नामा होगा (फ़ा41) उसका सवाब वही पाएगा (फ़ा42) उसके बहकने का गुनाह और वबाल उस पर (फ़ा43) हर एक के गुनाहों का बार उसी पर होगा (फ़ा44) जो उम्मत को उसके फ़राइज़ से आगाह फ़रमाए और राहे हक़ उन पर वाज़ेह करे और हुज्जत क़ाइम फ़रमाये। (फ़ा45) और सरदारों (फ़ा46) यानी तकज़ीब करने वाली उम्मतें (फ़ा47) मिस्ले आ़द व समूद वग़ैरह के (फ़ा48) ज़ाहिर व बातिन का आ़लम उससे कुछ छुपाया नहीं जा सकता (फ़ा49) यानी दुनिया का तलबगार हो। (फ़ा50) यह ज़रूरी नहीं कि तालिबे दुनिया की हर ख़्वाहिश पूरी की जाये और उसे दिया ही जाये और जो वह मांगे वही दिया जाये ऐसा नहीं है बल्कि उनमें से जिसे चाहते हैं देते हैं और जो चाहते हैं देते हैं कभी ऐसा होता है कि महरूम कर देते हैं और कभी ऐसा होता है कि वह बहुत चाहता है और थोड़ा देते हैं कभी ऐसा कि ऐश **(बक़िया सफ़हा 488 पर)**

بَعْضَهُمْ عَلٰى بَعْضٍ ؕ وَلَلْاٰخِرَةُ اَكْبَرُ دَرَجٰتٍ وَّاَكْبَرُ تَفْضِيْلًا ﴿۲۱﴾ لَا تَجْعَلْ مَعَ اللّٰهِ اِلٰهًا اٰخَرَ فَتَقْعُدَ مَذْمُوْمًا مَّخْذُوْلًا ﴿۲۲﴾ وَقَضٰى رَبُّكَ اَلَّا تَعْبُدُوْۤا اِلَّاۤ اِيَّاهُ وَبِالْوَالِدَيْنِ اِحْسَانًا ؕ اِمَّا يَبْلُغَنَّ عِنْدَكَ الْكِبَرَ اَحَدُهُمَاۤ اَوْ كِلٰهُمَا فَلَا تَقُلْ لَّهُمَاۤ اُفٍّ وَّلَا تَنْهَرْهُمَا وَقُلْ لَّهُمَا قَوْلًا كَرِيْمًا ﴿۲۳﴾ وَاخْفِضْ لَهُمَا جَنَاحَ الذُّلِّ مِنَ الرَّحْمَةِ وَقُلْ رَّبِّ ارْحَمْهُمَا كَمَا رَبَّيٰنِيْ صَغِيْرًا ﴿۲۴﴾ رَبُّكُمْ اَعْلَمُ بِمَا فِيْ نُفُوْسِكُمْ ؕ اِنْ تَكُوْنُوْا صٰلِحِيْنَ فَاِنَّهٗ كَانَ لِلْاَوَّابِيْنَ غَفُوْرًا ﴿۲۵﴾ وَاٰتِ ذَا الْقُرْبٰى حَقَّهٗ وَالْمِسْكِيْنَ وَابْنَ السَّبِيْلِ وَلَا تُبَذِّرْ تَبْذِيْرًا ﴿۲۶﴾ اِنَّ الْمُبَذِّرِيْنَ كَانُوْۤا اِخْوَانَ الشَّيٰطِيْنِ ؕ وَكَانَ الشَّيْطٰنُ لِرَبِّهٖ كَفُوْرًا ﴿۲۷﴾ وَاِمَّا تُعْرِضَنَّ عَنْهُمُ ابْتِغَآءَ رَحْمَةٍ مِّنْ رَّبِّكَ تَرْجُوْهَا فَقُلْ لَّهُمْ قَوْلًا مَّيْسُوْرًا ﴿۲۸﴾ وَلَا تَجْعَلْ يَدَكَ مَغْلُوْلَةً اِلٰى عُنُقِكَ وَلَا تَبْسُطْهَا كُلَّ الْبَسْطِ فَتَقْعُدَ مَلُوْمًا مَّحْسُوْرًا ﴿۲۹﴾ اِنَّ رَبَّكَ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَّشَآءُ وَيَقْدِرُ ؕ

बअ्–ज़हुम् अ़ला बअ्ज़िन् व लल्आख़ि–रतु अक्बरु द–रजातिंव् व अक्बरु तफ़्ज़ीला(21)ला तज्अ़ल् म–अ़ल्लाहि इलाहन् आ–ख़–र फ़–तक़्अु–द मज़्मूमम् मख़्ज़ूला(22)व क़ज़ा रब्बु–क अल्ला तअ़्बुदू इल्ला इय्याहु व बिल् वालिदैनि इह्सानन् इम्मा यब्लुग़न्–न अ़िन्दकल् कि–ब–र अ–ह़दुहुमा औ किलाहुमा फ़ला तकुल् लहुमा उफ़्फ़िंव् व ला तन्हर् हुमा व कुल् लहुमा क़ौलन् करीमा(23)वख़्फ़िज़् लहुमा जनाह़ज़् ज़ुल्लि मिनर्रह़्मति व कुर्रब्बिर् ह़म्हुमा कमा रब्बयानी स़ग़ीरा(24)रब्बुकुम् अअ्–लमु बिमा फ़ी नुफ़ूसिकुम् इन् तकूनू स़ालिह़ी–न फ़इन्नहू का–न लिल्अव्वाबी–न ग़फ़ूरा(25)व आति ज़ल्क़ुर्बा ह़क़्क़हू वल्मिस्की–न वब्नस् सबीलि व ला तुबज़्ज़िर् तब्ज़ीरा(26)इन्नल् मुबज़्ज़िरी–न कानू इख़्वानश् शयातीनि व कानश्–शैतानु लि–रब्बिही कफ़ूरा(27)व इम्मा तुअ्रिज़न्–न अ़न्हुमुब्तिग़ा–अ रह़्मतिम् मिर्–रब्बि–क तर्जूहा फ़कुल् लहुम् क़ौलम् मैसूरा(28)व ला तज्–अ़ल् य–द–क मग़्लूल–तन् इला अुनुक़ि–क व ला तब्सुत़्हा कुल्लल् बस्ति़ फ़–तक़्अु–द मलूमम् मह़्सूरा(29) इन्–न रब्ब–क यब्सुतुर्रिज़्–क़ लिमंय्यशाउ व यक़्दिरु

एक पर कैसी बड़ाई दी (फ़ा57) और बेशक आख़िरत दर्जों में सबसे बड़ी और फ़ज़्ल में सबसे आला है।(21) ऐ सुनने वाले अल्लाह के साथ दूसरा ख़ुदा न ठहरा कि तू बैठ रहेगा मज़म्मत किया जाता बेकस।(22) (फ़ा58) (रुकूअ़ 2) और तुम्हारे रब ने हुक्म फ़रमाया कि उसके सिवा किसी को न पूजो और मां बाप के साथ अच्छा सुलूक करो अगर तेरे सामने उनमें एक या दोनों बुढ़ापे को पहुंच जायें (फ़ा59) तो उनसे हूं न कहना (फ़ा60) और उन्हें न झिड़कना और उनसे ताज़ीम की बात कहना।(23) (फ़ा61) और उनके लिए आ़जिज़ी का बाज़ू बिछा (फ़ा62) नर्म दिली से और अ़र्ज़ कर कि ऐ मेरे रब तू उन दोनों पर रहम कर जैसा कि उन दोनों ने मुझे छुटपन में पाला।(24) (फ़ा63) तुम्हारा रब ख़ूब जानता है जो तुम्हारे दिलों में है (फ़ा64) अगर तुम लाइक़ हुए (फ़ा65) तो बेशक वह तौबा करने वालों को बख़्शने वाला है।(25) और रिश्तेदारों को उनका ह़क़ दे (फ़ा66) और मिस्कीन और मुसाफ़िर को (फ़ा67) और फ़ुज़ूल न उड़ा।(26) (फ़ा68) बेशक उड़ाने वाले शैतानों के भाई हैं (फ़ा69) और शैतान अपने रब का बड़ा ना शुक्रा है।(27) (फ़ा70) और अगर तू उनसे (फ़ा71) मुंह फेरे अपने रब की रहमत के इन्तिज़ार में जिसकी तुझे उम्मीद है तो उनसे आसान बात कह।(28) (फ़ा72) और अपना हाथ अपनी गर्दन से बंधा हुआ न रख और न पूरा खोल दे कि तू बैठ रहे मलामत किया हुआ थका हुआ।(29) (फ़ा73) बेशक तुम्हारा रब जिसे चाहे रिज़्क़ कुशादा देता और (फ़ा74) कस्ता है

(फ़ा57) माल व कमाल व जाह व सरवत में। (फ़ा58) बे यारो मददगार (फ़ा59) ज़ोअ़फ़ का ग़लबा हो आज़ा में क़ुव्वत न रहे और जैसा तू बचपन में उनके पास बे ताक़त था ऐसे ही वह आख़िर उम्र में तेरे पास नातवाँ रह जायें (फ़ा60) यानी ऐसा कोई कलिमा ज़बान से न निकालना जिससे यह समझा जाए कि उनकी तरफ़ से तबीअ़त में कुछ गिरानी है (फ़ा61) और हुस्ने अदब के साथ उन से ख़िताब करना मसला मां बाप को उनका नाम लेकर न पुकारे यह ख़िलाफ़े अदब है और इसमें उनकी दिल–आज़ारी है लेकिन वह सामने न हों तो उनका ज़िक्र नाम लेकर करना जाइज़ है मसला मां बाप से इस तरह कलाम करे जैसे ग़ुलाम व ख़ादिम आक़ा से करता है (फ़ा62) यानी ब–नर्मी व तवाज़ोअ़ पेश आ और उनके साथ थके वक़्त में शफ़क़त व मुहब्बत का बरताव कर कि उन्होंने तेरी मजबूरी के वक़्त तुझे मुहब्बत से परवरिश किया था और जो चीज़ उन्हें दरकार हो वह उन पर ख़र्च करने में दरेग़ न कर। (फ़ा63) मुद्दआ यह है कि दुनिया में बेहतर सुलूक और ख़िदमत में **(बक़िया सफ़हा 489 पर)**

إِنَّهُ كَانَ بِعِبَادِهِ خَبِيرًا بَصِيرًا ۝ وَلَا تَقْتُلُوا أَوْلَادَكُمْ خَشْيَةَ إِمْلَاقٍ نَحْنُ نَرْزُقُهُمْ وَإِيَّاكُمْ إِنَّ قَتْلَهُمْ كَانَ خِطْأً كَبِيرًا ۝ وَلَا تَقْرَبُوا الزِّنَىٰ إِنَّهُ كَانَ فَاحِشَةً

وَسَاءَ سَبِيلًا ۝ وَلَا تَقْتُلُوا النَّفْسَ الَّتِي حَرَّمَ اللَّهُ إِلَّا بِالْحَقِّ وَمَنْ قُتِلَ مَظْلُومًا فَقَدْ جَعَلْنَا لِوَلِيِّهِ سُلْطَانًا فَلَا يُسْرِفْ فِي الْقَتْلِ إِنَّهُ كَانَ مَنْصُورًا ۝

وَلَا تَقْرَبُوا مَالَ الْيَتِيمِ إِلَّا بِالَّتِي هِيَ أَحْسَنُ حَتَّىٰ يَبْلُغَ أَشُدَّهُ وَأَوْفُوا بِالْعَهْدِ إِنَّ الْعَهْدَ كَانَ مَسْئُولًا ۝ وَأَوْفُوا الْكَيْلَ إِذَا كِلْتُمْ وَزِنُوا بِالْقِسْطَاسِ

الْمُسْتَقِيمِ ذَٰلِكَ خَيْرٌ وَأَحْسَنُ تَأْوِيلًا ۝ وَلَا تَقْفُ مَا لَيْسَ لَكَ بِهِ عِلْمٌ إِنَّ السَّمْعَ وَالْبَصَرَ وَالْفُؤَادَ كُلُّ أُولَٰئِكَ كَانَ عَنْهُ مَسْئُولًا ۝ وَلَا تَمْشِ فِي

الْأَرْضِ مَرَحًا إِنَّكَ لَنْ تَخْرِقَ الْأَرْضَ وَلَنْ تَبْلُغَ الْجِبَالَ طُولًا ۝ كُلُّ ذَٰلِكَ كَانَ سَيِّئُهُ عِنْدَ رَبِّكَ مَكْرُوهًا ۝ ذَٰلِكَ مِمَّا أَوْحَىٰ إِلَيْكَ رَبُّكَ مِنَ الْحِكْمَةِ

इन्नहू का–न बिअि़बादिही ख़बीरम् बसी़रा(30)व ला तक़्तुलू औला–दकुम् ख़श्–य–त इम्लाकि़न् नह्नु नरज़ुकु़हुम् व इय्याकुम् इन्–न क़त्–लहुम् का–न ख़ित्–अन् कबीरा(31)व ला तक़्रबुज़्ज़िना इन्नहू का–न फ़ाहि़–श–तन् व सा–अ सबीला(32)व ला तक़्तुलुन्–नफ़्सल्लती ह़र्र–मल्लाहु इल्ला बिल्ह़क़्क़ि व मन् कु़ति–ल मज़्लूमन् फ़–क़द् ज–अ़ल्ना लि–वलिय्यिही सुल्तानन् फ़ला युस्रिफ़् फ़िल्क़त्लि इन्नहू का–न मन्सूरा(33)व ला तक़्रबू मालल् यतीमि इल्ला बिल्लती हि–य अह्सनु ह़त्ता यब्लु–ग़ अशुद्–दहू व औफू़ बिल्–अ़ह्दि इन्नल्–अ़ह्द का–न मस्ऊला(34)व औफ़ुल्कै–ल इज़ा किल्तुम् व ज़िनू बिल् क़िस्तासिल् मुस्तक़ीमि ज़ालि–क ख़ैरुंव् व अह्सनु तअ्वीला(35)व ला तक़्फ़ु मा लै–स ल–क बिही अ़िल्मुन् इन्नस् सम्–अ़ वल्ब–स–र वल्फ़ुआ–द कुल्लु उलाइ–क का–न अ़न्हु मस्ऊला(36)व ला तम्शि फ़िल्अर्ज़ि म–र–ह़न् इन्न–क लन् तख़्रिक़ल् अर्–ज़ व लन् तब्लुग़ल् जिबा–ल तूला(37)कुल्लु ज़ालि–क का–न सय्यि–उहू अ़िन्–द रब्बि–क मक्रूहा (38)ज़ालि–क मिम्मा औह़ा इलै–क रब्बु–क मिनल्–ह़िक्मति

बेशक वह अपने बन्दों को ख़ूब जानता (फ़75) देखता है।(30) (रुकूअ़ 3) और अपनी औलाद क़त्ल न करो मुफ़लिसी के डर से (फ़76) हम तुम्हें भी और उन्हें भी रोज़ी देंगे बेशक उनका क़त्ल बड़ी ख़ता है।(31) और बदकारी के पास न जाओ बेशक वह बेहयाई है और बहुत ही बुरी राह।(32) और कोई जान जिसकी हुरमत अल्लाह ने रखी है नाहक़ न मारो और जो नाहक़ मारा जाये तो बेशक हमने उसके वारिस को क़ाबू दिया है (फ़77) तो वह क़त्ल में ह़द से न बढ़े (फ़78) ज़रूर उसकी मदद होनी है।(33) (फ़79) और यतीम के माल के पास न जाओ मगर उस राह से जो सब से भली है (फ़80) यहां तक कि वह अपनी जवानी को पहुंचे (फ़81) और अ़हद पूरा करो (फ़82) बेशक अहद से सवाल होना है।(34) और मापो तो पूरा मापो और बराबर तराज़ू से तौलो यह बेहतर है और उसका अंजाम अच्छा।(35) और उस बात के पीछे न पड़ जिसका तुझे इल्म नहीं (फ़83) बेशक कान और आँख और दिल इन सब से सवाल होना है।(36) (फ़84) और ज़मीन में इतराता न चल (फ़85) बेशक तू हरगिज़ ज़मीन न चीर डालेगा और हरगिज़ बुलन्दी में पहाड़ों को न पहुंचेगा।(37) (फ़86) यह जो कुछ गुज़रा उनमें की बुरी बात तेरे रब को ना-पसन्द है।(38) यह उन 'वह़ियों' में से है जो तुम्हारे रब ने तुम्हारी तरफ़ भेजी हिकमत की बातें (फ़87)

(फ़75) और उनके अहवाल व मसालेह को (फ़76) ज़मानए जाहिलियत में लोग अपनी लड़कियों को ज़िन्दा गाड़ दिया करते थे और इसके कई सबब थे नादारी व मुफ़लिसी का ख़ौफ़ लूट का ख़ौफ़ अल्लाह तआ़ला ने उसकी मुमानअ़त फ़रमाई। (फ़77) क़िसास लेने का मसला आयत से साबित हुआ कि क़िसास लेने का हक़ वली को है और वह ब-तरतीब अ़सबात हैं मसला और जिस का वली न हो उसका वली सुल्तान है (फ़78) और ज़मानए जाहिलियत की तरह एक मक़्तूल के एवज़ में कई कई को या बजाए क़ातिल के उसकी क़ौम व जमाअ़त के और किसी शख़्स को क़त्ल न करे (फ़79) यानी वली की या मक़्तूल मज़्लूम की या उस शख़्स की जिसको वली नाहक़ क़त्ल करे (फ़80) वह यह है कि उसकी हिफ़ाज़त करो और उसको बढ़ाओ (फ़81) और वह अट्ठारह साल की उम्र है हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा के नज़दीक यही मुख़्तार है और हज़रत इमामे आज़म अबू हनीफ़ा रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने अलामात ज़ाहिर न होने की हालत में इन्तेहाए मुद्दत बुलूग़ इसी से तमस्सुक करके अट्ठारह साल क़रार दी (अहमदी) (फ़82) अल्लाह का भी बन्दों का भी लेकिन फ़त्वा इस पर है कि इन्तेहाए मुद्दते बुलूग़ **(बक़िया सफ़हा 489 पर)**

وَلَا تَجْعَلْ مَعَ اللّٰهِ اِلٰهًا اٰخَرَ فَتُلْقٰى فِىْ جَهَنَّمَ مَلُوْمًا مَّدْحُوْرًا ۝ اَفَاَصْفٰىكُمْ رَبُّكُمْ بِالْبَنِيْنَ وَاتَّخَذَ مِنَ الْمَلٰٓئِكَةِ اِنَاثًا ؕ اِنَّكُمْ لَتَقُوْلُوْنَ قَوْلًا عَظِيْمًا ۝ وَلَقَدْ

صَرَّفْنَا فِىْ هٰذَا الْقُرْاٰنِ لِيَذَّكَّرُوْا ؕ وَمَا يَزِيْدُهُمْ اِلَّا نُفُوْرًا ۝ قُلْ لَّوْ كَانَ مَعَهٗۤ اٰلِهَةٌ كَمَا يَقُوْلُوْنَ اِذًا لَّابْتَغَوْا اِلٰى ذِى الْعَرْشِ سَبِيْلًا ۝ سُبْحٰنَهٗ وَتَعٰلٰى

عَمَّا يَقُوْلُوْنَ عُلُوًّا كَبِيْرًا ۝ تُسَبِّحُ لَهُ السَّمٰوٰتُ السَّبْعُ وَالْاَرْضُ وَمَنْ فِيْهِنَّ ؕ وَاِنْ مِّنْ شَىْءٍ اِلَّا يُسَبِّحُ بِحَمْدِهٖ وَلٰكِنْ لَّا تَفْقَهُوْنَ تَسْبِيْحَهُمْ ؕ اِنَّهٗ كَانَ

حَلِيْمًا غَفُوْرًا ۝ وَاِذَا قَرَاْتَ الْقُرْاٰنَ جَعَلْنَا بَيْنَكَ وَبَيْنَ الَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِالْاٰخِرَةِ حِجَابًا مَّسْتُوْرًا ۝ وَّجَعَلْنَا عَلٰى قُلُوْبِهِمْ اَكِنَّةً اَنْ يَّفْقَهُوْهُ وَفِىْۤ اٰذَانِهِمْ

وَقْرًا ؕ وَاِذَا ذَكَرْتَ رَبَّكَ فِى الْقُرْاٰنِ وَحْدَهٗ وَلَّوْا عَلٰۤى اَدْبَارِهِمْ نُفُوْرًا ۝ نَحْنُ اَعْلَمُ بِمَا يَسْتَمِعُوْنَ بِهٖۤ اِذْ يَسْتَمِعُوْنَ اِلَيْكَ وَاِذْ هُمْ نَجْوٰۤى اِذْ يَقُوْلُ الظّٰلِمُوْنَ

व ला तज्अल् म–अ्ल्लाहि इलाहन् आ–ख़–र फ़तुल्क़ा फ़ी जहन्न–म मलूमम् मदहूरा(39)अ–फ़–अस्फ़ाकुम् रब्बुकुम् बिल्बनी–न वत्त–ख़–ज़ मिनल् मलाइ–कति इनासन् इन्नकुम् ल–तक़ूलू–न क़ौलन् अ़ज़ीमा(40)व ल–क़द् सर्रफ़्ना फ़ी हाज़ल् क़ुर्आनि लि–यज़्ज़क्करू व मा यज़ीदुहुम् इल्ला नुफ़ूरा(41)क़ुल् लौ का–न म–अ़हू आलि–हतुन् कमा यक़ूलू–न इज़ल् लब्तग़ौ इला ज़िल्अ़र्शि सबीला(42)सुब्हा–नहू व तआ़ला अ़म्मा यक़ूलू–न उलुव्वन् कबीरा(43)तुसब्बिहु लहुस्समावातुस् सब्अु वल् अर्ज़ु व मन् फ़ीहिन्–न व इम्मिन् शैइन् इल्ला युसब्बिहु बि–हम्दिही व लाकिल्ला तफ़्क़हू–न तस्बी–हहुम् इन्नहू का–न हलीमन् ग़फ़ूरा(44)व इज़ा क़–रअ्तल् क़ुरआ–न ज–अ़ल्ना बै–न–क व बैनल्लज़ी–न ला युअ्मिनू–न बिल्आख़ि–रति हिजाबम् मस्तूरा(45)व ज–अ़ल्ना अ़ला क़ुलूबिहिम् अकिन्नतन् अंय्यफ़्–क़हूहु व फ़ी आज़ानिहिम् वक़्रन् व इज़ा ज़–कर्–त रब्ब–क फ़िल्क़ुरआनि वह्–दहू वल्लौ अ़ला अदबारिहिम् नुफ़ूरा(46)नह्नु अअ्लमु बिमा यस्तमिऊ–न बिही इज़् यस्तमिऊ–न इलै–क व इज़् हुम् नज्वा इज़् यक़ूलुज़् ज़ालिमू–न

और ऐ सुनने वाले अल्लाह के साथ दूसरा ख़ुदा न ठहरा कि तू जहन्नम में फेंका जाएगा तअ्ना पाता धक्के खाता।(39) क्या तुम्हारे रब ने तुम को बेटे चुन दिये और अपने लिए फ़रिश्तों से बेटियाँ बनाईं (फ़ा88) बेशक तुम बड़ा बोल बोलते हो।(40) (फ़ा89) (रुकूअ़ 4) और बेशक हमने इस क़ुरआन में तरह तरह से बयान फ़रमाया (फ़ा90) कि वह समझें (फ़ा91) और इससे उन्हें नहीं बढ़ती मगर नफ़रत।(41)(फ़ा92) तुम फ़रमाओ अगर उसके साथ और ख़ुदा होते जैसा यह बकते हैं जब तो वह अ़र्श के मालिक की तरफ़ कोई राह ढूंढ निकालते।(42) (फ़ा93) उसे पाकी और बरतरी उन की बातों से बड़ी बरतरी।(43) उस की पाकी बोलते हैं सातों आसमान और ज़मीन और जो कोई उन में हैं (फ़ा94) और कोई चीज़ नहीं (फ़ा95) जो उसे सराहती हुई उसकी पाकी न बोले (फ़ा96) हां तुम उनकी तस्बीह नहीं समझते(फ़ा97) बेशक वह हिल्म वाला बख़्शने वाला है।(44) (फ़ा98) और ऐ महबूब तुम ने क़ुरआन पढ़ा हमने तुम पर और उनमें कि आख़िरत पर ईमान नहीं लाते एक छुपा हुआ पर्दा कर दिया।(45) (फ़ा99) और हमने उनके दिलों पर ग़िलाफ़ डाल दिये हैं कि इसे न समझें और उनके कानों में टेंट (फ़ा100) और जब तुम क़ुरआन में अपने अकेले रब की याद करते हो वह पीठ फेर कर भागते हैं नफ़रत करते।(46) हम ख़ूब जानते हैं जिस लिए वह सुनते हैं (फ़ा101) जब तुम्हारी तरफ़ कान लगाते हैं और जब आपस में मश्वरा करते हैं जबकि ज़ालिम कहते हैं तुम पीछे नहीं चले

(फ़ा88) यह ख़िलाफ़े हिकमत बात किस तरह कहते हो (फ़ा89) कि अल्लाह तआ़ला के लिए औलाद साबित करते हो जो ख़वासे अजसाम से है और अल्लाह तआ़ला उससे पाक फिर उसमें भी अपनी बड़ाई रखते हो कि अपने लिए तो बेटे पसन्द करते हो और उसके लिए बेटियां तजवीज़ करते हो कितनी बे अदबी और गुस्ताख़ी है (फ़ा90) दलीलों से भी मिसालों से भी हिकमतों से भी इबरतों से भी और जा बजा इस मज़मून को क़िस्म क़िस्म के पैरायों में बयान फ़रमाया (फ़ा91) और पन्द पज़ीर हों (फ़ा92) और हक़ से दूरी (फ़ा93) और इससे बर सरे मुक़ाबला होते जैसा बादशाहों का तरीक़ा है। (फ़ा94) ज़बाने हाल से इस तरह कि उनके वुजूद सानेअ् के क़ुदरत व हिकमत पर दलालत करते हैं या ज़बाने क़ाल से और यही सही है अहादीसे कसीरा इस पर दलालत करती हैं और सलफ़ से यही मन्क़ूल है। (फ़ा95) जमाद व नबात व हैवान से ज़िन्दा (फ़ा96) हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा ने फ़रमाया हर ज़िन्दा चीज़ अल्लाह तआ़ला की तस्बीह करती है और हर चीज़ की **(बक़िया सफ़हा 490 पर)**

إِن تَتَّبِعُونَ إِلَّا رَجُلًا مَّسْحُورًا ۝ انظُرْ كَيْفَ ضَرَبُوا لَكَ الْأَمْثَالَ فَضَلُّوا فَلَا يَسْتَطِيعُونَ سَبِيلًا ۝ وَقَالُوا أَإِذَا كُنَّا عِظَامًا وَرُفَاتًا أَإِنَّا لَمَبْعُوثُونَ
خَلْقًا جَدِيدًا ۝ قُلْ كُونُوا حِجَارَةً أَوْ حَدِيدًا ۝ أَوْ خَلْقًا مِّمَّا يَكْبُرُ فِي صُدُورِكُمْ ۚ فَسَيَقُولُونَ مَن يُعِيدُنَا ۖ قُلِ الَّذِي فَطَرَكُمْ أَوَّلَ مَرَّةٍ ۚ فَسَيُنْغِضُونَ إِلَيْكَ
رُءُوسَهُمْ وَيَقُولُونَ مَتَىٰ هُوَ ۖ قُلْ عَسَىٰ أَن يَكُونَ قَرِيبًا ۝ يَوْمَ يَدْعُوكُمْ فَتَسْتَجِيبُونَ بِحَمْدِهِ وَتَظُنُّونَ إِن لَّبِثْتُمْ إِلَّا قَلِيلًا ۝ وَقُل لِّعِبَادِي يَقُولُوا الَّتِي
هِيَ أَحْسَنُ ۚ إِنَّ الشَّيْطَانَ يَنزَغُ بَيْنَهُمْ ۚ إِنَّ الشَّيْطَانَ كَانَ لِلْإِنسَانِ عَدُوًّا مُّبِينًا ۝ رَّبُّكُمْ أَعْلَمُ بِكُمْ ۖ إِن يَشَأْ يَرْحَمْكُمْ أَوْ إِن يَشَأْ يُعَذِّبْكُمْ ۚ وَمَا أَرْسَلْنَاكَ
عَلَيْهِمْ وَكِيلًا ۝ وَرَبُّكَ أَعْلَمُ بِمَن فِي السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ ۗ وَلَقَدْ فَضَّلْنَا بَعْضَ النَّبِيِّينَ عَلَىٰ بَعْضٍ ۖ وَآتَيْنَا دَاوُودَ زَبُورًا ۝ قُلِ ادْعُوا الَّذِينَ زَعَمْتُم مِّن

इन् तत्तबिऊ–न इल्ला रजुलम् मस्हूरा(47)उन्ज़ुर् कै–फ़ ज़–रबू ल–कल् अम्सा–ल फ़–ज़ल्लू फ़ला यस्ततीऊ–न सबीला(48)व क़ालू अ–इज़ा कुन्ना अ़िज़ामंव् व रुफ़ातन् अ–इन्ना ल–मब्ऊसू–न ख़ल्क़न् जदीदा(49)कुल् कूनू हिजा–र–तन् औ हदीदा(50)औ ख़ल्क़म् मिम्मा यक्बुरु फ़ी सुदूरिकुम् फ़–स–यक़ूलू–न मंय्युईदुना कुलिल् लज़ी फ़–त–रकुम् अव्व–ल मर्रतिन् फ़–सयुन्ग़िज़ू–न इलै–क रुऊ–सहुम् व यक़ूलू–न मता हु–व कुल् अ़सा अंय्यकू–न क़रीबा(51)यौ–म यद्अूकुम् फ़–तस्तजीबू–न बि–हम्दिही व तज़ुन्नू–न इल्लबिस्तुम् इल्ला क़लीला(52)व क़ुल् लिअ़िबादी यक़ूलुल् लती हि–य अह्सनु इन्नश्शैता–न यन्ज़गु बै–नहुम् इन्नश्शैता–न का–न लिल्इन्सानि अ़दुव्वम् मुबीना(53)रब्बुकुम् अअ्लमु बिकुम् इंय्यशअ् यर्हम्कुम् औ इंय्यशअ् यु–अ़ज़्ज़िब्कुम् व मा अर्सल्ना–क अ़लैहिम् वकीला(54)व रब्बु–क अअ्लमु बिमन् फ़िस्समावाति वल्अर्ज़ि व ल–क़द् फ़ज़्ज़ल्ना बअ्–ज़न्नबिय्यी–न अ़ला बअ्ज़िंव् व आतैना दावू–द ज़बूरा(55)कुलिद् उल्लज़ी–न ज़–अ़म्तुम् मिन्

मगर एक ऐसे मर्द के जिस पर जादू हुआ।(47) (फ़102) देखो उन्होंने तुम्हें कैसी तश्बीहें दीं तो गुमराह हुए कि राह नहीं पा सकते।(48) और बोले क्या जब हम हड्डियां और रेज़ा–रेज़ा हो जायेंगे क्या सचमुच नए बनकर उठेंगे।(49) (फ़103) तुम फ़रमाओ कि पत्थर या लोहा हो जाओ।(50) या और कोई मख़्लूक़ जो तुम्हारे ख़्याल में बड़ी हो (फ़104) तो अब कहेंगे हमें कौन फिर पैदा करेगा तुम फ़रमाओ वही जिसने तुम्हें पहली बार पैदा किया था तो अब तुम्हारी तरफ़ मस्ख़रगी से सर हिलाकर कहेंगे यह कब है (फ़105) तुम फ़रमाओ शायद नज़दीक ही हो।(51) जिस दिन वह तुम्हें बुलाएगा (फ़106) तो तुम उसकी हम्द करते चले आओगे (फ़107) और समझोगे कि न रहे थे (फ़108) मगर थोड़ा।(52) (रुकूअ़ 5) और मेरे (फ़109) बन्दों से फ़रमाओ (फ़110) वह बात कहें जो सबसे अच्छी हो (फ़111) बेशक शैतान उनके आपस में फ़साद डाल देता है बेशक शैतान आदमी का खुला दुश्मन है।(53) तुम्हारा रब तुम्हें ख़ूब जानता है वह चाहे तो तुम पर रहम करे (फ़112) या चाहे तो तुम्हें अ़ज़ाब करे और हमने तुम को उन पर कड़ोड़ा बनाकर न भेजा।(54) (फ़113) और तुम्हारा रब ख़ूब जानता है जो कोई आसमानों और ज़मीन में हैं (फ़114) और बेशक हमने नबियों में एक को एक पर बड़ाई दी (फ़115) और दाऊद को ज़बूर अ़ता फ़रमाई।(55) (फ़116) तुम फ़रमाओ पुकारो उन्हें जिनको अल्लाह के

(फ़102) तो बाज़ उन में से आपको मजनून कहते हैं बाज़ साहिर बाज़ काहिन बाज़ शायर। (फ़103) यह बात उन्होंने बहुत तअ़ज्जुब से कही और मरने और ख़ाक में मिल जाने के बाद ज़िन्दा किये जाने को उन्होंने बहुत बईद समझा अल्लाह तआ़ला ने उनका रद्द किया और अपने हबीब अ़लैहिस्सलातु वस्सलाम को इरशाद फ़रमाया (फ़104) और हयात से दूर हो जान उससे कभी मुतअ़ल्लिक़ न हुई हो तो भी अल्लाह तबारक व तआ़ला तुम्हें ज़िन्दा करेगा और पहली हालत की तरफ़ वापस फ़रमाएगा चे जाएकि हड्डियां और उस जिस्म के ज़र्रे उन्हें ज़िन्दा करना उसकी क़ुदरत से क्या बईद है उन से तो जान पहले मुतअ़ल्लिक़ रह चुकी है (फ़105) यानी क़ियामत कब क़ाइम होगी और मुर्दे कब उठाये जायेंगे (फ़106) क़ब्रों से मौक़फ़े क़ियामत की तरफ़ (फ़107) अपने सरों से ख़ाक झाड़ते और सुब्हा–न–कल्लाहुम्–म व बि–हम्दि–क कहते और यह इक़रार करते कि अल्लाह ही पैदा करने वाला और मरने के बाद उठाने वाला है (फ़108) दुनिया में या क़ब्रों में (फ़109) ईमानदार (फ़110) कि वह काफ़िरों से (फ़111) नर्म हो या पाकीज़ा हो अदब और तहज़ीब की हो इरशाद व हिदायत की हो कुफ़्फ़ार **(बक़िया सफ़हा 490 पर)**

دُوْنِهٖ فَلَا يَمْلِكُوْنَ كَشْفَ الضُّرِّ عَنْكُمْ وَلَا تَحْوِيْلًا ﴿٥٦﴾ اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ يَدْعُوْنَ يَبْتَغُوْنَ اِلٰى رَبِّهِمُ الْوَسِيْلَةَ اَيُّهُمْ اَقْرَبُ وَيَرْجُوْنَ رَحْمَتَهٗ وَيَخَافُوْنَ
عَذَابَهٗ ؕ اِنَّ عَذَابَ رَبِّكَ كَانَ مَحْذُوْرًا ﴿٥٧﴾ وَاِنْ مِّنْ قَرْيَةٍ اِلَّا نَحْنُ مُهْلِكُوْهَا قَبْلَ يَوْمِ الْقِيٰمَةِ اَوْ مُعَذِّبُوْهَا عَذَابًا شَدِيْدًا ؕ كَانَ ذٰلِكَ فِى الْكِتٰبِ مَسْطُوْرًا ﴿٥٨﴾
وَمَا مَنَعَنَآ اَنْ نُّرْسِلَ بِالْاٰيٰتِ اِلَّآ اَنْ كَذَّبَ بِهَا الْاَوَّلُوْنَ ؕ وَاٰتَيْنَا ثَمُوْدَ النَّاقَةَ مُبْصِرَةً فَظَلَمُوْا بِهَا ؕ وَمَا نُرْسِلُ بِالْاٰيٰتِ اِلَّا تَخْوِيْفًا ﴿٥٩﴾ وَاِذْ قُلْنَا لَكَ اِنَّ
رَبَّكَ اَحَاطَ بِالنَّاسِ ؕ وَمَا جَعَلْنَا الرُّءْيَا الَّتِىْٓ اَرَيْنٰكَ اِلَّا فِتْنَةً لِّلنَّاسِ وَالشَّجَرَةَ الْمَلْعُوْنَةَ فِى الْقُرْاٰنِ ؕ وَنُخَوِّفُهُمْ ۙ فَمَا يَزِيْدُهُمْ اِلَّا طُغْيَانًا كَبِيْرًا ﴿٦٠﴾ وَاِذْ قُلْنَا
لِلْمَلٰٓئِكَةِ اسْجُدُوْا لِاٰدَمَ فَسَجَدُوْٓا اِلَّآ اِبْلِيْسَ ؕ قَالَ ءَاَسْجُدُ لِمَنْ خَلَقْتَ طِيْنًا ﴿٦١﴾ قَالَ اَرَءَيْتَكَ هٰذَا الَّذِىْ كَرَّمْتَ عَلَىَّ ؗ لَئِنْ اَخَّرْتَنِ اِلٰى يَوْمِ الْقِيٰمَةِ لَاَحْتَنِكَنَّ

दूनिही फ़ला यम्लिकू—न कश्फ़ज़् ज़ुर्रि अ़न्कुम् व ला तह्वीला(56)उलाइ—कल्लज़ी—न यद्‌ऊ—न यब्तगू—न इला रब्बिहिमुल् वसी—ल—त अय्युहुम् अक्रबु व यर्जू—न रह्म—तहू व यख़ाफ़ू—न अ़ज़ा—बहू इन्—न अ़ज़ा—ब रब्बि—क का—न मह्ज़ूरा(57)व इम्मिन् क़र्—यतिन् इल्ला नह्नु मुह्लिकूहा क़ब्—ल यौमिल्क़िया—मति औ मुअ़ज़्ज़िबूहा अ़ज़ाबन् शदीदा का—न ज़ालि—क फ़िल् किताबि मस्तूरा(58)व मा म—न—अ़ना अन् नुर्सि—ल बिल्आयाति इल्ला अन् कज़्ज़—ब बिहल् अव्वलू—न व आतैना स़मूदन् ना—क़—त मुब्सि—र—तन् फ़—ज़—लमू बिहा व मा नुर्सिलु बिल्आयाति इल्ला तख़्वीफ़ा(59)व इज़् क़ुल्ना ल—क इन्—न रब्ब—क अहा—त़ बिन्नासि व मा ज—अ़ल्नर्रुअ्— यल् लती अरैना—क इल्ला फ़ित्न—तल् लिन्नासि वश्श—ज—र—तल् मल्‌ऊ—न—त फ़िल्क़ुर्आनि व नुख़व्विफ़ुहुम फ़मा यज़ीदु हुम् इल्ला तुग़्यानन् कबीरा(60)व इज़् क़ुल्ना लिल्मलाइ—कतिस्जुदू लिआ—द—म फ़—स—जदू इल्ला इब्ली—स क़ा—ल अ—अस्जुदु लिमन् ख़—लक़्—त तीना(61)क़ा—ल अ—रऐ—त—क हाजल् लज़ी कर्रम्—त अ़—लय्—य लइन् अख़्ख़र्—तनि इला यौमिल्क़िया—मति ल—अह्—तनिकन्—न

सिवा गुमान करते हो तो वह इख़्तियार नहीं रखते तुम से तकलीफ़ दूर करने और न फेर देने का।(56) (फ़ा117) वह मक़बूल बन्दे जिन्हें यह काफ़िर पूजते हैं (फ़ा118) वह आप ही अपने रब की तरफ़ वसीला ढूंढते हैं कि उनमें कौन ज़्यादा मुक़र्रब है (फ़ा119) उसकी रहमत की उम्मीद रखते और उसके अ़ज़ाब से डरते हैं (फ़ा120) बेशक तुम्हारे रब का अ़ज़ाब डर की चीज़ है।(57) और कोई बस्ती नहीं मगर यह कि हम उसे रोज़े क़ियामत से पहले नेस्त कर देंगे या उसे सख़्त अ़ज़ाब देंगे (फ़ा121) यह किताब में (फ़ा122) लिखा हुआ है।(58) और हम ऐसी निशानियां भेजने से यूं ही बाज़ रहे कि उन्हें अगलों ने झुठलाया (फ़ा123) और हमने समूद को (फ़ा124) नाक़ा दिया आंखें खोलने को (फ़ा125) तो उन्होंने उस पर ज़ुल्म किया (फ़ा126) और हम ऐसी निशानियां नहीं भेजते मगर डराने को।(59) (फ़ा127) और जब हम ने तुम से फ़रमाया कि सब लोग तुम्हारे रब के क़ाबू में (फ़ा128) हैं और हमने न किया वह दिखावा (फ़ा129) जो तुम्हें दिखाया था (फ़ा130) मगर लोगों की आज़माईश को (फ़ा131) और वह पेड़ जिस पर क़ुरआन में लानत है (फ़ा132) और हम उन्हें डराते हैं (फ़ा133) तो उन्हें नहीं बढ़ती मगर बड़ी सरकशी।(60) (रुकूअ़ 6) और याद करो जब हमने फ़रिश्तों को हुक्म दिया कि आदम को सजदा करो (फ़ा134) तो उन सबने सज्दा किया सिवा इबलीस के बोला क्या मैं उसे सजदा करूं जिसे तूने मिट्टी से बनाया।(61) बोला (फ़ा135) देख तू जो यह तूने मुझ से मुअ़ज़्ज़ज़ रखा (फ़ा136) अगर तूने मुझे क़ियामत तक मुहलत दी तो ज़रूर मैं

(फ़ा117) **शाने नुज़ूलः** कुफ़्फ़ार जब क़हते शदीद में मुब्तला हुए और नौबत यहां तक पहुंची कि कुत्ते और मुर्दार खा गए और सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के हुज़ूर में फ़रियाद लाये और आप से दुआ़ की इल्तेजा की इस पर यह आयत नाज़िल हुई और फ़रमाया गया कि जब बुतों को ख़ुदा मानते हो तो इस वक़्त उन्हें पुकारो और वह तुम्हारी मदद करें और जब तुम जानते हो कि वह तुम्हारी मदद नहीं कर सकते तो क्यों उन्हें मअ़बूद बनाते हो। (फ़ा118) जैसे कि हज़रत ईसा और हज़रत उज़ैर और मलाइका शाने नुज़ूल इब्ने मसऊद रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने फ़रमाया यह आयत एक जमाअ़ते अ़रब के हक़ में नाज़िल हुई जो जिन्नात के एक गरोह को पूजते थे वह जिन्नात इस्लाम ले आये और उनके पूजने वालों को ख़बर न हुई अल्लाह तआ़ला ने यह आयत नाज़िल फ़रमाई और उन्हें आ़र दिलाई। (फ़ा119) ताकि जो सबसे **(बक़िया सफ़हा 490 पर)**

ذُرِّيَّتَهٗٓ اِلَّا قَلِيۡلًا ﴿۶۲﴾ قَالَ اذۡهَبۡ فَمَنۡ تَبِعَكَ مِنۡهُمۡ فَاِنَّ جَهَنَّمَ جَزَآؤُكُمۡ جَزَآءً مَّوۡفُوۡرًا ﴿۶۳﴾ وَاسۡتَفۡزِزۡ مَنِ اسۡتَطَعۡتَ مِنۡهُمۡ بِصَوۡتِكَ وَاَجۡلِبۡ عَلَيۡهِمۡ بِخَيۡلِكَ

وَرَجِلِكَ وَشَارِكۡهُمۡ فِى الۡاَمۡوَالِ وَالۡاَوۡلَادِ وَعِدۡهُمۡ ؕ وَمَا يَعِدُهُمُ الشَّيۡطٰنُ اِلَّا غُرُوۡرًا ﴿۶۴﴾ اِنَّ عِبَادِىۡ لَيۡسَ لَكَ عَلَيۡهِمۡ سُلۡطٰنٌ ؕ وَكَفٰى بِرَبِّكَ وَكِيۡلًا ﴿۶۵﴾ رَبُّكُمُ الَّذِىۡ يُزۡجِىۡ

لَـكُمُ الۡـفُلۡكَ فِى الۡبَحۡرِ لِتَبۡتَغُوۡا مِنۡ فَضۡلِهٖ ؕ اِنَّهٗ كَانَ بِكُمۡ رَحِيۡمًا ﴿۶۶﴾ وَاِذَا مَسَّكُمُ الضُّرُّ فِى الۡبَحۡرِ ضَلَّ مَنۡ تَدۡعُوۡنَ اِلَّاۤ اِيَّاهُ ۚ فَلَمَّا نَجّٰٮكُمۡ اِلَى الۡبَرِّ اَعۡرَضۡتُمۡ ؕ

وَكَانَ الۡاِنۡسَانُ كَفُوۡرًا ﴿۶۷﴾ اَفَاَمِنۡتُمۡ اَنۡ يَّخۡسِفَ بِكُمۡ جَانِبَ الۡبَرِّ اَوۡ يُرۡسِلَ عَلَيۡكُمۡ حَاصِبًا ثُمَّ لَا تَجِدُوۡا لَـكُمۡ وَكِيۡلًا ﴿۶۸﴾ اَمۡ اَمِنۡتُمۡ اَنۡ يُّعِيۡدَكُمۡ فِيۡهِ تَارَةً اُخۡرٰى

فَيُرۡسِلَ عَلَيۡكُمۡ قَاصِفًا مِّنَ الرِّيۡحِ فَيُغۡرِقَكُمۡ بِمَا كَفَرۡتُمۡ ۙ ثُمَّ لَا تَجِدُوۡا لَـكُمۡ عَلَيۡنَا بِهٖ تَبِيۡعًا ﴿۶۹﴾ وَلَقَدۡ كَرَّمۡنَا بَنِىۡۤ اٰدَمَ وَحَمَلۡنٰهُمۡ فِى الۡبَرِّ وَالۡبَحۡرِ وَرَزَقۡنٰهُمۡ مِّنَ

जुर्रिय्य–तहू इल्ला क़लीला(62)क़ालज़् हब् फ़–मन् तबि–अ़–क मिन्हुम् फ़–इन्–न जहन्न–म जज़ाउकुम् जज़ाअम् मौफ़ूरा(63)वस्तफ़्ज़िज़् मनिस्–त–तअ़–त मिन्हुम् बिसौति–क व अज्लिब् अ़लैहिम् बिख़ैलि–क व रजिलि–क व शारिक्हुम् फ़िल् अम्वालि वल्औलादि व अ़िद्हुम् व मा यअ़िदु हुमुश्–शैतानु इल्ला ग़ुरूरा(64)इन्–न अ़िबादी लै–स ल–क अ़लैहिम् सुल्तानुन् व कफ़ा बिरब्बि–क वकीला(65)रब्बुकुमुल् लज़ी युज़्जी लकुमुल्फ़ुल्–क फ़िल्बह़्रि लितब्तग़ू मिन् फ़ज़्लिही इन्नहू का–न बिकुम् रह़ीमा(66)व इज़ा मस्सकुमुज़् ज़ुर्रु फ़िल्बह़्रि ज़ल्–ल मन् तद्ऊ–न इल्ला इय्याहु फ़–लम्मा नज्जाकुम् इलल् बर्रि अअ़्–रज़्तुम् व कानल् इन्सानु कफ़ूरा(67)अ–फ़–अमिन्तुम् अंय्यख़्सि–फ़ बिकुम् जानिबल् बर्रि औ युर्सि–ल अ़लैकुम् ह़ासिबन् सुम्–म ला तजिदू लकुम् वकीला(68)अम् अमिन्तुम् अंय्युई–दकुम् फ़ीहि ता–र–तन् उख़्रा फ़युर्सि–ल अ़लैकुम् क़ासिफ़म् मिनर् रीहि फ़युग़्रि–क़कुम् बिमा क–फ़र्तुम् सुम्–म ला तजिदू लकुम् अ़लैना बिही तबीआ़ (69)व ल–क़द् कर्रम्ना बनी आ–द–म व ह़–मल्नाहुम् फ़िल्बर्रि वल्बह़्रि व र–ज़क़्नाहुम् मिनत्–

उसकी औलाद को पीस डालूंगा (फ़ा137) मगर थोड़ा।(62) (फ़ा138) फ़रमाया दूर हो (फ़ा139) तो उनमें जो तेरी पैरवी करेगा तो बेशक सब का बदला जहन्नम है भरपूर सज़ा।(63) और डगा दे इनमें से जिस पर क़ुदरत पाए अपनी आवाज़ से (फ़ा140) और उन पर लाम बांध ला अपने सवारों और अपने पियादों का (फ़ा141) और उनका साझी हो मालों और बच्चों में (फ़ा142) और उन्हें वादा दे (फ़ा143) और शैतान उन्हें वादा नहीं देता मगर फ़रेब से।(64) बेशक जो मेरे बन्दे हैं (फ़ा144) उन पर तेरा कुछ क़ाबू नहीं और तेरा रब काफ़ी है काम बनाने को।(65) (फ़ा145) तुम्हारा रब वह है कि तुम्हारे लिए दरिया में कश्ती रवाँ करता है कि (फ़ा146) तुम उसका फ़ज़्ल तलाश करो बेशक वह तुम पर मेहरबान है।(66) और जब तुम्हें दरिया में मुसीबत पहुंचती है (फ़ा147) तो उसके सिवा जिन्हें पूजते हैं सब गुम हो जाते हैं (फ़ा148) फिर जब वह तुम्हें ख़ुश्की की तरफ़ नजात देता है तो मुँह फेर लेते हो (फ़ा149) और आदमी बड़ा नाशुक्रा है।(67) क्या तुम (फ़ा150) इस से निडर हुए कि वह ख़ुश्की ही का कोई किनारा तुम्हारे साथ धंसा दे (फ़ा151) या तुम पर पथराव भेजे (फ़ा152) फिर अपना कोई हिमायती न पाओ।(68) (फ़ा153) या इससे निडर हुए कि तुम्हें दोबारा दरिया में ले जाए फिर तुम पर जहाज़ तोड़ने वाली आंधी भेजे तो तुम को तुम्हारे कुफ़्र के सबब डुबो दे फिर अपने लिए कोई ऐसा न पाओ कि उस पर हमारा पीछा करे।(69) (फ़ा154) और बेशक हमने औलादे आदम को इज़्ज़त दी (फ़ा155) और उन को ख़ुश्की और तरी में(फ़ा156) सवार किया और उनको सुथरी चीज़ें

(फ़ा137) गुमराह करके (फ़ा138) जिन्हें अल्लाह बचाए और महफ़ूज़ रखे वह उसके मुख़्लिस बन्दे हैं शैतान के इस कलाम पर अल्लाह तबारक व तआ़ला ने उस से (फ़ा139) तुझे नफ़्ख़ए ऊला तक मुहलत दी गई (फ़ा140) वसवसे डाल कर और मअ़्सियत की तरफ़ बुला कर बाज़ उलमा ने फ़रमाया कि मुराद इससे गाने बाजे लह्व व लइब की आवाज़ें हैं इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा से मन्क़ूल है कि जो आवाज़ अल्लाह तआ़ला की मर्ज़ी के ख़िलाफ़ मुंह से निकले वह शैतानी आवाज़ है। (फ़ा141) यानी अपने सब मक्र तमाम करले और अपने तमाम लश्करों से मदद ले। (फ़ा142) ज़ुज्जाज ने कहा कि जो गुनाह माल में हो या औलाद में हो इबलीस उसमें शरीक है जैसे कि सूद और माल हासिल करने के दूसरे हराम तरीक़े और फ़िस्क़ और ममनूआ़त में ख़र्च करना और ज़कात न देना यह माली उमूर हैं जिन में शैतान की शिरकत है और ज़िना व नाजाइज़ तरीक़े से औलाद हासिल करना यह **(बक़िया सफ़हा 491 पर)**

الطَّيِّبٰتِ وَفَضَّلْنٰهُمْ عَلٰى كَثِيْرٍ مِّمَّنْ خَلَقْنَا تَفْضِيْلًا ۝ يَوْمَ نَدْعُوْا كُلَّ اُنَاسٍۭ بِاِمَامِهِمْ ۚ فَمَنْ اُوْتِيَ كِتٰبَهٗ بِيَمِيْنِهٖ فَاُولٰٓئِكَ يَقْرَءُوْنَ كِتٰبَهُمْ وَلَا

يُظْلَمُوْنَ فَتِيْلًا ۝ وَمَنْ كَانَ فِيْ هٰذِهٖٓ اَعْمٰى فَهُوَ فِي الْاٰخِرَةِ اَعْمٰى وَاَضَلُّ سَبِيْلًا ۝ وَاِنْ كَادُوْا لَيَفْتِنُوْنَكَ عَنِ الَّذِيْٓ اَوْحَيْنَآ اِلَيْكَ لِتَفْتَرِيَ عَلَيْنَا غَيْرَهٗ ۖ

وَاِذًا لَّاتَّخَذُوْكَ خَلِيْلًا ۝ وَلَوْلَآ اَنْ ثَبَّتْنٰكَ لَقَدْ كِدْتَّ تَرْكَنُ اِلَيْهِمْ شَيْـًٔا قَلِيْلًا ۝ اِذًا لَّاَذَقْنٰكَ ضِعْفَ الْحَيٰوةِ وَضِعْفَ الْمَمَاتِ ثُمَّ لَا تَجِدُ لَكَ عَلَيْنَا نَصِيْرًا ۝

وَاِنْ كَادُوْا لَيَسْتَفِزُّوْنَكَ مِنَ الْاَرْضِ لِيُخْرِجُوْكَ مِنْهَا وَاِذًا لَّا يَلْبَثُوْنَ خِلٰفَكَ اِلَّا قَلِيْلًا ۝ سُنَّةَ مَنْ قَدْ اَرْسَلْنَا قَبْلَكَ مِنْ رُّسُلِنَا وَلَا تَجِدُ لِسُنَّتِنَا

تَحْوِيْلًا ۝ اَقِمِ الصَّلٰوةَ لِدُلُوْكِ الشَّمْسِ اِلٰى غَسَقِ الَّيْلِ وَقُرْاٰنَ الْفَجْرِ ۖ اِنَّ قُرْاٰنَ الْفَجْرِ كَانَ مَشْهُوْدًا ۝ وَمِنَ الَّيْلِ فَتَهَجَّدْ بِهٖ نَافِلَةً لَّكَ ۖ عَسٰٓى اَنْ يَّبْعَثَكَ

तय्यिबाति व फ़ज़्ज़ल्नाहुम् अ़ला कसीरिम् मिम्मन् ख़–लक़्ना तफ़्ज़ीला(70)यौ–म नदऊ कुल्–ल उनासिम् बि–इमामिहिम् फ़–मन् ऊति–य किता–बहू बि–यमीनिही फ़उलाइ–क यक़्रऊ–न किता–बहुम् व ला युज़्–लमू–न फ़तीला(71)व मन् का–न फ़ी हाज़िही अअ्मा फ़हु–व फ़िल्आख़ि–रति अअ्मा व अज़ल्लु सबीला(72)व इन् कादू ल–यफ़्तिनू–न–क अ़निल्लज़ी औहैना इलै–क लि–तफ़्तरि–य अ़लैना ग़ै–रहू व इज़ल्लत्त–ख़–जू–क ख़लीला(73)व लौला अन् सब्बत्ना–क ल–क़द् कित्–त तर्–कनु इलैहिम् शैअन् क़लीला(74)इज़ल्–ल अ–ज़क़्ना–क ज़िअ्–फ़ल् हयाति व ज़िअ्–फ़ल् ममाति सुम्–म ला तजिदु ल–क अ़लैना नसीरा(75)व इन् कादू ल–यस्तफ़िज़्ज़ू–न–क मिनल्अर्ज़ि लियुख़्रिजू–क मिन्हा व इज़ल् ला यल्बसू–न ख़िला–फ़–क इल्ला क़लीला(76)सुन्न–त मन् क़द् अर्सल्ना क़ब्ल–क मिर्रुसुलिना व ला तजिदु लिसुन्नतिना तह़्वीला(77)अक़िमिस्सला–त लिदुलू–किश्–शम्सि इला ग़–सक़िल् लैलि व क़ुर्आनल् फ़ज्रि इन्–न क़ुर्आनल् फ़ज्रि का–न मश्हूदा(78)व मिनल् लैलि फ़–त–हज्जद् बिही नाफ़ि–ल–तल् ल–क अ़सा अंय्यब्अ़–स़–क

रोज़ी दीं (फ़ा157) और उनको अपनी बहुत मख़्लूक़ से अफ़ज़ल किया।(70) (फ़ा158) (रुकूअ़ 7) जिस दिन हम हर जमाअ़त को उसके इमाम के साथ बुलायेंगे (फ़ा159) तो जो अपना नामा दाहिने हाथ में दिया गया यह लोग अपना नामा पढ़ेंगे (फ़ा160) और तागे भर उनका हक़ न दबाया जाएगा।(71) (फ़ा161) और जो इस ज़िन्दगी में (फ़ा162) अन्धा हो वह आख़िरत में अन्धा है (फ़ा163) और, और भी ज़्यादा गुमराह।(72) और वह तो क़रीब था कि तुम्हें कुछ लग़ज़िश देते हमारी 'वही' से जो हमने तुमको भेजी कि तुम हमारी तरफ़ कुछ और निस्बत कर दो और ऐसा होता तो वह तुमको अपना गहरा दोस्त बना लेते।(73) (फ़ा164) और अगर हम तुम्हें (फ़ा165) साबित क़दम न रखते तो क़रीब था कि तुम उनकी तरफ़ कुछ थोड़ा सा झुकते।(74) और ऐसा होता तो हम तुमको दूनी उम्र और दो चन्द मौत (फ़ा166) का मज़ा देते फिर तुम हमारे मुक़ाबिल अपना कोई मददगार न पाते।(75) और बेशक क़रीब था कि वह तुम्हें इस ज़मीन से (फ़ा167) डिगा दें कि तुम्हें इससे बाहर कर दें और ऐसा होता तो वह तुम्हारे पीछे न ठहरते मगर थोड़ा।(76) (फ़ा168) दस्तूर उनका जो हमने तुम से पहले रसूल भेजे (फ़ा169) और तुम हमारा क़ानून बदलता न पाओगे।(77) (रुकूअ़ 8) नमाज़ क़ाइम रखो सूरज ढलने से रात की अंधेरी तक (फ़ा170) और सुबह का क़ुरआन (फ़ा171) बेशक सुबह के क़ुरआन में फ़रिश्ते हाज़िर होते हैं।(78) (फ़ा172) और रात के कुछ हिस्सा में तहज्जुद करो यह ख़ास तुम्हारे लिए ज़्यादा है (फ़ा173) क़रीब है कि तुम्हें

(फ़ा157) लतीफ़ ख़ुश ज़ायक़ा हैवानी और नबाती हर तरह की ग़िज़ायें ख़ूब अच्छी तरह पकी हुई क्योंकि इन्सान के सिवा हैवानात में पकी हुई ग़िज़ा और किसी की ख़ुराक नहीं। (फ़ा158) हसन का क़ौल है कि अक्सर से कुल मुराद है और अक्सर का लफ़्ज़ कुल के माना में बोला जाता है क़ुरआने करीम में भी इरशाद हुआ *व अक्सरुहुम् काज़िबू–न* और *मा यत्तबिअ़ु अक्स–रहुम् इल्ला ज़न्ना* में अक्सर ब–माना कुल है लिहाज़ा मलाइका भी इसमें दाख़िल हैं और ख़वास बशर यानी अम्बिया अ़लैहिमुस्सलाम ख़वास मलाइका से अफ़ज़ल हैं और सुलहाए बशर अवाम मलाइका से हदीस शरीफ़ में है कि मोमिन अल्लाह के नज़दीक मलाइका से ज़्यादा करामत रखता है वजह यह है कि फ़रिश्ते ताअ़त पर मजबूल हैं यही उनकी सरिश्त है उनमें अ़क़्ल है शह्वत नहीं और बहाइम में शह्वत है अ़क़्ल नहीं और आदमी शह्वत व अ़क़्ल दोनों का जामेअ़ है तो जिस **(बक़िया सफ़हा 491 पर)**

رَبُّكَ مَقَامًا مَّحْمُودًا ۝ وَقُلْ رَّبِّ اَدْخِلْنِيْ مُدْخَلَ صِدْقٍ وَّاَخْرِجْنِيْ مُخْرَجَ صِدْقٍ وَّاجْعَلْ لِّيْ مِنْ لَّدُنْكَ سُلْطٰنًا نَّصِيْرًا ۝ وَقُلْ جَآءَ الْحَقُّ وَزَهَقَ

الْبَاطِلُ ؕ اِنَّ الْبَاطِلَ كَانَ زَهُوْقًا ۝ وَنُنَزِّلُ مِنَ الْقُرْاٰنِ مَا هُوَ شِفَآءٌ وَّرَحْمَةٌ لِّلْمُؤْمِنِيْنَ ۙ وَلَا يَزِيْدُ الظّٰلِمِيْنَ اِلَّا خَسَارًا ۝ وَاِذَآ اَنْعَمْنَا عَلَى الْاِنْسَانِ

اَعْرَضَ وَنَاٰ بِجَانِبِهٖ ۚ وَاِذَا مَسَّهُ الشَّرُّ كَانَ يَـُٔوْسًا ۝ قُلْ كُلٌّ يَّعْمَلُ عَلٰى شَاكِلَتِهٖ ؕ فَرَبُّكُمْ اَعْلَمُ بِمَنْ هُوَ اَهْدٰى سَبِيْلًا ۝ وَيَسْـَٔلُوْنَكَ عَنِ الرُّوْحِ ؕ قُلِ

الرُّوْحُ مِنْ اَمْرِ رَبِّيْ وَمَآ اُوْتِيْتُمْ مِّنَ الْعِلْمِ اِلَّا قَلِيْلًا ۝ وَلَئِنْ شِئْنَا لَنَذْهَبَنَّ بِالَّذِيْٓ اَوْحَيْنَآ اِلَيْكَ ثُمَّ لَا تَجِدُ لَكَ بِهٖ عَلَيْنَا وَكِيْلًا ۝ اِلَّا رَحْمَةً مِّنْ

رَّبِّكَ ؕ اِنَّ فَضْلَهٗ كَانَ عَلَيْكَ كَبِيْرًا ۝ قُلْ لَّئِنِ اجْتَمَعَتِ الْاِنْسُ وَالْجِنُّ عَلٰٓى اَنْ يَّاْتُوْا بِمِثْلِ هٰذَا الْقُرْاٰنِ لَا يَاْتُوْنَ بِمِثْلِهٖ وَلَوْ كَانَ بَعْضُهُمْ لِبَعْضٍ

रब्बु–क मक़ामम् मह्मूदा(79)व कुर्रब्बि अद्ख़िल्नी मुद–ख़–ल सिद्क़िंव् व अख़्रिज्नी मुख़्–र–ज सिद्क़िंव् वज्–अल् ली मिल्लदुन्–क सुल्तानन् नसीरा(80)व कुल् जाअल् हक़्क़ु व ज़–ह–क़ल्बातिलु इन्नल्बाति–ल का–न ज़हूक़ा(81)व नुनज़्ज़िलु मिनल्क़ुरआनि मा हु–व शिफ़ाउंव् व रह्–मतुल् लिल्–मुअ्मिनी–न व ला यज़ीदुज़्ज़ालिमी–न इल्ला ख़सारा(82)व इज़ा अन्–अ़म्ना अ़–लल्इन्सानि अअ्–र–ज़ व नआ बिजानिबिही व इज़ा मस्सहुश् शर्रु का–न यऊसा(83)कुल् कुल्लुंय्यअ्–मलु अ़ला शाकि–लतिही फ़–रब्बुकुम् अअ्लमु बिमन् हु–व अह्दा सबीला(84)व यस्–अलू–न–क अ़निर्रूहि कुलिर् रूहु मिन् अम्रि रब्बी व मा ऊतीतुम् मिनल्अ़िल्मि इल्ला क़लीला(85)व लइन् शिअ्ना ल–नज़्–हबन्–न बिल्लज़ी औहैना इलै–क सुम्–म ला तजिदु ल–क बिही अ़लैना वकीला(86)इल्ला रह्–म–तम् मिर्–रब्बि–क इन्–न फ़ज़्–लहू का–न अ़लै–क कबीरा(87)कुल् लइनिज्–त–म–अ़तिल् इन्सु वल्जिन्नु अ़ला अंय्यअ्तू बिमिस्लि हाज़ल् क़ुरआनि ला यअ्तू–न बिमिस्लिही व लौ का–न बअ्ज़ुहुम् लिबअ्ज़िन्

तुम्हारा रब ऐसी जगह खड़ा करे जहां सब तुम्हारी हम्द करें।(79) (फ़ा174) और यूं अ़र्ज़ करो कि ऐ मेरे रब मुझे सच्ची तरह दाख़िल कर और सच्ची तरह बाहर लेजा (फ़ा175) और मुझे अपनी तरफ़ से मददगार ग़लबा दे।(80) (फ़ा176) और फरमाओ कि हक़ आया और बातिल मिट गया (फ़ा177) बेशक बातिल को मिटना ही था।(81) (फ़ा178) और हम कुरआन में उतारते हैं वह चीज़ (फ़ा179) जो ईमान वालों के लिए शिफ़ा और रहमत है (फ़ा180) और इससे ज़ालिमों (फ़ा181) को नक़सान ही बढ़ता है।(82) और जब हम आदमी पर एहसान करते हैं (फ़ा182) मुंह फेर लेता है और अपनी तरफ़ दूर हट जाता है (फ़ा183) और जब उसे बुराई पहुंचे (फ़ा184) तो नाउम्मीद हो जाता है।(83) (फ़ा185) तुम फ़रमाओ सब अपने केन्डे पर काम करते हैं (फ़ा186) तो तुम्हारा रब ख़ूब जानता है कौन ज़्यादा राह पर है।(84)(रुकूअ. 9) और तुम से रूह को पूछते हैं तुम फ़रमाओ रूह मेरे रब के हुक्म से एक चीज़ है और तुम्हें इल्म न मिला मगर थोड़ा।(85) (फ़ा187) और अगर हम चाहते तो यह 'वह़ी' जो हमने तुम्हारी तरफ़ की उसे ले जाते (फ़ा188) फिर तुम कोई न पाते कि तुम्हारे लिए हमारे हुज़ूर उस पर वकालत करता।(86) मगर तुम्हारे रब की रहमत (फ़ा189) बेशक तुम पर उस का बड़ा फ़ज़्ल है।(87) (फ़ा190) तुम फ़रमाओ अगर आदमी और जिन्न सब इस बात पर मुत्तफ़िक़ हो जायें कि (फ़ा191) इस कुरआन की मानिन्द ले आयें तो इसका मिस्ल न ला सकेंगे अगरचे उनमें एक दूसरे का

(फ़ा174) और मक़ामे महमूद मक़ामे शफ़ाअ़त है कि उसमें अव्वलीन व आख़िरीन हुज़ूर की हम्द करेंगे इसी पर जम्हूर हैं। (फ़ा175) जहां भी मैं दाख़िल हूं और जहां से भी मैं बाहर आऊं ख़्वाह वह कोई मकान हो या मन्सब हो या काम बाज़ मुफ़स्सिरीन ने कहा मुराद यह है कि मुझे क़ब्र में अपनी रज़ा और तहारत के साथ दाख़िल कर और वक़्ते बेअ़सत इज़्ज़त व करामत के साथ बाहर ला बाज़ ने कहा माना यह हैं कि मुझे अपनी ताअ़त में सिद्क़ के साथ दाख़िल कर और अपनी मनाही से सिदक़ के साथ ख़ारिज फ़रमा और इसके माना में एक क़ौल यह भी है कि मन्सबे नबुव्वत में मुझे सिद्क़ के साथ दाख़िल कर और सिद्क़ के साथ दुनिया से रुख़सत के वक़्त नबुव्वत के हुक़ूक़े वाजिबा से ओ़हदा बर आ फ़रमा एक क़ौल यह भी है कि मुझे मदीना तय्येबा में पसन्दीदा दाख़िला इनायत कर और मक्का मुकर्रमा से मेरा ख़ुरूज सिद्क़ के साथ कर कि इससे मेरा दिल ग़मगीन न हो। मगर यह तौजीह उस सूरत में सही हो सकती है जबकि यह आयत मदनी न हो जैसा कि अल्लामा सुयूती ने क़ील फ़रमा कर इस आयत के मदनी होने का क़ौल ज़ईफ़ होने की तरफ़ इशारा किया (फ़ा176) वह कुव्वत **(बक़िया सफ़्हा 492 पर)**

ظَهِيرًا ۝ وَلَقَدْ صَرَّفْنَا لِلنَّاسِ فِي هَٰذَا الْقُرْآنِ مِن كُلِّ مَثَلٍ فَأَبَىٰ أَكْثَرُ النَّاسِ إِلَّا كُفُورًا ۝ وَقَالُوا لَن نُّؤْمِنَ لَكَ حَتَّىٰ تَفْجُرَ لَنَا مِنَ الْأَرْضِ
يَنبُوعًا ۝ أَوْ تَكُونَ لَكَ جَنَّةٌ مِّن نَّخِيلٍ وَعِنَبٍ فَتُفَجِّرَ الْأَنْهَارَ خِلَالَهَا تَفْجِيرًا ۝ أَوْ تُسْقِطَ السَّمَاءَ كَمَا زَعَمْتَ عَلَيْنَا كِسَفًا أَوْ تَأْتِيَ بِاللَّهِ وَالْمَلَائِكَةِ
قَبِيلًا ۝ أَوْ يَكُونَ لَكَ بَيْتٌ مِّن زُخْرُفٍ أَوْ تَرْقَىٰ فِي السَّمَاءِ وَلَن نُّؤْمِنَ لِرُقِيِّكَ حَتَّىٰ تُنَزِّلَ عَلَيْنَا كِتَابًا نَّقْرَؤُهُ ۗ قُلْ سُبْحَانَ رَبِّي هَلْ كُنتُ إِلَّا بَشَرًا
رَّسُولًا ۝ وَمَا مَنَعَ النَّاسَ أَن يُؤْمِنُوا إِذْ جَاءَهُمُ الْهُدَىٰ إِلَّا أَن قَالُوا أَبَعَثَ اللَّهُ بَشَرًا رَّسُولًا ۝ قُل لَّوْ كَانَ فِي الْأَرْضِ مَلَائِكَةٌ يَمْشُونَ مُطْمَئِنِّينَ
لَنَزَّلْنَا عَلَيْهِم مِّنَ السَّمَاءِ مَلَكًا رَّسُولًا ۝ قُلْ كَفَىٰ بِاللَّهِ شَهِيدًا بَيْنِي وَبَيْنَكُمْ ۚ إِنَّهُ كَانَ بِعِبَادِهِ خَبِيرًا بَصِيرًا ۝ وَمَن يَهْدِ اللَّهُ فَهُوَ الْمُهْتَدِ ۖ وَمَن

ज़हीरा(88)व ल–क़द् सर्रफ़्ना लिन्नासि फ़ी हाज़ल् क़ुरआनि मिन् कुल्लि म–सलिन् फ़–अबा अक्सरुन्नासि इल्ला कुफ़ूरा(89)व क़ालू लन् नुअमि–न ल–क हत्ता तफ़्जु–र लना मिनल्अर्ज़ि यम्बूआ(90)औ–तकू–न ल–क जन्नतुम् मिन् नख़ीलिंव् व अि–नबिन् फ़तुफ़ज्जिरल् अन्हा–र ख़िला–लहा तफ़्जीरा(91)औ तुस्क़ितस्समा–अ कमा ज़–अम्–त अ़लैना कि–स–फ़न् औ तअति–य बिल्लाहि वल्मलाइ–कति क़बीला(92)औ यकू–न ल–क बैतुम् मिन् ज़ुख़रुफ़िन् औ तर्क़ा फ़िस्समाइ व लन् नुअमि–न लिरुक़िय्यि–क हत्ता तुनज़्ज़ि–ल अ़लैना किताबन् नक़्–रऊहू क़ुल् सुब्हा–न रब्बी हल् कुन्तु इल्ला ब–श–रर् रसूला(93)व मा म–न–अ़न्ना–स अंय्युअमिनू इज़् जा–अ–हुमुल्हुदा इल्ला अन् क़ालू अ–ब–अ़–सल्लाहु ब–श–रर्–रसूला(94)क़ुल् लौ का–न फ़िल्अर्ज़ि मलाइ–कतुंय्यम्शू–न मुत्मइन्नी–न ल–नज़्ज़ल्ना अ़लैहिम् मिनस्समाइ म–ल–कर्रसूला(95)क़ुल् कफ़ा बिल्लाहि शहीदम् बैनी व बै–नकुम् इन्नहू का–न बिअ़िबादिही ख़बीरम् बसीरा(96)व मंय्यह्दिल्लाहु

मददगार हो।(88) (फ़192) और बेशक हम ने लोगों के लिए इस क़ुरआन में हर क़िस्म की मिस्ल तरह तरह बयान फ़रमाई तो अक्सर आदमियों ने न माना मगर नाशुक्र करना।(89) (फ़193) और बोले कि हम हरगिज़ तुम पर ईमान न लायेंगे यहां तक कि तुम हमारे लिए ज़मीन से कोई चश्मा बहा दो।(90) (फ़194) या तुम्हारे लिए खजूरों और अंगूरों का कोई बाग़ हो फिर तुम उस के अन्दर बहती नहरें रवाँ करो।(91) या तुम हम पर आसमान गिरा दो जैसा तुम ने कहा है टुकड़े टुकड़े या अल्लाह और फ़रिश्तों को ज़ामिन ले आओ।(92) (फ़195) या तुम्हारे लिए तिलाई घर हो या तुम आसमान में चढ़ जाओ और हम तुम्हारे चढ़ जाने पर भी हरगिज़ ईमान न लायेंगे जब तक हम पर एक किताब न उतारो जो हम पढ़ें तुम फ़रमाओ पाकी है मेरे रब को मैं कौन हूं मगर आदमी अल्लाह का भेजा हुआ।(93) (फ़196) (रुकूअ़ 10) और किस बात ने लोगों को ईमान लाने से रोका जब उनके पास हिदायत आई मगर उसी ने कि बोले क्या अल्लाह ने आदमी को रसूल बनाकर भेजा।(94) (फ़197) तुम फ़रमाओ अगर ज़मीन में फ़रिश्ते होते (फ़198) चैन से चलते तो उन पर हम रसूल भी फ़रिश्ता उतारते।(95) (फ़199) तुम फ़रमाओ अल्लाह बस है गवाह मेरे तुम्हारे दर्मियान (फ़200) बेशक वह अपने बन्दों को जानता देखता है।(96) और जिसे अल्लाह राह दे

(फ़192) शाने नुज़ूलः मुशरिकीन ने कहा था कि हम चाहें तो इस क़ुरआन की मिस्ल बना लें इस पर यह आयते करीमा नाज़िल हुई और अल्लात तबारक व तआ़ला ने उनकी तकज़ीब की कि ख़ालिक़ के कलाम के मिस्ल मख़्लूक़ का कलाम हो ही नहीं सकता अगर वह सब बाहम मिल कर कोशिश करें जब भी मुमकिन नहीं कि इस कलाम के मिस्ल ला सकें चुनांचे ऐसा ही हुआ तमाम कुफ़्फ़ार आ़जिज़ हुए और उन्हें रुसवाई उठाना पड़ी और वह एक सतर भी क़ुरआने करीम के मुक़ाबिल बना कर पेश न कर सके (फ़193) और हक़ से मुन्किर होना इख़्तियार किया (फ़194) शाने नुज़ूलः जब क़ुरआने करीम का एजाज़ ख़ूब ज़ाहिर हो चुका और मोअ़्जेज़ात व वाज़ेहात ने हुज्जत क़ायम कर दी और कुफ़्फ़ार के लिए कोई जाय उज़्र बाक़ी न रही तो वह लोगों को मुग़ालता में डालने के लिए तरह तरह की निशानियां तलब करने लगे और उन्होंने कह दिया कि हम हरगिज़ आप पर ईमान न लायेंगे मरवी है कि कुफ़्फ़ारे क़ुरैश के सरदार कअ़्बा मुअ़ज़्ज़मा में जमा हुए और उन्होंने सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को बुलवाया हुज़ूर तशरीफ़ लाये तो उन्होंने कहा कि हमने आपको इस लिए बुलाया है कि आज गुफ़्तगू करके आप से मुआ़मला तय कर लें ताकि हम फिर आपके हक़ में मअ़्ज़ूर समझे जायें अ़रब में कोई आदमी ऐसा नहीं हुआ जिसने अपनी क़ौम पर वह शदाइद किये हों जो आपने किये हैं आपने हमारे बाप दादा को **(बक़िया सफ़हा 493 पर)**

يُضْلِلْ فَلَنْ تَجِدَ لَهُمْ أَوْلِيَآءَ مِنْ دُونِهٖ ۚ وَنَحْشُرُهُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ عَلٰى وُجُوهِهِمْ عُمْيًا وَّبُكْمًا وَّصُمًّا ۚ مَأْوٰىهُمْ جَهَنَّمُ ۚ كُلَّمَا خَبَتْ زِدْنٰهُمْ سَعِيرًا ﴿٩٧﴾ ذٰلِكَ جَزَآؤُهُمْ

بِأَنَّهُمْ كَفَرُوا بِاٰيٰتِنَا وَقَالُوٓا ءَإِذَا كُنَّا عِظٰمًا وَّرُفٰتًا ءَإِنَّا لَمَبْعُوثُونَ خَلْقًا جَدِيدًا ﴿٩٨﴾ أَوَلَمْ يَرَوْا أَنَّ اللّٰهَ الَّذِي خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضَ قَادِرٌ عَلٰٓى أَنْ يَّخْلُقَ

مِثْلَهُمْ وَجَعَلَ لَهُمْ أَجَلًا لَّا رَيْبَ فِيهِ ۚ فَأَبَى الظّٰلِمُونَ إِلَّا كُفُورًا ﴿٩٩﴾ قُلْ لَّوْ أَنْتُمْ تَمْلِكُونَ خَزَآئِنَ رَحْمَةِ رَبِّيٓ إِذًا لَّأَمْسَكْتُمْ خَشْيَةَ الْإِنْفَاقِ ۚ وَكَانَ الْإِنْسَانُ قَتُورًا ﴿١٠٠﴾

وَلَقَدْ اٰتَيْنَا مُوسٰى تِسْعَ اٰيٰتٍۢ بَيِّنٰتٍ فَسْـَٔلْ بَنِيٓ إِسْرَآءِيلَ إِذْ جَآءَهُمْ فَقَالَ لَهُ فِرْعَوْنُ إِنِّي لَأَظُنُّكَ يٰمُوسٰى مَسْحُورًا ﴿١٠١﴾ قَالَ لَقَدْ عَلِمْتَ مَآ أَنْزَلَ هٰٓؤُلَآءِ إِلَّا رَبُّ

السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ بَصَآئِرَ ۚ وَإِنِّي لَأَظُنُّكَ يٰفِرْعَوْنُ مَثْبُورًا ﴿١٠٢﴾ فَأَرَادَ أَنْ يَّسْتَفِزَّهُمْ مِّنَ الْأَرْضِ فَأَغْرَقْنٰهُ وَمَنْ مَّعَهٗ جَمِيعًا ﴿١٠٣﴾ وَّقُلْنَا مِنْۢ بَعْدِهٖ لِبَنِيٓ إِسْرَآءِيلَ

फ़हुवल्मुह्तदि व मंय्युज़्लिल् फ़–लन् तजि–द लहुम् औलिया–अ मिन् दूनिही व नह्शुरुहुम् यौमल् क़िया–मति अ़ला वुजूहिहिम् उम्यंव् व बुक्मंव् व सुम्मन् मअ्वाहुम् जहन्नमु कुल्लमा ख़–बत् ज़िद्नाहुम् सअ़ीरा(97)ज़ालि–क जज़ाउ हुम् बिअन्नहुम् क–फ़रू बि–आयातिना व क़ालू अ–इज़ा कुन्ना अ़िज़ामंव् व रुफ़ातन् अ–इन्ना ल–मब्अूसू–न ख़ल्क़न् जदीदा(98)अ–व–लम् यरौ अन्नल्लाहल् लज़ी ख़–ल–क़स्समावाति वल्अर्–ज़ क़ादिरुन् अ़ला अंय्यख़्लु–क़ मिस्–लहुम् व ज–अ़–ल लहुम् अ–ज–लल् ला रै–ब फ़ीहि फ़–अ–बज़्ज़ालिमू–न इल्ला कुफ़ूरा(99)क़ुल् लौ अन्तुम् तम्लिकू–न ख़ज़ाइ–न रह्मति रब्बी इज़ल्–ल अम्–सक्तुम् ख़श्–यतल् इन्फ़ाक़ि व कानल् इन्सानु क़तूरा(100)व ल–क़द् आतैना मूसा तिस्–अ़ आयातिम् बय्यिनातिन् फ़स्अल् बनी इस्राई–ल इज़् जा–अहुम् फ़क़ा–ल लहू फ़िर्औनु इन्नी ल–अज़ुन्नु–क या मूसा मस्हूरा(101)क़ा–ल ल–क़द् अ़लिम्–त मा अन्ज़–ल हाउलाइ इल्ला रब्बुस्समावाति वल्अर्ज़ि बसाइ–र व इन्नी ल–अज़ुन्नु–क या फ़िर्औनु मस्बूरा (102)फ़–अरा–द अंय्यस्तफ़िज़्–ज़हुम् मिनल्अर्ज़ि फ़–अग़्रक़्नाहु व मम् म–अ़हू जमीअंव्(103)व क़ुल्ना मिम् बअ्दिही लि–बनी इस्राई–लस्कुनुल्

वही राह पर है और जिसे गुमराह करे (फ़202) तो उनके लिए उसके सिवा कोई हिमायत वाले न पाओगे (फ़202) और हम उन्हें क़ियामत के दिन उनके मुँह के बल (फ़203) उठायेंगे अन्धे और गूंगे और बहरे (फ़204) उनका ठिकाना जहन्नम है जब कभी बुझने पर आएगी हम उसे और भड़का देंगे।(97) यह उन की सज़ा है इस पर किं उन्होंने हमारी आयतों से इंकार किया और बोले क्या जब हम हड्डियां और रेज़ा-रेज़ा हो जायेंगे तो क्या सच मुच हम नए बनकर उठाए जायेंगे।(98) और क्या वह नहीं देखते कि वह अल्लाह जिसने आसमान और ज़मीन बनाए (फ़205) उन लोगों की मिस्ल बना सकता है (फ़206) और उसने उनके लिए (फ़207) एक मीआ़द ठहरा रखी है जिसमें कुछ शुबहा नहीं तो ज़ालिम नहीं मानते बे नाशुक्री किये।(99) (फ़208) तुम फ़रमाओ अगर तुम लोग मेरे रब की रहमत के ख़ज़ानों के मालिक होते (फ़209) तो उन्हें भी रोक रखते इस डर से कि ख़र्च न हो जायें और आदमी बड़ा कंजूस है।(100) (रुकूअ़ 11) और बेशक हमने मूसा को नौ रौशन निशानियाँ दीं (फ़210) तो बनी इसराईल से पूछो जब वह (फ़211) उनके पास आया तो उससे फ़िरऔ़न ने कहा ऐ मूसा मेरे ख़्याल में तो तुम पर जादू हुआ।(101) (फ़212) कहा यक़ीनन तू ख़ूब जानता है (फ़213) कि उन्हें न उतारा मगर आसमानों और ज़मीन के मालिक ने दिल की आँखें खोलने वालियाँ (फ़214) और मेरे गुमान में तो ऐ फ़िरऔ़न तू ज़रूर हलाक होने वाला है।(102) (फ़215) तो उसने चाहा कि उनको(फ़216)ज़मीन से निकाल दे तो हमने उसे और उसके साथियों सब को डुबो दिया।(103) (फ़217)और उसके बाद हमने बनी इसराईल से फ़रमाया

(फ़ा201) और तौफ़ीक़ न दे। (फ़ा202) जो उन्हें हिदायत करें (फ़ा203) घिसटता (फ़ा204) जैसे वह दुनिया में हक़ के देखने बोलने और सुनने से अन्धे गूंगे बहरे बने रहे ऐसे ही उठाये जायेंगे (फ़ा205) ऐसे अ़ज़ीम व वसीअ़ वह (फ़ा206) यह उसकी क़ुदरत से कुछ अ़जीब नहीं (फ़ा207) अ़ज़ाब की या मौत व बअ़्स की (फ़ा208) बावजूद दलीले वाज़ेह और हुज्जत क़ाइम होने के (फ़ा209) जिन की कुछ इन्तेहा नहीं। (फ़ा210) हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा ने फ़रमाया वह नौ निशानियां यह हैं- अ़सा, यदे बैज़ा, वह उक़्दा जो हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम की ज़बाने मुबारक में था फिर अल्लाह **(बक़िया सफ़हा 493 पर)**

اسْكُنُوا الْأَرْضَ فَإِذَا جَاءَ وَعْدُ الْآخِرَةِ جِئْنَا بِكُمْ لَفِيفًا ۝ وَبِالْحَقِّ أَنْزَلْنٰهُ وَبِالْحَقِّ نَزَلَ ۗ وَمَا أَرْسَلْنٰكَ إِلَّا مُبَشِّرًا وَّنَذِيرًا ۝ وَقُرْاٰنًا فَرَقْنٰهُ لِتَقْرَاَهٗ عَلَى النَّاسِ عَلٰى
مُكْثٍ وَّنَزَّلْنٰهُ تَنْزِيلًا ۝ قُلْ اٰمِنُوا بِهٖٓ اَوْ لَا تُؤْمِنُوا ۗ اِنَّ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْعِلْمَ مِنْ قَبْلِهٖٓ اِذَا يُتْلٰى عَلَيْهِمْ يَخِرُّوْنَ لِلْاَذْقَانِ سُجَّدًا ۝ وَّيَقُوْلُوْنَ سُبْحٰنَ رَبِّنَآ
اِنْ كَانَ وَعْدُ رَبِّنَا لَمَفْعُوْلًا ۝ وَيَخِرُّوْنَ لِلْاَذْقَانِ يَبْكُوْنَ وَيَزِيْدُهُمْ خُشُوْعًا ۩ ۝ قُلِ ادْعُوا اللّٰهَ اَوِ ادْعُوا الرَّحْمٰنَ ۗ اَيًّا مَّا تَدْعُوْا فَلَهُ الْاَسْمَآءُ الْحُسْنٰى ۚ
وَلَا تَجْهَرْ بِصَلَاتِكَ وَلَا تُخَافِتْ بِهَا وَابْتَغِ بَيْنَ ذٰلِكَ سَبِيْلًا ۝ وَقُلِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِيْ لَمْ يَتَّخِذْ وَلَدًا وَّلَمْ يَكُنْ لَّهٗ شَرِيْكٌ فِي الْمُلْكِ وَلَمْ يَكُنْ
لَّهٗ وَلِيٌّ مِّنَ الذُّلِّ وَكَبِّرْهُ تَكْبِيْرًا ۝

अर्–ज़ फ़इज़ा जा–अ वअ्दुल् आख़ि–रति जिअ्ना बिकुम् लफ़ीफ़ा(104)व बिल्हक़्क़ि अन्ज़ल्नाहु व बिल्हक़्क़ि न–ज़–ल व मा अर्सल्ना–क इल्ला मुबश्शिरंव् व नज़ीरा(105)व क़ुरआनन् फ़–रक़्नाहु लि–तक़्र–अहू अ़लन्नासि अ़ला मुक्सिंव् व नज़्ज़ल्नाहु तन्ज़ीला(106)क़ुल् आमिनू बिही औला तुअ्मिनू इन्नल्लज़ी–न ऊतुल्अ़िल्–म मिन् क़ब्लिही इज़ा युत्ला अ़लैहिम् यख़िर्रू–न लिल्अज़्क़ानि सुज्जदा(107)व यक़ूलू–न सुब्हा–न रब्बिना इन् का–न वअ़्दु रब्बिना ल–मफ़्अ़ूला (108)व यख़िर्रू–न लिल्अज़्क़ानि यब्कू–न व यज़ीदुहुम् ख़ुशूअ़ा(109)क़ुलिदअुल्ला–ह अविदअुर् रह्मा–न अय्यम् मा तदअ़ू फ़–लहुल् अस्माउल हुस्ना व ला तज्–हर् बि–सलाति–क व ला तुख़ाफ़ित् बिहा वब्तग़ि बै–न ज़ालि–क सबीला(110)व क़ुलिल्–हम्दु लिल्लाहिल् लज़ी लम् यत्तख़िज् व–ल–दंव् व लम् यकुल्लहू शरीकुन् फ़िल्मुल्कि व लम् यकुल्लहू वलिय्युम् मिनज़्ज़ुल्लि व कब्बिर्हु तक्बीरा(111)

इस ज़मीन में बसो (फ़ा218) फिर जब आख़िरत का वादा आएगा (फ़ा219) हम तुम सबको घालमेल ले आयेंगे।(104) (फ़ा220) और हमने क़ुरआन को हक़ ही के साथ उतारा और हक़ ही के साथ उतरा (फ़ा221) और हमने तुम्हें न भेजा मगर ख़ुशी और डर सुनाता।(105) और क़ुरआन हमने जुदा जुदा करके (फ़ा222) उतारा कि तुम उसे लोगों पर ठहर-ठहर कर पढ़ो (फ़ा223) और हमने उसे ब-तदरीज रह रह कर उतारा।(106) (फ़ा224) तुम फ़रमाओ कि तुम लोग उस पर ईमान लाओ या न लाओ (फ़ा225) बेशक वह जिन्हें उसके उतरने से पहले इल्म मिला (फ़ा226) जब उन पर पढ़ा जाता है ठोड़ी के बल सज्दा में गिर पड़ते हैं।(107) और कहते हैं पाकी है हमारे रब को बेशक हमारे रब का वादा पूरा होना था।(108) (फ़ा227) और ठोड़ी के बल गिरते हैं (फ़ा228) रोते हुए और यह क़ुरआन उनके दिल का झुकना बढ़ाता है।(109) (फ़ा229) तुम फ़रमाओ अल्लाह कह कर पुकारो या रहमान कह कर जो कह कर पुकारो सब उसी के अच्छे नाम हैं (फ़ा230) और अपनी नमाज़ न बहुत आवाज़ से पढ़ो न बिल्कुल आहिस्ता और इन दोनों के बीच में रास्ता चाहो।(110) (फ़ा231) और यूं कहो सब ख़ूबियाँ अल्लाह को जिसने अपने लिए बच्चा इख़्तियार न फ़रमाया (फ़ा232) और बादशाही में कोई उसका शरीक नहीं (फ़ा233) और कमज़ोरी से कोई उसका हिमायती नहीं (फ़ा234) और उसकी बड़ाई बोलने को तकबीर कहो।(111) (फ़ा235) (रुकूअ़ 12)

(फ़ा218) यानी ज़मीने मिस्र व शाम में (ख़ाज़िन व क़रतबी) (फ़ा219) यानी क़ियामत (फ़ा220) मौक़िफ़े क़ियामत में फिर सुअ़दा और अश्क़िया को एक दूसरे से मुमताज़ कर देंगे। (फ़ा221) शयातीन के ख़ल्त से महफ़ूज़ रहा और किसी तग़य्युर ने उसमें राह न पाई तबियान में है कि हक़ से मुराद सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की ज़ाते मुबारक है फ़ाइदा आयते शरीफ़ा का यह जुमला हर एक बीमारी के लिए अ़मले मुजर्रब है मौज़ए मर्ज़ पर हाथ रख कर पढ़ कर दम कर दिया जाये तो बेइज़्निल्लाह बीमारी दूर हो जाती है मुहम्मद बिन समाक बीमार हुए तो उनके मुतवस्सेलीन क़ारुरा लेकर एक नसरानी तबीब के पास बग़र्ज़े इलाज गए राह में एक साहब मिले निहायत ख़ुश-रू व ख़ुश लिबास उनके जिस्मे मुबारक से निहायत पाकीज़ा ख़ुश्बू आ रही थी उन्होंने फ़रमाया कहां जाते हो उन लोगों ने कहा इब्ने समाक का क़ारुरा दिखाने के लिए फ़लां तबीब के पास जाते हैं उन्होंने फ़रमाया सुब्हानल्लाह अल्लाह के वली के लिये ख़ुदा के दुश्मन से मदद चाहते हो क़ारुरा फेंको वापस जाओ और उनसे कहो कि मक़ामे दर्द पर हाथ रख कर पढ़ो बिल् हक़्क़ि अन्ज़ल्नाहु व बिल्हक़्क़ि न-ज़-ल यह फ़रमा **(बक़िया सफ़हा 493 पर)**

سُورَةُ الْكَهْفِ مَكِّيَّةٌ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِیْۤ اَنْزَلَ عَلٰی عَبْدِهِ الْكِتٰبَ وَلَمْ یَجْعَلْ لَّهٗ عِوَجًا ۜ○ قَیِّمًا لِّیُنْذِرَ بَاْسًا شَدِیْدًا مِّنْ لَّدُنْهُ وَیُبَشِّرَ الْمُؤْمِنِیْنَ الَّذِیْنَ یَعْمَلُوْنَ الصّٰلِحٰتِ اَنَّ لَهُمْ اَجْرًا حَسَنًا ○ مَّاكِثِیْنَ فِیْهِ اَبَدًا ○ وَّیُنْذِرَ الَّذِیْنَ قَالُوا اتَّخَذَ اللّٰهُ وَلَدًا ○ مَا لَهُمْ بِهٖ مِنْ عِلْمٍ وَّلَا لِاٰبَآىٕهِمْ كَبُرَتْ كَلِمَةً تَخْرُجُ مِنْ اَفْوَاهِهِمْ اِنْ یَّقُوْلُوْنَ اِلَّا كَذِبًا ○ فَلَعَلَّكَ بَاخِعٌ نَّفْسَكَ عَلٰۤی اٰثَارِهِمْ اِنْ لَّمْ یُؤْمِنُوْا بِهٰذَا الْحَدِیْثِ اَسَفًا ○ اِنَّا جَعَلْنَا مَا عَلَی الْاَرْضِ زِیْنَةً لَّهَا

सूरतुल् कह्फ़ि

(मक्की है इस सूरह में 110 आयतें और 12 रुकूअ़ हैं)

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम

अल्हम्दु लिल्लाहिल्लज़ी अन्ज़–ल अ़ला अ़ब्दिहिल् किता–ब व लम् यज्अ़ल् लहू अि–व–जा(1) क़य्यिमल् लियुन्ज़ि–र बअ्सन् शदीदम् मिल्लदुन्हु व युबश्शिरल् मुअ्मिनीनल् लज़ी–न यअ्–मलूनस् सालिहाति अन्–न लहुम् अज्रन् ह–स–नम्(2)माकिसी–न फ़ीहि अ–ब–दंव्(3)व युन्ज़िरल्लज़ी–न क़ालुत्त–ख़–ज़ल्लाहु व–लदा(4)मा लहुम् बिही मिन् अिल्मिंव् व ला लि–आबाइहिम् कबुरत् कलि–म–तन् तख़्रुजु मिन् अफ़्वाहिहिम् इंय्यक़ूलू–न इल्ला कज़िबा(5) फ़–ल–अ़ल्ल–क बाख़िअुन् नफ़्स–क अ़ला आसारिहिम् इल्लम् युअ्मिनू बिहाज़ल् हदीसि अ–सफ़ा(6)इन्ना ज–अ़ल्ना मा अ़–लल्अर्ज़ि ज़ी–नतल् लहा

अल्लाह के नाम से शुरू जो बहुत मेहरबान निहायत रहम वाला। (फ़ा1)

सब ख़ूबियां अल्लाह को जिसने अपने बन्दे (फ़ा2) पर किताब उतारी (फ़ा3) और उस में असलन कजी न रखी।(1) (फ़ा4) अ़द्ल वाली किताब कि (फ़ा5) अल्लाह के सख़्त अ़ज़ाब से डराए और ईमान वालों को जो नेक काम करें बशारत दे कि उनके लिए अच्छा सवाब है।(2) जिसमें हमेशा रहेंगे।(3) (फ़ा6) और उनको डराए जो कहते हैं कि अल्लाह ने अपना कोई बच्चा बनाया।(4) इस बारे में न वह कुछ इल्म रखते हैं न उनके बाप दादा (फ़ा7) कितना बड़ा बोल है कि उनके मुंह से निकलता है निरा झूठ कह रहे हैं।(5) तो कहीं तुम अपनी जान पर खेल जाओगे उनके पीछे अगर वह इस बात पर (फ़ा8) ईमान न लायें ग़म से।(6) (फ़ा9) बेशक हमने ज़मीन का सिंगार किया जो कुछ उस पर है (फ़ा10)

(फ़ा1) इस सूरत का नाम सूरह कहफ है यह सूरत मक्की है इस में 111 आयतें और 1577 कलिमे और 6260 हरफ़ हैं। (फ़ा2) मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम (फ़ा3) यानी क़ुरआन पाक जो उसकी बेहतरीन निअ़मत और बन्दों के लिए नजात व फ़लाह का सबब है(फ़ा4) न लफ़्ज़ी न मानवी न इसमें इख़्तिलाफ़ न तनाक़ुज़(फ़ा5) कुफ़्फ़ार को।(फ़ा6) कुफ़्फ़ार (फ़ा7) ख़ालिस जहालत से यह बुहतान उठाते और ऐसी बातिल बात बकते हैं (फ़ा8) यानी क़ुरआन शरीफ़ पर (फ़ा9) इस में नबीए करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की तसल्लीए क़ल्ब फरमाई गई कि आप उन बे ईमानों के ईमान से महरूम रहने पर इस क़दर रंज व ग़म न कीजिये और अपनी जाने पाक को इस ग़म से हलाकत में न डालिये। (फ़ा10) वह ख़्वाह हैवान हो या नबात या मुआ़विन या अन्हार

(बक़िया सफ़हा 475 का) बड़े और उनके सरदार हैं (फ़ा29) क्योंकि वह ग़ार में तुलूअ़े आफ़ताब के वक़्त दाख़िल हुए थे और जब उठे तो आफ़ताब क़रीबे गुरूब था इससे उन्होंने गुमान किया कि यह वही दिन है। मसला इससे साबित हुआ कि इज्तेहाद जाइज़ और ज़न्ने ग़ालिब की बिना पर क़ौल करना दुरुस्त है (फ़ा30) उन्हें या तो इलहाम से मालूम हुआ कि मुद्दत दराज़ गुज़र चुकी या उन्हें कुछ ऐसे दलाइल व क़राइन मिले जैसे कि बालों और नाख़ुनों का बढ़ जाना जिससे उन्होंने यह ख़्याल किया कि अर्सा बहुत गुज़र चुका। (फ़ा31)यानी दक़ियानूसी सिक्का के रुपये जो घर से लेकर आये थे और सोते वक़्त अपने सिरहाने रख लिए थे मसला इस से मालूम हुआ कि मुसाफ़िर को ख़र्च साथ में रखना तरीक़ए तवक्कुल के ख़िलाफ़ नहीं है चाहिए कि भरोसा अल्लाह पर रखे। (फ़ा32) और इसमें कोई शुबहए हुरमत नहीं (फ़ा33) और बुरी तरह क़त्ल करेंगे

لِنَبْلُوَهُمْ اَيُّهُمْ اَحْسَنُ عَمَلًا ۝ وَاِنَّا لَجٰعِلُوْنَ مَا عَلَيْهَا صَعِيْدًا جُرُزًا ۝ اَمْ حَسِبْتَ اَنَّ اَصْحٰبَ الْكَهْفِ وَالرَّقِيْمِ كَانُوْا مِنْ اٰيٰتِنَا عَجَبًا ۝ اِذْ اَوَى الْفِتْيَةُ
اِلَى الْكَهْفِ فَقَالُوْا رَبَّنَآ اٰتِنَا مِنْ لَّدُنْكَ رَحْمَةً وَّهَيِّئْ لَنَا مِنْ اَمْرِنَا رَشَدًا ۝ فَضَرَبْنَا عَلٰٓى اٰذَانِهِمْ فِى الْكَهْفِ سِنِيْنَ عَدَدًا ۝ ثُمَّ
بَعَثْنٰهُمْ لِنَعْلَمَ اَيُّ الْحِزْبَيْنِ اَحْصٰى لِمَا لَبِثُوْٓا اَمَدًا ۝ نَحْنُ نَقُصُّ عَلَيْكَ نَبَاَهُمْ بِالْحَقِّ اِنَّهُمْ فِتْيَةٌ اٰمَنُوْا بِرَبِّهِمْ وَزِدْنٰهُمْ هُدًى ۝ وَّرَبَطْنَا
عَلٰى قُلُوْبِهِمْ اِذْ قَامُوْا فَقَالُوْا رَبُّنَا رَبُّ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ لَنْ نَّدْعُوَا۟ مِنْ دُوْنِهٖٓ اِلٰهًا لَّقَدْ قُلْنَآ اِذًا شَطَطًا ۝ هٰٓؤُلَآءِ قَوْمُنَا اتَّخَذُوْا مِنْ دُوْنِهٖٓ
اٰلِهَةً لَوْلَا يَاْتُوْنَ عَلَيْهِمْ بِسُلْطٰنٍ بَيِّنٍ فَمَنْ اَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرٰى عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا ۝ وَاِذِ اعْتَزَلْتُمُوْهُمْ وَمَا يَعْبُدُوْنَ اِلَّا اللّٰهَ فَاْوٗٓا اِلَى الْكَهْفِ

लि–नब्लु–वहुम् अय्युहुम् अह़्सनु अ़–मला(7)व इन्ना लजाअ़िलू–न मा अ़लैहा स़ईदन् जुरुज़ा(8)अम् ह़सिब्–त अन्–न अस्ह़ाबल्कह्फ़ि वर्रक़ीमि कानू मिन् आयातिना अ़–जबा(9)इज़् अवल्फ़ित्यतु इलल्–कहफ़ि फ़–क़ालू रब्बना आतिना मिल्लदुन–क रह़मतवं व हय्यि लना मिन अमरिना रशदन(10)फ़–ज़रब्ना अ़ला आज़ानिहिम् फ़िल्–कह्फ़ि सिनी–न अ़–द–दा(11)सुम्–म ब–अ़स्नाहुम् लिनअ़्– ल–म अय्युल्हिज़्बैनि अह़्स़ा लिमा लबिसू अ–मदा(12)नह़्नु नक़ुस्सु अ़लै–क न–ब–अहुम् बिल्ह़क़्क़ि इन्नहुम् फ़ित्यतुन् आ–मनू बि–रब्बिहिम् व ज़िद्नाहुम् हुदंव्(13)व र–बत़्ना अ़ला क़ुलूबिहिम् इज़् क़ामू फ़क़ालू रब्बुना रब्बुस्समावाति वल्अर्ज़ि लन्नदअु–व मिन् दूनिही इलाहल् लक़द् क़ुल्ना इज़न् श–त़त़ा(14)हाउलाइ क़ौमुनत्त–ख़ज़ू मिन् दूनिही आलि–ह–तन् लौला यअ्तू–न अ़लैहिम् बिसुल्तानिम् बय्यिनिन् फ़मन् अज़्– लमु मिम्मनिफ़्तरा अ़लल्लाहि कज़िबा(15)व इज़िअ़्–त–ज़ल्तुमूहुम् व मा यअ़्बुदू–न इल्लल्ला–ह फ़अ्वू इलल्कह्फ़ि

कि उन्हें आज़मायें उनमें किस के काम बेहतर हैं।(7) (फ़11) और बेशक जो कुछ उस पर है एक दिन हम उसे पट पर मैदान (सफ़ेद ज़मीन) कर छोड़ेंगे।(8) (फ़12) क्या तुम्हें मालूम हुआ कि पहाड़ की खोह और जंगल के किनारे वाले (फ़13) हमारी एक अ़जीब निशानी थे।(9) जब उन जवानों ने (फ़14) ग़ार में पनाह ली फिर बोले ऐ हमारे रब हमें अपने पास से रहमत दे (फ़15) और हमारे काम में हमारे लिए राहयाबी के सामान कर।(10) तो हमने उस ग़ार में उनके कानों पर गिनती के कई बरस थपका।(11) (फ़16) फिर हमने उन्हें जगाया कि देखें (फ़17) दो गरोहों में कौन उनके ठहरने की मुद्दत ज़्यादा ठीक बताता है।(12) (रुकूअ़ 13) हम उनका ठीक ठीक हाल तुम्हें सुनायें वह कुछ जवान थे कि अपने रब पर ईमान लाए और हमने उनको हिदायत बढ़ाई।(13) और हमने उनके दिलों की ढारस बंधाई जब (फ़18) खड़े होकर बोले कि हमारा रब वह है जो आसमान और ज़मीन का रब है हम उसके सिवा किसी मअ़्बूद को न पूजेंगे ऐसा हो तो हमने ज़रूर हद से गुज़री हुई बात कही।(14) यह जो हमारी क़ौम है उसने अल्लाह के सिवा खुदा बना रखे हैं क्यों नहीं लाते उन पर कोई रौशन सनद तो उससे बढ़ कर ज़ालिम कौन जो अल्लाह पर झूठ बांधे।(15) (फ़19) और जब तुम उनसे और जो कुछ वह अल्लाह के सिवा पूजते हैं सब से अलग हो जाओ

(फ़11) और कौन ज़ुह्द इख़्तियार करता और मुहर्रमात व ममनूआ़त से बचता है (फ़12) और आबाद होने के बाद वीरान कर देंगे और नबात व अश्जार वग़ैरह जो चीज़ें ज़ीनत की थीं उन में से कुछ बाक़ी न रहेगा तो दुनिया की नापाइदार ज़ीनत पर शैफ़्ता न हो (फ़13) हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा ने फ़रमाया कि रक़ीम उस वादी का नाम है जिस में असहाबे कहफ़ हैं आयत में उन असहाब की निस्बत फ़रमाया कि वह (फ़14) अपनी काफ़िर क़ौम से अपना ईमान बचाने के लिए (फ़15) और हिदायत व नुसरत और रिज़्क़ व मग़फ़िरत और दुश्मनों से अम्न अ़ता फ़रमा असहाबे कहफ़ क़वी तरीन अक़्वाल यह है कि सात हज़रात थे अगरचे उनके नामों में किसी क़दर इख़्तिलाफ़ है लेकिन हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा की रिवायत पर जो ख़ाज़िन में है उनके नाम यह हैं- मकसलमीना, यमलीख़ा, मरतूनस, बैनूनस, सारीनूनस, .ज़ूनवानस, कशफ़ीत, तनूनस और उनके कुत्ते का नाम क़ित्मीर है ख़्वास यह असमा लिख कर दरवाज़े पर लगा दिये जायें तो मकान जलने से महफ़ूज़ रहता है सरमाया पर रख दिये जायें तो चोरी नहीं जाता कश्ती या जहाज़ इनकी बरकत से ग़र्क़ नहीं होता भागा हुआ शख़्स इनकी बरकत से वापस आ जाता है कहीं आग लगी हो और यह असमा कपड़े में लिख कर डाल दिये जायें तो वह बुझ जाती है बच्चे के रोने बारी के बुख़ार, दर्दे सर, उम्मुस्सिबयान, ख़ुश्की व तरी के सफ़र में जान व माल **(बक़िया सफ़हा 494 पर)**

يَنْشُرْ لَكُمْ رَبُّكُمْ مِّنْ رَّحْمَتِهٖ وَيُهَيِّئْ لَكُمْ مِّنْ اَمْرِكُمْ مِّرْفَقًا ۝١٦ وَتَرَى الشَّمْسَ اِذَا طَلَعَتْ تَّزٰوَرُ عَنْ كَهْفِهِمْ ذَاتَ الْيَمِيْنِ وَاِذَا غَرَبَتْ تَّقْرِضُهُمْ
ذَاتَ الشِّمَالِ وَهُمْ فِيْ فَجْوَةٍ مِّنْهُ ؕ ذٰلِكَ مِنْ اٰيٰتِ اللّٰهِ ؕ مَنْ يَّهْدِ اللّٰهُ فَهُوَ الْمُهْتَدِ ۚ وَمَنْ يُّضْلِلْ فَلَنْ تَجِدَ لَهٗ وَلِيًّا مُّرْشِدًا ۝١٧ وَتَحْسَبُهُمْ اَيْقَاظًا
وَّهُمْ رُقُوْدٌ ۖۗ وَّنُقَلِّبُهُمْ ذَاتَ الْيَمِيْنِ وَذَاتَ الشِّمَالِ ۖۗ وَكَلْبُهُمْ بَاسِطٌ ذِرَاعَيْهِ بِالْوَصِيْدِ ؕ لَوِ اطَّلَعْتَ عَلَيْهِمْ لَوَلَّيْتَ مِنْهُمْ فِرَارًا وَّلَمُلِئْتَ مِنْهُمْ رُعْبًا ۝١٨
وَكَذٰلِكَ بَعَثْنٰهُمْ لِيَتَسَآءَلُوْا بَيْنَهُمْ ؕ قَالَ قَآئِلٌ مِّنْهُمْ كَمْ لَبِثْتُمْ ؕ قَالُوْا لَبِثْنَا يَوْمًا اَوْ بَعْضَ يَوْمٍ ؕ قَالُوْا رَبُّكُمْ اَعْلَمُ بِمَا لَبِثْتُمْ ؕ فَابْعَثُوْا اَحَدَكُمْ
بِوَرِقِكُمْ هٰذِهٖۤ اِلَى الْمَدِيْنَةِ فَلْيَنْظُرْ اَيُّهَاۤ اَزْكٰى طَعَامًا فَلْيَاْتِكُمْ بِرِزْقٍ مِّنْهُ وَلْيَتَلَطَّفْ وَلَا يُشْعِرَنَّ بِكُمْ اَحَدًا ۝١٩ اِنَّهُمْ اِنْ يَّظْهَرُوْا عَلَيْكُمْ

यन्शुर् लकुम् रब्बुकुम् मिर्–रह्मतिही व यु–हय्यिअ् लकुम् मिन् अम्रिकुम् मिर्फ़क़ा(16)व–त–रश् शम्–स इज़ा त़–ल–अत् तज़ावरु अ़न् कह्फ़िहिम् ज़ातल् यमीनि व इज़ा ग़–र–बत् तक़्रिज़ुहुम् ज़ातश् शिमालि व हुम् फ़ी फ़ज्वतिम् मिन्हु ज़ालि–क मिन् आयातिल्लाहि मंय्यह्दिल्लाहु फ़हुवल्मुह्तदि व मंय्युज़्लिल् फ़लन् तजि–द लहू वलिय्यम् मुर्शिदा(17)व तह्सबुहुम् ऐक़ाज़ंव् व हुम् रुक़ूदुंव् व नुक़ल्लिबुहुम् ज़ातल्यमीनि व ज़ातश् शिमालि व कल्बुहुम् बासितुन् ज़िराऐहि बिल्वसीदि लवित्तलअ्–त अ़लैहिम् लवल्लै–त मिन्हुम् फ़िरारंव् व लमुलिअ्–त मिन्हुम् रुअ्–बा(18)व कज़ालि–क ब–अ़स्नाहुम् लि–य–तसा–अलू बै–नहुम् क़ा–ल क़ाइलुम् मिन्हुम् कम् लबिस्तुम् क़ालू लबिस्ना यौमन् औ बअ्–ज़ यौमिन् क़ालू रब्बुकुम् अअ्लमु बिमा लबिस्तुम् फ़ब्–अ़सू अ–ह़–दकुम् बि–वरिक़िकुम् हाज़िही इलल्मदी–नति फ़ल्यन्ज़ुर् अय्युहा अज़्का तआमन् फ़ल्–यअ् तिकुम् बिरिज़्क़िम् मिन्हु वल्–य–त–लत्तफ़् व ला युश्अ़िरन्–न बिकुम् अ–ह़दा(19)इन्नहुम् इंय्यज़्–हरू अ़लैकुम्

तो ग़ार में पनाह लो तुम्हारा रब तुम्हारे लिए अपनी रहमत फैला देगा और तुम्हारे काम में आसानी के सामान बना देगा।(16) और ऐ महबूब तुम सूरज को देखोगे कि जब निकलता है तो उनके ग़ार से दहनी तरफ़ बच जाता है और जब डूबता है तो उन्हें बायें तरफ़ कतरा जाता है (फ़ा20) हालांकि वह उस ग़ार के खुले मैदान में हैं (फ़ा21) यह अल्लाह की निशानियों से है जिसे अल्लाह राह दे तो वही राह पर और जिसे गुमराह करे तो हरगिज़ उसका कोई हिमायती राह दिखाने वाला न पाओगे।(17) (रुकूअ़ 14) और तुम उन्हें जागता समझो (फ़ा22) और वह सोते हैं और हम उनकी दाहिनी बाईं करवटें बदलते हैं (फ़ा23) और उनका कुत्ता अपनी कलाईयाँ फैलाए हुए है ग़ार की चौखट पर (फ़ा24) ऐ सुनने वाले अगर तू उन्हें झांक कर देखे तो उनसे पीठ फेर कर भागे और उनसे हैबत में भर जाए।(18) (फ़ा25) और यूं ही हमने उनको जगाया (फ़ा26) कि आपस में एक दूसरे से अहवाल पूछें (फ़ा27) उनमें एक कहने वाला बोला (फ़ा28) तुम यहां कितनी देर रहे कुछ बोले कि एक दिन रहे या दिन से कम (फ़ा29) दूसरे बोले तुम्हारा रब ख़ूब जानता है जितना तुम ठहरे (फ़ा30) तो अपने में एक को यह चाँदी लेकर (फ़ा31) शहर में भेजो फिर वह ग़ौर करे कि वहां कौन सा खाना ज़्यादा सुथरा है (फ़ा32) कि तुम्हारे लिए उसमें से खाने को लाए और चाहिये कि नरमी करे और हरगिज़ किसी को तुम्हारी इत्तेलाअ़ न दे।(19) बेशक अगर वह तुम्हें जान लेंगे तो तुम्हें पथराव करेंगे (फ़ा33)

(फ़ा20) यानी उन पर तमाम दिन साया रहता है और तुलूअ़ से .ग़ुरूब तक किसी वक़्त भी धूप की गर्मी उन्हें नहीं पहुंचती (फ़ा22) और ताज़ा हवायें उनको पहुंचती हैं। (फ़ा22) क्योंकि उनकी आंखें खुली हैं (फ़ा23) साल में एक मर्तबा दसवीं मुहर्रम को (फ़ा24) जब वह करवट लेते हैं वह भी करवट बदलता है फ़ाइदा तफ़सीर सअ़लबी में है कि जो कोई इन कलिमात *व कल्बुहुम् बासितुन् ज़राअ़ैहि बिल्–वसीद* को लिख कर अपने साथ रखे कुत्ते के ज़रर से अमन में रहे। (फ़ा25) अल्लाह तआ़ला ने ऐसी हैबत से उनकी हिफ़ाज़त फ़रमाई है कि उन तक कोई जा नहीं सकता हज़रत मुआ़विया जंगे रोम के वक़्त कहफ़ की तरफ़ गुज़रे तो उन्होंने असहाबे कहफ़ पर दाख़िल होना चाहा हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा ने उन्हें मना किया और यह आयत पढ़ी फिर एक जमाअ़त हज़रत अमीर मुआ़विया के हुक्म से दाख़िल हुई तो अल्लाह तआ़ला ने एक ऐसी हवा चलाई कि सब जल गए। (फ़ा26) एक मुद्दते दराज़ के बाद (फ़ा27) और अल्लाह तआ़ला की क़ुदरते अ़ज़ीमा देख कर उनका यक़ीन ज़्यादा हो और वह उसकी निअ़्मतों का शुक्र अदा करें (फ़ा28) यानी *मुक्सलमीना* जो उनमें सब से (बक़िया सफ़हा 477 पर)

يَرْجُمُوكُمْ أَوْ يُعِيدُوكُمْ فِي مِلَّتِهِمْ وَلَنْ تُفْلِحُوٓا إِذًا أَبَدًا ۝ وَكَذَٰلِكَ أَعْثَرْنَا عَلَيْهِمْ لِيَعْلَمُوٓا أَنَّ وَعْدَ ٱللَّهِ حَقٌّ وَأَنَّ ٱلسَّاعَةَ لَا رَيْبَ فِيهَآ إِذْ يَتَنَٰزَعُونَ

بَيْنَهُمْ أَمْرَهُمْ فَقَالُوا ٱبْنُوا عَلَيْهِم بُنْيَٰنًا رَّبُّهُمْ أَعْلَمُ بِهِمْ قَالَ ٱلَّذِينَ غَلَبُوا عَلَىٰٓ أَمْرِهِمْ لَنَتَّخِذَنَّ عَلَيْهِم مَّسْجِدًا ۝ سَيَقُولُونَ ثَلَٰثَةٌ رَّابِعُهُمْ

كَلْبُهُمْ وَيَقُولُونَ خَمْسَةٌ سَادِسُهُمْ كَلْبُهُمْ رَجْمًا بِٱلْغَيْبِ وَيَقُولُونَ سَبْعَةٌ وَثَامِنُهُمْ كَلْبُهُمْ قُل رَّبِّيٓ أَعْلَمُ بِعِدَّتِهِم مَّا يَعْلَمُهُمْ إِلَّا قَلِيلٌ

فَلَا تُمَارِ فِيهِمْ إِلَّا مِرَآءً ظَٰهِرًا وَلَا تَسْتَفْتِ فِيهِم مِّنْهُمْ أَحَدًا ۝ وَلَا تَقُولَنَّ لِشَا۟ىْءٍ إِنِّى فَاعِلٌ ذَٰلِكَ غَدًا ۝ إِلَّآ أَن يَشَآءَ ٱللَّهُ وَٱذْكُر رَّبَّكَ

إِذَا نَسِيتَ وَقُلْ عَسَىٰٓ أَن يَهْدِيَنِ رَبِّى لِأَقْرَبَ مِنْ هَٰذَا رَشَدًا ۝ وَلَبِثُوا فِى كَهْفِهِمْ ثَلَٰثَ مِا۟ئَةٍ سِنِينَ وَٱزْدَادُوا تِسْعًا ۝ قُلِ ٱللَّهُ أَعْلَمُ بِمَا

यर्जुमूकुम् औ युअीदूकुम् फ़ी मिल्लतिहिम् व लन् तुफ़्लिहू इज़न् अ–बदा(20)व कज़ालि–क अअ़्सरना अ़लैहिम् लियअ्–लमू अन्–न वअ़्दल्लाहि ह़क़्क़ुंव् व अन्नस् सा–अ–त ला–रै–ब फ़ीहा इज़् य–तना–ज़अू–न बै–नहुम् अम्र हुम् फ़क़ालुब्नू अ़लैहिम् बुन्–यानन् रब्बुहुम् अअ़्लमु बिहिम् क़ालल्लज़ी–न ग़–लबू अ़ला अम्रिहिम् ल–नत्तख़ि–जन्–न अ़लैहिम् मस्जिदा(21)स–यक़ूलू –न सला–सतुर् राबिअुहुम् कल्बुहुम् व यक़ूलू–न ख़म्–सतुन् सादिसुहुम् कल्बुहुम् रज्मम् बिल्ग़ैबि व यक़ूलू–न सब्–अतुंव् व सामिनुहुम् कल्बुहुम् क़ुर्रब्बी अअ़्लमु बिअ़िद्–दतिहिम् मा यअ्–लमुहुम् इल्ला क़लीलुन् फ़ला तुमारि फ़ीहिम् इल्ला मिराअन् ज़ाहिरंव् व ला तस्तफ़्ति फ़ीहिम् मिन्हुम् अ–ह़दा(22)व ला तक़ूलन्–न लिशैइन् इन्नी फ़ाअ़िलुन् जालि–क ग़दा(23)इल्ला अंय्यशाअल्लाहु वज़्कुर् रब्ब–क इज़ा नसी–त व क़ुल् असा अंय्यह्दि–यनि रब्बी लि–अक़्र–ब मिन् हाज़ा र–शदा(24)व लबिसू फ़ी कह्फ़िहिम् सला–स मि–अतिन् सिनी–न वज़्दादू तिस्आ़(25)क़ुलिल्लाहु अअ़्लमु बिमा

या अपने दीन में (फ़34) फेर लेंगे और ऐसा हुआ तो तुम्हारा कभी भला न होगा।(20) और इसी तरह हमने उनकी इत्तिलाअ़ कर दी (फ़35) कि लोग जान लें (फ़36) कि अल्लाह का वादा सच्चा है और क़ियामत में कुछ शुबहा नहीं जब वह लोग उनके मुआमला में बाहम झगड़ने लगे (फ़37) तो बोले उनके ग़ार पर कोई इमारत बनाओ उनका रब उन्हें ख़ूब जानता है वह बोले जो उस काम में ग़ालिब रहे थे (फ़38) क़सम है कि हम तो उन पर मस्जिद बनायेंगे।(21) (फ़39) अब कहेंगे (फ़40) कि वह तीन हैं चौथा उनका कुत्ता और कुछ कहेंगे पांच हैं छटा उनका कुत्ता बे देखे अलाओ तुक्का बात (फ़41) और कुछ कहेंगे सात हैं (फ़42) और आठवाँ उनका कुत्ता तुम फ़रमाओ मेरा रब उनकी गिनती ख़ूब जानता है (फ़43) उन्हें नहीं जानते मगर थोड़े (फ़44) तो उनके बारे में (फ़45) बहस न करो मगर इतनी ही बहस जो ज़ाहिर हो चुकी (फ़46) और उनके (फ़47) बारे में किसी किताबी से कुछ न पूछो।(22) (रुकूअ़ 15) और हरगिज़ किसी बात को न कहना कि मैं कल यह कर दूंगा।(23) मगर यह कि अल्लाह चाहे (फ़48) और अपने रब की याद कर जब तू भूल जाए (फ़49) और यूं कह कि क़रीब है कि मेरा रब मुझे इस (फ़50) से नज़दीक तर रास्ती की राह दिखाए।(24) (फ़51) और वह अपने ग़ार में तीन सौ बरस ठहरे नौ ऊपर।(25) (फ़52) तुम फ़रमाओ अल्लाह ख़ूब जानता है वह जितना

(फ़ा34) यानी जब्रो सितम से कुफ़्री मिल्लत (फ़ा35) लोगों को दक़ियानूस के मरने और मुद्दत गुज़र जाने के बाद (फ़ा36) और बेदरोस की क़ौम में जो लोग मरने के बाद ज़िन्दा होने का इन्कार करते हैं उन्हें मालूम हो जाये। (फ़ा37) यानी उनकी वफ़ात के बाद उनके गिर्द इमारत बनाने में (फ़ा38) यानी बेदरोस बादशाह और उसके साथी (फ़ा39) जिस में मुसलमान नमाज़ पढ़ें और उनके क़ुर्ब से बरकत हासिल करें (मदारिक) मसला इससे मालूम हुआ कि बुज़ुर्गों के मज़ारात के क़रीब मस्जिदें बनाना अहले ईमान का क़दीम तरीक़ा है और क़ुरआने करीम में इसका ज़िक्र फ़रमाना और इसको मना न करना इस फ़ेअ़्ल के दुरुस्त होने की क़वी तरीन दलील है मसला इससे यह भी मालूम हुआ कि बुज़ुर्गों के जवार में बरकत हासिल होती है इसी लिए अहलुल्लाह के मज़ारात पर लोग हुसूले बरकत के लिए जाया करते हैं और इसी लिए क़ब्रों की ज़ियारत सुन्नत और मोजिबे सवाब है। (फ़ा40) नसरानी जैसा कि उन में से सय्यद और आ़क़िब ने कहा (फ़ा41) जो बे जाने कह दी किसी तरह सही नहीं हो सकती (फ़ा42) और यह कहने वाले मुसलमान हैं अल्लाह तआ़ला ने उनके क़ौल को साबित रखा क्योंकि उन्होंने जो कुछ कहा वह नबी अ़लैहिस्सलातु वस्सलाम से इल्म हासिल करके कहा (फ़ा403) क्योंकि जहानों की तफ़ासील और कायनाते माज़िया व मुस्तक़बिला का इल्म अल्लाह ही को है या जिसको वह अ़ता फ़रमाये। (फ़ा44) हज़रत इब्ने **(बक़िया सफ़हा 495 पर)**

لَبِثُوْا ؕ لَهٗ غَيْبُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ اَبْصِرْ بِهٖ وَاَسْمِعْ ؕ مَا لَهُمْ مِّنْ دُوْنِهٖ مِنْ وَّلِيٍّ ؗ وَّلَا يُشْرِكُ فِيْ حُكْمِهٖۤ اَحَدًا ﴿۲۶﴾ وَاتْلُ مَاۤ اُوْحِيَ اِلَيْكَ مِنْ
كِتَابِ رَبِّكَ ؕ لَا مُبَدِّلَ لِكَلِمٰتِهٖ ۚ وَلَنْ تَجِدَ مِنْ دُوْنِهٖ مُلْتَحَدًا ﴿۲۷﴾ وَاصْبِرْ نَفْسَكَ مَعَ الَّذِيْنَ يَدْعُوْنَ رَبَّهُمْ بِالْغَدٰوةِ وَالْعَشِيِّ يُرِيْدُوْنَ
وَجْهَهٗ وَلَا تَعْدُ عَيْنٰكَ عَنْهُمْ ۚ تُرِيْدُ زِيْنَةَ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۚ وَلَا تُطِعْ مَنْ اَغْفَلْنَا قَلْبَهٗ عَنْ ذِكْرِنَا وَاتَّبَعَ هَوٰىهُ وَكَانَ اَمْرُهٗ فُرُطًا ﴿۲۸﴾ وَقُلِ الْحَقُّ مِنْ
رَّبِّكُمْ ۫ فَمَنْ شَآءَ فَلْيُؤْمِنْ وَّمَنْ شَآءَ فَلْيَكْفُرْ ۙ اِنَّاۤ اَعْتَدْنَا لِلظّٰلِمِيْنَ نَارًا ۙ اَحَاطَ بِهِمْ سُرَادِقُهَا ؕ وَاِنْ يَّسْتَغِيْثُوْا يُغَاثُوْا بِمَآءٍ كَالْمُهْلِ يَشْوِي الْوُجُوْهَ ؕ
بِئْسَ الشَّرَابُ ؕ وَسَآءَتْ مُرْتَفَقًا ﴿۲۹﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ اِنَّا لَا نُضِيْعُ اَجْرَ مَنْ اَحْسَنَ عَمَلًا ﴿ۚ۳۰﴾ اُولٰٓئِكَ لَهُمْ جَنّٰتُ عَدْنٍ تَجْرِيْ مِنْ

लबिसू लहू ग़ैबुस् समावाति वल्अर्ज़ि अब्सिर् बिही व अस्मिअ् मा लहुम् मिन् दूनिही मिंव्वलिय्यिंव् व ला युश्रिकु फ़ी हुक्मिही अ–हदा(26)वत्लु मा ऊहि–य इलै–क मिन् किताबि रब्बि–क ला मुबद्दि–ल लि–कलिमातिही व लन् तजि–द मिन् दूनिही मुल्त–हदा(27)वस्बिर् नफ़्–स–क म–अल्लज़ी–न यद्अू–न रब्बहुम् बिल्ग़दाति वल्अशिय्यि युरीदू–न वज्हहू व ला तअ्दु अ़ैना–क अ़न्हुम् तुरीदु ज़ी–नतल् हयातिद्–दुन्या व ला तुतिअ् मन् अग़्फ़ल्ना क़ल्बहू अन् ज़िक्रिना वत्त–ब–अ हवाहु व का–न अम्रुहु फ़ुरुता(28)व कुलिल्हक़्क़ु मिर्–रब्बिकुम् फ़मन् शा–अ फ़ल् युअ्मिंव् व मन् शा–अ फ़ल्यक्फ़ुर् इन्ना अअ्तद्ना लिज़्ज़ालिमी–न नारन् अहा–त बिहिम् सुरादिक़ुहा व इंय्यस्तग़ीसू युग़ासू बिमाइन् कल्मुह्लि यश्विल् वुजू–ह बिअ्–सश्शराबु व साअत् मुर्–त–फ़क़ा (29)इन्नल्लज़ी–न आ–मनू व अ़मिलुस्सालिहाति इन्ना ला नुज़ीअु अज्–र मन् अह्स–न अ़–मला (30)उलाइ–क लहुम् जन्नातु अ़दनिन् तज्री मिन्

ठहरे (फ़53) उसी के लिए हैं आसमानों और ज़मीनों के सब ग़ैब वह क्या ही देखता और क्या ही सुनता है (फ़54) उसके सिवा उनका (फ़55) कोई वाली नहीं और वह अपने हुक्म में किसी को शरीक नहीं करता।(26) और तिलावत करो जो तुम्हारे रब की किताब (फ़56) तुम्हें 'वही' हुई उसकी बातों का कोई बदलने वाला नहीं (फ़57) और हरगिज़ तुम उसके सिवा पनाह न पाओगे।(27) और अपनी जान उनसे मानूस रखो जो सुबह व शाम अपने रब को पुकारते हैं उसकी रज़ा चाहते (फ़58) और तुम्हारी आँखें उन्हें छोड़ कर और पर न पड़ें क्या तुम दुनिया की ज़िन्दगी का सिंगार चाहोगे और उसका कहा न मानो जिसका दिल हमने अपनी याद से ग़ाफ़िल कर दिया और वह अपनी ख़्वाहिश के पीछे चला और उसका काम हद से गुज़र गया।(28) और फ़रमा दो कि हक़ तुम्हारे रब की तरफ़ से है (फ़59) तो जो चाहे ईमान लाए और जो चाहे कुफ़्र करे (फ़60) बेशक हमने ज़ालिमों (फ़61) के लिए वह आग तैयार कर रखी है जिसकी दीवारें उन्हें घेर लेंगी और अगर (फ़62) पानी के लिए फ़रियाद करें तो उनकी फ़रियाद रसी होगी उस पीने से कि चरख़ दिये हुए धात की तरह है कि उनके मुँह भून देगा क्या ही बुरा पीना है (फ़63)और दोज़ख़ क्या ही बुरी ठहरने की जगह।(29)बेशक जो ईमान लाए और नेक काम किये हम उनके नेग ज़ाया नहीं करते जिनके काम अच्छे हों।(30)(फ़64) उनके लिए बसने के बाग़ हैं उनके नीचे

(फ़53) उसी का फ़रमाना हक़ है शाने नुज़ूल नजरान के नसरानियों ने कहा था तीन सौ बरस तो ठीक हैं और नौ की ज़्यादती कैसी है इसका हमें इल्म नहीं इस पर यह आयते करीमा नाज़िल हुई (फ़54) कोई ज़ाहिर और कोई बातिन उससे छुपा नहीं (फ़55) आसमान और ज़मीन वालों का। (फ़56) यानी क़ुरआन शरीफ़ (फ़57) और किसी को उसके तब्दील व तग़य्युर की क़ुदरत नहीं। (फ़58) यानी इख़्लास के साथ हर वक़्त अल्लाह की ताअत में मश्ग़ूल रहते हैं शाने नुज़ूल सरदाराने कुफ़्फ़ार की एक जमाअ़त ने सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से अर्ज़ किया कि हमें ग़ुरबा और शिकस्ता हालों के साथ बैठते शर्म आती है अगर आप उन्हें अपनी सोहबत से जुदा कर दें तो हम इस्लाम ले आयें और हमारे इस्लाम ले आने से ख़ल्क़े कसीर इस्लाम ले आएगी इस पर यह आयते करीमा नाज़िल हुई। (फ़59) यानी उसकी तौफ़ीक़ से और हक़ व बातिल ज़ाहिर हो चुका मैं तो मुसलमानों को उनकी ग़ुरबत के बाइस तुम्हारी दिलजाकई के लिए अपनी मजलिस मुबारक से जुदा नहीं करूंगा। (फ़60) अपने अंजाम व मआल को सोच ले और समझ ले कि (फ़61) यानी काफ़िरों (फ़62) प्यास की शिद्दत से (फ़63) अल्लाह की पनाह हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा ने फ़रमाया वह ग़लीज़ पानी है रौग़ने ज़ैतून **(बक़िया सफ़हा 495 पर)**

تَحْتِهِمُ الْاَنْهٰرُ يُحَلَّوْنَ فِيْهَا مِنْ اَسَاوِرَ مِنْ ذَهَبٍ وَّيَلْبَسُوْنَ ثِيَابًا خُضْرًا مِّنْ سُنْدُسٍ وَّاِسْتَبْرَقٍ مُّتَّكِـِٕيْنَ فِيْهَا عَلَى الْاَرَآئِكِ نِعْمَ الثَّوَابُ وَحَسُنَتْ

مُرْتَفَقًا ۝ وَاضْرِبْ لَهُمْ مَّثَلًا رَّجُلَيْنِ جَعَلْنَا لِاَحَدِهِمَا جَنَّتَيْنِ مِنْ اَعْنَابٍ وَّحَفَفْنٰهُمَا بِنَخْلٍ وَّجَعَلْنَا بَيْنَهُمَا زَرْعًا ۝ كِلْتَا الْجَنَّتَيْنِ اٰتَتْ

اُكُلَهَا وَلَمْ تَظْلِمْ مِّنْهُ شَيْـًٔا وَّفَجَّرْنَا خِلٰلَهُمَا نَهَرًا ۝ وَّكَانَ لَهٗ ثَمَرٌ فَقَالَ لِصَاحِبِهٖ وَهُوَ يُحَاوِرُهٗۤ اَنَا اَكْثَرُ مِنْكَ مَالًا وَّاَعَزُّ نَفَرًا ۝ وَدَخَلَ جَنَّتَهٗ

وَهُوَ ظَالِمٌ لِّنَفْسِهٖ قَالَ مَاۤ اَظُنُّ اَنْ تَبِيْدَ هٰذِهٖۤ اَبَدًا ۝ وَّمَاۤ اَظُنُّ السَّاعَةَ قَآئِمَةً وَّلَئِنْ رُّدِدْتُّ اِلٰى رَبِّيْ لَاَجِدَنَّ خَيْرًا مِّنْهَا مُنْقَلَبًا ۝ قَالَ

لَهٗ صَاحِبُهٗ وَهُوَ يُحَاوِرُهٗۤ اَكَفَرْتَ بِالَّذِيْ خَلَقَكَ مِنْ تُرَابٍ ثُمَّ مِنْ نُّطْفَةٍ ثُمَّ سَوّٰىكَ رَجُلًا ۝ لٰكِنَّا۠ هُوَ اللّٰهُ رَبِّيْ وَلَاۤ اُشْرِكُ بِرَبِّيْۤ

तह्तिहिमुल् अन्हारु युहल्लौ–न फ़ीहा मिन् असावि–र मिन् ज़–हबिंव् व यल्बसू–न सियाबन् खुज़्रम् मिन् सुन्दुसिंव् व इस्तब्–रक़िम् मुत्तकिई–न फ़ीहा अ़लल्–अराइकि निअ्–मस्सवाबु व ह़सुनत् मुर्–त–फ़क़ा(31)वज़्रिब् लहुम् म–स–लर् रजुलैनि ज–अ़ल्ना लि–अ–ह़दिहिमा जन्नतैनि मिन् अअ्नाबिंव् व ह़–फ़फ़्नाहुमा बि–नख़्लिंव् व ज–अ़ल्ना बै–नहुमा ज़रआ(32)किल्तल् जन्नतैनि आतत् उकु –लहा व लम् तज़्लिम् मिन्हु शैअंव् व फ़ज्जर्ना ख़िला–लहुमा न–हरा(33)व का–न लहू स–मरुन् फ़क़ा–ल लिसाह़िबिही व हु–व युह़ाविरुहू अना अक्सरु मिन्–क मालंव् व अ–अ़ज़्ज़ु न–फ़रा(34)व द–ख़–ल जन्न–तहू व हु–व ज़ालिमुल् लि–नफ़्सिही क़ा–ल मा अज़ुन्नु अन् तबी–द हाज़िही अ–बदा (35)व मा अज़ुन्नुस् सा–अ़–त क़ाइ–म–तंव् व लइर्रुदित्तु इला रब्बी ल–अजिदन्–न ख़ैरम् मिन्हा मुन्क़–लबा (36)क़ा–ल लहू साह़िबुहू व हु–व युह़ाविरुहू अ–क–फ़र्–त बिल्लज़ी ख़–ल–क़–क मिन् तुराबिन् सुम्–म मिन् नुत्फ़तिन् सुम्–म सव्वा–क रजुला(37)लाकिन्–न हुवल्लाहु रब्बी व ला उश्रिकु बि–रब्बी

नदियाँ बहें वह उसमें सोने के कंगन पहनाए जायेंगे (फ़ा65) और सब्ज़ कपड़े करेब और कनादीज़ के पहनेंगे वहां तख़्तों पर तकिया लगाए (फ़ा66) क्या ही अच्छा सवाब, और जन्नत क्या ही अच्छी आराम की जगह।(31) (रुकूअ़ 16) और उनके सामने दो मर्दों का हाल बयान करो (फ़ा67) कि उनमें एक को (फ़ा68) हमने अंगूरों के दो बाग़ दिये और उनको खजूरों से ढाँप लिया और उनके बीच बीच में खेती रखी।(32) (फ़ा69) दोनों बाग़ अपने फल लाए और उसमें कुछ कमी न दी (फ़ा70) और दोनों के बीच में हमने नहर बहाई।(33) और वह (फ़ा71) फल रखता था (फ़ा72) तो अपने साथी (फ़ा73) से बोला और वह उससे रद्दो बदल करता था (फ़ा74) मैं तुझ से माल में ज़्यादा हूं और आदमियों का ज़्यादा ज़ोर रखता हूं।(34) (फ़ा75) अपने बाग़ में गया (फ़ा76) और अपनी जान पर ज़ुल्म करता हुआ (फ़ा77) बोला मुझे गुमान नहीं कि यह कभी फ़ना हो।(35) और मैं गुमान नहीं करता कि क़ियामत क़ाइम हो और अगर मैं (फ़ा78) अपने रब की तरफ़ फिर कर भी तो ज़रूर इस बाग़ से बेहतर पलटने की जगह पाऊंगा।(36) (फ़ा79) उसके साथी (फ़ा80) ने उससे उलट फेर करते हुए जवाब दिया क्या तू उसके साथ कुफ़्र करता है जिसने तुझे मिट्टी से बनाया फिर निथरे पानी की बूंद से फिर तुझे ठीक मर्द किया।(37) (फ़ा81) लेकिन मैं तो यही कहता हूं कि वह अल्लाह ही मेरा रब है और मैं किसी को अपने रब का शरीक

(फ़ा65) हर जन्नती को तीन तीन कंगन पहनाये जायेंगे सोने और चांदी और मोतियों के हदीस सही में है कि वुज़ू का पानी जहां जहां पहुंचता है वह तमाम आज़ा बेहिश्ती ज़ेवरों से आरास्ता किये जायेंगे। (फ़ा66) शाहाना शान व शिकोह के साथ होंगे। (फ़ा67) कि काफ़िर व मोमिन इसमें ग़ौर करके अपना अपना अन्जाम व मआल समझें और उन दो मर्दों का हाल यह है (फ़ा68) यानी काफ़िर को (फ़ा69) यानी उन्हें निहायत बेहतरीन तरतीब के साथ मुरत्तब किया। (फ़ा70) बहार ख़ूब आई (फ़ा71) बाग़ वाला उसके इलावा और भी (फ़ा72) यानी अमवाले कसीरा सोना चांदी वग़ैरह हर क़िस्म की चीज़ें। (फ़ा73) ईमानदार (फ़ा74) और इतरा कर और अपने माल पर फ़ख़्र करके कहने लगा कि (फ़ा75) मेरा कुम्बा क़बीला बड़ा है मुलाज़िम ख़िदमतगार नौकर चाकर बहुत हैं। (फ़ा76) और मुसलमान का हाथ पकड़ कर उसको साथ ले गया वहां उसको इफ़्तेख़ारन हर तरफ़ लिये फिरा और हर हर चीज़ दिखाई। (फ़ा77) कुफ़्र के साथ और बाग़ की ज़ीनत व ज़ेबाइश और रौनक़ व बहार देख कर मग़रूर हो गया और (फ़ा78) जैसा कि तेरा गुमान है बिलफ़र्ज़ (फ़ा79) क्योंकि दुनिया में भी मैंने बेहतरीन जगह पाई है। (फ़ा80) मुसलमान (फ़ा81) अ़क़्ल व बुलूग़ क़ुव्वत व ताक़त अ़ता की और तू सब कुछ पाकर काफ़िर हो गया

أَحَدًا ۝ وَلَوْلَآ إِذْ دَخَلْتَ جَنَّتَكَ قُلْتَ مَا شَآءَ اللّٰهُ لَا قُوَّةَ إِلَّا بِاللّٰهِ إِن تَرَنِ أَنَا أَقَلَّ مِنكَ مَالًا وَّوَلَدًا ۝ فَعَسٰى رَبِّيٓ أَن يُّؤْتِيَنِ

خَيْرًا مِّن جَنَّتِكَ وَيُرْسِلَ عَلَيْهَا حُسْبَانًا مِّنَ السَّمَآءِ فَتُصْبِحَ صَعِيدًا زَلَقًا ۝ أَوْ يُصْبِحَ مَآؤُهَا غَوْرًا فَلَن تَسْتَطِيعَ لَهُ طَلَبًا ۝ وَأُحِيطَ بِثَمَرِهِ

فَأَصْبَحَ يُقَلِّبُ كَفَّيْهِ عَلٰى مَآ أَنفَقَ فِيهَا وَهِيَ خَاوِيَةٌ عَلٰى عُرُوشِهَا وَيَقُولُ يٰلَيْتَنِي لَمْ أُشْرِكْ بِرَبِّيٓ أَحَدًا ۝ وَلَمْ تَكُن لَّهُ فِئَةٌ يَّنصُرُونَهُ

مِن دُونِ اللّٰهِ وَمَا كَانَ مُنتَصِرًا ۝ هُنَالِكَ الْوَلَايَةُ لِلّٰهِ الْحَقِّ هُوَ خَيْرٌ ثَوَابًا وَّخَيْرٌ عُقْبًا ۝ وَاضْرِبْ لَهُم مَّثَلَ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا كَمَآءٍ أَنزَلْنٰهُ

مِنَ السَّمَآءِ فَاخْتَلَطَ بِهِ نَبَاتُ الْأَرْضِ فَأَصْبَحَ هَشِيمًا تَذْرُوهُ الرِّيٰحُ وَكَانَ اللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ مُّقْتَدِرًا ۝ اَلْمَالُ وَالْبَنُونَ زِينَةُ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا

अ–हदा(38)व लौला इज़् द– ख़ल्–त जन्न–त–क क़ुल्–त माशा अल्लाहु ला क़ुव्व–त इल्ला बिल्लाहि इन् त–रनि अना अ–क़ल्–ल मिन्क मालंव् व व–लदा(39)फ़–अ़सा रब्बी अंय्युअ्ति–यनि ख़ैरम् मिन् जन्नति–क व युर्सि–ल अ़लैहा हुस्बानम् मिनस्समाइ फ़तुस्बि–ह सअ़ीदन् ज़–लक़ा(40)औ युस्बि–ह माउहा ग़ौरन् फ़–लन् तस्तती–अ़ लहू त़–लबा(41)व उही–त़ बि–स–मरिही फ़–अस्ब–ह युक़ल्लिबु कफ़्फ़ैहि अ़ला मा अन्फ़–क़ फ़ीहा व हि–य ख़ावि–यतुन् अ़ला अुरूशिहा व यक़ूलु यालै–तनी लम् उश्रिक् बिरब्बी अ–हदा(42)व लम् तकुल्लहू फ़ि–अतुंय्यन्सुरू–नहू मिन् दूनिल्लाहि व मा का–न मुन्तसिरा(43)हुनालिकल् वला–यतु लिल्लाहिल् हक़्क़ि हु–व ख़ैरुन् सवाबंव् व ख़ैरुन् अ़ुक़्बा(44)वज़्रिब् लहुम् म–स–लल् हयातिद्–दुन्या कमाइन् अन्ज़ल्नाहु मिनस्समाइ फ़ख़्त –ल–त बिही नबातुल्अर्ज़ि फ़–अस्ब–ह हशीमन् तज़्–रूहुर्रियाहु व कानल्लाहु अ़ला कुल्लि शैइम् मुक़्तदिरा(45)अल्मालु वल्बनू–न ज़ी–नतुल् हयातिद् दुन्या

नहीं करता हूं।(38) और क्यों न हुआ कि जब तू अपने बाग़ में गया तो कहा होता जो चाहे अल्लाह हमें कुछ ज़ोर नहीं मगर अल्लाह की मदद का (फ़82) अगर तू मुझे अपने से माल व औलाद में कम देखता था।(39) (फ़83) तो क़रीब है कि मेरा रब मुझे तेरे बाग़ से अच्छा दे (फ़84) और तेरे बाग़ पर आसमान से बिजलियां उतारे तो वह पटपर मैदान होकर रह जाये।(40) (फ़85) या उसका पानी ज़मीन में धंस जाये (फ़86) फिर तू उसे हरगिज़ तलाश न कर सके।(41)(फ़87) और उसके फल घेर लिये गए (फ़88) तो अपने हाथ मलता रह गया (फ़89) उस लागत पर जो उस बाग़ में ख़र्च की थी और वह अपनी टट्टियों पर गिरा हुआ था (फ़90) और कह रहा है ऐ काश मैंने अपने रब का किसी को शरीक न किया होता।(42) और उसके पास कोई जमाअ़त न थी कि अल्लाह के सामने उसकी मदद करती न वह बदला लेने के क़ाबिल था।(43) (फ़91) यहां खुलता है (फ़92) कि इख़्तियार सच्चे अल्लाह का है उसका सवाब सबसे बेहतर और उसे मानने का अन्जाम सबसे भला।(44) (रुकूअ़ 17) और उनके सामने (फ़93) जिन्दगानीए दुनिया की कहावत बयान करो (फ़94) जैसे एक पानी हमने आसमान से उतारा तो उसके सबब ज़मीन का सब्ज़ा घना होकर निकला (फ़95) कि सूखी घास हो गया जिसे हवायें उड़ायें (फ़96) और अल्लाह हर चीज़ पर क़ाबू वाला है।(45) (फ़97) माल और बेटे यह जीती दुनिया का सिंगार है (फ़98)

(फ़82) अगर तू बाग़ देख कर माशाअल्लाह कहता और एतेराफ़ करता कि यह बाग़ और उसके तमाम महासिल व मनाफ़ेअ़ अल्लाह तआ़ला की मशीयत और उसके फ़ज़्लो करम से हैं और सब कुछ उसके इख़्तियार में है चाहे उसको आबाद रखे चाहे वीरान करे ऐसा कहता तो यह तेरे हक़ में बेहतर होता तूने ऐसा क्यों नहीं किया। (फ़83) इस वजह से तकब्बुर में मुब्तला था और अपने आपको बड़ा समझता था (फ़84) दुनिया में या उक़बा में (फ़85) कि उसमें सब्ज़ा का नाम व निशान बाक़ी न रहे। (फ़86) नीचे चला जाये कि किसी तरह निकाला न जा सके। (फ़87) चुनांचे ऐसा ही हुआ अ़ज़ाब आया (फ़88) और बाग़ बिल्कुल वीरान हो गया (फ़89) पशेमानी और हसरत से (फ़90) इस हाल को पहुंच कर उसको मोमिन की नसीहत याद आती है और अब वह समझता है कि यह उसके कुफ़्र व सरकशी का नतीजा है (फ़91) कि ज़ाया शुदा चीज़ को वापस कर सकता। (फ़92) और ऐसे हालात में मालूम होता है। (फ़93) ऐ सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम (फ़94) कि उसकी हालत ऐसी है। (फ़95) ज़मीन तरो ताज़ा हुई फिर क़रीब ही ऐसा हुआ। (फ़96) और परागन्दा करदें (फ़97) पैदा करने पर भी और फ़ना **(बक़िया सफ़हा 495 पर)**

وَالْبٰقِيٰتُ الصّٰلِحٰتُ خَيْرٌ عِنْدَ رَبِّكَ ثَوَابًا وَّخَيْرٌ اَمَلًا ۝۴۶ وَيَوْمَ نُسَيِّرُ الْجِبَالَ وَتَرَى الْاَرْضَ بَارِزَةً ۙ وَّحَشَرْنٰهُمْ فَلَمْ نُغَادِرْ مِنْهُمْ اَحَدًا ۝۴۷ وَعُرِضُوْا
عَلٰى رَبِّكَ صَفًّا ۭ لَقَدْ جِئْتُمُوْنَا كَمَا خَلَقْنٰكُمْ اَوَّلَ مَرَّةٍ ۡ بَلْ زَعَمْتُمْ اَلَّنْ نَّجْعَلَ لَكُمْ مَّوْعِدًا ۝۴۸ وَوُضِعَ الْكِتٰبُ فَتَرَى الْمُجْرِمِيْنَ مُشْفِقِيْنَ
مِمَّا فِيْهِ وَيَقُوْلُوْنَ يٰوَيْلَتَنَا مَالِ هٰذَا الْكِتٰبِ لَا يُغَادِرُ صَغِيْرَةً وَّلَا كَبِيْرَةً اِلَّآ اَحْصٰىهَا ۚ وَوَجَدُوْا مَا عَمِلُوْا حَاضِرًا ۭ وَلَا يَظْلِمُ رَبُّكَ
اَحَدًا ۝۴۹ وَاِذْ قُلْنَا لِلْمَلٰۗئِكَةِ اسْجُدُوْا لِاٰدَمَ فَسَجَدُوْٓا اِلَّآ اِبْلِيْسَ ۭ كَانَ مِنَ الْجِنِّ فَفَسَقَ عَنْ اَمْرِ رَبِّهٖ ۭ اَفَتَتَّخِذُوْنَهٗ وَذُرِّيَّتَهٗٓ اَوْلِيَاۗءَ
مِنْ دُوْنِيْ وَهُمْ لَكُمْ عَدُوٌّ ۭ بِئْسَ لِلظّٰلِمِيْنَ بَدَلًا ۝۵۰ مَآ اَشْهَدْتُّهُمْ خَلْقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَلَا خَلْقَ اَنْفُسِهِمْ ۠ وَمَا كُنْتُ مُتَّخِذَ الْمُضِلِّيْنَ

वल्बाक़ियातुस् सालिहातु ख़ैरुन् अ़िन्–द रब्बि–क सवाबंव् व ख़ैरुन् अ–मला(46)व यौ–म नु–सय्यिरुल् जिबा–ल व त–रलअर्–ज़ बारि–ज़–तंव् व ह़–शर्नाहुम् फ़–लम् नुग़ादिर् मिन्हुम् अ–ह़दा(47)व अुरिज़ू अ़ला रब्बि–क सफ़्फ़न् ल–क़द् जिअ्तुमूना कमा ख़लक़्नाकुम् अव्व–ल मर्रतिम् बल् ज़–अ़म्तुम् अल्लन् नज्–अ़–ल लकुम् मौअ़िदा(48)व वुज़िअ़ल् किताबु फ़–त–रल् मुज्रिमी–न मुश्फ़िक़ी–न मिम्मा फ़ीहि व यक़ूलू–न यावै–ल–तना मालि हाज़ल् किताबि ला युग़ादिरु सग़ी–र–तंव् व ला कबी–र–तन् इल्ला अह़्साहा व व–जदू मा अ़मिलू ह़ाज़िरन् व ला यज़्लिमु रब्बु–क अ–ह़दा(49)व इज़् क़ुल्ना लिल्मलाइ–कतिस्जुदू लिआ–द–म फ़–स–जदू इल्ला इब्ली–स का–न मिनल् जिन्नि फ़–फ़–स–क़ अ़न् अम्रि रब्बिही अ–फ़–तत्तख़िज़ू–नहू व ज़ुर्रिय्य–तहू औलिया–अ मिन् दूनी व हुम् लकुम् अ़दुव्वुन् बिअ्–स लिज़्ज़ालिमी–न ब–दला(50)मा अश्हत्तुहुम् ख़ल्क़स्–समावाति वल्अर्ज़ि व ला ख़ल्–क़ अन्फ़ुसिहिम् व मा कुन्तु मुत्तख़िज़ल् मुज़िल्ली–न

और बाक़ी रहने वाली अच्छी बातें (फ़ा99) उनका सवाब तुम्हारे रब के यहां बेहतर और वह उम्मीद में सब से भली।(46) और जिस दिन हम पहाड़ों को चलायेंगे (फ़ा100) और तुम ज़मीन को साफ़ खुली हुई देखोगे (फ़ा101) और हम उन्हें उठायेंगे (फ़ा102) तो उनमें से किसी को छोड़ न देंगे।(47) और सब तुम्हारे रब के हुज़ूर परा बांधे पेश होंगे (फ़ा103) बेशक तुम हमारे पास वैसे ही आए जैसा हमने तुम्हें पहली बार बनाया था (फ़ा104) बल्कि तुम्हारा गुमान था कि हम हरगिज़ तुम्हारे लिए कोई वादा का वक़्त न रखेंगे।(48) (फ़ा105) और नामए आमाल रखा जाएगा (फ़ा106) तो तुम मुजरिमों को देखोगे कि उसके लिखे से डरते होंगे और (फ़ा107) कहेंगे हाय ख़राबी हमारी इस नविश्ता को क्या हुआ न इसने कोई छोटा गुनाह छोड़ा न बड़ा जिसे घेर न लिया हो और अपना सब किया उन्होंने सामने पाया और तुम्हारा रब किसी पर ज़ुल्म नहीं करता।(49) (फ़ा108) (रुकूअ़ 18) और याद करो जब हमने फ़रिश्तों को फ़रमाया कि आदम को सजदा करो (फ़ा109) तो सबने सजदा किया सिवा इबलीस के क़ौमे जिन्न से था तो अपने रब के हुक्म से निकल गया (फ़ा110) भला क्या उसे और उसकी औलाद को मेरे सिवा दोस्त बनाते हो (फ़ा111) और वह तुम्हारे दुश्मन हैं ज़ालिमों को क्या ही बुरा बदल मिला।(50) (फ़ा112) न मैंने आसमानों और ज़मीन के बनाते वक़्त उन्हें सामने बिठा लिया था न ख़ुद उनके बनाते वक़्त और न मेरी शान कि गुमराह करने वालों को

(फ़ा99) बाक़ियात सालिहात से आमाले ख़ैर मुराद हैं जिन के समरे इन्सान के लिए बाक़ी रहते हैं जैसे कि पंजगाना नमाज़ें और तस्बीह व तहमीद हदीस शरीफ़ में है सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने बाक़ियात व सालिहात की कसरत का हुक्म फ़रमाया सहाबा ने अर्ज़ किया कि वह क्या हैं फ़रमाया अल्लाहु अक्बरु ला इला–ह इल्लल्लाहु सुब्ह़ानल्लाहि वल्ह़म्दु लिल्लाहि व ला ह़ौ–ल व ला क़ुव्व–त इल्ला बिल्लाहि पढ़ना (फ़ा100) कि अपनी जगह से उखड़ कर अब्र की तरह रावाना होंगे (फ़ा101) न उस पर कोई पहाड़ होगा न इमारत न दरख़्त (फ़ा102) क़ब्रों से और मौक़फ़ हिसाब में हाज़िर करेंगे (फ़ा103) हर हर उम्मत की जमाअ़त की क़तारें अलाहिदा अलाहिदा अल्लाह तआ़ला उन से फ़रमाएगा। (फ़ा104) ज़िन्दा ब–रहना तन व ब–रहना पा बे ज़र व माल। (फ़ा105) जो वादा कि हमने ज़बाने अम्बिया पर फ़रमाया था यह उनसे फ़रमाया जाएगा जो लोग मरने के बाद ज़िन्दा किये जाने और क़ियामत क़ाइम होने के मुन्किर थे (फ़ा106) हर शख़्स का आमालनामा उसके हाथ में मोमिन का दाहिने में काफ़िर का बायें में (फ़ा107) उसमें अपनी बदियां लिखी देख कर (फ़ा108) न किसी पर बे जुर्म **(बक़िया सफ़हा 496 पर)**

عَضُدًا ۝ وَيَوْمَ يَقُولُ نَادُوا شُرَكَآءِيَ الَّذِينَ زَعَمْتُمْ فَدَعَوْهُمْ فَلَمْ يَسْتَجِيبُوا لَهُمْ وَجَعَلْنَا بَيْنَهُم مَّوْبِقًا ۝ وَرَا الْمُجْرِمُونَ النَّارَ

فَظَنُّوا أَنَّهُم مُّوَاقِعُوهَا وَلَمْ يَجِدُوا عَنْهَا مَصْرِفًا ۝ وَلَقَدْ صَرَّفْنَا فِي هَٰذَا الْقُرْآنِ لِلنَّاسِ مِن كُلِّ مَثَلٍ ۚ وَكَانَ الْإِنسَانُ أَكْثَرَ شَيْءٍ

جَدَلًا ۝ وَمَا مَنَعَ النَّاسَ أَن يُؤْمِنُوا إِذْ جَاءَهُمُ الْهُدَىٰ وَيَسْتَغْفِرُوا رَبَّهُمْ إِلَّا أَن تَأْتِيَهُمْ سُنَّةُ الْأَوَّلِينَ أَوْ يَأْتِيَهُمُ الْعَذَابُ قُبُلًا ۝

وَمَا نُرْسِلُ الْمُرْسَلِينَ إِلَّا مُبَشِّرِينَ وَمُنذِرِينَ ۚ وَيُجَادِلُ الَّذِينَ كَفَرُوا بِالْبَاطِلِ لِيُدْحِضُوا بِهِ الْحَقَّ ۖ وَاتَّخَذُوا آيَاتِي وَمَا أُنذِرُوا هُزُوًا ۝

وَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّن ذُكِّرَ بِآيَاتِ رَبِّهِ فَأَعْرَضَ عَنْهَا وَنَسِيَ مَا قَدَّمَتْ يَدَاهُ ۚ إِنَّا جَعَلْنَا عَلَىٰ قُلُوبِهِمْ أَكِنَّةً أَن يَفْقَهُوهُ وَفِي آذَانِهِمْ وَقْرًا ۚ

अ़जुदा(51)व यौ–म यकूलु नादू शु–रकाइ यल्लज़ी–न ज़–अ़म्तुम् फ़–दऔहुम् फ़–लम् यस्तजीबू लहुम् व ज–अ़ल्ना बै–नहुम् मौबिक़ा(52)व र–अल् मुजिरमूनन्ना–र फ़–ज़न्नू अन्नहुम् मुवाक़िअूहा व लम् यजिदू अ़न्हा मस्रिफ़ा(53)व ल–क़द् स़र्रफ़्ना फ़ी हाज़ल् क़ुरआनि लिन्नासि मिन् कुल्लि म–सलिन् व कानल् इन्सानु अक्स–र शैइन् ज–दला(54)व मा म–न–अ़न्ना–स अंय्युअ्मिनू इज् जा–अ हुमुल्–हुदा व यस्तग़्फ़िरू रब्बहुम् इल्ला अन् तअ्ति–यहुम् सुन्नतुल् अव्वली–न औ यअ्ति–यहुमुल् अ़ज़ाबु क़ुबुला(55)व मा नुर्सिलुल् मुर्सली–न इल्ला मुबश्शिरी–न व मुन्ज़िरी–न व युजादिलुल् लज़ी–न क–फ़रू बिल्बातिलि लियुदहिज़ू बिहिल्हक़्–क़ वत्तख़ज़ू आयाती व मा उन्ज़िरू हुज़ुवा(56)व मन् अज़्लमु मिम्मन् ज़ुक्कि–र बि–आयाति रब्बिही फ़–अअ्–र–ज़ अ़न्हा व नसि–य मा क़द्–द–मत् यदाहु इन्ना ज–अ़ल्ना अ़ला क़ुलूबिहिम् अकिन्नतन् अंय्यफ़्क़हूहु व फ़ी आज़ानिहिम् वक़्रन्

बाज़ू बनाऊं।(51) (फ़ा113) और जिस दिन फ़रमाएगा (फ़ा114) कि पुकारो मेरे शरीकों को जो तुम गुमान करते थे तो उन्हें पुकारेंगे वह उन्हें जवाब न देंगे और हम उनके (फ़ा115) दर्मियान एक हलाकत का मैदान कर देंगे।(52) (फ़ा116) और मुजरिम दोज़ख़ को देखेंगे तो यक़ीन करेंगे कि उन्हें उसमें गिरना है और उससे फिरने की कोई जगह न पायेंगे।(53) (रुकूअ़ 19) और बेशक हमने लोगों के लिए इस क़ुरआन में हर क़िस्म की मसल तरह तरह बयान फ़रमाई (फ़ा117) और आदमी हर चीज़ से बढ़कर झगड़ालू है।(54) (फ़ा119) और आदमियों को किस चीज़ ने इससे रोका कि ईमान लाते जब हिदायत (फ़ा119) उनके पास आई और अपने रब से माफ़ी मांगते (फ़ा120) मगर यह कि उन पर अगलों का दस्तूर आए (फ़ा121) या उन पर क़िस्म क़िस्म का अ़ज़ाब आए। (55) और हम रसूलों को नहीं भेजते मगर (फ़ा122) ख़ुशी और (फ़ा123) डर सुनाने वाले और जो काफ़िर हैं वह बातिल के साथ झगड़ते हैं (फ़ा124) कि उससे हक़ को हटावें और उन्होंने मेरी आयतों की और जो डर उन्हें सुनाए गए थे (56) (फ़ा125) उनकी हंसी बना ली। और उससे बढ़कर ज़ालिम कौन जिसे उसके रब की आयतें याद दिलाई जायें तो वह उनसे मुंह फेर ले (फ़ा126) और उसके हाथ जो आगे भेज चुके (फ़ा127) उसे भूल जाए, हमने उनके दिलों पर ग़िलाफ़ कर दिये हैं कि क़ुरआन न समझें और उनके कानों में गिरानी (फ़ा128)

(फ़ा113) माना यह हैं कि अशिया के पैदा करने में मुनफ़रिद और यगाना हूं न मेरा कोई शरीके अमल न कोई मुशीरकार फिर मेरे सिवा और किसी की इबादत किस तरह दुरुस्त हो सकती है (फ़ा114) अल्लाह तआ़ला कुफ़्फ़ार से (फ़ा115) यानी बुतों बौर बुत परस्तों के या अहले हुदा और अहले ज़लाल के (फ़ा116) हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा ने फ़रमाया कि मोबिक़ जहन्नम की एक वादी का नाम है। (फ़ा117) ताकि समझें और पन्द पज़ीर हों (फ़ा118) हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा ने फ़रमाया कि यहां आदमी से मुराद नज़र बिन हारिस है और झगड़े से उसका क़ुरआने पाक में झगड़ा करना बाज़ ने कहा उबय बिन ख़ल्फ़ मुराद है बाज़ मुफ़स्सिरीन का क़ौल है कि तमाम कुफ़्फ़ार मुराद हैं बाज़ के नज़दीक आयत उमूम पर है और यही असह है। (फ़ा119) यानी क़ुरआने करीम या रसूले मुकर्रम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की ज़ाते मुबारक। (फ़ा120) माना यह हैं कि उनके लिए जाय उज़्र नहीं है क्योंकि उन्हें ईमान व इस्तिग़फ़ार से कोई मानेअ़ नहीं। (फ़ा121) यानी वह हलाक जो मुक़द्दर है उसके बाद (फ़ा122) ईमानदारों इताअ़त शेआरों के लिए सवाब की। (फ़ा123) बे ईमानों नाफ़रमानों के लिए अ़ज़ाब का (फ़ा124) और रसूलों को अपनी मिस्ल बशर कहते हैं। (फ़ा125) अ़ज़ाब के (फ़ा126) और पन्द पज़ीर न हो और उन पर ईमान न लाये (फ़ा127) यानी मअ़सियत और गुनाह और नाफ़रमानी जो कुछ उसने किया (फ़ा128) कि हक़ बात नहीं सुनते

وَاِنۡ تَدۡعُهُمۡ اِلَى الۡهُدٰى فَلَنۡ يَّهۡتَدُوۡۤا اِذًا اَبَدًا ۝ وَرَبُّكَ الۡغَفُوۡرُ ذُو الرَّحۡمَةِ ؕ لَوۡ يُؤَاخِذُهُمۡ بِمَا كَسَبُوۡا لَعَجَّلَ لَهُمُ الۡعَذَابَ ؕ بَلْ لَّهُمۡ مَّوۡعِدٌ لَّنۡ يَّجِدُوۡا مِنۡ دُوۡنِهٖ مَوۡئِلًا ۝ وَتِلۡكَ الۡقُرٰٓى اَهۡلَكۡنٰهُمۡ لَمَّا ظَلَمُوۡا وَجَعَلۡنَا لِمَهۡلِكِهِمۡ مَّوۡعِدًا ۝ وَاِذۡ قَالَ مُوۡسٰى لِفَتٰٮهُ لَاۤ اَبۡرَحُ حَتّٰۤى اَبۡلُغَ مَجۡمَعَ الۡبَحۡرَيۡنِ اَوۡ اَمۡضِىَ حُقُبًا ۝ فَلَمَّا بَلَغَا مَجۡمَعَ بَيۡنِهِمَا نَسِيَا حُوۡتَهُمَا فَاتَّخَذَ سَبِيۡلَهٗ فِى الۡبَحۡرِ سَرَبًا ۝ فَلَمَّا جَاوَزَا قَالَ لِفَتٰٮهُ اٰتِنَا غَدَآءَنَا لَقَدۡ لَقِيۡنَا مِنۡ سَفَرِنَا هٰذَا نَصَبًا ۝ قَالَ اَرَءَيۡتَ اِذۡ اَوَيۡنَاۤ اِلَى الصَّخۡرَةِ فَاِنِّىۡ نَسِيۡتُ الۡحُوۡتَ وَمَاۤ اَنۡسٰنِيۡهُ اِلَّا الشَّيۡطٰنُ اَنۡ اَذۡكُرَهٗ ۚ وَاتَّخَذَ سَبِيۡلَهٗ فِى الۡبَحۡرِ ۖ عَجَبًا ۝ قَالَ ذٰلِكَ مَا كُنَّا نَبۡغِ ۖ فَارۡتَدَّا عَلٰۤى اٰثَارِهِمَا قَصَصًا ۝ فَوَجَدَا عَبۡدًا مِّنۡ عِبَادِنَاۤ اٰتَيۡنٰهُ رَحۡمَةً مِّنۡ

व इन् तद्अुहुम् इलल्हुदा फ़लंय्यह्तदू इज़न् अ–बदा(57)व रब्बुकल् ग़फ़ूरु ज़ुर्रह्मति लौ युआख़िज़ुहुम् बिमा क–सबू ल–अ़ज्ज–ल लहुमुल् अ़ज़ा–ब बल् लहुम् मौअ़िदुल् लंय्यजिदू मिन् दूनिही मौअिला(58)व तिल्कल्–क़ुरा अह्लक्नाहुम् लम्मा ज–लमू व ज़–अ़ल्ना लि–मह्लिकिहिम् मौअ़िदा(59)व इज़् क़ा–ल मूसा लि–फ़ताहु ला अब्–रहु हत्ता अब्लु–ग़ मज्म–अ़ल्बह्रैनि औ अम्ज़ि–य हुक़ुबा(60)फ़–लम्मा ब–लग़ा मज्म–अ़ बैनिहिमा नसिया हू.–तहुमा फ़त्त–ख़–ज़ सबी–लहू फ़िल्बह्रि स–रबा(61)फ़–लम्मा जावज़ा क़ा–ल लि–फ़ताहु आतिना ग़दा–अना लक़द् लक़ीना मिन् स–फ़रिना हाज़ा न–स़बा(62)क़ा–ल अ–रऐ–त इज़् अवैना इलस्–सख़्रति फ़इन्नी नसीतुल् हू–त व मा अन्सानीहु इल्लश्शैतानु अन् अज़्कु–रहू वत्त–ख़–ज़ सबी–लहू फ़िल्बह्रि अ़–जबा(63)क़ा–ल ज़ालि–क मा कुन्ना नब्ग़ि फ़र्–तद्दा अ़ला आसारिहिमा क़–स़स़ा(64)फ़–व–जदा अ़ब्दम् मिन् अ़िबादिना आतैनाहु रह्–म–तम् मिन्

और अगर तुम उन्हें हिदायत की तरफ़ बुलाओ तो जब भी हरगिज़ कभी राह न पायेंगे।(57) (फ़129) और तुम्हारा रब बख़्शने वाला मेहर वाला है अगर वह उन्हें (फ़130) उनके किये पर पकड़ता तो जल्द उन पर अ़ज़ाब भेजता (फ़131) बल्कि उनके लिए एक वादा का वक़्त है (फ़132) जिसके सामने कोई पनाह न पायेंगे।(58) और यह बस्तियाँ हमने तबाह कर दीं (फ़133) जब उन्होंने ज़ुल्म किया (फ़134) और हमने उनकी बरबादी का एक वादा रखा था।(59) (रुकूअ़ 20) और याद करो जब मूसा (फ़135) ने अपने ख़ादिम से कहा (फ़136) मैं बाज़ न रहूंगा जब तक वहां न पहुंचूं जहां दो समुन्दर मिले हैं (फ़137) या क़रनों चला जाऊँ।(60)(फ़138) फिर जब वह दोनों उन दरियाओं के मिलने की जगह पहुंचे (फ़139) अपनी मछली भूल गए और उसने समुन्दर में अपनी राह ली सुरंग बनाती।(61) फिर जब वहां से गुज़र गए (फ़140) मूसा ने ख़ादिम से कहा हमारा सुबह का खाना लाओ बेशक हमें अपने इस सफ़र में बड़ी मशक़्क़त का सामना हुआ।(62) (फ़141) बोला भला देखिये तो जब हमने उस चट्टान के पास जगह ली थी तो बेशक मैं मछली को भूल गया और मुझे शैतान ही ने भुला दिया कि मैं उसका मज़कूर करूं और उसने (फ़142) तो समुन्दर में अपनी राह ली अचंभा है।(63) मूसा ने कहा यही तो हम चाहते थे (फ़143) तो पीछे पलटे अपने क़दमों के निशान देखते।(64) तो हमारे बन्दों में से एक बन्दा पाया (फ़144) जिसे हमने अपने पास से रहमत दी (फ़145)

(फ़129) यह उनके हक़ में है जो इल्मे इलाही में ईमान से महरूम हैं (फ़130) दुनिया ही में (फ़131) लेकिन उसकी रहमत है कि उसने मुहलत दी और अ़ज़ाब में जल्दी न फ़रमाई। (फ़132) यानी रोज़े क़ियामत बअ़्स व हिसाब का दिन। (फ़133) वहां के रहने वालों को हलाक कर दिया और वह बस्तियां वीरान हो गईं उन बस्तियों से क़ौमे लूत व आ़द व समूद वग़ैरह की बस्तियां मुराद हैं। (फ़134) हक़ को न माना और कुफ़्र इख़्तियार किया। (फ़135) इब्ने इमरान बनी मोहतरम साहबे तौरेत व मोअ़्जेज़ाते ज़ाहिरा। (फ़136) जिन का नाम यूशअ़् इब्ने नून है जो हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम की ख़िदमत व सोहबत में रहते थे और आप से इल्म अख़ज़ करते थे और आपके बाद आपके वली अहद हैं। (फ़137) बहरे फ़ारस और बहरे रोम जानिबे मशरिक़ में और मजमउलबहरैन वह मक़ाम है जहां हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम को हज़रत ख़िज़्र अ़लैहिस्सलाम की मुलाक़ात का वादा दिया गया था इस लिए आप ने वहां पहुंचने का अ़ज़्मे मुसम्मम किया और फ़रमाया कि मैं अपनी सई जारी रखूंगा जब तक कि वहां पहुंचूं। (फ़138) अगर वह जगह दूर हो फिर यह हज़रात रोटी और नमकीन **(बक़िया सफ़हा 496 पर)**

عِنْدِنَا وَعَلَّمْنٰهُ مِنْ لَّدُنَّا عِلْمًا ﴿٦٥﴾ قَالَ لَهٗ مُوْسٰى هَلْ اَتَّبِعُكَ عَلٰۤى اَنْ تُعَلِّمَنِ مِمَّا عُلِّمْتَ رُشْدًا ﴿٦٦﴾ قَالَ اِنَّكَ لَنْ تَسْتَطِيْعَ
مَعِیَ صَبْرًا ﴿٦٧﴾ وَكَيْفَ تَصْبِرُ عَلٰى مَا لَمْ تُحِطْ بِهٖ خُبْرًا ﴿٦٨﴾ قَالَ سَتَجِدُنِیْۤ اِنْ شَآءَ اللّٰهُ صَابِرًا وَّلَاۤ اَعْصِیْ لَكَ اَمْرًا ﴿٦٩﴾ قَالَ فَاِنِ اتَّبَعْتَنِیْ
فَلَا تَسْــَٔلْنِیْ عَنْ شَیْءٍ حَتّٰۤى اُحْدِثَ لَكَ مِنْهُ ذِكْرًا ﴿٧٠﴾ فَانْطَلَقَا حَتّٰۤى اِذَا رَكِبَا فِی السَّفِیْنَةِ خَرَقَهَا قَالَ اَخَرَقْتَهَا لِتُغْرِقَ اَهْلَهَا
لَقَدْ جِئْتَ شَیْــٴًـا اِمْرًا ﴿٧١﴾ قَالَ اَلَمْ اَقُلْ اِنَّكَ لَنْ تَسْتَطِیْعَ مَعِیَ صَبْرًا ﴿٧٢﴾ قَالَ لَا تُؤَاخِذْنِیْ بِمَا نَسِیْتُ وَلَا تُرْهِقْنِیْ مِنْ اَمْرِیْ عُسْرًا ﴿٧٣﴾
فَانْطَلَقَا حَتّٰۤى اِذَا لَقِیَا غُلٰمًا فَقَتَلَهٗ قَالَ اَقَتَلْتَ نَفْسًا زَكِیَّةًۢ بِغَیْرِ نَفْسٍ لَقَدْ جِئْتَ شَیْــٴًـا نُّكْرًا ﴿٧٤﴾

अ़िन्दिना व अ़ल्लम्नाहु मिल्लदुन्ना अ़िल्मा(65)क़ा–ल लहू मूसा हल् अत्तबिअु–क अ़ला अन् तुअ़ल्लि–मनि मिम्मा अ़ुल्लिम्–त रुश्दा(66)क़ा–ल इन्न–क लन् तस्तती़–अ़ मअ़ि–य सब्रा(67)व कै–फ़ तस्बिरु अ़ला मा लम् तुहित् बिही खु़ब्रा(68)क़ा–ल स–तजिदुनी इन्शाअल्लाहु साबिरंव् व ला अअ़्सी ल–क अम्रा(69)क़ा–ल फ़–इनित्तबअ्–तनी फ़ला तस्–अल्नी अ़न् शैइन् ह़त्ता उह़्दि–स ल–क मिन्हु ज़िक्रा(70)फ़न्त–लक़ा ह़त्ता इज़ा रकिबा फ़िस्सफ़ी–नति ख़–र–क़हा क़ा–ल अ–ख़–रक़्तहा लितुग़्रि–क़ अह्–लहा ल–क़द् जिअ्–त शैअन् इम्रा(71)क़ा–ल अ–लम् अक़ुल् इन्न–क लन् तस्तती़–अ़ मअ़ि–य स़ब्रा(72)क़ा–ल ला तुआख़िज़्नी बिमा नसीतु व ला तुर्हिक़्नी मिन् अम्री अ़ुस्रा(73)फ़न्त–लक़ा ह़त्ता इज़ा लक़िया ग़ुलामन् फ़–क़–त–लहू क़ा–ल अ–क़–तल्–त नफ़्सन् ज़किय्यतम् बिग़ैरि नफ़्सिन् ल–क़द् जिअ्–त शैअन् नुक्रा(74)

और उसे अपना इल्मे लदुन्नी अ़ता किया।(65) (फ़ा146) उससे मूसा ने कहा क्या मैं तुम्हारे साथ रहूं इस शर्त पर कि तुम मुझे सिखा दोगे नेक बात जो तुम्हें तालीम हुई।(66) (फ़ा147) कहा आप मेरे साथ हरगिज़ न ठहर सकेंगे।(67) (फ़ा148) और उस बात पर क्योंकर सब्र करेंगे जिसे आपका इल्म मुहीत नहीं।(68) (फ़ा149) कहा अ़न्क़रीब अल्लाह चाहे तो तुम मुझे साबिर पाओगे और मैं तुम्हारे किसी हुक्म के ख़िलाफ़ न करूंगा।(69) कहा तो अगर आप मेरे साथ रहते हैं तो मुझ से किसी बात को न पूछना जब तक मैं ख़ुद उसका ज़िक्र न करूं।(70) (फ़ा150) (रुकूअ़ 21) अब दोनों चले यहां तक कि जब कश्ती में सवार हुए (फ़ा151) उस बन्दा ने उसे चीर डाला (फ़ा152) मूसा ने कहा क्या तुम ने इसे इस लिए चीरा कि इसके सवारों को डुबा दो बेशक यह तुमने बुरी बात की।(71) (फ़ा153) कहा मैं न कहता था कि आप मेरे साथ हरगिज़ न ठहर सकेंगे।(72) (फ़ा154) कहा मुझ से मेरी भूल पर गिरिफ़्त न करो (फ़ा155)और मुझ पर मेरे काम में मुश्किल न डालो।(73) फिर दोनों चले (फ़ा156) यहां तक कि जब एक लड़का मिला (फ़ा157) उस बन्दे ने उसे क़त्ल कर दिया मूसा ने कहा क्या तुमने एक सुथरी जान (फ़ा158) बे किसी जान के बदले क़त्ल कर दी बेशक तुमने बहुत बुरी बात की।(74)

(फ़ा146) यानी ग़ुयूब का इल्म मुफ़स्सिरीन ने फ़रमाया इल्मे लदुन्नी वह है जो बन्दा को बतरीक़े इलहाम हासिल हो हदीस शरीफ़ में है जब ह़ज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम ने ह़ज़रत ख़िज़्र अ़ला नबिय्यिना व अ़लैहिस्सलाम को देखा कि सफ़ेद चादर में लिपटे हुए हैं तो आपने उन्हें सलाम किया उन्हों ने दरियाफ़्त किया कि तुम्हारी सरज़मीन में सलाम कहां। आपने फ़रमाया कि मैं मूसा हूं उन्होंने कहा कि बनी इसराईल के मूसा फ़रमाया कि जी हां फिर। (फ़ा147) मसला इससे मालूम हुआ कि आदमी को इल्म की तलब में रहना चाहिए ख़्वाह वह कितना ही बड़ा आलिम हो मसला यह भी मालूम हुआ कि जिस से इल्म सीखे उसके साथ ब-तवाज़ोअ़ व अदब पेश आये (मदारिक) ख़िज़्र ने ह़ज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम के जवाब में। (फ़ा148) ह़ज़रत ख़िज़्र ने यह इस लिए फ़रमाया कि वह जानते थे कि ह़ज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम उमूरे मुन्किरा व ममनूआ़ देखेंगे और अम्बिया अ़लैहिमुस्सलाम से मुमकिन ही नहीं कि वह मुन्किरात देख कर सब्र कर सकें फिर ह़ज़रत ख़िज़्र अ़लैहिस्सलाम ने उस तर्के सब्र का उज़्र भी ख़ुद ही बयान फ़रमा दिया और फ़रमाया। (फ़ा149) और ज़ाहिर में वह मुन्किर हैं हदीस शरीफ़ में है कि ह़ज़रत ख़िज़्र अ़लैहिस्सलाम ने ह़ज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम से फ़रमाया कि एक इल्म अल्लाह तआ़ला ने मुझको ऐसा अ़ता फ़रमाया जो आप नहीं जानते और एक इल्म आपको ऐसा अ़ता फ़रमाया जो मैं नहीं जानता मुफ़स्सिरीन व मुहद्दिसीन कहते हैं कि जो इल्म ह़ज़रत ख़िज़्र अ़लैहिस्सलाम ने अपने लिए ख़ास फ़रमाया वह इल्मे बातिन व मुकाशफ़ा है और यह अहले कमाल के लिए बाइसे फ़ज़्ल है चुनान्चे वारिद हुआ है कि कि सिद्दीक़ को नमाज़ वग़ैरह आमाल की बिना पर सहाबा पर **(बक़िया सफ़्हा 496 पर)**

(बक़िया सफ़हा 463 का) हैं इसका मुन्किर गुमराह है मेअ़्राज शरीफ़ बहालते बेदारी जिस्म व रूह दोनों के साथ वाक़ेअ. हुई यही जम्हूरे अहले इस्लाम का अ़क़ीदा है और असहाबे रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की कसीर जमाअ़तें और हुज़ूर के अजल्ला असहाब इसी के मोअ़्तक़िद हैं नुसूसे आयात व अहादीस से भी यही मुस्तफ़ाद होता है तीरा व माग़ान फ़लसफ़ा के औहामे फ़ासिदा महज़ बातिल हैं क़ुदरते इलाही के मोअ.तक़िद के सामने वह तमाम शुबहात महज़ बे हक़ीक़त हैं हज़रत जिबरील का बुराक़ लेकर हाज़िर होना सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को ग़ायत इकराम व एहतेराम के साथ सवार करके ले जाना बैतुल मुक़द्दस में सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम का अम्बिया की इमामत फ़रमाना फिर वहां से सैरे समावात की तरफ़ मुतवज्जह होना जिबरील अमीन का हर हर आसमान के दरवाज़ा खुलवाना हर हर आसमान पर वहां के साहबे मक़ाम अम्बिया अ़लैहिमुस्सलाम का शरफ़े ज़ियारत से मुशर्रफ़ होना और हुज़ूर की तकरीम करना एहतेराम बजा लाना तशरीफ़ आवरी की मुबारकबादें देना हुज़ूर का एक आसमान से दूसरे आसमान की तरफ़ सैर फ़रमाना वहां के अ़जाइब देखना और तमाम मुक़र्रबीन की निहायत मनाज़िल सिदरतुलमुन्तहा को पहुंचना जहां से आगे बढ़ने की किसी मलके मुक़र्रब को भी मजाल नहीं है जिबरील अमीन का वहां मअ.ज़रत करके रह जाना फिर मक़ामे क़ुर्बे ख़ास में हुज़ूर का तरक़्क़ियां फ़रमाना और उस क़ुर्बे आला में पहुंचना कि जिस के तसव्वुर तक ख़ल्क़ के औहाम व अफ़कार भी परवाज़ से आ़जिज़ हैं वहां मूरिदे रहमत व करम होना और इनामाते इलाहिया और ख़साइसे नेअ़्म से सरफ़राज़ फ़रमाया जाना और मलकूते समावात व अ़र्ज़ और उन से अफ़ज़ल व बरतर उलूम पाना और उम्मत के लिए नमाज़ें फ़र्ज़ होना हुज़ूर का शफ़ाअ़त फ़रमाना जन्नत व दोज़ख़ की सैरें और फिर अपनी जगह वापस तशरीफ़ लाना और इस वाक़िआ़ की ख़बरें देना कुफ़्फ़ार का इस पर शोरिशें मचाना और बैतुल मुक़द्दस की इमारत का हाल और मुल्के शाम जाने वाले क़ाफ़िलों की कैफ़ियतें हुज़ूर अ़लैहिस्सलातु वस्सलाम से दरियाफ़्त करना हुज़ूर का सब कुछ बताना और क़ाफ़िलों के जो अहवाल हुज़ूर ने बताये क़ाफ़िलों के आने पर उनकी तस्दीक़ होना यह तमाम सिहाह की मोअ.तबर अहादीस से साबित है और बकसरत अहादीस उन तमाम उमूर के बयान और उनकी तफ़सील से ममलू हैं। (फ़ा7) यानी तौरेत (फ़ा8) कश्ती में (फ़ा9) यानी हज़रत नूह अ़लैहिस्सलाम कसीरुलश्कर थे जब कुछ खाते पीते पहनते तो अल्लाह तआ़ला की हम्द करते और उसका शुक्र बजा लाते उनकी ज़ुर्रियत पर लाज़िम है कि वह अपने जद्दे मोहतरम के तरीक़ा पर क़ाइम रहे (फ़ा10) तौरेत (फ़ा11) इससे ज़मीने शाम व बैतुल मुक़द्दस मुराद है और दो मर्तबा के फ़साद का बयान अगली आयत में आता है (फ़ा12) और ज़ुल्म व बग़ावत में मुब्तला होगे (फ़ा13) के फ़साद के अ़ज़ाब (फ़ा14) और उन्होंने अहकामे तौरेत की मुख़ालफ़त की और महारिम व मआ़सी का इरतेकाब किया और हज़रत शोअ़्या पैग़म्बर अ़लैहिस्सलाम (व बक़ौले) हज़रत अरमिया को क़त्ल किया (बैज़ावी वग़ैरह) (फ़ा15) बहुत ज़ोर व क़ुव्वत वाले उनको तुम पर मुसल्लत किया और वह सन्जारीब और उसके अफ़वाज हैं या बुख़्त नसर या जालूत जिन्होंने बनी इसराईल के उलमा को क़त्ल किया तौरेत को जलाया मस्जिद को ख़राब किया और सत्तर हज़ार को उन में से गिरिफ़्तार किया (फ़ा16) कि तुम्हें लूटें और क़त्ल व क़ैद करें।

(बक़िया सफ़हा 464 का) (फ़ा25) दूसरी मर्तबा के बाद भी अगर तुम दोबारा तौबा करो और मआ़सी से बाज़ आओ (फ़ा26) तीसरी मर्तबा (फ़ा27) चुनांचे ऐसा हुआ और उन्होंने फिर अपनी शरारत की तरफ़ औ़द किया और ज़मानए पाक मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम में हु.जूरे अक़दस अ़लैहिस्सलातु वस्सलाम की तकज़ीब की तो क़ियामत तक के लिए उन पर ज़िल्लत लाज़िम कर दी गई और मुसलमान उन पर मुसल्लत फ़रमा दिये गए जैसा कि क़ुरआने करीम में यहूद की निस्बत वारिद हुआ .ज़ुरिबत् अ़लैहिमुज़्-ज़िल्लतु अलआयत (फ़ा28) वह अल्लाह तआ़ला की तौहीद और उसके रसूलों पर ईमान लाना और उनकी इताअ़त करना है। (फ़ा29) अपने लिए और अपने घर वालों के लिए और अपने माल के लिए और अपनी औलाद के लिए और ग़ुस्सा में आकर इन सब को कोसता है और इनके लिए बद दुआयें करता है। (फ़ा30) अगर अल्लाह तआ़ला उसकी यह बद दुआ़ क़बूल कर ले तो वह शख़्स या उसके अहल व माल हलाक हो जायें लेकिन अल्लाह तआ़ला अपने फ़ज़्लो करम से उसको क़बूल नहीं फ़रमाता (फ़ा31) बाज़ मुफ़स्सिरीन ने फ़रमाया कि इस आयत में इन्सान से काफ़िर मुराद है और बुराई की दुआ़ से उसका अ़ज़ाब की जल्दी करना और हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा से मरवी है कि नज़र बिन हारिस काफ़िर ने कहा या रब अगर यह दीने इस्लाम तेरे नज़दीक हक़ है तो हम पर आसमान से पत्थर बरसा या दर्दनाक अ़ज़ाब भेज अल्लाह तआ़ला ने उसकी यह दुआ़ क़बूल करली और उसकी गर्दन मारी गई (फ़ा32) अपनी वहदानियत व क़ुदरत पर दलालत करने वाली। (फ़ा33) यानी शब को तारीक किया ताकि उसमें आराम किया जाये (फ़ा34) रौशन कि उसमें सब चीज़ें नज़र आयें (फ़ा35) और कस्ब व मआ़श के काम ब-आसानी अन्जाम दे सको (फ़ा36) रात दिन के दौरे से (फ़ा37) दीनी व दुनियवी कामों के औक़ात का (फ़ा38) ख़्वाह उसकी हाजत दीन में हो या दुनिया में मुद्दआ़ यह है कि हर एक चीज़ की तफ़सील फ़रमा दी जैसा कि दूसरी आयत में इरशाद फ़रमाया मा फ़र्रत़्ना फ़िल्किताबि मिन शय्यिन् हम ने किताब में कुछ छोड़ न दिया और एक और आयत में इरशाद किया *व नज़्ज़ल्ना अ़लै-कल् किता-ब तिब्यानल्-लिकुल्लि शय्यिन्* ग़रज़ इन आयात से साबित है कि क़ुरआने करीम में जमीअ. अशिया का बयान है सुबहानल्लाह क्या किताब है कैसी इसकी जामेअ़ियत (जुमल, ख़ाज़िन व मदारिक वग़ैरह)

(बक़िया सफ़हा 465 का) चाहता है तकलीफ़ देते हैं इन हालतों में काफ़िर दुनिया व आख़िरत दोनों के टोटे में रहा और अगर दुनिया में उसको उसकी पूरी मुराद दे दी गई तो आख़िरत की बद नसीबी व शक़ावत तो जब भी है ब-ख़िलाफ़े मोमिन के जो आख़िरत का तलबगार है अगर वह दुनिया में फ़क़्र से भी बसर कर गया तो आख़िरत की दाइमी निअ़्मत उसके लिए है और अगर दुनिया में भी फ़ज़्ले इलाही से उसको ऐश मिला तो दोनों जहान में कामयाब ग़रज़ मोमिन हर हाल में कामयाब है और काफ़िर अगर दुनिया

में आराम पा भी ले तो भी क्या क्योंकि (फ़ा51) और अ़मले सालेह बजा लाये (फ़ा52) इस आयत से मालूम हुआ कि अमल की मक़बूलियत के लिए तीन चीज़ें दरकार हैं एक तो तालिबे आख़िरत होना यानी नीयत नेक दूसरे सई यानी अमल को ब-एहतेमाम उसके हुक़ूक़ के साथ अदा करना तीसरी ईमान जो सब से ज़्यादा ज़रूरी है। (फ़ा53) जो दुनिया चाहते हैं (फ़ा54) जो तालिबे आख़िरत हैं (फ़ा55) दुनिया में सब को रोज़ी देते हैं और अन्जाम हर एक का उसके हस्बे हाल (फ़ा56) दुनिया में सब उससे फ़ैज़ उठाते हैं नेक हों या बद

(बक़िया सफ़हा 466 का) कितना भी मुबालग़ा किया जाये लेकिन वालदैन के एहसान का हक़ अदा नहीं होता इस लिए बन्दे को चाहिए कि बारगाहे इलाही में उन पर फ़ज़्लो रहमत फ़रमाने की दुआ़ करे और अ़र्ज़ करे कि या रब मेरी ख़िदमतें उनके एहसान की जज़ा नहीं हो सकतीं तू उन पर करम कर कि उनके एहसान का बदला हो मसला इस आयत से साबित हुआ कि मुसलमान के लिए रहमत व मग़फ़िरत की दुआ़ जाइज़ और उसे फ़ाइदा पहुंचाने वाली है मुर्दों के ईसाले सवाब में भी उनके लिए दुआ़ए रहमत होती है लिहाज़ा उसके लिए यह आयत असल है मसला वालदैन काफ़िर हों तो उनके लिए हिदायत व ईमान की दुआ़ करे कि यही उनके हक़ में रहमत है। हदीस शरीफ़ में है कि वालदैन की रज़ा में अल्लाह तआ़ला की रज़ा और उनकी नाराज़ी में अल्लाह तआ़ला की नाराज़ी है। दूसरी हदीस में है वालदैन का फ़रमांबरदार जहन्नमी न होगा और उनका नाफ़रमान कुछ भी अमल करे गिरिफ़्तारे अ़ज़ाब होगा एक और हदीस में है सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया वालदैन की नाफ़रमानी से बचो इस लिए कि जन्नत की ख़ुश्बू हज़ार बरस की राह तक आती है और नाफ़रमान वह ख़ुश्बू न पाएगा न क़ातेअ़े रहम न बूढ़ा ज़िनाकार, न तकब्बुर से अपनी एज़ार टख़नों से नीचे लटकाने वाला। (फ़ा64) वालदैन की इताअ़त का इरादा और उनकी ख़िदमत का ज़ौक़ (फ़ा65) और तुम से वालदैन की ख़िदमत में तक़सीर वाक़ेअ़् हुई तो तुमने तौबा की (फ़ा66) उनके साथ सिला रहमी कर और मुहब्बत और मेल जोल और ख़बर गीरी और मौक़ा पर मदद और हुस्ने मुआ़शरत मसला और अगर वह महारिम में से हों और मुहताज हो जायें तो उन का ख़र्च उठाना यह भी उनका हक़ है और साहबे इस्तेताअ़त रिश्तेदार पर लाज़िम है बाज़ मुफ़स्सिरीन ने इस आयत की तफ़सीर में यह भी कहा है कि रिश्तेदारों से सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के साथ क़राबत रखने वाले मुराद हैं और उनका हक़ ख़ुम्स देना और उनकी ताज़ीम व तौक़ीर बजा लाना है (फ़ा67) उन का हक़ दो यानी ज़कात (फ़ा68) यानी नाजाइज़ काम में ख़र्च न कर हज़रत इब्ने मसऊद रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने फ़रमाया कि तब्ज़ीर माल का नाहक़ में ख़र्च करना है (फ़ा69) कि उनकी राह चलते हैं (फ़ा70) तो उसकी राह इख़्तियार न करना चाहिए (फ़ा71) यानी रिश्तेदारों और मिस्कीनों और मुसाफ़िरों से शाने नुज़ूल यह आयत महजअ़् व बिलाल व सुहैब व सालिम व ख़ब्बाब असहाबे रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की शान में नाज़िल हुई जो वक़्तन फ़वक़्तन सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से अपने हवाइज व ज़रूरियात के लिए सवाल करते रहते थे अगर किसी वक़्त हुज़ूर के पास कुछ न होता तो आप हयाअन उन से अेअ़्राज़ करते और ख़ामोश हो जाते बईं इन्तेज़ार कि अल्लाह तआ़ला कुछ भेजे तो उन्हें अ़ता फ़रमायें (फ़ा72) यानी उनकी ख़ुश दिली के लिए उनसे वादा कीजिये या उनके हक़ में दुआ़ फ़रमाइये। (फ़ा73) यह तमसील है जिससे इन्फ़ाक़ यानी ख़र्च करने में एतेदाल मलहूज़ रखने की हिदायत मन्ज़ूर है और यह बताया जाता है कि न तो इस तरह हाथ रोको कि बिल्कुल ख़र्च ही न करो और यह मालूम हो गोया कि हाथ गले से बांध दिया गया है देने के लिए हिल ही नहीं सकता ऐसा करना तो सबबे मलामत होता है कि बख़ील कन्जूस को सब बुरा कहते हैं और न ऐसा हाथ खोलो कि अपनी ज़रूरियात के लिए भी कुछ बाक़ी न रहे शाने नुज़ूल एक मुसलमान बीबी के सामने एक यहूदिया ने हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम की सख़ावत का बयान किया और उसमें इस हद तक मुबालग़ा किया कि हज़रत सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम पर तरजीह दे दी और कहा कि हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम की सख़ावत इस इन्तेहा पर पहुंची हुई थी कि अपने ज़रूरियात के अलावा जो कुछ भी उनके पास होता साइल को दे देने से दरेग़ न फ़रमाते यह बात मुसलमान बीबी को नागवार गुज़री और उन्होंने कहा कि अम्बिया अ़लैहिमुस्सलाम सब साहबे फ़ज़्ल व कमाल हैं हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम के जूदो नवाल में कुछ शुबह नहीं लेकिन सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम का मर्तबा सब से आला है और यह कह कर उन्होंने चाहा कि यहूदिया को हज़रत सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के जूदो करम की आज़माइश करा दी जाये चुनान्चे उन्होंने अपनी छोटी बच्ची को हुज़ूर अ़लैहिस्सलातु वस्सलाम की ख़िदमत में भेजा कि हुज़ूर से क़मीस मांग लाये उस वक़्त हुज़ूर के पास एक ही क़मीस थी जो ज़ेबे तन थी वही उतार कर अ़ता फ़रमा दी और अपने आप दौलत सराय अक़दस में तशरीफ़ रखी शर्म से बाहर तशरीफ़ न लाये यहां तक कि अज़ान का वक़्त आया अज़ान हुई सहाबा ने इन्तेज़ार किया हुज़ूर तशरीफ़ न लाये तो सब को फ़िक्र हुई हाल मालूम करने के लिए दौलत सराय अक़दस में हाज़िर हुए तो देखा कि जिस्मे मुबारक पर क़मीस नहीं है इस पर यह आयत नाज़िल हुई। (फ़ा74) जिसे चाहे उसके लिए तंगी करता और उसको

(बक़िया सफ़हा 467 का) लड़का लड़की दोनों के लिये पन्द्रह साल है, जबकि अलामते बुलूग़ न ज़ाहिर हों, और अक़्ले मुद्दत लड़की के लिऐ नौ साल लड़के के लिये बारह साल है। (फ़ा83) यानी जिस चीज़ को देखा न हो उसे यह न कहो कि मैंने देखा जिसको सुना न हो उसकी निस्बत न कहो कि मैंने सुना इब्ने हनीफ़ा से मन्क़ूल है कि झूठी गवाही न दो इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा ने फ़रमाया किसी पर वह इलज़ाम न लगाओ जो तुम न जानते हो। (फ़ा84) कि तुमने उन से क्या काम लिया (फ़ा85) तकब्बुर व ख़ुदनुमाई से (फ़ा86) माना यह हैं कि तकब्बुर व ख़ुद नुमाई से कुछ फ़ायदा नहीं। (फ़ा87) जिनकी सेहत पर अक़्ल गवाही दे और उनसे नफ़्स की इस्लाह हो उनकी रिआ़यत लाज़िम है बाज़ मुफ़स्सिरीन ने फ़रमाया कि इन आयात का हासिल तौहीद

और नेकियों और ताअ़तों का हुक्म देना और दुनिया से बे-रग़बती और आख़िरत की तरफ़ रग़बत दिलाना है। हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा ने फ़रमाया यह अट्ठारह आयतें *ला तज्अ़ल् म-अ़ल्लाहि इलाहन आ-ख़-र* से मद्हूरा तक हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलातु वस्सलाम के अलवाह में थीं उनकी इब्तेदा तौहीद के हुक्म से हुई और इन्तेहा शिर्क की मुमानअ़त पर इससे मालूम हुआ कि हर हिकमत की असल तौहीद व ईमान है और कोई क़ौल व अ़मल बग़ैर उसके क़ाबिले पज़ीराई नहीं।

(बक़िया सफ़हा 468 का) ज़िन्दगी उसके हस्बे हैसियत है मुफ़स्सिरीन ने कहा कि दरवाज़ा खोलने की आवाज़ और छत का चटख़ना यह भी तस्बीह करना है और उन सबकी तस्बीह सुब्हानल्लाह व बेहम्दिही है हज़रत इब्ने मसऊद रज़ियल्लाहु अ़न्हु से मन्क़ूल है कि रसूले करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की अंगुश्त मुबारक से पानी के चश्मे जारी होते हम ने देखे और यह भी हमने देखा कि खाते वक़्त में खाना तस्बीह करता था (बुख़ारी शरीफ़) हदीस शरीफ़ में है सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि मैं उस पत्थर को पहचानता हूं जो मेरी बेअ़्सत के ज़माना में मुझे सलाम किया करता था (मुस्लिम शरीफ़) इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अ़न्हु से मरवी है रसूले करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम लकड़ी के एक सुतून से तकिया फ़रमा कर खुतबा फ़रमाया करते थे जब मिम्बर बनाया गया और हुज़ूर मिम्बर पर जलवा अफ़रोज़ हुए तो वह सुतून रोया हुज़ूर अ़लैहिस्सलातु वस्सलाम ने उस पर दस्ते करम फेरा और शफ़क़त फ़रमाई और तस्कीन दी (बुख़ारी शरीफ़) इन तमाम अहादीस से जमाद का कलाम और तस्बीह करना साबित हुआ। (फ़ा97) इख़्तिलाफ़े लुग़ात के बाइस या दुश्वारीए इदराक के सबब। (फ़ा98) कि बन्दों की ग़फ़लत पर अ़ज़ाब में जल्दी नहीं फ़रमाता। (फ़ा99) कि वह आपको देख न सकें **शाने नुज़ूलः** जब आयत तब्बत् यदा नाज़िल हुई तो अबू लहब की औरत पत्थर लेकर आई हुज़ूर मअ़ हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अ़न्हु के तशरीफ़ रखते थे उसने हुज़ूर को न देखा और हज़रत सिद्दीक़े अकबर रज़ियल्लाहु अ़न्हु से कहने लगी तुम्हारे आक़ा कहां हैं मुझे मालूम हुआ है उन्होंने मेरी हिज्व की है हज़रत सिद्दीक़े अकबर रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने फ़रमाया वह शेअ़र गोई नहीं करते हैं तो वह यह कहती हुई वापस हुई कि मैं उनका सर कुचलने के लिए यह पत्थर लाई थी। हज़रत सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से अ़र्ज़ किया कि उसने हुज़ूर को देखा नहीं फ़रमाया मेरे और उसके दर्मियान एक फ़रिश्ता हाइल रहा इस वाक़िआ़ के मुतअ़ल्लिक़ यह आयत नाज़िल हुई (फ़ा100) गिरानी जिस के बाइस वह क़ुरआन शरीफ़ नहीं सुनते (फ़ा101) यानी सुनते भी हैं तो तमस्ख़ुर और तकज़ीब के लिए

(बक़िया सफ़हा 469 का) अगर बेहूदगी करें तो उनका जवाब उन्हीं के अन्दाज़ में न दिया जाये शाने नुज़ूल मुशरिकीन मुसलमानों के साथ बद कलामियां करते और उन्हें ईज़ायें देते थे उन्होंने सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से उसकी शिकायत की इस पर यह आयत नाज़िल हुई और मुसलमानों को बताया गया कि वह कुफ़्फ़ार की जाहिलाना बातों का वैसा ही जवाब न दें सब्र करें और यह्दीकुमुल्लाहु कह दें यह हुक्म क़िताल व जिहाद के हुक्म से पहले था बाद को मन्सूख़ हो गया और इरशाद फ़रमाया गया *या अय्युहन्नबिय्यु जाहिदिल् कुफ़्फ़ा-र वल्-मुनाफ़िक़ी-न वग़्लुज़् अ़लैहिम्* और एक क़ौल यह है कि यह आयत हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अ़न्हु के हक़ में नाज़िल हुई एक काफ़िर ने उनकी शान में बेहूदा कलिमा ज़बान से निकाला था अल्लाह तआ़ला ने उन्हें सब्र करने और माफ़ फ़रमाने का हुक्म दिया (फ़ा112) और तुम्हें तौबा और ईमान की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाये (फ़ा113) कि तुम उनके आमाल के ज़िम्मेदार होते (फ़ा114) सब के अहवाल को और उसको कि कौन किस लायक़ है (फ़ा115) मख़्सूस फ़ज़ाइल के साथ जैसे कि हज़रत इब्राहीम को ख़लील किया और हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम को कलीम और सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को हबीब (फ़ा116) ज़बूर किताबे इलाही है जो हज़रत दाऊद अ़लैहिस्सलातु वस्सलाम पर नाज़िल हुई इसमें एक सौ पचास सूरतें हैं सब में दुआ़ और अल्लाह तआ़ला की हम्दो सना और उसकी तहमीद व तमजीद है न उसमें हलाल व हराम का बयान न फ़राइज़ न हुदूद व अहकाम इस आयत में ख़ुसूसियत के साथ हज़रत दाऊद अ़लैहिस्सलाम का नाम लेकर ज़िक्र फ़रमाया गया मुफ़स्सिरीन ने इसके चन्द वुजूह बयान किये हैं एक यह कि इस आयत में बयान फ़रमाया गया कि अम्बिया में अल्लाह तआ़ला ने बाज़ को बाज़ पर फ़ज़ीलत दी फिर इरशाद किया कि हज़रत दाऊद को ज़ुबूर अ़ता की बावजूदे कि हज़रत दाऊद अ़लैहिस्सलाम को नबुव्वत के साथ मुल्क भी अ़ता किया था लेकिन उसका ज़िक्र न फ़रमाया इस में तम्बीह है कि आयत में जिस फ़ज़ीलत का ज़िक्र है वह फ़ज़ीलते इल्म है न कि फ़ज़ीलते मुल्क व माल दूसरी वजह यह है कि अल्लाह तआ़ला ने ज़बूर में फ़रमाया है कि मुहम्मद ख़ातिमुल अम्बिया हैं और उनकी उम्मत ख़ैरुलउमम इसी सबब से आयत में हज़रत दाऊद और ज़बूर का ज़िक्र ख़ुसूसियत से फ़रमाया गया तीसरी वजह यह है कि यहूद का गुमान था कि हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम के बाद कोई नबी नहीं और तौरेत के बाद कोई किताब नहीं इस आयत में हज़रत दाऊद अ़लैहिस्सलाम को ज़बूर अ़ता फ़रमाने का ज़िक्र करके यहूद की तकज़ीब कर दी गई और उनके दावे का बुतलान ज़ाहिर फ़रमा दिया गया ग़रज़ कि यह आयत सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की फ़ज़ीलते कुबरा पर दलालत करती है *क़तअ़- ई वस्फ़ तू दर किताबे मूसा----वय नअ़्त तू दर ज़बूर दाऊद मकसूद तूई ज़े आफ़रीनश बाक़ी ब-तुफ़ैल तुस्त मौजूद*।

(बक़िया सफ़हा 470 का) ज़्यादा मुक़र्रब हो उसको वसीला बनायें मसला इससे मालूम हुआ कि मुक़र्रब बन्दों को बारगाहे इलाही में वसीला बनाना जाइज़ और अल्लाह के मक़बूल बन्दों का यही तरीक़ा है (फ़ा120) काफ़िर उन्हें किस तरह मअ़्बूद समझते हैं (फ़ा121) क़त्ल वग़ैरह के साथ जब वह कुफ़्र करें और मआ़सी में मुब्तला हों हज़रत इब्ने मसऊद रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने फ़रमाया जब किसी बस्ती में ज़िना और सूद की कसरत होती है तो अल्लाह तआ़ला उसके हलाक का हुक्म देता है। (फ़ा122) लौहे महफ़ूज़

में (फ़ा123) इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा ने फ़रमाया कि अहले मक्का ने नबीए करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से कहा था कि सफ़ा पहाड़ को सोना कर दें और पहाड़ों को सरज़मीने मक्का से हटा दें इस पर अल्लाह तआ़ला ने अपने रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को वही फ़रमाई कि आप फ़रमायें तो आपकी उम्मत को मुहलत दी जाये और अगर आप फ़रमायें तो जो उन्होंने तलब किया है वह पूरा किया जाये लेकिन अगर फिर भी वह ईमान न लाये तो उनको हलाक करके नेस्त व नाबूद कर दिया जायेगा इस लिए कि हमारी सुन्नत यही है कि जब कोई क़ौम निशानी तलब करके ईमान नहीं लाती तो हम उसे हलाक कर देते हैं और मुहलत नहीं देते ऐसा ही हमने पहलों के साथ किया है इसी बयान में यह आयत नाज़िल हुई (फ़ा124) उनके हस्बे तलब (फ़ा125) यानी हुज्जते वाज़िहा (फ़ा126) और कुफ़्र किया कि उसके मिनल्लाह होने से मुन्किर हो गए (फ़ा127) जल्द आने वाले अ़ज़ाब से (फ़ा128) उसके क़ब्ज़ए क़ुदरत में तो आप तब्लीग़ फ़रमाइये और किसी का ख़ौफ़ न कीजिये अल्लाह आपका निगहबान है (फ़ा129) यानी मुआ़इना अ़जाइबे आयाते इलाहिया का (फ़ा130) शबे मेअ़्राज बहालते बेदारी (फ़ा131) यानी अहले मक्का की चुनान्चे जब सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने उन्हें वाक़िअ़ए मेअ़्राज की ख़बर दी तो उन्होंने उसकी तकज़ीब की और बाज़ मुरतद हो गए और तमस्ख़ुर से इमारते बैतुल मक़दिस का नक़्शा दरियाफ़्त करने लगे हुज़ूर ने सारा नक़्शा बता दिया तो उस पर कुफ़्फ़ार आपको साहिर कहने लगे (फ़ा132) यानी दरख़्त ज़क़्क़ूम जो जहन्नम में पैदा होता है उसको सबबे आज़माइश बना दिया यहां तक कि अबू जेहल ने कहा कि मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम तुम को जहन्नम की आग से डराते हैं कि वह पत्थरों को जला देगी फिर यह भी फ़रमाते हैं कि उस में दरख़्त उगेंगे आग में दरख़्त कहां रह सकता है यह एतेराज़ उन्होंने किया और क़ुदरते इलाही से ग़ाफ़िल रहे न समझे कि उस क़ादिरे मुख़्तार की क़ुदरत से आग में दरख़्त पैदा करना कुछ बईद नहीं समन्दल एक कीड़ा होता है जो आग में पैदा होता है आग ही में रहता है बिलादे तुर्क में उसके ऊन की तौलियां बनाई जाती थीं जो मैली हो जाने पर आग में डाल कर साफ़ कर ली जातीं और जलती न थीं शुतुर मुर्ग़ अंगारे खा जाता है अल्लाह की क़ुदरत से आग में दरख़्त पैदा करना क्या बईद है। (फ़ा133) दीनी और दुनियवी ख़ौफ़नाक उमूर से (फ़ा134) तहिय्यत का (फ़ा136) शैतान (फ़ा136) और उसको मुझ पर फ़ज़ीलत दी और उसको सजदा कराया तो मैं क़सम खाता हूं कि

(बक़िया सफ़हा 471 का) औलाद में शैतान की शिरकत है (फ़ा143) अपनी ताअ़त पर (फ़ा144) नेक मुख़्लिस अम्बिया और असहाबे फ़ज़्लो सलाह (फ़ा145) उन्हें तुझ से महफ़ूज़ रखेगा और शैतानी मकाइद और वसाविस को दफ़्अ़ फ़रमाएगा (फ़ा146) उन में तिजारतों के लिए सफ़र करके। (फ़ा147) और डूबने का अन्देशा होता है (फ़ा148) और उन झूठे मअ़्बूदों में से किसी का नाम ज़बान पर नहीं आता उस वक़्त अल्लाह तआ़ला से हाजत रवाई चाहते हैं। (फ़ा149) उसकी तौहीद से और फिर उन्हीं नाकारा बुतों की परस्तिश शुरू कर देते हो (फ़ा150) दरिया से नजात पाकर (फ़ा151) जैसा कि क़ारून को धंसा दिया था मक़सद यह है कि ख़ुश्की व तरी सब उसके तहते क़ुदरत हैं जैसा वह समुन्दर में ग़र्क़ करने और बचाने दोनों पर क़ादिर है ऐसा ही ख़ुश्की में भी ज़मीन के अन्दर धंसा देने और महफ़ूज़ रखने दोनों पर क़ादिर है ख़ुश्की हो या तरी हर कहीं बन्दा उसकी रहमत का मुहताज है वह ज़मीन में धंसाने पर भी क़ादिर है और यह भी क़ुदरत रखता है कि (फ़ा152) जैसा क़ौमे लूत पर भेजा था (फ़ा153) जो तुम्हें बचा सके (फ़ा154) और हमसे दरियाफ़्त कर सके कि हमने ऐसा क्यों किया क्योंकि हम क़ादिरे मुख़्तार हैं जो चाहते हैं करते हैं हमारे काम में कोई दख़ल देने वाला और दम मारने वाला नहीं। (फ़ा155) अक़्ल व इल्म व गोयाई पाकीज़ा सूरत मोअ़्तदिल क़ामत और मआ़श व मआ़द की तदाबीर और तमाम चीज़ों पर इस्तीला व तस्ख़ीर अ़ता फ़रमा कर और इसके अलावा बहुत सी फ़ज़ीलतें देकर। (फ़ा156) जानवरों और दूसरी सवारियों और कश्तियों और जहाज़ों वग़ैरह में।

(बक़िया सफ़हा 472 का) ने अक़्ल को शह्वत पर ग़ालिब किया वह मलाइका से अफ़ज़ल है और जिसने शह्वत को अक़्ल पर ग़ालिब किया वह बहाइम से बदतर है (फ़ा159) जिसका वह दुनिया में इत्तेबाअ़ करता था हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा ने फ़रमाया इससे वह इमामे ज़मां मुराद है जिसकी दावत पर दुनिया में लोग चले ख़्वाह उसने हक़ की दावत की हो या बातिल की। हासिल यह है कि हर क़ौम अपने सरदार के पास जमा होगी जिसके हुक्म पर दुनिया में चलती रही और उन्हें उसी के नाम से पुकारा जाएगा कि ऐ फ़लाँ के मुत्तबेईन (फ़ा160) नेक लोग जो दुनिया में साहबे बसीरत थे और राहे रास्त पर रहे उनको उनका नामए आमाल दाहिने हाथ में दिया जाएगा वह उसमें नेकियां और ताअ़तें देखेंगे तो उसको ज़ौक़ व शौक़ से पढ़ेंगे और जो बद-बख़्त हैं कुफ़्फ़ार हैं उनके नामए आमाल बायें हाथ में दिये जायेंगे वह उन्हें देख कर शर्मिन्दा होंगे और दहशत से पूरी तरह पढ़ने पर क़ादिर न होंगे (फ़ा161) यानी सवाब आमाल में उन से अदना भी कमी न की जाएगी (फ़ा162) दुनिया की हक़ के देखने से। (फ़ा163) नजात की राह से माना यह हैं कि जो दुनिया में काफ़िर गुमराह है वह आख़िरत में अन्धा होगा क्योंकि दुनिया में तौबा मक़बूल है और आख़िरत में तौबा मक़बूल नहीं। (फ़ा164) शाने नुज़ूलः सक़ीफ़ का एक वफ़्द सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के पास आकर कहने लगा कि अगर आप तीन बातें मन्ज़ूर कर लें तो हम आपकी बैअ़त करलें एक तो यह कि नमाज़ में झुकेंगे नहीं यानी रुकूअ़ सज्दा न करेंगे दूसरी यह कि हम अपने बुत अपने हाथों से न तोड़ेंगे तीसरे यह कि लात को पूजेंगे तो नहीं मगर एक साल उससे नफ़ा उठा लें कि उसके पूजने वाले जो नज़रें चढ़ावे लायें उसको वसूल करलें सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया उस दीन में कुछ भलाई नहीं जिस में रुकूअ़ सज्दा न हो और बुतों को तोड़ने की बाबत तुम्हारी मर्ज़ी और लातो उज़्ज़ा से फ़ाइदा उठाने की इजाज़त मैं हरगिज़ न दूंगा वह कहने लगे या रसूलल्लाह (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) हम चाहते यह हैं कि आपकी तरफ़ से हमें ऐसा एज़ाज़ मिले जो दूसरों को न मिला

हो ताकि हम फ़ख़्र कर सकें इसमें अगर आपको अन्देशा हो कि अ़रब शिकायत करेंगे तो आप उनसे कह दीजियेगा कि अल्लाह का हुक्म ही ऐसा था इस पर यह आयत नाज़िल हुई। (फ़ा165) मअ़सूम करके (फ़ा166) के अ़ज़ाब (फ़ा167) यानी अ़रब से शाने नुज़ूल मुशरिकीन ने इत्तेफ़ाक़ करके चाहा कि सब मिल कर सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को सरज़मीने अ़रब से बाहर करदें लेकिन अल्लाह तआ़ला ने उनका यह इरादा पूरा न होने दिया और उनकी यह मुराद बर न आई इस वाक़िआ़ के मुतअ़ल्लिक़ यह आयत नाज़िल हुई। (ख़ाज़िन) (फ़ा168) और जल्द हलाक कर दिये जाते (फ़ा169) यानी जिस क़ौम ने अपने दर्मियान से अपने रसूल को निकाला उनके लिए सुन्नते इलाही यही रही कि उन्हें हलाक कर दिया (फ़ा170) इस में .ज़ुहर से इशा तक की चार नमाज़ें आ गईं। (फ़ा171) इससे नमाज़ फ़ज्र मुराद है और उसको क़ुरआन इस लिए फ़रमाया गया कि क़िराअत एक रुक्न है और ज़ुज़ से कुल तअ़बीर किया जाता है जैसा कि क़ुरआने करीम में नमाज़ को रुकूअ़ व सुजूद से भी तअ़बीर किया गया है मसला इससे मालूम हुआ कि क़िराअत नमाज़ का रुक्न हैं (फ़ा172) यानी नमाज़े फ़ज्र में रात के फ़रिश्ते भी मौजूद होते हैं और दिन के फ़रिश्ते भी आ जाते हैं (फ़ा173) तहज्जुद नमाज़ के लिए नींद को छोड़े या बाद इशा सोने के बाद जो नमाज़ पढ़ी जाये उसको कहते हैं नमाज़ तहज्जुद की हदीस शरीफ़ में बहुत फ़ज़ीलतें आई हैं नमाज़े तहज्जुद सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम पर फ़र्ज़ थी जम्हूर का यही क़ौल है हुज़ूर की उम्मत के लिये यह नमाज़ सुन्नत है मसला तहज्जुद की कम से कम दो रकअ़तें और मुतवस्सित चार और ज़्यादा आठ हैं और सुन्नत यह है कि दो दो रकअ़त की नीयत से पढ़ी जायें मसला अगर आदमी शब की एक तिहाई इबादत करना चाहे और दो तिहाई सोना तो शब के तीन हिस्से करले दर्मियानी तिहाई में तहज्जुद पढ़ना अफ़ज़ल है और अगर चाहे कि आधी रात सोये आधी रात इबादत करे तो निस्फ़ अख़ीर अफ़ज़ल है मसला जो शख़्स नमाज़े तहज्जुद का आ़दी हो उसके लिए तहज्जुद तर्क करना मकरूह है जैसा कि बुख़ारी व मुस्लिम की हदीस शरीफ़ में है (रद्दुलमुहतार)

(बक़िया सफ़हा 473 का) अ़ता फ़रमा जिससे मैं तेरे दुश्मनों पर ग़ालिब हूं और वह हुज्जत जिससे मैं हर मुख़ालिफ़ पर फ़तह पाऊँ और वह ग़लबए ज़ाहिरा जिससे मैं तेरे दीन को तक़वियत दूं। यह दुआ़ क़बूल हुई और अल्लाह तआ़ला ने अपने हबीब से उनके दीन को ग़ालिब करने और उन्हें दुश्मनों से महफ़ूज़ रखने का वादा फ़रमाया। (फ़ा177) यानी इस्लाम आया और कुफ़्र मिट गया या क़ुरआन आया और शैतान हलाक हुआ (फ़ा178) क्योंकि अगरचे बातिल को किसी वक़्त में दौलत व सौलत हासिल हो मगर उसको पाइदारी नहीं उसका अन्जाम बरबादी व ख़्वारी है। हज़रत इब्ने मसऊद रज़ियल्लाहु अ़न्हु से मरवी है कि नबीए करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम रोज़े फ़तह मक्का मुकर्रमा में दाख़िल हुए तो कअ़बा मुक़द्दसा के गिर्द तीन सौ साठ बुत नसब किये हुए थे जिन को लोहे और रांग से जोड़ कर मज़बूत किया गया था सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के दस्ते मुबारक में एक लकड़ी थी हुज़ूर यह आयत पढ़कर उस लकड़ी से जिस बुत की तरफ़ इशारा फ़रमाते जाते थे वह गिरता जाता था (फ़ा179) सूरतें और आयतें (फ़ा180) कि इससे अमराज़े ज़ाहिरा और बातिना ज़लालत व जहालत वग़ैरह दूर होते हैं और ज़ाहिरी व बातिनी सेहत हासिल होती है एतेक़ादाते बातिला व अख़्लाक़े रज़ीला दफ़अ़ होते हैं और अ़क़ाइदे हक़्क़ा व मआ़रिफ़े इलाहिया व सिफ़ाते हमीदा व अख़्लाक़े फ़ाज़िला हासिल होते हैं क्योंकि यह किताब मजीद ऐसे उलूम व दलाइल पर मुश्तमिल है जो वहमानी व शैतानी ज़ुल्मतों को अपने अनवार से नेस्तो नाबूद कर देते हैं और इसका एक एक हरफ़ बरकात का गन्जीना है जिससे जिस्मानी अमराज़ और आसेब दूर होते हैं (फ़ा181) यानी काफ़िरों को जो इसकी तकज़ीब करते हैं (फ़ा182) यानी काफ़िर पर कि उसको सेहत और वुसअ़त अ़ता फ़रमाते हैं तो वह हमारे ज़िक्र व दुआ़ और ताअ़त व अदाए शुक्र से (फ़ा183) यानी तकब्बुर करता है। (फ़ा184) कोई शिद्दत व ज़रर और कोई फ़क़्र व हादसा तो तज़र्रुअ़ व ज़ारी से दुआ़यें करता है और उन दुआ़ओं के क़बूल का असर ज़ाहिर नहीं होता। (फ़ा185) मोमिन को ऐसा न चाहिए अगर इजाबते दुआ़ में ताख़ीर हो तो वह मायूस न हो अल्लाह तआ़ला की रहमत का उम्मीदवार है। (फ़ा186) हम अपने तरीक़ा पर तुम अपने तरीक़ा पर जिस का जौहरे ज़ात शरीफ़ व ताहिर है इससे अफ़आ़ले जमीला व अख़्लाक़े पाकीज़ा सादिर होते हैं और जिस का नफ़्स ख़बीस है उससे अफ़आ़ले ख़बीसा रद्दिया सरज़द होते हैं। (फ़ा187) क़ुरैश मश्वरा के लिए जमा हुए और उनमें बाहम गुफ़्तगू यह हुई कि मुहम्मद मुस्तफ़ा (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) हम में रहे और कभी हम ने उनको सिद्क़ व अमानत में कमज़ोर न पाया कभी उन पर तोहमत लगाने का मौक़ा हाथ न आया अब उन्होंने नबुव्वत का दावा कर दिया तो उनकी सीरत और उनके चाल चलन पर कोई ऐब लगाना तो मुमकिन नहीं है यहूद से पूछना चाहिये कि ऐसी हालत में क्या किया जाये इस मतलब के लिए एक जमाअ़त यहूद के पास भेजी गई यहूद ने कहा कि उन से तीन सवाल करो अगर तीनों के जवाब न दें तो वह नबी नहीं और अगर तीनों का जवाब दे दें जब भी नबी नहीं और अगर दो का जवाब दे दें एक का जवाब न दें तो वह सच्चे नबी हैं वह तीन सवाल यह हैं असहाबे कहफ़ का वाक़िआ़ ज़ुलक़रनैन का वाक़िआ़ और रूह का हाल चुनान्चे क़ुरैश ने हुज़ूर से यह सवाल किये आपने असहाबे कहफ़ और ज़ुलक़रनैन के वाक़िआ़त तो मुफ़स्सल बयान फ़रमा दिये और रूह का मुआ़मला इबहाम में रखा जैसा कि तौरेत में मुबहम रखा गया था क़ुरैश यह सवाल करके नादिम हुए इसमें इख़्तिलाफ़ है कि सवाल हक़ीक़ते रूह से था या उसकी मख़्लूक़ियत से जवाब दोनों का हो गया और आयत में यह भी बता दिया गया कि मख़्लूक़ का इल्म इल्मे इलाही के सामने क़लील है अगरचे मा ऊतीतुम् का ख़िताब यहूद के साथ ख़ास हो (फ़ा188) यानी क़ुरआने करीम को सीनों और सहीफ़ों से महव कर देते और इसका कोई असर बाक़ी न छोड़ते (फ़ा189) कि क़ियामत तक इसको बाक़ी रखा और हर तग़य्युर व तबद्दुल से महफ़ूज़ फ़रमाया हज़रत इब्ने मसऊद रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने फ़रमाया कि क़ुरआन पाक ख़ूब पढ़ो इससे पहले कि क़ुरआन

पाक उठा लिया जाये क्यों कि क़ियामत क़ाइम न होगी जब तक कि क़ुरआने पाक न उठाया जाये (फ़ा190) कि उसने आप पर क़ुरआने करीम नाज़िल फ़रमाया और इसको बाक़ी व महफ़ूज़ रखा और आपको तमाम बनीए आदम का सरदार और ख़ातेमुन्नबीईन किया और मक़ामे महमूद अ़ता फ़रमाया (फ़ा191) बलाग़त और हुस्ने नज़्म व तरतीब और उलूमे ग़ैबिया व मआ़रिफ़े इलाहिया में से किसी कमाल में

(बक़िया सफ़हा 474 का) बुरा कहा हमारे दीन को ऐब लगाये हमारे दानिश्मन्दों को कम अ़क़्ल ठहराया मअ़बूदों की तौहीन की जमाअ़त मुतफ़र्रिक़ कर दी कोई बुराई उठा न रखी इससे तुम्हारी ग़रज़ क्या है अगर तुम माल चाहते हो हो तो हम तुम्हारे लिए इतना माल जमा करदें कि हमारी क़ौम में तुम सब से ज़्यादा मालदार हो जाओ अगर एज़ाज़ चाहते हो तो हम तुम्हें अपना सरदार बना लें अगर मुल्क व सल्तनत चाहते हो तो हम तुम्हें बादशाह तस्लीम करलें यह सब बातें करने के लिए हम तैयार हैं और अगर तुम्हें कोई दिमाग़ी बीमारी हो गई है या कोई ख़लिश हो गया है तो हम तुम्हारा इलाज करें और इसमें जिस क़दर ख़र्च हो उठायें। सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया इन में से कोई बात नहीं और मैं माल व सल्तनत व सरदारी किसी चीज़ का तलबगार नहीं वाक़िआ़ सिर्फ़ इतना है कि अल्लाह तआ़ला ने मुझे रसूल बना कर भेजा और मुझ पर अपनी किताब नाज़िल फ़रमाई और हुक्म दिया कि मैं तुम्हें उसके मानने पर अल्लाह की रज़ा और निअ़्मते आख़िरत की बशारत दूं और इन्कार करने पर अ़ज़ाबे इलाही का ख़ौफ़ दिलाऊँ मैंने तुम्हें अपने रब का पयाम पहुंचाया अगर तुम इसे क़बूल करो तो यह तुम्हारे लिए दुनिया व आख़िरत की खुश नसीबी है और न मानो तो मैं सब्र करूंगा और अल्लाह के फ़ैसला का इन्तेज़ार करूंगा इस पर उन लोगों ने कहा कि ऐ मुहम्मद (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) अगर आप हमारे मअ़रूज़ात को क़बूल नहीं करते हैं तो उन पहाड़ों को हटा दीजिये और मैदान साफ़ निकाल दीजिये और नहरें जारी कर दीजिये और हमारे मरे हुए बाप दादा को ज़िन्दा कर दीजिये हम उन से पूछ देखें कि आप जो फ़रमाते हैं क्या यह सच है अगर वह कह देंगे तो हम मान लेंगे हु. जूर ने फ़रमाया मैं इन बातों के लिए नहीं भेजा गया जो पहुंचाने के लिए मैं भेजा गया हूं वह मैंने पहुंचा दिया अगर तुम मानो तुम्हारा नसीब न मानो तो मैं खुदाई फ़ैसला का इन्तेज़ार करूंगा कुफ़्फ़ार ने कहा फिर आप अपने रब से अ़र्ज़ कर के एक फ़रिश्ता बुलवा लीजिये जो आपकी तस्दीक़ करे और अपने लिए बाग़ और महल और सोने चांदी के ख़ज़ाने तलब कीजिये फ़रमाया मैं इस लिए नहीं भेजा गया मैं बशीर नज़ीर बना कर भेजा गया हूं इस पर कहने लगे तो हम पर आसमान गिरवा दीजिये और बाज़े उन में से यह बोले कि हम हरगिज़ ईमान न लायेंगे जब तक आप अल्लाह को और फ़रिश्तों को हमारे सामने न लाईये उस पर सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम उस मजलिस से उठ आये और अ़ब्दुल्लाह बिन उमैया आपके साथ उठा और आप से कहने लगा खुदा की क़सम मैं कभी आप पर ईमान न लाऊँगा जब तक तुम सीढ़ी लगा कर आसमान पर न चढ़ो और मेरी नज़रों के सामने वहां से एक किताब और फ़रिश्तों की एक जमाअ़त लेकर न आओ और खुदा की क़सम अगर यह भी करो तो मैं समझता हूं कि मैं फिर भी न मानूंगा रसूले करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने जब देखा कि यह लोग इस क़दर ज़िद और अ़ेनाद में हैं और उनकी हक़े दुश्मनी हद से गुज़र गई है तो आपको उनकी हालत पर रंज हुआ इस पर यह आयते करीमा नाज़िल हुई। (फ़ा195) जो हमारे सामने तुम्हारे सिद्क़ की गवाही दें। (फ़ा196) मेरा काम अल्लाह का पैग़ाम पहुंचा देना है वह मैंने पहुंचा दिया अब जिस क़दर मोअ़जेज़ात व आयात यक़ीन व इत्मीनान के लिए दरकार हैं उन से बहुत ज़्यादा मेरा परवरदिगार ज़ाहिर फ़रमा चुका हुज्जत ख़त्म हो गई अब यह समझ लो कि रसूल के इन्कार करने और आयाते इलाहिया से मुकरने का क्या अन्जाम होता है। (फ़ा197) रसूलों को बशर ही जानते रहे और उनके मन्सबे नबुव्वत और अल्लाह तआ़ला के अ़ता फ़रमाये हुए कमालात के मुक़िर और मुअ़्तरिफ़ न हुए यही उनके कुफ़्र की असल थी और इसी लिए वह कहा करते थे कि कोई फ़रिश्ता क्यों नहीं भेजा गया इस पर अल्लाह तआ़ला अपने हबीब सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से फ़रमाता है कि ऐ हबीब उन से (फ़ा198) वही उसमें बसते (फ़ा199) क्योंकि वह उनकी जिन्स से होता लेकिन जब ज़मीन में आदमी बसते हैं तो उनका मलाइका में से रसूल तलब करना निहायत ही बेजा है। (फ़ा200) मेरे सिद्क़ व अदाए फ़र्ज़े रिसालत और तुम्हारे किज़्ब व अदावत पर।

(बक़िया सफ़हा 475 का) तआ़ला ने उसको हल फ़रमा दिया, दरिया का फटना और उसमें रस्ते बनना, तूफ़ान, टिड्डी, घुन, मेंढक, ख़ून इन में से छः आख़िर का मुफ़स्सल बयान नवें पारे के छटे रुकूअ. में गुज़र चुका (फ़ा211) यानी हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम (फ़ा212) यानी मआ़ज़ल्लाह जादू के असर से तुम्हारी अ़क़्ल बजा न रही या मसहूर साहिर के माना में है और मतलब यह है कि यह अ़जाइब जो आप दिखलाते हैं यह जादू के करिश्मा हैं इस पर हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम ने। (फ़ा213) ऐ फ़िरऔ़न मुआ़निद (फ़ा214) कि इन आयात से मेरा सिद्क़ और मेरा ग़ैर मसहूर होना और इन आयात का खुदा की तरफ़ से होना ज़ाहिर है (फ़ा215) यह हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम की तरफ़ से फ़िरऔ़न के उस क़ौल का जवाब है कि उसने आपको मसहूर कहा था मगर उसका क़ौल किज़्ब व बातिल था जिसे वह खुद भी जानता था मगर उसके इनाद ने उससे कहलाया और आपका इरशाद हक़ व सही चुनान्चे वैसा ही वाक़ेअ़ हुआ (फ़ा216) यानी हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम को और उन की क़ौम को मिस्र की। (फ़ा217) और हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम को और उनकी क़ौम को हमने सलामती अ़ता फ़रमाई।

(बक़िया सफ़हा 476 का) कर वह बुज़ुर्ग ग़ाइब हो गए उन साहिबों ने वापस होकर इब्ने समाक से वाक़िआ़ बयान किया उन्होंने मक़ामे दर्द पर हाथ रख कर यह कलिमे पढ़े फ़ौरन आराम हो गया और इब्ने समाक ने फ़रमाया कि वह हज़रत ख़िज़्र थे अ़ला नबीय्यिना व अ़लैहिस्सलाम। (फ़ा222) तेईस साल के अर्सा में (फ़ा223) ताकि उसके मज़ामीन ब-आसानी सुनने वालों

के ज़ेहन-नशीन होते रहें (फ़ा224) हस्बे इक़्तज़ाए मसालेह व हवादिस (फ़ा225) और अपने लिए निअ़्मते आख़िरत इख़्तियार करो या अ़ज़ाबे जहन्नम (फ़ा226) यानी मोमिनीन अहले किताब जो रसूले करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की बेअ़्सत से पहले इन्तेज़ार व जुस्तजू में थे हुज़ूर अ़लैहिस्सलातु वस्सलाम की बेअ़्सत के बाद शरफ़े इस्लाम से मुशर्रफ़ हुए जैसे कि ज़ैद बिन अ़म्र बिन नफ़ील और सलमान फ़ारसी और अबू ज़र वग़ैरहुम रज़ियल्लाहु अ़न्हुम। (फ़ा227) जो उसने अपनी पहली किताबों में फ़रमाया था कि नबीए आख़िरुज़्ज़माँ मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को मबऊस फ़रमायेंगे (फ़ा228) अपने रब के हुज़ूर इज्ज़ व नियाज़ से नर्म दिली से (फ़ा229) **मसलाः** क़ुरआने करीम की तिलावत के वक़्त रोना मुस्तहब है तिर्मिज़ी व नेसाई की हदीस में है कि वह शख़्स जहन्नम में न जाएगा जो ख़ौफ़े इलाही से रोये। (फ़ा230) **शाने नुज़ूलः** हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा ने फ़रमाया एक शब सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने तवील सज्दा किया और अपने सज्दा में या अल्लाहु या रहमानु फ़रमाते रहे अबू जहल ने सुना तो कहने लगा कि (हज़रत) मुहम्मद मुस्तफ़ा (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) हमें तो कई मअ़्बूदों के पूजने से मना करते हैं और अपने आपको दो पुकारते हैं अल्लाह को और रहमान को (मआ़ज़ल्लाह) इसके जवाब में यह आयत नाज़िल हुई और बताया गया अल्लाह और रहमान दो नाम एक ही मअ़्बूदे बरहक़ के हैं ख़्वाह किसी नाम से पुकारो। (फ़ा231) यानी मुतवस्सित आवाज़ से पढ़ो जिससे मुक़्तदी ब-आसानी सुन लें शाने नुज़ूल रसूले करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम मक्का मुकर्रमा में जब अपने असहाब की इमामत फ़रमाते तो क़िराअत बुलन्द आवाज़ से फ़रमाते मुशरिकीन सुनते तो क़ुरआन पाक को और इसके नाज़िल फ़रमाने वाले को और जिन पर नाज़िल हुआ उन सब को गालियां देते इस पर यह आयते करीमा नाज़िल हुई। (फ़ा232) जैसा कि यहूद व नसारा का गुमान है (फ़ा233) जैसा कि मुशरिकीन कहते हैं (फ़ा234) यानी वह कमज़ोर नहीं कि उसको किसी हिमायती और मददगार की हाजत हो। (फ़ा235) हदीस शरीफ़ में है रोज़े क़ियामत जन्नत की तरफ़ सब से पहले वही लोग बुलाए जायेंगे जो हर हाल में अल्लाह की हम्द करते हैं एक और हदीस में है कि बेहतरीन दुआ़ *अल्हम्दु लिल्लाह* है और बेहतरीन ज़िक्र *ला इला-ह इल्लल्लाह* (तिर्मिज़ी) मुस्लिम शरीफ़ की हदीस में है अल्लाह तआ़ला के नज़दीक चार कलिमे बहुत प्यारे हैं *ला इला-ह इल्लल्लाहु अल्लाहु अक्बरु सुब्हा-नल्लाहि अल्हम्दु लिल्लाहि* **फ़ायदाः** इस आयत का नाम आयतुल इज़्ज़ है बनी अब्दुल मुत्तलिब के बच्चे जब बोलना शुरू करते थे तो उनको सब से पहले यही अयात *क़ुलिल्-हम्दु लिल्लाहिल्-लज़ी* सिखाई जाती थी।

(बक़िया सफ़्हा 478 का) की हिफ़ाज़त अ़क़्ल की तेज़ी क़ैदियों की आज़ादी के लिए यह असमा लिख कर बतरीक़े तावीज़ बाज़ू में बांधे जायें (जुमल) वाक़िआ़ हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम के बाद अहले इन्जील की हालत अबतर हो गई वह बुत परस्ती में मुब्तला हुए और दूसरों को बुत परस्ती पर मजबूर करने लगे उनमें दक़ियानूस बादशाह बड़ा जाबिर था जो बुत परस्ती पर राज़ी न होता उसको क़त्ल कर डालता असहाबे कहफ़ शहर उफ़सूस के शुरफ़ा व मुअ़ज़्ज़ीन में से ईमानदार लोग थे दक़ियानूस के जब्र व ज़ुल्म से अपना ईमान बचाने के लिए भागे और क़रीब के पहाड़ में एक ग़ार के अन्दर पनाह गुज़ीं हुए वहां सो गए तीन सौ बरस से ज़्यादा अर्सा तक उसी हाल में रहे बादशाह को जुस्तजू से मालूम हुआ कि वह ग़ार के अन्दर हैं तो उसने हुक्म दिया कि ग़ार को एक संगीन दीवार खींच कर बन्द कर दिया जाये ताकि वह उसमें मर कर रह जायें और वह उनकी क़ब्र हो जाये यही उनकी सज़ा है उम्माले हुकूमत में से यह काम जिस के सपुर्द किया गया वह नेक आदमी था उसने उन असहाब के नाम तादाद पूरा वाक़िआ़ रांग की तख़्ती पर कुन्दा करा कर तांबे के सन्दूक़ में दीवार की बुनियाद के अन्दर महफ़ूज़ कर दिया यह भी बयान किया गया है कि उसी तरह एक तख़्ती शाही ख़ज़ाना में भीमहफ़ूज़ करा दी गई कुछ अर्सा बाद दक़ियानूस हलाक हुआ ज़माने गुज़रे सल्तनतें बदलीं ता आंकि एक नेक बादशाह फ़रमांरवा हुआ उसका नाम बेदरोस था जिसने अड़सठ साल हुकूमत की फिर मुल्क में फ़िरक़ाबन्दी पैदा हुई और बाज़ लोग मरने के बाद उठने और क़ियामत आने के मुन्किर हो गए बादशाह एक तन्हा मकान में बन्द हो गया और उसने गिरया व ज़ारी से बारगाहे इलाही में दुआ़ की या रब कोई ऐसी निशानी ज़ाहिर फ़रमा जिससे ख़ल्क़ को मुर्दों के उठने और क़ियामत आने का यक़ीन हासिल हो उसी ज़माना में एक शख़्स ने अपनी बकरियों के लिए आराम की जगह हासिल करने के वास्ते उसी ग़ार को तजवीज़ किया और दीवार गिरा दी दीवार गिरने के बाद कुछ ऐसी हैबत तारी हुई कि गिराने वाले भाग गए असहाबे कहफ़ बहुक्मे इलाही फ़रहाँ व शादां उठे चेहरे शगुफ़्ता तबीअ़तें ख़ुश ज़िन्दगी की तरो ताज़गी मौजूद एक ने दूसरे को सलाम किया नमाज़ के लिए खड़े हो गए फ़ारिग़ होकर यमलीख़ा से कहा कि आप जाइये और बाज़ार से कुछ खाने को भी लाइये और यह ख़बर भी लाइये कि दक़ियानूस का हम लोगों की निस्बत क्या इरादा है वह बाज़ार गए और शहर पनाह के दरवाज़े पर इस्लामी अलामत देखी नये नये लोग पाये उन्हें हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम के नाम की क़सम खाते सुना तअ़ज्जुब हुआ यह क्या मुआ़मला है कल तो कोई शख़्स अपना ईमान ज़ाहिर नहीं कर सकता था हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम का नाम लेने से क़त्ल कर दिया जाता था आज इस्लामी अ़लामतें शहर पनाह पर ज़ाहिर हैं लोग बे ख़ौफ़ो ख़तर हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के नाम की क़स्में खाते हैं फिर आप नानपज़ की दुकान पर गए खाना ख़रीदने के लिए उसको दक़ियानूसी सिक्का का रुपया दिया जिस का चलन सदियों से मौक़ूफ़ हो गया था और उसका देखने वाला भी कोई बाक़ी न रहा था बाज़ार वालों ने ख़्याल किया कि कोई पुराना ख़ज़ाना इनके हाथ आ गया है उन्हें पकड़ कर हाकिम के पास ले गए वह नेक शख़्स था उसने भी उनसे दरियाफ़्त किया कि ख़ज़ाना कहां है उन्होंने कहा ख़ज़ाना कहीं नहीं है यह रुपया हमारा अपना है हाकिम ने कहा यह बात किसी तरह क़ाबिले यक़ीन नहीं इस में जो सनू मौजूद है वह तीन सौ बरस से ज़्यादा का है और आप नौजवान हैं हम लोग बूढ़े हैं हमने तो कभी यह सिक्का देखा ही नहीं आपने फ़रमाया मैं जो

दरियाफ़्त करूं वह ठीक ठीक बताओ तो उक़दा हल हो जाएगा यह बताओ कि दक़ियानूस बादशाह किस हाल व ख़्याल में है हाकिम ने कहा कि आज रूए ज़मीन पर इस नाम का कोई बादशाह नहीं सैकड़ों बरस हुए जब एक बेईमान बादशाह इस नाम का गुज़रा है आपने फ़रमाया कल ही तो हम उसके ख़ौफ़ से जान बचा कर भागे हैं मेरे साथी क़रीब के पहाड़ में एक ग़ार के अन्दर पनाहगुज़ीं हैं चलो मैं तुम्हें उन से मिला दूं हाकिम और शहर के अ़माइद और एक ख़ल्क़े कसीर उनके हमराह सरे ग़ार पहुंचे असहाबे कहफ़ यमलीख़ा के इन्तेज़ार में थे कसीर लोगों के आने की आवाज़ और खटके सुनकर समझे कि यमलीख़ा पकड़े गए और दक़ियानूसी फ़ौज हमारी जुस्तजू में आ रही है अल्लाह की हम्द और शुक्र बजा लाने लगे इतने में यह लोग पहुंचे यमलीख़ा ने तमाम क़िस्सा सुनाया उन हज़रात ने समझ लिया कि हम बहुक्मे इलाही इतना तवील ज़माना सोये और अब इस लिए उठाये गए हैं कि लोगों के लिए बाद मौत ज़िन्दा किये जाने की दलील और निशानी हों हाकिम सरे ग़ार पहुंचा तो उसने तांबे का सन्दूक़ देखा उसको खोला तो तख़्ती बर-आमद हुई उस तख़्ती में उन असहाब के असमा और उनके कुत्ते का नाम लिखा था यह भी लिखा था कि यह जमाअ़त अपने दीन की हिफ़ाज़त के लिए दक़ियानूस के डर से इस ग़ार में पनाहगुज़ीं हुई दक़ियानूस ने ख़बर पाकर एक दीवार से उन्हें ग़ार में बन्द कर देने का हुक्म दिया हम यह हाल इस लिए लिखते हैं कि जब कभी ग़ार खुले तो लोग हाल पर मुत्तलअ़ हो जायें यह लौह पढ़कर सब को तअ़ज्जुब हुआ और लोग अल्लाह की हम्द व सना बजा लाये कि उसने ऐसी निशानी ज़ाहिर फ़रमा दी जिससे मौत के बाद उठने का यक़ीन हासिल होता है हाकिम ने अपने बादशाह बेदरोस को वाक़िआ़ की इत्तेलाअ़ दी वह उमरा व अ़माइद को लेकर हाज़िर हुआ और सजदए शुक्रे इलाही बजा लाया कि अल्लाह तआ़ला ने उसकी दुआ़ क़बूल की असहाबे कहफ़ ने बादशाह से मुआ़नक़ा किया और फ़रमाया हम तुम्हें अल्लाह के सपुर्द करते हैं वस्सलामु अ़लैक व रहमतुल्लाह व बरकातुहू अल्लाह तेरी और तेरे मुल्क की हिफ़ाज़त फ़रमाये और जिन्न व इन्स के शर से बचाए बादशाह खड़ा ही था कि वह हज़रात अपने ख़्वाबगाहों की तरफ़ वापस होकर मसरूफ़े ख़्वाब हुए और अल्लाह तआ़ला ने उन्हें वफ़ात दी बादशाह ने साल के सन्दूक़ में उनके अजसाद को महफ़ूज़ किया और अल्लाह तआ़ला ने रोअ़ब से उनकी हिफ़ाज़त फ़रमाई कि किसी की मजाल नहीं कि वहां पहुंच सके बादशाह ने सरे ग़ार मस्जिद बनाने का हुक्म दिया और एक सुरूर का दिन मुअ़य्यन किया कि हर साल लोग ईद की तरह वहां आया करें (ख़ाज़िन वग़ैरह) मसलाः इससे मालूम हुआ कि सालेहीन में उर्स का मामूल क़दीम से है (फ़ा16) यानी उन्हें ऐसी नींद सुला दिया कि कोई आवाज़ बेदार न कर सके (फ़ा17) कि असहाबे कहफ़ के (फ़ा18) दक़ियानूस बादशाह के सामने (फ़ा19) और उसके लिए शरीक और औलाद ठहराये फिर उन्होंने आपस में एक दूसरे से कहा

(बक़िया सफ़हा 480 का) अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा ने फ़रमाया कि मैं उन्हीं क़लील में से हूं जिन का आयत में इस्तिस्ना फ़रमाया। (फ़फ़ा45) अहले किताब से (फ़ा46) और क़ुरआन में नाज़िल फ़रमा दी गई आप इतने ही पर इक्तेफ़ा करें और इस मुआ़मला में यहूद के जहल का इज़्हार करने के दरपै न हों (फ़ा47) यानी असहाबे कहफ़ के (फ़ा48) यानी जब किसी काम का इरादा हो तो यह कहना चाहिए कि इन्शाअल्लाह ऐसा करूंगा बग़ैर इन्शाअल्लाह के न कहे शाने नुज़ूल अहले मक्का ने रसूले करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से जब असहाबे कहफ़ का हाल दरियाफ़्त किया था तो हुज़ूर ने फ़रमाया कल बताऊँगा और इन्शाअल्लाह नहीं फ़रमाया था तो कई रोज़ वही नहीं आई फिर यह आयत नाज़िल हुई। (फ़ा49) यानी इन्शाअल्लाह तआ़ला कहना याद न रहे तो जब याद आये कह ले। हसन रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने फ़रमाया जब तक उस मजलिस में रहे इस आयत की तफ़सीरों में कई क़ौल हैं बाज़ मुफ़स्सिरीन ने फ़रमाया माना यह हैं कि अगर किसी नमाज़ को भूल गया तो याद आते ही अदा करे (बुख़ारी व मुस्लिम) बाज़ आरिफ़ीन ने फ़रमाया माना यह हैं कि अपने रब को याद कर जब तू अपने आपको भूल जाये क्योंकि ज़िक्र का कमाल यही है कि ज़ाकिर मज़कूर में फ़ना हो जाये। ज़िक्र व ज़ाकिर मह्व गरदद ब-इल्तेमाम जुमलगी मज़कूर मानद वस्सलाम (फ़ा50) वाक़िआ़ असहाबे कहफ़ के बयान और उसकी ख़बर देने (फ़ा51) यानी ऐसे मोअ़जेज़ात अ़ता फ़रमाए जो मेरी नबुव्वत पर इससे भी ज़्यादा ज़ाहिर दलालत करें जैसे कि अम्बिया साबिक़ीन के अहवाल का बयान और ग़ुयूब का इल्म और क़ियामत तक पेश आने वाले हवादिस व वक़ायेअ़ का बयान और शक़्क़ुल क़मर और हैवानात से अपनी शहादतें दिलवाना वग़ैरहा (ख़ाज़िन व जुमल) (फ़ा52) और अगर वह इस मुद्दत में झगड़ा करें तो

(बक़िया सफ़हा 483 का) की तलछट की तरह तिर्मिज़ी की हदीस में है कि जब वह मुंह के क़रीब किया जाएगा तो मुंह की खाल उससे जल कर गिर पड़ेगी बाज़ मुफ़स्सिरीन का क़ौल है कि वह पिघलाया हुआ रांग और पीतल है। (फ़ा64) बल्कि उन्हें उनकी नेकियों की जज़ा देते हैं।

(बक़िया सफ़हा 483 का) करने पर भी इस आयत में दुनिया की तरी व ताज़गी और बहजत व शादमानी और उसके फ़ना व हलाक होने की सब्ज़ा से तम्सील फ़रमाई गई कि जिस तरह सब्ज़ा शादाब होकर फ़ना हो जाता है और उसका नाम व निशान बाक़ी नहीं रहता यही हालत दुनिया की हयात बे ऐतबार की है इस पर मग़रूर व शैदा होना अ़क़्ल का काम नहीं। (फ़ा98) राहे क़ब्र व आख़िरत के लिए तोशा नहीं हज़रत अली मुर्तज़ा रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने फ़रमाया कि माल व औलाद दुनिया की खेती हैं और आमाले सालिहा आख़िरत की और अल्लाह तआ़ला अपने बहुत से बन्दों को यह सब अ़ता फ़रमाता है।

(बक़िया सफ़हा 484 का) अ़ज़ाब करे न किसी की नेकियां घटाये। (फ़ा109) तहिय्यत का (फ़ा110) और बावजूद मामूर होने के उसने सज्दा न किया तो ऐ बनी आदम। (फ़ा111) और उनकी इताअ़त इख़्तियार करते हो (फ़ा112) कि बजाए ताअ़ते इलाही बजा लाने के ताअ़ते शैतान में मुब्तला हुए

(बक़िया सफ़हा 486 का) भुनी मछली ज़म्बील में तोशा के तौर पर लेकर रवाना हुए (फ़ा139) जहां एक पत्थर की चट्टान थी और चश्मए हयात था तो वहां दोनों हज़रात ने इस्तेराहत की और मसरूफ़े ख़्वाब हो गए भुनी हुई मछली ज़म्बील में ज़िन्दा हो गई और तड़प कर दरिया में गिरी और उस पर से पानी का बहाव रुक गया और एक मेहराब सी बन गई हज़रत यूशअ़ को बेदार होने के बाद हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम से उसका ज़िक्र करना याद न रहा चुनान्चे इरशाद होता है (फ़ा140) और चलते रहे यहां तक कि दूसरे रोज़ खाने का वक़्त आया तो हज़रत (फ़ा141) थकान भी है भूख की शिद्दत भी है और यह बात जब तक मजमउलबहरैन पहुंचे थे पेश न आई थी मन्ज़िले मक़सूद से आगे बढ़ कर थकान और भूख मालूम हुई उसमें अल्लाह तआ़ला की हिकमत थी कि मछली याद करें और उसकी तलब में मन्ज़िले मक़सूद की तरफ़ वापस हों हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम के यह फ़रमाने पर ख़ादिम ने मअ़ज़रत की और। (फ़ा142) यानी मछली ने (फ़ा143) मछली का जाना ही तो हमारे हुसूले मक़सद की अलामत है और जिनकी तलब में हम चले हैं उनकी मुलाक़ात वहीं होगी (फ़ा144) जो चादर ओढ़े आराम फ़रमा रहा था यह हज़रत ख़िज़्र थे अला नबिय्यिना व अ़लैहिस्सलातु वस्सलाम लफ़्ज़ ख़िज़्र लुग़त में तीन तरह आया है ब-कसर ख़ा व सुकून ज़ाद और ब-फ़त्ह़ ख़ा व सुकून ज़ाद और ब-फ़त्ह़े ख़ा व कसर ज़ाद यह लक़ब है और वजह इस लक़ब की यह है कि जहां बैठते या नमाज़ पढ़ते हैं वहां अगर घास ख़ुश्क हो तो सर सब्ज़ हो जाती है नाम आपका बलिया बिन मलकान और कुन्नियत अबुल अ़ब्बास है एक क़ौल यह है कि आप बनी इसराईल में से हैं एक क़ौल यह है कि आप शाहज़ादे हैं आपने दुनिया तर्क करके ज़ुह्द इख़्तियार फ़रमाया। (फ़ा145) इस रहमत से या नबुव्वत मुराद है या विलायत या इल्म या तूले हयात आप वली तो बिलयक़ीन हैं आपकी नबुव्वत में इख़्तिलाफ़ है।

(बक़िया सफ़हा 487 का) फ़ज़ीलत नहीं बल्कि उनकी फ़ज़ीलत उस चीज़ से है जो उनके सीना में है यानी इल्मे बातिन व इल्मे असरार क्यों कि जो अफ़आ़ल सादिर होंगे वह हिकमत से होंगे अगरचे बज़ाहिर ख़िलाफ़ मालूम हों (फ़ा150) मसलाः इससे मालूम हुआ कि शागिर्द और मुस्तरशिद के आदाब में से है कि वह शैख़ व उस्ताद के अफ़आ़ल पर ज़बाने एतेराज़ न खोले और मुन्तज़िर रहे कि वह खुद ही उसकी हिकमत ज़ाहिर फ़रमा दें (मदारिक) व अबुस्सऊद) (फ़ा151) और कश्ती वालों ने हज़रत ख़िज़्र अ़लैहिस्सलाम को पहचान कर बग़ैर मुआ़वज़ा के सवार कर लिया (फ़ा152) और बसूले या कुलहाड़ी से उसका एक तख़्ता या दो तख़्ते उखाड़ डाले लेकिन बावजूद उसके पानी कश्ती में न आया। (फ़ा153) हज़रत ख़िज़्र ने (फ़ा154) हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम ने (फ़ा155) क्योंकि भूल पर शरीअ़त में गिरिफ़्त नहीं। (फ़ा156) यानी कश्ती से उतर कर एक मक़ाम पर गुज़रे जहां लड़के खेल रहे थे (फ़ा157) जो उन में ख़ूबसूरत था और हद्दे बुलूग़ को न पहुंचा था बाज़ मुफ़स्सिरीन ने कहा जवान था और रहज़नी किया करता था (फ़ा158) जिसका कोई गुनाह साबित न था।